

गणेशपुराण भाषा ॥

जिसमें

रुद्रकेतुतपस्विसे उत्पन्नहुयेनरान्तकअरु सुरान्तकइनदोनोंदैत्योंके मोक्षार्थ श्रीगणेशजीका कश्यपमुनिके घरमें अवतारहोना फिर काशिराजके घरजाकर नानाप्रकारके वेषधारे अनेकराक्षसोंको मारकेसमस्तभूमिका भारउतारना पुनि शुक्लब्राह्मणके घर आकर बासीअन्नभोजनकर तिसेसम्पूर्णसम्पदादेनाअरु अनेकराक्षसोंसहित महाबलवान् नरान्तक व सुरान्तक दोनोंदैत्योंकोमारनापुनि गणेशसहस्रनामादि अनेक श्रीगणेशजीकी स्तुति व लीला वर्णनकीगई हैं ॥

जिसको

श्रीमुंशीनवलकिशोरकी आज्ञानुसार शुक्लोपनामक पंडितदेवीसहाय नारनौलियने समस्त विद्वानोंके उपकारके लिये संस्कृत से सरलभाषा में उल्था किया ॥

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखानेमें छपा

मई सन् १८८७ ई० ॥

गणेशपुराणकीभूमिका॥

शिवतनयपरिष्ठसर्वकल्याणमूर्तिपरशुकमलहस्तशोभितम्मोदकेन अरुणकुसुममाला व्याल लम्बोदरंचनमहृदयनिवास श्रीगणेशनमामि १ श्रीगणेशतवपादपकजम्मानसेवसतुमेनिरन्तरम् यत्सुरारिविजयेऽमृतांधसिसेव्यतेसकलविघ्नवारणम् २ अविरलमदजलनिवह भ्रमरकुलानेकसेवितकपोलम् अभिमतफलदातारकामेशगणपतिम्बन्दे ३ सजयतिसिन्धुरवदनो देवोयत्पादपकजस्मरणम् वासरमणिरिवतमसांराशिन्नाशयतिविघ्नानाम् ४ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थम्पूजितोयः सुरासुरैः सर्वविघ्नहरेतस्मै गणाधिपतयेनमः ५ इत्यादि श्रुति सारवाक्यों करके प्रकटही प्रतीत होता है कि समस्त प्रत्यूह व्यूह विनाशक ऋद्धि सिद्धि विलासक ज्ञानाम्बुधि प्रकाशक महायोगिजन सुखावभासक तौ केवल श्रीगणेशजी महाराजहीहैं। और (कलौचण्डीविनायकौ) इत्यादिसे भी विशेष करके तात्पर्य्य यही है कि अवर्तमानइससमयमें तौ श्रीगणेशजी ही का पूजन आराधन सम्पूर्ण फलों का देनेवालाहै ऐसेश्री गणेशजी की महिमा गणेशपुराण में अतिही सुन्दर चमत्कार पूर्वक सुवर्णित कीहै। भविष्यमाला श्रेष्ठ समयके अनुकूल भवितव्यतारूप श्रीगणेश जी की भक्ति श्रीयुतमुन्शीनवलकिशोरजी के हृदयसागरमें उत्पन्न भई तौ सब ही समस्त विद्वान् मात्र महज्जनोंके उपकार के लिये इस गणेश पुराण को शुद्धदेशभाषा अनुवाद सहित अपूर्व मुद्रितको मौद्रित होनेके लिये सुन्दर सत्कार पूर्वक महद् व्यार्थित करके हमको इसके स्फुटार्थानुवाद। व्याख्यान कार्य्य में नियोजित किये श्रेय श्रीयुत मुन्शीजी श्रीनवलकिशोरजी अतीव महद्व्यय पूर्वक उपचारसे सत्कार सहित समस्त लोकका ऐसा उपकारकर रहेहैं कि इनका यशरूपी शरीर युगानुयुग समय पर्य्यंत ऋद्धिवृद्धिसेसमृद्ध रहै। जिन्होंने मेरेमनको अभीष्टदेव श्रीगणेशजीके प्राणप्रियपुराण व्याख्यान सत्कार्य्य में लगाया यह महात्मासज्जन महज्जनोंके दृष्टिगोचर मेरेये दृ. विरथ अक्षर करवाये उन्हें धन्यहै ३ इसी अभिप्रायसेबोधाभीहै॥

दोहा ॥ प्रानसमानपुरानमें प्रेरयो जिनमनमोर ।
सोजगमें युगयुगजियौ मुशीनवलकिशोर ॥

यदि कोई महाशय तर्ककरैं तौ उनकी तर्क निवृत्तिकेलिये (यशतनु नवल किशोर) ऐसाकहना इस्से ये अभिप्राय मिला कि सामान्य शरीरके अभावहोनेमें भी यशरूप शरीरका नाशकभी नहीं होता इस्से ये यशश्शरीरी अजर अमरही हैं अह इनकी कीर्त्यायुप्रतिदिन प्रवर्द्धमान होती चलीजातीहै तैसे ही सदैव रहो ३ श्रीः २ ॥

शुक्लदेवीसहाय विरचित ख्याल सागर ग्रंथस्येयश्री गणपते स्तुतिःसचाख्याल रागेणैवगीयते ।
तथाचैवम् ॥

भज भज नर गणपति, निखिल सुर वृन्दार्चित सिन्धुर भाल, कांतिकरालं हृदयगत भ्रमर निकर चुम्बित्त मालम् ॥ ध्रुपदम् ॥ गौरीसूनु विनायकं गज वदन मूषक सद्वाहं, प्रज्ञावत, सजन सुखकर पर परमोत्साह । शुण्डादण्ड प्रचण्ड निखिल भूमण्डल भूमिपदर्पाह, , ये यण्करणनिखिलभयहरणदुष्टा, न्तदाहं । स्नानदान शुभयान जनित विज्ञानछिन्नसंशय जालं, कान्तिकराल० ॥ १ ॥ सुरनर मुनि गंधर्व किन्नराखिल सुरवृन्द महीमान, कांति निधान परम्परया-कल्पित नानाभान । विघ्नच्छेदकरं कर्तारं भर्तार जगतो ध्यान शुण्डादण्ड मदच्युत गण्डपरं परमेशानम् । प्राणापान समानो दानव्यान व्याप्त जगच्चालं, कान्तिकरालं० ॥२॥ स्वच्छशान्तपरप्रधानकारणमाविमनाकारं, रहित विकार, सुदृढ़ गुणमौल्यलसन्मुक्ताहार ॥कैवल्यस्थित मात्म निकेतं भवनेतु जगदा धारं,सारात्सारं, मृषाबुद्ध्यारोपितनानाकारम् । नाशान्तेश्यप्र लयेजगतःकालंकालमहाकाल,कान्तिकराल०॥३॥ इतिगदितमुदिताखिललोक वर प्रद माविगुरोः स्तवन, कलमषशमनं, महद्भय मोहारण्य ज्वलद्दवनम् । एतंयः श्रद्धया परमपास्तौति गणाधिप मनुसवनं,ध्यायन् गायन,स्तवन मेत ल्लभते स्थान च्यवनम् । देवि शुक्ल शर्मणा विरचित सद्गुरो स्तवनं रुपाल, कांतिकराल हृदयगतभ्रमर निकरचुम्बितमालं ॥

अथविष्णुअष्टपदीयम्

सायतन समये संमिलित गौरीरागेणगीयते । जय जय जय नाराय ण स्वामिन् जड़चेतन चितान्तर्यामिन् जय० । ध्रुपद । दीन दयाल कमल

'दल लोचन। परमकृपालुभावभवमोचन।जय०।१। इन्दीवरनाभे अजनाभे। रक्षजन भीतं भुवनाभे ।जय० ना० स्वा०।२। नीरसुतीर, वीरबलकारिन्। करतल भूतलधरबल धारिन्॥जय०।३। धीरसुवीर,धीरबलदायक। किन्नर नर खगमृग नग नायक।जय०।४।श्यामराम प्रियधरिणिधुरंधर। खर्व्वितरुत गर्वित दशकंधर।जय०।५। चचलचपलललित श्रुतिकुण्डल। विमल विलास लसित भूमडल। जय ०।६। नारायण नरनार नरोत्तम। जयनारायण जय पुरुषोत्तम।जय० ।७। श्रेश सुरेशमहेशमहीशा। पाहि जगज्जगतीं जगदीशा।जय०।८। अष्टपदी शुक्लेन सुगीता। चरणरज. कणिकापरिपीता। जयजयजयनारायणस्वामिन्० ९॥

इतिश्री शुक्ल देवीसहाय विरचित ख्याल सागरस्थविष्णुअष्टपदी समाप्ता
लिपीकृता सम्वत्१९४३ फाल्गुनशुक्लप्रतिपदि बुधसाय मल
मितिशर्वदाशर्वदा श्री तनोतु सदाम्॥

गणेशपुराण भाषा ॥

उपासना खण्डका सूचीपत्र



गणेशपुराण भाषा।

उत्तरखण्डकासूचीपत्र ॥

गणेशपुराण भाषा ॥

द्वादशमास गणेशजीकी कथाओंका वर्णन ॥



अथ गणेश गीता प्रारम्भ.

इति गणेशपुराणभाषाका सूचीपत्र समाप्तहुआ ॥



अथ गणेशपुराण भाषा ॥

पहिला अध्याय ॥

अथादौटीकाकृतोमङ्गलम् ॥

यथं गणपत्यादिमङ्गलदेवानाम्मंगलमिदम् ॥

हेरम्बोऽम्बाथब्रह्माहरिपशुपतयो भास्कराद्याग्रहाये
पञ्चाख्यालोकपालादशचसुगणितादिक्प्रपायेमहान्त ॥
मेपाद्याराशयश्चाश्विमुखवरमुखा याश्चनक्षत्रतारा
योगाविष्कुम्भकाद्यास्सकलसुरवरा पान्तुमामत्रतूर्णम् १

अथ विशेषतश्छन्दः ॥

श्रीगणेशमहेशशेशदिनेशशारदपदपरम्। नत्वा निखिलजननाथ कम्सुखदायकंगिरिवरधरम् ॥ अञ्जनाभसात्विकाभनिखिलभवरच नाचरम् । वन्देगुरुम्पावनपरतिमिराहरकरुणाकरम् १ रविचन्द्र भूमिजबुधगुरुभृगुमन्दराहुध्वजिग्रहान् । गणपतिभवानीवायुब्यो मान्यश्विनीसुतशम्बहान् ॥ इन्द्रवह्नीयमनिर्ऋतिजलपतिपवन धनदासहान्। ईशब्रह्मानन्तसञ्ज्ञान्दिगधिपान्सुसुखावहान् २ मेष वृषमिथुनानिकर्कहरीचकन्यातुलमुखान् । अलिधनमकरकुम्भायड जान्राशीन्सदासुखदान्सुखान् ॥ अश्विनीक्रमतोष्टविंशतिकान्मु सत्फलसम्मुखान्। विष्कुंभतोनगविंशतिर्योगान्सुभोगानुन्मुखान् ३ अष्टौवसून्सुसुखप्रदान्स्वकळत्रपुत्रसुसंयुतान् । सतकान्मुनिवरग णान्मुनदीनदान्नदन्द्रुतान्॥ निखिलान्समुद्रान्सद्रूदान्धरणीधरा

न्महदद्भुतान्। हनुमदादिविभीषणादीन्सकररघुवरपदनुतान्४ अधिदेवमत्यधिदेवताखिलवाह्यमण्डलमण्डितान्। जलचरखचरधरणीचराखिलभूधरानविखण्डितान्॥ सहस्रवाहनविमलभूषणकनककुण्डलगण्डितान्। देवत्वावच्छिन्नसर्वान्निर्वखर्वसुपण्डितान् ५ नत्वा मुदास्मृत्वाहृदाचविपद्वदप्रतिहारकान्। देवान्सुसेवान्सौख्यसम्पत्संयुतान्भवतारकान्॥ कर्तुमीहउमासुतप्रख्याऽजगद्धृतिधारकान्। देवीसहायअहंसहायधाम्यखिलपरिपारकान् ६॥ श्रीश्रेयश्श्रयता॥

श्रीमत्समस्तलोकैकहितकारी सनातनधर्मप्रतिरक्षकपुराणवक्ता भगवान्पाराशिप्सव श्रीगणेशपुराणेशपुराणमे समस्त प्रत्यूहव्यूह के निवारण के लिये अरु सव शिष्यगण भी इस लिखेको देखकर ऐसेही मंगलाचरण करें इस अभिप्राय कोभी जनातेहुये (श्रीगणेश पुराण) की आदिमेंश्रीगणेशजी का नमस्कार रूप मगल निवन्धन करते हैं सोही—

श्लोक नमस्तस्मैगणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने॥
यस्यागस्त्यायतेनाम विघ्नसागरशोषणे १

तस्मै, गणेशाय, नम, तस्मै यहा तत्‌शब्दसे चतुर्थीविभक्तिका एक वचन ङे परे होने से स्मै किये वृद्धि भई तो तस्मै ऐसा सिद्ध भया। और गणेश पदकी ये व्याख्या है कि जो गणना कियेजावें सो गण अर्थात् बहुत भारी निजजन समूह तिनके जो ईश नाम स्वामी सो कहिये गणेश तिनके अर्थनम नाम नमस्कारहै अर्थात् पौराणिक भगवान की भक्ति सहित विनय पूर्वक ये प्रार्थना है कि मै भविष्यमाण पुराण में निर्विघ्नता के लिये श्रीगणेशजी महाराजको भक्तिसे प्रणति पूर्वक नमस्कार करताहू (ननु) नमस्कार योग्य वहीहै कि जिससे ज्ञान प्राप्तहोवे जिस करके मोक्षकाअधिकारी भी हो क्योकि (तत्त्वज्ञानान्निश्श्रेयसाधिगम) इस श्रुति के देखने मे प्रत्यक्षही मानहोता है कि तत्त्वज्ञान सेही मोक्षकी प्राप्ति है। कहोसो भी वहाहै कि नहीं। इस आक्षेपको निवारण करतेहुये इस पर कहते है कि (ब्रह्मविद्याप्रदायिने) ब्रह्मकी जो विद्या सो

ब्रह्म विद्यानाम शुद्धतत्त्वज्ञान तिसके प्रकर्ष करके देनेवालेहै अर्थात् इनके आराधन से सद्यही शुद्धचित्त हुये ब्रह्म विद्या प्राप्तहो कर मुक्ति भी हो जातीहै ये अर्थ प्राप्त भया। अच्छाहो फिरविघ्न तो कई २ प्रकार के अनेक है उन बहुतो के निवारण करने में ये एकलेही कैसे समर्थ होगे इस पर कहते है कि (यस्यागस्त्याय तेनामविघ्नसागरशोषणे) जिनका नाम विघ्न रूप सागर के शोषण में अगस्त्य जी के समान है अर्थात् जैसे अगस्त्य महामुनि जो समस्त समुद्रको पानकर गये तैसे इनका नाममात्र भी स्मरण किया समस्त विघ्नोको नाश करता है १ ये पहिले श्लोक की व्याख्या कुछ विस्तार से कही (ननु) पुराणादिकोकी प्रणालिका परपरासे सिद्ध चली आतीहै सो कहा कि। कहांसे ये पुराण उत्पन्न भया। अरु किन २ महात्माओ ने किन २ श्रोताओ के आगे किस२ स्थानपर इसे वर्णनकिया सो भी समस्त क्रम यथा क्रम से निरूपण करना चाहिये सो कहते हैं (ऋषयऊचु) अर्थात् तपस्वीजन अपने २ सन्ध्योपासनादि अग्निहोत्रान्त प्रात काल का अवश्य नियम पूर्ण करके। स्वस्थ अरु एकाग्र चित्त सूतजीको देख कर आदर सत्कार पूर्वक ये पूछते हुये कि हे सूतजी २ हे महाप्राज्ञ अर्थात् अतिही सब विषयो के जानने वाले अरु हे वेद के समान शास्त्रमे चतुर अरु हे सवविद्याओके समुद्र तुमसे परे अधिक पुराणोका कहनेवाला और कोई नहीं मिलताहै १ ये ग्रन्थका प्र० श्लो० जन्मजन्मातर का बहुतहीभारी पुण्य जो था तिससे आप सरीखे सर्वज्ञ सज्जनोका दर्शन भया २ लोकमें हमभी धन्यहै अरु हमारा जीवन सफल है और हमारे पितर अरु वेद शास्त्र सारे तप और आश्रम ये भी धन्य है ३ जो कि आपने अठारह पुराण विस्तारसे हमेंसुनाये। अरु हे द्विजोमे अतिश्रेष्ट औरोकोभी सुनने की हमारी इच्छा है ४ हम शौनकके बारहवर्ष के महायज्ञमें टिके हैं तिसमें तुम्हारे कथा रूप अमृत के पानसे और कोई हमारे बिश्राम का कराने वाला नहीं है ५ (श्रीसूतजी बोले) कि हे वड़

भागियो तुमसे ये बात बहुत अच्छी पूछीगई। क्योंकि समान चित्त महात्माओ की मतितो केवल लोकका उपकार करने वालीही होतीहै ६ अरु हे ब्राह्मणो कथाओ के कहनेमें मेरीभी बड़ी प्रसन्नता है। इससेमैं अच्छे आचरण करनेवाले आपकेलिये विशेषकरके भी कहूगा ७ और उपपुराण जो हैं और अठारह पुराण है (श्रीगणेशजीका) अरु नारद जीका नृसिंह आदि और भी जितनेपुराण है ८ तिनमें से पहिले गणेशजी का जो पुराणहै तिसे मे कहताहू। जिसका श्रवण भी इस ससार में विशेष करके दुर्लभ होरहाहै ९ जिसके श्रवण मात्रहीसे मनुष्य धन्यवादको प्राप्त होवे। अरु इसके प्रभावको तो ईश्वर अरु शेष तथा ब्रह्म येभी समर्थ नहींहोते १० पर तबभी तुम्हारी आज्ञा से संक्षेप सेती कहता हू। बहुत जन्मो करके इकट्ठे किये पुण्यो से इसका श्रवण होवाहै और ऐसे वैसेको नहीं सो कहते हैं कि ११ पाखंडी अरु नास्तिकी को पापकर्मकरने वालोको नहीं होता। नित्यनाम सदारहनेसे अरु गुणोसे न्यारे रहने से अरु आदिरहित होनेसे १२ श्रीगणेशजी का स्वरूप तो कहनेको किसीसे भी नहीं बनता। तब भी उपासना करनेवाले लोगो करके वो सगुण निरूपण किया जावाहै १३ ॐनाम प्रणवरूपी भगवान् जो वेदोकी आदिमे रक्खागया। अरु मुनीश्वर सबदेवता इन्द्रआदि जिसे हृदयमें रटतेहै १४ ब्रह्मा,शिवजी,इन्द्र,विष्णु ये सब जिसेसदा पूजते हैं।जोसबससारियो का कारण अरु सब कारणो का भी करने वाला१५अरु फिर जिसकीही आज्ञासे ब्रह्मा इससृष्टि को रचता हैं अरुजिसीकी आज्ञासे विष्णु पालन करता है शिवजी भी जिन्हीकी आज्ञासे सहार करते है जिनकी आज्ञासे भास्करस्वामी भ्रमरहेहै १६पवन भी जिनकी आज्ञासेंही चलरहाहै जिन्हीकी आज्ञासे नदी नाले दिशाओ में बहरहे है। जिनकी आज्ञा से तारागण आकाश से पृथ्वी में गिरते है जिनकी आज्ञा से त्रिलोकी में अग्नि नाम वैश्वानर जलरहा है १७ किसी सेभी कभीनही कहा ऐसाजोतिनका गुप्त वृत्तांत है। सो मैं तुम्हें कहताहू हे द्विजो, इसे तुमआदर

सहित श्रवण करो १८ ब्रह्माजीकरके पहिले अतुल तेजवाले व्यासजीको कहागया उस करके भृगुमुनि को कहा गया अरु उस्से सोमकांत नाम राजा से कहागया जोचरित्र है सो मैं कहताहू १९ जिन्हों के व्रत, यज्ञ, तप, दान, तीर्थो करके पुण्यो की अनेक कोटियें हैं तिनकी बुद्धि इसके सुनने मे बहुत करके उत्पन्न होतीहै २० हे श्रेष्ठ द्विजाओ इस गणेश पुराण के श्रवण में जिनका मन है। फिर उनका संसार में स्त्री सतान भूमि आदि पदार्थो में मन कभी नही लगता २१ हे मुनि श्रेष्ठो वे मयूर स्वामी जो गणेशजी तिनकी कथा में आदर सहित हे अर्थात् सुनने की श्रद्धा रखते है। सो तुम इनकी महिमा सोमकात राजा के प्रसग से श्रवण करो २२ सौराष्ट्रनाम देवताओ के नगर में सोमकांत राजा हुआ वेदआदि जो शास्त्र तिनके तत्व को जाननेवाला अरु धर्म्म शास्त्र में परायण २३ जिस्के जातेहुये दश हज़ार हाथी वीस हज़ार घोडे छ हज़ार रथ ये साथ में निकलते रहे २४ अरु पैदल भी अमितही अग्नि के समान तेज शस्त्र धारण करने वाले। अरु कई धनुषधारी अरुकई वीर निषग नाम वाणरखने के भाथे दुहरा धारण करने वाले २५ सो राजा ने अपनी वुद्धि से बृहस्पति जी को जीता और सम्पत्ति करके कुवेर जी को भी। क्षमा करके पृथ्वीको जीती गम्भीरता से समुद्र को भी जीता २६ जिस राजाने निजकांति प्रकाश करकेसूर्य चन्द्रमाओ को जीते। प्रताप से अग्नि को जीता अरु सुन्दरता से कामदेव को जीता २७ दृढ पराक्रम वाले पाच मत्री जिसके महाबलीहुये राजनीति शास्त्रार्थ के तत्व के जानने वाले अरु शत्रुओ के राज्य को हटाने वाले हुये २८ तहा पर पहिला तो रूपवान् और दूसरा विद्याधीश,क्षेमकर अरु ज्ञानगम्य, पाचवा सुवल नामसे विख्यात हुआ २९ इन्होने नाना प्रकार के अपने विराने देश यथावत् करके दबाये अरु ये बड़े सुन्दर अनेक आभूषण वस्त्रो से सजेहुये ३० नित्यही राज कार्य्य करने वाले अरु राजाके अत्यत ही प्यारे अरु तिसी राजा के गुणोवाली सुधर्म्मानामसे राजपत्नी

हुई ३१ तिस सुलक्षण वाली के स्वरूप को देखतेही रति, रम्भा, तिलोत्तमा ये अप्सरा भी लज्जा से लजाई कहीं नहीं सुख पावतीभई अरु कुछ न अपनेको माना ३२ बहुतसे रत्नोसेरचे कंचन के कर्णभूषण कानोमें पहिरे, कण्ठ में सुंदरधुकधुकी अरु मोतियोकी माला डाले ३३ कटि में रत्नमय तागडी बांधे तिसी सरीखे बिछुवे पैरो में पहिरे, अरु हाथ पैरो की अंगुलियो में उत्तम२छल्ले छाप पहिरे ३४ अरुकई २ वर्णो के बड़े सजीले बस्त्र हजारहों प्रमाण के धारण करती हुई अरु भगवत् के पूजन में आये अतिथि की शुश्रूषा में बडेही प्रेमवाली ३५ और भर्ताके वचन अरु सेवन मे रात दिन प्रीति कियेरहती तो इनके हेमकण्ठनाम से विख्यात श्रेष्ठ पुत्रहुआ ३६ जोकि दशसहस्र हाथियोंकेबलवाला बुद्धिमान् महाबलीवैरियों को तपानेवाला। इसप्रकार से पृथिवी मे सोमकान्तराजा अतिश्रेष्ठ हुआ३७ तिसने सबराजाओंको वशमेंकरके भूतलमेंराज्यकिया जो नित्यही धर्ममें रत अरु यज्ञकरनेवाला दाता अरु हेब्राह्मणो त्यागी ममत्व से रहित हुआ ३८॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखंडमें सोमकांतराजाका बर्णन ऐसे प्रथम अध्यायहुआ १॥

दूसराअध्याय॥

श्रीसूतजी बोले हे सबऋषियो अब तुम सोमकान्त की दुर्गति सुनो कि अचानकही उसके देहमे महादुःख देनेवाला चवना कोढ़ निकला १ धर्मात्मा प्रकृतिवाले भी राजा के पूर्व कुकर्मके फल से यह महारोगहुआ शुभ या अशुभ कर्म किया इसमनुष्य को कभी नहीं छोड़ता २ जिस जिस अवस्था में जो जो कर्म किया होता है उस२ही अवस्थामें प्राणधारियोंको वो अवश्य भोगना पड़ताहै ३ वो दुःखरूप समुद्र मे ऐसे डूबा जैसे महा सजल वाले समुद्र में कोई बिनानाववाला डूबजावे बडीपीड़ा को प्राप्तहुआ जैसे सर्प ने काटलियाहो ४ कईप्रकार के घावोकरके युक्त इधर उधरसे लोहू झुररहे राधरुधिर झुररहेजिसके कीड़ो से पीड़ित राजा अस्थि हो

जिसकेरहे अरु राजयक्ष्मा महारोगसे जैसे छायाहुआहो ५ चिन्ता करके व्याकुलहुआ सारीइन्द्रियो में महारोग करके युक्त तब तौ राजायत्न से मनको रोकके मंत्रियोसेबोला ६ राजाबोला मेराराज्य धिक्कार है अरु रूप, बल, धन ये भी धिक्कार है। किस कुकर्म के बीजसे मुझको ये दुःख प्राप्तहुआ ७ जिसमेरेसे कान्तिकरके चद्रमा जीतागया तिससे मे सोमकान्तहुआ जिस मुझसे साधुजन दरिद्री श्रेठ अरु सन्यासी ८ देशवाले लोग अरु और२ भी पुत्र की नाईं पालेगये। जिस मुझसे बाणोकरके घोररूप शत्रुगण जीते गये ६ जिसमुझ से सारी पृथिवी निजवश बर्त्तनेवाली कीगई अरु परमात्मा देव सदाशिवजी भलीप्रकारतासे आराधन कियेगये १० दुष्ट जनो की सगति से हीन अरु चित्त की रुकावट करने वाले जिस मेरे शरीरसे पहिले मन चाहे सुगन्धसे ११ सो अब ये दुर्गंधमिला इससे मेरा जीवना वृथाही है इस से मे सबकी आज्ञासे बन को चला जाउगा १२ और बुद्धिबल संयुक्त हेमकठ पुत्रको सारेजने राज्यमें स्थापन करो, अरु पुरुषार्थों से प्रजापालन करो १३ अब तौ मै लोकमे अपना मुख किसीतरहभी नहींदिखाऊंगा अरु न मुझको राज्यादिकोसे न रानियो से न जीनेसे न लक्ष्मीसे१४ प्रयोजन है इससे हे महामंत्रियो मैं बनमें अपना हित करूंगा सूतजी बोले ऐसे कहके राजा पवन से टूटेवृक्षको नाईं पृथ्वी पर गिरपड़ा १५ राध अरु रुधिर तथा हे द्विजो पसीनोके समूहसे भरा गिरपडा तौ मंत्री अरु रानियों में बड़ा कोलाहल मचा १६ उस छिन में लोगो विषे बड़ाही हाहाकार हुआ॥ फिर वस्त्र से पूछना अरु पवन करने आदि शीघ्र चेतकारक औषधो से १७ अरु मन्त्र वालो के मंत्रोके प्रयोगोसे उसे चैतन्य कराया जब राजा चैतन्य हुआ तौ मत्री ये बोले १८ मत्री बोले आपकी प्रसन्नता से हमने देवताओं के राजा इन्द्र के समान सुखभोगा जो कि सब मनुष्यों में प्रसिद्ध अर्थात् दुर्लभया फिर अबतुम्हारेबिनाकैसेबसें अरुहत्यारोकेसमान हमकैसेजीवें १६।२० अरु ये बलवालाभारीभंडारयुतशत्रुमारनेवाला

तुम्हारा पुत्र एकलाही राज्यकरो अरु हे राजन हमतो साथही वन के लिये जानेको तैयार हैं २१ सूतजी बोले तबतो एक वरीवाली रानी सुधर्माने राजाको वनमे सेवनेको ये वचनकहा कि हे प्रधान मंत्रियो मैं इनके साथही जातीहूं तुम मेरे पुत्रके साथ राज्य शिक्षा करो२२ मनुष्यमात्रके पहिलेकिये सुखका या दुःखका भोगनेवाला और कोई भी नहीं है जैसा २ कर्मफल लगाहै सो तैसा २ आपही भोगना पडताहै २३ मुझ नानासुख भोगवालीसे भी इनका राज्य सुखसे भोगागया है अरु स्त्रियो को भर्त्ताके साथहीजाना परलोकमें मुनीश्वरो ने वतायाहै २४ तब हेमकंठ नाम पुत्र नयाहुआ शोक मे अकुलाया उस समयमे राजा सोमकान्त को ये कहनेलगा हेमकण्ठ के अजा आप विनाराज्यसे स्त्रियोसे प्राणोसे द्रव्यके ढेरोसे हेराजो, मैं सिंह कहीं कुछ करनाही नहीं है २५ विना तेल के जैसे दीपक विनाप्राण जैसे तन सो धर्मपालक हे राजन् तुम्हारे विना तैसेही मेराराज्य वृथाहै २६ सूतजीवोले कि राजा मंत्रियोका सुधर्मा का अरु पुत्रके वचन रूप अमृतको पीकर हर्षमनहो, धर्म से सत्य पुत्र को कहनेलगा २७ राजा बोला कि हे पुत्र पिताके वचन में सदा युक्त श्रद्धासे श्राद्धकरनेवाला अरु जो गयाजी में पिण्डदेवै सो पुत्र कहाताहै २८ अरु हे पुत्र जो धर्मशास्त्रार्थ के तत्त्व को जानै नीति जानता अरु सबको प्रसन्न करनेवालाहो सो पुत्रपदवाला होता है २९ इससे नीतिसे संयुक्त मेरीआज्ञा से राज्यकर मंत्रियो सहित सारी प्रजोंको पुत्रकीनाईं शिक्षादे ३० कोढ से गला निन्दितहुआ मे वनको चलाजाऊंगा सो हे सुन्दर नियमवाले सुधर्मा समेत हम दोनो जानेकी कहो ३१ इति गणेशपुराण उपासनाखण्ड में द्वितीयअध्याय हुआ ॥ २॥

तीसराअध्याय॥

सूतजीवोले कि सो राजा उठकर पुत्रको दहनेहाथसे पकड़कर उस सुन्दर महल मे लेगया जिसमें सदा सुलह करता रहा है १

जहां दिव्यरत्नोंसे जटित कंचन का सिंहासनहै मोती मूंगों से रचा इन्द्र के स्थानके समान शोभायमान था २ वहां पिता अरु पुत्र ये दोहीथे पर कईप्रकार से प्रकटहुये प्रकाशमानहुये अर्थात् एक २ रत्न मे पृथक् २ दीखरहे तौ जैसे सारे साथकरकेही शोभितहोवैं ३ तो राजा ने पहिले आचार धर्म्म अरु कईप्रकार की नीति वर्णन की सो अपने पुत्रकेलिये दयाधारी अरु निजकुल के यश के लिये कहना प्रारम्भकिया ४ सोमकांत राजा ने कहा कि हेपुत्र मनुष्य एकप्रहर रात्रिरहेपर जागा शय्या को छोड पवित्रस्थान मे बैठकर गुरुओंको स्मरणकरै ५ फिर इष्टदेवता को चितवनकर स्तुतिपूर्वक प्रणामकरे पृथ्वीको प्रार्थनाकर कहे कि हे जगन्माई मेरेपैरभिडाने को क्षमाकर ६ अब प्रात कालका आराधन वर्णनकरतेहैं कि शुद्ध हुआ मनुष्य कहै कि मै गणेशजी को प्रात काल स्मरण करता हूं कैसेहै वे कि समस्त जगत् के कारण हैं अरु ब्रह्मादिक देवताओ को बरदेनेवाले हे सारे शास्त्रोंके सहित धर्म्म अर्थ काम फलकेदेने वाले जनोके मोक्षकेकर्त्ता बाणीसे नहीं विषय कियेजायँ अर्थात् जो कहनेमे न आवें अरु जो आदिरहित अनन्तरूपहे तिन्हें ध्याताहूं ७ और कमलाकेपति जो भगवान् बड़ेबलवाले अरु अपने जन रक्षा के लिये नानाप्रकार के अवतारो को धारते क्षीरसागर वासी इन्द्र के बन्धु स्वामी पापहतनेहारे रिपुहारी ससारसे मुक्तिके कारण जो हे तिन्हें मैं प्रात काल नमस्कार करताहूं ८ अरु गिरिजा के पति जो शिवजीहे चन्द्रमौलि व्याघ्रचर्मढके कामदेव मे छोडीदया जिन्हों ने विष्णु अरु इन्द्रादिकोंको बरदेते सुरसिद्धसेवित सर्पोंको त्रिशूल डमरूको धारणकरतेहुये त्रिपुरारि जो महादेवहे तिन्हे प्रात नमस्कार करताहूं ९ और मै दिन के नाथ जो सूर्यजी हे पापहरनेवाले भारी अधकारको दूरकरनेवाले उत्तमलोक वन्दना के योग्य ॥ वेद त्रयीमय राक्षसीमाया हटानेवाले केवल आप कर्त्ताज्ञानके बड़ीशक्ति सहित उदारचित्त जो है तिन्हें प्रभात शीश नवाताहूं १० अरु जो ससार के ऐश्वर्य्य की कारण ससारसागर से पार उतारने वाली

आपही तीन नेत्रवाली तत्वो की आदि करनेवाली देवरिपुओं की मायादूरकरती मायामय सुरमुनि इन्द्रादिपूजित ऐसी जो गिरिजा भवानीदेवशी है तिन्हें प्रभातमनावताहूं ११ ऐसेही और भी देवता अरु मुनिजनोको नमस्कारकरके अरु मानस उपचारसे पूजक्षमा करावै १२ फिर सजलपात्र लेकर ग्राम की नैऋतिदिशाको चला जाय ब्राह्मणहो तो सुन्दर श्वेत मिट्टी लेकर अरु क्षत्री लाल १३ तैसेही वैश्य शूद्र कालीमृत्तिकाले पर कोईभी नदीकेतीरसे न खोदे अरु न खेतकी न सांपकेबिलकी न किसी ब्राह्मणके स्थानसेलेवे १४ तृणआदि से भूमिको ढककर उसपर मल मूत्रकोछोड़े कि दिनको उत्तर रातकोदक्षिणमें मुखकरके १५ नर पहले तृणादिसे गुदाको पोंछकर तथा काठ या पत्थरसे फिर पांचवार मिट्टीजलसेधोवै तिस पीछे १६ दशवेर बायाहाथ सातवेरदोनोकर एकवेर लिंग तीनवेर बायाँहाथ १७ और मूत्रकरनेमे दोनोहाथ दो २ वेर धोवै अरु एक बेर पैर ये शौच सदाकेलिये गृहस्थीको कहा १८ व्रतवाला इससे दूनाकरे वनमें रहनेवाला तिगुनाकरै अरु यती इससे चौगुणा करै अरु रातको मौनहोकर आधाकरले १६ अरु स्त्री शूद्रको दिन में आधा अरु रातको चौथाई शौचकरना कहा फिर आचमन करके दूधवाले काँटेदार वृक्ष का काष्ठ लेवे २० प्रार्थना पूर्वक उस दांतनको लेकर जीभ दांतोको शोधनकरै हे बनस्पते तू हमारे बल पराक्रम यश तेज पशु वृद्धि बल धन २१ मेधा अरु ब्रह्मबुद्धि दे फिर पहिले ठण्ढे जल से मल छुटानेवाला स्नान करके २२ फिर गृह्य सूत्रके मंत्रोसे न्हाय सन्ध्योपासन आचरणकरै जप होम अरु पठन तर्पण देवताओं का पूजन २३ वलिवैश्वदेव तथा अतिथि-सेवा अरु द्विजो की साक्षि सहित भोजन पुराण कथा श्रवण दान परनिन्दावर्जन २४ अरु पराया उपकार करै द्रव्य से प्राणोसे तथा वचनामृत से अरु किसी का अपकार अरु अपनी बडाई न करै २५ गुरुओंसे द्रोह वेद की निन्दा नास्तिकपना पापका करना अभक्ष्यभोजन परस्त्रीगमन न करे २६ अपनीस्त्रीकोभी अकालवर्जि

करे केवल ऋतुसमयमें ही गमनकरतारहे माता पिता अरु गुरू तथा गउओंकी सदाही सेवाकरतारहे २७ दीन अन्धे दरिद्रियोंको अन्न वस्त्रदेवे और प्राणनिकलेपर भी सत्यकात्याग न करै २८ अरुईश्वर का अनुग्रह जिनकेहै साधुओंका पालनकरना कि येअपराधके अनु सारसे धर्म्मशास्त्रको विचारकर २९ या पण्डितोंसे पूछके नीतिरीति स चतुराईसहितदण्डदेवे अरु जिसकाविश्वासनहो उसका विश्वास कभी नहीकरै ३० राज्यके छओगुणोंके प्रयोग से अपने राज्य को बधावे अपनीश्रद्धासे दानकरै नहीं तो क्षीणताको प्राप्तहोजाय ३१ ऐश्वर्य्य चाहनेवाले राजाको विश्वासकिये जनमें अधिक विश्वास न करना अरु वैरीमें जो विश्वासहुआहो तबभी उसेकभी नहीपतिआ वना ३२ और जो शत्रुव्याकुलहो तो उसपरचढ़ना अच्छानहीं दृष्टि चलायेरहे दूतोंसेबतलातारहे और राजदण्डदेनेको सदाही तैयार होय ३३ लोगदण्डहीके भयसे सब अपनेअपने धर्ममें स्थितहोरहे हैं औरतरह ये नियमनहों कि ये अपना या परायाहै ३४ जो अधर्मअ पनीनिन्दाकरे या कोईस्तुतिभी करे तो न क्रोधहो अरु न प्रसन्न होवे उसनिन्दासे अरुस्तुतिसेक्याहै ३५ और जो कोईपहिले खोट करके भी फेर शरणमें आजाय और जो पहिले धनीहो फिर दीन होजावे तो उसेयथाविधि से सदा पालनाही चाहिये ३६ और सलाह की गुप्तसदाही करनाचाहिये क्योंकि उत्तम राज्यकीजड यही कहाती है काम आदि छ शत्रुओंको हतकर फिर औरोंकोभी विशेषसेजीते ३७ आजीविकाकोछेदन प्रजाकानिकालना अरु देवताओंकाहटाना तथा वृक्ष वाटिकाओंका उजाडना श्रेष्ठराजा इतनेकामकभी न करै ३८ ग्रहणसमय में दानदेतारहै यशकेलिये त्यागभीकरे अरुमित्रो से कपटकभी न करै अरु गुप्तबात स्त्रियों से कभी न कहै ३९ ऋण केदबावसे ब्राह्मणोंको कोंच से गउवों को उद्धारकरे झूठकहींभी न बोले अरु सत्यकोकभी छोडे नहीं ४० तथा मन्त्रियोंका प्रजाओंका चाकरोंका चित्तहर अर्थात् प्याराहो ब्राह्मणों को अरु गुरुओं क सदा नमस्कार सत्कार करतारहै ४१ सूतजी बोले कि ऐसे राज

सोमकान्त हेमकण्ठपुत्रको और भी धर्मसमाचार अरु जैसा श्रवण किया नीतिशास्त्र सब सिखाकर ४२ फिरक्षेमकर, विद्याधर, रूपवान् इन मन्त्रियो को बुलाकर दोघडी ठहरके ४३ जहा तहां धरी नाना तयारियें मँगाकर अरु यज्ञकर्म्मो में सुन्दर निष्ठावाले वेद जाननेवाले ब्राह्मणो को राजा बुलाता भया ४४ अरु बडे बडे राजाओको रानियोको अरु अपने प्यारो को और पगत से प्रधान प्रधान नगरनिवासियोको भी राजा ने बुलाये ४५ शत्रुतापी निज पुत्र के राज्याभिषेक के लिये गणेशजी को पूजकर तथा इष्टदेवता को यथाविधि पूज ४६ ब्राह्मणो से स्वस्तिवाचन कराके और उन्हें अन्नसेतृप्ति करके षोड़श मातृका पूजन पहलेकर नान्दीमुख श्राद्धकरके ४७ मंत्री सहित शब्दोसे पुत्र का अभिषेक कराके सो राजा सोमकान्त अपने मुख्य तीनमन्त्रियो से ये वचन बोला ४८ राजा ने कहा हे मन्त्रियो तुम्हारी बुद्धि कि ये हमाराहो पुत्र है ऐसीरहो ये पुत्र मैने तुम्हारेही हाथो में सोपाहै ४९ जैसे नीति में चतुर आपलोगो से मेरी शिक्षा मानीगई तैसेही तुम नगरनिवासि जनसहित इसकी शिक्षाकोभी मानने योग्यहो ५०॥ इसप्रकार से श्रीगणेशपुराणउपासनाखण्ड में आचारआदि का निरूपणकरना यह तीसराअध्याय हुआ ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय॥

श्री सूतजी बोले इस राजा ने अभिषेक होतेही द्विजो का पूजन किया मणि अरु मोती मूंगे अरु सागोपाग दश हजार गऊ दई १ और सबको हाथी घोड़े धन वस्त्रोसे प्रसन्नकिये कईप्रकार के वस्त्र जो सुवर्णसे छपेभये २ अनेक वर्णोके कश्मीर देशके वड़ेवडेराजाओ को अरु रानियोको ग्रामके प्रधानों को ३ उनके नौकर गुणवालो को राजा यथायोग्य देताहुआ अरु मन्त्रियो को गांव अरु बहुतसा धनदिया ४ फिर राजा दुःख शोकसहित वनको गया अपने पूर्व्व जन्मके इकट्ठे दोषोसे अत्यत मलिन अरु अशुद्ध ५ उस राजाके

गये लोगोंमे बड़ाही हाहाकारमचा सब अपने अपने कामको छोड राजा पै गये ६ मंत्री रानी सुधर्म्मा प्यारो सहित सुत हमग्र ठ ये सब उठने पड़ते भागते अमाने रोतेहुये ७ मंत्री अरु नगरवाले दु:खीभये राजा को वर्जित करतेरह अरु राजा दो कोशही जाकर हारकर वैठगया ८ और एक ठंढे जल वाली वावडी नाना प्रकार के वृत्तसहित देख राजा सारे नगरवालो को मंत्रियोंको अरु अपने जनोकोवोला ९ हेजनो जो मुझसे बहुतकाल राज्यकरते अपराध वनाहो सो क्षमा करना चाहिये ये मेरी हाथ वँधी प्रार्थना है १० मेरे पुत्रपर कृपारखनी देव से कोई विघ्नहोतो मैं आपलोगोको यही विज्ञापन करता हू कि मेरे मेंसे स्नेह को न घटाओ ११ जो स्त्री सहित वृद्धजन आये हैं सो सब नगर को जावो अरु मेरे पुत्र से पालेहुये नीरोग रहो १२ अरु मुझे सारे आज्ञादेवो जिस्से मैं सुचित्तहुआ वनको जाऊ तुम सब अपने अपने स्थान चलेगये मेरा मन स्थिरहोय १३ तुम सब कृपा करके ये मेरा वडा उपकारकरो मैं दु:खित खोटे बचन कहने को मरता भी नहीं चाहता हूं १४ ये वड़ा भारी पाप मुझसेही कोई जन्म जन्मांतर में इकट्ठाकियागया है जिस्से राज्यका अरु हितकारी लोगो का वियोग हुआ १५ परमैंक्याकरू मारेकोढ़केगलरहाहू सवसंसार अपनेअपनेपुण्यपाप को भोगरहाहै १६ सूतजी वोले प्यारोने ऐसे राजाकेवचनसुने तो मूर्च्छीखा गिरे अरु कई अत्यन्त दु:खीभये हाथोसे शिर पीटतेहुये १७ कईएक जाननेवाले जो पंडितथे सो आपसमें पहिलेहुये राजो के चरित्रोंकरके राजामें ध्यावसकरतेहुये १८ और कई उस अवस्था को अत्यन्त नही समझने योग्य देखतेहुये ठहरगये जैसे ज्ञानीजन योगिस्वरूप पाजानेंपर स्थितहो १९ कोईएक धीरजन उसदु:खी सोमकात को वनको जानेकेलिये तैयारदेख धैर्यसे दु:खको थाम ये कहनेलगे २० मनुष्य वोले हे राजन् हमें पालपोषकर तुम त्यागने को योग्य नहीं हो जैसे जल अपनी ठंढक अरु अग्नि निजउष्णता को नहीं छोड़ता २१ और समुद्र अपनीमर्यादको अरु सूर्य्य प्रकाश

को हे जनदयाकारी तुम बिना हम नगरमें कैसे जावें २२ हे राजन् जैसे चन्द्रहीन तारागण सहित भी आकाश तैसे पुर तुम बिना हे शत्रुमारक शोभित नहींहोता २३ हमभी दो तीन तीर्थतक तुम्हारे साथही जायँ अरु हे कातिधारी तुम्हारा रूपभी तीर्थों के सेवन से कांतिमान होगा २४ फिर साथही ध्वजशोभित नगरको बड़ेहर्ष के साथ बाजे बन्दीजनआगाडीकिये आवेंगे २५ सूतजी बोले वो क्रोध दुःखसहित राजाउनका ऐसावचनसुनकर उनकोनवकरके वारवार बोला कि ऐसे नहीं २ । २६ तब हेमकंठ मंत्रियो सहित स्नेह के करुणाभाव अरु नम्रतासहितहोके दयावान् राजासे बोला कि २७ पुत्रबोला, मै आपके बिना जानेको अरु राज्य करनेको तथा जीनेको नहींचाहता मैने तुम्हाराविरह पहिले कभी नहींदेखा तो इसेकैसे सहोंगा २८ राजा ने कहा कि इसीलिये मैंने सुन्दर नीतिवाला धर्म्मशास्त्र उपदेश कियाथा उस शुभको तू वृथा अशुभ करने को योग्यनहींहै २९ अथवाहोताहै कि पहिले परशुरामजीने पिताकेवचन के अनुसार नीति ज्ञान बुद्धिमान् ने अपनी माता को भी हतो ३० और रामचन्द्र राज्यकोछोड भाईसमेत वनकोगये अरु बिन कारण पूछेही लक्ष्मण रामके आज्ञानुसार सीता को वनमें त्यागताभया ३१ हे हेमकण्ठ पुत्र इससे तू शीघ्रही मेरी आज्ञा से तीनों मंत्रियों के साथ पुरको जा अरु मेरे सौंपे राज्यकोकर ३२ जैसे कोई ज्ञानी कार्य्य में भी हो पर तिसका चित्त परमात्मा मेंही रहै अरु अच्छे प्रकारसे धरेधनमें जैसे सर्वकामना लगारहताहै ३३ तैसे मेरे वनको गयेभी मेरामन तेरेमेंही रहैगा दैवयोगसे सुन्दरहुआ तो फिर घर को आऊँ ३४ मेरे वाक्य किये तेरा जैसाधर्म होगा तैसा साथगये नहीं तिससे तू जा अरु मैं वनको जाताहूं ३५ सूतजीबोले कि तीन मंत्रिगण नगरवाले पुत्र जानेको मनकिये बड़े कष्टसेयुक्त राजा को नमस्कार करतहुये ३६ तब राजा से आज्ञा पाय आशीर्वचनों से सराहे राजाको प्रदक्षिणा करके उलटे अपने नगर को आये ३७ छत्र ध्वजा सहित सन्मानी हेमकण्ठ गज घोड़े पैदलवाली सेना

अगाड़ीकरके अपनी पुरीको आने का विचार किया ३८॥ इतिश्री गणेशपुराणउपासनाखण्डमेंचतुर्थअध्यायहुआ ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय॥

श्रीसूतजीबोले सुत तबतो मातोकेपास आकर स्नेहभीत बुद्धिसे कहनेलगा कि हे मात मुझबिने अपराधीको कैसेछोडतीहो १ पुत्र बोला कि तुमसेपिता ऐसेकहेजावे कि येपुत्र भी साथ लियाजावे तेरे बातके रोकनेसे वो मेरेकोअवश्य साथलेचलेंगे २ तबमें तुमदोनोंका सेवनकरूं तिसराज्यमे मेरीमतिनहीं है तुमसेरहित मुझको सो राज्य कैसा सुखदेवेगा ३ सुधर्मा बोली इतने दुःख शोक सहित राजामेरा वचन नहीं करेगा सो हेमहाभुज तू मेरीआज्ञासे जा ४ हे वीर मैं पातिव्रत भावसे परवश होरहीहूं स्त्रियोंके भर्तासे इतर देवता अरु मान्यकोईनहींहै ५ सूतबोले ऐसेसुनके प्यारोंसहित उसने मााताको नमस्कारकिया अरु परिक्रमाकर आज्ञाले पुरकोचला ६ जिसमें सजे नगरनिवासि तोरण ध्वजा पताका लगीभई छिड़काहुआ सुगन्ध सहित जैसा इन्द्रका नगर तैसा ७ वो राजा अपनसाथके जनोंको ताम्बूल बस्त्रदे विदाकर हर्षशोकयुत अपनेशोभायमान गृहमें प्रवेश हुआ ८ प्रजाको पुत्रोंकीनाई पालता राज्यकरताभया धर्मार्थ काम मोक्षोंमे यथासीख मनधरताभया ९ ऋषीश्वरोंने पूछा कि सोमकांत किस वनमेंगया क्या साथलिया अरु क्या किया सो सब कर्म हमें विस्तारसे कहो १० सूतजीबोले हा सोमकान्त जैसेवनकोगया अरु जाकर जोजोकामकिया सोसो मैं तुमसेसब कहताहूं हे निष्पापियो तुम आदरसहित श्रवणकरो ११ राजा सुबल ज्ञानगम्य मंत्री अरु सुधर्माधर्मपत्नीसहित कठिनवनमें प्रवेशहुआ १२ अगाडीदोनोमंत्री गये बीचमेंराजा पीछेधर्मपत्नी सुधर्माजी रामजीकेपीछे सीताजी की नाईजातीभई १३ एककालभोजी चारों एकचित्तआसन स्थानवाले अरु समान दुःख सुखी वनसे औरऔर वनमेंप्राप्तहोते चलेगये १४ क्षुधा तृषा खेद इनसे अरु नीचे ऊंचे गमनमार्गोंसे भी अत्यन्त थके

हारेकरछायाकेआश्रयहो बैठगये१५ फिर और वनमेंजाकर उन्होंने एकबडा सरोवरदेखा जहांकछुओंके साथ मच्छ हाथीसरीखे दीखरहे हैं १६ और ताड तमाल सरल चिरोंजी वृक्ष अशोगिया सुन्दरसीधे कटहर जामुन नींव पीपल बड आदि १७ वृक्ष नानाप्रकारकीबेलो के समूहोसेलिपटे सघकोनसे शोभितहुवे जहांपर्वतकी गुफाकेभीतर भारीअन्धेराहोरहा१८ जहांसुखसे भिटना कमोदिनी कमलकेसुगंध वालापवन और जिसवनसे मुनीश्वर कमलफूल लेजाते १९ जिस वन में हंस बगुले शिकरे सुवे कौवे कोयल मैना अरु चकवे नाना शब्दकररहे २० और न जिसवनमें नानाप्रकार के लताफलवृक्षोंके आश्रयहुवोंको चन्द्रमा सूर्यकीकिरणोंका मेल अर्थात् कोईप्रकारसे शीतउष्णकी बाधानहीं अरु न जहां क्षुधा तृषाकाभय अरु न मृत्यु हे द्विजेन्द्रो जैसे पुण्यकरनेवालोंको स्वर्गमें सुखहोताहै २१ तहांजा- कर सबने हारहारके ठण्डाजलपिया अरु न्हाय नित्यकर्म करके उ- न्होंने फलभोजनकिये २२ अरु क्षणभर राजाकोमलकच्छ अर्थात् सजलस्थान में आसनपरसोया अरुसुधर्मा धर्मपत्नी पैरदाबनेमेंरही २३ और दोमन्त्री उसराजाकी इच्छाजान आज्ञालेकर कंदमूलफल अरुकमललेनेको गये२४सुधर्मानेवहांअद्भुतरूपवालातेजस्वीकांतिसे मानो जलताहुआ ऐसेबालकको देखा अपनेअच्छे रूपकेकार्यकेलिये मानो पहिले से स्मरणकरता हुआही बालक जन्मा हो अर्थात् ये हमारा स्वच्छशरीर करनेकेलिये मानोससारमेंआया ऐसेबालकको रानीने जाना २५ वो सुधर्मा उसे देखतेही हर्षी अरु अपना परम हितकारीमाना उसका हृदयचलायमान अरु प्रसन्नदेख इसउपकार करनेवालेको निजकार्य निवेदनकिया२६ उसेपूछा तू कौनअरुकहां से आया किसकापुत्रहैअरु तेरीमाताकौनहै सो मुझसे कहअरुशब्द रूपअमृतकीधारसे हितुकीनाईं मेरेकानोको शीघ्रही प्रसन्नकर २७ सूतजीबोले इसप्रकार प्रकटपूछा बालकउसराजपत्नीको अमृतवा- णीसेबोला कि हे भामिनि मेरा पिता भृगु है पुलोमा मेरीमाता है अरु जलकेअर्थ अपनेघरसे यहांआयाहूं २८ हे शुभे च्यवननाम से

मैं पिताका आज्ञाकारीहूं अरु तूकौनहै यह तेराकौनहै अरु किसलिये
इसवनमें आयाहै २६ येइसके अंग बर्षा कालमें पर्वतकेसीतरें क्यों
चुवरहेहैं अरु ऐसाअत्यन्त दुर्गन्धिपन किसकुकर्मसे इसकेहै सोकहु
३० कीडोंके वोहसे युक्त तू इसको कैसेसेवैहै आपबहुतसुन्दर कोमल
कुमारी सुन्दर नेत्रवालीतू दुःख भोगैहै ३१ सुन्दर प्रसन्नवदनी को-
मलसब अंग शोभित तेरे पिता भाई बन्धु ब्राह्मणो करके ३२ ये कुष्टी
कीडो के वोहसे भी दुःखी कैसे अच्छाजाना गया इसको तैने कैसे
वरलिया अरु इसदुर्घटवनमें कैसेआई ३३ सूतजीवोले भोबुद्धिमान्
मुनिपुत्र से ऐसेपूछीगई सुधर्मा शोकहर्ष सहित उसे सारीव्याख्या
कहनेलगी ३४ सुधर्म्मा वोली सौराष्ट्रदेश मे विख्यात एक देवता-
ख्यनाम से भारीपुर है तहां ये सोमकान्त मेरा भर्त्ता राज्य करता
रहा ३५ अत्यंत सन्मानी अरु पुण्यात्मा शूरवीर दृढबलवाला॥ अ-
गाधबल युक्त शत्रुओ के राज्य को मर्दन अर्थात् हटानेवाला ३६
यज्ञ करनेवाला बडा सुन्दर शोभा सहित सुहृद सुखकारी। सब
कार्य्यो के विवेक से संयुक्त नीति शास्त्र मे चतुर ३७ हे उत्तमद्विज
ये राजा अपने राज्यको बहुतकाल भोग अरु अब इस अवस्थाको
प्राप्तहुआ अपने पूर्वकर्म के फलसे ३८ दो मंत्री सहित इसवन में
आया है पुत्रको राज्यदेकर आतेहुये इसके पीठपीछे लगी भ्रमती
हुई मे ३६ सुवल ज्ञानगम्य मंत्री सहित यहां आई राजाकीआज्ञा
लेकरके वे दोनो फलो के लिये वनकोगये है ४० यहां हमको रा-
क्षस भूत प्रेत पिशाच मृग पक्षी नानाप्रकार से डराते है परहमैंये
खाते कैसेनहीं है ४१ नजाने अगाड़ी औरभी दुःख भोगनेके लिये
हीछोडते है। इस दुःख के अखोटेकिये कुकर्मके अन्तको नहींदेखती
हूं ४२ कडुवा तीखा खट्टा खारी मीठा चिकना इतने भोजन मे भी
तैसी रुचि इसकी न भई ब्राह्मणो से सहित ४३ जैसे अब कन्द
मूल कसीले खट्टे फलो में है दरिद्रियो का महाभोजन पकाया भी
भोजन किया ४४ तैसेभाग्यवानो के भोजन में अरु पाकमें शक्ति
न होवैजोकि कोमल दिव्य मनोहर बिछौने में सोता था ४५ अब

महर्षियोंको दुखदेनेहो वह समयका उलटापन देखो जिसके दिशों में व्याप्त सुगन्ध फैलते रहे ४६ जो पण्डितो के साथ आनन्दमय ... क्या अपराध रुधिरलिये हुवेको ये महा दुर्गन्ध ... है ४७ सो अब दु खमय सागरमे कीडोसे लिपटा ... है सो हे ... न जाने इसदु ख सागरको हमकैसेपारकरैंगे ४८ तु ... समुद्र मे डूबनेवाला हमारा नौका चलानेवालारूप उद्धारनेवालाहो जा ४९ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें सु-धर्मा च्यवनका सम्वाद नामसे पचमअध्याय हुवा ॥

छठा अध्याय ॥

श्री सूतजी बोले भृगुजीका पुत्र च्यवन उस राजाके ऐसे वचन सुन तुरंत जलभरा कलश लाकर १ पराये दु खसे दु खी भया वहां घर चला आया। भृगुजी ने बिलम्ब कारी पुत्र को पूछा २ भृगुजी बोले तैंने ऐसा अपूर्व क्या आश्चर्य देखा जिससे तु चकित सा दीखताहै। अरु हेपुत्र विलंबभी कैसे हुआ सो मेरे आगे कहु ३ पुत्र बोला सौराष्ट्रनाम विख्यातदेशके देव नगर मे हे मुनिजीसो-मकांत ऐसे नामसे कमल से नेत्र वाला राजा ४ धर्मसे प्रजाको पालता बहुत काल राज्य करता रहा। प्रारब्ध वश से दुर्भगपने अर्थात् महारोग को प्राप्त पुत्रको राज्य में रख ५ सुधर्मा पत्नी सहित जिस रानीने भर्त्ताकी ... अरु ज्ञानगम्य
मंत्रियों सहित यहां आगया ६ ... की खोटी
स्थानको लिये। ... गौतम मु... ...वे ७
कहां तो सुंदर ... ये सु... वाला
-पति इस वृत्तां... मुझको ... है
यावान् वचनो...
फिर में कलश पू...
जो च्यवन से कहा
भृगुबोले हेपत्र मेरी

में उनका चरित देखूंगा या अपना भी उन्हें देखाऊंगा ११ श्री
गणेशजी महाराज सूतजीबोले ऐसे पिता से प्रेरणा करुणा सागर
च्यवन उस तडाग भूमि पर सुधर्म्मा के देखने को चाव करता
चलागया १२ उसी क्षणमें मंत्री कंद मूल फल भार सहित सुबल
अरु ज्ञान गम्य राजाके निकट आये १३ तव वो च्यवन मुनि सु-
लोचन वाली सुधर्मासे बोला हे सुनेम वाली मेरापिता तुम सवको
आश्रम पर बुलाताहै १४ शोकसे व्याकुल सुधर्मा उसके ऐसेवचन
सुन। तभी सावधान हुई जैसे प्राणआये शरीर १५ शीलवती वो
राजपत्नी उसके वचन अमृतको पीकर। सुंदर शरीर वाली दोनों
मंत्रियो सहित वो आई १६ अपने सोमकात पतिसाथ च्यवन को
अगाडी किये। अरु वो कल्याणवती गणेश स्कंद अरु शिवजी के
भी सहित मानो १७ वृहस्पतिजी को आगे लियेआती हो मार्ग
में ऐसी शोभित हुई। अरु मन्त्रध्वनि से युक्त भृगुजी के गृह मंडल
को प्राप्तहुई१८ जो कई प्रकारके फूल वेलो से युक्त अनेक पक्षी
नाद सहित। अरु जहा विलाव, नोले, शिकरे, हाथी, गाय, मोर
१९ साप, पखेरू, नाहर वगैरे, ये खेलरहे। अरु जहा न बहुतसा
पवनवगे। न सूर्य्यअत्यततपे २० न दृढ मेघवर्षे अरु वर्षेतोइच्छा-
नुसार वर्षे। मुनि पुत्रको अगाडीलिये वे हर्ष सहित उस आश्रम
में प्रवेशहुये २१ तहां आश्चर्य्य रूप व्याघ्र मृग चर्म पर स्थित
सूर्य्य सरीखे भृगुमुनिजीको देखे तब तो राजा अरु रानीदोनोमंत्री
नये अरु यह प्रार्थना करतेभये २२ राजाबोला हे ब्राह्मणो के इन्द्र
द्विजोकी दई मेरी आशीर्वाद अब सफल भई। धर्मसमूह अरु तप
भी। अरुमै जन्मसे ले आज पर्य्यंत पवित्रहुआ अरु माता पितासे
मेरा जन्मलेना भी सफल भयाहै २३ हे मुनीन्द्र आपका दर्शन
तीन कालमे जन्मको पवित्र करता है सम्प्रति वर्तमान कालमें तो
पाप हरता है। अरु पहिले जन्मके इकट्ठेकिये पुण्य समूहों से भया
अरु आनेवाले कल्याणका करनेवालाहै ऐसे सबकाल में कर्तव्यहै
२४ हे सत्य दृष्टिमुनि अवश्य करके पाप से डरे सुनीतिज्ञ मैं

करके सौराष्ट्र देश देवतारूयपुर में राज्यकिया अरु ब्राह्मण देवता ओंकी पूजाकीगई २५ अब अकस्मात् मेरे यहक्या पापउत्पन्नहुआ महाभारी जिसका अंतनहीं। जिससे मैं ऐसी कुदशाको प्राप्तकिया कुछभी इसके उद्धारको नहीं जानता २६ किये उपाय भी मिथ्या हुयेजाते हे अब आपसे किये उपायको करना चाहताहू। अवश्य जिनका बैरभी है वे भी तुम्हारे शरणहो निर्वैर होजाते हैं २७ सूत जीबोले करुणाकर भृगुजी उसको यहवचनसुन। सुव्रतीमुनि ध्यान से विचार उस सोमकांत राजाको ये कहने लगे २८ भृगुजीबोले हेराजन् उपायकहताहूं तू चिन्ता करनेको योग्य नहींहै क्योंकिमेरे आश्रम आये प्राणी दुःख नहींपाते हैं २९ हे राजन् तेराये जन्मान्तरका किया पापहै। जिससे इसदशाको प्राप्तहुआहै सोभी तेरे से अभी कहताहूंगा ३० पहिले तुमसारे बहुत कालसे भूखे अरुहारे थके वनसे बनांतरमें आये म्लानमुख होरहे इससे भोजनकरलेवो ३१सूतजीबोले ऐसेकह मुनिजीने तैलउबटना लगवाउनकोन्हवाये अरुछः स्वादु के सरस अनेक अन्न भोजन करवाये ३२ वेभी अतुल तेज भृगुजीकी आज्ञासे न्हाये सुन्दरसजे विश्रामहो भोजन करते हुये ३३ अरुभारी चिन्ता तज मुनिजीकी बताई कोमल शय्यापर सोये मानो अपने राज्यको प्राप्तहीहुयेहों ३४ इतिश्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमेंभृगुजीकेआश्रममेंगमननामसेषष्ठअध्यायहुआ६ ॥

सातवां अध्याय॥

ऋषियोंने कहा कि हे द्विजोत्तम ये दूसरेश्लोक से सम्बन्ध सम्बोधनहै। तब सोमकान्त नृप ने वहांजाके क्याकिया अरु सर्ववेत्ता भृगुजीने कौनउपायकहा१ यह कथा हमसुननेवालोंको कहोतुम्हारे वाक्यामृतको पीकर तृप्तनहीं होतेहैं २ सूतजीबोले हे बड़भागियो तुमने अच्छीपूछी तुमतोज्ञानके समुद्रहो। हे द्विजोजो श्रोतायावक्ता कथाके पारको नहीं पहुचे ३ या जो लिखेको ही बाचताहो अर्थात् और कुछ शास्त्र बलसे रहित हो या जो पुस्तक हरै चुरावै अर्थात्

वांचते २ छोड आगे कहने लगजावे। अरु जो शिष्यप्रश्न न करे सुनताहीजाय जो गुरुपूंछनेसे उत्तर न देवे ४ वे दोनोंगूंगेवहरे श्रेष्ठ द्विजो लोक मे देखेगये अर्थात् समझने चाहिये अब मैं सोमकान्त कथा कहताहूंगा तुम श्रवणकरो ५ तिसरात्रि व्यतीतहुये अरु सूर्य जीके उदयहुये भृगु श्रेष्ठ मुनि स्नान सध्या जप होमकरके ६ न्हाये जप किये रानी मन्त्री सहित राजाकेलिये पूर्वजन्म कथा कहने को आरम्भ करतेहुये ७ भृगु जी बोले कि बिन्ध्याचल पर्वत के समीप रमणीय कोल्हार नाम नगरमें। चिद्रूपऐसे नामकरके विख्यात महाधनी वैश्यहुआ ८ उसकीभार्य्या सुभगसुलोचना नामसेविख्यात हुई। जो सुशीलवती दान चित्तवाली अरु पति के बचन में परायण पतिव्रता९ हे नृपश्रेष्ठ तू पूर्वजन्म में उसकापुत्रहुआ। दोनोतेरे मा बाप द्विजोंकिसे (कामन्द) ऐसानाम करतेहुये १० एकले तुझ में अत्यन्त स्नेह अरु रात्रि दिन बड़ा लाड अपना बुढ़ापा समयआये प्रेमपूर्वक करतेरहे ११ फिर उन्होने तेराधन कौतुक मङ्गल सहित तेराविवाहकिया स्त्री मृगनयनी सुकुमारी कुटुम्बनी नाममविख्यात आई १२ सो तेरे में सदा स्नेह किये अरु द्विज देवता अतिथियो के पुजनकी प्यारी वो स्त्री स्त्रियोमेसुन्दर मणिसी अत्यन्त शोभित हुई १३ उसने (कुटुम्बिनी) इसअपने नामको अर्थसहित करदिया कि सातपुत्रोवाली पांच जिसकेकन्या अरु कामदेवकी बड़ीहीप्यारी १४ तब तो बहुतकालगये तेरापिता मृत्युको प्राप्तभया तेरी माता पतिव्रता तिसकेसाथ जली सो स्वर्गकोगई१५ फिर तू सखा गणके साथ उसवहुतसे द्रव्यको नाशकरताहुआ। लाया खोया खोया धन नष्टहुआ १६ तेरी धर्मपत्नी चिन्ताकर तुझको अत्यन्तही उलाहना कर समझातीरही पर तैंने उसके वाक्यको कुछ न स्वीकारकिया फिर घरभी वेचदिया १७ वो तेरीआज्ञाले बालकोसमेत पिताके घरगई अपनीसन्तान पालनेको तुझवश कांटेकोविनाही दुःखीभई १८ तब तो तुझको ऐसाघोर मदप्राप्तहुआ जैसे मदिरा पीनेवालाउन्मत्तहो नगरमें अन्यायकरनेवाला मत्तहाथीसाहो १९ परधनहारी [

मे जारी अर्थात् परस्त्रीरत, गावोमेंचोर, मनुष्यो को तपानेवालाक-ठोर। जूवेमें वीर, पाप समूहमें सार अर्थात् सोरहिंसा मे विहार करनेवाला धीर, अरुविना बलका शूरबीर २० जो जो जन तेरेसुख सगसेप्रसन्नथे उनसे बहुतधनलेकरखागया पिताकीकरीघरोडसेप्या-रोसे नगरनिवासियोसे कोईमिसकरके छलकर द्रव्यलेतारहा २१ अरुतूने कईआवश्यकसोखाकर उनको मिथ्याकरदईअरुझूठोमें अरु स्त्रीजनोंमें साक्षीहो बिपरीतहोगया। ऐसे तेरे से लोकोने बडाभय माना जैसे घरमेंआये भारी सर्पसे भयहोवे २२ तिससे लोकका न सहने योग्य होगया जैसे कांटेवाला गोखरू क्षीरभोजन में आया दु:खीकरे।तो वे सारेजनराजाकी आज्ञासे तुझे इसपुर से निकालते हुवे २३ वनमें रहते बहु जीवघाती तू स्त्री बालक वृद्धो को नित्य मारतारहा और महाजन अर्थात् किसीराजा आदि के अधिकारी पुरुषकोदेख के पलायमान होतारहा जैसे भेडिया या मृग सिहको देखतेही भागजावे २४ और तू मच्छ, वगले, सारस, मुरगे, भेडिये हरिण, वन्दर, कोयल, अरु बारहसींगे, शशे, गोह इन जीवो को वृथाही मारकर अपने देह को पालता भया २५ अरु सिह, वघेडे, गीदड इन्हें पर्वतकी कन्दराओसे निकालकर अरु अनेकस्थान नि-वासीमहाखोटेचोरोको अपनेमे मिलाकर२६ अरु काठ लोह पत्थरो सेअच्छा घरबनाताभया।जो कोशलम्वाभारी कईकौतुक मण्डनोसे शोभित २७ लोकसे या राजकेभयसेडरे पिताने वो तेरीपत्नीबालको समेत तेरेगुफाकेघरमें पहुचादई २८ कई प्रकारके गहने वस्त्र भूषित बालक अरु वो स्त्री देवाङ्गनासी शोभायमानरही अरु तू चोरसरीखा २९ और तू मार्गमें मनुष्यो विचारोंकोमार गुहामें गया चोर अरु बालक स्त्री करके वहाकाराजा सरीखा देखनेमे आतारहा था ३० किसीसमय विद्वान द्विज गुणवर्द्धन नामसेविख्यात मध्याह्नसमय में मार्गमें इकला तैनेदेखा ३१ उसब्राह्मणका दहनाहाथ पकडकर तू ठहरगया वो कांपता उसधूर्तताकरके तेरीदुर्बुद्धिको जानताहुआ ३२ अरु तुझेकालहीमानके मूर्च्छितहुआ जीवनकी आशाकरके अरु

हेतुसहित अत्यन्तही करुणामय वाक्योसे तुझे चिताताहुआ वोला ३३ गुणवर्द्धनने कहा तू सुन्दर धनवान होकर अरु विन अपराधी नवीन स्त्रीके पति मुझशान्त चित्त ब्राह्मणको कैसे मारनाचाहता है ३४ तू खोटीवुद्धिकी वासनाछोड़ अरु श्रेष्ठधर्ममे मतिकोकर। मेरी पहली भार्यातोगई और सुन्दरकान्ता आईहै३५ सुन्दर आचारसहित अत्यन्त उदार चित्तवाली पतिव्रता सवगुणो की खानि उसे मैनेपित्रोके ऋणनिवृत्ति प्रयोजनकेलिये अरुधर्मसे सन्तान वृद्धिके लिये ३६ गृहस्थ धर्मकी इच्छाकरके मैंने अतिही प्रयत्नकरके उसे की अर्थात् व्याहीहै। मुझबिनाउसका अरु उसविना मेराऐसेदोनो के भी जन्मलिये वृथाहोते हैं ३७ इससे अव तूमेरा माता पिताहो अरु मै तेरापुत्रहू अरु शास्त्रमें जीवदाता भयसेत्राता अर्थात् रक्षक पिताहीकहाताहै ३८ और शरणआये ब्राह्मणकी तो चौर भी रक्षा करतेहै इससेयोग्य शरणागत मुझ ब्राह्मणको तू छोड़ने योग्यही है ३९ नहींतो हजारकल्प तू नरकोको पहुचेगा अरु ये सारे स्त्री पुत्र प्यारेजन भोक्ता अर्थात् खानेवालेही है ४० अरु तेरे पाप के भोगनेवाले न विराने वालेहैं तू कितनेही जन्मतक पापभोगतारहेगा इसमें कुछतर्कनानहीं जानीजातीहै४१ ॥ इतिगणेशपुराणउत्तराखण्डमें सोमकान्तकेपूर्वजन्मका कथननामसातवांअध्यायहुआ७ ॥

आठवांअध्याय ॥

भृगुजीवोले वारबार ग्लानि करके उसने यह वाक्य कहा उस करुणाभरेको सुनकरभी तेराहृदय न विंधा१तो तेरेमेंब्रह्मासेवनाया लोहसे भी कठोरहो तो क्याहै क्योकि तैंने हजारोंजीव अरुमनुष्यों को माराहै २ पशुघ्नकीनाई अत्यन्त निठुराईको प्राप्तहुये मन तेने कालकीतरे निष्ठुरहो ये कहा ३ चोरवोला हेविप्रमेरे में वृथानियोग कियेसे अर्थात् कहे तेरे वचनों से क्याहै। जैसे मूढश्रोतामें पंडिताई अरु औंधेघड़े में जलडालना वृथाहै ४ मेरी मूढमति तो कहां अरु तेरा ये शुद्धउपदेश कहां किसीभौंरेके तत्त्वज्ञान की चिन्ता की तरें

ये तेराकहा मुझको नहीरुचताहै ५ द्रव्यमें आसक्त मनवालेके पिता भाई का विचार कुछनहीहै जैसे कामसे आतुर को भय लज्जा भी नहीहोतेहैं६ कभी कव्वेमेंशोच जुवारीमें सत्य नपुंसक जनमे धीरता स्त्रीमें विषय का सन्तोष अरु सर्पमें क्षमा तैंने कहु कभी देखी है क्या ७ व्यापारसे रहित मेरेआगे विधाताने तुम्हें दैवयोगसे भेजा है सोमें तुम्हें कभीनहीं छोडता ८ भृगुबोले ऐसेकह पैनाखड्ग हाथ में लेकर तिसका शिर बिलाव के किसीमूसे के मस्तक की नाई काट डाला ९ ऐसेतेरीकरी ब्रह्महत्याओकी भी सख्या गिनती करने में नहीआती अरु स्त्री, बालक, बूढ़ेजीवोको तो विशेषकरके नहीजानी जाती १० परायेपापो का गिननेवाला दोष भागी होताहै अरु हे कामन्द बहुतसी समय बीते तेरे वृद्धता ११ आई तो कफ,ग्लानि पसीना,हुचकी,कँपाईहुई अरु। आलसता सोते अरु बैठेभी बहुतही हुई १२ अरु तेरेपुत्र, दासो दासो ने तेरा अनादरकिया । और जो प्यारे अरुप्रियसुतभीथे तथा जो प्यारे नातेदारथे वेभी तैसेहीहुये१३ एकही तेरा देखामिलानहीं निवारण कीजाय गतिनाम गमनजिस का अर्थात् कामकेलिये जाना निष्फलनहो सो द्विजतेरेसे १४ सब वनबासी मुनियो को पुकारनें अर्थात् बुलाने के लिये भेजा गया । अरु वेभी तेरेभयसे तथा बिप्रकेबचनसे चलेआये १५ तू उन्हें नमस्कारकर बोला कि मुझसे दानलेओ। उन्होने कहा हम तेरेपतितके दानोको नहीं ग्रहणकरते१६ क्योकि पापीकोयज्ञ करानेसे पढानेसे मिलापसें सम्बन्धसे सम्भाषणसे अरु साथजाने बैठने भोजनकरने से भी पापीका पाप परायेको सचार करता अर्थात् चढताहै १७ वे तुझेऐसेकहते अपने आश्रमजायके सचेल अर्थात् वस्त्रोसहित न्हायें अरु पवित्र करनेवाली ऋचा जपतेहुये १८ फिरतो हे कामन्द तेरे मनमें रोगसे अरु निजजनों करके त्यागसेतथा ब्राह्मणोके हुहुडीकने से बडाही सन्तापहुआ १९ तबतो अपने कुप्यनाम रूपा आदि से इतरताम्र आदि धनरत्नो आदि सहितद्रव्यको भारीवधा देखके तेरीमति पुराने देवस्थानों के सुधारनेमें अतिबलवती होतीभई २०

फिर तौ वन में श्रीगणेश जीको परम पुराचीन सुन्दर मूर्त्ति छोटे जीर्ण देवस्थान मे स्थित तेरेको ब्राह्मणो करके कही अर्थात् वताई गई २१ तब तौं अतिही विस्तार सहित अरु लंबा चारतोरणलगा चारही द्वार सहित सुन्दर रुचने वाला चार शिखरो करके। शोभित २२ कई थंभो सहित चिनाहुआ अनेक चोतरो से कुटुम्बी सा शोभित। अरु मोतीमूंगे रत्न आदिको से जटित सुन्दर आगनौ सहित २३ नाना पुष्प वृक्ष सहित अरु फलित वृक्षोसे युक्त चारदिशाओं मे सुन्दर जलभरी बापियो करके विशेष शोभायमान २४ मन्दिर को बनातेहुये तेरा वो द्रव्य व्ययहुआ अर्थात् लगगया। अरु कुछ स्त्री करके अरु पुत्रो करके प्यारो करके बांधवो करके हरा अर्थात् निज २ काममे लाया गया २५ तब तो थोडेही कालमें तूमृत्युको प्राप्तभया तौ यमके दूतो करके कसियो के प्रहारों से अत्यंत ही ताडना कियागया २६ कांटोसे विंधा सब अंग जिसका सो तू दुष्ट शिला पर लिटाया गया अरुघोर नर्कमे भी डुबाया जिसमें राध रुधिर भरे सोही कीच २७ ऐसे उनदूतो करके तू चित्रगुप्त यमराजके निकट पहुचाया गया अरु यमसे पूछागया कि तू प्रथम पुण्य भोगेगा या पाप २८ तैने कहा कि हे सूर्य्य पुत्र यमराज मैं पहिले पुण्य भोगेगा। तबतू सोराष्ट्रदेशमें राजा बनायागया २९ ऐसे मैंने तेरा पापकारी पूर्वजन्म शरणमेंआयेके दयापाने से अपने तपबल के आश्रयसे तेरे को वर्णन किया ३० कांत अर्थात् सुन्दर मदर करने से तू सोमकांत नामसे नृप हुआ अत्यंत कमनीय कांता करके तू निज कांतिसे चन्द्रमा के समान प्रकाश मानहोरहाहै ३१ भृगुजी वोले कुकर्मसे खोटानृप सोमकांत भृगुजीसे कहा वचनसुन कर उसवाक्यमें संशय को प्राप्तहुआ पाषाण के जैसा क्रियारहित होगया ३२ क्योंकि जिसने वेद शास्त्रार्थ वेत्ता अरु भूत भविष्यत वर्तमान को जानने वाले तपस्वी जो भृगुजी तिनके भी कहेवाक्य मे संशय माना ३३ वो क्षणमात्रहीमें तिस राजाके शरीरसे तुरत ही नाना वर्णकी आकृति धारण किये कई पक्षि निकसे तबराजा

ये तेराकहा मुझको नहींरुचताहै ५ द्रव्यमें आसक्त मनवालेके पिता भाई का विचार कुछनहींहै जैसे कामसे आतुर को भय लज्जा भी नहींहोतेहैं६ कभी कव्वेमेंशोच जुवारीमें सत्य नपुंसक जनमें धीरता स्त्रीमें विषय का सन्तोष अरु सर्प्पमें क्षमा तैंने कहु कभी देखी है क्या ७ व्यापारसे रहित मेरेआगे विधाताने तुम्हें दैवयोगसे भेजा है सोमें तुम्हें कभीनहीं छोडता ८ भृगुबोले ऐसेकह पैनाखड्ग हाथ में लेकर तिसकाशिर बिलाव के किसीमूसे के मस्तक की नाई काट डाला ६ ऐसेतेरीकरी ब्रह्महत्याओंकी भी सख्या गिनती करने में नहींआती अरु स्त्री, बालक, बूढ़ेजीवोंकी तो विशेषकर के नहींजानी जाती १० परायेपापों का गिननेवाला दोष भागी होताहै अरु हे कामन्द बहुतसी समय वीते तेरे वृद्धता ११ आई तौ कफ,ग्लानि पसीना,हुचकी,कँपाईहुई अरु। आलसता सोते अरु बैठेभी बहुतही हुई १२ अरु तेरेपुत्र, दासो दासी ने तेरा अनादरकिया। औौर जो प्यारे अरुप्रियसुतभीथे तथा जो प्यारे नातेदारथे वेभी तैसेहीहुये१३, एकही तेरा देखामिला नहीं निवारण कीजाय गतिनाम गमनजिस का अर्थात् कामकेलिये जाना निष्फलनहो सो द्विजतेरेसे १४ सर्व वनबासी मुनियो को पुकारनें अर्थात् बुलाने के लिये भेजा गया। अरु वेभी तेरेभयसे तथा विप्रकेंबचनसे चलेआये १५ तू उन्हें नम-स्कारकर वोला कि मुझसे दानलेओ। उन्होंने कहा हम तेरेपतितके दानोंको नहीं ग्रहणकरते१६ क्योंकि पापीकोयज्ञ करानेसे पढ़ानेसे मिलापसें सम्बन्धसे सम्भाषणसें अरु साथजाने बैठने भोजनकरने से भी पापीका पाप परायेको संचार करता अर्थात् चढताहै १७ वे तुझेऐसेकहते अपने आश्रमजायके सचेल अर्थात् वस्त्रोसहित न्हायें अरु पवित्र करनेवाली ऋचा जपतेहुये १८ फिरतो हे कामन्द तेरे मनमें रोगसे अरु निजजनों करके त्यागसेतथा ब्राह्मणोके हुहुडकि-ने से वडाही सन्तापहुआ १६ तबतो अपने कुप्यनाम रूपा आदि से इतरताम्र आदि धनरत्नो आदि संहितद्रव्यको भारीबधा देखके तेरीमति पुराने देवस्थानों के सुधारनेमें अतिबळवती होतीभई २०

फिर तौ वन मे श्रीगणेश जीको परम पुराचीन सुन्दर मूर्ति छोटे जीर्ण देवस्थान मे स्थित तेरेको ब्राह्मणो करके कही अर्थात् बताई गई २१ तब तौ अतिही बिस्तार सहित अरु लबा चारतोरणलगा चारही द्वार सहित सुन्दर रुचने वाला चार शिखरो करके। शोभित २२ कई थभो सहित चिनाहुआ अनेक चौतरो से कुटुम्बी सा शोभित। अरु मोतीमूंगे रत्न आदिको से जटित सुन्दर आंगनोंसहित २३ नाना पुष्प वृक्ष सहित अरु फलित वृक्षोसे युक्त चारदिशाओं मे सुन्दर जलभरी बापियो करके विशेष शोभायमान २४ मन्दिर को बनातेहुये तेरा वो द्रव्य व्ययहुआ अर्थात् लगगया। अरु कुछ स्त्री करके अरु पुत्रो करके प्यारो करके बॉधवो करके हरा अर्थात् निज २ काममे लाया गया २५ तब तो थोडेही कालमे तूमृत्युको प्राप्तभया तो यमके दूतो करके कसियो के प्रहारों से अत्यंत ही ताडना कियागया २६ कांटोसे बिंघा सब अग जिसका सो तू दुष्ट शिला पर लिटाया गया अरुघोर नर्कमें भी डुबाया जिसमें राध रुधिर भरे सोही कीच २७ ऐसे उनदूतो करके तू चित्रगुप्त यम-राजके निकट पहुचाया गया अरु यमसे पूछागया कि तू प्रथम पुण्य भोगैगा या पाप २८ तैंने कहा कि हे सूर्य्य पुत्र यमराज मैं पहिले पुण्य भोगेगा। तबतू सोराष्ट्रदेशमे राजा बनायागया २९ ऐसे मैंने तेरा पापकारी पूर्वजन्म शरणमेंआयेके दयापाने से अपने तपबल के आश्रयसे तेरे को वर्णन किया ३० कांत अर्थात् सुन्दर मंदर करने से तू सोमकांत नामसे नृप हुआ अत्यंत कमनीय कांता करके तु निज कांतिसे चन्द्रमा के समान प्रकाश मानहोरहाहै ३१ सूतजी बोले कुकर्मसे खोटानृप सोमकांत भृगुजीसे कहा वचनसुन कर उसवाक्यमें सशय को प्राप्तहुआ पाषाण के जैसा क्रियारहित होगया ३२ क्योकि जिसने वेद शास्त्रार्थ वेत्ता अरु भूत भविष्यत वर्तमान को जानने वाले तपस्वी जो भृगुजी तिनके भी कहेवाक्य मे सशय माना ३३ वो क्षणमात्रहीमे तिस राजाके शरीरसे तुरत ही नाना वर्णकी आकृति धारण किये कई पक्षि निकसे तबराजा

को खानेलगे ३४ अरु उड़ २ कर अपने दृढचोंचके अग्र भागों से मनुष्य रूप पशु राजाके उठगये अरु उसके शरीरके मासखडोंको मुनिजीके समीप लालाके भक्षण करते भये ३५ तब अतिदुःखित शरीर फिर शरण में आया अरु ज्ञान तपके समुद्र रूप भृगुजीको दीनवाणीसे कहने लगा ३६ राजाबोले कि आपके बनमे तौजाति के वैर वालोंको आपसमे भय नहीं था अरु अब तुम्हारे सन्मुखही कैसे मुझमरे को मार रहे हैं ३७ तुम्हारे चरण में न येको कुटी शरणमें आये मुझको हेसर्वजीवोंको अभय कारी मुनिजी अब इनसे छुडावो ३८ सूतजी बोले ऐसे कहे दीन दयालु भृगुजी ने फिर भी उससे कहा कि हे नृप मेरे वाक्यमें सन्देह करेसे तुझ करके ऐसा अनुभव किया अर्थात् ये अद्भुत रूप भय भोगना पडा ३९ हे नृप व स्वस्थ चित्त हो मैं तुझे इसका उपाय कहूंगा अरु ये पक्षि मेरे हुंकार मात्रही से जातेरहेंगे ४० सूतजी बोले कि ब्राह्मण का हुंकार सुनतेही द्विज जो पक्षी थे सो सब अन्तर्द्धानहोगये अरु राजा भी राजी मन्त्रियो समेत प्रसन्न मन भया ४१ इस प्रकार से श्री गणेशपुराण उपासना खण्डमें नाना पक्षियो का निवारण करना इस नामसे अष्टम अध्याय हुआ ८ ॥

नवां अध्याय ॥

श्री सूतजी बोले तब भृगु जी एकक्षण ध्यान करके उसके पूर्व जन्मके कर्मज पापको विचार विह्वलहुये फिर उस राजाको कहने लगे १ भृगुजी बोले तेरे पापोंके समूह तो कहा अर्थात् बहुत अरु मेरे कहनेके उपाय कहातक कहूं तब भी मैं अवश्य तेरे पापोका नाश करनेवाला उपाय कहताहूं २ कि जो तू शीघ्रही गणेशपुराण को सुनैगा तो तभी दुःख सागरसे छूटेगा इसमे सशय नहीं है ३ मुनि उसे ऐसे कहकर गणेश जीका नामाष्टशत अर्थात् एकसौ आठनाम स्तोत्रकोजपके जलको पढकर उसराजाको छिरकतेभये ४ मुनिजी करके जल छिड़कतेही उस राजाकी नासिका के छिद्रसे

एक ह्रस्व स्वरूप काले मुखका अगाडी पड़ापाया अरु तिसी क्षण
से वा वढने लगा अरु वो सातताल प्रमाणका होगया अंगुष्ट अरु
मध्यकी अंगुली को पसारे जो विस्तार हो सोतालहै ऐसा वो मुंह
फैलाये भयकारी विकराल जीभ निकाले रक्तनेत्र किये वडे हाथों
वाला जटाधारी ६ मुखसे भारी अग्नि उगलता हुआ तथा उसी
क्षणमें कभी राध रुधिर नेत्रोंको आंधेसे करता मानो दूसरा अंध
कारहीहो ७ उस आश्रम निवासी सारेउसे अपनी डाढोंके शब्द से
दशोदियाओं को पूरता अर्थात् शब्दित करता हुआ देखकर भाग
गये ८ द्विजश्रेष्ठ मुनिने राजाके सामनेहीं उस पुरुषको जानते भी
थे पर राजाको निश्चय के लिये पूछा कितू कौन है तेरानाम क्या
सो मुझको कहु ९ तव तो विप्रसे पूछा वो उलट करके बोला कि मैं
(पापपुरुष) इसनामसे सव प्राणिमात्रके शरीर में स्थित हूं १०
तुम्हारे मंत्रसे जलपात हुये से मैं राजा के देह से निकला अव
मैं क्षुधा से आतुर हुआ भोजन चाहताहू,मुझको देवोनही तौ ११
हे मुनेतेरे आगेही इनलोगोंको अरु इस सोमकांत को भी खायेले-
ताहूंगा अरुयहांसे निकले मुझको रमणीयस्थान वतावो १२ तव
तो वाहर आकर मुनीश्वर ने कहा कि इस सीधे रस रहित आम्र
के वृक्षके छेदमें रहु १३ मेरी आज्ञा करके गलेपत्ते खात रहु नहीं
तो मैं तुझको भस्म करदेऊ हेअधम मेराबचन मिथ्यानहीहै १४
सूतजी वोले ऐसे उस मुनिने वाक्य कहें पर उसने सूखे वृक्ष को
भींट तो हे द्विजो वो वृक्ष तत्काल स्पर्श मात्रही होते सारा भस्म
हुआ १५ वा मुनिकभयसे उसीभस्ममें लीनहोगया उसकेलयहुये
मुनिजी सोमकांत से फिर वोले १६ भृगुजीकहतेहै कि हे नृपोत्तम
पुराणके श्रवणका जो तेरा फलहुआ जव तकये आम्रवृक्षफिर हरा
भरा होउठे १७ तवतक तू भस्ममें उसे लगातारहु। हे राजन् इस
तरुके वढे पर तू पाप रहित होजावेगा १८ राजावोले हे ब्राह्मन्
गणेशजीका जो पुराणहै सो मैंने न देखा अरु न कहींसुनावो कहां
मिलै अरु हे मुने उसका व्याख्यान करने वाला कौनहै १९ मुनि

बोले ब्रह्माजीने पहिले बुद्धिमान् व्यासजीको कहा अरु व्यास से मुझे बिदित अर्थात् प्राप्त हुआ जो कि पाप नाशक पुराण है २० सोमै तुझको कहूगा तू तीर्थमे स्नान करले अरु हे सुव्रत मै पुराण श्रवण करूगा ऐसे सकल्प कर २१ सूतजी बोले वो राजा सोम-कांत भृगुजी से प्रेरा बिख्यात भृगुतीर्थ में स्नान करके फिर हर्ष युक्त हो प्रतिज्ञा करता भया २२ आज अवसे मैं गणेशजीका जो पुराण है उसे श्रवण करूगा। तो संकल्प मात्रहीके किये राजा रोग रहित होगया २३ भृगुजीके प्रसादसे रुधिर वहने से मिटा कीडोंके घावदूरहुये फिर भृगजी उस विस्मित हर्षे राजाको लेकर २४ आप निज आसन पर बैठ उसेभी आसनदिवाया। तोदिव्यहै कांति जिसकी ऐसा श्रेष्ठराजा बैठकर मुनिजीको येबोला २५ राजा बोला आपके प्रसादसे मेरी बडीभारी सारी व्यथा सकल्पमात्रहीसे जातीरही अव आप आश्चर्य भूत जो ये गजमुखजीका पुराणहै सो सव मुझ को वर्णन करो २६ भृगुजी बोले हे राजन् तू सावधान होकर श्रवणकर मै वो पुराण वर्णनकरताहू कि अनेक जन्मोके पुण्य समूहोसे मनुष्यो की मति उसके श्रवण करनेवाली होतीहै हरएक पापी जनोकी नहीहोती जिसके श्रवण मात्र ही करकै सप्त जन्म के भी इकट्ठे छोटे वड़े आले सूखे जो महापाप है सो भी गणेशजी की प्रसन्नतासे तत्कालही बिलय होजाते है २७।२८।२९ अव्ययनाम नाशरहित जो प्रमाण नहींकियाजाय जो गुणोसेरहित अरु स्वरूप वर्जित अरुमन वाणीकरके नही निरूपण कियाजावे अर्थात् मन जिसेजान न सके वाणीजिसे कह नसके अरु जो केवल आनन्दरूपी अर्थात् अद्वैतानन्द मूर्त्ति ३० जिसके स्वरूप को ब्रह्मा शिव आदि देवताभी नहीजानते अरु सहस्रमुख भी शेषजिनकीमहिमाकोकहने केलिये समर्थनही ३१ जहांतक कि कोईविशेष भी जानताहो पर इसके कहनेमे समर्थ न होसके हे राजाश्रेष्ठ मैने वोसुन्दर पुण्यदा-यकपुराण पहिलेसे जैसा सुनाहै ३२ गुप्तज्ञान को पहिचाननेवाले अतुल तेजस्वी व्यासजीसे सो पुराण इसीको निजयज्ञ के बिध्वसके

शोकसे दुःखीदक्षने मुद्गल मुनिसे श्रवणकिया ३३ हे राजन्जि-
सकी सर्वा।द्वि दायक गणेशजीमे दृढभक्तिहै वोहीइसे सदा श्रवण
करे तिससे इतना और किसोको अवाच्य अर्थात् नहींकहना ३४
जो मारेहीजन विघ्नराज गणेश जी का सेवन करनेलगे ता बेचारे
विघ्नसमूह सुखपूर्वक कहापर विचरे ३५ और इन नानाप्रकारके
विरहआदि से उत्पन्न दुःखों को कौन भोगें। पहिले भूत भविष्यद्व-
र्त्तमानके जाननेवाले व्यासजीनेबनाया ३६ कलियुगमे मनुष्योंको
वेदकेअर्थसे शून्य वेदपठन रहित निज२ वर्णाश्रमक धर्मसे विमुख
अरु जातिका सकर अर्थात् बीर्यभिन्न अरु क्षेत्रभिन्न तिनकेमेल से
सन्तानहोना ३७ ऐसे२ दोषो के करनेवालो को अरु कुटिल तथा
पापकारी जनोको देखकर धर्मकीरक्षाकेलिये अष्ट दश पुराणो को
वनाये ३८ तितनेही उपपुराणहे तिन्होसे लोकवेदकेअर्थाको जानें
अरु तिसीसम्वन्धसे ये जनगणेशजीका स्वरूपजाने३६ इसप्रकार
गणेशपुराण उपासनाखण्डमे राजाको उपदेश कहना इसनाम से
नवम अध्याय हुआ ६॥

दशवां अध्याय॥

श्रीभृगुजीवोले कि नारायण के अशसे सम्भवभये अर्थात् अ-
वतार पाराशरजी के पुत्र व्यासजी जो पहिलेके आनेवाले कर्म के
वेत्ता वेदशास्त्रार्थ के तत्वको जाननेवाले १ वेदको तिसी के अर्थकी
ज्ञानसिद्धीके लिये चारविभाग करके अपनी विद्याके मदगर्व शक्ति
वलसे अरु समस्तजनोके सम्यग्यानार्थ करनेको प्रारम्भकिया २
और समाप्तका साधनेवाला जो मङ्गल तिसेपहिले नहींकिया अरु
गणेशजी को नतिवास्तुति इसनेनहीं करीथी ३ तब वो विघ्नो से
तिरस्कार किया किसी अर्थको भी न समझ उनको लौकिक अरु
अलौकिक अर्थात् वेदपुराणमें सारेभ्रान्तिही होगई ४ नित्यपञ्चय-
ज्ञादिक अर्थात् सन्ध्योपासनादि कर्ममें तथा नैमित्तिक जो किसी
निमित्त कियाजाय अर्थात् श्राद्धादि कर्ममे अरु काम्य अर्थात् जो

कामनाके अर्थकियाजाय तिसमे अरु श्रुतिसम्बन्धी कर्म मे स्मृति केकर्ममें सारे वेदशास्त्रो की व्याख्या करनेवाले सर्वज्ञ व्यासजी के भी भ्रान्तिभई ५ जैसे औषधियोसे अरु मन्त्रोसेशक्तिरहित सर्पहोजाय तैसे आर्येमे रुकगया अरु उसकेकारण कौन पहुचा ६ तबतो आदरसे पूछनेको सत्यलोकमें ब्रह्माजीके पासगया विस्मयसे दब रहाचित्त जिसका लज्जितहुआ पाराशरमुनि अर्थात् व्यास ७ वहा देवगणोको देवर्षियो को अरु कमलासन जो ब्रह्माजी तिन्हें नमस्कारकर अरु उनसे पूजित अर्थात् आदरकिया ब्रह्माजी से दिये सुन्दर आसनपरबैठा ८ पाराशरमुनि व्यासनिजहाथसे उनके चरणोका स्पर्शकरताहुआ अरुनम्रतासे नीचाहोकर ब्रह्माजीसे पूछनेलगा ९ व्यासजीबोले कि हे ब्रह्मन् दैववशसे मेरे ये क्या आश्चर्य हुआ कि मेरीमति वेदकेअर्थ रूप जो पुराणहै तिन्होके करनेकोभई १० सारेलोकोका ज्ञानआचार से रहित कलियुगमें कर्मशून्य मूढ अरु हटी वेदकेनिन्दकोको देखकर ११ कि जिसमेरे वाक्यसेलोग विधि अर्थात् ये करना अरु निषेध ये न करना इसप्रयोजनकोजानेंगे तो उलटा मेराहीज्ञान हटगया मे भ्रान्तिसहित क्षीवनाममद युक्तसा होगया १२ न कोईवहां कारण देखताहू सो उसकेकारण अरु स्फूर्ति होनेके हेतु पूछनेको आपपै आयाहू १३ हे चतुर्मुखजी आपकेबिना और में किसको शरणजाऊ सर्वज्ञ अरु सर्व कर्त्ता जो आपहो सो मेरीभ्रान्ति निवारण करो १४ नारायण स्वरूप भी मैं हू फिर मेरे भ्रान्ति क्यो भई अरु मे तो नित्य आचारवान् सर्वज्ञ अरु श्रेष्ठहू ब्रह्मन् इसहेतुको कहो १५ सूत बोले कमल मे आसन जिनका सो ब्रह्माजी तिसके वाक्यको ऐसे सुनविचारकर प्रणत अर्थात् बहुत नवेहुये व्यासमुनिको कुछहँसते हुये विस्मय कराते ये कहनेलगे १६ ब्रह्माबोले हा मैं तेरेको कर्मोकीसूक्ष्म गतिको वर्णन करूगा कि जो साधु अच्छाकर्महै इतरबुरा कर्महै इसेभलीरभांति विचारके करना १७ औरतरे करते पुरुषका किया भी औरही तरें होजाताहै सोई बुद्धिमान् छोटअरुबड़े सबकार्योको बुद्धि अरु युक्ति

से नम्रतासेसुधारे १८ अरु गर्व अहंकारसे न करे पक्षियोंका ईश्वर गरुड गर्व से वाहनहुआ १९ और आम्बिकेय धृतराष्ट्र तिसकेसुत दुर्योधनने अहंकारसेअपनासर्वस्व नाशकिया अरुमत्सरहीसे परशुरामजी ने क्षत्रियो को पहिले उत्सादन अर्थात् दुःखी किये २० यो नाम जो आदि रहित अरु नाशवर्जित जगत् करनेवाला जगत् के विकारसहितसा दीखै अरु जो देवजगत् को धारण करनेवाला अरु जगत्को संहार करनेवाल जो सत् सत्य अरु असत्भ्रान्तिसे असत्यसरीखा प्रतीतहोवे जो व्यक्तनाम प्रकट अरु नाशरहित २१ यो करनेको अरु किये़को औरतरे अर्थात् लौटादेनेको सदा समर्थ है अरु इन्द्र जिनके अगाडी मुख्यहोचले ऐसेसारे देव २२ मैं अरु विष्णु रुद्र सूर्य अग्नि वरुण आदि जितने देवता सो सब जिनकी आज्ञामेंरहें जो भक्तोंकेविघ्नोंको हरनेवाला उनसे इतर जो अभक्त तिनको विघ्नकरनेवाला २३ तिसमें तू ने अपनी विद्या के बल के भरोसे से ले अरु सर्वज्ञता के अभिमान से उनका पूजन नहींकिया २४ न गणेशजीका स्मरणकिया न और किसीभी देवताका आराधनकिया इससे हे निष्पाप व्यास जी तुम्हारे ये भ्रान्ति भई २५ जो गणेशसर्वकार्यों के आरम्भमें प्रवेशमें यात्रामें वैदिक अरु पुराणोक्तकर्ममें न स्मरणकिया विघ्नकोकरे२६ और जिसे परमआनंद अरु परमगति कहतेहैं अरु वेदशास्त्रार्थ के देखनेवाले जिसे परब्रह्म कहतेहैं सो है वेदाव्य। तू उसगजाननकी शरणमें आदर सहितहो २७ जो वो भगवान् प्रसन्नतावान्भया तो तेरावांछित करेगा नहीं तो तू हजारवर्ष करके भी निजवाञ्छाको नहीं प्राप्तहोगा २८ व्यास जीनेकहा ये गणेशकौनहै अरु इसका क्या रूपहै अरु वो कैसेजानने योग्यहै अरु हे चतुर्मुखजीपहिलेकिसपर येप्रसन्नभया २९ अरुकितने अवतारधार क्याक्या कार्यकिया अरु पहिले किससे येपूजा अरुकिस कालमें स्मरण किया गया ३० सो हे पितामह पूछताहूं विक्षिप्तचित्त वालेमुझको ये करुणाकेसागर ये विस्तारसे वर्णनकरो ३१इतिगणेश पुराणउपासनाखंडमेंव्यासजीकेप्रश्नकावर्णनदशमअध्यायहुआ १०

ग्यारहवां अध्याय॥

श्रीभृगुजीबोले कि हेराजन् चतुरानन ब्रह्माजी उसराजाके ऐसे किये प्रश्नकी विवक्षानाम कहनेका इच्छाकरके उस राजाको ऐसे कहतेहुये सो मैं तुझको गणेश मन्त्रो को वहुधा विचारकर क्रम से सब कहताहूं १।३ गणेशजी के सातकरोड़ मन्त्र शास्त्रमेंस्थित हैं। उसरहस्य अर्थात् एकात किये गुप्तवृत्तान्त को शिवजी जानते हैं अरु हेमुने कुछकुछ मैं जानताहूं३।२ श्रीब्रह्माजीबोले हेमुने महात्मा गणेशजी के मन्त्र अनन्त हैं अरु शीघ्र सिद्धिकारी की उपासना मैं तुझको कहताहूंगा २ ये दोकाहैं उनमहामन्त्रो मे एकाक्षर अर्थात् ग अरु षडक्षर गणेशायनमः इनदोमन्त्रो की वहुत श्रेष्ठताहैं जिनके स्मरणमात्रसे सर्वसिद्धिहस्तमेंहोजावे ४ हेमुने जिनकी उपासनाहीसे जो जीवन्मुक्त होतेहैं वेही धन्य हैं वेही पूज्य देवोकरके भी वही नमस्कार योग्यहोतेहैं ५ जिनकी उपासनामें सिद्धिये जिनके दास भावकोभजतीहैं अरु वे सर्वज्ञ अनेकरूपधारी इच्छाविहारी अर्थात् इच्छाकरें तहां चलेजावें ६ जो भावयुक्तहो गणेशजीकी भक्तीकरते हैं अरु जिनका गणेशजी में भक्तिलेश भी नहींहै तिनका तो जन्म निरर्थकहै७ जो गजमुखमें विमुखहैं तिनका मुख भी न देखै क्योंकि तिनके दर्शनमात्रसे पैडपैडपर विघ्नहोतेहैं ८ अरु उनके उपासको के दर्शनसे विघ्नशांतिको प्राप्तहोतेहैं। अरु उनको स्थिरचरजीव सब नमस्कार करतेहैं ९ इससे मै तुझको शुभ जो एकाक्षर मन्त्र है सो कहताहूं। उसके अनुष्ठानमात्रहीसे तू सिद्धिको प्राप्तहोगा १० जो मुझको शिवजी ने कहा सो अनुष्ठान कहताहूंगा कि मनुष्य स्नान करके पवित्रधुयेदोवस्त्र अर्थात् धोती अगोछापहिरके ११ वस्त्र मृग चर्मकुशा इनकरके सुबुद्धि जो साधकभक्त सो आसन वनाकर तिस में भूतशुद्धि अरु प्राणो का स्थापन १२ अन्तर्वहिर्मात्रिकाओं का न्यास अर्थात् क्रमसे यथा स्थान आवाहनकरके हृदय में मूलमन्त्र को जपताहुआ प्राणायामकरै १३ फिर शास्त्रसे कही रीति से यथा

विधि मन्त्र।सन्ध्या उपासनकरै देव जो गणेशजी तिनको चरण से मस्तकतक निश्चल चित्तसे ध्याकर १४ सुन्दरता से सावधानहो मानसही उपचारोकरके तिसदेव को पूजै फिर यथाशक्ति मूलमन्त्र कहा एकाक्षर या षडक्षर पुरश्चरण रीति से मन्त्रजपै १५ जवतक गणेशजी वरदेनेको अनुकूलहो अपना स्वरूपदिखावै तबतक मन्त्र के जापमें परायणरहै १६ भृगुजीबोले कि ब्रह्माजी उसमुनिसे ऐसे कहकर अरु सुन्दर वार विचारकर एकार जो मन्त्रराज एकरवर जिसमें ऐसा जो ग ये मन्त्र१७ सारा उसभांतिसे धर्मश्रेष्ठमुनिको सिखातेभये ब्रह्माजीबोले करोडसूर्यकैसे प्रकाशवाले वरदेनेकोआये १८ तिसदेव गणेशजी को जब तू देखेगा तब अपनेचित्तको स्थिर कर। अरु हे गजानन आप मेरे हृदयमेही नित्य स्थित रहो १९ ऐसा उनसे वरमागना वो तुम्हें निस्सन्देह देवैगे उसे देवके हृदय में स्थितहुये तू दिव्य ज्ञान को प्राप्तहोगा २० हे राजन् भूतनाम जोहुआ भावि जो होनेवाला भवन्नहारहा इसको अशेषसे जानैगा अर्थात् तू भूत भविष्य वर्तमान को जानजावेगा अरु हेबेटा तू इस दृढ भ्रांति को छोडकर कईप्रकार के ग्रन्थोंको बनावेगा २१ व्यास जी बोले हे पिताजी आपके उपदेश किये मेरी भ्रांतिगई हे पितामह मैं आपकी आज्ञा से अब अनुष्ठान करूंगा २२ ब्रह्मा बोले हे विभो व्यास जन रहित व्यग्रताके कारण से वर्जित अर्थात् जहा चित्त स्वस्थरहै तहा गणेशजी को स्मरण करताहुआ अनुष्ठान कर २३ अरु ये मन्त्रराज,नास्तिक, निन्दक, क्रूर, आचार रहित अरु खोटे मूर्ख इतनेजनो में न कहना चाहै ऐसा जन शरण भी आवै २४ अरु दृष्टिभक्ति,श्रद्धावाले,नम्रहुये, वेदपाठी, आकांक्षा सहित,निन्दारहित अरु शास्त्रज्ञ इतनेजनोमे प्रकाशकरु२५क्योंकि कहनेवाले के दश पहिले के अरु दश पीछेके वडकोको ये मन्त्रराज अकथनीयके आगेकहा नरकोंमें प्राप्त करताहै २६ जो भक्तिपूर्वक इसेजपै सो अभीष्टफल को प्राप्तहोवे पुत्रपौत्र सहितहो धनधान्यसे भरारहै २७ एकदन्तजी के प्रभावसे सुनिर्मल ज्ञानको प्राप्तहोकर

दहो सारे भोगभोगके अन्तमे मोक्षको प्राप्तहोवे २८ ॥ इसप्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमें मन्त्रराजका कथन इसनाम से एकादश अध्यायहुआ ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

श्रीसूतजीबोले कि व्यासमुनि ब्रह्माजीके मुखसे निकला सुन बड़े हर्षसहित उन्हें फिरपूजते भये १ व्यास बोले हे ब्रह्माजी आप का वचनामृत पीकर मुझको समाधान मिला हे पिता अवमन्त्रसुनने को चाहताहूं २ किसने इसेजपा अरु गजानन से सिद्धिपाई इस मेरे संशयको छेदो आपसे और कोई मेरा ज्ञानदाता नहींहै ३ भृगु जीबोले कि मुनिसे ऐसे पूछे वक्ताओंमेंश्रेष्ठ ब्रह्माजी नम्रभये व्यास जीसे हे राज श्रेष्ठ ये कहतेहुये ४ ब्रह्माबोले तेने अच्छा२ पूछा तू भला पुण्यात्मा है विना पुण्यवालोंकी मति कथाके श्रवण मे नहीं होती५ इसउपासना मार्गको भली प्रकार तुझे जनाता हू क्योंकि स्नेही अधिक बुद्धिवाले शिष्यमें कुछ गोपननहीं है अर्थात् ऐसे तुझ को अवश्य वताऊंगा ६ ओंकार रूपी गणेश तुमसे कहा सो ये गणेश सब कार्यों में पुजताहै ७ निर्विघ्न काम वाले जनोंसे जो नहीं पूजाजाय तो ये विघ्न करे है तैसे ओंकार वीजसे युक्त ओंकार पल्लव सहित ८ जो मन्त्र सब शास्त्रोक्तहै अरु और जो पल्लव से रहित है वे निष्फल हैं अरु सत्है-इसपद वाच्य असत्नाम नहीं है इसपद वाच्य प्रकट अरुअप्रकट सब मात्र गणेशही है ९ ऐसे सारेदेव, सिद्ध, मुनियें, राक्षस, किन्नर, गन्धर्व, चारण, नाग, यक्ष, अरु देवयोंति मनुष्य १० अरु सब चर अचर लोक गणेशजी काही उपासक है इससे गणेशजीसेपरे कुछ नहींहै ११ अब मैं एकपुरानी पूर्वकथा कहताहूंगा जैसे इस मंत्र राजके जापसे ये गणेश प्रसन्नभया १२ कि कभी दैवयोग से प्रलय होनेके समयमें १२ (मूलमें ही आधा श्लोकविशेषहै) तवतोवायुसे भेदे पर्वतटूटके चारो कानी दिशाओं मे पड़े अरु बड़ेजलको सुखानेवाले वारहआदित्यतपरेहे १३ वो झलो

की पंक्ति जिसमे से निकसरही ऐसीअग्नि सारेजगत्को जलाती है सम्वर्तक सञ्ज्ञाजो प्रलयकाल के महामेघ हैं सबकोनसे वर्षा कर-तेहैं १४ हे द्विजश्रेष्ठ व्यासजी हाथी के शूँड की सी धाराओ करके जिसमे समुद्र अरु नदियेभी मर्य्यादको उल्लंघन अर्थात् छोड़ते हैं १५ऐसे ब्रह्मासेले स्थावरपर्य्यन्त सारे बिनाशहोते है ऐसे मायासे रचे विकारसे नाशभये ये गणेशजी १६ अखण्डनाम लघुसेभी अति लघु होकर कहींकी व्यवस्थाको प्राप्त अर्थात् लयकार्य के निमित्त स्वाश्रय हो स्थित होते हैं तबतो बहुत काल गये अंधकारछाये १७ फिर ये एकाक्षर ब्रह्मनादसहित और नादयेहैं कि जो आकाशअरु वायुके संयोगसेउत्पन्न नाभिकेनीचेसेउठता मुखकोप्राप्तहोवें अर्थात् अप्रकट सम्पूर्ण उच्चारण जिनका ऐसे ओंकारस्वरूपहुआ फिर जो वैकारिक आनन्दमय रूप जो स्थित १८ माया के विकार जिसमें ऐसेस्वरूपको प्राप्तहोकर सोहीगणेशहुये और तिसीसेसत्वरजस् तमस् ये तीनगुण भये १९ तिसे विष्णु, ब्रह्मा, शिवजी ये भी तीन उत्पन्नभये और उसीमायासे सब चर अरु अचरसहित लोक रचा गया २० तबतो वे तीनोंदेवता उस मायाके भ्रमाये भ्रमतेहुयेउसी अपने जनक अर्थात् उत्पन्न करनेवाले ईशके देखने अरु पूछने को चाव करतेहुये २१ हमसे अब क्या काम कर्तव्य है इस जिज्ञासा नाम जाननेकी इच्छाकरके अरु हेमुने इकईसो स्वर्गोंको ऊपरनीचे से देखकर वे २२ बीचमें अरु इधर उधर भी देखकर पाताल में आये वहाभीपरमात्माको न देखा तबतो अत्यंतभारी तपस्याकरते भये २३ निराहाररहो जपमें परायणहोकर एकसहस्र दिव्यवर्षतक तपकर हारे बेचारे खेदको प्राप्तहुये वे तीनों फिर पृथ्वीपरही २४ ढूंढते ढूंढते देखने के लिये वन उपवनो में आये अरु नदी, सागर, पर्वत, शिखर, कन्दरा इनको भी २५ तबतो उनदेवो ने महाभारी जलका स्थान देखा। जो नानाप्रकार के जलचर अरु वृक्ष नाना पक्षि समूह इनसे सहित २६ जो बगले, चकवे, हंस, करेतुवा ये पक्षी जोकि कमलखण्ड करके भोजनमें रंजरहे तिनकेशब्दित २७ उसके

तीरपर उतर विश्रामले न्हाकर अगाडी गये तो नाना तरंगलिये वड़ा भारी जलाशय २८ जो मनुष्यों को अत्यन्तही कठिनाई से तिरन योग्य मकरमच्छों से भरा वडाभारी जलाशय देखा जोकि प्रलयाग्नि के समान प्राणभयदायी दर्शन जिसका २९ हेमुनिजी फिर आगे कोटिसूर्य्य समान प्रकाशवाला जो तेजका समूह तिसे देख तेजसे जातीरही दृष्टि जिनकी ऐसे वे परमचिन्ताको प्राप्तहुये ३० तवतो आकाशमार्ग करके उसतेजमेंसे निकसे अरु भूखप्यास से थके वार२ उसासी भररहे ३१ और भयभीतहोकर अपनेआपै को निन्दाकरते तब अत्यत दयामेंआकर सम्पूर्णप्रयोजनवेत्ता लोक के स्वामी ३२ श्रीगणेशजीमहाराजने अपना स्वरूपदिखाया कैसा है जो मनको अरु नेत्रोको आनन्दवढानेवाला अरु पैरकीअंगुलि-योंके नखोंकी कान्तिकरके जीताहै रक्तकमलका केसरा जिसने ३३ अरु रक्तवस्त्रके प्रभावसे तो जीताहै सांध्या का सूर्यमंडल जिसने कमरवस्त्र तथा तगडीकी कांतिकेसमूह से जीता है हिमाचल का शिखर जिसने अर्थात् अत्यन्त श्वेत श्री ३४ अरु खड्ग ढाल धनुप शक्ति इन शस्त्रो से शोभित है चारो भुजा जिनकी सुन्दर नासिका सहित अरु पूर्णिमाके चन्द्रमा को जीवतेवाली काति जिसकी ऐसे मुखारविन्दवाले ३५ रात्रिदिन कान्तियुक्त कमलसरीखे सुन्दरलो-चनवाले अनेक सूर्यशोभा जीतनेवाले मुकुटसे प्रकटहै मस्तकजिन-का ३६ कई तारायुत आकाशकी कान्तिजितहै वस्त्रजिनके वराह जीकी डाढ़की शोभाजित जो एकदन्त तिससे विराजमान ३७ ऐ-रावतआदि दिग्पालोको भयकारि शूंडवाले, हे मुनि वे इन्हेंदेखतेही शीघ्र प्रणाम करते भये अरु चरणारविन्द को स्पर्श करके स्तुति करते भये ३८॥ इतिगणेशपुराण उपासनाखण्ड में श्रीगणेशजी का दर्शन इसप्रकार से द्वादशअध्याय पूर्णहुआ १२॥

तेरहवा अध्याय॥

व्यासजीबोले कि पचास्य शिवजी अरु ब्रह्माजी अरु विष्णुजीभी ये

वरदायी गणेशजीको कैसेस्तुवन करतेभये,१ श्रीब्रह्माजी बोले प्र-
सन्नहो सन्मुख भये गणेश जी तिनके कृपा कटाक्ष करके देखने से
प्राप्तहुआहै बुद्धिरूप प्रसाद जिनको ऐसे वेक ब्रह्मा अरुईश महादेव
जी अरु पूर्वोक्त शेषसे विष्णु भी गणेशजी को स्तवन करते भये २
ब्रह्मा विष्णु महादेवजी बोले हम गणेशजीको भजतेहैं कैसेहैं कि
अजन्माहैं अरु विकल्प जो भेद तिससे रहित आकार रहित अद्वय
समानतासे आल्हाद रहित केवल आनन्दभरे परम निर्गुण विशेष
बिनाचेष्टा रहित ऐसे जो परमात्म स्वरूप गणेशजी हैं इति,३ जो
गुणोंसेपरे अरु आदिहुये चिन्मय आनन्दस्वरूपचित्तहैं आभासनाम
प्रतिबिम्ब जिनका सर्वत्र जानेवाले ज्ञानकरके ज्ञेय मुनियोंसे ध्येय
आकाशरूप व्याप्त परमईश ऐसेजो परब्रह्म रूप गणेशजी तिन्हे हम
भजते हैं, ४ जो जगत् के कर्ता कारण जो ज्ञानतन्मय देवताओं के
आदि सुखकी आदि युगोंके आदि गणों के ईश्वर अरु जगद्व्यापी
विश्ववन्दनीय सुरोंके ईश जो परब्रह्मस्वरूप गणेशजीतिन्हेभजते हैं
५ अरु रजोगुण के योगसे ब्रह्मास्वरूप वेदज्ञ सदैवही कार्यकरनेमें
सक्त अर्थात् काम फलदायी हृदयसे चिन्तने योग्य है रूप जिनका
जगत् के करनेवाले सर्वविद्या धरनेवाले परब्रह्म स्वरूप गणेशजी
को हम भजतेहैं ६ सदाहै शुद्ध सत्वगुणका योगजिनमे जो हर्षसे
क्रीड़ा करहे राक्षसोंको हररहे जगत् को पालरहे अनेक अवतार
धारी निजअज्ञानहारी जो विष्णुरूप गणेशजी तिनकोहम सदाभ-
जतेहैं ,७ जो तमोगुणवाले रुद्ररूप त्रिनेत्र जगत्‌हारक भयाव्यिता-
रक ज्ञानकेकारण अरु नानाशास्त्रों से स्वीय भक्तोंको ज्ञान देरहे जो
शिवरूप गणेश तिनको हम सदा नमस्कार करते हैं ८ अन्धकार
समूह हारी जनों के अज्ञान विदारी वेदत्रयी में सार परम व्यापक
पार मुनियोंको ज्ञानकार अर्थात् ज्ञानकर्ता विक्षिप्त विकार अर्थात्
निर्विकार जो ब्रह्मरूप गणेश तिन्हें भजतेहैं ९ निजकिरणों के स-
मूहसे ओषधियोंको तृप्त करते अरु अमृत सी झरनेवाली कलाओं
करके देवताओंके समूहको तृप्तकरते दिनके ईश सूर्य के सन्ताप को

हारक द्विजोंकेईश जो शशाङ्कनाम चन्द्रस्वरूप गणेशजी तिन्हेंसदा नमस्कार करतेहैं १० प्रकाशमान स्वरूपवाले आकाश वायु स्वरूप अर्थात् तिनदोनोकी नाईं गमन व्यापक समर्थ विकार आदि के कारण कलारूप हो समयका साक्षी अनेक क्रियासहित अनेक शक्ति समन्वित जो शक्तिरूप गणेश तिन्हें सदाभजते हैं ११ प्रधान पुरुष महान्तत्त्व रूप पृथ्वी जलस्वरूप दिशाओंका ईश ऐसे स्वरूपी असत् नाम असत्यसासत श्रेष्ठ सोहै रूपजिनका सो जगत्के कारणहुये बिश्वरूप गणेश तिनको सदा भजतेहैं १२ हे गणेशजी आपके चरण युगमें जो जन मन लगातेहैं वो विघ्न रुगोंको अरु पीडाको प्राप्तनहीहो वा शोभायमान सूर्य बिम्बसमान विशाल मे स्थित जन अन्धकारभई पीडाको प्राप्तहो १३ हम सर्वथा अज्ञानसे भ्रमाये बहुतवर्ष गणाकरके भी आपके चरणको नहीं प्राप्त हुये थे अरु अब आपहीकी प्रसन्नतासे पहुचे सो हे बिश्वम्भर प्राप्तहुये हमको तुम सदाही रक्षाकरो १४ ब्रह्माजीबोले हे महामुनि ऐसेस्तुति किये गणेश जी प्रसन्नहुये परमकृपा युक्तहो उनसे कहनेलगे १५ श्रीगणेशजी महाराज ब्रह्म विष्णु महेश्वरजीसे ये बोले कि जिस लिये तुम क्लेश पाये अरु जिसलिये यहा आये मैं तुम्हारी स्तुतिसे प्रसन्न भया तुम मुझसे वर मांगो १६ जो बुद्धिमान् प्रातःकाल उठकर भक्तियुक्त पवित्रहुआ पठन करै। वो पुत्र लक्ष्मी अरु सब कामोको प्राप्तहो अंतकालमें ब्रह्मस्वरूप हो अर्थात् मोक्ष पदार्थको प्राप्तहोगा १७ और भावना चित्तहुये तुमकरके किया ये मेरीआज्ञा से स्तोत्रराज इसनामसे विख्यात होगा १८ ब्रह्मा बोले वे प्रसन्न भये उनके इसवचनको सुन तिनके देखनेसे प्रसन्न मनयुतहो राजस्सत्वतमोगुणसे उत्पन्न तीनोंबोले १९ तीनोंबोलेहेसृष्टिकेसंहार कारक देवेश जो आप हमारेपर प्रसन्न होवें तोहमारी भक्ति आप के चरण कमलमे अव्यभिचार वाली अर्थात् चरणोंमे अन्यत्रकभी न हो २० और हमको अब क्या कर्त्तव्य है सो आप हमैं आज्ञाकरव हेगजमुखजी यहीहमारा वांछित बरहै सोदेवो २१ गणेशजी उनके

ऐसे वचनसुन फिरबोले हेमहाभागवानो तुम्हारी दृढभक्ति मेरेमेहो-वेगी जिससे तुमबडे २ भारीकष्टों कोभी पारकरोगे २२ अरु आप की विख्यात के लिये मैपृथक् २ कर्मभी कहता हू २३ कि हेब्रह्मन् तू तो रजोगुणसे उत्पन्नहै सोसृष्टिका कर्त्ता हो हे विष्णो तुमपालना करो क्योंकि तुम व्यापकहो सत्वके आश्रयहो २४ हेहरतुम तमो-गुणसे उत्पन्न हो सब संसार को संहारकरो अरु वेद शास्त्र पुराण सृष्टि समर्थता २५ये और २ विद्या गणेशजीने महात्मा ब्रह्माजीके अर्थदई अरु भगवान् गणेशजी विष्णुके अर्थ स्वच्छरूप सुन्दरता को देतेभये २६ एकाक्षर ओं तथा षडक्षर ओं नमोगणेशाय येमंत्र अरु सारेशास्त्र शिवजीके अर्थ अरु संहार शक्ति देतेभये २७ तबतो दीनमन ब्रह्मा प्रांजलि हो अर्थात् हाथजोड़ कर त्रिलोकी के ईश जगत्केगुरु वरदेते जो गजवदन गणेशजी तिनसे ये बोलतेहुये२८ ब्रह्माजी बोले कि जैसे जिसने शक्ति ग्रहणकरी अरु वाच्य अवाच्य का जिसेज्ञान नहो ऐसामैहू तैसेही अनेक विधिकी सृष्टिकहीं कुछ भीनहीं देख २६ अरु करनेकोभी आप व्यापककी आज्ञाकाविशेष कैसेजाने इधर कूप अरु इधर वापी ये ऐसा मुझे क्यापाया अर्थात् आप मुझेकुछ विशेष विस्मय दिखाकर प्रतीतकरो ३० तबतोगजा-ननजीने उसको दिव्यदृष्टिदे जो ब्रह्मा वेदशास्त्रज्ञाता व्याकुलचित्त था तिससे प्रभुगणेशजीने कहा ३१ गणेशजीबोले हे पद्मजब्रह्म मेरे शरीरकेभीतर बाहर अनेक अनेक ब्रह्माण्डहैं तिनभ्रमते हुओंको तू अभीदेख३२तबतो गणेशजीसे ये ब्रह्माश्वासवायुसेभीतर पहुचाया गया अरु इसने वहा अनेकही ब्रह्माडोकोदेखा३३ पहिले तो वहा अपने परम तेजसे एकको निश्चय किया अरु तिसके भीतर कम-लासन ब्रह्मा सब सृष्टिको देखताहुआ ३४ और ये ब्रह्मा वहांपर औरही ब्रह्माको अरु औरही विष्णु इन्द्र प्रजापतियों को अरुशंकर भास्कर वायु भुवनोंकोनदियोको वरुणको समुद्रोंको अरुयक्षगंधर्वों को किंपुरुष अरु सर्प्पोंको ३५ ऋषियोंको अरु पुण्यजननाम राक्ष-सोंको अरु साध्य अर्थात् द्वादशगण देवताओंको अरु मनुष्यों को

अरु पर्वत वृक्षोंको ३६ वृक्षादिको को अरु पश्वादिकों को अरुस्वेदज अर्थात् पसीने से उत्पन्न हैं तिन जतुओंको अरु पृथिवी सात पातालोंको अरु इकईश अव्यय अर्थात् स्वर्गोंको ३७ वो ब्रह्माही ब्रह्मादिक सब जन्म मरण भोगनेवाले चर अचरराज विश्वको देखताभया ३८ जिसअंड को ब्रह्माने भेदकिया अर्थात् देखा तिसीमें वो ये सारा प्रपंच देखता भया अरु पहिले की नाई भ्रांतिको प्राप्त भयो अरु सबतरेसेभी तिन ब्रह्मांडो के अन्तको पहुंचता न भया ३९ तब ब्रह्मा न ठहरनेको अरु न जानेको समर्थभया अर्थात् यथास्थानह जैसे तैसे स्थित होरहा फिर तो बैठकर, गजाननजीको ही स्तवन करता भया ४०, ब्रह्मा बोले मैं उस देव देव देव गणेशजी को अर्थात् जो देवदेवोंके भी देवहै तिनको अरु जिनकेशरीरमें ब्रह्माण्डों की संख्याही नहींहै क्योंकि आकाश के नक्षत्र अर्थात् तारागण की अरु समुद्र के जीवोंकी अरु तीरके शर्करा अर्थात् छिनको की कौन संख्याकरे तैसे ये हैं ४१ हेसुरेन्द्रो करके बन्दनाकरनेयोग्य तुम्हारे चरणारविन्द को अवलोकन कर अर्थात् देखके मेरीलज्जा दूरभई जो कि मैं भ्रान्त होगयाथा सो सम्यक् हुआ आप ज्ञानके समुद्र हैं तो मोक्ष भी तुच्छपदार्थ है तो और तो बातही क्या है ४२ अरु हे सुरोंके ईश नानाप्रकार के अर्थोंसहित आपके उदरमें ब्रह्माण्डों का समूह मैने देखा और फिर ठहरनेको या बाहर जाने को भी समर्थ न भया तो फिर आप से इतर और किसी देवको शरणभय हरण नहीं जानताहू ४३ तब तो प्रसन्नमन भये गजानन अनन्त भगवान् खेदको प्राप्तमन ब्रह्माको बाहर निकासते भये ४४ और तिसका पिछाड़ी रहनेवाला जो विष्णु तिसे भी अरु तामस जो हर तिसे देव गणेशजी ब्रह्माके साथभये इन्होको अपने कानके छिद्र से निकासता हुआ अरु तिसीके अङ्कमें हरि हर दोनो सुख पूर्वक शयनकरते रहे ४५।४६॥ इति गणेशपुराणउपासनाखण्डमें ब्रह्माजीकी स्तुति का वर्णन इसनाम से त्रयोदश अध्याय हुआ १३ ॥

राजा सोमकान्त ने भृगुमुनिजी से पूछा कि हजारो ब्रह्माण्ड देख कर फिर ब्रह्माजी ने क्या किया अरु गणेशजीसे आज्ञापाय सृष्टि कैसे रची १ भृगुजी बोले ब्रह्मा गर्वसे भरगया अरु अपनी बुद्धिमें ऐसा विचारताहुआ कि मै शास्त्रोको अरु वेदो को और भी पुराण आदि शास्त्रोंको जानताहूं २ अरु ज्ञान विशेष ज्ञान समन्वित शाप अरु अनुग्रह इनकी शक्ति सहित अर्थात् मैं शापदेऊ अरु छोड़ भी देऊ अरु मैंने सब ब्रह्माण्डो को देखलिया अरुसृष्टि की रचना भी देखी ३ अब मेरे इससृष्टि के रचनेमें करनेको कुछ अशक्य अर्थात् न कियाजाय सो नहीं है ऐसे ब्रह्मा के सृष्टि के अर्थ अर्थात् तिस काममे गर्वकोप्राप्तहुये४ हे राजन् कईप्रकारके विघ्नउत्पन्नभये वे परम दारुण सहस्रो विघ्न ब्रह्माजीको वेठमकरके अर्थात् बीचमें लेकर स्थितभये ५ जैसें मत्तमोह मक्खियें शहद के जाल अर्थात् छत्ते में लिपटजावें कैसे कि जिनके तीन२ नेत्र पाच२ हाथ कूपके से मुखवाले कोई२ सप्तहस्तवाले ६ तीन पैरके अरु पांचमुखके सात मुह छ पैरके दशमुख पाचपैरके तालप्रमाण अर्थात् सात२ बिलस्त के दातोवाले वृक भेडिये के से उदरवाले ७ नाना रूपवाले भारी जीव अरु वे सख्याभी नहीं कियेजायँ उनके नानाशब्दोकोसुन ब्रह्माजी कापे ८ इनको कोई तो मुष्टियो से पकडतेहुये कई ले नीचे हुये कइयो ने इसे दावलिया अरुइनकी चारोचोटिये पकड़ के इन को बहुतझुलाया ९ इसके चारो मुखोको देख२ कई हँसे कइयो ने निन्दा अरु प्रशसाकी कइयोने सेवा भी करी १० कइयो ने छुटाया अरुकइयोने फिर बाधलिया कईकछोडेहुयेकोभी इधर उधर खैंचते हुये११ कइयोने वाक्षमेंलेलिया कइयोने बालकवत्चूमलिया। कोई इनको होठ अरुदाढी पकड़ाकर आठहाथोका सहारादेकर नाचने लगा१२ ऐसे वो परवश ब्रह्मा चिन्ता शोकसहितहो बड़ा जो निज हृदयमें सृष्टि रचनेका गर्वथा उसे त्यागता भया १३ अपने जीने में निराशहुआ भारी मूर्च्छा को प्राप्तभया फिर दोघडी बीते मनसे स्वामी को स्मरण किया श्री गणेश जी को रोताहुआ सा प्रार्थना

करता भया १४ श्रीब्रह्माजी बोले हे अखिलगुरो नाम सबके स्वामिन् मेरी आयुर्बल तो थोड़ी नहीं है पर अनेकजन्मों में मेरा मनलग-रहा ऐसे मुझको संसार समुद्र से तिरानेवाला निर्मल ज्ञान नहीं है सो मैं इसपृथ्वी मे जन्मले अरु जिसकी उपमा नहीं ऐसी सुखवाली जो परम मुक्ति अरुमुक्ति आपके भजनसे उसे मैं कबप्राप्त हूंगा १५ हे विभो आपके सुदृष्टिरूप अमृत से भीगा भी भक्त तुम्हारा दुःख पाताहै इसकीयहलज्जा आपकोहीहै चिरायुर्बलवाले मेरीमृत्यु न हो १६ भृगुजी राजा सोमकान्त से बोले कि ऐसे इसने प्रार्थना करते आकाशवाणी सुनी कि तपकर तो उसने फिर प्रार्थनाकी १७ तब तो आकाशवाणी सुनतेही नानारूप बलवाले विघ्न ब्रह्माजी को छोड़ अन्तर्द्धान हुये १८ छुटा वो महा यशस्वी पद्म से उत्पन्न ब्रह्मा चिन्ता करतारहा कि बिना मंत्र अरु बिना स्थानके महातप कैसे कहा करूंगा १९ ऐसे व्याकुल चित्त ब्रह्मा जलके मध्यही भ्रमतारहापर अनन्यनाम औरमेरहित मनसे गजाननजीको ध्यावता भी रहा २० कैसे हैं कि मुकुट से विशेष शोभायमान जिस में मोती अरु रत्नलगे सुन्दर लालचन्दन से रचाहै अङ्ग जिनका सिन्दूर से अरुणतालिये मस्तक जिनका २१ मोतियोंकी लड़ोंकरके शोभायमान है कण्ठ जिनका सर्पका यज्ञोपवीत पहिरे अमोलरत्नों से जडे भुज भूषणोंसे भूषित २२ चमकदार जो मरकत मणि तिससे दीप्त जो अंगूठी तिसकरके शोभित भारी सर्पोंसे लिपटी जो गम्भीर नाभि तिससे शोभितहैं महोदर जिनका २३ नाना चित्र रंगोंसे खिंचे कटिबन्धनसे विराजमान सुवर्णके तारोंसेबना सजीला जो लालवस्त्र तिससे आवरण किये अर्थात् सजरहे २४ मस्तकमें जिनके चन्द्रमा सजरहा जो एकदन्त तिसकी शोभासे परम कान्ति होरही जिनकी ऐसे उस ब्रह्माके ध्यातेहुये फिर आकाशवाणी २५ उतरी कि सुन्दर बड़को देखर सो-ब्रह्मा ऐसे वचन सुन फिरचिन्ताको प्राप्तहुआ २६ ॥ इति गणेशपुराण उपासना खण्डमें ब्रह्माजी की चिन्ताका वर्णन इस नाम से चतुर्दश ऽध्याय हुआ १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

भृगुजीबोले कि हेराजोमेंश्रेष्ठ सोमकांत तबतौ ब्रह्माने भारीस्वप्न देखा । फिर उसने जलमें भ्रमते २ भारी वटवृक्ष देखा १ महापवन घामसे चरस्थिर जगत्केनाश हुये थे एकही महावट कैसेवचा२ ऐसे सन्देह को प्राप्त उसवृक्षके पत्रमे छोटाबालक । चारभुजवाला, सुन्दर मुकुट धरे कुडलोसे शोभित ३ अरु कठमे सुन्दर मणि मोतियो की लडोको धरे अर्द्धचन्द्र मस्तक धरे लाल वस्त्र पहिरे तैसें ही कटिसूत्र बाधे ४ ब्रह्माजी वहां ऐसेबालक को देखके तर्कनाकी कि यह बालकयहाकैसेहै जो एकदन्त नरशरीर गजमुखतेजसेप्रकाशमान५ अपने शुण्ड से जलको ले२कर शिरपर छोडताहुआ तब तौ ब्रह्मा इसेदेख आनन्द सहितहो ऊचेस्वर से हँसा ६ तबउसके हँसनेपर बालक उसवडसे उतरा अरु ब्रह्माके गोदमे बैठ उसे कोमल वाक्यकहा ७ बालक बोला तूछोटेसेभी महाछोटा है अरुवृद्ध भी महामूढ़ बुद्धि अर्थात् वृद्धभी बुद्धिरहित बालवतही है जोकि तू सृष्टिरचनेका गर्वकर चिन्ताको प्राप्तहो विष्णोसेधारणकिया अर्थात् तिरस्कृत हुआ ८ फिर आकाशवाणी सुन तपकी चिन्तामेपरायण नित्य जलमें भ्रमतारहा अब हेचतुरानन सब चिन्ताहारी उपदेश करूंहू कि६ मेरा एकाक्षर जो मत्र है इसेतू दशलक्षपुरश्चरणरीति से जप१० तब प्रत्यक्षहो उत्तम समर्थता देऊगा येस्वप्न के आश्चर्यको देख अम्बुज आसन ब्रह्मा चकित हो उठा ११ अरु शोचने लगा कि उस परेशका दर्शन मुझेकब हो ब्रह्मा स्वप्न देख मग्न हुआ आनन्द समुद्रमे १२ फिर स्नानकर बहुतदिन इसमेमंत्रजपा एक पैरसे कमलमें ठहर गणेशजीको ध्यातेहुये ब्रह्माने १३ कैसाहै कि जितेन्द्रियजित भोजनकाष्ठ पत्थरकीनाईं स्थितहुआ हज़ार दिव्य वर्षतक बडाभारी परमतपकिया १४ तबतौ इसके मुखसेबड़ीभारी ज्वालाझुल निकली तिन्हो से सारे प्राणी भारी भयानक पीड़ाको अप्राप्तहुये १५ तबतौ गणेशजीने ब्रह्माकी निष्ठाको प्रुवा अर्थात् -

चलदेखी तौ प्रसन्न हुये परम भक्ति से ध्याये उसके आगे प्रकटहुये
१६ किरोड सूर्य्योंके से प्रकाश समान शोभा जिनकी जैसे झलो
वाला अग्नि जलरहाहो मानो त्रिलोकी को जलाताहुआ अरुमानो
धरती आकाश को जलाताही होवे १७ जो गणेशजी फरशु कमल
धारणकिये सुन्दर मालाडाले सारेपापो को हरनेवाले सारीसुन्दर-
ता के भंडार गजवर मुखकी शोभावाले भक्तोकी इच्छा पोषणकारी
सुर नर मुनियो के बिघ्नोंके केवल अर्थात् आपही नाशक १८ तेज
के समूह रूप इनको देखतेही कमलासन ब्रह्मा कापा अरु जप से
हटाव्यग्र अर्थात् उद्विग्नमनहो परमचिताको प्राप्तहुआ १६ जिसके
नेत्रमारे तेज के ढकगये अरु स्मृति जातीरही इसकी इसऐसीदशा
को देख विघ्नराज गणेशजी तुर्तबोले २०, गणेशजी कहते हैं कि हे
लोकेश ब्रह्मातू भयमतमान वहीमैं आयाहू जिसने तुझे शुभ एका-
क्षरी मत्र स्वप्न में दिखाया था २१ तिससे तुझे सिद्धिमिली मै वर
देनेआयाहूं अरु मैं श्रेष्ठभावकोप्राप्तहू सोहेसुव्रती तूवरमाग२२जो२
तेरेहृदयमें है सो२देऊंगा मेरे प्रसन्नभये वोसभी होगा इसमें सशय
नहींहै २३ मुनिबोले हेराजन् ब्रह्मा गणेशजी के निर्मलवाक्यों को
सुनहर्षा अरु जगत् के गुरु जो ये इन्हे अत्यतही देखताहुआ इनको
शिरो से नमस्कार करके प्रसन्नमनहोबोला कि मेराजन्म सफल है
२४ ब्रह्माजीबोले किजो गणेशजी वेदोके शास्त्रोके ज्ञानी अरुयोगि-
यों केभी अरुऐसेही सब उपनिषधो के अगोचर अर्थात् जो विषय
नहीं किये जावें २५ सो आपबडे पुण्य से मेरे प्रत्यक्ष हुये जो आप
व्यापक हो आदि अन्त रहित अनन्तहो अप्रमाण किये जाने वाले
अरु गुणरहित भीहो २६ हेदेवेश हेविघ्नेश हेकरुणा के स्थान जो
आप प्रसन्नहोतो अपनी दृढभक्तिदो जिससेहमें दुःखस्पर्शनकरें २७
अरु अब मेरेको सृष्टिबनाने की शक्तिदो अरु गजानन आपके प्रसन्न
भये ये विघ्नसब शांतको प्राप्तहों २८ स्मरण करतेही मेरा सबकार्य
पूराकरो अरु निर्मलज्ञानदे अन्तमें मुझको स्थिरनामनिश्चल मोक्ष
देवो २६ गणेशजी बोले कि ऐसेहीहोवे तूनानाविधिकी बहुतसृष्टि-

रच मुझे स्मरणकरके सारेसे सारे विघ्ननाशहोंगे ३० तेरी दृढ़भक्ति अरु श्रेष्ठज्ञान मेरीप्रसन्नता से होंगे हेचतुरानन ब्रह्मन् तूनि शकहो सबकामकर ३१ मुनिबोले ऐसे वरपाय ब्रह्मा उन समर्थ की पूजा करताभया अरु जो२ उनके हृदयमें चिंता सो२ सबआगेप्राप्तहुआ ३२ अरु देवोंकेदेव गणेशजी की प्रसन्नता से पूजन करने के लिये दक्षिणा के अवसर में ये दो कन्या उत्पन्न भई ३३ कोमल प्रसन्न सुन्दर नयन मुखसे विराजित अनेक रत्नोंसे जटित नानाभूषणोंसे भूषित ३४ सुन्दर सुगन्धि लगाये दिव्यवस्त्र अरु माला पहिरे ये दोनो कन्या पद्मसे हुये ब्रह्माने तिनगणेशजी की दक्षिणाको उत्पन्नकरी ३५ अरु केले के गर्भ अर्थात् कपूरसे नीरांजननाम आरती उतार पुष्पांजलिदई अरु हजार नामोंसे स्तुतिकर प्रदक्षिणा करी ३६ नमस्कार कर प्रार्थनाकी कि दोनोंपर दयालहोउ ऐसेउसपर मेंठिब्रह्मा से पूजे गणेशजी ३७ तबतो विघ्नहर्त्ता गजमुख प्रसन्न मन उनसिद्धिरु बुद्धि इनदोनोंकोले समर्थगणेश अन्तर्द्धानहुये ३८ अरु फिर ब्रह्मामें पूर्ववत् परमेशकीप्रसन्नता अरु आज्ञासे विस्तार वालीसृष्टि रचताभया ३९ इतिगणेशपुराणउपासनाखंडमेंगणेशजी की पूजाका निरूपण इसनामसे पञ्चदशऽध्यायहुआ॥ १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

राजा सोमकांत बोला हे विप्रर्षे अर्थात् हे ब्रह्मवर्य-गणेशजी की कथासुन मेरेचित्तमे हर्षहोताहै औरभी कहो मैं इसकथारूप अमृत से तृप्त नहीं होताहूं १ गणेश परमात्मा भगवान् के अंतर्द्धानहुये ब्रह्माने कैसे सृष्टि बनाई हे प्रभो उसे वर्णन करो २ मुनिबोले उस ब्रह्माने पहिले मनसे सातपुत्ररचे और उनसे ये कहा कि तुम निज निज बुद्धि से सृष्टि सहायकर रचो ३ वे उनका वचन सुन तपमें निश्चयकर बहुतसा तपकरके परब्रह्मको प्राप्तभये ४ तब प्रजा के पति ब्रह्माने सातपुत्र औरबनाये वे अत्यन्त ज्ञानको प्राप्तहुयेइस सुन्दर सृष्टिको न करसके ५ फिर उनसनकादिकोंकोभी ज्ञानप्राप्त

देख आपनेही करनेका आरम्भ किया तौ मुखसे ब्राह्मणो को अरु अग्निको रचा ६ अरु कमलासनमें भुजा अरु ऊरू पैरसे और जो तीनवर्ण अर्थात् भुजोसे क्षत्री और घुटनों से वैश्यपैरोसे शूद्र इनको अरु हृदयसेचन्द्रमा नेत्रोसे रवि अरु कानसे पवन अरु प्राणवायुको उत्पन्नकिया ७ नाभिसेआकाश शिरसे स्वर्ग रचा अरु पैरोसे पृथ्वी और कानसेदिशा और अन्य२ लोकोकोभी ८ जो ऊचा अर्थात् बडा छोटा जो चर स्थिर जो विश्व तिसे रचा तैसेही समुद्र, नदी, पर्वत तृण, गुच्छे,वृक्ष इन्हें रचे ६ फिर हेमुनिश्रेष्ठो कितनेकदिन वीतेपर सोये जो महाविष्णु तिनके कर्णसे दो वडे असुरभये १० मधुकैटभ नामसे तीनभुवन में विख्यात डाढोसे भयानक मुहवाले पीले नेत्र अरु बडीनाकवाले ११ वडेदेहवाले,वडेवली पर्वतकेसमान अत्यंत ऊचे वर्षाकेमेघशब्दके समान गर्जते वे दोनो अति गर्वित १२ वे दुष्ट बहुतसे वचनोंकरके उस विष्णु को विकार करतेभये अरु विप्र देवता, साधुरूपियो अरु शास्त्रो को भी निन्दा करते भये १३ तिनके शब्द से पृथिवी अरु शेपकापे ऐसेही तिनके शब्द से सारा ब्रह्माड उद्विग्ननाम व्याकुल होगया १४ फिरवे क्रोधकर लाल नेत्र वाले उसब्रह्मा को खानेको तैय्यार हुये तबतो इसने बरदेने वाली विष्णु को मोहकराने वाली १५ विष्णु के नेत्र में प्राप्त जो निद्रा तिसकी स्तुतिकरी कमल मे आसन जिसका ऐसे ब्रह्माने मधुकैटभ केनाश अरु हरिके प्रबोधन अर्थात् चेतकराने के लिये १६ गणेश जीके प्रसाद से विष्णुके हाथसे उनका मरणजान ऐसे श्रेष्ठविचार करके चिताहर्षयुक्त १७ ब्रह्माजीबोले कि हेदेवि स्वाहानाम देवताओको हव्यादि देनेवाली अरु स्वधानाम पितरो को तृप्तकरानेवाली ऐसे स्वाहा स्वधा रूपधरे अरु स्वधानाम अमृतमयी भी तू है अरु मात्रा समय प्रमाण करानेवाली अरु उससे अर्द्ध प्रमाणवाली भी तूही है रक्षाकरने वाली सहार करनेवाली जनोकी जननीनाम उत्पन्न करनेवाली अरु सत्नाम जो सत्ताके आश्रय असत्नाम जो उससे भिन्न अर्थात् नहींहै इस बुद्धिका विषय उसकी शक्ति अर्थात्

आदि इच्छा रूपक आदि कारण सोभी तूही है १८ श्रुति वेदरूप स्वरोंकी साधक कालरूप रात्री आदि अन्त रहित सामान्य रात्री जगत्की माता जगत्पोषण करनेवाली रचना, पालना, अरु संहार करनेवाली १६ अरु सावित्री तैसेही सन्ध्यारूप महामाया क्षुधा तृष्णा रूप। हे पर्वत पुत्रि अर्थात् गिरिजा देवि सारे वस्तुओ के समूहोकी शक्ति तुम्हींहोगी २० त्रिलोकीकी करनेवाली तुही नाथ अर्थात् ईश्वरी मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि ये विष्णु दैत्य अरु दनुजके पुत्र तिन्हे सूदन अर्थात् हरानेवाला, ज्ञान विशेषज्ञानसहित अब निद्रासे व्याप्त चित्त हैं २१ जिसकरके जगत् उत्पादन अर्थात् रचाजाता है अरु पालन कियाजाताहै अरु संहारभी कियाजाताहै सोभी तुझ करके अवतारोंके संकटमे जोड़ा जाताहै अर्थात् तुम्हारी आज्ञासे विष्णु अवतारलेते हैं २२ सो तू इनमधुकैटभ दुष्टात्माओ को मोहो अरु इनदुस्सह अर्थात् खोटोंके मारनेको इस विष्णुको ज्ञानदेवो २३ पूर्वजन्ममें मैं इनसे निरालस्यहोकर वहुत आराधन किया गयाहूं वहुत २ विधिके वर मैंने इन्हेदिये इस्से ये मेरेसेदोनों अवध्यअर्थात्मारजाते २४ इसी से मैंने इनके ऊंचे नीचे वचन भी वहुतसहे तो ये मेरेहीको मारना चाहे तो नानाविधि की स्तुतियों सेमानें २५ तवभी ये अपने दुष्टस्वभावसे मेरेमारणसे न हटे इस्से हे देविमैंतुमको विष्णुके प्रवोध के कारण प्रार्थनाकरताहूं २६ इति गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे देवीजी की प्रार्थना भई इस नामसे षोड़शऽध्याय हुआ ॥ १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

मुनिजी राजासेबोलेकि जवतक विष्णु उठनेरहे तवतकतोउन्हों ने स्वर्गको जादवाया इन्द्रको स्थान यमका अरु कुवेरका भी १ उन्हेंदेख सारेसे देवता भागतेभये गिरपड़े कईधमें कई मूर्च्छितभये कईखुले अर्थात् छुटकर भगगये २ तवतो देवीकरके निद्रासेरहित किया गया ईश्वर विष्णु उन सव देवताओंको आश्वासननामस्या-

वन्दे अर्थात् उन्हें समझाय उनकेसाथ युद्धकिया ३ सवदेवताओंके उन्हीं से किये आक्रम नाम ठाढयन अर्थात् दवाव को निवारण अर्थात् हटानेको अरु शेषआदि सवसर्पों का मुनियोंका यक्षराक्षसों काभी ४ तहां हरि शोभित हुये जोकि शख चक्र गदा धारण किये किरीट नाम मुकुट कुंडलधरे नीले मेघके समान कृष्णगहरी छवि जिनकी ५ तवतो बड़े वेगवाले हरि भगवान् ने शङ्ख वजाया उसभारी शब्दसे पृथ्वी आकाशकोभी क्षोभित अर्थात् चलितकिये ६ पांचजन्यनामे भगवान्केशङ्खका शब्दसुनकरउन्हींकाहृदय फटासाहोगया तव वे दोनो भयभीतहुये आपस मे बोले ७ हमसे भूमिमण्डल अरु पाताल अरु इकईसों स्वर्ग ये जवसहजही दवायेगये तव यहशब्दनहींसुना गया था ८ जोकि वज्रसार नाम सारलोहेके समानजिससे-हमदोनोकाहृदय कांपनेलगा है इससेइसअतिवली पुरुपके साथ हमें अवश्य युद्ध करना है ६ रणकी खाजकी शांति के लिये अरु विजय के लिये या इतरनामहारने के लिये इसरिपुको हम हतेंगे या हम आप निर्भय मोक्ष अर्थात मरण को प्राप्त होंगे १० वे ऐसे निश्चय करके युद्धकरनेकी इच्छा वाले हरिको बोले हे पुरुष श्रेष्ठरण खाजमिटानेको दीखा है हम दोनोको ११ हमारेदृष्टिगोचर अर्थात् सन्मुख हुआ तू कैसी उत्तमता अर्थात् भलापन को प्राप्त है अर्थात् अव युद्धही उत्तम है ऐसे उन दोनो का वचन सुनकर विष्टरश्रवा जो भगवान् हैं सो कहनेलगे १२ हरिवोले हेमहासुरो वहुत अच्छा कहा मेरेसाथ यथेच्छ युद्धकरो पर अपना मरण आपसेहीतो कोई नहीं चाहता १३ वे वोले हेदेवेश तुम चतुर्भुजहो इस्से हमेंवाहु युद्धदेवो मुनिजी बोले ऐसे उनसे कहेभगवान्तथेति तैसेही ऐसा कहते भये १४ एकले भी भगवान् अरु शस्त्रभी तजके उन दोनो से लड़नेलगे वे शिरसे मस्तक में अरु जांघोंसे जांघो में प्रहार करतेभये १५ कूर्पर नाम कोपर अर्थात् कोहनीसे कोहनी अरु हाथोसे हाथ १६ पिंडलियो से पिंडली कमरो से कमर नासिकाओंसे नासिका मुष्टियो से मुट्ठी देश अर्थात् हस्ततल पीठो

से पीठी १६ युद्ध करते हैं कि आस्फोटन नाम फोड़ना अर्थात्
फटकार कर गिराना अरु विकर्ष खैंचना अरु मण्डल अर्थात् इधर
उधर चक्कर दिवाना ऐसे बहुत काल आपस मे युद्ध होतारहा १७
तो हे महामुनि पांचहजार वर्ष बीतगये पर हरि उन्हें जीतने के
समर्थ न हुये तबतौ भगवान्ने मायासे गीतगानेमें चतुर ऐसागंधर्व
का वेष बनाया १८ तो वनान्तर मे जा उसने सुन्दर वीणा सेगान
जो किया तो हरिण श्वापद जीवश्व नाम कुत्तादिको मे हो आपत्ति
जिनसे सोश्वापद अर्थात् सिंह,बघेरा, भेड़िया, चीता इत्यादि श्वान
हिंसकजीव लोक, देवता, गन्धर्वभी, अरु राक्षस १६ येसबनिजर
व्यापार से रहित होय अर्थात् कामछोड तिसगीत में परायणभये
अरु उसके गानेका आलाप कैलास में शंकर स्वामीनेभी वारवार
सुना२० तो भगके नेत्र हरने वाले शिवजीका क्याअर्थ है कि दक्षके
यज्ञ मे वीरभद्ररूप हो आपने भग देवताके दोनो नेत्र उखाड़लिये
थे ऐसे शिवजी अपने निकुम्भ, पुष्पदंत, इन दोनों से बोले कि जो
यह वनमें गाय रहाहै इसे शीघ्रले आवो२१वे दोनो वहांजायभग-
वान्का दर्शनकर बोले कि तुम्हारा गानासुन शंकर हर्षसेभरे २२
देव शिवजी तुम्हारा गान सुननेको बुलाते है हमारेसाथ तू चल हे
सत्यगान कर्त्ता जिससे शीघ्र शिवजी के पासजावें २३ हरभक्तवाले
गन्धर्व रूप हरि उनका यह वाक्य सुन उनके साथगये जहा महे-
श्वरदेव थे २४ वहां जाकर पार्वती के कन्त जो शिवजी तिनका
दर्शनकिया जोकि अर्द्धचन्द्रमा को मस्तकपर धारण किये गजका
चर्म ओढे रुण्डो के मालासे विभूषित २५ शोभायमान है पीलता
लिये जटाजूट जिनका सर्पोके जनेऊडाले ऐसे जो भक्त पीड़ाविना-
शकरनेवाले विश्व केईश शिव जी इनको पृथ्वीपर नम्रहो विष्णु ने
प्रणामकिया २६ पर्वतशायी शिवजीने इस अधोक्षजनाम हरिको
निजहाथसे उठाकर अरु इसकोआसनपर बिठाया अरुशंकरजीने
इसकी यथाविधि पूजाकरी २७ तब हरिबोले कि अब मेरा जन्म
सफलहुआजो धर्म अर्थ काम मोक्षदेनेवाला आपकादर्शनभया२८

वमदे अर्थात् उन्हें समझाय उनकेसाथ युद्धकिया ३ सवदेवताओंके उन्हीं से किये आक्रम नाम ठाढ़यन अर्थात् दवाव को निवारण अर्थात् हटानेको अरु शेषआदि सबसर्पों का मुनियोका यक्षराक्षसों काभी ४ तहां हरि शोभित हुये जोकि शख चक्र गदा धारण किये किरीट नाम मुकुट कुडलधरे नीले मेघके समान कृष्णगहरी छबि जिनकी ५ तवतो बड़े वेगवाले हरि भगवान् ने शङ्ख बजाया उसभारी शब्दसे पृथ्वी आकाशकोभी क्षोभित अर्थात् चलितकिये ६ पांचजन्यनाम भगवान्केशङ्खका शब्दसुनकरउन्होंकाहृदय फटा साहोगया तव वे दोनों भयभीतहुये आपस मे वोले ७ हमसे भूमि मण्डल अरु पाताल अरु इकईसो स्वर्ग ये जवसहजही दवायेगये तव यहशब्दनहींसुना गया था ८ जोकि वज्रसार नाम सारलोहेके समानजिमसे हमदोनोकाहृदय कापनेलगा है इससेइसअतिवली पुरुपके साथ हमे अवश्य युद्ध करना है ६ रणकी खाजकी शांति के लिये अरु विजयके लिये या इतरनामहारने के लिये इसरिपुको हम हतेंगे या हम आप निर्भय मोक्ष अर्थात मरण को प्राप्त होगे १० वे ऐसे निश्चय करके युद्धकरनेकी इच्छा वाले हरिको बोले हे पुरुप श्रेष्ठरण खाजमिटानेको दीखा है हम दोनोको ११ हमारेदृष्टिगोचर अर्थात् सन्मुख हुआ तू कैसी उत्तमता अर्थात् भलापन को प्राप्त है अर्थात् अव युद्धही उत्तम हैऐसे उन दोनो का वचन सुन कर विष्ठरश्रव जो भगवान् हैं सो कहनेलगे १२ हरिवोले हेमहासुरो वहुत अच्छाकहा मेरेसाथ यथेच्छ युद्धकरो पर अपना मरण आपसेहोवो कोई नहीं चाहता १३ वे वोले हेदेवेश तुम चतुर्भुजहो इस्से हमैंवाहु युद्धदेवो मुनिजी बोले ऐसे उनसे कहेभगवान्तथति तैसेही ऐसा कहते भये १४ एकले भी भगवान् अरु शस्त्रभी तज के उन दोनो से लड़नेलगे वे शिरसे मस्तक में अरु जाघोसे जाघों में प्रहार करतेभये १५ कूर्पर नाम कोपर अर्थात् कोहनीसे कोहनी अरु हाथोसे हाथ १६ पिंडलियो से पिंडली कमरो से कमर नासिकाओसे नासिका मुष्टियो से मुट्ठी देश अर्थात् हस्ततल पीठो

से पीठी १६ युद्ध करते हैं कि आस्फोटन नाम फोडना अर्थात् फटकार कर गिराना अरु विकर्ष खैंचना अरु मण्डल अर्थात् इधर उधर चक्कर दिवाना ऐसे वहुत काल आपस मे युद्ध होतारहा १७ तो हे महामुनि पांचहजार वर्ष बीतगये पर हरि उन्हें जीतने के समर्थ न हुये तवतौ भगवान्ने मायासे गीतगानेमें चतुर ऐसागंधर्व का वेष वनाया १८ तौ वनान्तर मे जा उसने सुन्दर वीणा सेगान जो किया तौ हरिण श्वापद जीवश्व नाम कुत्तादिको मे हो आपत्ति जिनसे सोश्वापद अर्थात् सिंह,वघेहा, भेडिया, चीता इत्यादि श्वान हिंसकजीव लोक, देवता, गन्धर्वभी, अरु राक्षस १९ येसवनिजर व्यापार से रहित होय अर्थात् कामछोड तिसगीत मे परायणभये अरु उसके गानेका आलाप कैलास में शंकर स्वामीनेभी वारंवार सुना२० तौ भगके नेत्र हन्ने वाले शिवजीका क्याअर्थ हैं कि दक्षके यज्ञ मे बीरभद्ररूप हो आपने भग देवताके दोनो नेत्र उखाड़लिये थे ऐसे शिवजी अपने निकुम्भ, पुष्पदत, इन दोनों से वोले कि जो यह वनमें गाय रहाहे इसे शीघ्रले आवो२१वे दोनो वहांजायभगवान्का दर्शनकर वोले कि तुम्हारा गानासुन शंकर हर्षसेभरे २२ देव शिवजी तुम्हारा गान सुननेको वुलाते हे हमारेसाथ तू चल हे सत्यगान कर्त्ता जिससे शीघ्र शिवजी के पासजावें २३ हरभक्तवाले गन्धर्व रूप हरि उनका यह वाक्य सुन उनके साथगये जहा महेश्वरदेव थे २४ वहा जाकर पार्वती के कन्त जो शिवजी तिनका दर्शनकिया जोकि अर्द्धचन्द्रमा को मस्तकपर धारण किये गजका चर्म ओढे रुण्डो के मालासे विभूषित २५ शोभायमान हैं पीलता लिये जटाजूट जिनका सर्पोंके जनेऊडाले ऐसे जो भक्त पीडाविनाशकरनेवाले विश्व केईश शिव जी इनको पृथ्वीपर नम्रहो विष्णु ने प्रणामकिया २६ पर्वतशायी शिवजीने इस अधोक्षजनाम हरिको निजहाथसे उठाकर अरु इसकोआसनपर बिठाया अरुशंकरजीने इसकी यथाविधि पूजाकरी २७ तव हरिवोले कि अव मेरा जन्म सफलहुआजो धर्म अर्त्थ काम मोक्षदेनेवाला आपकादर्शनभया२८

फिर गन्धर्व्ववेद अर्थात् गानविद्या में परायण हरि ने देव शि-
वजीको सन्तुष्टकिये बीणाके स्वरोसे कोमल रागोंसे अरु नाना प्र-
कारके अलापोसे भी-२६ स्कन्द ० गणेश ० अरु देवी पार्वती को
और भी सुर मुनियोको प्रसन्नकिये तब तो महेश्वरजी सबके देखते
भगवान्को स्पर्शकर अर्थात् सराहतेभये ३० अरु जो ये शंख चक्र
गदा, पद्म, धारे सुन्दर भगवान् थे इनसे कहा कि हे गन्धर्व रूपहरे
मुझसे निश्शेष अर्थात् जिससे कोई कामना शेष न रहे ऐसीकामना
मांगो३१ मैंदेऊंगा क्योंकि तुम्हारे गानसे अत्यन्त हर्षकोप्राप्तहुआ
हूं भृगुजी बोले कि हेराजन् तबतो भगवान् ने उन दैत्यो का परम
वृत्तान्तकहा ३२ कि मेरेक्षीर सागर में सोते कानके मैलसे मधुकै-
टभ नाम उत्पन्न भये अरु ब्रह्माजी को भक्षण करनेको उद्यतभये
३३ फिर हे भर्ग शिवजी उसने निद्रा स्तुति करी तिससे मैजागा
अरु उनसे मल्ललीला अर्थात् कुस्ती इस खेलकोप्राप्तहुआ बहुत
युद्ध करताभया३४ परमैउन्हें जीत नसका इससेमैने यह वेष धरा
है अब मुझ से उनके वध अर्थात् मारने का उपाय हे करुणा
सागर शिव आप वर्णन करो ३५ भर्गनाम महादेव जी ने कहा
कि तू गणेश जीको विनाही अर्चे संग्राम करने की जगह चलागया
तिससे तू शक्तिसे हीन है अरु अत्यत क्लेशवान् भी है ३६ हे श्रेष्ठ
भगवन् इससे तुम गणेशजी को पूजकरही युद्ध के लिये जाओ
जिससे तुम उन्हें मायासे मोहकर वश करलेवोगे ३७ मेरे प्रसाद
से उन दुष्टो को तू निस्सन्देह मारैगा- हरि बोले कैसे विनायक
देवकी उपासना करू सो हे भर्गजी आप कहो ३८ महादेवजीबो-
ले श्रीगणेशजीके सातकिरोड मंत्रकहेहै तिनमें जो महामत्रहे उनमें
भी एकाक्षर भारी महामत्र है ३९ अरु हे भगवन् तैसेही षडक्षरभी
हैं तिनमें सेभी में एक कहता हूं तब शिवजीने एकाक्षरी को छोड
सिद्धारि नाम से प्रसिद्ध चक्र के योग से ४० ऋण धन को शोध
अर्थात् हानिलाभ को विचारकर षडक्षर महामत्र का उपदेशकिया
जोकि गणेश जी सर्व सिद्धि दायक श्रेष्ठ मत्र है ४१ इस अनुष्ठान

मात्रही से तेराकार्य्य सिद्धिको प्राप्त होगा तब तो सो भगवान् अनुष्ठान करनेके लिये शीघ्र जातेभये ४२ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्ड में महामन्त्र का उपदेश भगवान् को वताना इस नाम से सप्तदश ऽध्याय हुआ ॥ १७ ॥

अठारहवां अध्याय॥

मुनीश्वरजी वोले भगवान् हरिने इसमन्त्रको किस स्थानमें किस प्रकार से जपा। अरु कैसे सिद्धिको प्राप्तभया सो विस्तार सहित वर्णन करो १ व्यासजीने कहा इस पृथ्वी मे परम सिद्धिका करने वाला(सिद्धिक्षेत्र)इस नाम से विख्यात एकक्षेत्रहैवे महा विष्णुतहां जाकर परम तप करनेलगे २ षटक्षर मन्त्रकी बिधिसे गजानन देव को ध्यावते हुये खनाम जो इन्द्रिय तिन्हें यत्नसे जीतकर आराधन करतेभये ३ निज शत्रुवध कामना के लिये वाणास्त्र से दिग्वन्धन अर्थात् रक्षा करके और भूत शुद्धि को करके प्राणों का स्थापन अर्थात् प्राणप्रतिष्ठाकरके ४ और आधारशक्तिसे आदिक्रमसे अन्तर्मातृकाओं का औ कान्यास अर्थात् प्रत्येक नाम से यथा स्थान में स्पर्श करके नमस्कार करना अरु मस्तक आदि क्रम करके वाहर की मातृकाओं का न्यास करके फिर मूलमंत्र से प्राणायाम करके गजाननदेव जी को ध्याकर किंच आवाहन आदि जो उपचार मुद्रा हे तिनकरके अर्थात् जो मानसी पूजाविधिहे तिससे ५।६ और भी जो नाना प्रकार की सामग्री हो तिस करके और जो षोडस उपचार हे तिनसे योगेश्वरों के भी ईश्वर जो हरि भगवान् हे सो उस परम मन्त्रकोजपते भये ७ ऐसे सौवर्षकाल वीते श्रीगणेश परमात्मा २ किरोड सूर्य्योंकी अग्निकेसमान कांतिवाले हो प्रत्यक्ष ताको प्राप्त भये अर्थात् अपना प्रकट दर्शन कराते भये ८ अरु अतिही प्रसन्न हृदय हुये गरुड की ध्वजा वाले हरि से कहते भये कि हे हरे तू जिन २ की कामना अर्थात् चाहना करता है सो २ वर मांग ९ तेरे इस तपसे प्रसन्न किया मैं सवही देउंगा अरु जो में तुझ से

पहिलेही पूजागया होता तो तेरा निश्चयही विजय अर्थात् जीतना होजाता १० हरि बोले हे गणेशजी महाराज शिवजी, अरु इन्द्र हैंमुख्य जिनमें ऐसे सारेदेवता बहुत से तपों करके भी आपकेदर्शन करनेको समर्थ नहींहोते अरु जो आप नाना अर्थात् विराट्रूप एक अर्थात् केवल शुद्ध ब्रह्मरूप व्यक्ताव्यक्त अर्थात् गुप्त प्रकट अनुमित प्रत्यक्ष विषयी कृत आप गणेश तिन्हें मैं अर्थात् आपतोकहापरमेश अरुमैकहां पश्येनाम सम्यक् प्रकारसे आपका दर्शन करताहूं ११ और जो आप छोटोसे अणु अर्थात् प्रमाणु स्वरूप, हो अरु महत नाम बड़े जो व्योम आकाशादिक तिनसे महान्सत्वरूप नाम बडे भारी विराट् चैतन्य स्वरूपवाले अरु इस जगत्की सृष्टिनामरचना अरु सहार अरु पालन भी बार बार दैवयोग से आपही करते हो १२ सर्वजीव मात्र के व्यापक भी आपही हो सर्वत्र गमन करता अरु सर्वशक्ति समन्वित सर्वत्र व्यापक सर्व प्रपंच कारी परमईश सर्वजीवसमूहकाद्रष्टा नाम देखनेवाले अर्थात् साक्षिरूप आपहीहो अरुरक्षक, पोषक सन्सारके नेतानामप्राप्तककरनेवालेनियन्ताअर्थात् ईश आपही हो पितानाम पालन कर्त्ता भी आपही हो १३ हेदेव गणेशजी ऐसे आपके दर्शनसेही मेरी सिद्धियें तोहोगी पर तबभी मै आपसे एकबात और भी कहताहू १४ कि मेरीही योगनिद्रा के अंत में मेरेकर्णा के मलसे उत्पन्न महाबडेभारी जीव मधुकैटभ उत्पन्नभये अरु उस ब्रह्माकोखानेको तय्यारभये १५ तबतो मैंने उनके साथ बहुत दिनोतक युद्धकिया फिरमैं उनसे क्षीणबलहोकर आपके शरणआयाहू अबजैसे उनका मुझसेतीवधहोय तैसाबिचारकरो१६ और मुझको औरर भी असुरोंके जीतनेका उत्तम यशदेवो अरु हे परम ईशान गणेशजी आप मुझे अपनी अनपायनीनाम नाश न हो जिसका ऐसी अव्ययभक्तिदेवो १७ जिससे मेरी ये कीर्तिअप्रमेयहो करके त्रिलोकोकोपवित्र अर्थात् व्याप्तकरै श्रीगणेशजीबोले कि हेहरे जो २ तेरेसे प्रार्थित अर्थात् मांगागया है वो २ तेरा अवश्यही हो अर्थात् सिद्धिको प्राप्तहोगा १८ तेरा यश अरु बल परम कीर्तिभी

होगी अविघ्ननाम विघ्नका नाशहोगा मुनिजीबोले गणेशजीतो महा विष्णुको ऐसे कहकर अन्तर्द्धान हुये १६ अरु ये आनन्दभरे उन असुरोको जीत लियेहो मानतेभये अरु वहा भूरिनाम बहुतसे रत्न जडे जिसमे ऐसा स्फटिकोसे प्रासादनाम मन्दिर बनाते भये २० कैसाहै कि सजरहे सुवर्ण के शिखर जिस्मे चारद्वार वाला सुन्दर शोभायमान वहां गणडकीनाम नदीके पाषाणमयी मूर्त्तिको स्थापन करतेभये २१ देवता अरु मुनियोने जिसकी (सिद्धविनायक) ऐसी प्रथानाम सज्ञारक्खी कि जहा भगवानूने भी यह सिद्धिपाई २२ तवसे वो फिर पृथिवीपर सदा(सिद्धिक्षेत्र)इसनाम से विख्यातहुवा फिर भगवान् तहांगये जहापर मधु अरु कैटभ दोनोथे २३ वेभग-वान् को आते देखके हँसने अरु व्याज निन्दासी करनेलगे कि यह मेघसमान कालामुह तूनेहमै कहासे आ दिखाया २४ अरु हमतो अबतेरे को अवश्यही महामुक्ति देंगे अर्थात् इस ससार से छुडादे-वेगे अरु तुमतो हलकापने को प्राप्त होगयेथे अबयहां किसलिये आयेहो २५ हरिनेकहा अरे छोटासा स्वरूपही अग्नि शीघ्र सब को जलादेता है जैसेही रात्रिको छोटासा भी दीपकभारी अँधेरेका सहार अर्थात् दूरकर देताहै २६ तैसेही हे खोटे मदवालो मैं तुम्हें अभीनाश करनेको शक्त समर्थ अर्थात् तय्यारहू मुनिजी बोले कि इनका ऐसावचनसुन मधुकैटभ अतिक्रोधहुये २७ शीघ्रही भगवान् को मुष्टियो से हनतेभये अर्थात् हरिके ऊपर घूंसों का प्रहार करते हुये तवतो फिर उनसे हरिका मल्लयुद्ध होनेलगा २८ ये वहुत दिन उनमे युद्धकरके भगवान् फिर उन्हें वरदेने को तय्यार हुये तो हरि भगवान् उन मधुकैटभो को कोमलवाणीसे यह कहतेभये २९ मेरे प्रहारो को तुमने वहुत वर्षसहे सो हेदैत्य श्रेष्ठो मैं तुम्हारे पुरुषार्थ से प्रसन्न हुआहू ३० तुम्हारे दोनों के समान न कोईहुये न होवेंगे वे वोले कि हरे हमींसे तू वरमाग हम वहुत वरदेवेंगे ३१ हमीं तेरे युद्ध से तुमपर अत्यत प्रसन्न हैं मुनिजीवाले भगवान् उन माया से मोहितहुओका ऐसावचनसुन३२ वोले कि हे असुरो जो तुममुझको

वरदेने को समर्थ होतो मेरे से वध्यता अर्थात् मरजाने की योग्य ताको प्राप्तहो यहीमैंने वरमागा ३३ तबवे मधुकैटभ विचारते जल मय सबदेखकर ये परम प्रसन्नहुये कहतेभये कि तुम्हारे हाथसेमौत अच्छीहै तथाहीहो ३४ अन्तमेंभी आप के चितवन से जनमनातन मोक्ष को प्राप्तहोते है पर हेमाधवहरे जहां कि जलमयी पृथ्वी न होवे तहां हमें मारो ३५ सर्व्वथा हम सत्यका त्याग नही करेंगे क्योंकि सत्यमेही सब प्रतिष्ठित अर्थात् टिकरहा है मुनिजी बोले उनके ऐसेबचनको सुन भगवान् ने उनको अपनी जांघो पर धर लिये ३६ अरु छूरेकीसी धारवाले चक्रसे इनके शिरकाटलिये तब तो देवसारे हर्षितभये अरु पुष्प वर्षातेभये ३७ सारे गन्धर्व नाचे अप्सराओ के गण गानेलगे तबफिर भगवान्ने आकर ब्रह्माजीको ३८ हर्षभरे होकर सब वृत्तांत कहा हरिबोले कि हे ब्रह्मन् जब मैं उनके जीतनेमे अशकनाम असमर्थहुआ तो शिवजीकेपासगया३९ फिर शंकरजी से मेरेको षटअक्षर का मन्त्र प्राप्तभया उससे मैंने व्यापक विघ्नोके ईश देव गणेशजीको आराधन किये ४० उन्होंने मुझे नानाप्रकार के काम फल देनेवाले वर दिये उसके प्रभाव से मुझकरके दुष्ट मधुकैटभ हतेगये ४१ वे स्तुति पूजाकिये देवगणेश जी अन्तर्द्धान भये उन महात्मा गणेशजी का बडापन ४२ मुझको शंकरजी करके जनायागया उन्हींके प्रसाद से मैं और२ भी दैत्य दानवो को हतोगा देवता अरु सारेमुनि गजानन देव की स्तुति करके ४३ ब्रह्माजी को अरु शंकरजी को अरु मुझको प्रणाम कर निज २ स्थानको गये इस पापनाशक माहात्म्यको नित्यसुने ४४ उसेकिसीसे भी भयनहो अरु वो सब कामना फलको प्राप्तहो ४५ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरार्द्धखण्ड सिद्धक्षेत्र की उत्पत्तिका कथन इसनामसे अष्टादशोऽध्याय हुआ ॥ १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

व्यासजीने ब्रह्माजीसे पूंछाकि सिद्धक्षेत्र का अरु गणनाथजीका

पापहरण कामदाता पुण्यवर्द्धक नाम वढाने वाला माहात्म्य मैंने
सुना १ हेभगवन् ब्रह्माजीगणेशजीकी औरभी कथा व अर्थात् इति-
हास मुझसेवर्णनकरो कोईभी इसकथारूप अमृतकोपीताहुआ तृप्त
नहीं होता है २ ब्रह्माजी बोले पराशर जीके पुत्रव्यास तेरेआगेही
मैं एक वडा आख्यान कहताहू जोकि सर्वदेवों के अधिष्ठाता विभु
देव गणेशजी का सुंदर इतिहासहै ३ कि विदर्भदेश में एक (दान
शूर) इसनाम से महाबली राजाहुआहै अरु हे महामतिवाले व्यास
जी (कौंडिन्य) नाम नगरमें उसका निवास हुआ ४ जिसके सीमा
वाले अरु और २ भी राजा करके देनेवाले हुये अर्थात् आप महा-
राजाथा जिसके घोडोंकी अरु हाथियो की अरु पैदलोंकी दशकोटि
थी अर्थात् यह सबवल दश२ करोडथा ५ इतनेहीरथ जिसकेआगे
पीछेसे सदा निकलतेरहे अरुहजारों ब्राह्मण जिसकेआश्रयहो हर्ष
पाते अर्थात् सुखसे धन समृद्धकर्म निष्ठहुये ६ उसकीरानी वडभा-
गिनी (चारुहासिनी)इसनामसे प्रसिद्धहोतीभई खिलेकमल सरीखे
मुखवाली मृगके वच्चेके समान नेत्रवाली ७ जोब्राह्मणों की शरण्य
देवती मे परायण नित्यही धर्ममें तत्पर पतिव्रता पतिमेहो प्राण
जिसके पतिही के वचन मे सदा रची ८ वो श्रेष्ठवर्णवाली दैवयोग
से अपुत्रनाम पुत्ररहित होतीभई राजाने उस सुंदर सर्वांग शोभा
वालीको देखकर ६ दुःखी विचारता हुआ वोला कि मैं नृपो मे तो
उत्तम हू पर पुत्र करक हीनहूं इससे इससब राज्यको त्याग वन
मेंहीजाना उत्तम है १० अपुत्र की गतिनहींहोती अरु स्वर्गमें सुख
भी नहींहोता अरु देवता वो उससे हव्यनाम आहुति नहीं गृहण
करते हैं अरु पितर कव्यनाम पिण्डदानादि नहींलेते ११ मेराजन्म
वृथा है अरु माता घर पिता द्रव्य कुल येभी वृथाहै विना पुत्र के
मेराकिया सबकर्म भी निश्चय निष्फलहोहै १२ उसराजा ने ऐसे
विचार अपने दो मंत्रीवुलाये एकतो(मनोरजन) नामदूसरा (सुमंतु)
इसनामसे थे १३ वेदोनों दण्ड नीति अरु त्रयी अर्थात् ऋक् यजुः
साम इनतीनोंवेदोकोजानते अरु वे सोलाकलाओंमेंकुशल सोदोनों

उसीक्षण से अर्थात् तत्कालही आकर हेमुने उसराजा को नम्रभये खडे हुये १४ भोमराजा उन्हें ये बोलाकि मेराराज्यले वो क्योंकि मेरा या मेरीरानी का पूर्व जन्मका कोई पापहे १५ तिससे हमारे वेनोजगह अर्थात् मातृ पितृ कुल पावनी सर्वत्र सुखदेनी सन्तान नहींहै सो हमबनको जातेहै जो फिर आवेतो हमको फिरराज्यदेना १६ अरुजो हमनहींआवें तो तुमदोनो आपसमेंराज्यको वटायलेना वेराजा ऐसे निश्चय करके स्वस्ति वाचन पहिले करवाकर १७ ऐसे राजा ब्राह्मणोको बहुतसा दानकरके अपने पुरसे चला पत्नी सहित श्रेष्ठ राजा मन्त्री तथा और नगर निवासि जनो को साथ लिये १८ दो कोशमात्र जाकर सबको विदाकर दिये मन्त्री बोले कि हे राजन् हमभी आपके साथही जावें १९ अरु तबतो सारेनगरकेजन अत्यंत दु:खित हो रोनेलगे तो राजाने कहाकि भय न मानना मन्त्री तुम्हारे मालिक कर दियेहै२० जैसेकि मै वैसेही ये तुम्हारा पालनकरेंगे ऐसेउनको समझाय उनमन्त्रियोसे बोला कि २१ मैने तुमको राज्यदिया इससे मेरेपुरको सबतरह मे रक्षाकरो ऐसेराजा सबको विदाकर पत्नीही को साथले पुरसे औरभी आगे गया २२ इसमे भ्रमते २ कमलो करके शोभित सरोवर देखा जो कि फूले वृक्षोकरके शोभायमान नाना जलजीवो करके युक्त २३ फिर इस पासही राजारानी दोनोने एक सुन्दर रमणीय आश्रम देखा जोकि सम्पूर्ण आनन्दको विशेष बढानेवाला २४ जहाहस्ती आदि जाति वैरवालेभी ईर्षा न करे अरु सिंह,नकुल,सर्प, विडाल मूषक आदिभी समान रहते थे २५ वहांपर उन्हों ने कुशासन पर बिराजमान मुनि(विश्वामित्रजी)को देखे जोकि शांतशील अरुवेदके अध्ययन में परायण शिष्यो करके आवरण किये अर्थात् शोभित २६ ये दोनों अंजलिके पुटकिये अर्थात् हाथ बांधे प्रणाम करके अरु उनके चरण धारण करके वार २ नमस्कार करते भये २७ तबतो मुनियों मे सिंहतप के समुद्र विश्वामित्र जी जाना है प्रयोजन जिन्होने सो उसराजा को चरणो मेसे उठाकर मधुर मनोहर

बाणी से कहतेभये २८ बिश्वामित्रजी बोले कि हे राजन् तेरे गुणयुक्त महायश वाला पुत्रहोगा तू कहांसे आया है हमैं अपनाना म नगरवताव २९ फिर राज श्रेठ मैं तेरे पाप नाशके लिये प्रयत्न करूगा भीमराजा बोलाकि हेस्वामिन् बिदर्भ देशमैं कोंडिल्यनाम मेरानगर है ३० (भीम) ऐसाही मेरानाम है अरु ये सुन्दर हास्य वदनी मेरीरानी है अरु पुत्रकेलिये तप दान व्रत आदि उपायो से यत्नकिया है ३१ परमेरे पूर्वजन्मके कियेपापसे भगवानने करुणा न भई-तबतौ राजतज वनमेआये अरुमुनिजी आपके चरणदेखे ३२ बहुतसे वनोमे भ्रमते दैवकरके यहां लायेगये साधुओ की संगति शीघ्र उत्तमफलको देतीही है ३३ इससे अव आप के आशीर्बचन से मेरेपुत्र हुवाही इसमे सन्देह नहीं क्योकि विद्या व्रत तप दान यज्ञ वेदाध्ययन करनेवाले ३४ दया शांति सयुक्त आपकी आशी-श हे मुने व्यर्थनाम निष्प्रयोजन नहींहै परतु हे मुनिजी मेराऐसा पूर्व जन्मका कौनपाप है ३५ उसमें कोई उपाय कहो में आपको सर्वज्ञ मानताहू ब्रह्माजी बोले महामुनि बिश्वामित्र जी उस राजा के ऐसे बचन सुनकर,राजाको उस के पूर्व की कथा आदर सहित सुनाई ३६ बिश्वामित्र बोले हे खोटीमति वाले तेंने श्रीमदसे अंधा हो निज कुल धर्म तजे जोकि वेद में अरु शास्त्र पुराण मे अरु इस लौकिक अर्थात् लोक व्यवहार मे भी जो प्रतिष्ठित नाम माने थे ३७ सो कहताहू कि तेरे वड़े नित्यही गणेशजी को पूजतेरहे अरु तिन्हींके क्रोधसे तेरे सन्तान नहीं होती है ३८ जिस कारण से ये गजानन तुम्हारे कुल देवत्वको प्राप्तहुये सो हे महावीर में तेरेमे आदरसे कहताहू तू श्रवणकर ३९ तुझसेपहिले सप्तम पुरुषअर्थात् सातवईं पीढी में भीमनृप हुआ उसके भी बहुत कालही करके एक पुत्र हुआथा ४० तोयह गूगा अरु वहिरा अत्यंत दुर्गंधि सहित पूयझरने सहित अर्थात् राध जिसके शरीर से चुवरही अरु कुवड़ा ४१ उसेदेख उसकी माता कमला अत्यन्त दु खितभई अपने मनके बीच चिन्तने लगी कि ससार में अपुत्रताही भलीहै ४२ अरु ऐसा

पुत्रवानपना अच्छानही कि जो अत्यन्तदु ख करनेवाला इससेमेरा मरण या.इसपुत्रका बिधातासे क्यो नही किया जाता है ४३ अरु अवमे प्यारे जनोंको कैसे मुंह दिखाऊ गी ऐसे उसने अत्यन्त वि-लाप करती अतिही भयानक रुदनकिया ४४ उसका भर्त्ता रोना सुन उस सूतिकाके घरमे गया अरु उसतरे के बालक अरु अति दु खित पत्नीको देखकर ४५ कर्मके मार्ग अर्थात् कर्मगति ज्ञानी राजा उसको कोमल वाक्यसे समझाता हुआ बोला कि हेकल्याण वती तू दु खनपाव कर्मोकी गति ऐसीहीहै ४६ कि पूर्वजन्मके पाप से प्राणी दु खभागी होताहै अरु दु:खवाला सुख भोगता है अरु सुखवाला भी फिर दु:खही भोगने लगताहै ४७ इस बालकको न शोचो अच्छाही होगा जैसे इसका पूर्ववीता अर्थात् कियाहै तैसा ही इसेहोगा ४८ अरु हम मणि मन्त्र औषधो करके यत्न करेंगे किंच तपो अरु जपोसे देवताओकी पूजा अरु यथाविधि से ४९ अवहे सुन्दरि भृकुटीवाली इसवालकको जो भलाकरने का हित है तू उसे आचरण कर ऐसे कही पतिव्रता शोक को त्यागकर फिर बालकको ५० जलसे धोकर सखियो के साथ हर्षी पुत्रकेजन्मका सब मगल कार्य्य करती भई ५१ उसने ब्राह्मण अरु उनकी स्त्रियो की यथा शास्त्र पूजाकी इति गणेशपुराण उपासनाखण्डमे कमला पुत्रका वर्णन इसनाम से एकोन विंसतितमोऽध्याय हुआ १९ ॥

बीसवां अध्याय॥

श्रीब्रह्माजी बोले तवतो उसने ब्राह्मणो को साधुओं को दैवज्ञनाम ज्योतिषियोको जोकि वेदमे निष्ठावाले थे तिन्हे बुलाय अरु धन रत्न बस्त्रोसे उनकीपूजाकर १ उन्हेंपूछकर राजाउसका (दक्ष) ऐसानाम रखताभया अरु मंत्रोके जपोका प्रयोग किंच औषधो के समूहो से २ अरु आपने बारह वर्ष तक परम तप किया कि जिससे पुत्र के रोगकी विमुक्ति अरु अपने वंशकी वृद्धिहो ३ जवभी राजाने उस पुत्रको रोगरहित न देखा तव अत्यन्त वेदनाको प्राप्तहुआ क्रोध से

मूर्छा होकर ४ बोला कि हे रानी तूजा मेरेघरसे अरुहे कमले इस पुत्रकोभी लेजा अबमै इसपुत्र को अरु तेरेको देखना नहीं चाहता हूं ५ कमला रानी उसप्यारे पतिसे ऐसी निन्दा कीगई तबतौ पुत्र को लेकर तिस नगरसे प्रस्थान किया अर्थात् चलीगई ६ रोती हुई शोकसे व्याकुल दुखीभई अश्रु पोछती उस बालक को पीठपर धरे क्षुधा अरु तृषा के खेदसे कृशित अर्थात् दुखेली होरही ७ गावसे और २ गाव चलीगई भिक्षाचरण करती अत्यन्त दुखी अरु उसका वस्त्र भूषणादि जोथा सो चोरोने चुरालिया ८ वहां उसपुत्र को शिवालय मे रखकर राजा की प्यारीभी रानी भिक्षाके लिये पुरमें घरघर भ्रमतीभई ९ ऐसाही कभी वो पुत्रको साथ ले भीखमागने नगर मे गई किसी द्विजवर के स्पर्शहोनेसे उस पवन के लगनेसे वोबालक १० निजभक्ति के वढाव से श्रीगणेश जी करके चक्षुमहित कर्णो सहित किया दिव्य देहवाला होगया ११ कमला उसे देख सब दुःख त्याग हर्षित भई जो बालक सुखदेने वाली कोमल वाणी को उच्चार करताथा १२ अरु कमला मनमें तर्कना करतीथी कि जो बालक मणिमंत्र औषधि अरु वडे २ मन्त्रों के अनुष्ठानो करके भी अच्छा न भया १३ सो सुत पवन मात्रही के स्पर्शसे कैसे श्रेष्ठहोगया अब मै दुष्कर्मके नाशकारी उस पुरुष को कहा देखुगी १४ ऐसे सुतको लेकर दूर हुआ है खेद जिसका ऐसी वो फिर उसे साथले भिक्षाकरने नगरमेंगई १५ नगरवालों ने उनदोनो को बुलाकर आदर सहित भोजन कराते भये नाना प्रकार के पकवान शाक आदिको से अरु शर्करा घृत क्षीर से १६ ऐसेही वे दोनो नित्यभोजन करते रहते फिर धन अरु नये २ वस्त्र श्रेष्ठोको प्राप्तभये १७ तब एक नगर वाले ने उससे पूछा कि तेरे पिताकानाम हमें बतलाव कौन देश अरु कौन पुर जाति अरुतेरी वृत्ति क्याहै १८ उसका ऐसावचन सुन वो दक्षनाम राजपुत्र माता के पास आकर अपना पिता अरु नगर कुल १९ वृत्तान्त पूछ फिर उस नगर वालेसे बोला कि कर्णाटक देश के भानुनाम नगर

में मेरा प्यारापिता २० क्षत्रीवंश बलसहित रिपुबलको मर्दन क-
रनेवाला विख्यात भया तिसकी ये कमला नाम रानी अरु मैदक्ष
नाम सो पुत्रहूं २१ हेब्रह्मन् जबमें उत्पन्नहुआ तबअंधा अरुबहरा
भीथा अत्यन्त घावो करके दुःखी तब मातामुझे छोडनेको तय्यार
हुई २२ पिताने उसे निषेधो अर्थात् समझाई उन्ने बहुत २ यत्न
किये तो मेरेपिताने बारह वर्ष तपकरके पुण्यभी समर्पण करदिया
२३ मेरेपिताने मेरे अंगमें सुन्दरता जबभी नहींदेखी तबतो हेना-
गरप्रिये उसने माताको अरु मुझकोभी नगरसे निकालदिया२४
अरु यहां मै किसी वायुके स्पर्शसेही सुन्दर होगया सो सम्वाद है
कि अर्थात् विश्वामित्र ने कहाकि हेराजन् उसने अपनी माके मुख
सेप्राप्त अर्थात् सुनावत् वर्णनकिया२५ उसनगरनिवासी को सुना
कर जातेही दक्ष तुरतही अपनी माताको प्रसन्न करता आया २६
तब उस नगर में वे दोनो उसी ब्राह्मणसे उपदेश किये गणेश जी
का आराधन विधिमें करुणायुक्त मनसे निश्चिन्तभये२७ तबतौवो
कमला अरु दक्ष परम मोक्षपदवी में स्थितभये कि एक अंगुष्ठ के
बल खड़ेहोकर गणेशजीके आराधन में तत्पर हुये २८ देवता का
चतुर्थी विभक्ति जिसके अन्त में ऐसा ॐकार पल्लव सहित जो नाम
ऐसा जो अष्टाक्षर अर्थात् ॐगं गणेशायनमः ये परम मन्त्रहै तिसे
भक्तिमें परायण होकर जपते हुये २९ वायुकाही भोजन जिनके
सूखेशरीर ऐसे उनको भगवान विनायक जीने देखकर करुणा के
समुद्र आपहीउनकेआगे प्रकटहोतेभये ३० श्रीगणेशजीमहाराज
चारभुजा जिनके बडे शरीरी हस्तीका मस्तक अत्यत सुन्दर अनेक
सूर्य्यकी कांति समान तेजस्वी जैसे रात्रिको सूर्य्यही उदय होगयेहैं
३१ रत्नजड़े कचनके मोतीलगे मुकुटसे दीप्तहोरहा मस्तक जिनका
पीले रेशमकेहैं वस्त्र जिनके सुवर्ण केहैं बाहु भूषण जिनके अरुनिज
एक घुटनेको नीचा करके बड़े आसन पर बिराजरहे ३२ कमरबं-
धनहैं सुवर्ण कामदार [illegible] अरु सुवर्णकी अँगूठी रत्न जडाउ हैं
जिनके ३३ [illegible] महोदर पर लपेटे एक दंत आधेगज

आकार ऐसी विधि के रूपवाले गणेशजी को देखते भये अरु फिर द्विजके रूपही देखे ३४ फिर उनसे वोही द्विज रूपहो बोले मैंतुम्हारी भक्तिसे प्रसन्न हुआ तुम्हे वरदेनेको आयाहू तुम अपने मनहीं का चाहा वरमांगो ३५ मुनिजी बोले विघ्नो के ईश गणेश जी के द्विजरूपहो ऐसेप्रसन्नहुये ये दक्ष परम भक्ति करके नम्रभया अजलि बांधबोला ३६ दक्ष कहने लगा कि हे द्विज श्रेष्ठ मेरा पहिले जन्मका पुण्य सफल भया जो मुझसे आपका वडाभारी प्रियदोनों प्रकारका रूप देखागया ३७ विनायकजी का अरु विप्रवरकाइससे मेराजन्म अर्थ सहित हुआ क्योकि कारणो के भी परम कारण अरु वेदोके भी ३८ परम जानने योग्य परब्रह्म वेदोंके ढूढनेयोग्य सनातन रूप आपही सर्व जगत्के साक्षीहो अरु सवके भीतरवाहरभी ३९ तुम्ही कार्यों के सिद्धि कर्त्ता स्थूल अरुसूक्ष शरीर वाले जीवोके प्रेरक अरु अनेक रूप एक रूप अरु निरूप अरु आकृति रहित भी आपही हो ४० आपही महादेव, विष्णु, आपही इन्द्र अग्नि,सूर्य्य,भूमि,वायु, आकाश स्वरूप भी अरुजल चन्द्रमानक्षत्र रूपवान ४१ बिश्वके कर्ता विश्वके रक्षक विश्वके सहार करनेहारे चर अचरके गुरु वचानेवाले ज्ञान अरु विशेष ज्ञानवाले भी आपही हो ४२ भूत अरु भविष्य वर्तमान के ज्ञाता अरुतुम्ही इन्द्रियो के देवताहो कला विकला मुहूर्त्त श्री धृतिभी ४३ और आपही सांख्य शास्त्र अरुयोग शास्त्र अरुवेद शास्त्र अरु पुराण चौसठ कलातैसेही उपनिषध नाम वेदाग ४४ आपही ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्रहो देश विदेश आपही क्षेत्र अरु जितनेक पुण्य क्षेत्र अर्थात् तीर्थादिक हैं ४५ आपही प्रमाण योग्य अरु अप्रमाण योग्य अरु योगियो के ज्ञानमार्ग चारी आपही स्वर्ग पाताल वन अरु उपवन भी ४६ ओपधियो अरु वेलवृक्ष अरु ग्रन्थिफल अर्थात् सुठी अदरक मूलजैसे आलू अरुई सकरकदी ऐसे जितनेक फलहैसो ४७ काम,क्रोध, अरु क्षुधा,लोभ,हठ,अहंकार,दया,क्षमा,निद्रा,आलस्य,भोग,हर्ष, शोक भी आपहीहो ४८ मुनिजी बोले ऐसे दक्षके वचन सुन सुप्रसन्नभये

विनायकजी मेघके समान गंभीर वाणीसे हँसते सेउसकोकहतेभये ४९ गजाननजी बोले हे महाभाग मैं इसतेरी गंभीर स्तुतिसेप्रसन्न भया वर देनेको तयार भीहू पर तौ भी मैं तुझे नहीं देता हू ५० क्योंकि जो मै तुझको देऊंभी पर मेराभक्त मुझपर क्रोध करै वोही वरदेवेगा जिसके अंगके पवनहीसे ५१ तु दिव्यदेह भयानेत्र अरु कर्ण पाये ऐसा तू हुआ अरुतेरानाम भी (मुद्गल) रखता हो ५२ विघ्नध्यान करतेही तुझको अपना स्वरूप दिखावेगा जिन २ कामो कोतू कामना करताहे वो तुझेसारे देवैगा ५३ ऐसे कहकर वे पर मात्मा अन्तर्धान भये उनके अंतर्धान भये दक्ष अत्यंत दुःखितभया रोया ५४ जैसे दरिद्री को द्रव्य खानलाभ भये जैसे वो व्याकुल होवे याग ऊंगये जैसा वच्छा अतिही रुदनकरताहे ५५ सो नेत्रोसे आंशू छोडता हुआ धरतीमे गिरपड़ा अरु कहांगया २ हेविनायक ऐसे ५६ ॥ इतिश्रीइसप्रकारसेश्रीगणेशपुराणउपासनाखण्डमेदक्ष स्तुतिवर्णनइसतामसेविंशतिअध्यायहुआ २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

विश्वामित्र जी बोले वल्लभ उसभीम राजाका पुत्र इधर उधर दौड़ता हुआ तिससमयमें ऐसा विह्वल भया कि अपने वस्त्र अरु आभूषणकोभी गिरेनहीं जानता भया १ मार्गमे ब्राह्मण अरुवृक्षों से गणेशजीको पूछताभया कि विनायक कहांगया अरु किस२ ने कहा २ देखा सोवताओ २ गणेशजी में अनुराग किये जो मुद्गल तिस मुद्गलजीका आश्रम जो कि परम मनोहर सब जीवोंकोअभ यदान देनेवाला ३ तो वो मुद्गल जीको ध्याताहुआ घूमता ३ उस आश्रम पर आया जोकि नानाप्रकारके आश्चर्यों करके शोभित रमणीय निर्मल वनोसे भी परम प्रिया ४ तहा अमोल्य आसनमें बैठे मुद्गल जीको देखता भया जोकि द्विज वेदअरु वेदांगके तत्वको जानने वाले सब शास्त्रोमें चतुर ५ योगाभ्यासके बलसे अनेकरूप वाले सूर्यके समान तेजस्वी अरु रत्नोसे जड़ी विनायकजीकीमहा

मूर्त्ति ६ जोकि चारभुजा वाली तीन नेत्र जिसके नानालंकार शो-भित ऐसी मूर्त्तिको विधिसे जो मुद्गल जी पूजरहे ७ दक्षउनकोदेख तेही पृथ्वी पर गिर दंडवत् प्रणाम करता भया नेत्रोंसे आंशूछोडता हुआ वार २ ऊंचीसांस लेरहा ८ मुद्गल जीने उसे पूछा कि तूकौन है अरु कहांसे आयाहै तेरादुखमैं दूरकरू मुझसे साराकहु ९ कमलानन्दन दक्ष मुद्गलजीसे ऐसा वचन सुन सावधान मन हो उस ब्राह्मण से कहनेलगा १० दक्ष बोला हे ब्रह्मन् मैं तुम्हारे आगे सत्य २ अभिप्राय वर्णन करताहूं कि कर्णाट देशके भानु नगर में ११वल्लभनाम नीतिशास्त्र वेत्ताज्ञानवान् दाता दयायुक्त राजाहुआ तिसकी रानी कमलाने जब मुझे जनाथा १२ तब मैं दुर्गंधि युक्त घावोंसे विरुधिरझररहा नासिकासेजिसके ऐसा मैं अंधा अरुकुब्जा कानहीन शब्दवर्जित अर्थात् सुनाई नहीं पडता बहुत सांसभररहा १३ मैं हुआ तौ नगर वाले देख कहने लगे कि इसका त्याग कर देवो अरु मेरापिता बारह वर्षतक अनेक यतन करहारा १४ जब महेश्वर जीसे मेरेशरीर की सुन्दरताका लाभ न भया तौ तुरन्तही मुझको अरु मेरी माता कमला को भी १५ निर्दय मन हो बाहर निकासता भया तब तौ मेरी माता खेदसे दुःखी गांव से गांव २ भटकती १६ मुझको साथलिये कौण्डिन्य पुरमें आई भिक्षाटनकरते पूर्वजन्मके पुण्यफल के प्रभाव से १७ हमदोनों को आपका दर्शन भया जैसे किसी अंधको नेत्र मिलजावे तुम्हारे शरीर से उत्पन्न भी उस पवनसे मेरे शरीरके दोष दूरभये १८ जैसे रघुवोंके नाथराम चन्द्रजी के चरण स्पर्श से जैसे अहल्याका उद्धार भया तैसेही हे सुव्रत आपके प्रसादसे मैं दिव्यदेहको प्राप्तभया १९ तब न तौमैंने कुछजाना न माताको कुछकहा मैंने तौ विस्मितहोके मनमेंनिश्चय किया कि २० जिसके अंग के वायु स्पर्शसे से दिव्य देहको प्राप्त हुआहूं तिनहीका दर्शन जब मुझेहोवे तब देहको धारण करूं अर्थात् जीना समझूं २१ ऐसे मैं बहुत दिन भ्रमता रहा तबतौयेकोट सूर्य्य प्रकाश वाले करुणाके सागर गणेशजी मेरे अगाड़ी प्रकट

हुये २२ हमारे दोनोंके तपसे प्रसन्नहुये देवदेव गजाननजी तिनको देख कमलाग्ररु मैं सारे मनके चाहे कामोको प्राप्तभये २३ तब तौ देवजी प्रसन्न भये मुझको कोमल वाणीसे बोले कि जिसके लिये नियम करके ज्ञानको पहुंचा सोमै तेरे आगे प्रकट भया मुद्गलनाम ब्राह्मण श्रेष्ठ उसका वो वचन सुनकर मेरा मन प्रसन्न भया २५ तबतौ मै गजाननजीको कई स्तोत्रो से स्तुति करता भया तब तौ वे प्रसन्नमनहो बोले कि हेमहामने तुवरमाग२६ जो जो मेरे मनमें था सो मैंने भी उनसे कहा तब तौ उन्होने उस द्विजरूप को छोड ओर रूप धारण किया २७ जो चार भुज बड़ाभारी मुकुट से सजे मस्तक वाला अरुहाथोसे फरशु कमल माला मोदक इन्हें धारण करता२८ दिव्यवस्त्र धारण किये दीप्तिमान अर्थात् प्रकाश होरहा है शृङ्गसाशुण्डादण्ड जिसका कानोमें कुण्डल धारणकिये तौ मानो दूसरे सूर्य्य बिंबही लगे झलकतेहैं २९ सुन्दर आभूषणोसे भूषित सर्पोके भुज भूषण अरु उदरमें भी सर्पसजे जिनके अरु देवऋषि गन्धर्ब समूह अरु किन्नर इनकरके सुन्दरशोभायमान ३० तबतौ ऐसे रूप को देखकर मै आनन्दसे पूर्ण होगया जैसे समुद्र पूर्णचंद्रमाकोदेख पूर्ण होवे ३१ तब जब तक कि मैं उसरूपको आदरसे अर्थात् सम्पूर्ण न देखने पाया त्योहीं वो रूप विलय होगया जैसे स्वप्नमें देखा सारा चरित्र जागने में कुछ भी नहीं देख पड़ता ३२ तबतौ मै अत्यन्त खेदको प्राप्तभया मूर्च्छितहुआ पृथिवीपर गिरपडा फिर सुज्ञाको प्राप्तहुआ कि वरमांग ऐसे स्मरण करताहुआ ३३ सर्वव्यापी ईश्वर से मै यह मागताभया कि मेरे घर में स्थिर अर्थात् जो चलायमान न होवे ऐसी लक्ष्मी अरु तैसीही मेरी भक्ती आपमें होवे ३४ जो पूर्व्व पुण्यकरके आप मुझे दीखे हो तो ये दो वर मुझे देवो तबतौ मैंने आकाससे यहवाणी सुनी कि दिया तुझे इति ३५ तबतौ हेद्विज मै प्रसन्नमन होकर तुम्हारे निकट आया आप मुद्गलजी गजमुखरूप मेरे उपासना करने योग्य भये ३६ हे गजानन ये वृत्तान्त मुझको प्रकटही प्रतीत होता है भृगुजी बोले

इसप्रकार उसका वचन सुन मुद्गलजी वाक्य बोले कि ३७ कमला के सुत तू भाग्यवान् अरु भक्तियुक्तहै। तेरी भक्ति का महत्त्व किसी सेभी वर्णन नहीं करने में आता ३८ मैं दशवर्ष से अतिकठिन तप कररहाहू पर मैंने ऐसादेव कभीनहींदेखा३९ जो सवजगत्‌केस्वामी चर अचर के गुरु जो गुणाश्रयहोकर रजस्सत्वतमोगुणोंका नियता है ४० जो ब्रह्मा विष्णु महेशोंका शरीर बनाता हे जो प्राणियो का अरु ऐश्वर्यों का इन्द्रिय अरु बुद्धियोंका प्रमाणकर्ताहै ४१ जिसको देवसम्यक् न जाने न वेद न ऋषियो ऐसेआप गजाननजी को तैंने प्रत्यक्षही देखे ४२ मैं आप के चरणो को प्रणाम करताहू, क्योंकि तुम परमभक्तिमान् हो तवतो आपसमें मिलकर नम्रहुवे ४३ वे गुरु भाई बहुतकाल एकचित्तमिले तबतो एकाक्षरमन्त्र गुरुध्यानपूर्वक ४४ मुद्गलने नम्रभये राजपुत्र को बताया अरु इसको कहा कि दिन दिन इस मन्त्रका तू अनुष्ठानकर कि तुझपर प्रसन्न होवेंगे ४५ अरु गणेशजी तेरेमनसे चाहे सबकामों को सिद्धि करें ४६ अरु जो इस मन्त्रको छोड़देगा तो तेरा सर्वथा नाशहोगा जो इसकीभक्ती लोकमें बहुतकाल विचरैगी अर्थात् जोतू विचारकरतारहेगा तो४७इन्द्रादि लोकपालोंका वश करनेवालागण तू होजावेगा अरु यहां सबभोग भोगअन्तमेंमोक्षकोप्राप्तहोगा४८॥ इतिगणेशपुराण उपासनाखंड मेंदक्षकोमन्त्रोपदेशकावर्णनइक्कीसवाध्यायः ॥ २१॥

बाईसवां अध्याय॥

राजाने कहा कि हे मुनिजी आपने दक्षनाम राजपुत्रका कार्य्य अर्थात् वृत्तान्त आश्चर्य्य रूप वर्णनकिया हे मुनिश्रेष्ठ उसमें मुझ को वडा विस्मय उत्पन्नभयाहे १ अन्ध, वहरा, दांतोंसे कुवड़ा, वाणी से हीन, लोहू झररहा जिमके दुर्गन्धि रुधिरकेयुक्त तेमेही अरू केवल श्वासही अवशेष रहा जिसका अर्थात् सब शरीर क्षय होगया २ ऐसा दो मुद्गलजीके देहसे उत्पन्न पवनसेही सुन्दर शरीरकेमेंहोगया अरु किस प्रकारसे वो अपने महापातक से छुटा ३ अरु फिर उसने

देवतोंके सहस्त्रवर्षतक अत्यन्ततपकोतपा तबभीदेवगणेशजीकोदर्शन
वालाहै जिसमें ऐसा उनका दर्शनभी न भया ४ अरु वेही गणेशजी
वल्लभराजाकेपुत्रको विना क्लेशही प्रकटहुवे अरु वो पूर्वजन्ममें कौन
था ५ मेरे इससंदेह समूहकोदूरकरो हेसर्वज्ञमुनिजी तुम्हें नमस्कार
इसगणेशजीके कथारूप अमृतकोपीता तृप्तनहीं होताहूं ६ मुनिजी
बोले कि हे राजन् तैंने अच्छापूंछा इसीदक्षको मैंतेरेसंदेहको हटाने
केलियेसारा वृत्तान्त वर्णनकरताहूं तू एकान्त चित्तहो श्रवणकर ७
सिंधुदेशमें एक(पल्ली) इसनामसे विख्यातपुरी होतीभई तिसमें एक
धनवान् (कल्याण) नामकरके वैश्यहुआ ८ जोकि बहुतदानी चतुर
बुद्धिमान् द्विजदेवोंकी सेवामेंपरायणहुआ तिसकी (इन्दुमतीनाम)
से विख्यात सुंदर वदनवाली राजपुत्री रानीभई ९ वो कैसी है हि
पतिव्रता पतिमें है मन जिसका अरु पतिकेवचनमें परायण उनके
कुछकालमें गुणवान् उत्तम पुत्रहुआ १० तब कल्याण वैश्यने ब्रा
ह्मणोंकोबुला गऊदई अरु वस्त्र अलंकार अरु रत्न सुवर्ण बहुतसी
दई ११ अरु उसने ज्योतिषियों का बताया पुत्रका (बल्लाल) ऐसा
नाम रक्खा जोकि बलवान्पने से सदा सुन्दर १२ अरु वो थोडेसे
ही काल करके अपने बराबरवालोंके साथ नित्य गणेशजीकी पूजा
में लगाहुआ हर्षकरकेही गांवसे बाहरआया १३ ऐसेही नित्यपूजा
करतारहा तो एकदिन वे बल्लालसे आदिले सारेसुत वनमें जोगये
तो नानाप्रकारकी क्रीड़ाकरते स्नानकर एकढेला सुन्दररखकर १४
गणेश बुद्धिसे उसकी दूर्वाकेअंकुर सुन्दरपत्तों से पूजाकरके कोइक
उसके ध्यानमें रतहोकर उनकेनामकाजाप करतेभये १५ अरुकईक
वहां गणेशजीकी भक्तिसे यथेच्छ मनहो नाचतेभये कईक गान में
चतुर गणेशजीकी प्रसन्नताके लिये गावतेभये १६ कोईक बलकर
के काष्ठ अरु पत्तोंसे उनका मण्डलबनातेभये कईक भीतसे मण्डल
अर्थात् मन्दिरकी रक्षाकेलिये दण्डा खिचातेभये कई उत्तममकान
बनवातेभये १७ फिर कई मानसीपूजासे अरु कोई फूल वेलआदि
से धूप,दीपक,नैवेद्य,ताम्बूल,दक्षिणा १८ चढ़ाकर उनको पूजतेभये

अरु परमहर्षसे संयुक्तहुवे कोईक पण्डितहो पुराण वांचनेलगे १६ तैसेही धर्मशास्त्रो और इतर इतर भी ग्रंथो को व्याख्या करतेभये ऐसे वे गणेशजीमें रतभये वहुतदिन व्यतीत करतेभये २० तबतो उनमें भक्तिके भावसे कोईभी भूख अरु प्यासको नहींसमझा। एक दिन उनके मा वाप कल्याण वैश्यके पास आये २१ अरु सारेक्रोध हो वोले कि अपने वल्लाल को वरजो ये नित नित सारे वालको को बुलाकर वनको चलाजाताहै २२ वे हमारे सारेवालक साझसमय व्यालू अरु दोपहरमे कलेवेके लिये भी नही आते हैं अरु अत्यन्त दुवले होगये सो अवतुम अपने सुतको समझालेवो २३ नहीं तो फिर हम अब इसे वाधके ताडना करेंगे अरु फिर पुरके स्वामी के पास जाकर तुझे नगरसे वाहरकरवादेंगे २४ ऐसे उनकावचनसुन जो कभी भी न सुनाथा तो वो वैश्य क्रोधभरने से जपाके पुष्प के समान रक्तनेत्र करताहुआ २५ वडाभारी दडालेकरसुतको पीटने के लिये गया अरु वहा जातेही दंडके प्रहारसे उस मडपको तोड़ दिया २६ अरु हे नृप तवतो वालक सारेदिशाओंमें जिधर तिधर भागगये वो एकला वल्लालही दृढभक्ति वलसे अचलरहा २७ उसने उसे पकडकर दृढ़मुट्ठी अर्थात् घूसो अरु दडोसेअत्यन्तपीटा जहां तक कि उसके सारेशरीरसे रुधिरकीधारें चलनेलगीं २८ जैसेवर्षा कालमें पर्वतसे जलकीधारा गिरैं अरु वे सिंदूरसे सुंदरसजेजो देव गणेशजीथे तिन्हेंभी दूरही फेकदिये २६ उसको वृक्षके सैकडोवेलों के फांसो से दृढवांधाभया पुत्रके स्नेहको छोडदिया जैसे निर्दयी दूसरा यमका दूतहीहोवे ३० अरु वो दांतो से अरु हाथ पैरों से जैसे न छुटा उसेऐसावाध वोला कि वो देवही तुझेछुडालेवेगा३१ अरु सदा खानपानमें रक्षाभी वही करैगा अरु अव जो तू घर में आवेगा तो अवश्य पिटैगा ३२ मुनिजीवोले शीघ्रहीकल्याण वैश्य अतिक्रोधके वशहुआ देवताके स्थानको फोडकर अरु अपने पुत्रको वनमें वाधकरके अपने घरआया तो दैवके योगवल से वो अतिदू- पित अर्थात् कलंकी होगया ३३ अरु वो वल्लाल वैश्य के वहा से

चलतेही मनसेगणेशजीकोध्यायकर ये शोचताभया कि इनकानाम सब मनुष्यो में गाया (विघ्नारि) ये ऐसा क्यों भया अर्थात् मुझको इतने विघ्न क्योभये३४ अरु जो तुम-खोटेविघ्नों को नही नाशकरते हो तो (दुष्टांतक) इसभावसे कैसेप्रसिद्धहो और है कि शेषजी इस पृथ्वीको, अरु सूर्य निज प्रकाश को, चन्द्रमा अमृतको अरु अग्नि उष्णायनको ३५ चाहे ये इतने इनको छोडदेवें पर आप निजभक्तको न त्यागो नहीं आपकी वेद अरु शास्त्रोंमें ये कैसी प्रसिद्धिहै वोऐसे विलापकरके अपनेदुष्टभये कल्याणनाम पिताकोशापदेताभया३६ जिसकरके मेरे इसउत्तम देवस्थान का विध्वन्स किया गयाहै अरु जिसने मेरी गणेशजी की मूर्तिको फेका अरु मुझको ताड़नाकी३७ वोही अन्धा बहरा कुबडा अरु गूंगा निश्चयहो जो मेरी उत्तम भक्ति गणेशजी मे सुदृढ अर्थात् अत्यन्त पूरी२है ३८ तो मेरा कहासारा सत्य हो जो कि मैंने उसको कहा अर्थात् शाप दिया है ऐसे इसने मेरी भक्ति अरु मनको तो नहीं बांधेहै ये तो केवल देह के ही बाधने मे समर्थहै ३९ अब मैंन ओर मैं जो हो ऐसी अर्थात् निश्चलबुद्धि से गणेशजी को चिंतवन करके इसवनमे ही शरीर छोडताहू जब भी जो तिसका पलायन नामहार अर्थात् उसको अपने कुकर्म कियेका फल न हो तो यहदेह अवश्य गणेशजी ही में अर्पित है अर्थात् उन्ही के शरणमें है जैसाचाहें वैसाकरें ४० तिसका ऐसा निश्चय जानके गणेशजी प्रकट हुये इसबल्लाल की भक्ति के प्रभाव से ब्राह्मण का स्वरूपहो दीखे ४१ जैसे रात्रिका अन्धेरा दूरहोवे श्री सूर्यजी उदय पर्वतपर आयेहों तैसेही उनके तेजही करके इसके बन्धढीले भये ४२ अर्थात् टूटे तबतो इसने इनको दण्डकीतरह पडकर नमस्कार किया इसके देहकी सुन्दरता होगई न कही घाव रुधिर रहा ४३ अरु देवों के भी देव तिनके दर्शन से निर्मल ज्ञान उत्पन्न भया तो इसने नाना सुन्दर बचनोसे गणेशजी को यथामति स्तुति करी ४४ बल्लाल बोला इस स्थावर जङ्गम जगत् के माता पिता आप ही हो इसके आपही करनेवालेहो सो आपहीदुष्टोको अरु खोटेकोभलोको

वनातेहो अरु उनको योनि अरुवियोनिअर्थात् स्वेदजआदिअवस्थामें भी आपहीयुक्तकरतेहो४५ और आपही दिशा भ्रमरूप अरु आकाश पृथ्वी समुद्र समय अग्नि वायु स्वरूपहो अरु सूर्य चन्द्र तारा नव-ग्रह ८चलोकपाल चातुर्वर्ण्य अथवा शुक्र आदि रङ्ग रूप इन्द्रियादि अरु अर्थ नाम इन्द्रियोंके विषय ओषधि लता गुल्म आदि अरु धातु अर्थात् सब वस्तुओ के धारण करने वाले धारक रूप भी आप ही हो ४६ मुनीश्वर बोले कि स्तुतिको श्रवण करके गणेश जी प्रसन्न मनभये उस अपने भक्तको आलिङ्गननाम स्पर्शकर अर्थात् सराह करके मेघके समान गर्जित वाणीसे बोले ४७ गणेशजी कि जिसने मेरा मन्दिर फोराहै वो नर्कमे पडेगा अरु तेरा शाप भी तैसाही मेरी आज्ञासे सत्यहोगा ४८ अन्ध अरु बधिर कुब्जा अरु मूक लोहूझरने युक्तमेरे शापसे भी वो निस्सन्देह होवेगा ४९ अरु इसकापिता इसे मा सहित घरसे बाहरकरदेगा ये भटकतेर दुर्दशाको प्राप्तहो और तू अपने मनका बांछित माग मैं तुझे देऊगा चाहे वह कठिनता से भी मिलने योग्यहो ५० मुनीश्वर जी बोले कि बल्लाल ने गणेशजी से कहा कि आपमे मेरी दृढभक्ति होवे अरु आप इस क्षेत्र मे स्थिर होकर लोकोके विघ्नोंसे बचाओ ५१ गणेश जी बोले कि जगत् में विख्यात नगरोसे प्रसिद्ध तेरेनामसे मेरानाम (बल्लालविनायक) ऐसाहोगा ५२ मेरे मे तेरा स्थिर चितहो व्यभिचार रहित अर्थात् निरन्तर ही तेरी भक्तिहो अरु सारेजन उस पल्ली नगरमें मेरीयात्रा किया करेंगे ५३ जो भादो शुदी४ की यात्रा करेंगे उनके कामोको मैदेऊगा अर्थात् परिपूर्ण करूगा निस्सन्देह तासे ५४ भृगुजीबोले हे राजन् देव गणेशजी ऐसे उसे वरदानदे तभी अन्तर्धानभये तब तो बल्लाल ने ब्राह्मणो करके सहित अर्थात् विधिपूर्वक गणेशजीको वहा स्थापन करके ५५ नानाप्रकार की शोभासहित सुन्दर मन्दिर वनाता भया विश्वामित्र जी ने राजा भीमसे कहा कि हमने तुझको ये बल्लाल विनायक जी का उपाख्यान वर्णन किया ५६ जिसके श्रवण करनेसे मनुष्य सब पापोसे विमुक्तहो सब मनोरथोंको प्राप्त

होवे ५७ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में बल्लाल विनायक जी का कथन इसनाम से बाईसवां अध्याय हुआ २२ ॥

तेईसवां अध्याय॥

भृगुजीबोले कि हे राजन् सोमकान्त भीमराजा ने विश्वामित्र जी का वचन सुन उनसे ये पूछा कि भीम बोले महाराज दक्ष का चरित्र मैनेसुना अरु उसेसुनके मेरामन भी विश्रान्त अर्थात् स्वस्थ भया १ फिर कल्याण वैश्यकी कैसी गतिभई सो कहो विश्वामित्र जी बोले कि हे भीम तू एकान्त मनहो सुन मैं तुझसे ये कथावर्णन करताहूं २ बल्लाल गणेशजी के शापसे कल्याण के शरीर से रुधिर झरता भया फिर वो अगणित घावोंके सहित दुःखीहुआ बहरापन अरु अन्धताको प्राप्तभया ३ अरु दुष्टचित्तके मूकपन अरु दुर्गन्धता भी भई तो फिर इन्दुमती रानी ने उसकी अकस्मात् अर्थात् विन कारण ही ऐसी दशा देखी ४ ये क्या२ ये ऐसा कहासे हुआ ऐसे कह इसेशोचती भई जो कि ये ज्ञानी अतिदानी देवता द्विजोमें रत था ५ अरु धर्मशास्त्र के अर्थमें निष्ठा जिसकी जो निजही भार्याको सन्तुष्टकारी अर्थात् यतिथा ऐसा ये मेराभर्त्ता निरपराध फिर इसकी ये ऐसी अवस्था अर्थात् दशा क्यो भई ६ मुनीश्वर बोले कि ऐसे बहुतसा विलाप करके वार२ ऊंचीसासलेती रानी ७ इसकरकरके पुत्र बनमें बाधागया ऐसे सुनके वार२ रोती भई पुरवालो के साथ तहागई जहा बनमें पुत्रबँधाथा ८ उसदेवालयमें देव गणनायकजी को देखती भई ९ जो गणेश जी चतुर्भुज तीन नेत्रवाले सिन्दूर से लाल शरीर अरु बल्लाल सुत को वहीं उन गजानन जी को पूजता हुआ देखा १० जो कि वन्धन से छुटा अरु तृण रहित अरु नहीं है कोई भी हीन अग जिसका अर्थात् सर्व अगसे सुशोभित ऐसा इसे देखकर इन्दुमती क्रोधभरी वार २ निन्दा करती पुरवालो से बोली कि ११ मेरेभर्त्ताके सामने झूठ बोलनेवाले तुमकरके मैं कैसे छली गई जो कि मै तिसदुःखी पति को छोड़ पुत्र के स्नेह से यहां चली

आईहूं अर्थात् ये तो बँधा नहीं खुला है १२ देखो मेरे पुत्र को जो गणेशजी की ऐसी भक्ति कररहा है मुनिबोले कि तब तो वे विस्मित हुये अरु उन्होने न कुछ भी कहा १३ कोइकये कहतेभये कि महा-भक्तिकी महिमा को कौन प्राप्त होवे कैसाहै ये भक्त कि सिन्दूर से रक्तहै अङ्ग जिसका अरु रक्तचन्दनसे अर्चित १४ लाल वस्त्र पहिरे लाल फूलो की मालाओं से शोभायमान ममत्व रहित अहङ्कार व-र्जित जहां तक कि बिना शूडके मानो गणेश जी ही होवें १५ उस ऐसे पुत्रकोदेख इन्दुमती हरषो अरु शोक तज प्रसन्न मन भई फिर स्नेहसे झरैंहे दुग्धधारी भारी स्तन जिसके सो रानी पुत्रको स्पर्श अर्थात् लाड करतीभई १६ उसेकहा कि अपने घरचलै तेरेपिताके महादुःख उत्पन्न होरहाहै सोहे महाबुद्धेवहां तू कुछ उपायकरु १७ हम दोनो स्त्री पुरुष धन्यतम है जिनके तुम सरीखे ऐसे पुत्रहो तु-म्हारा पिता सारे शरीर में घावो करके सयुक्त लोहू झरने सहित महा दुर्गन्धि युक्तहै १८ श्याम मुख अरु दुबलेपन सहित बहिरा अरु अन्धाभी है इसवृत्तान्त को तुझे जनावने के लिये मैं यहांआई हूंगी १९ जो कदाचित् अनर्थकारी भी हो तो तू उस करके पितृ धर्म से ताडन कियाहै अर्थात् पिता तो पुत्र को ताडताही है वहातो श्रुति स्मृतिके प्रमाणसे कुछभी विरोधनहींहै इससे तू पुत्रधर्म२० को देख अरु इसके आरोग्यनाम निरोगहोनेके विचार को कर हे पिता परदयावाले तुझसे लोकमें पिता श्लाघाकरनेकेही योग्यहै २१ यशस्वी सत्पुत्र करके माता पिता का बचन मानना चाहिये अरु उनका पूजन करना चाहिये अरु पालन पोषण तथा शुश्रुषा भी करनी चाहिये २२ तू औषध से अरुमन्त्रसे भी अरु देवता की भी प्रार्थनासे तू उपायकर अरुहे पुत्र तू मेरेपर दृष्टिकर अर्थात् मेरेको देख इसपर अनुग्रहकर२३ हेबालक तेरा लोकमें सुयश होगा अरु मेरा सुहाग होवेगा ऐसे उसका बचनसुन बल्लालजी कहनेलगे २४ बल्लालजी बोले कि किसकीमाता अरु किसका पिता, किसका पुत्र वा किसका कौनसखा ये साराप्रपंच विघ्नराज गणेशजीका किया

अनुसरणवालाहै अर्थात् उनकी इच्छा के अनुकूलहै २५ तिससे हे कल्याणरूपे मेरापिता अरु मेरीमाताभी देवविनायकजीही है अरु जो जैसा कर्म करताहै सो तैसा फल भोगताही है २६ मेरेसे तौ ये जीव देवदेव गजाननजी मे समर्पण कियागयाहै तिसो करके मुझे जीव अरु तैसेही ज्ञान सुन्दरभक्ति से प्रसन्नहो दियागयाहै २७मेरे मन्दिरके फोडनेसे अरु देवताके फेकनेसे अरु विनायकजीका परम भक्त जो मैं सो ऐसे मेरे ताडनेसे हे शुभे अब इसको ये तैसाहीफल प्राप्तहुआहै २८ विचार करके देखते तौ न तू मेरीमाताहै अरु न ये मेरापिताहै सबहीकापिता अरु सबकीमाता देव गणेशजीही है २९ सोही ज्ञानके दाता अरु भयादिक से त्राता नाम रक्षा करनेवाले संहार करनेवाले कालरूपी सर्वस्वरूप देवोंके इन्द्र,ब्रह्मा अरु विष्णु महेश्वर भी वेही है ३० जिस दुष्ट निर्दयीने वृथाही मेराताडन अरु देवता का निक्षेपण, अरु मन्दिरका भी भजन नाम तोड़ना कियाथा ३१ तिस पतित इसके दर्शनमेंभी महादोष हो अब तू मेरे स्नेहको छोड अपने पति को सेवनकर ३२ विश्वामित्रजी बोले कि ऐसे पुत्र का वचनसुन रानी फिर पुत्रसेबोली कृपासे अनुग्रहसे तो अरु हमारे स्नेहसे भी पुत्र तू उत्शाप अर्थात् शापमोचन अवधि कहने को योग्यहै ३३ पुत्रबोला कि हेमाता तू उसजन्ममें इसको माताहोवेगी अरु हे सुव्रतवाली ये तेरे ऐसाही पुत्रहोवेगा ३४ कल्याण नाम से प्रसिद्ध राजा क्षत्रियोंमें उत्तम होगा अरुकमला इसनामसे विख्यात तू इसकी रानी होगी ३५ अरु (दक्ष) ऐसापुत्र का नाम विख्यात होगा फिर वल्लभराजा बारहवर्ष तक तपकरैगा ३६ इस दक्ष की अधता अरुबहिरापन घावोंको अरु मूकताको दूरकरनेको परनियम मे स्थितहुआ ३७ जब फलको नहींप्राप्तहोगा तबतौ हेसुमुखे पुत्र सहित तुझको घरसे निकाल देवेगा तू विदेशिनी होजावेगी ३८ किसी के गणेशजी में चित्तवाले द्विजश्रेष्ठ के देवयोग बल से स्पर्श मात्रहीके होनेसे हेभद्रे तेरापुत्र अच्छा होजावेगा ३९ अरु वहांहीं गणनाथजी का दरशन भी होगा तब ये गजाननजी के प्रसाद से

दिव्य देहको प्राप्त होगा ४० हेशुभे ऐसे सब शाप की अवधि मैंने तुझकोकही सारा होनेवाला उसका कारण भी कहा अब तू यथेच्छ जाव४१विश्वामित्रजीबोले ऐसेउसमे निरादरकरीउसकीमाता वहां सेचलीदुःख अरुशोकसेसंयुक्त अरु कुछ२ हर्षवाली भी ४२ अरु वे वल्लालजी निजभक्तिसे भावित गजाननजीसे भेजेगये दिव्यविमान पर बैठे अरुस्वर्गको जातेभये ४३ इसप्रकार से मैंने तेरेसे जो तैंने पूछाथा सो सबकहा जो गति उस वैश्य करके दोजन्मोके विषे प्राप्त कीगई ४४ यथा वल्लाल जी ने कहा सो सब तैसाहीभया कि वो तो कमलारानी होकर जन्मी अरुवो क्षत्रिय श्रेष्ठराजा (दक्ष) नाम से उसका पुत्र हुआ ४५ ॥ इतिश्री गणेशपुराणउत्तराखण्ड मे भविष्य-त्कालका कथन इसनाम से तेईसवा अध्याय हुआ २३ ॥

२४ चौबीसवां अध्याय ॥

राजाभीम बोले कि हे मुनि सिंह बुद्धिमान राजपुत्र दक्षकरके हे मुने किसस्थान में कैसे किसका अनुष्ठान कियागया १ ये आपवि-चारकर मुझसे कहो मैं सुनता तृप्त नहीं होता हूं विश्वामित्र बोले हेराजन् उस कौंडिन्यमुनिकी पुरी के निकटही एक महावन था २ जो कि रमणीय नाना वृक्ष सहित नाना प्रकार के श्वापद अर्थात् सिंह व्याघ्रादिको से व्याप्त नाना पक्षिगणों सहित कई प्रकारकी वेल अरु तालोंकरके विशेष शोभित ३ सुन्दर मनोहर निर्मलजल वाले सरोवर वापियो करके विराजमान अरु पुराने मन्दिरमें स्थि-त गणेशमूर्त्ति से प्रकाशित ४ सो दक्ष तहां स्थित हो गणेशजीको सुन्दर प्रसन्नता करनेवाला तप मुद्गलजी से उपदेश किये एकाक्षर मंत्र करके करता भया ५ तो मर्य्याद से बारह वर्षो करके उग्रदेव गणेशजी को प्रसन्न किये अरु स्नान वस्त्र सुगन्ध अरु माला धूप दीपक ६ नैवेद्य उसने भक्ष्य कन्द मूल से कल्पना किया अरु उस क्षत्रिय वर्य्य ने मनसे अर्थात् भक्ति पूर्वक दक्षिणा कल्पना करी ७ हे भूप उसे ऐसेकरते इक्कीसदिन बीते तबवो प्रभात समयमें उसने

ऐसा स्वप्नदेखा ८ कि एक बडा भारी हस्ती सिन्दूरसे रँगा सुंदर शोभित मद झररहा जिनमें ऐसे श्रेष्ठ कपोलोंसे सुन्दर पर्वतके स-मान ६ कोमल प्रसन्नहै मुखजिनका दन्तसे शोभायमानहै मस्तक जिनको भ्रमरोंकी पंक्ती गुंजरहीं जिनके इधर उधर मानो दूसरेग-जमुखजी ही होवें १० उसने आकर इसके कण्ठ में रत्नों की माला पहिरायदई फिर हस्तिराज ने उसेउठाय कन्धेपर सवार किया वो हाथीसे अपने नगरआया ११ तबतो वो जागाहुआ अपनी मातासे पूछताभया कि हे कमले माता तू अब मुझसे इसका अभिप्राय कहु कि १२ गजके ऊपर चढना शुभ या अशुभ है कमला बोली तू ध-न्यहै जो तैने गजरूप विनायकजी को देखे १३ अरु चढनेका फल राज्यप्राप्तिही है इसमें संशयनहीं दक्षबोला कि जो राज्यकी प्राप्ति होवे तो मैं तुमको १४ पीनस अरु गाव दीपिका मोतियोंकी माला ये देऊ अरु सुवर्ण तथा गोदान से तुझ करके धर्म कराऊगा १५ वृत्त अरु नियम अरु ऐसेही औरर भी दान अनेकसे तुझसे करवा-ऊंगा मुनिजी बोले ऐसे सुन प्रसन्न भई कमला पुत्रसे कहने लगी कि १६ हे पुत्र तेरे राज्यपर स्थितभये मझको सर्ववस्तुसे आनन्द है सारके भर्त्ता अर्थात् जाननेवाले श्रेष्ठ तेरीमति सद्धर्ममें रमणकरे अरु तेरा आयुर्बल विपुलनाम अतुल होवे अरु द्विज देवताओं की पूजा में प्रीति होवे १७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तराखण्डमें दक्षको स्वराज्य की प्राप्ति फल इसनाम से चोवीसवां अध्याय हुआ २४॥

पचीसवांअध्याय॥

विश्वामित्र जी बोले कि हे राजन् में तेरेको दैववश काल करके किया जो वृत्तान्तहै सो वर्णन करताहूंगा कि कौडिन्य नगरमें रा-जा महाबुद्धिमान चन्द्रसेन १ अपने कर्मके फलसे कालके योग से ती मृत्युको प्राप्त भया तो अपने धर्म के वहुतपन अर्थात् वढ़ाव से विमान पर चढकर स्वर्गको पधारा २ नगर निवासियों ने राजाका मरणसुन वड़ा हाहाकार किया अपनेर वहुतसे कामोंको छोड वहां

दौड़गये ३ शोकसे व्याकुल हाथोंसेशिरोंको पीटने गिरते अरुपड़तेजा वहांमरेराजाको देखते भये ४ मोहवशहुये उसके पैरकोही पकडकर नम्रभये कोई हाथही पकड२के अपने२ शिरपर रखतेभये ५ कोई पुकार के रोनेलगे जिनके हाथ पीठ मुख शब्दकररहे अर्थात् पीटने से कई स्नेह के बाहुल्य से मरे की तरह गिरतेभये ६ अरु उसकी सुलभा नाम पत्नी करुणा पूर्वक आलाप से रोती भई अरु अत्यन्त दु खवाली हाथोंसे हृदयको पीटतीभई ७ बिखरे अर्थात् खुलपड़े हैं आभूषण जिसके मूर्च्छाको प्राप्तभई भूमिपर गिरपड़ी तब वो उतने ही दु ख वाली स्त्रियो करके धरीगई अर्थात् सम्हाली गई ८ तिस समय सुन्दरी चन्द्रसेन की कान्ता ने निर्लज्ज होकर अरु नहीं है कोसना जिसमे अर्थात् अति दु खी होकर अरु हे नाथ२ ऐसे कहते अत्यन्त ही बिलाप किया ९ कि हे बिधाता तेरे दया नहीं है तेरा चरित्र बालक की नाईहै अर्थात् जैसे बालक खेल२ मिटा डालतेहैं सो ही तू पहिले तो स्नेह भावसे जोडताहै अरु फिर बिनही प्रयो- जन भये वियोग करदेताहै १० हे करुणा के समुद्र राजन् आपमु- झ से बिना पूछे कहां चलेगये सो कहो दिन२ आप ऐसे कहतेरहे कि हे प्यारी मै भद्रासन अर्थात् सेजपर आताहू ११ अब मेरे कि- स अपराध से आप कठोरता को प्राप्तभये उसे आप क्षमा करो मैं मनुष्यो के बीच निर्लज्जहो ये आपको नमस्कार करतीहू १२ मुझ प्यारकरनेहारी प्यारीको जहा आपगयेहो तहाहीं पहुंचाओ अर्थात् लेचलो जोकिमै अतिईशरूप आपकेविना इसपृथ्वीको शूनीदेखरही हूं अरुपुत्र रहितहूं १३ मुनिजी बोले कि उसकामत्री (सुमन्त)अरु मनोरंजन वे दोनो वहांपर बोले,किराज्यका क्या होगा १४ हे नृपश्रेष्ठ आप हमसे बिनविचार अर्थात् सलाहकरके कहांचलेगये हो हे राजन् तुम बोलते क्यो नहींहो किसलिये मौन हो बैठे १५ क्या इस अनाथसी व्याकुल प्यारी रानीको नहीं देखते हो अरु हे राजन् हम सब गृहाश्रमको छोड तुम्हारे साथ हो जावेंगे १६ अरु अब अनाथ तुम्हारे इसराज्य वो नगरको पालन कौन करेगा १७

मुनि जी बोले कि इतने में ही तहा एक सुबुद्धिमान ब्राह्मण आ बोला १८ जो कि वेद अरु शास्त्रार्थ के तत्त्व को जाननेवाला द्विज प्रस्तवन पूर्वक अर्थात् सन्मुखहो प्रकटहो करुवे बचन कहने लगा कि तुम सारे अपने २ स्वार्थ मे परायण होरहे हो तुम्हारे में कोई यथार्थ कहने वाला नहीहै १९ क्योंकि प्यारों के रोनेसे आसू प्रेत के मुखमें गिरते हे अरु ये प्राण रहित शरीर पृथ्वीमें भारीपने को प्राप्त होता है २० इस ब्रह्माण्ड गोल में मरे के साथ कौन जाता है जो कि ये रानी सुलभा जीने की आशा करके रो रहीहै २१जो इसका मन अनुगति अर्थात् मरने को होवे तो एकभी नहीं रोती अरु तुम नगर वाले सारे अपने २ कार्य्य गमन मे आकुल हो रहे हो २२ देखो जितने सूर्य्यवंशी अरु चन्द्रवंशी भारी राजा थे सो क्या नही मरे तिस से तुम भी सारे उठकर इस राजा का संस्कार करो २३ जो मरेपर सस्कार कारी है सोही आप्त अर्थात् हितकारी है और कोई नहीं इसीलिये लोकको पुत्र की बडी भारी आकांक्षा है २४ तिससे इसकाधर्मकापुत्र अथवा और कोईप्रकार काही पुत्र बुलाया जावे अरु वही क्रिया का आरम्भ करे अरु तुम सारे तिलाजलि देवो २५ मुनीश्वर जी बोले तब तो वे सारे नगर निवासी दोनो मन्त्री अरु वे सब स्त्रियां उस ब्राह्मण करके समझाये उसका क्रियाकर्म करतेभये २६ वो कर्म सब मन्त्री सुमंत करके ही कियागया सब से अंजलि दीगई फिर वे सारे विचारे हारेथके स्नान करके धीरे२ नगर में प्रवेश हुये तो २७ सारेजन ईश्वर को नति करके निम्ब का पत्र चबाते भये फिर सुलभारानी को समझाकर अपने २ घर आतेभये २८ एक समय सारे नगर निवासी दोनों मन्त्री राजपत्नी सुलभा ये सारे प्रजा के पालन कार्य्य मे बडे सशय को प्राप्त भये २९ इतने में ही तहा मुनि(मुद्गल)जी आते भये अरु सम्पूर्ण अभिप्रायवेत्ता येबोले कि ३० इस राजाका (गहन) नाम से जो महाहस्ती है सो कमल की माला लेलेवे अरु सभा मे जिसके कंठमे डालदेवे या औरभी

कहीं जिसके कण्ठमें डालदेवे वही राजा होजावे ३१ तैसेही सारे अच्छा २ ऐसाकह सराहत भये अप्रत्यक्ष ज्ञान वाले मुद्गल शर्म्मा जीके वचनको ३२इतिगणेशपुराण उपासना खण्ड में दक्ष जी को राज्यप्राप्तिकाउपाय इसनामसे पच्चीसवां अध्याय हुआ ॥ २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय॥

विश्वामित्र जी ने कहा कि हे राजन् एक समय में शुभ ग्रहों करके संयुक्त लग्न मे शुभवार मे सुफलयोग मे अरु नगर में नाना विधिके मेळ तथा मंगल हुये। ऐसे समय में रानीने हाथीके कर नाम शुंड़मे रत्नकी मालाधरी।अरु उस हस्ती को प्रार्थना करी कि जो लोक में तेरेको सम्मत है उसेही राजा करदे १ गजपति उस आज्ञाको मानकरके कैसाहै कि जो नानारँगकी धातोसे रँगा अरु द्विज वन्दीजन चारण किन्नरोकरके सारेसे सराहागया सबतरफ भ्रमताभया अनेक बाजो सहित अरु राज्य की इच्छा वाले पुरुषों करके संयुक्त सो हस्ती सभामें आये सारे जनोको सूंघताहुआ पुर से बाहर आया २ अरु उस नगर निवासिनी नारियोंनेभीअपने२ बालको को अरु पतियोकोभी राज्यके लिये हाथीके अगाडी स्थित किये। अरु नाना प्रकार के भी नर पंक्ति वद्धहो स्थित भये वे २ सारे विचारे उदासीन पनको प्राप्तहुये निजर गृहआये इस(गहन) हाथीके आगे गयेपर अरु कईक बाहर भागगये ३ अरु वो हस्ती तो वहीं आया जहां कमलाका सुत (बल्लाल) गणेशजीको पूजरहा है॥ उसे देखतेही हाथीने लोगोंके अरु स्वर्गमें देवोके देखतेहीउ-सके गलेमें मालाडालदई ४ तिसी समय लोगोने दक्षको वस्त्रअरु सुन्दर माला सुंदर आभूषण दिये पुरवाले जनों का अरु राजा के दोनो मन्त्रियो के मतको जानकर अर्थात् सबकी सलाहसे वो राजा कियागया ५ तिससमय पृथ्वी अरु स्वर्गकेबहुतसे बाजेबजे अरु वे सारे देवता हर्षसहित उसपर पुष्पोकीवर्षा करतेभये ६ तबतोसारे लोग यथा क्रमसे अपने २ स्थानपर बैठ शापसे छुटे अरु दोमन्त्री

सहित राजाको नम्रभयेरहे ७ राजाने ताम्बूल अरु वस्त्रसबजनों को दिये अरु ब्राह्मणो को अनेक दानदेकर उनका पूजनकिया ८ अरु उस माता को वस्त्र आभूषणादिकोसे पूजितकरी। उससेंभी ब्राह्मणो को यथाविधि अर्थात् जो वनमे कहीथी तद्वत् दान कराता भया ९ अरु उसे पालकी में बैठाकर आप हस्ती पर चढ़ा अरु वे सुशोभित सिचे मार्ग ध्वजा पताका सहित १० जोपुर तिसमेघोडे पर सवार उन दोमन्त्रियोको अगाडी करके आये तो पुरनिवासी वन्दीजन स्तुति कररहे अरु अप्सरा आगे नाच रहीं अरु गान मे चतुर गन्धर्व भाग २ कर इसके अगाड़ी होरहे हैं ११ बाजो अरु जयों से शब्द नमोनम. ऐसा शब्द आकाशतक पहुंचा कईक राज्य द्वार में पहुंचकर अपने घर आये १२ तब और जो वे अनगिनत राजा थे सो सारे सभा में प्रवेश भये। अरु वड वुद्धि इस ने मुद्गल जीकेलिये एक पीनस भेजा १३ अरु सहित छत्र ध्वजा चमरसुमंतु मन्त्रीकोभी भेजा। पश्चात् मुद्गल जी को आतेदेख अपने आसन से उठ आगे आगया १४ मुकुट सहित शिरसे उनके चरणो में प्रणाम करताभया अरु उन्हे अपने बैठनेके आसन पर विठाये अरु आप उनसे आज्ञापाय और आसनपर बैठा १५ अरु बैठ राजाओ के साथ उस मुनीश्वरको पूजताभया अरु वो महावुद्धि उसब्राह्मण मुद्गलजीको गोनाम वा[illegible] दे[illegible] अर्थात् सुष्टु वचन से दक्षवोला १६ कि हेमह[illegible] ज[illegible] वडा महिमा अति प्रभाव[illegible] अरु [illegible] स[illegible] आपतो आपहीहो [illegible] श[illegible] इसराज्य की प्राप्ति [illegible] कि[illegible] प्रथम अवस्था अ[illegible] ये[illegible] अति श्रेष्ठ मुनिजी [illegible] अपना करार विन्द [illegible] जि- ससे मे वहु [illegible] उसका वचन [illegible]

या भय कभी भी नहीं होवेगा जिस २ कामको तू चाहता है सो सब तरहसे तेरा सिद्धहोगा २१ फेरतो दक्षने मुद्गलजीको वस्त्ररत्न वहुतसा धनदिया। अरु और ब्राह्मणो को गऊ धन अरु वहुत से वस्त्र दिये २२ फिर तो वे ब्राह्मण से आशीर्वचनो से प्रसन्न कर अपने २ घरको गये। अरुउसने अपने मन्त्रियोको अपने गृहनाम घरवालियो को वहुतसे ग्रामदिये २३ अरु गणेशजीका वहुतभारी मन्दिर करवाया सभाको विसर्जन करी अरुनृप निजघर में गया २४ और मनुष्यो के मुखसेकही वाणीको सुन २ वल्लभभी वहाहीं आगया। और वीरसेन राजा पतिकी इच्छा कररही अपनीपुत्रीको स्वप्नमें प्राप्त गणेशजी की आज्ञा से महान राजादक्षको, जिसकी कीर्त्तित्रिलोकमेंविख्यात ऐसेकोव्याहताभया २५।२६ तिससे तिस रानीमें वृहद्भानु। इसनामसे विख्यात पुत्रहुआ तिससे(खड्गधर) नामसे पुत्रभया तिसका सुत(सुलभ) भया २७ तिसका तनय (पद्माकर अरु उसका सुत (वपुदीप्त) अरु (चित्रसेन) तिसका सुत भया अरु चित्रसेनसे तू भया २८ व्यासजी वोले राजाभीम बिश्वामित्रजीके मुखसेसारी वंश परंपरा को सुनकर अरु द्विजश्रेष्ठ व्यास जीको संतुष्टकर प्रार्थना करके पूछताभया २९ भीमजी वोले किहे महामुने विनायक जी मुझपर कव प्रसन्न होवे हेविभो आप वही उपाय कहो जिससे उनकी मुझपर अनुग्रहहो मै देव गणेशजीको देख कव प्रसन्न होऊ ३० ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तराखण्ड में दक्ष अरु भीमकी वंशपरंपरा का वर्णन इस नाम से छब्बीसवां अध्याय हुआ ॥ २६ ॥

सत्ताईसवांअध्याय॥

राजा सोमकान्तने पूंछा कि फिर कौनसाउपाय कृपावाले वुद्धिमान विश्वामित्रजी करके भीमको कहागया सो मुझसेकहो १ भृगु जी वोले कि जो उपाय उससे भीमको कहागया सो तू श्रवणकर कि मुनि ने भीमको एकाक्षर महामंत्र (ओं) यहवताया २ अरु प्र-

सन्न मन धर्मात्मा विश्वामित्र जी उस राजा से बोले कि तू देवता विभु गणनायकजीकाइससे आराधनकर ३ तू इसदक्षकेबनायेमदिर मेइसका अनुष्ठान करे तो प्रसन्नमनभये विनायकजी तेरे सबकामों को देवेंगे ४ धर्म अर्थ काम मोक्ष ओरभी जो कुछ अपेक्षितहैं सो भी देंगे सो हे भीम तू अपने पुरकोजा अरु किसी चिन्ता को मतकर ५ व्यासजी बोले कि वो राजा उनसे ऐसे कहागया उन्हें प्रणामकर चला तो सपत्नीक इसने अपने पुरको देखा अरु हर्षित भया ६ तो दोनो मंत्री सेना अरु नगरवालों की साथ लिये राजा पै आये तो कई तो राजाको आलिङ्गन करतेभये अरु कई दूर अरु कई निकट आ नम्रभये ७ तब तो राजा सारो के साथ उस अपने ध्वजाओंकी पंक्तिवाले अरु सिंचे मार्गवाले सुगन्ध सहित नानाप्रकार के बाजों से शब्दकिये पुरमे प्रवेशभया ८ तब लोग आपस मे कहनेलगे कि यहपुरी अब शोभित हुईहै जैसे कि नारी अपने पति को पाय अरु अन्ध अपने श्रेष्ठ नेत्र को पाय प्रसन्न होवे ९ इसप्रकारके वचनको सुनता राजा अरु सुन्दर हास्यवाली रानी जो कि वस्त्र आभूषणों की शोभासे सजे स्तुति कियेगये अरु हर्ष सहित १० दोनो अपने रमणीय अरु कई प्रकारकी ऋद्धि समृद्धि सहित पुरको प्रवेशभये १७ अरु वे दोनो सबलोगोको वस्त्र आभूषण अरु मोतियोंकी मालाओं करकेअरु ताम्बूल देके विदाकिये ११ फिरउनकेगये वे निजभवन मे पधारे फिर शुभदिन में राजा भीम दक्ष के मन्दिर मे गया १२ वहांजाय उनसब फलप्रद गणेशजी को नित्य व्रतीहोकर अरुउनके मन्त्रको जपता हुआ राजा अर्चन करता भया १३ भोजनमें शयनमें जानेमें बोलने अरुसास लेनेमें भी अनन्य मनसे राजा उन्हीं को चिन्तवन करताभया १४ जलमें स्थलमें अरु आकाश मार्गमें स्वर्गमें देवतामें मनुष्यमें वृक्षमें खानमें पानमें राजा तो उत्तम विनायकजी को ही देखताभया १५ अरु जिस२ को राजा देखै तिस२ को ही नवै दृढ़ आलिङ्गन अर्थात् मिलनेकी इच्छाकरै तो नगरमे सारेजन उसे कि ये पिशाचहै ऐसा मानतेभये १६ तब तो विनायकजी ने

आकर उस राजाको हाथपकडकर कहा कि तू मुक्तहै क्या इच्छा करताहै सोकहु १७ उनसे राजा बोला कि मैं आपके चरणके सिवाय और कुछनहींजानता तब फिर विनायकजी बोले कि तेरे सुदर्शनीय पुत्र १८ मेरे प्रसाद से होगा जो कि गुणवान् सुवर्ण सा शरीरी अर्थात् गौर अब हेराजन् तू अपने घरजा अरुदेव द्विज पूजामेंतत्पर होउ १९ सोराजा घरजाकर वैसाही करताभया देवोंका अरु द्विजो का पूजन अरु तर्पण २० सर्व भावसे करताभया कि इससे गणेश जी प्रसन्नहोवें फिर थोडे समयसेही उसके पुत्रशुभ हुआ २१ तो इसने पुत्र जन्मके कारण अनेक दानकिये अरु द्विज श्रेष्ठसे बताया इसका रुक्माङ्गद ऐसा नाम रक्खा २२ वह बालक नित्यबढ़ा जैसे शुक्लपक्ष में चन्द्रमा अरु पुत्रको गुरूजी के पास विद्या सीखने को आपराजा ने बैठाया २३ अरु वो भी श्रवण मात्रहीसे गुरूकेकहेसे शास्त्र को ग्रहण अर्थात् सीखना भया जो कि सर्व विद्यानिधान कपिलजी ने उसे किया अरु बताया सोई सब जानता भया २४ तो वो रुक्माङ्गदभी सर्व विद्यानिधान भया मानो दूसरे गणेशजी हीहों जो सबशास्त्रोंमें कुशल अरु राजा अर्थात् दीप्तिमान् रुक्मा- ङ्गद २५ फिर तो तिसके पिता भीम राजा ने तिस गुण राशिवाले पुत्र रुक्मागद को पट्टपर अभिषेचन करता भया अर्थात् राज्य आसन पै बैठाता भया अरु ब्राह्मण मुखियाओं को वस्त्र अरु रत्न धन देता भया २६ तब तो तिसने विनायकजी में तिस पिता भीम से भी भारी महा भक्तिकरी सो कि पितासे प्राप्तभये एकाक्षर मन्त्र को प्रतिदिन जपतारहा २७ तो एकदिन वो युवराज अर्थात् कुँवर पदवीको प्राप्त रुक्मागद वनमेंगया तो शिकार खेलता भया बहुत से मृगों को रोज मारता भया २८ तब तो अत्यन्त थकेभये इसने एक मुनिजी का आश्रम देखा जो स्थान नाना वृक्ष वेलों के समूह वाला अरु छोडा है वैर जिन्होंने ऐसे जो मृगादि पशुतिनसेसंयुक्त २९ ॥ इसप्रकारकरके श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्ड में रुक्मागद के राज्याभिषेकका वर्णन इसनामसे सत्ताईसवांअध्यायभया २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

राजारुक्माङ्गद का वर्णनहै॥

मुनिजी बोले कि तव तो रुक्मांगद शुभ मुनि (वाचक्नविजी) को देखताभया। अरु तिनकी पत्नी मुकुन्दाकोदेखी जोमधुर कोमल वोलनेवाली थी १ तो अत्यन्त थके रुक्मांगद ने तिनदोनोंको नमस्कार करी अरु तिन मुनिजी के नहाने को गये वो नृप श्रेष्ठ ऐसी याचना करता भया२ कि हेमाता मुकुन्दे मुझको उत्तमशीतलजल पिलाव नहीं तो विनजलके मेरे प्राण जातेरहेंगे ३ तो तिसके ऐसे वचनको सुनकर कामातुर भई वो बोली कि मैं तुझसरीखे पुरुषको जो दूर समीप से अर्थात् सब ओरसे सुन्दर ४ ऐसापुरुष कोई न तो देवताओंमें अरु न नागोंमें अरु न कहीं यक्ष गन्धर्व समूहों में देखती हूं जो तू सुन्दर सम्पूर्ण अंगवालाहै इससे मेरा मन तुझमें लगाहै ५ सो कि तेरे अधररूप अमृतके पान में मेरा मन आसक्त भया अर्थात् लगाहै सो तू मुझे वो अपना अधरामृत पिलाव मुनिजी बोले कि वो थकेपनसे अत्यन्त दुःखित रुक्मांगद तिसका ऐसा पीड़ा कारक वचन सुनकर ६ तिलोत्तमानाम इन्द्राणी से भी उत्तम तिस मुकुन्दाको निज जितेन्द्रियतासे वोला कि तू इसहठ उधमको छोड़दे क्योंकि मेरामन इसविशेष निन्दितपर स्त्रीगमनकर्ममें ७विनायकजीके प्रभावसे कभी भी नहींलगाहै अबमैं तुझदुष्टा अर्थात् व्यभिचारिणी से दिये जलको भी पीने नहीं चाहताहूं ८ मैं येऋषि आश्रम है ऐसा समझ के यहां चला आया था अब हे अशोभने यहांसे चलताहूंगा ये तो कामातुर भई वो मुकुन्दा ने जानेको तैयार रुक्मांगद को हाथ पकड़कर ये कहतीभई ६ मुकुन्दाबोली कि जो पराईस्त्री को ढाढ़से भोगनेकी इच्छाकरे वोही नरककोजाताहै अरु वो नहीं जो आपहीसेआईकोभोगै१० त्रेतायुगमें ब्रह्माजी नेस्त्रियो कोस्वतन्त्रता अर्थात् स्वाधीनपनदिया है सो जो तू मेरेवचन को न करेगा अर्थात् मुझे नहींभोगेगा तो मेरीकामाग्नि से तू भस्म हो

जावेगा ११ अथवा मैं तुझको राज्य से भ्रष्ट वन में विचरने वाला अर्थात् दरिद्री कुष्ट भागी करदेऊंगी मुनिजी बोले कि ऐसे कहकर दौडती कामदेवके बाणोंसे पीड़ित भई वो मुकुन्दा १२ वेगसे तिसे आलिंगन करती भई अर्थात् रुक्मांगद के लपट गई अरु हठ से इसका मुख चूमती भई तब तो रुक्मांगद ने बल सेती इसे दूर फेंकी१३ तो मूर्च्छाको प्राप्तभई वो पवनसेफटकारी केलेकीकलीकी नाई भूमिमें गिरपड़ती भई फिर उठतीभई उसको परस्त्रीसे विरक्त राजा रुक्मांगद बोला हे बडभागिनि बिन विवेकिनि मुनिभामिनि जिस स्त्रीका पर पुरुषमें मनहै वो अवश्य नरकको जातीहै१५ अरु मेरामन जो समुद्र भी सूखजाइ पर तबभी चलायमान नहीं होताहै ऐसे वो उससे निरादर की गई तो क्रोध युक्त होके इस रुक्मांगद को शाप देतीभई १६ कि जैसे मैं कष्ट भोगरहीहू तैसेही तू कुष्ट भोगनेवाला हो जिससे कि वज्रसेभी कठिनभया तेरा हृदयचलायमान न भया १७ ऐसे उस सतीभई को राजा बहुत प्रकार से विनिन्दितकरके अत्यन्तदुःखितभया वेगसेती उसआश्रम से बाहर निकला १८ अरु त्योंहीं उसने निज शरीरको भी बगले के समान श्वेतकुष्टरोगसेसंयुक्तदेखा जो कान्तिसेहीन अरु अत्यन्तनिन्दनीय भया १९ तबतो वो शोकसागरमेंमग्नभया गणेशजीकी यहप्रार्थना करताभया कि मैने आपका ऐसाक्याअपराधकिया जिससे मैं यहां आया अरु हे सिद्धिपते आप करके अब अवश्य दुष्ट ही बढाये गये हैं २१ अरु आप तो साधुओं के रक्षणके लिये अवतारों को धारण करतेहो पर येरूपसेगर्वी व्यभिचारिणी आपसे नहीं नाशकीगई ये क्या २२ अरु ये मेरा कंचनसा सुन्दर शरीर इसअवस्था को किसदुष्ट कर्म से प्राप्त भयाहै सो कहो अरु मैं तो आपकी पहिले से ही भक्ति करता रहताहू अरु हे गजानननाथ मैं तुमसे इतर और किसी देवताकी भी शरण नहीं जाताहू २४ अरु अब मैं ये शरीर तथा मुख जनोंको नहीं दिखलाऊंगा अरु अन्न प्राय नाम बाहुल्य करकेअन्नाहार विवर्जितहो एकान्तबैठ इसशरीरको सुखादेऊंगा। २५

नृपति ऐसे निश्चय करके वटके निकट बैठगया अरु उसके भृत्यइ-धर उधर डोलरहेथे पर उसराजाको न देखने सके २६ जब रात्रि भई तो सारे अपने२ स्थान में आये स्वामी अरु सेवको की गति चकवो की नाई भई२७ ॥ इसप्रकारसे गणेशपुराणउपासनाखंड मे राजाका प्रायोपवेशनु इसनामसे अट्ठाईसवा अध्यायहुआ२८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

मुनिजीवोले कि तिसबटवृक्षके नीचेबैठा वो रुक्मागद किसीदिन दूरसे मुनिश्रेष्ठ नारदजीको देखताभया १ तो राजा नम्र होताभया अरु तिनमुनिजीसे प्रार्थनाकरीकिक्षणभर आपविश्रामलीजिये तब तो करुणाके समुद्रमुनि नारदजीआकाशमार्गसे उतरतेभये२ इसने यथाविधि पूजनकरके मुनिजीसे आदरसे यहपूछा कि मै रुक्माङ्गद नाम महाबली राजाकापुत्रहूं३ सो मै शिकार खेलता२वाचक्नवि-जीके आश्रममें आगया। फिर हे निष्पाप मुनिजी फिर प्यासे मैने वहा जलकी याचनाकरी ४ उसकी नष्ट अत्यन्त काम पीडित पत्नी मुझकोढ़ाढसे चूमतीभई उसमुनिके न्हानेकोगये अरु दुष्टचित्तसे ५ मुझको कामदेवके बाणोसे पीडितवोली कि तू मुझेभोग फिर गणेश जीके प्रसादसे तथा जितेन्द्रियता करके मुझसे वो निरादर कीगई६ वो दुष्ट चित्तसे मुझको अत्यन्त दुःखी होती शापदेतीभई कि हे मन्हादुष्ट तू मुझ कामातुरको त्यागताहै इससे कुष्ठीहो ७ ऐसा दुष्टवचन सुनतेही मे उसआश्रमसे निकला तभी से मैं श्वेतकुष्ठी हुआहूं हे मुनि अबइसकी निष्कृति अथवा प्रायश्चित्त बताओ ८ अरु मेरे वियोगसे पिता भीम भी शोकसागर मे डूबाहोगा उसका वचनसुन विश्ववेत्ता नारदजी बोले ९ उसकुष्ठके नाशके लिये करुणायुतहुये उपाय कहनेलगे नारदजी बोले कि आवते मार्गमे मैंने भी एकउत्तम आश्चर्य्य देखा है कि विदर्भदेश मे (कदम्ब) इससंज्ञा से विख्यात पुरहै वहा एक मन्दिर मे मैने एक सुन्दर विनायकजी की मूर्त्ति देखी ११ जो कि (चिन्तामणिगणेश) ऐसे विख्यात है तिसके

अगाडी एक वडागणेशकुण्डहै१२ सो हेनृपते वहांकोई एकशूद्र म-
हाकुष्टी वृद्धापेसेजीर्ण तीर्थयात्रा करता२ वो कदम्वपुरमे आया१३
अरु वो गणेशकुण्डमे स्नान करके दिव्य देहको प्राप्तभया अरु फिर
गणेशजी से लाया जो आकाश से१४ सुन्दरविमान तिसपरवैठकर
वो उत्तम स्थान स्वर्गमे गया कि जहांजा प्राणी शोकको न प्राप्तहो
अरु फिर कभी इससंसार में न पडै १५ मैने उसे ऐसादेखा सो हे
राजेन्द्र तू सम्यक्प्रकार वहां न्हानेको तैयारहो वहान्हाके अरुचिन्ते
अर्थके दाता विभु गणेशजीको पूजकरके १६ ब्राह्मणोको दानदे तो
तू सद्यही पवित्र होजावेगा जैसे जीर्ण खालको त्याग सर्प स्वरूप
होजावे१७ मुनिजीबोले कि नृप श्रेष्ठने नारदजीसे कही इसवाणी
को सुन शोक तज आनन्द समुद्रमें मग्न हो कुछ भी वाक्य न कह
सका १८ उन मुनिश्रेष्ठ नारदजीके जानेको तैयार होनेपरमुनिको
नमस्कार पूजन करके फिर पूछताभया १९ एकमागद वोला कि हे
शुभश्रेष्ठ मुनिजी उसक्षेत्र में पहिले किसने सिद्धिपाई अरु वो मणि
भू जटित मूर्ति वहा किसने स्थापनकी २० जो कि गणेशजीकी उ-
त्तम मूर्ति है सो हे मुने इस परम आश्चर्य रूप वृत्तान्त को मुझेक-
हो २१ आप सरीखे साधुओ की तो मति पराये उपकारमे ही है
औरवरें लोको में विचरने में आपका कोईकार्य नहीं दीखताहै २२
जो कि ये लोकोमें मेहवर्षताहै अरु शेषजी पृथ्वीधरेहै अरु हेद्विज-
नाम पराये ही उपकार को सूर्यजी भी रातदिन भ्रमते हैं २३ अरु
आपजो सर्वप्राणियो में समान सर्वज्ञ आपकेआगे हे दयानिधे मूढ़
मुझ करके क्या कहनाहै २४ तव भी मै हे देवर्षिआपसे सन्देहछे-
दनके लिये पूछताहू नारदजी वोले कि हे लोक कृपाकारिन् भूपमु-
झसे अच्छा पूछागया २५ मै तेरे वाक्यसे प्रसन्नहुआहू सोई सारा
तुझसे कहताहूगा२६ ॥ इसप्रकारसे गणेशपुराणउपासनाखण्ड मे
नारदजी का समागम इसनामसे उन्तीसवा अध्यायहुआ २९ ॥

तीसवां अध्याय॥

नारदमुनिजी राजासे बोले कि मैं एकवेर अमरावती में इन्द्रको देखनेके लिये गयाथा वो अति नम्रभया यथाविधिसे मुझेपूजकरके कहनेलगा १ इन्द्र बोला कि हे मुने तुम मेरे सन्तोष के लिये कोई आश्चर्य कहो क्योंकि तुम सबलोको में भ्रमते रहते हो इससेआप का सब जानाहै २ तो नारदजीबोले कि मृत्युलोकमे मैंने गौतमजी का बड़ाभारी आश्रमदेखा जो कि नानावृक्ष बेल समूह अरु नाना पक्षि गणो से संयुक्त था ३ तहां मैंने अहल्या सहित गौतमजी को देखे अरु अहल्याजीका तो रूप देखतेही मै कामसे विह्वलहोगया४ कि जिसके रूपसे सावित्री शची लक्ष्मी गिरीन्द्र से जन्मी अर्थात् पार्वती अरु उर्वशी मैनका रम्भा लोकमें विख्यात जो तिलोत्तमा ५ केशावाला जिस अहल्या करके आ अकारिनाम ईषत्करी अर्थात् तुच्छ करीगई अरु अनुसूया भी दोपवती करी गई अरुन्धती अरु छाया नाम्नी रविजीकी भार्या अरु कश्यपजी की जो दिति पत्नी ६ उसके स्वरूपके समान कोई भी न भई न कोई नागपत्नियोमे देखी अब मेरेको न तो गाना रुचताहै न पूजा न भोजन सुहाताहै ७ मेरा निज ब्रह्मचर्य्य भी मुझको नहीं रुचता अरु न कहीं भी निद्राआवी है तो तुरंतही मैं इस अच्छी अमरावतीको देखनेआयाहूं८ पर उस देवीके बिना मै इस अमरावतीको भी तुच्छदेखताहू अर्थात् जो वो भी यहां होवे तो ये पूरी पुरी होजावे भृगुजी बोले कि इन्द्रको ऐसे कहते नारदमुनि तो अन्तर्द्धान हुये ९ अरु जम्भभेदी इन्द्र मत्स्य- केतुनाम मकरध्वज अर्थात् कामबाणोसे बिंधा उनकेजातेही मूर्च्छा को प्राप्तहुआ १० अरु ये चिन्तताभया कि मैं गौतमनारीको कब देखूं अरु कब मै उसके अधरामृत को पीकर अरु इस कामाग्नि से छूटूंगा अर्थात् शान्तिपाऊगा ११ अरु अब मै उसके मिलाप बिना औरतरै जीवना शुभ नहीं समझता ऐसे निश्चय संकल्प करके वो इन्द्र गौतमही बनगया १२ फिर इन्द्र मार्गमें भी उसीको चिंतवन

करता गौतमजी के आश्रम पर गया अरु गौतमजी को न्हाने गये इसने अहल्या को देखी १३ अरु भीतरजा गौतमबने इन्द्रने कहा कि हे प्यारी शय्याको अच्छी अर्थात् सफलकरो वो बोली कि जप छोड अभी घर कैसे आगये १४ दिनमें अतिनिन्दित इसविषयकी इच्छाको क्यों करतेहो गौतमसाबोला कि जितनेमें स्नानको गया तितनेमेंही श्रेष्ठ अप्सरा १५ तहांही न्हानेको आई अरु नगी मेरे दृष्टि समुखभई जो कि सूर्योदय मण्डल के से लालहोठोंवाली सुकोमल देहवाली सुन्दरदुग्धारीभारी स्तनोवाली १६ तो हेदेवि कामदेवके शस्त्रसे पीडित मेरामन जपमें नहीं लगा तिससे मे आश्रम को चलाआया सो हेप्यारी अवतू मुझे रतिदानदे १७ नहींतो कामाग्निसे जलमरे मुझकोफिर कहादेखेगी अरु मे तुझे शापदेगाया निकलजाऊगा या कि मनको अत्यन्त वशमें करूगा अर्थात् फिर तुझसे न रमूंगा १८ अहल्याजीबोली किपठन औरदेवपूजाकोछोडके रति क्यामागतेहो हेब्रह्मर्षे आपकोये उचितनहींहै परतबभी मैंआप कीआज्ञा करूहूगी १९ क्योंकिभर्त्ताकी शुश्रूषासेपरे औरधर्मस्त्रीकाकहीं नहींहै मुनिजाबोले कि वो अहल्यास्वर स्वरूप स्वभावइनकारणो से उसे अपनापति समझ कर २० इस गौतम बने इन्द्रके साथ रमण करनेको शयनपरगई अरुनि शक चुम्बनमिलननाडाखोलना इत्यादि चेष्टाकरके २१ इन्द्र उसकेसाथ गौतमजीकीनाईं क्रीडाकरता भया फिर तो उसके दिव्य सुगन्धोको सूंघकरके अत्यत चकित भई २२ मनमे तर्कनाकरी कि कोई ये कूट रूपवान् तो नहींहै ये मेरेचद्रमा की नाईं कोई कलक तो नहीं लगाहे क्या इसदुष्ट के संग करनेसे मेरे उभय कुल अर्थात् पीहर सासरा ये दोनो भ्रष्ट तो न होगयेहैं तो मैं इस अयश से भये काले मुह को इस लोक में कैसे दिखाऊं गी २४ अरु मेरा प्याराभर्त्ता मुनि मुझे किसगतिको पहुचावेगातो इसनेउसशठ इन्द्रकोकोपसेपूछा कि तूकोनहै जोकि तैने येकपटरूप धरा २५ मैं तोतुझेपतिरूपसे विश्वासकरतीहू तूकहु नहीं तो मैं तुझे शापदेतीहूऐसेकहागया तब तो शापसेडरे इसनेअपनास्वरूपप्रकट

किया २६ जो कि दिव्य आभूषणो से सजा मुकुट भजबन्ध सहित अरु कुण्डलोकी अद्भुत दीप्ति से शोभित मुखारविन्द इन्द्र २७ तो उससे निरन्तरबोला कि मुझे शचीकापति इन्द्रजानो कि तेरेलावण्यकोदेख कामअग्निसे विह्वल मैने २८कहींभीसुख न पाया इससे ऐसा काम किया है सो तू अब मुझ त्रिलोकी के ईश्वर को आदर से भज २६ उसका ऐसा वचन सुनके क्रोधभई मुनिपत्नी मुख से अग्निको निकालती सी देवोके पति इन्द्रसे बोली ३० हे सौयज्ञकरनेवाले भी मूढ इन्द्र तेरे इस शरीरकी मेरे भर्त्ताके आनेपर हे मद न जानें कौन गति होगी३१ जिसदुष्टअति पापी तू ने मेरा पतिव्रता रूप धर्म तोडा है मैं नहीं जानती हू कि अब तू गोतम जी को वाणी भये शापसे किसव्यवस्था को पहुचेगा ३२ ॥ इतिश्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमें अहल्या की धृष्टताका वर्णन इसनामसे तीसवांअध्यायहुआ ३० ॥

इकतीसवा अध्याय ॥

रुक्मागद ने पूछा कि हे महामुनिजी गोतमजी आये फिरकौन वृत्तान्त बीता सो सब मुझको कहो उसको मेरी अत्यतही जाननेकी इच्छाहै १ तो नारदजी बोले कि गोतमजी निज नित्य कर्मको समाप्त करके निजाश्रमको आये तो उसपत्नीको कि पेर धोनेको मुझे जलदे ऐसेपुकारकर कहनेलगे कि २ तू पहिलेकी तरह आजहमारे सामने तू क्यो नहींआई अरु आसन क्यो नहीं ल्याई अरु सुन्दर कैसे नहींबोलती है ३ उसका ऐसावचन सुनतेही लतासी कम्पती वो नीचामुखकिये दोघडीमे मुनिजीके पासआई ४ पृथ्वीपर अपने करपर छाती आदि आठो अग फैलायके उनके पैरोपर मस्तक टेक कर गिरपडी अरु वो व्याकुल शापसेडरी धीरे२ मुनिजीसे बोली५ कि जब प्रातःकाल आप निज स्नान सध्या विधि करनेगये थे तो तभी तुम्हारा रूपधरे दुष्ट देवेंद्र मुझसेंबोला ६ कि मैने अप्सराओं से भी सुंदर श्रेष्ठ कामिनी देखी है इससे मेरा मन नित्य देवतो

विधि में स्थिर नहीं होता तिससे मे उलटकर आयाहू तिससे हे शोभनेतू मुझे रतिदे ७ वो तुम्हीं हो इसभ्रांति से मुझ करके तैसाही वाक्य कियागया फिर शुभ सुगधो को सूंघ मुझे भ्रांतिभई ८ अरु मैनेकहा कि हे दुष्ट चित्त तू कौनहै सो मुझ से कहु नहीं तो भस्म होगा ऐसे कह वो बलनिसूदनेवाला अर्थात् बलको हटानेवाला इंद्र प्रकटहुआ ९ तिसनेहां फिर हे मुनि श्रेष्ठ जी मैंने आपका वचनसुना तो लज्जा से शीघ्र न आसकी सो आप मेरे इस अपराधको क्षमा करो १० आपसे कहने में दोष नहीं किन्तु कोई पर सुनके कहता तो दोष था क्योंकि मंत्र आयुर्बल घर का भेद लक्ष्मी भोग अरु ओषधि ये ११ तथा मान अपमान अरु दान इन वस्तुओंको प्रकट न करावे वे मुनिजी ऐसे सुन कोप से व्याकुल मन हो १२ आपी अपनी स्त्री को शापे कि हे दु शीले तू शिलहोजा क्या तू मेरे स्व- रूप को अरु स्वभाव चेष्टन कार्य्यादि को नहीं जानती थी १३ जिस लिये कि तेरा अत्यंत कामी मन परायेपुरुष में लगरहा है जब कि दशरथ के पुत्र राजा रामचन्द्र जी वन२ मे भ्रमते २ यहां आवेंगे तो १४ उनके चरण स्पर्श से तू अपने रूपको प्राप्त होगी नारदजी बोले तपके समुद्र मुनिजीके वाक्य बलसे वो तभी शिल होगई १५ ऐसे उसके शापको सुन अरु देख इन्द्र कांपा जैसे कि वायुके संयोग से बरफका पर्वत हिलता हो १६ अरु में विचारता भया कि अब मेरेसे क्या कर्त्तव्य है अब जो मैं समुद्रके बीचमें या कूवेंमे या तलावमें या बावडीमे या कमलोमेंभी इसरूपसे१७ घुस करके जो रहूंगा तोभी मुनि मुझको जानलेवेंगे इससे कुछ शोच वो वज्रधारीभी इन्द्र बिलावका स्वरूप धरकर विचरा १८ गौतमजी उसको आश्रममें तथा घरकेद्वारेभी न देखते कि कहांगया वो दान- वोकाशत्रु इन्द्रजोमेरीभार्याको दोषीहै१९ फिर मुनिश्रेष्ठजीने ध्यान से क्षण करकेही पहिचाना अरु कहा कि तुझका भस्मतो नहीं करूं क्योंकि तूदेवोका राजाहै पर खोटाहै २० इससे हे शचीपते मैंतुझे शापदेताहूं कि तू सहस्रभगवाला होजा वो जिवने कि मुनि करके

क्रोधसेकहा वचनसुना२१त्योंही इसइन्द्रने निज देहको सहस्रभग भूषितदेखा तभीसे शोकके सागरमे मग्नहो इन्द्रवृत्रासुरका हता भीथा पर शोचनेही लगा२२ इन्द्रबोला कि मुझकोबड़ोने अनेकसे अनेकबहुतही धर्म सिखलायेथे जोकि उनवृद्धोकावचन मैंने आदर से न माना २३ कि अपनीही सारी बुद्धिहित करने वाली होतीहै अरु परकीदई अर्थात् शत्रुकी बताई अकिलतौ नाश करने वालीही है अरु गुरुवो की दई बुद्धि बड़ोही अर्थ कारिणी है अरु स्त्री की मति क्षय देनेवाली होतीहै २४ कहासे मै नारद के वचन से उस अनिन्दित अहल्या के पासगया अरु मै देवोका राजा हुआ अर्थात् राजा होकरके अब लोगोको मुख कैसे दिखाऊंगा२५वोमेरादिव्य देह कहां गया अब मैं निज स्त्री शचीको क्या कहूंगा सो मुझको अरु इसकामकोभी धिकार है जिससे कि मैंइस निन्दित दशा को प्राप्तभयाहूंगा२६प्राणियोको तौ निज२शुभवा अशुभकर्मभोगना पड़ताहीहै तिससे में तिरछी योनि पतगादिको प्राप्तहोकर अपना पाप खपाऊंगा २७ इससे तो अब मेनाली के मुकुल अर्थात् टोहरो में इन्द्रगोपक अर्थात् तीजका रूप रखके छिपरहूंगा २८ इति गणेश पुराण उपासना खण्ड में इन्द्रके शापका वर्णन इस नामसे इकतीसवां अध्याय हुआ ३१ ॥

बत्तीसवा अध्याय ॥

नारदजीनेकहा कि इन्द्रकेकमलिनीके केसरेमें छिपे परमे उसपुरी को आया तो वहां में बृहस्पतिजी जिनमे अग्रगामी अर्थात् मुख्य जिनमे ऐसे सब देवता देखे१ उनके दोनोके शापका सारा कारण मैंने उनसे कहा जोकि अहल्या जीका अरु महेन्द्रका संयोग अरु उनकी कुरूपता अर्थात् शिला अरु सहस्त्र भग होनीये २ कि गौतमजीके शापसे इन्द्र सहस्त्र भग ताको प्राप्त हुआ जो कि इसने अहल्या का घर्षण अर्थात् ठाठसे भोग किया अरु हे देवो वो इस के प्रसंगसे शिलाभई ३ मुनिजी बोले कि बेसारे बेचारे हारे देवता

नारदजीसे कहा सुनके शोकसहितभये अरु वे अत्यन्तदुःखसे तथा निरतर श्वास अर्थात् श्वास का न थँभना अरु ऊपर को अर्थात् लंबे२ श्वास अरु भ्रांति इनसे भी बहुतही दुःखीभये ४ देवता बोले जिसने सौयज्ञकिये अरु जिससे दानव जीतेगये जिससे त्रिलोकी पालितभई अरु जिसने शुभ इन्द्रपदवी भोगी ५ जिससे बहुत देव पूजेगये तथा ब्रह्मको अत्यन्त पहिचाननेवाले ब्राह्मण भी मानेगये अरु और औरोंके अतिहीदुर्लभभी कईप्रकारकेभोग इसीकरकेभोगे गये ६ अब वो देव इन्द्र कहां बैठेगा औ कहा कैसे भोजन करैगा सोवैगा अरु हमअबअपने या औरकेलिये किसकेपास शरणजावे७ अरु अब हमें अरु इस इन्द्र पदको शचीको कोन पालन करैगा अरु मुनि श्रेष्ठ गौतमजी अब हमारेपर किसप्रकारसे प्रसन्न होवें८ जो गौतमजी निजभार्य्यासे बियोगीभये क्रोधसेइन्द्रकेकिये अपराधको स्मरण कररहे हैं अब हम गौतम जी के प्रसादमे इतर और कोई उपाय नहीं देखतेहै ९ सो हे नारदजी तिससे हम गौतम मुनिजी को शात करनेके लिये जायँगे ऐसे वे सारे देवता नारदजीके साथ वहासे निकलचले १० तौवे गौतम जीके पास जाकर अंजलिपुट किये अर्थात् हाथ जोड़े उनके शरण प्राप्त हुये उन्हे नाना प्रकार के वाक्योंसे स्तुति करते भये११देवताबोले कि हे मुनिजी आपके प्रभावको तो कहने को हमारी शक्ति नहींहैं क्योंकि हिमाचल अरु सुमेरु के भारीपने को कोई कहा तक कहे अरु वर्षाकी धार अरु गंगा के छिनके इन्हें कौन गिने १२ और समुद्र के जलको अरु भगवान् के गुणोंको जोकि मन्द बुद्धि मनुष्य कौन कहां तक गिने पहिले आपकरके प्रात कालहीके बोये बीजोकी खेत सपत् अर्थात् ने पह तयार कीगई १३ अरु ऋषि श्रेष्ठ रक्षा कियेगये अरु वाल खिल्य आदि ऋषियो ने यज्ञकर औरही इंद्र बनालिया था १४ फिर वे ब्रह्मादिको करके प्रार्थना किये गये उसे पक्षियोंका इन्द्र बनाते भये अरु देखो अगस्त्यजीकरके जो जलोंकाधारी समुद्रसो एकीचुल्लूसे आचमन किया गया १५ अरुगाधि के पुत्र विश्वामित्र

बुद्धिमान् करके औरही दूसरी सृष्टि आरंभ करी गई थी अर्थात् गौवो के स्थानमें महिषी अरु मनुष्य के शिरके स्थान मे नालियर ऐसी सृष्टि रचीथी अरु महात्मा च्यवनजी करके इन्द्रका भुज स्तंभ किया गया अर्थात् अश्विनी सुतो से युवावस्था पाय च्यवन जीने यज्ञभागदिवायातो कोपहो इन्द्रने इनपर बज्र उठाया तो च्यवनजी के तप प्रभावसे उसका हाथ वहाहीं ठहरगयाथा१६ तिससेपुरुषों को संपूर्ण मनसे अर्थात् सर्वथा आप के सेवन अरु नमस्कार अरु दर्शन स्पर्शन संभाषण ये सब पाप के नाशकरने वालेहै १७ जो कि आप परोपकारमें रत अरु दीनोपर दया करनेवाले जो आप हो सो इन्द्रके लिये शरण आये हमपर आप कृपा करनेके योग्य हो १८गौतमजी बोले कि आपका देवदर्शन चर्मके चक्षुवालेअर्थात्सामान्यमनुष्योंको नहींहोताहै कोईमेरेपुण्यप्रतापसे कामसाधक आपका दर्शन होगयाहै १९ अरु अब आपके दर्शन से मेराजन्म आश्रम तप दान देह आत्मा अरुव्रत येसारे अवश्य सफल भयेहैं २० अब आपको क्या प्रार्थना कर्त्तव्य अर्थात् कार्य्य याचना है सोमेरे आगे कहो जोवो मुझसे शक्य अर्थात् करनेमें योग्य है तो तुम्हारेध्यानके बलसे उसे अवश्य करोंगा २१ मुनीश्वर बोले कि वे स्वर्गवासी देवता उसका वचन सुनकर हरषे जैसे समुद्र चद्रमा के उदय में प्रकटही हर्षताहै २२ अथवा जैसे बालक की कोमल वाणीसे मा बाप हर्षते है तो वे सारे महामुनि गौतम जीकी प्रार्थना करते भये २३ देव बोले कि हे मुनिजी पहिले कामदेव तो शिवजीके अपराध से भस्मही होगया अरु आपका अपराधी भी इद्र आपकरके प्राण [illegible] न[illegible] गया अर्थात् आपतो बडेही दयालु हो२४अब [illegible] यथ[illegible] ने स्थान को प्राप्त होवे सो उसके अपराधोको [illegible] वचनसेभी ये कृपाक[illegible] भी वांछित कार्य्यहै [illegible] वचन सुन करके२५ [illegible] ले कि उस

पतित कृत अपराध वाले का तो नाम भी न लेना चाहिये २७ जो० कि कपटी अरु शठ दुष्ट अविवेकी भी था इस पश्चात्ताप से हीन भये इन्द्रकी कोई निष्क्रिया अर्थात् प्रायश्चित्तनहीं था २८ तब भी हे देवताओ मैं तुम्हारे वाक्य से उसका हित करूंगा क्योंकि जो तुम भी रुष्टनाम रोष सहित जावोगे तो मुझपर शापही गिरैगा २९ क्योंकि जो प्राणी बहुतो से अनुग्रह किया जाताहै सो भी पवित्र होता है तिससे एक मंत्र कहता हूं तिसको ये बतावो ३० कि जो सर्वजगत्कर्ता सर्वसंहर्ता सर्वरक्षाकारी कृपाके समुद्र ब्रह्मा विष्णुशिवयेहै आत्मबुद्धिकेगुणोद्भूत जिसके ऐसा जो देवोंका देवगणेशहै३१उसकाषडक्षरमंत्र अर्थात् गणेशायनमः यहमहासिद्धि का देनेवालाहै उसको इसके उपदेश किये वो इंद्र दिव्य देहधारी होजावेगा ३२ सो कि जितने उसके शरीर में भग चिह्नहैं सोसब नेत्रहोजावेंगे अरु वो शक्र अपनेराज्यको प्राप्तहोगाकरो मैं यहतुम्हें सत्यकहताहू ३३ संवादहै कि सो गौतमजी देवताओंको ऐसेसम-झायकर चुपभये अरु वे देव इन्हें पूजकरके हर्ष युक्त हुये नमस्कार करतेभये३४ फिर ये देवता इनकीप्रदक्षिणाकरके अरु इनसेआज्ञा मांगकर मुनिजीको सराहते तहागये जहा वली वृत्रासुर हता इंद्र था३५ कहते कि ज्ञानसम्पन्नसुखी गौतमजीसे परे और कोई सत्त्व गुणवाला अर्थात सत्त्वभाव नहींहै ३६ इति गणेश पुराण उपासना खण्डमेंइंद्रके मंत्रका कथन इस नामसे बत्तीसवां अध्यायहुआ३२॥

तेंतीसवा अध्याय॥

नारदजीबोलेदेवतोंने इंद्रसेकहा हे शत शतयज्ञकर्त्ता तुबाहरआव हमसारे सुरऋषि श्रेष्ठ नारदजी सहित १ उन गौतममुनिजीके पास जाय उन्हेंप्रसन्नकरके यहा तुझ पासआयेहै सो उन्होंनेउपाय कहा है अरुतुझे वरभी दियाहै२ श्रेष्ठजन दोषहोनेपर उसदोषको आपही जनोंको जना देतेहैं अरु वहां सुप्रकार से निष्प्रयोजन करने वाली उलटी विधिअर्थात् प्रतिक्रिया करतेहैं३क्योंकि छिपाने में तो दोषों

की वृद्धिहै अरु विख्यात करने से दोषका लघनाम नाश होजाता है इससे हे देवेंद्र तुमभी बाहरआकर उनसे ४ महर्षि नारदजी से उस दोषको प्रकटकर अरु उन मुनिजीका कहा उपायकरु कि विनायक जीका षडक्षर महामन्त्र ग्रहणकर ५ किमहो ब्रह्माजी ने गौरीशंकर जीके विवाह में गिरिजा का अंगुष्ठही देख लियाथा तौ उनकाभी वीर्य्यस्खलित होगया तौ वे लज्जित हो वहांसेचलेआये ६ तौमहे-श्वरजीने जानकर उसे उपायकरके निर्दोषकिया वो इन्द्रदेव ऋषि समूहसे कही इसवाणीको सुनकर ७ तुरंतही शक्र उस नलिनी के भीतरसे निजरूपहो बाहरआया अरुवहां सारेदेवताओंके वाक्यों कोआदर से श्रवणकरके८ राधरुधिरसे लिप्तअंग जिसका सो मैला दुर्गंधिवाला ऐसे इस सुरेश्वर इन्द्रको सारे देखकर नमस्कार करते भये ९ अरु देवप श्रेष्ठ सब अपने २ सूंघनेके छेद अर्थात् नासिका-ओंको वस्त्राग्र से ढककर फिर सुस्नान किये फिर आचमन कुल्ला आदिकिये इस इन्द्रसे तब बृहस्पतिजी १० गणेशजी का षडक्षर महामन्त्र बताते भये तिस करके उपदेश करतेही सो इन्द्र तुरत दिव्यदेह होगया ११ कि सहस्र नेत्रवाला श्रीशोभित दूसरे सूर्य्य की नाईं चमका तव तो देवताओंके जय २ शब्दोंसे अरु बाजों के समूहसे १२ अरुगन्धर्वोंके गान शब्दोंसे दशोदिशा शब्दितहुईं अरु हर्षसहित सारेदेवोंने पुष्पवर्षाये१३ अरुनारद आदि सब मुनियोंने अशीषदई अरु देवता हर्षसे इसेस्पर्शकरतेभये अरु कई स्तुतिकरते भये१४ कईक श्रेष्ठ शीलउससे बोलेकि हम तौआपही से नाथवान् हैं विनाआपकेशोभतेनहीं हैं जैसे विनचन्द्रआकाश नशोभताहो१५ विना अपने मां वापके जैसे वालक किसी तरहभी नहीं सुखपातेहैं तैसेही आपकेविना हम कहीं नहींसुखपातेहैं १६ मुनिजी वोले कि शतक्रतु इन्द्र ऐसे देववचनको सुनकर प्रसन्नमनहो सुरेशपति वोला कि सत्यवचनहै १७ इन्द्रवोला जोकि देवोंकेऋषि नारदजीकेवचन से मोहे मुझ करके जो कुकर्म्म कियागया था इससे सबसे दुस्सह फल मैंनेपाया अरु उसपाप के कोपसे तुम सारोंकरके मैं उद्धारभी

कियागयाहूं १८ सो मैं सारे अमरबरोको अरु महत्प्रतापी सारे ऋषिवर्य्यों को नमस्कार करता हूं इससे उद्धारको मनहै मेरा ऐसे मुझ शरणप्राप्त को रक्षाकरने के योग्य हो १९ पर उन गौतमजी की प्रसन्नता के लिये आपकरके कैसे यत्नरचा अर्थात् कियागया अरु उन्होंने मेरेलिये परम मन्त्र कैसे वर्णन किया सो तुम सारे ये मुझसेकहो २० देवताबोले नारदजी अरु गुरुजी को अगाड़ीकरके हम उस मुनिकेपास जो गये तो सम्यक् प्रणामकरके नानाप्रकार की अमृतवाणियो करके याचना किये स्त्रीयपास के मन्त्रको बताते भये २१ हेदेव जिसमन्त्रके उपदेश से तुम ससुख के अर्थ समर्थ सहस्रभगसे सहस्र नेत्रभये सो हेदेव अब अपनीपुरी अमरावती को चलो अरु सारे देवता लोकोंको भी शिक्षा देवो २२ इन्द्रबोला कि हे सुर ऋषिश्रेष्ठो विना गणेशजीकी प्रसन्नता के मैं अपनी पुरी को नहीं जाऊगा तुम सारे कृत जो कार्य्य उसके बल से संयुक्त अर्थात् सेन्द्रहुये रमण करते अपने २ दिव्यधामों को पधारो २३ आपके इतने करनेसे वहुत है जोकि वहु दुर्गतिवाला मैं लज्जा से बिलपहुआ तुम करके प्रकट कियागया हूं या आपके प्रभाव से प्रसन्नहुये उग्रतेजस्वी मुनि जिनके प्रभाव से मेरे सहस्र नेत्रपन हुआ२४ इतिश्रीगणेशपुराणउपासनाखंडमेंदेवतोंकाविसर्जनहोना इसीनामकरकेयहतेंतीसवांअध्यायहुआहै ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि तिस जम्भकेरिपु इन्द्रने कदम्ब वृक्ष के तले श्रेष्ठ आसनपर बैठके अपनी नासिका के अग्रभाग मे दृष्टि लगाके अरु मनको वशकरके हेराजन् उस षडक्षर मन्त्र को जपनेलगा१ तब तो उस मारुतनाम पवन भक्षणकारी मरुतनाम देवों के पति इन्द्रको हजारवर्ष बीते तो पर्वत के समान स्थिरहोरहे उसकेशरीर में जहां तहां वल्मीकनाम बांबी अर्थात् जिसमें जन्तु घुसेरहें ऐसे२ छिद्रोंके गुच्छे अर्थात् समूह होगये २ तब तो भगवान् गणेशजी

सर्वत्रगामी अरु सर्ववेत्ता बड़े तेजस्वी सो अपने तेज करके अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा इनकेभी तेजोको अरु सबकेनेत्रोको आच्छादनकरते प्रसन्नहुये ३ कैसेहैं कि चतुर्भुज रत्नजटित मुकुट मुकुटमाल सुन्दर बाजूबंध सहित कुंडलोसे मढे अर्थात् शोभित कपोल जिनके अरु मोतियोकी लडी अरु पैसूरे जोकि महामौल्य घुंघरूजडे अरु ऊंचा अर्थात् बहुमौल्य जो कमरबंधन सूत्र अर्थात् तगड़ी इनको धारण करतेभये ४ जोकि पुष्करनाम कमल तैसे अक्ष नेत्रवाला अरुबहुत हैं पुष्करनाम कमल वा शुंडमे जलजिनके अरु पुष्करनाम कमलो होंकीहै श्रेष्ठमाला जिनके ऐसे सर्वदेव मूर्त्ति सिंदूर से सजरहे जो गणेश सो इन्द्रके अगाडी प्रकटभये ५ उसेदेख इन्द्र भयसेभीतहो शोचतभया कि ये क्या कैसे आगया अरु अब हाड अरु प्राणमात्र जो मैं सो मेराजीवन कैसेरहै६ यह बड़ाभारी विघ्न न जाने किस से बनाया प्राप्त हुआ मेरा पसीनेहुरू शरीर पीपलके पत्तेकी तरह कांपरहाहै ७ सम्पूर्ण के देखनेवाले विभुगणेशजी ऐसे उसके बिकलित मन को जानतेभये उस महेन्द्रको विमल वचन बोलतेभये८ श्रीगणेशजी बोले हे सुरदेवो के ईश डरैमत मुझे क्यो नहीं जाने जोकिमैं गुणरहित विकारवर्जित चिदानन्द स्वरूप सनातनब्रह्म ९ कारणोपरे अर्थात् स्वयरूप अरु जगत् के कर्त्ताका भी कारण जिस देवको तू इसमन्त्रसे निश्चल हो ध्या रहाहै १० तू कि बहुतकाल ध्यानेसे थकगयाहै इससे मै तेरे प्रत्यक्ष भया अरु तेरे इस तप से प्रसन्नहुआ मै वरको देनेकेलिये आयाहू ११ इन असंख्य ब्रह्माडों की उत्पत्ति नाम रचना अरु प्रलय नाश अरु अवत् नाम रक्षण ये मुझमेही जान अरु हे निष्पाप तू मांग जो चाहताहै १२ नारदजी बोले कि वलभेत्ता इन्द्र उनके रमणीय वचनको सुनके बोधको प्राप्तहुआ। तो उनदेवो के देव विनायक जी महादेवजी को १३ तबहीं परमभक्तिसे उठके नमस्कार करताभया। अरु उन ब्रह्मरूप गणेशजी को शची का पति प्रत्यक्षही ये कहता भया १४ इन्द्र कि हे महाबाहो वृहद्गुजोवाले आपके गुणो को दिग्पालो सहित

ब्रह्मादिक देवता भी नहीं जानते जोकि आप इसजगत्कीपालना अरु संहार करनेवाले हो १५ जोकि आपने मुझको सौ यज्ञो से उत्पन्ननिजीसे कियादियाहै तिसमेभी मेरेको वहुत बिघ्नहोतेहै १६ अरु हे गजाननजी आपका महत्त्व मुझसे कैसे जाना जावे अरु हे महेश्वर जिसपर आपका पूरा अनुग्रह होवे १७ सो ही आपकी महिमा विघ्नके कारण को जानै ऐसे आपके गुणरूपो को कहने की उसीकी शक्तिहोगी अर्थात् आपकी कृपाही मुख्यहै १८ जो आप आधाररहित अरु सवकेआधार जो अविनाशि ज्ञानवान् जगन्मयी अखण्डानन्द से सम्पूर्ण मायावान् जो क्षर अर्थात् जो अवतारादि धारण करनेसे नाशमान से प्रतीतहोवै १९ और जो अक्षर अर्थात् वस्तुसे रतौं नाशरहितही है अरु जो परम व्यापक जो विश्व के रूप जैसारूप जिसका ऐसा अर्थात् विराटस्वरूप अरु जो सम्पूर्ण का स्वामीहै। ऐसे आपको वडे भी उग्रतपो से जानकर सनकादि अर्थात् सनकसनदन सनत्कुमार आदि ऋषि ये निवृत्ति को प्राप्त अर्थात् ससार से वासना विमुक्त होरहेहैं २० सो आप इसपड़क्षर मन्त्रके प्रभावसे हे परमेश्वर मुझको दीखेहो जोकि ये मन्त्र ब्रह्माजीने मुझको अनुग्रहसे उपदेशकिया था २१ अरु ब्रह्माजी ने मुझे येभी कहा था कि जव तू इसे भूलजावेगा तभी स्वस्थान से छुट जायगा अरु दुर्दशा को प्राप्तहोगा २२ तवतौ अतिलोभी दुर्भाग्य के वश मैने मुनिपत्नीजीको घर्षणाकी तिसीसे दुर्गतिकोपहुंचा २३ फिर तो धिषणायुक्त गुरुजीकरके उसवताये मन्त्रसे आपकास्वरूप सहस्र नयन होकर मैने अव देखा है २४ और जो आप चिंतित अर्थके दाताहो इससे मैं एकऔर भी वर मागता हू कि ये कदम्ब नगर (चिन्तामणिपुर) इसनाम से विख्यातहो २५ जहा मैने अनुष्ठान का फल आपका दुर्लभ चरणारविन्द प्राप्तभया है अव मैं और वरमागों हे गणाधिप सोभीदेवो कि २६ जैसे आपकाविस्मरण नाम भूलना मुझसे न हो तैसे करो कि हे विभो जिससे मेरा मन आपके पादपद्ममें नित्यही रमणकरतारहै २७ अरु हे गजानन

जी आजसेलेकर इसलोकमेंये(चिन्तामणितीर्थ)इसनामसे विख्यात सरोवर होवे २८ इसमें स्नानसे दानसे मनुष्यों के धर्म अर्थ काम मोक्ष हो। अरु हे जगत्के गुरुजी आपके प्रसादसे जेनोंकी सिद्धियें भी यहांहोवे २९ मुनिजीबोले कि विघ्नोंके ईश लोकोंकेपति गणेश जी जोकि मेघसे गम्भीर शब्दवाले सो कोमल वाणी से कहतेभये ३०. विनायकजी बोले कि हे समर्थ इन्द्र ये जो तैंने प्रार्थना किया सो सब तुझे प्राप्तहोगा। एक और भी तेरे को वर है कि तू अपने स्थानसे स्थित होजा ३१ अरु हे सुरेश्वर मेरेमें तेरी नित्यही अवि-स्मृति अर्थात स्मरणहो। अरु हे बासव जब तुझको संकटहो तभी मुझको स्मरणकरना ३२ तो मैं प्रकट होकर तेरा सब कार्य्य सिद्ध करदेऊंगा अरु ये पृथ्वी मे (चिन्तामणिपुर) विख्यात होगा ३३ अर्थात् कदम्बा जो है सो (चिन्तामणि) ऐसा प्रसिद्ध होजावे गा। यहां स्नान करनेसे सबकी सिद्धिया हस्त स्थिता होजावेंगी ३४ अरु मैंभी (चिन्तामणि) इसनामसे प्रसिद्ध विनायक सबका चिंतित फल देऊंगा। नारदजी बोले हरिइन्द्र ऐसे वर को पायकर स्वर्ग के सिन्धु आकाश गंगा को लाया ३५ अरु उससे मार्जन करके विभु गणेशजी को पूजताभया जोकि गजानन महाभागो निज परिवार-गणों से विभूषित ३६ इन्द्रने पुजे सो गणेशजी वहांही अन्तर्द्धान भये अरु इन्द्रने भी इनकी आदरसे स्फटिकमणि मयमूर्तिस्थापन करी ३७ जो विनायकजीकी शुभ दिव्य सारे शरीरविभागों सहित सुन्दर अरु रत्नो सुवर्णकरके भारी मन्दिर बनवाताभया ३८ अरु नमस्कार प्रदक्षिणाकरके इन्द्र अपने पदको पधारा। तिसीसे ये भूमिपर विख्यात महा (चिन्तामणि) सरोवर है ३९ अब भी वो शुभजलवाली गंगा जी इन्द्रकीआज्ञासे उनकीमूर्तिको अन्हवाकरके अपने स्थान अर्थात् समुद्र को जातीहैगी ४० इससे हे महीपाल मैंने तेरेको आश्चर्य्य रूप दर्शन जिसका ऐसा चिन्तामणि महात्म वर्णनकिया है ४१ जोकि सर्व दोषहारी श्रीवाला सर्व कामदाता श्रेष्ठहै ४२ हे महीपते इसले तू वहांजाकर यथाविधि स्नानकरे तो

सारे दोषों से विमुक्तहोगा इसमें शसय नहीं है ४३ फिर नारदजी भी उसराजाको पूछकरअरु आदरसे उस रुक्माङ्गद राजाको आशिषोंसेप्रसन्नकरकेचलेगये इतिश्रीगणेशपुराणउपासनाखण्डमेंचिन्तामणितीर्थकावर्णनइसनामसेयहापर चौतीसवांअध्यायहुआ ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

श्रीवेदव्यासजी ने पूछा कि हे ब्रह्माजी उनदेवोंके ऋषि के गये पर राजारुक्माङ्गदने फिर क्याकियासो इसमनोहरकथाकोमुझ से कहिये १ श्रीब्रह्माजीबोले कि हेपुत्र ऐसेराजाको महाउपदेशकरके नारदमुनिजीके गये हर्ष सहित रुक्माङ्गद अपनी चार अंगोंवाली अर्थात् हाथी घोडे रथ पैदलहैं जिसमे ऐसीसेनाको देखता भया२ उससेनाने भी राजा को विरूप देखा जिसकी कि स्वर्ण के समान कांति कामदेव सा स्वरूप था । अरु अब ये ऐसाकैसे होगया ऐसे शसय करके इस राजा से उसका कारण पूछती भई ३ सेनावाले बोले कि पर्वत बनों अरु नदियोंको भ्रमकर हम भूखे प्यासे हे राजेन्द्र तुम्हारे दर्शन का चावकरके आपके समीप आये ४ पैड़ पैड़ पर देखते २ आपके चरण कमल को प्राप्तहुये । अरु अब आपको ये अवस्थादेख दुःखसे भी दुःख अर्थात् महादुःख को प्राप्त हुये ५ हे नृपश्रेष्ठ वो क्या कारण भया सो हमसे कहो (रुक्मांगदबोला) कि मैं आगेचलाआया तो भूखा अरु प्यासाहुआ आगे प्रकट वांचक्नवि ऋषिजीके गृहाश्रमको देखताभया वहांजाकर मैंने सुमुखी उनकी पत्नी देखी ७ जोकि नामसे मुकुन्दा थी उससे मैंने जलमांगा था तो वो खोटी स्वेच्छा अर्थात् व्यभिचारिणी मुझसे खोटा वचन बोली ८ कि या तो तू मेरे साथ रमणकर नहीं तो मैं तुझे शापदेतीहूं । फिर वो मुझ शुद्धचित्तवाले से बलकरके हटाई गई ९ उसका भर्त्ता न्हानेगया था तो फिर उसदुष्टा ने मुझे क्रोधसे शापदिया । तब तो दुःखीहो वृक्ष मूलपर बैठगया १० तो पूर्वजन्म के पुण्य प्रभाव से मैंने नारदजी देखे । उन्होंने मुझको उस गणेशका नाम उत्तम

विधि वर्णनकिया ११ फिर मैं चिंतामणिक्षेत्रगयागणेशतीर्थके आ-
श्रितभया। उन्होहीने उसतीर्थ का विस्तार से महिमा कहा १२
दिव्यदृष्टिवाले मुनिजीने वहां स्नान वतायाहै इससे मैं अपनादोष
दूरकरने के लिये स्नान करने को जाताहूं गा १३ अरु आप भी
मेरेसाथ चलो जो वहा न्हानेकी इच्छाकरतेहो तौ वहा स्नान अरु
यथाशक्ति दानकरके अरु गणेशजी को पूज करके १४ तीर्थ अरु
देवता के प्रसादसे पवित्रहुये अपनेपुरको चलेआवेंगे (ब्रह्माबोले)
ऐसे निश्चय जान करके राजा को आगे किये वहां चले गये र
गणेश तीर्थ में स्नानकरके शोभित भया १५ सो कितपे स्वर्ण
समान कांतिमान पहिले कासा होगया तौ रुक्मागद ने नारदज
के वचन को सत्य माना १६ तव वहा स्नान करके रुक्मागद
परम हर्षयुक्त होकर ब्राह्मणो को वहुत से दान किये १७ अ
विनायक जी को पूजकर उसने अरु ब्राह्मणो ने अरु उन से
कोने सूर्यकेसमान तेजके समूहवाले विमानदेखा १८ जोकि विना
यकजो के गणो से युक्त किन्नर अरु अप्सराओ करके सहित तो
राजाने उनको नमस्कार करके पूछा कि तुम कोन कहासेआये हो
१९ किसके दूतहो वया कार्य्य है सो आप आदरसे कहो ब्रह्माजी
वोले कि राजाके कोमलवाक्य सुनकर विमान स्थित २० विना-
यकजीके दूतवोले कि हे नृपश्रेष्ठ तू धन्य है जिससे कि तुझकरके
सम्पूर्णभाव से प्रभु चिन्तामणि गणेशजी ध्यान कियेगये हे २१
अरु यथाविधि दानदेकर भलीप्रकार तीर्थयात्राकीगई अरु चिन्ता
मणिजीपूजेगये इससे तू भलीभांतिधन्यहे २२ वे गणेशजी चिंति
के देनेसेही चिन्तामणि कहाये हैं अरु हे सुव्रती हम भी तुम्हारे
दर्शनसे धन्य २ भयेहे २३ हे नृपोत्तम तुम्हारीभक्ति की महिमा
हम नहींजानसक्ते। शरीरसे मनसे वुद्धिसे अरु जीवनके भी अ
करनेसे २४ तुमकरके सारे ब्रह्माण्डके स्वामी गणेशजी ।।
कियेगयेहैं उनकेही दूत हे हे नृप उन्हीके भेजेहुये हे २५ वो
सहितहो हमै वोला कि शीघ्रगामी तुम मेरेभक्त रुक्मागदको

विमानसे मेरेपास लेआवो २६ ऐसे सुनकर हमआयेहैं सो तू इस आकाशगामी विमानपरचढ अरु हमारेसाथ अत्यंत शीघ्रही बिना थकजीके पास चल जोकि देव अर्थात् देवदेवहै २७ ब्रह्माजीवोले कि उनके ऐसे वचनसुनकर रुक्मांगद राजा ने कहा कि हे दूतो मै मन्दमति तो कहा अरु वे सम्पूर्ण शरीरकहां जोक २८ नहीं प्रमाण कियेजायँ न तर्कयोग्य चेतन्यमात्र समर्थ अविनाशो। अरु जगत् के रचना स्थापन संहार का जो कारण अरु आप कारण से परे २६ ऐसे उनका आदर मुझपर कैसेहुआ न जाने ये तीर्थ फलहै या कोई मेरा उत्तम पूर्वजन्म फल है ३० विस्तरके आगे अत्यंत शुभफल देनेवाला सुंदर आपका दर्शनभया आप अतिधन्य हो कि जिनके रात्रिदिन गणेशजी प्रत्य रहते हैं ३१ ये कहकर चरणारविन्द में नमस्कारकरके उनकी पूजाकरी। अरु न सबसे प्रार्थनाभी की कि नृपश्रेष्ठ मेरापिता जोकि ब्राह्मणभक्त स्ववका भारी पराक्रमी भीम मेरापिता ३२ उस विना विमान में सेवैठु अरु सुन्दर प्रसन्न माता चारुहासिनी विन कैसेचलूं उस करे भी देवोंके देव विनायक जी आराधित है ३३ जन्म सेवो और सी देवताको नहीं मानती जानती हे ३४ दूतवोला ऐसेही हैं तो न दोनोके भी नाम से इसतीर्थ मे स्नानकर। अरु उस का फल ति राजाको अरु तिसमाता को देवो ३५ फिर उनकोभी विमानस्थित करके ले चलेंगे ३६ ब्रह्माजी वोले कि राजा ने ऐसा वचनसुनकर कुशोसे प्रतिक्रिया अर्थात् चेवजीकरी कि हे कुश तू कुश संज्ञक है कुशकापुत्रहै पहिले ब्रह्माजीसे तू वनायागयाहै ३७ तेरे स्नानकिये वोही नहायाहै जिसका ये ग्रन्थि वधन अर्थात् जिसके नाम से ये गाठदीगईहे। इसमन्त्रको उच्चारणकरके सवोंकी अनुपूर्वता अर्थात् यथायोग्य क्रमसे ३८ गावँ के सवलोगो की प्रतिमा करके राजा ने स्नान विधानकिया उस चिन्तामणि क्षेत्र के गणेशतीर्थ मे ३६ फिर सेनासहित राजा रुक्मागद दूतो के वाक्यसे श्रेष्ठ विमान में बैठकर अपने कौंडिन्यपुरको आया ४० वाजोंके शब्दोंसे वेदध्वनि

चर अचर सारे संसारमें तेरीकीर्त्तिको विख्यात करूंगा कि त्रिपुरसे श्रेष्ठ कोईभी देनेवाला नहीं क्योंकि ये जो मांगी सोही देताहै २३ तब त्रिपुर बोला कि हो शंकर को तो मैं किंकर अर्थात् नौकर समझताहूं अरु देवताओंको गिनताही नहीं सो हे द्विज श्रेष्ठ वो मूर्त्ति मैं तुम्हें लाकर देताहूंगा २४ ब्रह्माजीने कहा कि हे मुनि व्यासजी त्रिपुर ऐसे कहकर उन कलाधरजी को आदर से पूजताभया अरु उनको दश गांव अरु वस्त्र आभूषण दिये २५ बहुत से मोती अरु औरर भी जो बडे२ योग्यरत्न अरु मूंगे अरु रांकवनाम पशुओ के वालोंसे बुनेहुये अर्थात् गलीचा आदि विछौने दिये २६ अरु उस असुरने नानाप्रकार के आभूषणो से विभूषित सो दास दासी दिये अरु श्रेष्ठ अश्व निज२ रक्षकसहित अरु स्वर्णके ऐसे २ चांदीकेरथो को देताभया २७ वे कलाधरजी इस दान दायजेको ग्रहण करके बलसे अर्थात् शीघ्रही सारे आश्रम निवासियोको अरु स्त्रीको हर्षा-तेभये अपने आश्रमको गये २८ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे सारेवृत्तात को नारदजी ने देवतो से कहा वे भी उस कालको देखते भये दि-नोको वितातेभये २९ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमे नारद जीका आगमन इस ही नामसे इकतालीसवां अध्याय हुआ ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

व्यासजीने पूछा कि उन कलाधरजी के गये उसने क्याक्या अरु कैसे चिन्तामणिजी की शुभ मूर्त्ति शिवजीसे लाकर इस त्रिपुर को दई १ सो हे चतुराननजी ये सब विचारके मुझको कहो क्योंकि मैं गणेशजीकी विस्तारसे लीला श्रवणरूप अमृतकोपीता तृप्तनहीं होताहूं २ ब्रह्माजीबोले कि हे मुनिश्रेष्ठ व्यासजी उनकेगये दैत्यने जो किया सो सारा वर्णन करताहूं सो हे मुने तू सावधान श्रवण कर ३ उस त्रिपुर ने मन्दराचल में स्थित शिवजी के पास दो दूत भेजे अरु उन्हें शिक्षाकी कि इस मेरे वाक्य को जाकर शिवजी को आदरसे अर्थात् समझाकर कहो कि ४ तुम्हारे घरमें सर्वार्थ देने-

वाली शुभ चिन्तामणि गणेशजीकी मूर्त्ति है सो हे गिरिजा के पति उसे तुम साम कहे समझाने से ही दैत्यराजको देवो ५ क्योंकि जो पातालमें या स्वर्गलोकमें अरु जो मृत्युलोक में आश्चर्य वस्तु हैं सो सब उस दैत्य त्रिपुर करके पराक्रम सेती अपने घरमें लाया गया है ६ सो हेदेव शिवजी शीघ्रलावो जिससे हम बली त्रिपुर के पास जावें अरु जो सामसे न देवोगे तो पराक्रमी दैत्य७ उसको बलसेले लेवेगा तब दुःखपावोगे ऐसेदैत्यके वचनसुनके वे शिवजीकेपासगये अरु जो इन्हें उसदैत्यराजने सिखायाथा सो ये सब वृत्तांत महादेव जीको कहतेभये ८ ऐसेदूतोंके वचनको सुनेकर त्रिनेत्र शिवजी क्रोधसे बिकल हुये ९ दूतों को बोले कि तुम दूत ही हो इसकरके मैं तुम्हारे बचनको सहताहूं नहीं तो कामदेव की तरह तुम्हारी भी निस्सन्देह भस्म की जाती १० उस तृण समान दैत्यसे प्रभु मुझ का क्या किया जाताहै वो आवो अरु मरनेका काम है तो मेरेपास आ युद्धकरो ११ ये तो मूर्त्ति उससे शतजन्मों करके भी प्राप्त होने को शक्यनहींहै क्या प्रलयाग्नि पतङ्गसे शान्तिको प्राप्तहोताहै १२ या सुमेरु का पात मूषक करके कुछ करनेको शक्यहै क्या अर्थात् मेरु के बल को मूसा क्या पहुंचावेगा अरु या क्यामहान् उदधि बहुत से भी जल निकलजाने से सूखा होजाताहै क्या १३ ब्रह्माजी बोले कि शंकर जी की वाणी सुन दूत तो जैसे आये थे तैसेही चलेगये अरु शम्भुजीने जोकहा सो स्वामी पासजाय कहनेभये १४ तब वाक्यके अर्थमें चतुर त्रिपुर ये सुनतेही अत्यन्त जला कि क्रोध अग्नि से दिया मानो त्रिलोकी को जलाताही हो १५ तुरन्तही अपनी चतुरंगिनी सेनाको आज्ञादी तो ही वह शीघ्रसेना मन्दराचलके सन्मुखभई निकली १६ अरु भूतलको ढकती जैसे बे मर्याद समुद्र बढाहो अरु नंगे हथियारों के समूहोंसे सहस्र सूर्यके समान कान्तिवाली १७ घनसी घोरगर्जती जो मृत्युके भयको कंपानेवाली अरु वो दैत्य भी बिमानके समान उस त्रिपुरपर सवार होकर १८ जो कि मन बेगवालाथा तिसपीछे मारनेको इच्छाकिये

चढताभया तो भारी मणि जटित कवच कुण्डल अरु भुजवन्ध १६ मातियोंकी माला अरु अँगूठी अरु कांचनकी तागडी अरु रत्नोंकी खिंचा अर्थात् जडा मुकुट जो महामोल्य अरु शोभायमान था इन्हें धारण करता २० जिसके भारी शब्दहींसे शिवजी का मन कम्पायमान भया उस भाथे सहित भारीधनुषको अरु कच्छपी ढालको अरु दृढ तलवार को धारण करता २१ वो दिव्य शक्ति शोभित भई जिसे दैत्यराज धारण करता था अरु गाते हुये अरु नाचते भये गन्धर्व अप्सराओं के समूह २२ अरु वन्दी जन चारण भी हर्ष से उसके आगे२ चले शंकरजी इसवाक्यसे दैत्यको आगया सुन करके २३ जो कि असंख्य सेनासहित कालकरके खेंचा युद्धको चाहता त्योंहीं त्रिशूल हस्त शिवजी भी गजाननजीको पूजकर २४ उन्हें प्रणाम अरु परिक्रमा करके अरु बलको आगे करके क्रोध से जलरहे नेत्र जिनके सो शिवजी निज स्थल से रणमण्डल को आवते भये २५ वे वीर निज२ वीर शब्दसे अर्थात् दकालोसे दशों दिशोंको गजाते निज२ प्रहारोंसे आपसमें मारनेकी इच्छाकरते २६ अरुतबदोनो सेना धूले के अन्धेरे से व्याप्त अर्थात् मारे अन्धकार के जनआपस में मिलगये पहिचान न रही मिचीहोगई अर्थात् अत्यंत रजोन्धकार होगया जिनमें सो अपने परायेकी पहिचान के ज्ञानसे रहितहुई रणमस्तक अर्थात् संग्राम मध्यमें प्रहार करती भई २७ तो तहां महाघोर युद्धहुआ कि कुछ भी न जानपडा फिर तो हतभये हस्ती अश्व वीरोंके रुधिरसे छिडके २८ रजके शान्त भये वे वीर आपस में न्यारे२ युद्ध करनेलगे तो कई तो भालोंसे कई खड्गोंसे कईबाणों से जो शिल्ल...नेथे २६ अरुकई खाडोसे कई मुष्टि अर्थात् घूसों से ही अरुकई ...कुहाडे अरु तोमर नाम मथने के रईसमान शस्त्र भेदसे तो तहां ... वीरोंके घोडो के अरु पैदलों के ३० रुधिर की नदी भई तो वे...ते कि केशहीहैं सिवार वहां जिसमें ढालहैं सो ही कछुवे जिसमे ...ही हैं मच्छ जिसमें अरु शिर ही हैं कमल भूषण जिसमें ३१ छत्रहीहैं आवर्तनाम भँवर जिसमें जो अत्यंत

घोर कवधके मृत मनुष्य मनुष्य शरीरसा ही वह रहे वृक्ष जिसमें अरु जो वीरोको सन्ताप उत्पन्न करनी गीध गीदडो का हर्ष देने वाली ३२ तो ऐसी नदीको देखकर वली जो पर्वतशायी महादेव सो दैत्यके सम्मुख गये अरु दैत्यभी त्रिपुरपर सवार हुआ उनके आगे२ बढता२ आया ३३ दोनो सेनाके नायको को मिला देख करवहुत से आपसमें दैत्यके अरु शकर जी के योद्धा नहीं व्याकुल भये अर्थात् सम्हल२ के मल्लयुद्ध ही को करतेभये ३४ नानाप्रकार के प्रहारो से अरु सुन्दर अस्त्र शस्त्रो करके भी तो में अव उनके युद्ध अरु पृथक् नामो को हे ब्रह्मन् तुझ को विस्तार से वर्णन करूगा ३५ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें त्रिपुर शिवजीके युद्धका वर्णन इसनामसे वयालीसवा अध्याय हुआ ४२ ॥

तेतालीसवां अध्याय॥

व्यासजीने पूछा कि तव ब्रह्माजीने कहा कि शिवजी अरु त्रिपुर द्वंद्व से अर्थात् एकसे एकही मिलकरके युद्ध करतेभये अरु षण्मुख जी से प्रचण्ड अरु नन्दी जी से चण्ड मिल लडा १ अरु वलवान् पुष्पदन्तने भी भीमकायसे युद्धकिया अरु भृशुण्डीनामगणनेविपक्षी नाई प्राणहारी कालकूटके साथ युद्धकिया २ वीरभद्रवज्रदंष्ट्रेमहा-वली द्वन्दयुद्ध करतेभये अरु तहा इन्द्रभी उस त्रिपुरकेमन्त्रीकेसाथ युद्ध करताभया ३ अरु वलीदैत्यके पुत्रकेसाथ युद्धमें अत्यतमदवान् जय-न्तनाम इन्द्रका रसोईकारी लडताभया अरु शुक्रजीकेसाथ अस्त्रवेत्ता वृहस्पतिजीने युद्धकिया४ऐसेही देवताओंके अरु दैत्योके वहुत द्वंद्व ही लडनेलगे तो मैं उन्हेंसौ वर्षो करके भी गिननेको नहींसमर्थहोता हू ५ जहा रथस्थवीर तो रथवालोके साथ अरु गजस्थ योद्धा गज स्थोके साथ घोड़े पर चढेवीर अपने समान अर्थात् अश्व सवारोंके साथ अरु पैदले प्यादोंके साथ ६।७ ऐसे ये नानावाजोंसे शब्दित महाघोर युद्धमे कैसा है वो युद्ध कि जिस में हेषितनाम घोड़ों का हिनसना तिन करके अरु वृंहित नाम हाथियो की चिंघाड़ो करके

अरु क्ष्वेड़ नाम वीरनादों से अरु नेमि अर्थात् रथआदि के पहियों से उठे नाद करके शब्दित होरहा ८ उनमें कईक तो नानाप्रकार के मल्ल युद्ध से लड़ते भये अरु महा युद्ध में हथियारों को त्याग अर्थात् छुट जाने पर अपने २ अंगों हीं से अंगों में प्रहार करते भये तब तौ प्रचण्ड ने नव बाणों से षण्मुखजी को ताडना किये जो बाण कर्णपर्य्यन्त खैंचेसेछोड़े अरु श्रेष्ठ शिलीपर पैनायेगयेथे ६ तब तौ कार्तिकेय नाम षण्मुखजी ने विन पहुँचेही उन बाणों को अपने खिंचेकोटि बालनवेभये बाणोंसे काटकर आपने पांच बाणों से उसको ताडित किया अर्थात् उसके बाणों को काट पांच आप मारे १० तौ हुटही भ्रमचित्त हुआ प्रचण्ड मूर्च्छित हुआ भूमि पर गिरपड़ा और नन्दीजीसे भी चण्ड पैनेभये पांचबाणोंसे हता ११ शीघ्रही भूतलमें गिरा मूर्च्छा को प्राप्तहुआ। भयशरीरी पुष्पदन्त जीन दशबाणों से भीमकाय दैत्य ने दशबाणों से पुष्पदन्तजी को बेधितकिये १२ तो तिन्होनेभी उस संग्राममें अपने पैने २ तीनही बाणोंसे उसे मारा तो वो भी पृथ्वीपर गिरपडा १३ अरु कालकूट को भृशुण्डीजी ने पांचशरों से गिराया। अरु फिर तहां क्रोधयुक्त महाबली वीरभद्रजीने १४ पैने चारशरों से वज्रदंष्ट्रकोमारा तौ वो इनको काटकर आप तीन बाणोंसे बीरभद्र जी का ताडित करता भया १५ उन पडतोंहीं को शीघ्रही वीरभद्रजी ने तीनहीं से काट दिये फिरवेगसे पांच बाणोंसे उस वज्रदंष्ट्रको गिरातेभये १६ अरु सुरपतिजी ने भी निजवज्र के पातसे दैत्यके मंत्री को गिरा दिया फिर खड्गको उठाकर दैत्य का पुत्र भी सामने आया १७ जो कि जयन्तजी को मारने चाहता अपने वीरोंके गिरजाने पर उसे ऐसे आतादेख इसकेखड्गको बाणसे छेदनकिया १८ फिर जयन्तजी शीघ्रही उसदैत्यपुत्रको तीनबाणोंसे हनताभया उनसे हत भया वो रुधिर उगलता भया मूर्छा युक्त भया गिरता भया १९ ऐसे सारे सेनाओंके सब तरफसेभग्नहोकर गिरनेपर देवोंकेगणोंसे दैत्योंको पलायन पर अर्थात् हारते भये देखकर २० कोइक जय चाहते

शिवजी के पार्षद पीछेसे भागते भये ऐसे देवोंके जयहोने पर अरु अपनी सेना के भागजाने पर २१ त्रिपुर पर सवार हुआ आपहीं शिवजीपै आया तो पहिले शस्त्रनाम खड्गादि हथियारोंसे युद्धकरके फिरदोनोंही अस्त्रनाथ निजभक्तिलब्ध गुप्तविद्यासे युद्धकरतेभये२२ तो प्रथमहीं दैत्य ने तो वारुणअस्त्र छोड़ा तो अत्यन्त घोरही वर्षा भई तो हिम जिसमें बहुत ऐसेयुद्धमें कुछभी न जानपड़ा २३ कहीं२ विजली के प्रकाश से जोकि अपना पराया ज्ञानकारी तिससे तो अत्यन्तहीघोरकठोर द्वन्द्वयुद्धभया२४तवतो महादेवजीने उससारी सेनाको वर्षाभयसे पीडितदेखकर अरु शिलापातअर्थात्ओलेगिरने के भयसे सव सेनाके दशोदिशाओमें भागजानेपर२५ गिरिशायी शिवजीने वायव्य अर्थात् पवन के अस्त्र को शीघ्रही छोड़ा तो उस महावायुसे वे महामेघ आकाशमें टुकडे२ होकर फटगये २६ फिर वायुसे घुमाये सेनाके दैत्यो के दिशाओ में सव तरफसे पक्षियोंकी पूछ वीरोंकी उष्णीषनाम पगडियें दूरसे उड२कर गिरनेलगीं २७ कई पर्वत चूनहुये तथा कई हाथी घोडे पैदल। अरु उखडेभये वेल वृक्ष सेनावालों को ढकतेभये २८ तो पन्नग नाम सर्प्पास्त्र से उस वाकी दैत्यने निवारणकिया। फिर कर्णपर्य्यन्त धनुषकोखींचकर अरु तूणीरनाम वरकस से वाण को निकाल करके २९ उसको अग्नि अस्त्रसे सुमन्त्रितकरके शिवजीकी सेना में फेंकता भया तो शीघ्रहीं सवको जलानेवाली अगारो की वर्षागिरी ३० तो उनजलती लूकों से दुःखीभये सर्वजन प्रलयही समझतेभये फिर उन जलतीज्वालों से एक महाभयकारी पुरुष ३१ उत्पन्नभया जोकि महाशरीरी और मस्तक से आकाशको स्पर्शकरता भया दाढों करके भयानक मुख वड़ा शब्दकरता क्षुधासे आतुर ३२ अरु सौ योजन विस्तृत घोर जिह्वाकोलडाता अर्थात् निकालता। अरु उसयुद्धमें अपनीनासिका से निकले पवन के वेगसे हाथियोंको भ्रमाताभया ३३ तो वो उस सेनाको भक्षण करता भया जैसे सर्प्पों को गरुड़ जी खाजावें तो उसपुरुषसे पीड़ितभई भर्गनाम महादेवजीकी सेना भागतीभई३४

अरु शिवजीके पिछाडी आकर बचावो२ ऐसा कहतीभई। तो शिव जीने कि मत डरो ऐसे उस सेना को अभय दान देकर उस अग्नि को हटाते भये ३५ गिरिजा के पति शिव जी मेघास्त्र के छोडने करके एकही वाण से उस घोर पुरुष को गिराते भये ३६ फिर भी उठकर वो पुरुष शिवजीके सेनावालो को खानेलगा तो प्रथमगण भयसे व्याकुलभये भागने में परायण होगये ३७ गिरते अरु पड़ते अरु सांसभर २ के कांपतेभये। अरु शिवजी भी निस्सहायपन से गुफाही में प्रवेशभये ३८ अरु षण्मुखआदि वीरभी उसीके पिछाडी घुसगये। अरु वो दैत्य त्रिपुर गिरिजाजीको ग्रहण करनेकी इच्छा करता पर्वतमे उसे अकेली विचारकर ३९ तुर्तही रणभूमिको छोड वो दैत्य कैलासही को गया। तो गिरिजा जी उसे दूरसे ही आता देख कांपती भई ४० अरु अपने पिता के पास जाकर ये कहा कि यह असुर मुझको लेतो नहीं जावेगा तो उसके पिताने उसकाऐसा वचनसुन उसे दुर्गम गुफामें लेजाकर ४१ जो अपने से और से न जानीगई ऐसे स्थान में निर्भय गिरिजाजी को स्थापन करता भया सो भी दैत्य फिर भी उसदेवी के ग्रहणकरने की इच्छाकरके हिम- वान् पर्वत के पास आया ४२ तब वहा भी कहीं इसने गिरिजा जीको नहींदेखा तो हे अतिश्रेष्ठ व्यासजी भ्रमतेभये उसने एकसु- न्दर चिन्तामणि जी की मूर्त्ति देखी ४३ जो सहस्रसूर्य्य के समान प्रकाशवाली अरु नानाप्रकार के आभूषणों से शोभित त्रिलोकी मे सुन्दर उस मूर्त्ति को लेकर अपने स्थान को गया ४४ जोकि त्रिपुर दैत्य नानाप्रकारके बाजो के शब्दकरके अरु स्तुति करते वन्दीजनो करकेयुक्त तब फिर पातालकोगया जो सर्वत्रजीता बलवाला ४५ तो जातेहुये उसदैत्यके हाथमें सेही वो चिन्तामणिजी की मूर्त्ति तो अन्त- र्द्धानभई तो वो आश्चर्यसा होगया ४६ वो उसको अपशकुनसमझ करफिर उसीपुरमें प्रवेशभया जोकि अत्यन्तही विमनअर्थात् उदा- सीनहुआ परमचिन्ताको प्राप्तभया ४७ इतिश्रीगणेशपुराणउपासना खण्डमेंयुद्धविषयवर्णनमें इसीनामसेतेतालीसवां अध्यायहुआ ४३॥

चवालीसवां अध्याय॥

व्यासजी ने पूछा कि हे ब्रह्मन् त्रिपुर से हारे भयेसे शिवजीने फिर क्या किया अरु कैसे उस जयशालि त्रिपुर दैत्य को जीता १ तौ ब्रह्माजीबोले कि तवतो एकबेर शिवजी मनमें परम चिन्ता को प्राप्तभये इस भूमितल को भी स्वाहा स्वधा अर्थात् हवन तर्पणसे हीन देखतेभये २ अरु विचारतेभी भये कि कब देवता अपने २ स्थानमें स्थित विखेद अर्थात् सानन्दहोंगे अरु किसउपायसे उस दुर्जयका पराजय अर्थात् हारहोवे ३ ऐसे उनके चिन्ता से आतुर भये ऋषिश्रेष्ठ नारदजी आगये। यदृच्छाकहे दैवयोगसेही शिवजी अरु इनदेवताओं को देखने के लिये ४ तिन्हें देखतेही देवशिवजी हर्ष जैसे मनुष्य अमृतको पाय प्रसन्न होवे तो कियाहै आसन का परिग्रह जिनकरकेऐसे नारदजीको शिवजीविधिकेसाथ पूजतेभये ५ अरु उनसे मिलकरके शिवजी अत्यन्त चिन्ता से आतुर भये शिवजी एक देवतोंके हितको चाहते अरु उस दैत्यके वधकी इच्छाकरते भये६ शिवजीबोलेकि त्रिपुरदैत्यकरके सबदेवताओंकाबलसेकुत्सित अदन अर्थात् नाशकियागयाहै कि तिसके स्थाममें भग्ननामटूटाहै सकल्पनाम मनकाकर्म जिनका अर्थात् भ्रष्ट प्रतिज्ञा जिनकी ऐसे सबदेवता भगाये गयेहैं ७ सो हे ब्रह्मण्य वे दशोदिशाओं में ऐसे गये कि मैं नहींजानताहूं कि कौन २ कहां २ रहता है अरु मेरेभी हजारहों अस्त्रोंको उसने अपने अस्त्रों से काटदिये ८ ब्रह्माजी बोले कि वे मुनिसत्तम जी शिवजी का वचनसुन इनसे बोले अरु मनमें त्रिलोकीके ईश इन शिवजीके तिरस्कृतहोने को अर्थात् हारजानेको परमही आश्चर्य रूप समझतेहुये नारदजी बोले ९ कि बड़ेहीआश्चर्य्य की बातहै जोकि आप सर्वज्ञ अरु सर्व क्रियाओं के ईश अरु सबके भी ईश सबके कर्ता सबकेरक्षक सर्वके संहारक अरु सबकेही नियन्ता अर्थात् स्वामी १० अरु हे प्रभो फिर करनेको नहीं करनेको अरु अन्यथा करनेको समर्थ आप फिर अणिमादि अष्ट सिद्धि

इत्यादि गुणोंसे संयुक्त अरु सर्वऐश्वर्यों के भोग भोगनेवाले ११
हेदेव सम्पूर्ण वाक् चतुरोंमें चतुर जो आप तिनकेविषे मुझमुनिसे
अरु रात्रिदिन त्रिलोकी में भटकते तथा गाने मे आसक्त मनवाले
करके क्या कहनाहै अर्थात् आपको में क्या समझा सक्ता हूं १२
परन्तु आपके वचनके रोकावट अर्थात् रुकजानेसे कुछ विचारकर
कहूंगा ऐसे कह कर क्षण भर फिर विचार कर पुनि शिवजी से
कहनेलगे १३ मुनिजी बोले कि हे शिवजी युद्धको जाने के लिये
कामनावाले भी आपकरके गणेशजीका पूजननहींभया इससे आप
जटाजूट अरु बहुनिनयन भी थे पर हारहीको प्राप्तहुयेहो १४ अब
तुम पहिले विघ्नोंके हटानेवाले विघ्नेशजीकोपूजो अरु उन्हें प्रसन्न
कर अरु उनसे वरपायकर तुम युद्धकरनेकेलिये आदरसेजावो १५
तो उस दैत्य को पराजयकरोगे अर्थात् हरादेवोगे यहां कुछ भी
विचार अर्थात् तर्कना न करनी चाहिये श्रीब्रह्माजीबोले कि उस
असुरनेभी महाभारी तपकरके देवगणेशजीका आराधनकिया १६
तिसीसे अखिल विघ्नकेसमूहहारी तिन करके तिस दैत्यको वरदिया
गयाहै कि विना महेश्वरजीके तेरामृत्यु किसीसे भी नहींहोगा १७
तिसकारण से हेगिरीश शिवजी उसके कामगामी इस पुर त्रयको
एकबाणसे तोडडालो यही जीतने का उपाय आपसे कहा है १८
शिवजी मुनिसे कहे उपायको सुनकर अमितहर्ष को प्राप्तहुये अरु
पहिले कही उस गजाननजी की वाणीको सुनके फिर उनमुनिजीसे
बोले १९ शिवजीबोले कि हेब्राह्मण नारदजी आपने सत्यकहा अरु
आपके इसवाक्यसे मुझको भी स्मरणहुआ अर्थात् याद आया कि
मुझको उन्होने पहिलेही दोमन्त्र उपदेशकियेथे २० जोकि सर्व
संकट हटानेवाले षडक्षर अरु एकाक्षर ये दो मन्त्र युद्धमें आसक्त
मन मुझकरके न तो जपे न स्मरण कियेगये २१ जो सर्वविघ्नहारी
गजानन सर्व के कारण अरु करनेवाले रक्षक संहारक विनायक
जी २२ तब फिर नारदजी बोले कि हे महादेव देवदेव उन गणेश
जीको तुम प्रसन्नकरो ब्रह्माजीबोले शिवजी तो नारदजी को विदा

करके तप करनेके लिये वनको चलेगये २३ तो दण्डकारण्यकेएक स्थलमे पद्मासन स्थितहो जप करतेभये कि बलसे अपनीइन्द्रियो को नियमकरके समाधिस्थभये२४ सोशङ्करजी शतवर्षतक अत्यन्त तप तपतेभये। तबतो उनकेमुखारविन्द से एकपरम पुरुष निकला २५जोपुरुष पंचमुखी दशभुज भालचन्द्र चन्द्रमासाचमकता मुण्डो की माला गलेमेंडाले सर्व्व आभूषणधरे मुकुटभुजबंधभूषणोसेसजा २६अरु जोपुरुषनिजदीप्तिकरके अग्नि सूर्य चंद्रमाओंको तिरस्कार करताभया जोकि दश आयुधोको धारणकिये तिसकीकांतिसे चमके देव शिवजी२७ आगेस्थित विनायकजीको देखतेहुये तो वेभी कैसे हैं किपंचमुख जो मानो दूसरेहीशिवजीहो उन्होंको देख महादेवजी तर्कनाकरतेभये कि क्या मैं दोविधिका होगयाहूं२८ क्या ये मेरेरूप से त्रिपुरही फिर चलाआयाहै क्या तेंतीसकरोड देवताओं में और पंचमुखवाला कौनहै २९ अथवा ये कोई महामारी मुझसे स्वप्नही देखागयाहै या मुझको वरदानदेनेकेलिये ये गजाननजीही आगये हैं ३० जिन सर्वविघ्नहारीदेव गणेशजीको मैं दिनरात ध्यायरहाहूं ब्रह्माजीबोले किद्विरदानन गणेशजी शिवजीकावचनसुन बोले ३१ कि हेमहादेव जो देवता तुमसे अन्तःकरणमे तर्कनाकिया नाम विचार किया अर्थात् ध्यायागया सो विघ्नहारी प्रभु मे गणेशहू मेरे स्वरूपको देवता ऋषि ये अरु ब्रह्मा येभी नहींजानते हैं ३२ अरु न उपनिषद् नाम ज्ञानकांड सहित वेद फिर षट्शास्त्रवेत्ता वो कहा से जानें अर्थात् वेभीनहीं जानसक्ते क्योंकि मै निश्शेष त्रिभुवन का करनेवालारक्षक अरु संहारकहू ३३ अरु ब्रह्मासेले स्थिर चर अरु सत्वआदितीनोगुणोंका मै स्वामीहू सो तेरे तिस तपसे मैं तुझको वरदेनेकेलिये आयाहू ३४ सो हे महादेवजी जो२ मुझसे चाहतेहो सो२मुझसे मांगो॥ इति गणेशपुराण उपासनाखण्डमें शिवजीके तपका वर्णन इसनामसे चवालीसवां अध्यायहुआ ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

व्यासजीने पूछा कि फिर देवोंके ईश विघ्नोंकेईश्वर विघ्नहारी गणेशजीके प्रसन्नभये तथा शिवजीकेलिये वरों को देना चाहे पर सदाशिवजी ने क्या२ वर मागा सो कहिये १ ब्रह्माजी बोले कि गणेशजी महाराजका वचनसुन महादेवजी स्वयरूप वरदाता गजाननजीको स्मरणकरके कहनेलगे २ शिवजी बोले कि दशों नेत्र मेरे आज धन्यभये हैं अरु आपके पूजनसे ये भुजा भी सभी धन्य भईं अरु आपको प्रणामकरनेसे मेरे पांचोमस्तकभी धन्यहैं अरु हे देव स्तुतिकरनेसे पांचो मेरेमुखभीधन्यहैं३ अरुहे अनन्यवुद्धे अर्थात् नहींहै और किसी में मन तुम्हारा अर्थात् मुझपर वहुतही प्रसन्न रहते हो आप (येसम्बोधनछःकेश्लोककाहै) कि पृथिवी,जल,वायु अरु दिशाभी अरु तेज अरु समय जोकि सबको चेष्टा करानेवाला तैसेही आकाश रस मधुरादिरूप घटादि अरु गंध सुगन्धादिस्पर्श उष्णादि शब्दक आदि मन चित्त इन्द्रिय वाक् आदि ४ अरु गंधर्व यक्ष,पितर,मनुष्य,देव,ऋषि ये अरु सारेदेवोंके गण अर्थात् समूह अरु ब्रह्मा,इन्द्र,रुद्र,वसु,ध्रुव आदि साध्यगण देवता अरु चरअचर ये सव आपहीसे उत्पन्नभये हैं ५ अरु हे अनन्य कहे नहींहै औरमें बुद्धि आपकी ऐसेआप पहिले तो सत्वगुणसे इससंसारको रचतेहो अरु फिर उसे रजोगुणकरके पालतेहो अरु आपही फिर तमोगुण सेती इस सारेसंसारको संहारभी करतेहो जोकि आप हे गुणों के ईश्वर नित्य अरु चेष्टारहित अरु सवकर्मों के साक्षी हो ६ ब्रह्माजी बोले कि हे महाबुद्धे व्यासजी तो मैं शिवजीकी आज्ञा से उन देव गणेशजीको बोला अरु मैंही उनके कईनाम निकालताभया सोतुम श्रवणकरो ७ मैंनेकहा कि हे गणेश वर्णमात्रिकाओंमें पहिले आप केही नामसे वीजहोगा जोकि (ओं) कार रूप अरु जो श्रुतियों का मूलहुआ अर्थात् आदिकारणहै किसकारणसे कि तुमगणोंकेईशहो इससे तुम्हारा (गणेश) ऐसा नामहोवे८ जब गणनायकजीने(ओं)

अर्थात् अंगीकार पूर्वक हा करी तबतो महादेवजी प्रसन्नभये अरु वरोकोभी देतेभये कि हेईश जो सवकामोमें तुम्हारा स्मरणकरेगा वो फिर परिणाममें निर्विघ्नताको प्राप्तहोवेगा अर्थात् उसकोकही कोई भी विघ्न नहीं होवेगा ६ अरु तुम्हारे स्मरण विना कोई भी अपने वाञ्छित अर्थ की सिद्धिनहीं पावै चाहे कीट पतंग आदि ति-र्यक्योनिवालाभी होवे इससे शैव अर्थात् मेरेउपासको करके अरु वैष्णव अर्थात् विष्णुभक्तो करके अरु शाक्तिकोकरके अरु सूर्यजीकी उपासना करनेवालों करके भी सर्वकार्यमें १० कि शुभकहे सत्कर्म में अशुभ कुकर्ममेंभी वैदिक वेदकेकर्ममें अरु लोककेभये तथा शास्त्र आदिकोके कर्ममें प्रथममे आप प्रयत्नसे पूजनीय होवोगे हे देव जो मंगल सवमनुष्योमें अरु जो यक्ष गन्धर्व पन्नगोमें जो मंगलहै ११ तिन२केईश्वर तुम (मगलमूर्त्तिता) को प्राप्तहोवोगे जहां२तुम्हारा भक्त ध्यावे तहा२ही मंगल करोगे अरु हे ईश मैभी पहिले तुम्हारे विन अर्चन करनेसे तैसे उस दैत्यवर त्रिपुरके युद्ध में १२ आपके अवदन अर्थात् नमस्कार नहींकरनेसे मैं इसपराभवकहे तिरस्कार अर्थात् हारको प्राप्तभया फिर आपके चरणकेशरण प्राप्तहुआहूं सो सर्वशक्ते गणेश मेरे अपराध को क्षमाकरो अरु सम्पूर्ण संग्राम के समय में जयदेवो १३ अरु हेदेव जो जड दरिद्रीजन आपकोसर्वथा नहींभजतेहैं वे हारेंगे अरु जो भक्तिभावयुक्त भक्तजन आपकोभजते है वे सम्पूर्णअर्थ देनेवाली सिद्धिको प्राप्त होवेंगे १४ ब्रह्माजीवोले कि समस्त वाक्य मात्रके सारके जाननेवाले गणेशजी ऐसा वचन सुनकर गिरीश शिवजीसे कहते भये कि हे उमापते जहा२ तु मेरे स्मरणकोकरैगा तहां२ तभी मैं तेरेपास आजाऊगा १५ अरु अव तुम मेरे नामकेवीजसे एकवाणको निमंत्रितकरके अर्थात् (ओं) इस वीजमंत्र से पढकर अरु उसीसे उसके पुरत्रयको हेमहेशजी हमारे तेजकरके तुम गिरादेवो तो तुम उसत्रिपुर दैत्य को अवश्य सम्पूर्ण भस्मकरोगे १६ व्यासजीसे ब्रह्माजी वोले कि फिर तो गणेशजी अपनेनामो का सहस्र अर्थात् निजप्रिय हजार नाम तिन्हें भक्तिसे

प्रणामकिये शिवजीकोभक्तिकरके प्रसन्नमनभये कहतेभये जोसहस्र नाम जयदाता अरु मनुष्योंके कार्यकरनेवालाहै१७ अरुइसे कहते भये कि तू इसे युद्धकेसमय मे पढ़ तो शीघ्रही दैत्योंकोमारेगा अरु तीनोंसंधि अर्थात् प्रातर्मध्याह्न सायकाल पढ़नेसे मनुष्यो के सारे कार्य मनोवाञ्छित सिद्धहोवेंगे १८ फिर तो शिवजी गजमुखजी के वाक्यको श्रवणकर अरु उन्होंका पूजनकरके प्रकटहो अत्यतहर्षको प्राप्तभये अरु उनमहाराजगणेशजीको स्थापन किये सोकि उनका दृढ अरु बडा ऊंचा मन्दिर बनवातेभये १९ अरु फिर देवताओंको अरु मुनि सिद्धों के समूहों को सतर्पित अर्थात् सुपूजितकरके अरु द्विजश्रेष्ठोंकोदानदेकरके अरु फिरभी पूजनकरके शिवजी वरदायक देव गणेशजीकोनमस्कार करतेभये २० अरु सबसेकहा कि ये सब लोकोंमें (मणिपूर) इसनामसे विख्यात होवें शिवजी के ऐसे कहने से अरु तैसेही उनसर्वोंके कहनेसे वे गणोंकेनाथहैं मुख्यजिनमें सो देव अन्तर्द्धानभये२१ तबतो मुनिगणसहित देवोंसहित देवगणेशजी के अन्तर्द्धानभये शिवजीभी निज गणोंसेसंयुक्त गंधर्व यक्षोंके समूह से आवृतअर्थात् घेरेभये निज पुरको पधार अरु जा गिरिजाजीको हर्षसेबोले२१ तिससमय देवेश्वर अरु सपत्नीक मुनीश्वर अरु सारे योगीश्वरभी शिवजीसे सारे अमृतवचनको श्रवणकरके तथा तैसेही प्रकारसे त्रिपुर को निहत हता अर्थात् शिवजी से मारागया सुन करके अपने २ गृहों को प्राप्तही समझते भये अर्थात् त्रिपुरासुर हतागया अरु देवतादिक सर्व अपने२ स्थानों में यथावत् आनन्द से रहनेलगे २३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में शिवजी को वरप्रदान तथा त्रिपुरासुर का वध इस नाम से पैंतालीसवां अध्याय हुआ ४५ ॥

श्रीगणेशपुराण भाषा॥

छियालीसवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीके सहस्रनामोंका वर्णन॥

व्यासजीने पूछा कि हेलोकके अनुग्रहमे परायण ब्रह्माजी गणेश जी शिवजीके अर्थ अपने सहस्रनामो को कैसे उपदेश करतेभये सो ये वृत्तान्त मुझ से कहिये १ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे वे त्रिपुरके शत्रु देव शिवजी त्रिपुरके जीतनेके उद्योगमें गणेशजीके नहींपूजने से निश्चयही विघ्नोंसे व्याकुल होतेभये २ सो शिवजी फिर उस विघ्नके कारण को मनसे निश्चय करके अरु भक्तिभावसे भले प्रकार महागणेशजीको यथोपचार पूजितकरके ३ नहीं पराजय को प्राप्त शिवजी उसविघ्नके शांतिकरनेके उपायको पूछनेभये तो आप महागणेशजी महाराज शिवजीकी पूजासे प्रसन्नभये ४ तो सबविघ्नोंके हरनेवाले सबकाम फलदायक इस अपने नामोके सहस्र को कहतेभये ५ इस श्रीमहागणपति सहस्रनाम मालामंत्रके गणेशजी ऋषि। महागणपतिजी देवता। नानाविधिके छन्दहैं (ग) ये ऐसा बीजहै (तुगड) ये शक्तिहै (स्वाहा) ये कीलकहै। समस्तविघ्नोंकेनाश के द्वारा महागणपति जीकी प्रीतिके अर्थ जपनेमे विनियोगहै श्री महागणपतिजीबोले कि ओम् नाम प्रणवस्वरूप अर्थात् जो अउम् इन व्यापक तीनअक्षरोंसे सम्मिलित समस्तकर्मोंमे प्रथमस्मरणीय जो है सो (ओम्१) गणेश्वर नाम जो गणना किये जायँ सो गण अर्थात् अत्यन्त बड़े२भी जो गिन्ती करनेयोग्य जो गण तिनके जो ईश्वर नाम स्वामी सो (गणेश्वर २) गणो में जो क्रीड़ा करनेवाले

हो सो (गणक्रीड३) गणोके जो नाथ नाम स्वामी सो (गणनाथ४) गणोंके जो अधिपति सो (गणाधिप ५) एक अर्थात् अद्वितीयही अतिश्रेष्ठ हैं दंष्ट्रा नाम दाढ़ जिनके सो (एकदंष्ट्र ६) वांका है तुण्ड जिनके सो (वक्रतुण्ड७) गजकाहैमुखजिनके सो (गजवक्र८) भारी अर्थात् दीर्घ विस्तारसे शोभितहैं उदर जिनका सो (महोदर९) ६ लम्बा नाम भारी हैं उदर अर्थात् तोंद जिनके सो (लम्बोदर १०) धूवेंके ऐसा है वर्ण जिनका सो (धूम्रवर्ण ११) विशेष करके जो कट नाम प्रकट सो (विकट १२) विघ्नोंके जो नेता नाम स्वामी सो (विघ्ननायक १३) सुन्दरहै मुखजिनके सो (सुमुख१४) दुःनाम खोटा अर्थात् दुष्टोंको भयदायी मुख जिनके सो (दुर्मुख १५) बुध नाम ज्ञान तिसे जो प्राप्त अर्थात् सर्वज्ञ सो (बुद्ध १६) विघ्नोंके जो राजा सो (विघ्नराज१७) गजका है मुख जिनके सो (गजानन१८) ७ शत्रुओ को डरानेवाले सो (भीम १९) प्रकर्षकरके मुत्नाम आनन्द जिनसे सो (प्रमुद २०) आ नाम सब ओरसे आनन्द जिनसे सो (आमोद २१) सुरो को हैं आनन्द जिनमे सो (सुरानन्द २२) मद करके उत्कट अर्थात् प्रकट सुगन्धिवाले सो (मदोत्कट २३) हे नाम आकाश मे तथा शिवजीके निकट जो बाललीला शब्द करें सो रवैं नाम जो शब्दकरें सो (हेरम्ब २४) श नाम कल्याणको जो वरण अर्थात् फैलावे सो (शम्बर २५) श कल्याण जिनसे होवेसो (शम्भु २६) चौडे हैं कान जिनके सो (लम्बकर्ण २७) भारी बलवाले सो (महाबल २८) ८ जो बधानेवाले सो (नन्दन २९) जो लपैं नाम कथन करैं अर्थात् अत्यन्तही हितार्थ वक्ता सो (लम्पट ३०) जो बाललीलासे डरैसे हो सो (भीरु ३१) मेघके सा शब्द हैं जिनके सो (मेघनाद ३२) गणोको जो जितावैं सो (गणञ्जय३३) विशेषसे जो नायक सो (विनायक३४) विशेषरूपवाले नेत्र जिनके सो (विरूपाक्ष ३५) धैर्यवाले अरु जो शूरवीर सो (धीरशूर ३६) वर को प्रकर्ष से जो देवे सो (वरप्रद ३७) ९ भारी जो गण तिनके जो अधिपति सो(महागणपति३८) बुद्धिके जोप्यारे सो (बुद्धि-

प्रिय३९) शीघ्रही जो प्रसन्नतावाले सो (क्षिप्रप्रसादन४०)शिवजी के जो प्रिय सो (रुद्रप्रिय४१) गणोंके जो अधिष्ठाताअर्थात् स्वामी सो (गणाध्यक्ष४२)गौरीजीके जो पुत्र सो(उमापुत्र४३) पापो को जो नाशैं सो (अघनाशन४४) १० स्वामिकार्त्तिकहैं बडेजिनसे सो (कुमारगुरु४५)शिवजीके जो सुत सो(ईशानपुत्र४६)मूशाहै सवारी जिनका सो (मूषकवाहन४७)सिद्धिके जोप्यारे सो(सिद्धिप्रिय४८) सिद्धिके जो पति सो(सिद्धिपति४९)सिद्धिकोजोप्राप्तहो सो (सिद्ध ५०) सिद्धिके विशेपनेताहो सो (सिद्धिविनायक५१) ११ नहीं है विघ्न जिनसे वा जिनके सो(अविघ्न५२) जो गधर्ववेद में कुशल सो (तुम्बुरु५३)सिंहहै बाहन जिनका सो(सिंहवाहन५४)मोहिनीनाम गणमुख्याके जो प्यारे सो(मोहिनीप्रिय५५) कटनाम मदजलको जो कटैनाम वर्षावैं सो(कटकट५६) राजा के पुत्रस्वरूप सो(राज-पुत्र५७) जो चतुराई सहित हो सो(शालक५८)जो सम्यक्प्रकार से मर्य्यादकिये होंसो(सम्मित५९) जो अनन्ततासे नहीं जांचेगये सो(अमित ६०) १२ कूष्माण्डोंसे अरु सामनाम वेदसे तथा साम गान ध्वनिसे अर्थात् देदशरीरीसे है सम्भवनाम जन्म जिनका सो (कूष्माण्डसामसम्भूति६१) जो नहीं जीतेजावें सो(दुर्जय६२) जो भारको जपै अर्थात् दूरकरै सो(धूर्जय६३) जो नहीं जीतेजावें सो (अजय६४)भूके जोपति सो (भूपति६५) भुवनोंके जोपति सो (भुवनपति६६) प्राणियों के जो पति सो(भूतानाम्पति६७)नहींहैनाश जिनका सो(अव्यय ६८) १३ ससारके कारण सो (विश्वकर्त्ता६९) विश्व है मुख जिनका सो(विश्वमुख७०) विश्व है रूप जिनका सो-(विश्वरूप७१) जिनमें निरन्तरधारण कियाजावे सो निधि अर्थात् (कोश७२) जो घिनसहितहोवें सो(घृणि७३) कवनाम जो हितार्थ शब्दकरै सो(कवि७४) जो कवियोंमेंश्रेष्ठ सो(कवीनामृषभ७५)जो ब्राह्मणोंपर दयालु हो सो(ब्रह्मण्य७६) ब्रह्म जो पति सो (ब्रह्मण स्पति७७) १४ अत्यन्त बडे जो राजा सो (ज्येष्ठराज७८) निधियों के जो पति सो(निधिपति७९) निधियोंके प्रिय अरु प्रियोंकेजोपति-

हों सो(निधिप्रियपतिप्रिय८०) सुवर्णकेवने पुरके जो बीचमें विराजमानहों सो(हिरण्मयपुरांतस्थ८१)सूर्यमण्डलमध्यमें जो प्राप्तहों सो (सूर्यमण्डलमध्यग८२) १५ शूडकी फटकार से विध्वंस किया अर्थात् फेंकाहै समुद्रकाजलजिन्होंने सो (कराहतिध्वस्तसिंधुसलिल ८३)पूपादेवके जोदांतोंकोभेदै अर्थात् उखाडै अर्थात् वीरभद्रस्वरूप सो (पूषदन्तभित्८४) गौरीजीके गोदमें खेलके कुतूहलवाले हों सो (उमांककेलिकुतुकी८५) मोक्षको जोदै सो (मुक्तिद८६) कुलको जो पालनकरै सो (कुलपालन ८७) १६ जो मुकुटवालेहो सो (किरीटी ८८) कुण्डलवालेहों सो (कुण्डली८९)हारहै गलमें जिनकेसो(हारी ९०) वनके वृक्षोंके पुष्पोंकीमालागलेमें जिनके सो (वनमाली९१) मनोमयी अर्थात् जोस्वतन्त्रहो सो (मनोमय९२) विमुखतोपनसेहती गईहै दैत्योंकीशोभा जिनसेसो (वैमुख्यहतदैत्यश्री९३) पैरके फटकारनेसेही जिती अर्थात् कांपीहै पृथ्वी जिनसे सो (पादाहतिजित क्षिति ९४)१७ सद्यही जो जन्मैसो (सद्योजात९५) सुवर्णसरीखी मूंजकी मेखला जिनके सो (स्वर्णमुंजमेखली९६) खोटेकारणोंकोजो हरैनाम परेकरै सो (दुर्निमित्तहृत्९७) खोटेस्वप्नोंकोहरै सो (दुस्वप्न हृत् ९८) प्रकर्प से जो सहै सो (प्रसहन ९९) जोगुणोंवालेहों सो (गुणी१००) नादनाम जो आकाशवायुसे उत्पन्नशरीरसे निकसता मुखको प्राप्त जो वायुस्वर सो नाद तिसके बीचमें जो प्रविष्ट किये अर्थात् विराजित सो नादप्रतिष्ठित इस प्रकार से शुक्लोपनामक पण्डितवर देवीसहाय नारनौलोपकरकरके विरचित गणेशपुराणस्य श्रीमहागणपति सहस्रनाम के व्याख्यान में प्रथम शतक भया॥ १००॥

सुन्दरहै रूप जिनके सो (सुरूप१) सबके नेत्रोंमें है निवासजिनका सो (सर्वनेत्राधिवास २) जो वीरआसन के आश्रय बैठैं सो (वीरासनाश्रय३) पीले हैं वस्त्र जिनके सो (पीताम्बर४) खंडितहैदन्त जिनका सो (खण्डरद ५) खंडच न्द्रधारणकिया मस्तक में जिन्होंने सो (खंडेन्दुकृतशेखर६) १९ विचित्रहै लक्षणोंसे कटिस्थान जिनका

सो (चित्रांक७) श्यामहैदांतजिनकेसो (श्यामदशनो८) मस्तकमेंचाद जिनकेसो (भालचन्द्र ९) चारभुजा जिनकेसो (चतुर्भुज १०) योग शास्त्र के जो अधिपति सो (योगाधिप ११) जो आंखकी पुतली में विराजमानहो सो (तारकस्थ १२) जो पुराणपुरुषरूपहो सो (पुरुष १३) गजकेहैं कानजिनके सो (गजकर्णक १४) २० गणोंके जो अधिराजा सो (गणाधिराज १५) विजयरूप अरु स्थिरतावाले होसो (विजयस्थिर १६) गजोंके जोपतिसो (गजपति १७) जोध्वजाधारी सो (ध्वजी १८) देवो के भी देव सो (देवदेव १९) कामदेवहै प्राण जिनका सो (स्मरप्राण२०) जो दीप्तकरैं अर्थात् प्रकाशक सो (दीपक २१) पवनका जो कीलैं सो (वायुकीलक २२) २१ विद्वानोको जो वरदेवें सो (विपश्चिद्वरद २३) नाद अरु ऊर्ध्वनादसे भेदको प्राप्तहै इन्द्र जिन करके सो (नादोन्नाद भिन्नवलाहक २४) सूकर कासा है दांत जिनके सो (वराहरदन २५) मृत्युको जो जीतैं सो (मृत्युंजय २६) वघेरे का चर्म्म है वस्त्र जिनके (सो व्याघ्राजिनाम्बर २७) २२ इच्छा रूप शक्ति को जो धारण करैं सो इच्छा (शक्तिधर२८) देवोके जो रक्षकसो (देवत्राता २९) दैत्योंको जो विशेषसे मसलैं हटावैं अर्थात् परास्त करें सो (दैत्य विमर्दन ३०) शिवजीके मुखसे जो उत्पन्न सो (शम्भुवक्त्रोद्भव३१) शम्भुजीके कोप को जो हरैं अर्थात् शांत करें सो (शम्भुकोपहा ३२) शम्भु के हँसने से जो भये सो (शम्भुहास्यभू३३) २३ शिवजी के जो तेजो रूप सो (शम्भुतेजा ३४) गौरीजीके शोकको हरनेवाले सो (शिवाशोकहारी ३५)गौरीजीको सब ओरसे जो सुख प्राप्तकरैं सो (गौरीसुखावह३६) उमाजीके अंगके मैलसे जो जन्मे सो (उमांगमलज३७) गौरीजीके तेजसे जो भयेसो (गौरीतेजोभू ३८) आकाशगङ्गासे जन्मेसो (स्वर्धुनीभव३९) २४ यज्ञही है शरीर जिनके सो (यज्ञकाय४०) भारीहै नाद जिनका सो(महानाद४१) पर्वत साहै देह जिनका सो(गिरिवर्ष्म४२) शुभहै मुखजिनका सो (शुभानन४३) सबके जो व्यापक रूप सो (सर्वात्मा४४) सबदेवोंके जो आत्मा सो (सर्वदेवात्मा ४५)

हों सो(निधिप्रियपतिप्रिय८०) सुवर्णकेवने पुरके जो बीचमें विराजमानहों सो(हिरण्मयपुरान्तस्थ८१)सूर्यमण्डलमध्यमें जो प्राप्तहों सो (सूर्यमण्डलमध्यग८२) १५ शूड़की फटकार से विध्वंस किया अर्थात् फेंकाहै समुद्रकाजलजिन्होने सो (कराहतिध्वस्तसिंधुसलिल ८३)पूषादेवके जोदांतोंकोभेदें अर्थात् उखाडे अर्थात् वीरभद्रस्वरूप सो (पूषदन्तभित्८४) गौरीजीके गोदमें खेलके कुतूहलवाले हों सो (उमांककेलिकुतुकी८५) मोक्षको जोदें सो (मुक्तिद८६) कुलको जो पालनकरें सो (कुलपालन ८७) १६ जो मुकुटवालेहो सो (किरीटी ८८) कुण्डलवालेहो सो (कुण्डली८९)हारहैं गलेमेंजिनकेसो(हारी ९०) वनके वृक्षोके पुष्पोकोमालागलेमें जिनके सो (वनमाली९१) मनोमयी अर्थात् जोस्वतन्त्रहों सो (मनोमय९२) विमुखनापनसेहती गईहै दैत्योंकीशोभा जिनसेसो (वैमुख्यहतदैत्यश्री९३) पैरके फटकारनेसेंही जिती अर्थात् कांपीहै पृथ्वी जिनसे सो (पादाहतिजितक्षिति ९४)१७ सद्यही जो जन्मसो (सद्योजात९५) सुवर्णसरीखी मूंजकी मेखला जिनके सो (स्वर्णमुंजमेखली९६) खोटेकारणोंकोजे हरेंनाम परेकरें सो (दुर्निमित्तहृत्९७) खोटेस्वप्नोंकोहरें सो (दुस्वप्नहृत् ९८) प्रकर्ष से जो सहें सो (प्रसहन ९९) जोगुणोंवालेहो सो (गुणी१००) नादनाम जो आकाशवायुसे उत्पन्नशरीरसे निकसता मुखको प्राप्त जो वायुस्वर सो नाद तिसके बीचमें जो प्रतिष्ठा किये अर्थात् विराजित सो नादप्रतिष्ठित इस प्रकार से शुक्रोप नामक पण्डितवर देवीसहाय नारनौलीयकरकरके विरचित गणेशपुराणस्य श्रीमहागणपति सहस्रनाम के व्याख्यान में प्रथम शतक भया ॥ १०० ॥

सुन्दरहै रूप जिनके सो (सुरूप१) सबके नेत्रोंमें है निवासजिनका सो (सर्वनेत्राधिवास २) जो वीरआसन के आश्रय होंहो सो (वीरासनाश्रय३) पीले हैं वस्त्र जिनके सो (पीताम्बर४) खण्डितहैदंत जिनका सो (खण्डरद ५) खण्ड चन्द्रधारणकिया मस्तक में जिन्होंने सो (खण्डेन्दुकृतशेखर६) १८ विचित्रहैलक्षणयुक्त कटिस्थानजिनका

सो (चित्रांक७) श्यामहैं दांतजिनकेसो (श्यामदशनो८) मस्तकमें चांद जिनके सो (भालचन्द्र ६) चारभुजा जिनकेसो (चतुर्भुज १०) योग शास्त्र के जो अधिपति सो (योगाधिप ११) जो आंखकी पुतली में विराजमानहो सो (तारकस्थ १२) जो पुराणपुरुपरूपहो सो (पुरुप १३) गजकेहैं कानजिनके सो (गजकर्णक १४)२० गणोके जो अधिराजा सो (गणाधिराज १५) विजयरूप अरु स्थिरतावाले होसो (विजयस्थिर १६) गजोंके जोपतिसो (गजपति १७) जोध्वजाधारी सो (ध्वजी १८) देवो के भी देव सो (देवदेव १६) कामदेवहै प्राण जिनका सो (स्मरप्राण२०) जो दीप्तकरै अर्थात् प्रकाशक सो (दीपक २१) पवनका जो कीलैं सो (वायुकीलक २२) २१ विद्वानोंको जो वरदेवें सो (विपश्चिद्वरद २३) नाद अरु ऊर्ध्वनादसे भेदको प्राप्तहै इंद्र जिन करके सो (नादोन्नाद भिन्नवलाहक २४) सूकर कासा है दांत जिनके सो (वराहरदन २५) मृत्युको जो जीतैं सो (मृत्युंजय २६) वघेरे का चर्म्म है वस्त्र जिनके (सो व्याघ्राजिनाम्बर २७) २२ इच्छा रूप शक्ति को जो धारण करैं सो इच्छा (शक्तिधर२८) देवोंके जो रक्षकसे (देवत्राता २६) दैत्योंको जो विशेपसे मसलैं हटावैं अर्थात् परास्त करै सो (दैत्य विमर्दन ३०) शिवजीके मुखसे जो उत्पन्न सो (शम्भुवक्त्रोद्भव३१) शम्भुजीके कोप को जो हरैं अर्थात् शांत करैं सो (शम्भुकोपहा ३२) शंभु के हंसने से जो भये सो (शम्भुहास्यभू३३) २३ शिवजी के जो तेजो रूप सो (शम्भुतेजा ३४) गौरीजीके शोकको हरनेवाले सो (शिवाशोकहारी ३५)गौरीजीको सब ओरसे जो सुख प्राप्तकरैं सो (गौरीसुखावह३६) उमाजीके अंगके मैलसे जो जन्म सो (उमागमलज३७) गौरीजीके तेजसे जो भयेसो (गौरीतेजोभू ३८) आकाशगङ्गासे जन्मसो (स्वर्धुनीभव३६) २४ यज्ञही है शरीर जिनके सो (यज्ञकाय४०) भारीहै नाद जिनका सो(महानाद४१) पर्वत साहै देह जिनका सो(गिरिवर्म्मा४२) शुभहै मुखजिनका सो (शुभानन४३) सबके जोव्यापक रूप सो (सर्वात्मा४४) सबदेवोंके जो आत्मा सो (सर्वदेवात्मा ४५)

ब्रह्म है मस्तक जिनका सो (ब्रह्ममूर्द्धा४६) दिशा है कान जिनके सो (ककुप्श्रुति ४७) २५ ब्रह्मांड है मस्तक जिनका सो (ब्रह्मांडकुम्भ४८) जो चैतन्यरूप हो सो (चित् ४६) आकाश है मस्तक जिनका सो (व्योमभाल५०) सत्यलोक है बाल जिनके सो (सत्यशिरोरुह ५१) जगत्का जन्मप्रलय है खोलना मीचना जिनका अर्थात् जिनके नेत्र खोलनेसे जगत् उत्पन्न होय अरु मीचने से प्रलय होजावे सो (जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेष५२) अग्नि, सूर्य्य, चन्द्र येहैं तीनो नेत्र जिनके सो (अग्न्यर्कसोमदृक् ५३) २६ पर्वतसा है एकदन्त जिनके सो (गिरीन्द्रैकरद५४) जो धारण किये जावें सो (धर्म५५) अत्यंत धर्मवाले सो (धर्मिष्ठ५६) सामगानसे वधे अर्थात् सुखी सो (सामबृंहित ५७) नवग्रह अरु नक्षत्र येहैं दांत जिनके सो (ग्रहर्क्षदशन ५८) सरस्वती है जिह्वा जिनकी सो (वाणीजिह्व५६) इन्द्र है नासिका जिनकी सो (वासवनासिक६०) २७ भ्रुवोंके बीचमें रक्खा है शूंड जिन्होने सो (भ्रूमध्यसंस्थितकर६१) ब्रह्मविद्या नाम ज्ञानरूप मदसे जो उत्कट सुगन्धिवाले सो (ब्रह्मविद्यामदोत्कट६२) कुलपर्वत हैं कचे जिन्होंके सो (कुलाचलांस६३) सोम, सूर्य्य हैं घंटा जिनके सो (सोमार्कघंटो ६४) शिवजी के जो शिरोधर अर्थात् मस्तक मणि सो (रुद्र शिरोधर६५) २८ नदीनदहै भुजा जिनके सो (नदीनदभुज ६६) सांपोंकी हैं अँगूठी जिनके सो (सर्पांगुलीक ६७) तारा हैं नखन जिनके सो (तारकानख ६८) आकाशहै नाभि जिनकी सो (व्योम नाभि६६) लक्ष्मी है हृदा जिनका सो (श्रीहृदय ७०) सुमेरु है पीठ जिनकी सो (मेरुपृष्ठ७१) समुद्र है उदर जिनका सो (अर्णवोदर ७२) २६ कोषमें स्थित हैं यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, किन्नर, नर जिनके सो (कुक्षिस्थ यक्ष गन्धर्व यक्ष किन्नर मानुष ७३) पृथ्वी है कटि जिनकी सो (पृथ्वीकटि७४) रचना है लिंग जिनका सो (सृष्टि लिंग ७५) पर्वत है नितंब जिनके सो (शैलोरु ७६) अश्विनी सुत हैं जानु जिनके सो (दस्रजानुक ७७) ३० पाताल लोक है जांघ जिनकी सो (पातालजंघ ७८) मुनियें हैं पैर जिनके सो

(मुनिपात् ७६) काल हैं अँगुठा जिनका सो (कालांगुष्ठ ८०) वेदत्रयी अर्थात् ऋक्, यजु, सामवेद है शरीर जिनका सो (त्रयीतनू ८१) तारा मण्डल हैं पूंछ जिनकी सो (ज्योतिर्मण्डल लांगूल ८२) हृदयरूप मूल बंधन अर्थात् थांवले से जो निश्चलनाम अचल सो (हृदयालान निश्चल ८३) ३१ हृदय कमल की पंखड़ी वाला जो आकाशसो है क्रीडाकरनेका सरोवर जिनका सो (हृत्पद्म कर्णिका शालिवियत्केलि सरोवर ८४) श्रेष्ठ भक्तो का ध्यान है साकल जिनकी अर्थात् भक्ति बद्ध सो (सद्भक्तध्याननिगड ८५) पूजाके वारिसे जो निवारण कियेसो (पूजावारिनिवारित ८६) ३२ अर्थात् पूजनार्थ जलसे निरंतर सेवाकिये सो जो ऐश्वर्य्य वाले सो (प्रतापी ८७) कश्यप जी के जो सुत अर्थात् वामन सो (काश्यप सुत ८८) गणोके पति सो (गणप ८९) जो स्वर्ग निवासी सो (विष्टपी ९०) बल वाले सो (बली ९१) यश वाले सो (यशस्वी ९२) धर्म वाले सो (धार्मिक ९३) सुन्दरहै पराक्रमजिनके सो (स्वोजा ९४) जो विख्यात अर्थादि रूपसो (प्रथम हुआ ९५) जो आदि ईश्वर सो (प्रथमेश्वर९६) ३३ चिन्तामणि नाम द्वीपको जो पति सो (चिन्तामणि द्वीपपति ९७) कल्पवृक्ष के वनमें स्थान जिनकासो (कल्पद्रुम वनालय ९८) रत्नके मंडप मध्यमें जो विराजमान सो (रत्न मंडपमध्यस्थ ९९) रत्नोके सिंहासनके जो आश्रित अर्थात् बैठे सो (रत्नसिंहासनाश्रय१००)३४ इसप्रकारसे श्रीमत् शुक्लोपनामक पण्डित देवीसहाय विरचित श्रीगणेशपुराणस्थमहागणपति सहस्रनाम व्याख्यानमे द्वितीयशतक भया २०० ॥

तीव्रा नामसे जो गण मुख्या निजशक्ति तिसके शिरपर धराहै पैर जिन्होंने सो (तीव्रा शिरोधृतपद १) ज्वालिनी नाम शक्ति के शिरसे जो लाडकिये गये सो (ज्वालिनी मौलिलालित २) नन्दा शक्ति करके सब ओरसे बधी फैलरही अर्थात् शोभितहै पीठआसनकी शोभा जिनकी सो (नन्दा नन्दित पीठ श्री३) भोगदा करके सजा है आसन जिनका सो (भोगदा भूषितासन ४) ३५ काम-

दायिनी सहित है पीठासन जिनका सो (सकाम दायिनी पीठ ५) फुररही अर्थात् कांतिमती जो उग्रा तिसके आसन के जो आश्रय सो (स्फुर दुग्रासनाश्रय ६) तेजोवती के जो शिरोमणि सो (तेजोवती शिरोरत्न ७)सत्या से जो नित्य ही मुकुट किये सो (सत्या नित्यावतंसित ८) ३६ विघ्न नाशिनी से सहित है पीठासनजिनका सो (सविघ्न नाशिनी पीठ ९) सर्व शक्ति मय कमल के जो आश्रय सो (सर्वशक्त्यम्बुजाश्रय १०)लिपि कमलासन के जो आधार नाम सहारे सो (लिपि पद्मासनाधार ११) अग्नि के तीनों धामोंका जो आश्रय सो (वह्निधाम त्रयाश्रय १२) ३७ ऊपर को हो रहा है स्वेच्छा से पैरका अग्रभाग अर्थात् मुर्चा जिनका सो (उन्नत प्रपद १३)उढके भये अर्थात् मासल है घुटने जिनके सो (गूढगुल्फ १४) सवरण भई अर्थात् मास से ढकी भई हैं एडी जिनकी सो (सवृत पार्ष्णिक १५) पुष्ट हैं जाघ जिनकी सो (पुष्ट जंघ १६) मिले भये अर्थात् दृढ़ हैं जानु जिनके सो (श्लिष्टजानु १७) मोटे हैं नितम्ब जिनके सो (स्थूलोरु १८) प्रकर्ष से ऊपरको होरही अर्थात् ऊंची है कटि जिनकी सो (प्रोन्नमत्कटि १९) ३८ गम्भीर है नाभिजिनकी सो (निम्ननाभि २०) भारीहै कोष जिनकीसो (स्थूल कुक्षि २१) पुष्टहै हृदा जिनका सो (पीनवक्षा २२) भारी हैं भुजा जिनके सो (बृहद्भुज २३) पुष्ट है कंधे जिनके सो (पीनस्कन्ध २४) शंखकेसाहै कंठ जिनके सो (कम्बुकंठ २५) चौडे है ओठ जिनके सो (लम्बोष्ठ २६)लम्बीहै नासिका जिनके सो (लंबनासिक २७) ३९ टूटा है वाया दंत जिनका सो (भग्नवामरद २८) ऊंचा है सव्यादांत जिनकासो (तुंगसव्यदंत २९)बडीहै ठोढीजिनके सो (महाहनु ३०) छोटे हैं नेत्र तीन जिनके सो (ह्रस्वनेत्रत्रय ३१) शूपके से हैं कान जिनके सो (शूर्पकर्ण ३२) चौडा तथा गहरा है मस्तक जिनका सो (निबिडमस्तक ३३) ४० गुच्छे के आकार है मस्तक का अग्र भाग जिनका (सो स्तवकाकारकुम्भाग्र ३४) रत्न हैं मस्तक में जिनके सो (रत्नमौलि ३५) नहींहै आंकडा अर्थात् त्रासक जिनके

सो (निरंकुश३६) सर्पोंकेही हैं हार, अरुकटि बन्धन वस्त्र जिनके सो (सर्पहारकटी सूत्र ३७) सर्प हैं यज्ञोपवीति जिनके सो (सर्प्प यज्ञोपवीतवान् ३८) ४१ सर्पों के हैं मुकुट अरु कड़े जिनके सोसर्प (कोटीटकटक ३६) सर्पही हैं गल भूषण, अरु बाजूबंध जिनके सो (सर्प ग्रैवेयकांगद ४०) सर्पोंकी ही हैं काछ अरु उदर बंध अर्थात् पेटी जिनके सो (सर्प कक्ष्योदराबंध ४१) सर्प राजाहैं दुपट्टा वस्त्र जिनके सो (सर्प राजोत्तरीयक ४२) जो रंगे अर्थात् लाल हो सो (रक्त ४३) रक्त हैं वस्त्र जिनके तिन्हें जो धारण करें सो (रक्ताम्बर धर ४४) रक्त पुष्पमाला है आभूषण जिनका सो (रक्त माल्य विभूषण ४५) रक्त है देखना जिन का सो (रक्तेक्षण ४६) रक्त हैं शुंड जिनकासो (रक्तकरो ४७) रक्तहैं तालुवे, अरु होठ पत्र जिनके सो (रक्तताल्वोष्ट पल्लव ४८) ४३ जो श्वेतवर्ण हो सो (श्वेत ४६) श्वेत वस्त्रों को जो धारैं सो (श्वेताम्बरधर ५०) श्वेतमाला है आभूषण जिनके सो (श्वेतमाल्य विभूषण ५१) श्वेतछत्र से जो सुन्दर अर्थात् शोभित सो (श्वेतात पत्र रुचिर ५२) श्वेत चँवर से जो फट कार दिये गये सो (श्वेत चामर बीजित ५३) ४४ सारे शरीरो से जो सम्पूर्ण सो (सर्वा वयव सम्पूर्ण ५४) सारे लक्षणों से जो लखे गये सो (सर्व लक्षण लक्षित ५५) सारे आभूषणों की शोभा से जो संयुक्त सो (सर्वाभरण शोभाढ्य ५६) सर्व शोभासे जो समन्वित सो (सर्वशोभा समन्वित ५७) ४५ सब मंगलों के भी जो मंगल रूप सो (सर्वमंगल मांगल्य ५८) सब के कर्त्ता के भी जो कारण सो (सर्व कारण कारण ५६) सदा है अद्वितीय अर्थात् सुन्दर शुंड जिनके सो (सर्व दैत्यकर ६०) शृंगके विकार वाले धनुष आदिसें संयुक्त होसो (शार्ङ्गी ६१) बिजौरे युक्तहो सो (बीजपूरा ६२) गदाको जो धरे सो (गदाधर ६३) ४६ ईखके धनुष को जो धरे सो (इक्षुचापधर६४) शूल जिनके पासहो सो (शूली६५) चक्र है हाथ मे जिनके सो (चक्रपाणि ६६) कमल को धारण करें सो (सरोजभृत ६७) ४७ फांसा लिये हो सो (पाशी ६८) जो

दायिनी सहित है पीठासन जिनका सो (सकाम दायिनी पीठ ५) फुररही अर्थात् कांतिमती जो उग्रा तिसके आसन के जो आश्रय सो (स्फुर दुग्रासनाश्रय ६) तेजोवती के जो शिरोमणि सो (तेजोवती शिरोरत्न ७) सत्या से जो नित्य ही मुकुट किये सो (सत्या नित्यावतसित ८) ३६ विघ्न नाशिनी से सहित है पीठासन जिनका सो (सविघ्न नाशिनी पीठ ९) सर्व शक्तिमय कमल के जो आश्रय सो (सर्वशक्त्यम्बुजाश्रय १०) लिपि कमलासन के जो आधार नाम सहारे सो (लिपि पद्मासनाधार ११) अग्नि के तीनो धामोका जो आश्रय सो (वह्निधाम त्रयाश्रय १२) ३७ ऊपर को हो रहा है स्वेच्छा से पैरका अग्रभाग अर्थात् मुर्चा जिनका सो (उन्नत प्रपद १३) उढके भये अर्थात् मासल हैं घुटने जिनके सो (गूढगुल्फ १४) सुबरण भई अर्थात् मास से ढकी भई हैं एडी जिनकी सो (सद्वृत पार्ष्णिक १५) पुष्ट हैं जाघ जिनकी सो (पुष्ट जघ १६) मिले भये अर्थात् दृढ़ हैं जानु जिनके सो श्लिष्टजानु १७) मोटे हैं नितब जिनके सो (स्थूलोरु १८) प्रकर्ष से ऊपरको होरही अर्थात् ऊंची है कटि जिनकी सो (प्रोन्नमत्कटि १९) ३८ गम्भीर है नाभि जिनकी सो (निम्ननाभि २०) भारी है कोप जिनकीसो (स्थूल कुक्षि २१) पुष्टहै हृदा जिनका सो (पीनवक्षा २२) भारी हैं भुजा जिनके सो (बृहद्भुज २३) पुष्ट हे कंधे जिनके सो (पीनस्कन्ध २४) शखकेसा है कठ जिनके सो (कम्बुकठ २५) चौड़े हे ओठ जिनके सो (लम्बोष्ठ २६) लम्बीहै नासिका जिनके सो (लम्बनासिक २७) ३९ टूटा है बावा दत जिनका सो (भग्नवामरद २८) ऊचा है खब्बादांत जिनका सो (तुंगसव्यदंत २९) बड़ी है ठोढ़ी जिनके सो (महाहनु ३०) छोटे हे नेत्र तीन जिनके सो (ह्रस्वनेत्रत्रय ३१) शूपके से हैं कान जिनके सो (शूर्पकर्ण ३२) चौडा तथा गहरा है मस्तक जिनके सो (निबिडमस्तक ३३) ४० गुच्छे के आकार हो मस्तक का अग्र भाग जिनका (सो स्तवकाकारकुम्भाग्र ३४) रत्न हैं मस्तक में जिनके सो (रत्नमौलि ३५) नहीहै आकड़ा अर्थात् त्रासक जिनके

सो (निरकुश ३६) सर्पांकेही हैं हार, अरुकटि बन्धन वस्त्र जिनके सो (सर्पहारकटी सूत्र ३७) सर्प हैं यज्ञोपवीति जिनके सो (सर्प यज्ञोपवीतवान् ३८) ४१ सर्पों के है मुकुट अरु कडे जिनके सोसर्प (कोटीटकटक ३६) सर्पही है गल भूषण, अरु बाजूबंध जिनके सो (सर्प ग्रैवेयकांगद ४०) सर्पोकी ही हैं काछ अरु उदर बंध अर्थात् पेटी जिनके सो (सर्प कक्ष्योदराबध ४१) सर्प राजाहैं दुपट्टा वस्त्र जिनके सो (सर्प राजोत्तरीयक ४२) जो रगे अर्थात् लाल हो सो (रक्त ४३) रक्त है वस्त्र जिनके तिन्हे जो धारण करै सो (रक्ताम्बर धर ४४) रक्त पुष्पमाला है आभूषण जिनका सो (रक्त माल्य विभूषण ४५) रक्त है देखना जिन का सो (रक्तेक्षण ४६) रक्त है शुड जिनकासो (रक्तकरो ४७)रक्तहैं तालुवे, अरु होठ पत्र जिनके सो (रक्तताल्वोष्ट पल्लव ४८) ४३ जो श्वेतवर्ण हो सो (श्वेत ४६)श्वेत वस्त्रो को जो धारैं सो (श्वेताम्बरधर ५०) श्वेतमाला है आभूषण जिनके सो (श्वेतमाल्य विभूषण ५१) श्वेतछत्र से जो सुन्दर अर्थात् शोभित सो (श्वेतात पत्र रुचिर ५२) श्वेत चँवर से जो फट कार दिये गये सो (श्वेत चामर वीजित ५३) ४४ सारे शरीरो से जो सम्पूर्ण सो (सर्वा वयव सम्पूर्ण ५४) सारे लक्षणो से जो लखे गये सो (सर्व लक्षण लक्षित ५५) सारे आभूषणो की शोभा से जो सयुक्त सो (सर्वाभरण शोभाढ्य ५६) सर्व शोभासे जो समन्वित सो (सर्वशोभा समन्वित ५७) ४५ सब मगलो के भी जो मगल रूप सो (सर्वमगल मागल्य ५८) सब के कर्त्ता के भी जो कारण सो (सर्व कारण कारण ५६) मदा है अद्वितीय अर्थात् सुन्दर शुड जिनके सो (सर्व देत्यकर ६०) शृ गके विकार वाले धनुष आदिसे संयुक्त होसो (शार्ङ्गी ६१) बिजोरे युक्तहो सो (बीजपूरा ६२) गदाको जो धरे सो (गदाधर ६३) ४६ ईषके धनुष को जो धरे सो (इक्षुचापधर ६४) शूल जिनके पासहो सो (शूली ६५) चक्र है हाथ में जिनके सो (चक्रपाणि ६६) कमल को धारण करैं सो (सरोजभृत ६७) ४७ फांसा लिये हो सो (पाशी ६८) जो

दायिनी सहित है पीठासन जिनका सो (सकाम दायिनी पीठ ५) स्फुररही अर्थात् कांतिमती जो उग्रा तिसके आसन के जो आश्रय सो (स्फुर दुग्रासनाश्रय ६) तेजोवती के जो शिरोमणि सो (तेजो वती शिरोरत्न ७) सत्या से जो नित्य ही मुकुट किये सो (सत्या नित्यावतसित ८) ३६ विघ्न नाशिनी से सहित है पीठासनजिनका सो (सविघ्न नाशिनी पीठ ६) सर्व शक्ति मय कमल के जो आश्रय सो (सर्वशक्त्यम्बुजाश्रय १०) लिपि कमलासन के जो आधार नाम सहारे सो (लिपि पद्मासनाधार ११) अग्नि के तीनों धामोका जो आश्रय सो (वह्निधाम त्रयाश्रय १२) ३७ ऊपर को हो रहा है स्वेच्छा से पैरका अग्रभाग अर्थात् मुर्चा जिनका सो (उन्नत प्रपद १३) ढके भये अर्थात् मासल है घुटने जिनके सो (गूढगुल्फ १४) संवरण भई अर्थात् मास से ढकी भई हैं एडी जिनकी सो (संवृत पार्ष्णिक १५) पुष्ट हे जाघ जिनकी सो (पुष्ट जघ १६) मिले भये अर्थात् दृढ हे जानु जिनके सो (श्लिष्टजानु १७) मोटे हे नितब जिनके सो (स्थूलोरु १८) प्रकर्ष से ऊपरको होरही अर्थात् ऊंची है कटि जिनकी सो (प्रोन्नमत्कटि १६) ३८ गम्भीर है नाभि जिनकी सो (निम्ननाभि २०) भारी है कोप जिनकीसो (स्थूल कुक्षि २१) पुष्टहे हृदा जिनका सो (पीनवक्षा २२) भारी हैं भुजा जिनके सो (वृहद्भुज २३) पुष्ट हैं कधे जिनके सो (पीनस्कन्ध २४) शखकेसा है कठ जिनके सो (कबुकठ २५) चौडे हे ओठ जिनके सो (लबोष्ठ २६) लम्बी है नासिका जिनके सो (लबनासिक २७) ३६ टूटा है बावा दंत जिनका सो (भग्नवामरद २८) ऊचा है खब्बादात जिनकासो (तुंगशव्यदंत २६) बडो है ठोढ़ी जिनके सो (महाहनु ३०) छोटे हे नेत्र तीन जिनके सो (ह्रस्वनेत्रत्रय ३१) शूपके से हैं कान जिनके सो (शूर्पकर्ण ३२) चौडा तथा गहरा हे मस्तक जिनके सो (निबिडमस्तक ३३) ४० गुच्छे के आकार है मस्तक का अग्र भाग जिनका (सो स्तवकाकारकुम्भाग्र ३४) रत्न हैं मस्तक में जिनके सो (रत्नमौलि ३५) नहीं है आंकड़ा अर्थात् त्रासक जिनके

सो (निरकुश ३६) सर्पोंकेही है हार, अरुकटि वन्धन वस्त्र जिनके सो (सर्पहारकटी सूत्र ३७) सर्प हे यज्ञोपवीति जिनके सो (सर्प यज्ञोपवीतवान् ३८) ४१ सर्पों के हैं मुकुट अरु कड़े जिनके सोसर्प (कोटीटकटक ३६) सर्पही है गल भूषण, अरु वाजूबध जिनके सो (सर्प ग्रैवेयकागद ४०) सर्पोंकी ही हैं काछ अरु उदर वंध अर्थात् पेटी जिनके सो (सर्प कक्ष्योदरावध ४१) सर्प राजाहैं दुपट्टा वस्त्र जिनके सो (सर्प राजोत्तरीयक ४२) जो रंगे अर्थात् लाल हो सो (रक्त ४३) रक्त है वस्त्र जिनके तिन्हे जो धारण करे सो (रक्ताम्बर धर ४४) रक्त पुष्पमाला है आभूषण जिनका सो (रक्त माल्य वि-भूषण ४५) रक्त है देखना जिन का सो (रक्तेक्षण ४६) रक्त हैं शुड जिनकासो (रक्तकरो ४७)रक्तहैं तालुवे, अरु होठ पत्र जिनके सो (रक्तताल्वोष्ठ पल्लव ४८) ४३ जो श्वेतवर्ण हो सो (श्वेत ४६) श्वेत वस्त्रों को जो धारें सो (श्वेताम्वरधर ५०) श्वेतमाला है आभूषण जिनके सो (श्वेतमाल्य विभूषण ५१) श्वेतछत्र से जो सुन्दर अर्थात् शोभित सो (श्वेतात पत्र रुचिर ५२) श्वेत चँवर से जो फट कार दिये गये सो (श्वेत चामर वीजित ५३) ४४ सारे शरीरो से जो सम्पूर्ण सो (सर्वा वयव सम्पूर्ण ५४) सारे लक्षणो से जो लखे गये सो (सर्व लक्षण लक्षित ५५) सारे आभूषणो की शोभा से जो संयुक्त सो (सर्वाभरण शोभाढ्य ५६) सर्व शोभासे जो सम-न्वित सो (सर्वशोभा समन्वित ५७) ४५ सब मंगलो के भी जो मगल रूप सो (सर्वमगळ मागल्य ५८) सब के कर्त्ता के भी जो कारण सो (सर्व कारण कारण ५६) मदा हैं अद्वितीय अर्थात् सुन्दर शुंड़ जिनके सो (सर्व दैत्यकर ६०) शृ गके विकार वाले ध-नुष आदिसें संयुक्त होसो (शार्ङ्गी ६१) विजोरे युक्तहो सो (वीजपूरा ६२) गदाको जो धरे सो (गदाधर ६३) ४६ ईखके धनुष को जो धरे सो (इक्षुचापधर ६४) शूल जिनके पासहो सो (शूली ६५) चक्र है हाथ में जिनके सो (चक्रपाणि ६६) कमल को धारण करें सो (सरोजभृत ६७) ४७ फांसा लिये हो सो (पाशी ६८) जो

धारण कियागयाहै उत्पल कमल जिन्होंसे सो (धृतोत्पल६९)चातुर्य्ययुत हों सो (शाली७०) मजरियोंको लियेहो सो (मंजरीभृत७१) निजदांत को जो धारैं सो (स्वदंतभृत ७२) कल्प समयकी वल्लियों को जो धरैं सो (कल्प वल्लिधर७३) संसारको निर्भयतादाताहैकेवल शुंडजिनका सो (विश्वाभयदैककरो ७४) जो बशवालेअर्थात् स्वतंत्र हो सो (बशी ७५) अक्षनाम रुद्राक्षों की मालाको जो धारण करैं सो (अक्षमालाधर७६) जोज्ञानमुद्रावालेहो सो (ज्ञानमुद्रावान्७७) मुशलहै शस्त्र जिनका सो (मुद्गरायुध७८) ४९ पूर्ण पात्रवाले सो (पूर्णपात्री७९) शखको धरैं सो (कम्बुधर८०) विशेषसे धारणकिया भ्रमरोंका समूह जिन्होंने सो (विधृतालि समूहक ८१) माहलुंग नामसे बिजोरा भेदको जो धरैं सो (मातुलिंगधर ८२) जो आमकी कलियोंको धारणकरेहो सो (चूतकलिकाभृत् ८३) जो कुल्हाडेशस्त्र वाले हो सो (कुठारवान् ८४) ५० शूंडमें स्थितजो सुवर्णको घड़ा तिससे पूर्णरत्नोंको वर्षानेवाले सो (पुष्करस्थ स्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षक८५) भारतीअरुसुन्दरीकेजोपतिसो(भारतीसुंदरीनाथ८६) जो विनायक अरु रतिके प्यारे सो (विनायकरतिप्रिय८७) ५१ महालक्ष्मीके जो अत्यन्त प्यारे सो (महालक्ष्मीप्रियतम८८) सिद्धिलक्ष्मी के मनको रमण करानेवाले वा तिस करके श्रेष्ठ सो (सिद्धिलक्ष्मी मनोरम ८९) रमा अरु रमेशअर्थात् लक्ष्मी नारायणहै पूर्वअर्थात् दक्षिण शरीर जिनका सो (रमा रमेश पूर्वाग ९०) दक्षिणा अरु उमाके जो महान् ईश्वर सो (दक्षिणोमा महेश्वर ९१) ५२ पृथ्वी वराह अवतारहै बांवा शरीर जिनका सो (मही वराह वामांग९२) रति अरु कामदेव है पश्चिम अर्थात् पृष्ठ अंग जिनका सो (रति कन्दर्प पश्चिम ९३) जो सब ओरसे हर्ष हो जिस ऐसे हर्षको जो उत्पन्न करै सो (आमोद मोदजनन९४) प्रमोदसे सहित जो अत्यंत हर्ष करै सो (सप्रमोद प्रमोदन ९५) ५३ सम्यक प्रकार से बर्धाई समृद्धि लक्ष्मी जिनकरके सो (समेधित समृद्धश्री ९६) ऋद्धिसिद्धि के जो प्रकर्ष से वर्त्तानेवाले सो (ऋद्धिसिद्धि प्रवर्त्तक ९७) दिया है

सुमुखपने से सबको सुमुख जिन्होने सो (दत्तसौमुख्यसुमुख ६६) कांति करके कदलित अर्थात् सुशोभित छत्राकसा होरहा है स्थान जिनको सो(कांतिकंदलिताश्रय६६)५५ मदनवती से आश्रयकिया है चरण जिनका सो (मदनावत्याश्रितांघ्रि) किया है दुर्मुखप ने काभी दुष्ट मुखजिन्होने सो (कृतदौर्मुखदुर्मुख १०० इसप्रकार से शुक्लोपनामकपंडितवर देवीसहाय विरचित गणेशपुराणस्थ श्री-महागणपतिसहस्रनाम वाख्यानमें तृतीय शतक भयाहै ३०० ॥

विघ्नोंके जो श्रेष्ठपत्र अर्थात् अंकुरोको जोकाटै (सो विघ्नसम्पल्ल) वोपघ्न १)सेवासे जो उत्कटमदका चुवावै (सो सेवोन्निद्रमदद्रव२) विघ्नकारियो के हता है चरण जिनके सो (विघ्नकृन्निघ्नचरण ३) द्राविणी शक्तिसे जो सत्कार कियेहो सो(द्राविणी शक्तिसत्कृत४) तीव्रा शक्ति से प्रसन्न है नयन जिनके सो(तीव्राप्रसन्ननयन ५) ज्वालिनी से पालीहै एकदृष्टि अर्थात् नेत्र जिनका सो (ज्वालिनी पालितैकदृक् ६(५६ मोहिनी को जो मोहै सो(मोहिनी मोहन७) भोगदायिनी की कांति करके जो मंडे अर्थात् शोभित सो (भोगदायिनी कांतिमंडित ८)कामिनी करके कमनीय अर्थात् सुन्दर है मुखकी शोभा जिनकी सो(कामिनी कान्त वक्त्रश्री ६)अधिष्ठान की है पृथ्वी जिन करके सो(अधिष्ठित वसुन्धर १०) ५७ द्रव्यधरनेवाली भूमिके मदसे उठे जो महाशंख सख्याकिये निधितिनके जो स्वामी सो (वसुन्धरामदोन्नद्ध महाशंख निधि प्रभुः ११) नम्र भई वसुधालीकेमौलिमणि जो महापद्म गिने कोश तिनके जो प्रभु सो (नमद्वसुमती मौलि महापद्म निधि प्रभु १२) ५८ सब श्रेष्ठ गुरुओं से जो सेवनीय सो (सर्वसद्गुरुसंसेव्य १३)जो अग्निरूप हृदय के आश्रय सो(शोचिष्केश हृदाश्रय १४)ईशवजी हैं मस्तक जिनके सो(ईशानमूर्द्धा१५)देवोंका इन्द्रहै शिखा जिनकी सो(देवेन्द्रशिख १५)पवन को जो पुत्र सो(पवन नन्दन१६)५६ लम्बे तथा नवीनहैं नेत्र जिनके सो(अग्र प्रत्यग्र नयन १७)दिव्य अस्त्रोंके जो प्रयोगको जाने सो(दिव्यास्त्राणांप्रयोगविद् १८)ऐरावत से आदि

ले सब दिग्गजों के सब ओर से वरण अर्थात् यूथके जो प्यारे सो (ऐरावतादिसर्वाशावारण वरणप्रिय १९)६० वज्रादिक अस्त्रोंका है परिवार जिनके सो(वज्रायस्त्र परीवार२०)प्रचंड जो गण तिनके जो सम्यकप्रकार आश्रय सो(गणचण्डसमाश्रय २१ जयसे जयहै कुटुम्ब जिसका(सो जयाजय परीवार २२)विजया से जो विजय प्राप्तकरै सो(विजया विजया वह२३)६१ अजिताकरके जीतेअर्थात् अत्यत सेवितहैं चरणकमल जिनके सो(अजिताजित पादाब्जो२४) नित्यासेनित्यही जो मुकुटकिये सो नित्या(नित्यावतसित २५) विलासिनीसे कियाहै उत्कटविलास जिन्होने सो(विलासिनी कृतोल्लास २६)शौण्डीकी सुंदरतासे सजे सो(शौंडी सौन्दर्य्य मण्डित२७)६२ अनन्ताको जो अनंत सुखदे सो(अनन्त नन्त सुखद २८)सुमंगल के भी जो सुंदर मंगलरूप सो(सुमंगलसुमंगल २९)इच्छाशक्तिसे अरु ज्ञानशक्ति से अरु क्रिया शक्ति से सेवा किये गये सो (इच्छा शक्ति ज्ञान शक्ति क्रिया शक्ति निषेवित ३०)६३ सुभगा करके सेवित है पाद जिनका सो(सुभगा संश्रित पद ३१) ललिता करके ललितनाम सुन्दरहै स्थान जिनका सो(ललिताललिताश्रय ३२) कामिनी से जो कामवाले सो(कामिनी कामन३३)काममालिनी की केलसे जो लडाये सो(काम मालिनीकेलिलालित ३४) ६४ सरस्वती के जो आश्रय सो (सरस्वत्याश्रय ३५) गौरी के जो पुत्र सो (गौरीनन्दन ३६)लक्ष्मी के जो स्थान सो (श्रीनिकेतन ३७) गुरु शक्तिसे संरक्षितहै पाद जिनका सो(गुरुगुप्तपद३८) वाचासे सिद्ध किये गये सो(वाचासिद्ध ३९) वागीश्वरी के जो पतिसो (वागीश्वरी पति ४०)६५ नलिनीसे जो कामदेव वाले सो नलिनीकामुक४१) वामाको रमण करानेवाले सो(वामाराम४२) ज्येष्ठाकरके जो मनो हर सो(ज्येष्ठा म[illegible] ३[illegible] [illegible]के मुद्रित किये हैं पाद कमल जिनके सो(रौद्री[illegible] [illegible]है वीज जिनका सो (हुंवीज ४५)तुंग [illegible] शक्तिक ४६),६६ वि[illegible] [illegible] जगन्नाथ

४७)स्वाहा है शक्ति जिनकी सो(स्वाहाशक्ति४८)मोहोहैस्वाहा कीलक जिनके सो (साकीलक४६)अमृतके सागरमें किया है निवास जिन्होने सो (अमृताब्धि कृतावास५०)मदसे घुमायेहैं नेत्र जिन्होने सो (मदघूर्णित लोचन५१) ६१ उच्छिष्ट रुद्रहै गण जिनके सो (उच्छिष्टगण५२) उच्छिष्ट गणोके ईशसे उच्छिष्टगणेश५३ गणोंके जो नायक सो (गणनायक५४)सवकालके जोसिद्धिरूप सो(सार्वकालिकस्सिद्धि५५) सदैवही जो शिवजीके स्वरूप सो(नित्यशैव५६) दिशा हैं वस्त्र जिनके सो (दिगम्बर५७) ६८नहीं है नाशजिनका सो (अनपाय५८)अनतहै ज्ञान जिनका सो (अनन्तदृष्टि५६)जो याचने में आवें सो (अप्रमेय६०) जो अजर अरु अमर सो(अजर अमर६१) जो नहीं मैले सो (अनाविल६२) जो रथकेप्रतिहो सो (प्रतिरथ अर्थात् अति योद्धानहींहैं प्रतिरथ जिनके सो (अप्रतिरथ६३) नहीं जो च्यवे सो(अच्युत६४)जो अमृत स्वरूपसो (अमृत६५)जोनाशरहित सो(अक्षर६५)६६ जो प्रकर्षसे नहीं तर्कना कियेजावें सो (अप्रतर्क्य ६६)जोनक्षयहो सो(अक्षय६७)जो नहीं जीतेजावेसो(अजय६८)नहीं हैं आधारजिनके सो(अनाधार६६)जोरोगरहितहोसो(अनामय७०) जो मैलरहित सो (निर्मल७०)जोसफल सिद्धिक्षयवाले सो (अमोघसिद्धि७१) जो द्वन्दभावसे रहितहो सो(अद्वैत७२)जो घोररहितहो सो(अघोर ७३)अप्रमाणकिया अर्थात् अत्यंतवडाहैविश्वरूप मुखजिनका सो (अप्रमितानन७४)७० नहींहै आकारजिनका सो(अनाकार ७५)जोसमुद्रभूमि अग्निके वलकोहनेसे (अब्धिभूम्यग्निवलघ्नो७६) अप्रकटहैचिन्हजिनका सो (अव्यक्तलक्षण ७७)जोपीठासनकेआश्रय आधारसो (आधारपीठ ७८) जिनमें सव ओरसे घराजाय अर्थात् जो आश्रयरूपहो सो (आधार७६) जो आधार अरु आधेयनेरहित हो सो (आधाराधेय वर्जित ८०)मूपकपर है स्थित होना अर्थात् वैठना जिनका सो(आखुकेतन८१)आशाको जो पूर्णकरें सो (आशापूरक ८२)आखुहीहै महारथ जिनके सो(आखुमहारथ८३)ईख के समुद्रमे जो स्थित सो (इक्षुसागरमध्यस्थ ८४)ईखके भोजनमेंइच्छा

जिनकी सो (इक्षुभक्षणलालस ८५) ७२ ईषकेधनुषधारेसे न्यारी अर्थात् अद्वितीयवहीहै शोभाजिनकी सो (इक्षुचापातिरेकश्री ८६) ईपके धनुषसे जो निरतर सेये सो (इक्षुचापनिषेवित ८७) ७३ इंद्रकी रक्षाकरें सो इन्द्रगोपनाम तोज तैसीहै शोभाजिनकी अर्थात् अत्यतरक्त सो (इन्द्रगोपसमान श्री ८८) इंद्रनीलमणि की सी है कांति जिनकी सो (इन्द्रनीलसमद्युति ८९) नीलकमल के दल के से श्यामल सो (इंदीवरदलश्याम ९०) चंद्रमा के मण्डल के समान जोस्वच्छ सो (इंदुमण्डलनिर्म्मल ९१) ७४ जो इन्धनकेप्यारे अर्थात् अग्निस्वरूप सो (इध्मप्रिय ९२) इडाशक्तिके जो विभाजक सो (इडाभाग ९३) इडाके जो धामसो (इडाधाम ९४) लक्ष्मीके जो प्यारे सो (इन्दिराप्रिय ९५) इक्ष्वाकु बंशवालोके विघ्नोको जो विशेषसे नाश करनेवाले सो (इक्ष्वाकुविघ्नविध्वन्सी ९६) इसप्रकारसेकरना चाहिये सो इति कर्त्तव्य अर्थात् समस्त कार्य्य समूह तिसका जो भाव सो इति कर्त्तव्यता तिसमें जोईप्सितनामवांछाकिये सो (इति कर्तव्यतेप्सित ९७) ७५ शिवजीके जो प्रेमसेमस्तक लड़ाये जो सो (ईशानमौलि ९८) जो ईश स्वरूपहो सो (ईशान ९९) शिवजीके जो सुत सो (ईशानसुत १००) इसप्रकारसे शुक्लोपनामक पण्डितवर श्रीमद्देवी सहाय करके विरचित श्रीमहागणपतिसहस्रनाम सरल व्याख्यानमें चतुर्थ शतकभया ॥४००॥

ईति जो अतिवर्षा आदि जो छ प्रकार से प्रजाभय तिसके जो हन्ता सो (ईतिहा १) ईषणाजो निज अक्षि गोलक से जो तीनमोहै प्रलयरूप अर्थात् अति दीप्त सो (ईषणात्रयकल्पान्त २) चेष्टामात्र से जो रहित सो (ईहामात्रविवर्जित ३) ७६ जो वामनस्वरूप सो (उपेन्द्र ४) नक्षत्रधारी चन्द्रमा है मस्तक में जिनके सो (उडुभृन्मौलि ५) उन्दरक नाम मषक तिन्होकी बलि देनेके प्यारे सो (उन्दरकबलिप्रिय ६) ऊंचाहो रहा मुख जिनका सो (उन्नतानन ७) जो अत्यंत ऊंचे होरहे हो सो (उत्तुङ्ग ८) उदार जो देवता तिनके जो अग्रगामी सो (उदार त्रिदशाग्रणी ९) ७७ जो पराक्रम वाले हो

सो ऊर्जस्वान १० वफारेदार है मद जिनका सो (ऊष्मलमद ११) तर्कनाका जो नाश अर्थात् अतर्क्यपनेसे जो नहीं प्राप्तहोसो (ऊहापोहदुरासद १२) ऋक् यजु सामवेद से है सम्भव जिनका सो (ऋग्यजुः सामसम्भूति १३) ऋद्धि सिद्धिके प्रकर्षसे जो वर्त्तानेवाले सो (रिद्धि सिद्धि प्रवर्त्तक १४ ७८) सरल चित्तता करके केवल सुगमहों सो (ऋजुचित्तैकसुलभ १५) जो तीनोंऋणोंसे छुटावें सो (ऋणत्रयविमोचक १६) निजभक्तोंके लोपकियेहे विघ्नजिन्होंने सो (स्वभक्तानालुप्तविघ्न १७) सुरशत्रुओंकी लोपीहैशक्ति जिन्होंने सो (सुरद्विषांलुप्तशक्ति १८) ७९ पूजासे बिमुखोंकी लोपीहैलक्ष्मीजिन्होंने सो (विमुखार्चानालुप्तश्री १९) जो लूतामहारोग अरु विशेष फोड़े अर्थात् शीतला के चिन्ह तिन्हें जो नाशकरेंसो (लूताविस्फोटनाशन २०) एकाररूप पीठासनके बीचमें जो विराजमान सो (एकार पीठमध्यस्थ २१) एकपैरसे किया आसन जिन्होंने सो (एकपादकृतासन २२) ८० कँपाई है सारेदानवोंकी श्री जिन करके सो (राजिताखिलदैत्यश्री २३) कँपाये हैं सारेआश्रय जिनकरके सो (राजिताखिलसंश्रय२४) ऐश्वर्य के जो निधान सो (ऐश्वर्य निधि२५) जो विभूति स्वरूप हो सो (ऐश्वर्य२६) यहाके अरु वहांकेशुभाशुभफलको प्रकर्ष करके देवें सो (ऐहिकामुष्मिकप्रद२७) ८१ इरासम्बन्धी मदकेसमानहे पलकउघाड़ना जिनका सो (ऐरम्मदसमोन्मेष२८) ऐरावत के सदृश है मुखजिनका सो (ऐरावतनिभानन२९) ओंकार इस पद से जो कथनीय सो (ओंकारवाच्य ३०) जो ओंकार स्वरूपहो सो (ओंकार३१) जो पराक्रम वाले सो (ओजस्वान्३२) औषधियों के जो पति सो (ओषधीपति ३३) ८२ उदारताके जो निधि सो (औदार्यनिधि३४) उद्धता अर्थात् खोटेपनके जोधुरधरसो (औद्धत्यधुर्य्य३५) ऊंचापनसे है शब्द जिनका सो (औन्नत्यनिस्वन३६) सुरगजों के जो अंकुश सो (सुरनागानामंकुश ३७) सुर शत्रुओं के जो अंकुश सो (सुरविद्विषामंकुश ३८) ८३ सारे विसर्जनीयों के स्थानोंमें जो अ ऐसेरूपसे जो ॰ ।

सो (अःसमस्तविसर्गो णाम्पदेषुपरिकीर्तित३९) कमण्डलु को जो धरैसो (कमण्डलुधर४०) जो कल्पसमय स्वरूप सो (कल्प ४१) जो जटाजूटवाले सो (कपर्दी४२) हाथीके बच्चे कैसा है मुखजिनका सो (कलभानन४३) कर्मोके जो साक्षिरूप सो (कर्मसाक्षी ४४) कर्मोके करनेवाले सो (कर्मकर्ता४५) कर्म कुकर्म के फल को प्रक्रर्प से जेदे सो (कर्माकर्पफलप्रद४६)कदम्ब वृक्षकेगोले अर्थात् वि-डलेके आकार सो (कदम्ब गोलकाकार४७) कुष्मांडो केगणोंके जो स्वामी सो (कुष्माण्ड गणनायक ४८) ८५ करुणामय है शरीर जिनका सो (कारुण्यदेह४९) जो पिलाई लिये हो सो (क-पिल) ५० जो कथनकरै सो (कथक५१) जो कटिसूत्र को धारै सो कटिसूत्रभृत् ५२ जो बावनरूपहो सो खर्व ५३ खड्गके प्यारे सोखड्गप्रिय ५४ खड्ग के गड्ढ अर्थात् मियान के भीतर जो स्थित सो खड्ग खातान्तस्थ ५५ आकाश कैसा जो स्वच्छ सो (खनिर्मल ५६)८६ जो खुले अर्थात् केशहरहित शिरोभागवाले अरु शृंग में है निवास जिनका सो (खल्वाटशृङ्गनिलय५७) जो खट्वांगको धरै सो (खट्वांगी५८) आकाश के नाई जो अप्राप्य सो (खदुरासद ५९) गुणोसे जो युक्त सो (गुणाढ्य६०) अत्यत जो गहरे सो (ग-हन ६१)जो पर्वत में स्थित सो (अगस्थ ६२) गद्य पद्य छन्दो निबंध रूप अमृत के जो समुद्र सो(गद्य पद्य सुधार्णव ६३) ८७ कहनेयोग्य अर्थात् श्रेष्ठ गानके जो प्रिय सो (गद्यगानप्रिय६४) जो गर्जना करे सो (गर्ज६५) गाये अर्थात् विख्यात जो देवता तिनके भी पहले जो हुये सो (गीतगीर्वाण पूर्वज६६) गुप्त जो आ-चारधर्म तिसमें जोरत सो गुह्याचाररत ६७ जो गुप्तरूप सो (गुह्य ६८) गुह्य शास्त्रो से जो निरूपण कियेहो सो (गुह्यागम निरूपित ६९) ८८ गुफामें जो सोवै सो (गुहाशय७०) गुहा समुद्रमे जो स्थित हो सो (गुहाब्धिस्थ७१) गुरु मार्ग करके जो प्राप्यहो सो (गुरुगम्य ७२) गुरुओंके भी जो गुरु अर्थात् जो बड़ोकेभी बड़े सो (गुरोर्गुरु ७३) घंटा घुंघुरो की माला वाले सो घंटा घर्घटि का

सात्रदरजिनका अर्थात्तुदिल सो (घटोदर७६)८६ जो तीव्रस्वरूप हो सो (चण्ड७७) जोचंडेश्वर गणकेसखा सो (चडेश्वरसुहृत७८) जो प्रचण्ड गणो के ईश सो (चडेश७६) प्रचण्ड पराक्रमवाले सो (चण्डविक्रम८०)६० चरअरु अचरजीवोकेजोपति सो(चराचरपति ८१)जो चिन्तामणि इसनामसेप्रसिद्ध सो(चिन्तामणि८२) चावने में इच्छा जिनकी सो (चर्वणलालस ८३) जो वेदस्वरूप हों सो (छन्द८४)वेदमयशरीर जिनका सो (छन्दोवपु८५)वेदोसे जो नहीं लक्षण कियेजावें सो (छन्दोदुर्लक्ष्य८६) छन्दही हैं शरीर जिनका सो (छन्दविग्रह८७) ६१ जगत्के जो उत्पन्न करनेवाले सो (जगद्योनि८८) जगत् के जो साक्षि सो (जगत्साक्षी८६) जगत्के ईश सो (जगदीश६०) जगत् स्वरूप सो (जगन्मय६१)जो जपस्वरूप हो सो (जप६२) जो जपमें परायणहो सो (जपपर६३) जो जपने योग्यहोसो(जप्य६४)जिह्वारूप सिंहासनकेस्वामीअर्थात् जो जिह्वा स्थितहो सो (जिह्वासिंहासनप्रभु६५) ६२ झलज्झली जो हास्तिकर्ण उसकरके शोभित जो मदजलके झरने की झकारवाले भ्रमरो से जो व्याप्त सो सो है जिनके सो (झलज्झल६६) सद्दानझंकारि भ्रमराकुल६७) बहुतसी टंकारोकासा शब्दजिनका सो(टंकारस्फार सराव६८) टकारवाले मणि जडाऊपे शूरे जिनके सो (टंकारिमणि नूपुर६६)६३ठठऐसे२दोजीवोमें जो स्थित अरु सबमंत्रो की मुख्य सिद्धिको जो दें सो (ठद्वयीपल्लवान्तस्थ सर्वमन्त्रकसिद्धद६६) डिंडि समुद्रफेन सा अर्थात् श्वेत है शिर जिनके सो (डिडिमुण्ड१००) इसप्रकारसे शुक्लोपनामक पण्डितवर देवीसहायकरकेविरचित श्री महागणपतिसहस्रनाम व्याख्यानमें पचम शतकभया है ५०० ॥

जो डाकिनोके ईश सो (डाकिनीश१) डमरुवाले सो (डामर२) डोंडकीके प्यारे सो (डिडिमप्रिय३) ६४ ढोलके शब्दसे जो हर्षित सो (ढक्कानिनादमुदित४) जो कम्पायमान करें सो (ढौक) कंपने इसधातुसे सिद्धनिपात सो(ढौक५)ढुण्ढि इसनाममे सिद्धजो विनायकजी सो (ढुण्ढिविनायक६) ६५ जो तत्वो के भी परमतत्त्व सो

(तत्त्वानांपरमंतत्त्व७) जो तत्त्व पद अर्थात् सो तू है इसपद करके निरूपण किये सो (तत्त्वम्पदनिरूपित,८) जो आंखोकी पतलियो में विराजमानहो सो (तारकांतरसस्थान ९) जो तिरावे अर्थात् ब्रह्म सो (तारक१०) जो तारकासुरके मारक सो (तारकांतक११) ९६ जो स्थितहों अर्थात् अचलरहै सो (स्थाणु१२) जो स्थाणुवृक्ष के प्यारे सो(स्थाणुप्रिय१३) जो ठहरनेवालेहो सो(स्थाता१४) जो स्थावरजगम अर्थात् स्थिरचर जगत्स्वरूप हों सो (स्थावरजंगम जगत्१५) जो दक्ष प्रजापतिके यज्ञको प्रकर्षमेमथै-अर्थात् बिगारें सो (दक्षयज्ञप्रमथन१६) जो दें सो (दात१७) दैत्योंको मोहैं सो (दानवमोहन१८) ९७ दयावाले सो (दयावान्१९) दिव्यहै ऐश्वर्य जिनका सो (दिव्यविभव२०) दडधरै सो (दंडभृत्२१) दडदेने में जो प्रभु अर्थात् समर्थ सो (दण्डनायक२२) दांतसेप्रकर्षकरके भेदी है मेघमाला जिन्होने अर्थात्एकदंतमे अद्वितीयशोभावाले सो(दंत प्रभिन्नाभ्रमाल२३)दैत्योंके हस्तियोको जो विदारणकरें सो (दैत्य वारणदारण२४)९८ डाढ़सेलगाहै दोसे पीनेवाला घडाजिनके सो (दष्ट्रालग्नद्विपघट२५) देवोंकेअर्थ जो मनुष्य गजशरीरी सो (देवार्थनृगजाकृति२६)धनके जोपति सो (धनधान्यपति२७) जो पुण्यवान् सो (धन्य२८) धनको दें सो (धनद२९) धरतीको जो धरैं सो (धरणीधर३०) ९९ केवल ध्यानही से प्रकटहों सो (ध्यानैकप्रक ३१) जो ध्याने योग्य सो (ध्येय३२) जो ध्यान स्वरूप सो (ध्यान ३३) ध्यानमेंपरायण सो (ध्यानपरायण३४) १०० जो सम्बदहोने योग्यहो सो (नद्य३४) जो नन्दीगणके प्यारे सो (नदिप्रिय ३५) जो पूर्वोक्त नादस्वरूपहो सो (नाद३६) जो नादके बीचमें विराजमान सो (नादमध्येप्रतिष्ठित३७) जोचेष्टारहितहो सो (निष्फल३८) मैलरहित सो (निर्मल३९) जो सर्वदारहे सो (नित्य४०) जोसगुण निर्गुणादि भेदसे नित्य अनित्यहो सो (नित्यानित्य४१) जो रोग रहितहो सो (निरामय४२) १०१ जो परमआकाश सो (परंव्योम ४३) जोपरमधाम सो (परधाम४४) जो परमव्यापक सो (परमा

त्मा४५) जो परमपद सो (परंपद४६) परे सेभी पर सो (परात्पर ४७) इन्द्रियो के वागवादिकोंके जो पति सो (पशुपति४८) पशुओं को पाशेसेजो छुडावें सो (पशुपाशविमोचक४६) १०२ पूरे जो आनन्दस्वरूप सो(पूर्णानन्द५०)परम जोआनन्द सो (परानद५१) जो शाश्वतस्वरूप अरु पुरुषश्रेष्ठ सो (पुराणपुरुषोत्तम ५२) खिले कमलकेसे प्रसन्ननेत्र जिनके सो (पद्मप्रसन्ननयन५३) भक्तोंको अज्ञान जो छुडावें सो (प्रणताज्ञानमोचन५४) १०३ प्रमाण अरु प्रत्ययसे अतिगत अर्थात् मर्यादविश्वास से जो परे सो (प्रमाणप्रत्ययातीत५५) भक्तिमानोंकी पीडाको हरावे सो (प्रणतार्त्तिनिवारण ५६) फलहैं हाथमें जिनके सो (फलहस्त५७) नागो के पति सो (फणिपति) जो फोंकारभरें सो (फेत्कार५८) जो गुडकी चासनीके प्यारे सो (फाणितप्रिय५६)१०४ वाणासुरसेचर्चितहे चरणयुगुल जिनके सो (वाणार्चिताघ्रियुगुल५०) बालको में खेलने के कुतूहल वाले सो (बालकेलिकुतूहली६१)जो समृद्धहो सो (ब्रह्म६२) ब्रह्माजीसे चर्चित चरण जिनके सो (ब्रह्मार्चितपदो ६३) जो ब्रह्मके से आचरणकरें सो (ब्रह्मचारी६४) वडोकेजो पति सो (बृहस्पति६५) १०५ जो अत्यतबृहत् सो (बृहत्तम ६६) ब्रह्म में जो परायण सो ब्रह्मपर६७) जो ब्राह्मणोके शरण्य सो (ब्रह्मण्य६८) जो ब्रह्मवेत्ताओके प्यारे सो (ब्रह्मवित्प्रिय६६) भारी जो नाद तिससेभी वड़ीहै चिघाड जिनकीसो (बृहन्नादाग्र्यचीत्कार७०) ब्रह्माण्डोकी पंक्तिही है मेखला जिनकी सो (ब्रह्माण्डावलिमेखल७१) १०६ भृकुटिक्षोभनेसेही दीगई लक्ष्मी जिनकरके सो (भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीक७२) जिन सेभुने अर्थात् तप्तहो सो (भर्ग७३) जो कल्याणरूप सो (भद्र७४) जो भयमिटावे सो (भयापह७५) जो ऐश्वर्यवाले सो (भगवान्७६) भक्तिसे जोसुगम सो (भक्तिसुलभ७७) जोविभूतिदें सो (भूतिद७८) विभूतिही है आभूषण जिनका सो (भूतिभूषण७६) १०७ जो होने योग्य अर्थात् श्रेय सो (भव्य८०) जो प्राणियो के मुख्यस्थान सो (भूतालय ८१) जो भोग देनेवाले सो (भोगदाता८२) जो भृकुटियों

के मध्यमार्गसे प्राप्तहो सो (भ्रूमध्यगोचर८३) जो मुख्यकार्य साधकहो सो (मन्त्र८४) मन्त्रोके जो पति सो (मन्त्रपति८५) जो मन्त्रों वाले सो (मंत्री ८६) मदसे मत्तता करके जो मनोहर सो (मदमत्त मनोरम८७) १०८ जो मेखलावाले सो (मेखलावान्८८) मंद है गमन जिनकासो (मन्दगति८९) मतिवाले अरु कमलकेसे नेत्रवाले सो (मतिमत्कमलेक्षण९०) महा बलवाले सो (महाबल९१) महा पराक्रमी सो (महावीर्य९२) महाप्राणी सो (महाप्राण ९३) महा मनस्वी सो (महामना९४) १०९ जो यजन कियेजायँ अर्थात् पुजें सो (यज्ञ९५) यज्ञोके पति सो (यज्ञपति९६) यज्ञोकी रक्षाकरें सो (यज्ञगोप्ता९७) यज्ञोके फलको जो प्रकर्षसेदें सो (यज्ञफलप्रद९८) यशको करें सो (यशकर९९) योगमार्गरीतिसे जो प्राप्तहोनेयोग्य हो सो (योगगम्य१००) इसप्रकार से शुक्लोपनामक पण्डितवर देवीसहाय विरचित श्रीमहागणपति सहस्रनाम व्याख्यान सरल भाषामें षष्ठशतक भयाहे ६००॥

— जो यज्ञोमे प्रधानहो सो(याज्ञिक१) जो यज्ञकरानेवालोंके प्यारे सो (याजकप्रिय२) ११० जो स्वाद लियेजावें सो (रस३) रसों के प्यारे सो (रसप्रिय४) स्वादलेनेयोग्यसो (रस्य५)जो रँजावे अर्थात् अनुरागको प्राप्तकरें सो (रंजक६) रावणसे पूजेजावें सो (रावणार्चित७) जो रक्षाकरें सो (रक्ष८) तथा (रक्षाकर९) रत्नहै भीतर जिनके सो (रत्नगर्भ१०)जो राज्यसुखको दें सो (राज्यसुखप्रद११) १११ जो लक्षण करने योग्य सो (लक्ष्य१२) जो लक्षसंख्याकेफल को देवें सो (लक्षप्रद१३) जो लखने योग्य सो(लक्ष्य१४) जो निद्रा में भी स्वस्थरहें सो (लयस्थ१५) जो लड्डूके प्यारे सो (लड्डुकप्रिय १६) जो गजबधन रज्जुकेप्यारे सो (लानप्रिय १७) जो नृत्य में परायण सो (लास्यपर१८) जो लाभकारी सो (लाभकृत१९) जो लोकमें विख्यात सो (लोकविश्रुत२०) ११२ जो वरके योग्य हो सो (वरेण्य२१) जो अग्निमुखहो सो (वह्निवदनो२२) जो वन्दना योग्य सो (वंद्य२३) जो वेदांत मार्ग से प्राप्य सो (वेदांतगोचर

२४) जो विशेषकर्त्ता सो (विकर्त्ता२५) संसार है चक्षु जिनका सो (विश्वतश्चक्षु२६) जो विशेषसे धारण करनेवाले हो सो (विधाता २७) विश्व है मुखजिनका सो (विश्वतोमुख२८) ११३ जो श्रेष्ठदेव सो (वामदेव २६) विश्वके जो नायक सो (विश्वनेता ३०) वज्र वाले अर्थात् इन्द्र के वज्र को जो निवारै सो (वज्रिवज्रनिवारण ३१) संसार के बांधने के आगल रूप आश्रय अर्थात् दृढ़ाधार सो (विश्वबंधनविष्कम्भाधार ३२) विश्व के ईश्वर सो (विश्वेश्वर ३३) जो प्रकर्ष से हो अर्थात् समर्थ सो (प्रभु ३४) ११४ जो शब्द ब्रह्मपरमात्मा अरु शमनाम शान्तिसे जो प्राप्तहोने योग्य सो (शब्दब्रह्मशमप्राप्य३५) जो शिवजीकी मुख्यशक्तिसेअरुगणो के ईश्वर सो (शंभुशक्तिगणेश्वर३६) जो शिक्षादें सो (शास्ता३७) शिखाके अग्रभाग में स्थान जिनका सो (शिखाग्रनिलय ३८) जो शरण होनेयोग्यहो सो (शरण्य ३६) जो पर्वतोके ईश्वर सो (शिखरीश्वर ४०) ११५ छवो ऋतुओंके फूलोकी माला वाले सो (षड्ऋतुकुसुमस्रग्वी ४१) छवो के जो आधार अयनादि स्वरूप सो (षड़ाधार ४२) छ: है अक्षर जिनकेमन्त्रमें सो (षडक्षर ४३) संसाररोग के जो चिकित्सा करनेवाले सो (संसारवैद्य ४४) सर्व कोजानैं सो (सर्वज्ञ ४५) सम्पूर्ण अर्थात् सबजगत्की औषध के भी जो औषध सो (विश्वभेषज भेषजम् ४६) ११६ सृष्टि रचना पालन प्रलयसोहीहैं क्रीडाजिनकी सो (सृष्टिस्थितिलयक्रीड ४७) सुरगजोंको जो विदारणकरें सो (सुरकुंजरभेदन ४८) सिन्दूरलिप्त हैं भारीमस्तक जिनका सो (सिन्दूरितमहाकुम्भ ४६) सत्असत् की प्रकटताके जो देनेवाले सो (सदसद्व्यक्तिदायक ५०) ११७ जो साखीहों सो (साक्षी ५१) जो समुद्रको मथे सो (समुद्रमथन ५२) अपने अर्थात् भक्तादिकों करके जो जानने योग्य हों सो (स्वसंवेद्य ५३) आपहीहैं यज्ञादिकोंमें दक्षिणारूप सो (स्वदक्षिण ५४) जो अपनेहीवश हों सो (स्वतन्त्र ५५) सत्यहैप्रतिज्ञाजिनकी सो (सत्यसंकल्प ५६) सामवेदके गानमें जो रत सो (सामगान

रत ५७) सुखवाले सो (सुखी ५८) ११८ जो हंस तथा सोहं स्वरूप सो (हंस ५६) हस्ति पिशाचिनी के जो ईश सो (हस्तिपिशाचीश ६०) जो होमेजावें सो (हवन ६१) जो हव्यकव्य अर्थात् पितृदेवके हुतान्नको भोजनकरे सो (हव्यकव्यभुक् ६२)जो हवन करनेयोग्य सो (हव्य६३) जो होमेहुयेके प्यारे सो (हुतप्रिय६४) आनन्द स्वरूपहो सो (हर्ष ६५) हृदाकोपकिरूप मन्त्रात्माहोकर जो बीचमेंविराजमान सो (हृल्लेखामन्त्रमध्यग ६६) ११६ क्षेत्रनाम शरीरके जो अधिपति सो (क्षेत्राधिप ६७) क्षमा के जो भर्त्ता सो (क्षमाभर्त्ता ६८) क्षमामें परम जो परायण सो (क्षमापरपरायण ६६) शीघ्रही जो कुशलकरें सो (क्षिप्रक्षेमकर ७०) जो क्षेम अरुआनन्द स्वरूप सो (क्षेमानन्द७१) पृथ्वीकेजो कल्पवृक्ष सो (क्षोणीसुरद्रुम ७२) १२० धर्मके जो प्रदाता सो (धर्मप्रद७३) प्रयोजन वा द्रव्यादिकको दे सो (अर्थद ७४) कामदें सो (कामदाता ७५) सुभागपने को वढावें सो (सौभाग्यवर्द्धन ७६) विद्या केप्रदाता सो (विद्याप्रद ७७) बिभवदें सो (बिभवद ७७) भुक्ति मुक्तिके जो प्रदाता सो (भुक्तिमुक्तिप्रदायक७८) १२१ अभिरूपता अर्थात् सुन्दरपनेको करें सो (आभिरूप्यकर८०) बीरोंकोश्री दें सो (बीरश्रीप्रद ८१) विजयप्रदाता सो (विजयप्रद ८२) सबको वशमेंकरें सो (सर्ववश्यकर ८३) जो गर्भदोषोकोहनें सो (गर्भदोषहा ८४) बेटे पोतेदे सो (पुत्रपौत्रद ८५) १२२ जोबुद्धिदें सो (मेधाद ८६) कीर्त्तिदें सो (कीर्त्तिद ८७) शोकहरनेवाले सो (शोकहारी ८८) दुर्भागपनको जोदूरकरें सो (दौर्भाग्यनाशन८६) लक्ष्मी के शोकहरनेवाले सो (श्रीशोकहारी६०) दुर्भाग नाशकरें सो (दौर्भाग्यनाशन ६१) सबशक्तियोको जो धारणकरें सो (सर्वशक्तिभृत् ६२) १२३ प्रत्युत्तर देनेवालेके मुखको रोकनेवाले सो (प्रतिवादिमुखस्तम्भ६३)रूखेकेचित्तको जो प्रसन्नकरे सो(रुष्टचित्तप्रसादन ६४) परायेहिंसा कर्मादिकको जोशान्तकरें सो (पराभिचारशमन ६५) दुखभजन के जो करनेवाले सो (दुःखभंजनकार-

क ६६) १२४ जोलवैं अर्थात् समयरूपहो व्यतीतहों अर्थात् अश रूप सो (लव ६७) जो टूटे अर्थात् चुटकी रूप सो (त्रुटि ६८) अठारह बरमीचे की एककाष्ठा ऐसी बत्तीस काष्ठाओंकी एक कला तिसरूप जो होवे सो (कला ६६) कहे अठारह निमेषों के समय स्वरूपहो सो (काष्ठा१००) इसप्रकार सेती शुक्लोपनामक पण्डित वर देवीसहाय नारनौलीय करके विरचित श्रीमहागणपतिसहस्र-नाम व्याख्यानमें सप्तम शतकभयाहै ७०० ॥

जिससे निरन्तरमीचेजावें सो (निमेष१)तिससेभी कुछपरेसमय हो सो (तत्पर २) जो क्षणों सो (छिन्नरूपसो क्षण ३) जो घडी समय स्वरूप सो (घटी ४) जोदोघटीसमय स्वरूपसो (मुहूर्त५) जो पहरसमय स्वरूपसो(प्रहर६)जोदिनसमय स्वरूपसो(दिवा७) जो रात्रिसमयस्वरूप सो (नक्त८)जो दिनरात्रिसमय स्वरूपसो(अ-हर्निशम् ६) जो मेषादि लग्नसमय स्वरूपसो(लग्न१०) १२५ जोपखवाडे स्वरूप सो (पक्ष११) जो महीने स्वरूपसो (मास१२) जो दक्षिणोत्तरायण स्वरूप सो (अयन१३) जो वत्सर स्वरूप सो (वर्ष१४) जो युगस्वरूपसो(युग१५) जोकल्पस्वरूप सो(कल्प१६) जो महाप्रलयस्वरूप सो (महालय१७) जोमेषादिस्वरूप सो(राशि १८)जो तारास्वरूप सो (तारा१६) जोतिथिस्वरूप सो(तिथि२०)जो योगस्वरूप सो(योग२१)जोवारस्वरूपसो (वार२२) जो करणस्व-रूप सो (करण२३) जो अंश स्वरूप सो (अंशक२४) १२६ जो ढाईघरीसमयस्वरूप सो (होरा२६) जो कालके समूह समयस्वरूप सो (कालचक्र२७) जो सुमेरु स्वरूप सो (मेरु२८) जो सातऋषि स्वरूप सो (सप्तर्षय२६) जो ध्रुवजीके स्वरूप सो (ध्रुव३०) जो राहुस्वरूप सो (राहु३१) जो शनैश्चर स्वरूप सो (मन्द३२) जो शुक्र स्वरूप सो (कवि३३) जो गुरुस्वरूप सो (जीव३४) जो बुध स्वरूप सो (बुध३५) जो मंगलस्वरूप सो (भौम३६) जो चन्द्रमा स्वरूप सो (शशी३७) जो सूर्य स्वरूपसो (रवि३८) चेष्टा कीजावे जिससे सो (काल३६) जो रचना स्वरूप सो (सृष्टि४०)जो पाल-

ना स्वरूप सो (स्थिति४१)जो कुछ स्थिर चरसंसार तिसके स्वरूप सो (विश्वस्थावरजंगम चयत् ४२) जो भूमि स्वरूप सो (भू४३) जो जलस्वरूप सो (आप४४) जो वहनि स्वरूप सो (अग्नि४५) जो पवनस्वरूप सो (मरुत४६) जो आकाशस्वरूप सो (व्योम४७) जो अहंकार स्वरूप सो (अहङ्कृति ४८) जो माया स्वरूप सो (प्रकृति४६) जो पुरुषस्वरूप सो (पुमान्५०) १२८ जो प्रजापति स्वरूप सो (ब्रह्म५१) जो प्रवेश अर्थात् व्यापकस्वरूप सो विष्णु ५२) जो कल्याण स्वरूप सो (शिव५३) जो भयानक स्वरूप सो (रुद्र५४) जो ईश्वर स्वरूप सो (ईश५५) जो सामर्थ्य स्वरूप सो (शक्ति५५) जो सदा शकर स्वरूप सो (सदाशिव५७) जो देवता स्वरूप हो सो (त्रिदश५८) जो पितृस्वरूप सो (पितर५६) जोदेव योनि स्वरूप सो (सिद्ध६०) जो यक्ष स्वरूप सो (यक्ष६१) जो राक्षस स्वरूप सो निशाचर६२) जो किम्पुरुपस्वरूप सो (किन्नर ६३) १२६ जो गणदेव स्वरूप सो (साध्य६४) जो विद्याधरादि गधर्व स्वरूप सो (विद्याधर६५) जो भूत पिशाचादि स्वरूप सो (भूत६६) जो मनुजस्वरूप सो (मनुष्य६७) जो डंगर स्वरूप सो (पशव६८) जो गर्दभस्वरूप सो (खग६६) जो सागरस्वरूप सो (समुद्र७०) जो नदिस्वरूप सो (सरित७१) जो पर्व्वत स्वरूप सो (शैल७२) जो हुये समयके स्वरूप सो (भूत७३) जो होनेयोग्य सो (भव्य७४) जो ससारके उत्पादकसो (भवोद्भव७५) १३० जो साख्य शास्त्र स्वरूप सो (साख्य७६) जो पतञ्जलि के योग शास्त्र स्वरूप सो (पातजलयोग७७) जो पुराणस्वरूप सो (पुराण७८) जो वेद स्वरूप सो (श्रुति७६) जो वेदकेअनुकूल धर्मशास्त्रस्वरूप सो (स्मृति८०) जो वेदके अग स्वरूप सो (वेदाग८१) जो श्रेष्ठाचारस्वरूप सो (सदाचार८२) जो कर्मकांडशास्त्र स्वरूपसो (मीमासा८३) न्यायशास्त्र के विस्तार वाले सो (न्यायविस्तर८४) १३१ जो वैद्य विद्यास्वरूप सो(आयुर्वेद८५) धनुषशास्त्र स्वरूपसो (धनुर्वेद८६) जो गंधर्ववेद स्वरूप सो (गाधर्व८७) जो कविता अरु नटशास्त्र

स्वरूप सो(काव्यनाटक८७)जो ब्रह्मशास्त्रस्वरूप सो (वैखानस८८) जो भगवत्के शास्त्रस्वरूप सो (भागवत ८६) सात्वतमत स्वरूपसो (सात्वत६०) जो पंचरात्रमत स्वरूप सो (पचरात्रक६१) १३२ जो शिवजीके मतस्वरूप सो(शैव६२) जो पशुपतिमतस्वरूप सो (पाशुपत६३) कालमुख मतस्वरूप सो (कालमुख ६४) जो भैरव शिक्षा स्वरूप सो (भैरवशासन६५) जो शक्तिमत स्वरूप सो (शाक्त ६६) जो विनायकजीके मतस्वरूप सो (वैनायक६७) जो सूर्यमतस्वरूप सो (सौर६८) जो जैनिमत स्वरूप सो (जैन६६) जो आर्हतमतसंहिताकेस्वरूप सो (आर्हतसहिता१००)इसप्रकार से शुक्लोपनामक पण्डितवरदेवीसहायविरचित गणेशसहस्रनाम व्याख्यानमे अष्टम शतक भया ॥ ८०० ॥

जो सत्तास्वरूप सो (सत्१) नहींहो किसीसे अर्थात् स्वयंरूप सो (असत्२) जो प्रकटस्वरूप सो (व्यक्त३) अप्रकटस्वरूप सो(अप्रकट ४) जो अत्यन्तही सूक्ष्मस्वरूप सो (अणु५) जो बड़े सो (महान६) जो चेतना नाम बुद्धि सहितहो सो (सचेतन७) जो निर्गुणपनसे चेतनामन आदि गुणोसे शून्यहो सो (अचेतन८) जिससे बंध जावे सो (बंध६) जिससे छूटजावे सो(मोक्ष१०) जो आनन्दस्वरूप सो (सुख११) जोभोगेजावे सो (भोग१२)जो सच्चेस्वरूप सो (सत्य १३) जो नहीं जोड़ेजावें सो (अयोग१४) जो स्वस्ति,हुं,फट्,स्वधा स्वाहा श्रौषट्, वौषट्, वषट् नमस्कार स्वरूप हो सो (स्वस्तिहुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट्वौषट्वषण्नम १५) जिससे जानाजावे सो (ज्ञान१६) जो विशेषज्ञान स्वरूप सो (विज्ञान१७) जो परम सुख स्वरूप सो (आनन्द१८) जिनसे बुद्धि प्राप्तहोवे सो (बोध१६) जो श्रेष्ठ जाननेवाले अर्थात् सम्यक्ज्ञानस्वरूप सो (सम्वित् २०) जो शांतिस्वरूप सो (शम२१) जो शरीर साधनाकी अपेक्षावाला नित्य कर्महो सो यम तिसकेजो स्वरूपहो सो (यम२२) १३५जो आपही हो सो (एक२३) जो एकअक्षर के आधार सो (एकाक्षराधार २४) एकअक्षरमें जो परायण सो (एकाक्षरपरायण२५) एकाग्रहै धीनाम

ना स्वरूप सो (स्थिति४१) जो कुछ स्थिर चरसंसार तिसके स्वरूप सो (विश्वस्थावरंजंगमंचयत् ४२) जो भूमि स्वरूप सो (भू४३) जो जलस्वरूप सो (आप४४) जो वहनि स्वरूप सो (अग्नि४५) जो पवनस्वरूप सो (मरुत४६) जो आकाशस्वरूप सो (व्योम४७) जो अहंकार स्वरूप सो (अहंकृति ४८) जो माया स्वरूप सो (प्रकृति४६) जो पुरुषस्वरूप सो (पुमान्५०) १२८ जो प्रजापति स्वरूप सो (ब्रह्मा५१) जो प्रवेश अर्थात् व्यापकस्वरूप सो विष्णु ५२) जो कल्याण स्वरूप सो (शिव५३) जो भयानक स्वरूप सो (रुद्र५४) जो ईश्वर स्वरूप सो (ईश५५) जो सामर्थ्य स्वरूप सो (शक्ति५५) जो सदा शंकर स्वरूप सो (सदाशिव५७) जो देवता स्वरूप हो सो (त्रिदश५८) जो पितृस्वरूप सो (पितर५६) जोदेव योनि स्वरूप सो (सिद्ध६०) जो यक्ष स्वरूप सो (यक्ष६१) जो राक्षस स्वरूप सो (निशाचर६२) जो किम्पुरुषस्वरूप सो (किन्नर ६३) १२६ जो गणदेव स्वरूप सो (साध्य६४) जो विद्याधरादि गंधर्व स्वरूप सो (विद्याधर६५) जो भूत पिशाचादि स्वरूप सो (भूत६६) जो मनुजस्वरूप सो (मनुष्य६७) जो ढंगर स्वरूप सो (पशव६८) जो गर्द्दभस्वरूप सो (खग६६) जो सागरस्वरूप सो (समुद्र७०) जो नदिस्वरूप सो (सरित७१) जो पर्व्वत स्वरूप सो (शैल७२) जो हुये समयके स्वरूप सो (भूत७३) जो होनेयोग्य सो (भव्य७४) जो ससारके उत्पादकसो (भवोद्भव७५) १३० जो सांख्य शास्त्र स्वरूप सो (सांख्य७६) जो पतंजलि के योग शास्त्र स्वरूप सो (पातंजलयोग७७) जो पुराणस्वरूप सो (पुराण७८) जो वेद स्वरूप सो (श्रुति७६) जो वेदकेअनुकूल धर्मशास्त्रस्वरूप सो (स्मृति८०) जो वेदके अंग स्वरूप सो (वेदांग८१) जो श्रेष्ठाचारस्वरूप सो (सदाचार८२) जो कर्मकांडशास्त्र स्वरूपसो (मीमांसा८३) न्यायशास्त्र के विस्तार वाले सो (न्यायविस्तर८४) १३१ जो वैद्य विद्यास्वरूप सो(आयुर्वेद८५) धनुषशास्त्र स्वरूपसो (धनुर्वेद८६) जो गंधर्ववेद स्वरूप सो (गांधर्व८७) जो कविता अरु नटशास्त्र

स्वरूप सो(काव्यनाटक८७)जोब्रह्मशास्त्रस्वरूप सो (वैखानस८८) जो भगवत्के शास्त्रस्वरूप सो (भागवत ८९) सात्वतमत स्वरूपसो (सात्वत९०) जो पंचरात्रमत स्वरूप सो (पचरात्रक९१) १३२ जो शिवजीके मतस्वरूप सो(शैव९२) जो पशुपतिमतस्वरूप सो (पाशुपत९३) कालमुख मतस्वरूप सो (कालमुख ९४) जो भैरव शिक्षा स्वरूप सो (भैरवशासन९५) जो शक्तिमत स्वरूप सो (शाक्त ९६) जो विनायकजीके मतस्वरूप सो (वैनायक९७) जो सूर्यमतस्वरूप सो (सौर९८) जो जैनिमत स्वरूप सो (जैन९९) जो आर्हतमतसंहिताकेस्वरूप सो (आर्हतसहिता१००)इसप्रकार से शुक्लोपनामक पण्डितवरदेवीसहायविरचित गणेशसहस्रनाम व्याख्यानमें अष्टम शतक भया ॥ ८०० ॥

जो सत्तास्वरूप सो (सत्१) नहींहो किसीमे अर्थात् स्वयंरूप सो (असत्२) जो प्रकटस्वरूप सो (व्यक्त३) अप्रकटस्वरूप सो(अप्रकट ४) जो अत्यन्तही सूक्ष्मस्वरूप सो (अणु५) जो बड़े सो (महान्६) जो चेतना नाम बुद्धि सहितहो सो (सचेतन७) जो निर्गुणपनसे चेतनामन आदि गुणोसे शून्यहो सो (अचेतन८) जिससे बँध जावे सो (बंध९) जिससे छूटजावे सो(मोक्ष१०) जो आनन्दस्वरूप सो (सुख११) जोभोगेजावे सो (भोग१२,जो सच्चेस्वरूप सो (सत्य १३) जो नहीं जोडेजावें सो (अयोग१४) जो स्वस्ति,हुं,फट्,स्वधा स्वाहा श्रौषट्, वौषट्, वषट् नमस्कार स्वरूप हो सो (स्वस्तिहुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट्वौषट्वषण्नम १५) जिससे जानाजावे सो (ज्ञान१६) जो विशेषज्ञान स्वरूप सो (विज्ञान१७) जो परम सुख स्वरूप सो (आनन्द१८) जिनसे बुद्धि प्राप्तहोवे सो (बोध१९) जो श्रेष्ठ जाननेवाले अर्थात् सम्यक्ज्ञानस्वरूप सो (सम्वित् २०) जो शांतिस्वरूप सो (शम२१) जो शरीर साधनाकी अपेक्षावाला नित्य कर्महो सो यम तिसकेजो स्वरूपहो सो (यम२२) १३५जो आपही हों सो (एक२३) जो-एकअक्षर के आधार सो (एकाक्षराधार २४) एकअक्षरमें जो परायण सो (एकाक्षरपरायण२५) एकाग्रहै धीनाम

बुद्धि जिनकी अर्थात् अव्याकुल चित्तवाले सो (एकाग्रधी २६) एकनाम केवल अर्थात् नहींहै कोई दूसरा शूरवीर जिनके सो (एक वीर २७) जो एक अरु अनेकस्वरूप धारैं सो (एकानेकस्वरूपधृक् २८) १३६ दो प्रकारकाहै रूपजिनका सो (द्विरूप२६) दोहैंभुजा जिनके सो (द्विभुज३०) दो नेत्रहैं जिनके सो (द्व्यक्ष३१) दो हैं रद नाम दन्तजिनके सो (द्विरद३२) जो द्वीपोंकीरक्षाकरें सो (द्वीपरक्षक ३३) दो माता जिनकी सो (द्वैमातुर३४) दो प्रकारकाहै वदनजिनका सो (द्विवदन३५) द्वन्द्वभावसे जो परे अर्थात् अद्वैत सो (द्वन्द्वातीत३६) विगतहै मत्सरनाम अहंकार जिनका सो (विमत्सर३७) तीनहैं धामनाम स्थान वा देह वा आश्रयजिनके सो (त्रिधाम३८) तीनोंको जो करैं सो (त्रिकर ३६) जो तीनों वेदनोंके स्वरूप सो (त्रेता४०) त्रिवर्ग अर्थात् धर्म,अर्थ,काम,फल देनेवाले सो (त्रिवर्ग फलदायक४१)तीनोंगुण अर्थात् सत्त्व,रजस्,तमस् इनकेजोव्यापक अर्थात् ईश्वर सो (त्रिगुणात्मा४२) तीनोंलोकों के जो प्रथम स्वरूप सो (त्रिलोकादि४३) तीनों शक्तियोंके स्वामी सो (त्रिशक्तीश ४४) तीन नेत्र जिनके सो (त्रिलोचन ४५) १३८ चारभुजा जिनके सो (चतुर्बाहु४६) चारदांत जिनके सो (चतुर्दंत ४७) चार प्रकारका है आत्माजिनका सो (चतुरात्मा४८) चारमुखजिनके सो(चतुर्मुख४६) चारप्रकारके उपायसे संयुक्त सो (चतुर्विधोपायमय५०) चारोंवर्णाश्रमोंके अर्थात् ब्राह्मण,क्षत्री,वैश्य,शूद्र इनके आश्रय सो (चतुर्वर्णाश्रमाश्रय ५१) १३६ चार प्रकार के वचन में वृत्ति जो परिभ्रमण अर्थात् वर्ताव तिसके जो प्रवृत्ति करानेवाले सो (चतुर्विधवचोवृत्ति परिवर्त्तप्रवर्त्तक५२) चतुर्थीकेपूजनसे प्रसन्न सो(चतुर्थीपूजनप्रीत५५) चतुर्थीतिथिमेंहै जन्म जिनका सो (चतुर्थीतिथिसम्भव ५६) १४० पांच अक्षरहैं स्वरूप जिनका सो (पंचाक्षरात्मा ५७) पंचप्रकार का दर्शन जिनका सो (पंचात्मा५८) पांचमुख जिनके सो (पंचास्य५६) पंचकर्मके कर्त्ता सो (पंचकृत्५६) पांचहैं आधार जिनके सो (पंचाधार६१) पांचहैं वर्णजिनके सो (पंचवर्ण६२) पांचअक्षरोंमें परायण

सो (पंचाक्षरपरायण ६३) १४२ पांचहैं तालजिनके सो (पंचताल ६४) पांचहैं हाथजिनके सो (पचकर६५) पाचओंकारोंकरके जो भावनाकिये सो (पचप्रणवभावित६६) जो पांच ब्रह्मप्रधान अरु स्फुरणा स्वरूप सो (पचब्रह्ममयस्फूर्ति६७) पांचहाथियोंकरके जोचारों ओरमें संयुक्त सो (पचवारणवारित६८) १४२ पांचप्रकारके भक्षण के प्यारे सो(पचभक्ष्यप्रिय६७)पांचहैं बाणजिनके सो(पंचबाण६८) पाच शिव हैं आज्ञा जिनकी सो (पचशिवात्मक६६) छःकोणका है पीठ आसन जिनका सो (पट्कोणपीठ७०) छओ चक्रो में धाम है जिनका सो (पट्चक्रधामा७१) छओ ग्रन्थियोको भेदनकरै सो (पड्ग्रन्थिभेदक७२) १४३ छःप्रकार के मार्गाधकारको विध्वंस करने वाले सो (पडध्वध्वातविध्वसी७३) छ अगुलकाहै महाहृद अर्थात्सोहीहै बडा तडाग जिनका सो (पडगुलमहाहृद७४) छ मुख जिनके सो (पणमुख७५) पणमुखजीके जो भाई सो (पणमुखभ्राता७६) छओं शक्तियोसे जो कुटुंबी सो (पट्शक्तिपरिवारित७७)१४४ छओवैरियों के समूह को नाशकरनेवाले सो (पड्वैरिवर्गविध्वसी७८) छ तरगों के भयको जो दूरकरे सो (पडूर्मिभयभंजन७६) छओ तर्कोंसेदूर सो पट्तर्कदूर८०) छओ कर्मोमे निरतर जो रत सो (पट्कर्मनिरत८१) छओं रसो के जो आश्रय सो (पड्साश्रय८२) १४५ सात पाताल हैं पैर जिनके सो (सप्तपातालचरण८३) सातद्वीप हैं नितवमडल जिनका सो (सप्तद्वीपोरुमडल८४) सातस्वर्गलोकहैं मुकुट जिनका सो (सप्तस्वर्लोकमुकुट ८५) सात हैं अश्व जिनके सो सप्तसप्ति सूर्य तिन्हें जो वरदे सो (सप्तसप्तिवरप्रद८६) १४६ राज्यकेसातो अगोमे सुखदेवें सो सप्ताङ्गराज्य सुखद८७)सातऋपियोंके मण्डलसे सजे सो सप्तर्पिगण मण्डित ८८सातप्रकारके छन्दोके समुद्र स्वरूप होसोसप्तछन्दोनिधि ८६)सातप्रकारकेहवनकरनेवाले जोहो सो(सप्त होता ६०) सातोस्वरो के जो आश्रय सो (सप्तस्वराश्रय६१) सात समुद्र हैं क्रीड़ाकेतडाग जिनके सो (सप्ताब्धिकेलिकासार६२) सात मातरो से जो निरन्तर सेये सो(सप्तमातृनिपेवित६३) सात छन्दोंका

आनन्दहीहै मदजिनका सो (सप्तछदोमोदमद ६४) सातछदोंके यज्ञ के स्वामी सो (सप्तछदोमखप्रभु ६५) १४८ शिवजी से ध्याने योग्य मूर्त्ति जिनकी सो अष्टमूर्त्ति ध्येय मूर्त्ति ६६ आठप्रकृतियोंके जो कर्त्ता सो (अष्टप्रकृतिकारण ६७) अष्टांगयोगका फलहोवे जिनसे सो (अष्टांगयोगफलभू ६८) आठपंखडीके कमलमें है आसन जिनका सो (अष्टपत्रांबुजासन ६६) १४६ आठशक्तियो से सम्यक् प्रकारसे वधी है श्री जिनकी सो (अष्टशक्तिसमृद्धश्री १००) ॥ इसप्रकारसे शुक्लोपनामकपंडिततवरदेवीसहायकृत श्रीमहागणेशसहस्रनाम व्याख्यान में नवमशतक भया ॥ ६०० ॥

अष्टमातृकाओसे संयुक्त सो (अष्टमातृसमावृत १) आठों भैरवों करके जो सेवाकरने योग्य सो (अष्टभैरवसेव्य २) आठोंवसुओ करके जो वंदनीय सो (अष्टवसुवंद्य ३) जो आठमूर्त्ति यो को धारण करें सो (अष्टमूर्त्तिभृत् ४) आठचक्रोसे स्फुररही अर्थात् प्रकाशमान् मूर्त्तिजिनकी सो (अष्टचक्रस्फुरन्मूर्त्ति ५) आठवस्तुकीचरुकेहोमकेप्यारेसो (अष्टद्रव्यहविप्रिय ६) १५१ नौ हस्तियोके आसनपरवैठनेवाले सो (नवनागासनाध्यासी ७) नवनिधियो के जो अनुशिक्षक अर्थात् स्वामी सो (नवनिध्यनुशासिता ८) नौद्वारोके पुर अर्थात् घरके आश्रय सो (नवद्वारपुराधार ११) नौद्वार अर्थात् इंद्रियां हैं स्थान जिनका सो (नवद्वारनिकेतन १२) १५२ नौनारायणोसे स्तुतियोग्य सो (नवनारायणस्तुत्य १३) नौदुर्गाओ करके जो निरन्तर सेयेहो सो (नवदुर्गानिषेवित न १४) नवोकेनाथ अरु जो [illegible] (नवनाथमहानाथो १५) नौनागहैं आ[illegible] न सो [illegible] १६)१५३ नौरत्नोंसे चित्रितहै शरी[illegible] सो ([illegible] १७) नौ शक्तियोंसे जो शिरसेधार[illegible] (न[illegible]) दश प्रकारकाहै[illegible] सो (दशभुज[illegible] २१) १५[illegible] प्राण [illegible] जिनके सो ([illegible] (दश

न्द्रियनियामकः२४) दशअक्षर के जो महामन्त्रस्वरूप सो (दशाक्षर महामंत्र२५)दशो दिशोमेंव्यापकहै शरीर जिनका सो (दशाशाव्यापि विग्रह२६) १५५ ग्यारहो रुद्रोसे जो स्तुतिकिये सो (एकादशादि भीरुद्रै स्तुत२७) ग्यारह हैं अक्षर जिनके सो (एकादशाक्षर२८) बारहहैं दंडको उत्क्षेपक अर्थात् हटानेवाले भुजा जिनके सो (द्वादशो द्दडदोर्दण्ड२९) बारहके अन्तमें है स्थानजिनका सो (द्वादशांतनिकेतन३०) १५६ तेरहोंपदोकरके भेदकोप्राप्त जो विश्वदेवा तिनके जो अधि देवता सो (त्रयोदशपदाभिन्नविश्वेदेवाधिदेवतं३१) चौदहोइन्द्रो को जो वरदें सो (चतुर्दशेन्द्रवरद३२) चौदह मन्वन्तरोंके जोस्वामी सो (चतुर्दशमनुप्रभु३३) १५७ चौदह आदि विद्याओंसे संयुक्त सो (चतुर्दशादिविद्याढ्य३४) चौदह भुवनोंके जो पति सो (चतुर्दशजगत्प्रभु३५) साम गान है पन्द्रहवां जिनका सो (सामपंचदश ३६) जो पूनोंके चन्द्रमाके समान निर्मल सो(पंचदशीशीतांशुनिर्मल३७) १५८ सोलह आधार है स्थानजिनके सो (षोडशाधारनिलय३८) सोलह स्वर हैं मात्रिकाजिनके सो (षोडशस्वरमात्रिक३९)सोलह के अन्तस्थान अर्थात् सत्तरहवो मे स्थान जिनका सो(षोडशांतपदावास४०)सोलाकला चन्द्रमाकेस्वरूप सो (षोडशेन्दुकलात्मक४१) १५९ सत्रहवींकलासे सत्रहवें सो(कलासप्तदशीसप्तदश४१)सत्रह हैं अक्षर जिनके सो (सप्तदशाक्षर४२) अठारह द्वीपों के पति सो (अष्टादशद्वीपपति४३)अठारहपुराणकेकर्त्ता सो (अष्टादशपुराणकृत् ४४)१६० अठारहमुख्य औषधियोंके रचनेवाले सो (अष्टादशौषधीसृष्टि४५) अठारहविधोमें जो स्मरण किये सो (अष्टादशविधिस्मृत ४६) अठारह प्रकार की जो लिपिभई अर्थात् लिखितव्यष्टि–किंचिदव्यापकत्व,समष्टि—सम्पूर्ण व्यापकत्व, ऐसा जो ज्ञान तिसमें कोविद–चतुरसो(अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविद४७)१६१ इकईशवें जो पुरुष सो (एकविंशपुमान४८) इकईश अंगुलियों के पल्लवअर्थात् सुन्दरअंगुलिपत्रजिनके सो(एकविंशत्यंगुलिपल्लव४९) चौवीशतत्व हैं आत्माजिनको सो (चतुर्विंशतितत्वात्मा५०) पचीश

चे जो पुरुष सो (पचविंशाख्यपूरुष५१) १६२ सत्ताईश नक्षत्रों के ईश्वरसो (सप्तविंशतितारेश५२) सत्ताईश योगो के कर्त्ता सो (सप्तविंशतियोगकृत५३) बत्तीस भैरवों के जो अधीश्वर सो (द्वात्रिंशद्भैरवाधीश५४) चौतीश हैं बड़े कुण्ड जिनके सो (चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ५५) १६३ छत्तीश तत्त्वो से है सम्भव जिनका सो (षट्त्रिंशतत्त्वसम्भूति५६) अडतीशकला हैं शरीर जिनका सो (अष्टत्रिंशत्कलातनु५७) नम्रभये जो उनचास पवनोकानम तिससे जो अर्गलरहित सो (नमदेकोनपचाशन्मरुद्वर्गनिरर्गल५८) १६४ पचासअक्षरकी पंक्ति स्वरूप सो (पंचाशदक्षरश्रेणी५६) पचासरुद्रगण हैं शरीर जिनका सो (पचाशद्रुद्रविग्रह६०) पंचाश विष्णु की शक्तियो के जो ईश्वर सो (पचाशद्विष्णुशक्तीश६१) पचासवर्ण मात्रिकाओंमें है स्थान जिनका सो (पञ्चाशन्मातृकालय६२) १६५ बावन शरीरो की पंक्तिस्वरूप सो (द्विपञ्चाशद्वपुश्रेणी६३)तिरेसठ अक्षरो के जो आश्रय सो (त्रिषष्ट्यक्षरसश्रय६४) चौसठवर्णों के जो निर्णयकर्ता सो(चतुषष्ट्यवर्णनिर्णेता६५)चौसठकलाओकेनिधान सो(चतु षष्टिकलानिधि६६) १६६ चौंसठ महासिद्ध अरु चौसठयोगिनियो के समूह से जो वन्दनाकिये सो (चतुषष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दित६७) अडसठ महा तीर्थ अरु भैरव क्षेत्रो से जो भावनाकिये सो (अष्टषष्टिमहातीर्थ क्षेत्रभैरवभावन६८) १६७ चौरानवे मन्त्रात्मक सो (चतुर्नवतिमन्त्रात्मा६६) छानबे से अधिक सो (षड्नवत्यधिक७०) जो प्रकर्षसे हो अर्थात् सबके स्वामी सो (प्रभु७१) सौ रूप जो आनन्द सो (शतानन्द७२) जो धारणावाले सो (शतधृति७३) कमल से सुविस्तार नेत्रवाले सो (शतपत्रायतेक्षण७३) १६८ सौ हैं सेना जिनके सो (शतानीक७५) सौयज्ञ जिनके सो (शतमख७६) सौ श्रेष्ठ धारवाले शस्त्रजिनके सो (शतधारवरायुध७७) हजारपत्तो वाले कमल में स्थान जिनका सो (सहस्रपत्रनिलय७८) सहस्र फणोवाले सर्प आभूषण जिनके सो (सहस्रफणभूषण७६) १६६ सहस्र शिरोवाले पुरुष सो (सहस्रशीर्षापुरुष ८०) सहस्रनेत्रजिनके

सो (सहस्राक्ष८१) सहस्रपैरवाले सो (सहस्रपात्८२) सहस्रनामों से सम्यक् प्रकार जो स्तुति करने योग्य सो (सहस्रनामसंस्तुत्य ८३) इन्द्र के वलको नाशकरै सो (सहस्राक्षवलापह८४) १७० दशसहस्रफणधारी जो नाग राजा सो कियाहै आसन जिन्होंने सो (दशसाहस्रफणिभृत्फणिराजकृतासन८५) अट्ठासीसहस्रमहर्षियो के समूह से किये स्तोत्रोंसे जो यंत्र भये अर्थात् स्तुति किये गये सो(अष्टाशीतिसहस्रौघ महर्षि स्तोत्रयंत्रित८६)१७१ लक्षके स्वामी अरु तिसीकेप्यारे तथा तिनकेआश्रय सो(लक्षाधीशप्रियाधार८७) जो लक्षाधीश अरु मनोमयी सो (लक्षाधीशमनोमय८८) चार लक्ष जपो से जो प्रसन्नभये सो (चतुर्लक्षजपप्रीत८९) चारलक्ष से जो प्रकटभये सो (चतुर्लक्षप्रकाशित९०) १७२ जो चौरासीलक्षजीवो के देहमात्रमें विराजित सो (चतुराशीतिलक्षणा जीवानांदेहसंस्थित ९१) करोडसूर्यसमान प्रकाशजिनका सो (कोटिसूर्यप्रतीकाश९२) करोड़ चन्द्रकिरणोसे जोनिर्मल सो (कोटिचन्द्रांशुनिर्मल९३)१७३ शिवजी से भये जो अभ्युष्टनाम प्रभु अर्थात् समर्थ जो करोडों विनायक तिनके धुरधर अर्थात् अग्रणी सो (शिवाभवाध्युष्टकोटि विनायकधुरंधर९४) सातकिरोड महामन्त्रोसेमन्त्रितहै शरीरकाति जिनकीसो (सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युति९५)१७४ तेंतीस करोड देवोकी पक्तियों से प्रणाम की हैं चरणपादुका जिनकी सो (त्रयस्त्रिंशत्कोटि सुरश्रेणी प्रणतपादुक९६) अनगिनत देवों से सेवनीय सो (अनन्तदेवतासेव्य९७) अनगिनत मुनियों से स्तुति किये सो (अनन्तमुनिसंस्तुत९८) १७५ अनन्त है नाम जिनके सो (अनन्तनामा९९) अनन्त शोभा जिनकी सो (अनन्तश्री९९) अनन्त अनगिनत अर्थात् समस्त सुखदेनेवाले सो (अनन्तानन्त सौख्यद १००) इसप्रकारसे शुक्लोपनामक पण्डितदेवीसहायविरचित महागणपतिसहस्रनाम के भाषानुवाद व्याख्यान में दशम शतक समाप्त भया है १००० ॥

सहस्रनामों के पाठ करने का फल॥

इसप्रकार से ये विनायक जी के नामो का सहस्रकहा है १७६ इसे जो नर ब्रह्माजीके मुहूर्त्त अर्थात् नित्य पठनकरै तो उसके इस लोक परलोक का सारा सुखकरमें स्थित अर्थात् मुट्ठीमेंहीहै १७७ और आयुर्बल, निरोगता, ईश्वरत्व, धर्म, शूरता, पराक्रम, कीर्त्ति, वृद्धि प्रबुद्धि, धीरज, दीप्ति, सुभाग्यपन, अत्यन्त रूपत्व अर्थात् अतिसुंदर पन १७८ सत्य, दया, क्षमा, शांति, चतुराई, धर्मशीलपन, जगत् का संयमन अर्थात् वशकरना, सांसारिक सम्वाद अर्थात् सन्मुख हो प्रत्युत्तरकरना, वाक्चतुराई १७६ सभाचातुरी, उदारता, गम्भीरता ब्रह्मतेज, ऊंचापन, और सत्कुल, श्रेष्ठस्वभाव, प्रताप, वीर्य्य, सीधापन १८० ज्ञान, विशेषज्ञान, आस्तीकता, धीर्यता, संसार को अत्यत सुवादेना अर्थात् शत्रुहोतेभी अपनाप्रयोजन निर्विघ्नतासे होजावे अरु धनधान्य की वृद्धि इतना काम समूह इसके एकबेर भी पाठ करनेसे प्रकर्ष से अर्थात् शीघ्रही होताहै १८१ और मनुष्यों के जो चार प्रकार का वशीकरण है जोकि १ तो राजाका २ राजपत्नी का ३ राजपुत्रका ४ राजमंत्रीका सोई इसके जपनेसे होताहै १८२ ये जिसके वशीकरण के लिये जपाजाता वही तिसका दासहोजाता है औरधर्म अर्थ काम मोक्षोंका तो ये बिनापरिश्रमही सिद्धिकारक है १८३ और डाकिनि, शाकिनि, राक्षस, यक्ष, सर्प इनके भयकोभी निवारणकरै है। सारे सुन्दर सुखों का दाता अरु सारे शत्रुओं को हटानेवाला है १८४ अरु सारे क्लेशों का नाशकरनेवाला जलेबीज कोभी उगानेवाला है। खोटेस्वप्नों का शांति करनेवाला अरु क्रोध भये स्वामी के चित्तको प्रसन्न करनेवालाहै १८५ और छःकर्म आठ महासिद्धि अरु त्रिकाल अर्थात् भूत भविष्यत् वर्तमान के ज्ञानका कारणहै अरु पराई की भई मूठको उलटी फेरनेवाला अरु शत्रु के बलको हलका करनेवाला है १८६ अरु संग्राम भूमि में सबको ये अकेलाही जयप्राप्तकरनेवाला है अरु सारे बाहुपनेके दोषों का हंता अरु गर्भकीरक्षा का मुख्यकारण है १८७ ये गणपतिजीका

स्तोत्र जहां नित्य पढ़ाजाताहै तो उसदेशमें दुर्भिक्ष अरु छःप्रकार की ईति तथा कुकर्म्म ये नहीं होते हैं १८८ जहा ये स्तोत्र जपा जाताहै तिसघरको लक्ष्मी नहींछोड़तीहै। औरक्षयी कोढ़ धातुक्षीण ववासीर भगन्दर हैजा १८९ गोला छीह पथरी दस्त उदर वृद्धि खासी श्वास उफान दर्द सोजेआदिसे उठेरोगको १९० अरु शिरके रोगको छादनीको हुचकीको गलगंड मालाको अरोचकता को अरु वायुसे पित्तसे कफसे अरु दोमिलनेसे तथा सन्निपात से भये ज्वर को १९१ अरु आगतुकनाम ज्वरको विषमज्वर को शीतज्वर को उष्णज्वर को अरु एकातरे आदि ज्वरको इत्यादिक कहे अरु बिन कहे भी मलादिदोषसे उत्पन्नरोगको १९२ सारेको इस स्तोत्र का एकवेर पाठ करना शात करताहे। और स्त्री,शूद्र, संस्कार हीनोंसे भी एकही पाठकरनेसे सिद्धहोतीहै १९३ येमहागणेशजीका सहस्त्र नाम मंत्र शुभकी प्राप्ति के लिये जपनाही योग्यहै। जो कोई कामनाकरके इस स्तोत्र को जपै तो १९४ यहां यथेच्छ सारे पृथिवी के भोगो को भोगकर अरु मन वांछित फलोसे फलित भये दिव्य मनोहर विमानोकरके लेजायाभया १९५ चन्द्रमा,सूर्य,इन्द्र,उपेन्द्र ब्रह्मा,रुद्र,आदिकोंके लोकोमेंकामनासे यथेच्छविचरताभया १९६ यहा चाहे भाइयो के साथ यथेष्ट भोग भोगकर अरु गणेशजीका आज्ञाकारी होकरके अरु महागणपतिजी का प्यारा १९७ नन्दी गण आदिकों के आनन्द सहित अरु सकल गुणो से आनन्द से समृद्ध अरु गौरीशंकरजी से कृपाकरके पुत्र से भी अति विशेषलाड़ किया १९८ शिवजीका भक्त पूर्ण कामनावाला फिर भी गणेश्वर जीही के वरसेती जाति मे श्रेष्ठ धर्म मे परायण सर्वभूमि का राजा होताहै१९९ अरु जो जन इसको गणेशजीमें परायणहुआ निष्काम जपै तो ज्ञान वैराग्यमें सम्यक् प्रकारसे विराजमान हो वा २०० अरु सर्वदा उदित आनन्द स्वरूप परमानन्द ज्ञान में। विश्व से भिन्न परम पार मे पुनरागमन रहित में २०१ ऐसे विनायकजी के तेजमें लीनभया नित्यही आनन्द को प्राप्तभया रमणकरता है अरु

जो नर इननामो से पूजाकरै चर्चै २०२ तो उसके राजा वशीपन को प्राप्तहोयँ अरु शत्रु दासभाव को प्राप्तहोतेहैं। अरु उसके सारे मंत्र सिद्धहोयँ अरु उसके सारी सिद्धियें सुगमहोवें २०३ ये मेरा स्तोत्र मुझे मेरे मूलमन्त्रसेभी अत्यन्त प्याराहै। जो इसको भाद्र पद शुक्लपक्षकी चतुर्थी के दिन मेरे जन्म समय में २०४ दुर्वाओ करके प्रत्येकनामो से पृथक् २ पूजा अरु तर्पण विधि अनुसारकरै तथा भक्तियुक्त हुआ विशेप से आठद्रव्यो से वने हव्यकरके हवन करै २०५ तो उसके सारे मनवाञ्छित सिद्धहोतेहैं इसमें संशयनहीं है। ये स्तोत्र जपा पाठकिया पढा पढ़ाया सुना सुनाया २०६ व्याकरणकिया अर्थात् प्रकाश तथा व्याख्यान किया पूजित किया ध्यानकिया विशेपसे माजा अर्थात् अत्यन्त शुद्धतापूर्वक पठनकिया प्रसन्नता से सराहना पूर्वक पढागया तो यहा अरु वहा सारो के सांसारिक तथा पारलौकिक ऐश्वर्य्यकाप्रकर्पसे देनेवाला है २०७ किसी स्वेच्छाचारी से भी जिससे ये स्तोत्र धारण किया जाताहै तो वो शिवजीके समर्थ करोडोगणोकरके सम्यक्प्रकार रक्षाकिया जाताहै २०८ मन्त्रहुये पुस्तकपर लिखे इसस्तोत्र को जो प्रकर्पसे अर्थात् विधि करके पूजित करे तो वहा सर्वोत्तम लक्ष्मी सर्वदा सं- निधान करती अर्थात् रहतीहै २०९ सारे पुण्योसे अरु सारे व्रतो से अरु सारेही तीर्थोसे अरु सारे यज्ञोसे सो फल नहीं मिलता जो श्रीगणेशजीके सहस्रनामोके स्मरणसे शीघ्रहीफल मिलताहै २१० जो मनुष्य इसनामो के सहस्रको सूर्य के उदयहुये। प्रतिदिनपठन करै तथा सायंकालमें वा मध्याह्नमें अथवा तीनोकालमें पढ़ै तथा निरन्तरपठनकरै तो वो ऐश्वर्य का भोगनेवाला होताहै अरु वचनों कीर्तिको ऊचेपन करके विस्तार करता अर्थात् यशको प्राप्त होता है अरु विघ्नो को दूरकरताहै संसार को वशमें करताहै अरु वहुत काल बेटे पोतो से प्रवर्द्धमान होताहै २११ जो दरिद्री जन भी एक चित्तहो नियमसे नियमसहित भोजन करनेवाला। गणेशपूजा में परायण हुआ चारमहीने तक इसे जपै २१२ तो वो सातजन्मोकी

भी दरिद्रता को दूर करकर महाभारी बडी लक्ष्मी को प्राप्तहो ये परम ईश्वर की आज्ञाहै २१३ और आयुर्बल अरु निरोगता अरु अत्यंत निर्मल कुल अरु सम्पत्ति अरु दुःखियो को अभयदान अरु नित्य सुविमलकीर्त्ति अरु सुन्दरवचन अरु सुन्दर नवीनकांति जोकि निष्कपट कल्याणरूप सो। अरु सत्पुत्र अरु गुणवाला सुन्दर कबीला और जो कुछ भोगहैं तिसे भी सत्यभोगे जो इस गणपतिजी के स्तोत्र को नित्यपढता है उसके हाथमेंही समस्त फल हैं २१४ अब २१ नाम स्तोत्र कहते हैं कि (ओम् गणंजय) (गणपति) क्रीड (हेरम्ब)(धरणीधर) (महागणपति) (लक्षप्रद)(क्षिप्रप्रसादन(२१५) (अमोघसिद्धि) (अमित) (मन्त्र) (चिन्तामणि) (निधि) (सुमगल) (बीज) (आशापूरक)(वरद) (शिव) (काश्यप) (नन्दन) (वाचासिद्ध) (ढुंढिविनायक२१) व्याख्या इनकी पहिले लिखीहै जो कोई पुरुष इन २१ नामोकरके अरु २१ ही मोदको करके २१७ जो मेरे में चित्तहो मेरे आराधन में परायण होता है। तो उसके पूजन से मैं नामोके सहस्रके समानही स्तुतिकिया प्रसन्न होताहू इसमें संशय नहींहै २१८ ध्यानहै कि हे गणेशजी आपको नमस्कार है २ कैसे हो सुरश्रेष्ठो करके पूजेहै चरण आपके अरु नहीं उपमा दिये जावें अर्थात् मंगलोंके भी मगल स्वरूप तिन्हें नमस्कारहे २ अरु भारी जो मुख्य सिद्धि सो है करमें जिनके ऐसे जो आप तुम्हे नमस्कार है २ अरु हस्ती के बालकके मुख वाले जो आप तुम्हारे अर्थ नमस्कार है २।२१६ अरु हे गणेशजी किंकिणीके समूहसे शब्दित किया है चरण जिनका ऐसे आप अरु प्रकट किये हैं भारी मर्याद वाले चरित्रों के समूह आप करके सो अरु मदके जल के लहरो से हस्तीका आचरण किया है कपोल जिनकरके सो गणपतिजी इस नामवाले आप समस्तविघ्नोको घातकरो२२० इसप्रकारसेश्रीमत्पण्डित देवीसहाय विरचित गणेशपुराण उपासनाखडमें गणेशजीके सहस्रनामोंकाकथन इसनामसे छियालीसवांअध्यायहुआहै ४६ ॥

—*—

सैंतालीसवां अध्याय ॥

त्रिपुरासुर के युद्ध का वर्णन ॥

व्यासजीनेपूछा कि हेब्रह्मन् गणेशजीके प्रसन्नभये अरु तिन्हीं से तिनके नामोका सहस्र प्राप्तहुये फिर शिवजीने क्या किया सो ये वृत्तान्त मुझको कहिये १ श्रीब्रह्माजीबोले कि गणेशजी के वरदानसे अरु सहस्रनामो के उपदेश से प्रसन्न भये शंकरजी नाचते हुये बड़े शब्दसहित गर्जे २ तो अपने गण देवोंको बुलाकर युद्धका अवसर बतातेभये। और वे देवता भी बड़ेही हर्षसे शिवजी केपास आये ३ सो कि ब्रह्माजी, कुबेर अरु इन्द्र, अग्नि, पवन अरु चन्द्रमा वरुण अरु सूर्यजी और गंधर्व, यक्ष, ग्रह, किन्नर ये सारे शिवजी को नमस्कार करकर ये स्तुति करतेभये ४ देवताबोले कि हे जगत्के आनन्द देनेवाले जगन्नाथ हेदेवदेव। हम आपकरके हते महादैत्य को कब देखेंगे५ क्योंकि उस संसारके अपघातीसे हम स्थान भ्रष्ट कियेगये हैं। ब्रह्माजीबोले कि ऐसे देवोका वचन सुनकर पिनाक वाले शिवजी हर्ष से निकलते भये ६ गणेशजी को मनसे ध्याकर अरि युद्ध के लिये किया निश्चय जिन्होने सो शिवजी वेगसे देव गंधर्वों सहित अपने गृह में प्राप्तहोकर तयारहुये ७ तिवनेही दूतो से उसदैत्यको ये वृत्तान्त जनाया गया कि गौरीजीकेपति देवसेना सहित युद्ध के लिये आये हैं ८ तब तो उसके भी सेनावाले अस्त्र शस्त्र कवचो से खिचेभये तैयारहुये। अरु वो त्रिपुर दैत्य महाशब्द वाला युद्ध के आभूषणों से सजा ९ वीरो को वस्त्र, आभूषण, धन से प्रसन्न करता भया। नाना वाहनो पर योद्धाओ के विराजमान हुये १० वो महादैत्य आप निजपुरत्रय को आरोहण करता भया। जोकि दशो दिशो को निजभारी शब्द से गोजाता। तब तो दोनो सेनोंका महाही युद्ध होताभया ११ नाना प्रकार के शस्त्रो से अरु मर्मको वींधनेवाले लोहमयी बाणो से। तब तो लोहू की नदी का अत्यंत बहावभया जोकि मार्ग को भी रुकावट करनेवाला १२ तो

शस्त्रोंसे हते योद्धा ऐसे शोभितभये जेसे फूलो से सजे केशूवृक्ष हों। कईक तो दृढ़ वैर से जीवग्रहण जेसे अर्थात् अत्यन्तही प्रहार से मारतेभये १३ कईक वालोकोही पकड़कर और वलसे शिर काटते भये। तो दौडते भये महारथी शूरवीरोंके अरु अश्व गजवाले वीरों के पैर पडनेसे भया रज क्षणमें पृथिवी आकाश को आच्छादन करता भया। वो उस अत्यन्तही घोरतर अन्धकार में कुछ भी न जानपडा १५ तव तो नानाविधि के शूरवीर अत्यन्त युद्धकरतेभये जोकि जीवने की आशाछोड मरने में कृत निश्चय होरहे १६ जव वायुसे अन्धकार हटे देवताही मरेदीखे। ऐसे देवसेनाके पलायन भये अरु दैत्य की सेना के हर्षित भये १७ युद्धको सराहने वाला वज्रहाथमें जिसके ऐसा त्रिपुर को बिदारणकरने वाला इन्द्र युद्धमें आया तो दैत्य दानव महेन्द्र को देखतेही पलायन हुये १८ सो वज्रधारी इन्द्र असुरो को निजवज्र के पातसे चूर्ण करताभया तो वे प्रचण्ड वज्र के प्रहारसे जीवको त्यागतेभये १६ कई तो भग्नपाद कईक भग्नशिरवाले अरु कई विदारित उदरवाले अरु कुछेक छेदे हैं कधे अरु भुजा जिनके ऐसे २। २० अरु तैसेही छिदे घोडो अरु शूरवीरो घोड़े सवारो अरु महारथियो के कइयों के तो नितम्ब कट गये अरु कइयो की जाघोंमेंलगी २१ अरु कईकछिदे घुटनेजिनके ऐसे २ योद्धागिरपडे। वाकी छलसेही अर्थात् डरकर गिरे तो हते हुओ के लोहू गिरनेसे वहुतसी गम्भीर नदियें वहतीभई २२ जो कि जीतने की आकांक्षावाले शूरवीरो को चाववधानेवाली ऐसी। तव धीरे२ गर्जता त्रिपुरासुर२३ वहुधा अपनीसेनाको हत देखता भया तो आप इन्द्र पै युद्धकरने को आया अरु इन्द्र को देखतेही वोला कि किसलिये मरने की इच्छा करता है २४ उचितहै कि तू जा जीताही युद्ध से चलाजा नहीं तो हे इन्द्र मैं तुझे विन पूछेही मारता हूं अरु हे शचीके पति कौन शक्ति तेरी मुझसे युद्ध करनेकी है २५ क्या वकरा सिंह के साथ युद्ध करेगा क्या ये मुझ से कहु अरु जो शक्तिही है वो आवलढ नहीं तो सुखसे चला जा २६ ऐसे

कहे इन्द्र के स्थित हुये वो दैत्य धनुप को ज्यासहित करके चिल्ले चढ़ाकरके वहुतसे वाणोंको बर्साता देव सेनाको ताड़ता भया २७ तौ एक२ही मन्त्रित किये वाण से अनगिनतही शर निकसे जोकि देव गन्धर्वोंको मसलते अरु भूमि आकाशको पूरितकरतेभये२८तौ फिर वाणोंके जालोंसे निरन्तर अंधेरा होगया तौ उन वाणोंसे भी वेदेवताही बिनअगभये भूतलमे गिरपडे २९ अरु भारी प्रहार से पीडितहुआ वलहता इन्द्रभी भूमिमें गिरपडा तबतौ सवदेवश्रेष्ठोंके मूर्च्छितहुये महेश्वरजी आप ३० उस श्लाघाकरते बहुतगर्जतेयुद्ध करतेको सन्मुख नहीं सराहतेभये पर मनमे शिवजी उस दैत्य के पुरुषार्थ को सराहतेभये ३१ इतनेही मे तहा देखने को नारदजी आगये तो पूजितभये शिवजीको बोले कि हेनीलकंठहित आपसुनौ ३२नारदजीबोले कि हे महेश्वरजी त्रिपुरासुरके मारनेमें आपकरके चिन्ता न करनी चाहिये कि मैं तिसके मारने का उपाय कहताहूं तुम उसे करो ३३ कि उसने जो ब्रह्माजीसेभी न करनेयोग्य ऐसा कठिनतप कियाहै सो उससे आराधनकिये गणपतिजीने सब वाञ्छित तिसको दियाहै ३४ जोकि उससे मांगागया सो२ देवगणेश जी बिनविचारे उसेदेतेभये जो ये इसको पुरत्रयदियाहै सो इच्छाचारी महाभारी एक वाणके मासरे ३५ अरु ये पवनकी गति भी जिससेहीन अर्थात् पवनभीइसे न पहुचसकै३६ अरु सवदेवोंकरके अछेद्य सो उन्होने इसे गुप्त ये कहाथा कि जो तेरे पुरत्रयको एक मंत्रित वाणसे भेदैगा तिससे तु मृत्यु को प्राप्तहोगा ऐसे कहकर मुनिश्रेष्ठतर नारदजीके गयेपर ३७ शिवजी मूर्च्छित देवताओं को सावधान करतेभये अरु नारदजी से स्मरण कराये गजाननजी के आननसे कथित वाक्यको स्मरण करतेभये३८ तो उस महाअसुर के वधके लिये सो शिवजी वडाही प्रयत्न करतेभये जो देवतेज से निजइच्छा करकेही सवको नाशकरनेके लिये समर्थ ३९ तौ उन्होने पृथ्वीस्वरूप तो रथवनाया अरुचन्द्रमासूर्य हे पहिये जिसके वनाये अरु कमलजन्मा ब्रह्माजी हैं सारथी जिसके वनाये गिरिराज को

धनुपवनाया अरु सो शिवजीभगवान्‌रूप बाण,वनातेभये अरु सो पर्वतशायी शिवजी अश्विनीकुमार रूप अश्वोंको उसमें जोड़तेभये ४० अरु आचमनकरके देवगणेशजीको मनसेचिन्तवन करकेउन्हीं से उपदेश किये नामोंके सहस्र को एकाक्षर मंत्र सहित जपते भये इससे अपने तीव्रधनुष को सुमंत्रित करतेभये ४१ सदाशिवजी ने अपने विष्णुरूप बाणको निमन्त्रित किया तबतो धरती शेषजी अरु वन अरु पर्वतभी ये सबकांपतेभये४२ अरु सारेपक्षिगण आकाश में भ्रमे अरु भारीशब्द करतेभये तो उस शब्दसे अज गऊसम्बन्धी धनुषधारी शिवजीकेभी देवता मनुष्य विशेषभ्रांतिको प्राप्तभये४३ जब शिवजीने बाण छोड़ा तबतो आकाश जला अरु शीघ्रही उससे उठी अग्निकी हुलोंसे पातालसहित भूतलभी जलनेलगा ४४ तो उसे देखतेही पुरोंके आश्रित सेनासहित दैत्यराज भागा अरु सो शरभी त्रिपुरदैत्यको वेगसे पहुंचकर जलाताभया ४५ तो दैत्य के शरीर स्थितज्योति शिवजीके शरीरमे प्रलयहुआ अर्थात् मिलगया सोकि सब सेनावाले अरु सबदैत्यदानव राक्षसोंके देखते२ही लीन होगया ४६ तब अन्तरिक्षमें आकाशवाणी भई कि शिवजी से हता त्रिपुरासुर मुक्तभया तबतो वे देवता अरु मुनियेंभी प्रसन्न हो शिव जीकी स्तुति करतेभये ४७ अरु गन्धर्वोंके समूह गातेभये श्रुतियों मे परायण चारणभी गाते भये अरु अप्सराओंके समूह नाचतेभये अरु किंपुरुष जन निज२ बाजे बजानेलगे ४८ अरु नारद आदि देवर्षियें पुष्पवर्षा करतेभये अरु नहीं है कोई पीडा जिनके ऐसे सारे देव शिवजीकी आज्ञासे निज२ स्थानों को पधारते भये ४९ अरु सारे मुनीश्वरभी त्रिपुरासुरके विघाती शिवजीको नमस्कार करके उद्वेगसे रहितभये अपने२ अनुष्ठानोंमें परायणहुये ५० उसदैत्यके हतेपर वे आनंदसे वेद वेदांगोंमें चातुर्य्यवालेहोतेभये अरु अपने२ अग्निहोत्र अरु यज्ञ,व्रत,दान५१सबजन फिरभी चावसहित करते भये अर्थात् पहिले तिसके भयसे न करसक्तेथे अरु फिर शिवजी भी गिरिराजसे आदि गणपति स्कन्द इनकरके तथा और२भीसब

निज पारिषद गणो करके नमस्कार सत्कारकिये उस महाभारत को विभाग करके अर्थात् यथायोग्य मिल२करके अरु जय२ शब्द तुरीशब्द अरु देवोके दुन्दुभि शब्दोसे अलकार किये अर्थात् सजे कैलास पर्वतको हर्षभये पधारे अरु तभीसे इनका नामभी (त्रिपुरारि) ऐसे स्पष्ट प्रख्यात होता भया ५४ ऐसे महागणपतिजी के मंत्रकासमर्थपन निरूपणकिया अरु इनसहस्रनामोकाभी येप्रभाव वर्णनकियागयाहै ५५ ये मुझसे और किसीनेभी नहींजानाहै तथा न किसीको सौपाके गयाहै इसके पठन अरु श्रवणसे सवकामो के फल को जन प्राप्त होवे ५६॥ इसप्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमें शिवजी का विजय होना इस नामसे सैतालीसवां अध्याय हुआ॥ ५७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

व्यासजीने पूछा कि मैंने आपसे त्रिपुरका वधहै आश्चर्यजिसमें ऐसा भारी आख्यान श्रवण किया पर तवभी सुनने को चाहताहू कि जगत्की माता गौरीजी फिर कहारहीं १ ये कैसे प्रकटभईअ किस तिथिमे वो दैत्यराज भस्मभया सो हे पितामहजी ये सव वि स्तार सहित कहिये २ श्रीब्रह्माजीवोले कि कार्त्तिकके महीनेपूर्ण मासीमें वो महाअसुर सायकाल दग्ध भया दिन में महाघोर यु भया सो वो पहिलेही वर्णन करआये ३ अरु जिसकारणसे सा सुरोसे सुरशत्रु हता जीतनेवाले पूजित किये गये इससे तिसपूर्णिमा में पृथ्वीपर मनुष्य दीपदान करते हैं ४ अरु तिस पूर्णिमामें स्नान दान और जप होम आदि जो कुछहै सो घना होताहै तिस से वे पूर्णिमा वाहुलकीकहीगईहै ५ और जो उसमें त्रिपुरारि शिवजी क उत्सव नहींकरते हैं वे कहींभी जयकोनहीं प्राप्तहोते हैं अरुउनके पुण्य जलजाते हैं ६ इससे तिसपूर्णिमामे प्रातःकाल जो शिवजीको अर्चनकरते हैं सो उनसे जो रात्रिमें पापकियागया सो सवविलीन होजाताहै७ तैसेहीजन्मसे जो पापहै सो मध्याह्नके पूजनसेहटता

है अरु हे मुनि व्यास जी सात जन्म का पाप प्रदोप अर्थात् दिन छिपे पूजन करनेसे दूरहोताहै ८ अब तुम शिवजी का प्रकट होना मुझसे कहाजाता सुनो कि तिस असुर की मृत्यु शिवजी से जानकर भी लीलासे भयभीतभई अन्तर्द्धान भई ९ जगत्की माता हिमाचलकी गुफाके मुखसे उत्पन्नभई तो सिंह वघेरेमृगोंसे व्याप्त भयानक पर्वतको देखतीभई १० अरुवो विरहसे व्याकुल मनवाली शिवजीको न देखती डरी अत्यन्त विलाप करतीभई कि हायपिता हायशिव ऐसे २।११ हेशिवजी सदासर्वज्ञ आपमुझे कैसेनहींजानते हो जो कि मैं वनमें अकेली गीदडी सी अत्यन्त पुकार रहीहूं १२ मुझको आपकादर्शन कवहोगा क्या मुझेआप भूलगयेहो हे शिवजी मैं जीवव धरनेको नहीं सामर्थ्यहू अरु न तुम्हाराविरहसहने सकती हू १३ तव से आप कहांहो मेरेविरहको नहीं सुनतेहो क्या कि मैं आपकेविना किसकी शरणजाऊं अरु क्याकरूं १४ इससे फिरभी आप हे ईश्वरपिता मुझे शिवजीसे अरु मेरेभलेपन से योग करावो तो अभी फिर आपमुझे अपनेसे जनमीही जानो १५ अरु यहीमेरा वर भी है कि उन्हींशिवजीको दिखवाओ नहीं तो इसगिरिशृङ्ग से अपनादेह त्यागकरतीहू १६ ऐसेरोतीभई उसकी उसउत्तमवाणीको सुनकर कोईक दास शूद्रजातिवाला हिमवान्को कहता भया १७ धीवरबोला कि कोई नितम्बोंवाली वाला सारे आभूषणों से सजी जो कि कानोंमे सूर्यकेमण्डल केसे कर्णभूषण पहिरे १८ अरु नाना प्रकारके रत्नोंसे शोभित अत्यन्त प्रकाशमान शिरपर मुकुटधरे अरु मस्तकमें सोला मोतियों से शोभित चौकोना धरे १९ फूल जो कि कंचनका अरु रत्नजटित मोतियोंकीलड़ जिसमें लटकरही सो मस्तक के ऊपर धारणकिने अरु नासिकामें सुवर्ण मोतियोंसे जड़ाऊभूषण अर्थात् नथ धारण किये २० अरु भुजोंमे सुन्दर वाजू अरु हाथमें सुन्दर जोशन अरु शोभित सुवर्ण रत्नोंसे सहित एथक्२ अंगुलीभूषण अर्थात् छल्ले छाप पहिरे २१ अरु मोतियों की माला जो कि शोभायमान अँगिया पर लटकरही तिसे पहिरे अरु सुवर्ण रत्नकी

सुन्दर रत्नगड़े रेशमी वस्त्रको कटिभागमें धारणकिये २२ अरु पैरोंमें सुवर्णकी गुंथी संकल अर्थात् तोड़िये अरु बजतेहुये सुन्दर पाजेब पहिर अरु पैरोंकी अंगुलियोंमें भी न्यारे२ सो२ उत्तम२ आभूषण धारण करती २३ ऐसे सो२ अत्यंत सुन्दर शरीरवाली व्याकुल अत्यन्त रोती भई मैंने देखी अरु पूछी वो मुझसे कुछभी न बोली अरु वो तेरानाम लेरहीहै २४ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे सुनके हिमाचल तुरन्त उस पुत्री के पास आया अरु हितकारकारक वचनोंसे उसे समझाता बुद्धिमान् हिमवान् कहनेलगा २५ हिमाचल बोला कि हे सृष्टिपालन संहार करनेवाली सुभ्रुकुटि तू शोच न कर क्योंकि तू सब लक्षणों से भरी पूरीहै अरु सब शक्तियोंसे संयुक्तहै अरु निष्पापहै २६ अरु हे महेश्वरी मैं न करनेको अरु किये के पलटनेको समर्थहूं अरु प्राप्तसंपूर्ण कामनावाली अरु सबप्राणियोंके भीतर विराजी २७ तू सबके अन्तर्यामी शिवजीसे वियोगनहीं कीगईहै अर्थात् वे तो सर्वत्रवर्त्तमानही हैं परन्तुभी कल्याणकारी शिवजीसे तुझे साक्षात् मिलायदेऊंगा २८ उठ२ ऐसेकह उसे लेकर अपने घर आया गौरीजी वहां सखी सहित निजमाता मैनाको देख आनन्द को प्राप्त होतीभई २९ वो शिवजीके देखनेके लिये ऊंचेसांस लेतीभई भो परमे चाववाली अपने पिताको नम्रहोकर बोली कि मुझको श्रेष्ठउपायबताओ ३० व्रत दान वा तप शिवजीकी प्राप्तिके लिये कैसा भी वो कठिन हो पर हे पिता मैं पहिलेकीतरह उत्तम तप करूंगी ३१ श्रीब्रह्मा जी बोले कि हे मुने व्यासजी पिताहिमाचलमनसे एकबेर विचार कर उससे बोला अरु कार्य सिद्धिकारी उपायबताया सो तुम शीघ्र श्रवणकरो ३२ हिमवान् बोला कि हे पुत्रि शिवप्राप्ति के लिये मैं श्रेष्ठउपाय कहताहूंगा तू श्रवणकर सो कि विघ्नों के राजा गणेशजी की उपासना जो धर्म अर्थ काम मोक्ष की दाता है ३३ अरु महेन्द्र आदि देवताओं करके अरु नारदादि मुनियों से जो अनुष्ठान कीगई अरु उनको सो२ इन्द्रपदआदि लक्षणोंवाली सिद्धियें प्राप्तभईहैं ३४ अरुउन्हीं महात्मा गणेशजी करके ब्रह्माजीको रचनेकी सामर्थ्य दीगईहै अरु

विष्णुको रक्षाकी सामर्थ्य उन्हीं सबके ईश्वरके दीगईहै ३५ अरु शिवजी को भी संहार करने मे दृढसमर्थ उन्हीं से दियागया अरु शेषजीको भी सर्वविघ्न हारी उन्हींकरके ३६ धरतीके धरनेकी सामार्थ्य सबके ईश्वरकरके दीगईहै जिनके स्वरूपको ब्रह्मादिक अरु मुनीश्वर भी नहींजानते हैंगे ३७ जो ईश्वर वाणी से अगोचर अर्थात् नहींकहेजावें अरु मनसे भी नहींग्रहणकियेजावें सो ये गजमुखजीके स्वरूपसे पहिचानने योग्यहै ३८ इससे तिसीरूपसे सब कार्यके प्रारंभमें पूजेजातेहैं सो तू मेरेकहेमार्गसे उन्हींकी उपासना कर ३९ इसप्रकार से गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे भगवतीका उत्पन्नहोना इसनामसे अड़तालीसवां अध्यायभया ४८॥

उनचासवा अध्याय॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे दयानिधे पिता गिरिराज तुम उन सबके ईश्वर जगत्के गुरु गणेशजीकी उपासना मुझसे शीघ्रही वर्णन करो १ जिसउपासना से मै शिवजीको प्राप्तहोकरके निरन्तर ही सुखको प्राप्तहोऊगी अरुमृत्युकमें लोगोंका उपकार भी होवेगा २ हिमवान् बोले कि हे देवि मै तेरेस्नेह वशसेतो अरु लोकोंके उपकार के लिये परमसुन्दर जो रहस्य अर्थात् अत्यन्त एकान्त वृत्तान्त है सो कहताहूंगा तू एकचित्तसे इसे श्रवणकर ३ कि बुद्धिमान्मनुष्य प्रातःकाल में उठकरके नैर्ऋत्य दिशामें चलाजाय अरु वहां पहिले पृथ्वीको तृण काष्ठ पत्ता से ढककरके ४ खेती सहित भूमि न होवे वहां चो न बहुत बैठे अरु न वहांमे उठकर चले ऐसे मूत्र मल छोड़कर शास्त्रके अनुसार शुद्धिका आचरण करे ५ फिर दांत जीभकी शुद्धिकरके अरु स्नानकोजाय नदी वा तडाग वा बावड़ी अथवा कूप पैही ६ पहिले मल स्नान करके फिर मन्त्रों से स्नानाचरण करे फिर मृत्तिकासे वा चन्दनसे अथवा केशर से तिलक करे ७ फिर धुये वस्त्र अर्थात् धोती अंगोछा धारण करके बैठकर एकान्तचित्त अपना नित्यकर्म सब सम्पूर्ण करके ८ फिर सुन्दर चिकनी मृत्तिका

जो छिनके पत्थररहित सुनिर्मल नदीविलकी जो होवे ज ठसेगीली तिसे सानैं ६ तिससे आप गणेशजी की सुन्दर अत्यन्त कोमल रुचिरमूर्त्ति वनावे जो सब अगों से सम्पूर्ण अरु चार भुजो से बिराजमान भई १० परशु आदि शस्त्रो को धारण करती सुन्दर स्वरूपवाली कठिनता लिये इसप्रकारकी मूर्त्तिको पीठ आसन पर स्थापन करके फिर सुबुद्धिमान् दोनो हाथ मिलाकर प्रकर्ष से धोवे ११ अरु जल आदिक पूजाके सारे उपचार द्रव से इकट्ठेकरे सो कि आठोंगन्ध अरु अक्षत लालफूल गूगुर १२ तीनपत्ती पांचपत्ती सातपत्तियो सहित दूबके सुन्दर अकुर अरु एकसौआठ नीलीदूब कीपत्ती तितनीही सुन्दर श्वेतदूबकी पत्ती लाकर रक्खे १३ अरु घी कादीवा तेलकादीवा अरु नानाप्रकारका सुन्दर नैवेद्य दलकेलड्डू मालपूवे शर्करा सहित क्षीर १४ हलका चावलोका अन्न और भी वहुतसे भक्ष्य अरु कपूर सहित सुपारीकी फाल सयुक्त अरु खाने योग्य कत्थेसेसयुक्त१५लोग इलायचीसे लगाया केसरसहित ताम्वूल अरु जामन आव वडहल आदि फल अरु दाख केले के फल भी १६ उसर ऋतु से उत्पन्न अरु हे ईश्वरि नारियल भी मँगावै अरु वहुत प्रकारकी आरती तैसेही कचनकीदक्षिणा १७ ऐसे इकट्ठी कीसामग्री जिसने सो भक्त एकान्त स्थानमें विराजमान वस्त्र या मृगचर्म वा कुशाके आसन पर बैठा १८ भूतशुद्धि को करै तैसे ही प्राणोंका स्थापन अर्थात् प्राणप्रतिष्ठा करै दिग्वन्धन पूर्वक गणेश जी आदि देवताओंको प्रथम नमस्कार करे १६ अरु शास्त्रकेमार्ग से अन्तर्मात्रि का बहिर्मात्रिकाओं का न्यासकरे अरु गुरु मार्ग से सीखी सन्निधान आदिक मुद्रा दिखावै फिर मत्र से न्यास करके षडग न्यासकरे २० पूजाकी सामग्रियोंको संशोधन करके अर्थात् देखभाल सँभालके फिर गजाननजी को ध्यावें जो एकदन्त सूप के से कानवाले गजमुख चारभुज २१ फाशी अकुशधरे देवता हाथो से मोदकोको लेतेभये अरु लाल पुष्पोकी माला कण्ठमें पहिरे एक माला हाथमेलिये २२ जो भक्तोके वरदायी अरु सिद्धि वुद्धिसे सदा

सेवित अरु कार्यसिद्धि सुबुद्धिके प्रदाता अरुमनुष्योको धर्मअर्थकाम मोक्षके देनेवाले २३ अरु ब्रह्मा रुद्र विष्णु इन्द्र आदिको करके अरु महर्षियोसे सम्यक्स्तुतिकिये ऐसेध्यानकरके आवाहनकरै २४ कि हे जगत्के आधार आपआओ जो आप सुर अरुराक्षसो से भी पूजित अनाथोके नाथ सर्ववेत्ता देवो से सब ओरसेवी पूजाकिये ऐसे आप आगमन करो २५ अरुहे देव यह दिव्य सुवर्णका सिंहासन नानाप्रकार के रत्नोसे जटित मैंने सौपाहै तिसपर आप बैठिये २६ हेदेव हे देवेश हे सबके ईश सब तीर्थोसे लाया जल जिसमें ऐसा पाद्य जो गंधपुष्प अक्षतो सहित तिसे आप ग्रहणकरै २६ अरु हे सत्य शक्तिवाले मूंगे अरु मोती पूगफल रत्न तांबूल सुवर्ण अष्टगन्ध इतनी वस्तुवाली पुष्पाक्षतो से युक्त अर्घ्य मुझसे दिया आप सफलकरो अर्थात् लेवो २७ अरु गङ्गादिक सारे तीर्थो से प्रार्थना करके लाया उत्तम जल कपूर लौंग आदिकोसे वासना किया सो उत्तमतोय स्नानके लिये आप ग्रहणकरौ२८ और चंपा असोगिया मौलसिरी चँवेली मोगरादिक सुगन्ध वालो से बसाया सचिक्कणपनकाहेतु ऐसा जो सुन्दर तैलहै तिससे आप प्रकर्षसे ग्रहण करौ २९ जो दुग्ध कामधेनु से उत्पन्न अरु सबका परम जीवन पवित्र कारक यज्ञकाहेतु सो आपके पय स्नान करनेको समर्पण कियाहै३० अरु जो शर्कराईषके समुद्रसेभई सुन्दर मनो अरु जो श्रेष्ठदही गऊ के दुग्धसे उत्पन्न शुद्ध सबजनोका प्यारा मुझसे लाया आप स्नान के लिये ग्रहण करिये ३१ जो घृत पहिलेही दिन के गोदोहन से निकला सबका संतोष कारक यज्ञोका अंग देवताओका आहार आपके स्नान को समर्पण कियाहै ३२ जो मधु रक्त मधुमक्खी से उत्पन्न सबके तेजको बढ़ाने वाला सबका पुष्टि कारक हे देव स्नान के लिये सौपा है ३३ जो शर्करा ईषके समुद्र से उत्पन्न भई सुन्दर मनोहर मैलको हरनेवाली मुझसे सौपी आप ग्रहणकरो ३४ जो गुड़सारे मीठापनका हेतु स्वादसहित सबका प्रेमकारक पोषण कर्ता ईषके सारसे उत्पन्न स्नानके लिये लाया गयाहै सो लीजिये

३५ कासीके पात्रमे कामीही के पात्रसे ढका दही मधु घृतसे भरा मुझसे मधुपर्क लायागयाहै सो पूजाके लिये आप इसे ग्रहणकरो ३६ अरु हे विभो मुझसे प्रार्थना करके सब तीर्थोसे लाया जल सुन्दर वासना किया सो हे सुरेश्वर आप सम्यक् स्नान करनेको इसे ग्रहणकरो ३७ हेदेव लालवस्त्र जो लोककी लाजको निवारण करने वाला अरु अमोल्य अरु अतिही हलका मुझसे सौपा सो इसे आप ग्रहणकरो ३८ जो जनेऊ चादीका अरु कचनका रत्नोसे जटित भक्तिसेलाया सो हे परमेश्वर देव आपइसे ग्रहणकरो ३९ अरु आभूषण जो अनेक रत्नजटित बहुतसे कञ्चनके तिस२ अगमे आप की आज्ञासे पहरावताहू ४० अरु हेदेव अष्टसुगन्धसेमिलाया उत्तम लाल चन्दन आपके बारहों अगोंमें लेपन करता हूं आप अनुग्रह करो ४१ अरु तिलकके ऊपर लालचन्दनसे मिले चावल शोभाके लिये प्रकर्ष से देता अर्थात् लगाताहू सो हे जगत् के ईश्वर आप ग्रहणकरो ४२ अरु हेपरमेश्वर पाटलपुष्प कठ चम्पाफूलदुपहरिया लालकमलकाफूल मोघरा चमेलीकाफूल इतने पुष्पोको आपग्रहण करो ४३ जोमाला नानाप्रकारके कमलो के फूलो अरु कोमल २ पत्तोसे भी गूंथी अरु विल्वके पत्रोयुक्त सुन्दर मनको हरनेवाली इसे आपपहिरो ४४ अरु दशअगोवाला गुगुल धूप सब सुगन्धि पनकर्ता सब पापका क्षयकारी मुझसे सौपा आप ग्रहणकरो ४५ हे सर्वज्ञ सवलोककेईश जो दीपक अंधेरेको नाशकरनेवाला उत्तम मगल स्वरूप इसे आप ग्रहण करो हे देव देव आपको नमस्कार पहुचे ४६ ओर जो नैवेद्य सो कैसाहै कि नाना पक्वान्न सहित क्षीर जो शर्करा संयुक्त अरु नानाप्रकारके व्यंजनोंकी शोभा से संयुक्त शाठीचावल भोजन जो सुश्रेष्ठ ४७ अरु जो दही दूध घृत इनसे संयुक्त लोंग इलायची सहित मिरचोके चूर्णसे सयुक्त कढ़ी पकोड़ो सहित ४८ अरु [illegible] मिलाभया मेथी की पिट्ठी जो क्षायसहित अरु [illegible] उडदपिसे अर्थात् पिट्ठी ४९ इनकरके [illegible] सहित अरु दलके

लड्डु मालपूवे सादे लड्डू पूरी माडे इत्यादिकोंसे संयुक्त ५० फिर जो नैवेद्य पापडोंसे भी संयुक्त अमृतसे स्वाद सहित अरु हल्दी हींग लवण सहित जो सूप भोजन है जो उत्तम ५१ सामुद्र लवण सहित आप ग्रहणकरो अरु आदरसे भोजनकरो अरु इच्छासे सुन्दर तृप्तिकारक सुगन्धित जलपानकरो ५२ आपके तृप्तभये सब जगत् तृप्तहोताहै जो आपमहात्मा अरु नित्य तृप्तभीहो अर्थात् परंतु जगत्‌की तृप्ति के लिये आप भोजन करते हो अरु आपके पिछाडी जलपान अर्थात् चुल्लूलेनेके लिये सुवासना किया जलदेता हूं ५३ अरु मुंह हाथ धोनेको फिर और जलदेता हूं और अनार मीठानींबू जामन आम बडहल आदि ५४ अरु दाख केलाफल पकेबेर खजूर फल नालियर अरु नारंगी अजीर जवीरी तैसेही ५५ ककडी हे देवेश इतने इतने फल आप ग्रहणकरो अरु मुखहाथ धोनेको फिर जल देता हूं ५६ अरु सुन्दर चन्दन कर अंग के मर्दन करनेको सुन्दर अरु नानाप्रकारके मनोहर सुगन्धि वाली चीजोंसे बना उत्तम चूर्ण ५७ जिसका सुगन्धिनाम५ अरु पवित्रहै सुगन्धिजिसमें सोसुन्दर चूर्ण आपग्रहणकरो और सुन्दरसे उत्पन्नअरु बांसके सारसेमन्यक् हुआ अर्थात् बना ५८ अरु लाखसेरंगा ऐसा जो केश वेशभूषणनाम चूर्णहै सो आपको प्राप्तहोवे और कपूर सुपारी चूर्णसहित सुन्दर कत्थेसे सहित ५९ इलायची लौंगमिला केसरसहित तांबूलसो आप चर्वणकरो अरुशेष अरु अति रेकभई अर्थात् छुटीभी पूजाके समस्त फलकेहेतु ६१ हेदेव सुवर्णकी दक्षिणा आपके आगे स्थापन करताहूं अरु तैसेही श्वेत पीले अरुलाल कमलोंसे तथा सुन्दर पुष्पोंसे ६२ गुंथी सुन्दर मालाको हे परमेश्वर आप ग्रहण करो अरु हरे तथा श्वेतरंग पांच तीन पत्तियों के ६२ इकईश गिने दूबके अंकुर मुझसे चढायेगये अरु इकईशही देवताकी प्रदक्षिणा करी ६३ सो हे देवेश आपकी परिक्रमासे पेंड पेंडपै मेरे पातक नाशहोवो अरु काठके या चांदीके तथा सुवर्णके ६४ पात्रमें स्थापन किये दीपक जो प्रकाश देनेवाले सो आप ग्रहण करो अरु हे परमेश्वर पंच आरती जो

पांचदीपकोसे वासीभई ६५ अरु रुचिर चन्द्रमाके समान दीपक जो अंधकार समुद्रकी तरंगोको निवारण करनेवाला जैसे इसकी भस्म नहीं दीखतीहै तैसेही पापको बिनाशकरो ६६ फिर नानाप्रकारके स्तोत्रोसे अरु सहस्रनाम आदि सूक्तोंसे अपने मनको अत्यत एकात स्थिर करकेइनको स्तुतिकरै ६७ सो कि हे दीनोके अधीश्वर हेदया के सागर जो आपदेवताओ के समूहोसे सेवाकिये अरु द्विज ब्रह्मा शिवजी इन्द्र शेषजी पार्वती अरु गन्धर्व सिद्ध इनसे स्तुति किये आप फिर हे प्रभो जो आप संपूर्ण अरिष्टके निवारण करनेमें केवल आपही चतुर अरु त्रिलोकके नाथ हे गणेशजी मेरी भक्तिको सफल करो आप मेरे सारे अपराधों को क्षमा करके ६८ ऐसे मूर्त्ति को पूजित करके अरु दण्डवत् प्रणाम करके फिर हेदेवि सब सिद्धियो के प्रदाता मन्त्र को जपै ६९ इसप्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासना खण्डमें पार्थिव गणेशजीकी पूजाकानिरूपणइसनामसे उनचासवां अध्याय हुआहै ४९॥

पचासवां अध्याय॥

श्रीपार्वतीजी बोली कि हे पर्वतराज मै मन्त्र नहीजानतीहूं सो आप मुझसेकहो जिससे मे गणेशजी के अनुग्रह को अरु शिवरूप शिवजी को प्राप्तहोऊ १ तो हिमवान् बोले कि हेदेवि मन्त्र नाना प्रकार के अरु नाना सिद्धियोंही के देनेवाले हे जो कि गणेशजी के अनगिनत तिनमे तुझको कुछेक बताताहूं २ कि अच्छे प्रकार से कमलासन करके अरु सारी इन्द्रियोको नियमकरके कियाहै न्यास विधान जिसने सो भक्त फिर निजइच्छा से जपकरै ३ एकाक्षर मन्त्र का लक्ष वा अर्द्धलक्ष अरु षडक्षर के मन्त्रका लक्ष वा दश सहस्र ४ तैसेही पंचाक्षरका अरु दशआठ अक्षरकाभी अरु अट्ठाईस अक्षर का मन्त्र दशसहस्र संख्या से जपना ५ ऐसे जो नाना विधि के मन्त्रो को अपनी वाञ्छित सिद्धि के लिये जपते हैं अरु हे पार्वति तू तो एकाग्र मनवाली हो मेरे वाक्य को श्रवणकर ६ कि

तू एकाक्षर अरु उत्तम षडक्षर मन्त्र को ग्रहणकर। अरु हे सुव्रते श्रावण शुदी पंचमी में तू प्रारम्भकर ७ अरु एकमहीने मात्र तू अनुष्ठान कर तो तेरा कार्य्य सिद्ध होगा। कि तू सुन्दर प्रकटही शिवजी को प्राप्तहोगी अरु और भी जो वांछित है सो मिलेगा ८ जिस स्त्री वा पुरुष से पार्थिव गणेशजीकी मूर्त्ति पूजीगई है तो वो एक भी उसका मता अर्थात् कार्य्यसिद्धि अरु धन पुत्र पशुओं को भी देतीहै ९ अरु मनुष्य दोमूर्त्तियोंके पूजनसे असाध्यको भी सिद्ध करै। अरु तीनमूर्त्तियों के पूजनसे राज्य रत्न सारी सम्पदाओंको प्राप्तहो १० जो चारमूर्त्ति पूजे सो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष भोगे अरु पांच मूर्त्तियोंके पूजनसे सर्वभूमि का राजाहोताहै ११ अरु छःमूर्त्ति पूजासे रचना पालना प्रलय करनेवाला होवे अरु सात आठ नौ मूर्त्तियोंकी पूजासे सर्ववेत्ताहोवे १२ सो कि गणेशजीकी प्रसन्नता से भूत भविष्य वर्त्तमान को जानो अरु तेतीसकरोड़ देवता अग्नि इन्द्र, शिव, विष्णु १३ अरु सनकादि मुनियों के गण ये सब दश मूर्त्तिपूजन से भक्तकी सेवाकरने लगजाते हैं ग्यारहमूर्त्तियोंकेअर्चन से निश्चय दशों रुद्रों का अधिपति होवे १४ अरु बारहसूर्य्यों का राज बारहमूर्त्तियो के पूजनसेप्राप्तहोवे अरु अत्यन्तसङ्कटसमयमें एककी वृद्धिसे पूजनकरै १५ जबतक एकसौ आठ होजवें तबतक तिस कार्य्यको अवश्यही प्राप्तहोजावे। अरु नित्य २ लक्षमूर्त्ति पूजनसे महामोक्ष को प्राप्तहोवे १६ बन्दिगृहसे छूटने की कामना वाला पांचमूर्त्तियो का पूजनकरै तो हे मुनिव्यास जी हिमवान् ने गौरीसे ऐसे कहा कि वो जन२१ वेर पूजनसे गणेशजीके अनुग्रह सेती कारागृह से अवश्य छूटजावे १७ अरु नित्य सात मूर्त्ति करै पांचवर्षतक तो वो गणेशजी मे भक्तिवाला नर महापाप से छूट जावे १८ जो नरजन्मसे ले मरणपर्यंत एकमूर्त्ति को नियमसे पूजे जावे तो वो साक्षात् गणेशही समझना। जैसे कि जिसके दर्शनसे ही विघ्ननाशहो १९ अरु जन उसीको सबकामोंमेंपूजे गणेशजीको नहीं अर्थात् उसके पूजनेसे वेभी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं तैसे अपने

पूजनसे नहींहोते २० सब रोगपीड में४ तीनउत्तम मूर्त्तियोंको नौ दिनतक जो पूजनकरै सो सारीपीड़ा को नाशकरता है २१ सुवर्ण की अरुताम्रकी अरु चांदी की पित्तल की कासी से बनी मोतियो की अरु मूंगो की ये मूर्त्तियें सब कार्य्य को देती है २२ सो हेदेवि तू ऐसे वृतकिये से सबकामो को प्राप्तहोगी जितने भाद्रपद महीनेमें चतुर्थीप्राप्तहोय २३ तब तिससे वडा उत्सवकरैं यथा ऐश्वर्य्य से आदरसे करै अरु तिनकी कथा अरु बाजेगानों से रात को जागरण करै २४ निर्मलप्रभात भये स्नानकरके पहिलेकी तरह गणेशजी को पूजै जो समर्थ वरदाता देव है फिर हवनका आरम्भकरै २५ सांगो पांग कुंडमे वा बेदीपर जपकेदशांशसे हवनकरै फिरबलिदानपहिले करके पूर्णाहुतिकरै २६ फिर गौभूमि वस्त्र धनादिकसे आचार्य को पूजै फिर ब्राह्मणोंको सन्तुष्टकरै फिर होमकेशेषकोसमाप्तकरावै २७ फिर उसहोम के दशांश से तर्पणकरै अरु तिसके दशांश से भोजन करावै ब्राह्मणों को जिमावै जो वेदके वेत्ताहोवैंकोईक जो पत्नि सहित होवैं २८ तिनकोआभूषण अरुवस्त्रदेवैंअरुयथाशक्तिसेदक्षिणादेवैं अरु स्त्रियो के गहने आंगीवस्त्र समेत उन ब्राह्मणियो को देवें २९ सिद्धि बुद्धि संयुक्त गणेशजीकी प्रसन्नताकेलिये करै पर वित्तशठता अर्थात् सामर्थ्य से अधिक न करै यथाशक्ति आचरणकरै ३० फिर प्यारे जनोंसे संयुक्त आदरसहित आप भोजनकरै दूसरेदिनमूर्त्ति को नस्थान अर्थात् पालकी मे हर्ष से विराजमान करै ३१ जोकि छत्र, ध्वजा, पताको से अरु चँवरोसे शोभायमान। अरु अगाड़ी २ किशोर अवस्थावाले डंडोसे युद्ध अर्थात् पटा खेलते चलतेहो ३२ ऐसी विधिसे उसमूर्त्ति कोलेजाय महाजल स्थान में जाकर उतार जलमें निरन्तर प्राप्तकरै अर्थात् पधराय देवै अरु बाजेगाजे की गौजसे संयुक्त अपनेघर को आजावे ३३ इसप्रकार से श्रीगणेश पुराण उपासना खण्ड में चतुर्थी के व्रत का कथन इसनाम से पचासवां अध्याय समाप्तहुआहै॥ ५० ॥

इक्यावनवांअध्याय॥

श्रीपार्वती जी बोलीं कि हेपिता तुम्हारे अमृत से वचन से मैं बहुतही प्रसन्नभई हूं। परन्तु हेहिमालय मेरेको सन्देह है सोतुम उसे दूरकरो १ हे महीधर पहिले किस २ ने ये व्रत किया अरु किसने किसको कहा अरु इससे कौन किससिद्धिको प्राप्तभया २ सो मेरे संशय छेदने के लिये आप विस्तार सहित येवृत्तान्तकहो। जो गजाननजी की सुन्दरकथा पूछताहै अरु जो कहता है ३ और भी जो मनुष्य श्रवण करताहै तौ वे तीनो पुण्यभोगनेवालेहोतेहैं अरु उन्हींका जीवनसफलहै अरु जन्म कर्म ज्ञान ये भी सबसफल हैं ४ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे गौरीसे प्रश्न कियागया हिमवान् वरदायी गणेशजी के नानाजनो से किये वृत्तान्त को कहनेलगा ५ हिमवान् बोला कि हेपार्वति मैं तुझको प्राचीनसम्बाद कहताहूंगा जोकि इस सर्व सिद्धिकरनेवाले व्रत का इतिहास सहित वृत्तान्त है ६ पहिले गिरिश्रेष्ठ कैलाश में सुख से विराजमान अरु हर्ष से परमऋषि गधर्व देवोंकरके क्रीडाकरते जगत् के गुरु शिवजी को स्तुति प्रणामकरके महातेजस्वी षण्मुख ये प्रश्नकरतेभये ८ स्कन्द जी बोले कि हे देवोंके देव जगत्के नाथ भक्तों के अभयकारी मैंने आपके प्रसादसे दिव्य नानाप्रकार के आख्यान सुने ६ पर हेदेव पिताजी मैं अमृत सुधाको पीताभया तृप्तनहींहोताहूं अब मुझको सर्वार्थ सिद्धिदायी व्रत वर्णनकरो १० जिसके अनुष्ठानसे मनुष्यों को सारी सिद्धिये हस्तगतहोजावे जिन वरदेनेवाले देवके प्रसाद से भक्तोंके सबकार्य होवे ११ शिवजीबोले कि हे स्कन्दतैंने बहुत अच्छापूछा जोकि सबोंका हितकारक पृथ्वीमें महासिद्धिकाप्रदाता तिसे मैं तेरी प्रीतिसे कहताहूं १२ कि विनायकजीका प्यारा व्रतोंमें जो उत्तमव्रतहै अरु हेस्वामिकार्तिकपुत्र जो सबपुरुषार्थोंकासाधन है १३ कि जो विनायज्ञ तैसेही विनादानअरु जप होम आदिको के विना। हे स्कन्द वो सर्वसिद्धिप्रदाता अरुपुत्रपौत्रोंकाप्रकर्षसेवद्धाने

वालाहै१४अरु ये अत्यत महतूबत राजाको वा राजपुत्रको अथवा विसकेमत्रीको शीघ्रही वशमेकरताहै१५अरु मनुष्यइसव्रतकेप्रभाव सेबहुत जन्मोमे इकट्ठे भयेभीमहापाप अरुउपपातकोंसेक्षणमात्रसे छूटताहै १६ अरु वो मनुष्य भूतलमें सबसिद्धियो का पात्रहोजाता है अरु पृथ्वीमे गणेशजीको प्रीतिदाता इसकेसमान और कोईनहीं है१७ स्कन्द बोले हे पिता महाउत्तमव्रत किसमहीने मे होवे अरु इसका बिधान कैसाहै अरु पहिले किसने किया है १८ जो मेरे सें आपकी कृपाहै तो ये सब मेरेसे कहो तो शिवजीबोले कि श्रावण शुक्लपक्षकी चोथको स्नान करके गुरूजीके घर चलाजाय फिरउन गुरूजी को प्रणामकर अरु यथाविधि पूजकरके १६ पाद्य, अर्घ्य आचमन,अरु वस्त्रादिकोंसे अरु अत्यत वडेवडे आभूषणोंसे उनको प्रसन्न करके अरु उन्हींकी आज्ञासे व्रतका प्रारम्भकरै२० हेपिता गुरूजी-सबसिद्धिकारी गणेश्वरजीकाव्रत कामना देनेवालाइसे श्री गणेशस्वरूप आपमुझे बताओ२१ऐसे गुरुसे उसव्रतके उपदेश भये तिन्हींकेसाथ गगाजीके तटपर चलाजाय यातालाब यादेवोकाखात नाम बिनबिनायजलाशय तहां यथाबिधिसे स्नानकरै२२ सो हे षण्मुख सरसो सहित तिलोकी खली से तैसेही आवले से भी स्नान करके अरु नित्यकाकर्मकरके घरको चलाआवे२३ शुद्धआसन पर बैठकर अरु गणाधिपतिजीकोपूजकरफिरगुरूजीकेबतायेमार्गसेव्रत काप्रारम्भकरै २४ मृत्तिकासे गणेशजीकी मूर्त्ति श्रावण शुक्लचतुर्थी में बनाय नित्यपूजे जबतक भाद्रपदकी चौथआवे २५ ब्रह्मचारी के नियममे स्थितहोकर ये उत्तमव्रतकरना अरु उपवासवालेतथा एक वेरभोजी वा रात्रिभोजी वा बिनमागेआयापावे इतनेसे कर्त्तव्यहै२६ व्रतीसवधान भया चौथेकालमे अर्थात्सायकालमेघृतशर्करासेसंयुक्त भोजनकरै जोकि खारी न हो किन्तु मिष्टहोवे तिसेखाताभक्तिमान व्रतकोआचरणकरै२७अरु हेषडानन छ अक्षरो की गणेश्वरजीकी विद्या अर्थात् विनके षडक्षरमन्त्रको जपताभया अथवा द्विचतुरक्षर मंत्रको तैसेही एकअक्षरके मन्त्रको जपताभया २८ अथवा हे स्कद

दशाक्षर मंत्रको अथवा द्वादशाक्षर को लक्ष वा दशसहस्र प्रतिदिन
जपनाचाहिये २९ या उससे आधा अथवा तिससेभी आधा, फिर
उसका दशवांश हवनकरै रात्रिदिन निरालस्य हुआ, गजाननजी
को ध्यानाभ्यथा ३० जब भाद्रपद मास प्राप्तहोवे तब चौथ में एक
पल अर्थात् ४० माशे प्रमाणकिये या उससे अर्द्ध २० माशे सुवर्ण
के गजाननजी ३१ मोरपर सवार बनावै अथवा सुन्दर मूषक पर
चढ़े बनावे अरु तहा मंडपबनाकर नाजकोढेरीरक्खै ३२, फिरवहां
सुवर्णका वा चादीका कलशस्थापनकरै तिसकेऊपरसोने याचांदी
तांबेका पात्रधरै ३३ फिर पात्रसहित कलशको दोवस्त्रोसेलपेटकर
जोकि पंचपल्लव सहित अरु पचरत्न संयुक्तहो ३४ तहां पहिले
पीठपूजन करके बिभु गणेशजीको पहिलेकहे एकाक्षर आदि मूल
मंत्रोसे तथा वेदके मन्त्रोसे हे पयमुख ३५ ओर परमआनन्दसे देव
गणेशजीको ध्याय तथा आवाहन करके अरु आसन तथा पाद्यअरु
आचमन देवे ३६ अरु हेस्कन्द रत्नयुक्त अर्घ्यदेवै अरु पाचोअमृत
अर्थात् दूध१ दही२ घी३ शहत४ शर्करा५ इनसे स्नानकरावै३७
अरु दो लालवस्त्र धोती अगोछादेवै तैसेही उत्तम यज्ञोपवीतचढ़ावै
३७ अरु नानाप्रकारके आभूषणोसे परमेश्वर गणेशजी को सजावे
अरु गन्ध,अक्षत,धूप,दीपोसे तथा नानाप्रकारके नैवेद्योसे ३८अरु
वड़े,पूवा,लड्डू,चावल,खीर आदिकोसे पाचो अमृतोसे अरु ओर२
भी भोजनोसे परमईश्वर गणेशजीको भोजन करावे ३९ अरु करो-
द्वर्तन हाथमे देवे अरु पूगीफल ताबूल देवै अरु सुवर्ण की दक्षिणा
देवै अरु छत्र विजनाचमरदेवै४० आरती अरु मंत्रपुष्पाजलिदेकर
स्तोत्रोंको पढ़ै सहस्त्रनामोसे स्तुतिकरके फिर ब्राह्मणोको पूजै४१
रात्रि को जागरण करके नाच गीत मगलादिको करके आनन्द से
रात्रि बितायके निर्मलप्रभातमें यथाविधिसे स्नानकरके अरु नित्य
का कर्म करके ४२ पूर्वरीतिसे गणेशजीको पूजे फिर अग्निमें हवन
करै नानाप्रकारके हव्योंसे हवन करके आचार्य का पूजनकरै ४३
अरु जो गो तिल भूमि सुवर्ण आदि है सो गुरुजी को देदेवै अरु

और२ भी ब्राह्मणोंको भूरिशोदक्षिणा देवै ४४ फिर एकसौ आठ ब्राह्मणोंको भोजनकरावै जो अधिक शक्तिहो तो अधिक नहीं इ- कईस जिमादेवै ४५ अरु दरिद्री अंधे कंगालोको क्षीरसहित अन्न देवै अरु फिर उत्तम आशीर्वाद लेकर और दक्षिणा देवै ४६ अरु प्यारे बंधुसहित मौनहुआ आदरसे आपभीभोजनकरै४७ शिवजी बोले हे स्कन्द दोसे तरको बरद गणेशजीका ब्रतकहाजो मनुष्यों को भुक्तिमुक्ति दाता अरु सुन्दर सबकाम फलप्रदाता४८ औरइसी प्रयोजनमें तुझको प्राचीन इतिहास कहताहू कि पहिले बडाधर्म परायण राजा (कर्दम)इसनामसे होतामया ४९ वो अपने तेजसे समुद्रोसहित पृथ्वीको पालताभया अर्थात् जिसका समुद्रों समेत सब पृथ्वीमें राज्यथा जिसके गुणोंसेहरेगये देवता नित्य जिसकी सभामें विराजमानथे ५० कभी दैवयोगकरके भृगुजी उसराजा के घरमें आये तो वो राजा उठकरके बहुत सन्मानही सन्मानकेसाथ ५१ श्रेष्ठ आसनपर बैठाकरके गुरुओंकीतरह उसने पूजन कियातो भोजन करके विराजमान मुनिश्रेष्ठ भृगुजीसे राजा येवचनकहने लगा ५२ राजावोले हे भगवन् सर्वतत्त्ववेत्ता मै कुछ पूछताहूं सो कहो कि मैं पूर्वजन्ममें कौनसा अरु क्या मुझसे सुकृत कियागया है ५३ जिससे मैंने ऐसा हतशत्रुकटक सुन्दरराज्यपायाहै जो और नृपोंसे न पायागया अरु और न पावेंगे ५४ कि मैं देवों के भी पूजनीयहूं अरु गन्धर्व,सर्प,यक्षों में भी हूं अरु हे मुनिजी कुवेरकी सम्पदाके समान् आप मेरी सम्पत्ति देखलेओ ५५ अरु जो त्रि- लोकी भरमें रत्न अर्थात् जो२ सुन्दर वस्तुथी सो२ अपने तेज से लाईगईहै अरु जिस२ पदार्थको मैं चाहताहूं तिसतिसी को अपने घरमें देखताहूं ५६ सो हे मेरेप्रभु ऐसा मुझे किससुकर्म से मिला सो कहो हे पुण्यवालोंमें श्रेष्ठ उसी पुण्यको मैं फिर करने को चा- हताहूं ५७ भृगुजी बोले कि हे राजश्रेष्ठ अपने समाधिके बलसे मैं कहताहूं कि तू पूर्वजन्ममें दुर्बलपवित्र क्षत्रीथा५८ कुटुम्बकेपोषण के लिये तैंने कईही कर्मकिये पर कियाभी कर्म तुझेकोइ फलदायक

न भया५९अरु अत्यंत नियमवचनोसे स्त्री पुत्रोंकरकेतू पीड़ित भया फिर स्त्रीपुत्रोको बिनपूछेही गहनवनको चलागया६० तौ सर्वदिशों में भ्रमते तेने सोभरिजीकोदेखे जो सिद्धआसनपर विराजमान अरु मुनिवर्य्यों से सेवित ६१ अरु निज शिष्यो को दुःख-नाश करने वाली ब्रह्मविद्या को कहरहे। तो हे नृप तू दिव्यसोभरिजीकोअरु और ऋपिगणोको देखकर६२तू भूमिमें दण्डके तरह गिरपड़ा अरु तिन करके तू सराहागया अरु तिन मुनिजीसे बताये आसनपर तू बैठगयाथा ६३ फिर दिव्यअवसरको पाय उनसे तू आदरकिया ये पूछताभया क्षत्रिय तू बोला कि हे स्वामिन् मुनिजी संसार-दुःखसे मैं बहुतप्रकार क्लेशको प्राप्तभया६४ अरु जायासन्तान प्यारेजनों से भी वाणीके बाणोसे ताड़ागयाहू परनिष्ठुर प्यारों-मेंसे मेरा मन वैराग्यको नहीं प्राप्तहोताहै६५ अरु हे मुनिजी शीत, उष्ण, क्षुधा तृषा इनसे पीड़ितभी मैं अत्यन्तहीहू सो मुझे अब कुछ उपाय दुःख सागरसे तिरानेवाला आप वर्णनकरो ६६ तबतो वे मुनिजी उस क्षत्रीको सर्वपापमोचन उपाय कहनेलगे ऋपिजी बोले कि जोव्रत मैं कहूंगा उसे तू निश्चिन्तमनसे श्रवणकर ६८ कि जिसके अनुष्ठान मात्रसेही सर्व्व दुःखों का प्रलय होजावे जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों-करके किया अरु तैसेही ब्रह्मर्पियो से भी किया ६९ वे सब पापोसे छूटे अरु श्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्तभये जो वरदायी- गणेशजीका धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकारो व्रतथा तिससे ७० क्षत्रियबोला कि कौन वे गणेशजी हैं क्या उनका रूपहै क्या शीलहै कैसे स्वभाववाले हैं वे किस कर्म वालेहैंअरु कैसे उत्पन्नभये हे सोसब मुझसेकहिये७१ मुनिजीबोले कि जो ब्रह्म नित्यनाम नाश रहित विगतहै रजोगुण जिनसे अर्थात् शुद्धसत्त्व शोकरहित विज्ञानमय परमअर्थकेविपयी भूत जो आदिमध्य अन्तरहित अन्तपाररहित ऐसे जोहैं तिन्हें सन्त लोगगणाधिपतिजीकहतेहैं७२जिससेप्रणवकी उत्पत्तिभई जिससेवेद भयेअरु जिससे जगत्भयाअरु जिससेये सबसंसार व्याप्तहै उन्हैं तू गणनायकजी जान ७३ जिनकी प्रसन्नताके लिये जगत्के रचनेको

कामनावाले ब्रह्माकरके पूरे शत वर्षतक अत्यन्त कठोर तप किया गया ७४ फिर प्रसन्नमन ब्रह्मा संतुष्टभये गणेशजीको नानाविधि के उपचारोंसे अरु दिव्यरत्नोंसे अरु फलोंसे ७५ अरु सिद्धि बुद्धि ये कन्या मनसे सकल्पि देताभया तब प्रसन्नभये विभुदेवजी तिस को एकाक्षर मंत्र दिये। देतेभये ७६ तिनसे लाभ हुआ वर ब्रह्मा फिर सारे संसारको रचताभया और छ अक्षर मंत्रसे वेही पहिले विष्णुजीसे प्रसन्न कियेगयेथे ७७ सोकि भगवान् विष्णु पूर्वकही विधिसे गणेशजीकी मूर्त्तिबनाकर अरु व्यंगतारहित अर्थात् संपूर्ण एकवर्षतक व्रत अरु तिसके नियमों को करतेभये ७८ फिर गणेश जीसे वर पायकर अवश्यकरके जगत्‌को पालतेभये ऐसी विधि के भूमिमें श्रेष्ठ स्तुतिकिये गणेशजीको तू जान ७९ अरु वेही संसार स्वरूप अरु अनादिहैं सबके कारणके भी कर्त्ता सो तू उन्हें यत्नसे आराधनकर कि सब दु खसे छुटजावेगा ८० क्षत्रिय बोला कि हे मुनि श्रेष्ठतर किसकालमें अरु किस विधि से ये उत्तम व्रत करना चाहिये सो मेरेको भलेप्रकारसेकहो ८१ मुनिजीबोले श्रावणमहीने शुक्लपक्षमें चतुर्थीतिथिमें व्रतकाप्रारम्भकरै फिर भक्तिसे कियेजावे जिवने भाद्रपदकी चौथ प्राप्त होय ८२ सो हे भूमिपाल तू ये व्रत कर जिससे तू सब कामो को प्राप्त होजावेगा ये व्रत उनसे तू श्रवणकरके सुन्दर नियमसहित करताभया ८३ फिर सौभरिजीके आश्रमंडलमे उसव्रत के समाप्तभये तभीतक उसका घर गणेशजी के प्रसादसे दिव्यहोगया ८४ जो दिव्य स्त्री पुरुषोंसे संयुक्त दासी दासो से संयुत वेदध्वनि से सहित अरु गो धन समेत सुन्दर हो-गया ८५ अरु उसकी स्त्री सुन्दर वस्त्र पहिरे नाना अलंकारो से सजी तैसेही संतानों से संयुक्त विस्मितहुई इसे वारं२ देखरही कि भर्त्ता कब आवैंगे इसप्रकार से ऐसी चिन्ता मे परायण भई। तितनेतु भी मुनिजीसे आज्ञापाय अपने स्थानकोआया ८७ दिव्य उस घर को छोडकर अरु अपने घरको ढूंढ़ता भया तितने तेरीस्त्री से भेजे मनुष्य तुझको उसघर मे लेगये ८८ फिर तैने भी वरदायी

जीका वो प्रभाव विशेपसे जाना अरु तिसीके प्रभावसे तू इसजन्म में राज्यभागी होरहाहै ८६ शिवजीवोले कि हेषरामुख राजाकर्दम भृगुजीका यह वचनसुनके वहुत हर्षभया जो भृगुजीने कहा था सो सव तैसाही करताभया ६० तो इसव्रत के प्रभावसे ज्ञान वैराग्य से सयुक्त राजा कर्दम यथेच्छ भोगोको भोगकर अरु पुत्रोंको निज स्थान में स्थापनकरके ६१ गणेश्वरजी के धामको पधारा जहांसे फिर नहीं आनाहोताहै हे स्कन्द यह व्रतोंमे उत्तमव्रत सवअर्थों का साधने वाला है ६२ ऐसा और व्रत या दान कभी नहींसुना सो हे स्कंद तू इस सर्वार्थ साधक व्रतको कर जो चाहै तो ६३ जो यह व्रत देव दानव गंधर्वोंकरके अरु ऋपियो मनुष्यों से किया है अरु नलसे इन्द्रमती से अरु राजाचंद्रांगद से भी कियागयाहै ६४ वो वे सवकामो को प्राप्त गणेश्वरजी के धाम को प्राप्तभये हिमाचल बोला कि ऐसेतुझकोइतिहाससहितयह भारी व्रतकहाहै तू वरदायी गणेशजी को ध्यायकरके मनसे इसेकर ६५ कि हे महाभागे तू इस व्रतकोकर जिससे तू शंकरजीको प्राप्तहोवेगी अव मैंने यह तेरे स्नेह से कहदिया है तू इसव्रत को प्रकाशमतकर ६६ इसप्रकार से श्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे हिमाचल पार्वती का संवाद इस नामसे इक्यावनवां अध्यायहुआहै ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

राजा नल से व्रत करने का वर्णन ॥

श्रीपार्वती ने पूछा कि इसव्रत को राजानल ने किससे सुनके कैसेकिया अरु वो नल कौनथा सो हे पिता मुझसे कहो इस कथा को सुनतीभई का मेरामन विश्रामको प्राप्तहोताहै १ हिमवान्वोला कि पहिले निपधदेशोंमें (नल)नाम महाराजा होता भया जो ब्रह्मण्य वेदवेत्ता शूरवीर दाता मानवाला धनवान् मानने योग्य २ रथोवाला खड्गधारी वाणलिये धनुप धरे तरकस सहित कवच वाला पराक्रमी करे अर्थात् सीखेहै अस्त्रजिसने अरु देवपूजनकिये

कामनावाले ब्रह्माकरके पूरे शत वर्षतक अत्यन्त कठोर तप किया गया ७४ फिर प्रसन्नमन ब्रह्मा संतुष्टभये गणेशजीको नानाविधि के उपचारोंसे अरु दिव्यरत्नोंसे अरु फलोंसे ७५ अरु सिद्धि बुद्धि ये कन्या मनसे संकल्पि देताभया तब प्रसन्नभये विभुदेवजी तिस को एकाक्षर मंत्र दियो देतेभये ७६ तिनसे लाभ हुआ वर ब्रह्मा फिर सारे संसारको रचताभया और ऊःअक्षर मंत्रसे वेही पहिले विष्णुजीसे प्रसन्न कियेगयेथे ७७ सोकि भगवान् विष्णु पूर्वकही विधिसे गणेशजीकी मूर्त्तिवनाकर अरु व्यग्रतारहित अर्थात् संपूर्ण एकवर्षतक व्रत अरु तिसके नियमों को करतेभये ७८ फिर गणेश जीसे वर पायकर अवश्यकरके जगत्की पालतेभये ऐसी विधि के भूमिमें श्रेष्ठ स्तुतिकिये गणेशजीको तू जान ७९ अरु वेही संसार स्वरूप अरु अनादिहै सबके कारणके भी कर्त्ता सो तू उन्हें यत्नसे आराधनकर कि सब दुःखसे छुटजावेगा ८० क्षत्रिय बोला कि हे मुनि श्रेष्ठतर किसकालमें अरु किस विधि से ये उत्तम व्रत करना चाहिये सो मेरेको भलेप्रकारसेकहो८१ मुनिजीबोले श्रावणमहीने शुक्लपक्षमें चतुर्थीतिथिमें व्रतकाप्रारम्भकरै फिर भक्तिसे किये जावे जिवने भाद्रपदकी चौथ प्राप्त होय ८२ सो हे भूमिपाल तू ये व्रत कर जिससे तू सब कामों को प्राप्त होजावेगा ये व्रत उनसे तू श्रवणकरके सुन्दर नियमसहित करताभया ८३ फिर सोभरिजीके आश्रमंडलमें उसव्रत के समाप्तभये तभीतक उसका घर गणेशजी के प्रसादसे दिव्यहोगया ८४ जो दिव्य स्त्री पुरुषोंसे संयुक्त दासी दासो से संयुत वेदध्वनि से सहित अरु गौ धन समेत सुन्दर हो॰ गया ८५ अरु उसकी स्त्री सुन्दर वस्त्र पहिरे नाना अलंकारो से सजी तैसेही संतानों से संयुक्त विस्मितहुई इसे वारं२ देखरही कि भर्त्ता कब आवेंगे इसप्रकार से ऐसी चिन्ता में परायण भई। तितनेतु भी मुनिजीसे आज्ञापाय अपने स्थानकोआया ८७ दिव्य उस घर को छोड़कर अरु अपने घरको ढूंढ़ता भया तितने तेरीस्त्री से भेजे मनुष्य तुझको उसघर में लेगये ८८ फिर तैने भी वरदायी

जीका वो प्रभाव विशेषमे जाना अरु तिसीके प्रभावसे तू इसजन्म में राज्यभागी होरहाहै ८९ शिवजीबोले कि हेषण्मुख राजाकर्दम भृगुजीका यह वचनसुनके वहुत हर्षभया जो भृगुजीने कहा था सो सब तैसाही करताभया ९० तो इसव्रत के प्रभावसे ज्ञान वैराग्य से सयुक्त राजा कर्दम यथेच्छ भोगोको भोगकर अरु पुत्रोंको निज स्थान में स्थापनकरके ९१ गणेश्वरजी के धामको पधारा जहांसे फिर नहीं आनाहोताहै हे स्कन्द यह व्रतोमें उत्तमव्रत सबग्रर्थों का साधने वाला है ९२ ऐसा और व्रत या दान कभी नहींसुना सो हे स्कद तू इस सर्वार्थ साधक व्रतको कर जो चाहै तो ९३ जो यह व्रत देव दानव गधर्वोकरके अरु ऋषियो मनुष्यो से किया है अरु नलसे इन्द्रमती से अरु राजाचंद्रांगद से भी कियागयाहै ९४ तो वे सबकामो को प्राप्त गणेश्वरजी के धाम को प्राप्तभये हिमाचल बोला कि ऐसेतुझकोइतिहाससहितयह भारी व्रतकहाहै तू वरदायी गणेशजी को ध्यायकरके मनसे इसेकर ९५ कि हे महाभागे तू इस व्रतकोकर जिससे तू शंकरजीको प्राप्तहोवेगी अब मैंने यह तेरे स्नेह से कहदिया है तू इसव्रत को प्रकाशमतकर ९६ इसप्रकार से श्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में हिमाचल पार्वती का संवाद इस नामसे इक्यावनवां अध्यायहुआहै ५१ ॥

बावनवां अध्याय॥

राजा नल से व्रत करने का वर्णन ॥

श्रीपार्वती ने पूछा कि इसव्रत को राजानल ने किससे सुनके कैसेकिया अरु वो नल कौनथा सो हे पिता मुझसे कहो इस कथा को सुनतीभई का मेरामन विश्रामको प्राप्तहोताहै १ हिमवान्बोला कि पहिले निषधदेशोंमें (नल)नाम महाराजा होता भया जो ब्रह्मण्य वेदवेत्ता शूरवीर दाता मानवाला धनवान् मानने योग्य २ रथोंवाला खड्गधारी बाणलिये धनुष धरे तरकस सहित कवच वाला पराक्रमी करे अर्थात् सीखेहै अस्त्रजिसने अरु देवपूजनकिये

जावें जिससे सो अरु त्रिलोकीभरमें गमनजिसका पवित्र ३ उसके छ गुणो को वर्णनकरते शेषजी भी गूंगेपन को प्राप्त होवें जिसके घोडोकी अरु हाथी महारथियोकी सख्याभीनहींहै ४ तेसेही तिसके धनुषधारियो की शस्त्रधारियो की अरु अग्नि शस्त्रधारियो की भी सख्यानहींहै जिसकेभयसे दिक्पालोसहित इन्द्रादिक देवताकाँपते भये ५ अरु उसके दमयती भार्याभई जो सुन्दरताकी स्थान ब्रह्मा जीने सबको दमनकरके अर्थात् निजवशमें रोककरके उनका सब सार २ ग्रहणकरके ६ उससार से ये बनाई सो दमयती ऐसे वि- ख्यात भई उसने दमयती को लोकमें स्थित नारियोकी सुंदरता उसे देदई ७ जो नानाप्रकारके आभूषणो से भूषित नारनालों से सुशोभित मोतियोके हारसे सजाहै कठजिसका श्रेष्ठगुणोसे सयुक्त सुंदरशोभावाली ८ जिसका मत्री पद्म हस्त बड़ापराक्रमीभया जो बुद्धिसे वृहस्पतिके समान अरु नम्रतामें अगिराजी के समान ६ ऊचेपन में सुमेरुके समान अरुगभीरतामें समुद्रके समान कैभी वह महा मनस्वी नल राजा बैठाभया सभा गृहमें राजोकी मण्डली में विराजमान भया तिसके अगाड़ी सुन्दर दर्शनवाली अप्सरा ना- चरहीं १०।११ अरु ब्रह्म ऋषिगणसे सहित तिसकोबदीजन स्तुति कररहे इतनेही समय में गौतमजी इस राजाके पास आगये १२ तो राजासे उठके निज आसनपर बैठायेगये अरु परम भक्तीसे पू- जनकियेगये फिर उनसे नल पूछनेलगा १३ नलबोला कि हेस्वामिन् महामुनिजी मैं आपके दर्शनसे अनुग्रह किया गयाहू अरु अब मेरा जन्मराज पिता माता कुल जीवन १४ सफल हुआहै अरुहे महामुने अब आप अपने आनेका कारण शीघ्रकहो गौतमजी बोले हे राजन् तेरे ऐश्वर्य्यको देखनेकी मेरीभी बड़ी अभिलाषाहै १५ कि स्वर्ग में स्थित देवता ब्रह्मा इन्द्र विष्णु शिवजी भी स्तुति कररहे हैं तू मृत्यु लोकमें स्थितभी धन्यहै जो मनुष्य अरु देवताओसे सराहा जाताहै १६ मै सदा तृप्त भी तेरी विभवता अरु पूजन को देखकर तृप्त हुआहू अब मुझे आज्ञाकर मैं अपने आश्रम को जाऊगा १७ राजा

बोला कि हे ब्रह्मन् वेद वेदाङ्गवेत्ता सब शास्त्रोंको प्रवर्त्त करानेवाले हेदयानिधे आप एकक्षणभर ठहरकर मेरेसंशयको छेदो १८ मुनिजी बोले हेमहाराज आपने अच्छापूछामें स्नेहभावसे ठहरगयाहूं क्यों-किनाग नृप अरु देवता जो तेरी आज्ञाको नहीं उल्लंघते हैं १६ राजा बोला कि हे ब्रह्मन् मुझेही इस मेरे ऐश्वर्य्य को देखकर संशय हो रहाहै यहऐसामेरे किसतपसे वा पुण्यसे विभवहोगया २० सोतरव से कहा कि मैं पूर्वजन्म में कोनथा मुनिजीबोले कि गौड देशसे परे देशमें(पिप्पल) नामपुरमें २१ तू पहिले दरिद्रीज्ञानी क्षत्री होताभया अरु स्त्री पुत्र अरुप्यारोंसे वाणीके बाणोंसेभी अत्यन्तताड़ागया २२ तौ तू रात्रिको सबसे न पूछकर उस दुःख जन्यज्ञान से गहनवनमें चलागया जो सिंह बघेरे गज मृग अरु वृक्ष बेलोंसे २३ सेवित अरु ठंढे जलोंसे सेवित अरुसरोवर कमलोंसे सेवित आश्रम वनमें भ्रमते भ्रमते तैने देखा २४ जोकि तप निधि कौशिकजीके वेदध्वनि से शब्द किया तहां तू जायके अरु उन कौशिकजीको भक्ति भावसे नम्रभया २५ कौशिकजीसेउठाया अर्थात् खडाकियागया जो दीनो के सबओरसे नाथ अरु दयावान् तिनसे सो वे तुझको दुःखितजान कर आशीर्वाद देतेभये २६ कि मेरे देवेश गजाननजी तेरा शुभ कारक होंगे तिनके सुन्दर आशीर्वादको सुनकर तूपरमहर्षको प्राप्त भया २७ फिर उन विप्रजीसे तू सब काम दाता उपाय को पूछता भया हे राजन् जो दरिद्रताका नाशकारी भुक्ति मुक्ति प्रदाता अरु कल्याण स्वरूप २८ ऐसा गणेशजीका आराधन कौशिकजी तुझसे कहतेभये कौशिकजीबोले कि हेनराधिपते तू १महीनेमात्र गणेशजी का व्रतकर २६ अरु मृत्तिकाकी गणेशजीकी सुन्दर दर्शनवाली मूर्त्ति बनाव अरु पूर्वकही विधिसे पूजनकर अरु कथा सुन ३० प्रतिदिन महीने तक फिर सिद्धि को प्राप्त होगा मुनिजी बोले कि राजा ऐसे सुनकर उन कौशिकजीसे फिर पूछने लगा राजाबोला कि मैं गजा-ननजीको नहीं जानता मुझसे उनका स्वरूप कहो उन परब्रह्म देवोंके देवकोमैंजानकर अरुउनकाउत्तमव्रतमें करूंगा ३१।३२ मुनि

जीबोले कि ऐसे उस राजा के प्रश्न किये मुनि श्रेष्ठ कौशिकजी उन अकथनीय स्वरूप परमब्रह्मरूपी गणेशजी के जो किये विकारवाले स्वरूपहैं तिन्है राजासेकहनेलगे कौशिकजीबोले कि जो सबलोको के कर्ता अरु पिता माता जो जगत्का गुरु अरु जो ब्रह्मा इन्द्र शिव विष्णु इन्होके ध्यान करनेयोग्य सो गजाननजी है ३३।३४।३५ मुनिजी बोले कि तू ऐसे उनका वचन सुनके उन मुनीश्वरजीको प्रणाम करके फिर उनकी आज्ञापाय अपने घरआया ३६ और श्रावण शुदी चौथको उत्तम व्रतका आरम्भ करके गणेशजीकी यथा कथित मृत्तिका मय मूर्ति वनाताभया ३७ अरु ठहरने में बोलने में तथा न बोलनेमें वा चुपरहनेमें चलनेमें सोनेमें भोजन करने में देवगजानन जीको ध्यानकरते तू अति उत्तम सिद्धिको प्राप्त होता भया ३८ नाना प्रकार हाथी घोडे रथ आदिको से अरु गो धन अकेठों से दासी दासो से सयुक्त श्रीमान् तू व्रतके प्रभाव से होगया ३९ अरु तू गणेशजी की प्रसन्नता के लिये सबदान देताभया अरु हर्षसे महामोल का गणेशजी का मदिर वनवाताभया ४० फिर यथेच्छ भोगोंको भोगकर कालके वलसेमृत्युको प्राप्तभयातो निषध देशमें नलनाम वाला राजा भयाहै ४१ इससे त्रिलोकीके जनोसे वदना किये तुझमें अचल भक्ति उत्पन्न होरहीहै अब आज्ञाकर जो पूछा सो वताया४२हिमाचल बोला कि ऐसे राजानल गौतमजीके गये पर व्रतकरताभया उनकेविश्वाससे हुआहै विश्वासजिसकोसोसुंदर शुभमूर्ति वनाकर४३अरु नित्य२भक्तिसे पूजकर अरु कथा श्रवण करके सो राजा इस व्रतके प्रभाव से सारे कामो को प्राप्त होता भया ४४ हे कन्ये गौरि ऐसे नलने व्रत किया सो तेरेसे कहा जो उसे गौतमजीने पूर्वजन्म में किया व्रतवताया सोही४५ अरुइसका सम्पूर्ण प्रभाव किसीसे भी कहनेको नहीं होताहै ४६ इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासना खण्डमे नलके व्रतका निरूपण इसनाम से बावनका अध्याय हुआ ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

हिमाचलबोला कि हे शुभानने गौरि अब मैं तुझको जैसे राजा चन्द्रांगद से अरु तिसकी रानी इन्दुमती करके जैसे यहव्रत किया गया सो कहताहूं तू सुन १ मालवे देशमें विख्यात (कर्णनाम) से नगर भया वहा (चन्द्रागद) नाम राजा अतिही पराक्रमी भया २ अणिमा से आदि आठ सिद्धि सहित अरु सब शास्त्रार्थ के तत्त्वको जाननेवाला यज्ञकर्ता दाता महाज्ञानवान् वेद अरु वेदांग पारगामी ३ जिसकी सभा मनुष्योंको अति क्रमण करके अर्थात् तुच्छ करके वर्त्तनेवाली जो देवोंकी सभा तिसे भी उल्लंघ गई अरु नेत्रोंका तेज सूर्य्यकीसी कमनीय किरणोंसे मानो चुरातीही होय ४ जिसमे अति निर्मल वस्त्र रत्नो जडे थंभो के आश्रय से है सुते कईक नील अरु लाखे पीलेपनसे विचित्रताको प्राप्त अर्थात् रंगसे मालूम होते थे ५ अरु वहइन्दुमती अत्यन्त सती वडभागिनी पतिकी शुश्रूषा में रत धर्म स्वभाव नियमों में परायण सासु ससुरेकी सेवा करने वाली ६ अरु घरके कामोंमें स्वस्थ मनवाली देवता अतिथियों को पूजनेवाली अरु वहधर्म स्वभाव वालाभी राजा चद्रागद मन्त्रियोंसे अत्यंत प्रार्थना किया कभीक दैवयोगसे शिकार खेलने को गया जिस वनमें जो वन व्याघ्र सूकर मृग पक्षियों से संयुक्त था ७ यह राजा नीलाअंगरखापहिरेअरु नीलहीपगडीदुपट्टेवालाबांधीहै गोह की अंगुलिरक्षाअर्थात्जुरीवजिसने अरु छुरी खड्ग ढाल लगाये८।६ वेगसे घोड़ेपर चढा शर धनुष हाथमेंलिये पराक्रमी अरु वैसेरवीरों के समूहोंसे अरु मंत्री नौकरोंसे सयुक्त १० वहावराह अरु मृगोंको मारता भया अपने नगरको पहुंचाता राजा वनमे भ्रमता राक्षस वर्य्यों करके देखागया ११ राजा उन राक्षसो को देखकर जैसे शीतज्वरवाला पुरुष तैसे कांपता भया जो दैत्य गुफासे मुखवाले गढेसे नेत्रवाले फाडे मुख आकाशको स्पर्श करने वाले अर्थात् अत्यंतलम्बे १२ उन्हें देखकर सारे वीर अरु सेवक जनभी भागगये

चौवनवां अध्याय॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं कि हेपिताजी उसके मूर्च्छितभये मनुष्योंने तब क्या कामकिया सो मनको आनन्ददायी वृत्तान्त आप मुझसे विस्तारसेती कहो १ हिमवान् बोला कि तब तो सारे नगर वाले जो नानावाक्यों में चतुर अपने आंशुओंको पोछकर और उसराज पत्नी को समाधान करते भये २ जन बोले कि हे माता उठ शोच मतकरै पुत्र में मनलगाव शोकका आंशुप्रेत को जलाता है तिससे तू अब पतिका कल्याणकर ३ अरु हेशुभमुखी मनुष्योंमें चिरंजीवि कोई नहींदेखाहै मनुष्यो से जीर्णवस्त्र जैसे छोड और पहिराजाता है४ तैसेही देहवाले करके शुभशरीरभी औरही ग्रहण कियाजाताहै हे कल्याणरूपे यह बडाआश्चर्यहै कि आप तो मृत्युके मुखमेंबैठा५ अरु दूसरे मरेको शोचताहै जो मरण धर्मवाला होनेवाले निजदेह से अपने वियोग को नहीं समझताहै ६ दैवकाल के वश मे स्थित इससारे प्रपचको यह मेराहै ऐसे अज्ञान से मान रहाहै जो ब्रह्मा से ले जो स्थावरपर्यंत समुद्रोसहित चराचर ससारहै ७ उसेनाशवान् जानके शोकको तजके हे सपूतवाली तू खडीहोजा पुण्यस्वभाव धर्मात्मा तेराभर्त्ता मुक्तिको प्राप्तहुआहोगा ८ अरु जो जीता होगा तो फिर कभी आयही जावेगा या हमकिसी यहां आये भूत भाविवेत्ता मुनीश्वरजीको पूछतेहैं वे सबबता देवेंगे फिर जो कर्तव्य होगा सो सब करेंगे ९ । १० हिमाचल बोला ऐसे लोगोंसे समझाई इन्दुमती सबके वचन से क्षणभर स्वस्थरही वस्त्रसे आंशुओं को पोछकर ११ तब आये सबलोगों को भेजती भई अरु अपने सुहागकेलक्षणोंको तजके अत्यन्तही दुर्बलताकोप्राप्तभई १२ रोती शोचती लम्बेश्वास भरती बार २ मूर्च्छित तबतो बारैवर्षबीते दिव्य दर्शन नारदजी१३ तिसके घरमे आगये जो मुनिजी दैवइच्छासेही विचरते रहतेथे वह तिन्हे देखहीके भर्त्ताके कार्य्य को कहती विलाप करतीभई १४ अरु जो बारै वर्ष का दुःख सो उनको कहा मुनिजी

उसकेरुदनको सुनके उसे प्रसन्नकरते यह कहनेलगे नारदजी बोले कि १५ तेराभर्त्ता कहीं विराजमानहै तु उसे शोचनेको नहींयोग्यहै तू नीलवस्त्र से अपना शिर ढकले अरु कुंडल १६ कानों में पहर ले अरु मस्तक में सुन्दर केसर लगाले अरु हाथोमें बाजूबाँधले कंठमें मंगल वस्त्र धारण करले १७ हिमवान् बोला सत्यवादी सर्ववेत्ता उन मुनिजीके वचन करके विश्वास को प्राप्त वो उसीकाल में सब मँगाके हर्षीभई यथायोग्य धारण करतीभई १८ पहिले नारदजी को पूजके अरु और सब ब्राह्मणो को बुलाकर उनसबो को पूजके अनेक से दानदेतीभई १६ बाजे बजवातीभई अरु हर्षसेघर२ शुभ इन्दुमती तब शर्करा भेजती भई २० फिर उसने वस्त्र ताम्बूल दे करके और जनोकोभी जाने की आज्ञादई फिर देव मुनि नारदजी को आदरसे प्रणामकरके २१ राजकुमारी अपने पतिकी प्राप्तिके लिये उपाय पूछनेलगी इन्दुमतीबोली कि हेमुनिजी मेराभर्त्ताकहां रहता अरु कैसे रहताहै २२ अरु हेवेदवेत्ता जी किसउपायसे मुझे उनका दर्शनहोवे २३ नारदजी बोले कि मैं तुझको अब विस्तार से परमव्रतको कहताहू उसे परम हर्षसे श्रावणशुक्र चौथको आरम्भ करै २४ तो नदी तालाव या बावडीमें दाँतुन पहिलेकरके प्रभात समयमें संकल्प पूर्वक स्नानकरै २५ श्वेतवस्त्रपहिर घर मे आकर मृत्तिकामयी चारभुजावाली गणेशजीकी उत्तम मूर्त्ति श्रेष्ठप्रकारसे करै जो मनको रमणकरानेवाली हो २६ फिर स्थिर मनसे षोड़श उपचारो से पूजनकरै अथवा एक अन्नखाय वा एकवेर भोजन करै ऐसे प्रयत्नकरके आप प्रयत्न से आराधन करै २७ अरु गानवाजे नृत्यादिकोंकरके अरुब्राह्मणोके भोजनोकरके ऐश्वर्य्यजैसाहो तथा हे शोभने भारी उत्सव करै २८ हे शुभे तू ऐसे व्रतकर तिससे तू भर्त्तासे संगम को प्राप्तहोवेगी जो तेरापति पाताल लोक में रुका जीताहै २६ सो हे सत्यवालि मैं तुझको सत्य कहता हूं मेरा कहा मिथ्यानहींहै हिमवान् बोला कि वो उन मुनिजी से ऐसे कहीगई तो उसने आदर से उस व्रत को प्रारम्भकरा ३० कि मुनिके गये

मान अरु सौ लट्ठिधरे जवान उसके आगे२ हटाते चले २३ अरु अनेकसे वीर जो अग्निसे तीव्र शस्त्रधारी अरु हाथी घोडोके सवार अनेकसेही चले अरु राजाके बामदक्षिण अर्थात् इधर उधर लाख हाथी धीरे२ चले २४ अरु नट नाचनेवाली स्त्रियाअरु बाजेबजाने वाले बन्दीजन अगाडी२चले अरु तिनके पीछे२ हस्ती सवार आदरसे पुरमें प्रवेश करतेभये २५ तो उससेनाके रज से व्याप्त सूर्य जीका प्रकाशहतभया अर्थात् धूलसे अँधेराहोगया उससमैभयेपुर मे कुछ भी न देखपडा अर्थात् रजोधकार बहुतहुआथा २६ फिर सब आपसमें नमस्कार कर२के अपने २ घरगये जो मुख्य थे सो राजघरलेगये राजासे प्रथम पूजाकिये २७ फिर वस्त्र ताम्बूल देने से अरु उसराजा से आज्ञापाये वे भी घरआये अरु राजा ब्राह्मण जिमाकर आपभी जातिवालोंके साथ भोजन करताभया २८ फिर रातको राजारानी सुन्दर शय्यापर जो परममौल्यके बिछौनेसहित ऊपरके आस्तरण अर्थात् चद्दर सहित २९ अरु वे वार२ , शोचते निज२ दु खको कहनेलगे फिर पुरोहितकरके शांतकिये सुखसेसोते भये ३० तो उत्तमराजा उस बिनायकजीके व्रतकी महिमाको सुन करके जो निजपत्नीसे अनुभवकिया तो उसे आप भी करने को मन धरताभया३१ तब राजाचन्द्रागद श्रावणमहीनाआये हे शुभानन बालि भारी उत्सवकेसाथ इसव्रतको करताभया३२ व्यासजीबोले कि पार्वती ऐसे पिताके वचन सुनके अत्यन्तही हर्षित भई श्रावण के महीनेको प्राप्तहोकर आदर से व्रत करतीभई ३३ यथा कथित विधिकरके मूर्तिबनाय अरु यत्नसे उसकी पूजाकर२ जलही पीती भई अरु गजाननजीको ध्यातीभई ३४ तबतो शंकरजीका भी मन चंचलताको प्राप्तभया तो त्रिशूलधारी आप तिसपार्वती के आश्रम आतेभये ३५ सोकि चौथको गणेशजीका व्रत समाप्त भये देवीजी अपने आश्रममें आये बैलपर चढ़े शिवजी को देखती भई ३६ तौ तुरन्त उठ इनके दोनो चरणारविन्दो को हर्षसे प्रणाम करतीभई अरु संसारके शंकर शंकरजीको यथाविधि से पूजन करतीभई ३७

अरु प्रेममें मग्नभई पार्वती महादेवजीको यहकहनेलगी देवीबोली कैसे मुझेछोड़ आप चलेगये क्या मुझेभूलगयेहो ३८ हे विभोशिव जी आपके वियोगसे पलककाल भी मुझेकल्पके समान होगयायह पितासे बताया गणेशजीका व्रत मैनेकिया ३९ वरदाता गणेशजी का तो तिससे तुम्हारा दर्शन प्राप्तभया ब्रह्माजीने कहा कि तिसी समयमें हिमवान् वहांआया अरु आदरसे गौरीकाकर शंकरजी के करमे करताभया अर्थात् गौरीशंकर मिलाप होगया ४१ तब तो गन्धर्व सहित सारेदेवता आदर से गजाननजी को पूजतेभये अरु सज्जनोंके शिवनाम कल्याणकारी गौरीशंकरजी भी श्रीगणेशजी को पूजतेभये ४२ तो देवदुन्दुभिया बजनेलगीं अरु प्रकटही पुष्पो की वर्षा होतीभई अरु सारेदेव गजाननजीको नमस्कारकर नाना प्रकारके स्तोत्रोंसे स्तुति करतेभये ४३ अरु जय२ शब्दों से शंकर जीभी गजाननजीकी स्तुति करतेभये अरु आधेशरीर में गौरी को करके तुरन्तही वृषपर चढ़कर कैलास के शिखरपर गये अरुसबभी निज२ निकेतनोंको पधारे ४४।४५ श्रीब्रह्माजी बोले कि हे व्यास जी जो कि तुमनेपूछा सो यह सारा हमने तुमसेकहा जो गणेशजी का अरु तिनकेव्रतका जो माहात्म्यथा सो हेमहामुनिजी कहाहै४६ अबमें औरभी एककथा तेरेसेकहताहूं जिसको सुनकर नरसबपापों से विमुक्तहुआ कामनाओं को प्राप्त होवे॥ ४७॥ इस प्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्ड में गौरीशंकरजी का संयोग इस नाम से पचपन का अध्याय हुआ॥ ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

भृगुजी बोले कि हेराजन् सोमकांतमैंनेयहमाहात्म्यतुमसेवर्णन किया फिर सुन और जोकुछ व्यासजीने श्री ब्रह्माजीके मुखसे श्रवणकिया सो १ राजासोमकांत बोला अमित बुद्धिवाले व्यासजी ने कैसे ब्रह्माजीके मुखसे सुना है हे महामुनि भृगुजी आप मुझ से कहिये २ भृगुजीनेकहा कि व्यासजी इसकथाको श्रवणकरके फिर

कि आपके दर्शनके लियेआयाहूतोहेइन्द्र वैसी स्वरूपता और कहीं भी न देखने में आई २८ इन्द्र बोला कि हे राजन् मै नारदजीको पूजके अरु उसीक्षण तिन्हें बिदाकर अरु अत्यन्तही चावपनेसे तिस विधिके उन मुनिजीके देखनेकेलिये गय२६श्रेष्ठ विमानमे बैठ कर जोमनसेपवनकेसेवेगवालातोतहीं उनसेगजानन स्वरूपमुनिजीको देख पूजा करके३ उनभुशुण्डीजीको प्रणाम करके अरु उनसे किये सन्मानको लेकरके तब तो परिवार सहित अपनी अमरावती को जाने चाहताहू ३०तो जितने तेरे नगरके निकट यहविमानआया तिननेही तेरे दूत पापकर्त्ता कुष्ठीकी दृष्टि करके ३१ इस भूमिदेश मे गिरपडा हेनृप यहसव तुमसे कहाहैं शूरसेनबोला कि हेइन्द्र भुशुण्डिजी करके गजाननजीकी स्वरूपता किस तपसे प्राप्तकी गई सो हे प्रभोयह आप मुझकोकहो क्योकि उनकी अमृत स्वरूप कथा को श्रवणकरते मेरी तृप्तिनहीं होतीहै ३४ इसप्रकार गणेशपुराण उपासना खण्डमें छप्पनवां अध्याय हुआ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

इन्द्रबोला कि हां मै तुम्हें इस प्राचीन कथाको कहताहूगा जैसे तिसकरकेगणनाथजीकी समानपन भक्तिसे प्राप्तभया १किदण्डकवन देशमें (नंदुरनाम) नगरमे एक दुष्ट(कैवर्त्त)नामसेनामी विख्यात अर्थात् अत्यंत दुष्टभया २ जो बालपनेसेले चोरी में रत जवानी में जारकर्म अर्थात् परस्त्री गमनकारी अरुप्रत्यक्षही दृष्टिहटे धनको हरता अरु गालीदेता३ अरुझूठीसौको खाजावे जो पराये हृदयको भेदकरने वाली हैं तब तो वो जूवे खेलमेरंजा तिससे नगर सेती निकासागया ४ लोगोंकरके तो बाहर अत्यंत दूर पर्वतकी गुफा वनमेंस्त्री सहित रहातोभी वनमें मार्गमें, बहुत सेपथवालोंको मारता भया ५ ऐसे बहुत धनी होगया तो नानाप्रकारके आभूषणों से पुत्रसहितरानीकोसजाता अरुचालाकीसे उसे सतोषकराताभया६ अरुशस्त्र तलवार-ढाल फांसे अरु उत्तम धनुष अरु दोनो और लोहे

डंडे अरु दोनो ओर बड़े बाणधारी अरु तरकसोंको धारण करता वृक्षों के ऊपर चढ़ा तथा उनके छेदोंमें घुसा बहुतो को मारता भया ७ अरु नानाप्रकारकी वस्तु अरु वस्त्र आभूषणों को लाकर घरमें इकट्ठे करतारहा अरु और २ नगरोमें बेचतारहा ८ ऐसे निज घरमें सदैव भोग भोगतारहा ऐसे पापके आचरण करनेवाला वनमें पशुवो को भी मारतारहा ९ एक समय किसीकेपीछे योजनतक दौड़ा वो इससे दूरचलागया अरु यह अखटकर गिरपड़ा १० तब वो खोटा बड़ेखेद से उठकर धीरे २ चला तो वो मार्गमें चलता २ सुन्दर गणेश्वरजीके तीर्थको देखताभया ११ तो उसने वहां केवल परिश्रम दूरकरनेको स्नानकिया फिर वो स्थानकोजाता मार्गमे मुद्गलजीको देखताभया १२ जोगणेजीके मंत्रको नामसहित जपरहे इन्हे देखयेकोश रहित अर्थात् नगा खड्ग उठाकरके वर्त्तक नामनामी मारनेको मति किये मुद्गलजी के पास आया तो उसके सब शस्त्र गलगये अरु दृढ़ मुट्ठीसे तलवारभी गलगिरी १३।१४ तो तिसी क्षिनसे उस दुष्टकी बुद्धि औरही अर्थात् श्रेष्ठ होगई गजाननजीके भक्त मुद्गलजीके प्रसादसेती १५ उसने इस विधि को देखकर मुनि मुख्य मुद्गल जी हंसते भये अरु पूछा कि तेरे शस्त्र कैसे गल गये किये सारे बधे भी कैसे गिरपडे सो कहो १६ कैवर्तक बोले कि गणेश तीर्थके स्नानकरके अरु मुनिजीके दर्शनसे ज्ञान वैराग्यसे संयुक्त भया वो मुद्गलजीसे बोला १७ कि हे ब्रह्मन् मैं परम आश्चर्यमानरहाहू कि कुंडमें स्नान कियेसे अरु मुनिजीके देखने से मेरीमति उलटी अर्थात् सुधरगई अरु आपके दर्शन से अत्यन्तही होगई है १८ कि बालपनेसे मेरी बुद्धि दुष्ट अरु पापकर्ममे परायण होतीभई अरु हे प्रभो अबतक मैने अनगिनतही पापकिये हैं १९ अरु अभी आपके प्रसाद से मेरी मति निर्वेद अर्थात् ज्ञानको प्राप्त भई है अरु अब मैं फिर इनगलके गिरे शस्त्रोंको नहीं धारण करूंगा २० मेरे परआप परम अनुग्रह करो कि इस संसार सागर से उद्धार करो क्योंकि साधुजन दीन दुष्कर्म कर्त्ताओं परभी अनुग्रही करतेहैं २१ हे महा

मुनिजी मैने साधवोंकासंग निरर्थककभीनहीं देखाहै जैसे निधि का स्पर्श धातुओं मे वृथा नही होताहै २२ इन्द्रबोला कि ऐसे कहे मुद्गलजी दयासहित उससेबोले शरण आयेके परित्याग में विशेष से दोषस्मरण करते २३ मुद्गलजी बोले कि दानादिक विधिके प्रयोगहुये और कही अधिकार नहींहे अर्थात् दानही सर्वोपरि है पर तबभी मैं तुझको नामजप बताताहूं प्रसन्नतासेती २४ जो गजाननजीका परम सिद्धिकारी सो हे नृप कहता हू तब तो कैवर्त्तने मुद्गल मुनिजीको प्रणाम किया २५ अरु उन्होने इसके शिरपर अभयकारी कररक्खा अरु(गणेशायनमः)येनाममन्त्रबताया२६ अरु उसके अगाडी भूतलमे एकलट्ठी रोपदई उसे प्रीतिसे कहाकि जब तक मेरा आनाहोय २७ तथा तबतक ये लट्ठी अकुरसहित अर्थात् हरीहोवे तबतक इसमंत्रको जपेजा सोकि तू एक आसनबैठा पवन भक्षी एकाग्रचित्तहुआ जप २८ अरु सामस मेरे इस लट्ठीके मूलमें जल डालतारह इन्द्र बोला तब कैवर्त्त नामी मुदगलजीसे उपदेश किया जीवनेमें निराशहुआ उन मुनिजीके अतर्द्धान भये ३० एक आसनबैठा वनमे उसनाम मंत्रको जपताभया उसमुनिजीकी लट्ठी को आगे धरकर वृक्षकी छायामें समाश्रयभया ३१ जोकि आहार रहित चेष्टा विवर्जित जीते हैं इन्द्रियोकेगण जिसने सो वसी ऐसे सहस्र वर्षबीते वो लट्ठी हरीभरी भई ३२ फिर वो मुनिजीके आगमनकी प्रतिदृष्टि अर्थात् बाट निहारताभया जो बबंई तथा जालों से लपटे शरीर लतासमूह सहित३३तब तो दैवयोगसे मुद्गल जी भी उस देशपर आगये अरु तब उस लट्ठीको अरु उसकैवर्त्तकोभी स्मरण करतेभये३४फिर भ्रमते २ उन्होने वो हरीभरी उत्तम लट्ठी देखी अरु बमइयोंसे लपटे शरीर उस कैवर्त्त कोदेखा३५ जोसारे मुनियोंसेभी दुःसाध्य तपको कररहाथा अरु जो केवल नयनमात्रही प्रयत्न करते मुनिजी करके लक्षण किया अर्थात् जानागया ३६ तो मुनि श्रेष्ठ मुद्गलजी इसके देहमें स्थित बमई जालोंको हटा कर अरु मत्रपढ़ जल से इसके सारेशरीरको आसिंचन करतेभये३७

तभी दिव्यदेह उसको मुनि श्रेष्ठबोले जोकि उनके करहीके मिलने से गणेशजीकीसी स्वरूपता को प्राप्त हुआ कैवर्त्त तिसको ३८ द्विकर विनायकजी के शुभनाम मन्त्रको जपते भये उसको तो जब इसके नेत्रखुले तो मुनिजी करके ज्ञान को प्राप्त भया ३९ अरु उसके नेत्रसे उत्पन्नभया अग्नि विजलीकीनाई आकाशमेंगया जो वन्हि त्रिलोकीको जलानेके लिये तय्यारभया तो उन मुनिजीसेही वारणकिया अर्थात् हटाया गया ४० वो भी उन निज गुरु करुणा सहित मुनिजीको आनमनकर अर्थात् साष्टांगदण्डवत् प्रणामकरके अरु आनन्दयुक्त आलिंगन कर्ता भया जैसे पुत्र पिताको स्पर्श करताहो४१ तब नाम कैवर्त्तक मुद्गलजीसे उपदेश कियागया अरु इन्होंनेभी पुत्ररूप उसे वमईसे फिर उत्पन्न भया माना४२ सो कि मुद्गलजीने आदर सेती इसकानाम करण संस्कार किया अरु हे राजन् उसके भवोंके मध्यसे शुण्ड निकसी तिससे वो (भुशुण्डी) भया ४३ फिर मुद्गलजीने इसे एकारमंत्रका उपदेश किया ४४ अरु फिर इसे वरदिया कि तू मुनिश्रेष्ठ होजा अरुइन्द्रआदि देवता-गन्धर्वोसे अरु सिद्धोसे सदा सर्वथा पूजने योग्य होजाव ४५ जैसे देव गजाननजी ध्यान किये पाप नाशक देखे तैसे तूभी हे मुनि भुशुण्डी ऐसे विख्यात होजा ४६ जिस२ को तेरादर्शन हो सोही नर धन्य२ होजावे अरु तेरा आयुर्बल भी मेरे वचनसे लाखकल्प कालहोवेगा४७ इसे मुद्गलजीके ऐसे२व।देतेभये इन्द्रादिक देवता अरु नारदादिमुनि ये सब दर्शनको आये ४८ अरु उसे प्रणाम करके कहनेलगे कि हे भुशुण्डिजी तुम्हारे दर्शनसे हमारा जन्म सफल है अरु हमारी विद्या अरु माता पिता अरु तप यश येभी सफल भये हैं४९ अरु हेमुनिजी तुम्हीं गणेशजी हममे पूजनेयोग्य हो अरु इसने भी सब देवादिकोंको पूज प्रणामकर अरु विदाकर कर ५० फिर कमलासनबैठा एकाक्षर मन्त्रहीको जपनेलगा गणेशजी की मनोरम मूर्त्तिको अगाड़ी विराजमान कर करके५१ अरु षोडश उपचारों करके प्रतिदिन उस मूर्त्तिको पूजता रहा अरु उसका आश्रम भी

बावडी सरोवर बेल वृक्षोमे शोभायमान होताभया ५२ त्यागहै
देर जिन्होने ऐसे२ सिंह मृगोकरके अरु उतम २ नागोंकरके तब
फिर हजारवर्षके अंतमे गजाननजी प्रसन्नानन भये ५३ बोले कि
मेरे सास्वरूपी भी तू तप किसलिये करताहै तू धन्य२है अरु आयु
के परिणाममें तू मोक्षको प्राप्तहोवेगा ५४ अरु येक्षेत्र(नामल) इस
नामसे विख्यात होगा जोकि अनुष्ठान करनेवाले मनुष्योको नाना
प्रकारकी सिद्धियोका प्रदाता होवेगा ५५ अरु मेरी मूर्त्ति के दर्शन
से फिर जन्मभागी नहीं होताहै अपुत्र तो सुपुत्रको प्राप्तहोवे अरु
विद्यार्थी ज्ञानको प्राप्त हो ५६ इन्द्र बोले कि हे नृपश्रेष्ठ शूरसेन
जो तैने पूछा सो मैंनेतुमसे कहा और क्या सुननेको चाहते हो ५७
इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमें भुशुण्डिजीका उपा•
ख्यान इसनामसे सत्तावन अध्याय समाप्त भया ॥ ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे व्यासजी शूरसेन उस उत्तम इन्द्र वाक्य
को श्रवण करके कथारूप अमृतको पीकर फिर भी पूछता भया १
शूरसेन बोला कि हेदेवोके ईश किस उपाय से तुम्हारा विमान स्वर्ग
पहुचे हेविभो तुम उसीउपायकोकरो या कहो मैंआपकी क्याआज्ञा
करू २ ब्रह्माजीने कहा कि सुर शत्रुओंका हता इन्द्र वार २ पूछते
राजासे सब लोगोके श्रवणकरते हंसताभया ये कहनेलगा ३ इन्द्र
बोला कि कोई यहा संकष्ट चतुर्थी व्रतका करनेवाला होवे ब्राह्मण
वा क्षत्री हे नृप श्रेष्ठ तेरे नगर में तोवता ४ तो हेभूमि भुज उसके
वर्षदिन कियेके सम्यक्‌दिये पुण्य सेये अभी चले अरु और रीतिसे
तो दश सहस्त्र मनुष्योके से भी नहीं चलता ५ राजा बोला कि हे
इन्द्र संकष्ट चतुर्थीका व्रतकैसे हे क्या उससे पुण्यहै अरुक्याफलहे
तथा तिसकी विधि क्याहै अरु उसमें किसका पूजनहै ६ अरुपहिले
किससे कियागयाहै जिसके कियेसे यहाभीसिद्धिहोवे सो हे सुना-
सीर इन्द्रजी कृपा करके ये विस्तारसे वर्णनकरो ७ इन्द्र बोला यहां

पर ये पुराचीन इतिहास कहतेहैं कि जिसमें महात्मा नारदजीसे कृतवीर्यका सम्वादहुआहै ८ सो कि भूमितलमे (कृतवीर्य्य) नामसे राजाहुआ जो सत्स्वभाव बहुदानी यज्ञकरनेवाला दानवान महारथी ६ जितेन्द्रिय पूराभोजन करनेवाला देवता ब्राह्मणोका सेवक जिसके अश्वगजोंकेपर सवारभी योधाओंकीअरु महारथियोंकी अरु सबधनुषधारियोकी १० हे राजन् संख्यानहींकीगईहै जो कि मह्या-चल के निकट देशो मे रहनेवालेथे जिस महल में सुवर्णकी सेज अरु स्वर्णकेही वरतनहैं ११ जिसके काष्ठका वरतन पाक के लिये भी नथा जिसकेवारहहजारब्राह्मण एकपगतमें भोजनकरनेवालेथे १२ अरु जिसकी (सुगन्धानाम) रानी जो धर्ममें परायण पतिव्रता पतिमेंमनवाली त्रिलोकीभरमे अत्यन्तहीसुन्दर १३ नानाप्रकारके अलकारोसे सजी अरु द्विज देवता अभ्यागतो की प्यारी ऐसे भी वो दोनो स्त्री पुरुष हेराजन् पर असन्तान होतेभये १४ पुत्रकेलिये वे सबदान अरु व्रत तप अरु औरभी नियम अरु बहुत दक्षिणा वाले यज्ञ भी करतेभये १५ अरु पुत्रकीही अभिलाषा करके नाना प्रकारकेतीर्थ अरु धामोकोभी भटकतेभये पर तबभीउनकेजन्मांतर के किये किसी पापसेपुत्र न भया १६ एक दिन उस दुःख पाये राजाने मन्त्रियोंको बुलाकर राज,रुपये,रोकड,जन, जनो के स्थान अर्थात् नगर तैसेही १७ सबसौंपकर राजारानी उत्तमवनको चले गये वलकल,मृगचर्म लपेटे दोनो स्त्रीपुरुष तपमेंस्थितभये १८ जो जितेन्द्रिय जितभोजन था कि पुराने पत्ते पवन भोजन करनेवाले नेत्रमात्रही से जो लखेजावें अर्थात् अत्यतही दुर्बले शरीरवाले वो उन्हें नारदमुनिजी देखकर १९ कृतके पिता स्वर्गलोकस्थको जा-कर बोले कि तेरापुत्र अपुत्रपनेमे अन्नजल रहित नियममें बैठाहैगा २० सो अब वो कृतवीर्य मृत्युलोकमें कल्ह या परसो मरेगा जो उसके स्वर्गलोक दिखानेवाला पुत्रहोवे तो २१ कृतवीर्य जीवे या मृत्युको प्राप्तभया स्वर्गमे जाय ऐसे कहकर नारदजी भूमिमें आय ये आश्चर्य देखतेभये २२ कि भुशुण्डीजीके माता पिताओंको अन

उदय भयेही वो पंचत्वको प्राप्त भया अर्थात् मरगया १३
तो अज्ञान से किये भी संकष्ट चतुर्थीके व्रतके भये पुण्यसे वो सुख
दायी गणेशजीके धामको पधारा१४जो श्रेष्ठविमानमेंबैठा अप्सरा
गणोसे निरीक्ष्यमाण विमानवाले आकाश चारियोसे स्तुति किया
अरु दिव्य पुष्पोंसे चर्चित भया१५तो वो तिसी पुण्यकेशेष से तेरा
पुत्र कृत वीर्य्यनाम राजा भया अब वो पृथ्वीपर अपुत्रताको प्राप्त
होरहाहै१६सो हेनिष्पाप अब उस पाप समूहके क्षयहुयेसें उसके
पुत्रहोगा वो नृप श्रेष्ठ ब्रह्माजीके ऐसे वचन को सुनके कृपायमान
भया १७ अरु फिर उनसे पाप नाशक उपायकोही पूछता भया
कृतवीर्य्यका पिता बोला कि हे ब्रह्माजी उसके ब्रह्महत्या से भया
पाप कैसे नाशहोवे१८सो हे दयासमुद्र वो कठिनभी हो पर मुझसे
कहो तो ब्रह्माजीवोले कि जो वो तेरापुत्र संकष्ट चतुर्थी व्रतको क-
रैगा तो भली भांति तिस पापसे छूटजावेगा १९ राजा बोला कि
हे ब्रह्माजी वोव्रत किस शुभमासमेंकैसे करनाकहाहै सो हेस्वामिन
वो सबमुझसेकहो जिससे वोपाप विलय होवे ब्रह्माजीबोले कि जो
मांघ कृष्ण चतुर्थी भौमवार होय तो२१ शुभ मुहूर्त्त चन्द्रमा वनते
इसकाप्रारंभकरै तो दांतुन पहिलेकरके इकईसस्नानकरै २२ अरु
नित्यकेभीकर्मकरै फिर मंत्रकोजपैनिराहार मौनहोकर पराईनिन्दा
सेवर्जितरहै२३ दुष्टकर्म अरु तांबूलभक्षण नियमसेवर्जित करै अरु
जलपानपराईईर्षा निन्दा इनकोछोडदेवे२४तिल आवँलेकीखलीसे
सामवोस्नानकरै फिर एकाक्षर या षडक्षर तथा वेदकामंत्र जपै२५
गणेशजीकी प्रीतिकेलिये यथा सख्यनाम मंत्रजपै अरुस्थिरमनसे
देवदेवगजाननजीकाचिंतनकरै२६दोघडीकालतकफिरगणेशजीको
षोडश उपचारोसे अरु नाना विधिके नैवेद्योसे पुजै २७ दलकेलड
ूवे पूरी सादेलड्डू अरु वडा से भी नाना प्रकार के दुग्ध से वने
व्यंजनोसे जो चटनी चूसनेके योग्यहैं तिनसे२८ अरु नानाविधिके
फलोंसे अरु तांबूल पुगीफल दक्षिणादिकोसे अरु इकीस दूर्वाओसे
अरु दीपक फूलोंसे २९ अरु चन्द्रमा के उदयमें मंत्रपूर्वक धोयको

अर्घदेनेसे फिर गजाननजीको अरु फिर चन्द्रमाको अर्घ देनेसे ३०
ऐसे सव समर्पण करके नमस्कारकर क्षमाकराकर अरु फिर भक्ति
शक्तिसे इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन करावे ३१ जो शक्ति न हो तो
वारह या दशही अरु उन्हे जिमाय दक्षिणाओं से संतुष्टकरे फिर
कथा सुनके वाणी प्रयत्न किये अर्थात् वाणी नियम युक्तभया आप
भी भोजनकरे ३२ फिर शेष रात्रिको गाजे वाजेके शब्दसे वितावे
ऐसे वर्षतक प्रयत्नसे जो नृप३३व्रतकरै तो उसके उत्तमपुत्रहोवेगा
और भी जो २ नर कामनाकी बाञ्छाकरै सो२ सव प्राप्तहोवे ३४
अरु सव कष्टोंका नाशहोय अरु पराये चक्रसे भय नहीं होय जो
जाटकी जड़में वैठा उपवास में परायण ३५ चन्द्रमाके उदय तक
इसव्रतको रक्खे तो अंधा गूंगा जड़तायुत पंगुला ये सव अपने २
वांछितको प्राप्तहो ३६ अरु पत्नी पुत्र धन राज्य इनको निस्सन्देह
ही प्राप्तहोताहै अरु जो श्रावणआदि महीनेमें घृतलड्डू आदिन्यारे
२ ऐसे वर्षतक भोजन करै तो उसको अति उत्तम सिद्धि हो ३७
सो क्रम कि श्रावणमें तो सातलड्डू १ भाद्रपदमे दहीका भक्षण २
३८ आश्विनमें व्रत ३ कार्त्तिकमें दूधपान ४ मार्गशीर्षमें निराहार
५ पौषमे गोमूत्रपान६।३९ माघमें तिलभक्षणकरे, फाल्गुन में घी
शक्कर८ चैत्रमासमे पंचगव्य९ वैशाखमें कमलनी तथा कमलगट्टे
१०।४० ज्येष्ठमें घृतका भोजन ११ आषाढ में मधु भोजन १२
ऐसेकरै फिर कृतवीर्य्यकापितावोला कि अंगारकचतुर्थीकीविशेषता
कैसे कहीगई४१सो हेब्रह्मन् अतिप्रेमसे नम्रहुये मुझको वर्णन करो
क्योंकि शुभगणेशजीकी कथाको सुनते मेरी तृप्ति नहीं होतीहै४२
इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासना खण्डमें चतुर्थीके व्रतका क॰
थन इसनामसे उनसठवा अध्याय हुआहै ५९ ॥

साठवा अध्याय ॥

वृह्माजी बोले कि हे महीपते अंगार चतुर्थीका महत्व तू साव
धानहुआ सुन मे विस्तारसे कहताहू १ हेराजन (अवन्तीनगर) में

उदय भयेही वो पंचत्वको प्राप्त भया अर्थात् मरगया १३
तो अज्ञान से किये भी संकष्ट चतुर्थीके व्रतके भये पुण्यसे वो सुख
दायी गणेशजीके धामको पधारा १४ जो श्रेष्ठबिमानमेंबैठा अप्सरा
गणोंसे निरीक्ष्यमाण विमानवाले आकाश चारियोंसे स्तुति किया
अरु दिव्य पुष्पोंसे चर्चित भया १५ तो वो तिसी पुण्यकेशेष से तेरा
पुत्र कृत वीर्य्यनाम राजा भया अब वो पृथ्वीपर अपुत्रताको प्राप्त
होरहाहै १६ सो हेनिष्पाप अब उस पाप समूहके क्षयहुयेसे उसके
पुत्रहोगा वो नृप श्रेष्ठ ब्रह्माजीके ऐसे वचन को सुनके कंपायमान
भया १७ अरु फिर उनसे पाप नाशक उपायकोही पूछता भया
कृतवीर्य्यका पिता बोला कि हे ब्रह्माजी उसके ब्रह्महत्या से भया
पाप कैसे नाशहोवे १८ सो हे दयासमुद्र वो कठिनभी हो पर मुझसे
कहो तो ब्रह्माजीबोले कि जो वो तेरापुत्र संकष्ट चतुर्थी व्रतको क-
रैगा तो भली भांति तिस पापसे छूटजावेगा १९ राजा बोला कि
हे ब्रह्माजी वोव्रत किस शुभमासमेंकैसे करनाकहाहै सो हेस्वामिन
वो सबमुझसेकहो जिससे वोपाप विलय होवे ब्रह्माजीबोले कि जो
माघ कृष्ण चतुर्थी भौमवार होय तो २१ शुभ मुहूर्त्त चन्द्रमा बनते
इसकाप्रारंभकरै तो दांतुन पहिलेकरके इकईसस्नानकरै २२ अरु
नित्यकेभीकर्मकरै फिर मंत्रकोजपैनिराहार मौनहोकर पराईनिन्दा
सेवर्जितरहै २३ दुष्कर्म अरु तांबूलभक्षण नियमसेवर्जित करै अरु
जलपानपराईईर्षा निन्दा इनकोछोड़देवै २४ तिल आंवलेकीखलीसे
सामवोस्नानकरै फिर एकाक्षर या षडक्षर तथा वेदकामंत्र जपै २५
गणेशजीकी प्रीतिकेलिये यथा सख्यनाम मंत्रजपै अरुस्थिरमनसे
देवदेवगजाननजीकोचिंतनकरै २६ दोघडीकालतकफिरगणेशजीको
षोडश उपचारोंसे अरु नानाविधिके नैवेद्योंसे पूजै २७ दलकेलड
डुवे पूरी सादेलड्डू अरु बड़ों से भी नाना प्रकार के दुग्ध से बने
व्यंजनोंसे जो चटनी चूसनेके योग्यहैं तिनसे २८ अरु नानाविधिके
फलोंसे अरु तांबूल पूगीफल दक्षिणादिकोंसे अरु इकोश दूर्वाओंसे
अरु दीपक फूलोंसे २९ अरु चन्द्रमा के उदयमें मंत्रपूर्वक घीयको

अर्घदेनेसे फिर गजाननजीको अरु फिर चन्द्रमाको अर्घ देनेसे ३० ऐसे सव समर्पण करके नमस्कारकर क्षमाकराकर अरु फिर भक्ति शक्तिसे इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन करावे ३१ जो शक्ति न हो तो वारह या दशही अरु उन्हें जिमाय दक्षिणाओ से सतुष्टकरै फिर कथा सुनके वाणी प्रयत्न किये अर्थात् वाणी नियम युक्तभया आप भी भोजनकरे ३२ फिर शेष रात्रिको गाजे बाजेके शब्दसे वितावे ऐसे वर्षतक प्रयत्नसे जो नृप३३व्रतकरै तो उसके उत्तमपुत्रहोवेगा और भी जो २ नर कामनाकी वाछाकरै सो२ सव प्राप्तहोवे ३४ अरु सव कष्टोंका नाशहोय अरु पराये चक्रसे भय नहीं होय जो जाटकी जड़में वैठा उपवास में परायण ३५ चन्द्रमाके उदय तक इसव्रतको रक्खे तो अधा गूंगा जडतायुत पगुला ये सव अपने २ वांछितको प्राप्तहो ३६ अरु पत्नी पुत्र धन राज्य इनको निस्सन्देह ही प्राप्तहोताहै अरु जो श्रावणआदि महीनेमें घृतलड्डू आदिन्यारे २ ऐसे बर्षतक भोजन करै तो उसको अति उत्तम सिद्धि हो ३७ सो क्रम कि श्रावणमें तो सावल्ड्डू १ भाद्रपदमे दहीका भक्षण २ ३८ आश्विनमें व्रत ३ कार्त्तिकमें दूधपान ४ मार्गशीर्षमें निराहार ५ पौषमें गोमूत्रपान६।३६ माघमें तिलभक्षणकरै, फाल्गुन में घी शक्कर८ चैत्रमासमे प्रचगव्य६ वैशाखमें कमलनी तथा कमलगट्टे १०।४० ज्येष्ठमें घृतका भोजन ११ आषाढ़ में मधु भोजन १२ ऐसेकरै फिर कृतवीर्य्यकापितावोला कि अंगारकचतुर्थीकीविशेषता कैसे कहीगई४१सो हेब्रह्मन् अतिप्रेमसे नम्रहुये मुझको वर्णन करो क्योंकि शुभगणेशजीको कथाको सुनते मेरी तृप्ति नहीं होतीहै४२ इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासना खण्डमें चतुर्थीके व्रतका कथन इसनामसे उनसठवां अध्याय हुआहै ५६ ॥

साठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी चोले कि हे महीपते अंगार चतुर्थीका महत्व तू सावधानहुआ सुन मैं विस्तारसे कहताहूं १ हेराजन् (अवन्तीनगर) में

महामुनि(भारद्वाजजी)होतेभये जो वेद वेदांगवेत्ता सब शास्त्रमें चतुर २ नित्यही अग्निहोत्रमें रत शिष्योंकेसाथ अध्ययन में परायण तो वो मुनिजीनदीके तीरगति बैठो अनुष्ठान परायण भये३ एकसमय उसने एक श्रेष्ठ अप्सरा देखी तो महामुनि भारद्वाज उसे देख के भोगनेकी कामना करतेभये ४ सो कि वे महामुनिजी उसकामिनी को देख विनकारणसेही काममें आसक्त भये तो काम के बाणो से तिरस्कारकिये भूमि तलपर गिरपड़े ५ तो अति व्याकुल देहवाले उसका वीर्य्यस्खलितभया तो उसका वो वीर्य्य पृथ्वी के एकबिल मेंप्रवेशभया६ तिससे एक कुमार उत्पन्नभया जो गुडहलके फूलसा लाल तो धरती उसे स्नेह वशसे आदर सहित पालती भई ७ उससे वो अपनाजन्म अरु माता पिता अरु कुलभी धन्यमानतीथी तब वो सात बर्षका अपनी मातासे ये पूछने लगा कि ८ मनुष्य देहने स्थित भी मेरेमे ये ललाई कहासे भई अरुहेमात मेरापिता कौनहे सो मुझको भली भांति कहो ९ तो धरणीजी कहने लगी कि भारद्वाज मुनिजीका वीर्य्यस्खलित भया सो मेरे मे आगिरा अरेबेटा तूतिससेजन्मा अरु मुझसे सुन्दर पालागयाहै सो पुत्रबोला तो हेमात उन तप निधान मुनिजीको मुझको दिखाव ब्रह्माजी बोले कि भूमि देवी तब तिसकुमारको लेकर भारद्वाजजीपै आई ११ अरु इनसेबोली कि आपकेवीर्य्यसेउत्पन्न सुतको जोअबपालाहुआहै उसे अब तुम हेमहामुनिजी अगाडी विराजमान करके अंगीकारकरो १२ तिनकी आज्ञा से धरती तो तब अपने सुन्दर धामको पधारी अरु भारद्वाजजी पुत्रकोपाय हर्षे अरु तिसे आलिंगन करते भये १३ उसका मस्तकसूंघकर गोदमेंबैठालिया हर्षसे सुमुहूर्त्त शुभयोगादि शुभलग्नमेंमुनिजी उसकाउपनयनसंस्कारकरतेभये १४ अरुउसेवेद शास्त्र शिषाकर अरु गणेशजीका शुभमंत्र बताकर कहाकि गणेश जीकी प्रीतिकेलिये अनुष्ठानकर विलब न कर १५ तो वे प्रसन्नभये तेरे सब मनके कामों को देंगे तब तो वो मुनिपुत्र नर्मदा के तीर पर पद्मासन बैठा १६ इन्द्रिय समूहस को शीघ्र नियम करके अरु

अरु करणमे गणेशजीको ध्यान। तो पवनभोजी गत्यत दुबले शरीर भया उस परम मंत्रको जपताभया १७ ऐसे वो एकसहस्र वर्षतक घोर तप कर्त्ताभया तो माघ कृष्णचौथ को निर्मल चन्द्रमा उदय भये १८ गणनाथजी तिसे दशभुज निजरूप दिखातेभये जो दिव्य वस्त्रपहिरे मस्तकचन्द्रधरे नानाविधिके आयुधोसेशोभितहस्त१९ सुन्दर शुंडजिनके सो सजा एकदंतजिनके सो सूपकेसे कानजिनके सो कुण्डलो सहित अरु सूर्य्य कोटि प्रकाशवान नानाप्रकार के आभूषणो से भूषित२० तो वो बालक अगाडी स्थित उसदेवजी के स्वरूपको देखताभया तो उठकर इन्हे प्रणामकरकर अरु इनजगत के ईश जीकी स्तुति कर्ताभया२१ भौमबोला कि विघ्नोके नाशक आपकोनमस्कारहैअरु अभक्तो के विघ्नकारी आप को नमस्कार है अरु सुर असुरोकेईश आप को सम्पूर्ण शक्तियो से बधे भये आप को नमस्कार है २२ रोगरहित आप को न० नाश रहित आपको न० गुण वर्जित आप को न० गुणो के छेदनेवाले आप को न० अरु ब्रह्मवेत्ताओमे श्रेष्ठ पालना संहार करनेवाले आपको नमस्कार है२३ अरु हे जगत् के आश्रय स्वरूप आपको नमस्कार है अरु त्रिलोकीके पालक आपको नमस्कारहै आदिब्रह्मआपको न० ब्रह्म वेत्ता आपको न० ब्रह्मस्वरूपआपकोन०ब्रह्मरूपीआपको न० २४ लक्ष्य अरु अलक्ष्य स्वरूप आपको न० अरु कुलक्षण भेदन करने वाले आपको नमस्कारहै श्रीगणनाथजी आपको नमस्कारहै परम ईश्वर आपको नमस्कार है इसप्रकारसे स्तुतिकिये परमेश्वर गजाननजी२५कोमलवाणीसे उसबालकको हर्षातेभये बोलेगजाननजी कि मै तुझपर इस भक्ति अरु स्तुतिसे प्रसन्न भयाहूं२६ बालपनेमें भी तेरे इतने धीर्यपन से मै मनचाहे वरदेताहू ऐसे कहे भूमिसुत गजाननजीसेवचनकहनेलगे२७ भौम बोले कि हेसुरोकेईश आपके दर्शनसे मेरीदृष्टि धन्यभई अरु हेविभो जन्म भी धन्यहै अरुज्ञान कुल अरु पर्वतसहित भूमिभी धन्यभई अरुये सारा तप भी धन्य भयाहै अरु नेत्रधन्यहै वाणीभी धन्यहै जिस करके सूक्ष्मावस्थ

स्तुति कियेगये हो अरु मेरी रहायस भी धन्यहै २८ सो हेदेवेश जो प्रसन्नभयेहो तोमेरीस्थितिस्वर्गमेंहोवे सोकि हेगजाननजी में देवतों के साथ अमृत पीनेचाहताहूं २९ अरु मेरानाम तीनोभवनमेंकल्याणकारी विख्यात होवे अरुहे विभो पुण्यप्रदाता आपका दर्शन इस चतुर्थी तिथिको भयाहै ३० इससे वो तिथि पुण्य देनेवाली अरु सब कष्टोंको हरनेवाली अरुव्रत करनेवाले मनुष्योंको काम देनेवाली आपकेप्रसादसे सदाहोवे ३१ श्रीगणेशजीबोले कि हे भूमिसुत तू भलीभांति देवोंकेसाथ अमृत पीवेगा अरु(मङ्गल)इसनामसे तूलोक में विशेष ख्याति को प्राप्तहोगा ३२ अरु रक्तपने से (अंगारक) ऐसा अरु जिसलिये तू धरती का सुत है अरु अंगारक चतुर्थी को जो २ नर पृथ्वीपर करेंगे ३३ तिनको वर्ष दिनकरी सङ्कष्ट चतुर्थीका फलहोगा अरु सब काम में निर्विघ्नता होवेगी संशय नहीं ३४ अरु तू अवंतीनाम नगरीमें परमतप राजाहोगा जिससे तैंने व्रतोंमें उत्तम व्रतकियाहै ३५ जिसके कथन करने से मनुष्य सबकामोंको प्राप्त होय ब्रह्माजीबोले कि देवगजाननजी ऐसे वर देकर आप अंतर्द्धानभये ३६ तब तो मंगलजी ने भक्तिसे गणेशजीको स्थापनकिये शुण्डमुख ऊपर जिनके दशभुजावाले सारे शरीरों से सुन्दर ३७ अरुगजाननजीका हर्षदायी मन्दिर बनवाया अरु देवोंके देव गणेशजीका नाम (मङ्गलमूर्त्ति) ऐसा कर्त्ता भया ३८ तब तो वो क्षेत्र सब जनोंका काम दाता होगया जो अनुष्ठान से पूजनेसे अरुदर्शनसे सबफल अरुमोक्षकाभी दाता ३९ तब तो देव विनायकजी मंगलजीको पास बुलाने को अपने गणों करके श्रेष्ठ उत्तम विमान भेजतेभये ४० वे आकर तिसी देहसे अर्थात् देह सहितउन भौमजीकोबहुतसामान करते गणेशजीके पासलेगये सो हे राजन् वो आश्चर्यसा होगया ४१ तभीसे चराचर सहित त्रिलोकीमें भौमजी विख्यातभये जिसीसे भौमकरके चतुर्थी पृथ्वीपर प्रख्यात भईहै ४२ अरु चिंतित अर्थके प्रदान से (चिंतामणि) ऐसी प्रख्याति को (मंगल) मूर्त्तिजी प्राप्तभये जो सबपर अनुग्रह करने

वाले ४३ पारिनेर नगरसे पश्चिममें चिंतामणि ऐसे विख्यातभये जो सब विघ्न निवारणेवाले ४४ अव भी वे सिद्धिगधर्वों के साथ चन्द्रमाकेउदयमें पूजेजातेहैं अरु वांछितअर्थ पुत्रपौत्रआदिसंपत्तियों को भी देते हैं४५ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्डमे अगारक चतुर्थीव्रतका कथन इसनामसे साठवा अध्याय हुआ ६० ॥

इकसठवा अध्याय ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे राजन् एकवेर हम शिवजीकेस्थान कैलास को गयेथे तो सभामें बैठेभये हम नारदजीको आगये देखतेभने १ उन्होंने पहिले शकरजीको एकअपूर्वहीफलदिया अरु फिर उसफल को गणेशजी अरु कार्तिकेय भी शंकरजीसे याचतेभये २ अरु फिर शिवजी ने भी मुझसे पूछा कि ये फल किसको देना मैंने कहा कि इसकुमार बालक कार्तिकेयको देना तोउसे ३ शिवजीने कार्तिकेय कोदिया तो गजाननजी तिसपर क्रोधितभये ब्रह्मा अपनेघर जाकर सृष्टि रचनेकोचाहे तो ४ त्योंहीं विघ्नकारी गणेशजीने परमआश्चर्य रूप अर्थात् अत्यन्तही विघ्नकरदिया कि भयानकरूप होकर ब्रह्मा कहतेहैं कि मुझे तब डराया ५ मेरे भ्रान्त भये तिससमय अत्यन्त क्रूर तिन्हें देखकर चन्द्रमा परम सम्पूर्ण अर्थात् अत्यन्त ही हँसा श्रीगणेशजीको ६ तो वे इसपर अत्यतही कोपभये अरु तब इसच-न्द्रमाको शाप देतेभये कि तू मेरे वाक्यसे त्रिलोकी करके न देखने योग्यहो अर्थात् जगत्में तुझको कोई भी नहीं देखेगा ७ अरु जो कभी कोई तुझे देखभी लेगा तो वो महापातकी होवेगा देवजी तो ऐसे शापकर निजगणों के साथ स्वधामको पधारे ८ अरु चन्द्रमा मलिनदीन शोकसागरमें लीन कि देखो जगत्कारण के भी कर्तामें जो अणिमा आदि आठसिद्धियोंसे संयुक्त ऐसे उनमें मैंने बालककी नाई दुष्टता क्योंकरी जिससे मैं सबके अदर्शनीय अरु कुरङ्गमैला होगयाहूं ६ । १० अब कैसेसुरूप अरु वन्दनीय अरु सकल देवता कोप्रसन्न करनेवाला कब कैसे होऊंगा इ उनमेंही देवोंने भी चन्द्रमा

को करके अरु अजलि पुटकिये अर्थात् हाथबांधे अगाडीखड़ा मन सेबिचार करताभया कि अवश्य ये गजाननजीही हैंगे ३९ वरदेने को यहाआयेहैं ऐसेसमझ उन्हें प्रणाम करताभया अरु परमभक्ति से देवदेव गजाननजी की स्तुति करताभया ४० चन्द्रमाबोला कि मैं देव गजानन जी को नमस्कार करता हूं जो जनों के सब विघ्न हरतेहैं अरु सबकेधर्म्मअर्थकाममोक्षोंकोदेतेहैं तिन बिघ्नविनाशनजी के अर्थ नमस्कार है ४१ देव कृपानिधि आप को नमस्कार है जो आप ब्रह्मस्वरूप विश्वके आत्मानाम व्यापक विश्वके रचनेमें चतुर जो आप विश्वके निमित्त कारण जगत् प्रधान अरु त्रिलोकीके सं-हार कर्त्ता आपको नमस्कार है ४२ जो वेदत्रयी स्वरूप अरु जो सबको बुद्धिदाता जो बुद्धिकेप्रदीप्त करनेवाले अरु जो सुरोंके अधि-पति जो नित्य सत्य अरु चेष्टारहित सो हे नित्य बुद्धिवाले गजानन जी आपको नित्यही नमस्कार होवे ४३ मुझसे अज्ञान दोष करके अपराध कियागयाहै सो हे दयाकर उसे आप सहने को योग्यहो अरु हे महात्मन् शरण आयेको त्यागनेमें दोषहै इससे आपमुझपर अनुग्रहही करो ४४ ब्रह्माजी बोले कि ऐसेवचनको सुनकर सुप्रस-न्न भये गजाननजी तिसको वर देतेभये जो देव तिसकीस्तुति से प्रसन्नकिये गजाननजी ४५ कि जैसे पहिले तेरारूप था सो तैसेही होगा पर भाद्रपद शुक्लचौथको तुझे जोनर देखेगा ४६ तिसको सन्मुखशाप अर्थात् मिथ्याकलंक अवश्य होगा अरु पाप हानि मूर्खपन भी अवश्यही हो इससे तू तिथि में अदर्शनीय है सो ही मैंने देवताओं से कहाहै ४७ कृष्ण पक्षकी चौथको जो मनुष्य व्रतकरेंगे तो तेरे उदयमें मैं पूजाजाऊंगा अरु तूभी प्रयत्नसे पूजने योग्यहोगा ४८ अरु अत्यन्तही प्रयत्नसे तू दर्शन योग्यहोगा नहीं तो व्रतकिया वृथाहोगा अरु हे शशिन् तू कलाकरके मेरीप्रीतिकर हो मेरे मस्तकपर रहु ४९ अरु तू मनुष्य२ दोयजको भी दर्शनीय-होगा तब चन्द्र ऐसे वर [illegible] ५० अरु देव ऋषियोंके साथ वरद ग[illegible] भया अरु

उसे षोडश उपचारों से आदर सहित पूजन करता भया ५१ अरु रत्नजटित कंचनकामन्दिर बनवाताभया अरु यहलोकमे (सिद्धिक्षेत्र) विख्यातहोगा५२।५३जो इसे अनुष्ठान करे तिनका सबसिद्धिकर्त्ता होगा तब तो वे देव मुनीश्वर उन गजाननजी को नमस्कार कर के ५४ प्रसन्नमन भये हर्षयुक्त अपने२ स्थानगये देवश्रेष्ठो के गये पर देवशरीर गणेशजीभी अन्तर्द्धानभये५५ तब भालचन्द्रजीके भी अन्तर्द्धान भये प्रसन्नमन भया सा चन्द्रमा अपने धाम नामतेजको प्राप्त होकरही अपने धामको पधारता भया५६इतिश्रीगणेशपुराण उपासनाखण्ड के पूर्वखण्ड मे श्रीगणेशजी करके चन्द्रमा के शाप अरु अनुग्रह का वर्णन इसनाम से इकसठ अध्याय हुआ है ६१ ॥

बासठवाअध्याय॥

कृतवीर्य्य के पिताने पूछा कि हे ब्रह्माजी जिसलिये जिसगणेश जीके व्रतके निमित्त नर चन्द्रमाके उदयमें भोजनकरते यह मैंनेजो पूछा सो आपने निरूपण किया १ अब मैं दूर्व्वांकुरो के समर्प्पण करनेका भी कारण सुननेको चाहताहू कि किसलियेगणेशजी को दूर्व्वाके अकुर प्यारेहै सो कहो २ तो ब्रह्माजी बोले कि हा मैं तुझको कहूगा कि जे। गणेशजीको दूर्व्वाकुरों के सम्यक् अर्पणकरने अर्थात् चढ़ाने में जो फलहैं सो हे नृपश्रेष्ठ तुम श्रवण करो ३ कि दक्षिणदेशमें (अवती) नामनगरी विख्यातभई तिसमें (सुलभना॰ म) क्षत्री गुणवान् धनवाला दाता पराक्रमी भया ४ जो विवेकी भया अरु मान्योंको माननेवाला शान्तिवाला दमनमें परायण सब शास्त्रअर्थोका तत्त्ववेत्ता सबवेदोके अर्थको जाननेवाला ५ जोगणेश जीमें नित्य भक्तिमान् स्तुतिस्तोत्रोमें परायण तिसकी (सुमुद्रानाम) से रानीभई जो परमविख्यात ६ अत्यन्त सुन्दर पतिव्रता निजस्व॰ रूपसे धिक्कारकरी अप्सरायें जिसने सो अरु जो देव ब्राह्मण अभ्या॰ गत पूजनमें परायण अरु निजगुणोसे पतिकेमनको हरनेवाली ७ जबतक कि तितनेही मधुसूदन ब्राह्मण आया जो भिक्षाअभिलाषी

अरु निरन्तरही ईश्वर चिन्तना करनेवाला ८ वह दरिद्रतासेकुवसन
वस्त्र सहित भी दिशावस्त्र अर्थात् नङ्गासा तौ सुलभ तौ तिसेदेख•
तेही हर्षयुक्त प्रणाम करताभया ६ फिर अज्ञानसे प्रविष्टभया इस
द्विजश्रेष्ठ को साहससे हँसता भी भया फिर उसक्रुद्ध भये महामुनि
ने इसे शापदिया १० जो मुनि क्रोधसे लालनेत्र किये त्रिलोकीको
जलाभया सा बोला कि तू नित्य हलको खैंचनेवाला अरु दु खो से
सयुक्त ११ बैलहोजा जो हेकुबुद्धिवाले तूदातफैलाकरकेमुझकोहँसाहै
तो सुमुद्रा रानी अपनेपतिके शापकोसुनके क्रोधसेमूर्च्छितभई १२
रोषभरी उसब्राह्मण को भी शापती भई जो पैरसेमारी सापिनिसी
फोकाररही बोली कि जो तैने अज्ञानसे मेरेपतिको शापदियाहै १३
इससे तू भी गधाहोकर अरु हे कुब्राह्मण तू विष्ठा खानेवालाहो १४
सोभी क्रूर तिससे कहे शापको सुनकर तिसे भी शापता भया १५
स्त्रीपनेसे जो तैने शाप दियाहै इससे तू चाडाली होवेगी जोदरि•
द्रणी बहुत दोषवाली विष्टामूत्र खानेवाली अशुभ करने वाली१६
ऐसे वे आपस मे शाप देलेकर अरुसुदुर्लभ उने देहोको त्यागकर
सुलभ तौ बैलजन्मा जो हल खैंचनेवाला भया १७ तो उसे उस
द्विजके शापसे क्षणमात्र भी कहीं विश्राम न मिला अरु मधुसूदन
द्विजभी गधेकी योनि मे जाया १८ अरु सुमुद्रा चांडाली भई जो
दुष्ट अरु जीवोकी अतिही हिंसा करनेवाली दरिद्रणी पिशाचवाली
अर्थात् राक्षसी सो अरु विष्टामूत्रके खानेमे परायण १६ अरु वह
अति सूखे शरीर दातली भयकर मुखवाली कभीकवह नगर के
दक्षिण मे विचरती भई २० परम आश्चर्य रूप गणेशजी का
मन्दिर देखतीभई जो नानाप्रकारके वृक्ष वेलिसमूहोसे अरु नाना
पक्षियोके समूह से सयुक्तथा २१ जहा कई योगीश सदा अनुष्ठान
मे स्थित जो गणेश जीकी उपासना करने वाले नियम में स्थिर
होरहे हैं २२ उनमेंकोईककामनाकी अभिलाषावाले अरुकईपुत्रमोक्ष
धनकीआकाक्षा किये कभीकभीक भाद्रमासकीचौथको घरघरमें २३
उस पुरमें श्रीगणेशजी का महाही उत्सव भयाथा तौ तभी अत्यंत

वर्षा भी भई जो प्रलयकाल कोही बनाने वाली थी २४ तो वह चांडाली वर्षासे डरी जहां २ जातीथी तहां २ मनुष्यों करके पीटने आदिसे निराश कीगई२५ तबतो वह तापनेको हाथमें अग्नि लेकर गणेशजीके मन्दिर में चलीगई वहां भी कइयों ने इसे ताडना करी अरु योगियों ने इसे निकारा दई २६ वहां वह तृणोंसे उस अग्नि को जलाकर अपने अंगोंको उष्ण करतीरही अर्थात् तापती भईथी तौ बिनाकारणही वायुसे फटकारा एकदवका अंकुर चला सोगजाननजीके मस्तक पर दैवयोग से जा पडा अरु गधा शीत से भीत भया तब गणेशजी के मन्दिर में चला गया २७ अरु तभी वह बैलभी हलसेछुटा दैवयोगसेही चलागया उसगणेशजीकेमन्दिरको भावि अर्थके गौरवसे अर्थात् भावीवश वे गधा,बैल,चांडाली एकत्र होगये २८ तो वे दोनो उस चांडालीके तृणोंको खागये तो तबतहां जनसोये परे उनका युद्ध होनेलगा २९ सोकि लातोंसे अरु शृङ्गो से गजाननजीके सामने तो उनके मुखसे पडे दूर्वांकुर गणेशजी के शुंडपर अरु पैरों पर गिरे तो गजाननजी सतुष्ट भये अरु फिर वह लट्ठीलेकर गणेशजी के पासआई ३०।३१ उस खर अरु बैल को पीटती भई अरु पूजासामग्रीको आपही भक्षण करगई तौसोतेजन उनके खुरोंकाशब्दसुनके जागे३२ अरु लट्ठी घूसे कोहनीकी मारसे उन्हें बाहरकियेवहभीकरोंमें ताडनाकरी भगगई३३क्योंकि जन चांडाली अरु गधेके भिटने की शंकासे व्याकुल थे इससे इन्होंने सुमंत्रित किये तीर्थ जलसे गजानन जीको स्नान करवाया ३४ अरु नानाप्रकार के अनेक उपचारों से परम भक्ति करके इन्हें पूजित किये अरु उन बैल राक्षसी गधों को अति दुष्ट भयाकुल जनोंने लट्ठ अरु गोडों लातों से फिर ताडना करी अरु उस देव दरवाजेके मुंदे पर उनकी निकलने की राहरही नहीं ३५।३६ तो भ्रमतेभये अरु पुकाररहे उनतीनोंके भयानक भी आलापोंसे देवों के देव विकट जीका मन तो तभी हरागया ३७ कि इन्होंके प्रसंग से मेरी फिर पूजाभई अरु इन करके भी में एक दूर्वांकुर आदि से

पूजागयाहूं ३८ अरु इन्होंके दुष्टभये सतेभी मेरी बहुतसी परिक्रमा करीगई है अरु भाद्रपद शुक्ल चौथ को जो मेरे एक दूर्वांकुर भी समर्पण कर देवे ३९ सो वह मेरा चिन्तनीय अरु माननीय है अरु जो परिक्रमा करै सो भी तैसाही है तिससे मै इन्होको विमान से अपने लोकको पहुचाता हूं ४० ऐसे गणेशजी ने विमान भेजा जो निजगणो से पहिचाना जो गण अपने रूपको धारण करनेवाले थे अरु गन्धर्व अप्सराओके समूहो संयुक्त ४१ अरु नाना बाजोके समूहोसे अरु पुष्प सुगन्धि सहित अरुजो विमान स्वर्गके भोगोसे संयुक्त अरु ध्वजा पताकोसे शोभित ४२ तो वे गणेश स्वरूपी गण तिन्हें लेकर उस विमानमे बैठाकर दिव्यदेहवाले हर्षयुक्त तिनको ४३ गजानन जीकी आज्ञा से तिनके स्थान को वेगसे प्राप्त करते भये तो देखते सबलोगोके मनमे वह आश्चर्य्यहोगया ४४ अरु यह कहते भये कि इन्हींके पुण्यके संयोगसे इनकी ऐसीगति भईहै तब तो कई योगीश्वर भी ध्यान छोडकर गणो के पास गये ४५ अरु उनसे पूछा कि इनकी पुण्यगति अचल कैसे भईहै सो कहो क्योंकि अत्यंत पापवाले इन्होके पुण्यका तो लेश भी नहींहै ४६ अरु अति दुर्लभ सुगति इन्हें कैसे प्राप्त भई सो हे निष्पापो तुम हमसे कहो हम अपने अनुष्ठानो को छोड़कर उसेही तुरत आचरण करेंगे ४७ कि अनगिनत काल बीतगया अरु गणेश जी दृष्टिगोचर न भये जो हम विरक्त वायुभक्षी अरु सदा अनुष्ठान वाले भी हैं ४८ सो हमको गणेशजीके स्थानकी प्राप्ति कब होगी सो कहो ॥ इतिश्री गणेशपुराणउपासनाखण्डमें दूर्वाकाउपाख्यान इसनामसे बासठ अध्याय हुआ है ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

गणेशजी के गण बोले कि हे योगीश्वरो तुम सारे इस चंचल मनको स्थिर करके श्रवण करो जिसे कहने को शेष अरु ब्रह्मा भी समर्थ नहीं १ तिसे कहने को कौन समर्थ हो पर यथा मति हम

कहते हे तथा जिनकी ब्रह्मा शिव आदिदेव सदा स्तुति करतेहै २ तिन गणनाथजी के महत्त्वको प्रकट कौन कहसके ऐसे ही तिनकी लीलाओंको भी हे निष्पापो तुमसुनो ३ अरु दूर्वांकुरोंकी महिमा सुर मुनियों ने भी नहीं जानी है अरु न वह यज्ञ,दान,तपो से अरु व्रतदानसे प्राप्तहोवे ४ यहां पर इस प्राचीन इतिहासको कहते हैं जो कि इन्द्र का अरु महात्मा नारदजी का संवाद भया है ५ कि एक समय नारदजी इन्द्रको देखनेको चाववाले नारद जी गये तो परम भक्तिसे तिसकरके पूजेगये अरु कियाहैआसन ग्रहणजिन्होने ऐसे मुनि नारदजीसे वलहता इंद्र आदरसे दूर्वा का महत्त्व पूछता भया इन्द्र बोला कि हे ब्रह्मन् महा मुनिजी देवो के देव महात्मा गणेशजीको दूर्वांकुर विशेषसे प्यारे किसलिये हैं ६।७ नारद जी बोले कि दूर्वाका माहात्म्य जैसे मैंने जाना है सो कहता हूं कि (स्थावरनगर) में पहिले एक (कौण्डिन्य नाम) से महा मुनि भया ८ जो गणेशजीका उपासक अरु तपके बलसे युक्त अरु गांव के दक्षिण भाग में अति रमणीय ९ वडा भारी बेल वृक्ष सहित उसका आश्रम था जहां फूले कमल जिनमें ऐसे वडे २ सरोवर थे १० जो भ्रमरोंसे सेवाकिये अरु हंस करंडुओंसे भी सेवित अरु चकवे, वगलोंसे भी अरु कछुवो से मुरगाइयोंसे भी सदाही सेवा किया जाताथा ११वे मुनिजी तो तहां ध्यानमें रतभये उत्कृष्ट अर्थात् भारीतपको प्रारम्भ करते भये श्रीगणेशजीकी चतुर्भुज मूर्त्तिकोआगे स्थापन करके १२ जो सुप्रसन्न वरदेनेवाली अरु दूर्वांकुरोंसे युक्त सुन्दर पूजित करी अरु वे गणेशजीके प्रसन्न करनेवाले छ अक्षरके परममंत्र को जपते भये १३ अरु इनकी आश्रयानाम से पत्नी थी सो सदेहभरी तिनसे पूछती भई आश्रया बोली कि हे स्वामिन् देवगजाननजीपर तुम दूवकावोझ नित्य२ क्यों चढावते हो तिनकों से तो कोई भी नहीं प्रसन्न होताहै अरु जो इससे पुण्यहै तो कृपा करके मुझसे कहो १४।१५ तो कौण्डिन्य जी बोले कि हे प्रिये मैं दूर्वाका माहात्म्य कहताहूं तू सुन कि धर्म्मराज के नगर में पहिले

एक श्रेष्ठ उत्सव हुआ १६ तौ तिसमें सारे देवता गन्धर्वो सहित अप्सराओं के समूह अरु सिद्ध चारण नाग मुनीश्वर अरु यक्ष राक्षस १७ तौ नाचती भई तिलोत्तमा के ओढ़ने का दुपट्टा भूमि पर गिरपड़ा तौ उस यमराजने उसके अत्यत सुंदर भारी कोमलस्तन देखे, १८ तौ वह विशेपसें खेदको प्राप्त कामदेव से संतप्त निर्लज्ज हुआ इसे लपटनेको चाहा अरुउसके मुखको चूमता भया १९ फिर लज्जा से नीचे मुख किये वह यम उस सभा सें बाहर आया अरु चलते। इसका वीर्य्यस्खलित होकर भूमिमें गिरपड़ा २० तौउसमें से एक अग्निज्वाला सहित बिकराल मुख पुरुष जो अपनी दाढो से खोटे शब्दको करता अरु त्रिलोकको त्रास दिखाता २१ अरुजटाओं से आकाशको स्पर्श करता वह सारीपृथ्वीको जलानेलगा तौ उसके शब्दसे त्रिलोकी का भी मन अत्यंत कापता भया २२ तौ वे सारे सभावाले तिसी समय विष्णुजीपे गये अरु नानाप्रकारके स्तोत्रो से नाना विधिकी स्तुति यथामति करते भये २३ अरु भयव्याकुल भये सबलोकके हितके लिये तिन्हें प्रार्थना करते भये वे इनसबको साथ लेकर आरोग्यदायी गजाननजी के पास गये २४ तिस का नाश इन्हींसे जानकर स्तुति करते भये देवता मुनीश्वर बोले कि विघ्नस्वरूप आपको नमस्कारहै अरु विघ्नहारी तुमकोनमस्कार है २५ सर्वरूप आपको नमस्कार है अरु सर्व साक्षिरूप आपको नमस्कार होवे अरु भारी देवता आपकोनमस्कारहै अरु जगत् के आदि कारण आपको नमस्कारहै २६ हे कृपानिधान आपको नमस्कार है जगत् के पालनकर्त्ता आपकोनमस्कारहै अरु पूर्णतमोगुण स्वरूप आप जो सर्व संहारकर्त्ता आपको नमस्कार है २७ हे भक्त वरदायी आपको नमस्कार है अरु सर्वफलदाता आपको नमस्कार है अरु हे अनन्य शरण्य हे सर्व काम परिपूरक आपको नमस्कार है २८ अरु वेदवेत्ता आप को नमस्कार है अरु वेदो के कर्त्ता आप को नमस्कार है हे गजानन जी हम और किसकी शरणजावें अरु हमारा भयहर्त्ता कौनहोगा २९ विन कालही ये मनुष्यों को प्रलय

कैसे प्राप्तभया है हाय देवो के ईश्वर हा अविनाशिन् सबके मरण प्राप्तभये तुम हमें कैसे छोडतेहो ऐसे उनका वचनसुन करुणा के समुद्र गजाननजी उनके आगे बालक रूप प्रकट भये जो शत्रुभय हन्ता कमल से नेत्रों को अरु सो चन्द्रमा के समान आनन को धारणकरते ३०।३१। ३२ जो किरोडसूर्य्योंके से कांतिसमूहवाले अरु किरोड कामदेवों को जीतनेवाले शरीरी मोघरे के मुकुल की शोभाजीती जिनके दांतोने सो होठोंसे सूर्य्यमण्डल जीता जिन्होंने सो ३३ उन्नतनाम ऊंचीनासिका जिनकी सो भवासे सुन्दर हैं नेत्र जिनके सो शंखसे कंठवाले विशालवक्षस्स्थल जिनका सो गोडोंको स्पर्शकरनेवाले अर्थात् लम्बेदोभुजावाले अरु पराक्रमी ३४ गंभीर नाभिसे शोभितहै उदर जिनका सो अत्यन्त सजीलीकमर जिनकी सो केले की शोभाको सबओरसे तिरस्कारकारीहै महाऊरू जिनके अर्थात् कदली जंघावाले सुंदर घुटनोंवाले सो ३५ सुन्दर कोमल जो जंघा अरु घुटने तिनकी शोभा से सजाहै पादपद्मजिनका सो अरु नानाप्रकार के अलंकारों की शोभासे संयुक्त महामोलयकेवस्त्र पहिरे ३६ ऐसे देव गणेशजी को नगर के अगाडी भूमिपर देख के जय २ शब्द पूर्वक अर्थात् जय २ कहते देवता अरु मुनीश्वर सब खडे होतेभये ३७ अरु दंडवत् प्रणामकरते भये जैसे इन्द्र को सब देवता गणकरें देव मुनियेंबोले कि हे विभो आप कोनहो कहां से आयेहो क्या आपकरोगे सो हमें कहो ३८ हम ऐसे जानते हैं कि ब्रह्मही बालक स्वरूपधारी अनलासुर के भयसेती निजकामों को छोडबैठे हमको रक्षाकरने के लिये प्रकटभये हो जो आप दुष्टों को संहारकरनेवाले हो बालरूपी गजाननजी उनका ऐसेवचनसुनकर ३९।४० हँसमुखभये सब देवता मुनियों से बोले कि तुम ज्ञानसे संयुक्त हो अरु जो तुमनेकहा सो सचहीहै ४१ अरु हे सुरऋषियो में तो उस अत्यन्त पीडाकरनेवाले दुष्टके मारनेकेलिये ही स्वेच्छा करके बालरूपी वेगसे आया हूं ४२ अब हे निष्पापो उसकेमारने मे मैं उपाय कहताहूं तुम उसेकरो उसे तुमदेखकर सारे तुमबलसे

मुझे ले चलना ४३ अरु उसका हमारा भारी कौतुक देखना ऐसे वे हर्षभरे सारे कृपा के वचनको सुनकर ४४ आपसमें सारे कहने लगे कि इसके पुरुषार्थको हम नहींजानतेहैं कि ईश्वरही बालरूप से इसके मारनेको अरु पीड़ाकोप्राप्त त्रिलोककी रक्षाकरनेके लिये अवतार भये हैं क्या ऐसे कह वे सारे इन्हे आदर से प्रणाम करते भये ४५।४६ इतनेही में कालाग्निस्वरूपधारी दशो दिशाओ को जलाता अरु इसमनुष्य लोककी भक्षण करता आया ४७ तो तब पुकारते लोकोंका महाही प्रचण्डशब्दभया देखतेही सारे मुनीश्वर भागनेमें परायणभये ४८ अरु बालकजीसेभी वे बोले कि तू शीघ्र पलायनकर अर्थात् भाग जा नहीं तुझे अब भारी अनलासुर मार डालैगा ४९ मच्छ जैसे मछलियोको अरु गरुड़ जैसे सर्पोंको इस प्रकार उनका वचन सुनके परमात्मा गजानन जी ५० बालरूप धरतेही हिमाचल पर्वत की नाईं विराजमान भये अर्थात् अत्यत बढ़गये तो सुर मुनि येभी दूर उसबालकको छोडकर भगगये ५१ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे रोचकदूर्वा के माहात्म्यका वर्णन इसनाम से तिरसठअध्याय हुआ है ६३॥

चौंसठवां अध्याय॥

आश्रयाबोली कि हे महामुनि जी देवऋषियोके गये अरु उस बालक के वहां पर्वत की तरह विराजमान रहे तहां बालक अरु कालानलसे उत्पन्न क्या कौतुकभया १ सो सब विस्तारसेती मुझ को कहो कौण्डिन्य जी बोले कि उन बाल स्वरूप गजाननजी के जो नहीं चलायमान तिनके अचलनाम पर्वत के तुल्य स्थित भये कालाग्निकीनाईंनहींहटनेवालाअनलासुरआयातिसकालमे अचला नाम नहीं चलनेवालीभी अचलनाम पर्वतोसहित भूमि चलायमान होतीभई२।३ अरु आकाश को भेदनकरनेवाले शब्दके समान जो मेघसे गर्जित शब्द तिनकरके वृक्षोकी डालियोसे पक्षियोके समूह भूमितल पर गिरपडे ४ अरु वारिनाम जल तिसका धारणकरने

वाळा अर्थात् समुद्रसो निवारी होगया अर्थात् अनलासुर की उ-ष्णता से शुपगयी अरु वृक्ष उखडगये अरु महा पवन करके तब कुछभी न जानपडा ५ तो तिसीक्षणमेंबालरूपीदेव गजाननजीउस अनलरूप दैत्यको निज माया के बलसे धारण करते भये अर्थात् इन्होने भी उस मायावी के साथ मायाहीकरी ६ तो सब के देखते उसको भक्षण करगये जैसे समुद्रको अगस्त्यजीने आचमन किया था। फिर देव गणेशजीने विचारा कि जो उदर में गया तो ये मेरी कुक्षिमें स्थित त्रिलोक को जलादेवेगा ये आश्चर्य कैसा उत्तमदेखा अर्थात् अब क्या करनाचाहिये तो फिर इन्द्र ने तो उस अग्निकी शांतिके लिये चन्द्रमादिया ७।८ तो देवता अरु मुनीश्वर भी इन्हों को (भालचन्द्र) ऐसे स्तुति करते भये तब भी वो कण्ठ का अग्नि शांत न भया ६ फिर ब्रह्माजीने मनमे उत्पन्न करी (सिद्धिबुद्धि) ये दो कन्यायेंदई जो केलेके से गोडोवाली अरु कमल से नेत्रों वाली अरु केश शिवाल समानों से सयुक्त १० जो चन्द्रमा से मुखवाली अमृत सी वाणी बोलनेवाली कुवेकीसी अर्थात् गम्भीर नाभिवाली नदियोंकी सी उदर मे त्रिवली वाली अरु कमल की नालीकीसी अर्थात् पतली कमरवाली मृगकेसे अरुण हरततलवाली अरु ठंडा पनकी रनेवाली ऐसी दोनोंकन्या ११ ब्रह्माजीनेदई अरु कहा कि इन्हें आप सम्यक् स्पर्शकरो जिससे आपका वो अनल ठंढा होय तो उनके आलिंगन से कुछही अग्नि शान्त भया १२ तो कमला के पति विष्णुजीने मन्द२ कामल कमल इन्हेंदिया तो सारे देवता मनुष्य इन्हे (पद्मपाणि) ऐसे कहते भये १३ फिर भी अग्नि शांत न भये वरुणजीने इनको शीतलजलोंसे सींचे अरु शिवजीने इनको सहस्रफणवाला सर्प दिया १४ जिससे इन्होंने उदर बांधा तो ये (व्यालबद्धोदर)भये तबभी इनका अग्निसयुक्त कण्ठशांत न भया१५ तो अट्ठाशीसहस्र मुनीश्वर इनको प्राप्तभये अर्थात् उनकेपास आये तो उन्होंने अमृत के तुल्य दूर्वा पृथक् इक्कीश १६ इनके मस्तक पर चढाई तो तिनसे तो अनलशान्त भया तो दूर्वांकुरों के भार से

पूजाकिये परमात्मा ये गणेशजी प्रसन्नहोतेभये १७ फिर ऐसेजान
कर वे सारे उन गजाननजी को पूजते भये बहुतसे दूर्वांकुरों करके
ही तो ये गजाननजी हर्षको प्राप्तभये १८ अरु इन मुनीश्वर देव-
ताओ को बोले कि मेरीभक्तिसे भी करी पूजा भारी वा थोडी दूर्वा
के अंकुरो के विना वृथाहीहै १६ विना दूर्वांकुरों के पूजा का फल
किसीकोभी प्राप्तनहींहोता है तिसमे प्रातःकाल में मेरे भक्तोंकरके
इक्कीश या एकही २० दूर्वा भक्ति से समर्पण कीगई जो महाफल
देतीहै तो तैसाफल सौ यज्ञो से भी अरु दान पुण्यो से अरु व्रत
अनुष्ठानो के समूहोसे कभी नहींहोताहै २१ अरु जो तप कैसे कि
कठोर नियम है जिनमें अरु करोडोजन्मोकरके इकट्ठेभये तिनसे भी
हेदेव मुनीश्वरो वो नहीं मिलता जो दूर्वाओ से प्राप्तहोता है २२
कौडिन्यजी बोले कि देवता ऐसे उनका वचनसुनके उन परमात्मा
देव गजाननजीको फिर भी दूर्वासेही अर्चनकरतेभये २३ तो आ-
नन्दयुक्त ये गणेशजी गर्जनाकरतेभये पृथ्वी आकाशको भी अत्यंत
ही गर्जातेभये अरु प्रसन्नभये सब देवताओं को अरु मुनीश्वरो को
भी अरु मनुष्यो को भी बहुत से बरदान दे करके बालरूप धारी
गणेशजी अंतर्दानभये २४ अरु सारे इनको (कालानलप्रशमन)
अर्थात् हे काल के समान अर्थात् अत्यंतही तीव्र अग्नि को प्रकर्ष
से अर्थात् निश्शेष शांत करनेवाले गणेशजी ऐसे कहते भये २५
अरु वे सुंदर बने मन्दिर मे गजाननजी की मूर्तिको स्थापनकरकर
अरु ये (विघ्नहर) हैं ऐसे हर्षसे वे देवता इनकानाम विख्यात करते
भये २६ अरु यहांपर स्नान तैसेही दान तप अरु अनुष्ठान इन
विघ्नहारी जी के प्रसाद से अक्षय होताहै २७ जिस लिये तिससे
जय प्राप्त भया तिससे वो नगर (विजयनाम) से विख्यात भया
अरु सबो के विघ्न हरेगये इससे वे (विघ्नहर्त्ता) ऐसे विख्यात
भये२८ कौडिन्यजीबोले कि ऐसे मैने साराउत्तम दूर्वाकामाहात्म्य
वर्णनकिया है इससे पठन से अरु श्रवणसे सबपापोका नाशहोता
है २६ अरु हे प्रिये मै एक प्राचीन इतिहास और वर्णन करूंगा

सो श्रवण करना इति श्री गणेशपुराण उपासनाखंड में दूर्वा के माहात्म्य वर्णनमे चौसठवां अध्यायहुआहै ६४ ॥

पैसठवां अध्याय ॥

कौण्डिन्यजी बोले कि हे प्रिये किसीसमय में सुखपूर्वक विराजमान गजाननजीके पास नारदमुनिजी बहुत दिनोंसे उन्हें देखने को आये १ तो ये इन्हें साष्टाङ्ग प्रणामकरकेबोले कि हमारा जन्म सफलहै कि जो पुण्यों के समूहों से हे गजाननजी आपका दर्शन भयाहै २ ऐसे कह अरु निज हाथ जोडकर नारदजी उनके आगे खडेहोगये तो महाभाग गजाननजी बडभागी नारदजी को निज हाथ से उनका हाथ पकडके आसनपर बैठातेभये ३ तो मुनिश्रेष्ठ भगवान् नारदजी तिस सन्मानसे सतुष्टभये गणेशजीसे बोलेकि हे गणेशजी जो मेरेमनमें आश्चर्यहै उसे निवेदनकरनेको आपको नमस्कार करके फिर जाऊगा ३।४।५ तो गजाननजी बोले कि तुमने क्या आश्चर्यदेखा अरु तुम्हारे मनमें क्याहै सो सब विशेष करके कहो फिर अपने आश्रमको जाना ६ नारदजी बोले कि हे देवगणेशजी मिथिला निकट देश मे राजो मे श्रेष्ठ राजाजनक जो अत्यन्त मानवाला अतिदाता अरु वेद वेदांग पारगामी ७ अन्न दाता अरु नित्यही प्रीतियुक्तहुआ ब्राह्मणोंकोपूजताहै नानाप्रकार के अलकार अरु वस्त्रोंसे अरु अनेकसी दक्षिणाओं करके ८ अरु ये जनक दरिद्री, अधे, कृपणो को बहुत सा द्रव्यदेता है अरु याचक जन जो२ उससे मागतेहै सो२ही ये उन्हें देताहै९ पर तबभीउस महात्माका द्रव्य नाशको प्राप्त नहीं होताहै क्या आपकी कृपासे दिन२ उसका द्रव्य बढताही जाताहै क्या १० ऐसे महाआश्चर्य को देखनेकेलिये मै उसके महलोंमेंगया तो वो अपने ब्रह्मज्ञानके अभिमान से मेरीहँसी करताभया११ अरु मैं उससे ये बोला किहे नृपश्रेष्ठ तु धन्यहै जो तेरे भक्तिकरके मनचाहे को गजाननजीदेते हैं१२ तो वो गर्वसे ये बोला कि तीनलोक में मैंहीं समर्थहूं अरु

मैहीं देनेवाला अरु भोगी अरु रक्षक अरु छिपानेवाला भी हूं १३ मेरे स्वरूपके बिना तीनलोकमें और कुछभीनहीं है अरु हेमुनिश्रेष्ठ कर्त्ता अरु मुख्य कारण अरु करण जिससे कियाजाय सो भी मैहीं हूंगा १४ नारदजी बोले कि मैं उसका ऐसा वचन सुनके क्रोधमें उसे कहताभया कि ईश्वरसे इतर जगत् का कर्त्ता कोई भी औरनहीं है १५ अरु हे राजन् तू इस धर्मकी हठसेही करता अर्थात् विपरीत समझरहाहै क्या सो हे अमोघ जनक मैं तुम्हें इसका साक्षिपननाम प्रमाणपूर्वक फल अर्थात् बदला थोड़े कालसे अर्थात् शीघ्रही दिखाऊंगा १६ हेगजाननजी मैं उससे ऐसेकहकर चलागया कौण्डिन्यजी कहतेहैं कि हे प्रियेविभुगणेशजीमुनिजीका ये वाक्य सुनउनको पूजतेभये १७ अर्घ्यआदिकोंसेअरुआभूषणोंसेअरुचदन सहित सुन्दरपुष्पोंसे तो नारदजीतो इनसे आज्ञालेकरके वैकुण्ठमें भगवान्प्रति जातेभये १८ अरु गणेशजी सर्ववेत्ताभी राजाजनक की भक्तिकी परीक्षा करनेको निन्दित वेषबनाकर मिथिलापुरीको आये १९ जो कुवेष बहुतसे घावोंसे सयुक्त लोहूझररहे जिसमेंअरु अभद्र अरु मक्खियोंके समूह जिसपर लपटेहोतोसेहीन जैसे कोई अत्यन्त मरणातुर हो २० तो मनुष्योंने इसऐसे को जाता देखकर वस्त्रसे नासिका को रोकलई अरु कइयोंने जैसे तैसे थूका अर्थात् सब अति ग्लानिको प्राप्तभये २१ अरु ये गणेशजी स्खलित होते अर्थात् खटकर गिरते मूर्च्छा खाते चलते फिर पडते अरु बालकों की पंक्तिसे सयुक्त अर्थात् बालक जिनके पिछाडी पुकार रहे ऐसे राजद्वारपर आकर द्वारपालोंको बोले २२ कि हे दूतो मुझ भूखे वृद्ध ब्राह्मण यथेच्छ भोजनकी इच्छावाले आये अतिथिको राजा के अर्थ निरन्तर जनावो अर्थात् बतावो २३ वे राजाजनक केपास जाकर तैसाही कहतेभये उस उसआश्चर्यको देखनेकेलिये दूतोंसे कहाकि उसेलावो २४ तो फिरराजाजनकने इनको देखकर जोकि रुधिरझरते वृद्धब्राह्मण खेदसे पसीनेसहित तो विचारकिया कि ये रूप धारी ईश्वरही तो नहीं है क्या २५ तो मेरा कोई महापुरुष

हो अरु जे मुझको छलने आये होतो में इनकेमनको समाधानकरूं-
गा ये भावि अन्यथा नहीं हे नृपश्रेष्ठ राजाजनक के ऐसे विचार
करते द्वारपालों से प्रवेशकिये वृद्ध ब्राह्मणजी देखने में आये २७
ब्राह्मण बोले कि तेरी चन्द्रमाकी किरणोंके समान धोली अर्थात्
स्वच्छ तेरीकीर्ति सुनकर आया हूं सो हेराजन् बहुतकालसे अत्यंत
भूखे मुझको भोजनदेवो २८ सोकि जिननेसे मेरी तृप्तिहो तितना
ही अन्न मुझको देवो हे नरोंके ईश्वर तुमको सौ यज्ञों के तुल्य फल
होगा २९ कौण्डिन्यजी बोले कि वो जनक ऐसीवाणी को सुनकर
उन्हें घरमें लेगया अरु इन्हें यथाविधि पूजकर सुस्वादु अन्न परो-
सताभया ३० वो ब्राह्मणश्रेष्ठ एकही ग्रासमें उससबको ग्रसगये
तो जितना अन्न तय्यार था दशसेहस्र भोजन परिमित ३१ सो
उनके आगेरक्खा सो उन्होंने क्षणमेंही भक्षणकिया तो अनगिनत
पात्रोंमें सुंदर तंडुल परिपक्व होनेको चढ़ाये ३२ अरु कही कि जो
तडुलान्न तय्यारभयाहै सो इसकेआगे रक्खो वोभी सब उन्हों ने
खाया तब राजा निजजनों से बोला कि ३३ अवश्य ये राक्षसही
होगा किसलिये इसे बहुत परोसतेहो क्योंकि राक्षसोंके देनेसेकुछ
पुण्य नहींहोताहै ३४ कइयोंनेकहा कि त्रिलोकीकेभी भोजनकरने
से इसकी परमतृप्ति नहींहोती सो हे राजन् इसे नाजदीजिये ३५
तो सारे धान्य जो घर अरु भूमिमें अर्थात् खेतों में अन्न तय्यारथे
सो सबलाकर पुर अरु ग्रामोंमेंभी जो थे सो रक्खे ३६ पुरुष द्विज
रूप सर्वभक्षी अतिथि इनके आगे तो ये उनको भी भोजन किये
तृप्त न भये ३७ तबतो दूत राजासे बोले कि नाज भी कहीं नहीं
मिलता है ऐसे दूतवचन सुनके जनकके नीचामुखहो स्थितभये तो
विप्रजी नहीं तृप्तभये घरघरगये अरु बोले कि अन्न देवो तो तब
वे जन इनको बोले ३८ हमारे सबके घरोंमें जो धान्यथा सोसारा
राजाने मँगालिया अरु हे ब्रह्मन् सो सब तुमनेही खालियाहै अब
आपकी रुचिहो तहांही जाइये ४० द्विज बोले कि हमने इसकी
कीर्ति संसारमें सुनीथी कि राजा जनकसे परे कोई दानी नहीं सो

मैहीं देनेवाला अरु भोगी अरु रक्षक अरु ढिवानेवाला भी हूं १३
मेरे स्वरूपके विना तीनलोकमे और कुछभीनहीं है अरु हेमुनिश्रेष्ठ
कर्त्ता अरु मुख्य कारण अरु करण जिससे कियाजाय सो भी मैहीं
हूंगा १४ नारदजी बोले कि मैं उसका ऐसा वचन सुनके क्रोधसे
उसे कहताभया कि ईश्वरसे इतर जगत्‌का कर्त्ता कोई भी औरनहीं
है १५ अरु हे राजन् तू इस धर्मको हठसेही करता अर्थात् विप-
रीत समझरहाहै क्या सो हे अमोघ जनक मैं तुम्हें इसका माक्षि
पननाम प्रमाणपूर्वक फल अर्थात् बदला थोड़े कालसे अर्थात् शी-
घ्रही दिखाऊंगा १६ हे गजाननजी मैं उससे ऐसेकहकर चलागया
कौण्डिन्यजी कहतेहैं कि हे प्रियेविभुगणेशजीमुनिजीका ये वाक्य
सुनउनको पूजतेभये १७ अर्घ्यआदिकोंसेअरुआभूषणोंसेअरुचंदन
सहित सुन्दरपुष्पोंसे तो नारदजीतो इनसे आज्ञालेकरके वैकुण्ठमें
भगवान्‌प्रति जातेभये १८ अरु गणेशजी सर्ववेत्ता भी राजाजनक
की भक्तिकी परीक्षा करनेको निन्दित वेषवनाकर मिथिलापुरीको
आये १९ जो कुवेष बहुतसे घावोंसे सयुक्त लोहूझररहे जिसमेअरु
अभेद्र अरु मक्खियोंके समूह जिसपर लपटेहोतोसेहीन जैसे कोई
अत्यन्त मरणातुर हो २० तो मनुष्योंने इसऐसे को जाता देखकर
वस्त्रसे नासिका को रोकलई अरु कइयोंने जैसे तैसे थूका अर्थात्
सब अति ग्लानिको प्राप्तभये २१अरु ये गणेशजी स्खलित होते
अर्थात् खटकर गिरते मूर्च्छा खाते चलते फिर पडते अरु बालकों
की पङ्क्तिसे सयुक्त अर्थात् बालक जिनके पिछाडी पुकार रहे ऐसे
राजद्वारपर आकर द्वारपालोंको बोले २२ कि हे दूतो मुझ भूखे
वृद्ध ब्राह्मण यथेच्छ भोजनकी इच्छावाले आये अतिथिको राजा
के अर्थ निरन्तर जनावो अर्थात् बतावो २३ वे राजाजनक केपास
जाकर तैसाही कहतेभये उस उसआश्चर्यको देखनेकेलिये दूतोंसे
कहाकि उसेलावो २४ तो फिरराजाजनकने इनको देखकर जोकि
रुधिरझरते वृद्धब्राह्मण खेदसे पसीनेसहित तो विचारकिया कि ये
रूप धारी ईश्वरही तो नहीं है क्या २५ जो मेरा कोई महापुरुष

हो अरु ये मुझको छलने आये होतो मैं इनकेमनको समाधानकरूं-
गा ये भावि अन्यथा नहीं हे नृप श्रेष्ठ राजाजनक के ऐसे विचार
करते द्वारपालों से प्रवेशकिये वृद्ध ब्राह्मणजी देखने में आये २७
ब्राह्मण बोले कि तेरी चन्द्रमाकी किरणोंके समान धोली अर्थात्
स्वच्छ तेरीकीर्त्ति सुनकर आयाहूं सो हेराजन् बहुतकालसे अत्यंत
भूखे मुझको भोजनदेवो २८ सोकि जितनेसे मेरी तृप्तिहो तितना
ही अन्न मुझको देवो हे नगरके ईश्वर तुमको सो यज्ञो के तुल्य फल
होगा २९ कौण्डिन्यजी बोले कि वो जनक ऐसीवाणी को सुनकर
उन्हें घरमें लेगया अरु इन्हें यथाविधि पूजकर सुस्वादु अन्न परो-
सताभया ३० वो ब्राह्मणश्रेष्ठ एकही ग्राससे उससबको ग्रसगये
तो जितना अन्न तय्यार था दशसहस्र भोजन परिमित ३१ सो
उनके आगेरक्खा सो उन्होने क्षणमेंही भक्षणकिया तो अनगिनत
पात्रों में सुंदर तंडुल परिपक्व होनेको चढाये ३२ अरु कहा कि जो
तंडुलान्न तय्यारभयाहै सो इसकेआगे रक्खो वोभी सब उन्हो ने
खाया तब राजा निजननों से बोला कि ३३ अवश्य ये राक्षसही
होगा किसलिये इसे बहुत परोसतेहो क्योंकि राक्षसोंके देनेसेकुछ
पुण्य नहींहोताहे ३४ कइयोंनेकहा कि त्रिलोकीकेभी भोजनकरने
से इसकी परमतृप्ति नहींहोती सो हे राजन् इसे नाजदीजिये ३५
तो सारे धान्य जो घर अरु भूमिमें अर्थात् खेतों में अन्न तय्यारथे
सो सबलाकर पुर अरु ग्रामोंमेंभी जो थे सो रक्खे ३६ पुरुष द्विज
रूप सर्वभक्षी अतिथि इनके आगे तो ये उनको भी भोजन किये
तृप्त न भये ३७ तबतो दूत राजासे बोले कि नाज भी कहीं नहीं
मिलता हे ऐसे दूतवचन सुनके जनकके नीचामुखहो स्थित भये तो
विप्रजी नहीं तृप्तभये घरघरगये अरु बोले कि अन्न देवो तो सब
वे जन इनको बोले ३८ हमारे सबके घरोंमें जो धान्यथा सो सारा
राजाने मँगालिया अरु हेब्रह्मन् सो सब तुमनेही खालिया है अब
आपकी रुचिहो तहांही जाइये ४० द्विज बोले कि हमने इसकी
कीर्त्ति संसारमें सुनीथी कि राजा जनकसे परे कोई दानी नहीं सो

हीं तृप्तहोने के काम मैं आया अब बिन तृप्त भये कैसे चलाजाऊं ४१ तब उनलोगोके चुपभये भमतेर इन्होने (विरोचन) अरु त्रिशिरानाम ब्राह्मणी ब्राह्मणोकाश्रेष्ठमंदिर देख ४२ तौ वे निजसत्ता करके घरकेस्वामीके तरे उसकेभीतर प्रवेश भये जो घर सब उपस्करण अर्थात् तय्यारियोसेरहित अरु धातुवरतनोसेरहितथा ४३ इसप्रकार गणेशपुराण उपासनाखण्ड में दूर्वाके माहात्म्य वर्णन में पैसठ अध्याय हुआ ॥ ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

कौण्डिन्यजी बोले कि तौ द्विजरूपधारी गणेशजी ने उनब्राह्मणोको देखे जो केवल पृथ्वीहीके आसनवैठे अरु आकाश वस्त्रहीसे संयुक्त अर्थात् नंगे तथा दिशाहींहैं वस्त्रजिनके अरु सब धातुओ के स्पर्शसे वर्जित अर्थात् जिनकेपास कुछ भी ताम्रादिक नहीं था १ अरु बिनमांगा अर्थात् आपसे आयाही भोजन करनेवाले अरु नित्य जलसेही सबकर्म कर रहे ज्ञान प्राप्तिके लिये २ अरु उनका घर जो मक्खियोके समूहोसे अरु मच्छरोसे सब ओरसेछाया अरु गणनाथजीकी मूर्त्ति जो पुष्पपत्रो से पूजनकरी ३ अनन्यभक्ति से उनकरके जो उसीमें परायण होरहे उनसे पूजी मूर्ति को देखी तौ ये उनसे बोले कि हे निष्पापो जो मुझसेकहाजाताहै सोवाक्य सुनो ४ कि मिथिलापुरीके पति जनककी कीर्ति सुनकर अत्यन्तभूखा मैं तृप्तके काम आयाथा सो उसने मेरी तृप्ति नहीं करी ५ क्योंकि पाखंडके कर्मसे शुद्ध सत्त्वरक्षा नहीं कियाजाताहै अर्थात् सतोगुण तमोगुणका मेल नहींहोताहै सो मेरी तृप्तिकारक कुछ है तौ देवो ६ तो वे स्त्रीपुरुष बोले कि जो चक्रवर्ती राजाथा उसनेभी जो तुम्हारी तृप्ति नहीं करी तौ हम दरिद्री तुम्हारा तृप्तिकारक क्या देवैं ७ जो समुद्र अनगिनत नदी नदोके जलोसे नहीं पूर्णहोवे सो बूंदमात्र जलसे कैसे भरै सो कहो ८ तौ द्विजजी बोले कि मुझको भक्तिसे थोडा भी दिया बहुत तृप्तिकारकहै अरु बिन भक्तिसे अरु

पाखण्ड से बहुतसा भी दिया वृथाही होजाताहै ९ वे बोले कि हे द्विज हमको तुम्हारी सौंहै कि हमारे घरमें कुछभीनहींहैगणनाथजीकी पूजाकेलिये सवेरे दूर्वांकुर लाये थे १० सो उनसे गणेशजी को पूजन किये उनमेंसे एक शेष रहाहै तो द्विजबोला कि भक्ति से दिया वो एकभी तृप्तिकेलिये है सो देवो ११ कौण्डिन्यजी बोलेकि विरोचनाने तिनसेकहा सुनके एक दूर्वांकुर तिन्हें भक्तिसे देतीभई तौ तिसे वे द्विजजी प्रसन्नभये १२ तौ भक्तिसे उसविरोचनाकरके दूर्वांकुर के दिये तडुलान्न अरु दुग्धान्न अरु नाना पकवान अरु सारे व्यजन जो चाटने अरु चूसने योग्यथे सोभी सबहोगये विप्र जीने उसे लेकर परम हर्षसे भक्षणकिया१४ तौ भक्तिसेतिसविरोचनासे उस दूर्वांकुरके दिये तौ तिसकरके वो विप्रजी के उदर का अनल अर्थात् अत्यत क्षुधाग्नि सो शांतभया १५अरु तिसी क्षणमात्रसेपरमतृप्तिप्राप्त भई तौ तृप्तभये विप्रजी उसत्रिशिराब्राह्मण कोआलिंगन करतेभये अरु तिस निन्दित रूपको त्यागदिया अरु गजाननजी प्रकटभये जो गणेशजी चारभुजकमलनयन अरु शुंडा दण्डसे विराजमान १७ अरु कमल, परशु,माला,एकदन्त इनको हाथोंमें धारण करते अरु जो महामोल्य के मुकुटवाले शोभित कानोंके कुण्डलोंसे सजे १८ जो दिव्यवस्त्र पहिरे अरु दिव्य सुगंधियोंको लेपनकिये ऐसे गजाननजी प्रसन्नभये उन स्त्रीपुरुषों को बोले १९ तुम मनसे जिस२ वरकोचाहतेहो सो तुम उसीको मांगो वे बोले कि जहां हमारे दोनोंके जन्म हों तहांही आपकी दृढभक्ति होवे २० अरु हे देवजी या इस संसारसागरसे मोक्षदेवो हे गजाननजी नकिंचन अर्थात् दरिद्रीभीहमदोनोंको कुछअपेक्षानहींहै २१ कौण्डिन्यजी बोले गजाननजी ऐसे उनका वचनसुनके अरु तैसेही हो ऐसा कहकर अरु भक्त त्रिशिराको हर्षसे फिर स्पर्श करके अंतर्द्धान भये २२ सो हे आश्रये में दूर्वा का भार इनपर चढ़ाताहूं कि जो देवजी अपरिमित भोजनोंसे भी तृप्त न भये २३ अरु वेही एक दूर्वाके अंकुरसे परमतृप्तभये ऐसे तेरेको हमने दूर्वाके समर्पण

से हुआ अगणसेही सर्वकामदाता सुन्दर महिमा वर्णनकियाहै२४ जो इस इतिहासको भक्तिसे सुनै अरु सुनावे तो वो पुत्र अरु धन की कामनासे युक्त यहा अरु वहा अर्थात् परलोक में आनन्द को प्राप्तहोताहै २५ अरु गणेशजीमे भक्तिपावै अरु निष्कामहोवे तो मोक्षको प्राप्तहोवे गणपतिजी कहते हैं कि आश्रया इस इतिहास को सुनकर भी चित्तमे भरोसा अर्थात् सदेह को प्राप्तभई तो कौण्डिन्यजी इसे फिर वोले कि हे आश्रये सन्देह दूरकरने को तू मेरा वचन सुन २६।२७ जो मैंहू सबो तरेहृदयमें स्थितमुझसे जानेभये कोकहताहू कि एकदूर्वांकुरलेकर शीघ्रइन्द्रपेचलीजा २८ ता पहिले आशीर्वाद कहु अरु फिर सुवर्णमांग सो दूर्वाकुरके वरावर धरला पर हे शुभे उससे थोड़ा या वहुत न लेना॥ ३० ॥ इसप्रकार से गणेशपुराण उपासनाखण्ड दूर्वाके माहात्म्यमे छासठका अध्याय हुआ ॥ ६६ ॥

सरसठवां अध्याय॥

गण वोले कि हे मनुष्यो कौण्डन्य मुनिजी से आज्ञा की वो आश्रया अपने कार्यकी सिद्धिके लिये एक दूर्वांकुर को लेकर इन्द्र के पासगई १ तो आश्रया उससेवोली कि हे इन्द्र मुझे सुन्दरसुवर्ण देवो हे सुरेश्वर मैं पतिके वाक्य से तुम्हैं याचने को आइहू २ इन्द्र वोला कि किसलियेतुमयहांआई जो आज्ञाभेजदईहोती तो मैं अपनी सामर्थ्य से तुम्हैं सुवर्ण भेजदियाजाता ३ आश्रया वोली हे सुर जो इस दूर्वांकुरकी तोलसे जो सुवर्णहो सो मैं लेऊगी हे शची के पति न उससे थोडा न वहुत ४ इन्द्र वोला कि हे दूतो इसे तुम शीघ्र कुवेरजीके घरपे लेजावो इसे वो दूर्वाकुर से तोला सुवर्ण देवेगा ५ गण वोले कि देवदूत देवो के राजा इन्द्र की आज्ञा से उसके साथ इन्द्रके वचनसेती कुवेर भवनगया ६ उससे वोला कि इसे दूर्वाकुरके समान सुवर्णदेवो ये मुनिपत्नी पति के वाक्यसेती मेरेसाथ इंद्रने भेजीहै सो अब तुम्हारेघर पहुचाई हेदेव मै जाताहू

आपको नमस्कार होवे ७ कुबेर जी बोले कि मैं अति आश्चर्य्य मानताहूं कि कौडिन्य इन्द्र आश्रया ये मोहभये नहीं जानते कि दूर्वांकुर के बराबर कितना सुवर्णहोताहै अरु उससे क्या होगा बहुत क्यों नहींमांगा तो गणबोले ऐसेही उसने उमको बहुतसा सुवर्ण दिया ८।६ पर उसने भर्ता के भयसे अरु न्यून अधिक की शङ्कासे नहींलिया तो उस दूर्वांकुर को सुनारकी तोल अर्थात् कॉंटे पर रक्खा तो वो सोना उसकी तुला से पूरा न भया फिर वैश्य तुला अर्थात् तराजूमँगाई तहांभी वो समान न भया १०।११ फिर तेलीकी तखड़ी में भी वो दूर्वांकुर सम न भया फिर तो वहांपर धड़ा बांधागया अरु उसमे एक पलड़े मे सुवर्ण चढाया १२ और पटलीओर दूर्वांकुर पर तब भी पटली ओर भी दूर्वांकुर नीचे नीचे ही पलड़े रहतारहा अर्थात् सुवर्ण पूरा न भया तो कुबेर जी ने और २ भी बहुतसा सुवर्ण चढातेभये १३ वोभी उस दूर्वांकुर से सम न भया तो सारे भण्डार के द्रव्य पर्वत के से शृङ्गसा उसने ला २ कर रक्खा १४ तब भी उस दूर्व्वांकुर से समता न भई तो आश्चर्ययुक्त कुबेरजीने पत्नी को बुलाकर उससे कहा १५ हे सुभ्रू मेरेवचनसे तु अगाडी के धरेपर आरोहणकर अर्थात् सोनेके पलड़े पर चढ़जा तब भी जो पूरानहो तो अपने सत को रखनेके लिये में भी चढ़जाऊंगा १६ पतिव्रता पति कुबेरजी की आज्ञासे तब घडे पे चढ़गई तो वोभी उसकेबराबर न भई तो सारीपुरी को चढ़ाई १७ धडेकेबीचमें कुबेरजी ने पर तब भी दूर्वांकुर ऊपर को न भया तो इन्द्र निजदूतके मुखसेकही सुनके अश्वपरचढआया १८ अरु अपने सामान सहित आप धडेपर चढगया पर वो दूर्वांकुर तब भी ऊंचेको न गया १६ तो नीचामुखकिये चिन्ताको प्राप्तभया अरु विष्णु शिवजी को स्मरण करताभया वहांपर चढ़नेकीकामना से २० तो वेभी निजर पुरी सहित तहां आये अरु घटेपर सवार भये तब भी वो प्रकट दूर्व्वांकुर ऊपर को न भया फिर ये वहां से उतरे शिव विष्णु कुबेर वरुण इन्द्र वायु ये सब ओरसे कौडिन्यजी

से हुआ अनगणसेही सर्वकामदाता सुन्दर महिमा वर्णनकियाहै२४ जो इस इतिहासको भक्तिसे सुने अरु सुनावे तो वो पुत्र अरु धन की कामनासे युक्त यहां अरु वहां अर्थात् परलोक में आनन्द को प्राप्तहोताहै २५ अरु गणेशजीमें भक्तिपावै अरु निष्कामहोवे तो मोक्षको प्राप्तहोवै गणपतिजी कहते हैं कि आश्रया इस इतिहास को सुनकर भी चित्तमे भरोसा अर्थात् सदेह को प्राप्तभई तो कौण्डिन्यजी इसे फिर बोले कि हे आश्रये सन्देह दूरकरने को तू मेरा वचन सुन २६।२७ जो मैंहू सच्चो तरेहृदयमें स्थितमुझसे जानेभये कोकहताहूं कि एकदूर्वांकुरलेकर शीघ्रइन्द्रपैचलीजा २८ ता पहिले आशीर्वाद कहु अरु फिर सुवर्णमांग सो दूर्वांकुरके बराबर धरला पर हे शुभे उससे थोडा या बहुत न लेना॥ ३० ॥ इसप्रकार से गणेशपुराण उपासनाखण्ड दूर्वाके माहात्म्यमे छासठका अध्याय हुआ ॥ ६६ ॥

सरसठवां अध्याय॥

गण बोले कि हे मनुष्यो कौण्डिन्य मुनिजी से आज्ञा की वो आश्रया अपने कार्यकी सिद्धिके लिये एक दूर्वांकुर को लेकर इन्द्र के पासगई १ तो आश्रया उससेबोली कि हे इन्द्र मुझे सुन्दरसुवर्ण देवो हे सुरेश्वर मैं पतिके वाक्य से तुम्हें याचने को आईहू २ इन्द्र बोला कि किसलियेतुयहांआई जो आज्ञाभेजदईहोती तो मैं अपनी सामर्थ्य से तुम्हें सुवर्ण भेजदियाजाता ३ आश्रया बोली हे सुर जो इस दूर्वांकुरकी तोलसे जो सुवर्णहो सो मै लेऊंगी हे शची के पति न उससे थोड़ा न बहुत ४ इन्द्र बोला कि हे दूतो इसे तुम शीघ्र कुबेरजीके घरपै लेजावो इसे वो दूर्वांकुर से तोला सुवर्ण देवेगा ५ गण बोले कि देवदूत देवो के राजा इन्द्र की आज्ञा में उसके साथ इन्द्रके वचनसेती कुबेर भवनगया ६ उससे बोला कि इसे दूर्वांकुरके समान सुवर्णदेवो ये मुनिपत्नी पति के वाक्यसेती मेरेसाथ इन्द्रने भेजीहै सो मैं तुम्हारेघर पहुंचाई हेदेव मैं जाताहूं

है ३५ उस मेरे अपराध को आप क्षमाकरो मैं आपके शरण प्राप्त हूं फिर सबेरेउठकर दूर्वालेकर शीघ्रतावाले मुनि अरु आश्रया ३६ न्हाय गणेशजीको अर्चनकरके दूर्वाका अर्पणकरतेभये अनन्यभक्ति से वे दोनों उस उत्तम दूर्वाके माहात्म्यको जानकर ३७ साझसबेरे देव देव गणेशजी को निरंतर अर्चन करते यज्ञ व्रत दान इन्हें तज के तो गजाननजी इन्हे ऐसे जानकर परमकृपासे आवेशभये निज धामको पठातेभये गण बोले कि ये हमने अथाह उत्तम दूर्वा का माहात्म्य वर्णन कियाहै ३८।३६ इस निश्शेष के वर्णन करनेमें न शेषजीसमर्थहैं न हरि नशिवजी समर्थहै जिस दूर्वाके पत्रकी तौल की तुल्य त्रिभुवननहुआ ४० दूर्वा ऐसे स्मरणसेही नानाप्रकारका अर्थात् कायक वाचक मानस ये तीनप्रकारका पाप विलयहोजाता है जिसलिये उसीके स्मरणभये देवगजाननजीभी स्मरणकियेजाते है ४१ ऐसे चिन्तामणि क्षेत्रकी भी महिमा प्रकट वर्णनकियाहै जो श्रवण से कथनसे ध्यानसे भुक्ति मुक्ति फल प्रदाता ४२ इसकारण से तीनोंको विमान भेजेगये है सो कि गधे के अरु बैल के मुखसे गणेशजीपर दूर्वागिरी ४३ इस चाडाली से शीतके नाश के लिये लाये तृणोंके भारसेतो वायु अप्रलय से अर्थात् साधारणपवनसे ही दूर्वा गजाननजी पै ले जा गेरीगई ४४ जिस से उनको दूर्वा प्यारीथी तिसीसे वे विनायकजी प्रसन्नभये तो वे इन तीनो के निष्पापपनमे निज समीपता को देतेभये ४५ ये विभु गणेशजी दूर्वा के गंधमात्रसे अरु तिसके प्रसंग से अरु पासहोनेहीसे संतुष्टहोतेहैं तो मस्तकपर चढाने से तो क्यों न होवें ४६ ब्रह्माजी बोले कि हे व्यासजी तब दूतमुखसे राजा ने उसदूर्वा के माहात्म्यको सुना जो सब मुनियों से न देखा अरु न सुनागया ४७ तोतिन्होंनेभी स्नान कर दूर्वांकुरों को लेकरके विनायकजीको पूजे अरु सेवकजन भी दूर्वाओंसे श्रीगजानन जीको पूजतेभये ४८ तो वे सारे देवशरीर तेजसे सूर्यके से प्रतापवाले भये जो देववाजों के नाना प्रकार के शब्दोंको सबओरसे श्रवणकरते ४९ वे श्रेष्ठ विमान पर बैठे दिव्य

के पासगये२१।२२अरु देव देवर्षिसिद्ध विद्याधर सर्पयेभीसबजैसे
साँझ समय अपने स्थानको पक्षी जाते हैं तैसे गये २३ तो सारे
ये मुनिजीको नमस्कार करके उद्विग्नमनभये बोले सारे कहनेलगे
हे मुनिजी आपके दर्शन से सर्वपाप विलीन भये जो सर्व पुण्य से
भयाहै अरु तिसीसे अगाडीभी हमारा कल्याणहै वेगा अवहमारा
सबोंका सत तुम्हारी पत्नी ने हरलिया है २४।२५ हम दूर्वांकुर
से भई महिमा नहीं जानते हैं क्योंकिजो एक दूर्वांकुर के तुल्य-
ताको त्रिभुवन भी न प्राप्तभया २६ तो आपकरके भक्तिसेगजा-
ननजीके शिरपर स्थित समर्पणकरे दूर्वांकुर के महिमाको सम्यक्
कौनजाने २७ अरु जो तुम केवल गजानन जी के भक्त रात्रिदिन
जप तप कररहे तो सर्वस्वरूपी आपकी भी महिमा को कौन जान
सकै २८ ऐसे सारे कौडिन्यजीसे कहकर और पहिले गजाननजी
को पूजकर फिर सारों ने भार्यासहित इनको पूजे स्तुतिकिये इनके
आगे नीचे अरु गतिमने २९ सोकि हेदेव थ स्वाम भी नहींजाना
रूप जिनका ऐसे आपकी महिमा को नतो ब्रह्मा न विष्णु अरु
न शिव इन्द्र पवन न अग्नि न सूर्य्य न यम अरु न अशेष कलाओं
के निधान शेषजी भी अरु न वरुण न चन्द्रमा न अश्विनीकुमार
अरु न वाणीपति अर्थात् बृहस्पति अरु न गरुडजी न यक्षोंकेराजा
कुबेरजी न अगिराजी ये इतने भी नहींजानते हैं ३० ऐसे वे सारे
देवोंके देव गजानन जी की स्तुतिकरके अरु मुनिजीसे आज्ञालेकर
निजनिज निकेतन नाम धामको पधारे ३१ अरु आश्रमा भी फिर
उत्तम इसदूर्वाके माहात्म्यको जानकर भर्ताकेवाक्यमें विश्वासभई
वा दूर्वाओंसेही पूजन करतीभई ३२ सर्वदेव विघ्नेश्वरजी दूर्वाओं
से पूजे भयोंको अरु सत्यवादी भर्त्ता कौडिन्यजी को प्रणाम करती
भई ३३ अरु सुन्दर प्रसन्न मन भई वो अपने आपे को अत्यन्त
निन्दाकरती बोली कि मुझसरीखी दुष्टा कोई भी नहींहै जो भर्त्ता
के वाक्यमेंभी सन्देहसहितभई ३४ विशेष विद्वान् अत्यन्त जानने
वाले आप सब प्राणियोंपर दयावाले आपने मेरा भलाकार्य्यकिया

है ३५ उस मेरे अपराध को आप क्षमाकरो मैं आपके शरण प्राप्त हूं फिर सवेरेउठकर दूर्वालेकर शीघ्रतावाले मुनि अरु आश्रया ३६ न्हाय गणेशजीको अर्चनकरके दूर्वाका अर्पणकरतेभये अनन्यभक्ति से वे दोनों उस उत्तम दूर्वाके माहात्म्यको जानकर ३७ साझसवेरे देव देव गणेशजी को निरंतर अर्चन करते यज्ञ व्रत दान इन्हें तज के तो गजाननजी इन्हें ऐसे जानकर परमकृपासे आवेशभये निज धामको पठातेभये गण बोले कि ये हमने यथाह उत्तम दूर्वा का माहात्म्य वर्णन कियाहै ३८।३६ इस निश्शेष के वर्णन करनेमें न शेषजीसमर्थहैं न हरि नशिवजी समर्थहै जिस दूर्वाके पत्रकी तोल की तुल्य त्रिभुवननहुआ ४० दूर्वा ऐसे स्मरणसेही नानाप्रकारका अर्थात् कायक वाचक मानस ये तीनप्रकारका पाप विलयहोजाता है जिसलिये उसीके स्मरणभये देवगजाननजीभी स्मरणकियेजाते हैं ४१ ऐसे चिन्तामणि क्षेत्रकी भी महिमा प्रकट वर्णनकियाहै जो श्रवण से कथनसे ध्यानसे भुक्ति मुक्ति फल प्रदाता ४२ इसकारण से तीनोंको विमान भेजेगये हैं सो कि गधे के अरु बैल के मुखसे गणेशजीपर दूर्वागिरी ४३ इस चांडाली से शीतके नाश के लिये लाये तृणोंक भारसेती वायु अप्रलय से अर्थात् साधारणपवनसे ही दूर्वा गजाननजी पे ले जा गेरीगई ४४ जिस से उनको दूर्वा दृष्यार्थी निसीसे वे विनायकजी प्रसन्नभये तो वे इन तीनों के [illegible] रूपापपनसे निज समीपता को देतेभये ४५ ये विभु गणेशके दूर्वा के गंधमात्रसे अरु तिसके प्रसंग से अरु पासहोनेहूसे [illegible] तो मस्तकपर चढाने से तो क्यों न होवें ४६ ब्रह्माजी बोले कि हे व्यासजी तब दूतमुखसे राजा ने उसदूर्वा के [illegible] सुना जो सब मुनियों से न देखा अरु न सुनागया ४७ [illegible] स्नान कर दूर्वांकुरों को लेकरके ५ विनायक [illegible] सेवकजन भी दूर्वाओंसे श्रीगजानन जीको पूजने [illegible] वे सारे देव [illegible] तेजसे सूर्यके से प्रतापवाले [illegible] के नाना [illegible] शब्दोंको सखोंमे [illegible] विमान पर [illegible]

सुगन्धोंको लेपनकिये बहुतसे उन्हीं के रूपधारी विनायक जी के धामको प्राप्त भये ५० कई नगरके नर उस महा उत्सवके देखने को आये अरु इकईस दूर्वाओंसे पृथक् २ अर्चन करते भये ५१ तो वे भी सारे भोग भोगकर गणेशजी के धाम को पधारे अरु उसी पुण्यके समूह से विमान भी ऊपर को चला ५२ तिससे गणेशजी के भक्तकरके दूर्वाओंसे अर्चन करना चाहिये अरु जो नर प्रमादसे दूर्वार्चन नहींकरता है ५३ सो चांडाल जानना वो बहुत से नरको को प्राप्तहोवे मनुष्य उनका मुख कभी भी न देखे ५४ जो उनदेव-देव गजाननजी को दूर्वाओं से अर्चनकरै तो उसके दर्शन से और पापी भी शुद्धिको प्राप्तहोवे ५५ बहुत दूर्वाओं के न मिले एकही से पूजनकरै तो उससे भी किरोडगुणी पूजा की जातीहै संशय नहीं है ५६ श्रीब्रह्माजीबोले कि हे राजन् ऐसे नानाप्रकारका इतिहास सहित दूर्वाओंकामहत्त्व आपको वर्णनकियाहै जो श्रवणसेही पापों का नाशकहै ५७ ये दुष्ट बुद्धिवाले को नहींकहना प्यारेपुत्रको देना इन्द्रबोला ऐसे ब्रह्माजी के मुख से परम उत्तम आख्यान को सुन-कर ५८ परम प्रसन्न भया कृतवीर्य्य का पिता हर्ष को प्राप्त भया ब्रह्माजीको प्रणामकरता भया अरु आश्चर्य्ययुक्त अपने स्थान को आया ५९ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखंड में दूर्वामाहात्म्य में कौडिन्यमुनि वर्णन इसनामसेती सरसठ अध्यायहुआ है ६७ ॥

अरसठवां अध्याय ॥

राजाशूरसेन बोला कि हेइन्द्र [illegible] फिर क्या किया सो इस गणनाथजीकी कथा [illegible] १इन्द्र बोला वो राजश्रेष्ठ सकट [illegible] आख्यानको सुनकर वो र [illegible] गति नहीं होतीहै सो पुत्र [illegible] वीर्य्य ने स्वप्ने में निज [illegible] गद्गद कंठभये कुछ न बो [illegible]

चित्तसे करते भये अर्थात् मिलते भये ४ फिर पिताने कार्त्तवीर्य्य को हाथ पकड़कर गोदमें बैठाया अरु कहा कि हे पुत्र तैंने पुत्र के लिये वहुत प्रकार का प्रयत्न किया ५ अरु करता है पर है निष्फल मैंभी तुझको एक उपाय कहता हूं जो मृत्युलोक से आये नारदजी से मुझे कहागयाहै ६ हेपुत्र मैं उनसे सुनतेही तुझके पुत्र अर्थात् पौत्र के लिये वहुतप्रकार खेदको प्राप्त तिसी समय ब्रह्मा जी के स्थान पर गया ७ अरु मैंने उन सर्ववेत्ता ब्रह्माजीको नमस्कार करके पूछा कि हे कमलासन जी मेरे पुत्रके सन्तान कैसेहोगी ८ तो उन्होने सकष्ट चतुर्थीका उत्तम व्रत कहाहै सो हे नृप श्रेष्ठ इस व्रतके किये अरु पापका क्षय भये ९ तेरे निस्संशय पुत्रकी सन्तान होगी पिताने कहा कि तब जैसे ब्रह्माजी ने कहा सो तैसाही लिखा गया है १० सो तू ये पुस्तक ले अरु असन्देह इसको यथाविधिकर जितने वर्ष समाप्तहो तितनेही सिद्ध विनायकजी ११ सब सकटहारक देव प्रसन्न होंगे तो उनके प्रसन्न भये तेरे पुत्र होगा इसमें सशय नहीं है हे नृप तिस कार्तवीर्य्यका पिता ऐसे कह कर अन्तर्द्धान भया फिर वही कृतवीर्य्य जागा अर्थात् इसका इनसे स्वप्न में मिलाप भयाथा १२।१३ तो उसने निज हाथमें पुस्तक देखी स्वप्न के अर्थोंको स्मरण किये तो शोक अरु आनन्द में निमग्न भया सो कि पिताके वियोग से शोक युत अरु पुस्तकके प्राप्त भये हर्षित १४।१५ तितमेही इसके मन्त्र भी आगये अरु इसे वर्जते भये बोले कि हे राजन् तुम इस प्रमादको छोडो अरु सावधान मन हो जाओ शोक को तजो हमसे कहो कि शोक कारक कौन कारण है क्योंकि तुम्हारे शोकसे हमको भी अत्यंत शोक होताहै १६ इन्द्र बोले कि कृतवीर्य्य मन्त्रियोका वचन सुन उनसे ये बोला कि मैं स्वप्न में पिता जी देखे हैं तिसीसे मेरा मन व्याकुल हो रहाहै १७ अरु संकष्टचतुर्थीव्रतका बोधक पुस्तक भी मेरे हाथ में उन्होंनेही दिया है वो तौ तिसी छिनमें अन्तर्द्धान भये १८ उनके वियोग से मैं शोच रहा हूं जैसे निर्धन गये धनको

चित्तसे करते भये अर्थात् मिलते भये ४ फिर पिताने कार्तवीर्य्य
को हाथ पकड़कर गोदमें बैठाया अरु कहा कि हे पुत्र तैंने पुत्र के
लिये वहुत प्रकार का प्रयत्न किया ५ अरु करता है पर हे नि-
ष्पाप मैभी तुझको एक उपाय कहता हूं जो मृत्युलोक से आये
नारदजी से मुझे कहागयाहै ६ हेपुत्र मैं उनसे सुनतेही पुत्रके पुत्र
अर्थात् पौत्र के लिये वहुतप्रकार खेदको प्राप्त तिसी समय ब्रह्मा
जी के स्थान पर गया ७ अरु मैंने उन सर्ववेत्ता ब्रह्माजीको
नमस्कार करके पूछा कि हे कमलासन जी मेरे पुत्रके सन्तान
कैसेहोगी ८ तो उन्होने संकट चतुर्थीका उत्तम व्रत कहाहै सो हे
नृप श्रेष्ठ इस व्रतके किये अरु पापका क्षय भये ९ तेरे निश्चय
पुत्रकी सन्तान होगी पिताने कहा कि तव जैसे ब्रह्माजी ने कहा
सो तैसाही लिखा गया है १० सो तू ये पुस्तक ले अरु असन्देह
इसको यथाविधिकर जितने वर्ष समाप्तहो तितनेही सिद्ध विना-
यकजी ११ सब सकटहारक देव प्रसन्न होंगे तो उनके प्रसन्न
भये तेरे पुत्र होगा इसमें संशय नहीं है हे नृप तिस कार्तवीर्य्यका
पिता ऐसे कह कर अन्तर्द्धान भया फिर वो कृतवीर्य्य जागा
अर्थात् इसका इनसे स्वप्न में मिलाप भयाथा १२।१३ तो उसने
निज हाथमें पुस्तक देखी स्वप्न के [illegible] स्मरण किये तो शोक
अरु आनन्द में निमग्न भया सो [illegible] वियोग से शोक युत
अरु पुस्तकके प्राप्त भये हर्षित १४ [illegible] समेही इसके मंत्र भी
आगये अरु इसे वर्जते भये बोले [illegible] जन् तुम इस प्रमादको
छोडो अरु सावधान मन हो [illegible] शोक को तजो हमसे कहो
कि शोक कारक कौन कारण है [illegible] तुम्हारे शोकमें हमको भी
अत्यन्त शोक होताहै १६ इन्द्र बोले [illegible] मंत्रियोंका वचन
सुन उनसे ये बोला कि मैं स्वप्न में [illegible] हैं तिसीसे मेरा
मन व्याकुल हो रहाहै १७ अरु सकट [illegible]
भी मेरे हाथ मे उन्होनेही दिया है वो [illegible]
भये १८ उनके वियोग से मैं शोच रहा हूं

शोचे अरु उन्होंने कहाकि मेरे वाक्यसे तु पुत्रके लिये ये व्रत करे
१६ जब हे मन्त्रियो मैं जागा तो हाथमें पुस्तक देखा तो अब मै
आश्चर्य हर्ष शोकों करके आंशू छोडरहाहू और तरहनहीं२०।२१
मन्त्री बोले कि जो सब लोको के अरु मनुष्य सर्व राक्षसो के जो
पिता नाम रक्षक है सोही पितृ रूप भगवान् प्रसन्न भये हैं २२
सोही उन्होंने तुमको उपाय बताया है हे नृप श्रेष्ठ सन्तान के लिये
सोकरोनहीं तो पुस्तकको अरुस्वप्न अर्थ क्या प्रमाण होवे २३ अरु
चिन्त प्रसन्नताके स्वप्न भी उलटा कहाहै अर्थात् स्वप्नमें प्रसन्नतासे
तो प्रसन्नताही होतीहै इन्द्र बोला कि राजा सावधान मन भया
मन्त्रियोका ऐसा वचन सुनके २४ अरु पण्डितो अरु प्यारो कोभी
बुलाकर पूछता भया कि हे ब्राह्मणो उनके प्रसाद से तुम इस
पुस्तकका अर्थ कहो २५ तो वे पुस्तक देखकर उसके अर्थको सारी
सभामें कथन करते भये कि हे राजन् इसमें कृतवीर्य्यके पिताका
ब्रह्माजी करके महा सम्वाद है २६ अरु सब सकट नाशने वाली
चौथ इसमें निरूपण की गईहै अरु चन्द्रमा के उदय भये विस्तार
सहित गणेशजीकी पूजा कही है २७ अरु अगारक चतुर्थी की
महिमा बहुत करकेकहीहै अरु चौथ, चन्द्रमा, गणेशजीको मन्त्रसहित
अर्घदानहै २८ अरु इक्कीस ब्राह्मणों का भोजन अरु पूजन है अरु
दरिद्रियो को भी नानाप्रकार के दानदेने ऐसा निरूपण किया है
२६ अरु दूर्वाके समर्पणका फल अरु श्वेत दूर्वाका फल पृथक्‌र है
ऐसा व्रतहै निष्पाप बडे भाग्य से तुमको प्राप्त भयाहै ३० ऐसा
नलोक में देखा न सुना उपकार कारी होगा जो श्रवण से अरु
स्मरण से भी मनुष्योके सब पापोंको हरनेवाला हो ३१ राजा सब
पण्डितो के मुखसे अरु लोकसे उसको सुनके आश्चर्य रूप आनन्द
युक्त भया उन उत्तम ब्राह्मणो को पूजता भया ३२ वस्त्र, गहनें
धान्य, धन उनको बहुत दिया अरु फिर राजा ने अत्रिजी को अरु
निजकुल गुरुजीको भी ३३ यथा विधि पूज करके उनसे सुन्दर
मुहूर्त में ग्रहण किया जो कि विनायकजी का व्रत अरु जो गरु

अक्षरका मंत्रथा ३४ तो वो राजा जितेन्द्रिय भया ध्यान से उस मन्त्रको जपता भया अरु गणनाथ जीकी प्रसन्नता के लिये उनका व्रतकर्त्ता भया सुतकी प्राप्तिके लिये ये संकटनाशन उस व्रतको कहा३५इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्डमें संकटचतुर्थीव्रतका निरूपण इसनामसे अरसठि अध्यायहुआ है ८६ ॥

उन्हत्तरवां अध्याय ॥

शूरसेन बोले कि ब्रह्माजीने कृतवीर्यके पिताको कैसे बताया सो उत्तम सकट चतुर्थीका व्रत मुझसे कहो १ इन्द्र बोला कि सत्यलोक मे सुखसेबैठे सर्वज्ञ चतुर्मुखजी को कृतवीर्यका पिता जाकर प्रनम्र भया ये बोला २ कृतवार्य पिता बोला कि हे देवदेव हे जगत्पोषक हे प्रणतो की पीडा निवारणकारिन् जो मेरे मनमें है सो मैं पूछता हू आप उसे वर्णनकरो ३ कि जो आपदो मे वर्त्तमान व्याकुलचित्त चिन्तासे चलित चित्तवाले मनुष्योंको प्यारों के वियोग में ४ अरु मनुष्योंको दुर्लभ प्रिय प्राप्तकेलिये कार्य सिद्धि कैसेहोवे अरु अर्थकी सिद्धि कैसेहोवे अरु पुत्र सौभाग्य सम्पत्ति ये नित्य कैसेहोवें ५ अरु हे प्रभो मनुष्योंको सब संकट नाशकेलिये क्या कर्त्तव्य हैं ब्रह्माजी बोले हे राजन् तू मन में सर्वसिद्धिप्रद व्रत वर्णन करताहू ६ कि मनुष्य जिसके अनुष्ठानही सेवाञ्छितको प्राप्तहो सो कि दश औषधी से अरु श्वेत तिलों से प्रसन्न मनभया दिनमे स्नान करे ७ श्रेष्ठ प्रकारसे गजाननजीको ध्याकर संकल्प करावे फिर शास्त्रकेकहे मन्त्रों से भक्तिकरके श्रीगणेशजी को पूजे ८ कृष्णपक्षकी चतुर्थी में रात को चन्द्रोदय में राजा बोला हे ब्रह्मन् देवदेव गजाननजी को कैसे पूजन करें ९ ब्रह्मा बोले नित्यकर्म समाप्त करके रात्रि में चन्द्रमा उदयभये शुद्धस्थान में जो गोमयसे लिपाभया अरु मण्डप चँदवे सहितहो वहा गणेशजी के पीठासन को केसर रँगे अक्षतोंसे पूजन करे १० । ११ तहा पंचरत्न सहित कलश स्थापन करे तिसके पर सुवर्ण का पात्र कलसहित धरे तिस के अभाव मे चांदीका तांबेका

या वासका तिसपरवस्त्र-तथा रेशमी वस्त्र यथाशक्तिसेधरे १२। १३
तिसकेऊपर शास्त्र कथित विधिमे यत्रस्थापन करे तहा गणेशजीकी
सुवर्णकी मूर्त्ति जो सब लक्षण सहित श्रेष्ठहो १४ जो एकदन्त वि·
शालनेत्र महाशरीरी तपे सुवर्ण केसे कान्तिमान् लम्बोदर जलते
अग्निके समान तेजधारी १५ अरु मूषककी पृष्ठि पै सवार अरुनिज
गणोंसे चँवर ढुलाये अरु नाग यज्ञोपवीतवान् ऐसे उन-गजाननजी
को चितवेन करे १६ कि हे देव देवेश आप आवो अरु मुझे सकटसे
निवारो अर्थात् बचाओ जितने व्रत समाप्त होवें तितने तुम सन्मुख
रहो १७ हे सर्व सिद्धिप्रदाता गणेशजी आपको नमस्कारहे ये आ
सन आप ग्रहणकरो अरु मुझे सकटसे निवारो १८ अरु हे उमाके
पुत्र आपको नमस्कार होवे अरु हे मोदक प्रिय आपको नमस्कार
होवे सोहे देवेश आप पाद्य ग्रहणकरो अरुसकटसे मुझेनिवारो १६
हे लम्बोदरजी आपको नमस्कार होवे ये रत्न सहित फलयुक्त अर्घ
ग्रहणकरो अरु सकटसे मुझेनिवारो २० अरु गगा आदि सवतीर्थो
से लायाजल उत्तम सो आप आचमन के लिये ग्रहणकरो २१ अरु
दूध दही घृत शर्करा शहद संयुक्त पचामृत आप ग्रहण करो अरु
मुझे सकट से निवारो २२ अरु नर्मदा अरु चन्द्रभागा अरु गगा
जीके सङ्गमसे भये जलोंसे मुझकरके भक्ति से आप न्हवाये गयेहो
सो मुझेसकटसे निवारो २३ हे गजाननजी आपको नमस्कारहे हे
परमेश्वर गजाननजी आप इस वस्त्र युग्म अर्थात् धोती अँगोछे को
ग्रहणकरो २४ हे विनायकजी आपको नमस्कारहे अरु परशुधारी
आपको नमस्कारहै ब्रह्मयज्ञोपवीत को आप ग्रहणकरो अरु सकट
से मुझे आप निवारो २५ हे शिवपुत्र आपको नमस्कारहै अरु हे
मूषकवाहन आपको नमस्कारहे देवजी आप चन्दन ग्रहणकरो अरु
संकटसे मुझेनिवारो २६ अरु ये घृत केसर से रँगे सुन्दर मनोहर
तडुल आपके लिये अक्षत हैं आपको नमस्कारहे मेरे सकटको नि·
वारो २७चम्पा चमेली दुब अरु अनेकसी पुष्पोकी जाति हे गणा·
ध्यक्षजी आप ग्रहणकरो अरु सकटको निवारो २८ अरु हेलम्बोदर

महाशरीरी हे धूमध्वज जी सुवासना किया ये धूप ग्रहण करो अरु संकटसे। निवारो २६ अरु हे विघ्नरूप अंधकारके संहार करनेवाले हे देवाधिपते आप दीपकको ग्रहणकरो अरुसंकटसेमुझे निवारो ३०' अरु लड्डू पूवे सादे लड्डू अरु शर्करा सहित खीर हे देव घृतसहित पकवान ये आप नैवेद्य ग्रहण करो ३१ नारियल फल दाख आम अरु सुन्दर अनार हे देवेश ये फल आप ग्रहण करो अरुसंकट से निवारो ३२ अरु सुपारी, इलायची, लौंग आदि मसालों सहित नागरपान हे देवेश ताम्बूल आप ग्रहण करो अरु संकट से निवारो ३३ हे देव जो सुवर्ण सर्व सिद्धिदाता अरु सर्वप्रीतिकारीहै सो आप दक्षिणाके लिये ग्रहणकरो अरु संकटसे मुझेनिवारो ३४ फिर भक्तिसे इक्कीस दूर्वा लेकरके सुसावधान भया इन नामोंसे देवगणेशजीको अर्चनकरै ३५ गणाधिपजीके अर्थ नमस्कार है १ उमापुत्रजीके अर्थ नम० २ अघनाशकजीकेअर्थ न० ३ एकदन्तजी के अर्थ न० ४ इभवक्त्र नाम गजमुखजीके अर्थन० ५ मूषकवाहन जीके अर्थ न० ६ विनायकजी को न० ७ ईशपुत्रजी को न० ८ सर्वसिद्धिप्रद आपको न०६ लम्बोदरजीको न०१०वक्रतुण्डजीको न० ११ मोदकप्रियजीकोन० १२ विघ्नविध्वंसकर्त्ताजीको न०१३ विश्ववन्दनीयजी को न० १४ अमरेश्वरजीको न० १५ गजकर्णजी को न० १६ नागयज्ञोपवीतिजी को न० १७ भालचन्द्रजी को न० १८ परशुधारीजी को न० १६ विघ्नाधिपजी को नमस्कार है २० विद्याप्रदजी को नमस्कारहै हे देव कर्पूर अग्निसहित निश्शेषपापों के समूहका नाशक नीराजन आप ग्रहणकरो संकटसे मुझेनिवारो ३६ और चम्पा अशोगिया अरु मौलसिरी इनसेभये सुन्दर पुष्पों की अंजलि इसे आप ग्रहणकरो अरु संकटसे मुझे निवारो ३७ हे गजमुखजी आपही इससंसार को रचतेहो अरु हे देव आपही इस विश्वको रक्षाकरते हो अरु हे अखिलेश्वर आपही संसारको संहार करतेहो सो हे विश्वात्मा आप प्रकट दीखरहेहो ३८ हे गणनाथजी मैं आपको नमस्कार करताहूं जो आप ईश्वर अरु विघ्नेश्वर अरु

सर्वविघ्नो के विनाश करनेमें चतुरहो अरु भक्तोकी पीडा के हन्ता अरु भक्तोके मोक्षमें दक्ष अरु विद्याके प्रदाता वेदके आदि निधान ऐसे आप को नमस्कार करताहूं ३६ ऐसे यथा बिधि से स्तुति करे अरु वारम्वार प्रणाम करै अरु यथाशक्तिसे इक्कीस परिक्रमा करै ४० कि हे गणेशजी जो मूढजन आपको नहीं पूजकर श्रेष्ठप्रयोजन की सिद्धिको चाहते हैं तो लोकमें नियमसेनष्टहैं मैने आपकासकल प्रभाव जानाहै ४१ अरु हेद्विजोके अधिपते सवसिद्धिदायक आप आचार्य अर्थात् उपदेशकारीहो हेब्रह्मन् ये वायना ग्रहणकरो अरु मेरे सकटको निवारणकरो ४२ अरु आपको फल पुष्प अक्षतों से युक्त जल जो दक्षिणा सहित ये विशेष अर्घ्य मैने दियाहै सोआप ग्रहण करो अरु मेरा सकष्टनिवारो ४३ ऐसे षोडश उपचारो से इसमन्त्रसे प्रकर्षसे पूजनकरै सो मन्त्र ये हैं कि (ओम्नमोहेरम्बमद मोदितममसकटनिवारयस्वाहा) हे हेरम्बजी प्रमोदसे प्रमोदित अर्थात् आनन्दकोप्राप्त गणेशजी आप मेरे संकष्ट को निवारण करो ये मन्त्रहै अरु सुन्दरबुद्धिमान् इन्द्रआदि लोकपालोंको सन्त्रविधान से पूजितकरै ४४।४५।४६ अरु पके मूंग तिलसे युक्तघृतसे पकाये मोदक अरु भक्तिसे औरश्भी पदार्थ अरुताम्बूल ये यथाशक्तिआगे धरै ४७ फिर भक्तिसे २१ दूर्वालेवे अरु सुसावधानभया इननाम मन्त्रोसे गणेशजीको अर्चन करै ४८ सोकि हे गणाधिपजी आप को नमस्कारहै जो आप उमापुत्र पापनाशक अरु एकदन्त इभवक्त्र सेही मूषकवाहन ४६ विनायक [illegible] लंबोदर आपको नमस्कारहै हे वक्रतुण्ड अरु [illegible] हे विघ्न विध्वंसकर्त्ताजी हे वि [illegible] नम-स्कारहै जो आप नाग [illegible]
नमस्कार है अरु परशु [illegible]
आपको नमस्कारहे अ [illegible]
अर्थ नमस्कारहै ५२ ऐसे [illegible]
करके पूजन करै जिस का

से तुम शीघ्र प्रसन्नहोवो अरु मेरे मनके कामोंको पूरेकरो अरु मेरे सारे विघ्नों को नाशकरो जो खोटे उत्पन्नभये हैं तिन को ५३।५४ अरु मैं सबकाम आपहीकी प्रसन्नतासे करूंहूं सो आप मेरेशत्रुवों का नाश अरु मित्रोंका उदयकरो ५५ ऐसे देवेशजी को विज्ञापन करके अरु वारम्वार प्रणाम करके फिर व्रतवाला एकसौ आठ आहुतिकरै ५६ अरु मोदकोंसे वायनाव्रतके सम्पूर्ण फलकेअर्थ या सादे लड्डू वडोंसे इक्कीस फलसहित ५७ लाल वस्त्रसे ढकके अपने आचार्यको देदेवे हे गणाधिपजी आपको नमस्कार है सब सकल्प अर्थात् मनवाञ्छित सिद्धिके लिये ५८ इसवायनेके देनेसे आप मुझे सकष्टसे निवारो फिर पवित्र कथा को श्रवण करके सावधानभया अर्घ्यदेवै हे पार्थिव चन्द्रमा को सातवेर इसमन्त्रसेदेवै कि हेचन्द्रमा आप रोहिणी सहित मेरेदिये इसअर्घ्यको ग्रहणकरो ६० फिर गणेशजी से क्षमा करावै फिर ब्राह्मणों को जिमावै अरु तिनसे शेष आपभी भोजनकरै जो अन्न ब्राह्मणोंको समर्पण किया है ६१ तो उसमेंसे पहिले सातग्रास तो मौनहोकर लेवै फिर यथेच्छ ले ऐसे यथाशक्ति यथासुख इसप्रकारसे चारमहीनेतक विधिसे करै ६२॥ इति गणेशपुराण उपासनाखण्ड में सर्वसिद्धिप्रद व्रतका वर्णनइस नामसे तो उनहत्तर अध्यायहुआ॥ ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय॥

सर्वसिद्धिप्रद व्रत का वर्णन॥

राजाशूरसेन ने पूछा कि हे ब्रह्मन् पहिले इसव्रतको किसनेकिया था अरु किसने इसे पृथ्वीपर प्रकाशकिया अरु इसकापुण्य क्या तथा इसकाफल क्या है-जो जो इसके करने से होताहै सो हे प्रभो आप मुझसे कहिये१श्रीब्रह्माजी बोले किहे पृथ्वीपते पहिले तो इस व्रतको स्वामिकार्त्तिक के जानेपर पार्वतीजी ने ही चार महीने तक शिवजी के वचनसे कियाथा २ तो अपर्णा अर्थात् पर्णनाम पत्ते भी छोडदिये जिसने ऐसीपार्वती पाचवें महीनेमें हीं कार्त्तिकेयकोदेखा

अरु इसी व्रतको पहिले समुद्रको पीनेकी इच्छावाले अगस्त्यमुनि जी ने किया था ३ तीन महीने मे वे भी विघ्नेशजी की प्रसन्नता से समुद्रको पान करगये अरु हे राजेन्द्र इसीको छः महीने ठक पहिले दमयन्ती ने कियाथा ४ जो नलको ढुढती फिरती थी तो उसने भी शीघ्रही नलको देखा अरु हे राजन् पहिले प्रद्युम्नजी के पुत्र अनिरुद्ध को चित्ररेखा लेगई थी अर्थात् चाहनेवाली ऊषाके पास इस सोतेही को उठालेगई ५ तो कहा गया किसने कहा पहुंचा दिया ऐसे शोचते पुत्रके शोकसे पीडित व्याकुल भये प्रद्युम्नजीको श्रीरुक्मिणीजी ये कहतीभई कि ६ हे पुत्र तू सुन जो व्रत हमारेही घर में पहिले कियागयाहै पहिले तुझ सातदिनके बालकको शम्बरासुर के लेगये ७ तेरेवियोग से भये दुःखसे मेरामन दुःखी भया कि मैं अपूर्व अत्यन्त सुन्दर मेरेपुत्रको कब देखोगी और स्त्रियों के पुत्रको देखकर मेरे मन में होल आतीहै मेरापुत्र शम्बरसे अवश्य नाशकियागया होगा ८ ऐसीचिन्ता से व्याकुल मुझको बहुत से वर्ष बीत गये तब तो दैववश से मेरेघर लोमशऋषिजो आगये १० तो ये उत्तम चतुर्थीकाव्रत मुझको उन्होंने उपदेश किया जो सबचिन्ता हारी सो हेपुत्र तिसे मैंने बारबार किया ११ तो तिसके प्रसाद से ही तू शम्बरको संग्राममे मारकर आगया सो तू भी इसव्रतको कर तिस से तिस अनिरुद्ध को जान जावे गा अर्थात् जानकर बाणासुर को परास्तकर पुत्रकोसपत्नीक लावोगे१२किश्रीब्रह्माजीबोलेतो प्रद्युम्न जी ने इस गणनाथ जी के सन्तोषक व्रतको किया तो बाणासुर के पुरमें रुका अनिरुद्ध उन्होंने नारदजी से सुना १३ अरु उद्धवजी के कहने से श्रीकृष्णजी ने भी उत्तम इसव्रत को किया था जब शिव जी के संग्राम से डरेथे तो एकबेर ही इसे यथाविधि किपाथा १४ तो ही उन्होने शोणितपुरको जीतकर अरु संग्राममें बाणासुर को मारकर ऊषाके सहित अर्थात् सपत्नीक अनिरुद्ध को तिसीछिनमें छुड़ालाये १५ अरु हे राजन् रचने को कामना वाले मैंने भी इसे कियाथा तो नानाप्रकारकी रचना रची हे नृपश्रेष्ठ इसी व्रतके प्र-

भावसे १६ अरु और २ भी देव राक्षस नरोंकरके विघ्नोकी सम्यक
शांतिके लिये कियागया अरु ऋषि, दानव, यक्ष, राक्षस, कि पुरुष
सर्पाकरके येही व्रत किया गया है १७ कष्टमें अरु आपत्ति में भी
तिसको शांतिके लिये इस व्रतको करें क्योंकि इसके समान सब
सिद्धि करने वाला कोई भी व्रत नहीं है १८ अरु तप, दान, व्रत,
तीर्थ, जप, मंत्र, विद्या, ये कहीं भी कोई इसके समान नहीं है इस
कथाको सुनकर फिर हे राजन् आप भी भोजन करें १९ सो कि
वाणी वशभया अर्थात् मौनहोकर अरु घुटनोकेबीचमें कर करके
अरु हृदयमें श्रीगणेशजीको चितवन करते ब्राह्मणोंसे जो शेषरहा
अन्न सो भाइयों साथ बैठके भोजन करे २० तो तिसका कार्य्य
बहुतही थोडे महीनोमें निस्सन्देह सिद्ध होवे यहा बहुत कहने से
क्याहै और कोई इससे पर शीघ्र सिद्धि कारक नहींहै२१ येअभक्त
को उपदेश न करना अर्थात् न बताना अरु नास्तिक मूर्ख को भी
नहीं बताना देना शिष्यको या सत्पुत्र को जो भक्ति युक्त श्रेष्ठहोवे
२२ हे राजेन्द्र तू मेरा प्याराहै जो धर्म्मात्मा क्षत्रिय वर्य्यहैअरु
तू लोकोंके कार्य्योंकोभी करताहै इससे ये व्रत तुझकोउपदेश किया
है २३ तिससे सब व्रतों मेंसे पहिले ये व्रत तुझ को कर्तव्य है तो
इससे तेरे सारेकार्य्य सिद्धिको प्राप्तहोंगे मेरा वचन मिथ्या नहींहै
२४ जो २ नरनारी जब २ तय्यार अर्थात् सिद्धहोतूकार्य्यकोदेखे
तब २ इस व्रतको धारण करे तो तुरंतही तिसके मनके विचारे
सारे कार्य्य सिद्ध होवें क्योंकि विघ्न हारीजी के प्रसन्न भये क्या
दुर्लभ है श्रीसूतजी शौनकादिकों से कहते हैं कि सो शूरसेन राजा
ब्रह्माजीसे सुनकर सर्वदुःख शांति के लिये इसव्रतको करता भया
तो इसी व्रतके प्रभाव से तिसने वैरियो को जीत लिये अरु पुत्रों
सहित निष्कंटकराज्य किया॥इतिश्रीगणेशपुराणउपासनाखण्डमें
चतुर्थीव्रतकाउपाख्यानवर्णनइसनामसेसत्तरि ७० अध्यायहुआ॥

———

इकहत्तरवां अध्याय॥

सर्व सिद्धिप्रद व्रतके उद्यापन का वर्णन॥

कृत वीर्य्यके पिताने कहा कि हे महामते ब्रह्माजी इस व्रतका उद्यापन कैसे कर्त्तव्य है सो आप लोकोंके हितकी कामना करके ये मुझको बिस्तार से वर्णन करो १ श्रीब्रह्माजी बोले कि हेमनुष्य राज पहिले महीने में या पांचवे सातवें महीने मे व्रत सम्पूर्णताके हेतु इसका उद्यापन करना योग्यहै२तो पूर्व कथित विधिसे भक्ति सहित नर गणेशजी का पूजन करै तो पुष्पोंका मंडप बनावें जो नानाप्रकारके वस्त्रोंसे चित्राम किया ३ फिर उसमें नानाप्रकार के रङ्गोंसे विचित्र सर्वतो भद्रमांडकर तहा देवेश गणेश जीकी पहिलेकी नाई कलश पर विराजमान कर के पूजे ४ चन्दन सुगंध से अरु नाना विधिके पुष्पोंसेभी नारियलकेफलसे अर्घ्यदेवे सावधानभया सो मन्त्रोंका अर्थ ये कि हे तिथियों में उत्तम देवीचौथ हे गणेश जी की उत्तम प्यारी मेरे संकटको हर अरु इसअर्घ्यको ग्रहण कर तेरे अर्थ नमस्कार होवे ५ अरु हे लम्बोदर जी आपको नमस्कार है निरंतर मोदकके प्यारे हे देव मेरे संकटकोहरो अरुये अर्घ्य ग्रहण करो आपको नमस्कार ६ अरु हे चन्द्रमाजी ले। आप क्षीरसागरसे उत्पन्न अरु अत्रिगोत्र विप उत्पन्न मेरे दियेअर्घ्यको रोहिणीसहित आप ग्रहणकरो७फिर भोजनकरने योग्य भक्षणयोग्यचाटनेयोग्य पीनेयोग्य चूसनेयोग्य ये कईप्रकारका अन्नगणेशजीकेआगेरक्खे८ अरु और २ भी बहुतसे फलोंकरके गणनायकजीकोसंतुष्टकरै अरु तहा आचार्य्य अर्थात् कर्म कराने वालेका वरणकरे अरु इक्कीस ऋत्विज वेदपात्रोंका वरण करे (गणानान्त्वा) इसमन्त्रसे दश सहस्र आहुतिकरे१० अथवा मूलमन्त्र अर्थात् (गणेशायनमः) इसमेंसहस्र होम वा तिससेआधा अर्थात् पांसे अरु फिर एकसौआठ बलिदान करे ११ तिसकेपीछे पूर्णाहुत होमै ५ अरु वसोधाराको छोडे फिर हवन शेषको समाप्त कराके ब्राह्मणोंको भोजन करावे १२ मंडपमें

युग्म अर्थात् धोती अँगोछा अरु कलश जो दक्षिणासहित होवें सो यथाशक्ति उनको देदेवै वित्तसे वाहर करेनहीं १३ फिर वस्त्र आभूषणोंसे आचार्यका पूजनकरे फिर भोजनकिये उसको फलसहित वायना देवै १४ कि सुन्दर पुवे,खीर,भरा अरु जो लालवस्त्रसे लपेटा अरु सुवर्णके वने उन गणेशजी को उस आचार्य को दक्षिणा सहित देवे १५ अरु व्रतको सम्पूर्णताकेहेतु तिलोका आढक अर्थात् ढाईसेर दानदेवै फिर कपिला गऊको देवै जो वछड़ेवाली अरुआभूषण सहित होवे १६ फिर ब्राह्मणो मे क्षमाकरावै कि विघ्नेशजी प्रसन्नहोवें व्रतकाउद्यापन करनेसेअश्वमेधयज्ञकेफलकोप्राप्तहोवे१७ पिता कृतवीर्यसे वोला कि ऐसे मुझको ब्रह्माजीने लोकके उपकार से ये व्रतवताया सोही मैंने अब तुझको कहाहै सो इसेही तू पुत्रके अर्थ आदरसेकर १८ इन्द्रवोला कि जैसे२ उसपिताने वताया तौ वुद्धिमान् कृतवीर्य्य ने सो२ तैसे२ किया १६ सम्यक् व्याख्यान करके पण्डितोंसे कहे उत्तमव्रतको सिद्धि बुद्धियुक्त कंचनकी मूर्त्ति स्थापन करके २० महामण्डपमें कहीं कि ब्राह्मणोंकरके वेदपाठहो रहाहै कहीं पुराण पण्डिताई अर्थात् कथा होरही है अरु कहीं गान नृत्यहो होरहाहै २१ तौ नानाविधोंके वाजो की गौंजे आकाश में गई कहीक जन आपसमें सम्वाद कररहे हैं अरु कईक उनके मध्यस्थ अर्थात् निर्णता होरहे हैं २२ सो महावुद्धि वाला राजा कृतवीर्य तौ श्रीगणेशजी के परम मन्त्र कोही जपता भया जपकर के होमकरके अरु वहुतसे ब्राह्मणोंको पूजनकरके जिमायकर २३ अरु उनको अलकारो से सजाई दश सहस्र गउवें देता भया अरु दरिद्री अंधे कृपण जनोंको वहुतसा अन्नदान देताभया २४ सबके प्रसन्नभये राजा पुत्रकी आशीर्वादको लेताभया तिन द्विजोंकी आशीष जो तपकररहे अरु सदा सत्यवादीथे २५ तौ उनकी आशीषों से राजपत्नीथोड़ेही कालकरके जीवसहितअर्थात् गर्भवतीहोतीभई अरु सुन्दर समयमें शुभलक्षण सहित पुत्र को जनती भई २६ तौ पुत्र जन्मसे हर्षे राजाने अनेक से दानदिये अरु काल में तिसका

जनेऊ अरु विवाह ये सब संस्कार करता भया २७ फिर ज्ञानतत्त्व ज्ञान को प्राप्त इसपुत्र को राज्यपर बैठाकर सूत्रवाला आयुर्बल के अंतमें विभु गणेशजीके धाम को पधारता भया २८ अरु सारे ऋषियों के साथ अरु पण्डित देखनेवालों के आप अरु वे साथ सब गणेश्वरजी के पदको प्राप्तभये ॥ २९ ॥ इसप्रकारसे गणेश पुराण उपासनाखण्ड में उद्यापन का वर्णन इसनामसेइकहत्तरवां अध्याय हुआ॥ ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

कृतवीर्य के पुत्र होने का वर्णन ॥

राजासूरसेन ने पूछा कि हे शतक्रतो व्रत समाप्तभये उनराजा रानियोंके पुत्र कैसेभया सो हे विभो पूछनेभये मुझसे आप यहवृत्तान्त विस्तार से कहिये १ इन्द्रबोले कि हे राजन् गजाननजी के प्रसन्नभये क्यानहीं होवाहै सो कि उन्हींके प्रसादसे वो रानीराजा के उसगर्भको धारण करतीभई २ तो वो प्रसूती नवेंमहीने पुत्रमंगलजीको देखती भई कैसा वो कि दोकन्धे जिसके सुन्दर मुखवाला पर बाहु हाथसे रहित ३ सुनासिका वाला कमल नयन पर गोडे घुटनिया से रहितया अरु जाघ पैरसे भी रहित उसपुत्र को देख मा तारोनेलगी ४ तो वो बोली कि मुझ दुर्भागिनी के ये ऐसा बालक कैसेभया हे गजाननजी हाथ पैरोंसे हीन ये मुझे आपने क्यों दिया है ५ इससे तो मैं वन्ध्या ही भलीथी जो ऐसेपुत्रवाली भी भई तोक्या पूर्वजन्मके किये अपराधसे पहिले मेराही नाश क्यानहीं होगया ६ अरु हे गजानन जी आपकी भी ये कैसी प्रसन्नता फलीहै ऐसे ऐसे ये ब्राह्मणो के वाक्य भी निष्फल कैसे होगयेहैं ७ तो वो हाथों से छाती अरु मस्तक को वारम्वार पीटती तो उसके रोये जो वहांथीं सब रोनेलगीं ८ तो उनकाशब्द सुनकर राजा भी तहां आगया ८ अरु तिसके भी रोनेकोसुन उनके प्रधान मंत्रीलोगभी आगये ९ अरु उनका रुदन सुनकर नगरवालेभी तब रोतेभये १० हे देवगजानन

जी आप दीनोंपर दयालु कैसेहो अरु आपकी अब ये कैसी दयाभई
है सो मुझे आपने दिखाही दईहै ११ हे सत्य गणेशजी केवलस्मर-
णसे ही आप दुःखोंको कैसे हरतेहो मेरा तो जप तप स्मरण दान
पूजन द्विजतर्पण १२ अनुष्ठान अरुहोम ये भी सब वृथा ही गया
तिससे दैवही बलवान्है प्रयत्न तो निष्प्रयोजनही है १३ कर्म्मगति
नहीं जानीजाती है कि कब क्या होवेगा देखो जैसे पर्वतको खोदर
मूषक बिल निकाल लेजावे १४ तैसेही जन्म से ले परिश्रम करके
मेरे येपुत्र हुआ तो शोकसे व्याकुल राजाको मन्त्रीलोग कहते भये
प्रधान बोले कि हेभूमिपाल शोकसे वशकरो अवश्यभावि औरतरह
कैसे होवे क्या रामचन्द्रजी उस मारीच मृगको नहीं जानतेथे जो
उसकेपीछे होहीलिये१५।१६क्या युधिष्ठिर निषिद्ध उसद्यूतकर्मको
नहीं जानतेथे तो भी वे खेलनेको गये तो सब को छोड़कर वनमें
गया१७अरु इसकी सुन्दरता बहुत प्रकारसे नहीं होती जो प्रारब्ध
अच्छा है तो आगे ये सुन्दरही होजावेगा १८ जैसे वृक्षों के फूल
या फल काल से आप होजाते हैं तैसेही काल करके ये श्रेष्ठ भूमि-
पाल होजावेगा१९इन्द्र बोले ऐसे मन्त्रियोंका वचन सुन सावधान
भया राजा उस रानी से बोला कि उठ २ शोक न करु २० अरु
आपभी सुचित भया राजा श्रेष्ठ द्विजो को बुलाकर गणेशजी का
पूजनकरताभया अरु उनके मुखसे स्वस्ति वाचन करवाताभया२१
अरु नान्दीमुख श्राद्ध करके बहुत से दान देताभया माला आभूषण
वस्त्र,गऊ, अनेकसे रत्न दिये २२ अरु प्यारे नातेदार नौकरों को
नानाप्रकारके वस्त्रदिये अरु नानाप्रकार बाजदारोंको राजाने यथा-
योग्य वस्त्र दिये २३ अरु वन्दीजन चारण दीनअन्धे कृपणोंको इन
सबको सब कुछदिया अरु घर घरमें पान शक्कर बँटवाई २४ अरु
ग्यारहवें दिन इसका (कार्त्तवीर्य्यनाम) निकाला तो महा चाव
सहित नगर भरको जिमाया २५ तब तो उस सुतको हुये बारह
वर्ष बीते तो निजही इच्छासे इसके घरपर (दत्तात्रेयजी) आगये
२६ तो कृतवीर्य्यने पैरोंमें शिरधरकर इन्हें प्रणाम किया तो मुनि

जनेऊ अरु विवाह ये सब संस्कार करता भया २७ फिर ज्ञानतत्त्व ज्ञान को प्राप्त इसपुत्र को राज्यपर बैठाकर सुन्दरवाला आयुर्वल के अंतमें विभु गणेशजीके धाम को पधारता भया २८ अरु सारे ऋत्विकों के साथ अरु पण्डित देखनेवालों के आप अरु वे साथ सब गणेश्वरजी के पदको प्राप्तभये ॥ २९ ॥ इसप्रकारसे गणेश पुराण उपासनाखण्ड में उद्यापन का वर्णन इसनामसेइकहत्तरवां अध्याय हुआ ॥ ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

कृतवीर्य के पुत्र होने का वर्णन ॥

राजासूरसेन ने पूछा कि हे शतक्रतो व्रत समाप्तभये उनराजा रानियोंके पुत्र कैसेभया सो हे विभो पूछनेभये मुझसे आप यहवृत्तान्त विस्तार से कहिये १ इन्द्रबोले कि हे राजन् गजाननजी के प्रसन्नभये क्यानहीं होवाहै सो कि उन्हींके प्रसादसे वो रानीराजा के उसगर्भको धारण करतीभई २ तो वो प्रसुती नवेंमहीने पुत्रमंग लजीको देखती भई कैसा वो कि दोकन्धे जिसके सुन्दर मुखवाला पर बाहु हाथसे रहित ३ सुनाशिका वाला कमल नयन पर गोडे घुटनियां से रहितथा अरु जांघ पैरसे भी रहित उसपुत्रको देख मा तारोनेलगी ४ तो वो बोली कि मुझ दुर्भागिनी के ये ऐसा बालक कैसेभया हे गजाननजी हाथ पैरोंसे हीन ये मुझे आपने क्यों दिया है५इससे तो मैं वन्ध्या ही भलीथी जो ऐसेपुत्रवाली भी भई तोक्या पूर्वजन्मके किये अपराधसे पहिले मेराही नाश क्योनहीं होगया६ अरु हे गजानन जी आपकी भी ये कैसी प्रसन्नता फलीहै ऐसे ऐसे ये ब्राह्मणों के वाक्य भी निष्फल कैसे होगयेहैं ७ तो वो हाथों से छाती अरु मस्तक को वारम्बार पीटती तो उसके रोये जो वहांथीं सब रोनेलगीं ८ तो उनकाशब्द सुनकर राजा भी तहां आगया ८ अरु तिसके भी रोनेकोसुन उनके प्रधान मंत्रिलोगभी आगये९ अरु उनका रुदन सुनकर नगरवालेभी तब रोतेभये १० हे देवगजानन

वो पुत्र कृतवीर्य्यसे कहनेलगा कि मुझको वन मे पहुंचादेवो ४४ मैं गजाननजीके प्रसाद के लिये अनुष्ठान करूंगा तो उसकी कही ऐसी वाणीको सुन उसके मातापिता रोतेभये ४५ अरु पितानेइसे पालकी मे बैठाकर वनमे भेजदिया तो उसके चाकर उसे पर्णकुटी मेरखकर निज नगरको आते भये ४६ तो वहा ये आय तपकेलिये निश्चयकररहता भया ४७ इतिश्री गणेशपुराणउपासना खण्डमें बहत्तरिका अध्याय हुआ ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

चतुर्थी व्रतका माहात्म्य॥

इन्द्र बोले कि वो गुरु दत्तात्रेयजी से बताये उस मंत्रको जपता भयानिष्ठावाली निष्ठा अर्थात् सात्विकी भक्तिमें स्थितभया १ सोकि पवन भोजी जीता आहार जिसने लोह पाषाण के समान ऐसे उसको तप करते बारह वर्षबीते २ तो गजानन जी हाथपैरोसेहीन महात्मा उस बालकके बारहवर्षके निर्वाण नाम निश्चलता अर्थात् तपको देखकरजो तडाग मेंसे उत्पन्न भये सुगे भीवनी मूर्ति धारण किये उसकी निष्ठापूर्वक भक्तिसे प्रसन्न भये सम्मुख हो बोले ३ गणेशजी कहने लगे कि जिसलिये तू इस शून्यवनमें जो सिंहवघेरो से सेवित जिसमें बहुत से बेल वृक्ष गुंफित हुये ऐसे वनमें जो तू द्वादशवर्षतप करताभयाहै ४।५ इससे मैंनरेमनके चाहेवरको देवो गा तू माग तो उन करके कही वाणीको सुनकर देहकी भावना में स्थितभया अर्थात् सावधान भया वोह कृतवीर्य्यका पुत्र श्रीगणेश-जीको प्रणाम करके बोला सब बहुतसे विमान स्थित मुनीश्वरो के सुनते ७ पुत्र बोला कि हे देव आपके चरण युगलमें मेरी व्यभि-चार रहित भक्तिहोवे और कुछ मुझको मागने का चाव नहींहै ८ तब भी हे देवेश मै मा बापके सतोषके लिये याचना करताहू कि सर्व सतोष कराने वाली मेरे शरीर में सुंदरता देवो९ इंद्रबोला कि भाग्यवान् वे गजाननजी उसका वो वचन सुनकर अणिमा सिद्धि

जी भी श्रेष्ठ राजा को उठाकर मुख स्पर्श करतेभये २७ तो ये रम-
णीय आसन पर बैठाकर अरु इनको आदरसे पूजता भया विष्टर
पाद्य अर्घ, सुन्दर वचन वस्त्र यज्ञोपवीत देता भया २८ अरु धूप
दीप दिये अरु नैवेद्य तथा नानाप्रकारके फल अरु उबटना, तांबूल
अरु रत्न सुवर्णकी दक्षिणा २९ फिर पैर दावने आदिसे प्रसन्नभये
सुखसे विराजमान इन मुनि दत्तात्रेयजी को राजा बोला कि अब
मेरा कोई जन्म जन्मांतरका सुकर्म्म फलित भयाहै जो चर्मके चक्षु
वाले हमको हे मुनिजी जो आपका साक्षात् दर्शन भयाहै ३०।३१
तो कृतवीर्य्यका वचन सुन दत्तात्रेयजी उससे बोले तेरे इस अपूर्व
पुत्रको मैं देखने आयाहूं फिर ये आनन्द युक्त राजामुनिजीकोकहने
लगा राजा बोला कि मेराअनुष्ठान तप व्रत दान ये सब वृथागया
३२।३३।३४ जोजगदीशजीने पुत्रदियासोभीहृदयकंटकहीहै मैं भी
इसअदर्शनीयसे नदेखनेयोग्यहोगया ३५इन्द्र बोलेराजाउसबालक
को लाकर मुनिजी को दिखाता अपने नेत्र कमलों को ढकता भया
तो श्रेष्ठ मुनिजी उस पुत्रको देखकर ३६ अरु ध्यान करके उसके
उस कर्मको जानकर मुनिजी फिर उससे बोले हे राजन् येही पुत्र
सबको जीतकर राज्य करेगा ३७ तूने चौथ व्रतके जागरण में जँ-
भाई लेकर आचमन नहीं किया था अरु वो सब सङ्कट नाशक व्रत
तैंने निन्दित किया तिससे तेरे ये अंगहीन पुत्र हुआ अब उपायसे
सांगोपांग भी होजावे ३८ राजा बोला कि हे स्वामिन् आपने सत्य
कहा कृपा करके मुझसे कहो कि किस उपाय से आपके प्रसाद से-
ती मेरा सुत सांगोपांग होय इन्द्र बोले सो कृपा भरे मुनिजी तब
तिसके पुत्रको अंग सहित एकाक्षर मन्त्र बतातेभये अरु उससे बोले
कि इस मन्त्रकरके तुमक्रिमे गणेशजीका आराधनकर अरु हे सुव्रत
तू उपवास अरु एक काल भोजन करनेवालो के नियमोंको भी कर
बारह वर्षतक तो फिर वे तुझको दर्शन देवेंगे ३९।४०।४१।४२ उनके
दृष्टि पातहोसे तू दिव्य शरीरी होजावेगा ऐसेकह राजासे पूज्यमुनि
जी अन्तर्द्धान भये ४३ मुनिजीके गयेपर पाद हीन महा मनवाला

वो पुत्र कृतवीर्य्यसे कहनेलगा कि मुझको वन में पहुंचादेवो ४४ मैं गजाननजीके प्रसाद के लिये अनुष्ठान करूंगा तो उसकी कही ऐसी वाणीको सुन उसके मातापिता रोतेभये ४५ अरु पितानेइसे पालकी में बैठाकर वनमे भेजदिया तो उसके चाकर उसे पर्णकुटी मेंरखकर निज नगरको आते भये ४६ तो वहा ये आय तपकेलिये निश्चयकररहता भया ४७ इतिश्री गणेशपुराणउपासना खण्डमें बहत्तरिका अध्याय हुआ ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

चतुर्थी व्रतका माहात्म्य॥

इन्द्र बोले कि वो गुरु दत्तात्रेयजी से बतायेउस मन्त्रको जपता भयानिष्ठावाली निष्ठा अर्थात् सात्विकी भक्तिमें स्थितभया १ सोकि पवन भोजी जीता आहार जिसने लोह पाषाण के समान ऐसे उसको तप करते बारह वर्षबीते २ तो गजानन जी हाथपैरोंसेहीन महात्मा उस बालकके बारहवर्षके निर्वाण नाम निश्चलता अर्थात् तपको देखकरजो तडाग मेंसे उत्पन्न भये मुगेहीबनी मूर्ति धारण किये उसकी निष्ठा पूर्वक भक्तिसे प्रसन्न भये सम्मुख हो बोले ३ गणेशजी कहने लगे कि जिसलिये तू इस शून्यवनमें जो सिंहवघेरों से सेवित जिसमें बहुत से बेल वृक्ष गुफित हुये ऐसे वनमें जो तू द्वादशवर्षतप करताभयाहै ४।५ इससे मैंनरेमनके चाहेवरको देऊँ गा तू माग तो उन करके कही वाणीको सुनकर देहकी भावना में स्थितभया अर्थात् सावधान भया वो६ कृतवीर्य्यका पुत्र श्रीगणेश-जीको प्रणाम करके बोला सब बहुतसे विमान स्थित मुनीश्वरों के सुनते ७ पुत्र बोला कि हे देव आपके चरण युगलमें मेरी व्यभि-चार रहित भक्तिहोवे और कुछ मुझको मांगने का चाव नहींहै ८ तब भी हे देवेश मैं मा बापके संतापके लिये याचना करताहूं कि सर्व संतोष कराने वाली मेरे शरीर में सुंदरता देवो९ इंद्रबोला कि मायावान् वे गजाननजी उसका वो वचन सुनकर अणिमा सिद्धि

जी भी श्रेष्ठ राजाको उठाकर मुख स्पर्श करतेभये २७ तो ये रमणीय आसन पर बैठाकर अरु इनको आदरसे पूजता भया विष्टर पाद्य अर्घ, सुन्दर वचन वस्त्र यज्ञोपवीत देता भया २८ अरु धूप दीप दिये अरु नैवेद्य तथा नानाप्रकारके फल अरु उवटना, ताबूल अरु रत्न सुवर्णकी दक्षिणा २६ फिर पैर दावने आदिसे प्रसन्नभये सुखसे विराजमान इन मुनि दत्तात्रेयजी को राजा बोला कि अब मेरा कोई जन्म जन्मातरका सुकर्म्म फलित भयाहै जो धर्मके चक्षु वाले हमको हे मुनिजी जो आपका साक्षात् दर्शन भयाहै३०।३१ तो कृतवीर्य्यका वचन सुन दत्तात्रेयजी उससे बोले तेरे इस अपूर्व पुत्रको मै देखने आयाहू फिर ये आनन्द युक्त राजामुनिजीकोकहने लगा राजा बोला कि मेराअनुष्ठान तप व्रत दान ये सब वृथागया ३२।३३।३४ जोजगदीशजीनें पुत्रदियासोभीहृदयकंटकहीहै मैंभी इसअदर्शनीयसे नदेखनेयोग्यहोगया ३५इन्द्र बोलेराजाउसबालक को लाकर मुनिजी को दिखाता अपने नेत्र कमलो को ढकता भया तो श्रेष्ठ मुनिजी उस पुत्रको देखकर ३६ अरु ध्यान करके उसके उस कर्मको जानकर मुनिजी फिर उससे बोले हे राजन् येही पुत्र सबको जीतकर राज्य करैगा ३७ तुने चौथ व्रतके जागरण में जँभाई लेकर आचमन नहीं किया था अरु वो सब सकट नाशक व्रत तैने निन्दित किया तिससे तेरे ये अगहीन पुत्र हुआ अब उपायसे सांगोपाग भी होजावे ३८ राजा बोलाकि हे स्वामिन् आपने सत्य कहा कृपा करके मुझसे कहो कि किस उपाय से आपके प्रसाद सें तो मेरा सुत सागोपाग होय इन्द्र बोले सो कृपा भरे मुनिजी तब तिसके पुत्रको अग सहित एकाक्षर मत्र वतातेभये अरु उससे बोले कि इस मत्रकरके तूभक्तिसे गणेशजीका आराधनकर अरु हे सुव्रत तू उपवास अरु एक काल भोजन करनेवालो के नियमोको भी कर बारह वर्षतक तो फिर वे तुझकोदर्शन देवेंगे३६।४०।४१।४२उनके दृष्टि पातहीसे तू दिव्य शरीरी होजावेगा ऐसेकह राजासे पूछमुनिजी अन्तर्द्धान भये ४३ मुनिजीके गयेपर पाद हीन महा मनवाला

वो पुत्र कृतवीर्य्यसे कहनेलगा कि मुझको वन मे पहुंचादेवो ४४ मैं गजाननजीके प्रसाद के लिये अनुष्ठान करूंगा तो उसकी कही ऐसी वाणीको सुन उसके मातापिता रोतेभये ४५ अरु पितानेइमें पालकी मे बैठाकर वनमे भेजदिया तो उसके चाकर उसे पर्णकुटी मेरखकर निज नगरको आते भये ४६ तो वहां ये आय तपकेलिये निश्चयकररहता भया ४७ इतिश्री गणेशपुराणउपासना खण्डमें बहत्तरिका अध्याय हुआ ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

चतुर्थी व्रतका माहात्म्य ॥

इन्द्र बोले कि वो गुरु दत्तात्रेयजी से बतायेउस मंत्रको जपता भयानिष्ठावाली निष्ठा अर्थात् सात्विकी भक्तिमें स्थितभया१ सोकि पवन भोजी जीता आहार जिसने लोह पाषाण के समान ऐसे उसको तप करते बारह वर्षबीते २ तो गजानन जी हाथपैरोंसेहीन महात्मा उस बालकके बारहवर्षके निर्वाण नाम निश्चलता अर्थात् तपको देखकरजो तडाग मेंसे उत्पन्न भये मूंगे कीबनी मूर्ति धारण किये उसकी निष्ठा पूर्वक भक्तिसे प्रसन्न भये सम्मुख हो बोले ३ गणेशजी कहने लगे कि जिसलिये तू इस शून्यवनमें जो सिंहव्यघ्रों से सेवित जिसमें बहुत से बेल वृक्ष गुफित हुये ऐसे वनमें जो तू द्वादशवर्षतप करताभयाहै ४।५ इससे मैंनरेमनके चाहेवरको देवौंगा तू माग तो उन करके कही वाणीको सुनकर देहकी भावना में स्थितभया अर्थात् सावधान भया वो६ कृतवीर्य्यका पुत्र श्रीगणेश-जीको प्रणाम करके बोला सब बहुतमे विमान स्थित मुनीश्वरो के सुनते ७ पुत्र बोला कि हे देव आपके चरण युगलमें मेरी व्यभि-चार रहित भक्तिहोवे और कुछ मुझको मांगने का चाव नहींहै ८ तब भी हे देवेश में मा बापके संतोषके लिये याचना करताहूं कि सर्व संतोष कराने वाली मेरे शरीर में सुंदरता देवो९ इन्द्रबोला कि मायावान् वे गजाननजी उसका वो वचन सुनकर अणिमा सिद्धि

से आये अरु घर घर पूछते भये तो भ्रमते२ उन्होंने एक सुन्दरवि-
मानदेखा३ जो वो दुष्टा चाण्डाली कोढसे गलती रुधिरझरे मुख-
वालीथी जो मक्खी कीडोके भारसे अरु दुर्गन्धि से लदीभरीथी ४
अरु जो सूखे उदरवाली लम्बे विकराल बालोवाली अरु सूखे दात
नासिका जिसके अरु जो अत्यन्तमैली वडेहैं कर्णछिद्र जिसके मेघ
केसे शब्दवाली ५ ऐसीउसको गणेशजीके दूतोकरके लाईदेखकर
अत्यन्त आश्चर्यहै ऐसेकह उस चाण्डाली को प्रणामकरके ६ राज-
दूतवोले उन देव दूतो से जो गणनाथजी के किंकर थे कि जाति से
अत्यन्त निन्दित ये कैसे स्वर्गको जातीहै ७ हे दूतो ये पहिले कौन
थी अरु ये ऐसी कैसे होगई अरु कि पुण्य करके ये तुमसे स्वर्गको
लेजाई जातीहै ८ ये वृत्तान्त सारेको जो हमको कहनेयोग्यहो तो
कहिये देव दूत बोले कि बङ्गाल देश में एक (सारंगधर) नाम से
क्षत्रियभया तिसकी सुन्दरीनामसे एककन्याहे जो कोकिलके कंठ
वाली चन्द्रमुखी जो रतिकी भी सुन्दरता को जीतनेवाली ९।१०
अरु प्रसिद्ध आठो सिद्ध ये जिसकी टहल करने योग्य अरु कटाक्ष
मात्रही से योगी जनो के भी चित्तको मोहलेवे ११ कई जवानों ने
जिसके रूपकोही देखकर वीर्यपात करदिया तो वो संसारको मोह-
नेवाली व्यभिचार मार्गमें परायण होतीभई १२ जो बडे मोल्य के
वस्त्र पहिने अलङ्कार धरे नानाप्रकार के भोग भोगनेवाली तो वो
बङ्गाल नगरमें निर्लज्ज विख्यातभई १३ तो वो अपने (चित्रनाम)
भर्ताको सदा ठगतीही रही पहिले पितासे इकट्ठे किये अनन्त द्रव्य
के खर्चहोने से १४ कभी वो पतिको सेजपर सोता छोडकर सुन्दर
भेषभरी आधीरातको चली तो क्रोधवश सेती उसने हाथपकड़ा १५
तब चित्रनामा पति उसे निन्दाकरता बोला कि हे पाप आचरण
करनेवाली तुझे धिक्कार है जो तू सदा इस दुष्ट कर्म में रतहोरही
है १६ तब उसके ऐसेवाक्य को सुनकर वो शान्त कोप भई जो ये
अभक्ष्य भक्षण करनेसे अत्यन्त मदोन्मत्त बलवाली होरहीथी १७
तो उसने घोर अन्धेरेमें दहिने हाथसे छुरीलेकर तिससे तिसचित्र-

नाम पतिको देटफाडकर १८ अरु तिसणुरुप पास रमण करने को गई जो मनमें जचरहाथा जितने वो वहारमी तितनेहीनिकटनिवासी जागत मनुष्यने उसका चरित्र जानकर राजाको कह दिया वे दूत अन्धेरेमें आकर ठहरगये तितने वोभी घरमें आईतो उसेराजदूतोने पकडा अरु राजाके पास लेगये फिर उसको राजाकी आज्ञा से दूतो ने वाहर लेजाकर पीटा १६ । २० । २१ तो वो मरगई फिर यमदूतो करके घोर नरक में डाली यमकी आज्ञासे नीचे मुख करी कीडोंसे अत्यन्त खाईगई २२ तो वो अपने पहिले कियेकुकर्म को स्मरणकरती अत्यन्त दुःखको भोगतीभई फिर कल्प कालतक नरक भोगकर मत्र्युलोक में अत्यन्त दुर्भागिनी चाण्डाली भई २३ एकदिन ये दिनमें मदिरापीके मत्तभई सोगई तो पहररात गयेपहिलेजागी तो अत्यत भूखी भई २४ तो तभी ये भिक्षा मागने को व्रतकारी भक्त के घर चलीगई उसने जो इमे चन्द्रमाके उदयमें अन्न दिया सो इसने भोजनकिया २५ अरु दैवयोगसे निजइच्छा करके ही ये हे गणेश२ ऐसे कहती भई तभी गणनाथजी ने शुभविमान भेजाहै २६ ब्रह्माजी बोले देवदूतोका वचनसुनके फिर वे नमस्कार करके बोले राजा के दूत कहने लगे कि कार्य करनेवाले हमने ये आश्चर्य देखाहै २७ जोवाक्य राजाने हमें उपदेशकिया है सो तुम सुनो कि इन्द्र गृत्स मदजीके देखनेको विमानमें बैठागया तो उनके दर्शनकर उन्हे पूज नमस्कारकर भुशुण्डिजी के पासआया तो उन आज्ञा अरु पूजा ग्रहण करके अपनी पुरीको आता था २८।२६ तो चलतेर उसका वो विमान शूरसेन के पुरमें कुछ उस वैश्यके दृष्टिपातसे तिसीक्षण मे गिर पड़ा ३० तहा शूरसेन चलागया तो उसे नमस्कार पूजन करके विमान के पडने मे कारण अरु उसके चलने का कारण पूछता भया ३१ तो इन्द्रने कहा कि सङ्कटचतुर्थी के व्रत के पुण्यसे विमान चलेगा सो उसके लिये यत्नकरो ३२ तो हमदूत राजाकी आज्ञासे उसे देखने को प्राप्तहैं सो हे देवदूतो जो उससे ये व्रतकिया गया होवे ३३ तो इसको शूरसेन राजाकेपास लेजावो

तो जो ये सकष्ट चतुर्थीके व्रतका फल देदेवेगी ३४ तो फिर दुनेपुण्य से युक्त भई विमानमे बैठ स्वर्ग को चली जायगी अरु इन्द्रका बिमान भी निजपुरीको आजायेगा ३५ तो अब तुमको इस चाडालीका अरु हमारा राजा शूरसेनका इन्द्रका कार्य करनाही योग्य है ऐसेकिये से तो अच्छा ही होगा सो रुचताहै सो करो ३६ ऐसे उनके वचनको सुन देवदूत बोले कि हमको इसको और किसी के देनेके लिये गणेशजी की आज्ञा नहीं है ३७ ऐसे जब उसे उन्होंने उठाकर विमान में रक्खा तो तभी वो दिव्य शरीरियों होगई जो दिव्यबस्त्र अरु अङ्ग आभूषणवाली ३८ देव दूतोंकरके वो गाजे बाजेके शब्दों से गजाननजी के पास लेजाई गई अरु राजदूत जैसे आये तैसेही शूरसेन प्रतिगये अरु उसवृत्तान्त को कहतभये उनकेकहे वो भी बिमानचाण्डालीसहितचला ३९।४० तो वे प्रकाशमानदशोदिशो को प्रकाश करतेभये विमानको देखतेभये तो उस चाण्डालीकी दृष्टि उसइन्द्र के बिमानपर भी पड़ी ४१ तो इन्द्रका बिमान उसबिमान की पवनके स्पर्श होनेसे ऊपरको चला सबलोगो के देखते अरुसुर ऋषियो के विस्मित भये ४२ तो वे सब इन्द्रके अमरावतीको गये निज२ स्थानो को गये अरु वो भी दिव्य देह भई विनायकजी के धामको गई ४३ सकष्ट चतुर्थीके व्रत के पुण्य से पापोसे मुक्ति भई इसे जो भले प्रकार श्रवणकरे या प्रयत्नसे सुनावै ४४ तो वो नर सबकामोको अरु सब सकट नाशको प्राप्तहोवै ४५ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें इसप्रकारसे चौहत्तरवा अध्यायहुआ ७४॥

पचहत्तरवांअध्याय॥

व्रतके माहात्म्य का वर्णन॥

श्री ब्रह्माजी बोले कि शूरसेन इसव्रतके उत्पन्न महिमाकोदेख सुनकर आपभी करनेको मनभया मुनिश्रेष्ठवशिष्ठजी को बुलाकर कहनेलगा राजाबोला कि हे मुनिजी मुहूर्तमात्र आप मुझसेसकष्ट चतुर्थी व्रतके हेतु कुछ कथन करो क्योंकि इस तुर्त विश्वास कारक

व्रतको मैं करनेको चाहताहूं २ वशिष्ठजी बोले कि हेराजश्रेष्ठ माघ कृष्ण भौमवार सहित दिनमें इसउत्तमव्रतकोकरो जोयें सर्वसिद्धिकारी अरु सर्वकामप्रदहै ३ ब्रह्माजी बोले अत्यन्त भक्तिवाला श्री इकट्ठी करी तय्यारी जिसने ऐसा सपत्नीक राजाशूरसेन वशिष्ठजी के कहे दिनके थोडेही कालसे प्राप्तहोने से ४ उत्तम चतुर्थी व्रतको प्रारम्भकरने चाहता प्रात स्नानकरके अरु नित्यकाकर्म समाप्तकर ५ गणेशजीको पूजकरके ब्राह्मणो से स्वस्तिवाचन कराकर वशिष्ठ जीकोभी पूजकर तिनसे पूर्णआज्ञा लेकर ६ गणेशजी में मनलगा कर उनके नाम जपने में परायण ऐसा राजाशूरसेन जितने सूर्य्य अस्तहोयँ तितने एक अगूठेमेस्थितरहा फिर स्नानकरके सायकाल की सध्याको करके वशिष्ठजी सहित सम्यक् प्रकारसे पूजनकाप्रारम्भ करताभया७।८तो वडामडपतानकर जो केलेथंभा से शोभित नानाप्रकार के रत्नोकी कातिकरके सयुक्त नानाप्रकारके वस्त्र आभूषणोसे सयुक्त अरु जो छत्र चँवरोसे शोभितथा ९ अरु जिस में दर्पणोकी पक्ति लगरही तिससे सुन्दर अरु पुष्पोकी मालासे शोभित नानामणि कातिकरके सयुक्त अरु दीपको की पक्ति से विशेप शोभित १० तिसके भीतर सुवर्णके कलशपर सुवर्णमयी मूर्त्ति गणेशजीकी जो कोमल सवअगोमे सुन्दर ११ अरु जो नाना आभूषणोसे सुदर नानारत्नोसे शोभित ब्राह्मण मुख्योके पढते अरुगाने वालोके गायेपर १२ सववाजो के वजते अरु नाचनेवालोके नाचते वेदके अरु पुराणोके मत्रोसे उसमूर्त्ति का पू-- करताभया १३षोड़श उपचारो से पचामृत स्नानपूर्वक अरु मोदक,पूवे,लड्डुवे,शर्करा सहित पायस अन्न अर्थात् खीर खाड १४ जो नानाप्रकार के व्यंजनो की शोभा युक्त पचामृत सहित ऐसा नैवेद्य आगे परोसकर सुन्दर सुगन्धयुत जल रक्खे १५ अरु पुगीफल,ताम्बूल अरु रत्न सुवर्णकी दक्षिणा गजाननजीकी प्रसन्नता के लिये राजा ये वे उपचार समर्पण करताभया १६ अरु दूर्वा आरती अनेक मत्रों से पुष्पांजलि अरु फिर चौथ चन्द्रमा गणनाथजी को अर्घ्य देताभया

१७ अरु ब्राह्मणोंको पूजे अरु आदरसहित भोजन करवाया अरु उनको दशसहस्र गऊ अरु वस्त्र भूषण दक्षिणादई १८ फिर प्यारे भाइयों सहित राजानेभी भोजनकिया अरु रातको गीत बाजे कथादिको से जागरणकिया १९ फिर निर्मल प्रभातभये न्हाय अरु पहिलेकी नाई फिर पूजनकरके उस गणनाथजीकी मूर्त्तिको दक्षिणा अरु सामग्री सहित वशिष्ठजीको दई तिससे प्रसन्नभये गजाननजी सारी सम्पत्तियों से विराजमान भेजतभये २०।२१ उनके दूतोंने तहांलाकररक्खा जो तिसमें बैठा गजाननजी के से स्वरूप वाला राजा देखते सबलोगोंके मनको वारवारप्रसन्नकरता पुण्यके प्रभावसे राजा गणेशलोकको चला तो देवगजाननस्वरूप वे दूत उससे बोले जो नानाप्रकारके अलंकारोंकी शोभायुक्त मुकुट तिनसे सबओरसे शोभितहै मस्तक जिनके ऐसे वेदूत प्रसन्नभयेविनायकजीने तुझको ये विमानभेजाहै२२।२३।२४जोतेरेदर्शनकेचाववालेहे तिसी से हम आये हैं भूपति उनका ऐसा वचनसुनके आंशूछोडने लगा २५ अरु गद्गद वाणीभया अरु रोमांचो से इकट्ठा होरहा शरीर जिसका अर्थात् रोमांचखडे खडे जिसके ऐसा राजा शूरसेन हँसताभया सो उनदूतो से कहनेलगा२६ कि जो गणेशजी अप्रकट अरु नहीं प्रमाण कियेजानेवाले नित्य जगत्के स्वामी अरुवाणी मनसे अगोचर अर्थात् मनवाणी जिनकोजान कह न सकें ऐसे उन गणेशजीके मेरे दर्शनमे कुछ कारण नहीं हैं २७ अरु जिसको वेद अरु शास्त्र येभी निरूपण करनेको समर्थ नहीं हे अरु जिनका ब्रह्मा शिव आदि देवतोके समूह निरन्तर करते हैं २८ सो हेदूतो जो उन्होंने मुझे यादकियाहे तो मेरा बडाभाग्यहे ऐसा वचन सुनके वे दूत राजासे फिर बोले २९ कि हे राजन् हमनहीं जानते हे कि भक्तोंकी महिमाकैसीहै कि जिससे निर्गुण निराकारभी साकारताको प्राप्तहोय ३० राजाबोला कि देवगणेशजी के अरु तुम्हारे प्रसन्नभये मेरी एक भारीअभिलाषाहे कि मैं इसनगर को छोडकर गणेशजीके पास कैसेजाऊ ३१ इनके विना मैंने कभी हालाहल

विषभी न भाया अर्थात् मरेसाथको ये विषको खाने के लिये भी तय्याररहे सो मैं इनके विना परम आनन्द को हे निष्पापो कैसे भोगोंगा ३२ फिर दूतोंने उसेकहा कि तू अपनीइच्छ को पूरीकर अर्थात् सबको लेचल नहींतो गजाननजी क्रोधसेहमसबकोताडना देवेंगे ३३ ब्रह्माजी बोले कि तबतो इन्होंने सबजनोंको लेजाने के लिये क्षणमें विमानके बीच बैठाया हे ब्रह्मन् व्यासजी चारप्रकार के अर्थात् अडज,स्वेदज, उद्भिज,जरायुज,जीव सब बैठायेगये ३४ तो वे सारे दिव्यरूपधारी अरु दिव्यही वस्त्र अलकारों से शोभित आपसमें सब ऐसे कहनेलगे कि ये बड़ा आश्चर्य भयाहै ३५ हम ने पुण्यभी नहींकिया अरु ये ऐसा विमान कैसे आगयाहै बहुत से वहां बोले कि राजाके पुण्यके बलसे सबकेलिये आयाहै ३६ जैसे पारसके प्रतापसे सब धातों का सुवर्णही होजाता हैं अरु अत्यन्त पापी भी साधुओंके वचनसे सिद्धिको प्राप्तहोय ३७ तैसेही राजा के पुण्य से हमसब उद्धार कियेगये हैं तबतो विनायकजीके दूतोंने ऊर्ध्वगति कल्पी अर्थात् ऊपरको लेचले तो ३८ जड़भया वो वि॰ मान भूतलसे न उठा तबतो सबको सन्देहभया कि ये स्वर्गको कैसे चले ३९ तो लोग आपसमें बोले कि निर्भाग्य को निधि कहां से प्राप्तहो क्योंकि बडाभारी भिक्षाकापात्र छींकेपर कैसे ठहरे अर्थात् छींका अपने समानही बोझकोसहारताहै४० कइयोंने सबओरदेखा तो एक कुष्ठी दृष्टिगोचर भया किसी ने राजा से कहा कि तुम इस कुष्ठीको त्यागदेवो ४१ इसकेनीचे गये ये विमान ऊपर तो चलैगा तो उसको छोड़नेचाहते दूतोंको शूरसेनबोला कि मुझपापआचारी को त्यागदेवो अरु इनसबों को लेजावो अथवाइसका पूर्व जन्मकृत पाप मुझसेकहो ४२।४३ मेरे स्नेह से अरु सर्वज्ञपनेमें कृपाकरके उसका उपायभी कहो तो दूतबोले कि हेराजन् तू चिन्ता न कर हम तुझको उस दुष्टकर्मकारी कुष्ठीका जन्मकुकर्म उपायभी कहैंगे ४४ इति गणेशपुराण उपासनाखण्डमें पचहत्तरका अध्यायहुआ ७५ ॥

---

१७ अरु ब्राह्मणोंको पूजे अरु आदरसहित भोजन करवाया अरु उनको दशसहस्र गऊ अरु वस्त्र भूषण दक्षिणादई १८ फिर प्यारे भाइयों सहित राजानेभी भोजनकिया अरु रातको गीत वाजे कथादिको से जागरणकिया १९ फिर निर्मल प्रभातभये न्हाय अरु पहिलेकी नाई फिर पूजनकरके उस गणनाथजीकी मूर्त्तिको दक्षिणा अरु सामग्री सहित वशिष्ठजीको दई तिससे प्रसन्नभये गजाननजी सारी सम्पत्तियो मे विराजमान भेजतेभये २०।२१ उनके दूतोने तहाआकररक्खा तो तिसमे बैठा गजाननजी के से स्वरूप वाला राजा देखते सबलोगोंके मनको वारवारप्रसन्न करता पुण्यके प्रभावसे राजा गणेशलोकको चला तो देवगजाननस्वरूप वे दूत उससे बोले जो नानाप्रकारके अलंकारोंकी शोभायुक्त मुकुट तिनसे सवओरसे शोभितहै मस्तक जिनके ऐसे वेदूत प्रसन्नभये विनायक जीने तुझको ये विमानभेजाहै२२।२३।२४जोतेरेदर्शनकेचाववालेहै तिसी से हम आये हैं भूपति उनका ऐसा वचनसुनके आंशूछोडने लगा २५ अरु गद्गद वाणीभया अरु रोमांचो से इक्ट्ठा होरहा शरीर जिसका अर्थात् रोमांचखडे खडे जिसके ऐसा राजा शूरसेन हँसताभया सो उनदूतो से कहनेलगा२६ कि जो गणेशजी अप्रकट अरु नही प्रमाण कियेजानेवाले नित्य जगत्के स्वामी अरुवाणी मनसे अगोचर अर्थात् मनवाणी जिनकोजान कह न सकें ऐसे उन गणेशजीके मेरे दर्शनमे कुछ कारण नहीं हैं २७ अरु जिसको वेद अरु शास्त्र येभी निरूपण करनेको समर्थ नहीं हें अरु जिनका ब्रह्मा शिव आदि देवताके समूह निरन्तर करते हे २८ सो हेदूतो जो उन्होने मुझे यादकियाहे तो मेरा वडाभाग्यहै ऐसा वचन सुन के वे दूत राजासे फिर बोले २९ कि हे राजन् हमनहीं जानते हैं कि भक्तोकी महिमाकैसीहै कि जिससे निर्गुण निराकारभी साकारताको प्राप्तहोय ३० राजाबोला कि देवगणेशजी के अरु तुम्हारे प्रसन्नभये मेरी एक भारीअभिलाषाहै कि मैं इसनगर को छोडकर गणेशजीके पास कैसेजाऊ ३१ इनके विना मैने कभी हालाहल

विषभी न भाया अर्थात् मरेसाथको ये विषको खाने के लिये भी तय्याररहे सो मैं इनके विना परम आनन्द को हे निष्पापो कैसे भोगोंगा ३२ फिर दूतोने उसेकहा कि तू अपनीइच्छा को पूरीकर अर्थात् सबको लेचल नहींतो गजाननजी क्रोधसेहमसबकोताडना देवेंगे ३३ ब्रह्माजी बोले कि तबतो इन्होने सबजनोंको लेजाने के लिये क्षणमें विमानके बीच बैठाया हे ब्रह्मन् व्यासजी चारप्रकार के अर्थात् अंडज,स्वेदज,उद्भिज,जरायुज,जीव सब बैठानेगये ३४ तो वे सारे दिव्यरूपधारी अरु दिव्यहो वस्त्र अलंकारो से शोभित आपसमें सब ऐसे कहनेलगे कि ये क्या आश्चर्य भयाहै ३५ हम ने पुण्यभी नहींकिया अरु ये ऐसा विमान कैसे आगयाहै बहुत से वहां बोले कि राजाके पुण्यके बलसे सबकेलिये आयाहै ३६ जैसे पारसके प्रतापसे सब धातो का सुवर्णही होजाता है अरु अत्यन्त पापी भी साधुओंके वचनसे सिद्धिको प्राप्तहोय ३७ तैसेही राजा के पुण्य से हमसब उद्धार कियेगये हैं तबतो विनायकजीके दूतोने ऊंचीगति करपी अर्थात् ऊपरको लेचले तो ३८ जडभया वो विमान भूतलसे न उठा तबतो सबको सन्देहभया कि ये स्वर्गको कैसे चले ३९ तो लोग आपसमें बोले कि निर्भाग्य को निधि कहां से प्राप्तहो क्योंकि बडाभारी भिक्षाकापात्र छींकेपर कैसे ठहरे अर्थात् छींका अपने समानही बोझकोसहारताहै ४० कइयोंने सबओरदेखा तो एक कुष्ठी दृष्टिगोचर भया किसी ने राजा से कहा कि तुम इस कुष्ठीको त्यागदेवो ४१ इसकेनीचे गये ये विमान ऊपर को चलेगा तो उसको छोडनेचाहते दूतोको शूरसेनबोला कि मुझपापआचारी को त्यागदेवो अरु इनसबों को लेजावो अथवाइसका पूर्व जन्मअरु पाप मुझसेकहो ४२।४३ मेरे स्नेह से अरु सर्वज्ञपनेसे कृपाकरके उसका उपायभी कहो तो दूतबोले कि हेराजन तू चिन्ता न कर हम तुमको उस दुष्टकर्मकारी कुष्ठीका जन्मकुकर्म उपायभी कहेंगे ४४ इति गणेशपुराण उपासनाखण्डमें पचहत्तरका अध्यायहुआ ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

कुष्ठी के पूर्व जन्म कर्म का वर्णन॥

गणेशजी के दूत बोले कि पहिले (गौडनाम) नगरमें (गौडनागरदूर्व) ब्राह्मणभया जो तपस्वी ज्ञानी विद्वान् अरु देवद्विजो का पूजक था १ तिसका ये पुत्र था अरु (शाकिनी) इसकी माता थी अरु तिसकी (विमलनाम) पत्नी जो सावित्री के समान पतिव्रता थी २ तो ये माता करके एकपुत्र के स्नेहवशसे नानाआभूपणो से सजायागया अत्यन्त सुन्दर रतिके भर्ता कामदेवकी नाईं शोभायमान भया तो उसके मा बाप उसका क्षणभर भी वियोग नहीं चाहतेथे ३।४ फिरयेयौवनको प्राप्तभया अपनी उसभार्य्याको छोड़कर नित्यही पराई निन्दा में परायण अरु सदाही परस्त्री मे रत भया ५ और पापनिष्ठ भया जो पिता के वाक्य को अवमानकरने वाला एकदिन उसनगरमें नरोको मोहनेवाली वेश्या ६ आई तो उसमे आसक्तमन इसने जो किया सो सुन कि उसने मा बापो के साम्हनेही दारमेंसे निकाल पेटीमेंधरे अरु वलसेती ले जाकर उस वेश्याकोदिया या फिर चोरीकरी फिर वेश्याकोदिये ऐसे २ अत्यत क्रीडाकरतारहा ७।८ तो सारे विपयो को छोड़ सुगध द्रव्यलगाये केवल उसीमे निष्ठभया जैसे ब्रह्मम परायण योगी हो ९ अरु वो कामाग्नि करके व्याकुल भया जैसे मदिराके बलसे बावलाहो तो उसका पिता भूखा प्यासा खेदकोप्राप्त १० भया उसपुत्रकोनगर विषे घरघरमे देखता भया तो नहींपाया दर्शन जिसको अरु ऊचे सांसभररहा वो आधीरात को निज पत्नी से बोला कि बुद्धियुक्त मेरापुत्र बुध कहांगया उसके विनघरऐसाहे जैसे रात विनादीपक केहो ११।१२ अरु जल विन बापी भी वृथाही है विनापुत्र जैसे स्त्रीहो अब मुझे प्राणरक्षक उसकादर्शन कैसेहोगा१३ तो शाकिनी बोली कि मैंभी क्षुधा तृषासेथकी चिन्ता शोक सहितही होरही हूं हे नाथ में नहींजानती कि प्यारा बालक कहांगया १४ अब जो

मुझे उसका दर्शनहोतो जीवूं और तरहनहीं फिर वो दूर्वाद्विज वहा से चला हाथमें लट्ठलेकर १५ तो इसने जिस २ को मार्गमें देखा तिसतिस से ही निज पुत्र को पूछा तो जब ये हारा तो क्षुधायुक्त प्रातसा होगया १६ एक अत्यन्त वृद्ध महाभयानक (भीमनाम) से कोई अन्त वर्णज अर्थात् शूद्र था उससे इस ने पुत्र को पूछा तो उसने इसे प्रकट प्रत्युत्तरवताया १७ कि हे द्विज तेराअज्ञानी बुध वेश्याके घरमे कामासक्तभया सुखसे क्रीड़ा कररहा हे किसका वेटा अरु किसके मा बाप तू वृथाही खेदकरताहे १८ दूर्वबोला कि मेरासुत बुध वेश्यामें कैसेरतभया ऐसेकह शीघ्र तिस वेश्या के घर गया अरु वहां उसने उन्मत्त मदिरा से लाल नेत्र मद से विह्वल उसपुत्र को देखा तो उससे बोला कि रे खल पुत्रचन्द्रमामें कलंक की तरह तूमेरे निर्मलकुलमें कुकर्मी कैसे भया १६।२० तुझसे तो ये कटकवृक्ष वा पत्थरही बिशेष हे अर्थात् श्रेष्ठहे तू मर क्यो नहीं जाताहै तेरा जीना क्याहै २१ ब्रह्माजी बोले कि पिताके वचनको सुनकर क्रोधभरा बुधपुत्र इस निजपिताके मुहँपर तलवे से प्रहार करता भया अर्थात् लात मारी २२ अरु कहा कि हे नराधम तैने मेरे क्रीड़ाके कालमें विघ्न क्यो कियाहे क्या मेरे में अकारणसेही ये कव्वेकीसी विष्टा आगिरी ऐसेकह फिर मारेलातो के उसके प्राण निकालडाले २३ तव प्राण मुक्तभये पिता तो हे हर हे ईश्वर ऐसे कहकर मरगया अरु वो पुत्र हर्षितभया इसे पैरबांधकर दूरफेंकता भया २४ फिर मदिरा पाकर यथेच्छ वेश्या से रमता भया सवेरे अपने घर आया तो माता ने इसेदेखा २५ तो स्नेह से झरेस्तनों वाली ने इसे हर्षसे स्पर्श किया अरु बोली कि तू कहारहा अरु तैने क्या किया २६ हेवत्से तू मुझसे सवकहु तेरापिता अत्यन्त दुःखित होरहाहे अरु मे भी निर्जल निराहार रातसे जागरहीहू २७ अरु हे पुत्र तुझे देखनेको तेरापिता भी वहुतदेर से गयाहे अब अपने पिता को देखकरला ऐसे वार २ कहती भई २८ तो इसने मुझसे आज्ञाकरी ऐसे क्रोधसेतो सुतने सूखीलकड़ी से उसके शिरमेंमारी

को कथनकरै ५६ फिर वो कालसे मृत्युको प्राप्त भया तो दूत इसे यमस्थान में लेगये यमने कहा कि क्यों लायेहो इसे शीघ्र नरको में डालदेवो ५७ यम वचनसुनके दूत तैसे तभी उसको लेगये अरु जितनेप्राणियोंकाप्रलयहो। अर्थात्कल्पकालतक नरकोमेंडाला५८ फिर वो नर्क भोगकर वैश्यके घरमें जन्मप्राप्तभया फिर ऋषिपत्नी के शापसे अत्यत कुष्ठी होगया ५६ जो पितृहंता मातृघाती स्त्री-घाती मद्यपीनेवाला गुरुशय्याभोगी उसकेस्पर्शसेही सचैल अर्थात् वस्त्रोंसहित स्नान आचरणकरै६० इसका नाम भी न लेना क्यों-कि वो महादोषकारी है इससे जो ये ऐसा दुष्ट इस विमानसे नीचे किया जावे तो निश्चयही विमान ऊपरको चले इसमे संशय नहीं है ६१।६२ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में छिहत्तर का अध्याय हुआ है७६ ॥

सतहत्तरवा अध्याय॥

व्रतके माहात्म्य का वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि उनदूतोका ऐसा वचन सुनके अत्यंत कं-पित भया राजा शूरसेन बोला कि मैंने इसपाप को नहीं जाना था १ फिर उठकर वो अत्यंत आतुर भया तिन्हे प्रणाम करता भया अरु उनदेव दूतो से बोला कि कृपाकर के मुझ से इसदुष्ट का उपाय सर्वदोष निवृत्तके लिये वर्णन करो दूत बोले कि हे नरपते तू उठ २ अरु सब दोष दूरकेलिये २।३ हे राजसिंह तू सावधान मनभया उपाय श्रवण कहा कि गणेशजी का जो चतुरक्षर नाम (गजानन) है ४ इसे तिसके कर्णछिद्रमें जप तिससे सब पापोंका क्षयहोगा जैसे दिनके नाथ सूर्य्यजी करके सब अंधकार दूरहो ५ और उपायमें इसका अधिकार नहीं है तिससे नामही जपनाब्रह्मा-जी बोले कि शूरसेन दूतोके बचनसे जप २कहकर जपकरताभया६ तीन वेरही कुष्ठी वैश्यके कानमें जो चतुरक्षरथा वो वो (गजानन) ऐसा सुनतेही दिव्य देहभया ७ तेजसे सबको प्रकाशमान् करता

जैसे सूर्य्यजी त्रिभुवन को नामके केवल श्रवणही से सब पापों के क्षयभये ८ सब दिशा देशो को दिखावता विमान पर चढ़ना भया वह विमान दूर्वाने क्षणमेंही सब लोगो सहित ६ विघ्नराजजीकी आज्ञासे विनायकजीके धामको पठाया हेनिष्पाप राजन् इसप्रकारसे जो तैंने पूछा सो सब तुझको वर्णनकियाहै १० अरु महापवित्र उत्तम संकटचतुर्थी का व्रत जो धर्मप्रद कीर्त्ति दान आयुर्बलदायी अरु श्रवणही से सब सिद्धि देनेवाला ११ अरु सब पीडाओं की शांति करनेवाला सर्व विघ्नो का नाशक अरु दूर्वा नाम इनका प्रभाव वर्णन किया अब क्या सुना चाहतेहो १२ व्यासजीनेपूछा कि और इस व्रत को किसने किया सो यह आश्चर्य्य मुझ से कहो ब्रह्माजी बोले कि जमदग्निजीके पुत्र परशुरामसे भी ये व्रतकिया गयाहै १३ वहभी कीर्त्ति जय,ज्ञान,अरु दीर्घ आयुर्बलको प्राप्तभया व्यासजी बोले परशुराम जी कैसे उत्पन्न भये अरु किससे किसमें जन्मे हे पितामहजी १४ ये सब विस्तार से पूछने मुझको कहो ब्रह्माजी बोले कि श्वेतद्वीपमें विख्यात महामुनि (जमदग्निजी) होते भये १५ जो मनसेही रचना संहार करें अरु निग्रह अनुग्रह अर्थात् मारने छोडने करनेका अधिकार जिसको वो देवता कांपनेभये १६ जिसकी पत्नी (रेणुका) नामसे भई कामकी पत्नी रतिकी सुन्दरता जिसको रतीभर भी न पहुचसकी १७ लोकोंमे वहभी रतिकीतरहही विख्यात भई जिससे सब मोहितहो उसके वर्णन करने मेंतो कोन समर्थ होवे १८ वननिवासी चकवे भी अरु तृणपत्ते खानेवाले हिरणभी तपस्या करतेभये १६ इसीकी शोभाकी प्राप्तिके लिये चंद्रमा शिवजीकी सेवाकररहाहै जो देवी आदि अंत रहित मूलमायाऐश्वर्य्यवाली २० तिससे ये योगेश्वर विष्णु परशुराम जी साक्षात् ईश्वर स्वरूप महाभाग जमदग्निजीसे उत्पन्नभये २१ जो ये मन्मथ सुन्दर शरीर साक्षात् कामदेवको भी मथनेवाले मातापिताके वचन का करने वाला विख्यात है बल पुरुषार्थ जिसका २२ अरु देवता द्विज,गुरु,विद्वान्,गऊ, पीपल, इनके पूजनेमें रत अरु वेद वेदांग

को कथनकरै ५६ फिर वो कालसे मृत्युको प्राप्त भया तो दूत इसे यमस्थान में लेगये यमने कहा कि क्यों लायेहो इसे शीघ्र नरको में डालदेवो ५७ यम वचनसुनके दूत तैसे तभी उसको लेगये अरु जितनेप्राणियोकाप्रलयहो अर्थात्कल्पकालतक नरकोमेंडाला ५८ फिर वो नर्क भोगकर वैश्यके घरमें जन्मप्राप्तभया फिर ऋषिपत्नी के शापसे अत्यत कुष्ठी होगया ५६ जो पितृहंता मातृघाती स्त्री- घाती मद्यपीनेवाला गुरुशय्याभोगी उसकेस्पर्शसेही सचैल अर्थात् वस्त्रोसहित स्नान आचरणकरै६० इसका नाम भी न लेना क्यो- कि वो महादोषकारी है इससे जो ये ऐसा दुष्ट इस विमानसे नीचे किया जावे तो निश्चयही विमान ऊपरको चले इसमे सशय नहीं है ६१।६२ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे छिहत्तर का अध्याय हुआ है ७६॥

सतहत्तरवा अध्याय॥

व्रतके माहात्म्य का वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि उनदूतोका ऐसा वचन सुनके अत्यंत कं- पित भया राजा शूरसेन बोला कि मैने इसपाप को नहीं जाना था १ फिर उठकर वो अत्यत आतुर भया तिन्हे प्रणाम करता भया अरु उनदेव दूतो से बोला कि कृपाकर के मुझ से इसदुष्ट का उपाय सर्वदोष निवृत्तके लिये वर्णन करो दूत बोले कि हे नरपते तू उठ २ अरु सब दोष दूरकेलिये २।३ हे राजसिंह तू सावधान मनभया उपाय श्रवण कहा कि गणेशजी का जो चतुरक्षर नाम (गजानन) है ४ इसे तिसके कर्णछिद्रमें जप तिससे सब पापोका क्षयहोगा जैसे दिनके नाथ सूर्य्यजी करके सब अंधकार दूरहो ५ और उपायमें इसका अधिकार नहींहै तिससे नामही जपना ब्रह्मा- जी बोले कि शूरसेन दूतोके बचनसे जय २कहकर जपकरताभया ६ तीन वेरही कुष्ठी वैश्यके कानमें जो चतुरक्षरथा तो वो (गजानन) ऐसा सुनतेहो दिव्य देहभया ७ तेजसे सबको प्रकाशमान् करता

जैसे सूर्य्यजी त्रिभुवन को नामके केवल श्रवणही से सब पापों के क्षयभये ८ सब दिशा देशो को दिखावता विमान पर चढ़ना भया वह विमान दूर्वाने क्षणमेंही सब लोगो सहित ९ विघ्नराजजीकी आज्ञासे विनायकजीके धामको पठाया हेनिष्पाप राजन् इसप्रकारसे जो तैंने पूछा सो सब तुझको वर्णनकियाहै१० अरु महापवित्र उत्तम संकटचतुर्थी का व्रत जो धर्मप्रद कीर्त्ति दान आयुर्बलदायी अरु श्रवणही से सब सिद्धि देनेवाला ११ अरु सब पीडाओ की शांति करनेवाला सर्व विघ्नो का नाशक अरु दूर्वा नाम इनका प्रभाव वर्णन किया अब क्या सुना चाहतेहो १२ व्यासजोनेपूछा कि और इस व्रत को किसने किया सो यह आश्चर्य्य मुझ से कहो ब्रह्माजो बोले कि जमदग्निजीके पुत्र परशुरामसे भी ये व्रतकिया गयाहै१३ वहभी कीर्त्ति जय,ज्ञान,अरु दीर्घ आयुर्बलको प्राप्तभया व्यासजी बोले परशुराम जी कैसे उत्पन्न भये अरु किससे किसमें जन्मे हे पितामहजी १४ ये सब विस्तार से पूछने मुझको कहो ब्रह्माजी बोले कि श्वेतद्वीपमे विख्यात महामुनि (जमदग्निजी) होते भये १५ जो मनसेही रचना सहार करै अरु निग्रह अनुग्रह अर्थात् मारने छोडने करनेका अधिकार जिसको तो देवता कांपनेभये१६ जिसकी पत्नी (रेणुका) नामसे भई कामकी पत्नी रतिकी सुन्दरता जिसको रतीभर भी न पहुचसकी१७लोकोंमें वहभी रतिकीतरहहीं विख्यात भई जिससे सब मोहितहो उसके वर्णन करने मेंतो कौन समर्थ होवे १८ वननिवासी चकवे भी अरु तृणपत्ते खानेवाले हिरणभी तपस्या करतेभये १९ इसीकी शोभाकी प्राप्तिके लिये चन्द्रमा शिवजीकी सेवाकररहाहै जो देवी आदि अंत रहित मूलमायाऐश्वर्य्यवाली २० तिससे ये योगेश्वर विष्णु परशुराम जी साक्षात् ईश्वर स्वरूप महाभाग जमदग्निजीसे उत्पन्नभये २१ जो ये अत्यंत सुन्दर शरीर साक्षात् कामदेवको भी मथनेवाले मातापिताके वचन का करने वाला विख्यात है बल पुरुषार्थ जिसका २२ अरु देवता द्विज,गुरु,विद्वान्,गऊ, पीपल, इनके पूजनमें रत अरु वेद वेदांग

भांति सफल भयेहैं ५३ हे राजन् आपके आनेसे हमारी सारी संपत्तियें सफलभई हैं सो तुमविनकुछ भोजनकिये कैसे चलेजावोगे ५४ हे विभो तुम कुछखाकर जावो तो लोकमें मेरी श्लाघाहोवै अरु तुम्हारा कुछ हलकापन न होय सो हे प्रभो सहस्त्रबाहो तुम हमें सनाथकरो अर्थात् जीमकर जाना ५५ राजाबोला कि सत्यहै भोजनका समयभीहै मैं आपकी आज्ञासे भोजन करूंगा क्योंकिअन्न जो न मिले तौ वेद विद्वानके स्थानपर जलही पीलेना उचितहै ५६ परतबभी मैं इनअगणित सेनावालोंको छोडकर जलभी नहींपीनेको चाहतातो भोजनका तौ चावही क्याकरू ५७मोहेब्रह्मन् मैं मनसे जानताभीहूं कि सबके भोजनकरानेमें आपकी सामर्थ्य नहींहै सो आपके दर्शनहीं से धन्य भया २ अब जाताहू ५८ मुनिजी बोले कि हे राजन् चिन्ता मतकर मैं सेनासहित तुमसबोको जिमाऊंगा वा चार प्रकारके अन्न से क्योंकि तपस्वियों को क्या असाध्य है ५६ और भी जो तेरेघरपर सेनाहो उसे हे विभो बुलाले अरु इसनदी के अत्यंत शुभ सुन्दर तीरपर क्षणभर विश्रामले ६० जितने कि भोजनतयार होवे फिर तू आश्चर्य देखना ६१ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उपासनाखण्ड मे कार्त्तवीर्य मुनिसंवाद इसनामसे सततर वा अध्याय हुआ ७७ ॥

अठत्तरवांअध्याय॥

राजा कार्त्तवीर्य काके सेना सहित जमदग्नि जी के आश्रम पर भोजन करना अरु उनके कामधेनु का मांगना सुवर्णित है ॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि अतप्करणमें विस्मयभरा वह राजा कार्त्तवीर्य्य मुनिजी के वचनको सुनकर सुन्दर शोभित नदी के तीर पर चलागया १ मुनिजीने निजपत्नीको बुलाकर यह वृत्तांत कहा तौ वे दोनो कामधेनुको बुलाकर शीघ्र पूजते भये २ अरु दोनोंने प्रार्थनाकरी हेकामधेनो तू हमारी लज्जारख क्योंकि अगणित सेना सहित राजा भोजनके लिये नोतागयाहै ३ सोहेशुभे जैसे उससेना

सहितकी रुचिपूर्वक तृप्तिहोय तैसेही तु क्षणमेकर नहीं तो सतडूब
जावेगा ६ अरु लोकमें अपकीर्त्तिभी होगी जैसेचाहे तैसेकर तो उस
प्रार्थनाकीगई कामधेनुने निजप्रभावसे एकबडाएरवनाया जो नाना
प्रकारके मन्दिरोसेसुन्दर अरु रत्नजडेथभोसे शोभायमानभये नाना
सभा घर अर्थात् कचहरीघर जिसमे ५।६ अरु नानाप्रकारकीपुष्प,
बेल, अरु सुन्दरवाडी अरुउपवनोसेशोभित अरु नानाप्रकारकेध्वजा
पताकाओंसे सयुक्त अरु नानाप्रकारवाजो का शब्दजिसमें ७ अरु
नानाप्रकारके सुवर्णके पात्रोकी पंक्तियोकरके विराजमान अरुचार
प्रकारके अन्नसेसम्पूर्ण नानापात्रोंकी पंक्तियोसहित ८बडेतोरणोंकी
शोभासहित चारोओरकी खाई सोहीबाजूबंध तिनसे अकीभई अरु
अनेकदास दासियोसे शोभायमानहैं सुन्दरचौतरे जिसमें ९ अरु जहा
तहाठहरे चौकीदारलोगोको निवारणकररहेहैकि अगाडीजानेकीमुनि
जमदग्निजीकीआज्ञानहींहै १० अरु जहांअनगिनतपात्रोमें सर्वत्रप-
रोसगारीहोगई जोपात्रदीपकोकीसीकीर्तिवालेनानाप्रकारकेव्यंजनों
वाले ११ अरु जो पात्र, खीर, पूवे, पकवान, पचामृतयुत अरु स्वादलेने
योग्य चूसनेचाटनेयोग्यआदि अरुपीनेयोग्य भोजनोकीपंक्तिसेविशेष
शोभितथे १२ अरु समुद्र अरु पकेनींबु मिठ बेल आदिसुन्दर फलो
वाले अरु कपूर इलायची हींग मिरच सहित कढ़ीके पात्रोंवाले १३
इन ऐसे२ पात्रोंमे परोसगारी भये मुनिजीने अपने शिष्यगण बुला-
ये श्रीकामधेनु के सम्पूर्ण प्रसन्न होने से सेना सहित कृतवीर्य्यके
पुत्रको जिमानेकेलिये १४ फिर मुनिजीने शिष्य समूहसे कहा कि
तुरतसेजावो नदीतीर निवासी नरपतिको बुलानेकेलिये १५ तो वे
शिष्य उस राजा पै जाय पहिले उसकी प्रणामले अरु तिसको अ-
शीशदे मुनिजीकी आज्ञा सुनातेभये १६ कि हे राजन् तुमनिश्चित
भये भोजन करनेको चलो सेनासहित अनगिनत पात्र छःओरसोंसे
परोसे तैयार धरेहैं १७ ब्रह्माजीबोले तब वो राजा उठके अरु सेना
वालोंको बुलाकर नहायाधोया सेनासहित कृतवीर्य्य राजागया १८
तो मुनिजीका घर इसने देखा जो कभी भी न देखा अरु न सुनाथा

राज्य में निज सेना के बलसे वे कहो सो लेलेवें ब्रह्माजी बोले कि दुष्ट मति उस कार्त्तवीर्य्यका ऐसा वचन सुनकर महामुनि जमदग्निजीक्रोधसे प्रज्वलितभये जैसे प्रबलभया अग्नि घृत से प्रदीप्त होजावे ४८ सोलालनेत्र किये द्विजजी राजाको सिखावते मुनिजी बोले कि देखो जो साधुसरीखा शुद्ध भारी तू राजा भोजन के लिये बुलायागया तेरी कुटिलताको मैंनेनहीं जानीथी जो बगलेकी तरह तैंनेमनमेंधाररक्खीथीअथवा जैसेकोयलमायामोहसेकव्वेकेबच्चे कोपाललेवे५० फिर अंतमें वो कव्वेपनसे भक्ष्य, अभक्ष्यमे लगजावे मैंही भ्रांति युक्त होगया जो कि लोक में न देखी अरु न सुनी इस राजमत्रीको सत्यजानताभया जो राजमित्रता किसीको फलदायक न भई ५१।५२॥ इतिश्री गणेशपुराणे उपासनाखण्ड में इसनाम से कामधेनु मागना अठतरवां अध्याय हुआ ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

कार्त्तवीर्य जमदग्निजीके युद्धहोनेका वर्णन॥

मुनिजी बोले कि हे नृप साधुकीसी वृत्तिके अनुसार होनेवाले तैंने यहनिज आत्मघात अर्थात् अपनेमरनेकोआगेकरकेयह अच्छा उपकार आरम्भकिया जोकि कामधेनुको तू मागताहै १ तूअवश्य भ्रांतहीहै जो अप्राप्यनाम न पानेयोग्य वस्तुकी अभिलाषाकरताहै तौ ये त्रिलोकके नाथसे जन्य अर्थात् निजसेनाके मरवा देनेकापाप तेरेशिर पर पडैगा२ब्रह्माजी बोले किऐसे वाणीके वाणोंसे बिधावह राजामुखसे क्रोधाग्निको निकालताक्रोधसे प्रलयाग्निके समानहोगया३क्रोधभया तब जमदग्निजीसे वह राजा बोला कि हेशठ मैंने दुष्ट वचन किसीका भी न सहाहै ४ पर क्याकरूं तू ब्राह्मणहैइससेतेरा करुवा वचन सहाहै ब्रह्मावोले फिर इसराजाने उठकेतुरतही दूतोंको आज्ञादेकर कि ५ कामधेनुको खूंटेसे खोलकरशीघ्र मेरे पासआवो तो तिसकेदूतोंने तिसकी आज्ञासे धेनुको घेरलईतौवे उसकी फोंकारसेही प्राणोंको त्याग स्वर्गमेंगये अर्थात् मरगये इक

को धमग्निसे उसधेनुने और भी राजदूतोंको जलाये ७ कई क वीर श्वासके पोनके वेगसे आकाशमें उडगये सूर्यमण्डलकोभी ढकलिया तो तब कुछभी न जानपडा ८ दिशा अँधियारीहोगई आकाशभी न भासा धरती कापना अर्थात् भेंगजभया अरु कँपाय २ केवृक्ष गिरनेलगे ९ अरु सेनावाले तिससे डरे सारे दशों दिशो को भग गये किसीने उसधेनुको दूरहीसे कसिये से ताडनाकीथी १० तो वो धेनु उड २ कर सेनापरहीदौडी जैसे गज समूहपे सिंह अरु गरुड जैसे सर्पोपर झपटे ११ तो वहा पर भागने चोरो का भारी हाहा कार भया उनसे महाबली कार्त्तवीर्य्य बोला कि डरोमत १२ कि मेरेशस्त्र• वजातेसे डरकर सबवरको भग जावेंगे यह कामधेनु क्याहै तुममेरा कौतुक देखना अर्थात् धैर्य्यधरो १३ तबतो उस कार्त्तवीर्य्यने महा शस्त्रवजायाउसकेशब्दसेत्रिलोकीको पूर्णाभयापरवोकामधेनुनडरी फिर इसने उसे बलसे ताडनाकी १४ अरु सब राज सेवको ने भी लट्ठियों से अरु लोहोंसे मारी तो जहा २ उसके शरीर मे वो प्रहार भया तहा २ सेहों १५ खिंचेभये सब शस्त्रोसे २ युक्त नानाप्रकारके शूरवीर निकले अरु उसके बालोंसे शक अरु बरवर वीर उत्पन्न भये अरु उसके पैरो से पटच्चर वीरभये ऐसेवे सारे उत्पन्न भये नाना प्रकारके यवन जातिवाले अरु और २ भीनाना शूरवीर उत्पन्नभये १६।१७अरुघोडे हाथियोंकीपंक्तिअरु शस्त्रबलवाले महारथीऐसे२ येहोके कार्त्तवीर्य्य के सेनावालों के साथही युद्धकरते भये १८ तो उनकरके प्रहारकिये कार्त्तवीर्य्यके सेनावाले गिरपडनेभये अरुवाकी वृक्षोंमे मिलगये जैसे रातको पतंग लिपटजावे १९ परस्परकेघात से हतसैकडो नरगिरते भये अरु आपसमेंशस्त्रों से शस्त्र काटकरशीघ्र युद्धकरतेभये २० ऐसे उनके शस्त्रोंके गिरते अत्यंत सकुल शब्दभया तो तिसमे अपना पराया कुछभी न जानपडा २१ तो धूलसेसूर्य्य ढकगये आपसहीमें हनतेभये अरुमारलेवो २ ऐसाभारी कोलाहल शब्दहोताभया २२ सोकि घोडोंकी हिनहिनानों से अरु हाथियों की चिंघारोंसे दूरसिंहदहाडोंसे अरुरथोंके पहियोंसे अरुस्फटगकोलाल

अरु वशियोंके शब्दोंसे भी वो भारी कोलाहल शब्दभया २३ ऐसे गऊकी इच्छावाले कार्त्तवीर्य्यके सेनावाले रथ, गज, घोड़े, सवार अरु पैदलोंसे भया वो युद्ध भूत राक्षसोंको भयदायी भया २४ जो पक्षि गीदरोंको सुखदाता अरु वीरस्त्रियोंको भयप्रदाता तो कईयों की पिंडलियें कटगईं अरु कइयोंके शिरकटगये २५ अरु तहां तल- वार,ढाल,भालोंकी अरु बाणोंकी,धनुषोंकी टूटेभयोंकी अरु कटेभये- शूरवीर अरु महारथियों की संख्या न भई २६ फिर बाकीबचे जो कार्त्तवीर्य्यकेसेनावारे थे सोभीगिरगये अरुगऊवालेपीठमेंचाटखाये हँसतेगये अरुवोप्रहारन करसके२७अरुवेकि मुनिजीसे निन्दाकिये गये कि तुमनेक्या बुराकियाहै पूर्वजन्म के दोषसे इसराजाही वो मतिखोटी होगई २८ ऐसे सेनाके कटगये वो कार्त्तवीर्य्य उठा अरु हाथमें पांचसौ धनुष अरुबाणलिये २९ फिर उसने पृथ्वीपर बायां गोड़ जमाकर अरु धनुष को खैंचकर वेगवाला राजा बाणसमूहको गऊवालोंकी सेनामे चलाता भया ३० तो महाभुज वाले भी उस राजाका बाणसमूह निष्फल होगया जैसे अन्यायका कर्म अरुब्राह्ममें भोग ये निष्प्रयोजनहीं है ३१ तो राजाने फिरभी तितने२ हीबाण छोडेपर कामधेनुका शूरवीर उनसे कोईभी न कटा ३२ तबतो शर समूहके भी वृथाभये राजा संतापको प्राप्तभया कि मेरा सामर्थपन कहा चलागया ऐसी चिन्तासे आतुर होगया ३३ तो व्याकुल में प्रहार न करना ऐसा समुझ वे स्वर्गकोगये अरुहर्षसे युक्त कामधेनु भी कहती गई कि इसतुच्छसे क्या लड़नाहै ३४ फिर कामधेनु के चलेगये राजा कार्त्तवीर्य्य मुनिजीपै आया अरु क्रोधसे बोला कि हे ब्रह्मन् तुम्हारा कपटपना पूर्वमेने जानाहै ३५ सोकि वो विप्रनहीं माना जिसके मनमें कपटहो ऐसेकह एकबाणसे द्विजश्रेष्ठको हनता भया ३६ तो उसमहा बाणके हृदयमें लगतेही उन्होने प्राणत्यागे अरुरेणुका उसनृपसे गेरे तैने वृथा ब्रह्महत्या क्योंकी ३७ तो वो क्रोधभरा रक्तनेत्रनृप तिसे बोला मुनिपत्नि चुपरह नहीं यहां तुमें भी मारदेताहूं ३८ तो दुष्टराजाने इक्कीस बाणोंसे उसेभी क्रोधसे

ताडी तब उसने मनसेमुनि जमदग्निजी का स्मरणकिये फिर नृप से बोलीकि रे दुष्ट चांडाल तेनेक्या किया कि अपराधके विनाहम दोनोंको क्यों मारताभयाहै ४० तो तेरेभी इनभुजाका नाशहोगा इसमें संशयनहींहै उसका ऐसावचन सुनन्नृप वहांसे चलागया ४१ थोडी वचोंसेचिन्तासे भरा अरु मनमे आपेकोधिक्कारता अरु मरेसे-नावालो को शोचता ४२ च वरहित उद्योग वर्जित निज महलमें आया ४३ ॥ इति श्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड मे उन्नासीवां अध्यायहुआ ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

परशुरामजीकाआना अरु महाक्रोधहोना क्षत्रियोंपर ये वर्णनकियाहै ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि कार्त्तवीर्य्य केगये रेणुका अत्यन्त व्याकुल भई शोचकरतीरही कि इसप्रलयके भी होनेपर वे मेरेपुत्र कहांगये हैं १ भर्त्ताकेमरे बाणोंसमूह से ढकीभई मैं व्याकुल वा महाक्रोधी मेराप्यारा पुत्रपरशुराम भी कहां चलागया है २ उसके देखने से मेरेप्राण देवलोकहोंगे तो स्मरण करतेही परशुरामजीभी माताके निकट आगये ३ तो उसने बाणोंके समूहसे ढको उसको अरु मरे पिताको देखा जोपिता कार्त्तवीर्य्य के दृढबाणों से हृदयमें विधेथे ४ तोये पवनसे उखडे वृक्षके तरह मूर्च्छा से पृथ्वीपर गिरे अरु पिता कीमाताको अत्यन्त दुःखीभया विलाप करताभया ५ परशुरामजी बोले कि आज सारे अंधकार होरहाहै अरु आज दशोंदिशायें सूनी होगईहैं६ जैसेसुमेरुसेहीन पृथ्वी अरु इन्द्रहीन जैसेअमरावतीहै।७। तैसेही पिताजीसे हीनमेरा आश्रम शोभानहीं देताहै जैसेत्रिलोकी गंगाजीसेहीन तैसेमेरी आश्रममण्डली अपवित्र है ८ अबयों देवतों काभय मिटगया अरु आज ऋषीश्वर, निरीश्वर, भये जिनकी तप-स्यासे जो होगयाथाकि ये क्याले्वेंगे ये विचार ८ ऐसे वे रामजी नानाप्रकारके आकारका पुकारना अर्थात् विलाप करते भये अरु बहुत दुःखी भयेजैसे जलविना मछली तड़फे ९ वे फिर रोनेभरे

मे वहां था नहीं फिर आकर देखे कि तिनको मन्त्राग्निसे जलादिया अरु माताके वचनसे यहांआयाहू ११ सो कि दत्तात्रेयजी से विना इतर और कोई इसकर्ममें वक्ता नहीं कर्त्तव्यहै अर्थात् वे बहुतज्ञाता हैं फिर तेरह दिनतक सारा कर्मकिये १२ फिर वली कार्त्तवीर्य्यको मारना अरु इकईसवेर पृथ्वी निक्षत्रिय करना १३ ऐसी मेरी रेणुका माताने मुझे आज्ञाकरीहै अरु इसीलिये मैं यहांआयाहू तिससे मुझ पर कृपाकरो १४ । १५ ब्रह्मावोले रेणुकापर दयालु मुनिजी राम जीका ऐसावचनसुनके शोकसे उद्विग्न चित्तभये रामजीसे ये वचन बोले १६ दत्तात्रेयजी कि जिसके घरमे यथेष्ट भोजनकिया फिरति- ससे बिरोधपना नहींचाहिये जो उसदुष्ट ने ये कियाहै वो उसकेफल को निकट अर्थात् शीघ्रही देखेगा १७ अब तो तुम उनकी सम्यक् ऊर्द्धदेहकी क्रियाका आचरण करो ब्रह्मावोले तव तो दत्तात्रेयजीके साथ रामजी आश्रम पर आकरके १७ भक्ति से माता पिताओं का उत्तरकर्म अर्थात् तिनकी क्रिया करतेभये तो दत्तात्रेयजी से कथित मन्त्रोंसे उन्होंने दूसरे दिनतकका कर्मकिया १८ फिर कर्मके समाप्त भये मुनिजी ने (कोल्हारपुर) जानेको मनकिया तो रामजीने कहा कि आप कब आवेंगे १६ मुनिजी ने कहा कि जब तुम मेरा स्मरण ही करोगे कि हे दत्तात्रेय जी अब ऐसे तभी हे निष्पाप रामजी तुम मुझे देखोगे २० ये कर्मकरकर नित्य२ ही भिक्षा मागनेको विचरते रहतेभये और ये भी विचारा कि अशौचवाले का अन्न भोजनकरना उचित नहीं है २१ तो मुनिश्रेष्ठ पांचवें दिन इसकर्मको समाप्तकरके अरु उनसे आज्ञा लेकर जितने आये तितनेही एक व्याघ्र आया तो रामजी ने हे- मात २ अब मैं कहा जाऊं ऐसे उसके भय से पुकारे तव तो रामजी के वाक्य से मातारेणुका उत्पन्न भई २३ नहीं पूर्ण भया शरीर जिसका अर्थात् दशदिन विना सब देह नहीं वना जिसका ऐसी भी वो रेणुका उसपुत्रके स्नेहवशसे प्रकटभई क्योंकि जो वो वारह दिनोंसेतो वुलाई जाती रामजी से तो २४ वो सम्पूर्ण भई सारे शरीर मे शोभित भई आवती अरु उनसे बोली कि हे

बालक राम तू प्रयोजन कहु २५ तो स्नेहसे झर रहे स्तनोंवाली रेणुका स्नेहसे उन्हें आलिंगन करतीभई अरु फिर छठे दिन दत्तात्रेयजी आगये २६ अरु तहांतेसी अर्थात् अपूर्ण शरीरवाली रेणुका को देखी तो कहा कि बीचही में इसे बुलालई क्या जो ये न्यूनदेह वाली चलीआई २७ क्योंकि जो ये सपिण्डी करनेपीछे बुलाईजाती तो सारेशरीर सहित आती हे द्विज श्रेष्ठ अब ये तेरे स्नेहसे ऐसीही चलीआई २८ तो रामजी बोले कि हे ब्रह्मन् मैंने बालपन से अरु भयसे तथा स्वभाव वशसे हे मातु ऐसे कहदिया तो हे मुनिशार्दूल जी मैंने इन्हें ऐसीदेखी२९तोही उन्होंने ऐसेकह उसका ग्यारहेंदिन वृषोत्सर्ग किया अरु बारहवेंदिन उनका सपिण्डन किया ३० अरु तिससे परे दिनमें अर्थात् तेरहवें दिन पथिका श्राद्ध अर्थात् मार्ग के निमित्त कर्म किया अरु पुण्याह वाचन किया अरु ब्राह्मणोंको यथायोग्य बहुतसे दानदिये ३१ तो तिससे दिव्यदेह भये जमदग्नि जी ब्रह्मलोकको गये अरु वो रेणुका सारे भूतलपर सब स्थानों में तैसीही अर्थात् रजहोकर विराजमान भई ३२ जो भक्तिकारी जनोंके कामोंकोपूर्ण करती भई इसका विस्तार भया माहात्म्य स्कन्दपुराणमें विशेषसे कहाहै ३३ हे मुनिश्रेष्ठ व्यासजी अति विस्तारके भयसे हमने नहीं कहाहै ३४ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें जमदग्निजीकी सद्गति इसनामसे इक्यासीवांअध्यायहुआ ॥ ८१ ॥

बयासीवां अध्याय॥

परशुरामजी करके तपकरने का वर्णन ॥

व्यासजी ने पूछा कि हे ब्रह्मन् अकेले बालक हो परशुराम जी सेनासहित सहस्र भुजवाले उस कार्त्तवीर्य के साथ कैसेलडे १ अरु उसभारी वीरको कैसेजीता सो मुझे विस्तारसे कहो ब्रह्माजी बोले कि एक दिन रामजी ने माता से पूछा कि हे मात जिसमे इन्द्र आदि देवता त्रासवा कम्पायमान होरहे हैं अरु अनगिनतजिसकी सेनाहै जो चारों अंगों अर्थात् हाथी घोड़े रथ पैदलों सहित है २

३ उसे मैं कैसेजीतूंगा इससे मुझे सारा उपाय कह अरु इकईस वेर पृथ्वीको निःक्षत्रिय कैसे करूंगा ४ सो भी मुझसे सबकहो तुम्हारी ही प्रसन्नता से मैंजीत होगी अरु सबलोकों में विख्यात मेरीकीर्त्तिहोगी ५ माता बोली कि हे पुत्र तेरा जय होगा तू शंकरजी का आराधन कर उन महादेवजी के प्रसन्नभये तेरा सारा मन बांछित सिद्धिहोगा ६ ऐसेउसका वचन सुनके रामजी कैलाशको आये माताके चरणारविन्दोंको प्रणामकर अरु उनसेआशीपलेकर ७ तोवहां महादेवजीकोदेखे जो रत्न सिंहासनपरबैठे तो अंजलिसंपुटबांधे रामजी तब तिन्हें नमस्कार करके स्तुतिकरतेभये ८ रामजीबोले हेदेव हेदेवेश हेगौरीजीके स्वामिन् अरु हेशम्भो आपको नमस्कारहै जो आप इसविश्वकेकर्त्ता विश्वकेभर्त्ता अरु विश्वकेहर्त्ताहो अरुविश्वमूर्त्ति आपकोनमस्कारहै अरु संसारनिधि आपको नमस्कारहै अरु चन्द्र तेज शोभित आपको नमस्कार है ९ अरु निर्गुणआपको नमस्कारहै अरु हे निर्म्मल ज्ञान के कारण आपको नमस्कार है अरु आकार रहित अरु सगुणतासे साकार आपको नमस्कारहै अरु वेद वेदान्त शास्त्रसेपरे जो आप तिनकोनमस्कार है अरु हेप्रकट अप्रकट स्वरूप सत् शीलआपको नमस्कारहै १० अरु तीनोंगुणोंके प्रबोधक आपको नमस्कारहै अरु गुणोंसेपरे आपको नमस्कारहै अरु इसमायारचित प्रपंचको जाननेवाले आपको नमस्कारहै अरु प्रपंच रहित आपको नमस्कारहै ११ श्रीब्रह्माजीबोले कि ऐसेस्तोत्रको श्रवणकरकेसन्तुष्ट भये महेश्वरजी रामजीके सन्मुख होकरबोले कि मैं तेरे अमृतवचन से प्रसन्न भयाहूं १२ कि मुझसे तू वरमांग जो २ तेरेमनमेंहै मैं तुझे रेणुका का पुत्र जमदग्नि जी का सुत द्विज जानता हूं १३ तो रामजीबोले कि कामधेनुको लेनेकी इच्छावाले दुष्ट कार्त्तवीर्य ने हे प्रभो अपराधके विनाजमदग्निजी को मारडाला १४ अरु मेरीमाता रेणुका भी उसीकरके सेनासहित जीमके भी सबप्रकारसे बाणोंसेक्षत होगई इकईश प्रहारोंसे फिर मुझको माताने आज्ञाकी है कि तू उस दुष्ट राजाको मार सो अब मैं आपके शरण आयाहूं इसके मारनेमें

उपायकहो १५। १६ जिससे में इकईशही वेर पृथ्वीको निक्षत्रिय करूं ब्रह्मा बोले ऐसे तत्त्व अर्थको जानते भी महादेवजी उनसे बोले १७ अपने समाधि बलसे विचारके सुखपूर्व्वक जीतनेका उपाय जो षडक्षर महामंत्र जो गणेशजी का प्रसन्न करनेवाला १८ तिस को रामकेअर्थ बताया अरुकहा कि तू इसका प्रयत्नसे एकलक्षजप-कर अरु उसके दशमांश से हवन कर १६ अरु तिसके दशांश से तर्पण कर अरु तिसके दशांश से ब्रह्मभोजकर अर्थात् ब्राह्मणों को जिमा तो तू भूमिपर प्रसन्न होवेगा-२० कि देवोंकेदेव गजाननजी तेरा सबकार्य्य सिद्धिकरेंगे ऐसेउनका वचनसुन आदरसे उन शिव जी को प्रणाम करके २१ अरु उनकी आज्ञा ले रामजी भूमिमें भ्रमते २ यमुनाके उत्तर देशमें एक उत्तम स्थान देखतेभये २२जो नानाप्रकार के लता समूहो से सुन्दर सिद्धि दाता तहां वे शिवजी से कहेके समानअनुष्ठान करते भये २३ सो कि इन्द्रियोकीअरु मन की वृत्ति गणेशजी मे स्थापन करके अरु एक अंगुठ मे खडे उस को मंत्रकी आवृत्ति करते द्विजरामजी २४ जपके हवनकर ब्राह्मणों कोभोजन करवाते भये दशांश ३ करके यथा क्रम २५ तव तो प्रसन्नभये गजाननजी प्रकट भये जो चतुर्भुज महाकाय महामाय अत्यन्त सुन्दर २६ अरु जो नाग यज्ञोपवीत वाले अरु नाना-प्रकार के अलंकारों से शोभित मुकुटधरे कुण्डल झलकायेशोभित सुन्दर कपोल जिनके सजरहा मुखजिनका २७ अरु मोती मूंगोंकी माला से शोभायमान हैं वक्षस्थल जिनका भारी भुजों वालेअरु जो भुजों परशु कमल दन्त मोदको को धारण करते २८ अरु पुष्प रजो जल तिसे पुष्पर नाम निजशुण्ड मे लेकर निज इच्छासे जो इधर उधर भ्रमारहे अरु निजकान्ति करके दिशा अरु विदिशो को भी भासमान करते ऐसे श्रीगणेशजी महाराजको २६ अचानक ही देखतेभये वो रामजीने निजनेत्र मींचलिये जो नेत्र उनकेतेजसे ढकेगयेथे फिर इन्होंने उनकी स्तुति करी ३० कि हे जगदीश्वर स-हस्त्र सूर्य्योंकेसे प्रकाशवाले आपको नमस्कारहै अरु सब विद्याओंके

को प्राप्तभये वहा रामजीने अनुष्ठानकिया अरु गणेशजी से परशु-नाम कुल्हाडा पाया ४ अरुआप त्रिलोकमें (परशुरामजी) विख्यात भये अरु हे मुनि श्रेष्ठ इतिहास को मै कहताहू सो तू श्रवणकर ५ कि एक (तारकनाम) से दैत्यभया जो महाबल पराक्रमीथा उसे सहस्र दिव्यवर्ष महाघोर तप कियाथा ६ फिर हे व्यासजी प्रसन्न मनभये ब्रह्माजी इसे सबसे अभयदान देतेभये सो कि देव, ऋषि, यक्ष,गन्धर्व,सर्प,राक्षस,इनके हाथसे ७ अरु उनके शस्त्रों के गण से तेरीमृत्यु कहीं भी न होवेगी जब कि स्वामिकार्त्तिकजी ही उत्पन्न हों तभी तिनसे तेरामरण होगा ८ ऐसे उनके वरको श्रवण करके बलकेगर्व से संयुक्त तारकासुर त्रिलोकीमें बसनेवाले सबलोगोंको पीड़ा करताभया ९ अरु जो ब्राह्मण वेदपढने में परायणथे अरुतप अनुष्ठान करनेवाले थे और जो २ अग्निहोत्र में रतथे तिन सबों को तारकासुर कारागृह अर्थात् कैदखानेमें डालताभया १० अरुयहा के सब राजाओंको अरुनागोंकोभीवशमेंकरकेस्वर्गलोकमेंगयातबइन्द्रा दिक देवता हिमाचलकी गुफाओंमें चलेगये ११ अरुतिसके भयसे कहीं यज्ञ अरु पूजन भीनभया सोकि मैं हीं ईश्वर देवताहू ब्राह्मण अरु कुलदेवता भीहूं १२ अरु मै हीं नमस्कार अरु पूजने योग्यहूं मेरेसे सिवा और कोई भी जगत्में नहींहै जो कोई औरोंको पूजेगा या कभी नमस्कार भी करेगा १३ वो दण्डनीय अरु ताडनीयहोगा या यमलोकको जावे अर्थात् मारदिया जावेगा ऐसे उसने निजदूत से सबलोकों में जनादिया १४ तब तो बेचारे सारेजन रोते अर्थात् खालीशून्य होगये जो सज्जनोंसे रहित अरु पढ़ने अरु होमकरनेसे अरु यज्ञदान इनसे वर्जितभये १५ अरु तजदिये कुलधर्म जिन्होंने अरु अपने आचारोंसे रहित अरुखोटे अरु मुनिजन साधुसारे पर्वत वनोंमें चलेगये १६ अरुवहा शिवजीकी प्रार्थना करतेभये कियेदैत्य कैसे विशेष बढ़ा है अरु विना आपके हे शम्भो जगदीश्वर अब हम किसकी शरणजावें १७ हेप्रभो आप इसजगतके बनानेवाले रक्षक पोषकहो अरु संहारक भी आपहीहो वो अहंकाराग्निसे हमेंजलाता

है जैसे वनको वनाग्नि १८ जो आपकी इस जगत् के संहारकरने कीही इच्छाहै तो आप ही इसे संहार करडालो नहींतो उस सबके संहारक पीडाकारक तारक राक्षस को संहार करो १६ ऐसे वे प्रार्थना करके फिर अत्यन्त घोर तपकरते भये जो पत्रभोजी पवन भक्षी अरु कई आहार रहित कई जलही पीनेवाले २० ऐसे तिसकी आज्ञा में देव मुनियों के स्थितभये वहदैत्यराज इन्द्रकेपदको प्राप्त होकर ब्रह्माजी को भी ताडना देताभया २१ अरु विष्णु निद्रालेनेको क्षीरसागरमें चलेगये अरु हे मुनेव्यासजी शिवजी भी कैलास को छोडके और गुफा वन में चलेगये तिसके भय से २२ अरु दिग्पाल दिग्गज ये भी और २ वनों में चले गये तो उनके स्थानोंपर उस दैत्यराज ने और२ राक्षसोंको स्थापन करदिये २३ इसअचला नाम पृथ्वीको आप अचलनाम पर्वतकी नाईं स्थितभया प्रजाओंको पालताभया अरु अपनेही स्वभाव अर्थात् निजेच्छा से ही गर्जता अरु तीनलोककांपते २४ फिर तो इन्द्रआदि देवता गिरि वन में गिरिशायी गिरिजाजी के पति शिवजी को स्तुति करते भये गम्भीर हर्षसे २५ तो वे बोले हे देवोंके अधिदेवता अरु हे आकाश सूर्य सोम स्वरूप अरुहे पवन वह्नि स्वरूप हेयजमान जलस्वरूप आपही स्थावर जगमों को रचतेहो अरु रक्षा करतेहो अरु निजही इच्छासे सबको संहार करतेहो २६ अरु ये परब्रह्म स्वरूप आपमें अनुचितहै कि आपकाही जो यश सो शत्रुके आश्रयहोगया अरु अब आप उसे बहुत ही करो अर्थात् उस असुरको और भी बढ़ावो यह आपको सर्वथा उचित नहीं है सो हे पराये दुःख के हर्त्ता इससे उस असुरका नाशकरो अथवा इनसारे मुनीश्वर देवताओं को मारो जो ये आपके भजनमें प्रवेशमन होरहेहैं २७ अरु हे गिरीशजी आपसे इतर हम किसके शरणजावें अरु हे भगवन् हे महेशजी किसकोभजें अरु हे पाप नाशक पार्वतीशजी आप विन हम किसको कहें सो हे सर्वेश्वर आपकेविना हमें रक्षाकरनेको कौनसमर्थहै २८ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे उन्होंने स्तुति करतेही आकाशवाणी को सुनते भये

को प्राप्तभये, वहां रामजीने अनुष्ठानकिया अरु गणेशजी से परशु-नाम कुल्हाडा पाया ४ अरुआप त्रिलोकमे (परशुरामजी) विख्यात भये अरु हे मुनि श्रेष्ठ इतिहास को मैं कहताहूं गा तू श्रवणकर ५ कि एक (तारकनाम) से दैत्यभया जो महाबल पराक्रमीथा उसे, सहस्र दिव्यवर्ष महाघोर तप कियाथा ६ फिर हे व्यासजी, प्रसन्न मनभये ब्रह्माजी, इसे सबसे अभयदान देतेभये सो कि देव, ऋषि, यक्ष, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, इनके हाथसे ७ अरु उनके शस्त्रो के गण से तेरीमृत्यु कहीं भी न होवेगी जब कि स्वामिकार्त्तिकजी ही उत्पन्न हो तभी तिनसे तेरामरण होगा ८ ऐसे उनके वरको श्रवण करके बलकेगर्ब से सयुक्त तारकासुर त्रिलोकीमें बसनेवाले सबलोगोंको पीडा करताभया ९ अरु जो ब्राह्मण वेदपढने में परायणथे अरुतप अनुष्ठान करनेवाले थे और जो २ अग्निहोत्र में रतथे तिन सबों को तारकासुर कारागृह अर्थात् कैदखानेमें डालताभया १० अरुयहां के सब राजाओंको अरुनागोकोभीवशमेंकरकेस्वर्गलोकमेंगयातबइन्द्रा दिक देवता हिमाचलकी गुफाओंमें चलेगये ११ अरुतिसके भयसे कहीं यज्ञ अरु पूजन भीनभया सोकि मै हीं ईश्वर देवताहूं ब्राह्मण अरु कुलदेवता भीहूं १२ अरु मैं हीं नमस्कार अरु पूजने योग्यहूं मेरेसे सिवा और कोई भी जगत्में नहीहै जो कोई औरोको पूजेगा या कभी नमस्कार भी करेगा १३ वो दण्डनीय अरु ताड़नीयहोगा या यमलोकको जावे अर्थात् मारदिया जावेगा ऐसे उसने निजदूत से सबलोको में जनादिया १४ तब तो वेचारे सारेजन रीते अर्थात् खालीशून्य होगये जो सज्जनोसे रहित अरु पढने अरु होमकरनेसे अरु यज्ञदान इनसे बर्जितभये १५ अरु तजदिये कुलधर्म, जिन्होने अरु अपने आचारोसे रहित अरुखोटे अरु मुनिजन साधुसारे पर्वत वनोमें चलेगये १६ अरुतहां शिवजीकी प्रार्थना करतेभये किये दैत्य कैसे विशेष बढ़ा है अरु विना आपके हे शम्भो जगदीश्वर अब हम, किसकी शरणजावें १७ हेशम्भो आप इसजगत्के बनानेवाले रक्षक पोषकहो अरु संहारक भी आपहीहो वो अहंकाराग्निसे हमें जलाता

है जैसे वनको वनाग्नि १८ जो आपकी इस जगत् के संहारकरने कीही इच्छाहै तो आप ही इसे संहार करडालो नहींतो उस सबके संहारक पीडाकारक तारक राक्षस को संहार करो १९ ऐसे वे प्रार्थना करके फिर अत्यन्त घोर तपकरते भये जो पत्रभोजी पवन भक्षी अरु कई आहार रहित कई जलही पीनेवाले २० ऐसे तिसकी आज्ञा में देव मुनियों के स्थितभये वहदैत्यराज इन्द्रकेपदको प्राप्त होकर ब्रह्माजी को भी ताडना देताभया २१ अरु विष्णु निद्रालेनेको क्षीरसागरमें चलेगये अरु हे मुनेव्यासजी शिवजी भी कैलास को छोडके और गुफा वन में चलेगये तिसके भय से २२ अरु दिग्पाल दिग्गज ये भी और २ वनों में चले गये तो उनके स्थानोंपर उस दैत्यराज ने और २ राक्षसोंको स्थापन करदिये २३ इसअचला नाम पृथ्वीको आप अचलनाम पर्वतकी नाईं स्थितभया प्रजाओंको पालताभया अरु अपनेही स्वभाव अर्थात् निजेच्छा से ही गर्जता अरु तीनलोककांपते २४ फिर तो इन्द्रआदि देवता गिरि वन में गिरिशायी गिरिजाजी के पति शिवजी को स्तुति करते भये गम्भीर हर्षसे २५ तो वे बोले हे देवोंके अधिदेवता अरु हे आकाश सूर्य सोम स्वरूप अरुहे पवन वह्नि स्वरूप हेयजमान जलस्वरूप आपही स्थावर जगमों को रचतेहो अरु रक्षा करतेहो अरु निजही इच्छासे सबको संहार करतेहो २६ अरु ये परब्रह्म स्वरूप आपमें अनुचितहै कि आपकाही जो यश सो शत्रुके आश्रयहोगया अरु अब आप उसे बहुत ही करो अर्थात् उस असुरको और भी बढ़ावो यह आपको सर्वथा उचित नहीं है सो हे पराये दुःख के हर्त्ता इससे उस असुरका नाशकरो अथवा इनसारे मुनीश्वर देवताओं को मारो जो ये आपके भजनमें प्रवेशमन होरहेहैं २७ अरु हे गिरीशजी आपसे इतर हम किसके शरणजावें अरु हे भगवन् हे महेशजी किसकोभजें अरु हे पाप नाशक पार्वतीशजी आप बिन हम किसको कहैं मो हे सर्वेश्वर आपकेबिना हमें रक्षाकरनेको कौनसमर्थहै २८ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे उन्होने स्तुति करतेही आकाशवाणी को सुनते भये

कि हे देवताओ जबशिवजीके पुत्रहोगा २६ तभी तिससेइसकानाश होगा तिसमें तुम प्रयत्न करो तो आकाशबाणी को सुनकर सारेहर्ष सहितभये ३० इन्द्रादिक देवता देवस्थान कैलास को आतेभये तो वहा शिवजीको न देखे तो अगाडी देखतेभये ३१ आदि प्रकृतिस्वरूप उमाजीको सारोने विज्ञापनकिया अर्थात्यहवृत्तान्त जनातेभये कि हे तारकेनाम तिरानेवाली अरु हेतारकज्ञान अर्थात् शुद्धिविज्ञान देनेवाली हे देवि तुम हमे इस तारकनाम असुरसे तिरावो अर्थात् बचावो ३२ जो असुर त्रिलोकी को पीडाकारी अरु दुष्टहै अरु जो हम मुनीश्वर स्थानसेभ्रष्ट अर्थात् पतित होरहेहै सो हे मातातेसाही बिचारकरो जिससे उसकाबिनाशहोवे ३३ हेमाता हम तुमकोप्रणाम करते हे जो तुम जगत्की जननी नाम उत्पन्न करने वाली हो हे त्रिभुवन रक्षाकरनेवाली हेशर्वनाम शिवपत्नीजी हेत्रिपुरारि जाये हे परेसेभीपरे कलावाली अरु हेब्रह्मादिकोसे स्तुतिकीगई तू जोदेवोसे भी न निरूपण कीजाने वाली सो हे ईश्वरि शिवजीकी प्यारि तुम जगत्का कल्याणकरो जो तू निजही इच्छासे शरीर धारण करती हो अरु असुरोकी हरनेवाली हो विश्वके प्रथम उत्पन्न भई अरु निष्पाप जो तुमहो सो मातुतुम्हें हम प्रणाम करतेहै ३४ श्री ब्रह्माजी बोले कि देवी विश्वकी माता देवोकरके ऐसे प्रार्थनाकीगई बोली कि आकाशवाणी को मैंने जानलई शंकरजी शंकरेंगे अर्थात् भलाहोगा ३५ अरुतुम भी मेरे साथ सारेहीचलो जहा शंकरजी हैं अरु पर नियममे स्थित होकर तप करतेभये ३६ ऐसे वे पार्वती सब देवोको ऐसे कहके आप भीलनी का वेष जिसे देखकर परम योगीश्वर भी कामदेव के बाणो से बिंध जावे तो तिसमे कई देव भी कामदेव से बिह्वल होगये अरु उर्वशी, मेनका, रम्भा, पूर्वचित्ती तैसेही रति ३८ ये सब उसे देखतेही लज्जायमान भई जो कि ये सारे शरीर सुंदरता संयुक्त थीं तो हे ब्रह्मन् व्यास जी वे देवता अरु वे गिरिजा जी शिवजीके पासगये ३९ जो वे स्थाणुनाम शिवजी स्थाणु भूत नाम वृक्षके समान होरहे ध्यान से निश्चल नयन जिनके अरुजो हृदयसे

परब्रह्मको ध्यायरहे अरु जप रहे अरु जो परिग्रहणवर्जित अर्थात् कबीले रहितथे ४० ऐसे शिवजी को सारे देवता अरु भीलनी भी देखतेभये जो तीननेत्रवाले शिवजीथे फिर तो उमाजीने ही सबदेवों से सुख देनेवाला उपाय कहा ४१ कि ये सदाशिवजी तो देहसे परे अर्थात् अत्यन्त निश्चेष्ठ हुये तपोनिष्ठ होरहे हैं इससे तुम उनको देहभाव होने के लिये अर्थात् शरीर सँभालने के लिये कामदेव को पठाओ ४२ वो जब एकनिष्ठ शिवजीको निज बाण से वेधैगा तभी वे देह भावको प्राप्तहोंगे अरुतुम्हारा कार्य भी सिद्धहोगा ४३ फिर तो सारेदेव कामदेवको ही स्मरण करतेभये अरु फिर आये उससे कृतनिश्चय उन्होंने उससेकहा ४४ अरु कइयोंने अपने कार्यकेलिये कामदेव को प्रार्थनाकरी कि तुम लोकोंके स्वामीहो स्थावर जंगमो मे भी आपही मुख्यहो ४५ तुम्हीं से रचना होतीहै ये जगत् आपहीसे व्याप्त है कामी अरु कामिनी सब तुम्हारेही बलसे बलवाले हैं ४६ तुम्हारेबिना स्थावर जगम सब जगत् वृथाहोहै इससे सब काभारी ये महाकार्य आपकोहीकर्त्तव्यहै ४७ कामदेवजी बोले कि यद्यपि मैं सामग्रीसे रहित भी हूं पर तब भी मैं तुम्हारे प्रसाद से तुम्हारे वचनके अनुसार कार्य करूंगा शरीर जलजाने पर्यन्त अर्थात् चाहै मैं भस्मभी होजाऊ ४८ मुझ वमते भये को देखकर हे देवो तुमसारे मेरोसहाय करना ब्रह्मावोले कि ऐसेकहकर कामदेव तहांगया जहां सदाशिवजी थे ४९ तिनको मोहनेको देवोंका कार्य सिद्ध करनेकेलिये ५० इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें तारकासुर का उपाख्यान इस नामसे तिरासीवां अध्याय हुआ ८३ ॥

चौरासीवांअध्याय ॥

कामदेव के भस्महोनेका वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि कामदेव तो देवतों के कार्य सिद्धिके लिये गया तो वहां शंकरजीके स्थानको देखताभया जो वृक्ष वेलोंमें भरा था १ अरु सिंह व्याघ्रोंसे सेवितथा पक्षिगुहागण जीवोंसे संयुक्तथा

तो तिसने आपभी एक अपनी वाटिका क्षणभरमें रची २ अरुबहुत से सरोवर जो अमृत समान जलवाले अरु अनेक फूलोंके वृक्षरचे जो दो कोसतक सुगन्ध देनेवाले थे ३ अरु जामन, आम, बेरकेवृक्ष जो सुन्दर पके फलोंवाले अरु तैसेही केले, वडहल, नारियल, खजूरो सहित ४ अरु इलायची, लौंग, मिरच, इनके बहुतसे वृक्षोंको रचे तो नहीं सूंघनेमें आताथा ऐसासुगन्ध शिवजीकी नासिकाके पुटमेंगया ५ तो प्रात काल में शिवजी मनोहर चांदनी के जालको देखते भये अरु वो वन जो अनेक से पुष्प फलों से संयुक्त था अरु आश्चर्य रूप कामवनथा ६ तो तभी तिसने शिवजीके मनकोचलितकिया तो शिवजी ने निज शोकहारक फुलवाडीको मनसे धिक्कारकरी ७ तो शिवजी देह भावको प्राप्तहुये उसके कारणको विचारतेभये कि यहतपमें विघ्न किसनेकिया अरु यह सुन्दर वनकिसने बनायाहै८ किसीगये आयु अर्थात् मरनेवालेदुष्टने यह अचानकहीं क्यों रचदियाहै तौ हीं क्रोधसे लालनयन वाले शिवजी ने भवोंको चढाकर ९ कोप करते भये अरु कामदेव डराभया बिलीन होगया कहीं भी न रहसका तो तबउसने इन्द्रादिकोंको यादकिये स्मरणकिये भी तहां नहींआये१० जो देवता कार्यसिद्धिकी इच्छाकेलिये विमानोंमें बैठे उसचरित्रको देखरहेथे तितनेही शिवजीको कामदेव भी देखा जो अत्यन्त लघु स्वरूप अरु दुर्बल ११ तौ हीं वे इसको जलानेके लिये तीसरानेत्र उघार देतेभये तो सारोपृथ्वी अरु स्वर्ग पाताल कांपनेलगे १२ अरु जितने कि देवता मतमारो२ ऐसे कहतेरहे तितनेही वो नेत्रसे भया अग्नि उससारेको भस्म करताभया जो भस्ममात्रही शेषवाला १३ तब तो भीलनी बनी गिरिजाने आदर सहित शिवजी को प्रार्थनाकरी अंजलिबांध नमस्कार कर लोकोंके कल्याणकी कामना करके १४ बोलीं कि हे शंकरजी इसत्रिलोकी के जलानेवाले अग्नि को आप समेटो क्योंकि ब्रह्माजी से वरपाया तारकासुर जो अत्यंत महा बलवालाहै १५ उसने त्रिलोकको दबालिया तो न कोईपढ़ता न होम करताहै अरु तिसीसे स्थान भ्रष्टकिये सारेदेवता आपको

निश्चल तपमें स्थित जानकर १६ तुर्त से कामदेव को बुलाकर तुम्हारे देहबोध के लिये हे निष्पाप शिवजी आपके पास भेजागया था सो हे श्रेष्ठजी वो निजअपराध से भस्मभया अर्थात् आपमें कुटिलता चलती नहीं १७ पर हे महादेव अब हमें आप रक्षा करो जो हम आपहीके शरण प्राप्तहैं क्योंकि आप त्रिलोकमें शरणआये के पालक विख्यातहो १८ आप इनदेवों के अपराधको क्षमाकरो जो शरण आयेहैं सो हे महादेव हे करुणाकर शिवजी आप अपराध क्षमाकरो १६ ब्रह्माजी बोले कि निजचरणोंमें शिरवाली उस गिरिजाका ऐसा वचन सुनकर अग्निको समेटकर हँसमुख भये बोले२० कि उठर मैने तेरीघंतर क्षाकरी तेरे नम्रवचन से जो तू चरणों परपड़ी प्रणाम कररहीहै तिससे तेरेपर मै प्रसन्न भयाहूं २१ तब वो तुर्तही भिल्लीभई गिरिजाजीको तुर्त ही गोद मे बैठालई अरु बैल पर चढ़के तिसकेसाथ कैलास को आवते भये २२ इतिश्री गणेश पुराण उपासनाखण्डमें कामदेवका भस्महोना इसनामसे चौरासी वा अध्यायसमाप्त हुआ ॥ ८४ ॥

पचासीवां अध्याय॥

स्वामि कार्तिक जीके जन्महोनेका वर्णनहै ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि शिवजीके सुखस्पर्शकरनेसे कामाग्निसे दीप्त भई भीलनी गिरिजाजी कहीं भी सुखको न प्राप्त भई जैसे निर्जल देशमे मछली१ तो वो शीतल खणकेसे शीतपनवाली जलमेंरही पर वहांभी सुख न पाई अरु न उसे स्थलमें निद्राआई २ उसका कपूर चन्दन लगाया अत्यन्त जलनेलगा अरु किसीभी शीतल, वस्तु से इसकी सतुष्टता न भई ३ ऐसे कालबीते वो हाड चर्म शेषहीरहगई अर्थात् देहमें मांसन रहा तब तो गिरिशायी शिवजीके पासआ गिरिजाजी गिरिनाम वाणी कहतीभई ४ कहने लगी कि हे देव मुझे आपनहीं विचार करते कि मैं किस अवस्था को प्राप्तभईहूं सो कि जलाभी काम मुझको अत्यंत पीड़ाकरता यह बड़ा आश्चर्य्य है ५

अरु हे प्रभो नानाप्रकारके उपाय उसकी शांतिकेलियेकिये पर वो शांति न भई जिसउपायसे वो कामाग्नि शांतिहो सो आपकरियेद् प्यारीके प्यार करनेवाले शिवजी ऐसावचन सुनके एकांतमें उसका हाथपकडकर सेजमें लिटावतेभये अरु मदन वशभये, शिवजी उससे यथेष्ट रमणकरतेभये मरेभी उसकामदेवने देवताओंका महाकार्य्य किया ८ अरु जो (अनंगके समान कोई धनुर्द्धारी नहींहै) ऐसे यश को प्राप्तभया तो ऐसेही उन गौरीशंकरजी को क्रीडाकरते २ साठ हजारवर्षबीतगये६ स्थान भ्रष्टभये सुरमुनि ये कामके कार्य्यकोसुन करकैलासपर फिरआये अरु तहांके मनमें पराङ्मुखहोरहे शिवजीको १० जानकरवहांचुपचापहीरहेजो चिन्तामें व्याकुलचितावालेदेवताथे ११ क्योंकि तारकासुरसे भयखाये वे फिर वनमेंआये ११ अरु कहते कि कव इसकावध होगा अरुकव हम निज२ स्थानोंको प्राप्तहोंवे अरु शिवजी हमारे दु:खको कब नाशकरेंगे १२ ऐसी चिंताके समुद्र में ब्रह्मादिक देवता तो मग्नहोरहे थे तितनेही मे बृहस्पतिजी बोले कि हे निष्पापो तुम मेरे वचनको श्रवणकरो १३ कि तुम औरहीरूप बनाकर वह्निकोभेजोवोशिवजीसेयाचेगातवकामहोवेगा १४तवतो वे अग्निको वुलाकर अरु नानास्तोत्रोंसे स्तुतिकरनेलगे देवताबोले कि हे ब्रह्मन् अग्ने तुम्हींसे सारे संसार के कर्म अरु तुम्हीं से सारे संस्कारहोतेहैं १५ अरुजलोकेभी तुम्हीं कारणहो अरु आपदेवताओं के मुखहो अग्निहोत्र के अधिष्ठाता आप हो अरु गृहस्थियोंका जो अग्निसो (गार्हपत्याग्नि) इत्यादिक आपके बहुतसे नामहैं १६ अरु तुम्हीं समुद्रके महाजलको नित्यपीते हो अरु मनुष्योंके उदर में छ रसोकोभी आपही पकातेहो १७अरुआपहीसब प्राणियोंकी संधिर में विचरतेहो तुम्हींसे त्यागा ये प्रेतसंज्ञाको प्राप्तहोता अरुफिर तुम्हीं उसे जलातेहो १८ अरु हे देवेश प्राणियो के प्राणधारण करने में आपही कारणहो तुमसे अरु तुम्हारेजलके बिनाअन्न किसीतरह भी नहींपकसक्ता १६ अरु तुम्हींब्रह्मा,रुद्र अरुअनेक रूपधारीसूर्य हो अरु हेजगत्के ईश्वर तुम्हीं क्रोधकेमूलकारणहो२० अरु जहां२

तेजहै सो वहां२ सब तुम्हाराही रूपहै इससे त्रिलोकके उपकारकारी आपको अब हम सारे प्रार्थना करतेहैं २१ कि उस तारकासुरने त्रिलोकी का आक्रमण करलिया है अरु आप तिस आकाशवाणी को भी जानतेहो अरु कामदेव की भी जो गतिभई सोभी जानतेहो २२ सो तुम औरही रूपमे जाकर गौरीशंकरजी जो बहुत कालसे क्रीडामे मग्नहोरहेहैं उनके पास जाकर भिक्षामागो२३ ऐसाकरने से हमारा अरु जगत्का महाकार्य्य होगा २४ ऐसे देवोंका वचन सुनके गेरुआ वस्त्रधरे ब्राह्मणहोकर अग्नि तहागया जहावे गौरीश-करजीथे२५जो क्रीडामे आसक्त होरहेथे तो ये तहा जाकर (भिक्षा देवो ३) ऐसे तीनवेर दीर्घतर ऊंचे शब्द से पुकारा तो दोनोने वो शब्दसुना२६ तो वे आश्चर्य आपस में बोले अपने२ वस्त्र पहरकर कि ये कहासे चलाआयाहै२७ अरु अब इसको क्यादेना ऐसीचिंता करने भये तो उमाजीके हाथोमे वीर्य्य छोड़दिया उसको वो धारभी नसकी२८अरुभावि प्रयोजनको जानती उमे उस भिक्षुक अग्निको देतीभई अब अग्निने शोचाकि जो ये शिववीर्य्य भूमिपर डालाजावे तो त्रिलोकीकोभस्मकरदे तो शिवजीके शापमेभया अग्निउसवीर्य्य को पानकरगया २९ त्योंहीं अग्निगर्भवाला भया अरु लज्जावाला खेदवाला भी भया अरु ३० फिर जहां२ अग्निगया वहाहीसुख न पाया तो प्रात कालमे उठकरके तुलाराशिपर सूर्य्य होतसते स्नान करनेको गंगाजीपर गया अरु तहा जितने कि ये शौच शुद्धि करता रहा तितनेहीं तहापर छ स्त्रियेंआई जो सावधानभई कार्त्तिकस्नान करनेवाली थीं ३१ तो अग्निने उस वीर्य्यको गंगाजीमें छोड़दिया कि इसको हरकीप्यारी शीतलजल स्वरूपश्रीगंगाजी जोसमर्थहोंगी तो धारण करेंगी३२ तो उन स्त्रियों ने वीर्य्यको लेकर छ भागसे बांटकर भक्षण करलिया तो तिसी क्षणमें वो अग्नि तो अंतर्द्धान भया३३ अरु अग्निके जानेपर उनके वस्त्र दूरहोगये अर्थात तिस वीर्य्यकी सब उष्णतासे वस्त्र धार न सकी फिर जैसे तैसे निजर वस्त्र पहिर फिर निज२ घरको आई ३४ तोउनके पतियोंने तिनके

करके तथा वेदके अरु पुराणोंके नाना मन्त्रोंसे मार्जन करके जो कई मुनीश्वरों से उच्चारे गयेथे १५ फिर देवता तो आज्ञा मांग२ कर निज२ स्थानोंको आगये अरु ऋषियें भी निश्चिन्त भये पहिले की तरह तप करतेभये १६ सेनानीजी के विद्यमान भये कहीं भी भय नहीं होताहै सो भी वे स्कन्दजी अत्यन्त बधे जैसे शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बधै १७एकदिन वे निजबालपन से उडकर चन्द्रमा पैगया उसेपकड़नेकोतोब्रह्माजी नेवारणकिये कि येआपको ऐसा दण्डदेनाउचित नहींहै १८ अरु उन बालकही स्कन्दजी ने बुद्धि से बृहस्पतिजी को जीते अरु इन्द्र को भी तो एकदिन वे स्कन्दजी पार्वतीजी से सहित सुखसे विराजमान शिवजीको १९ प्रणाम करके सबकार्यकी प्रयोजन सिद्धिके लिये पूछते भये स्कन्दजी बोले कि हे पिताजी मैंने आपसे नाना विधिकी सुन्दर कथा श्रवण करीहै २० पर हे देवजी जो सबसिद्धि प्रदाता अरु पुत्र सम्पत्ति बधानेवाला अरु सब पाप हरनेवाला अरु धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इनका देनेवाला २१ जो हो सो मुझसे कहो त्रिलोकी के गुरु आपसे सुनते मेरी तृप्ति नहीं होतीहै अरु आप अबमेरेको सब शत्रुओंसे जय प्राप्त करानेवाला अरुशुभव्रत वर्णनकरो२२महादेवजीबोलेकिहेस्कन्दतेनेबहुतअच्छा पूछा जो लोकोंका उपकारकहै अरु सबशत्रुओंका क्षय करने वाला अरु मनुष्योंको सर्व सिद्धि करनेवाला अरु सबपाप क्षयकर्त्ता अरु धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष दाता सब शत्रु क्षय हर्त्ता अरु पुत्र सम्पत्ति बधानेवाला अरु अलक्ष्मी सकटका हर्त्ता अरु गणनाथजीको प्रसन्न करनेवाला ऐसा जो व्रत है सो मैं तुझसे वर्णन करूंगा तू श्रवण कर इसव्रतको जो नर भक्तिसे करे सो देवताओंसे भी पूजने योग्य होजावे २५ अरु वो इच्छा विहारी अरु वो रचना पालना संहारकारीहोताहै अरु उसके दर्शनसे महा२पाप औरोंकाभी दूरहोवे जो इसव्रत को करे २६ हे स्कन्द और व्रतोंकी इस चतुर्थी के व्रत से बराबरी नहींहै अर्थात् सब इससे न्यूनहैं तो सेनानीजी शंकरजी से कहे इसवचनको सुनकर २७ इसव्रत के महिमाको फिर भी पूछता

भया स्कन्दबोले कि मुझसे इसव्रतका माहात्म्य आप फिर विस्तार से कहो २८ कि किसमहीने अरु किसदिन में हे शंकर जी इसका आरम्भ कियाजाताहै अरु इसकी कौनविधिहै अरु क्या फलहै अरु इसका विश्वास किस२को हुआहै २९ सो हे शंकरजी जो आपप्रसन्नहो तो मुझसे यहसब वृत्तान्त वर्णनकरो कि जिससे सबलोकोंपकार अरु इसव्रतकी सिद्धिहो इस प्रयोजन के लिये आप मुझसे वर्णनकरो ३० इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें स्कन्दजीका उपाख्यानवर्णन इसनामसे छियासीवा अध्यायसमाप्तहुआ ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

तारकासुर के वधका वर्णनहै ॥

श्री शंकरजी बोले कि मैं इसव्रतकी परम विधि तुझको कहताहूं कि श्रावणशुक्ल चोथको इसव्रतका आरम्भकरे १ सो कि प्रातःकाल ही तिल आंवले की खलीसे स्नान करके नित्य नैमित्तिक अर्थात् सन्ध्या तर्पणादि नित्यकर्म करके क्रोध वर्जितभया २ शुद्धस्थान में केलेके थम्भोंसे सजा मण्डप बनावै जो ईप चमर पुष्पोंसे सहित दर्पणोंकी पंक्तिसे शोभित ३ उसके बीचमें दोवस्त्रोंसे लपेटा कलश स्थापन करे अरु उसमें चन्दन से अष्टदल कमल बनावे ४ अरु गुरूजीसे आज्ञा लेकर पूजाकी सामग्रीको जलसे प्रोक्षण करै अरु सोलह उपचारों से गणनायकजी का पूजनकरे ५ जो गणेश जी कंचनके वा चांदी निज२ शक्तिसे बनवाये अरु इकईश पकवानों से सख्या किये नैवेद्य देव गजानन जी के लिये कल्पना करे अर्थात् विचार तय्यार करके धरै ६ अरु इकईश मुद्रा दक्षिणाको निवेदन करे ७ सुवर्णकी वा चांदीकी वित्तसे बाहर करैनहीं अरुइकईशदूर्वा श्वेत या हरी भी ८ अरु तैसेही देवों के देव गणेशजी के अर्थ मन्त्र पुष्पांजलि समर्पणकरै अरुइकईशही वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको जिमावै९ सुन्दर कहे प्रकारके इकईश पकवानोंसे अरुइकईशही दानदेवे अरु प्रणामकरै अरु उनसे क्षमाकरावै अरु फिर अछिद्र अर्थात् सम्पूर्ण

कि हे जगदीश गजाननजी जिस आपके स्वरूपको देव नहींजानते अरु न शास्त्रकार न ब्रह्मादिक न शेष आदि नाग ये भी सब नहीं जानते सोहीस्वरूप सम्यक् प्रकारसे आपने अबमुझको दिखादिया है ३६ इसीसे अर्थात् आपके दर्शनसेही मैं सम्पूर्ण कामना वाला तो होगया पर तबभी आपके वचनसे मैं मांगताहूं कि मेरा पराजय अर्थात् हारनाकभी भी नहो वे अरु चिंतवन करतेही आप मेरे प्रत्यक्ष होतेरहो ४० अरु आपके चरण कमल में मेरा अविस्मरण अर्थात न भूलना बनारहे अरु सब देवताओंमें मेरीश्रेष्ठता बनीरहै ४१ अरु जो अलक्ष्य भी आप मेरे लक्षपन अर्थात् प्रकट पनेको प्राप्त भयेहो इससे आप (लक्षविनायक) इसनाम से विख्यातहो वो जो भक्तों की कामनाओ के कल्पवृक्ष आपहो ४२ तो लक्षविनायकजी बोले कि हे स्कन्द जो२ तैने अब मुझसे प्रार्थना कर चाहाहै सो२ सब तैसाही होगा कि मेरास्मरण रहना अरु चिंतवन करतेही सन्मुख पन अर्थात् प्रत्यक्षहोना अरु तेरे रिपुओंका पराजय अरु तेरेको श्रेष्ठपन हे देव इतने तेरेकार्य सिद्धिको प्राप्तहोंगे ४३॥ ४४ ब्रह्माजी बोले कि देव गणेशजी ने ऐसे वरदान दिया अरु मयूर जो निज वाहनथा सो स्कन्दजीको दिया जो उसके विशेष नम्रता अरु तपो बलसे प्रसन्नभये गणेशजी तिन्होने ४५ तो तभीसे इनका नामभी (मयूरध्वज) ऐसे विख्यातभया ४६ श्रीगजाननजीबोले कि तेरेहाथ से तारक आदि महाअसुर मृत्युको प्राप्तहोंगे ४७ अरु लक्ष्यविनायक इसनामसे भक्तिमें तेरेवचनसे इसक्षेत्रमें विख्यात सिद्धिदायक विख्यातहोगा ४८ ब्रह्मावोले कि विकट गणेशजी तो ऐसेकहकर वहाहीं अन्तर्द्धानभये फिर स्कन्द ने महामूर्त्ति बनाकर ब्राह्मणों के साथ मन्दिर मे विराजमान करी ४९ अरु तिनकानाम भी (लक्षविनायक) ऐसा करताभया अरु क्षेले मोदकोंसे अरु तितनेहीपुष्प अरु दूर्वांकुरो से भी५० अरु औरर भी नाना प्रकार के उपचारोंसे उस मूर्त्तिका पूजन किया अरु ब्राह्मणो को भोजन करवाया जो तितनेहीं सख्याकिये अर्थात् लक्षही द्विज ५१ तिनको जिवा अरु

गणेशजीको स्तुति नमस्कार करके लोकोंके शंकर शंकरजीके पास गये ५२ मोरपर सवार होकर जाकर उनशंकरजी से सारावृत्तान्त कहते भये अरु देवनी से किये (मयूरध्वज) ऐसा निजनाम बताते भये फिर स्कन्द शिवजी की आज्ञा से तारकासुर के नाश के लिये जातेभये ५३ तो देवगजाननजीका स्मरणकर अरुउनसे कल्याण रूप आशीर्वाद लेकर अरुजो सुर ऋषियोंसे सेनापति भावमेंअभिषेचनकिये ५४ तो महा बलवाले सेनानीजी ने तारकासुर को देख तेही तिससे महाभारी युद्धकिया फिर लक्षवर्षों के अन्तमें उसेनिज शक्तिसे मारतेभये ५५ उस युद्धको वर्णन करनेको तो शेषजीकी भी शक्ति नहींहोवे तो तब तो तारकासुर के हतभये सारे देवता आनन्द को प्राप्तभये ५६ अरु तैसेही मुनीश्वर लोकपाल अरु नाग मनुष्य ये सब आनन्दभये स्कन्द के ऊपर पुष्पोंकी वर्षा करतेभये ५७ तो सारेदेवता अरुलोक निज२ स्थानोंको जातेभये अरु स्वाहा स्वधा वषट्कार इत्यादि नित्य नैमित्तिक कर्मोंको पहिले के तरह करनेलगे ५८ ब्रह्मावोले कि ऐसे प्रभाववाले देव गजाननजी को मैंने तुम से कहाहै अरु व्रतका प्रभाव भी यथावत् वर्णन कियाहै ५९ जो ये महाअसुर तारक तेंतीसकरोड़ देवोंसे भी न माराजावे तिसको भी स्कन्दजीनेविशाखगणेशजीके व्रतके प्रभावसे मारा ६० अरुस्कन्द जीइन्द्रादि देव समूहसे वन्दनायोग्यहोतेभये व्यासजीने पूछा कहहु जी किसस्थान में परम समाधि से अनुष्ठान किया सो हे प्रजापते आप मुझसेकहो तो ब्रह्मावोले उसने जहां (घुसृणेश्वर) ऐसे नामसे प्रसिद्ध लक्ष विनायकजी हैं अरु तहाहीं (इल) भी भयाहै जो राजा अति विख्यात भया तो वो पुर भी तिसी नामसे अर्थात् (इलापुर) ऐसे विख्यात भया हे मुने व्यासजी ६०।६१ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्ड में तारकासुर का वध उस नाम से सत्तासीवां अध्याय समाप्तहुआ ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय॥

शिवजी करके रतिकामदेवको वरदेनेका वर्णन॥

व्यासजी ने कहा कि हे ब्रह्मा जी मैने गजानन जी के व्रत के आश्रय अर्थात् गणेशजी का व्रतहै हेतु जिसमें ऐसा उपाख्यान आपसे श्रवण किया पर जो शङ्करजी करके क्रोधअग्नि से कामदेव जलाही गयाथा तो १ अब भी सबलोकोमे मदन दीखताहै यहकथा सो हे चतुराननजी यहसब वृत्तान्त विस्तारसे मुझसे कहिये २ तो ब्रह्माजीबोले कि जब शिवजीने क्रोधसे तीसरानेत्र उघारा तो काम देवके अपराधको जानकर मरेमदन को विलाप करती रति शिवजी के पासआई तो इन्हे साष्टाङ्ग प्रणाम करके यथामति स्तुति करती भई ३।४ रतिबोलीकि मै देवशिवजीको नमस्कारकरतीहूं जोशिव जी गिरिजा सहायवाले अरु वृषचिन्हहै ध्वजामे जिनके अरुकमलक केसे अर्थात् सुन्दर सुनेत्रवाले अरुजो सत्वगुण युक्तहोकर लोकोकी रक्षा करतेहैं अरु जो ही रजोगुण करके लोको को रचतेहै ५ अरु जो सबकेस्वामी निज इच्छाही से हो सहारकरते हैं अरु जो शिव जी नरकपाल ले भिक्षालाकर भोजन करते भी मनुष्यो के सारेप्र- योजनों को पूरे करतेहैं ६ ऐसे जो दीनदयाल भगवान् महेश्वरजी सो मेरीरक्षा करनेवाले हो जो मैं गयाप्रिय मेरा अर्थात् अनाथ जो मैं हूं अरुजो देवआप करनेको न करनेको अरु औरहीप्रकार करनेको अर्थात् भाविकोभीलौटदेनेको भारीबलवाले आपसमर्थहो७ सोआप मेरे को जिलानेकार्यकरके मेराऊंचा अर्थात् अचलसुहाग करो नहीं तो मैं प्राणछोडनेसे आपकेयशको उलटाकरदेऊंगी अर्थात् इसमरेके साथ मेरेभी मरजानेसे आपका अपयश होजायगा ८ श्री ब्रह्माजी बोले कि शम्भुजी उसकरके ऐसेस्तुतिकिये तब प्रसन्नभये उसेकहने लगे शिवजी बोले कि हे शुभ आननवाली कामपत्नि हे बड़भागिनि तू वरमांग ९ कि मै तेरीस्तुति से प्रसन्नभया तेरे सारे मनके कामों को देऊंगा ऐसे शिवजीका वचनसुन प्रसन्नभई रति तिन्हें प्रणाम

करके १० सुहाग की कामना वाली अत्यन्त आतुर भई उनदेव शिवजीकोकहनेलगी रतिबोली कि हेस्वामिन् जो आप प्रसन्नभये तोमेरा परमव्रतकोश्रवणकरो कि जोपाताललोकमें अरुस्वर्गमें अरु भूमि पर कामिनी गुणोवाली जितनी स्त्रियेंहैं पर हे त्रिलोचनजी तीनलोकविषे किसीमें मेरे लावण्य अर्थात् सुन्दरताका लेशभीनहीं है १२ सो कि मुझेदेखकर निर्लज्जभये इन्द्रादिकोने भी वीर्य्यछोड़ दिया इससे मुझको महालज्जाभईहै सो आपउसे दूरकरो अर्थात् इसे जिलाओ १३ अरु हे शंकरजी अब इस कामदेव के बिनमेरा लावण्य निष्फल होगयाहै अरु मुझे ये अपयशजलाताहै कि (रति विधवाहै) ये १४ सोहे देवेश दयानिधान अबआप इस भर्त्ताको जीवदान देनेसे मुझेजिलाओ अर्थात् मेराजीना कामहीके आधीनहै ऐसे उससे प्रार्थना किये लोकशंकर शिवजी १५ कोमल वाणी से कामपत्नीसे हर्षसे बोले शिवजी कि हे कल्याणवती तू चिन्ता मत कर तू लाजकरनेकी योग्यनहींहै १६ क्योंकि हे वाले स्मरणकरते ही कामतेरेदृष्टि विषयहैगा अर्थात् यादकरतेही तेरेपास पावैगा मनसे जो चिन्तनेसे होजावे इसीसे इसका (मनोभव) नामहै १७ सोतेरे कामोंको पूराकरेगा अरु तू मानने योग्यहोगी अरु जब वो विष्णुसे लक्ष्मीमे उत्पन्नहोगा १८ तब जनोंमें विख्यात तेरा भर्त्ता (प्रद्युम्न) इसनामसे होगा हेवहुभागिनि अबतू निजघरकोजा १९ तबवोतो शिवजीकेवचनसे निजसुन्दरमन्दिरमें गई अरुउसनेपतिको स्मरण किया तो कामदेव शिवजीकी इच्छा से प्रत्यक्षहुआ तो आ॰ श्चर्य्य युक्तभई रति, पति, के साथ बड़े आनन्द को प्राप्त भई अरु फिर काम शम्भु जी पैगया अरु प्रणाम करके वचन बोला कामदेव कि हे देवेश विना अपराधही मैं अदेहपने को कैसे प्राप्तकिया गयाहू २२ क्योंकि तारका सुरसे पीड़ित इन्द्रादिक देवताओं के समूह अरु मुनियों से भी प्रार्थना किये मैं हे भो आपका भजन भंगकरनेके लिये सारोंके उपकारके अर्थ तैसा कर्म कियाहै क्योंकि वे सारे आपसे कामदेव की उत्पत्ति जानके तिस

कार्य्यके लिये मुझे भेजाथा २३। २४ क्योंकि उपकारके समान और कोईपुण्य तीनलोकमेंनहींहै सो हे सुरेश्वरजी मेरा बोभी दैवयोगसे उलटा होगया २५ जोमैं तेंतीसकरोड़ देवताओं में अत्यंत सुन्दरथा अरु सुन्दर पुरुषमें सब उपमाभी मेरेही देते हैं २६ सो ऐसामैं हे देवेश निज अंगसेहीन मैं मरेके तरह कैसे रहूँ इससे हे महादेवजी आप मुझपर कृपाकरके अनुग्रह करो २७ श्रीब्रह्मा जी बोले कि तबतौ शिवजीने प्रणाम करते उसकामदेवको गणेशजीका एकाक्षर मंत्रबताया अरु इसकाही इसे अनुष्ठान करना कहा २८ तबतौ कामदेव रमणी जन स्थानकोगया अरु शंकरजीकी आज्ञासे वहांही अनुष्ठान करताभया २९ सोकि तिसने पूरे सौ बर्ष तक तौ महाभारी तपक्रिया एकाक्षर मंत्रको गणेशजीके ध्यान में परायण भया जपतारहा ३० जो नित्यपवनही भोजन करनेवाला अरु सदा है रतिकी सहाय जिसको तबतौ भगवान् देवदेव गजाननजी प्रसन्न भये ३१ प्रकटभये जो दशभुज भारीमुकुटसे शोभावाले अरुप्रकाश मान रत्नोंकी कांतिसे सुन्दर जो कुण्डल अरु भुजबन्धसे सजे ३२ करोड़ सूर्य्योंकेसे प्रकाशवाली मोतियोंकी मालासे सजाकंठजिनका दिव्यमाला वस्त्र धारण किये दिव्य सुगन्धो को लेपन किये ३३ सिन्दूरसे लालहै शूंडअरु मुख जिनका दश सहस्रों से सजरहा है कर जिनका अरु सर्पोंसे अलंकारकी गई नाभि जिनकी अरु नाना प्रकारके अलंकारोंसे अलंकृत अर्थात् सजे ३४ सिंहपर सवार महा श्रीवाले चिंहाड़से सबके भयानक तौ ऐसे उन गणेशजी के उत्पन्न भये इन्द्र आदि देव अरुमुनिये भी ३५ आये अप्सराओं अरु यक्ष, गन्धर्व,किन्नरोंके साथ तौ उन्होंने बाजेकी गूंजोंसे गजाननजी का पूजे ३६ षोडश उपचारोंसे भक्ति करके देव गणेशजीको पृथक् २ देव पूजतेभये फिर कामदेव भी तहांसे उठकर अरु सारेसुरों को नमस्कार करकर ३७ अरु मुनियों कोभी कर फिर देव गणेशजी के चरणोंमे वन्दना करताभया अरु तभी करुणाकर देव विकट नाम गणेशजीकी प्रशंसा करनेलगा ३८ कामदेव बोलाकि देवताओं में

आप परब्रह्म स्वरूप, धन्यहो जो हे भक्तवत्सल आप निराकार भी साकार अर्थात् सगुण होरहेहो ३६ आज मेरा जन्म सफलहै अरु मेरा तपभी अभीसफल है जो सब दुखोंसे छुटानेवाले आपकेचरण युगलदेखे ४० जो सारी सिद्धियोंका कारण अरु धर्म्म, कर्म्म, अर्थ मोक्ष, के दाता आपजिसने परम पुरुषदेखे सोमेरे दोनोंनेत्रभी आज धन्यहैं ४१ अरु जिस आपको वेदांत अरु शास्त्र पातंजलि आदि शास्त्रभी नहीं जानते हैं अरु जहां वेदभी नेति नेति अर्थात् येनहीं यों नहीं ऐसे कहते वेदभी चुपही होरहे ४२ अरु जिस मंत्रसे अनगिनत करोड ब्रह्माण्ड हैं रोमोंके गढ़ोंमें अर्थात् रोम २ में जिनके अरु सम्पूर्णके ईश्वर ऐसे आपप्रत्यक्ष भयेहो सो मेरामंत्रभी अत्यंत ही धन्यहै ४३ श्रीगणेशजी बोले कि हे रतिपते तैंने श्रेष्ठकहा मुझे ब्रह्मादिक भी नहींजानते हैं जबकि मैंसाकारपनेको प्राप्त होता हूं तभी वे मुझे पहिचानते हैं ४४ अरु हे काममेरेही अनुग्रह से तुझे यह दर्शन भयाहै क्योंकि मैं तेरेतपसे अरु इसमंत्र से प्रसन्न भया हूं ४५ सोतू कामना पूर्वक सारेकामोंको मांग मैं सब कामोंकोतुझे देऊंगा ब्रह्माबोले मनोभवकाम गणेशजीका ऐसा वचन सुनकेफिर बोला सोकि पहिलेके क्रमसे साराशिवजी से कराया वृत्तांत प्रसन्न हुयेसिद्धि दाता इनसे कहता भया ४७ सोभी कि अपने अनंगपन अर्थात् भस्महोना रतिका विलाप करना अरु वो मंत्र अरु बहुत कालकिया अनुष्ठान अरु तैसेही शिवजीसे दियावर यह वृत्तांतसब श्रीगणेशजीसे कहताभया ४८ अरु सुप्रसन्न भये गजाननजी से वरोंको मांगनेलगा कामदेव बोला कि जो गणेशजी भगवान् आप प्रसन्नभये हो तो मुझे सदेहता देवो अर्थात् देह सहितकरो ४९ अरु देवतोंने माननीयपन अर्थात् सब मुझेमाने यह वरदेवो अरुपहिले कीसी सुन्दरपन देवो अरु अपने चरणमें दृढभक्तिदेवो अरु त्रिलोकीका विजय अर्थात् मुझे कोई भी न जीतसके यह वरदान देवो ५०

इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में रतिकामको शिवगणेश जी से वरहोना इसनामसे अट्ठासीवां अध्याय समाप्तहुआ ८८ ॥

नवासीवां अध्याय॥

शेषजीसे गणेशजीका आराधन करना सुवर्णितहै॥

श्रीगणेशजी बोले कि हे कामदेव जो२ तैने प्रार्थना किया है सो सब तैसेही होवेगा कि तू लक्ष्मीजी के उदर से उत्पन्न होकर तू सांगोपांग सबसे सुन्दर १ अरु सबसे माननीय अरु त्रिलोककी विजय वाला अर्थात् त्रिभुवन में तुझसे कोई नहीं जीतैगा अरु पुष्प फल पत्र अरु सागोपाग कामिनी अरु वायु २ ये तेरे उद्बोधक अर्थात् चैतन्य करानेवाले होंगे अरु चादनी चन्दन कमल इनमें तुझको प्रबलता प्राप्तहोगी अरु हसआदि सुन्दर पक्षियोंके शब्दों सेभी प्रबलता होगी अरु इनहीसे तू शिवजी से आदि सुरनरों को जीतैगा ३ अरु देखने स्मरण करनेसे इनके मनमे उत्पन्नहोगा तो (मनोभू) अरु (स्मृतिभू) ऐसे२ नामवालाभी तू मनुष्योंमे विख्यात होगा४ अरु मेरे चरण में स्मरण अरु दृढ़भक्ति तुझको होवेगी अरु किसीभारी कार्य्य के उपस्थितभये अर्थात् भीड़पड़े स्मरणकरतेही तेरे आगे स्थित होजाऊंगा ५ ब्रह्माजी बोले कि गजाननजी उस कामदेव को ऐसे २ वरदान देकरके हे महाभाग व्यासजी सबसुर ऋषियों के देखते २ अन्तर्द्धान भये ६ अरु तभी वहां कामदेव ने तैसीही गणेशजी की मूर्त्ति बनवा करके स्थापनकरी अरु तिसका विधि से पूजन करता भया ७ सो कि रतिने जो बनाये पकवान तिनसे अरु सुन्दर मोदकादिकों से अरु तेजपने से तिनकानामभी (महोत्कट) ऐसा करता भया ८ अरु सुन्दर मन्दिर बनवाया जो रत्न जटित थम्भों से विशेष शोभायमान ऐसा बनवाता भया ९ तो ये कामदेव फिर रुक्मिणीजीके उदरसे उत्पन्नभया तो शम्बरासुर ने इसे उठाय ले जाकर समुद्र मे छोड़ दिया था फिर उसे एक मच्छ ने निगललिया फिर उस मच्छको झीवर ने पकड़लिया फिर भी वो शम्बरकेही पास आगया तो उसने मायावती रति को सौंपदिया १० तो उस मच्छ का उदर छेदनहोतेही ये कामबाहर

निकला फिर उसरतिने उसे बधाया फिर नारदजीने आकर तिससे कहा कि ये कामदेवही तुझकरके पालागया है ११ फिर तो उससे अनेक माया सीखे इसने उस शम्बर को मारा सो कि गणेशजी के प्रसाद से अकेलाभी ये उन बहुतोंको जीतताभया १२ उसमायावती ने जो २ माया सिखाई थीं तिन्हों से फिर (प्रद्युम्न) ऐसे विख्यात भये सरस्वतीके पुरको आया १३ तो ये गणेशजीके प्रसाद से सब देवताओं में माननीय अरु त्रिभुवन को जीतनेवाला परम आनन्द से संयुक्तभया १४ तो रुक्मिणी आदि स्त्रियों ने इसेदेखा मानों दूसरे कृष्णजीहीहों फिर तोवे देखकरसबतरह लज्जायमान भई उठकर चलीं तो नारदजी के वाक्य से उसे निजपुत्र जानकर वे सारी परमहर्ष को प्राप्तभई तो उसे लेकर सुख स्पर्श करतीभई अरु रति ने भी उनसबों को प्रणाम किया अर्थात उनके पावोंपर गिरी १६ तो उनके आनन्द से सारी पुरी आनन्दयुक्त भई ब्रह्मा बोले कि ऐसे हमने जनस्थानमें स्थित गणेशजीकी महिमा हेमहामुने व्यासजी कहा है जहां रामचन्द्रजी ने शूर्पनखा की नासिका छेदी है वो (नासिक) नामसे स्थान विख्यातहै १८ तहा अब भी पत्थरसे मोदकसे दीखतेहैं ऐसे कामदेव करके वे गणेशजी आराधन कियेगये १९ जैसे शेषजीकरके षडक्षरमन्त्र से आराधनकिये गये थे तो रति अरु मदन दोनों आनन्द को प्राप्त होते भये २० व्यास जी बोले कि हे ब्रह्मन् ये गजानन जी शेषजी करके कैसे आराधन किये गये किस प्रयोजन के लिये अरु प्रसन्न भये गजाननजीसे इनका नाम कौन भया २१ सो हे चतुरानन जी ये मुझ पूछरहे को आप विस्तार से कहिये ब्रह्माजीबोले कि हे व्यास जी तुमने अच्छा पूछा में कथापीयूष तुझे पानकरावाहूं हेसत्यवती के सुत व्यासजी तुम सावधान भये श्रवण करो २२।२३ किसी समय मे पार्वती सहित शिवजी कैलास में सुखसे विराजमान जो पर्वत रमणीय कन्दरावाला अरु शिखरों की उंचाई सहित था २४ अरु जो नानाप्रकार के वृक्ष बेलों से भरा जो झरनों के शब्द से

गुंजरहा अरु जहा धतूरे कमल निवासी भौरे गुंजरहे २५ अरु चम्पा अशोगिया मौलसरी चमेली के पुष्पोका पवन उसके शिखर पर वसनेवालो के चित को अत्यतही आनन्द करनेवाला २६ तो तहां गिरिजा जी के पति शिवजीको देखने के लिये गधर्व अप्सरा यक्ष किन्नर देव अरु मुनियें नाग ये सव जाते भये २७ तो कईक तो उन्हें साष्टाङ्ग प्रणामकरके नम्रताई करतेभये अरु गधर्व इनके आगे ऊचेस्वर से गाते भये अरु अप्सरागण नाचे २८ अरु उन शिवजीको पूजतेभये जो शिवजी दशभुज अरु व्याघ्र चर्म्मधारण किये अरु नन्दी भृङ्गी इत्यादि गणो से सयुक्त भाल चन्द्र त्रिशूल वाले २९ भस्म अग शेषहै शिरपर जिनके वृषध्वज शकर जी अरु जो और २ भी देवो से मानसी उपचारोसे पूजित ३० अरु कईक नेत्र मींचकर ध्यानमें परायण होतेभये सो कि वशिष्ठजी अरु वामदेव जी जमदग्नि जी त्रितविप्र ३१ अत्रिजी कश्यजी भरद्वाजजी अरु और२ भी गौतमादिक मुनीश्वर ये सव नानाप्रकार के स्वोत्रों से तहा तिन पार्वती पति शिवजीकी स्तुति करतेभये ३२ तो तिन मुनियो के स्तुति किये सन्ते शेष परमहीं गर्व को प्राप्तभया कि तीनोलोकों में मैही अत्यन्त श्रेष्ठ हू और कोई दूसरा नहीं है ३३ क्योकि जो अति श्रेष्ठ शिवजी है तिनके भी मै मस्तक पर सवार रहताहू अरु धरती के धारण करने की सामर्थ मुझमेंहीं है और कहीं भी नहीं है ३४ अरु मेरेही कुलवाले रस्सी अर्थात् विलोने के नेताभये वासुकी से सुरो को अमृत प्राप्तभया है अरु तिसीसे अमरपन प्राप्त भया इससे मेरेसे परे और कोई भी नहींहै ३५ तो त्रिलोककेकर्त्ता शंभुजी उसकेहृदयमें स्थितगर्वको जानकर सम्पूर्ण द्रष्टा शिवजी समस्त के चुपही शीघ्रतासे उठे ३६ अरु तैसे उस गर्वाये शेषको धरतीपर आस्यालन करतेभये अर्थात् फटकारते भयेतो उसका एक२दश२तरहहोगया३६तो चारघडीवो मूर्छितरहा तो मरे सरीखा होगया अरु तभीसे ये सहस्त्रफणो से सयुक्त भया ३७ तो जीवही शेषरहा जिसमें ऐसा सारेशेषोका आभूषण शेष

शोचकर्त्ता भया कि मैं त्रिलोकेश्वर शिवजीका अलकार भयाहूं ३६ अरुअबमें इस व्यवस्थाको न जाने किसकर्म कैसे प्राप्तभयाहू अरु अब मैं चलभी नहींसक्ता जैसे पक्षहीन पक्षी न उडसकै ४० अब मैं क्याकरूं कहांजाऊं मेरा रक्षक अबकोनहोवे अरु कौनमुझको अपने पदकी प्राप्तिकेलिये शुभउपाय बतावे ४१ अथवाकोन मेरे दुःखको दूरकरें ऐसी चिन्तासे व्याकुलभया सो शेष तिसीमार्गसे जातेभये नारद मुनिजीको देखताभया ४२ तो नागेंद्र कुछ२ हर्षा जैसे अल्प पाय भिक्षुकहर्षे तो नारद जी तिसकी ऐसी कठिन व्यवस्थाको देखकर चेष्टारहित शीघ्र श्वासरहित जैसे ध्यान मे स्थित मुनिहो ऐसे शेषको सब विषय ज्ञाताभी नारद जी पूछतेभये ४४ इस प्रकारसे गणेशपुराण उपासना खण्डमें शेपो पाख्यान इसनामसे नवासीवां अध्याय समाप्त हुआ ८६ ॥

नब्बेका अध्याय॥

शेषजीको श्रीगणेशजीसे वर होनेका वर्णन है ॥

श्रीनारदजीबोले कि हेशेषतू तेजरहित अरुअत्यत दुःखित किस लिये होरहाहे अरु कैसेतेरे टूटगये ऐसातुमने कोनसे मुनिजीका अपराध किया है १ क्या तेरे पर शिवजी क्रुद्धहोगये क्या तेने उनसे कोई गर्व कियाथा सो इसका कारण पहिलेकहो मैं फिर उसका प्रति कारकअर्थात् उपाय कहूगा २ तेरे बिन इस चर अचर जीव संयुक्त धरती को कोन धारण करे ऐसे फिरभी उसके कुछ न कहनेपर आपही मुनिजी उसनागोके राजाको निजस्थानको प्राप्त करनेवाला उपाय बतातेभये नारदजीबोले कि हे अशेष कलानिधान शेषतू मेरे वचनको श्रवणकर ३।४ जिससे ब्रह्मा ईश आदि देवता भी किंकरों के तरह होजावें अरु मस्तकपर धरिणी को ऐसे धरेगा जैसे बालक फूलमालाधारणकरे ५ शेषबोले कि कुछ पूर्वजन्मका मेरा पुण्य था तिसीसे आपका दर्शन मुझको भयाहै जो अचानकही हुआहै तो आगाडीभी मुझे अच्छाही होगा इसमें संदेहनहींहै अरु नपुण्यकरने

वालोंको तो आपका दर्शनही कैसेहोवे अरु मैं अत्यन्त व्याकुल शरीरपनेसे भूमिको धारणभी नहीं करसक्ताहूं ७ सो हे मुनिजी अब वही यत्नकहो जिससे मैं पहिलेकेतरह होजाऊं नारदजीबोले कि हे नागराज मैं तुझको उन्हीं देव गणेशजीका महामन्त्र बताता हूं कि जिसके प्रसादसे तिस२पदको प्राप्तभयेहैं इससे मैं तुम्हें गणेशजी का षडक्षरमंत्रबताताहूं ९इसके अनुष्ठानहीसे तेरेप्रत्यक्षभये गजानन जी तेरे सब कामों को पूर्ण करेंगे जिन२ को तू उनसे मांगेगा १० ब्रह्माबोले कि नारदजी तो शेषको उपदेश करके अन्तर्द्धानभये अरु शेपजीभी तपकेलिये परमनिश्चय करके ११ रोके सबद्वार जिसने सो शेष गजाननदेव जी को ध्यानकर अरु हजार सम्वत् सर तक उसपर मन्त्र को जपताभया तिसके अन्त में अगाडी देवों के देव गजाननजी को देखता भया १२।१३ सो कैसेहैं गजाननजी कि सिंहपर सवार दशभुजोंवाले अरु तीन नेत्रवाले अरु सर्प कुण्डल भुजबन्ध इनको धारणकिये मोतियोंकी मालाको पहिरे सुन्दरसजीले मुकुटवाले रत्नजटितहैं उपवीत जिनके अरु बहुतसे देवऋषि समूहों से निरंतर प्राप्त अर्थात् ध्यानसे पायेगये अरु बांकेतुण्डवाले गजाननजी भक्तोंकेलिये निजेच्छासे धारणकिया देह जिन्होंने अरु सुर नरोंको वरदेनेवाले ऐसे एकदन्तवाले श्रीगणेशजी १४ उसकोनिज दर्शन देनेकेलिये आये जैसे उस शेषने सो ध्यायेथे सिद्धि बुद्धियुत गणेशजी तैसेही आयेपाये १५जो सहस्र सूर्यसमान प्रकाश करके प्रकाशमानकरी दिशा जिन्होंने तो उनके तेजसे दबाये शेषजी अंधे सरीखेहीहोगये१६तो भयसे उद्विग्नवलितचित्तभया अत्यन्तविकल भया शेष दोघडी में स्वस्थहुआ तो चित्तमें ये विचारताभया १७ ये प्रलाग्नि सदृश तेजक्या आगयाहै वो तो सबलोकोंको जलावे क्या ये मुझेही जलादेवेगा १८शुभकर्मकेभी करनेमें येअशुभ कैसेहोगा अथवानारदजीसेकहादर्शनही मुझेहोगाक्या१९ ऐसे उसकेचिंतातुर भये गजाननजीबोले कि हेकुतर्कों में चतुर तू मतडरे कि मैं वरदेने वाला आगयाहूं२०जिसे तू दिनरात ध्यारहाहै सो मैं हूं अबजो तेरे

मनमेंहै सो मागले मैंही जगत्का कर्त्ता अरु रक्षक संहारक सबका स्वामीहूं २१ मेरेही तेजसे चन्द्रमा भासमान होरहाहै अरु अग्नि सूर्य अरु तारागण ये सब प्रकाशमान हैं ऐसा परब्रह्म स्वरूपमें तेरे इसतपसे प्रसन्नभयाहूं२२सो मैं त्रिलोकके उपकारके अर्थअरु तुझेवर देनेकेलिये प्रकट भयाहूं सो मुझसे वरमाग निज २ मांगे की चाह कर्त्ताहै २३ शेषजीबोले कि हेदेव मैं आपके तेजसे देवा देखने कहने नहींसक्ताहूं, जो मुझमेंआपका पूरा२ अनुग्रहहै तो आप हे निष्पाप सौम्यस्वरूपहोजाओ २४ ब्रह्माबोले कि करुणासागर गजाननजी उमसे ऐसे प्रार्थनाकिये करोड़ चन्द्रमाओंके समान शीतल निर्मल कांतिवाले सुरों के ईश्वर गणेश्वर जी सौम्य स्वरूप होगये२५ तब-तो शेषजी सबके ईश्वर इन्हें नमस्कार स्तुति करके वर मागते भये सो कि मैं शेष उनआदि अंतरहित देवगणनायकजीको वन्दना करताहूं२६ जो आप सर्वव्यापी ईश्वरहो अरु जगत्के कारणके भी कर्त्ताहो अरु सबके स्वरूप विश्वके ईश्वरहो अरु विश्व से वन्दनीय जो आपहो तिन्हें मैं नमस्कारकरताहूं २७ अरु जो देव आप सर्व विद्याओंके अधिपति अरु देवों के देव सुरों के प्यारेहो अरु सिद्धि बुद्धिके प्रियतम सिद्धिदाता भुक्ति मुक्तिदायीहो २८ अरु गजानन जी जो आप अरु गणों के अध्यक्ष अरु गरुड़जी के ईश्वर अर्थात् विष्णुजी से स्तुतिकिये ऐसे विभु गणेशजी गुणों के अधीश्वर गुणों से परे ऐसे गणाधीश जी मैं आपको नमस्कार करता हूं २९ अरु सर्व विघ्नहारी देव गणनायकजी मैं आपको नमस्कार करता हूं ब्रह्माबोले कि ऐसे वरद देवदेवेश गजाननजी को स्तुतिकरके३० शेषजी काम वर मागतेभये सो हे महामुने व्यास तुम श्रवण करो शेषजीबोले कि आज मेरे तप ज्ञान पिता माता अरु जन्म ये सब सफलभये हैं ३१ अरु देह बहुत नेत्र अरु ये बहुतही से मस्तक भी धन्य हैं अरु जो मेरी जिह्वा आपकी स्तुतिकरनेके लिये प्रवृत्त भई सो सारी मेरीजीभभी अत्यन्तही धन्यहै ३२ अरु मेराकुल शील ये भी धन्य हैं अरु आपके चरण युगल के दर्शन से मैं चार २ ही

धन्यहू सो हे अखण्डित पराक्रम गणेश जी आप अपना, अखण्ड भजन मुझकोदेवो ३३ अरु हे विघ्नराज जी सबके ज्ञाता आपमें मैं अपना क्या० दु खकहू मेरे बहुत गर्वकरनेसे ये मस्तकटूटेहैं ३४ जो महादेवजी के महाक्रोध से मैं भूमितल में फेकागया था फिर नारदजीके प्रसादसे आपकाचरण कमलदेखाहै३५ अब हेदेव आप मुझे त्रिभुवनमें श्रेष्ठता देवो अरु सारे शिरोमें नीकापन अरु धरती के धरनेमें सामर्थ्यदेवो३६ अरुमुझको अचलस्थानदेवो अरु सदैव निजदर्शन देवो अरु शंकर जी का सन्निधिपन देवो अर्थात् जिससे शिवजीकेपासरहूं अरु कुलमे श्रेष्ठतादेवो शिवजी में प्रीतिदेवो ३७ श्रीगणेशजी बोले कि हे भुजगो के अधिपति शेष जो तेरा मस्तक दश १० तरे होगया तिससे सहस्रफणोसे मण्डित जनोंमें विख्यात जितने सूर्य चन्द्रमा रहैं अर्थात् कल्पकाल तक रहैगा ३८ अरु धरतीके धारणकी दृढ़सामर्थ्यहोगी अरु पांचमुखवाले अर्थात् शिव जीके पाचो शिरोपर मेरे प्रसाद से अचल विराजमान रहैगा ३६ अरु हे भुजगोत्तम निरतरही मेरे सन्निधिभाव को भी प्राप्त होगा अर्थात् मेरेपास रहैगा अरु हे शेष और २ भी जो तेरा मन वांछित है सो सब पूर्णहोगा ४० ब्रह्माबोले कि ऐसे गजाननजी ने उसको बरदानदिया अरु निज उदर में तिसे बांधलिया ४१ तो तभी से गजाननजी (व्यालबद्धोदर) ऐसानामभीपाये तो त्रिभुजीने अभय-दान के लिये शेषजीके मस्तकपर हस्तधर लिया अरु शेषजी को आप अपना (विराट्स्वरूप) दिखाते भये ४२।४३ तो निजशब्द से आकाश को पूरते अरुभूतल दिशा विदिशोको भी गों जाता भया सो कि जिनके पैर तो भूमितल दिशा कर्ण जिनकी सूर्य नेत्र ४४ ओषधियें हैं रोमजिनके अरु पर्वत हैं नखजिनके मेघ हैं पसीना जल जिनका अरु ब्रह्माजी हैं जन्म जिनके ४५ अरु सारा है ससार कोप में जिनके अरु तैसेही चारों महासमुद्र भी हैं अरु वे एकभी अनेक मुखवाले अरु अनेक नयनदीखे अरुजोस्वराट् अर्थात् आपही प्रकाशवान् ४५ अरु अनन्त रूपवान् अरु अनन्त

शक्तिवाले अरु अनत प्रकाशमान जिनकेरोम कूपोमे हजारहो ब्र-ह्माण्ड दिखाई देरहे ४६ इन ऐसे स्वरूपवाले गणेशजीको देखकर भयसे भ्रमेसे अर्थात् अत्यन्त आश्चर्य्ययुक्त होगये अरु विघ्नेशजीकी प्रार्थनाकरी कि आप फिरभी सौम्यहीहोजाओ४७तवतो वे सिंहपर सवार दशभुजोंवाले होगये अरु वरदाता देव गणेशजीबोले कि ऐसास्वरूप सुरोनेभी नहींदेखाहै४८ सो हेशेष अववोही भाग्यवश से अरु मेरे अनुग्रहसे तैनेदेखाहै अरु मुझमे तेरा अचल स्थानहोगा अरु पातालमेंअरु शिवजीमेंभी निश्चल रहनाहोगा ४६ ये वर मैंने दिया अरु तू फूलकीतरह धरतीकोधरले अर्थात् तुझे कुछभीश्रम न मालूमहोगा५० शेषजीबोले कि जो मैं अपने शिरपर धरती धरूंगा तो मेरा अरु तुम्हारा भी (धरणीधर) ऐसा नाम लोकोमें अत्यन्त विख्यातहोगा५१अरु इसीक्षेत्रमें आप स्थिरहोकर भक्तोंकेकामोंको पूरे करो ब्रह्माजीबोले कि गणेशजी शेषजीको ओं अर्थात् हां ऐसा कहकर आपतो अंतर्द्धानभये५२ अरु शेषजीने भी तैसीही मूर्त्ति ब-नाकर आदरसे उसे स्थापनकरी अरु बहु रत्नोंसे जटित सुवर्ण का सुन्दर मन्दिर बनवाया५३ अरु (धरणीधर) ये ऐसा इनकानाम रक्खा अरु आप भगवान् के शयनपन अर्थात् सेजभये अरु पुष्प की तरह धरणी धारणकरी५४अरु नाभिकमलमें निश्चलभये अरु विघ्नोंकेराजा जो गणेशजी तिनके आभूषणभये ऐसे हेव्यासहमने तुमसेअद्भुत येगणेशजीका माहात्म्य वर्णन कियाहै५५ अव(प्रवाल नगर) में (धरणीधर) गणेशजी विख्यात है सो हे विभु व्यासजी इसी प्रयोजनकेलिये शेषजीने गणेशजीका आराधन कियाथा सो हमने तुमसे कहा५६ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्डमें शेषजी का उपाख्यान इसनामसे नब्बेका अध्याय समाप्त हुआ है ६० ॥

इक्यानवेका अध्याय ॥

श्रीगणेशजीकी आज्ञासे ब्रह्माजीकेपुत्र कश्यपजी करके सृष्टिरचना अरु उन्होंसे स्तुति होनेका वर्णन कियागया है ॥

व्यासजीने पूछाकि हे देवोंके ईश ब्रह्माजी आप मुझसे और २ भी गणेशजीकी कथा कहो क्योंकि नित्यही सुनते हुये हे प्रभोमेरा मन सम्यक् प्रकार उत्सुक अर्थात् चाववालाहोताहै १ श्रीब्रह्माजी बोले कि एक समय प्रलयभये गजाननजी ने मुझे आज्ञाकरी कि हे ब्रह्मन् तुममेरी आज्ञासे नाना प्रकारकी सृष्टि रचो २ तब मैंने ह्रदासेसातपुत्रउत्पन्नकिये उन्होंकेनामतुमसेकहताहूं कि कश्यप, अरु गोतम३ जमदग्नि, वशिष्ठ, अरु भरद्वाज, अरु अत्रिजी, अरु विश्वामित्र जी, यह सात सारी विद्याओं में विशारद अर्थात् सर्व वेत्ता भये ४ तौ वेमारे मुझे बोले कि हे सुरोंके ईश्वर, ब्रह्माजी, आपहमें आज्ञा कीजिये तबतौ मैंने कश्यपजीसे आज्ञाकरी जो कि यह उन सबोंमें अधिक बुद्धिवाले थे ५ तौवो मुझसे आज्ञा किये गये कितुम नाना विधिकी रचना यह मेरा कार्य्य करो तब तौ वे हम से हा ऐसे कह कर तपके लिये वनमें चलेगये ६ तौ वहा जाकर हजार दिव्यवर्ष एकाक्षर मत्र को जपताभया तबतौ ईश्वरभगवान्गजाननजी प्रसन्न भये ७ जो चारभुज कमल नयनधारी मुकुटसे सजे पाश अकुशधरे माला एक दतहाथमें जिनके शुभभुजबध जिन हैसुवर्णमणि मोति-योंसेयुक्तमोतियोंकी मालासे सजीला है गलजिनका८सर्प हैं उदर बधजिनके अरु करोडों सूर्य्यके समान विलास मानहै कांतिमण्डल जिनका अरु बिकसे अर्थात् प्रफुल्लित जो नयन उनसे विशेष शोभा-यमान जो सुदर शूड तिससे सजरहाहै मुखजिनका ऐसे गजानन जी कश्यपजीके आगेप्रकटभये जो छोटे घुघरोंवाली अर्थात् तगडी अरु पैंजूरोंके शब्दसे शोभित चरण सयुक्त ९।१० तौ उनदेव गणेश जीको देखतेही बहुत हर्षभरे कश्यप जी नाचतेभये अरु नमस्कार करके नानाप्रकारकी शुभवस्तुओंसे पूजते भये ११ तौ प्रसन्न मन

भये यह गजाननजीको अंजलिजोडबोले कि मेरा पिता,माता,ज्ञान, शरीर दृष्टि यह सब आज धन्य भये हैं १२ अरु हे तातजी यह धरणी धन्य है अरु वृक्ष वेलि येभी धन्य हैं अरु एकाक्षर मंत्र भी धन्य हैजिससे सर्व के ईश्वर आपको देखे हैं १३ जो आप प्रसन्न आत्मापरमात्मा गजानन जी अरु परसे भी परे अर्थात् अनंत हो जहां चारोवेद कहते२ थकगये अरु वेदान्तादि शास्त्र भी मूकभाव अर्थात् गूंगेपन को प्राप्तभये १४ अरु जो मनके तर्कों से अप्रत्यक्ष आप सो देव आप हमसे देखेगये जिससे यह हर ईश्वर अग्नि से आदि देवता उत्पन्न होतेहैं १५ अरु उन्हीं से सातों पाताल अरु चौदह भुवन ये सब जहां विलीन होते हैं सो यह देव गजानन जी मुझसे देखेगयेहैं ब्रह्मावोले कि ऐसे२ अमृत वचनोंसे तृप्त भये गजाननजी नम्रभये अरु नानास्तोत्रों से स्तुतिकरते कश्यपजी से गणेशजी बोले कि हे मुने मैं तेरीभक्ति अरु अनुष्ठानसे तेरेपर प्रसन्न भयाहूं तू जो२ मनसेचाहताहै सो२ मुझसे वरमांग १६।१७।१८ १९ कश्यपजी बोले कि हे प्रभो आप मुझे नानाप्रकारकी सृष्टिरचनेकी सामर्थ्य देवो अरु अपनेचरणारविन्दमें भक्ति अरुअविस्मृति भी देवो २० अरु जहा२ मैं आपको याद करूं तहा२ हीं मेरे आगे प्रत्यक्षहोवो अरु आपके जैसाही (कश्यप नन्दननाम) से मेरेपुत्र देवो २१ श्री गणेशजी बोले कि हे महामते कश्यप तुम्हारा सारा वाञ्छित मुझसेशीघ्रही प्राप्तहोगा सो कि मेरीभक्ति अरु अविस्मरण होगा अरु संकट में तेरे सहाय होऊंगा २२ अरु मेरे प्रसाद से तू नानाप्रकारकी सृष्टि रचेगा ब्रह्मावोले कि देव गणेशजी मुनिकश्यप जी से ऐसे कहकर अन्तर्द्धान भये २३ अरु तब कश्यप,जो भी हर्ष युक्त अपने स्थानको आये किसीसमय कश्यपजी प्रचानरुही काम-देवसे पीडितभये तो कहीं भी सुख न पाये तब घरमेंही आये २४ अरु नित्य नैमित्तक काम्य अर्थात् नित्य का निमित्तका कामना सम्बन्धी जो कर्म्म अरु ध्यान तिसेभी नहीं स्मरणक्रिया अर्थात् भूलगये तो उनको ऐसे कामातुर देखकर इनकी चौदहों स्त्रियें २५

इक्यानवेका अध्याय॥

श्रीगणेशजीकी आज्ञासे ब्रह्माजीकेपुत्र कश्यपजी करके सृष्टिरचना अरु उन्होंसे स्तुति होनेका वर्णन कियागया है॥

व्यासजीने पूछाकि हे देवोके ईश ब्रह्माजी आप मुझसे और २ भी गणेशजीकी कथा कहो क्योकि नित्यही सुनते हुये हे प्रभोमेरा मन सम्यक् प्रकार उत्सुक अर्थात् चाववालाहोताहै १ श्रीब्रह्माजी बोले कि एक समय प्रलयभये गजाननजी ने मुझे आज्ञाकरी कि हे ब्रह्मन् तुममेरी आज्ञासे नाना प्रकारकी सृष्टि रचो २ तब मैंने हृदासेसातपुत्रउत्पन्नकिये उन्होकेनामतुमसेकहताहूं कि कश्यप, अरु गौतम ३ जमदग्नि, वशिष्ठ, अरु भरद्वाज, अरु अत्रिजी, अरु विश्वामित्र जी, यह सात सारी विद्याओ में विशारद अर्थात् सर्व वेत्ता भये ४ तो वेमारे मुझे बोले कि हे सुरोंके ईश्वर, ब्रह्माजी, आपहमें आज्ञा कीजिये तबतो मैंने कश्यपजीसे आज्ञाकरी जो कि यह उन सबोंमें अधिक बुद्धिवाले थे ५ तोवो मुझसे आज्ञा किये गये कितुम नाना विधिकी रचना यह मेरा कार्य्य करो तब तो वे हम से हा ऐसे कह कर तपके लिये वनमें चलेगये ६ तो वहां जाकर हजार दिव्यवर्ष एकाक्षर मंत्र को जपताभया तबतो ईश्वरभगवान्गजाननजी प्रसन्न भये ७ जो चारभुज कमल नयनभारी मुकुटसे सजे पाश अंकुशवरे माला एक दतहाथमें जिनके शुभभुजबंध जिनके सुवर्णमणि, मोतियोंसेयुक्तमोतियोंकी मालासे सजीला है गलजिनका ८ सर्प हैं उदर बंधजिनके अरु करोडों सूर्य्यके समान विलास मानहै कांतिमंडल जिनका अरु विकसे अर्थात् प्रफुल्लित जो नयन उनसे विशेष शोभायमान जो सुंदर शूंड तिससे सजरहाहै मुखजिनका ऐसे गजानन जी कश्यपजीके आगेप्रकटभये जो छोटे घुंघरोवाली अर्थात् तगडी अरु पैंजनीके शब्दसे शोभित चरण सयुक्त ९।१० तो उनदेव गणेश जीको देखतेही बहुत हर्षभरे कश्यप जी नाचतेभये अरु नमस्कार करके नानाप्रकारकी शुभवस्तुओंसे पूजते भये ११ तो प्रसन्न मन

भये यह गजाननजीको अंजलिजोडबोले कि मेरा पिता,माता,ज्ञान, शरीर दृष्टि यह सब आज धन्य भये हैं १२ अरु हे नाथजी यह धरणी धन्य है अरु वृक्ष वेलि येभी धन्य हैं अरु एकाक्षर मंत्र भी धन्य हैंजिससे सर्व के ईश्वर आपको देखे हैं १३ जो आप प्रसन्न आत्मापरमात्मा गजानन जी अरु परसे भी परे अर्थात् अनंत हो जहा चारोवेद कहतेर थकगये अरु वेदान्तादि शास्त्र भी मूकभाव अर्थात् गूंगेपन को प्राप्तभये १४ अरु जो मनके तर्कों से अप्रत्यक्ष आप सो देव आप हमसे देखेगये जिससे यह हर ईश्वर अग्नि से आदि देवता उत्पन्न होतेहैं १५ अरु उन्हीं से सातो पाताल अरु चोदह भुवन ये सब जहा विलीन होते हैं सो यह देव गजानन जी मुझसे देखेगयेहैं ब्रह्मावोले कि ऐसेर अमृत वचनोंसे तृप्त भये गजाननजी नम्रभये अरु नानास्तोत्रो से स्तुतिकरते कश्यपजी से गणेशजी बोले कि हे मुने मै तेरीभक्ति अरु अनुष्ठानसे तेरेपर प्रसन्न भयाहू तू जोर मनसेचाहताहै सोर मुझसे वरमाग १६।१७।१८ १९ कश्यपजी बोले कि हे प्रभो आप मुझे नानाप्रकारकी सृष्टिरचनेकी सामर्थ्य देवो अरु अपनेचरणारविन्दमें भक्ति अरुअविस्मृति भी देवो २० अरु जहार मैं आपको याद करूं तहार हीं मेरे आगे प्रत्यक्षहोवो अरु आपके जैसाही (कश्यप नन्दननाम) से मेरेपुत्र देवो २१ श्री गणेशजी बोले कि हे महामते कश्यप तुम्हारा सारा वांछित मुझसेशीघ्रही प्राप्तहोगा सो कि मेरीभक्ति अरु अविस्मरण होगा अरु संकट मे तेरे सहाय होऊंगा २२ अरु मेरे प्रसाद से तू नानाप्रकारकी सृष्टि रचेगा ब्रह्मावोले कि देव गणेशजी मुनिकश्यप जी से ऐसे कहकर अन्तर्द्धान भये २३ अरु तब कश्यप जी भी हर्ष युक्त अपने स्थानको आये किसीसमय कश्यपजी अचानकही कामदेवसे पीडितभये तो कहीं भी सुख न पाये तब घरमेंही आये २४ अरु नित्य नैमित्तक काम्य अर्थात् नित्य का निमित्तका कामना सम्बन्धी जो कर्म्म अरु ध्यान तिसेभी नहीं स्मरणकिया अर्थात् भूलगये तो इनको ऐसे कामातुर देखकर इनकी चोदहों स्त्रियें २५

जो कि दिति,अदिति,दनु,कद्रू,विनता इनसे आदि सब आकर आगे स्थितभई तो कश्यपजीने तिनको नानाप्रकारके आगार नामस्थानो मे यथाक्रम करके भोगी २६ तो यथोक्तकाल अर्थात् दशवें महीने में दितिने तो बहुतसे दैत्योंको उत्पन्नकिये अरु अदिति देवता गंधर्वोंको उत्पन्नकरतीभई अरु दनुदानवोंको जनतीभई २७ ऐसेही क्रम करके किंपुरुष,यक्ष,सिद्ध,चारण,गुह्यक अरु पशु जो२ ग्रामोके अरु वनवालेथे सो बहुतही से उत्पन्न भये २८ अरु पृथ्वी, पर्वत, वृक्ष, वेलि,समुद्र,नदियें,धान्य,धातुवें,रत्न,मोती,कीडे,चींटी,२९ अरु तिनहीं से सर्प पक्षि गण ऐसेही सब चर अचर जगत् उत्पन्न भया तब तो नानाप्रकारसे भये सन्तानको देखकर ३० बुद्धिमान् कश्यपजी हर्षते भये अरु उनसबो को नानाप्रकार के मंत्र उपदेश किये अर्थात् बताये सो कि मंत्रशास्त्रकी रीतिसे सिद्धारि चक्रको देखकर अरु तिसीके अनुसार उनका ऋण धन शोधन करके तो किसी को तो षोडश अक्षरका तैसेही किसीको अठारह अक्षर का अरु किसी कोएकाक्षरही ओर किसीको छः अक्षरका ३१।३२ अरु पांचअक्षरका अरु आठअक्षरका ऐसेही द्वादशअक्षर ऐसे२ मंत्रउन्हें मुनिश्रेष्ठ कश्यपजी उपदेश करतेभये ३३ अरु कहा कि जबतक देव गजानन जी जो निराधार अरु सर्व सिद्धि प्रदाता गणेशजी दर्शनहों तितने अनुष्ठान कियेजावो ३४ ऐसे तिन्हेंआज्ञादई तो वे तभी चलेगये तो तपकरनेको बहुतसे स्थानोंमेंगये अरु निज२ मंत्रोंको जपतेभये ३५ सो कि आसनमें भोजनमें सोनेमे अरु जागनेमे भी वे अनन्य भक्ती से देव गजाननजी को स्मरण करतेभये ३६ तो सहस्र दिव्यवर्षोंके अन्तमें गजाननजी प्रसन्नभये तो अनेक रूपकरके उनसबोंके आगे प्रकटभये जो करुणाके सागर ३७ जो२जैसे देवको जैसे ध्यातेभये सो२ सारे तैसेतैसेही उन्हेंदेखतेभयेतोकिसीके तो आगे मेघवर्ण आठ महा भुजवाले प्रत्यक्षभये ३८ अरु किसीकेआगे चन्द्रमासे शीतल शरीर वर्ण चतुर्भुज होकरआये अरु येही गणेशजी किसीके आगे रक्त वर्ण अरु छःभुजवाले होकरआये ३९ अरु किसीके अगाडी सहस्र

नेत्रवाले अरु सहस्रहीभुजावाले किसीकेगागे२ आये अरुवहीबालक स्वरूप अरु जवान अरु वृद्धसेभी दीखे४० अरु दशवारहभुजोंवाले जो धूम्रवर्ण महातेजस्वी अरुवेही अठारहभुजोंवालेअरु करोडसूर्य्य समानकान्तिवाले होतेभये ४१ अरु तेजरूप महाशरीरमूषककेपृष्ठ पर चढे अरु सिंहपर सवार मोरचढे भी वहुत वलवाले गजानन जी ४२ तो वे सारे उन देव गणेशजी को देखकर अनेक प्रकारसेही स्तुति करतेभये जो अंजलिपुट बांधे भक्तिसेनम्रभयेसारेगजाननजी को स्तुति करते ४३ वोलेकिहम उन गणेशजीकोसदानमस्कारकरते अरु भजतेहैं जिन अनन्त शक्तिवाले गणेशजीसे अनेक जीव उत्पन्न होतेहैं अरु जिन्हों निर्गुण अरु प्रमाणरहितगणेशजीसे गुण उत्पन्न भये जिनसे यहसारा प्रपंचतीनप्रकारकेभेदसे भिन्ननाम भेदकोप्राप्त भासताहै तिन गणेशजीको सदाभजते नमस्कार करते हैं ४४ अरु जिनसे यह साराजगत् उत्पन्नभयाअरुवेतेहीकमलासनब्रह्माजी जो विश्वगामी अरु विश्वरक्षक अरुतिन्होंसे इन्द्र आदिक देवताओंकेसग अरु मनुष्य तिनगणेशजीको भजतेनमस्कार करतेहैं४५ अरु जिन्हों से अग्नि, सूर्य्य, अरु शिवजी भूमि जलअरुजिन्होंसेसमुद्र, चन्द्रमा, आकाश, पवन, अरु जिनसे स्थावर, जंगमअरुवृक्षसमूह, तिनगणेश जीको सदाभजतेनमस्कार करतेहैं ४६ अरु जिनसे दानव, किन्नर, यक्ष, समूह अरु जिन्हों से चारण अरु वारणनाम हाथीअरु श्वापद नाम सिंह व्याघ्रादिक भये जिनसे पक्षी कीड़े अरु जिन्हों से वीरुध तृण तिन गणेशजी को सदाभजते नमस्कार करते हैं ४७ अरु जिनसे वुद्धिभई अरु मुमुक्षु के अज्ञान का नाश अरु जिन्हों से भक्तों को संतुष्ट करनेवाली संपदायें होती हैं अरु जिनसे विघ्नों का नाश अरुकार्य्य सिद्धि सदा तिन गणेशजीको भजते नमस्कार करते हैं ४८ अरुजिनसे पुत्र संपत्ति अरु जिन्हांसे वाञ्छित अर्थ जिनसे ... । अरुविद्या जिनसे अनेकप्रकारके रूप उत्पन्नहोतेहैं अरु जिनसे शोक मोह अरु जिन्होंसे वेकाम तिन गणेशजीको सदा भजते नमस्कार करतेहैं ४९ अरु जिन्होंसे अनन्त शक्तियोंवाले शेषजी उत्पन्नहुये जो।

अनेकप्रकारके धरतीके धारण करने मे समर्थ अरु जिन्होंसे अनेक प्रकारका स्वर्गलोक नानाभेद संयुक्तभया तिन गणेश जीको हमसदा भजने नमस्कार करतेहैं५० अरु जिनकेविषे वेदवाणी मनोसविचारती आलस्यभई जो जिहोंको सदा (नेतिनेति) अर्थात् ऐसेनहीं २ ऐसे कथनकरतीहै ऐसे उन परब्रह्मरूप चिदानंद भये गणेशजीको हम सदानमस्कारकरते अरुभजते अर्थात् तिनकी सेवा करतेहैं५१ इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासनाखंडमे सर्वदेवादिस्तुति इस नामसे इक्यानवेका अध्याय हुआहै ९१॥

बानवे का अध्याय॥

श्रीगणेशजीके नानानाम अरुउपासनाखंडकेमाहात्म्यकावर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि वे सारे गजाननजीको नमस्कार अरु स्तुति करकेअरु गणाध्यक्षजीसे फिर बोले कि हम आजधन्य हैं १ हमारा तप धन्यहै अरुदानज्ञान अरु हमारे बडेभी धन्यहैं अरु अब हमारी दृष्टिधन्यहै जिससे गजाननजी आपको देखेहैं२ ऐसेउन्होंके अमृत बचनोंसे स्तुतियोंसे संतुष्टभये गजाननजी सुनतेभये उन्होंको गंभीरवा सेवीबाले३ कि जिस निर्गुणभी मेरे रूपको तुमसारे प्रत्यक्षही देखतेहो सोऐसास्वरूप मैंने ब्रह्मा विष्णु शिवादिकोमें किसीकोभी नहीं दिखायाहै४मै तुम्हारी इसस्तुतिसे संतुष्टभया वरदेनेको यहां आयाहू सो जो२तुम्हारावांछितहै सो२ तुमसारेसबमुझसेमांगो५हे मुनीश्वर व्यासजी जब वे सारे गजाननजीसे ऐसे कहेगये तब वो जैसा२ जिस२का वांछित था सो२ सब तैसा२ही उन्होंने तिन गजाननजीसे मागा६ तो असंख्यपनेमे उनवरोंको मेरीचारोंमुखोंसे भी कहनेकी शक्तिनहींहै तिससे ये संक्षेपसेही हमने तुमसेकहाहै७ अरु फिर गणाध्यक्षजीने कहा कि जो इसस्तोत्रको त्रिकाल तीन दिनतक जपे तो उसकासाराकार्य्य सिद्धहोगा जो कोई इस सुंदर श्लोकोंके अष्टकको आठदिनतकजपेगा अरु आठवेर चौथको तो वह आठोसिद्धियोंको प्राप्तहोग८ जो दिन२मंदवार२वेर ऐसेमहीनेतक

पढै तो वह राजमेंबंधे पुरुषको निस्सदेह छुड़ावे१० अरुविद्या काम वाला विद्याको प्राप्तहोवे अरु पुत्रके प्रयोजनवाला संतानको प्राप्त होवे जो इकईसबेरपढै तो सारेवाञ्छितको प्राप्तहोवे ११ जो जन गजाननजी में परायण होकर परमभक्ति से इसे जपे तो गजाननजी तो ऐसे कहकर उनसबोके देखतेही १२ ये सबकेआश्रय सुन्दरमुख वाले गजाननजी अंतर्द्धानभये अरु तब उन्होने गजाननजीकीशुभाननाम सुन्दर मुखवालीही मूर्त्तिबनाई १३ अरु रत्न जटित भारी मंदिरमे तिसे विराजमानकरी अरु तिसका उन्होने (सुमुख) ऐसा सुन्दर विख्यात नामकिया १४ अरु सम्यक्प्रकारसे नमस्कार अरु पूजनकरके देवतानिज२स्थानकोपधारे अरु वे सारेमुनियेऔरलोग अपने सारेकामो में परायण भये १५ तो ऋइयोंने तो तिसकानाम प्रकटही(एकदंत) ऐसाकिया अरु गन्धर्व किन्नरोने और उत्तम मूर्त्ति स्थापनकरी १६ कंचनके मंदिरमे अनेकप्रकारसे पूजितकरके अरु (कपिलजी) ऐसा ये इनका उत्तमनाम रक्खा१७ अरु गुह्यकचारण सिद्धोने औरही मूर्त्तिस्थापनकरी उसे वडेस्थानमे विराजमानकरके उसेपूजते अरु नमस्कार करतेभये १८ अरु उन्होने (गजकर्ण) ऐसा उत्तम इनकानाम प्रकट अर्थवाला निकाला अरु तिसीके प्रभावसे वे विमान में विराजमान भये स्वर्गको चढ़गये१९ अरु सारेमनुष्यों ने (लम्बोदर) इस नामसे मूर्त्ति स्थापन करी अरु सारे श्वापदोने और उत्तम मूर्त्ति स्थापन करी २० अरु उसे (विकट) इसनाम से पूजनकरतेभये वनको चलेगये अरु पर्वत अरु वृक्षभी और मूर्त्ति स्थापनकर अरु उसेपूजकरके२१ अरु (विघ्ननाशन) ऐसानामकरके पृथ्वीपर स्थितभये अरु तिसीके प्रसादसे वे पर्वत अरु वृक्षविख्यात भये२२अरुसब पक्षिगणोंने रत्नजड़ी सुवर्णकी मूर्त्ति स्थापनकरी अरु वो उनसे (गणाधिप)इसनामसे पुजी अरु नमस्कार कीगई२३अरु सारेसर्पोंने एक गणनायकजीकी मूर्त्ति स्थापनकरी जिसका आवाहनकिया तिससे वो(धूम्रकेतु) ऐसे प्रकटभई२४अरु सारेजलाशयों ने एकमूर्त्ति स्थापनकरी तो वह (गणाध्यक्ष) इसनाम से प्रसिद्ध

अनेकप्रकारके धरतीके धारण करने में समर्थ अरु जिन्हींसे अनेक प्रकारका स्वर्गलोक नानाभेद संयुक्तभया तिन गणेश जीको हमसदा भजने नमस्कार करतेहैं ५० अरु जिनकेविषे वेदवाणी मनोसविचा-रती आलस्यभई जो जिन्होंको सदा (नेतिनेति) अर्थात् ऐसेनहीं २ ऐसे कथनकर्ताहै ऐसे उन परब्रह्मरूप चिदानंद भये गणेशजीको हम सदानमस्कारकरते अरुभजते अर्थात् तिनकी सेवाकरतेहै ५१ इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्डमे सर्वदेवादिस्तुति इस नामसे इक्यानवेका अध्याय हुआहै ९१॥

बानवे का अध्याय॥

श्रीगणेशजीके नानानाम अरुउपासनाखंडकेमाहात्म्यकावर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि वे सारे गजाननजीको नमस्कार अरु स्तुति करकेअरु गणाध्यक्षजीसे फिर बोले कि हम आजधन्य हैं १ हमारा तप धन्यहै अरुदानज्ञान अरु हमारे बडेभी धन्यहैं अरु अब हमारी दृष्टिधन्यहै जिससे गजाननजी आपको देखेहैं २ ऐसेउन्होंके अमृत बचनोंसे स्तुतियोसे संतुष्टभये गजाननजी सुनतेभये उन्होंको गंभी-रता सेवीबोले ३ कि जिस निर्गुणभी मेरे रूपको तुमसारे प्रत्यक्षही देखतेहो सोऐसास्वरूप मैने ब्रह्मा विष्णु शिवादिकोंमे किसीकोभी नहीं दिखायाहै ४मै तुम्हारी इसस्तुतिसे संतुष्टभया वरदेनेको यहां आयाहूं सो जो२तुम्हारावांछितहै सो२ तुमसारेसबमुझसेमांगो५ हे मुनीश्वर व्यासजी जब वे सारे गजाननजीसे ऐसे कहेगये तब वो जैसा२ जिस२का वांछित था सो२ सब तैसा२ही उन्होंने तिन ग-जाननजीसे मांगा६ वो असत्यपनेसे उनवरोंको मेरीचारोंमुखोसे भी कहनेकी शक्तिनहींहै तिससे ये संक्षेपसेही हमने तुमसेकहाहै७ अरु फिर गणाध्यक्षजीने कहा कि जो इसस्तोत्रको त्रिकाल तीन दिनतक जपे तो उसकासाराकार्य्य सिद्धहोगा जो कोई इस सुंदर श्लोकोंके अष्टकको आठदिनतकजपेगा अरु आठवेर चौथको तो वह आठोंसिद्धियोंको प्राप्तहोगा८।९जो दिन२मेंदश२वेर ऐसेमहीनेतक

पढ़े तो वह राजमेंबँधे पुरुषको निस्सदेह छुड़ावे१० अरु विद्या काम वाला विद्याको प्राप्तहोवे अरु पुत्रके प्रयोजनवाला सतानको प्राप्त होवे जो इकईसबेरपढे तो सारेवाञ्छितको प्राप्तहोवे ११ जो जन गजाननजी में परायण होकर परमभक्ति से इसे जपे तो गजाननजी तो ऐसे कहकर उनसबोंके देखतेही १२ ये सबकेआश्रय सुन्दरमुख वाले गजाननजी अंतर्द्धानभये अरु तब उन्होंने गजाननजीकीशुभाननाम सुन्दर मुखवालीही मूर्त्तिबनाई १३ अरु रत्न जटित भारी मदिरमें तिसे विराजमानकरी अरु तिसका उन्होंने (सुमुख) ऐसा सुन्दर विख्यात नामकिया १४ अरु सम्यक्प्रकारसे नमस्कार अरु पूजनकरके देवतानिज२स्थानकोपधारे अरु वे सारेमुनियेऔरलोग अपने सारेकामों मे परायण भये १५ तो कइयोंने तो तिसकानाम प्रकटही(एकदंत) ऐसाकिया अरु गन्धर्व किन्नरोंने और उत्तम मूर्त्ति स्थापनकरी १६ कचनके मदिरमे अनेकप्रकारसे पूजितकरके अरु (कपिलजी) ऐसा ये इनका उत्तमनाम रक्खा१७ अरु गुह्यक चारण सिद्धोंने औरही मूर्त्तिस्थापनकरी उसे वडेस्थानमे विराजमानकरके उसेपूजते अरु नमस्कार करतेभये १८ अरु उन्होंने (गजकर्ण) ऐसा उत्तम इनकानाम प्रकट अर्थवाला निकाला अरु तिसीके प्रभावसे वे विमान में विराजमान भये स्वर्गको चढ़गये१९ अरु सारेमनुष्योंने (लम्बोदर) इस नामसे मूर्त्ति स्थापन करी अरु सारे श्वापदोंने और उत्तम मूर्त्ति स्थापन करी २० अरु उसे (विकट) इसनाम से पूजनकरतेभये वनको चलेगये अरु पर्वत अरु वृक्षभी और मूर्त्ति स्थापनकर अरु उसेपूजकरके२१ अरु (विघ्ननाशन) ऐसानामकरके पृथ्वीपर स्थितभये अरु तिसीके प्रसादसे वे पर्वत अरु वृक्षविख्यात भये२२ अरुसब पक्षिगणोंने रत्नजडी सुवर्णकी मूर्त्ति स्थापनकरी अरु वो उनसे (गणाधिप)इसनामसे पूजी अरु नमस्कार कीगई२३ अरु सारेसर्पोंने एक गणनायकजीकी मूर्त्ति स्थापनकरी जिसका आवाहनकिया तिससे वो(धूम्रकेतु) ऐसे प्रकटभई२४ अरु सारेजलाशयोंने एकमूर्त्ति स्थापनकरी तो वह (गणाध्यक्ष) इसनाम से प्रसिद्ध

परम उत्सवों से पूजितभई अरु कृमिकीडे आदिकोंके समूहोंने अरु वनस्पति ओषधियोंके गणोंनेभी एकसुन्दरमूर्त्ति परमभक्तिसेस्थापित करीतो वह(भालचन्द्र)इसनामसे विख्यातभई २५।२६ अरु औरहू भी चेतनासहितजीवोंने और मूर्त्ति स्थापनकरी जो रत्नजटित मंदिर में विराजमान जो विनायकजीकी महामूर्त्ति सो भक्ति भावसे पूजा कीगई २७ तो वो गजानन इसनामसे विख्यात सबों को सबसुख देनेवालीभई सो जिन्होनेपूजी वे२ निज२ जातिकरके विख्यातहोते भये२८ अरु देवगणेशजीके प्रसादसे वेसुखी अरु तिस२ कामके पा यभये अरु न्यारे २ नामो के कथन में मेरो सामर्थ्यनहींहै २९ सार२ही लेकरके मैं सहस्रनाम किया है तिनमें भी सारहुये बारे हही कहे हैं ३० जैसे समुद्र मथने से चौदाही रत्न उत्पन्नभये ऐसे ब्रह्मन् व्यासजी ऐसे सक्षेपसेही महिमा वर्णन कियाहै ३१ इसे विस्तार से कहने को तो न शिवजी न मैं अरु न भगवान् सर्पराज अरु इन्द्रसे आदि मच्छरक पर्य्यन्त जीवोंकेमें अरु यक्ष राक्षसों में भी कोईनहीं समर्थहै ३२ तो हे सत्यवती सुत व्यासजी मुझसे तिनकी कयाही गणना कीजावे तिससे सारे कार्य्यों में गजानन जी पूजने योग्य हैं ३३ अरु जो विघ्नविनाशक देवों के देव गजानन जीको नहीं पूजता है वह बुरेमनका अर्थात् दुष्टबुद्धि चांडाल की नाई दूरही परित्यागन करना योग्य है ३४ तो व्यासजीने कहा कि यह बारहही नामोंको क्रम से मुझसे कहिये जिनके पढ़ने अरु सुननेसे सर्वनिर्विघ्नताको प्राप्तहोवे३५श्रीब्रह्माजीबोले (सुमुख) अरु (एकदन्त) (कपिल) (गजकर्णक) (लम्बोदर) अरु (विकट) (विघ्ननाश) (गणाधिप) ३६ (धूम्रकेतु) (गणाध्यक्ष) (भालचन्द्र) (गजानन) इनबारह नामो को जो पढ़ेवा सुनै ३७ विद्या आरंभमें अरु विवाहमें प्रवेशमें अरु तैसेही यात्रामें संग्राम में अरु सङ्कटमेंतो तिसकेविघ्ननहींहोताहै३८जो देवगणेशजीश्वेतवर्ण चन्द्रमा में अर्थात् श्वेतहीवर्ण वाले अरु जो प्रसन्न मुखतिन्हें मनुष्य विघ्नोंकी शांतिके लिये ध्यावे अर्थात् सब कामों में तिनका स्मरण

करें ३९ अरु करोड़कन्याओंके दान अरु करोडों यज्ञ, व्रत, अनसारे तप अरु तीर्थ, अरु यज्ञ स्थान ४० अरु सुवर्ण के सहस्रों भार अरु जितनेकी करोडोंभी दानहैं अरु जो कृच्छ्र तप्तकृच्छ्र ऐसे२ जोपरम कष्टवाले चांद्रायण व्रतहैं सो ४१ उन सहस्र नामोंके पुण्य के सोवें भागकोनहीं पहुचते जो इन्हें प्रातःकाल उठकर पवित्र होकरसाव-धानभया मनुष्य भक्तिसे पढ़ै तौ तिसनरको विघ्ननहीं होते हैं ४२ अरु तिसके सारे कार्य्य सिद्धहोवें अरु अंतमें वह मोक्षको प्राप्तहो-ताहै ४३ तिसके दर्शनसेही लोक अरु देवभी पवित्र होजाते हैं इसीसे हे मुने व्यास सूर्यमतवाले शाक्तिक शैवि वैष्णव ४४ ये सबभी बारहनामों को पढकर सब कामकरते हैं फिर गणेश मत वालेभी करें इसमें तो आश्चर्य्यही क्या है ४५ अरु इनबारहों से भी कार्य्यसिद्ध नहींहोते उच्चारण कियेबिना तिससे हे ब्रह्मन्‌बारह नहो तो एकहीको सम्यक् उच्चारणकरे ४६ अरु ओर २भी जो२दुष्ट नास्तीकोंके भी कार्य्यसिद्ध होते हैं वेभी अज्ञानसेही बीज अर्थात् (ग)उसे उच्चारणकरके कार्य्यकरते हैं ४७ हेमुने ऐसे तुमको येनि-श्शेषसे महिमा कहाहै अरु उपासना फलभीनानाप्रकारका यथा मतिनिरूपण किया ४८ जितना हमसे विष्णुजी ने कहाथा तितना तुमको सुनादिया सोकिवेभी इस गणेशजी की उपासनाके अंतको नहीं प्राप्तभये ४९ कि तिनसे गणेशजीके नामोंका महिमा पूरा न भया भृगुजी बोले कि हे राजन् सोमकांत ऐसे हमने तुमसे अद्भुत महिमा वर्णन कियाहै ५० जो प्रसन्नभये ब्रह्माजी करके व्यासजी को निरूपण कियागया सोही उपासनाखण्ड हे नृप सोमकांतहम ने तुमसे वर्णन कियाहै ५१ जो तेरी ओर भी श्रवणकरनेकी श्रद्धाहै तोहम ओरभी वर्णनकरें हे सोमकांत जोकि गणेशजीका पाप ना-शक चरित्रहै ५२ सूतजी बोले कि हे शौनक आदि महर्षियो यह हमने गणेशजीका उपासन वृत्तांत जो नानाप्रकारोंकी ओर२ भी कथाओंसे संयुक्त सो वर्णनकिया है ५३ जो वेदव्यास मुनिनो से ब्रह्माजीने वर्णन कियाथा अरु राजा सोमकांतसे भृगुजीने कहा था

परम उत्सवों मे पूजितभई अरु कृमिकीड़े आदिकोंके समूहोंने अरु वनस्पति ओषधियोंके गणोंनेभी एकसुन्दरमूर्ति परमभक्तिसेस्थापन करीतो वह(भालचन्द्र)इसनामसे विख्यातभई २५।२६ अरु औरर भी चेतनासहितजीवोंने और मूर्ति स्थापनकरी जो रत्नजटित मंदिर में विराजमान जो विनायकजीकी महामूर्ति सो भक्ति भावसे पूजा कीगई २७ तो वो गजानन इसनामसे विख्यात सबों को सबकाम देनेवालीभई सो जिन्होंनेपूजी वे२निज२ जातिकरके विख्यातहोते भये२८ अरु देवगणेशजीके प्रसादसे वेसुखी अरु तिस२ काममें प-रायणभये अरु न्यारे २ नामो के कथन में मेरो सामर्थ्यनहींहै २६ सार२ही लेकरके ये सहस्रनाम किया है तिनमें भी सारहुये बार-हही कहे हैं ३० जैसे समुद्र मथने से चौदाही रत्न उत्पन्नभये थे हे ब्रह्मन व्यासजी ऐसे संक्षेपसेही महिमा वर्णन कियाहै ३१इसे वि-स्तार से कहने को तो न शिवजी न मैं अरु न भगवान् समर्थहैं अरु इन्द्रसे आदि मशक पर्य्यन्त जीवोकेमें अरु यक्ष राक्षसों में भी कोईनहीं समर्थहै ३२ जो हे सत्यवती सुत व्यासजी मुझसे तौतही क्याहीं गणना कीजावे तिसपसे सारे कार्य्यों में गजानन जीही पूजने योग्य है ३३ अरु जो विघ्नविनाशक देवों के देव इन गणेश जीको नहीं पूजता है वह दुरमनको अर्थात् दुष्टबुद्धि चांडाल की नाई दूरही परित्यागन करना योग्य है ३४ तो व्यासजीने पूछा कि यह बारहही नामोंको क्रम से मुझसे कहिये जिनके पढ़ने अरु सुननेसे सबनिविघ्नताको प्राप्तहोवे३५श्रीब्रह्माजीबोले कि(सुमुख) अरु (एकदन्त) (कपिल) (गजकर्णक) (लम्बोदर) अरु (वि-कट) (विघ्ननाश)(गणाधिप)३६ (धूम्रकेतु) (गणाध्यक्ष) (भाल-चन्द्र) (गजानन) इनबारह नामों को जो पढ़ेया सुनै३७विद्याके आरम्भमें अरु विवाहमें प्रवेशमें अरु तैसेही यात्रामें संग्राम में अरु सङ्कटमेंहो तिसकेविघ्ननहींहोताहै३८जो देवगणेशजीश्वेतवर्णवाले चन्द्रमा से अर्थात् श्वेतहीवर्ण वाले अरु जो प्रसन्न मुखहैं सम्पूर्ण विघ्नोंकी शांतिके लिये ध्यावे अर्थात् सब कामों में तिनका स्मरण

करे ३९ अरु करोडकन्याओंके दान अरु करोडों यज्ञ,व्रत, अरुसारे तप अरु तीर्थ,अरु यज्ञ स्थान ४० अरु सुवर्ण के सहस्रों भार अरु जितनेकी करोडोंभी दानहैं अरु जो कृच्छ्र तप्तकृच्छ्र ऐसे२ जोपरम कष्टवाले चान्द्रायण व्रतहैं,सो४१ उन सहस्र नामोंके पुण्य के सोलव भागकोनहीं पहुचते जो इन्हें प्रात काल उठकर पवित्र होकरसाव-धानभया मनुष्य भक्तिसे पढ़ै तौ तिसनरको विघ्ननहीं होते हैं ४२ अरु तिसके सारे कार्य्य सिद्धहोवें अरु अतमें वह मोक्षको प्राप्तहो-ताहै ४३ तिसके दर्शनसेही लोक अरु देवभी पवित्र होजाते हैं इसीसे हे मुने व्यास सूर्यमतवाले शाक्तिक शैव वैष्णव ४४ ये सबभी बारहनामों को पढ़कर सब कामकरते हैं फिर गणेश मत वालेभी करें इसमे तो आश्चर्य्यही क्या है ४५ अरु इनबारहों से भी कार्य्यसिद्ध नहींहोते उच्चारण कियेबिना तिससे हे ब्रह्मन्बारह नहो तौ एकहीको सम्यक् उच्चारणकरै ४६ अरु और २भी जो२दुष्ट नास्तीकोंके भी कार्य्यसिद्ध होते हैं वेभी अज्ञानसेही बीज अर्थात् (ग)उसे उच्चारणकरके कार्य्यकरते हैं ४७ हेमुने ऐसे तुमको येनि-श्शेषसे महिमा कहाहै अरु उपासना फलभीनानाप्रकारका यथा मतिनिरूपण किया ४८ जितना हमसे विष्णुजी ने कहाथा तितना तुमको सुनादिया सोकिवेभी इस गणेशजी की उपासनाके अतको नहीं प्राप्तभये ४९ कि तिनसे गणेशजीके नामोंका महिमा पूरा न भया भृगुजी बोले कि हे राजन् सोमकांत ऐसे हमने तुमसे अद्भुत महिमा वर्णन कियाहै ५०जो प्रसन्नभये ब्रह्माजी करके व्यासजी को निरूपण कियागया सोही उपासनाखण्ड हे नृप सोमकांतहम ने तुमसे वर्णन कियाहै ५१ जो तेरी और भी श्रवणकरनेकी श्रद्धाहै तोहम औरभी वर्णनकरें हे सोमकांत जोकि गणेशजीका पाप ना-शक चरित्रहै ५२ सूतजी बोले कि हे शौनक आदि महर्षियो यह हमने गणेशजीका उपासन वृत्तांत जो नानाप्रकारोंकी और२ भी कथाओंसे संयुक्त सो वर्णनकिया है ५३ जो वेदव्यास मुनिजी से ब्रह्माजीने वर्णन कियाथा अरु राजा सोमकांतसे भृगुजीने कहा था

जो पापनाशक ५४ सो इसगणेशजीके उत्तम पुराणको श्रवण करै तौवोसारी आपत्तिछोडकर अरु बहुतसे भोग २ करके ५५ पुत्रपौत्र संयुक्त अरुज्ञान विज्ञानसे सहित भया गणेशजीके प्रसादसे परम मुक्तिकोप्राप्तहोवे ५६ सोकि तिसकी सैंकडोकरोड कल्पोंसे भी पुन आवृत्ति अर्थात् फिर आगमननहीं होताहै अरु जो परम भक्ति से श्रवण करावे सोभी यथोक्त फल भोगनेवाला होवाहै ५७ जोकि परम आदरसे श्रवण करते सोमकांतने पायाथा ५८ ॥ इस प्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्ड में श्रीब्रह्माजी व्यासजी के अरु भृगुजी सोमकांत के संवादमें श्रीगजाननजीके नामों का निरूपण इसनामसे बानवेअध्याय हुआहै ९२ ॥

उपासना विषयिक पूर्वखण्ड समाप्त हुआ।

श्रीगणेशायनम ॥

अथगणेशपुराणभाषायां ॥

—*—

उत्तरखण्ड प्रारम्भः ॥

तत्राऽपि मंगलाचरणमिदम् ॥

हेरम्बोम्बाथब्रह्माहरिपशुपतयो भास्कराद्याग्रहाये। पञ्चैतेलोकपालादशकसुगणितादिक्प्रपायेमहान्तः ॥ मेषाद्याराशयश्चाश्विमुखवरमुखाद्याश्चनक्षत्रतारा। योगाविष्कुंभकाद्यानिखिलसुरवराः पान्तुमामत्रनूनम् १ उपासनाःपूर्वखण्डे प्रोक्ताःसम्यक्समासतः। अत्रलीलाःप्रकथ्यन्ते श्रीगणेशेनयाकृताः २ क्रियतेविवृतिस्तत्रमया ज्ञेनयथामति। शुक्रदेवीसहायेन सहायेनमनीषिणाम् ३ ॥

अथ विघ्नघ्ने भाषा मां दोहा छन्द ॥

दो० प्राण समान पुराण मे प्रेर्यो जिन मनमोर।
सोजगमेंयुगयुगजियो यशतनुनवलकिशोर ४

पहिला अध्याय ॥

रुद्रकेतु द्विजको नारदजी से उपदेश होना वर्णन कियागया ॥

मुनीश्वर बोले कि हे महा मतिमान् सूतजी आपने बहुत श्रेष्ठ प्रकारसे आख्यान वर्णनकिया अरु हमने भी उसे आदर से श्रवण किया पर हम तृप्तिको प्राप्त नहींभये हैं १ जैसे प्राणी प्रतिदिन अन्नखाताभया भी तृप्तनहींहोताहै अर्थात् क्षुधा वो नित्य२ लगती हीहै इससे आप और कोईकथा प्रसंगकहो जिससे हम तृप्तहोवें२ श्रीसूतजी बोले कि हमने उपासना खण्ड तुमसे कहा अरु अब

जो पापनाशक ५४ सो इसगणेशजीके उत्तम पुराणको श्रवण करै तोवेसारी आपत्तिछोडकर अरु बहुतसे भोग २ करके ५५ पुत्रपौत्र संयुक्त अरुज्ञान विज्ञानसे सहित भया गणेशजीके प्रसादसे परम मुक्तिकोप्राप्तहोवे५६ सोकि तिसकी सैकडोंकरोड कल्पोंसे भी पुन आवृत्ति अर्थात् फिर आगमननहीं होताहै अरु जो परम भक्ति से श्रवण करावे सोभी यथोक्त फल भोगनेवाला होताहै ५७ जोकि परम आदरसे श्रवण करते सोमकांतने पायाथा ५८॥ इस प्रकार से श्रीगणेशपुराण उपासनाखण्ड में श्रीब्रह्माजी व्यासजी के अरु भृगुजी सोमकांत के संवादमें श्रीगजाननजीके नामों का निरूपण इसनामसे बानवेअध्याय हुआहै ९२ ॥

उपासना विषयिक पूर्वखण्ड समाप्त हुआ।

अरु दुष्टोंके हटानेमें समर्थ थे १५ सो हे मुनि व्यासजी तुमगणेश जीकी कथा के आश्रय जो उपाख्यान तिसे श्रवण करो जो श्रवण सेही सबकाम फलदाता विष्टरश्रवा अर्थात् विष्णुजीसे कहा गया है १६ विष्णुजी बोले कि गणेशजी युगयुग में भिन्न २ नामोवाले भिन्न वाहन अरु भिन्न कर्म भिन्न गुणवाले अरु भिन्न २ ही दैत्यों को मारनेवाले भये हैं १७ तो सतयुगमें तो सिंहपर सवार दश भुजाधारी तेजस्वरूपी बडे शरीरवाले सबको वरदायी अरु स्वतंत्र (विनायकजी) इसनामसे गणेशजी भये १८ अरु वेही त्रेतायुग में मोरपर चढ़े छ भुज अरु अर्जुनवृक्ष के जैसी छविवाले अर्थात् शुक्ल वर्ण अरु (मयूरेश्वर) इसनाम से तीनोभुवनो में विख्यात गणेशजी होतेभये १९ अरु ये गणेशजी द्वापरयुग में लालवर्ण मूषक वाहन चतुर्भुज अरु सुर नर वरोंसे पूजित (गजानन) इस नामसे प्रसिद्ध भये हैं २० अरुकलियुगमें वही धूम्रवर्ण घोडेपरसवार दोभुजोंवाले अरु (धूम्रकेतु) ऐसे विख्यात म्लेच्छोंकी सेनाओंको नाशकरनेवाले भये २१ सो हे मुने व्यास वे गणेशजी जिस २ दैत्यको हन्तेभये सो सो सब अब मैं कहताहूं कि अंग देश के एकनगर में रुद्रकेतु ब्राह्मण होता भया २२ जो रुद्रकेतु सब शास्त्रार्थके तत्त्वको जानने वाला अरु वेदवेदांग पारगामी अरु समान चित्त अरु अग्निहोत्री अरु देव,गऊ,ब्राह्मणोंका पालक २३ अरु नित्यही ईश्वरका उपासक अरु सारेशास्त्रोंमें कुशल अरु जिसकी (शारदानाम) से पत्नी भई जो रूप चतुराई से शोभायमान २४ तिसके जैसी न तो कोई अप्सराओंमे न आठो नायकोमें जिसके मुखकी छविसे हारा बेचारा चन्द्रमा चिन्ता करके क्षयको प्राप्त होता अर्थात् प्रति दिन घटता रहताहै २५ जो अनेक सुन्दर अलंकारोंसे भूतलको प्रकाश कररही जैसे तारागणों से आकाश मण्डल शोभायमान होवे २६ ऐसी वो शारदानाम शरदीके कमलसे नेत्रवाली शारदा शरदऋतु के महीने में जो शरदके चन्द्रमासे सुन्दर शोभायमान ऐसे समय में वो गर्भ वाली होतीभई २७ तो तिसके शरीरके तेजसे कुछभी न जानपड़ा

क्रीड़ाकाण्ड अर्थात् लीलाखण्ड वर्णन करतेहैं जैसे श्रीगणेशजी ने नानादैत्यों का विशेष से नाश किया है ३ अरु साधु ब्राह्मण गौवो का पालनभी कियाहै सो मैं परम आदरसे कहवाहूंगा तुमनिश्चल चित्तसे श्रवणकरो ४ मुनिबोले कि जितने २ यहपुराण कहाजाता है तितने २ ही सुननेकी इच्छा बढतीजातीहै तिससे तिसकथाको आप सम्यक्कथनकरो जिससे सबलोक इससंसार समुद्रसेशीघ्रही तिरके मोक्षको प्राप्तहोजावें ५ श्रीसूतजी बोले किजो ब्रह्माजीने अमिततेजस्वी व्यासजीसेकहाअरु भृगुजीनेसोमकान्तसेकहाहै सोही सवाद में तुमसेवर्णनकरताहूं ६ व्यासजीनेपूछा किहेप्रभोपद्मयोने ब्रह्माजी आप शुभ गणेशजी के चरित्रको कहो कि जिस २ रूपमें विराजमानहोकर विभुगणेशजी जो २ चरित्र करते भये ७ सो हे ब्रह्मन् कृपावान् आप मेरे वचनसे अवश्य वर्णनकरो मैं इस उपासनाखंडको सुनकरभी तृप्त न हुआ न होताहूं ८ सो कि जिस २ अवतारसे विकटनाम गणेशजी जिस २महादुष्ट दैत्यको हततेभये सो २ उनका कर्म आप कहने को योग्य हो ९ अरु तिनका बाल चरित्र अरुनानाविधिकी लीलाभी वर्णनकरो आपके मुखारविन्दसे श्रवणकरके मेरामन परम आनन्दको प्राप्त होगा १० कमलासन ब्रह्माजी नाना विधिके प्रश्नोंको सुनकरके पूछरहे व्यासजीके अर्थ नानाविधिकीसुन्दरकथाओंकोकथनकरतेभये ११ श्रीब्रह्माजीबोलेहे हे आनन्दकर्त्ताव्यासजी तुमनेअच्छापूछाहैहेप्रभोआदरसेश्रोताके श्रवण करनेसेवक्ताकीभोप्रीतिबढ़तीहै१२इससेपुण्यपणवालेतुमको मुझसेअबाच्य अर्थात्किसीकोनकहनेयोग्यभी कहनाहोगा जैसेकि वक्ता की शक्ति श्रोता में बडीभारीहोतीहै तिससे कहाजावे अर्थात् तुम जो श्रद्धासे श्रवणकरतेहो तो मैं अवश्यही वर्णन करूंगा १३ सो अब मैं तुमसे श्रीगणेशजीका सम्पूर्ण चरित्र वर्णन करूंगा कि जो प्रभु नाना अवतारों को धारणकरके पृथिवी के भारको उतारते भये १४ सोकि नाना विधि के दैत्योंको हतकरके देवोंको निज २ स्थानोंमें स्थापन करतेभये जो गणेशजी साधुवों के पालने में रत

अरु दुष्टोंके हटानेमें समर्थ थे १५ सो हे मुनि व्यासजी तुमगणेश जीकी कथा के आश्रय जो उपाख्यान तिसे श्रवण करो जो श्रवण सेंही सबकाम फलदाता विष्टरश्रवा अर्थात् विष्णुजीसे कहा गया है १६ विष्णुजी बोले कि गणेशजी युगयुग में भिन्न २ नामोवाले भिन्न वाहन अरु भिन्न कर्म भिन्न गुणवाले अरु भिन्न २ ही दैत्यों को मारनेवाले भये हैं १७ तो सतयुगमें तो सिंहपर सवार दश भुजाधारी तेजस्वरूपी बडे शरीरवाले सबको वरदायी अरु स्वतंत्र (विनायकजी) इसनामसे गणेशजी भये १८ अरु वेही त्रेतायुग में मोरपर चढ़े छःभुज अरु अर्जुनवृक्ष के जैसी छविवाले अर्थात् शुक्ल वर्ण अरु (मयूरेश्वर) इसनाम से तीनोभुवनो में विख्यात गणेशजी होतेभये १६ अरु ये गणेशजी द्वापरयुग में लालवर्ण मूषक वाहन चतुर्भुज अरु सुर नर वरोसे पूजित (गजानन) इस नामसे प्रसिद्ध भये हैं २० अरु कलियुगमें वही धूम्रवर्ण घोडेपरसवार दोभुजोवाले अरु (धूम्रकेतु) ऐसे विख्यात म्लेच्छोकी सेनाओंको नाशकरनेवाले भये २१ सो हे मुने व्यास वे गणेशजी जिस २ दैत्यको हन्तेभये सो सो सब अब मैं कहताहू कि अग देश के एकनगर में रुद्रकेतु ब्राह्मण होता भया २२ जो रुद्रकेतु सब शास्त्रार्थके तत्वको जानने वाला अरु वेदवेदाग पारगामी अरु समान चित्त अरु अग्निहोत्री अरु देव,गऊ,ब्राह्मणोका पालक २३ अरु नित्यही ईश्वरका उपा- सक अरु सारेशास्त्रोंमें कुशल अरु जिसकी (शारदानाम) से पत्नी भई जो रूप चतुराई से शोभायमान २४ तिसके जैसी न तो कोई अप्सराओंमें न आठो नायकोमें जिसके मुखकी छविसे हारा बेचारा चन्द्रमा चिन्ता करके क्षयको प्राप्त होता अर्थात् प्रति दिन घटता रहताहै २५ जो अनेक सुन्दर अलकारोसे भूतलको प्रकाश कररही जैसे तारागणों से आकाश मण्डल शोभायमान होवे २६ ऐसी वो शारदानाम शरदीके कमलसे नेत्रवाली शारदा शरदऋतु के महीने में जो शरदके चन्द्रमासे सुन्दर शोभायमान ऐसे समय में वो गर्भ वाली होतीभई २७ तो तिसके शरीरके तेजसे जानपड़ा

और वो रुद्रकेतु तिसकी गर्भवांछा अर्थात् भोजनों को पूर्ण करता रहा जो २ कि वो पतिव्रता कामना करती भई २८ ऐसे वो नवें महीनेमें जोडलेदो पुत्र उत्पन्न करतीभई जो अत्यंतही प्रकाशवाले अरु मनको बधानेवाले वे दोनों उनदोनोंकेमनकेसन्मोदकभये २६ अरु जो गोडोंतक भुजोंवाले अर्थात् दीर्घबाहु अरु दृहन्नेत्रों वाले ऐसे इन्हेंदेखकर पितावोला कि अब मैं ऋणरहित भया अरु अब मेरातप धन्यभया ३० अरु वशभीधन्यहै जन्मधन्यहै जो मैंने पुत्र देखेहैं फिर उसने अर्घआदि उपचारों से पहिले गणेशजी को पूज द्विजश्रेष्ठोंको पूजितकिये ३१ अरु तिनसे स्वस्तिवाचन करातामया अरु षोडश मातृकाओं का पूजन पूर्व में जिसके ऐसा नान्दी श्राद्ध करके ब्राह्मणों सहित तिनका जातकर्म करवाभया ३२ अरुभक्ति से द्विजों को पूजकर अनेक से दानदेता भया अरु वस्त्र, रत्न, धन आदिकोंसे प्यारोंका सन्मान करवाभया ३३ अरु नानाबाजों के शब्दोंसे घर घरमें शक्कर अरु ताम्बूल वँटवाता भया जो पुत्रों के जन्मसे परम आनन्दको प्राप्त होरहा रुद्रकेतु ३४ जैसे ध्यान में परायणयोगी उत्तम श्रेष्ठवस्तु पायके प्रसन्नहो फिर दशदिन बीते उसने ब्राह्मणोंको बुलाकर३५ अरु तिन्हें परम भक्ति से पूजकरके ज्योतिषशास्त्रवेत्ता तिन ब्राह्मणोंसे पूछताभयाकि हेद्विजश्रेष्ठो इनका नामक्या कर्त्तव्यहै३६ सो आप भूत भविष्यतके ज्ञानसे विचारकर मुझसे कहो तो वे समाधिध्यानसे विचारके बोले कि (देवान्तक) अरु (नरान्तक) ये इनकेनाम यथानुकूल हमारे मानेतु है यहसुन कर वो द्विजभक्तिमें परायण रुद्रकेतु उनकावचन सुनकर ३७।३८ अपने शास्त्रके अनुकूल तिनके तैसेही नाम रखताभया अरुब्राह्मणों को सब नगरवालोंकोभी भोजनकराता भया ३६ तब तो वे सुमेरु अरु मन्दराचलके समान वलसे वधे जैसे जलनिकट वधे ताड़वृक्ष तथा बांसबधेहों तो जहां २ यह सहजहीसे पैररखते तो पातालमें भीस्थित शेषनी के शिर नम्रहोतामया ४०।४१ अरु सूर्य मण्डल उनलड़केभयोंके शिरसे लगाहुआहो दीखताथा ऐसेही वे दोनों तिन

मातापिताओंको अत्यवहीकौतुक दिखाते४२तो कभीकबिनकारण-
ही नारदजी उस रुद्रकेतुकेघरआये वो उनवालकोंकी कीर्तिसुनकरके
तिन्हें आश्चर्य्य से उठाकर ४३ अरु मस्तक चूम गोद में बिठाकर
अरु तिनके मा वापोंमे श्रीनारदजीबोले कि मैं इन पुत्रोंकी सुन्दर
आश्चर्य्यरूप कीर्ति सुनकर आयाहू ४४ अरु आगे इनकी औरभी
अत्यंत आश्चर्य्य कीर्ति होवेगी सो हे महामुने तुम्हारा वडाभाग्य
जो ऐसे पुत्रपाये हैं ४५ जो इन्हें देखतेही और पुरुषभी हर्ष को
प्राप्तहोताहै तो निज जनको तो क्याही बातहै वो रुद्रकेतु नारदजी
करके कहे ऐसे सुन्दर वचन को श्रवण करके ४६ वे दोनो माता
पिता मुनिनारदजीको नमस्कार करके वोले कि आपके प्रसाद से
इनपुत्रोंकी भले प्रकार बहुत आयुहोवे ४७ अरु जैसे ये अत्यवल
वाले लोकमें विख्यात सर्ववेत्ता शत्रुवोंको दंडदायकहों आपतैसेही
अनुग्रहकरो ४८ ब्रह्माबोले वे नारदजी रुद्रकेतु शारदा के पुत्रोंकी
ऐसी भक्ति देखकर के उनदोनोंको पाच अक्षरोंका महामंत्र उपदेश
करते भये ४९ बोले कि हेपुत्रो इस महाविद्या से तुमकाम के शत्रु
शिवजीको प्रसन्नकरो ऐसे कहके इनके मस्तक पर अभय हाथधर
कर अरु अनुष्ठान बतातेभये ५० महामुनि नारदजी उसरुद्रकेतुसे
ऐसे कहकर हे ब्रह्मन् व्यासजी दिव्यदर्शन वाले अन्तर्द्धान भये ५१
तब तो मुनि नारदजी के अन्तर्द्धान भये मा बापों से कहने लगे
कि हमें अनुष्ठान के लिये आप आज्ञादेवो इस प्रकारसे श्रीगणेश
पुराण उत्तरखण्ड में नारदजी का उपदेश इसनाम से प्रथम अ-
ध्यायहुआ ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

नरांतक सुरांतक दोनोंकी शिवजी का वर्णन होना ॥

व्यासजीने पूछा कि हेब्रह्माजी फिर उन्होंने अनुष्ठानकिया सो
सब बिस्तारसे आदर सहित पूछने मुझसे वर्णनकरो१ श्रीब्रह्माजी
बोले कि हे व्यास तुमने अच्छा पूछा मैं अब सबतुमसे कहूगा कि

देवांतक नरांतकदोनों जैसे अनुष्ठान करतेभये२ सो कि वे दोनों मा
बापोंकीआज्ञालेकर गहनवनकोगये जो वननानावृक्षबेलोंसे व्याप्त
अरु जहा पवनकी भी गम्यनहींथी३ अरु जो वापी सरोवर सहित
पुष्प पत्रोंसे शोभायमान अरु भारीवन पर्वत नानापत्थरोंवाला
४ वो ये दोनों तहा स्थितभये महातप प्रारभ करते भये वे एक
अंगुष्ठ करके निश्चल चित्तसे तहांबैठे ५ जो नारदजीसे कही शुभ
पंचाक्षर विद्याको जपरहे अरुदेव शंकरजीकोध्याते हजार वर्षतक६
जो निराहार पवनभोजी दोसहस्र वर्षतक अरु वे एक सहस्रवर्ष
पके पत्रही खातेभये ७ ऐसेही उनको जपते२ दशसहस्र वर्षबीते
जब उनका भारीतपवधा तबतो उनके तेजसे ८ सूर्यभी मंदकिरण
वाला होगया जो वे भस्मरमेशरीर अरु व्याघ्र चर्म गजचर्म रुद्राक्ष
माला इनको धारण करते ९ शंभुजीको त्र्याकाल में पत्र पुष्पोंसे
पूजते तो हे तात व्यासजी तिसतपोवनमें तिनके अद्भुत तेज करके
१० जातिसे स्वाभाविक वैरवालेभी सिंह गजादिक वैररहितहो-
गये ऐसे उनके तपसे प्रसन्न भये पंचमुख त्रिनेत्र शिवजी ११ जो
दशभुज पार्वती वामाग जिनके व्याघ्र गजचर्म त्रिशूलधारी अरु
शिरपर गंगाजीकोधरते अरुदहिनेहाथमें डमरूको धारणकरते१२
नागोंकेहार पहिरे रुण्डमाल से सजागल जिनका बैलपै चढ़े नील
कंठ कांतिसे प्रकाशितकिया आकाश जिन्होंने १३ नानाभूषणों
से संयुक्त श्वेतशरीरी चन्द्रशेखर तो वे दोनों ऐसे इनदेव शिवजीको
देखकरके उत्तम आनदको प्राप्तभये१४ तो वह नाचे फिर साष्टांग
प्रणाम करतेभये अरु बांधा अंजलि सम्पुट जिन्होंने ऐसे वे दोनों
उनदेव शिवजीको ऐसेबोले १५ हेदेव हमारे मा बाप धन्यहैं अरु
जन्म नेत्र तपभी धन्य हैं अरु कुल देह पै भी धन्य हैं जिस कारण
से आप महेश्वरजी देखेगयेहो १६ जो आप वेदांत अगोचरअर्थात्
ग्रहण नहीं किये जावो अरु अगम्य अर्थात् वेदांतों की जहां पहुँच
नहीं अरु वाणी जिनसे उलट लौटआई अर्थात् कहनसकी अरु
जहां शास्त्रकों अरु आगम [illegible] अपहोरहे १७ अरु मैं

स्तुति करनेको सहस्र शिरवाले शेषजी अरु सनकादि मुनि ये भी समर्थ नहीं हैं अरु सब जगत्के कर्त्ता रक्षक संहारक अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशयेभी समर्थ नहीं हैं१८ अरु जो आप रकनाम तुच्छजन को राजाकरो अरु राजाको रंककरो अरुसर्प्पको बाजुबंधकरो अरु भुजबंधको सर्पकरो मरेको जीताकरो अरु जीतेको माराकरो१६ अरु जो निर्द्धन को धनयुक्तकरो अरु धनीको अधनीकरो तब वे शिवजी ऐसी उनकी वाणीको श्रवण करके उमापतिजीबोले २० अच्छा २ मैंने तुम्हारा अमृतसा वचन सुना है अरु मैं वृषभ पर चढा उमा से सहित तुम्हारे तपसे प्रसन्न भयाहूं सो मैं तुम्हारी भक्ति निष्ठासे प्रसन्नभयाआयाहूंसो तुम अवसवमनचाहे वरोंकोमांगो२१श्रीब्रह्मा जीबोले कि अघकासुर के शत्रु शिवजीके ऐसे वचन को सुनकर वे दोनो २२ देवांतक नरांतक हर्षसे गद्गदवाणी करके कहतेभये कि हेदेवेश जगदीश्वर सबके ईश जो आप प्रसन्न भयेहो २३ जो आप से वरदेने योग्य हैं अरु जो हम आपसे अनुग्रह कियेगये हैं तो हमारी देव मनुष्य इन्द्र यक्ष राक्षस पिशाच से २४ अरु ग्रह नक्षत्र भूतोसे दानव अरु असुरों से मनुष्य सर्प गंधर्व अप्सरा किन्नरों से भी अरु सारेशस्त्र अस्त्रोंसे अरु वनवासी ग्रामवाले पशु आदिकोंसे मृत्युकभी नहींहोवे अरु न दिन रात्रि में कृमि कीट पतंग आदिकों से हमारी मृत्युहोवे२५ ।२६ हेजगदीश्वर आपके प्रसादसे हमारी इतनो से मृत्युनहोवे अरुहमको त्रिलोकीकाराज्य अरु निज चरण भक्तिभीदेवो२७ब्रह्मावोले कि तिनके तपसे प्रसन्न शिवजी तिनके सारेवरोंको श्रवणकरके निजभक्तोंके कल्पवृक्ष त्रिशूलधारी शिवजी बोले कि जो२ जैसे२ तुमनेचाहाहै सो२सवतैसे तैसही होवेगा २८ कि अभय अरु सबसे न मरना अरु त्रिलोकी मे राजा तुम प्राप्तहोवोगे अरु तुमसे यमभी भयको प्राप्तहोवेगा ऐसेकह शिवजी तिनके शिरपर अपना अभय हस्तकमल धरते भये २६।३०ऐसे वे शिव जीसे सारे कामों को प्राप्तहोकर अरु उनसे आज्ञा लेकर शिवजीके अंतर्द्धानभये निजघरको आतेभये३१ उन्हें परिक्रमा करके प्रण

अरु पूजनकरके वो हर्षसे माता पिताओंको देखकर अत्यंत हर्षको प्राप्त दोनों नम्रहोतेभये३२ तो मा बापोंसे स्पर्शकरके अपना वृत्तांत कहतेभये वो पिता उनका मस्तक सूघकर उनसे हर्षसे कहने लगा ३३ कि तुमको सुन्दरवरकी प्राप्तिसे अरु शिवजीके दर्शनसे नगर अरुकुलपवित्रभये अरु सुन्दर महाभारी यश इकट्ठाभया है ३४ हे पुत्रो यह तुम्हारा वृत्तांतसुनतेही मेरेसबअंग शीतलहोगये अहमेरी अमृत पानसे भी परम अर्थात् अधिक तृप्ती होगईहै ३५ फिर तो मावासे उबटना किये नानाप्रकारका सुन्दर अन्नभोजन करतेभये सो कि पिताकेसाथ अरुवेदशास्त्र कुशल ब्राह्मणोंकेसाथ३६ फिर वो माता उन दोपुत्रोंको नानाप्रकारके अलंकार भूषणों से सजावती भई अरु ब्राह्मणों को भी दानदे तिनसे बहुत अशीश लेकर अरु प्रणामकरके तिन्हें बिदाकरतीभई अरु वे दोनोंपुत्र सुखसे उसरात्रि को बितातेभये ३७ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड में शिवजीसे वरहोना इस नामसे दूसरा अध्याय भयाहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

दोनों द्विजपुत्रोंका इन्द्रसे युद्धहोना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि फिर वे प्रात कालही उठ करके गुरुजीको ध्याय मनायकरके अरु सारे देवताओं को नमस्कार करके नैर्ऋत्य दिशाको चलेगये१तहां मलमूत्र त्यागके अरुदंत जीभको शुद्धकरके अरु न्हायके सन्ध्योपासनकरके फिर वेदोनों निज इष्टदेवोंको पूजते भये२ अरु औरर भी ब्राह्मणोंको भक्तिसे पूजकर धन वस्त्र देतेभये अरु कांसेके पात्र में स्थित घृत अर्थात् छाया पात्रको अवलोकन करके उसे ब्राह्मणको देतेभये ३ जिसमें दक्षिणा गिरीभई फिर निर्मल दर्पण देखकरके अरु सुन्दर वस्त्र पहिरके वे दोनों विचारकरते भये४ तो पहिले बड़ा अर्थात् सुरांतकबोला कि मैंतो शिवजीके वरदानसे स्वर्गके लोकोंको जीतूंगा अरु तिन्हीं शिवजीके प्रसाद से सुन्दरपुलोक अरुपाताललोकको विजयकर५ब्रह्माजीबोलेकि ऐसे पि

निश्चयकर अरु शुभदिनदेखकर एकतो स्वर्गलोक को गया जोवेग
में वायुके समान था ६ तो वो अमरावतीको गया अरु तहांके वन
उपवन तोड़डाले अरु ये पराक्रमी कमर बांधकर इन्द्रके अगाडी
स्थितभया ७ तो तहां दोडते देवताओंका महाभारी शब्दभया कि
ये कोनहैं२ ये कैसे इन्द्रके सन्मुख आयाहै८ इसमनुष्यको दूरकरो
याद्दृढ़बांधो अरु मारो ऐसे वे भागते२ उसकरकेसारे निकालेगये९
वेगसे उड२केअरु फिर पड़२कर तो उनके उड़ान से स्त्रियोंके गर्भ
गिरपडे अरु वृक्षभी उखडे१० अरुसारी पृथ्वी कांपउठी जो पर्वत
वन अरु खान इनसे सहित थी अरु तिनके शरीरके तेजसे वेसारे
सुरश्रेष्ठ काले२होगये ११ जैसे रोगसे जीवागया पुरुष झटही कु-
वर्णपनेको प्राप्तहोता है तैसेही सारे देवता विसके दर्शनसे विवर्ण
पनेको प्राप्तभये१२अरु हेमुने व्यासजी तबतो इन्द्रभी विवर्ण भया
व्याकुलहोगया अरुकई दशोदिशोंको चलेगये अरु कईयुद्धकोतयार
भये १३ कई जो अति धीरजता रहित थे सो सुरोंमे निकृष्ट उसके
शरणभी होगये फिर तो वज्रहाथमेंलिये इन्द्र चारदांतवाले ऐरावत
हस्तीपरे सवारभया १४अरु महाघोर गर्जनाकर्त्ताभया तोत्रिलोक
कम्पितहोताभया अरु खिचेभये उनसुरश्रेष्ठोंको बोला कि क्यादेखते
हो१५जितनेमे ये असुरआये तितनेमेंहीं तुम्हारापुरुषार्थ कहांजाता
रहा तब तो वे संग्रामकेलिये उद्योगकिये अगाडी२ चलतेभये १६
तो देवांतक तिन देवताओं को संग्रामको चाववाले देखकर इन्द्रसे
बोला कि हे इन्द्र तू किसलिये खेदको प्राप्तहोताहै मेरे वरोंको तो
विचारले१७ सोकि यमराजभी भयभीतभया भागताभया अरु मैं
शंकरजीकी आज्ञासे तिनकेके समान समझताहूं १८ अरु ये सारे
देवतो तेरे दृष्टिगोचरहैं सो मेरेसासछोडनेसे अभी भागजातेहैं इस
से शक तुम मेरावचनसुन अरु समझानेसेही मुझे अपने सारेस्थान
देदे अरु जहां कहीं जारहु नहीं तो सबको तजके वृथाही तूमृत्युको
प्राप्तहोगा १९ । २० अरु हे देवतेन्द्र तू (देवांतक) अर्थात् देवोंका
नाश करनेवाला ऐसे इस मेरेनाम को तू कैसे नहीं जानताहै ब्रह्मा

अरु पूजकरके वो हर्षसे माता पिताओंको देखकर अत्यंत हर्षको प्राप्त दोनो नम्रहोतेभये३२ तो मा बापोंसे स्पर्शकरकेअपना वृत्तांत कहतेभये वो पिता उनका मस्तक सूंघकर उनसे हर्षसे कहने लगा ३३ कि तुमको सुन्दरवरकी प्राप्तिसे अरु शिवजीके दर्शनसे जन्म अरुकुलपवित्रभये अरु सुन्दर महाभारी यश इकट्ठाभया है ३४ हे पुत्रो यह तुम्हारा वृत्तांतसुनतेही मेरेसबअंग शीतलहोगये अरुमेरी अमृत पानसे भी परम अर्थात् अधिक तृप्ती होगईहै ३५ फिर तो मातासे उबटना किये नानाप्रकारका सुन्दर अन्नभोजन करतेभये सो कि पिताकेसाथ अरुवेदशास्त्र कुशल ब्राह्मणोंकेसाथ३६ फिर वो माता उन दोपुत्रोंको नानाप्रकारके अलंकार भूषणो से सजावती भई अरु ब्राह्मणों को भी दानदे तिनसे बहुत अशीश लेकर अरु प्रणामकरके तिन्हे विदाकरतीभई अरु वे दोनोंपुत्र सुखसे उसरात्रि को बितातेभये ३७ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड में शिवजीसे वरहोना इस नामसे दूसरा अध्याय भयाहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

दोनों द्विजपुत्रोंका इन्द्रसे युद्धहोना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि फिर वे प्रात कालही उठ करके गुरुजीको ध्याय मनायकरके अरु सारे देवताओं को नमस्कार करके नैऋत्य दिशाको चलेगये१तहां मलमूत्र त्यागके अरुदंतजीभको शुद्धकरके अरु न्हायके सन्ध्योपासनकरके फिर येदोनों निज इष्टदेवोंको पूजते भये२ अरुओर२ भी ब्राह्मणोंको भक्तिसे पूजकर धन वस्त्र देतेभये अरु कांसेके पात्र में स्थित घृत अर्थात् छाया पात्रको अवलोकन करके उसे ब्राह्मणको देतेभये ३ जिसमें दक्षिणा गिरीभई फिर निर्मल दर्पण देखकरके अरु सुन्दर वस्त्र पहिरके वे दोनों विचारकरते भये४ तो पहिले वडा अर्थात् सुरांतकबोला कि मैंतो शिवजीके परदानसे स्वर्गके लोकोंको जीतूंगा अरु तिन्हीं शिवजीके प्रसाद से तुममृत्युलोक अरुपातालछोकको विजयकर५ब्रह्माजीबोले कि ऐसे वे

निश्चयकर अरु शुभदिनदेखकर एकतो स्वर्गलोक को गया जोवेग में वायुके समान था ६ तो वो अमरावतीको गया अरु तहांके वन उपवन तोड़डाले अरु ये पराक्रमी कमर बांधकर इन्द्रके अगाड़ी स्थितभया ७ तो तहां दौडते देवताओंका महाभारी शब्दभया कि ये कौनहैं२ ये कैसे इन्द्रके सन्मुख आयाहै८ इसमनुष्यको दूरकरो याद्दढ़बांधो अरु मारो ऐसे वे भागते२ उसकरकेसारे निकालेगये६ वेगसे उड२केअरु फिर पड२कर तो उनके उड़ान से स्त्रियोंके गर्भ गिरपडे अरु वृक्षभी उखडे१० अरुसारी पृथ्वी कापउठी जो पर्वत वन अरु खान इनसे सहित थी अरु तिनके शरीरके तेजसे वेसारे सुरश्रेष्ठ काले२होगये ११ जैसे रोगसे जीतागया पुरुष झटही कुवर्णपनेको प्राप्तहोता है तैसेही सारे देवता विसके दर्शनसे विवर्ण पनेको प्राप्तभये१२अरु हेमुने व्यासजी तबतो इन्द्रभी विवर्ण भया व्याकुलहोगया अरुकई दशो दिशोंको चलेगये अरु कईयुद्धकोतयार भये १३ कई जो अति धीरजता रहित थे सो सुरोंमे निकृष्ट उसके शरणभी होगये फिर तो वज्रहाथमेंलिये इन्द्र चारदांतवाले ऐरावत हस्तीपरे सवारभया १४अरु महाघोर गर्जनाकर्त्ताभया तोत्रिलोक कंपितहोताभया अरु खिन्नभये उनसुरश्रेष्ठोंको बोला कि क्यादेखते हो१५जितनेमे ये असुरआये तितनेमेंही तुम्हारापुरुषार्थ कहांजाता रहा तब तो वे संग्रामकेलिये उद्योगकिये अगाड़ी२ चलतेभये १६ तो देवांतक तिन देवताओं को संग्रामको चाववाले देखकर इन्द्रसे बोला कि हे इन्द्र तू किसलिये खेदको प्राप्तहोताहै मेरे वरोंको तो विचारले१७ सोकि यमराजभी भयभीतभया भागताभया अरु मैं शंकरजीकी आज्ञासे तिनकेके समान समझताहूं १८ अरु ये सारे देवजो तेरे दृष्टिगोचरहैं सो मेरेत्रासछोड़नेसे अभी भागजातेहैं इस से शक्र तुम मेरावचनसुन अरु समझानेसेही मुझे अपने सारेस्थान देदे अरु जहां कहीं जारहु नहीं तो सबको तजके वृथाही तुमृत्युको प्राप्तहोगा १६ । २० अरु हे देवनेन्द्र तू (देवांतक) अर्थात् देवोंका नाश करनेवाला ऐसे इस मेरेनाम को तू कैसे नहीं जानताहै अथ

बोले ऐसा उसका वचनसुन इन्द्रका हृदय भिन्नभया२१ अरु इंद्रके मुखसे प्रचण्ड अग्नि निकला जैसे अत्यंत तपेतेलमें जल डालनेसे भभकाहोवे २२ फिर तो क्रोधभरा इन्द्र उसेबोला कि तेरे सरीखे कितने२ही दानवोंको मैंने नहीं मारेहैं२३ अब हे खोटे असुर तू वर के गर्वसे यहांचलाआयाहै सो तू अवश्यवज्रकेपातसेहता धरतीपर गिरेगा२४पर तेरेमें ये अन्यपदहै प्रधान जिसमें ऐसा अर्थात् सुरों काहै अंतनामनाश जिससे ऐसा बहुव्रीहिसमास तेरेनाममें महार्थ झीहै फिर तो इन्द्रने तिसे दृढमुष्टिकरके वज्रसे मारताभया२५ तो तिसवज्रकेही सौटूकहोगिरे जैसे कच्चा बरतन छुटके फूटजावे अरु छिदेहैं रोम जिनके ऐसा सुरांतक संग्राममें न व्याकुल अर्थात् सावधानभया ठहरगया २६ तबतो इसनेभी सुरसत्तम इन्द्रके मुष्ठीसे पीठमेंप्रहारकी तिसीसे इन्द्रपृथ्वीपेगिरा जैसे वायुसेहता वृक्षगिरे २७जोही उसके पुरुषार्थको समझकर वलसूदनइन्द्र पलायनहुआ अर्थात्भागा अरु ये तिसकेपिछाडी दौड़ा जैसे सिंह मृगसमूहोंपर झपटे२८तो वो घोरनिजमुखफैलाकरके भागतेभये इन्द्रसेबोला कि क्या अब तू भागताहै वो तेरी अर्थात् टेढ़ी२बतलावन कहांगई२६ हे इन्द्र तूसारे देवगणोंको साथलेकरके संमुखहोजा क्यों श्रेष्ठ शूरवीर पीठदिये भागतेको नहींमारताहै ३० ऐसेकह आपही उसके आगेहोकर उन सुरोंको मारनेलगा सोकि मुखपर चपेट लगाकर विन प्राणभये उनको गिराताभया३१अरु फिर एक२को फिराकर धरतीपर फटकारताभया अरु कइयोंकोलातसेमुष्टिसे अरुकइयोंको कोंहनीकी मारसे प्रहारतेभये३२ अरु कंठ पकड़कर प्राणघातजैसे और सुरोंकोघसीटताभया तो कइयोंकेतोघुटनेकटगये अरुकइयोंके भुजकटगिरे किसीके दोनो गोड़ेकटे तिन्हें भी दूरफेंकताभया ३३ तो कईक तो देवता ऊपरको मुखकिये अरु कईसुर नीचामुख किये पड़े अरु कई मुनीश्वर जानेको मुखका प्रहार करते भये ३४ अरु कईक तर्कना करतेभये दुःखित मनसे कि जगदीश्वर ने अकारण हीये प्रलयका प्रारम्भ कियाहै क्या ३५ तो सारेसुर कटे पड़े जैसे

सिहसे दवाये गजहो फिर तौ जीतनेवाला सुरांतक आप गरजना करताभया ३६ जैसे मेघो के गर्जने से मयूर मण्डली गर्जती होवे भास्कर सूर्य्यजी अपनी भास्करी नामछायाको तेजके अत्यत दूर चलेगये ३७ अरु सारेदेव पलायन होतेभये निज २ स्थानो को छोडकर फिर तौ आप निश्चल चित्तसे इन्द्रके स्थान में स्थित होता भया ३८ तवतौ सारेसुर हिमालय के उत्तम गहरे वनको चलेगये कदमूल फल खातेभये अरु दुःखसे दिन विताते भये ३९ तव तौ अनगिनत दैत्यदानव भूमितलसे दिशाओको गये अर्थात् दिग्विजय करी अरु नानाविधि के उपचारोंसे अरु तीर्थोके लाये जलोंसे ४० अरु नाना ऋषि अरु मत्र समूहो से सुरातकके विषे अभिषेक करते भये सोकि शखभेरि मृदङ्ग दुन्दुभि आदिकोंकेशब्दोसे ४१ तो फिर सारेदैत्य उसराजासे बोले कि तुम्हारे समान दैत्य कुलमे न तौकोई हुआ अरुन होगासो आप हमको आज्ञाकरो४२ब्रह्मावोले ऐसे एक लेही तिसकरके इद्रसे आदि लेकर सारे सुरजीते गये अरु उसीने देवताओकाराज्यकिया अरु अमरावतीकी पालनाकरी४३ फिर तौ वो करोड दैत्योंसे सयुक्त सत्यलोकको गया अरु तहाहीं ब्रह्माजीभी चलेगये जहासारे देवता पहिले गयेथे ४४ वहां भी अपने एक नेताको स्थापन करके वैकुठको जाताभया ब्रह्माजीके वाहन परचढा अरु कभी इंद्रके वाहन ऐरावत पर चढता भया ४५ अरु तिसी से पहिले भगवान् लक्ष्मीको साथलेक्षीर सागर को चलेगये तौ तहा अत्याप्त महादैत्यको स्थापन करके विचारताभया ४६ कि हे दैत्यो मैनेवयार् नहीं जीताहै अव तुमकहो तहा मैजाऊ तौवे बोलेकिदेवो कादेश तौ कोई भी कहीं शेषरहा नहींहै ४७ फिरतौ वो लोकपालों केस्थानमें नानादैत्य जनोंको स्थापन करके निर्भय निश्चिन्त निज अमरावतीकी रक्षाकरता भया ४८ ऐसेही मंत्रियोंके वचन सुन २ कर परमहर्ष से युक्त देवांतक तिनके कहे वाक्यको सम्यक प्रकार करता भया अर्थात् मत्रियों के विचारा नुसार रहताभया ४९ ॥
इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखडमेंसुरातकोपाख्यानतीसराअ०हुआ३ ॥

चौथा अध्याय॥

नरान्तकका विस्तारसे उपाख्यान वर्णन कियाहै॥

व्यासजीने पूछाकि हे ब्रह्माजी आपके मुख से भक्ति पूर्वक मैंने सुना अवहे ब्रह्मन् आप मुझसे नरांतकका कार्य्य वर्णनकरो १ ब्रह्मा बोले कि हे ब्रह्मन् सत्यवतीके सुतव्यास तुम सम्यक सावधान भये श्रवणकरो मैं तुम्हारे परम आदरको देखकर उस वृत्तांतको अभी कहताहूंगा २ सोकि वो नानादैत्य गणोंसे समुक्त नरांतक भूतलमें जाकर अरु राजोंका घमसान करता भया अरु कइयोंको मारताभी भया ३ तो बहुतसे मारे भयोंको देखकर इसराजाकेशरण आयेसो कि इसने जिस २ सेनाकी ओर देखावे २ सब दशोदिशाओंकोभाग गये अर्थात् हारे ४ जैसे ज्ञानहुयेसे अज्ञान अरु सूर्य्यके उदय भये जैसे अंधकार दूरहोजावे ऐसे वो नरांतक सारेभूमिमण्डलको निज वशमें करताभया ५ अरु जो उसके शरण होगये सो वदीय पने से अर्थात् ये नरांतककेही आधीनहैं ऐसे वे निज २ स्थान स्थितहोगये अर्थात् शरण आयोंको इसने न हटाये अरु जो मरगयेथे वो नरांतक तिन्होंके पुत्रोंको करदेनेवाले करके अर्थात् उनसे राज्यलाभविभाग ठैराकर तिन्हें तिनके स्थानोंमें स्थापन करताभया ६ अरु जोराजा युद्धको तयारथे सोभी तिसके सेवक होगये तिनके स्थानोंमें तिसने अपने सलाहीदाने स्थापन किये ७ ऐसे समुद्र वंधेज सहित सारी पृथिवीको पालता भया तो भयके मारेसे त्रस्तभये देव,दानव,किंनर ८ मुनीश्वर पर्वत कन्दराओंमें चलेगये यज्ञ पठनसे वर्जित अरु वेदके छूटनेके दोषकरके मनसेही श्रुतियोंका अभ्यास करते भये ९ अरु भयसे भ्रांतमन भये तपस्याभी करतेभये तब तो नरांतकनेनाग लोकको जीतनेकी इच्छाकर के १० नाना प्रकार की मायाओं में कुशल पराक्रमी दैत्यों को भेजता भया तो वे गरुड रूप होकरगये अरु उन नाग श्रेष्ठोंको भक्षण करतेभये ११ तो अनगिनत उन्होंने भक्षण कियेतव आपशेषजी मणी अरु रत्नलेकर निजनाग पत्नियों

सहित तिसके अगाड़ी आये- १२ अरु बहुतसे सुन्दर दिव्य वस्त्रभी लेकर वे सारे देकर उनअसुरों के साथ मिल्लत करते भये १३ अरु नरांतककी कही शिक्षाको ग्रहण करतेभये सोकि जो वर्षदिनकाकर वोझ अर्थात् लागदेनी थी तिसे अनन्त शिरवाले शेषजीने स्वीकार करी१४तवभीदैत्यनेतहांभीदैत्यवर्य्यकोस्थापनकियाजोअनेकदैत्यो के सहित-तिसे पातालमें सबका अध्यक्ष बनाया १५ अरु नरांतक नेभी पातालस्थ दैत्यको आज्ञाकरी कि जब तू सर्पो की विकारता अर्थात् किसी प्रकारकी ठाढसुने तो तभी हमको दूतकेमुखसेजनाय देना तो हमसब सर्पों को मारदेवेंगे ऐसे वे सारेदैत्य उस सर्वाध्यक्ष को ऐसे शिक्षादेकर सारे मृत्यु लोकमें स्थित नरांतकके पास आये अरु सब वृत्तांत कहते भये अरु नरांतक भी सदा मृत्युलोक अरु पाताललोकसे भये समाचारको देवान्तकके अर्थ भिजवाता भया जो वृत्तांत सब आपसे देखा सुनागया था अरु सारे दायजे जोकि स्वर्गलोकमें दुर्लभथा सो२ सब भेजताभया १६।१७।१८।१९ अरु देवांतकभी नरांतकके लिये भेजताभया जो २ कि भूतलमें दुर्लभथा ऐसे वे दोनो त्रिलोकीके राज्यको परम आनन्दके साथ करतेभये२० तौ राजा सोमकांत बोला कि हे मुने भृगुजी फिर वे दोनों किस रूपकरके अरु किस२ अस्त्र शस्त्रसे अरु किस अवतार करके कैसे मारेगये सो वर्णन करो २१ भृगुजी बोले कि ऐसे ही किया प्रश्न जिनसे ऐसे ब्रह्माजीने भी व्यासजीसे ऐसेही कहाथा सोकि उन्होंने परम हर्षसे जिसकथाको कहीथी तिसी को मैं तुम्हें कहता हूं २२ ब्रह्माजी बोले किवे पराक्रम स्वरूप कठिन जीतेजानेवाले वे दोनों जिसरूपसे मारेगये अरु हेमुने जिस अवतारसे हतेसो सबमैं तुमसे कहताहू मुनेव्यास तुमतिसे आदरसे श्रवण करो २३।२४ ॥ इति श्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें नरांतक सुरांतकोंका विजय इसनाम से चौथा अध्याय हुआ ४ ॥

पांचवां अध्याय॥

अदिती करके तपकरना अरु श्रीगणेशजी करके तिसे निज अवतार होने का वरदेना वर्णन किया है॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि मेराही मनसेभया अत्यन्त बुद्धिमान् पुत्र कश्यप जो पुण्यात्मा धर्म्मशील तपस्वी जितेन्द्रिय १ लोकपर अत्यतही दयावाला अरु दुख शोकदूरकरनेवाला जो भूत भविष्यत् वर्त्तमान को जानता मीचे हैं ध्यानसे नेत्र जिसने ऐसा कश्यप २ अरु जो मनहींसेरचना पालना संहारकरनेवाला अरु वेदान्तपारगामी अरु सब शास्त्रार्थके तत्त्वको जाननेवाला अरु समानहैं लोह पत्थर सुवर्ण जिसके ३ अरु जिसकी (अदितीनाम) से वडीप्यारी पत्नी थी जो सारे लक्षणों से सम्पूर्ण जिसकी उपमावाली कोई स्वर्गलोकमेंभी न थी ४ जो निज पतिव्रतापने के तेजसे सारी त्रिलोकी को भस्मकरने के लिये समर्थ अरु जिसके गुणों को वर्णन करनेके लिये शेषजी निज हज़ारमुखोंसे भी नहींसमर्थहैं ५ जिसे आठोंसिद्धियें गुण प्राप्तिके लिये सेवतीहैं अरु जो निष्पाप अदिति इन्द्रआदि देवताओंको उत्पन्नकरतीभई६ वो मूलमाया स्वरूपिणी ऐसे स्वरूप को धारण किये कभी प्रसन्न मनभई ये प्रसन्न निज पतिको ये कहती भई ७ कि हे स्वामिन् मैं कुछ आपको जनाया चाहतीहू उसे आप कृपा करके कहो ८ हे प्रभोपति विना सती स्त्रियोंका और कोई गति अर्थात् मुख्यपदार्थ नहींहै कश्यपजी बोले कि हे कल्याणरूपे मेरीप्रीति करनेवाली तैंने अच्छाकहाहै मैं वही कहताहूं जो तेरेमनमें है सो पूछ अदितीबोली कि इन्द्रयादिक देव समूह हमारे पुत्रहोगये १० पर परमेश्वर जो सच्चिदानन्द अरु जो परमेश्वर परसेभीपरे जब वो हमारेपुत्र पुत्रपनको प्राप्तहोगा अर्थात् जन्मलेगा तब मेरा मन निश्चिन्त होगा ११ मैंउसकी सेवाकरनी चाहतीहू तिसमें आप उपाय वर्णनकरो जिससे वे पुत्रताको प्राप्त होवें अरु हमारा मन धन्य २ होवे १२ कश्यपजी बोले कि हे बहु

भागिनी तैं प्रसन्नताकारक बहुत अच्छा वचन कहा है जो वाक्य जैसे तृषासे दुःखीको जल अरु जैसे भूखेको भोजनहो १३ तैसेही हेदेवि तुम्हारा वचन मुझको प्रसन्नकारक है पर विन पुण्यके परमात्मा हमारी पुत्रताको कैसेप्राप्तहोवै १४ तिसमें मैं उपायकहता हू हेप्यारी तू तिसे हृदय में स्थिरकर कि जो वेदोकरके नहींजाना जावे अरु जो ब्रह्मादिकोंकाभी अगोचर १५ अरु निर्गुण अहंकार रहित निश्चेष्ट अरु विकल्प रहित जो मायासे परे अरु माया को नचानेवाला अरु मायावालोंकाभी मोहनेवाला१६ अरु जो माया से दूरभयेभी क्रीड़ार्थ मायाके आधार अरु जो कारणसेपरे अर्थात् आपही सबका कारण अरु जो माया विस्तार करनेवाला जो कार्य कारण का भी करताहै १७ सो हे प्रिये वो विन अनुष्ठान के कैसे पुत्रत्वकोप्राप्तहोवै अदितीबोली कि मैं अब किसका अनुष्ठान ध्यान कैसे करूं१८अरु किस मन्त्रसे करू सो हेमुने मुझसेकहिये ब्रह्माजी बोले कि ऐसे पूछेगये कश्यपजी तिसको नाममन्त्र बताते भये १९ जो पञ्चाक्षर अरु चतुर्थी विभक्ति अन्तरों जिसके अरु ॐकारबीज सहित नाम ये हैं अन्तमें जिसके अर्थात् (ॐगजाननायनम) ऐसा जो ध्यान सहित अरु जो न्यास देवतासहित २० अरु सारा पुरश्चरण का मार्ग तिसे बताते भये तबतो हेब्रह्मन् हर्षको प्राप्तभई वो प्रणामपूर्वक २१ निजपति कश्यपजी को आदर से पूजतीभई अरु तिनसे आज्ञालेकर तप के लिये वनको गई २२ वहा न्हायी पवित्र वस्त्रवाली देवदेव विनायक को यथाविधि अंगन्यास करके निश्चल चित्तसेध्याती२३ वृक्ष वेलसंयुक्त स्थानमें जो पवनवर्जित अरु उपद्रव रहित था वहा रोकी इन्द्रिय जिसने सो अदिति शुभ आसनपर विराजमान २४ गणेशजी को स्मरण करती उस परम मन्त्रकोजपतीभई न औरमेंरहे मनसे उनका प्रत्यक्षहोनाचाहती२५ जो निराहार वायु भक्षण करती जप ध्यान मे परायण तो तिसके तप के प्रभाव से सब प्राणी निर्वैरहोगये२६ अरु सारेदेवता भी घर्षणाकोप्राप्तभये अर्थात् निज२मन में डरेअरुविचारतेभये कि ये

किसकोसिद्धकरैंगी ऐसेवोदिति शवन्नपर्यंतकमहातप करती भई २७
तो विनायकजी तिसके वहुविधिकेक्लेशोंकोदेखकर अरुतिसके स्त्री
पनेमे भी ऐसी धीरजता देखकर गणेश जी प्रकट भये २८ तेज के
समूह तिसके आगे जो करोड सूर्य्य सम कान्ति दशभुज गजमुख
कुण्डलोंमे शोभित २९ कामदेव से भी अत्यन्त सुन्दर शरीरी अरु
जोसिद्धि वुद्धिसहित अरु मोतियोंकी माला अरु परशु शख कमल
को हाथों में धारण करते श्रीगणेश जी महाराज ३० अरु जो
सुवर्णकीतगडी अरु कस्तूरी का तिलक धारण किये अरु उदर में
सर्प्पलपेटे अरु दिव्यवस्त्रों से शोभित ३१ तो अदिति ऐसे तेजस-
मूहको अगाडी देखकर अत्यन्त कापतीभई तो नेत्रमीचकर मूर्च्छा
को प्राप्त भूमिपर गिरपडी ३२ अरु जप ध्यानको भी भूलगई अरु
चित्तसे चिन्तती भई कि ये मेरे आगे क्या आगया अरु अब क्या
आश्चर्य्यहोवेगा ३३ कि मैं जप ध्यानकोभी भूलीहूं क्या ये परमे-
श्वर वरदेनेकोही आगयेहैं जो निजतेजसे दशोदिशोंको प्रकाशकर
रहे ३४ ऐसे विचारती वो जब विह्वलभई तो गणेशजी तिसेवोले
(विनायकजी) कि हेदेवि जिसे तू दिनरात चित्तसे ध्याती है मैं वो
देव हूं ३५ तेरी अत्यन्त भक्ति अरु घोरतप देखकर मैं वरदेने को
आयाहूं सो तू जिन २ वरोंको चाहती है सो २ सबमांग ३६ हे
सुन्दरे व्रतवाली मैं तुम्हे तिनसबोंको देऊंगा तेरे इसतपसे प्रसन्न
भया हों ब्रह्मावोले कि तव वो अदिति तिनकावचनसुनकर स्वस्थ
भई ३७ तो अंजलिपुट वांधे दीनभई विनायकजीको प्रणामकरती
भई अरु मनसे सदा न तर्कनेयोग्य देव गणेशजीको ये वोली ३८
(अदिती) कि हे सर्वेश्वर आपही संसार को रचतेहो अरु रक्षाकरते
संहारकरतेहो जो आप देव नित्य निरञ्जन निर्गुण अहंकार रहित
हो३९ जो आप नानाप्रकारके अवतार धारणकरो नित्य योगमार्ग
गम्य सम्पूर्ण अर्थकारी हो सो हे विनायकजी अब आप सौम्यरूप
होकरके मुझे वरदान देवो ४० हेदेवेश जो आप प्रसन्नभयेहो अरु
जो मुझे वरदान देनाहै तो मेरी पुत्रता को प्राप्तहोवो तभी मुझको

धन्यवादहोवे ४१ तिसीसे में तुम्हारी सेवा को प्राप्तहोऊगी अरु साधुवोंकी पालना होवेगी हे देव दुष्टोंकानाश अरु लोकोंको धन्य२ताहो ४२ श्री विनायकजी बोले कि मैं तुम्हारी पुत्रता को प्राप्त होऊगा अरु साधुवों को पालूंगा अरु कण्टकोंको मारूंगा अरु तुम्हारीभी सारी मनवाञ्छा को पूरी करूगा तू निश्चिन्त रह ४३ श्रीब्रह्माजी बोले कि देवोंके देव विनायकजी तो ऐसे कहकर अन्तर्धान भये अरु वो अदिति कश्यपजी पै जाकर सब वृत्तान्त कहती भई ४४ अदितिबोली कि आपकी आज्ञासे में वनमें गई अरु मैंने महाभारी तपकिया अरु तेजस्वरूप गजाननजी वरदेनेको आये ४५ तो मै तिनकेस्वरूपसे डरी तबतो मैंने विनायकजीकी बहुतप्रार्थना करी तो हे मुनिश्रेष्ठजी उन्होने मुझे नाना वरदान दियेहैं ४६ अरु मैं तेरी पुत्रताको प्राप्तहोऊगा ऐसेकहकर वे विनायकजी अन्तर्धान भये फिर मैं आपके बल से सिद्ध मनोरथ भई आपके आश्रम आई हूं ४७ ब्रह्माजी बोले कि मुनिमुख्य कश्यपजी तिसके इसवचनको अरु अमृत के समान उसके वरदान को श्रवण करके उस सहित आप परम हर्षको प्राप्त भये ४८ तो वे दोनो स्त्री पुरुष परमप्रीतिकेसाथ अमृत पानसे आनन्दसहित रमण करतेभये अर्थात् मनोरथ सफल भया ४९ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्डमें श्रीगणेशजीकरके वरदेना इसनामसे पाचवा अध्याय हुआ ५ ॥

छठवां अध्याय॥

श्रीगणेशजी करके अवतार लेना व देवताओंका स्तुतिकरना वर्णन ॥

भृगुजीने कहा कि हे राजन् सोमकान्त तब तो यह पृथ्वी जो दुष्टोंके भारसे पीड़ित भेष बदलकरके ब्रह्माजी पै गई १ सो दीनभई हाथ बांध करके पद्मोत्पन्न ब्रह्माजी से यह कहने भूमि बोली कि हे विधे मैं मलिन होगई अरु दीन अरु यज्ञ व्रतादिकोंसे हीन होगईहूं २ अरु तैसेही इन्द्र सहित ऋषि समूह संयुक्त देवतागण भी स्थान भ्रष्ट होगयेहैं सो मैं अत्यंत भारसे दुःखी भई ब्रह्माजी आप

से धयाथाहै २८ तभी मैं नाना वरदान देकर अब तुम्हारे पुत्रपन को प्राप्तभया सो मैं पृथ्वीके भारको हरूंगा अरु तुम्हारी दोनोंकी सेवाकरूंगा २६ अरु ब्रह्मादिकों को स्थानप्राप्ति अरु दुष्टदैत्योंका नाशभी करूंगा भृगुजी बोले कि ऐसेउसके वचनको सुन आनन्दके आंशू वहानेलगे ३० जैसे चकवा चकवी आकाशमें सूर्यजीको देख हर्षे अरु तभी तिन्हेंबोले कि हमाराबड़ाभारी पुण्यहै३१ जिससेपरमात्मा विनायकजी हमारी पुत्रताको प्राप्तभयेहो अरु हमारेकुलमा बाप अरु जन्म ज्ञानयेभी धन्यहैं ३२ जिसलिये चरअचरजीवोंकेगुरु जो सबकेसाक्षी परमेश्वरविनायकजी जोआकृतिरहितअरुजो नित्य ही आनन्दस्वरूप सत्य गणेशजो सुममेरे पुत्रत्वको प्राप्तभयेहैं ३३ जिसमे ये चराचर जीव लोकसूत्रमें माणिक्योंकी नाईं पोयागयाहै जोसर्वगामी सर्ववेत्ता सोही निस्सन्देह आपहो ३४ अरु आप अब इसपरमरूप सुन्दररूप को उठालेवो अरु बालक का स्वरूपधार कर आप पुतलोंकीनाईं क्रीडाकरो ३५ जब आपको स्वरूपधारणा करनापड़े तब आप उसेधारलेना तो ऐसावचन उसकासुनके अपना रूप छिपाते भये ३६ तो द्विभुजभये सादे बालक से हो धरती में रोनेलगे तो उसशब्द से आकाश पाताल अरु दिशा विदिशाओंको भी गोजाते भये ३७ तिनके शब्दके श्रवण से बांझ भी स्त्री गर्भवती होगईं अरु रससे रहित वृक्ष सरस होगये अरु इन्द्र देवताओं के समूहसहित हर्षताभया ३८ अरु राक्षसोंको भय भया तब धरती वधो तो कश्यपजीने ब्राह्मणों के साथ इन गणेशजी का जातकर्म सन्कारकिया ३६ अरु मधु घृत चटाकर अर्थात् जन्म घूंटी देकर जलसे नहवाकर मन्त्रसे इन्हें स्पर्श करते भये अदितिजी इन्हें वेद मंत्रपाठ पूर्वक स्तन पिलातीभईं ४० अरु नाल छेदन करके उस बालकको रुलातीभईं तब मुनिजीने ब्राह्मणों को धनकादानदिये४१ अरु सातवें दिन अदितिजी घरघरमें गुड़ मिजवाती भईं पांचवें दिन परमहर्षसचायने भेजये अरु दशवेंदिन पिता कश्यपजीने गणेशजी का (महोत्कट) ऐसा नाम रक्खा तो बालक भी शीघ्र बड़ा होते

शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बढे ४२।४३ अरु जिसलिये वे सबमें उत्कट थे तिसीसे वे महोत्कट ऐसे स्मरणकियेगये अर्थात् सबसे उत्कृष्ट मद वालेथे तिससे तैसाही नाम पातेभये ४४ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें कश्यपजी के घर श्रीगणेशजीका जन्महोना इसनाम से छठा अध्याय हुआ ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

देवतोंकरकेस्तुतिकियेगणेशजी करके विरजानामराक्षसीकामोक्षकरनावर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि वशिष्ठ अरु वामदेवआदि मुनीश्वरकश्यपजी के पुत्र महोत्कटजीको जनमे श्रवण करके देखनेके लिये कश्यपजी के घरपर आये १ तो उनसे विष्टरपाद्य अर्घ सुंदरवचन अरु दक्षिणा देकर पूजाकियेगये २ अरु अंजलिपुट बांध करके यह बोले कि मैं मेरे मा बाप अरु तप ये सब धन्य हैं इन्द्र भगवान् से पूजनीय आपका चरणारविन्द मैंने देखा है ३ अब हे तपोधन वालो अब मैं आपके आगमनका कारणजानाचाहताहूं अर्थात् आपका आनाकैसे भया तो तिनके मैं अत्यन्तश्रेष्ठ वशिष्ठजी कश्यपजी से कहते भये ४ वशिष्ठजी बोले कि हे ब्रह्मन् हमने नारदजीसे तुम्हारेपुत्र महोत्कट जीको जनमे सुनेहे सो तिन्हें देखनेको तुम पै आये हैं और कुछ प्रयोजननहींहै ५ ब्रह्माबोलेकि तिससमय वह अदितिजिनके देखनेके लिये उसबालक को लेआई तो वशिष्ठजी कश्यपजीसे बोले कि ये महोत्कटजी बडे२ भारी कर्म्म करेंगे ६ जो बत्तीस लक्षण सहित ये परमात्मा महातेजस्वी विनायक जी अवतार भयेहैं ७ अरु हे महामुनि कश्यपजी इसके अनेकविघ्न भी होवेंगे पर वे सारे आपही नष्ट होजावेंगे पर बालककी क्षण२में रक्षाहीकरनी८क्योंकि इसकेचरण रक्तअरु ध्वजा अंकुशचिह्नोंसे अंकित शोभायमानहैं तबमुनिवशिष्ठ जी उन कश्यपजी के पुत्र गणेशजीको पूजते भये ९ अरु सारे देवों सहित आपने यह प्रार्थनाकरी कि हे देव भूमि भारहरो अरु साधुओंका पालन व दुष्टदानवोंकानाशकरो अर्थात्सबके कार्यकरो १०

तो वे मारेमुनीश्वर तो तिन्हें प्रणाम करके जहांसे आये थे तहांही गये अरु तभीसे वे (कश्यपनंदन)इसनामसे प्रसिद्धभये ११ एकदिन प्रात काल कश्यपजी बाहर नहानेकोगयेथे अरु निजपुत्र गणेशजी को सुवाकर अदिति भी घरकेभीतर गई १२ सो यज्ञकी तैयारी करने लगी तितनेहीमें एकराक्षसी (विरजा)ऐसी विख्यात विकराल दृष्टि मुखवाली १३ हलके ऐसे दांतोंवाली कंदरा सी नासिकावाली पैरों से चूनकिये पर्वत जिसने भारी स्तनोंवाली जीभनिकालती गुफाई को तिरस्कार करनेवाली भगावाली १४ वोही उससर्व भक्षणकरती राक्षसीने बालकको उठालिया अरु भूखीभई शीघ्र इन्हें पके केलेके फलकीनाई खागई १५ फिर धीरे२ आकाशमें चढ़गई फिरजलपीने को भूमिपर आई तो बहुतही जलपिया तब तो फूलेपेट गिरी लोटती भई १६ अरु महामूर्छाको प्राप्त भई जैसे सर्पसे डसानर हो अरु धरतीपर ऐसेलोटी जैसे महाशूलवालीहो १७ अरु छोड़२ ऐसे पुकारती एकपैंडभी चलनेको न समर्थ अरुहाय२ कररही अरु छाती मुंह शिर पीटरही १८ तितनेहीमें तिसके देहकेभीतर वे कश्यपनंदनजी बढ़े तो तिसके उदरको फाडकर तिसकी छाती पर स्थित भये १९ जैसे महामच्छ जालको फाडकर बाहर निकल जावे तो वह खोटी महाशब्द करके प्राणोंको छोड़तीभई २० तो पडते निज शरीरसे पावन वृक्षके वृक्षोंको चूर्णसे करतीभई सो कि वह विरजा तिनकरके विरजानाम रजोगुण रहित अर्थात् निर्विकारी निज धामको पठाई गई अर्थात् विरजा मारीगई २१ क्योंकि कृपासिंधु जगदीश गणेश जोदेखेसते जो ज्ञानमोक्ष दाता फिर मनुष्योंको इस संसार सागर में आवृत्ति कैसेहोवे २२ फिर अपने घरकेकाज करके बाहरआई तो तब बालकको न देखती अत्यन्त दुःखितभई रोनेलगी २३ घर२ में भी देखकर कहीं भी बालक को न पाया तो धरती पर गिरपरी हाहाकार कररही २४ अरुतिसके ऊंचे रुदनको सुनके चौदह२ भी आ२कर रोनेलगीं अरु भयभीत भये सबलोग आदरसे कहतेभये २५ अरु वो सुनै मुखदीनभई अदिति अत्यंत व्याकुल भई आर २

विलाप करनेलगी अरु मुख अरु काजल भरे नेत्रोंको वारवार आं- शुओंसे धोतीभई २६ कि कल्पवृक्षकी नाईं प्राप्तभया मेरावालक किसने कहा पहुचादिया अरु उस जगत्के ईश्वरका वरदान दिया कैसे मिथ्याहोवे२७जो देवने मुझे निरंतर धारण करनेयोग्य अत्यंत प्रेमपात्र पुत्र मुझकोदिया अरु अव किसदुष्टने हरलेलिया मैं अव अत्यंतमूढकैसेहोगई जोमैं ज्ञानकेसमुद्रमे मग्नथी २८ अरु मैं कंचन के पर्वतको पाकरकेभीदरिद्रिणी कैसेहोगईहू ऐसे२ वहविलापकरती अरुमुहँ शिरपीटती २६ आश्रमसे वाहर निकलभगी तोकोशभरपर पडी राक्षसीको देखतीभई अरु तिसकी छातीपर चढे उसवालकको भी देखतीभई ३०जोकि खेलरहा हँसमुख जैसे सचेत अर्थात् वडा कामीहो तो भागती तिसेउठाकरके स्पर्शकरती अरु चूमतीभई३१ अरु आनंदभरी वो वोली कि अवमेरा महाभागहै जो यहमेरावालक दैवयोग से इस राक्षसी के सोने अर्थात् गिरने से न दवा ३२ फिर तो वह वालक सहित स्नानकरके अपने आश्रमपर आतीभई अरु सारावृत्तान्त कहा तो कश्यपजी तिसको सुनके वोले ३३ कि हे प्यारी भूत भविष्यत्का विशेप जाननेवाले मुनियोने जोकहा है सो २ सभी यह उनकेआशीर वचनसे सत्यभया३४ जोयह वालक महापुण्यसे सर्वभक्षणी उस राक्षसीसे वचाहै तव वो इन्होने रक्षा करी अरु अनेक से दान दिये ३५ अरु स्वस्ति वाचन पूर्वक शांति पाठ करवाया अरु अदिति से यह कहा कि इसे तू क्षणभर भी न छोडना अर्थात् मुनियोंकेकहे इसपर विघ्नहोवेंगे ३६ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तर खण्डमें विरजा राक्षसी का मोक्ष होना इस नाम से सातवा अध्याय हुआ ७ ॥

आठवा अध्याय ॥

श्रीगणेशजी से उद्धत अरु धुंधुर इनदोनों दैत्यों का मोक्षपाना वर्णन किया गया है ॥

श्रीब्रह्माजीवोले कि उद्धत अरु धुंधुरदोनो अत्यंतवली दैत्यभारी

से उसशापकी अवधि जाननेको प्रार्थना करताभया २९। ३० तब तो भृगुजीने मुझसे ऐसेकहा कि जब कश्यपजीके पुत्र गणेशजी तुझ को स्पर्श करेंगे तभी तू निज शरीर को प्राप्तहोगा ३१ सो ही अब आप बालक रूप गजाननजी मुझसे जानेगये हो आपही लोकोंके स्वामी हो अरु कर्ता रक्षक संहारक भी आपही हो ३२ अरु जो आप निर्गुण अरु अहंकार रहित अरु भाव अभावके मुख्य कारण अर्थात् होना न होना वर्णजिनके अरु नानाप्रकार के अवतारों से भक्तों के प्रतिपालक आप दुष्टोंके नाशकहो ३३ अरु सर्वव्यापी पूर्ण काम अनेक ब्रह्मांडों के नेता अरु आप मुनियों के भी अगोचर अर्थात् न जानेजाओ अरु मन वाणी से निरूपण भी नहीं किये जावो ३४ ऐसे वो चित्र गन्धर्व बालरूप गजानन जी को पूजा अरु वारबार प्रदक्षिणा नमस्कार करके चलागया ३५ अरु अदिति बालकको ले लाड़कर स्तनपिलाती भई अरु आश्चर्य मन प्रसन्न भई निजआश्रम पै आई ३६ अरु कश्यपजी को प्रणाम करके सब वृत्तान्त कहतीभई वे भी बिस्मितभये इससेबोले कि ये तो परमेश्वर हीहैं ३७ मैं जानताहू कि ये लीला देहधारी मनुष्य शरीरके आश्रयभये और२ भी आश्चर्य२ कर्मोंको ये करेगा ३८ जो कार्य देव राक्षसों करके न कियेजावें अरु प्रसन्नतासे देखनेयोग्य सोही अपना हित चाहनेवाले जनोंको इनकेविषे दृढ़भक्ति करनी चाहिये ३९ इति श्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में चित्र गन्धर्व मोक्ष इसनाम से आठवां अध्याय समाप्त हुआ॥ ८॥

नवां अध्याय॥

हाहा हूहू तुम्बरु गन्धर्वोंकरके श्रीगणेशजी का चरित्र देखा जाना वर्णनहै॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि हे महामुने व्यास मैं बालकस्वरूप गजाननजीका पापहारक और चरित्र वर्णनकरताहूं तुम एकचित्त श्रवण करो १ एकसमय हाहा हूहू अरु तुम्बरु जो वीणा गानमें परायण भगवानके भक्तथे २ अरु जो शंख,चक्र,गदा,पद्म तुलसीमाला इनसे

अलकृत अरु गोपीचन्दन से लिप्त अंगजिनका अरु शुभ पीताम्बर धारीथे ३ तो वे कैलासको जानेवाले कश्यपजी के आश्रमपर आये तो तिनसे अत्यन्त सनमानं किये अरु यथाविधि पूजा कियेगये ४ अरु प्रणाम करके कश्यप जी तिनसे बोले कि विनाहीं परिश्रम से श्रेष्ठोंकीज्ञांकी किसपुण्य से भई जो धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्षदाता ५ मेरा तप अरु जन्म माता पिता ज्ञानआश्रम ये भी धन्यहैं पर आपके चलनेमें मैं प्रयोजन नहींजानता अर्थात् आपने किसलिये ये चलनेका परिश्रम उठायाहै सो आप कहिये ६ वे इनका ऐसा वचन सुनके पूछेगये ये बोले कि कैलास जाने की कामनावाले हम को आपका भी दर्शनभयाहै ७ सो कि हमारापाप तो विलीनभया अरु जन्म सफलहोगया तो हमारेपास ही परमसिद्धि या परमविश्राम अर्थात् अत्यंत सुख होनेवालाहै ८ आज्ञाकरो कि शिवजीके देखने को चावसहित हमजावैं तो तिनका ये वचनसुन तपनिधान कश्यप जी फिरबोले ९ आप विश्राम लेकर अरु कुछ भोजन करके जाओ यहासे न भोजनकरके कोई भी नहींगयाहै ऐसेकह तिन्हें स्नान के लिये जलदेकर रसोई वनवाई १० तो वे मुनिश्रेष्ठ न्हाकरके देवार्चनमें परायण भये अर्थात् पूजा करनेलगे तो देवी, शिव, विष्णु, विनायक इनको पूजकरके ११ अरु विष्णुमय रविजी को ध्याकर मुहूर्त्त कालतक ध्यानहीमें ठहरगये तब बालक विनायकजी बालों के संग बाहर खेलकर १२ भीतर घरमें आये तोही उन्होंने पांचों मूर्त्तिपदेखी तो तिन्हें उठाकर बाहरही फेंककर अग्निगृहमेंआये १३ अरु वे सारे अगमें भस्म रमाकर विलीन होगये अर्थात् लुकगये तो उनब्राह्मणो ने ध्यान करके अपनेर आगे वे मूर्त्ति न देखी १४ तबतो वे सारे आपसमें आश्चर्य्यको प्राप्त यहबोले कि हमारी कर्मकीकारणमूर्त्तियें किसदैत्य ने चुरालई १५ क्या कोईयक्ष, राक्षस, गन्धर्व्व, मूर्त्ति लेनेको आगये हैं अथवा ये आपही हमारे मतकी परीक्षा के लिये अन्तर्द्धान होगईहैं क्या १६ तब तो भारीक्रोध से भरे कश्यप जीपै पूछनेकोआये तुम्हारेघर ध्यानमें लगेभये हमारी मूर्त्तिपंकेसे

[illegible] १७ [illegible] वैरकिये आयी इधर [illegible] इन्हे [illegible] भी इन्हें क्योंकि इस आश्रम में [illegible] १८ [illegible] वचन सुनके अत्यन्त क्रोधभये कश्यप [illegible] करनेवाले इन्हें निश्चय करके १९ [illegible] शिष्योंसे पुकारकर वि हँबोले कि जन्मसे [illegible] तथा २० अब दैवयोगसे यहां कौन चोरहोगया [illegible] कहो तो वे शिष्य ऐसे क्रोधवचन को सुनकर गुरुजी से [illegible] २१ हे स्वामिन् हम चोरनहीहैं तुम्हारा पुत्रही जानते हैं [illegible] अरु औरों के कहने में हमैं भी दोषलगे इसलिये हम सा [illegible] कहतेहैं २२ तो तिनकी वाणीसुनकर लट्ठीहाथलिये मुनी- श्वर पुत्रको देखतेआये अरु अग्नि गृहमें तिसेदेखा २३ तो विनके आगे पकड़लाये तिन्होंने इन्हें शिवरूपदेखे अरु तिनके सन्मुखही क्रोधभरे कश्यपजी इन्हेंबोले कि २४ हेपुत्र तू घीघृतमूर्ति मेरे नहीं पिटेगा तो वे निर्भयबोले कि हेपिताजी हमने तो नहीं खाईहै २५ तुमको सौ२ही मैंसौगन्द खाजाऊं ऐसेकहते बालकजी पिताकेभय से अत्यन्तही रोनेलगे २६ अरु मुखको पसारकर व्याकुलभये भूमि पर गिरपड़े तब तो माताआई तिसे गणेशजीने कहा कि जो मैंनेहैय खाईलिये हो तो मेरे मुहमें [illegible] तब [illegible] मुखमें तिस अदितिने संसारको देखा २७ [illegible] स्मि [illegible] व्याकुल भई भूमिपर मूर्च्छाखाकरगिरपड़ी [illegible] कश्यपजी भी बहुआश्चर्य [illegible] भये २८ [illegible]
वैकुण्ठ अरु वि [illegible] गौरि [illegible]
पर्वत वनोंसे [illegible] जो [illegible]
राक्षस, सर्प इन [illegible]
अरु इन्द्र आदि [illegible]
को भी देखतेभये [illegible]
देतीभई अरु वह [illegible]
करी ३३ अरु मनमें [illegible]

घर, अवतार भयेहैं अरु मै तिन्हैं पीटनेको गया ३४ फिर तो कश्यप जी तिन द्विजोंसे बोले कि भोजन कीजिये यह महाबली बालक मुझ से तो नहीं पीटाजाता ३५ यह तो सबभिन्न मिलित रूपवाला अर्थात् विराटरूप आपहीहै जो तुम्हारी सामर्थहै तो तुम इसेतीव्ररूप से डराओ अरु निज मूर्त्तिकेलिये पीटो ३६ तो वे इनसेबोले कि हम तुम्हारे घरमेंकुछ भी न खावेंगे अन्न वा कन्द मूल फल भी पंचयज्ञके विना ३७ ऐसेकहते भये वे तिसबालकको पांचप्रकार से ही देखते भये सोकि शिव, दुर्गा, सूर्य, विष्णु, गणेशरूप भी तिन्होंको ३८ तो स्थिर चित्तभये उन्होंने इन्हें प्रणामकरी अरु पूजा स्तुति गुणगान किया अरु क्षणमें तो विन्हेंबालक अरु क्षणहीमें पंचरूप देखे ३६ अरुक्षण में महाभयङ्कर अरु क्षणमेंही विराटरूप तब तो तिन्होंने षट्रस अन्न तिनके भाग लगाकर भोजनकिया४० अरु तब तो वे भक्तिसे बालकरूप उन गजाननजीको स्तुतिकरतेभये तीनो अर्थात् हाहा हूहू तुम्बरुबोले कि ये अज्ञानसे त्रिमोहको प्राप्त जगत्संसार चक्रमें भ्रमण करता नाना भेद बुद्धि करके निजरूप से विमुखभया जो नानाविधियोंसे भ्रमाया अर्थात् कोई कर्तव्य कोई अकर्तव्य इससे व्याकुलभया ऐसा यहजगत् अरु जो निज२ कर्मोंके अंकुरोंसे बने नानाप्रकारके फांसोंसेबँधा अरु तिन्हीं कर्मांकुरोंकरके भ्रष्टभया अर्थात् दुर्दशाको प्राप्त सो आपको छोड़कर ऐसा होरहाहै जो आप नानारूप अरूप निर्गुण एकही हैंप्रभो ४०।४१ अरु और जोआप के चरणारविंद में निरन्तर प्रीतियुक्त सद्भक्तहैं वे यज्ञकरतेभी तिनके फलको छोड़कर अरुअपने पराये शरीरोंमें सदा ब्रह्महीको चितते अर्थात् समदृष्टिअरु जो निर्मल तो वे निजज्ञान करके सारे पापको धोकर अरु कर्म्मसे भये सब अंकुरो को जलाकर आपही में प्रवेश होते अर्थात् मोक्षको प्राप्तहो आपमें लीन होतेहैं जैसे सारी नदियें समुद्रमेंहीप्रवेश होतीहैं४३ अरुजोकईक भजनेसे स्नेहभये मनवाले महाभारी सिद्धिको प्राप्तभये तो वे तहांही निमग्नमनपनेसे अर्थात् आसक्त चिन्तना करके आपके चरणारविंदको भूलकर वे कठिनाईसे

उत्तमस्थानको प्राप्तहोकर भी निज अज्ञान वशसेती तहांसे गिरते नहींजानते हैं जो दुर्लभ अमृत को छोड़कर विषपान करते हैं ४४ तिससे जो हमारा भजनशुभहोवे या अशुभपर निरंतरही आपकी स्मरणता अरु आपके चरणों में भक्तिहोवे जो शुभकरनेवाली अरु दुःख दूरकरनेवालीहै अरु ऐसेही आपके कृपादृष्टि से देखनेके वश सेती अमतेभये हमारा इस संसार सागर से निस्तार होजावे अरु सबके आत्मा गणेश जी आपको नमस्कार है ४५ अरु हे भगवन् आपके अवतार जानने को कोई भी समर्थनहीं है कि कितनेहैं अरु कब२ होतेहैं सो हेयोगिजनो के ईश मायाकेईश गुणोंकेईश अल्पत बहुतपनवाले अर्थात् सम्पूर्ण ईश्वर आपको नमस्कार है नमस्कार है हेऐश्वर्यवान् आपकोनमस्कारहै ४६ ब्रह्माबोले कि वे ऐसे कहकर शिवजी के स्थान कैलास को गये पंच मूर्तियों को पूजते अरु विस्मितभये बालचरितको कहतेभये४७ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमें हाहादिस्तुतिवर्णन इसनामसे नवांअध्याय समाप्तभया ६॥

दशवां अध्याय॥

श्रीगणेशजी का यज्ञोपवीत होना अरु तिन्हों से पांच राक्षसों को मोक्षहोना अरु देवनोंकरके इनके नाना नाम रखना वर्णनकिया है॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि तब तो बुद्धिमान् कश्यपजी ने पांचवेंवर्ष श्रीगणेशजीका शुभ चौलकर्मसहित उपवीत संस्कार गृह्यसूत्रोंके विधिकरके करना आरम्भकिया १ तो शुभ लग्न मुहूर्त में वेदपार गामी ब्राह्मणों के साथ तो शिष्य गणोंस बुलाये तहां देव दानव राक्षस ये भी आये २ अरु मुनीश्वर यक्ष नाग तैसेही राजर्षि येभी अरु वैश्य शूद्र ये नानाबलि हाथमेंलिये आये ३ तो तब मनुष्यदेवतोंसे पीछे बहुतसे बाजेबजनेलगे तो कश्यपजीने स्वस्तिवाचन अरु गणेश पूजन किया ४ अरु मंडप का स्थापन अरु मातृकाओं का पूजनकिया अरु नान्दी श्राद्धकिया तैसेही ब्राह्मणोंका पूजनकियाऔ अरु यथायोग्य सुहृज्जनों को बहु दानदिया अरु ऐसेही औरों को

भी वस्त्रदिये अरु पहिले और सबोंनेभी इनको वस्त्र दिये थे ६ फिर होम के अन्तमे कश्यपजी ने ब्राह्मणों का अर्चनकिया अरु अत पट धारणकरके शीघ्रही वेदीपर अग्नि का स्थापनकर कर-बालक को सन्मुखलाये अरु सुन्दरवस्त्रधारी ब्राह्मण इन्हे अक्षतो से अवकीर्ण करते भये अर्थात् शुभमन्त्र पढ२ के इनपर अक्षत वर्षातेभये ७।८ तो तिन्हीं में पांचराक्षस जो ब्राह्मण भेप बनाये वे इनपर अस्त्रों से अर्थात् खोटेमन्त्रपढ इनपर मूठ चलातेभये जो दुष्ट तिनकेप्राणोंको हरनेकी इच्छा करके ६ सो कि वे (विघात) अरु (पिंगाक्ष) अरु (विशाल) अरु (पिंगल) तैसेही (चपल) ये पांचो भारी त्रिपुण्ड खैंचे जो रुद्राक्षमालाओ से शोभायमान १० अरु जलके पात्रलिये अरु जो महामोल्य के वस्त्र धारणकिये सुन्दर तो तिनके अस्त्र से अक्षत फेंकनेसे कुमार गणेशजी का शरीर विशीर्ण अर्थात् कटनेलगा ११ तो गणेशजी तिन्हे दुष्टजानकर आपभी अक्षत पढकर महोत्कटजी उन पाचोपर पाच२ अक्षत फेंकतेभये १२ तो तभी वे निकले प्राण निजरूप के आश्रय भये अर्थात् राक्षस देह हुये भयानक कटेभये दशयोजनतक फैलकर पृथ्वीपर गिरे १३ जैसे इन्द्रके वज्रकेघातसे पर्वतगिरे थे तो महाकोलाहल मचा अरु धूलसे दिशा ढकगई १४ अरु सारो ने कहा कि कपटभेपवाले पांचराक्षस इस बालककरके क्षणसेही कैसे मारे गये येभी नहींजानते १५ न जानें ये पृथ्वीका भार उतारने के लिये परमेश्वरही अवतार ये भयाहै क्या ऐसे तब तो अत्यत गुरु तिन गणेशजी पर ब्रह्मादिक देवसमूहोंने १६ पुष्प वर्षाकरी जो विमानो में बैठे अरु तिन मरे राक्षसों के हटने पर वे ब्राह्मण अरु कश्यपजी १७ उपनयनकिये बालक गणेशजीको वस्त्र मेखला यज्ञोपवीत मृगचर्म अरु दंडभी निज २ मन्त्रसे देतेभये १८ फिर अजलिभर इनका मार्जनकरके अरु सूर्यका मंडल दिखाकर अर्थात् इन्हें उपस्थान करवाकर अरु सबहोम सम्पूर्णकरके कश्यप जी इन्हें गायत्री सुनाते भये १६ सो कि पहिले पाद फिर आधी अरु फिर सारी ऐसे फिर माताने प्रथम भिक्षादई फिर अनगिनत

उत्तमस्थानको प्राप्तहोकर भी निज अज्ञान वशसेही तहांसे गिरते नहींजानते हैं जो दुर्लभ अमृत को छोड़कर विषपान करते हैं ९४ तिससे जो हमारा भजनशुभहोवे या अशुभपर निरन्तरही आपकी स्मरणता अरु आपके चरणों में भक्तिहोवै जो शुभकरनेवाली अरु दुःख दूरकरनेवालीहै अरु ऐसेही आपके कृपादृष्टि से देखनेके वश सेही भ्रमतेभये हमारा इस संसार सागर से निस्तार होजावे अरु सबके आत्मा गणेश जी आपको नमस्कार है ९५ अरु हे भगवन् आपके अवतार जाननेको कोई भी समर्थनहीं है कि कितनेहैं अरु कबर होतेहैं सो हेयोगिजनों के ईश मायाकेईश गुणोंकेईश अत्यंत बहुतपनवाले अर्थात् सम्पूर्ण ईश्वर आपको नमस्कार है नमस्कार है। हेऐश्वर्यवान् आपकोनमस्कारहै ९६ ब्रह्माबोले कि वे ऐसे कहकर शिवजी के स्थान कैलास को गये पंच मूर्तियों को पूजते अरु विस्मितभये बालचरितको कहतेभये९७ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमें हाहादिस्तुतिवर्णन इसनामसे नवांअध्याय समाप्तभया ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी का यज्ञोपवीत होना अरु तिन्हों से पांच राक्षसों को मोक्षहोना अरु देवतों करके इनके नाना नाम रखना वर्णनकिया है ॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि तब तो बुद्धिमान् कश्यपजी ने पांचवेंवर्ष श्रीगणेशजीका शुभ चौलकर्मसहित उपवीत संस्कार गृह्यसूत्रोंकी विधिकरके करना आरम्भकिया १ तो शुभ लग्न मुहूर्त में सदाचार गामी ब्राह्मणों के साथ तो शिष्य गणोंने बुलाये वहां देव दानव राक्षस ये भी आये २ अरु मुनीश्वर यक्ष नाग तैसेही राजर्षि येभी अरु वैश्य शूद्र ये नानाबलि हाथमेंलिये आये ३ सो तब मनुष्यदेवतोंसे पीटे बहुतसे बाजेभजनेलगे तो कश्यपजीने स्वस्तिवाचन अरु गणेश पूजन किया ४ अरु मंडप का स्थापन अरु मातृकाओं का पूजनकिया अरु नान्दी श्राद्धकिया तैसेही ब्राह्मणोंका भोजनकिया५ अरु यथायोग्य सुहृज्जनों को अन्न दानदिया अरु ऐसेही वीरों को

भी वस्त्रदिये अरु पहिले और सबोंनेभी इनको वस्त्र दिये थे ६ फिर
होम के अन्तमे कश्यपजी ने ब्राह्मणों का अर्चनकिया अरु अंतपट
धारणकरके शीघ्रही वेदीपर अग्नि का स्थापनकर कर बालक को
सन्मुखलाये अरु सुन्दरवस्त्रधारी ब्राह्मण इन्हें अक्षतों से अवकीर्ण
करते भये अर्थात् शुभमन्त्र पढ़२ के इनपर अक्षत वर्षातेभये ७।८
तो तिन्हीं मे पांचराक्षस जो ब्राह्मण भेष बनाये वे इनपर अस्त्रों से
अर्थात् खोटेमन्त्रपढ़ इनपर मूठ चलातेभये जो दुष्ट तिनकेप्राणोंको
हरनेकी इच्छा करके ६ सो कि वे (विघात) अरु (पिंगाक्ष) अरु
(विशाल) अरु (पिंगल) तैसेही (चपल) ये पांचो भारी त्रिपुण्ड खैंचे
जो रुद्राक्षमालाओं से शोभायमान १० अरु जलके पात्रलिये अरु
जो महामोल्य के वस्त्र धारणकिये सुन्दर तो तिनके अस्त्र से अक्षत
फेंकनेसे कुमार गणेशजी का शरीर विशीर्ण अर्थात् कटनेलगा ११
तो गणेशजी तिन्हें दुष्टजानकर आपभी अक्षत पढ़कर महोत्कटजी
उन पांचोंपर पांच२ अक्षत फेंकतेभये१२ तो तभी वे निकले प्राण
निजरूप के आश्रय भये अर्थात् राक्षस देह हुये भयानक कटेभये
दशयोजनतक फैलकर पृथ्वीपर गिरे १३ जैसे इन्द्रके वज्रकेघातसे
पर्वतगिरे थे तो महाकोलाहल मचा अरु धूलसे दिशा ढकगई १४
अरु सारो ने कहा कि कपटभेषवाले पांचराक्षस इस बालककरके
क्षणसेही कैसे मारे गये येभी नहींजानते १५ न जाने ये पृथ्वीका
भार उतारने के लिये परमेश्वरही अवतार ये भयाहै क्या ऐसे तब
तो अत्यंत गुरु तिन गणेशजी पर ब्रह्मादिक देवसमूहोंने १६ पुष्प
वर्षाकरी जो विमानों में बैठे अरु तिन मरे राक्षसों के हटने पर वे
ब्राह्मण अरु कश्यपजी १७ उपनयनकिये बालक गणेशजीको वस्त्र
मेखला यज्ञोपवीत मृगचर्म अरु दंडभी निज २ मन्त्रसे देतेभये १८
फिर अजलिभर इनका मार्जनकरके अरु सूर्य्यका [illegible]
अर्थात् इन्हें उपस्थान करवा कर अरु सबहोम [illegible]
जी इन्हें गायत्री सुनाते भये १६ सो कि पहिले
अरु फिर सारी ऐसे फिर माताने प्रथम

आये सबोंने भी इनको भिक्षादई २० फिर इनको अनेक शौचगा- चार उपदेश करके अरु फिर ब्राह्मणों को सम्यक् पूजके तिन्हें वस्त्र सुवर्ण गऊदई २१ मुनिजीने इसभांती अरिष्टकेटलें भक्तिसे इनको दानदिया फिर वशिष्ठजी इन गणेशजीको सभा में ब्रह्माजीके पास लेगये २२ तिन्होंने कमंडलुके जलसे इनको वीर्यग्र इणकिये अर्थात् इनको पवित्र किये अरु सदा प्रफुल्लित कमल जो निज हाथ में था सो इन्हेंदिया २३ अरु तब उन्होंने इनका (ब्रह्मणस्पति) ऐसा यं नाम रक्खा अरु बृहस्पतिजीने इन्हें सम्यक् पूजकर इनका (भार भूति) ये नामकिया २४ अरु कुबेरजीने भी इनको निजगळकी रत्न मालादई अरु पूजकर (सुरानंद) ऐसानाम किया २५ अरु जलोंके पति वरुणने निजफांशदे पूजकर (सर्वप्रिय) ऐसा नाम किया अरु देवों के समूहों के सुनतेभये शंकर जीने भी २६ निज डमरु त्रिशूल दे करके (विरूपाक्ष) ऐसा नाम किया अरु चन्द्रकला देकर इनका (तिन शिवजीनेही इनका भालचन्द्र) ऐसानामकिया २७ अरु सारी रामजी की मातारेणुका ने बालगणेश जी को परशु दिया अरु हर्ष से प्रकटही इनका (परशुहस्त) ऐसा नाम रक्खा २८ अरु फिर सम्यक् पूजकरके उत्तम निज वाहन सिंहदिया अरु अत्यन्त सुंदर (सिंहवाहन) ऐसा नामकिया २९ अरु कहा कि हे विनायक कि तुम शीघ्रही दुष्टों का नाशकरो अरु समुद्र ने द्विजरूप होकर इनको मोतियों की माला दई ३० अरु पूजकरके इनका (मालाधर) ऐसा नामरक्खा फिर आसनकेलिये शेषजीने इनको अपनादेहदिया ३१ अरु तब आप (फणिराजासन) ऐसा इनका शुभनाम रखता भया अरु अग्नि ने इनको निज दाहशक्ति अर्थात् जलानेकी सामर्थ्यदई अरु (धनंजय) ये नामकिया ३२ अरु वायु बलदेकर इनका ऐसे पुकार (प्रभञ्जन) ऐसा नाम रखता भया ऐसे ये सारे देवता यथा शक्ति निज २ प्रियवस्तु देदेकर इनके नाना नाम रखते भये ३३ हेमुने व्यास जिनसबों के कहनेकी शक्ति तो किसीकोभी नहीं पर मदसे मोहित इन्द्रने इनका पूजन नहीं किया था ३४ अरु न कुछ

इनको सुन्दरभेंटदई अर्थात् जिसको ये महाभारी गर्व होरहाथा सो कहते हैं कि ३५ में वृद्ध समृद्ध त्रिलोकी से नमन पूजन किया अरु अमृतभोजी मैं इस लघुबालक को गजेन्द्रपर चढ़नेवाला अरु हरि शिवजी से पूजा किया कश्यप से जन्मे बालकको कैसे शीश नवाऊं ३६ जैसे सिंह तृण नहींखाता समुद्र तलाई के जल को नहीं चाहता अरु कल्पवृक्ष जो सर्वदाता और किसीको कुछ नहीं याचता अर्थात् सब उसीसे याचना करतेहैं ३७ ऐसेही ज्ञानवान् कश्यपजीने तिसका अभिप्रायजानकर तिसीकेहितकी कामनाकरके ये धर्म संयुक्त वाक्य कहा ३८ कि जहां २ आश्चर्यरूप भारीकर्म है अरु जहां गुणोंकी खानि विराजमान है वो ब्राह्मण नमस्कार अरु पूजकेही योग्य है चाहे निर्गुणभी होय ३६ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमें श्रीगणेशचरित्र वर्णनमेंदशवांअध्यायहुआ १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी करके इन्द्रका गर्व खण्डन करना ॥

श्रीकश्यपजी बोले कि येतो मेरेघरपर कोई महापुरुष ही अवतार भया है जो किसीसे भी न कहाजावे अरु तीनों अर्थात् सत्व रज तम इन गुणोंसे हीन अरु नहीं किसीसे आवर्ण किया अर्थात् ढका १ इससे जो कोई विरोध करे तो वो स्थान भ्रष्टताको प्राप्त होगा सो हे सुरेन्द्र इसके आश्चर्य कर्म अब कहताहूं मुझसे तुम श्रवणकरो कि एक भयानक विरजा नाम राक्षसी इसको मारने आईथी सो इसबालकनेही तिसे मारी तो वो दो योजन अर्थात् चार कोश तक फैलकर गिरी २ अरु उद्धत, धुंधु जो महामदवाले दो दानवथे जो शुकका रूपधर इसे मारनेको आयेथे ३ तो पगपकड़ कर शिलपर फटकारे वे गतप्राणभये वे पृथ्वीपरजा गिरे जो विशाल अरु नवांसे देखेगयेथे४।५ तैसेहीचित्र गन्धर्व जलमेंमच्छहो-रहाथा सो इसके शरीर स्पर्शसे ही दिव्य देह ताको प्राप्त भया अर्थात् सुन्दरशरीरी होगयाद् अरु हाहाहूहू तुम्बुरु गन्धर्वोंकेमत्य

को सम्यक् शोधनकरनेकेलिये अर्थात् सतदेखनेको इसीने तिनकी पंचमूर्त्ति चुरालईथी तो आपही तिनके सम्मुख पचप्रकारसेहोगये ७ अरु तुम्हारे सवके सामनें पांचराक्षस मारेही हैं तो मुनिजी का ऐसा वचन सुनके बल वृत्रासुर हन्ता इन्द्र बोला कि जबतक इस के गुणोका ऊचापन हमने नहीं देखा तबतक ये माननेयोग्य कैसे होवे ब्रह्माबोले कि तबतो इन्द्रने वायुको कहा कि तू इसे आकाश मण्डलमें ले उडजा ८।६ तो तिसकी आज्ञा पातेही पवन प्रलयके समान चला जो सारेलोकको झुलाता अरु पर्वतो को भी अत्यन्त भ्रमाता भया १० तो ये लोकोका नाशक अकालही प्रलय प्रारभ कियागया क्या ऐसे भयसे भ्रांत भये ऋषीश्वर कांपनेलगे ११ तो महाबलके साथ वायु तिसबालक को लेनेआया तो तिससे इनका रोमभी न चला अर्थात् वायु तिनके रोमाचकोभीटेढ़ा न करसका १२ तो पवनके निस्सत्वहुये इद्रने अग्निसे कहा कि तू इसबालक को शीघ्रही जला आज तेरीभी सामर्थ्य देखनीहै १३ तो तिसकी आज्ञाको शिरसे स्वीकार करके पवन तिनके पास आया जो तीनों लोकोंको जलातासा प्रलयाग्नि के समान १४ अरु सारे वृक्षोंको भस्मकरनेकेलिये समर्थ अरु सारेसागरोको सुखाता तो सारेजनों को जलाते तिसे देखकर कश्यपजीके नन्दन गजाननजी १५ तिसे तिसीक्षणमें निगलगये जैसे रोगी औषधकीगोलीको निगलजाहो तैसे वह्निकोभी निगले तबतो क्रोधसे लालनेत्रकिये इद्र १६ अपने सहस्त्रनेत्रोसे लोकोको देखते इन्हें देखतेभये तो तितनेही तहां इद्र तिनको भी सहस्त्रसे अधिक नेत्रोवाले देखताभया अर्थात् विराट् रूप देखा १७ जो अनगिन शिरोवाले अरु अनेक मुकुटधरे अनत कर्णो सयुक्त अरु जो अनन्त हाथपैरोंवाले अरु अनत उदारपराक्रमी १८ जो सूर्य, चन्द्र, अग्नि इनतीनो नयनवाले शिखासेव्याप्त अर्थात् आच्छादित किया आकाश जिन्होने सातो पातालहैं चरण जिनके सातोलोकहैं एकमस्तक जिनका १६ अरु जो अनन्त सूर्योकेसमान प्रकाशवाले अनतही तैसेर इन्द्रोसेसेवाकिये अनन्तही ब्रह्मा शिव

संयुक्त अनेक ब्रह्माण्ड हैं रोमोंमें जिनके २० जैसे जडसे शिखातक वृक्षमें पत्ते लगेहोते हैं अरु जैसे उसपत्ते में जन्तु अनगिनतही लगे रहतेहैं २१ तैसेही एक२ रोमांचमें तितने२ही ब्रह्माण्डों से संयुक्त इनगणेशजी को देखता भया तो भ्रांत भया इन्द्र तिन्होंके भीतर बडगया २२ अरु तिन्होंमें तिसने चराचरसहित त्रिलोकीको देखा जैसे वनके केलोंके वृक्षोंमें पत्ते२में फल लटकेहोवें २३ तो शची के पति इन्द्रने तहां अनन्त जगत् देखा तो भ्रांतभया तिन्हींमें भ्रमता भया अरु तिनसे निकलने न पाया २४ तबतो ऐसे भग्न मनोरथ भया इन्द्र तिन्हें मस्तकसे प्रणाम करताभया अरु तब देवोंके ईश्वर गजाननजी से ये प्रार्थना करताभया २५ इन्द्र बोला कि जो आप कश्यपजीके नंदन पृथ्वीके भार हरनेको जन्मेहो जिन आपकी महिमा चितनेमें न आवै तो मेरेतो आपवर्णनीय अर्थात् कहनेयोग्य कैसेहो २६ सो हे देवेश इस अत्यन्त विस्तारवाली कोषसे अबमुझे निकलने देवो जो कुक्षि बारह वर्ष भ्रमते२ भी मुझसे अदृष्टपार हैं अर्थात् पार नहीं दीखी ऐसी २७ अरु महाराज मैंने आपकी कुक्षि में चौदह भवन जो स्थान २ में रोम२ प्रति अर्थात् एक२ रोम में अनेक२ ही ब्रह्माण्ड मैंने देखे हैं ऐसे आप विराट् स्वरूप एक हो २८ अरु जो आपके लघु दीर्घ स्वरूपथे अरु महाविस्तारवालेभी जो थे सोअरु औरभी जो२ सौम्यस्वरूपथे सो२ सबमैंने देखे हैं २९ जो बड़े अद्भुत अरु अनगिनत मुख अरु नेत्र ऐसे२ नहींदेखा जावे रूप जिनका ऐसे२ अर्थात् अत्यन्त प्रकाशवाले जो जगत्को चलायमान करदेवें ऐसे२ आपके रूप ३० अरु जो दैत्य दानवोंसे सम्पूर्ण अरु देव मनुष्यवाले अरु यक्ष राक्षस पिशाच आदि चार प्रकार के अर्थात् जरायुज अण्डज स्वेदज उद्भिज जीवोंवाले ३१ सो हे सम्पूर्णके स्वामिन् संसारकारी इसविकराल रूप को आप समेटलेवो मैं मोहको प्राप्तथा पर अब आपकेप्रसादसे मुझेस्मरण भयाहै ३२ अब मैं शरीर मन वाणी से आपही के शरण प्राप्तहूं सो हे भक्तवत्सल विभो अब निजप्रसादरूप हमेंदिखावो ३३ ब्रह्मा

बोले कि जितने ये ऐसे प्रार्थना करता रहा तितनेही अपने आपे को सभामें प्राप्त अरु तिन काश्यप गणेशजी को ब्रह्मचारी देखता भया ३४ तो सारे लोगोंके देखतेर अत्यंत आश्चर्य मन भये अरु लज्जा हर्ष संयुक्त इन्द्रने इन्हें साष्टांग प्रणाम करी अरु सब देवों के सुनते ब्रह्मचारीजीको स्तुतिकरनेलगा जो शांतस्वरूप अरु मुनि कश्यपजीके घरक्रीडाको मनुष्यरूपहो जन्मे ३५।३६ तो इन्द्रबोला कि मैं आपको नहीं जानताथा कि आप अनन्तशक्तिहो अरु परमेश्वरहो अरु संसारकेआत्मा अर्थात् स्वामीहो अरु विश्वकेबीजनाम मुख्यकारणहो गुणोंके ईशहो विश्वके प्रकाशकहो विश्वसे वन्दनीय हो तीनों कालमें सत्यहो अरु तीनप्रकार से भयेभी आपहीहो अरु जन्म रक्षा पीड़ा इनके कारण भी आपही हो ३७ अरु जो आप केवल नित्य सच्चिदानन्द रूप सबकेस्वामी अरु कारणसे परे अरु ईश्वर अरु स्थावर जंगम जीवों की चेष्टा के कारण अर्थात् तिनके अन्तर्यामी अरु इच्छापूरक सर्वगामीआपको मैं नमस्कार करता हूं ३८ अरु जो सबके ईश आप सम्पूर्ण विद्याओं के निधान सबके आत्मा अरु समस्त ज्ञानप्रकाशक अरुसबसेपरे अरु जो आप वाणी से अरु मनसे अग्राह्यनाम नहीं ग्रहणकियेजावो ऐसे सबके प्रकाशक विज्ञानस्वरूप आपको मैं स्तुतिकरताहूं ३९ ब्रह्मा बोले कि ऐसे स्तुति अरु प्रणामकरके इसने निजअंकुशदिया अरु कल्पवृक्ष अरु दो दासियें दई अरु विनायक ऐसा प्रकट ४० नाम इन्द्रने रक्खा जो स्मरणहीसे सब सिद्धिदाता अरु जय२ शब्दों मे बाजे के शब्दों से अरु नम २ ऐसे शब्दोंसे इन्हें अनेक प्रकारोंसे प्रशंसित करतेभये ४१ तैसेही गन्धर्व गान शब्दों से अरु अप्सराओं के नृत्य शब्दों से अरु पुष्प वर्षाओंसे तिस समय धरती आकाश व्याप्त होगया ४२ अरु सीधीवहनेवाली नदियें सुन्दर पूर्ववाहिनी भई अरु सबदिशा विदिशा प्रसन्नभई अरु सुखपवनबहनेलगे ४३ अरु तब अग्नि सर्वत्र शांत अर्थात् निरुपद्रववर्जित अरु प्रदक्षिण झलोंवाली अर्थात् शुभदायक भई तब तो प्रसन्नभये ये राजगजा-

ननजीने इन्द्रको अभयदान दिया ४४ कि हे इन्द्र तुमको रणांगण मे कहीं भी भय नहींहोवेगा अरु तू भक्तिमें परायणभया इसस्तोत्र को पढ ४५ अरु औरभी जो नर इन तीनश्लोकोंको भक्तिसे पढैगा सो सबकामोंको प्राप्तहो अरु सर्वत्र विजयवला होगा ४६ तबतो इन्द्र शुभदायक वर पायकर अरु इन्हे नमस्कारकरकर फिर सारे तिन गणेशजी को नमस्कार करकर अरु हर्ष से निजनिज स्थानो को पधारे ४७ ॥इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखंडमें श्रीगणेशजी करके इन्द्रको वरदेना इस नाम से ग्यारहवां अध्याय भया ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

काशिराज का आना अरु निजपुत्र के विवाह के लिये श्रीगणेशजी को लेजाना ॥

ब्रह्माजी बोले कि तब तो सातवें वर्षलगे ये विनायकजी न्हाय नित्य की विधिकरके जो मुकुटसे दीप्तिमान मस्तकवाले १ अरु वे सिंहपर सवार चारो हथियारो को धारण करते भये सो कि अंकुश परशु कमल अरु सबको भयदायी फाँसा धारणकिये २ अरु दण्ड मृगचर्म अरु रत्न संयुक्त सुवर्ण के कुंडल पहिरे अरु कुश कमंडलु धारण किये अरु उत्तम रेशमी पीताम्बर पहिरे ३ अरु ललाट में कस्तूरी तिलक अरु नहीं क्षय तेज जिनका अर्थात् सम्पूर्ण चन्द्रमा धारणकिये अरु कंठमें मोतियों की माला डाले अरु नाभि में सर्प लपेटे ४ फिर तो निजलीलासे भूमि आकाशको कँपाते ऊंचीगर्जना करते भये तो ये मेघहीका शब्दहै इस भ्रान्तिसे पपीहाने मुख फैला दिया ५ अरु उछलती भई महानदियें आकाश को सींचतीभई तब तो अदिति अरु कश्यपजी भी दोनो आनन्द को प्राप्त भये ६ अरु हमारे बडफेधन्यहैं ऐसे आपेको सराहने भये इतनेही मे काशिराज भी आश्रमपे आनया७ तब तो वे सारे आपसमें मिलने करके हर्ष अरु परस्पर नमस्कार करके सारे निज२ आसनपर बैठगये ८ तो मुनिजी तिस काशिराजको स्वाद षटरस अन्नसे भोजन करातेभये

अरु विश्राम लिये को पूछते भये कि किसलिये आगमन भया ६ हे राजन् श्रीमान् आपका दर्शन हमको पुण्यवश से भयाहै क्योंकि मुझपुरोहितका बचन तुमने क्या२ ग्रहणनहीं कियाहै अर्थात् सदा जो२ मै कहता सो२ तुमकरते रहेहो १० ब्रह्मा बोले कि मुनिजीका ऐसाबचन सुन नृपश्रेष्ठ बोला कि हे ब्रह्मन् राज्यमे आसक्त मनवाले मेराअपराध क्षमाकरना ११ अरु हे प्रभो मेरेपुत्रका विवाहहै सो हे मुने आपको बुलानेकेलिये आयाहू सो आपके दर्शनसे कृतार्थभया हू १२ सो अबआप शीघ्रचलो अरु विवाह करवाकर ही आजाना क्योंकि बिन आपकेआये वो विवाह लोकवरोमें सराहनेयोग्य न होगा १३ इसीसे हे महामुनिजी मैंहीं आपको लेने आयाहू मुनिजी बोले कि हे राजन् मैंतो अब न जासकूंगा क्योंकिमें चतुर्मासकेनि[illegible] में स्थितहू १४ सो हे जनाधिपति तुमचाहो तो समर्थ इसमें [illegible] लेजाओ राजाने कहा कि तो हे मुनिजी पुत्रको आज्ञाकरो [illegible] वेगसहित जावेंगे १५ ऐसे राजाकाबचन सुनके मुनिजी पु[illegible] कि हे विनायक मैं इस राजा के बचनके अवरोध अर्थात् निधान [illegible] तुमकोभेजताहू १६ तेरे बिरहका दुःख तो महाभारीहै जो आप [illegible] तिस आज्ञाको शिरसे स्वीकारकर कर अरु तिनमुनिजी [illegible] सबके [illegible] अरु अदिति जीके चरणोंमें वंदना करके बाहर आ राजा [illegible] वो [illegible] जीरथमें बैठायेगये अरु राजा भी तिनके चरणोंको प्रणामरु [illegible] रथपर चढ़ा १७।१८ फिर अदितिजी आई अरु तिसराजा [illegible] कि हे राजन् यह मेरा बालक सदा रखवाली करने योग्य [illegible] क्योंकि जहां २ मेरा बालक रहताहै तहा२ ही उत्पात भी ऐसे [illegible] इससे यह यत्न से रक्षणीयहै जैसे पलकें आखोकी पुतली को रखती हैं २० जैसे मेरे पुत्रको तू लेजाताहै तैसेही तू लेआव अर्थात् कोई भी हानि न होनेपावे तो राजाहा ऐसेही होये कह राजा दितिजीको नमस्कार विसर्जन करके २१ गणेशजी को साथले वायु वेगवाले रथसे गमन करता भया तो रथसे मार्ग चलते२ राजाको महावन आया २२ वो नरान्तकदैत्य के चचेका अत्यत सुन्दर स्थानथा सो

कि रौद्रकेतुका भाई पराक्रमी (धूम्राक्षनाम) इसनामसे भया २३ तिसने दशसहस्र वर्षतक घोरतपकिया नित्यही सहस्र किरणोंवाले सूर्यजीको आराधन करतारहा हर्षसे तिसने सर्वसंहारकारी उत्तम शस्त्रकी प्रार्थनाकरता अरु अपने से वो तीनो लोकों का वशीकरण चाहता २४।२५सोकि वोवृक्षके डालेकेपैरबांधे नीचामुखकिये धूम कोपीवता ऐसे बहुतकाल गये वो सत्यशस्त्र प्राप्तभया २६ जो तिस तपस्या करते राक्षसके लिये सूर्यजीने भेजा अरु जो आकाशमेंव्याप्तहोता तिसका तेज तिन विनायकजीने देखा २७ तो इन्होंने शीघ्रही उडकर तिसेपकडलिया जैसे गरुडजी सर्पपकरें तबतो महामनस्वी अर्थात् अति धैर्य्यवाला भी काशिराज विस्मय को प्राप्त भया २८ अरु मनमें विचारकर करता भया कि लाभ हानिमे अरु जीवनेमें दैवसेइतर तीनभवनमें कोईनहींहै अर्थात् यहतोईश्वराधीन हीहै २९ क्योंकि वो प्राप्ति मुझको नहीं भई जो शीघ्रही इसे प्राप्त भई तो गणेशजी ने तिस शस्त्रकी सामर्थ जानने को तिसे फेंका तो वो ३० ऊपरकोगया जो भयानक भारीशब्द करके फिर उसधूम्राक्ष परगिरा तो तभी वो दोप्रकार से होगया अर्थात् तिसके दो टुकड़े होगये ३१ तो तिन दोनो खण्डोंसे भारीपर्वत अरु वृक्ष बहुतसे चूर्ण हुये अरु तब पांचसौ धनुषपृथ्वी तिसपडते भयेसे व्याप्तकी अर्थात् दाबीगई ३२ फिर वो तिसके दोपुत्रजो (जघन) अरु (मनु) ऐसेविख्यात जोतिसपिताकी शुश्रूषामेंरतथे सो वे पिताको मरादेखकर ३३ क्रोधभरे वे पासही विनायकजी को देखते भये तोही वे कालयमके समान मुख को फैलाकर भाग गये ३४ अरु काशिराज पै आकर क्रोध भये वे राक्षस बोले कि तैंने इसे लाकर हमारे पिताको क्यों मरवायाहै ३५ पहिले हमारेही पिताने तुझको नरान्तकसे बचाया था तिसे तू प्रयत्नसे अर्थात् सहजही मारकर रे राजन् कैसे जीता है ३६ ब्रह्मावोले कि राजा ऐसावचन सुनके अत्यन्तही व्याकुलहो कांपता भागताभया अरु मनमें विचारताभया कि मैं इसकश्यपजी के सुतको क्यों लेआया जो इकट्ठा एक अपस्मार नाम रोग रे

सरीखा अर्थात् यह वडा भारी रोग लगा अव जो नरान्तक क्रोध भया तो वलसे मेरे राज्यका कोश लेगा ३७। ३८ तव मेरा रक्षक कौन होवेगा फिर वो यह सौगन्ध खानेलगा राजा वोला कि इस लिये इसबालक को मैं सर्वथानहीं लायाहूं ३६ हेनिशाचरो इसमें मुझेईश्वर द्विजोकी शपथहै ये पुरोहितका पुत्र मैंने विवाह के लिये वुलाया था ४० सो विघ्न मतकरो इस वालकको तहा अर्थात् नरान्तकके पास लेजाओ ऐसे इसके वचनके अन्तमें मुनिपुत्र गणेशजी इससे वोले कि ४१ मुझ वालकको वाधकरतूशत्रुकेहाथमें कैसेपकड़ाताहै अदिति कश्यपजीको जाकर क्या उत्तर देवेगा ४२ अरुजो कश्यपजी क्रोध भये तो तुझे निरसदेहही भस्म करदेंगे ऐसे तिन मुनिजीके नन्दन गणेशजी के ऐसेकहतेर।४३ तिन्हेखानेकोवेआये जैसे दो विलाव मूपकपरझपटें तो वालकजी मुखफाडकर भयानक शब्द करतेभये ४४ तोत्रिलोकी अरु वे भी उसकेऊंचेभारी सासके योगसे कांपे तो मेघपटल अर्थात् वादलों में मिलगये जैसे पवनके भभूले से तृण उड़जावे ४५ तव तो दोमुहूर्त वीते वे निष्प्राण भये जवन अरुमनु नरान्तक केनगरमें गिरतेभये जैसे स्थूलपत्थर महा पवनसे फटकारेगिरे तो पडतेभये भी तिनके देहोंमें वहुतसेघरचूर्ण होगये ४६। ४७ वे मुहहाथों से शब्द करनेलगे अर्थात् पुकार२ हाथ पीटनेलगे अरु वडा ही हाहाकार भया तो क्याहै२ ऐसेकहते दौड़ते दूतआये ४८ तो धूम्राक्षके पुत्रोंको मरेसुनकर तिन्हें सम्यक् प्रकार से देखते भये सो कि तिन्हें चेतना सहित अर्थात् जीवते देखकर सावधान करतेभये ४६ [illegible] ने वि[illegible] । आदि अन्त के क्रमसे सारा वृत्तांत कहा से[illegible] । नर[illegible] ज पिनाका मरण अरु तिसीके श्वाससे अप[illegible] ५० [illegible] राजकेसाथ रथमें [illegible] ५१ कोवोले अर्थात् स[illegible] राधसहित अपने [illegible] ऋषिपुत्र को आता [illegible]

राक्षसों को देखता हजारों को तिसके लानेके लिये आज्ञा करताभया ५३ कि मुनिके पुत्रको पकड के लाओ अरु जो वो लडे तो तिसेमारो काशिराजका रथ वोहै सो हे राक्षसो तुमशीघ्र जाओ ५४ तो आज्ञाकरने मात्रहीसे वे वायुवेगसे शीघ्रही पहुचे अरु कश्यपनन्द अरु काशिराज को देखतेभये अरुवे दोनों इन सबको देखतेभये ५५ तब तो विनायकजी ने भीम भयानक शब्द किया तो कईराक्षस प्राणछोडके गिरपडे अरुकई भागगये अरुकई कटे पैरहोगये कइयो के मस्तक कटगये कइयो के उदर फटगये शरो से ५६। ५७ अरु कटेमुख अरु फूटेनेत्र जिनके ऐसे२ कटे हाथपैरो वाले अरुजो भागके गयेथे वे नरांतक के पासआये ५८ अरु तब विनायकजीका चेष्टित वो सारावृत्तांत नरांतकको सुनातेभये ५९ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड मे निशाचरो का वध इसनाम से बारहवा अध्यायसमाप्त हुआ॥ १२॥

तेरहवा अध्याय॥

नरान्तकका के अभिमानकरना अरुश्रीगणेशजीका के काशिराजकेघरपहुचना अरु तिसीकेभेजे कईराक्षसोको मोक्षकरना ये वृत्तांत वर्णनकियागयाहै॥

श्रीब्रह्माजी कहतेहै कि तब तो उनदूनों ने नरान्तक से कहा कि हे स्वामिन् हम आपकी आज्ञापाय रथमेंवेठे तिन विनायकजी पै गये तो हम सबोंने तिनको यम के समान देखे १ वो हम सारे राक्षस तिसके भयसे हे निष्पाप स्वामिन् मृत्यु को प्राप्तभये हम आपके प्रसादसे जीते आपके पास आयेहै २ सो ईश्वरकी कृपाके योगसे सिंहो के समूह से हाथियो की नाई हम सारे डरभगे सो त्रिलोकीमें तो कोई ऐसापुरुष है नहीं जो तिनसे युद्धकरे ३ ब्रह्मा बोले कि इनका ऐसावचन सुनके नरान्तक बोला कि ये क्या तुम बालपनेसे कहरहेहो कहा तो वो बालक अरु कहां में नरान्तक ४ कहो प्रलयके अग्निके आगे पतंग क्या करेगा या मूषकके खोदने से सुमेरुपर्वत गिरजायेगा क्या ५ तब तो तिसने दैत्योंको आज्ञा

करी कि काशिराज की पुरीपर तुम जाओ अरु वहां लुंठना अर्थात् लूट खोशमचादेवो जिससे वो राजा व्याकुल होजावे ६ उसराजा के व्याकुलभये कश्यपनन्दन भी व्याकुल होजावेगा नहीं तुमसारे सारेप्रयत्नोसे उनदोनोंको मारदेना ७ तवतो इसने तिनको बडे२ महँगे रत्नदिये अरु विशेपवस्त्र अरु नाना शस्त्रदिये ८ तो तव वे तिसे नमस्कारकरके काशिराज के पुरकोगये ९ अरु वे निजसेना से दिशोकाचक्र अर्थात् दिशावधी कोठेवनाकर आपसमें बोले १० सो कि तिनमें जो मुख्य सेनानीथा तिसने सबको आज्ञाकरी कि हे दैत्यो वो जिसके दृष्टिगत होजाय वोही तिसे मार लेवे अर्थात् जो देखै सोही उसे मारै ११ नहीं तो वो मेरा दण्डनीय होगा मैं तिसके प्राण नाश करूंगा ऐसे उसाकरके आज्ञा किये दैत्य दशो दिशाओंको गये १२ अरु विनायकजी भी तिसराजा के साथ रथ में बैठे काशिराजपुरी को गये जो पुरी नाना ध्वजा पताकोंसे अरु रत्नोंकी मालासे चितरामकीगई १३ अरु वाजे नगारोंके शब्दोंसे अरु अनेकसे पूजाके उपचारो से नगरनिवासी अरु मन्त्रिये विनायकजीपै आये अर्थात् पूजा भेटलिये श्रीगणेशजी के सन्मुख आते भये १४ तो भक्तिसे षोड़श उपचारोकरके सबोंने विनायकजी को पूजे अरु फिर राजाकोपूजा फिर सारे नगरीके भीतरगये १५ तो तिनके प्रवेशभये सारी स्त्रियें निज २ मकानोंपर चढी अरु कईक उलटेवस्त्र आभूपण धारणकिये देखनेको वाहर आई १६ अनादर किये हे पिता भाई भर्त्ता माता बन्धुजन जिन्होने अर्थात् इनकी शीख न मानी अरु कईक जीमती २ भोजनकीथाली छोडकर अरु कई पतिको जीमता छोडकर चलदई १७ किसी एकको सबघरको ने वदकरी तो वो देवविनायकजीको ध्यानकर भक्तिसे नेत्रमींचकर प्राणोंको छोडती भई तो ये वडा आश्चर्य्यभया १८ कुमारियों ने इनपर धानकी खील अरु फूल वर्पाये अरु विमानों मे वैठे देवोंके समूह भी तिस महाउत्सव को देखतेभने १९ तो ब्राह्मण तो तिन विनायकजी को परमात्मा देखते भये अरु क्षत्रियें तिनको महाशूर

वीर युद्धको चावकिये तयार देखते भये २० सारे वैश्यों ने तिन्हें संहारकारक रुद्ररूप देखे अरु शूद्र तिन्हें भगवान्‌रूपसे अरु राजा के रूपसे देखनेभये २१ तात्पर्य्य ये कि जिस२ का जैसा२ भाव था सो २ तिन्हें तैसे २ ही देखता भया जैसे स्फटिकमणि लाल श्वेत पीलेमें भी तैसीही देखपडतीहै २२ जैसे एकही आत्मा पिता भाई साळा होरहाहै फिर तो विनायकजीने पुरमें दो महा राक्षस देखे२३ जो (विघट) अरु (दतुरनाम) थे तिन्हें आदरसे खेळनेको बुलाये तोही वे दुष्टचित्त दैत्य वालकों के साथ आये २४ सो इन्हें पकडने को उद्योग किये तो गणेश जी करके वे खोटे आशयवाले अर्थात् कपटी जानेगये तो तिन्हें पकडके चूर्णकिये जैसे हाथमें ले फूलोंको मसलडाले २५ तो छुटे वे भूमिपरगिरे दशयोजन अर्थात् ४० कोशफैले प्रकट दीखे तो काशिराज अरु लोगों ने तिन्हें देख आश्चर्य्यमाना २६ अरु आकाश स्थित देवतोंने तिनपर पुष्पवर्षा करी अरु कश्यपोंने साधु२ जय २ इनशब्दोंकरके इन्हें सराहे २७ अरु मुनिये देवताभी तिन विनायकजीको स्तुतकरतेभये जो माया से मनुष्यरूप होकर बालळीला से विचररहे २८ जो इन्द्रादि कों करके भी जीतने न योग्य थे तिन्हें इन्होंने चूर्ण किये तब तो उस पगतको उलघकरके रथ अगाडी गया २९ तो और राक्षस दीखे जो इन्हें मारनेको आयेथे जो (पतग) अरु (विपुलनाम) से प्रसिद्ध थे सो महाबली प्रचण्डपवन अर्थात् वभूलेके रूपभये ३० तवतो तिसरजसे छाया सारालोक व्याकुलहोगया अरु मकान अरु वृक्षों के समूह टूटफूटकर पृथ्वीपर गिरने लगे ३१ अरु ओढने के वस्त्र दुपट्टोंके समूहउडे आकाशमें पक्षियोंकीसी शोभाको प्राप्तभये अरु कश्यपोंके शिरपरसे पगडियेंगिर२के दशोंदिशा उडकरचलीगई ३२ तो महा कोलाहल मचगया तब आपसमें कुछ भी न जानपड़ा अरु वो रथभी आकाशको उडनेकेलिये उद्यतहोगयाथा पर तिन विनायकजीनेही तिसे थांभा ३३ अरु साररहित भये मनुष्य धरनीपर गिरतेभये जैसे अभीजन्मेहो तब तो अति पराक्रमी तिन्हें जानकर

गणेशजीने शिखामे धारणकिये अर्थात् इनकी चोटीपकडलई ३४ अरु उन्हें वलसे बहुतकालतक घुमाकर देव गणेशजी एकमुट्ठी से तिन्हेंमार पृथ्वीपै पटकतेभये तो जनोने तिनको वे प्राणदेखे अर्थात् वे दोनोमरगये ३५ अरु सब मनमे विचारकरनेलगे कि ये कश्यप जीका सुत पराक्रमी कोई देवताहीहै क्योकि जिसने चारकोशचौडे ये दैत्यमारेहैं ३६ इसकी ऐसीअवस्थामें तो ऐसाबलनहींदेखपडता है ऐसा सामर्थ्य देखकर काशिराज भी प्रसन्नभया ३७ अरु तिस रथपरसे उतरके तिन विनायकजी को प्रणामकरी अरु बोला कि हे महायोगीश्वर बालक से भी आपकीकरनी ३८ ब्रह्मादिको के जाननेमें नहीं आतीहै तो चर्म चक्षुवाले इतर मनुष्यके तो समझने मे कैसे आवे जो आप जगत् को उत्पन्न करनेवाले अनेक रूप इस लोककी रक्षाके हेतु होरहेहो ३९ अरु हेस्वामिन् प्रभो आप तारो की गिन्तीनहींहै अर्थात् अनेकावतारधारीहो ४० तब तो रथ अगाड़ीआया तो तुर्त से राजाके घरपर आया तब तो इन बालकजी ने एक पाषाणरूपी दैत्यकोदेखा ४१ तो तिसे इन्होने परशुसेमारा तो वो शीर्ण अर्थात् तिसके सौ टुकडेहोगये ४२ तो तिसमेंसे भी एक भयानक निकला जो दाढ़ दांतो से प्रकाशमान मुंहपर बाल जिसके अर्थात् बडी २ दाढ़ी मूछोंवाला अरु वृहत् शरीरी पिंगल वर्णका भारी स्वरूप४३ तब तो वे सारे बालक अरु लोगभी डरभगे तो गणेशजीने तिसे भी मुष्टि अर्थात् घूंसेसेमारा तो वो भी भूमिपर गिरा४४ तो जनोने बालगणेशजीका शरीर धारी भगवान्हीजाने तब तो प्रसन्न मन राजा रथसे उतरकर बालकजी को ४५ आप हाथपकड शीघ्र भीतर ले जाताभया अरु इनको निज रत्न सुवर्ण मय आसनपर विराजमान किये ४६ अरु षोडश उपचारोसे यथा विधि इनकी पूजाकरी अरु महँगेवस्त्र आभूषण अरु दिव्यसुगंधियें दई ४७ अरु परम हर्ष सहित इन्हे स्तुति प्रणाम करता भया जो षट्रसअन्न नानापक्कान्न व्यंजनो सहित था ४८ सो अनेकप्रकार का सुन्दर अन्न प्यारो के साथ तिन्हें भोजन करवाता भया फिर

नराधिप राजोने तिनको नानाप्रकारके फलदिये फिर आठों अगों से सम्पूर्ण ताम्बूल अर्थात् पानके बीड़े अरु रत्नसुवर्ण फिरवालकों सहित कुटुम्बी राजा आप भी भोजन करताभया ४६ फिर किया सध्या विधान जिन्होने ऐसे गणेशजीको शयन करताभया सुन्दर सय्यापर बिछौने से अधिक शोभायमान थी ५० अरु तिन्हीं की आज्ञासे अपना राजा निजरानीसमेत सोताभया तिनके पास चार अत्यन्त सावधान अर्थात् चौकीदारों को बैठाकरके राजा सोया ५१ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में बाल चरित्र वर्णन इस भांति तेरहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ १३

चौदहवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी के खेलते २ तिनसे अनेक राक्षसोंका मोक्षहोना वर्णनकियाहै ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तबतो गणेशजी प्रातःकाल उठकरके अरु यथाविधि शौचकरके अर्थात् मल मूत्रछोडकर फिर उन्होंने स्नान किया अरु यथाविधि सन्ध्योपासन किया १ अरु सुन्दर समिध स्थापनकरके होमकरतेभये अरु सुन्दर मृगचर्म दण्ड धारणकरके बालकों के साथ क्रीडा करते भये २ तो तहांका एक वेद-शास्त्रार्थ वेत्ता जो (धर्मदत्त) इसनाम से विख्यात था सो तिनकी कीर्त्ति सुन कर मुनिपुत्र गणेशजी के देखनेकी इच्छाकरके ३ इस नृपश्रेष्ठका-शिराज के घरआगया तो राजा करके वो सन्मान कियागया अरु फिर नृपश्रेष्ठ काशिराजको ये पूछनेलगा ४ कि वो महापराक्रमी कश्यपजीका पुत्र कहां है सो मुझसे कहो तबतो लोग बोले कि ये बालकों के साथ खेलरहाहै ५ तबतो ये द्विज उठकर हाथपकड़के तिन्हें कहनेलगा कि तुम मेरे मित्र के पुत्रहो मैंने तुम्हारी कीर्त्ति सुनीथी ६ इससे मैं तुम्हें अपने घरलेजाने को आयाहूं कश्यपनंदन सो हमें आप चरण रज से पवित्रकरो अरु हमारा सदन सफल करो ७ क्योंकि आप परब्रह्मस्वरूप अरु परेसेभीपरे परमव्यापक हो सो आप भूमिभार हरनेके लिये कश्यपजी के घर जन्महो ८ हे

बालकजी मैं तत्त्वसे जानताहूं कि आप क्रीडाके लिये मनुष्य रूप हो तब तो विनायकजी बोले कि तुम किसलिये यहा आयेहो ९ हे पिताजी क्या मैं आज्ञाही करनेसे तुम्हारे पास नहीं आजाता ऐसे कहकर गणेशजी तुर्तसे धर्म्मदत्त के आगे २ चलते भये १० जो वलवाले गणेशजी धूल उछालते बोलते बालको के साथ जातेथे तो तिनको मार्गमें जाते नरान्तकके भेजे ११ (कामनाम) अरु (क्रोध) ये दोराक्षस खोटे आपसमें युद्धकरते अर्थात् गधेके शरीर भये आपसमेलडते इन्हे मारनेकोआये १२तो येदुष्टचित्त लडते२ वालकजीपर गिरपडे लडते२ अग्निमें जैसे पतग जैसे आगिरे१३ तव तो वे सारे बालक दशोदिशो मे डरभगे तव तो विनायकजीने वलसे तिनके पैर पकड़कर १४ बहुत प्रकारसे भ्रमाये अरु पृथ्वी पर फटकारे तव तो वे निष्प्राणभये भूमिपरगिरे तो लोकोनेदेखे१५ तो तिनके देहपड़ने के शब्द से त्रिभुवन कापता भया तो लोगोकी वार्त्ताओके विष धर्म्मदत्त विश्वासको प्राप्तभया तो महामुनि इसके इसभारी कर्म्मको प्रत्यक्षसेही देखकर धर्म्मदत्त फिर तिन्हींकेसाथ आगे२चला १७ तो कपटरूप मत्त हाथीकोदेखा जो महावली अरु जिधर तिधर भागते जनोको मारनेकेलिये तयार १८ तो महाशूर वीरभी भागनेमें परायण होगये तो तहा भागतभये जनोका भारी कोलाहल भया १९ तो सब धूलसे व्यस्त होगया जैसे वर्फसे पर्वत तो वो महावली गजराजाकभी मत्तहाथियोंको मारनेगया २० तो जन तिस महागज युद्धको मकानो पे बैठादेखा अरु वे गजबंधे घोडोको देखकर तिनकी घुडशाल को फोडतेभये २१ तो ऊर्द्ध बन्धन अर्थात् मेख उखड़ायेभये घोडे अरु हाथियें दशो दिशाओ को भागगये तो धर्म्मदत्त तिन गणेशजी को हाथपकड घरलेजाने को तयारभया २२ तो बालकजी ने तिसका हाथ फटकार के अत्यंत दूरकरके वलसे उसहाथीपरचढगये अकुशअरु विनायकजीने निज परशुसे वारम्वार तिसके कपालभेदनकिये२३तो चारोओरसेपृथ्वी पर लोहुओका वहावपड़ा अरु वो गज सव लोक भयानक दृष्टिव

कर अर्थात् चिंहाड मारकर २४ तो तिस विस्तार वाले के गिरने करके अनगिनतही मकान गिरायेगये जो नानावनो सहितये २५ तो पर्वत वन आकर सहित सारी पृथ्वी कांपी फिर अन्धकार मिटे तहां नगर निवासी तहाजन आये २६ जो भयभीत भये उस महा भयानक दैत्यकेमरे तिसके ऊपरचढे बालकजीको देखके पराक्रमी२ जाकर वलमे उतारतेभये २७ अरु धर्म्मदत्त ने फिर इन्हें कमरही पकडके फिर उत्पातहोने के भयसे शीघ्र घरमें लेगया २८ अपना कार्यभये अर्थात् मिलापादि सौख्यभये इसने ब्राह्मणको धनदिया अरु इसनेइन बिनायकजीको भी पृथक्२ षोड़श उपचारोसेपूजे२९ अरु वस्त्र अलंकार फूल मालोसे अरु नानाप्रकार के नैवेद्य समूह से यथा विधि भोजन करवाता भया अरु सिद्धि वुद्धि दोनोदई ३० दक्षिणाकेलिये धर्म्मदत्तने दोनो कन्यायेंदई अरु इसनेपृथ्वीपर पड़ दण्डवत् प्रणामकिया अरु प्रसन्न मनभया हर्षसे गद्२भई वाणीसे बोला ३१ कि मेराभाग्य सफलभया जो आपका चरणारविन्ददेखा है जोकि जगत्के ईश जगत्के कर्त्ता जगत्केसाक्षी जगत्गुरु ३२ आप मेरेवचनमे मेरेवडकोंका उद्धार करनेको यहांआयेहो ऐसेकह ता२ मुनि धर्म्मदत्तने तिन्हेंकरकेनिज आसनपरबैठायागया३३देव विनायकजी करके वहुत भक्तिसे पूजागया तव तो बालकविनायक सिद्धि वुद्धि युक्त अत्यन्त शोभायमान भये ३४ जैसे गंगा गौरीजी करके सहित शूलहस्त तीननेत्रवाले शिवजी शोभितहों इतनेहीं में तहा (जृम्भानाम्नी) राक्षसी सुन्दर ३५ जो पीताम्बर धरे सुन्दर कंकणबांधे जो सुन्दर आभूषणोवाली अरु जो अतिदुष्ट चित्तवाली धूम्राक्ष राक्षसकी पत्नीथी वो मधुर वचनबोली कि ऐसे२ जो२ अरिष्ट होतेहैं सो विनहीं यत्नसे नाश होजातेहैं ३७ इस वेचारेके मा वापोंको सुन्दर भोगविलास कैसे होवे ऐसे वे सारीस्त्रियों से कहकर फिर विनायकजीसे बोली ३८ कि हे प्रभो मेरावडा भाग्यहै जो तुम्हारा दर्शनभया हे देवेश तुम नानादानोंके मारनेसे थकगयेहो३९ सो हे महामते तुम इससुगन्ध तैलसे उवटनाकरो में तुम्हारा अङ्ग

मसलोंगी अरु मैं हीं तेल उबटना करूंगी ४० तब इन गणेशजी करके हां ऐसाकहे उस विषहस्तवाली ने तेलसे तिनकेचरण पकड मसलनेलगी जो तेल विषके ऊंचापनको जनानेवाला ४१ वो जंभाइयें जांभती अर्थात् बेर२ में जंभाईलेती मसलनीभई लोगोंनेतिसे श्रेष्ठ जानीथी सो वो भावदुष्टभई चरणसेवा ऐसे करतीभई जैसेशुभ स्वभाववाली पतिके चरणारविंद सेवै ४२ फिर तो तिनके शरीरको भारी दाह हो अर्थात् जलन भई तब तो गणेशजी ने निजज्ञान से भावदुष्ट तिसे राक्षसी जानकर ४३ अरु शीघ्र नालियर से तिसे मस्तकमें हनतेभये, तबतो वो भूमिमें गिरी निजरूपसें स्थितभई ४४ चारकोश फैली वो पहिलेके रुधिरके वहावमेंगिरी तो धर्मदत्त अरु सबलोग आश्चर्ययुक्त शोभितभये ४५ तो यहद्विज तिन्हें फिर बिधिसे पूजताभया अरु नानाप्रकारके सवाद २ षट्रस से पकवान बना भोजन कराता भया, ४६ इस अवसर में देवोंने पुष्पवर्षा की अरु आरती धानवर्षा पूजन स्त्रियें करतीभई ४७ फिर वो काशिराज तिन्हें बुलाने को आया तो तिन्हें रथमें बैठाकर बाजेगाजे सहित ४८ अरु गंधर्वगान सहित आगे२ अप्सरायें नाचती ऐसे आरोग्य गणेशजीको राजा निज घरलाया ४९ तो चलते वे बालक जी आयुध धारण किये सिंहपर सवार अनेक शूरवीरो सहित जैसे देवोसहित इन्द्र ऐसे देखेगये ५० तो ये सिद्धिबुद्धि युत ऐसेशोभित जैसे गंगा उमा से शिवजी तो नाना वन्दि जनोंकरके स्तुति किये राजमहल में पधारे ५१ ऐसे जो जगदीशजी के बाल चरित्र को श्रवणकरै तोवो सबकामोंको प्राप्तहोवे अरु शत्रुओंसे कहींभी बाधा न किया जावे ५२ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड में बाल चरित्र वर्णन इसनामसे चौदहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

काशिराजकरके श्रीगणेशजीके गुणवर्णनकरना श्रह आधीरातको सोते अचानक आये अनेक दैत्योंका मोक्षहोना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि दूसरेदिन राजा काशिराज लोगोंकेसाथ सभामेंगया जो विनायकजीसे अरु मित्र मन्त्रियों सहित १ तोतिन सबोंको इन बालकजीके बहुतसे गुण वर्णन करताभया उन गुणवान् प्रधान महाआशय वाले गणेशजीको आगेकरके २ बोला कि मैं कश्यपजीको विवाहकी सिद्धिकेलिये बुलानेगया था तो तिन्होंने यहा यहपुत्र भेजाहै ३ सो जबसे उन्होंने इसेभेजाहै तबसे ही उपद्रव राक्षस अरु अरिष्टों का समूह जो न देखा अरु न सुना सो २ नित्य२ होताहै ४ पहिले ही तो इसने राक्षसों का स्वामी धूम्राक्ष मारा अरु जघन अरु मुद्गर भी पांच सै राक्षस सहित मारेगये ५ जो इसे नगरमेंसे दन्तुरदैत्य आकाशमें ले चलाथा सो मारागया अरु विघटवाल इन्हीं से रूप अरु महाबलवालाविधूल ६ अरु पतंग भी नगरमें वायुरूपधरेथा सो हतागया अरु कूटनामदैत्य भी द्वारे पर इसीसे हतागया जो पाषाणरूप धारणकिये ७ अरु काम क्रोध ये भी जो दोनों गधेकेरूपको धरेथे सो इसीसेमारेगये अरुगजरूप धारी कुण्डराक्षस इसीसेहतागयाहै८सोही जितने औरभी जोअरिष्ट हों तिन्हें ये ही बालक नाश करेगा अब ब्राह्मणों के आज्ञानुसार विवाहका निश्चय कर्त्तव्यहै ९ अरुदेवतोंके स्थापनका अरु हरिद्रा हस्त तथा मण्डपका भी निश्चय विवाहकी तयारीकेलिये ज्योतिष शास्त्रमें कुशल ब्राह्मणोंसे सब निश्चय करवावो १० ब्रह्माबोले कि ऐसे राजाका बचनसुन मंत्री उसराजा से बोले कि हे नृपश्रेष्ठ यह बालक जबतक तुम्हारे पुरमें विद्यमानहै ११ तब तक विवाह न होगा यह हमको निश्चय भासता है क्योंकि इसरेरहे यहांदिन महा उत्पात होतेहैं १२ सो हे राजन् तुमपक्षवा मासबीते विवाह करने योग्यहो राजाकेहां ऐसेरहे सारोंनजर आठपगने १३ अह

राजा विनायकजी भी सुखसे सोतेभये तब तो आधीरात गये सब जनसोये हे मुनिव्यासजी १४ एक (ज्वालामुख) अरु (व्याघ्रमुख) अरु (दारुण) ये तीन राक्षस पहिले हते दैत्य दानवों की अपचिति अर्थात् बदला चाहते १५ तो पहिला अर्थात् ज्वालामुख राक्षसतो सारी नगरीको जलानी चाहा अरु दूसरा दारुण वायु रूपहोकर तिसकी सहायको तयार भया १६ अरु व्याघ्रास्य तहां भागनेवालो को खानेके लिये तयार भया ऐसे वे निश्चय करके महाभारी शब्दोसे पुकारतेभये १७ तब तो सब त्रिलोक सदेहको प्राप्त अत्यन्त ही कांपताभया अरु ऐसे कहतेभये कि ये क्या आगया प्रलय या कोईशत्रुचक्कर अर्थात् चढाई आगईहै १८ तो महाशरीरी व्याघ्रास्य तो नीचेके होंठको धरतीमें धर फैलाकर अरुऊपरकेको आकाश में करके अरु बीच मे नदीसी जीभ निकालकर १९ अरु मुखसे झलें निकालता आकाश सहित तिसपुरको जलाताभया जैसे हनुमान् जी करके पूछकी अग्नि से लंकानगरी जलाई गई थी २० तैसेही उसदुष्टने भी नगरीको मुखाग्निसे जलानेलगा तबतो वृक्ष, बेल, उपवन, अरु मकानोंके समूहजले २१ तो महाकोलाहल मचा अरु मुंह हाथ पीठनेका शब्द होनेलगा सारे जन निजर कामछोड के दशोदिशोंको भागतेभये २२ तो नगरसे बाहरआते जनोंको व्याघ्रास्य ग्रसने लगा वो तिसका भोजन भया बालक अरुदाढ वाले अर्थात् सिंहादिमृग शशातक सबजीव २३ तो कई तोफटेवस्त्र अरु कई वेवस्त्रही चले अरु स्त्रियेकई तो वस्त्रोंसे रहितथीं अरु कई पति वस्त्रवाली अर्थात् पतिकी ओटकियेचलीं २४ तो तिसव्याघ्रास्यको छिद्रगुहा समझकर जीनेकी इच्छासे तिसमें बुडगई अरु वे औरों को बुलातीभई तिनको असुरने भक्षण करलई २५ तो ऐसा देकाल प्रलय प्रवर्त्तमान भये काशिराज अपना सबराज्य अरु स्त्री पुत्रादिक सब वस्तु छोडकर २६ विनायक जी को ही कन्धेपर धरकर नानास्थान घर२मे भ्रमतारहा जो अत्यन्त दुःखसे अरु तिस अग्नि के तेजसे प्रवितत होरहा २७ अरु कहताभया कि यह बालक मैं

कैसे लेआयाजोमारे अरिष्टवर्त्ताने वाला अरु खोटे कार्योंका कारण २८ इसके विना में अदिति अरु कश्यपजी को क्या कहूंगा अरु पहिले तो जो अरिष्टभये सो सव इसीने नाशकियेथे २६ अव चुप कैसे होरहाहै इसमें मैं कारण नहींजानता ऐसे शोचना तिसेलेकर एक ऊंचेकिलेपर चढगया ३० तहांपर भी वो अग्नि वायु सहाय वाला अर्थात् दारुणको सहायलिये ज्वालामुख दैत्य तहां भी पहुंचा तव तो घडे अरु औरर भी मिट्टीके पात्रोंके जलमे तिस अग्नि कोसींचा ३१ तिनकीस्त्रियें लाजछोड़ के वालकोंको साथलिये वाहर आगई तव तो व्याकुल भया राजा उतरकर नीचे आगया ३२ अरु अश्व अरु घोडे सवारवीर अरु रथ हाथी पैदल अरु सारेपुरवाले भी गऊ धन साथलिये नगरसे वाहर निकल आये ३३ तव तो जनों का क्षय होना प्रवर्त्तमान भये विनायकजी तो काशिराज को अरु काशिराज विनायकजी को ऐसे आपस मे एककोएक पहिचानेलगे ३४ तव तो सवलोगोंके भीतर धँसगये तिसव्याघ्रतुण्डदैत्य ने अपना मुख वन्द नहींकिया जवतक तिसकेमुखमें अनन्तगुणवाले महात्मा देव विनायकजी नहीं प्रवेशभये ३५ फिर सूर्यजी के उदय भयेविनयकजीजलाया नगरजिसने ऐसेव्याघ्रास्यदैत्य को देखतेभये तैसेही जनोंसेपूर्ण तिसके मुखकोदेखा३६ अरुअग्निकोभी निकटही देखकर तो वलसे तिसके मुख मे प्रवेश करगये उनके निजमुख के भीतरगये तिसमें असुरने मुखमूंदलिया ३७ जो वो मुख वनकेसमानथा तिसेसवको संहारने की इच्छाकरके तो तिसे विदारने को वालकजी भी तिसीक्षण से अत्यन्त वढते भये ३८ तो तिसके देह को फाड़तेभये तो व्याघ्रके शरीरसे वो धरती आकाश में ऐसाचटाचट शब्दभया जैसे वांसों के चिरते हो ३६ फिर तो दैत्यदो प्रकार होगिरा अरु तिसीक्षणसे निष्प्राण होगया तो तिन विनायकजीने तिसका एकखण्ड तो आकाशमें फेंका ४० तो वायु से भ्रमताभया दूर देशपर जाकर गिरा वो तिस आधे के पड़ने से गहरा वनचूर्ण कियागया४१ अरु जो दूसराखण्डथा सो वालकोंकारपंदारपी कोड़ा

राजा विनायकजी भी सुखसे सोतेभये तब तो आधीरात गये सब जनसोये हे मुनिव्यासजी १४ एक (ज्वालामुख) अरु (व्याघ्रमुख) अरु (दारुण) ये तीन राक्षस पहिले हते दैत्य दानवों की अपचिति अर्थात् बदला चाहते १५ तो पहिला अर्थात् ज्वालामुख राक्षसतो सारी नगरीको जलानी चाहा अरु दूसरा दारुण वायु रूपहोकर तिसकी सहायको तयार भया १६ अरु व्याघ्रास्य तहां भागनेवालों को खानेके लिये तयार भया ऐसे वे निश्चय करके महाभारी श- ब्दोंसे पुकारतेभये १७ तब तो सब त्रिलोक सदेहको प्राप्त अरुत ही कांपताभया अरु ऐसे कहतेभये कि ये क्या आगया प्रलय या कोईशत्रुचक्कर अर्थात् चढ़ाई आगईहै १८ तो महाशरीरी व्याघ्रास्य तो नीचेके होठको धरतीमें धर फैलाकर अरुऊपरकेको आकाश में करके अरु बीच मे नदीसी जीभ निकालकर १९ अरु मुखसे झलें निकालता आकाश सहित तिसपुरको जलाताभया जैसे हनुमान् जी करके पूंछकी अग्नि से लंकानगरी जलाई गई थी २० तैसेही उसदुष्टने भी नगरीको मुखाग्निसे जलानेलगा तबतो वृक्ष, बेल, उपवन, अरु मकानोंके समूहजले २१ तो महाकोलाहल मचा अरु मुंह हाथ पीटनेका शब्द होनेलगा सारे जन निज२ कामछोड के दशोदिशोंको भागतेभये २२ तो नगरसे बाहरआते जनोंको व्या- घ्रास्य ग्रसने लगा वो तिसका भोजन भया बालक अरुदाढ़ वाले अर्थात् सिंहादिमृग प्रशातक सबजीव २३ तो कई तोफटेवस्त्र अरु कई बेवस्त्रही चले अरु स्त्रियेंकई तो वस्त्रोंसे रहितथीं अरु कई पति वस्त्रवाली अर्थात् पतिकी ओटकियेचलीं २४ तो तिसव्याघ्रास्यको छिद्रगुहा समझकर जीनेकी इच्छासे तिसमें बुडगई अरु वे औरों को बुलातीभई तिनको असुरने भक्षण करलई २५ तो ऐसा बेकाल प्रलय प्रवर्त्तमान भये काशिराज अपना सबराज्य अरु स्त्री पुत्रा- दिक सब वस्तु छोड़कर २६ विनायक जी को ही कन्धेपर धरकर नानास्थान घरर में भ्रमतारहा जो अत्यन्त दुःखसे अरु तिस अग्नि के तेजसे अतितप्त होरहा २७ अरु कहताभया कि यह बालक में

कैसे लेआयाजोसारे अरिष्टकर्त्ताने वाला अरु खोटे कार्योंका कारण २८ इसके विना में अदिति अरु कश्यपजी को क्या कहूंगा अरु पहिले तो जो अरिष्टभये सो सब इसीने नाशकियेथे २६ अब चुप कैसे होरहाहै इसमें में कारण नहींजानता ऐसे शोचना तिसेलेकर एक ऊंचेकिलेपर चढ़गया ३० तहांपर भी वो अग्नि वायु सहाय वाला अर्थात् दारुणको सहायलिये ज्वालामुख दैत्य तहां भी पहुंचा तब तो घडे अरु और२ भी मिट्टीके पात्रोंके जलसे तिस अग्नि कोसींचा ३१ तिनकीस्त्रियें लाजछोड़ के बालकोंको साथलिये बाहर आगई तब वो व्याकुल भया राजा उतरकर नीचे आगया ३२ अरु अश्व अरु घोडे सवारवीर अरु रथ हाथी पैदल अरु सारेपुरवाले भी गऊ धन साथलिये नगरसे बाहर निकल आये ३३ तब तो जनों का क्षय होना प्रवर्तमान भये विनायकजी तो काशिराज को अरु काशिराज विनायकजी को ऐसे आपस मे एककोएक पहिचाननेलगे ३४ तब तो सबलोगोंके भीतर धँसगये तिसव्याघ्रतुण्डदैत्य ने अपना मुख बन्द नहींकिया जबतक तिसकेमुखमें अनन्तगुणवाले महात्मा देव विनायकजी नहीं प्रवेशभये ३५ फिर सूर्यजी के उदय भयेविनयकजीजलाया नगरजिसने ऐसेव्याघ्रास्यदैत्य को देखतेभये तैसेही जनोंसेपूर्ण तिसके मुखकोदेखा३६ अरुअग्निकोभी निकटही देखकर तो बलसे तिसके मुख मे प्रवेश करगये उनके निजमुख के भीतरगये तिसमे असुरने मुखमूदलिया ३७ जो वो मुख वनकेसमानथा तिसेसबको सहारनेकी इच्छाकरके वो तिसे विदारने को बालकजी भी तिसीक्षण से अत्यन्त बढने भये ३८ वो तिसके देह को फाड़तेभये तो व्याघ्रके शरीरसे वो धरती आकाश में ऐसाचटाचट शब्दभया जैसे वांसो के चिरते हो ३६ फिर तो दैत्यदो प्रकार होगिरा अरु तिसीक्षणसे निष्प्राण होगया तो तिन विनायकजीने तिसका एकखण्ड तो आकाशमें फेंका ४० वो वायु से भ्रमताभया दूर देशपर जाकर गिरा तो तिस आधे के पड़ने से गड्ढा बनचूर्ण कियागया४१ अरु जो दूसराखण्डथा सो बालकोंकाहर्षदायी क्रीड़ा

घरहोगया तब तो लोगउठे अरु औरों कोभी उठाते भये ४२ फिर जो अग्निरहा तिससारे को विनायकजीपीगये अरु पैरोंकीफटकार से ४३ महाशरीरी ज्वाला सुरयुक्त विदारणासुरको तब चूर्णकरते भये ४३ ऐसे वे योगमाया के बल से तिन दैत्यों को हतकर सारे मरेभयोंको अरु नगर को जिलातेभये जैसे पहिले था ४४ तैसेही नगरको रचदिया अरु फिर विनायकजी सिंहके समान गर्जतेभये तो सबलोग अरु काशिराज तिन विनायकजीको स्तुतिकरतेभये४५ हे अनन्तशक्ते गणेश जी आपको नमस्कार हैं हे गुणों के अधीश्वर अरिष्टकेहन्ता आपको नमस्कारहै अरु सृष्टिकर्त्ता आपकोनमस्कार है अरु विश्वकेपाता रक्षक आपको नमस्कार है अरु विश्व के हन्ता संहारक आपको नमस्कारहै अरु ज्ञानके दाता आपको नमस्कार है अरु अज्ञान के नाशक आपको नकस्कारहै ४६ हे जगत्केपति देव अकालप्रलयरूप इसअग्निसे अरुलीलासे अवतारभये अर्थात् मायावीदैत्योंसे हमें लीलाकरकेही बचायेहैं ४७ इस ऐसेमहाबली अग्निकोपीनेकी किसकी सामर्थ्यहै अरु भूगोल के सदृश मुखवाले इस महाअसुरको कौनमारै अर्थात् इन्होंको आपहीनेमारे हैं ४८ अरु इनमरेभयोंको जीवनकर्म अर्थात् जिआना आप से बिनऔर कौनकरै हेदेव आपही माता अरु आपही पिता रक्षकहो ४९ सो मेरा अरु मेरे जनों का महाभाग्य है जिससे आपका सनिधान अर्थात् दर्शनभया ऐसे कहकर राजा अश्वपर अरु विनायक जी निजवाहन सिंहपर सवार भये ५० अरु वे सारे सहस्त्रोंवीर भी निज२ वाहनपर चढे तो सुखसे मन्दिरमें जाकर हर्षसे निजनित्य नेम करते भये ५१ अरु सारे पुरवासी भी आरोग्यता से निज २ घर जाकर अर्थात् सुखसे निवास करते भये अरु सारे बाजो के बजते वन्दिजनराजाकोस्तुतिकरनेलगे५२अरुकाशिराजनेब्राह्मणों को अनेकसे दानदिये अरु तिनसे स्वस्तिवाचन करवाकर देवतों को अरु तिन विनायकजीको पूजताभया५२ अरु फिर नानालोकों ने देव विनायकजी को भेटदई अरु विनायकजी ने भी स्वेच्छा से

ब्राह्मणोंकोदई ५४ अरु फिर राजाने मन्त्री अरु शूरवीरों को वस्त्र दिये अरु सबको बिदाकरके वे विनायक काशिराज सुख से निद्रा को प्राप्तभये अर्थात् सोये ५५ जो नर इसनगरी के मोक्षको भक्ति से श्रवण करेगा सो सारे कामोंकोप्राप्तहो अरु कहीं भी शत्रुओसे बाधाकोप्राप्त न होगा ५६ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंडमें नगरी मोक्षण इसनामसे पन्द्रहवां अध्याय समाप्तभया १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

काशिराजकरके श्रीगणेपत्नी के साथ भृशुण्डिजी के दर्शनकरने को जाना वर्णन किया है ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे व्यास मैं आश्चर्य्यकरानेवाली कथातुम से कहताहू तुम श्रवणकरो जिसे सुनकर मनुष्य अत्यन्त सुख को प्राप्तहोवे १ सो कि राजाकाशिराज प्रातःकाल उठकर अरु नित्य की विधि करके बाहर आया तो विनायकजी के मन्दिर में जाकर अरु तिन्हें नमस्कार पूजकरके२ फिर बाल विनायकजीको भोजन के लिये प्रार्थनाकरी तो तिन्होंने उद्गार किया अर्थात् डकार लई जो नानाप्रकारके पकवानसेभई तृप्तिसे जन्य ३ अरु वाकीतिसने वहां लड्डू अरु पायसआदि अरु मालपूवे बड़े अरु सुन्दर निजगुण सहितपवित्रतंडुलान्न४अरुदहीदूधशहद घृतकटोकेपात्रसहित अरु मणि मोतियोंकीमाला अरु नानाप्रकार के अलंकार ५ जो नये २ अरु महामोल्यके थे सो तिसने तिनके देह मे देखे तो फिर नृपति काशिराज ने तिन विनायकजीको नमस्कारकरके पूछा कि हे जग दीश्वर ये पूजा आपकी किसभक्त ने करीहै तिसे मैं जाना चाहता हू अरु आपके प्रसाद से तिसे देखा भी चाहताहू ७ ऐसे राजा से कहे विनायकजी काशिराज भक्त को निजभक्त से किया पूजनरूह सुनातेभये ८ विनायकजी बोले कि हे राजन् जो तैंने पूछा सोही मैं कहताहूगा तू श्रवणकर सो हेनृपपुत्र सो मैं सक्षेपसेही कहता हूं ६ कि दण्डकवनके देश में (नामलनाम) पुर में (भृशुण्डीनाम)

घरहोगया तब तो लोगउठे अरु औरो कोभी उठाते भये ४२ फिर जो अग्निरहा तिससारे को विनायकजीपीगये अरु पैरोकीफटकार से ४३ महाशरीरी ज्वाला सुरयुक्त विदारणासुरको तब चूर्णकरते भये ४३ ऐसे वे योगमाया के बल से तिन दैत्यों को हतकर सारे मरेभयोको अरु नगर को जिलातेभये जैसे पहिले था ४४ तैसेही नगरको रचदिया अरु फिर बिनायकजी सिंहके समान गर्जतेभये तो सबलोग अरु काशिराज तिन बिनायकजीको स्तुतिकरतेभये४५ हे अनन्तशक्ते गणेश जी आपको नमस्कार है हे गुणों के अधीश्वर अरिष्टकेहन्ता आपको नमस्कारहै अरु सृष्टिकर्त्ता आपकोनमस्कार है अरु विश्वकेपाता रक्षक आपको नमस्कार है अरु विश्वके हन्ता संहारक आपको नमस्कारहै अरु ज्ञानके दाता आपको नमस्कार है अरु अज्ञान के नाशक आपको नकस्कारहै ४६ हे जगत्केपति देव अकालप्रलयरूप इसअग्निसे अरुलीलासे अवतारभये अर्थात् मायावीदैत्योसे हमें लीलाकरकेही बचायेहैं ४७ इस ऐसेमहाबली अग्निकोपीनेकी किसकी सामर्थ्यहै अरु भूगोल के सदृश मुखवाले इस महाअसुरको कौनमारै अर्थात् इन्होको आपहीनेमारे है ४८ अरु इनमरेभयोको जीवनकर्म अर्थात् जिआना आप से बिनऔर कौनकरै हेदेव आपही माता अरु आपही पिता रक्षकहो ४९ सो मेरा अरु मेरे जनो का महाभाग्य है जिससे आपका सन्निधान अर्थात् दर्शनभया ऐसे कहकर राजा अश्वपर अरु विनायक जी निजवाहन सिंहपर सवार भये ५० अरु वे सारे सहस्त्रोवीर भी निज२ बाहनपर चढ़े तो सुखसे मन्दिरमें जाकर हर्षसे निजनित्य नेम करते भये ५१ अरु सारे पुरवासी भी आरोग्यता से निज २ घर जाकर अर्थात् सुखसे निवास करते भये अरु सारे बाजो के बजते वन्दिजनराजाकोस्तुतिकरनेलगे५२अरुकाशिराजनेब्राह्मणों को अनेकसे दानदिये अरु तिनसे स्वस्तिवाचन करवाकर देवतो को अरु तिन विनायकजीको पूजताभया५२ अरु फिर नानालोकों ने देव विनायकजी को भेटदई अरु बिनायकजी ने भी स्वेच्छा से

ब्राह्मणोंकोदई ५४ अरु फिर राजाने मन्त्री अरु शूरवीरों को वस्त्र दिये अरु सबको बिदाकरके वे विनायक काशिराज सुख से निद्रा को प्राप्तभये अर्थात् सोये ५५ जो नर इसनगरी के मोक्षको भक्ति से श्रवण करेगा सो सारे कामोंकोप्राप्तहो अरु कहीं भी शत्रुओंसे बाधाकोप्राप्त न होगा ५६ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंडमें नगरी मोक्षण इसनामसे पन्द्रहवां अध्याय समाप्तभया १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

काशिराजकरके श्रीगणेशजी के साथ भृशुण्डिजी के दर्शनकरने को जाना वर्णन किया है ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे व्यास में आश्चर्य्यकरानेवाली कथातुम से कहताहूं तुम श्रवणकरो जिसे सुनकर मनुष्य अत्यन्त सुख को प्राप्तहोवे १ सो कि राजाकाशिराज प्रातःकाल उठकर अरु नित्य की विधि करके बाहर आया तो विनायकजी के मन्दिर में जाकर अरु तिन्हे नमस्कार पूजकरके२ फिर बाल विनायकजीको भोजन के लिये प्रार्थनाकरी तो तिन्होने उद्गार किया अर्थात् डकार लई जो नानाप्रकारके पकवानसेभई तृप्तिसे जन्य ३ अरु बाकीतिसने वहां लड्डू अरु पायसआदि अरु मालपूवे बडे अरु सुन्दर निजगुण सहितपवित्रतंडुलान्न४अरुदहीदूधशहद घृतकंठोकेपात्रसहित अरु मणि मोतियोंकीमाला अरु नानाप्रकार के अलंकार ५ जो नये २ अरु महामोल्यके थे सो तिसने तिनके देह में देखे तो फिर नृपति काशिराज ने तिन विनायकजीको नमस्कारकरके पूछा कि हे जग दीश्वर ये पूजा आपकी किसभक्त ने करीहै तिसे मैं जाना चाहता हूं अरु आपके प्रसाद से तिसे देखा भी चाहताहू ७ ऐसे राजा से कहे विनायकजी काशिराज भक्त को निजभक्त से किया पूजनकह सुनातेभये ८ विनायकजी बोले कि हे राजन् जो तैंने पूछा सोही मैं कहताहूंगा तू श्रवणकर सो हेनृपपुत्र सो मैं संक्षेपसेही कहता हूं ९ कि दण्डकवनके देश में (नामलनाम) पुर में (भृशुण्डीनाम)

मेराभक्तहै जो भूत भविष्य वर्त्तमानवेत्ता १० अरु जो त्रिलोकीको शीघ्रही रचने पालने संहारनेका समर्थ अरु ब्रह्मा विष्णु महेश ये भी जिनके नित्यदर्शनके अर्थी अर्थात् प्रयोजनवालेहैं ११ जो सब काल मेरेध्यान से विध्वसभये पापजिसके ऐसा मेराभक्त सोपहिले तिसके तपस्याकरते भृवोंकेबीचसे शुंडनिकला१२ तभीसे वे लोकों में सदा (भृशुण्डी) इसनामसे विख्यातहै सो कि वो अत्यंतभक्तिसे मृत्युलोकमे मेरी सदृशताको प्राप्तभयाहै १३ सोही तिसने हर्षसे आजशुदीचौथको मुझको पूजाहै सो हेनृप मेरेअगसे तू झरते दूध दही घृत शहददेख १४ अरु हेनृपश्रेष्ठ ये अन्न हमने तुमकोभोजन से बचा दिखाया है ब्रह्माजीबोले कि तब तो काशिराज बोला कि हे देवोकेदेव हेजगत्पते १५ मे तिन्हें देखने को चाहताहू वे यहां कैसेआवेंगे तो विनायक जी बोले कि हे राजन् तुम अभी तिनके आश्रमपैचलो १६ अरु तिन्हें प्रणाम पूजनकरके बिवाहकेलियेभी बुलायलेतेआवो अरु तिन्हे प्रयत्नसेप्रार्थनाकरना अरु मेरावचनभी कहना १७ कि हेमुने विनायक मेरेघर आयेभयेहैं सो वेभी आपके दर्शन की आकांक्षाकरतेहै तिन्होने यहांहमेंभेजेहैं १८ अरु आपके पूजन मे मेरी भी बडी आकांक्षाहै अरु आप आकर मेरेघर संपत्ति कोभीसफलकरो १९ हेराजन् जबतुम ऐसाकहोगे अरु वे जबमेरा नामसुनेगे तो वो मेराभक्त भृशुंडी तिसी क्षण से अर्थात् शीघ्रही आजावेगा २० ब्रह्माबोले कि तिन विनायकजी से कहा वो काम तिन्हें पूजकर शीघ्रगामी घोड़ेपर सवार होकर धनुषबाण धारण करे प्रस्थानकरताभया २१ तो नदी वन पर्वतोंको उलघकर धीरे२ चला तो राजा तिनके आश्रमपहुंचा तो राजा तिसअश्व से उतरता भया २२ तो वहांजाय राजा मुनि भृशुंडिजी को देखकर प्रणाम करताभया अरु आपभी तिनकरके सन्मान कियागया तिन ऋषि जीको हर्षसे पूजताभया २३ अरु तिसकी आज्ञासे बैठगया महा वनको देखा अरु सरोवर वृक्ष बेल फूल फलों से रमणीय तिनके आश्रमकोदेखा२४ सो कि न तो कैलास न विष्णुलोक अरु न सत्य

लोक तिसकेसमानथा जो वेदध्वनि और२ शास्त्रशब्दोंकरके विशेष शोभित २५ अरु अग्निहोत्रोंसे शोभित अरु मृग पक्षी जल जीवों करके युक्त तो तिसऐसे आश्रमको देखकर प्रसन्नमनभया मोद को प्राप्तहुआ२६ तो ये राजा दंडवत् प्रणामकरके तिनमुनिजीसे सारा वृत्तान्त कहताभया सो कि विवाहकाकार्य्य अरु तिनकी पूजा अरु विनायकजी की आज्ञा भी ये सबकहा अरु ये प्रार्थनाभी करी कि तिससे अर्थात् विवाह निजपूजा अरु गणेशजी के बुलाने से आप मेरे घरचलो ऋषिबोले कि हे महाराज तूकौनहै अरु वो विनायक तुम्हाराकौनहै २७।२८ नृपबोला कि मुझे आप सूर्यवंशमे जन्मा काशिराज विख्यात जानिये अरु वे विनायकजी कश्यपजी के पुत्र अरु तुम्हारे देवता हैं २९ भोजन के कामवाले तिनकरके मैंने भी आपकीकीर्ति सुनीहै सोकि वे चौथको नाना बलिसमूहोंसे सम्यक पूजाकियेगये ३० तो तृप्त भये उन्होने मेरेनगर मे वे सब पदार्थ दिखाये अरु मुझसे बोले कि वे मुनिजी हमारानामलेतेही आजावें गे ३१ इससे हे महामुनिजी मैंहीं आपके बुलाने के लिये आयाहूं सो चर्म चक्षुवालोंको दुर्लभ आपके दर्शनको मानकर अर्थात् आप के शीघ्र दर्शनकेलिये मैंहींआयाहूं ३२ श्रीब्रह्माजीबोले कि राजा से ऐसेकहेगये आश्चर्य्य युक्त विनायकजी बोले कि ये सत्यहै या असत्य ३३ क्योंकि जो गणेश्वर वेद वेत्ताओं के अग्राह्य अर्थात् तिनसे भी सम्पूर्ण नहींजानेजाते अरु तैसेही वेदान्तोंके अरु चित्त के भी अगोचर ऐसे वे तुम्हारेघर कैसेरहें ऐसे मन सन्देहकोप्राप्त होताहै ३४ अरु तेतीसकिरोड देवता जिनके दर्शन के लिये आवें सो मैं तुम्हारे कहनेसेही कैसे अपने आश्रमको छोडकरआऊं ३५ जो वे देव तुम्हारे घर रहतेहीहैं तो हेनराधिप तिनका स्वरूपभी कहो तो मैं तुम्हारे घरचलूंगा ३६ राजाबोला कि तिनके स्वरूप तो अनन्तहैं तिन्हें गिननेको ब्रह्माजीभी न समर्थहैं अरु न शेषजी तो और नर तो कैसे कहनेको समर्थहोय ३७ हे मुनिजी वे भले प्रकार कश्यपजीकेघर अवतारभये हैं अरु त्रिलोकी में (विनायक)

जो इसनामसे विख्यात ३८ जो सातवर्षकेही अतिअद्भुत रूपकरके
जगदीश्वर वडे २ अद्भुतही कर्म करतेभये ३६ जिन्हें करनेको कोई
न समर्थ सो२ उन्होंने कियेहैं अरु स्वरूप भी मै कहताहूंगा जिस
रूपसे मेरेघर ४० देवोंकेदेव विनायकजी ब्रह्मचारी के स्वरूप में
रहते हैं सो जब वे अवतार भये थे वो दिव्य कांतिवाले अरु चतु
र्भुज ४१ दिव्यमाला वस्त्रधरे सुन्दरअलंकार धारणकरे दिव्यशस्त्र
धारे दिव्य सुगन्ध लेपनकिये सो कश्यपजी करके प्रार्थना किये
गये४२ फिर वे तभी सादे बालककेही स्वरूपहोगये तो भृशुण्डि
जी बोले कि हे राजश्रेष्ठ येही देव गणेशजी मेरे ध्यानगम्य हैं ४३
जिनके प्रभावसे देव ऋषियोंको भी दुर्लभ मेरे ये शुडभई हैं सो
जहां कहींभी वे बुलावेंगे तहांहींजाऊंगा४४ ब्रह्माबोले ऐसे अर्थात्
वे जहांकहीं जब बुलावेंगे तब जाऊंगा ऐसा मुनिजी का वचनसुन
चिन्ताभरा राजा ये बोला यें मेराभाग बडाअभागी होगयाहै जो
कि ४५ आपकी आशकरके महाघोरपर्वत अरु वन उलच२ करके
तो यहां आयाहूं अरु आपका बडा दर्शन भी प्राप्त भया ४६ अब
आपको स्थानपर लेजानेकेलिये मेरीढाढ तोहै नहीं अर्थात् हे विभो
आपही अपनीकृपासे चलो या जहांकहीं बुलावे जब चलो इसमें
मेरा कुछवशनहीं तबतो मुनिजीने करुणाकरके राजाकेशिरपरहाथ
धरा४७अरु कहाकि हेराजन् तू आंखमीचले तो तिसनेमीचलईतो
खोलकर क्षणमात्रमेंही इसराजाने ४८ अपनेको घरके भीतरगया
पूर्ववत् तिनके प्रसादसे माना अरु इनका सबवृत्तान्तभी विनायक
जीसे कहताभया ४६ आ[illegible] डो ये बोले [illegible] तिनके दर्शनसे
तो हर्षसेभराहूं अरु न [illegible] संद्[illegible] क वे मुनिजीतो
आपके वचनसे अरु मेरे [illegible] आये [illegible] बल
करना सा[illegible] प [illegible] में ढा[illegible]
मुझे जला[illegible] त [illegible]
राजाका [illegible] इसने [illegible]

सत्रहवां अध्याय॥

भुशुण्डिजीका निजाश्रमसेआना अरु साक्षात् स्वरूपदेखकेश्रीगणेशजी की स्तुतिकरना वर्णनकियाहै॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तबतो सर्वज्ञ भी विनायक जी आये मुनि सिद्द काशिराजको मेघसी गर्जतीबानीसे आदरपूर्वक ये पूछनेलगे१ तुमने वहांजाय क्या कहाथा अरु फिर तिन्होंने क्याकहाहै राजन् ये सब मुझसे कहो सुनके में तुमको मति बताऊंगा २ राजाबोला कि आपकावचन सब उनसेकहा अरु मैंने भी तिनकी बहुतही प्रार्थनाकरी तो वे मुनिबोले कि तू कोनहै अरु वे विनायकजीभी कोन सेहैं ३ जब वे उपासनीय रूपको धारणकरें तब मैं देखनेको आऊंगा ऐसे मैं तिनसे निरादरकिया जब मार्गकी चिन्ता करनेलगा तबतो मुझको ४ तिन्होनेहीं मेरे शिरपर हाथ धरकर भेजा है सो उन्होंने पहिले तो मेरीआंखेंमिचाईथी फिर क्षणमेंही आंखखोली ५ तो तितनेही तुमको हे सुरेश्वर मेरेघर में स्थित पूर्ववत् देखेहैं अरु तिनके आश्रमस्थानका स्मरणकरके मेरे चित्तमें हर्षहोताहै ६ तो तिसका ऐसावचन सुनतेही विनायकजी हँसे अरु बोले कि हे राज सिद्द तू थकगयाहै परफिर तिसआश्रमपैजाव७ वो मुनि(विनायक) ऐसा मेरा नामसुननेही आजायगा तो तिन सर्वरूप विनायकजीके ऐसेकहेसन्ते फिर राजा तितनेहीं मे तिसी आश्रम में स्थित भुशुण्डि जीको देखे तो भुशुण्डि राजाको देख हृदयमे तर्क करनेलगा ८।९ कि ये राजा फिर क्यों आया अरु वे क्याकहेंगे फिर तिनमुनिश्रेष्ठ भुशुण्डिजी को राजा प्रणाम करके बोला १० कि हे विप्र तुम्हें तुम्हारेस्वामी गजाननजीबुलावते हैं तो वे तिनकानामही सुनतेही हर्ष अरु मूर्च्छाभये ११ अरु रोमांच खड़ेभये शरीर ये भुशुण्डिजी आनन्दके आंशुओं को छोडनेलगे अरु बोले जो मेरेपखहोते तो मैं उड़करही वहां चलाजाता १२ ऐसी उत्कण्ठा अर्थात् चावपन से तिसराजाके साथचले तो कभी भी नहीं चले मुनि भुशुण्डिजी के

चलते १३ पृथिवीचली अरु सम्मुख होकर कम्पती ये बोली कि
हे मुनिसिंहजी मुझे रक्षाकरना तो मुनि बोले कि हेधरे मुझसे तुझ
को भयनहींहै १४ मैं निजनाथ गजाननजीको देखनेकेलिये तुतसे
जाताहूं ऐसे भूमिकोकह तिसके आगे चलने को मुनिगये १५ तो
तीसरापैर धरतेही मुनिजीने काशिराज को वोही पुरीदिखादई तो
निजनगरीको देख राजा हर्षसे मुनिश्रेष्ठ जी से बोला १६ आपके
प्रसादसे ये नगरी वेगही प्राप्तभई सो हेमुने आपकी महिमा तप
अरु जपकरवोकेभी न जाननेयोग्यहै १७ ऐसेकह राजा शीघ्रतिन्है
निजघर मे लेगया अरु सुन्दर सुवर्ण के आसनपर भुशुण्डिजी को
बैठाकर १८ पाद्य अर्घ्य विष्टरादिकोंकरके महाभक्तिसे पूजताभया
तो ऋषिजीबोले कि हेराजन् मैं जितने गणेशजीको न देखूं तवतक
प्रतरणकिया अर्थात् ठगा गयाहूं १९ सो तू तिन्हें दिखा नहीं तो
तुझे शापके मैं निजआश्रम को चलाजाऊंगा राजाबोला कि गजा-
ननजी तो वालस्वभाव से वालकोंमेंखेलतेहैं २० जैसे कोईशूरवीर
धूललिपटायेहो तैसेही वे शोभायमानहैं तो शुंडादंडसे विराजमान
तिन विनायकजीको मुनिजीने भी देखे जो किरोडसूर्य प्रकाशवाले
द्विभुज अरु गजमुखजी २१ तो नरपतिसे मुनि क्रोधसेबोले कि मैं
इसे कैसेनवों हे राजन् तिसबड़ेको धिक्कारहै जो छोटेको नमस्कार
करे २२ गजगण्ड विदारण करनेवाला सिंह तृणको कैसेचरै ब्रह्मा
बोले तिन विनायकजीने भी इसमुनिवाक्यको सुना तो बालकजी
इन मुनिजीसे कहनेलगे २३ जो लीला शरीरधारी विभु आश्चर्य
को प्राप्तभये से (विनायकजी बोले) कि हे भुशुण्डिजी वो तुम्हारा
स्वामी कैसाहै सो भलेप्रकारकहो २४ तो मुनिबोले कि दिव्यवस्त्र
धारी अरु दशभुजोंवाले जो मोतियोंकीमाला से अलंकृत अरु जो
सिद्धि बुद्धि संयुक्त अरु कानोमें कुंडलोंसे विशेष शोभित २५ अरु
शुंडादंडयुक्त मुखवाले लम्बकर्ण सिन्दूरसेसजे सर्पोंसेशोभावाले
गम्भीरनाभि जिनकी वजरहे चरण पै नूपुर जिनके २६ भारी मुकुट
की शोभा से संयुक्त अरु दशोंशस्त्रों से सजे हाथ जिनके अर्थात्

एक २ हाथमें एक २ ही आयुध धारणकिये अरु जो एकदंत भाल चन्द्रवाले छोटे घुघुरोंवाली अर्थात् तगडी से शोभायुक्त २७ अरु मोरपर सवार अरु देवसमूहोंसे वन्दनाकरी चर्णपादुका जिनकी ऐसे विनायकजी ब्रह्मावोले कि ऐसे उस वचन को सुन पद्मासन वैठे आप वालक विनायक जी तैसेही रूपवाले होगये जो रचना रक्षा संहारकारी तो भुशुंडिजी तिन्हें देखतेही जो निजके उपासनीयगजमुखजी २९ तो वे प्रेमसे पृथ्वीपर लोटगये प्रतिप्राप्ति अर्थात् कहतेरहीं दर्शनपाये कुछ२ लज्जाकोप्राप्त अरु परम आनन्दभये रोमांचित शरीरभये भुशुंडिजी नाचनेलगे ३० अरु फिर देह भाव को प्राप्तहो कर विधिवत् प्रणामकरते भये अरु यथाविधि उपचारों से पृथक् २ इनकी पूजाकरताभया ३१ तो परमात्मा गजाननजी भी इन्हें दशोंभुजों से स्पर्शकरके हर्षनेभरे अरु फिर इन दोनों को आंशुओं सहित देखकर राजाने भी आश्रु अर्थात् आनन्द के आंशु छोड़े ३२ मेरा पहिले जन्मकामही पुण्यफलाहै जो मैंने आज गणेश जीके भक्तसेभये अद्भुत सुखकोदेखाहै ३३ तो इसनेदोनोंकोप्रणाम कर यथाविधि पूजे तो भारी आसनपर विराजमान वे दोनोंआपस में बोले ३४ तो गजाननजी भुशुंडिजीसे बोले कि तेरी निष्ठा मैंने जानी थी सो राजाको भी निवेदन कीगई अर्थात् वताईगई इसीसे मैंने दशभुजशोभित ये वेष धारणकिया है ३५ हेमुनें जैसे २ और भी जो जन मुझे ध्याताहै तैसे २ ही रूपमें ठरता हूं अरु तिसलोक का मनवाञ्छितफलदेताहूं तिससे ये संसार विश्वाससे मुझे भजता है अरु दुष्टोंके भयके वोझसे ये दवीभईधरती सत्यलोकमेंगई ३६ तो ब्रह्माजीकी शरणप्राप्तभई उसकरके प्रतिवोधकिया अरु अदिती के वरसे मैं कश्यपजीके पुत्रजन्माहूं ३८ सो भूमि का भारहरूंगा अरु इन्द्रादिकोंको निज २ स्थानमें दैत्योंका अनेकप्रकार से नाश करके तिन्हें स्थापनकरूंगा ३९ तेरे अत्यन्त तीव्र अनुष्ठानकोदेख कर मैं ऐसाहोगयाहूं अव देवान्तकको भाईसहित मारकरके निज पदको प्राप्तहोऊंगा ४० ऋषिवोले कि हेप्रभो आपका चरणकमल

चलते १३ पृथिवीचली गरु सम्मुख होकर कम्पती ये बोली कि हे मुनिसिंहजी मुझे रक्षाकरना तो मुनि बोले कि हेधरे मुझसे तुझ को भयनहींहै १४ मैं निजनाथ गजाननजीको देखनेकेलिये तुंतसे जाताहूं ऐसे भूमिकोकह तिसके आगे चलने को मुनिगये १५ तो वीसरापैर धरतेही मुनिजीने काशिराज को वोही पुरीदिखादई तो निजनगरीको देख राजा हर्षसे मुनिश्रेष्ठ जी से बोला १६ आपके प्रसादसे ये नगरी वेगही प्राप्तभई सो हेमुने आपकी महिमा तप अरु जपकरवोकेभी न जाननेयोग्यहै १७ ऐसेकह राजा शोघ्रतिन्हे निजघर मे लेगया अरु सुन्दर सुवर्ण के आसनपर भुशुण्डिजी को बैठाकर १८ पाद्यअर्घ्य विष्टरादिकोकरके महाभक्तिसे पूजतभया तो ऋषिजीबोले कि हेराजन् मैं जितने गणेशजीको न देखूं तबतक प्रतरणकिया अर्थात् ठगा गयाहूं १९ सो तू तिन्हें दिखा नहीं तो तुझे शापके मै निजआश्रम को चलाजाऊंगा राजाबोला कि गजाननजी तो बालस्वभाव से बालकोंमेंखेलतेहैं २० जैसे कोईशूरवीर धूललिपटायेहो तैसेही वे शोभायमानहै तो शुंडादंडसे विराजमान तिन विनायकजीको मुनिजीने भी देखे जो किरोडसूर्य प्रकाशवाले द्विभुज अरु गजमुखजी २१ तो नरपतिसे मुनि क्रोधसेबोले कि मैं इसे कैसेनवों हे राजन् तिसबड़ेको धिक्कारहै जो छोटेको नमस्कार करै २२ गजगंड विदारण करनेवाला सिंह तृणको कैसेचरै ब्रह्मा बोले तिन विनायकजीने भी इसमुनिवाक्यको सुना तो बालकजी इन मुनिजीसे कहनेलगे २३ जो लीला शरीरधारी विभु आश्चर्य को प्राप्तभये से (विनायकजी बोले) कि हे भुशुण्डिजी वो तुम्हारा स्वामी कैसाहै सो भलेप्रकारकहो २४ तो मुनिबोले कि दिव्यवस्त्र धारी अरु दशभुजोवाले जो मोतियोंकीमाला से अलंकृत अरु जो सिद्धि बुद्धि संयुक्त अरु कानोमें कुंडलोंसे विशेष शोभित २५ अरु शुंडादंडयुक्त मुखवाले लम्बकर्ण सिन्दूरमेंसने सर्पोंसेशोभावाले गम्भीरनाभि जिनकी बजरहे चरण पै शूरेजिनके २६ भारी मुकुट की शोभा से संयुक्त अरु दशोंशस्त्रों से सजे हाथ जिनके अर्थात्

एक २ हाथमें एक २ ही आयुध धारणकिये अरु जो एकदंत भाल चन्द्रवाले छोटे घुघुरोंवाली अर्थात् तगड़ी से शोभायुक्त २७ अरु मोरपर सवार अरु देवसमूहोंसे वन्दनाकरी चरणपादुका जिनकी ऐसे विनायकजी ब्रह्मावोले कि ऐसे उस वचन को सुन पद्मासन बैठे आप बालक विनायक जी तैसेही रूपवाले होगये जो रचना रक्षा संहारकारी तो भुशुंडिजी तिन्हें देखतेही जो निजके उपासनीयगजमुखजी२८तो वे प्रेमसे पृथ्वीपर लोटगये प्रतिभासित अर्थात् कहते२ ही दर्शनपाये कुछ२ लज्जाकोप्राप्त अरु परम आनन्दभये रोमांचित शरीरभये भुशुंडिजी नाचनेलगे ३० अरु फिर देह भाव को प्राप्तहो कर विधिवत् प्रणामकरते भये अरु यथाविधि उपचारो से पृथक् २ इनकी पूजाकरताभया ३१ तो परमात्मा गजाननजी भी इन्हें दशोंभुजों से स्पर्शकरके हर्षितभये अरु फिर इन दोनों को आंशुओं सहित देखकर राजाने भी आश्रु अर्थात् आनन्द के आंशु छोड़े ३२ मेरा पहिले जन्मकामही पुण्यफलाहै जो मैंने आज गणेश जीके भक्तसेमने अद्भुत सुखकोदेखाहै ३३ तो इसनेदोनोंकोप्रणाम कर यथाविधि पूजे तो भारी आसनपर बिराजमान वे दोनोंआपस में बोले ३४ तो गजाननजी भुशुंडिजीसे बोले कि तेरी निष्ठा मैंने जानी थी सो राजाको भी निवेदन कीगई अर्थात् बताईगई इसीसे मैंने दशभुजशोभित ये वेप धारणकिया है ३५ हेमुनें जैसे २ और भी जो जन मुझे ध्याताहै तैसे २ ही रूपमें धरता हूं अरु तिसलोक का मनवाञ्छितफलदेताहूं तिससे ये समार विश्वाससे मुझे भजता है अरु दुष्टोंके भयके बोझसे ये दबीभईधरती सत्यलोकमेंगई ३६ तो ब्रह्माजीकी शरणप्राप्तभई उसकरके प्रतिबोधकिया अरु अदिती के वरसे मैं कश्यपजीके पुत्रजन्माहूं ३८ सो भूमि का भारहरूंगा अरु इन्द्रादिकोंको निज २ स्थानमें दैत्योंका अनेकप्रकार से नाश करके तिन्हें स्थापनकरूंगा ३९ तेरे अत्यन्त तीव्र अनुष्ठानकोदेख कर मैं ऐसाहोगयाहूं अब देवान्तकको भाईसहित मारकरके निज पदको प्राप्तहोऊंगा ४० ऋषिबोले कि हेप्रभो आपका चरणयुगल

देखके मैं कृतकृत्य अरु आपके दर्शनसे पवित्रभया हूं जो आपका चरणयुग सब संसारको सुखदेनेवाला अरु हेदेव वन्दनीय अरु सब क्लेशहारी वाञ्छित प्रदाताहै सो हे विश्वव्यापिन् आप मुझको वरदानदेवो जिससे मैं तृप्तिको प्राप्त होवों ४२ हे विघ्नपजी जब २ मैं आपको ध्यावों हे करुणानिधे तब २ ही इसीरूप से मेरे आगे प्रत्यक्षहोतेरहो४३ अरु आपकानाम भी (आशापूरक)ऐसीविख्यातिको प्राप्तहोगा श्रीगजाननजीबोले कि जब २ तुम वाञ्छाकरोगे तब२ही मैं तुम्हारेपासआयाकरूंगा ४४ अरुभक्तिभावकरके तुमसे कहा येही हमारा नाम भी विख्यात होगा ब्रह्मावोले कि ऐसेवर सुनके फिर मुनिजीने प्रणाम किया ४५ तो तिन मुनिजीके प्रणाम किये गजानन जी फिर तिनके शिर परसने से हाथ धरकर कहने लगे ४६ कि हे ब्रह्मन् जो २ तेरा मनवाञ्छितहै सो २ सब सिद्धिको प्राप्तहोगा अरु हेमुने तुमको हमारी नित्यही न विस्मृति अर्थात् स्मरणरहैगा ४७ ब्रह्मा बोले कि ऐसे कहकर वे बाल बिनायकजी क्रीडा करते भये सोकि वे पद्मासन भये ध्यानही करते भये ४८ तब तो सबलोगोंने परमही आश्चर्य्य किया इसबालरूप परमात्मा गजाननजी के अद्भुत चरित्रको देखकर ४९ तो काशिराज बोला कि पृथ्वीतलमें मैं धन्यहू जो इनके ब्रह्मादिको के भी दुर्लभ दर्शनको प्राप्तभया हू ५० फिर तिन बालकजी का हाथ पकडकर हर्षमें अवर्गेह मे लेगया अरु स्वाद २ अन्न भोजन कराया अरु पहिलेकी नाईं शयन करावा भया ५१ अरु हे मुने व्यास पूर्ववत तिनसे आज्ञा लेकर आपभी सोया ५२ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड मे बालचरित्र मे भृशुण्डिजी को दर्शन वरदान देना इस नाम से सत्रहवा अध्याय समाप्त हुआ ॥ १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

राक्षस करके ज्योतिषी बनकरआना अरु श्रीगणेशजीसे तिसकी मोक्षहोना ये कथा कहीगई है ॥

व्यासजीने पूछा कि हे लोकेश ब्रह्माजी दूसरे दिन प्राप्त भये कौन कथा भई सो आप वर्णन करो क्योंकि मैं सुनता भी तृप्ति को नहीं प्राप्त होता हूं अर्थात श्रीगणेश कथा मुझ को वारम्वार प्यारी लगती है १ तौ श्रीब्रह्माजी बोले कि हे व्यास तुम सावधान भये श्रवण करो कि हम तुम्हे पापदूर करनेवाली दिव्य विनायक जीकी की भई कथाको संक्षेप सेही कहते हैं अर्थात् विस्तार से तो कहांतक कहो २ सो कि सूर्य्य जी के उदित भये वे दोनों काशिराज विनायकजी निज नित्यकर्म्म अर्थात् सन्ध्या वन्दनादि समाप्त करके विनायकजी तो वालकोंमे खेलनेकोगये अरु तैसेहीराजा निजराज गद्दीपरगया ३ अरुएकराक्षसमायासे ज्योतिपशास्त्रमेकुशलब्राह्मण होकर जो वायेंहाथमे तो तालसम्वन्धी अर्थात् सामुद्रिककी पुस्तक अरु दहने हाथमें मालालिये ४ अरु श्वेतरक्त पहिरान अर्थात् कपडे पहिरे अरु अतिभारी शिरोवस्त्र अर्थात् पगियावांधे अरु गोपी चदन के वारह तिलक लगाये ५ अरु अत्यन्तदीर्घ मुखकेश अर्थात् दाढ़ी जिसकी ऐसा वो राजा के पास आया जितने ये समीप आया तभी राजाने तिसे प्रणामकिया ६ अरु तिसे उठकर निज आसनपर बैठालिया अरु तिसको कुशलपूछा अरु क्या कार्य्य अरु कहांसे आगमनभया सोपूछा७अरु हे द्विजेन्द्र आपकानामक्याहै क्याआपका जानाहै अरु आपका तप क्याहै अर्थात् आपने कितनी तपस्या की है ८ सो हे कृपा निधान मुनिजी आप मेरे पर कृपा करके सत्य २ कहिये ब्रह्माजीवोले कि वो ऐसे राजासे पूछागया पहिले राजाको आशीर्व्वाद देकर हे महामुने व्यास क्रम से सवहृत्तान्त कहताभया ९ कि हे राजपुत्र मेरा (हेमज्योतिषो) ऐसा नामहै सो मैं तेरे आश्रय वसने को गन्धर्व्वलोक से आया हूं १० हेराजन् मैं भूत

देखके मैं कृतकृत्य अरु आपके दर्शनसे पवित्रभया हू जो आपका चरणयुग सब ससारको सुखदेनेवाला अरु हेदेव वन्दनीय अरु सब क्लेशहारी वाञ्छित प्रदाताहै सो हे विश्वव्यापिन् आप मुझको वरदानदेवो जिससे मैं तृप्तिको प्राप्त होवों ४२ हे विघ्नपजी जब २ मैं आपको ध्यावो हे करुणानिधे तब २ ही इसीरूप से मेरे आगे प्रत्यक्षहोतेरहो४३ अरु आपकानाम भी (आशापूरक)ऐसीविख्यातिको प्राप्तहोगा श्रीगजाननजीवोले कि जब २ तुम वाञ्छाकरोगे तब२ही मैं तुम्हारेपासआयारहूंगा ४४ अरुभक्तिभावकरके तुमसे कहा येही हमारा नाम भी विख्यात होगा ब्रह्मावोले कि ऐसेवर सुनके फिर मुनिजीने प्रणाम किया ४५ तो तिन मुनिजीके प्रणाम किये गजानन जी फिर तिनके शिर परमने से हाथ धरकर कहने लगे ४६ कि हे ब्रह्मन् जो २ तेरा मनवाञ्छितहै सो २ सब सिद्धि को प्राप्तहोगा अरु हेमुने तुमको हमारी नित्यही न विस्मृति अर्थात् स्मरणरहेगा ४७ ब्रह्मा वोले कि ऐसे कहकर वे बाल विनायकभी क्रीडा करते भये सोकि वे पद्मासन भये ध्यानही करते भये ४८ तब तो सबलोगोने परमही आश्चर्य्य किया इसबालरूप परमात्मा गजाननजी के अद्भुत चरित्रको देखकर ४९ तो काशिराज बोला कि पृथ्वीतलमे मैं धन्यहू जो इनके ब्रह्मादिको के भी दुर्लभ दर्शन को प्राप्तभया हू ५० फिर तिन बालकजी का हाथ पकडकर हर्षमे अपर्गृह मे लेगया अरु स्वाद २ अन्न भोजन कराया अरु पहिलेकी नाईं शयन कराता भया ५१ अरु हे मुने व्यास पूर्ववत तिनसे आज्ञा लेकर आपभी शोया ५२ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड मे बालचरित्र मं भुशुण्डिजी को दर्शन वरदान देना इस नाम से सत्रहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ १७ ॥

अठारहवां अध्याय॥

राक्षस करके ज्योतिरी बनकरआना अरु श्रीगणेशजीसे तिसकी मोक्षहोना ये कथा कहीगई है॥

व्यासजीने पूछा कि हे लोकेश ब्रह्माजी दूसरे दिन प्राप्त भये कौन कथा भई सो आप वर्णन करो क्योंकि मैं सुनता भी तृप्ति को नहीं प्राप्त होता हूं अर्थात् श्रीगणेश कथा मुझ को वारम्वार प्यारी लगती है १ तो श्रीब्रह्माजी बोले कि हे व्यास तुम सावधान भये श्रवण करो कि हम तुम्हे पापदूर करनेवाली दिव्य विनायक जीकी की भई कथाको संक्षेप सेही कहते हैं अर्थात् विस्तार से तो कहांतक कहो २ सो कि सूर्य्य जी के उदित भये वे दोनो काशिराज विनायकजी निज नित्यकर्म अर्थात् सन्ध्या वन्दनादि समाप्त करके विनायकजी तो वालकोमे खेलनेकोगये अरु तैसेहीराजा निजराज गद्दीपरगया ३ अरुएकराक्षसमायासे ज्योतिपशास्त्रमेकुशलब्राह्मण होकर जो वायेंहाथमे तो तालसम्बन्धी अर्थात् सामुद्रिककी पुस्तक अरु दहने हाथमे मालालिये ४ अरु श्वेतरक्त पहिरान अर्थात् कपडे पहिरे अरु अतिभारी शिरोवस्त्र अर्थात् पगियाबांधे अरु गोपी चंदन के वारह तिलक लगाये ५ अरु अत्यन्तदीर्घ मुखकेश अर्थात् दाढ़ी जिसकी ऐसा वो राजा के पास आया जितने ये समीप आया तभी राजाने तिसे प्रणामकिया ६ अरु तिसे उठकर निज आसनपर बैठालिया अरु तिसको कुशलपूछा अरु क्या कार्य्य अरु कहांसे आगमनभया सोपूछा७अरु हे द्विजेन्द्र आपकानामक्याहै क्याआपका जानाहै अरु आपका तप क्याहै अर्थात् आपने कितनी तपस्या की है ८ सो हे कृपा निधान मुनिजी आप मेरे पर कृपा करके सत्य २ कहिये ब्रह्माजीबोले कि वो ऐसे राजासे पूछागया पहिले जा। आशीर्वाद देकर हे महामुने व्यास क्रम से सबवृत्तान्त या ९ कि हे राजपुत्र मेरा (हेमज्योतिपो) ऐसा । मैं तेरे आश्रय वसने को गन्धर्व्वलोक से आया हूं १०

देखके मैं कृतकृत्य अरु आपके दर्शनसे पवित्रभया हूं जो आपका चरणयुग सब संसारको सुखदेनेवाला अरु हेदेव वन्दनीय अरु सब क्लेशहारी वाञ्छित प्रदाताहै सो हे विश्वव्यापिन् आप मुझको वरदानदेवो जिससे मैं तृप्तिको प्राप्त होवों ४२ हे विघ्नपजी जब २ मैं आपको ध्यावों हे करुणानिधे तब २ ही इसीरूप से मेरे आगे प्रत्यक्षहोतेरहो४३ अरु आपकानाम भी (आशापूरक)ऐसीविख्यातिको प्राप्तहोगा श्रीगजाननजीबोले कि जब २ तुम वाञ्छाकरोगे तब२ही मैं तुम्हारेपासआयाकरूंगा ४४ अरुभक्तिभावकरके तुमसे कहा येही हमारा नाम भी विख्यात होगा ब्रह्माबोले कि ऐसेवर सुनके फिर मुनिजीने प्रणाम किया ४५ तो तिन मुनिजीके प्रणाम किये गजानन जी फिर तिनके शिर परसने से हाथ धरकर कहने लगे ४६ कि हे ब्रह्मन् जो २ तेरा मनवाञ्छितहै सो २ सब सिद्धिको प्राप्तहोगा अरु हेमुने तुमको हमारी नित्यही न विस्मृति अर्थात् स्मरणरहेगा ४७ ब्रह्मा बोले कि ऐसे कहकर वे बाल विनायकजी क्रीड़ा करते भये सोकि वे पद्मासन भये ध्यानही करते भये ४८ तब तो सबलोगोंने परमही आश्चर्य किया इसबालरूप परमात्मा गजाननजी के अद्भुत चरित्रको देखकर ४६ तो काशिराज बोला कि पृथ्वीतलमें मैं धन्यहूं जो इनके ब्रह्मादिकों के भी दुर्लभ दर्शनको प्राप्तभया हूं ५० फिर तिन बालकजी का हाथ पकड़कर हर्षसे अंतर्गृह में लेगया अरु स्वाद २ अन्न भोजन कराया अरु पहिलेकी नाईं शयन कराता भया ५१ अरु हे मुने व्यास पूर्ववत् तिनसे आज्ञा लेकर आपभी सोया ५२ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में बालचरित्र में भुशुंडिजी को दर्शन वरदान देना इस नाम से सत्रहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ १७ ॥

गा अरु हे गणकश्रेष्ठ तुमने इनवालकजी को नहींजानेहैं २४ सो
कि वे औरन्ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शूलधारी इनको अरु वहुतसे
ब्रह्मांडोको रचदेंगे जो इच्छाहै तो अर्थात् निजेच्छासे ही वे सब
करसक्तेहैं २५ अरु हे द्विजोत्तम जो तुम्हें निजवाक्य में निश्चय है
तो इसे लेजाओ अरु घोर गहन वनमें छोडके फिर आजाओ २६
जो संसारके द्वेषी अति वलवालेथे सो सवइसीसे हतेगयेहैं सो ये
अपने द्वेषीको न जाने कैसे कहां स्थापन करेंगे अर्थात् इनसे द्वेष
बुराहै २७ सो हम इनकेवुरेको कभीभी मनमें नहीं चितवन करसक्ते
जिनसे यहनगरी अरु मेराराज्य उत्पातसमूहसे वहुधा रक्षाकिया
गयाहै २८ यहइन्द्रको तो न इन्द्र अर्थात् नीचाकरसक्तेहे अरुअस-
मर्थ को समर्थ अरु छोटेकोवडा ऊंचेकोनीचा तैसेही नीचेकोऊंचा
ईशको अनीश्वर करदेतेहैं २९ तो राजाकी वाणीसुनकर ज्योतिषी
जी क्रोधसे लाल२ होगये अरु कुछ२ नीचामुखकिये राजासे कहने
लगा ३० मैंने तो तुम्हाराहित वाक्यकहा अरु तुम्हें वुराभसिगाहै
सो ठीकहै क्योंकि कोई अपने भलेवुरे अवश्यभावि अर्थात् प्रारब्ध
को उल्लघंनहीं सक्ताहै ३१ हेनृपति तू इसवालकको तो मुझेदिखाव
मैं तुझे इसकेलक्षण वताऊंगा तव तो राजा सववालकों को वुला
लिये ३२ तो तिनके आगे २ विनायकजी आये फिर वे भागते
भागते सव भी आये तिन्होंने ज्योतिषीको नमस्कार कर पूछा कि
कहांसेआयेहो ३३ तुम ज्योतिषशास्त्रमें कुशल क्या सामुद्रिकलक्षण
भी जानतेहो तो हे भूत भविष्य वर्त्तमान मेरेभाग्यका फलकहिये ३४
ब्रह्मावोले कि वो कपटीविप्र इन वालकजी के धैर्य्यवचन को सुन
के मनमें विचारनेलगा कि अव कैसे स्वस्तिगमन अर्थात् कुशलग-
तिहोवे ३५ क्योंकि इसने अनेक वलवाले दुष्ट मारेहैं फिर तो वो
बाल विनायक जी का हाथ पकड़ के शुभाशुभ फल कहता भया
कि ३६ तू बारदिनमें कुयेंमें पडेगा जो किसी तरह निकसा भी तो
समुद्रमें डूवेगा ३७ जो तिससेभी जीतारहा तो आगमें दग्धहोवेगा
वहांसे भी जो जीवे तो तेरे पर कोई पर्व्वत गिरेगा ३८ तिससे भी

भविष्यत वर्त्तमान अरु शान्ति कर्म्म अर्थात् जिनसे शुभ शान्ति
यहसब जानताहू सो मैं तेरे अवश्यभावि दुष्टचिन्हको जानकर ते
पास आगयाहू ११ अरु हे नृपश्रेष्ठ आपके आश्रय बसने को मे
इच्छा भी है रजा बोला कि हे महामुनिजी यह किस कारण इत
अरिष्टहोतेहैं १२ अरु आगेभी केसे२ कार२होंगे सो मुझसेसत्य
कहो मैं तुम्हारी प्रतीतभये तुमको स्थापन अर्थात् अपनेनिज मह
मे रक्खूंगा १४ अरु मे तुम्हारी योगप्रवृत्ति कुशल करनेवाली अ
र्थात् सुखसे निर्व्वाहकारिणी आजीविका भी करदेऊंगा १५ ऋ
षिजी बोले कि हे राजन् जितने तुम्हारेघर मे यहकश्यपजी क
पुत्र विनायक है तबतक विघ्न होते हैं अरु होतेही रहेंगे क्योंकि य
विघ्नोका तो अधिपतिहीहै १६ सो हेराजसुत तुमइस संचाररहि
अर्थात् जहाकोईभी जननहींविचरे ऐसे निर्जन वनमेंछोडआओ१७
तोतुम्हारे न घरमें न नगरभरमे कोईभीविघ्नहोगाअरु इसकेयहाह
रहे तो जलआकर सबनगरको डुबोदेवेगा १७ जो किसीप्रकार व
नष्ट होजायगा तो पवन से फेंके पहाड़ तेरे नगरका चूर्णकरेंगे ह
राजन् इसमें संशयनहींहै १८ तू क्या नहींजानताहै पहिले से ये
उपद्रव होरहे हैं अरु कपटी मे लोभी में अरु अपवित्र व शोकवारे
मनुष्यमे राजाकरके कभी भी विश्वास नही कर्त्तव्य है १६ अत्यन्त
शूरवीर में अरु आपने से तेज मे भी अपनाही पतन देख तेरे करते
विश्वास करना क्यो यहराज की इच्छावाले गूढाशयवाले राजा
को मारदेते है २० सो मैं तेरा राज्य से पतन अर्थात् छूटनाजा
नके यहीकहनेको आया हू क्योंकि ज्ञानवान् करकेराजाको शुभा-
शुभ अवश्य कहना चाहिये २१ सो हे राजन् मेरे इस वचन को
विचारकर जैसे चाहे तैसाकर ब्रह्माबोले ऐसा उसका वचनसुन
राजा तिससे कहनेलगा राजा बोला कि हे मुनिये जो भूतभविष्य
ज्ञान से भी जो आपने सब कहा है सो सारा मुझको मिथ्याही
प्रतीत होता है जैसे तत्व ज्ञानभये माया रचित प्रपंच वृथा जाना
जाताहै २३ सो तुम्हारे कहे का विश्वासभये मैं तुम्हें धनादिक देके

गा अरु हे गणकश्रेष्ठ तुमने इनबालकजी को नहींजानेहैं २४ सो कि वे भौर रही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शूलधारी इनको अरु बहुतसे ब्रह्मांडोंको रचदेंगे जो इच्छाहै तो अर्थात् निजेच्छासे ही वे सब करसक्तेहैं २५ अरु हे द्विजोत्तम जो तुम्हें निजवाक्य में निश्चय है तो इसे लेजाओ अरु घोर गहन वनमें छोडके फिर आजाओ २६ जो संसारके द्वेषी अति बलवालेथे सो सबइसीसे हतेगयेहैं सो ये अपने द्वेषीको न जानें कैसे कहां स्थापन करेंगे अर्थात् इनसे द्वेष बुराहै २७ सो हम इनकेबुरेको कभीभी मनमें नहींचितवन करसक्ते जिनसे यहनगरी अरु मेराराज्य उत्पातसमूहसे बहुधा रक्षाकिया गयाहै२८यहइन्द्रको तो न इन्द्र अर्थात् नीचाकरसक्तेहैं अरुअस- मर्थ को समर्थ अरु छोटेकोबड़ा ऊंचेकोनीचा तैसेही नीचेकोऊंचा ईशको अनीश्वर करदेतेहैं २९ तो राजाकी वाणीसुनकर ज्योतिषी जी क्रोधसे लाल२ होगये अरु कुछ२ नीचामुखकिये राजासे कहने लगा ३० मैंने तो तुम्हाराहित वाक्यकहा अरु तुम्हें बुराभासताहै सो ठीकहै क्योंकि कोई अपने भलेबुरे अवश्यभावि अर्थात् प्रारब्ध को उल्लंघनहीं सक्ताहै ३१ हेनृपति तू इसबालकको तो मुझेदिखाव मैं तुझे इसकेलक्षण बताऊंगा तब तो राजा सबबालकों को बुला लिये ३२ तो तिनके आगे २ विनायकजी आये फिर वे भागते भागते सब भी आये तिन्होंने ज्योतिषीको नमस्कार कर पूछा कि कहांसेआयेहो ३३ तुम ज्योतिषशास्त्रमें कुशल क्या सामुद्रिकलक्षण भी जानतेहो तो हे भूत भविष्य वर्त्तमान मेरेभाग्यका फलकहिये३४ ब्रह्मावोले कि वो कपटीविप्र इन बालकजी के धैर्य्यवचन को सुन के मनमें विचारनेलगा कि अब कैसे स्वस्तिगमन अर्थात् कुशलग- तिहोवे ३५ क्योंकि इसने अनेक बलवाले दुष्ट मारेहैं फिर तो वो बाल विनायक जी का हाथ पकड़ के शुभाशुभ फल कहता भया कि ३६ तू बारदिनमें कुयेंमें पड़ेगा जो किसी तरह निकसा भी तो समुद्रमें डूबेगा ३७ जो तिससेभी जीतारहा तो आगमें दग्धहोवेगा वहांसे भी जो जीवे तो तेरे पर कोई पर्व्वत गिरेगा ३८ तिससे भी

जीवेतोतुझको बडे२ दोकालपुरुष भक्षणकरेंगे तुझकोनिस्सन्देहहै इतने अरिष्टहोवेंगे ३६ अवमैं निर्भयताके लिये इसमेंउपाय कहता हूं तू विसेकर कि यहांसे औरठौर मेरेसाथ चारदिन चलाचल ४० फिर मै तुझेलेकर यहां आजाऊंगा मुझको तेरेचरण की सौगन्दहै बालजी यहवचन सुन सनैसे भीतरके घरमेंचलेगये ४१ अरु राजा केहाथसे रत्न जड़ीअंगूठी लेकर अरु विसे निजहाथ में लेकर बाल जी ज्योतिषीसे प्रश्नकरतेभये ४२ हे गणक हमारी भारीवस्तु जातीरही सो तुम शीघ्रबताओ तिसेकिसनेलई अरुवो कब प्राप्तहोगी कहो जिससे तुम्हारा विश्वासहोवे ४२ वो बालकजी से ऐसे कहा गया मनुष्य सभामें विचार करके हँसमुख हो बोला कि जो मुंदरी मिलजावे ४३ वो वो मुझेही दईजावे तो मैं अभी बतादेऊं बालक जीके तैसे कहतेही विसनेकहा कि वो वो तुम्हारे ही हाथमेंहै ४४ इसप्रकारसे कपटभेषधारी ब्राह्मणसे कहेगये विनायकजी तिसअंगूठीको पढ़कर तिसीक्षण से तिसके हृदयमें मारतेभये अर्थात् कहा कि यह ले अंगूठीले४५ वो तिससे भिन्नहृदय भया जैसे वज्रसेहवा पर्वत पृथ्वीको अत्यन्त चलाता धरतीपर गिरताभया४६ पड़तेविस के देह से कितनाही नगर चूर्णभया अरु तब काशिराज अरु सारे जनोंने भी आश्चर्यमाना ४७ सारेदेवहर्ष पुष्पवर्षा करतेभये स्वर्ग भूमिके बाजोंकरके भूतल आकाश व्याप्त होगये ४८ जनबोले कि इसदुष्ट वेषधारी द्विजको इन्होंने कैसेजाना अरु दैवयोग से राजाने भी तिसके वचनको नहींमानाथा सो अच्छाभया ४९ जनबोले कि अरु ये बालकहीनहीं जानने चाहिये किन्तु भूमिभार हरने में समर्थ हैं इसीसे ये करुणानिधान गणेशजी कश्यपजीकेघर औतार भयेहैं ५१देखो मुद्रिकामात्रकेही घातसे इसबलवालेने प्राणत्याग दियेहैं ऐसेकहकर सारे तिन्हें प्रणाम करते स्तुतिकरते पूजते गाते भये ५२ अरु कमलसे लोचनवाले राजाने ब्राह्मणों को दानदिये अरु द्विज चारण बन्दीजनोंको अरु दरिद्रियोंको भी अनेक से देता भया ५३ अरु तिन नगरवालोंका सन्मानकरके फिर सभाकोंवि-

दा करताभया अरु पहिलेकी नाईं बाल विनायकजी भी लडकों के साथे खेलनेकों गये जो न जानने वाले अर्थात् राक्षसों को जानने वाले ५३ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमेज्योतिषोंकामोक्षण इसनामसे अठारहवां अध्यायसमाप्तहुआ ॥ १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

नरांतककरकेभेजेकूपककंदरासुर इनदोराक्षसोंकामोक्षहोनावर्णितहै॥

श्रीब्रह्मा जी बोले वो महाअसुर नरान्तक ब्राह्मण वेषधारी असुरको बालकसे हतासुनके (कूपकासुर) अरु (कन्दरासुर) १ इन दोनोंको भेजताभया जो बलवाले अरु ब्रह्माजीसे पायावर जिन्हों ने ऐसोंको बहुतवस्त्र अरु नानारत्न देकरभेजे तो तिन्है दैत्य बोला कि तुम तिसबालकको हतनेकेलिये सुमुहूर्त कालसे अर्थात् दोही घडीमेंजाओ अरु नानाउपायो करके विन मारेभयो की पराक्रम से निष्क्रिया अर्थात् प्रतिनिधि करो २। ३ ब्रह्माजी बोले कि ऐसेतिस नरान्तक से आज्ञाकिये कूप कन्दरासुर निजचारो अंगोवाली सेनासहित दोकोश चलान करतेभये ४ तो वहांसेनाको ठहराकर अति हरषेभये गये अरु राहमे विचारतेभये कि मैं तो कूपकासुरहूं इमसे कुयेंपनको प्राप्तहोऊं अर्थात् कुआ वनजाऊं ५ अरु तू बालक होजाव अरु खेलते२ तिसबालक को यत्नसेंस्मेपटकदे अरु मैं हीं मेंडकरूपसे कुयेंमें स्थितिसे तिसीक्षणमें भक्षण करलेऊंगा ६ फिर इस अति महाकार्यको करके दोनों अन्तर्द्धान होजावेंगे ऐसे वे निश्चित मतिवाले काशिराज के महापुर को ७ प्राप्तभये तो कूप तो नृपके आंगन अर्थात् राजमहलमे बाहर चौगानमें कुआ बनगया अरु कन्दरने बालरूप होकर तिन बालकोंमे खेलनेको मनकिया ८ तो राजातिस निर्म्मल जलवाले कूपकोदेख हर्षा अरु तिनके भीतर कोदेखा तो तिस मेंडकको भी देखताभया ६ जो कोमलवाणी बोलता अरु पीलेवर्ण वाला भयानक अरु कन्दर बालकों के मध्यमें स्थित विन विनायक जी से बोला १० कि हे महाबाहु तुम बाहर

जीवितोतुझको वड़े२ दोकालपुरुष भक्षणकरेंगे तुझकोनिस्सन्देहहीं इतने अरिष्टहोवेंगे ३६ अवमें निर्भयताके लिये इसमेंउपाय कहता हूं तू विसेकर कि यहासे औरठोर मेरेसाथ चारदिन चलाचल ४० फिर मैं तुझेलेकर यहां आजाउंगा मुझको तेरेचरण की सौगन्दहै बालजी यहबचन सुन सनैसे भीतरके घरमेंचलेगये ४१ अरु राजा केहाथसे रत्न जड़ीअंगूठी लेकर अरु विसे निजहाथ मे लेकर बाल जी ज्योतिषीसे प्रश्नकरतेभये ४२ हे गणक हमारी भारीवस्तु जा-तीरही सो तुम शीघ्रबताओ तिसेकिसनेलई अरुवो कब प्राप्तहोगी कहो जिससे तुम्हारा बिश्वासहोवे ४२ वो बालकजी से ऐसे कहा गया मनुष्य सभामे विचार करके हँसमुख हो बोला कि जो मुंदरी मिलजावे ४३ तो वो मुझेही दईजावे तो मैं अभी बतादेऊं बालक जीके तैसे कहतेही विसनेकहा कि वो तो तुम्हारे ही हाथमेंहै ४४ इसप्रकारसे कपटभेषधारी ब्राह्मणसे कहेगये बिनायकजी तिसअं-गूठीको पढ़कर तिसीक्षण से तिसके हृदयमें मारतेभये अर्थात् कहा कि यह ले अंगूठीले४५ वो तिससे भिन्नहृदय भया जैसे बज्रसेहत पर्बत पृथ्वीको अत्यन्त चलाता धरतीपर गिरताभया४६ पड़तेविस के देह से कितनाही नगर चूर्णभया अरु तब काशिराज अरु सारे जनोंने भी आश्चर्यमाना ४७ सारेदेवहर्ष पुष्पवर्षा करतेभये स्वर्ग भूमिके बाजोंकरके भूतल आकाश व्याप्त होगये ४८ जनबोले कि इसदुष्ट बेषधारी द्विजको इन्होंने कैसेजाना अरु दैवयोग से राजाने भी तिसके बचनको नहींमानाथा सो अच्छाभया ४६ जनबोले कि अरु ये बालकहीनहीं जानने चाहिये किन्तु भूमिभार हरने में समर्थ हैं इसीसे ये करुणानिधान गणेशजी कश्यपजीकेघर औतार भयेहैं ५१देखो मुद्रिकामात्रकेही घातसे इसबलवालेने प्राणत्याग दियेहैं ऐसेकहकर सारे तिन्हें प्रणाम करते स्तुतिकरते पूजते भये ५२ अरु कमलसे लोचनवाले राजाने ब्राह्मणों को दानदिये अरु द्विज चारण बन्दीजनोंको अरु दरिद्रियोंको भी अनेक से देता भया ५३ अरु तिन नगरवालोंका सम्मानकरके फिर सभाकोवि-

किसीने यहकहा,कि जो यहशीघ्रही निकालाजावै तो जीवेगा २४ और बोला किजोकोई इसके जीवनकेलिये निश्चय उपाय होवेगा तो जोकोई कुछ मांगेगा सोर,ही दे देऊंगा,तिसके अर्थ में अपना जीव भी देदेऊंगा २५ वेगसे अरु बलसे कोई इसवालक को निकालो ऐसे२ राजाके वचनसुन तीनमनुष्य कुयें के भीतर गये २६ तो तभी वे दैत्यकी करीगई मायाकरके डुवायेगयेतोऔरकिसीजननेभी उतरनेको मन नहींकिया २७ राजा वोला कि मैंने क्या पापकिया था जिससेमुझको ये ऐसादुःख भयाहै मैंइसवालकको क्योंलेआया जो सुखकेअर्थ लाया दुःखदाई होगया २८ अवमै इसके मा वापों कोकैसेमुख दिखाऊंगा अरुकैसेजनोंको दिखाऊंगा अरुइसकीमृत्यु कैसेहोगई२९इसीवालकने वडे२अरिष्ट दूरकियेहै अब इसके वध कैसेहोगया,न जानैं प्रारब्धको कि,क्या होगा३०ऐसे,स्त्री,वालक, वृद्ध इनसवोंके शोचते२ मेंडकरूप वो रूपमें स्थितकन्दरासुर मुख फैलाकर स्थितभया३१ अरु कूपकासुरभी आकाशकी स्पर्द्धा अर्थात् कि मैं अब सब असुरोंके नऋणपने अर्थात् वदलेको प्राप्तभया हूं ३२ सोकि वो देव विनायकजी को निष्पराक्रम मानके मनसे ऐसे हर्षनेलगा अरु कन्दरा सुर क्रोधभरा इस कूपका सुरके भारी उदर को फाडकर ३३ निकल करके अरु वेगसेही वालक सहित तिसी क्षणसे अन्तर्द्धान होगया अरु मेरे उदरको विदारा ऐसे समझके कूपका सुरभी कन्दरा सुरको डशता भया सोकि जिससे जीव निकलै ऐसे क्रोधसे कठस्थान मे बटका भरलिया तो ऐसेही वे दोनो आपसमेही प्रहार करने से अत्यंत व्याकुल भये गिरपड़े ३४।३५ तो तिनके पैर हाथों केही फटकारने सेही कितनाहीं नगर चूर्णहोगया जैसे सुन्द अरु (उपसुन्दासुर) आपसमें कटमरे थे ३६ तैसेही कूप कन्दरासुर आपसहीमें भिड़मरे तोवे राजा के दूतोंसे दूर खैंचकरके नगरसे वाहर फेंकेगये ३७ अरु तिसीक्षणसे नृपागयामें वो कूपया सो लहुकगया अरु विनायकजीको जिन्होने पहिलेकी नाई सब वालको सहित खेलते देखे ३८ तो वहां वालक

चलो अरु सुंदर मनोहर कूपको देखो तो वे गणेशजी तिसीक्षण से बालकों के साथ बाहर आकर तिसकूप को देखते भये ११ तिस अत्यन्त सुन्दर कूपको देखकर बालकों के साथ नाना भावों करके अरु नाना घरघूले खेलो करके क्रीड़ा करतेभये १२ वे मध्याह्नमें जलमें स्थितभये आपस में जल उछालने लगे अरु मज्जन उन्मज्जन अर्थात् डूबना निकलना करतेभये आपस मे भी कराते अर्थात् गोतागोत खेल खेलनेलगे १३ अरु वे दूर २ से जलमें उछाल अर्थात् फुदकीभरतेभये ऐसे वे सारे तहां खेल२कर घरजाने को तय्यार भये १४ तिवनेहीं विनायक जी ने अपने शरीरको कुयें में देखा अरु सबोंकोजलमें ते ऽनेकेलिये गये जानकर आप बाहर आगे स्थितभये १५ तिवनेही वो कन्दरासुर तिन विनायकजी को जलमें प्रेरलेगया तो तिस जल को अथाहमानकर लीला से तिस जलको विलोड़तेभये १६ जैसे लक्ष्मी सहित विष्णु निजेच्छा से रमणकरते क्षीरसागर को विलोते हों तो दोघड़ी में अर्थात् कभी तो वे नीचेकोजावें अरु कभी फिर ऊपरको निकलआवें १७ तो वे गणोंसहित मायामें स्थितहोकर मज्जनअर्थात् जलक्रीड़ा करतेभये तिनबाल विनायकजी ने निजचरण अरु हस्तकमल बहुत फटकारे १८ तो सारेबालक लोपलाप होगये तिवनेहीं बालकजीने तिस कन्दरासुरको चरण पकड़कर कूपतलमें पहुंचाया १९ सो कि तिसे बल करके डुबादिया वो छोड़२ ऐसे बोला तो विनायक जी ने भी तिसेकहा कि तू मुझे भी छोड़२।२० तो वे दोनों समान पराक्रमी डुबाडुबी मे परायणभये या नहीं धरे अर्थात् पकड़े जावें सो दुर्द्धर जो हिरण्यकश्यप अरु लक्ष्मी नृसिंहजी की नाईं दुर्म्मदवाले वे दोनों विनायक कन्दरासुर २१ तो वे बहुतकाल तक नीचेही रहे तो तिन्हें डूबेजान सब बालकों ने इस दुष्टवचन को कहा कि बालक मरगया २२ इस बुरेशब्द को सुनकर स्त्री, वृद्ध, बालक आये अरु काशिराजभी आकर पुकारा अरु बोला कि अब क्या कर्तव्य है २३ वो बालक इस अथाह जलवाले कुये में कैसेजीवेगा

किसीने यहकहा कि जो यहशीघ्रही निकालाजावे तो जीवेगा २४ और बोला किजोकोई इसके जीवनकेलिये निश्चय उपाय होवेगा तो जोकोई कुछ मांगेगा सोर ही दे देऊंगा तिसके अर्थ में अपना जीव भी देदेऊंगा २५ वेगसे अरु बलसे कोई इसबालक को निकालो ऐसेर राजाके वचनसुन तीनमनुष्य कुयें के भीतर गये २६ तो तभी वे दैत्यकी करीगई मायाकेरके डुवायेगयेतो औरकिसीजननेभी उतरनेको मन नहींकिया २७ राजा बोला कि मैंने क्या पापकिया था जिससेमुझको ये ऐसादुःख भयाहै मैंइसबालकको क्योंलेआया जो सुखकेअर्थ लाया दुःखदाई होगया २८ अबमै इसके मा बापों कोकैसेमुख दिखाऊंगा अरुकैसेजनोको दिखाऊंगा अरुइसकीमृत्यु कैसेहोगई२९इसीबालकने बडेर अरिष्ट दूरकियेहैं अब इसके वध कैसेहोगया न जानें प्रारब्धको कि क्या होगा३० ऐसे स्त्री,बालक, वृद्ध इनसबोंके शोचतेर मेंडकरूप वो रूपमें स्थितकन्दरासुर मुख फैलाकर स्थितभया३१ अरु कूपकासुरभी आकाशकी स्पर्द्धा अर्थात् कि मैं अब सब असुरोंके नाशपनेअर्थात् बदलेको प्राप्तभया हूं ३२ सोकि वो देव विनायकजी की निष्पराक्रम मानके मनसे ऐसे हर्षनेलगा अरु कन्दरा सुर क्रोधभरा इस कूपका सुरके भारी उदर को फाडकर ३३ निकल करके अरु वेगसेही बालक सहित तिसी क्षणसे अन्तर्द्धान होगया अरु मेरे उदरको विदारा ऐसे समझके कूपका सुरभी कन्दरा सुरको डराता भया सोकि जिससे जीव निकले ऐसे क्रोधसे कंठस्थान मे वटका भरलिया तो ऐसेही वे दोनो आपसमेही प्रहार करने से अत्यंत व्याकुल भये गिरपडे ३४।३५ तो तिनके पैर हाथों केही फटकारने सेही कितनाही नगर चूर्णहोगया जैसे सुन्द अरु (उपसुन्दासुर) आपसमें कटमरे थे ३६ तैसेही कूप कन्दरासुर आपसहीमें भिडमरे तोवे राजा के दूतोंसे दूर खैचकरके नगरसे बाहर फेंकेगये ३७ अरु तिसीक्षणसे नृपांगणमें वो कूपया सो स्हुकगया अरु विनायकजीको जिन्होंने पहिलेकी नाई सब बालकों सहित खेलते देखे ३८ तो वहां बालक

चलो अरु सुंदर मनोहर कूपको देखो तो वे गणेशजी तिसीक्षण से वालको के साथ वाहर आकर तिसकूप को देखते भये ११ तिस अत्यन्त सुन्दर कूपको देखकर वालको के साथ नाना भावों करके अरु नाना घरघूले खेलो करके क्रीडा करतेभये १२ वे मध्याह्नमें जलमें स्थितभये आपस में जल उछालने लगे अरु मज्जन उन्मज्जन अर्थात् डू वना निकलना करतेभये आपस मे भी कराते अर्थात् गोतागोत खेल खेलनेलगे १३ अरु वे दूर २ से जलमें उछाल अर्थात् फुदकीभरतेभये ऐसे वे सारे तहाँ खेल२कर घरजाने को तय्यार भये १४ तिवनेहीं विनायक जी ने अपने शरीरको कुयें में देखा अरु सबोंकोजलमें तैरनेकेलिये गये जानकर आपे बाहर आगे स्थितभये १५ तिवनेही वो कन्दरासुर तिन विनायकजी को जलमें प्रेरलेगया तो तिस जल को अथाहमानकर लीला से तिस जलको विलोडतेभये १६ जैसे लक्ष्मी सहित विष्णु निजेच्छा से रमणकरते क्षीरसागर को विलोते हो वो दोघडी में अर्थात् कभी तो वे नीचेकोजावे अरु कभी फिर ऊपरको निकलआवें १७ तो वे गणोंसहित मायामें स्थितहोकर मज्जनअर्थात् जलक्रीड़ा करतेभये तिनबाल विनायकजी ने निजचरण अरु हस्तकमल बहुत फटकारे १८ वो सारेवालक लोपलाप होगये तिवनेहीं बालकजीने तिस कन्दरासुरको चरण पकड़कर कूपतलमें पहुंचाया १९ सो कि तिसे बल करके डुबादिया वो छोड़२ ऐसे बोला वो विनायक जी ने भी तिसेकहा कि तू मुझे भी छोड़२।२० तो वे दोनों समान पराक्रमी डुबाडुबी में परायणभये या नहीं धरे अर्थात् पकडे जावें सो दुर्द्धर जो हिरण्यकश्यप अरु लक्ष्मी नृसिंहजी की नाईं दुर्म्मदवाले वे दोनो विनायक कन्दरासुर २१ तो वे वहुतकाल तक नीचेही रहे तो तिन्हें डूबेजान सब वालकों ने इस दुष्टवचन को कहा कि वालक मरगया २२ इस वुरेशब्द को सुनकर स्त्री, वृद्ध, वालक आये अरु काशिराजभी आकर पुकारा अरु बोला कि अब क्या कर्त्तव्य है २३ वो वालक इस अथाह जलवाले कुयें में कैसे जीवेगा

किसीने यहकहा कि जो यहशीघ्रही निकालाजावे तो जीवेगा २४ और बोला किजोकोई इसके जीवनकेलिये निश्चय उपाय होवेगा तो जोकोई कुछ मागेगा सो२ ही दे देऊगा तिसके अर्थ में अपना जीव भी देदेऊगा २५ वेगसे अरु बलसे कोई इसबालक को निकालो ऐसे२ राजाके वचनसुन तीनमनुष्य कुयें के भीतर गये २६ तो तभी वे दैत्यकी करीगई मायाकेरके डुबायेगयेतोऔरकिसीजननेभी उतरनेको मन नहींकिया २७ राजा बोला कि मैंने क्या पापकिया था जिससेमुझको ये ऐसादुःख भयाहै मैंइसबालकको क्योंलेआया जो सुखके अर्थ लाया दुःखदाई होगया २८ अब मैं इसके मा बापों कोकैसेमुख दिखाऊगा अरुकैसेजनोको दिखाऊगा अरुइसकीमृत्यु कैसेहोगई२९इसीबालकने बडे२अरिष्ट दूरकियेहैं अब इसके वध कैसेहोगया न जानैं प्रारब्धको कि क्या होगा ३० ऐसे स्त्री, बालक, वृद्ध इनसबोंके शोचते२ मेंडकरूप वो रूपमें स्थितकन्दरासुर मुख फैलाकर स्थितभया ३१ अरु कूपकासुरभी आकाशको स्पर्द्धा अर्थात् कि मैं अब सब असुरोंके नक्षणपनै अर्थात् बदलेको प्राप्तभया हूं ३२ सो कि वो देव विनायकजी को निष्पराक्रम मानके मनसे ऐसे हर्षनेलगा अरु कन्दरा सुर क्रोधभरा इस कूपका सुरके भारी उदर को फाडकर ३३ निकल करके अरु वेगसेही बालक सहित तिसी क्षणसे अन्तर्द्धान होगया अरु मेरे उदरको विदारा ऐसे समझके कूपका सुरभी कन्दरा सुरको डशता भया सो कि जिससे जीव निकले ऐसे क्रोधसे कंठस्थान मे वटका भरलिया तो ऐसेही वे दोनो आपसमेही प्रहार करने से अत्यंत व्याकुल भये गिरपड़े ३४।३५ तो तिनके पैर हाथों केही फटकारने सेही कितनाही नगर चूर्णहोगया जैसे सुन्द अरु (उपसुन्दासुर) आपसमे कटमरे थे ३६ तैसेही कूप कन्दरासुर आपसहीमें भिड़मरे तोवे राजा के दूतोंसे दूर खैचकरके नगरसे बाहर फैंकेगये ३७ अरु तिसीक्षणसे नृपांगणमें वो कूपभी सो लहुकगया अरु विनायकजीको [illegible] पहिलेकी नाईं सब बालकों सहित खेलते देखे ३८ तो वहां

राजा और सब जनभी आश्चर्य्य मानतेभये कई आपसमें बोलेकि जो कपट पनका योग करता है ३९ सो आपही मूल सहितअ-र्थात् सर्वथा नष्ट होजाताहै जैसे पतंग दीपकके नाश करनेकोआता है अरु मरजाता है ४० अरु इनके तो रोमको चलाने अर्थात् टेढ़ा करनेको कालभी समर्थ नहींहै ऐसे इन अवतार धारीजी की बहुत प्रकारकी सामर्थ्य है ४१ अरु तैसेही शिवजीको जीतनेके लियेकाम-देव गयाथा सो आपही भस्महोगया ऐसे सुन काशिराज अरुसारे सत्य२ है ऐसा कहतेभये ४२ अरु राजाने ब्राह्मणोंको पूजबहुतदान देकर बिदा किये अरु विनायकजीको नमस्कार कर २ के सबलोग भी जिन २ घरगये ४३ कई तिसराजासे पूजे बालकजी को स्पर्श करके जातेभये अरु देवता पुष्पबर्षा करते भये और जनभी स्तुति करतेभये ४४ ब्रह्माजी बोले कि हे व्यास ऐसे कार्य्य अकार्य्य अरु बायुबल अरु मायाका स्वरूप पुरुषका भाग्य अरु हे मुने राक्षसो का आचरण किसीसे नहीं जानाजाताहै ४५ अरु तैसेही परमात्मा के अवतार गुण भी न जानेजाते है अर्थात् दुर्विज्ञेय हैं ४६ इति श्री गणेशपुराण उत्तर खण्डमे कूप कन्दरा सुरका बध इस नामसे उन्नीसवां अध्याय समाप्त हुआ॥ १९॥

बीसवां अध्याय॥

श्रीगणेशजी करके अंधकासुर अंभासुर अरु तुंगासुर इनतीनों राक्षसोंका मोक्ष करना वर्णन किया है॥

व्यासजीने पूछा कि हे ब्रह्माजी फिर काशिराजके घरमें बोबि-वाह कब भया सो हे भगवन् चतुर्मुखजी आप मुझसे बिस्तार से कहिये १ ब्रह्माजी बोले कि एक२तो अरिष्ट नाशहोता अरु और२ ही आवताभया अरु इसके हटे करूगार२राजा ऐसे बिचारतारहा२ तो कूप अरु कन्दरके नाशभये तीन और भी तिसके भेजे जो (अंध कासुर) अरु (अंभासुर) तीसरा (तुंगासुर) ये क्रूर दर्शन वाले राक्षस ३ बालक जी को हतने की इच्छा करके गये तो युद्धहोने

लगा तो जिनके संग्रामको सुनके ब्रह्मादिक भी भयसे भागतेभये४ जिन्होंने दिग्गजोंको भी मसलडाले तो देवतोंकी तो कौन कहानी है सो कि वो कश्यपसुत हमारे दृष्टिके सम्मुख कब होवैगा ५हम तिसे बहुधा नाशकरैंगे-ऐसे अत्यंत निश्चय किये अरु जितने बीर नरांतकने भेजे वोही मृत्युको प्राप्त भये६ अब हम इसे मारैंगे विन जीते जीते घरको नहीं जावेंगे सो कि हम अग्निरूपधरके काश्यप सुतको जलावैंगे७अरु वहां अधक बोला कि मैं अधकारसे आकाश दिशोंको व्याप्त करके सारी पृथ्वीमें अंधेरा करदेऊंगा८ जिससे तिनको आपस में दर्शन किसीतरह भी नहीं होगा अरु अमासुर ने कहा कि मैं सारी पृथ्वीको जलसे ६ पुरीतक डुबादेऊंगा जिसमें चारो ओरसे गमन निकलना न होवे तुंगासुर बोला कि मैं तुंग नाम ऊंचा पर्वत बनकर तिस पुरी को १० दबाकर चूर्णकरदेऊंगा जैसे पखोंवाला पहाड पडै तो अधकार अरु जलतीसरे बहुनिपर्वत इनके सब ओरसे स्थितभये कोईभी नहीं जासकैगा तो वो बालक कैसे निकल जावेगा ऐसे निश्चय प्रतिज्ञा किये वे तीनों अत्यंत गर्जना करते भये ११।१२ तो तिनके गर्जित शब्द से त्रिभुवन भी कपायमान भया अरु चलायमान जलवाले समुद्रों ने निजवेलाको त्यागदई१३फिर वहां सूर्य्यको आच्छादन करके अधकासुर स्थित भया तो तिस महाघोर अधकार में कुछ भी नहीं जान पड़ता भया १४ तो वो अचानकही से रात्रिहोगई सबजन तिसके व्यवसाय निश्चय में परायण होरहे जो स्नानमें आसक्त अरु जपने में लगेथे अरु होम कररहेथे १५ अरु तपों में वेदध्वनियों में विवाह जनेऊ आदिकोंमें कथनीय पुराणोंमें अरु द्विज देवतोंके पूजनमें१६ नानाप्रकार आसक्त भये जनोंको निज २ नियमोंमें वो रात प्राप्त भईतो वे पुकारे कि क्या येसूर्य्यमण्डलको विन्ध्याचलहीरोंकयाढक रहाहै १७ अथवा प्रलयही होनेवालाहै या कोई ग्रहण आगया है ऐसे सभामें पण्डितोंने राजासे कहा १८ जितने वे विचारने लगे तो गण निज २ गुफाओंमें आगई अनिश्चित समयमेंही वो

ने घर२ में दीपक जलाये १६ अरु तब स्त्रियोंने बिस्मय किया कि न तो रसोई भई अरु न भोजन भया ये अस्तभई रात कैसेहोगई है अरु कइयोने गायें दुह लई २० अरु मनुष्योंने तब लालटेनोसे अरु दीवटोंसे निज२ व्यवहारो किया अरु वणिये ब्राह्मण दुःखसे निज २ काज करते भये २१ अरु तब सेवक अरु कामियोंको आनन्दभया अरु तैसेही आलसियों को सोनेवाले निन्द्रालुवों को भी होताभया २२ अंधकासुरने ऐसेकिये तब अमकासुर मेघ रूप हो करके हाथीकी शुँडसी धारा वर्षाताभया २३ केवल बिजलीही के प्रकाशसे लोग चेष्टा करते भये अरु तिसे कालमें लोगजल धारा के भयसे घरहोमें बैठगये २४ कई मकान गिरगये अरु कई घरों की भींत भी गिरपरी अरु तब बाहर भीतर कहींजन समूह मरते भये २५ अरु प्रचण्ड पवनसे टूटेवृक्ष पृथ्वीपर गिरगये अरु बिजलियों से जलाये वृक्ष अरु बहुत से घर २६ अरु ऊंचे तटवाली अर्थात् चढ़ी भई नदियों करके वो नगरी समुद्रोंकी नाईं डुबोई जो सारेलोगो सहित अरु सारेजीवो से भरी २७ ब्रह्मा जी बोले कि तिस प्रलय रूप दैत्यकी करी माया को जानकर करुणाके आकर गजाननजी भी मायारूप ऊंचा बड़लगाते भये २८ जो बेलबागीचोसे सुशोभित अरु सौयोजन बिस्तारित जड शाखाओंसे सहित २९ तिस आकाश तक पहुचे वड में आप गणेशजी स्थित होतेभये सो कि पंखोकोभूमिपर रखकर अरु शिरसे आकाशको स्पर्श करते ३० अरु चोचसे तिस महाजलको पीकर तिस पुरीको भी समान करते भये जैसे वन हस्ती शुंडसे तलाईके जलको शोषलेवे ३१ तो जन हर्षसे बोले कि विघ्नहटा जलसूखगया फिर अधकार हटेतिस महागहरे वड़को देखते भये ३२ अरु आश्चर्य आकारवाले तिस पक्षिको देखा जो न तो देखा अरु न कहीं सुनाया तो सारेजन तहां वड़के नीचे ठहरनेको चाववाले तहां गये ३३ अरु अश्वोंसे गजोसे ऊंटोसे पालकियोंसे सहित तिनजनो करके साथ काशिराजभी वड़ के नीचेगया ३४ पशुवें अरु कुत्ते बिलाव वन निवासी भी तहा हीं

आयेतो तिन विनायकजीके प्रभावसे न तो तहां वर्षा अरु न अँधेरा भया-३५ तो वे सारे ब्रह्मादिक पहिले की नाईं यथा विधि कर्म्म करते भये सोकि सारे पुरवासी श्रेष्ठनिज २ निश्चित कर्म्ममें पहिले कीनाईं सम्यक् आसक्त होतेभये ३६ अरु सारे बोले कि हमारी सबकी रक्षा को पक्षि रूप धारण करते भये हैं क्या जगत्के ईश गणेशजीही सो हम इसमें कुछ नहीं जानते हैंगे३७जिन्होनेअपनी पंख फैलाकर दैत्यकी करी वर्षाको दूरकर दई अरु तिस बिजली ओलो वाली वर्षाको तिन्होनेही सुखसे सहलई३८ तबऐसे विचार कर लोग अव्याकुल अर्थात् सावधान स्थित भये ऐसे तहां तिन गणेशजीके स्थितभये ग्यारह दिन वीतगये ३९ पर हे द्विजव्यास किसीने भी तिन विनायकजीके किये चरित्र को नहीं जाना बाल गणेशजीको बालकोके यूथमेंही खेलतें देख करके४० तबतो वे दोनो राक्षस क्षीण सामर्थ्य भये चेष्टा रहित होगये तो तुंगासुर बहु प्रकार दिशा विदिशाओं को गोजाता गर्जता भया ४१ अरु पर्वत रूपमें स्थित होकर इस पक्षिको क्षण में मारोंगा ऐसे कहता २ होतभी वो पक्षी होगया ४२ जो सरोवर नदी संयुक्त पांच योजन अर्थात् बीसकोश विस्तारवाला अरु जलतो २ दिव्य ओषधियों आकाश दिशोंको प्रकाशित करता ४३ अरु जो नानापक्षियोंसे संयुक्त अरु द्विजाश्रमोसे शोभायमान तो पक्षिराज गणेश जी तिस पंख सहित पहाड़ को पडता देखकर उड करके तिसे हटाते भये तिसके जलको अरु जंगम न जंगम जगत् को निजपंखो की पवन से घुमाते भये ४४ तो जहां से पर्व्वतो के पत्थर भूमिमें गिरतेभये तो तिन्होने तिस तुंग पर्वतको चोंचसे पकड लिया४५जैसे गरुड़जी सर्प्पको पकड़ें४६ फिर आपभी तिसके साथ आकाशमें भ्रमते भये दोनो दानोंको दिखाते भयेसो कि वे एक चरणसे तो अनकासुरको अरु दूसरेसे अभासुरको पकड़ेघसीटते४७तो वेमहापक्षीजी भूर्ल्लोकको उलंघ करकेजातेभये तो वे अत्यंत श्रमणसेखेदको प्राप्त अरु सूर्य्यजीकी किरणोंसेतप्त ४८ तो वे तीनोंपर्वत समानही विनप्रा-

णभग्ने भूमिमें गिरतेभये अरु पड़ते पतगासुर ने बहुत से वन उपवन चूर्णकिये ४६ तो तिन शरीरोको देखनेके लिये बालक स्त्रियोसहित जन नगरके निकटही आये अरु तिस चरितको देख परम आश्चर्य को प्राप्तभये ५० अरु तिनके शरीरोकेखण्ड पहाडके बडे२ पत्थरो से भासते भये अरु दैत्योंकी माय़ाको दूरकरके अर्थात् माया हटे परम आश्चर्य करतेभये ५१ अरु तिसबडको भी देवस्वरूप से देखतेभये पर फिर नहीदेखा फिर बडके अन्तर्द्धानभये तिनबिनायक जी ने तिस पक्षिरूपको भी त्यागदिया ५२ तब तो बाल बिनायक जीको काशिराज स्पर्श करताभया अरु कुशल प्रश्न पूछकर नगर के अरु राजा तिन्हे पूजतेभये ५३ सो कि विघ्ननाशक विनायकजी का परमभक्ति से पूजन करतेभये अरु इन काश्यपजी के सुत गणेश जीको जन सराहतेभये ५४ हे देवजी हम दैत्यकरी परममाया को नहीजानते अरु आपकेसामर्थ्य अरु गुणोंकोभी जहांवेद भी चुपहो रहे ५५ सारोको आपने लीलासेही रक्षाकियेहैं बहुसङ्कटसे छुड़ाया है सोकि वायु विनाशभये अरु औरर उत्पात बर्षाभी नाशभई ५६ अरु अन्धकारके लयभये सूर्यजीका मण्डल भी सम्यक्दीखपडता है अरु तब सारेजनोके मन भी मोदसे प्रसन्नभये ५७ अरु निर्मल जलवाली नदियें अरु सब पहिलेकीनाई होगया अरु देवो के देव बिनायकजी पर पुष्पबर्षाभई५८अरु वे नानाप्रकार सजेपुरमेंप्रवेश भये अरु ब्राह्मणोंको दान देतेभये कि हमारे पर देव विनायकजी प्रसन्नहोवैं ५६ अरु राजाभी शीघ्र शान्ति होमकरके बहुतगऊदान दिया अरुसारोको बिदाकरके बिनायकजी समेत राजा काशिराज भोजनकरताभया६०॥ इतिश्री गणेशपुराणे उत्तरखण्डमेंबालचरित्र में तीनराक्षसोंकावध इसनामसेबीसवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ २०॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

असुरमाता भ्रामरी करके निज पुत्रका कटा मस्तक देखआना श्रीगणेशजी करके तिसकी मोक्ष करना वर्णन कियाहै ॥

श्रीब्रह्माजी वोले कि हेविप्र व्यास तू इस मुझसे कहे जानेवाले आश्चर्य इतिहासकोसुन जोकि विनायकजीका सर्वपापहारीचरित्र है १ सोकि जो अम्भासुरका मस्तक था सो निजघरमे जाकरगिरा तो भ्रामरी करके देखागया एक सहेली ने तिसे वताया २ सोकि वो सेजपर सोतीथी सो उठकर अंगन मे आगई अरु पुत्रके शिरको देखतेही मूर्च्छित भई भूमि में गिरगई ३ शोकसे भरी भ्रमरा वो निज हाथोंसे छाती पीटती गिरगयी आभूषण वाली खेदको प्राप्त जैसे नागसे डसी पद्मिनी कामिनी हो ४ टूटे कङ्कणो वाली फट-गये वस्त्र जिसके नवगई कटि जिसकी दृश्य अदृश्य नाम होरहा महा शरीर जिसका भूमि में व्याकुल लोटती भई ५ अरु सखियां गुप्त प्रकट अर्थात् दुःखी जिसे वर्जरही अरु स्वहुजन भाइयोंसे भी समझाईगई वो तीन मुहूर्त अर्थात् छ घडीमे सचेतभई तो कुछ २ वोलनेलगी ६ अरु फिर उठकर हाथोसे शिरको पीटनेलगीभ्राम-री वोली कि जिसने ये अमरावती समेत सारी पृथ्वीकी रक्षाकरी हैं ७ अरु शेषजी के सहस्र मस्तक जिसके भृकुटि के तीपे देखने मात्र करके कपायेगये जिसने नरातक अरु सुरावकको राज्यमेंवैठा-येथे ८ अरु जिसके सिहकी दहाड से शब्द करके धरती आकाश अत्यंतही कपायेगये तिस ऐसे पुत्रको किसनेकहांमारा अरु योअब कहा पडाहै९ सोकि जिसेदेखकेकालभी कपायमानभयाथासो पुत्र अब कैसे मरगया ऐसे वो दीन पुकारती जैसे वच्छेसेहीनगो पुकारै १० ऐसे तिसविलाप करतीको सखिजनने वर्जितकरी किहे बालि-किसीकी मरेके साथ मृत्युभई हमने देखीनहीं है ११ जोमूर्खप्राणी अज्ञानसे अत्यतशोक करते हैं जो तू इसपुत्रको स्नेहसे शोचतीहै तो तू इसका हितकरअर्थात् इसका [illegible] ॥ २

सो तू इसका वृत्तांत जानने को सबओर दूतों को भेजदे अरु इस शिरको भस्मो करके जलादे ऐसा इसका हितकर १३ क्योंकि प्या-रोंकी चक्षुसे पडा आंशुवो प्रेतके मुखमें गिरताहै वो इसको दहताहै इससे आंशु न छोडना ऐसे परम ऋषि ये कहते हैं १४ ऐसी तिस वाणीको सुन तिस सखीसे क्रोधसे बोली कि हे महाभागे सहेली तू इस मस्तकको यत्नसेरख १५ मैंअदितिके पुत्रकाभीमस्तकलाती हूं सो तिसके साथही इसे भी जलादेऊंगी तिससे इसे तेलके बीच मेही रक्खो १६ तो राक्षसो करके सयुक्त वो राक्षसी राजपुरी को हतने के लिये जातीभई अरु तिन विनायकजी के निकट आई जैसे पतंगकी पत्नी अग्नि के पास जलने को आवै १७ तो वो अदिती का रूप करके दशोदिशो को प्रकाश करती आई जो अत्यंत चतुराई-की खानसारे आभूषणोंकी शोभावाली १८ अरु जो अनार दानेसे दांतो वाली गोलओठोवाली हलका देह मध्य भाग अर्थात् कटि-देश जिसका खिलेकमल के से नेत्रोवाली मोतियोंकी मालोंसे सा-जरहे कुच जिसके १९ ऐसी तिस राजमहल मे आई सुन्दरी को देखकर सारेशूरवीर मोहितभये अरु निज २ मनसे जिसका अंग स्पर्श करना अरु चूंबना चाहते भये २० अरु कई विचारते भयेकि क्या येरंभायातिलोत्तमाहीहै मेनकायाघृताचीहै क्यानागिनयक्षिणी शिवरूप वालीहै २१ उर्बसी अप्सरा या रवि रानी है क्या या कश्यपजीकी पत्नी अदितीही है तो काशिराजपत्नीने तिस अदिती-को राजपत्नी जानकर हर्षसे प्रणामकिया २२ अरु सुहाग सामग्रीसे अरु आभूषण वस्त्रोसे तिसका पूजनकरतीभई अरु तिस सुन्दरशरीर-वालीको प्रेममे गद गद भई वाणी करके बोलीकि २३ तुम देवमा-ता मुझको बडे भागसे दीखीहो सो विनायकजीकेही प्रसादसे नहीं तो और प्रकारसे तुम्हारा दर्शन कैसेहो २४ ऐसे कहती रानीको अो आशु कठभरी वचन बोली कि मेरा बालक बहुत दिन रखवा अब वो कहांहै २५ सो हे सुभ्रू मैं तिसे अत्यत चावपनेसे देखने के लिये आईहूं तुम मायासे व्याकुल मनवाली स्त्रियोंके स्वभाव को

जानतीहीहो २६ शोकसे विद्धशरीर वाली में तिस वालको स्पर्श करूगी वो तिसके स्पर्शसे सुशीव शरीर वाली मै उत्तम संतोषको प्राप्तहोंगी २७ इस प्रकार से विसका वचन सुन वो रानी आदर सहितचाववाली होती भई अरु तिसवालजी को ढूंढ़नेकेलियेनिज दूतों को पठातीभई २८ औरो ने काशिराजको कश्यपजीकी स्त्री आई सुनाई वोनहाय घरआय कर तिसे देखकर हर्षको प्राप्त भया २६ अरुमहाराजा तिसे भक्तिसे प्रणाम करके हाथ बाँधे बोला कि मेरा राज्य अरु मावाप जन्म अरु दृष्टि सुना शास्त्रादि तथा तप ये धन्यहे३०जो जगजन्म करानेवाली देवमाता अदितिजी आपमुझमे देखी गईहो तेरे गुणोको सम्यक् वर्णनकरनेकोमेरी सामर्थ्य नहीहै ३१ अरु ये तुम्हारा वाल विनायक इन्द्रसे भी अधिक पराक्रमी है इसने अनेक २ भारीकर्म किये हे जो सुरोंसेभी ३२ अरु मुझसेभी कहने को शक्ति नहीं हे अरु राक्षसों की मृत्यु वेभीनहीं कहीजाती अरुतिसके गुण कहनेको किसी की थोडीभी शक्तिनहींहै ३३ सोहे मात आपक्षणमात्र विश्राम लेओ मेरा अति महाभाग्यहै जो इस करकेमायावलके आश्रयहोकरकेदाने मारेगये३४ सो अवनहींपरि क्षयसे अर्थात् सुन्दर शरीरसे तुम्हारा वालक सुखसेवसताहै तुमने किसलिये आगमन किया है अरु आई हो तो छिन विश्रामकरो ३५ अरु ठेरोफिर इसविवाह के होगये में दोनों को पहुचादेऊगा तो वो अर्थात् धामरीवोली हेराजन् ये तू क्याकहरहाहै इसकेवियोग से मुझको महाखेदभया अरु मैं कहींभी कुछसुख नहीं पाईहू ब्रह्मा बोले कि उसके ऐसे कहते२ विनायकजीभी आगये ३६।३७तिन्होंके सव वालकोंने कहभेजे कि जाओ तुम्हारी माता आईहै तवतो वो तिन विनायकजीकोआलिंगनकर्ताभईआशु भरी ये हर्षसेवोली३८ कि हे अत्यंत कठोर तू मुझे छोडकर यहा वहुत कालतक रहाहै सो ही मैं तेरेवियोग से सम्यक् तपी अर्थात् दुःखीभई सवको छोड़क-र ३६ अरु जीनेकी आश त्यागकर तेरे लिये तप कियाथा तिनअ-त्यंत क्लेशोंसे तू प्राप्त भयाहै तिन्हें ईश्वरही जानताहै अर्थात् मैं ते-

सो तू इसका वृत्तांत जानने को सबओर दूतों को भेजदे अरु इस शिरको मत्री करके जलादे ऐसा इसका हितकर १३ क्योंकि प्यारोंकी चक्षुसे पडा आंशुवो प्रेतके मुखमे गिरताहै वो इसको दहताहै इससे आंशु न छोडना ऐसे परम ऋषि ये कहते हें १४ ऐसी तिस वाणीको सुन तिस सखीसे क्रोधसे बोली कि हे महाभागे सहेली तू इस मस्तकको यत्नसेरख १५ मैंअदितिके पुत्रकाभीमस्तकलातीहूं सो तिसके साथही इसे भी जलादेऊगी तिससे इसे तेलके बीचमेंही रक्खो १६ तो राक्षसो करके संयुक्त वो राक्षसी रानपुरी को हतने के लिये जातीभई अरु तिन विनायकजी के निकट आई जैसे पतंगकी पत्नी अग्नि के पास जलने को आवै १७ तो वो अदिती का रूप करके दशोदिशों को प्रकाश करती आई जो अत्यंत चतुराईकी खानसारे आभूषणोंकी शोभावाली १८ अरु जो अनार दानेसे दांतो वाली गोलओठोवाली हलका देह मध्य भाग अर्थात् कटिदेश जिसका खिलेकमल के से नेत्रोंवाली मोतियोंकी मालोसे साजरहे कुच जिसके १९ ऐसी तिस राजमहल मे आई सुन्दरी को देखकर सारेशूरवीर मोहितभये अरु निज २ मनसे जिसका अंग स्पर्श करना अरु चूवना चाहते भये २० अरु कई बिचारते भयेकि क्या येरभायातिलोत्तमाहीहै मेनकायाघृताचीहै क्यानागिनयक्षिणी शिवरूप वालीहै २१ उर्वसी अप्सरा या रति रानी है क्या या कश्यपजीकी पत्नी अदितीही है वो काशिराजपत्नीने तिस अदिती को राजपत्नी जानकर हर्षसे प्रणामकिया २२ अरु सुहाग सामग्रीसे अरु आभूषण वस्त्रोसे तिसका पूजनकरतीभई अरु तिस सुन्दरशरीर वालीको प्रेममे गद गद भई वाणी करके बोलीकि २३ तुम देवमाता मुझको वडे भागसे दीखीहो सो विनायकजीकेही प्रसादसे नहीं तो और प्रकारसे तुम्हारा दर्शन कैसेहो २४ ऐसे कहती रानीको वो आशु कंठभरी वचन बोली कि मेरा बालक बहुत दिन रक्खा अब वो कहांहै २५ सो हे सुभ्रू में तिसे अत्यंत चावपनेसे देखने के लिये आईहूं तुम मायासे व्याकुल मनवाली स्त्रियोंके स्वभाव को

अरु सारे विस्मितजन तिसेदेख वोले कि ५५ यहवालकों को हनने वाली कपटरूप करके कैसेआगईथी जो कश्यपपत्नी के रूपसे आई अरु किसीने भी इसे राक्षसी नहींजानी थी ५६ इसका ज्ञान अरु सामर्थ्य वडाही आश्चर्य्य देखनेमें आयाहै ऐसे कहते २ नरहर्प से तिसके समीपगये ५७ अरु फूलोसरीखे हलके वालक को तिसपर से उठाकर कहतेभये अरुसवने भी कहा कि यहखोटी स्वरूप वाली दुष्ट राक्षसी यहासेदूर करदीजावे ५८ जो परायेवुरे को चाहतीहै सो आपही मृत्युको प्राप्तहोवे फिर तो काशिराज अरु सारेजनों ने भी तिन विनायकजीको पूजके स्तुतिकरतेभये ५९ सो कि ऋपियें अरु लोकपाल भक्तिसे देव विनायकजीको स्तुतिकरतेभये कि देवों केनाथ आपहीहो अरु मानुप,सर्प,राक्षसोंके भी हो ६० अरु यक्ष गन्धर्व ब्राह्मणो को अरु हाथी घोडे पक्षियों के अरु भूत भविष्य वर्तमानकालके अरु वुद्धि इन्द्रियो के ६१ अरु हर्पके शोक दुःखके अरुसुखके अरुज्ञानमोक्ष के अर्थके अरु कार्य्यसमूहके तैसेही लाभ हानिके ६२ अरु आकाश पाताललोकोंके पृथ्वीके अरु समुद्रके भी अरु नक्षत्र अरु ग्रहोंके भी अरु पिशाच अरु वेलवीड़ों के ६३ अरु वृक्ष नदियोंके अरु पुरुपोके स्त्रियोंके अरुवालक जनोंके उत्पत्तिस्थिति प्रलयकारी आपकेअर्थ नमस्कारहै ६४ अरु ब्रह्मरूप आपको नमस्कारहै अरु अनन्तस्वरूपी आपको नमस्कारहै अरु पशुओंके पति आपको नमस्कार है तत्त्व ज्ञान प्रदाता आपको नमस्कार है अरु विष्णुस्वरूप आपकोनमस्कारहै शिवस्वरूप आपको नमस्कार है ६५ मोक्षके कारण आपको नमस्कार है अरु विघ्नहारी आपको नमस्कारहै अभक्तोंके नाशकारी आपको नमस्कार है अरु भक्तों के प्यारे आपको नमस्कारहै अधिदैवअरु अधिभूत आपकोनमस्कारहै अरु तीनों ताप हारिन् आपको नमस्कारहै६६।६७अरु सवउत्पात विघातिन् आपको नमस्कारहै अरु लीला स्वरूपिन् आपको नमस्कारहै सबके अन्तर्यामिन् आपको नमस्कारहै अरु सवकेअध्यक्ष आपको नमस्कारहै ६८ हे अदितिजी के उदरसे उत्पन्न विनायक

रेलिये जीवनको त्यागसकीहू ४० सोतेरे बिनतहां मेरे क्षणमात्रभी युगकेसम होगया ऐसेहलकेवचनवाली वोभामिनिनिज दुष्टभावसे ४१ अत्यंतप्रेमसहितबलसे तिनकेकंठ देशकोपकडतीभई तो वे भी तिसकेकियेको जानकर अरु तिसकेअपराधको विचारते ४२ गूढ़है उद्देश अर्थात् अभिप्राय जिनका ऐसे विनायकजी तिसेवोले कि तैंने पहिलेमेरा क्या लियाहै ऐसेतिनके कहतेही तब तिसनेइनको लड्डू दिया ४३ उसके खाये तिसने और विषभरा मोदक दिया अरु वो खाकर विनायकजी तिस्सेबलकर और मांगतेभये ४४ अरुकाशि॰ राज अरु रानीइन्हे प्रार्थना करतेरहे कि हे मात २ तुमउठो२ अरु बालकसहित और भोजनकरो ४५ तो जितने वोउठीतभीबालकजी करके वो रोकी अर्थात् पकडीगई जो पर्वत सरीखे दृढ शरीरवाले तो वो व्याकुलहोतीभई ४६ अरु तिनसेबोली कि छोड़२ हे बालक मैं तेरी माहू में बहुत दिनके स्नेहफासे से बँधी तुझे देखनेको आई हूं ४७ तू अब मेरा चूराकरनेको कैसे तयारभयाहै जैसे पहाड चूर॰ ताहो तो जबतक वो इन्हें हाथोसेहटानेलगी तितनेहीं वे गणेशजी सोगये ४८ सो कि हाथपेर पसारकर श्वास लेने छोडने में परायण भये तो तिसविकल भारसे पीडितको राजा ऐसे निषेध करताभया कि ४९ हे इसकी श्रेष्ठमाता तू इसकी निद्राका भंग मतकर अर्थात् इसे न जगाव तो कई बालकजीको वहासे उठाने को मन करतेभ॰ ये ५० तब तो वे सारे भी तिन्हें उठाने वा हटानेको समर्थनहीं होते भये कई कमल लोचन बालकजी को प्रार्थना करते भये ५१ हे बालकजी तुम हँसमुख होवो नहीं तुम्हारी माता मरजावेगी तो तिसने भी अपने पेर, हाथ, मस्तक, फटकारे अरु इनको बोली ५२ कि हे बालकयह तू क्या करैहै फिर अर्थात् इसके मरजाने पर तू कश्यपजीसे क्या कहेगा ऐसेही लोगोके कहतेर वो राक्षसी मरग॰ ई ५३ तिसके दशयोजन चौडेदेह से पृथ्वीतल व्याप्तहोगया कई तिस अति भयवालीको देखकर भागहोगये ५४ अरु कई नानाप्र॰ कारके आजीविका वालेजन तिसेदेखनेकोगये अरु तहा काशिराज

अरु सारे विस्मितजन तिसेदेख बोले कि ५५ यहबालकों को हनने वाली कपटरूप करके कैसेआगईथी जो कश्यपपत्नी के रूपसे आई अरु किसीने भी इसे राक्षसी नहींजानी थी ५६ इसका ज्ञान अरु सामर्थ्य बड़ाही आश्चर्य्य देखनेमे आयाहे ऐसे कहते २ नरहर्ष से तिसके समीपगये ५७ अरु फूलोसरीखे हलके बालक को तिसपर से उठाकर कहतेभये अरुसबने भी कहा कि यहखोटी स्वरूप वाली दुष्ट राक्षसी यहांसेदूर करदीजावे ५८ जो परायेबुरे को चाहतीहै सो आपही मृत्युको प्राप्तहोवे फिर तो काशिराज अरु सारेजनों ने भी तिन विनायकजीको पूजके स्तुतिकरतेभये ५९ सो कि ऋषियें अरु लोकपाल भक्तिसे देव विनायकजीको स्तुतिकरतेभये कि देवों केनाथ आपहीहो अरु मानुष,सर्प,राक्षसोके भी हो ६० अरु यक्ष गन्धर्व ब्राह्मणों को अरु हाथी घोडे पक्षियों के अरु भूत भविष्य वर्त्तमानकालके अरु बुद्धि इन्द्रियों के ६१ अरु हर्षके शोक दुःखके अरुसुखके अरुज्ञानमोक्ष के अर्थके अरु कार्य्यसमूहके तैसेही लाभ हानिके ६२ अरु आकाश पातालल्लोकोके पृथ्वीके अरु समुद्रके भी अरु नक्षत्र अरु ग्रहोके भी अरु पिशाच अरु बेलबीडों के ६३ अरु वृक्ष नदियोंके अरु पुरुषोंके स्त्रियोंके अरुबालक जनोंके उत्पत्तिस्थिति प्रलयकारी आपकेअर्थ नमस्कारहे ६४ अरु ब्रह्मरूप आपको नमस्कारहे अरु अनन्तस्वरूपी आपको नमस्कारहे अरु पशुओंके पति आपको नमस्कार हे तत्त्व ज्ञान प्रदाता आपको नमस्कार हे अरु विष्णुस्वरूप आपकोनमस्कारहे शिवस्वरूप आपको नमस्कार है ६५ मोक्षके कारण आपको नमस्कार हे अरु विघ्नहारी आपको नमस्कारहे अभक्तोंके नाशकारी आपको नमस्कार हे अरु भक्तों के प्यारे आपको नमस्कारहे अधिदैवअरु अधिभूत आपकोनमस्कारहे अरु तीनों ताप हारिन् आपको नमस्कारहे६६।६७अरु सबउत्पात बिघातिन् आपको नमस्कारहे अरु लीला स्वरूपिन् आपको नमस्कारहे सबके अन्तर्यामिन् आपको नमस्कारहे अरु सबकेअध्यक्ष आपको नमस्कारहे ६८ हे अदितिजी के उदरसे उत्पन्न विनायक

जी आपको नमस्कार है अरु परब्रह्म स्वरूप आपको नमस्कार है अरु कश्यपजीकेसुत आपको नमस्कारहै ६९ अप्रमेय मायासहित पराक्रमवाले आपको नमस्कारहै अरु मायावीजी आपकोनमस्कार है अरु मायावालोंको भी मोहनेवाले आपको नमस्कारहै अरु अप्रमेय मायाहारीजी आपको नमस्कारहै अरु मायाके आश्रय आपको नमस्कारहै ७० ऐसे२ वे सारे तिन्हे स्तुतिकरके हर्षसे निज२ घरकोजातेभये तिसराक्षसीको खण्ड२करके पुरसेदूर फेंककर७१ जो इस तीनसंध्याओ के उत्पातनाशक स्तोत्रको पढेंगे तो तिन्होंके महाउत्पात अरु विघ्नोंसे तिरस्कार भय नहींहोवेंगे ७२ अरु तीनो सन्धियोमें जो कोइ इसस्तोत्रको पढेगा सो सारेकामोको प्राप्तहोगा अरु हे निष्पाप व्यासजी विनायकजी महाराज तिसकी सदा रक्षाही करतेरहेंगे ७३ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में बालचरित्रमे राक्षसीकामोक्षण इसनामसे इक्कीसवाअध्यायहुआ ॥ २१ ॥

बाईसवा अध्याय॥

श्रीगणेशजी करके सब पुरवालो को चरित्र दिखाना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि दूसरेदिन राजा प्रातस्नान करनेको तयार भया अरुपुरवाले सब ऐसे तर्कनाकर बोले कि न ये देवता न मानुषहै१सो कि जो येदेव न हो तो कैसे ये पांचमहाभारी जो देवतोसे दुःसह अरु विष्णु इन्द्रकरके भी न जीतेजावें सो महाबली दैत्य इन्होंसे हतेगये २ अरु जो ये देवहीहो तो ये लघुलडकोंमे खेलनेहैं ऐसेविचार फिर तेभी राजदर्शन को आये ३ तो राजाभी भद्रासन परगया अरु सारोंकोबोला कि जिसकार्यको आप कथन करो सो ही तुम्हारा सिद्धि को प्राप्तहोगा ४ हे पुरवालो किस प्रयोजन के लिये प्रातःकालही तुमने आगमन कियाहै वे बोले कि जो हमारे अभिप्राय वाला वाक्य है सो एकान्तिक अर्थात् गुप्त नहीहै वचन अर्थात् कहने के बिन सो ही हम प्रकटही कहते हैं कि तुमने जो इन मुनिपुत्र विनायकजी को बुलायेहैं सो हमसे इनकी दृढ़

कभी भी कुछ न होसकी तुमने तो निजघरमें स्थित इनको अनेकवेर पूजेहे अरु जो२वस्तु तुम्हारेघरसे आती है सो२ भी सबहमें भेजते रहेहो ५।६।७।८ तो हे राजन् फिर इन विनायकजी को क्यों नहीं भेजे सो कहो तो राजाबोला किहे जनोतुमने श्रेष्ठकहा कि जो विभाग करके भोजन कियाजावे सो विप भी अमृत ही होजाताहै अरु जो और प्रकारसे हो तो अमृत भी विप ही होजाताहै अर्थात् श्रद्धाही मुख्यहै सो इनदेवस्वरूपमे वा मानुपरूपमें जिसकी भक्ति होवे ६ सो ही निजघर लेजाकर पूजै अरु भोजनकरावै अरु हे पुर वालोजन रज सत्व तम इनगुणोसे तीनहीप्रकारकेहोतेहैं१०सोपर दुष्ट अर्थात् तामसीजन जो हैं सो परीक्षाकरतेहैं अरु पुण्यवाले सा त्विक सो भजते भी हैं अरुकई तोइन्हें निन्दितकरते अरुकईसराहते हैं ११ सो जिसका २ जैसा२ स्वभाव होवे सो नर तैसेही वर्त्तताहै जैसे खूबघसाजाता भी चदन अपने सुगन्धिपनेको नहींछोडताहै १२ या केशर कस्तूरी सहित भी पियाज अपने गुणो को नहींछोडताहै तुम्हारी इनमुनि सुतजीमें अनन्य भक्तिहै१३ तो तुम तिन्हें भोजन थारकेलिये शीघ्र लेजाओ अरु पूजो पर इन्हे परीक्षा के लिये न ले जाना क्योकि येही मेरे मावाप है १४ अरु मैं नरोको प्रगटही ये कैसेकहूं कि इसे लेजाकर पूजो क्योकि इनकी दृढभक्तिदेखकर मेरी भक्तिभी विशेपही होतीजाती है१५ जो ये नहींहोते तो ये पुरीकहां अरु तुमकहा मे कहा ऐसे राजाका वचनसुन नगर वाले फिरबोले १६ हे कल्याणरूप राजा आप कहतेहो सो तैसेहीहै अन्यथानहींहै सो हमारी जो कार्य्य सिद्धि है तिसे आपकरो हे जनो के अधिपति १७ सोकि हम तिनबालक जीको घरमे लेजाकर यथायोग्य इन्की पूजाकरे इतनेही मे सभामें विराजमान तिन्हें बालकजी बोले १८ जो तिनके भीतरके वृत्तान्त को जानते जो सबके साक्षि अरु जगत केगुरु श्री विनायकजी बोले कि आपही अत्यत वडे तुम मुझे किस लिये प्रार्थना करतेहो १९ मैं मुनिजी का बालक पुत्रक हूं सो मेरे पूजन का फलक्या है। सोकि जो तुम द्रव्यका व्यय करते हो तुम्हें

क्यामिलेगा मैं यहनहीं जानता २० विवाह या जनेऊवा औरकोई
महा उत्सव होवे तब मैं तुम्हारे घरचलूंगा जब होम श्राद्ध होवेगा
तबभी २१ अरु तुम अनगिनतहो तामें अकेला तुम्हारे सबके घर
कैसेजाऊं आप सरीखे दोपवाली गऊ को किस लिये दोहेंगे अरु
चाहे प्रयोजन वालाजन कल्पवृक्षकोछोड और किससे याचनाकरे
जो और अल्पहैतिसे सो तैसेही तुम चाववाले हो रहेहो २२।२३
ब्रह्मावोले कि ऐसा विनायक जीका वचनसुन पक्ति मुख्यजन पुनि
बोले कि इस विवाह के होगये आप यहां क्षणभी नहीं रहोगे २४
राजा के प्रसाद से आप दीखेहो सो हमारी भक्ति सफलकरो यह
आपको तो पूजासे कुछ प्रयोजन नहींहै जो आप प्राप्त सम्पूर्णकाम
नावालेहो २५ अरुरचना पालना संहारकारी अरु सबके अंतर्यामी
अरु सबकी चित्तवृत्तियो के ज्ञाता अरु करने न करने अन्यथा करने
को सामर्थ्य आप२६ और चित्त आनन्द रूपआपको पूजाओसे प्र-
योजन नहींहै अरु भक्तिके प्यारे देवहै ऐसी अपनी शास्त्ररूप आज्ञा
को वृथामत करो २७ तिनका ऐसा वचन सुन विनायक जी तिन्हें
बोले जो आपकी ऐसीभक्ति है तो मैं राजाकी आज्ञासे चलूंगा२८
तिनका ऐसा वचनसुन सारे निजनिज घरगये तो कईमंडप तानते
भये कइयोने वस्त्रोसे घरबनाये २६ अरु भक्तिसे तोरण लगातेभये
जो जो दर्पण शोभासे सजीली अरु वडेयोग्यपात्र अरु सुगंध चन्दन
३० अरु सुगन्धवाले द्रव्यजो कस्तूरी से मिले अरु फल अरुनाना
वस्त्र अरु आभूषण ३१ अरु [illegible] के पक [illegible] पंचामृत
से युक्त अरु नाना मूर्तियें स्थ [illegible] जो मोति [illegible] सजी
ली ३२ ऐसेही [illegible] निजनि [illegible] चावयुत [illegible] बनाते
भये तो तिस [illegible] यज्ञाता [illegible]
(शुक्रऐसे) नाम [illegible] आजी [illegible]
चित्त इन्द्रियदम [illegible] क्षम [illegible]
का निधान ब्रह्मके [illegible]
वर्तो (विद्रुमानाम [illegible]

ज्ञानसेभरीपूरी अरुमारे शरीरसे सुन्दर३५ अरुदरिद्रणी ज्ञाननिष्ठ अरु पतिमेंप्राणजिनके ऐसीपतिव्रता तिसकेघरमें प्राप्त आकाशभी देखने योग्यजो प्रकटहीतारोंसेअंकित३६ जैसानसोनाचादीनतामा नपीतलका पात्र वो,गोरवर्णवाली वकलपेटे तेजसेप्रकाशवाली गरु सुन्दर शोभन अर्थात् अत्यत सुन्दरी विद्रुमा ३७ जिसकेअंग के तेजसे व्याप्त जो देखनेयोग्य अर्थात् प्रकटमाभी नहीं दीखता तिस चरित्रसे प्रसन्नभई वो घरकी शोभाकरनेवाली ३८ तौतिसके संतापसे अरु तिसकी नम्रता सेवासे शुक्लद्विज प्रसन्नभया जोस्व-स्थचित्तस्थित ज्ञाननिष्ठ अरु प्रायः नकिन भोजन अर्थात् भूखाही रहता ३९ कभी भीखलेनेको गया तो घरघर से वारण कियेगये जनों करके जो विनायकजीके लिये महाउत्सव कररहेथे४० तोजो मिला तिसीसे प्रसन्नभया ये पत्नीपै आकर वेबोला किहे पत्नि तू सुन मैं नगरमें घरघरमें हटायागयाहूं ४१ सोकि विनायकजीपूजा के लिये घरघर मे आवेंगे जो भूमिभार हरनेमें सावधान मुनिजीके घर अवतारभयेहैं४२सो कदाचित् वे घरपरआजावेंइससेतूभीपूजा केलिये प्रयत्नकर वो बोलीकि वे महापूजा को त्याग तुम्हारे घर परकैसे ४३ जो तुम निष्किंचन ऐसेकेघर कैसे आवेंगे अरुहे मुनि जी जो बासी गधमूल पकाफल ४४ अरु जो भलाबुरा बनाया थोडाबहुत भयाभीतो तिनको तुम्हारे घरआनेसे हेविभो क्याप्रयो-जनहै अर्थात् हमारे दरिद्रियों के घर विनायक जी किसलिये आवेंगे४५ऐसे प्रियवचनसुन मुनिजो प्रियासे फिरबोले कि वेदेवों के नाथ समर्थ स्वामी मुझभक्त को जानतेभी हैं ४६ सोवे विभुदेव भक्तिकेही प्यारेहैं लोभके वशनहीं हैं सो वे जलसे अरुपत्रसे तथा पुष्पही से प्रसन्नहो जातेहैं ४७ अरु हठसे समर्पण किये सुवर्णों के समूहोंसे भी नहींरंजतेहैं तिनका ऐसा वचनसुन विद्रुमाफिरबोली ४८ जो ऐसाही है तोजो सिद्धहै सो तिनके अर्थ समर्पणकरो तबतो तिसने गठारह नाजोंका चूनपीसकर पाकबनाया ४९ अरु पुरानगले चावल उबालेजोभी अधिक जलगये अर्थात् थोड़ेथेसो

क्यामिलेगा में यहनहीं जानता २० बिवाह या जनेऊवा औरकोई
महा उत्सव होवै तब मैं तुम्हारे घरचलूंगा जब होम श्राद्ध होवेगा
तबभी २१ अरु तुम अनगिनतहो तामें अकेला तुम्हारे सबके घर
कैसेजाऊं आप सरीखे दोपवाली गऊ को किस लिये दोहोगे अरु
चाहे प्रयोजन वालाजन कल्पवृक्षकोछोंड और किससे याचनाकरै
जो और अल्पहैतिसे सो तैसेही तुम चाववाले हो रहेहो २२।२३
ब्रह्माबोले कि ऐसा विनायक जीका वचनसुन पक्षि मुख्यजन पुनि
बोले कि इस विवाह के होगये आप यहा क्षणभी नहीं रहोगे २४
राजा के प्रसाद से आप दीखेहो सो हमारी भक्ति सफलकरो अरु
आपको तो पूजासे कुछ प्रयोजन नहींहै जो आप प्राप्त सम्पूर्णकाम
नावालेहो २५ अरुरचना पालना सहारकारी अरु सबके अंतर्यामी
अरु सबकी चित्तवृत्तियो के ज्ञाता अरु करने न करने अन्यथा करने
को सामर्थ्य आप२६ और चित्त आनन्द रूपआपको पूजाओसे प्र-
योजन नहींहै अरु भक्तिके प्यारे देवहैं ऐसी अपनी शास्त्ररूप आज्ञा
को वृथामत करो २७ तिनका ऐसा बचन सुन विनायक जी तिन्है
बोले जो आपकी ऐसीभक्ति है तो मै राजाकी आज्ञासे चलूंगा२८
तिनका ऐसा वचनसुन सारे निजनिज घरगये तो कईमंडप तानते
भये कइयोंने वस्त्रोंसे घरबनाये २९ अरु भक्तिसे तोरण लगातेभये
जोजो दर्पण शोभासे सजीली अरु वडेयोग्यपात्र अरु सुगंध चन्दन
३० अरु सुगन्धवाले द्रव्यजो कस्तूरी से मिले अरु फल अरुनाना
वस्त्र अरु आभूषण ३१ अरु नाना प्रकार के पकवान जो पंचामृत
से युक्त अरु नाना मूर्तियें स्थापनकरी जो मोतियोकी लडोसे सजी
ली ३२ ऐसेही वेसारे निजनिज घर में चावयुक्तभये सामग्रीबनाते
भये तो तिस नगरके निकटही वेदशास्त्रार्थज्ञाता एकविप्रथा ३३जो
(शुक्रऐसे) नामवाला शुक्रनाम स्वच्छईहै आजीविकावाला अरुशांत
चित्त इन्द्रियदमनकर्त्ता अरु क्षमासहित३४अरु श्रुतिस्मृतिरूपकर्म
का निधान ब्रह्ममेंनिष्ठावान अतिथियोकेप्यारे३५जिसकीमहाभाग्य
वती (विद्रुमानाम)सेपत्नीभई जो आकांक्षा अर्थात् लोभरहित गरु

ज्ञानसेभरीपूरी अहमारे शरीरमे सुन्दर३५ अरुइन्द्रियों ज्ञाननिष्ठ अरु पतिमेप्राणजिसके ऐसीपतिव्रता तिसकेघरमे प्राप्त आकाशभी देखने योग्यजो प्रकटहीतारोंसेअंकित३६जेमानसोनाचांदीनतामा नपीतलका पात्र वो गोरवर्णवाली वक्रकुलपेटे तेजसेप्रकाशवाली गरु सुन्दर शोभन अर्थात् अत्यंत सुन्दरी विद्रुमा ३७ जिसकेअग के तेजसे व्याप्त जो देखनेयोग्य अर्थात् प्रकटनाभी नहीं दीखता तिस चरित्रसे प्रसन्नभई वो घरकी शोभाकरनेवाली ३८ तोतिस्के सतापसे अरु तिसकी नम्रता सेवासे शुक्लद्विज प्रसन्नभया जोस्व-स्थचित्तस्थित ज्ञाननिष्ठ अरु प्रायः नकिय भोजन अर्थात् भूखाही रहता ३९ कभी भीखलेनेको गया तो घरघर से वारण कियेगये जनो करके जो विनायकजीके लिये महाउत्सव कररहेथे४० तोजो मिला तिसीसे प्रसन्नभया ये पत्नीपे आकर येबोला किहे पत्नि तू सुन मै नगरमें घरघरमे हटायागयाहू ४१ सोकि विनायकजीपूजा के लिये घरघर मे आवेंगे जो भूमिभार हरनेमें सावधान मुनिजीके घर अवतारभयेहैं४२सो कदाचित् वे घरपरआजावेंइमसेतूभीपूजा केलिये प्रयत्नकर वो बोलीकि वे महापूजा को त्याग तुम्हारे घर परकैसे ४३ जो तुम निष्किंचन ऐसे केघर कैसे आवेंगे अरुहे मुनि जी जो बासी गधमूल पकाफल ४४ अरु जो भलाबुरा बनाया थोड़ाबहुत भयाभीतो तिनको तुम्हारे घरआनेसे हेविभो क्याप्रयो-जनहै अर्थात् हमारे दरिद्रियों के घर विनायक जी किसलिये आवेंगे४५ऐसे प्रियवचनसुन मुनिजी प्रियासे फिरबोले कि वेदोंनो के नाथ समर्थ स्वामी मुझभक्त को जानतेभी हैं ४६ सोवे विभुदेव भक्तिकेही प्यारेहैं लोभके वशनहींहैं सो वे जलसे अरुपत्रसे तथा पुष्पही से प्रसन्नहो जातेहैं ४७ अरु हठमे समर्पण किये सुवर्ण के समूहोंसे भी नहींराजनहैं तिनका ऐसा वचनसुन विद्रुमाफिरबोली ४८ जो ऐसाही है तोजो सिद्धवर्ने सो तिनके अर्थ समर्पणकरो ववतो तिसने अठारह नाजोंका चूनपीसकर पाकबनाया ४९ अरु पुरानेगले चावल उबालेजोभी औषधि जउबाले अर्थात् ओढ़ियेरवर्ग

कि वो मुष्टिभर चून पकाकर पत्तेपर धरखातेथे ५० अरुविस्सेदिये द्रव्यसे वस्त्र अरु गंध अक्षत पुष्प धूप दीप महा आर्तिक मँगावी भई ५१ अरुवनफल अरु वल्कल ये एकत्र स्थापन करतीभई अरु मुखवास के लिये सूखे आमलो के खण्ड रखतीभई ५२ अरुयेमुनि दर्भसमूह बिछाकर सुंदर छिडके निज अंगणमे ध्वजा बनाते भये ओढने के वस्त्रसे मंडपतानकर अरु ध्यान में परायण होतेभये ५३ निवेदनीय कर्म अरु बलिवैश्यदेव कर्म पहिले प्रयत्न से करके अर्थात् मुनिजी निजपाठ पूजन करके ध्यान मग्नभये ५४ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्ड बालचरित्र वर्णन में बाईसवा अध्याय समाप्त भया ॥ २२ ॥

तेईसवाअध्याय ॥

सनकसनन्दन मुनियोंका काशिराजके परआना अरुबालकोंमें खेलते देख के तब श्रीगणेशजीकोविसहनावहै ॥

श्री ब्रह्माजी बोले कि वे बालक जो वो बालको में चावसहित खेलतेभये अरुकाशिराज राजगद्दी परबैठा सबजनोंके साथ नाच देखनेलगा १ सोकि जितनेवेश्याओंका नाचदेखातितनेही(सनक) अरु(सनन्दन)ये दोनोमुनि देवलोकसे रमणीय इसकोसभाकोप्राप्त भये२तो तिनमुनियो की सूर्य्य अग्निकीसीकांतिकरके वो सभाभर भी भासितहोगई अरुराजाभी तिन्हेदेख शीघ्रही आसनसेउठा ३ अरु तिनके चरणकमल में शिररखकर तिन्हे साष्टांगप्रणामकरता भयाअरु अंजलिबांधे बोलाकि आज मेराकुल धन्यहै ४ अरुराज्य ज्ञान देह पत्नी अरु पुत्रादिक जो हैं सो सबकुल धन्यही हैं ऐसे कह हाथ पकडकर निज आसनपर बैठाताभया ५ अरु तिन्हें भक्ति से षोडश उपचारों करके पूजताभया अरु पैर दबाने आदि टहलसे तिन्हें विश्राम दिलाता भया अर्थात् बहुत भक्तिकरी ६ अरु ये काशिराज वारवार प्रणाम करके कहनेलगा राजा बोला कि मुनियोंको जो दण्डहित जो सदानिस्पृह ७ तिसको कोई भी कार्य

अच्छा नहींहोता तब भी मैं आज्ञा चाहताहूं अपने तप राज्य कुल शील इन्हें सफल करने को उद्यत ८ तो वे अर्थात् सनक सनन्दन बोले आपके घर यह प्राप्त सब काम वाले जो परब्रह्म स्वरूपी अरु लीला अवतार वाले भगवान् कश्यप सुतजी हैं ९ जो तुम्हारे घर नाना अद्भुत कौतुक कररहे हैं तिसीके अब दाननाम वीते कर्म्मको सुनतेही हमआगयेहैं १० अन्यथा इन्द्रके भुवनत्यागनेमें हमाराकौन प्रयोजनहै सोकि जिनके घर कल्पवृक्षहै वो और क्या मांगेगा ११ सोहे राजन् अब हम तिनके चरणकमलको नमस्कार करके अपने स्थानको जावेंगे ऐसे तिन आर्योका वचन सुन विनायक जी १२ कहते २ ही खेलछोडके मोदक हाथलिये जो पचखादनीय भक्षण योग्यलड्डू को लीलासे धारण करते १३ वो तिन्हें तिनविनायकजी को हास्य परायण राजा दिखाता भया कि वेही देव आगये हैं जिनके देखनेका चाव करते हो १४ सो आगये सो जो तुम्हें कर्त्तव्यहै सो यथेष्ट करो तो मुनीश्वर तिन्हे देखते ही आपस में कहने लगे १५ कि इसकरके अवश्य मुनि कश्यप दूषितकिये गये हैं जो ये तिनकी पुत्रताको प्राप्तहो करके अपने आचारको अतित्यागता है १६ सोकि इसके भेंटे छुयेका विचार नहींहै अरु न भक्ष्य अभक्षका विधानहै इससे फिर इसके देखने अरु स्पर्श करनेमें भी महादोष है १७ जोकि ये निज नियम त्यागके क्षत्रिय के घरमें कैसे रहताहै वो निजधर्म्ममें स्थित हमको इसके दर्शनसे क्याहोगा अर्थात् जिस ने निज धर्म्महीं तजदिये तो तिसके दर्शनसे क्याफल मिलेगा १८ तो तिस वाणीको व विनायक जी अरु सावधान भया काशिराज दोनों सुनते भये फिर वाक्य के ज्ञाता दूसरे बृहस्पति जी सरीखे गणेशजी बोले कि हे मुनियो यथावत् आश्रम में स्थित तुम्हारा ज्ञान कहांगयाहै वो स्वर्ग को छोड़कर बालकों की नाईं यहां कैसे प्राप्तभयेहो १९।२० तो तिनका ऐसा बचन सुनकर वे राजासे बोले जो मायामय देवजीकी मायामें अत्यत मोहित भये २१ बोले कि हमें आज्ञाकरो हम निजाश्रमको जावेंगे तबतो दृढ़भक्ति से

कि वो मुष्टिभर चून पकाकर पत्तेपर धरखातेथे ५० अरुविस्सेदिये द्रव्यसे वस्त्र अरु गंध अक्षत पुष्प धूप दीप महा आर्त्तिक मँगावी भई ५१ अरुवनफल अरु वल्कल ये एकत्र स्थापन करतीभई अरु मुखवास के लिये सूखे आमलो के खण्ड रखतीभई ५२ अरुयेमुनि दर्भसमूह बिछाकर सुंदर छिड़के निज अंगणमे ध्वजा बनाते भये ओढने के वस्त्रसे मंडपतानकर अरु ध्यान में परायण होतेभये ५३ निवेदनीय कर्म अरु बलिवैश्यदेव कर्म पहिले प्रयत्न से करके अर्थात् मुनिजी निजपाठ पूजन करके ध्यान मग्नभये ५४ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्ड बालचरित्र वर्णन में बाईसवां अध्याय समाप्त भया ॥ २२ ॥

तेईसवांअध्याय॥

सनकसनन्दन मुनियोंका काशिराजके घरआना अरुबालकोंमें खेलते देख के तब श्रीगणेशजीकोविसहनावहै॥

श्री ब्रह्माजी बोले कि वे बालक जी तो बालकों में चावसहित खेलतेभये अरु काशिराज राजगद्दी परबैठा सबजनो के साथ नाच देखनेलगा १ सोकि जितनेवेश्याओंका नाचदेखातितनेही(सनक) अरु(सनन्दन)ये दोनोमुनि देवलोकसे रमणीय इसकीसभाकोप्राप्त भये२तो तिनमुनियो की सूर्य्य अग्निकीसीकांतिकरके वो सभाभर भी भासितहोगई अरु राजाभी तिन्हेंदेख शीघ्रही आसनसेउठा ३ अरु तिनके चरणकमल में शिररखकर तिन्हें साष्टांगप्रणामकरता भयाअरु अंजलिबांधे बोलाकि आज मेराकुल धन्यहै ४ अरुराज्य ज्ञान देह पत्नी अरु पुत्रादिक जो हैं सो सबकुल धन्यही हैं ऐसे कह हाथ पकडकर निज आसनपर बैठाताभया ५ अरु तिन्हें भक्ति से षोडश उपचारो करके पूजताभया अरु पैर दबाने आदि टहलसे तिन्हें विश्राम दिलाता भया अर्थात् बहुत भक्तिकरी ६ अरु ये काशिराज बारबार प्रणाम करके कहनेलगा राजा बोला कि मुनियोंको जो दण्डहित जो सदानिस्पृह ७ तिसको कोई भी कार्य

अच्छा नहींहोता तव भी मैं आज्ञा चाहताहूं अपने तप राज्य कुल शील इन्हें सफल करने को उद्यत ८ तो वे अर्थात् सनक सनन्दन बोले आपके घर यह प्राप्त सब काम वाले जो परब्रह्म स्वरूपी अरु लीला अवतार वाले भगवान् कश्यप सुतजी हैं ९ जो तुम्हारे घर नाना अद्भुत कौतुक कररहे हैं तिसीके अब दाननाम बीते कर्मको सुनतेही हमआगयेहैं१० अन्यथा इन्द्रके भुवनत्यागनेमें हमाराकौन प्रयोजनहै सोकि जिनके घर कल्पवृक्षहै वो और क्या मागेगा ११ सोहे राजन् अब हम तिनके चरणकमलको नमस्कार करके अपने स्थानको जावेंगे ऐसे तिन आयोका वचन सुन विनायक जी १२ कहते २ ही खेलछोडके मोदक हाथलिये जो पचखाद्नीय भक्षण योग्यलड्डू को लीलासे धारण करते १३ तो तिन्हें तिनविनायकजी को हास्य परायण राजा दिखाता भया कि वेही देव आगये हैं जिनके देखनेका चाव करते हो १४ सो आगये सो जो तुम्हें कर्त्तव्यहै सो यथेष्ट करो तो मुनीश्वर तिन्हें देखते ही आपस में कहने लगे १५ कि इसकरके अवश्य मुनि कश्यप दूषितकिये गये हैं जो ये तिनकी पुत्रताको प्राप्तहो करके अपने आचारको अतित्यागता है १६ सोकि इसके भेंटे कुयेका विचार नहींहै अरु न भक्ष्य अभक्षका विधानहै इससे फिर इसके देखने अरु स्पर्श करनेमें भी महादोष है १७ जोकि ये निज नियम त्यागके क्षत्रिय के घरमें कैसे रहताहै तो निजधर्ममें स्थित हमको इसके दर्शनसे क्याहोगा अर्थात्जिस ने निज धर्मही तजदिये तो तिसके दर्शनसे क्याफल मिलेगा१८ तो तिस वाणीको व विनायक जी अरु सावधान भया काशिराज दोनों सुनते भये फिर वाक्य के ज्ञाता दूसरे वृहस्पति जी सरीखे गणेशजी बोले कि हे मुनियों यथावत् आश्रम मे स्थित तुम्हारा ज्ञान कहांगयाहै तो स्वर्ग को छोडकर बालको की नाईं यहां कैसे प्राप्तभयेहो१९।२० तो तिनका ऐसा बचन सुनकर वे [illegible] बोले जो मायामय देवजीकी मायासे अत्यत मोहित भये २१ बोले कि हमें आज्ञाकरो हम निजाश्रमको जावेंगे तवतो [illegible]

हो ऐसेकहकर पूर्ववत्दोभुजावाले बालकउसकोघर जोइन्द्रघरसेभी सुन्दर अरु सुन्दर रत्न सुवर्ण सहित देतेभये ५१ अरु अति उत्तम स्वरूप अरु ज्ञान सम्पदादाई अरु तिनसे आज्ञापायेबालकोंकेसाथ और ठौर जातेभये५२ ॥ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंशुक्रद्विज को वरदान देना इसनामसे तेईसवां अध्याय समाप्तहुआ ॥ २३ ॥

चौबीसवा अध्याय ॥

श्री गणेशजी करके अनेक रूप होकर घर २ भोजन करना वर्णन कियाहै ॥

-श्रीब्रह्माजीवोले कितबतौतिस नगरमेंसारे महाजन तिनविनायक जीको ढूंढतेभयेजोकि पूजनअरुभोजनकी अनेकसामग्री रख२के१तो घर२मेंअरुराजघरमें तब जनकश्यपनन्दनजीकोढूंढतेभये२ अरुसारे जनोने पूछाकिकहींविनायकजीभीदेखेहैं जिनकोवेदभी(नेति नेति) अर्थात् नहीं ऐसानहींऐसेकहैंवेकिसके दृष्टिगोचरहोवें हमनेनहींदेखे ३जनऐसेकहते भये जोपुरकेनिकटजनथेतिन्होनेजनोंकेकथनसेसुना कि३।४ वो शुक्रके घर आगया तबवे तिसके घरगये वहांदेखातो तिससे पूछा कि तिसने कहा कि यहां से गया अरु वे माया मय अर्थात् मायाही है प्रधान जिनके ऐसे बाल विनायकजी जो जनों को ठगने के लिये चावबाले बालकों को छोडकर पछाहके द्वारेसे नगरमे आगये ५।६।७ तो कई तो तिने वनमें सिंहकी नाईं सोते देखतेभये अरु कई क्रोधवशभये तिन्हें (ये बालक लडकाहै) ऐसे निन्दित करतेभये ८ ये पिशाचकी नाईं कैसे तिस दरिद्रीके घर पै चलागया जो ये सर्वभाव ज्ञाता ईश्वरहो तो सबका प्यार करें ६ अरु कई तिन्हे हाथ पकड़ उठाकर घरचलो अरु तुम्हारे लिये तयार करी शुभ सामग्रीको सफल करो ऐसे कहतेभये १० आपके चरण कमल देखके हमारे भ्रमनेका खेद मिटगयाहै सो तुमबाल समूहों केसाथ भोजन करनेको हमारे घरचलो ११ ये बोले कि हमने तो भलीभाति भोजन करचुके फिर कई जन तिनसे बोले कि उसभि- खारी दरिद्रीके घर आपका क्या भोजन भयाहोगा १२ उसकातो

जलभी कोई नहींपीता है प्रभो आपसे तिसका अन्नकैसे खायागया श्रीगणेशजी बोले कि मेरा उदर परिपूर्ण होरहाहै मेरीचलनेकी भी सामर्थ्य नहींहै ब्रह्मा बोले कि तवतो सारेजन तिन्है शुक्र के घर जीमें जानकर निराश भ्रष्ट मनोरथभये रोषभये दीनवेचेतहोतेभये १३।१४ सोकि जो नानाक्लेश पूर्वक व्ययसे बनाये समारंथे सोसब वृथाही होगये ऐसे कह जो २ दुष्ट हठीले भक्ति शून्य जनथेसे सो तिनव्यजनो को आपही भोजन करगये१५जो भक्तथे सो निराहार ध्यानमें परायणहो बैठगये ऐसे ध्यानमें स्थित बहुत लोगोंकोजान के १६ तब वे एकही घडेमे आकाशकी नाईं नाना स्वरूपी होगये अर्थात् न्यारे २ घड़ोमें आकाश भी पृथक्२ही प्रकट प्रतीतहोताहै अरु जैसे अनेक जलभरे घडोमें नानासूर्य्य देख पडते हैं १७ सो कि कहींतो सेजपर शयन करते कहीं जपनेमें परायण कहीं दान देते अरु कहीं भाजनको चाव सहित १८ कहीं शिष्यों को सांगो-पांगवेद पढ़ारहे कहीं शास्त्र व्याख्या करते कहीं आप पढ़रहे १६ ऐसे नानास्वरूपोसेनानाघरगये विनायकजीशोभितभयेअरुयेहमारे घर पहिले आये २ ऐसे सब अभिमान करतेभये २० वो तेल उब-टना स्नान पूजन भोजन देतेभये इसी प्रकार काशिराज सहित सारेजनहर्षे २१ अरु देव विनायकजी को देखकर परम हर्षसे पू-जतेभये ब्राह्मण प्रियजनोको भी भोजन करातेभये २२ सोकि प-चामृत अरु पकवान क्षीर तदुलान्न अरु और २ भी रुचिकारक वे यथा रुचि भोजन करतेभये२३ ऐसे द्विजदेव प्यारे काशिराजसब सखाओंके आशीषवाले होतसते सभामें बैठा काशिराज ये निरतर पूछताभया २४ जो मुनिपुत्र विनायकजी की अनेक प्रकारकी आ-कृतिवालोका मायासे मोहित भया राजा बोला कि विनायक जी अनेक घरो में भोजन करते हैं ये प्रकटहै २५ पर ये तो देखो मेरे निकट बैठे हैं वो घर २ मे कौन भोजन करताहै अरु कहीं विना-यकजी पालकीमें सवार भये भोजन करनेको जाते हैं २६ कहीं हस्तीपर चढ़ेजाते कहींघोडेपर चढ़े जाते ऐसे सबलोगोंके विनायक

जीर्ण पुजा को व्याकुल भयेसते २७ तबतो वे दोनों मुनि सनक सनन्दन नगरीमें गये तहा २ ही तिन विनायकजीको देखते भये सोकि कहीं तो भोजन करते तो वहा से उलटकर चलेआये २८ तो जहा २ घरमें गये तहा २ हीं विनायकजी को देखे वो सब नित्यकर्म निवेडकर भिक्षाके लिये चलेगये २९ वो हा दिव्य सेज पर सोते देखे अरु कहीं फल भक्षण करते कहीं ताम्बूल चर्वण करते अरु कहीं गंधपुष्पादिक से चरचे देखते भये ३० अरु वेश्याके समूह सहित देखतोंको देख अरु कहीं बुद्धिबलसे पाशोकरके क्रीडा करते देखे ३१ अरु कहीं नाना अलंकारों सेसजे अरु कहीं सुन्दर वस्त्र सहित अरु कहीं ध्यानसे जपते अरु पढते तिन्हेंही देखते भये ३२ अरु कहीं भक्तों से स्तुति कियेजाते अरु कहीं आप जगदीश्वर का स्तुतिकरते तिन्हेंही देखे अरु कहीं भक्तोंको अपनी अनेक विभूतियें दिखातेदेखे ३३ अरु कहींजवान जो अत्यन्त सुन्दर निजस्त्रियों से क्रीडाकरते देखे कहीं रोगियोंकी परिचर्य्या करते कहीं वृक्षोंको सेंचते कहीं उत्तमरस कर्मकरते ३४ कहीं रींगते अरु कहीं आगन में मिट्टीखाते कहीं थके जलपीरहे जो गेंदआदि खेलोंमें खेदभये ३५ ऐसे वे भूखे,हारे,थके घर२में भटकते सर्वत्र ही तिन देव विनायक जीको देखके आपसमें बोले कि ३६ इसनगरमें एक शुक्रविप्र निर्म्मल पवित्रहै उसकेघर भोजनको जावें तो तहागये ३७ वा तहा भी आगनमें बैठे विनायकजी तिन्होंनेदेखे तो कहा कि इसनगरमें भोजन न करना क्योंकि विनायकमें वचाकहीं नहींहै ३८ ऐसे कह बाहरआये तो भी आगे वि[illegible] को [illegible] देख [illegible] छ हो कर चले तो तहा भी विनायकजी क[illegible] ३९ अर[illegible] अरु पश्चिम दिशामें अरु [illegible] र भो [illegible] नीचे [illegible] प्राप्त विनायकजी [illegible] ते [illegible] फिर [illegible] रूप अरु फि[illegible] विर[illegible] सा[illegible] को [illegible] ही विनायकमय [illegible] तो अत्यन्त विस्म[illegible]

तिन्हींतिन विनायकजी को देखे ४२ अरु आंखमीच के भीतर वि-
न्हींकोदेखे अरु नेत्रखोलके भी तिन्हेंही मनमेंतिन्हें देखतेभये ४३
मुकुटवाले कुण्डलोंवाले मोतियोंकी मालाडाले सुन्दरभुजबन्धबांधे
अरु सुवर्णके कटिबन्धन से अरु मुद्रिकाओं से विशेष सजीले ४४
अरु दशभुज सिंह पै सवार अरु सिद्धि बुद्धियुक्त सुन्दर भालचन्द्र
कस्तूरीका तिलककिये सर्पभूषण ४५ करोडसूर्य्य प्रभावाले सृष्टि
पालन संहारकारी तौ ये तत्त्वज्ञाताभये तिनके परापारविदको न-
मतेभये ४६ सो कि देवदेव विनायकजी को परम भक्ति से स्तुति
करतेभये जो तिन्होंकी कृपासे ज्ञानकोप्राप्त मुनीश्वर वे सनकसन-
न्दन दोनों ४७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में विनायकजी के
भोजनका कथन इसनामसे चौबीसवां अध्यायसमाप्तहुआहै॥२४॥

पचीसवां अध्याय॥

सनकसनन्दनमुनियोंसे श्रीगणेशजी की स्तुतिकरनी वर्णी है॥

वे दोनोंवोले कि हे अनघ गणेशजी तुम सारेकारणों के कारण
अरु कारणसे परे परब्रह्म स्वरूप हो अरु ब्राह्मणों के कर्त्ता अरु
परमव्यापकहो १ आपही इस जगत्कोरचते अरु पालते संहारकरते
हो सो कि रूपरहित भी आप जो नानामाया वलसेसंयुक्त २ अरु
आपही पंचमहाभूत यक्ष,गन्धर्व,राक्षस हो सो चर अचर आपको
स्तुतिकरनेके लिये कौनसमर्थ होवे ३ सो वेद भी आपकेरूप के न
जाननेसे न इति२ अर्थात् ये नहीं२ ऐसे कहचुका अरु मोहितभये
हम भी आपके उत्तमरूप को नहींजानते हैं ४ अरु हे प्रभो अनेक
रूप आपकी महिमाको हमनहीं जानतेहैं हे प्रभो आपके चरण के
दर्शनसे हम धन्य२भयेहैं ५ जो आप नानाप्रकार के अवतारधार
भूभारको संहारतेहो ब्रह्माजीवोले कि ऐसी तिनदोनोंकी स्तुतिसुन
तिनमें विनायक जी बोले जो बालरूप कौतुकवाले मायावान् कि
तुम मेरे प्रसाद से तत्त्ववेत्ता अरु सर्वज्ञ होवोगे ६ ऐसे वरदान दे
देवजी वो तहांही अन्तर्द्धानभये तब वो वे विनायकजी को यथोक्त

जीमें पूजा को, व्याकुल भयेसते २७ तबतो वे दोनों मुनि सनक सनन्दन नगरीमें गये तहां २ ही तिन विनायकजीको देखते भये सोकि कहीं तो भोजन करते तो तहा से उलटकर चलेआये २८ तो जहा २ घरमें गये तहां २ ही विनायकजी को देखे तो सब नित्यकर्म निवेडकर भिक्षाके लिये चलेगये २९ वो हां दिव्य सेज पर सोते देखे अरु कहीं फल भक्षण करते कही तांबूल चर्वण करते अरु कहीं गधपुष्पादिक से चरचे देखते भये ३० अरु वेश्याके समूह सहित देखतोको देख अरु कहीं बुद्धिवलसे पाशोकरके क्रीडा करते देखे ३१ अरु कहीं नाना अलंकारो सेसजे अरु कहीं सुन्दर वस्त्र सहित अरु कहीं ध्यानसे जपते अरु पढते तिन्हेंही देखते भये ३२ अरु कहीं भक्तो से स्तुति क्रियेजाते अरु कहीं आप जगदीश्वर का स्तुतिकरते तिन्हेंही देखे अरु कहीं भक्तोको अपनी अनेक विभूतियें दिखातेदेखे ३३ अरु कहींजवान जो अत्यन्त सुन्दर निजस्त्रियो से क्रीडाकरते देखे कहीं रोगियोकी परिचर्य्या करते कहीं बूढोको सेवते कहीं उत्तमरस कर्मकरते ३४ कहीं रींगते अरु कहीं आगन में मिट्टीखाते कहीं थके जलपीरहे जो गेदआदि खेलोसे खेदभये ३५ ऐसे वे भूखे, हारे, थके घर२में भटकते सर्वत्र ही तिन देव विनायक जीको देखके आपसमें बोले कि ३६ इसनगरमें एक शुक्लविप्र निर्म्मल पवित्रहै उसकेघर भोजनको जावें तो तहांगये ३७ तो तहा भी आगनमें बैठे विनायकजी तिन्होनेदेखे तो कहा कि इसनगरमें भोजन न करना क्योंकि विनायकसे बचा कहीं नहींहै ३८ ऐसे कह बाहरआये तो भी आगे विनायकजीकोही देखकर तिरछे होकर चले तो तहा भी विनायकजी को ही देखे ३९ अरु पूर्व्वमें अरु पश्चिम दिशामें अरु चारोओर भी तिन्होने अरु नीचे, ऊपर सब ठौर प्राप्त विनायकजीको ही देखतेभये ४० अरु फिर तिन्होंही विनायकस्वरूप अरु फिर तिन्हें हीं विराट् स्वरूप सो कि सबवस्तु मात्र को विनायकमयं ही देखतेभये ४१ फिर वे शम्भु विष्णु भी तिन्हें ही अत्यन्त विस्मित भये भावना करते भये जब हृदयमें भी देखा तो

तिन्हींतिन विनायकजी को देखे ४२ अरु आखमींच के भीतर तिन्हींकोदेखे अरु नेत्रखोलके भी तिन्हेंही मनमेंतिन्हें देखतेभये ४३ मुकुटवाले कुण्डलोंवाले मोतियोंकी मालाडाले सुन्दरभुजबन्धबांधे अरु सुवर्णके कटिबन्धन से अरु मुद्रिकाओं से विशेष सजीले ४४ अरु दशभुज सिंह पै सवार अरु सिद्धि बुद्धियुक्त सुन्दर भालचन्द्र कस्तूरीका तिलककिये सर्व्वभूषण ४५ करोडसूर्य्य प्रभावाले सृष्टि पालन संहारकारी तो वे तत्त्वज्ञाताभये तिनके चरणारविंदको नमतेभये ४६ सो कि देवदेव विनायकजी को परम भक्ति से स्तुति करतेभये जो तिन्हींकी कृपासे ज्ञानकोप्राप्त मुनीश्वर वे सनकसनन्दन दोनों ४७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में विनायकजी के भोजनका कथन इसनामसे चौबीसवां अध्यायसमाप्तहुआहै॥२४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

सनकसनन्दनमुनियोंसे श्रीगणेशजी की स्तुतिकरनी वर्णी है॥

वे दोनोंबोले कि हे अनघ गणेशजी तुम सारेकारणों के कारण अरु कारणसे परे परब्रह्म स्वरूप हो अरु ब्राह्मणों के कर्त्ता अरु परमव्यापकहो १ आपही इस जगत्कोरचते अरु पालते संहारकरते हो सो कि रूपरहित भी आप जो नानामाया बलसेसयुक्त २ अरु आपही पंचमहाभूत यक्ष,गन्धर्व,राक्षस हो सो चर अचर आपको स्तुतिकरनेके लिये कौनसमर्थ होवे ३ सो वेद भी आपकेरूप के न जाननेसे न इति२ अर्थात् ये नहीं२ ऐसे कहचुका अरु मोहितभये हम भी आपके उत्तमरूप को नहींजानते हैं ४ अरु हे प्रभो अनेक रूप आपकी महिमाको हमनहीं जानतेहैं हे प्रभो आपके चरण के दर्शनसे हम धन्य२भयेहैं ५ जो आप नानाप्रकार के अवतारधार भूभारको संहारतेहो ब्रह्माजीबोले कि ऐसी तिनदोनोंकी स्तुतिसुन तिनमें विनायक जी बोले जो बालरूप कौतुकवाले मायावान् कि तुम मेरे प्रसाद से तत्त्व वेत्ता अरु सर्वज्ञ होयोगे ६ ऐसे वरदान दे देवजी वो तहांही अन्तर्द्धानभये तब वो वे विनायकजी को यथोक्त

जीमें पूजा को व्याकुल भयेसते २७ तबतो वे दोनों मुनि सनक सनन्दन नगरीमे गये तहां २ ही तिन विनायकजीको देखते भये सोकि कहीं तो भोजन करते तो तहा से उलटकर चलेआये २८ तो जहां २ घरमें गये तहा २ हीं विनायकजी को देखे तो सब नित्यकर्म निदेडकर भिक्षाके लिये चलेगये २९ तो हां दिव्य सेज पर सोते देखे अरु कहीं फल भक्षण करते कही तांबूल चर्बण करते अरु कहीं गधपुष्पादिक से चरचे देखते भये ३० अरु वेश्याके समूह सहित देखतोको देख अरु कहीं बुद्धिवलसे प्राशोकरके क्रीडा करते देखे ३१ अरु कहीं नानाअलंकारो सेसजे अरु कहीं सुन्दर वस्त्र सहित अरु कहीं ध्यानसे जपते अरु पढ़ते तिन्हेंहीं देखते भये ३२ अरु कहीं भक्तो से स्तुति कियेजाते अरु कहीं आप जगदीश्वर का स्तुतिकरते तिन्हेंही देखे अरु कहीं भक्तोको अपनी अनेक विभूतियें दिखातेदेखे ३३ अरु कहींजवान जो अत्यन्त सुन्दर निजस्त्रियो से क्रीडाकरते देखे कहीं रोगियोकी परिचर्य्या करते कहीं वृढोको सेवते कहीं उत्तमरस कर्मकरते ३४ कहीं रींगते अरु कहीं आगन में मिट्टीखाते कहीं थके जलपीरहे जो गेंदआदि खेलोसे खेदभये ३५ ऐसे वे भूखे, हारे, थके घर२में भटकर्ते सर्वत्र ही तिन देव विनायकजीको देखके आपसमें बोले कि ३६ इसनगरमें एक शुक्लविप्र निर्म्मल पवित्रहै इसकेघर भोजनको जावें तो तहांगये ३७ तो तहां भी आगनमें बैठे विनायकजी तिन्होनेदेखे तो कहा कि इसनगरमें भोजन न करना क्योंकि विनायकसे वचा कहीं नहींहै ३८ ऐसे कह वाहरआये तो भी आगे विनायकजीकोही देखकर तिरछे होकर चले तो तहा भी विनायकजी को ही देखे ३९ अरु पूर्व्वमें अरु पश्चिम दिशामें अरु चारोओर भी तिन्होने अरु नीचे ऊपर सब ठौर प्राप्त विनायकजीको ही देखतेभये ४० अरु फिर तिन्होही विनायकस्वरूप अरु फिर तिन्हें हीं विराट् स्वरूप सो कि सबवस्तु मात्र को विनायकमय ही देखतेभये ४१ फिर वे शम्भु विष्णु भी तिन्हें ही अत्यन्त विस्मित भये भावना करते भये जब हृदयमें भी देखा तो

तिन्हींविन विनायकजी को देखे ४२ अरु आंखमीच के भीतर ति-न्हींकोदेखे अरु नेत्रखोलके भी तिन्हेंहां मनमेंतिन्हें देखतेभये ४३ मुकुटवाले कुण्डलोंवाले मोतियोंकी मालाडाले सुन्दरभुजबन्धबाधे अरु सुवर्णके कटिबन्धन से अरु मुद्रिकाओं से विशेष सजीले ४४ अरु दशभुज सिंह पै सवार अरु सिद्धि बुद्धियुक्त सुन्दर भालचन्द्र कस्तूरीका तिलककिये सर्व्वभूषण ४५ करोडसूर्य्य प्रभावाले सृष्टि पालन संहारकारी तो ये तत्त्वज्ञाताभये तिनके चरणारविंदको न-मतेभये ४६ सो कि देवदेव विनायकजी को परम भक्ति से स्तुति करतेभये जो तिन्हींकी कृपासे ज्ञानकोप्राप्त मुनीश्वर वे सनकसन-न्दन दोनों ४७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में विनायकजी के भोजनका कथन इसनामसे चौबीसवां अध्यायसमाप्तहुआहै॥२४॥

पचीसवां अध्याय॥

सनकसनन्दनमुनियोंते श्रीगणेशजी की स्तुतिकरनी वर्णी है॥

वे दोनोंबोले कि हे अनघ गणेशजी तुम सारेकारणों के कारण अरु कारणसे परे परब्रह्म स्वरूप हो अरु ब्राह्मणों के कर्त्ता अरु परमव्यापकहो १ आपही इस जगत्‌कोरचते अरु पालते संहारकरते हो सो कि रूपरहित भी आप जो नानामाया बलसेसंयुक्त २ अरु आपही पंचमहाभूत यक्ष,गन्धर्व,राक्षस हो सो चर अचर आपको स्तुतिकरनेके लिये कौनसमर्थ होवे ३ सो वेद भी आपकेरूप के न जाननेसे न इति२ अर्थात् ये नहीं२ ऐसे कहचुका अरु मोहितभये हम भी आपके उत्तमरूप को नहींजानते हैं ४ अरु हे प्रभो अनेक रूप आपकी महिमाको हमनहीं जानतेहैं हे प्रभो आपके चरण दर्शनसे हम धन्य२भयेहैं ५ जो आप नानाप्रकार के अवतार भूभारको संहारतेहो ब्रह्माजीबोले कि ऐसी तिनदोनोंकी स्तुति तिनसे विनायक जी बोले जो बालरूप कौतुकवाले मायावी तुम मेरे प्रसाद से तत्त्व वेत्ता अरु सर्वज्ञ होवोगे ६ ऐसे न देवजी वो तहांहीं अन्तर्द्धानभये तब तो वे विनायकजी को

मोलकीमूर्त्ति सम्यक्बनाकर ७।८ अरु भारी मन्दिरबनवाकर जोरत्न सुवर्णसंयुक्त सनकसनन्दन तिनबिनायकजीको स्थापनकरतेभये ६ अरु तिनकी आख्याति भी करतेभये कि ये (बिरदबिनायकजी)हैंगे अरु(गणेशकुण्ड) ऐसा तिन्होने उत्तमसर बनाया १० अरु बरदेते भये कि जो यहां नहाइके बरद गणेशजीको पूजेंगे वो सम्पूर्ण काम प्राप्तहोकर अरु सारे भोग भोगकरके ११ अरु पुत्र पौत्रों को पाय कर अरु विद्याआयुर्बल महायश अरु धनधान्य कीर्त्तिभी अरु निरन्तर तत्त्वज्ञानपाकर १२ अन्तमें निस्सन्देहही बिनायकजीके धामको प्रधारेंगे श्रीब्रह्माजीबोले कि जहांदेवतागंधर्व अरु यक्ष अप्सराओंके समूह १३ येदेवेशजीको देख पूजनकरके तिसीक्षणमें अन्तर्द्धानभये अरु प्राप्तऐश्वर्य वेदोनो उत्तम स्वर्गको जातेभये १४ अरु मन्त्रियों सहित प्रजा अरु काशिराज भी तहां आकर तिन बिनायक जी को नाना प्रकार के उपचार अरु अलंकारो से अरुनाना वस्त्रो से भी १५ अरु अनेक पकवानों करके अरु नानाविधके फलोंसे रत्नो से अरुमोतियोसे फूलोसे अरुअनेकसी दक्षिणाओ से १६ परमभक्ति करके ब्राह्मणों के साथ मन्त्रोसे पूजताभया अरु वस्त्र भूषण सुवर्ण से ब्राह्मणो कोभी पूजताभया १७ अरु आशीर्वाद लेकर फिरनगर में आया तैसेही वे मन्त्रीआदि भी बिनायक जीको पूजते भये १८ अरु तैसेही विप्रोकोपूज हर्षसे परमअशीष ग्रहणकरी फिर प्रजाभी बिनायकजीको यथाशक्ति पूजतीभई १९ तो वेसारे प्रसन्न मनभये पुरमें प्रवेशहुये ऐसेहमने तुमको बिनायकजीसे चेष्टाकिया आचरण वर्णनकियाहै जो सर्व पापहारी अरु पवित्र अब और क्या सुनना चाहतेहो २० व्यासजी बोलेकि हे ब्रह्मन् मैंने ये चरित्रसुना जोकि बिनायकजी शुक्लनाम स्वच्छ भिक्षामें परायण शुक्लजीके घरगये जो शुक्लद्विज धातुमात्रके स्पर्शसेही रहित अर्थात् निर्द्धनथा सोकिखेदको त्यागके तिसके जलसे शिथिल तडुलान्नको दशभुजोंसे भोजन करके तृप्तभये तिसके दरिद्रपनको विशेष से नष्ट करतेभये तो शुक्लजीको इन्द्रके नगरसे भी जो श्रेष्ठघरथा सो दिया अर्थात् अमरावती में भी

तैसांकोईभीधरने था२१।२२।२३।२४ अरुसपदैभीवेदई जो कुबेर जीकेही हैं अरुस्वरूप जोदिया सो कामदेव मेंभी नथा २५ अरु ज्ञानतिसेको ऐसादिया जो हमब्रह्माजीकोभी नहींहै सो हेब्रह्माजी इसमें क्याकारण है सो मुझे कहनेयोग्य हो २६ ब्रह्माजीबोले कि हेव्यासजी तुमने अच्छापूछा क्योंकि परमेश्वरकी कथा प्रश्न करने वालोंको सुनने वालोंको वक्ताको भक्तिसे सुनीगई पवित्र करतीहै २७ जिसेकहनेको मेरामनहीथा सो तुमने प्रश्नपूछा है सो हमभक्ति गम्य गणेशजीका चरित्र सम्यक् प्रकारसे वर्णनकरेंगे २८ अरु वे देव गणेशजी जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी सर्वगामी सर्व चित्तज्ञाता भक्तिसे ही प्रसन्न होतेहैं क्योंकि भक्तिही संतोषका कारण है २९ भक्ति से पत्र, जल, सुन्दरपुष्प तिसी से प्रसन्नभये आप आत्मज्ञान देता है अरु हठसे या लीलासे या पराई लज्जासे महान् रत्नधन जोनाना प्रकारके ३० कचनका चांदीका ये सारादिया वृथाही होजाता है जो गणेशजी शमीकेपत्रसेही प्रसन्नभये कसाईको श्रेष्ठगति देतेभये ३१ जोकिसीके प्रसंगसेही दियेमेभी हृदय में दृढभक्ति भावकरके तथा स्वेच्छासे जो प्राप्तहो तिसमे भी प्रसन्न होते हैं श्रीगणेश जी तिससेती भक्तिही बलवाली है ३२ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंड में बालचरित्रमें भक्तिकी प्रशंसा का वर्णन इसनाम से पच्चीसवां अध्याय समाप्त भया ॥ २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

व्याध के चरित्र में राक्षसका मोक्षहोना वर्णन किया है ॥

व्यासमुनिने पूछाकि किसलिये व्याधने पूजाकी अरु कैसे शमीपत्र समर्पणकिया अरु वो क्यानामीथा अरु वो कैसे मोक्ष को प्राप्तभया सो मुझसे कहिये १ श्रीब्रह्माजी बोले कि विदर्भदेश में एक (मदिपनाम) से पुरहोताभया जो तीनोंलोकों में विख्यात अरु कुबेरजीके नगरके समान था २ तिसनगरमें (भीमनाम)से कसाई मांस बेंचनेवालाभया पराये दोष कहनेमें यद्यपि दोषवो है ३ पर

प्रश्नकिये यथार्थता से कथनीयही है किन्तु अहंकार से न कहना सोकि वो बहुदोष वाला भीम धनुष बाणलिये वनमें विचरता ४ बाणों से पूर्ण तरकस अरु खड्गधरे धनुषधारी छुरीकटारीबांधे अरु नित्यही कुटुम्बके पोषण में परायण वो प्राणियोंको मारताथा ५ जोनिर्दयी निर्जन बनमें राहगीर ब्राह्मणों को मारताकदाचित् तिसी नगरमें एक महा उत्सव होनेलगा ६ तो वो प्रात काल ही बहुत मांसलाने की इच्छा करके बन को गया जो वेचनेकी इच्छा किये द्रव्यलालची कुटुम्बही का पोषी ७ तिनमृगो के यूथोंकोहनताभया अरु मांसके भारसे लदा पुरको आताथा तितनेही में एक महाभारी राक्षस आगया ८ तांवो मनुष्यकी सुगन्धसे हर्षा-तिसी क्षणसे तिसके निकट आया जो (पिंगाक्ष)नाम पीले नेत्रवाला सर्व भयकारी ९ जो मनुष्या अरु श्वापद जीवोंको खानेवाला जो प्रचंड अग्नि के समान सो व्याध तिसे देखके कांपा अरु भूमिमें गिरपड़ा १० अरु शस्त्रभी गिरे अरु तिसकेनेत्र भी मिचगये तो बलसेइसने आंखखोलकर अपने आगे एक शमीवृक्ष देखा ११ तो भीमव्याध तिसपे चढगया तो राक्षस भी आके चढगया तभी तिसने तिसकी डालियांफेंकी तो तिसकापत्ता वायुसेप्रेरा १२ वामनजीके स्थापन किये गणेशजीपर जागिरा मस्तकपर सोवे तिनदोनों मे पूजेप्रसन्न भये १३ प्रकटहो जो वामनजीको बरदेनेकेलिये गजाननजी प्रकट भयेथे जो वामन जी बलिको जीतनेकी कामनावाले अरु कश्यपजी के सुतथे १४ सोहीं गणेश जी दूर्वासे अरु शमीपत्रो से अत्यन्तही प्रसन्न होतेहैं सोकि रत्न कांचन से संयुक्त अरु दिव्यवस्त्र सहित १५ भी मनुष्यों से करी पूजा दूर्वांकुरोंके विन वृथाही होजाती है सो वोशमीपत्रसेही सफल होताहै अन्यथा किसी तरह भी नहीं १६ अरु यज्ञ,दान,व्रत न और तपोंसे न नियमोंसे भी तैसेही कंचनरत्न समूहो से देव-गणेशजी-प्रसन्न नहीं होते हैं १७ जैसे दूर्वा अरु शमीपत्रों से जैसे प्रभु सुप्रसन्न होतेहैं सोही देवजी तिनदोनो व्याध राक्षसोंपर प्रसन्नभये उत्तमविमान भेजतेभये १८ जो स्वरूपधारी

निजलोक से आये किङ्करों से सयुक्त तो तिनके दर्शन से दोनो के पाप पहाडो के ढेर नाशभये १६ सोकि गणेशजीकी कृपासे तिन भीम अरु राक्षसों के पाप नाशभये जैसे अग्नि के किनकेही स्पर्श से तृणोंकी वागर जलजाती है २० सोवे तिनदेहोंको त्याग दिव्य देहभये विमान मे बैठकर जो तिनदूतों से नानाप्रकारो करके पूजे गये सोकि नानावस्त्र, भूषण,सुगन्धोंसे २१ अरु जो विमान नाना बाजे गाजो से अरु स्त्री गधर्वों से सयुक्त भारी तिससे देवजी के निकट लेगये वे गणेशजीको प्रणाम करतेभये २२ तो निश्शेषपापोंसे छूटे वे स्वरूपता अर्थात् कैवल्यपन को प्राप्तभया सोकितिन गणेश जी करके वे कल्पकाल तक निजस्थान मेंही रक्खेगये २३ ऐसेही वे भावके प्यारे देवगणेशजी भक्तिभावसेही प्रसन्न होते हैं तैसेही वे मुष्टिमात्र अन्नसे उस शुक्ल ब्राह्मण पर प्रसन्न भये २४ सोकि शुक्लजीको दिव्यअलकापुरीके घरकेसमान घरदेदियातिससे दूर्वा अरु शमीपत्रों विनकरी पूजा वृथाही होजाती है २५ तैसे दम्भइठीली महाभारी पूजासे प्रसन्न नहींहोते हैं जैसे भक्तिभावसे करी थोडीभी पूजामे गजानन जी प्रसन्न होते हैं २६ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तरखण्ड मे भीमराक्षसका मोक्ष इसनाम से छब्बीसवा अध्याय समाप्त भया ॥ २६ ॥

सत्ताईसवा अध्याय ॥

व्याधके अरु राक्षसके पूर्वजन्मका कथन वर्णित है ॥

व्यासजीनेपूछा कि हेनाभिजन्मा ब्रह्मजी पूर्वजन्ममें वो व्याध अरु वो राक्षस भी कौन था सोकि किस स्वभाव अरु किस आगारसों मुझसे कहो १ अरु तिन वामनजीने कैसे अनुष्ठान किया अरु कैसे गजानन रूपजी करके तिसे वरदान दियागयाया २ अरु गणेशजीका लोक एपकदी कैसे और ठौर बनाहै अरु शमीवृक्षतिनको कैसेप्रियहै सो सब मुझसे शीघ्रही कहो ३ श्रीब्रह्मा जी बोले कि हे मुनि व्यासजी जोजो तुमने पूछासोर सबमें कहताहूं तुमसुनो कि वो

व्याध तो पूर्वजन्ममें वेदपारगामी राजाथा ४ जो सब शास्त्रार्थका वक्ता अरु सम्पूर्ण लक्षणोसे लक्षित यज्ञकरता विनयवान् लज्जा वाला अरु देवता अतिथि पूजनेवाला ५ जिसके हाथीघोडे पैदलों की गिनती नहीं होती है सो वो दाता शूरवीर अरु मेधावान् अरु इन्द्र के समान समृद्धिवान् ६ जिसके (ध्वज) अरु (शत्रुजित्) ये दोनों अत्यत बलवाले प्रधान मंत्री भये जिन करके शुक्रजी नीचे कियेगये अरु वृहस्पति भी प्रकटही जीते गये ७ जो ये निज शस्त्र के तेजसे भूतलमें सबको जीतनेकेलिये समर्थ थे अरु इसकोसुलक्षणोवाली (मदनावती) इसनामसे रानी थी ८ जो पतिव्रता धर्म शीलवती सुन्दर मुखवाली सब जानती सोकि तिसके समानकामिनी कोई तीनोंलोको में भी नहींथी ९ अरु वो दीनदयाल अरु वृद्धजन में अरु अतिथियो में दयावाली ऐसे यज्ञकरने दानदेते अरु श्रेष्ठो को पूजनें तिनदोनो के १० वर्ताव से पुरवाले अरु देशवाले जन प्रसन्न भये क्योंकि न मित्र अर्थात् शत्रुवभी श्रेष्ठराजासे किये हु गुणो को ग्रहण कर लेते हैं ११ ऐसे वो पवित्र कीर्तिमान् भया राजा इस पृथ्वीको पालताभया वहुतवर्पतक फिर दैवयोगसे काल के धर्म अर्थात् मृत्युको प्राप्त होने को तैयार आतुर भया १२ सो तिसने मरते समय यथा विधि सहस्त्र गोदान दिया अरु आठमहा दानभी दिये अरु और और भी वहुतदान दिये १३ तो तिसके मरे सारी नगरी तव तिस राजाको शोचने लगी अरु अपुत्र पनेसे इस की रानी मदनावती भी सहगती को प्राप्त अर्थात् सतीभई १४ वे दोमन्त्री ब्राह्मणोंसे इसके संस्कार करातेभये अरु ग्यारहवेंदिन भक्तिसे विविधदान देतेभये १५ महीना वीते पर राज्ययोग्य निज कुलमें भये नरको निमन्त्रण किया जो बुद्धिमान् अरु पराक्रमसे संपूर्ण शूरवीर सत्य बलवाला था १६ सो तिस राजाके दायादनाम भाई८(दुर्दर्पकापुत्रमहावलीया)मोक्षत्रज सज्ञकपुत्रथा (सावनाम)से प्रसिद्धसो ये तिसराजासे मानागयाथा तिसेवेदोनो १७मत्रीनिश्चय करके तिसे राज्यदेनेको पुरवाले अरु सबदेश वासी तथा ब्राह्मणों

को भी पूछकरके १८ शुभ मुहूर्त्त सुन्दर लग्न में नाना प्रकार के सभार समूहो करके ब्राह्मणों के साथ तिनका अभिषेककराते भये अर्थात् सबकी साक्षिसे तिसेदोनो मंत्रियो ने राजगद्दी पर बैठाया १६ व्यासजीबोले कि हेपितामहजी बोसाम्बकेसिक्षेत्रसे उत्पन्नभया किस जातिका था सो हे कृपानिधे सर्वज्ञ आप मुझसे कहो २० श्रीब्रह्माजी बोले कि हे महामुनि व्यास दुर्द्धर्प ने पुत्रके लिये बड़े बड़े प्रयत्नकियेथे पर इस दुष्ट प्रारब्धयुतके पुत्र न भयाथा२१तो तिसकी(प्रमदा)नामसे जो पत्नी किसीशूद्रमें आसक्त चितथी तिस करके सुन्दर मुहूर्त में यह जनागया था तो तिसे जार से जन्मा अर्थात् पर पुरुपसेभया किसीनेभी नहींजाना २२ सोही विसेविन दोनोंने जितने जितने राज्य के चिह्न थे सो सारेदिये-सोकिभंडार सहित साराराज्य तिसेसौंप करके २३ मंत्रिस्थान में स्थितभये वे पहले की नाईंभये अरुसो दुर्द्धर्पका सुत राज्यको पाकरके लक्ष्मीसे मदवालाहोगया २४ सोकि स्त्रीमास मदिरामें आसक्त मत्तहाथीके जैसा आलसी नित्यखोटे आचारमें रत नीतिशास्त्रके मार्गसे पराङ्मुखभया२५ जोधनवालोंकासबधनखोशतिन्हेंनिकालताभया अरु शीघ्रही ब्राह्मणोंका अरु सज्जनोंका अपमान कर्त्ताभया २६ अरु तिनकीनित्यवृत्तिछुड़ाकर विनसबोंकोबाहरकरदिये जो तिनमंत्रियो नेनीति सिखाई तो तिनके वचनको न माना २७ जो करुणायुक्त मंत्री बार २ विसे शिक्षादेतेभये तोक्रोधभया तिन्हें बेड़ियों से बांधताभया२८ तो वे मापतिसे दुर्द्धर्पसुतको शिक्षादेनेलगे कि जिनके प्रसादसे तैने निष्कंटक राज्य पायाहै २६ हे खोटे विन साधुओंको तू विशेप निग्रह अर्थात् कैदकेसे करताहै तो वो तिनके वचनका निरादर करके जैसे भूखमरा अन्न त्याग देवै सो सकलोंसे बावे तिन्हेंकाराघर अर्थात् कैदखाने में रखताभया अरु एक(दुष्टबुद्धि)नामसे अत्यन्त दुष्टविसका सखाभया निरंतर माना ३० । ३१ तो विसनेतिसेही घोड़ाहाथी सुवर्णदे क्रूर मंत्रीबनाया अरु विसेरत्न अरु दिव्य वस्त्र अरु कोमल रोम वाले बिछौनेदिये ३२ अरु अनगिनतही

दास दासीदिये बहुतसे अन्नपान अरु जो कोई इसके कहेको न
न करेगा तो मैं बल से तिसका शिर काट डालूंगा ३३ ऐसे सब
लोगो में निज आज्ञाजनाकर साम्व निज भीतरकेमहल में आता
भया ३४ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड में बालचरित्र वर्णन
में सत्ताईसवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

राक्षस के पूर्व जन्मका वर्णनहै ॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि सो राजकाज करतातो श्रेष्ठस्त्रियोंको आप
भोगता सो कि वो निजराज्यभरमें जिस पतिवाली वा विधवा सु-
न्दरीकोसुनता १ तो पुकारते अरु रोते जनोके पाससेभी तिनेबलसे
बुलवालेता अरु न विषय लम्पट कुकजाति भेदकोमानताथा २ जो
ऊंचेकुचोवालीनारी तिसकेदृष्टिगोचरभई तिसेही ये कामी आलिंगन
करता चूमता अरु तिसे भोगता भी था अर्थात् अन्यत वराथा ३
अरु परायेधनको खोसता अरु स्त्रियोको भी बलसे छीनलेता अरु
वो तैसाहो मन्त्री दुष्ट बुद्धिमार्गमें परायण ४ ऐसेहो वे खोटे आचार
मे रत दोनो न तो बेटीको न माको भोगने वर्जते अरु भन्नीकोभी
निर्दयी अर्थात् इन्होंसेभी जिन्हें भोगकरनेको वर्जनानथो ५ अरु
न वे ब्रह्महत्याकोमानते अरु न स्त्री बालकोके वधको कुछसमझते
ऐसेवे पापके आचारवाले पापोंके लदे पहाड शिरसे ६ वे दोनो
दुष्टबुद्धिवाले राजा अरु मन्त्रीभये जो अत्यंत खोटे जिनके घरकोई
ब्राह्मण वा यतिभी भिक्षा को न जाता था ७ अरु राज्यभर में न
कोई तिसका अरु तिसमन्त्रीका नाम लेताथा सो एकदिन वे दोनों
शिकारखेलनेको गहन वनमें चलेगयेथे ८ तो मृगयूथ अरुपक्षियूथ
बहुतसेही हततेभये तिनकोनगरमें पहुंचवाकर आपघोडेपैसवार ९
मार्गमे विनायकजी के भारी स्थानको देखतेभये जिसमें विनायक
जीकी शुभपुरानी मूर्त्ति विद्यमानथी १० वो रामजीके पिता दश-
रथकरके स्थापितकीगईथी जो दशरथपुत्रकेलिये तपकरताथा जब

भक्तिसे देवदेव विनायकजी साक्षात् कियेगयेथे ११ दशाक्षरमंत्रसे बहुतदिन ध्याते दशरथ करके तो तिसको शीघ्रही वर देकर सब मनवाञ्छितभी देतेभयेथे १२ तब तिसने वशिष्ठजीकेहाथसे यहदृढ़ मूर्त्ति स्थापित करवाई थी तबवशिष्ठजी करकेही इसका (वरदवि॰नायकजी) ऐसानाम कियागयाथा १३ ऐसे वशिष्ठजीके वाक्यकरके वो स्थान पृथ्वीपर प्रख्यात भया सो इस राजाकरके गणेशजी के भजनेमे अरु स्मरणमे पूजनसे (रामचन्द्र) (लक्ष्मण) (भरत) जो (शत्रुघ्न)सहित अर्थात्चारोंभाई लोकोंमे विख्यातभये जोसर्वज्ञ अरु सब शूरवीरोंके सम्मत अर्थात् सबसे सबप्रकार करके मानेगये थे चारोभये १४।१५ ऐसेराजासेबनाये महारमणीय मंदिरको देखकर राजाभी अश्वपरसे उतरे अरु पूजाकरतेभये १६ पत्र पुष्पोसे पूज अरु तिनसर्वपापहारी विभुविनायकजीको प्रणामकरतेभये अरु इन विभुजीकी प्रदक्षिणाकरके क्षणमात्रमे तहांसे चलदिये १७तो दैव॰योगमे तिनका वोही तब महा दुःखहोगया ऐसे पाप आचारवाले वे दोनों राज्यका करमरगये १८ तो यमकेदूतोंकरके वे फांसीसेबांध यमराजकेसमीप पहुंचायेगये तिसने चित्रगुप्तको बुलाकर तिनका शुभ अशुभकर्मपूछा १९ तिसने कहा कि हेसूर्य्यसुत यम इनके तो पुण्य का लेशभी नहींहै सो कि इनके तो पापोंकी गिनती भी नहीं तो वो दूतोंसेयहबोला कि २०इन्हेंबारंबार अरु लोहकेदंडसे मारपटको अरु दशसहस्र वर्षतक इनको वीचिस्थक कुण्ड अर्थात् महा घोर नरकमेंडालो २१ अरु ऐसेही एक२ कुण्डमें डाल२ इन्हें पापसमूह भुगताकर अरु मृत्युलोकमे भी फिर नीचयोनिमे दोनोंकोडालो२२ एक इनके पुण्यका भी लेशहैसो कर्त्तव्यहैसो कि किसी अर्थात् शि॰कारखेलनेके भी प्रसंग से इनकरके गजाननजी देखे अरु पूजेगये हैं २३ तिसीपुण्यमें वे गजाननजी इनका तहांही उद्धारकरेंगे ऐसे तिस चित्रगुप्तका वचन सुनके वे तिन दूतों करकेबांधे अरु दृढ़बांधे अरु पीटेगये २४ अरु फिर (कुम्भीपाक) अरु (शोणितोद) अरु (रौरव) नरकमे गेरेगये अरु कालकूटमें भी क्रमसे सौ२वर्षतक२५

अरु तामिस्त्र अन्धतामिस्त्र में अरु राध रुधिरकुण्ड में अरु कुत्सित कीचमें डालेगये फिर कांटोंमें तिनसे क्षयभया अग जिनका ऐसे वे दोनोंफिर तपीवालू में तपायेगये २६ अरु फिर तहांकीडोंसे काटे गये सो कि सुईसेनुखवाले कीडोंकरके वे दोनों खायेगये फिर तो वे दोनो असिपत्र अर्थात् जिसके वृक्षोंके तरवार सरीखेपत्ते ऐसेघोर बनमें फेंकेगये २७ यहां शस्त्रोंकेघात से अर्थात् पडनेसे पापियोंका शरीर भिन्नहोजाता अर्थात् कटजाताहे फिर तो वे तपाई शिलपर घनकेघातसे पीसेगये २८ ऐसे वे बहुत दिनतक इकईस नरकोंको भोगतेरहे तिनका दुःख शेषजी से भी निःशेष करके कहा नहींजाता २९ ऐसेही कितने सहस्रबर्ष अनेकसेदुःख भोगके फिर वे निस्तीर्णभोग अर्थात् पाप भुगतके कुछपाप शेषकरके भूतल में आये ३० तो एक तो कौवेकीयोनि में उत्पन्नभया अरु एकउल्लू होता भया फिरएकमेंडक भया अरु दूसरा गिरगट ३१ फिर एकसर्प अरु दूसरा वृश्चिक तहांभी पापही किया कि अनेक लोगोंको डसते रहे ३२ फिर वे कुत्ते बिलावकी योनिमेंभये अरु फिर नौला शूरहुये फिरभेडिये गीदड की योनिमें जन्मे अरु फिर घोड़ागधा होगये ३३ फिर ऊंट हाथीभये फिर मगर महामच्छभये फिर व्याघ्र मृगभये फिर बैल भैंसाबने ३४ ऐसेही वे नानायोनियोंमें जन्मे फिर चाण्डाल अरु कीटकबने फिर अन्तमें ये राक्षस अरु भील कीयोनिमें प्राप्त भये ३५ सो कि पिंगाक्ष तो (दुर्बुद्धि) इसनामसे भूतलमें विख्यात भया सो कि जन्मसेकिये पापका बहुत दोषपन कहाजाता है ३६ जो वे राजामंत्री दोनो पापरत भयेथे तो तिनका शिकार खेलतों का एकपुण्य भी भया ३७ सो कि विनायकजी को नमस्कार अरु दर्शन परिक्रमा अरु फल पुष्पादिकों से पुजनभया तो गजाननजी प्रसन्न भये ३८ सो तिनसे तिस जन्मका सचितनाम इकट्ठाकिया वो महाभारी पुण्यभया अरु जब वो राक्षस भीमको भक्षण करनेके लियेआया ३९ तब वो शमीकेवृक्षपै चढगया तो तिसकेपत्र श्रीगणेश जीके मस्तकपर पड़े तो वे इनदोनोंपर प्रसन्न होगये ४० तो बिभु

विनायकजी ने इन्हे दिव्यदेह देकरके स्वर्गलोक में पहुंचायेहै ऐसे मैंने तुमको तिनका पूर्वजन्म कर्म्मकहा है ४१ सो कि गजाननजी शमीपत्रके पूजनसेही प्रसन्न होगये अरु जैसे तिन वामनजी करके ये स्थापितकियेगये सो भी मैं ४२ हे मुनिव्यास सब वर्णनकरूंगा अरु तिनसेकिये अनुष्ठानको भी कहूंगा जैसे इन वामनजी पर गणनाथजी प्रसन्नभये वरदायक भये सो तुम सबवृत्तान्त श्रवणकरो ४३॥इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमे बालचरित्रवर्णनमेभीम अरु राक्षसकापूर्वजन्मवर्णन इसनामसे अट्ठाईसवांअध्यायभयाहै २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

कश्यपजी की स्त्री दितिकेगर्भ से हिरण्याक्ष अरु हिरण्यकश्यप का जन्म होना वर्णन किया है॥

श्रीब्रह्मा जी बोले कि हमकरके कश्यपजी आज्ञा कियेगये कि नानाविधिकी सृष्टिरचो सो विनययुत-महाज्ञानवान् भूत भविष्य वर्त्तमान ज्ञाता १ जो अत्यत दीप्तअग्नि सूर्य्यकेसे तेजवाले सुतपोनिधान सो रचनशक्ति प्राप्ति विषयमें सुमहाभारी तपकरते भये २ सो कि षडक्षर मन्त्र से देवगजाननजी को ध्याकर तो दिव्य सहस्र वर्षबीतेसो देव गणेशजी वरदायकभये ३वे इनको सारे मनवांछित नानाप्रकार के शुभ वरदान देते भये तब तो इन्होंने मनमे ज्ञोर२ लाघवसे भी विचारा ४ सो२ तिनवरदान के प्रभावसे आगे२ ही देखा सो कि चौदह पत्नियो में अनेकप्रकार करके ऋतुदान देनेसे अर्थात् इनकश्यपजी के तिन पत्नियोंमें बहुत सन्तानेभई ५ सो कि वे निजतेजसे सबस्थिर चरजगत् उत्पन्न करतेभये तिनमें श्रेष्ठ दो पत्नीयां सो (दिति) अरु (अदिति) इसनामसे ६ सो अदितिजी ने विष्णु प्रसन्नताके लिये तप करती भई दशसहस्र वर्षतक तब भगवान् प्रसन्नभये ७ सोही वे पृथ्वीके पालनेके लिये अरु जगत् की स्थापनाकेलिये अरु इन्द्र आदि तिनकेपुत्रो की रक्षार्थ अरुदुष्टों के नाशकेलिये ८ तिसके तप से प्रसन्नभये भगवान् तिसके पुत्रपनेको

अरु तामिस्र अन्धतामिस्र में अरु राध रुधिरकुण्ड में अरु कुत्सित कीचमें डालेगये फिर कांटोंमें तिनसे क्षयभया अंग जिनका ऐसे वे दोनोंफिर तपीवालू में तपायेगये २६ अरु फिर तहाकीडोंसे काटे गये सो कि सुईसेनुखवाले कीडोकरके वे दोनो खायेगये फिर तो वे दोनो असिपत्र अर्थात् जिसके वृक्षोंके तरवार सरीखेपत्ते ऐसेघोर बनमें फेंकेगये २७ यहां शस्त्रोंकेघात से अर्थात् पडनेसे पापियोंका शरीर भिन्नहोजाता अर्थात् कटजाताहे फिर तो वे तपाई शिलपर घनकेघातसे पीसेगये २८ ऐसे वे बहुत दिनतक इकईस नरकोंको भोगतेरहे तिनका दुःख शेषजी से भी निःशेष करके कहा नहींजाता २९ ऐसेही कितने सहस्रवर्ष अनेकसेदुःख भोगके फिर वे निस्तीर्णभोग अर्थात् पाप भुगतके कुछपाप शेषकरके भूतल में आये ३० तो एक तो कौवेकीयोनि में उत्पन्नभया अरु एकउल्लू होता भया फिरएकमेंडक भया अरु दूसरा गिरगट ३१ फिर एकसर्प अरु दूसरा वृश्चिक तहाभी पापही किया कि अनेक लोगोंको डसते रहे ३२ फिर वे कुत्ते विलावकी योनिमेंभये अरु फिर नौला शूरहुये फिरभेड़िये गीदड की योनिमें जन्मे अरु फिर घोडागधा होगये ३३ फिर ऊंट हाथीभये फिर मगर महामच्छभये फिर व्याघ्र मृगभये फिर बैल भैसाबने ३४ ऐसेही वे नानायोनियोंमें जन्मे फिर चाण्डाल अरु कीटकबने फिर अन्तमें ये राक्षस अरु भील योनिमें प्राप्त भये ३५ सो कि पिगाक्ष तो (दुर्बुद्धि) इसनामसे भूतलमें विख्यात भया सो कि जन्मसेकिये पापका बहुत दोषपन कहाजाता है ३६ जो वे राजामंत्री दोनों पापरत भयेथे तो तिनका शिकार खेलतेका एकपुण्य भी भया ३७ सो कि विनायकजी को नमस्कार अरु दर्शन परिक्रमा अरु फल पुष्पादिको से पूजनभया तो गजाननजी प्रसन्न भये ३८ सो तिनसे तिस जन्मका सचितनाम इकट्ठाकिया वो महाभारी पुण्यभया अरु जब वो राक्षस भीमको भक्षण करनेके लियेआया ३९ तब वो शमीकेवृक्षपै चढ़गया तो तिसकेपत्र श्रीगणेशजीके मस्तकपर पड़े तो वे इनदोनोंपर प्रसन्न होगये ४० तो विभु

के साधन अर्थात् नापने आदिकर्म आदिमेंलेकरकेसारे यज्ञकुण्डो-को बनातेभये ११ अरु यज्ञसामग्री समूहोंको करते करातेभये अरु पृथ्वी का शोधन पहिलेकर वेदि अरु मंडपकरते भये १२ अरुफिर स्वस्तिवाचन पूर्वक नांदीश्राद्ध करके अरु मातृकोंका पूजन करके आदरसेती वे ब्राह्मण नानाविधि के मन्त्रोंकरके सारे मंडल देवों का आवाहन करते भये १३ तो वे श्वेत वस्त्रों से सजे दोनों राजा रानी शोभित होतेभये अरु जो मन्त्रिराज सखा पुरवाओंकेसमूहों से संयुक्त थे १४ अरु सन्मान कीगईं स्त्रियें तिस महाउत्सव को झरोखांकरके देखतीभईं अरु वे अन्वारब्ध अर्थात् वरण भये द्विज कर्म के पूर्व अंगोंको करचुके १५ तो वेदके अंगके वचनके अनुसार सेती यज्ञपशुको आलम्भन करते भये अरु तिस २ देवता के अर्थ तिसतिस ही मन्त्रकरके अग्निमें विधिसे होमतेभये १६ अरु तिस यज्ञके महामंडपमें तीनविधिके अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये द्विज संज्ञक जन पूजितभये आते जातेरहे जो महामंडप चारद्वारवाला जो सबोंसे नहीं निवाराजावे अर्थात् अत्यन्त सुन्दर था तो तिसमें एकओर तो विद्वान् जन महावाक्यों करके विशेष से वाद अर्थात् शास्त्रार्थ कररहे अरु और ठौर अप्सरा नाचरहीं अरु कहीं२ वेद-पाठी पाठकररहे १७।१८ अरु जहांकहीं २ वैष्णव अरु शैव मृदंग ताल बाजोंसे गा रहे अरु कहीं२ स्वेच्छासेही ब्राह्मण षट्रसभो-जनकररहे १९ अरु कहीं २ नाना कथा कहरहे अरु रसिकजन श्रवणकररहे ऐसे तिसयज्ञ के सुन्दर विस्तारित भये अर्थात् फैले तब वशिष्ठआदि महर्षियें २० अग्निमें महाभारी बसोधारा अर्थात् मंत्र पढ़कर घृतकीधार छुटवाते भये अरु फिर उत्तर अंग समाप्त कर तिनदोनों राजा रानियोंको रथमें बैठाकरके २१ अरु अवभृथ नाम यज्ञान्तस्नान करनेको सारे लोगनिकले सोकि नानाविधि के बाजेगाजोंसे अरु श्रेष्ठ२बन्दीजनोंके गानोंकरके २२अरु अनेकरत्न समूहोंसे अरु अनेकसे धन वस्त्रोंसे अरु गऊ घोडे हाथी इनकरके अरु इच्छापूर्वक सुगन्धोंसे२३।२४ऐसेहोवे द्विज तिसके एकसे जन

तेल मसला सो तभी चूर्णहोगया सो कि वो तिन हरिकेही स्व-रूपको प्राप्त भया ३७॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में विरोचन का मोक्ष इसनामसे उन्तीसवा अध्याय भया है २९॥

तीसवां अध्याय॥

कश्यप घर श्रीवामन जीका अवतार होना वर्णनकिया है॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि वो राजावलि तो हरिभक्तपनेसे कभी भी दुःख न पाया अर्थात् सर्वदा सुखीभया जो वेद वेदाङ्ग ज्ञाता अरु प्राज्ञ अरु सब शास्त्रार्थ विशारद १ जो पराई निन्दा पराये द्रव्य से पीठदिये अर्थात् वर्जित अरु दानी सन्मानी यज्ञकर्ता जो मान-नीयों को परम आदर से माननेवाला २ अरु जो चलता कहता सोता खाता बैठता अरु ध्याता पीता नित्यही हरिका स्मरणकिया करता निश्चल चित्तवाली भक्ति से ३ वो एक समय शुक्रजी को बुलाय अरु यथाविधि पूज करके राजावलि तिन से नीति पूछता भया कि इन्द्रही अमरावती को भोगरहा है ४ सो निरंतर हमारा भ्रातृभाव रहे फिर हमारा विभाग क्योंनहीं रै हेप्राज्ञ भृगुजी इस मेरे संशयको आप निश्शेपतासे छेदनेकेलिये योग्यहोगे ५ शुक्रजी बोले कि हे महाभाग वलिराज इसीलिये तुम्हारे बड़ोनेभी देवोंके साथ निरन्तरही वैरकिया था पर वे नाशकोही प्राप्त कियेगये ६ सो तू विष्णुसहायवाले देवतों से नाना मायाके वलसेती वैरत्याग करसोसख्या श्रेष्ठयज्ञकर ७ वो तू तिनके पुण्यकेपराक्रमसेपूर्ण इन्द्र पदको प्राप्तहोगा वलिराज बोला कि हे नीतिशास्त्रमें कुशल शुक्र जी आपने श्रेष्ठ कहा ८ साम से अरु दानविधि के भेद से नीचा भेदहै सोभी पुण्यहीके वलसे सिद्धहोता है इससे पुण्यही निश्चित अर्थात् मुख्यहै ९ ब्रह्माजीबोले कि वो वलिऐसे निश्चयकरके वशिष्ठ आदि ऋषियों को बुलाताभया अरु भृगु आदि मुनियोंको भी पूज करके सुन्दर मुहूर्त में यज्ञारम्भ करता भया १० जो यज्ञ महासं-भारवाला अरु जो सबको परम आनन्दकरनेवाला तो वे पूर्वदिशा

के साधन अर्थात् नापने आदिकर्म आदिमेंलेकरकेसारे यज्ञकुण्डों-
को बनातेभये ११ अरु यज्ञसामग्री समूहोंको करते करातेभये अरु
पृथ्वी का शोधन पहिलेकर वेदि अरु मण्डपकरते भये १२ अरुफिर
स्वस्तिवाचन पूर्वक नांदीश्राद्ध करके अरु मातृकोंका पूजन करके
आदरसेती वे ब्राह्मण नानाविधि के मन्त्रोंकरके सारे मण्डल देवों
का आवाहन करते भये १३ तो वे श्वेत वस्त्रों से सजे दोनों राजा
रानी शोभित होतेभये अरु जो मन्त्रिराज सखा पुरवासीकेसमूहों
से संयुक्त थे १४ अरु सन्मान कीगईं स्त्रियें तिस महाउत्सव को
झरोखोंकरके देखतीभईं अरु वे अन्वारब्ध अर्थात् वरण भये द्विज
कर्म के पूर्व अंगोंको करचुके १५ तो वेदके अंगके वचनके अनुसार
सेती यज्ञपशुको आलम्भन करते भये अरु तिस २ देवता के अर्थ
तिसतिस ही मन्त्रकरके अग्निमें विधिसे होमतेभये १६ अरु तिस
यज्ञके महामण्डपमें तीनविधिके अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये द्विज
संज्ञक जन पूजितभये आते जातेरहे जो महामण्डप चारद्वारवाला
जो सबोंसे नहीं निचाराजावे अर्थात् अत्यन्त सुन्दर था तो तिसमें
एकओर तो विद्वान् जन महावाक्यों करके विशेष से वाद अर्थात्
शास्त्रार्थ कररहे अरु और ठौर अप्सरा नाचरहीं अरु कहीं२ वेद-
पाठी पाठकररहे १७।१८ अरु जहांकहीं २ वैष्णव अरु शैव मृदंग
ताल बाजोंसे गा रहे अरु कहीं२ स्वेच्छासेही ब्राह्मण षट्रसभो-
जनकररहे १९ अरु कहीं २ नाना कथा कहरहे अरु रसिकजन
श्रवणकररहे ऐसे तिसयज्ञ के सुन्दर विस्तारित भये अर्थात् फैले
तब वशिष्ठआदि महर्षियें २० अग्निमें महाभारी बसोधारा अर्थात्
मन्त्र पढ़कर घृतकीधार छुटवाते भये अरु फिर उत्तर अंग समाप्त
कर तिनदोनों राजा रानियोंको रथमें बैठाकरके २१ अरु अवभृथ
नाम यज्ञान्तस्नान करनेको सारे लोगनिकले सोकि नानाविधि के
बाजेगाजोंसे अरु श्रेष्ठ२बन्दीजनोंके गानोंकरके २२ अरु अनेकरत्न
समूहोंसे अरु अनेकसे धन वस्त्रोंसे अरु गऊ घोड़े हाथी इनकरके
अरु इच्छापूर्वक सुगन्धोंसे२३।२४ऐसेहीवे द्विज तिसके एकसे ऊ-

सौ अर्थात् निन्यानवे यज्ञ पूर्णकराचुके थे तो सौवें यज्ञका आरंभ भये इन्द्र परमचिन्ताकोप्राप्तभया २५ फिरतो वो इन्द्र निजस्थान ध्वसकी शकाकरके क्षीरसमुद्र में स्थित शेष शय्यापर सोये नारायणके शरण गया २६ जो भगवान् मेरेमे पैरदवाये अरु देवतोंसे सेवाकिये अरु नारदजीसेगायेगये जो आदरसे वीणाहाथलिये २७ अरु तुम्बुरु आदि और २ अप्सरा समूहोसे किम्पुरुषो से सेवित हरिकोदेख ये हरिइन्द्र निजइष्ट सिद्धिकेलिये स्तुतिकरताभया २८ सो कि भक्ति भावसे आदरसहित हाथोकासम्पुटकर अर्थात् हाथ वाधके इन्द्रवोला हे अनन्तशक्ते भगवन् आपको नमस्कार है अरु हे ससार योने अर्थात् जगत् के कारण आपको नमस्कार है अरु विश्वकेभर्त्ता अर्थात् पोषक आपको नमस्कारहै अरु विश्व के कर्त्ता आपको नमस्कारहै अरु हेदैत्योकेहंता आपको नमस्कारहै हेअनेक स्वरूप आपको नमस्कारहै अरु हेअननुरागिन् अर्थदाता आपको नमस्कारहोवै २९ ब्रह्माजी बोले कि इन्द्र ने ऐसे स्तुतिकरके इन भगवान्जीको वलिका कार्य्यकहा कि विरोचन का पुत्र वलि जो तीनभुवन में विख्यात ३० सो सौगुणवाले यज्ञोसे मेर स्थान को खोशलेवैगा सो जितने तिसकी वाणीभई तो भगवान्ने सवदृत्तांत जाना तो भगवान् इन्द्रको तिसके संकट को चिन्ताकरके वोले कि मेरा वलिराज भक्तहै जो तपस्वी अरु जितेन्द्रिय ३१।३२ सो तप का फल विसकरके भी वेदवाक्य के अनुसार भोगना चाहिये शुभ वा अशुभकियाकर्म वृथानहींहोताहै ३३ तुम्हाराभीकार्य साधेंगा हे हरे इद्रमन स्थिरकरो फिर तो वे प्रभु अदितीजीके उदरमें गर्भपनेको प्राप्तभये अर्थात् वामनजी गर्भमे आये ३४ तो वो अदिती नवेमहीनेमे शुभपुत्र उत्पन्न करतीभई तो तिसकीकांतिसे वे दीपक जलतेभी निष्कांति होगये ३५ तो वुद्धिमान् कश्यपजी ठढे जल से नहाकर स्वस्ति वाचन पहिले करके यथाविधि जातकर्म्म सस्कार करतेभये ३६ अरु मातृपूजन पूर्व में जिसके ऐसा पितरोंका महायज्ञ अर्थात् नांदीमुख करतेभये अरु फिर वालकको घृतशहद

कर तिसका मुख देखते भये ३७ जो वामन भारीशिर वाले छोटे चरण जिनके महा शरीरी अरु दिव्य ज्ञानसहित अरु दिव्यदेहचतुर्भुज ३८ अरु जो नानाप्रकार के अलंकार सहित ऐसे साक्षात् विष्णुजीको जानके प्रणामकिया अरु प्रसन्न मनभये बोले किमेरा तप कुल अरु नेत्र आजधन्य है ३९ अरु ज्ञानतथा आश्रमभी धन्य हैं अरु पृथ्वी स्वर्ग पाताल भी धन्यहैं सो कि ये सब सच्चिदानन्द स्वरूप आपके दर्शनसे धन्यभये हैं ४० ब्रह्मावोले कि ऐसे मुनि वचनसुन वामनजी बोलेकि अदिती के तपसे प्रसन्नभया मैं भारी भूमिभार हरनेको अरु बडाकार्य्य साधने को मैं पुत्रपने को प्राप्त भयाहूं ऐसेकह बालक होगये अरु रोते स्तनपीने लगे ४१।४२ फिर तो मुनिजीने तिन वामनजीका नामकरण निष्कामन अर्थात् नाम निकासना ये संस्कार अरु अन्नप्राशन ये संस्कारकिया अरु तीसरे वर्ष चूडाकर्म अर्थात् क्षौर अरु पांचवें वर्ष तिनवामनजीका यज्ञोपवीत करतेभये ४३ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तर खण्डमें वामनावतार कथन इसनाम से तीसवां अध्याय समाप्त भया ॥ ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

वामनजी करके गणेशजीका आराधन करना वर्णन कियाहै ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि तबतो मुनि तिन वामन जीको सांगोपांग चारो वेद पढ़ाये तो एकदिन तिनतात कश्यपजी से वामनजी ये पूछतेभये १ कि किस उपायसे देवों को निजपद प्राप्ति अरु भूमि भारदूरहोवे सोमुझे यथावत् कहनेको आपहीयोग्यहो सो कहिये २ कश्यपजी बोले कि हे मेरेपुत्र मैं तुझे सिद्धिदायक मन्त्र का उपदेश करूंगा सोकि विघ्नकेईश गणेशजी का छ अक्षरका मन्त्रतुझेबताऊंगा तिन जगत्के स्थिति लयकारी विघ्नेश गणेशजी के प्रसन्न भये जो अनेक ब्रह्मादिक विधान अर्थात् जगत् रचना के मुख्य कारण अरु सबके कारण केभी कर्ता ४ तिनके प्रसन्नभये सबकाम आप सिद्ध होते हैं सो तिनके अर्थ तुम प्रसन्नकरो ब्रह्माबोले ऐसे कह

स्वरूपही देखपड़तेहैं २७ तो तिन परम पुरुष वामन जी आतेदेख बलि शीघ्रही उठकर आप कौन है अरु कहांसे आगमन भया ऐसे नमस्कार कर पूछता भया २८ अरु हे विभो तुम क्या चाहते हो कहिये अरु तुम्हारे मातापिता कौनहैं अरु आपकी बसती कहांहै तबतो वे वामनजी बोले २९ कि हे राजन् मुझको मेरे मा वापयाद नहीं हैं आपमुझे अनाथ दुर्बलही जानो अरु मेरी तीनलोकमेंबसती है अर्थात्भ्रमताही रहताहूं अब मैं तीनपैरो सेनपी भूमि मांगताहूं ३० अपनी मर्यादाकी पर्णशाला बनानेको सो शक्ति है तो दीजिये ब्रह्मा बोले ऐसी कृपा युक्त तिनमुनि वामनजी का वचन सुन अरु हृदयमें विचारकर भूमिदेनेको तयारभया तो तिम बलिसे शुक्र जी बोले कि ये ब्राह्मणनहींहै किंतु कपटके रूपमें स्थित होरहा हे रिहै ३१।३२सोयेतीन पेडके मिससे तेरे त्रिभुवनको हर लेवेगा सो इसे तुम कुछभी मतदेवो मैं ये तुममें सत्य कहता हूं ३३ तो महा दैत्य बलि तिमसे बोला कि हे मूर्ख क्या वचन बकता है जो भगवान् ही बिमुख होचलेजावेंगे तो मेरे सारे सुकृतको लेजावेंगे ३४ इस-से अधिक और कौन पात्र मिलैगा तिन्हें दिया अनन्त फल दायकहै ऐसेतिस शुक्रको कह दैत्य वर्य बलि तिन वामनजी को बोला ३५ कि हे विप्र मैंने भूमिदई तो संकल्पकी ये ऐसे राजाको कह वामन जीही संकल्प करानेको तयार भये ३६ तभी शुक्रजी और देखे जलके छेदको रोकबैठे तो वामनजीने भी तिस जल पात्रमें सलाई चलाई तो फूटे नेत्र अर्थात काने हो भृगु जी बाहर आये ३७ फिर तो वामनजी के हस्त तल में जलदिया त्यों हीं हर्ष से भरे वामनजी श्री गणेशजी को ध्यानकर बधते भये ३८ तो मस्तक से तो तिन्हों ने स्वर्गलोक को आक्रमित किया अर्थात् शिर तो जिनका ऊपरके लोकोंमें पहुंचा अरु एक पैर करके धरती आकाश दबाये अरु दूसरेसे पातालनापे अरु तीसरा तिसके मस्तकपरधरा ३९ तब तो वामनजी ने बलिसे कहा कि तू धरतीतल में चलाजाव तो तुमबिना मैं कहां कैसेजाऊं बलिने तिनसे ऐसेकहा ४० तो तिसका

ऐसा वचनसुन वामनजी फिर बलिको बोले कि तेरेपर अनुग्रह से तहांभी तुमको हमारा निकटपन बनारहेगा अर्थात् हमतुम्हारेपास रहेंगे ४१ सो कि इन्द्र मेरेशरीरगतयाथा सोमुझको तिसकाकार्यप्यारा है तो मुझनक्त तुम्हारा भी पिछाडी तुम्हारा भी प्रियकार्यहोगा ४२ सो कि इसके इन्द्रपद के पूर्णभये मैंवोस्थान तुझकोही देऊंगा फिर तो ब्रह्मादिकदेवता विभुवामनजीको स्तुतिकरतेभये ४३ अरु पुष्प वर्षाछोडी अरु मुगोने बाजेबजाये अरु विनसबोने पूजाकरी अरु कई गाते नाचतेभये ४४ फिर तो अनन्त बलवाले वामनजी अन्तर्द्धान भये अरु पूर्ववत् हर्षसहित सबदेवता निज२स्थान को पधारतेभये ४५ ब्रह्मा बोले ऐसे तिन वामनजी करके स्थापनकरीमूर्त्ति जो त्रिभुवनमें विख्यात सो कि संम्पूर्णमनुष्योंको कामदेनेवाली गजाननजीकी मूर्त्ति ४६ इसप्रकार हमने तुमको प्रसंगभयेसेभी बलिका वृत्तान्तकहा अरुवामनजीका वामनपन अर्थात् सुभगछोटापन अरु गणेशजीकी महिमाकही ४७ जो तिसमहात्माकरके (अदोपताम) नगरमे स्थापनकिये जो गणेशजी प्रसिद्धदशभुजहै देवताकेदक्षिण भागमें जो गणेशजी अरु तिन गणेशजी का शमीसे प्यारपन अब वर्णनकरूंगा ४८।४६ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंबालचरित्रमें बालअवस्थाकहनाइसनामसेइकतीसवा अध्यायसमाप्तहुआ ३१ ॥

बत्तीसवा अध्याय ॥

शमीके माहात्म्य में राजा प्रियव्रत का सम्वाद वर्णन है ॥

श्रीब्रह्मा जी बोले कि हे ब्रह्मन् तुम इस प्राचीन इतिहास को सावधान होकर श्रवणकरो जो आप गजानन जी राजा प्रियव्रत को कहाहै १ श्री गजाननजी बोले कि हेराजन् तुम शमीपत्र महिमा को सुनो जो महाफल दायक है सोन तो यज्ञोंसे अरु न दानों से अरु सौकों नियमोंसे भी २ न जपोंसे न पूजनोंसे तैसीमेरी प्रसन्नता होती है अरु न कमलों करके न और फूलों करके होतीहै जैसे शमीपत्रों से होव ३ जोकि शमी ऐसा कहनेसेही वाणीमे भया

है ३३ एकही वे परम आनन्दसे पूर्ण परमेश्वर निजइच्छासे पचप्रकार भयेहैं लोकके अनुग्रहके कारणसेती ३४ अरु जैसे एकहीपुरुष अर्थात् जीवात्मा पुत्र नामा इननामों करके अनेक कहाताहै तो वो षोडश उपचारोंसे तिनहीको पूजतीभई ३५ सो कि दूर्वापुष्पोंमें अरु दक्षिणा नमस्कार ऐसेर अनेक प्रकारों करके अरु फिर कर सम्पुट करकर जगत् के ईश्वर गणेशजी की स्तुति करतीभई ३६ कीर्ति ने कहा कि आपही जगत्के आधारहो अरु तुम्हीं सबके कारणहो अरु तुम्हीं ब्रह्मा, विष्णु हो तुम्हीं महा सूर्य्यहो ३७ अरु चन्द्र, यम, कुबेर वरुण, वायु, अरु आपही समुद्र नदिये अरु वेल फूलोंके समूहभी तुम्हींहो सुख, दुःख, अरु तिनके कारण तुम्हीं नाशक अरु छुड़ाने वाले हो ३८ अरु वाञ्छित अर्थात् कार्य्य में नित्यही विघ्न कारक भी तुम्हीं हो अरु महा विघ्नकारी अरु विराट् आपही हो अरु पुत्रलक्ष्मी दाता तुम्हीं हो अरु सर्व काम दोग्धा अर्थात् पूर्ण करने वाले आपही हो ३९ अरु तुम्हीं चन्द्रमा के रूप करके सब जगत् को प्रसन्न करते हो अरु तुम्हीं भूत, भविष्य, वर्त्तमानात्मक आपही राजा हो ४० अरु सब प्राणियों के शरण योग्य अरु शत्रुवोंके अत्यंत नाशक आपही हो अरु तुम्हीं कर्म्म कांडमें परायण यज्ञकर्त्ता अरु ज्ञान कांडमें परायणहो ४१ अरु तुम्हीं संसारके उत्पादक तुम्हीं विश्वके संहारकहो तुम्हीं प्रकृति अरु तुम्हीं निर्गुण महान् पुरुषहो ४२ अरु सर्व वेत्ता सर्वनिधाने सर्वसाक्षी अरु सर्व गामी अरु सर्वव्यापक सर्वविष्णुस्वरूप अरु सर्वसत्यमय प्रभु ४३ सारीमाया वाले अरु सर्वमंत्र तंत्रविधिके जाननेवालेभी हे गणेशजी आपही हो ४४॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्डमें बालचरित्र कीर्त्तिकेतपकावर्णनइसनामसे बत्तीसवां अध्याय समाप्त हुआहै ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

कीर्त्ति का कार्य्य सिद्धहोना वर्णन है॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि हे कीर्त्ति ऐसे नित्य विन विनायकजीको

मूजके प्रार्थना क्रिया करती एकदिन तिसकी सहेलियें दूर्वा लानेको गई १ तो तिनको ज्येष्ठमास होनेसे सुन्दर दूर्वांकुर कहीं भी दूर्वांकुर नहींपाये तो बहुतसे दूर्वांकुर लेकर तिसके निकट आई २ जो अत्यंत थकीभई तो दूर्वाका न मिलना कहातो तिन बहुत मैं शमीपत्रोंसेही सर्वोपचार पूर्वक तिन्हें पूजती भई ३ पर नियममें स्थित दूर्वाके बिना निराहारही रही तो तिस करके शमीपत्र समर्पण करनेसे तिस विनायकजीकी परम तृप्तिहोती भई ४ फिर वो तिन्हके आगेसो गई तो महाआश्चर्य्य स्वप्न देखतीभई सो कि वो हीमूर्त्ति तिसे यह वचन बोली कि हे सुभ्रूकीर्त्ति शमीपत्रोंमेप्रसन्न भई मैं तुझको वरदेतीहूं जब वो कीर्त्ति कुछ न बोली तो तिसे वो फिर कहनेलगी ६ मूर्त्तिबोली कि तेरा कांतवशीहोवेगा अरु अनेक भोग मिलेंगे अरु तेरी भक्ति में परायण एक महाबली तेरे पुत्र होवेगा ७ सोतू तिसका सुन्दर (क्षिप्रप्रसादन) ऐसा नाम रखना फिर चौथेवर्ष इसको त्रिपसे शीघ्र मृत्यु होवेगी ८ फिर तिसे (गृत्समद) ब्राह्मण आकर जिवावेगा फिर चिरजीवि राज्य करता धर्म्म शीलवाला होवेगा ९ अरु मेरे इसस्तोत्र कारक स्तोत्र को जो कोई पढ़ेगा तो तिसके राजाभी वश होवेगा फिर और साधारण जन तो क्या १० अरु पुत्रवाला धनसे सम्पन्न अरु वेदवेदाङ्ग पारगामी होगा अरु तिसकी बुद्धिवर्धे अरु दृढ़मति होवे ११ अरु जो इसे त्रिकाल पढ़े सो सारे चाहे अर्थो को प्राप्त होवे तिसके दृढ़ मेरी भक्तिहो अरु अंत में मोक्ष होवेगी १२ ऐसे तिसे स्वप्न में वर देकर देवजी तो क्षणसे अन्तर्द्धान भये जागी तो वो अश्रु नेत्र भरी मनमें दुःखितभई बोली १३ ये विनायकजीने मुझपर भारी कृपा करीहै मेरे यह बड़ा अनुग्रहभया जो आपहीसे दर्शन दियाहै १४ देव विनायकजी करके परम आदरसे तो मैं आजतिन सर्व भूतानुकंपावाले देवजी करके पवित्रकी गईहूं १५ यहां परम निर्दिष्ट अरु तपकाभी येही महाफलहै अरुयेही परमलाभभया जो ये ...
१६ ब्रह्मा जी बोले कि अब तो परम आनन्दभरी वो प्रात.

के दूतोंसे छोड़ागया तो मैं भी तिसजान नित्य शमीसे पूजन किया करूंगी ५० जिस करके खोटे महाकुर चमकेगया गणनाथजी के गणोंसे मारी रणागया मेंहट वे गये हैं ५१ जो कि मेरे बालक को जिवाकर निजधाम को गजाननजी पै गये हैं जिस पुण्य के मेरा बालकविषवाधासे छुटाजोता शीघ्रही उठखड़ाभया जैसेसोताभया जना जागउठे इसो स मैं शमीसेभये महिमा को पूछताहूं ५२।५३ श्रीब्रह्माजी बोलेकि ऐसे तिसका वचनसुन गृत्समदजी तिसे बोले कि जिनकेनाम के उच्चारण किये करोड़ विघ्नोंका नाशहोवे ५४ तिन की महिमा को संपूर्णता से भूमि मंकोन कहसके सो यथामति सं क्षेपसेही मैं महिमा वर्णन करूंगा ५५ सोकि व्रतदान तपों करके अरु नानातीर्थ सेवनो से अरु पंचाग्नि के साधनो से अरु हेमंत ऋतुमें जल निवासों से ५६ तिस फल को प्राप्त न होवे जो शमी पूजनेसे होताहै अरु प्रातःकाल व त्रिकाल में ईनित्य शमीकाप्रमाण करे ५७ अरु बन्दनाकरे पूजनकरे भक्तिभाव सहित देव गजानन जी को ध्याकर तो विनायकजी तिसपर प्रसन्नहोवें ५८ तो वांछित अर्थदेवें अरु अन्त में मोक्षदें इसमें संशयनहीं अरु यहांइसप्राचीन इतिहास को भी कहतेहैं ५९ जिसमें नारद महात्मा का अरु इन्द्र का संवाद है सो मैं तुमसे वर्णन करता हूं तु सावधान भई श्रवण कर ६० इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड में मरे बालको मुनिजी करके जिवाना इसनाम से तेतीसवां अध्याय समाप्त भया ॥३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

शमी के माहात्म्यमें और्व द्विजका उपाख्यान वर्णित है॥

कीर्ति ने पूछाकि हेब्रह्मन् तुम निःशेष से नारदजीसे भये सम्वाद को कहो जिसे मैं सुनकर संशयतज अमृत कीसी नाईं तृप्तहोऊं १ ब्रह्माजी बोले कि वे मुनि तिसका ऐसा वचन सुन तिस नारद जी इन्द्र से भये इतिहास को कहने लगे २ मुनिजी बोले कि हे शुभ कीर्ति कभी निजेच्छासे विचरते दिव्य दर्शन नारदजी जो त्रिलोकी

भगण में परायण मो इन्द्र के पास आगये तो इन्द्र तिन्हें पूजकर औरव द्विजका वृत्तांत पूछताभया फिर जो नारदजीने इन्द्र से कहा सोही मैं तुमसे कहता हूं हे महामुने व्यास तुम तिसे सुनो ४ नारदजी बोले कि मालवदेश में एक औरव नामसे द्विज होताभया जो वेदवेदांग वेत्ता साक्षात् सूर्यही पर अस्त के विना अर्थात् वो सदा उदित प्रकाशमान रहता ५ जो मनसेही सचिरगचर जगत्को रचने पालने संहारने को समर्थ अरु जो नित्य निजधर्म पत्नी में परायण अरु समान हैं लोह पाषाण सुवर्ण जिसके ६ जो मेधावान् तपसे संयुक्त श्रेष्ठ जैसे दूसरा अग्नि अरु सुमेधानाम तिसकी परम धर्मपत्नी भई ७ जो लावण्य पनेकी लहरोंवाली कांता नानाप्रकार के अलंकार शोभावाली जिसके रूपसे रतिभी जीतीगई अरु अप्सरागण धिक्कार कियेगये ८ जोपतिकी शुश्रूषा मेंपरायणतिनसे परम आदर से मानीगई तिनके कन्याभई तो वाभी तिनदोनों करके सुन्दर प्रकार से लाड़कीगई ६ अरु वे दोनों निजेच्छा से तिसपुत्रीका शमीऐसानाम रखतेभयेसावोतिमपितासेजे जोमांगती रही सोही २ तिसे वो प्रभुपिता देत रहा १० फिर वो रूपवाली कन्या सातवर्ष की भई तिसके लिये वर विचारने को औरव गया अरु वेद वेदांग पारगामी धौम्यपुत्र सुना जो शौनकमुनि जी का शिष्य अरु भारी तेज समूह मुनि ११।१२ जो गुरु वचन में रत दमन शील गुरुओंका अत्यंत शुश्रूषक (मन्दार नाम)वाला जो शांत तिसे शुभदिन में बुलाकरके १३ तिस कन्याको गृह्यसूत्रकी विधि से तिसेदई अरु बहुत दायज देताभया विवाह भये मंदार अपने आश्रम चेला १४ तो फिर तिसे यौवनवती जान कर फिर आया तो वो मन्दार औरवसे सन्मान सुपूजित कियागया १५ तोतिसने अनेक विधि से भोजन करवाकर अरु वस्त्र सुवर्णादिक देकर दोनों को विदाकिये अरु जमाईसे बोला १६ हेमहामन् येपुत्री मैंनेतुमको विधिविधान से दीगई है सोतिसे तुम बहुत स्नेहसे पालना जब तक जैसे मैंने पाली है १७ फिरवो ससुर जी को प्रणामकरके अरु

आज्ञा स्वीकार करके निजाश्रम स्थान को गया अरु निजभार्या शमीके साथ क्रीडा करता भया १८ कभी तिस मन्दार के आश्रम में गजानन भक्तिवाले ऋषि मुख्य भुशुण्ड जी आये १९ जो वे क्रोध भये साक्षात् अग्नि अरु प्रसन्न भये ईश्वर के समान तिनके तपसे शुण्ड निकला था तबसे वे भुशुण्डी जी भये २० जो भारी उदर वाले महाशरीरी नाना प्रकार के अलङ्कार शोभित तब तो तिन्हें मन्दार शमिदाने देखतेभये २१ तो विरूपसे इन्हें देख वे बड़े मोद से हँसते भये तो वे अपमान के भयसे भीतभये रक्तनेत्र किये क्रोध भये २२ तिसे बोले कि मन्दमते तू मदमत्त भया मुझे नहीं जानता है जो पत्नीसहित दांत फैलाकर तू मुझे हँसता भया है २३ इससे अब अरु नाना तीर्थ सेवना योनि को प्राप्त होवो ब्रह्मा जी बोले कि वे तिस प्राणि वर्जित वृक्ष ... से ... संताप को प्राप्त भये २४ अरु प्रणाम ते कठिन शापको सुनके ... करते को ... तब तो जानके ... तिनसे बोले कि ... जनक सेबोले कि २५ तुमने हमारा शुण्ड ... कल्यायुव भुशुण्ड जी ... हैं सो जब शुण्डवाले देवको देख ... खके मूढ भवसे ... इस ... तुम भी ... को प्राप्त होंगे ... होवेंगे ... जि ... मुनिजी निजाश्रमको गये ... इसमें ... नहीं ऐसे कहे ... तब वे मनुष्य देह को छोड़कर के ... ही वे दोनो वृक्षताको प्राप्त भये ... आकर ... [illegible] मन्दारता अरु ... शमीता प्राप्त ... अर्थात् ... प्राप्त भई ...

...सवां अध्याय ॥

से अरु शमि ... सहित वो ... सब ठौर को ... श्राप ... मात्र रहित भये २६ ... चिन्तायुक्त शौनक सोचता भया कि महीना ... क्यों नहीं आया है मैं तिसे देखनेको जाता हूँ ... सो शीघ्र औरव पै जाकर शौनेसे पूछके कि ... का कोलने आया था सो कहाहै कहां ... तिनके साथ देकर ... मदिये पाँच ...

...नेवे ३३ कियां वे दोनों मार्ग में भेडिये वघेरे आदि ...या चोरोंसे मारेगये थाकि सर्पसे डसेगये ३४ तब ...उनके जाननेके लिये शीघ्र चले तो कहीं कहीं जनेने महीतामेंरभये इधर्मगये ३५ फिरतो वनमें तिनस्त्रो दुरुपों देखे जो सुन्दरारूपशीले जो उपमारहित तो स्नान ...रे दृष्टिकरतेभये ३६ तो तिन्हें उपहास्यवशसे भुशुण्डी पदिये जानकर जो दर्शनपते को प्राप्तभरुप्रसन्न पक्षि कोडे ...जित ३७ सो ऋषिनन्दा रको तो मदारमन को प्राप्त भरु ...को शमीभई जानकर तो औरव भरु शौनक गोमी पे दोनों शोचनेलगे ३८ ये शौमयजीका पुत्र माघ पढ़नेको आयाथा ...नने विद्या पढी ऐसा मे किसवलसे वृक्षताको प्राप्तभया ३९ ...पिता सुनके प्राणत्यागेगा विप्र मे पूछे हम तिसे क्याकहेंगे ...औरवर्षी इसनिज पुत्रको शोचनेलगा ४० ब्रह्माजी बोले किनोवे ...ऐसे विचार के कि भक्त भरु देव में कुछ भेद नहीं है सो गणेश ...आराधन करके इनको पापसे छुड़ावेंगे ४१ फिरतो वे दोनों ...न्द्रिय भरु ऊर्ध्वदृष्टि भये नो निराहार दृढ़नियम किये भरु जो ...अंगूठेन पृथ्वी में ठरे हर्षसे तिन्हें प्रसन्न करतेभये ४२ ऐसे ...रे ...त भक्तिभावसे परमतप करतेभये सो कि षडक्षर मंत्र ...देव विनायकजी को ध्यातेभये ४३ ऐसेही च रहवर्ष उत्तम ...करतेभये औरवतो कन्याकेलिये भरु पुत्रके पर्य शौनकजी ॥४४॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड में औरव शौनक जी से तप ...ना इसनामका चौतीसवां अध्याय समाप्त भया ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

प्रसन्नभये श्रीगणेशजी फरके एगभये मन्दार को वरदेना वर्णनकियाहै ॥

३१ ब्रह्माजी बोलेकि तबतो तिनके तेसेक्लेशको देखके पाशहस्त ...यों विनायक जो प्रसन्नभये तो महातेजस्वी दशभुजोंवाले विनायक ...जी तिनके आगे प्रकटभये १ जो मुकुट कुण्डल माला भुजबन्ध क...

टिवस्त्र अरु सर्प यज्ञोपवीत धारण करते जो सिंहपैसवार दशभुज
अग्निकेसे तेजस्वी २ तोतिन्हो ने कोई सूर्य कांति के समान परम
मूर्त्तिदेखी तो दोनों अंजलिबांधे देवजीको नमस्कार करकेस्तुतिकर
तेभये ३ तो वेदोनो औरव धौनक बोलेकि हे गणेशजी आप इस
संसारके कारण हो अरु इस विश्व के परम रक्षक अरु निज अर्चन
में आदर किये भक्तों के नानाविधि आनन्द कारक अरु तिनके विघ्न
हारक अरु भारी कार्य्य करनेवाले हो ४ अरु आप परेसे परे अरु
परमार्थ स्वरूपहो अरु वेदांतोंसे जाननेयोग्य मनके अत्यन्त गोपन
कर्त्ता अर्थात् अन्तर्यामी हो अरुसारी श्रुतियों करके ग्राह्य नहीं हो
अर्थात् वेदभी आपको नहीं जानसके हैं इसीसे हमारे देवता आपके
अर्थ नमस्कारहो ५ अरु मायावाले आपके स्वरूपको न तो कमलाA
सन न भगवान् न शिवजी न षडानन न सहस्रमस्तक वाले शेष
जी येभी नहीं जानते हैं तो फिर औरसे आपका स्वरूप कैसे चितवन
करनेको योग्यहोवे अर्थात् किया जावे ६ सो शुभ अशुभ निज कर्म
भोगते जनपर जब आपकी भारी कृपा होवे तब शरीरमन वाणीसे
आपको प्रणाम कर्त्ता तो वो नर जीताही मोक्षमया अर्थात् जीवन
मुक्त कहावाहै ७ अरु भक्ति भावसे प्रसन्न भये आप नाना प्रकार
के आकारपने अर्थात् अवतारों से सबोंके काम पूर्णकरते हो अरु
संसार समुद्र से पार उतारने के कारण हो इससे प्रभु आपके हम
शरण प्राप्त हैं ८ श्रीगणेशजी बोले कि हम तुम्हारी भक्ति से अरु
इस परमतपसे प्रसन्नभये अरु इसपरम स्तुतिसेभी सो हेब्राह्मणों
तुमवरमांगो ९ अरु कुजन्मनाशक नाम इसस्तोत्रको जो पढ़ेगा
त्रिकाल व एकवेरतो वो सारेकामों को प्राप्तहोगा १० छ महीनेसे
विद्या सिद्धि अरु नित्य जपनेसे लक्ष्मीप्राप्तहोतीहै अरुपांचवेरजपने
से मनुष्य आयुबल निरोगताको प्राप्त होवेगा ११ ब्रह्माजीबोलेकि
वेदोंने गणेशजीका ऐसा वचनसुन परम आदरसेबोलतेभये १२ कि
मैंने वेदशास्त्रादिदेखनेवालेभंडारकेअर्थ दूजीवत्याहीथीतो शौनकजीका
शिष्य अरु धौम्यधीमान्जीका पुत्रथा १३ तो वे दोनोंमार्गमेंमुष्टिक

जीको देखकेप्रहर्षकरके मोहसेहँसतेभये तोवे निजअपमानजानकर परमरोष करके शापदेते भये१४ तो तिनके शापसे मन्दार अरु वो शमी भी दोनों वृक्षहोगयेहैं सो तिनके मा बाप शोचते अत्यंत दुःखितहो रहेहैं १५ अरु हे देव हमभी क्लेशको प्राप्त हैं आप सबका कार्य्य करो सोकि हे गजाननजी अब इनके वृक्षपनेको दूर करो १६ गजाननजी बोले कि इस असंभव वरको मैं कैसे देऊंगा हेद्विजो मैं निजभक्तके कहेवचनको मिथ्या कैसेकरूंगा तिसे प्रसन्नभया अब औरही वरश्रेष्ठ देता हूं १७ कि आजसे लेके मैं मंदारकेमूल में निश्चल रहूंगा अरु मृत्यु लोक स्वर्गलोकमें यहमाननेयोग्य होवेगा १८ जोनर मंदारमूलोंसे अर्थात् आककीजड़की मेरी मूर्त्तिबनाकर पूजैगा अरु शमीपत्र दूर्वा ऐसे पृथ्वीपर ये तीन दुर्लभहोंगे १६ क्योंकि हे मुनियो शमीवृक्ष में विराजमान होकर सदा मैं स्थिर रहतारहूंगा येही इन वृक्षोंको मैंने उत्तमवरदान दियाहै २० सो भी तुम्हारे वचनकी रुकावटसे अरु भुशुंडि जीका वचन तो वृथा नहीं होता सो कि दूर्वाके अभावमें आक अरु दोनोंके न होनेमें शमी मानीगईहै २१ तो वो जाटही दोनोंका फलदे देतीहै इसमें कुछ विचार कर्त्तव्य नहींहै नाना यज्ञोंसे अरु नाना तीर्थ व्रतोंसे भी वो पुण्य नहींहोता २२ अरु जो दान पुण्योंमें नहींपुण्य मनुष्य को मिले जैसा पुण्यमेरे शमीपत्रोंसे पूजन करनेसे होताहै हेब्रह्मणो २३ सो कि मैं धन सुवर्ण के समूहों से प्रसन्न नहीं होता अरु तैसे अन्नदान वस्त्रों से प्रसन्नहूं अरु न नाना पुष्पों से अरु न मणिगणों करके अरु न मोतियोंसे प्रसन्न होताहूं जैसे ब्राह्मणोंकेशमीपत्रसे किये पूजनोंसे अरु आकके पुष्प समूहोंसे हे मुनीश्वरो मैं सब काल प्रसन्न होताहूं २४ जो प्रातःकाल उठकर शमी को देखै पूजै वन्दना करै तो वो संकटरोग विघ्न वन्धन इनको मेरे प्रसादसे नहीं प्राप्तहोवै अरु स्त्रीपुत्रधन और पशुअरु और२भी सबकामपरलोक में मोक्ष पावै जो मेरे आश्रय कैवल्यपद है तिसे प्राप्त होवै २५ २६ अरु यहीफल आकसे पूजनेमें कहाहै मन्दार मे नर्मी मुनि वो

पूजा से मैं तिसके घरमें हूं अर्थात् सदा सम्पदा देताहूं २७ अरु तिसके तिस घरमें न तो अलक्ष्मी न विघ्न न अकालमृत्यु अरु न ज्वरहोवे अरु न कभी तहां अग्नि चोरोंसे भयहोवै २८ जो ब्राह्मण तो वेदवेदाङ्ग वेत्ता होवे अरु क्षत्री विजयवान् होवे वैश्य वृद्धिको प्राप्तहोताहै शूद्र सुखपावै तथा सद्गतिको प्राप्तहोवै २९ ब्रह्मावोले कि तब तो ऐसे कहकर देव विनायक जी तो मंदारमूलें अर्थात् आककी जड़में स्थितहोतेभये अरु वेही देवोंके देव जाटकी जडमें भी विराजमान भये ३० अरु पत्नी सहित और वह तप करनेको निश्चल होताभया तो तिस शमीके मूल में बैठ तप करके देहछोड़ स्वर्गको पधारा ३१ अरु जो यह और वहदुःख सहके शमीके बीचमें रहा तिससे वो (शमीगर्भ) ऐसे विख्यात हवनभक्ता अर्थात् अग्नि रूपहुआ ३२ इसीसे अग्निहोत्रीजन जाटकेकाठ को मथते हैं अरु सोशौनकभी गजानन जीसे कहावचन सुनकर ३३ आककी जडसे गजाननजीकी सुन्दरमूर्ति बनाकरके अरु मंदारकेपुष्पोंसे अरु शमीपत्रोंसे हर्षकरके पूजनकरता भया ३४ तोप्रसन्नभयेगजाननजी शौनक कोभी वरदानदेतेभये फिरवहनिजआश्रममें आया अरुतिन्हें सदा पूजतारहा ३५ गृत्समद जीबोले कितबसे शमीश्रीगणेशजीको प्रिय भईहै ऐसे तुझको सब आख्यानकहा अब और भी कहताहूंगा ३६ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें बाल चरित्र शमी मंदार प्रशंसावर्णनन्नाम इसनामसे पैंतीसवां अध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

सावित्री जीके शापसे सब देवताओंका जल रूप होना वर्णितहै ॥

गृत्समदजी बोले कि महयाचलके शिखर में गिरिजाजी सहित शिवजीरहतेथे जो निजगण अरु मुनीश्वरोंसेसंयुक्त तिसमहाभारी पवित्रक्षेत्र में १ तो वहां लोक के पितामह ब्रह्माजी दर्शनेच्छावाले चलेगये जो दो पत्नि अर्थात् गायत्रीसावित्री इनसे सहित अरुदेवता गंधर्व किम्पुरुषोंसे संयुक्त २ तो वे शंकरजीका दर्शन पूजन करके

निज अभिप्राय अर्थात् यज्ञका विचार निवेदन करते भये तब सदाशिवजीने परम ऋषियोंको बुलाये ३ सो कि जमदग्निजी को अरु वशिष्ठ जीको मार्कण्डेय अरु नारद जीको अरु कपिल पुलह कश्यपजीको तथा विश्वामित्र अरु त्रितद्विजजीको ४तो वे सारे अरु और भी सब दर्शन की इच्छा करके आये अरु वे द्विज ऊषःकाल मे मुहूर्त्तनिकालकर यज्ञ आरम्भ करते भये५ शीघ्रतायुत थे तो वे शुभविनायकजीकीपूजाकोभूलकर छोहीवरकेकार्य्यमेंलगीसावित्री कावर भीतरही छोड मुनीश्वर६गायत्रीहीको बैठाय पुण्याहवाचन करवाके अरु मातृपूजन पूर्वक नान्दीश्राद्ध करवाकर ७ जितनेइन्होनेअग्निको निजकुण्डमे स्थापनकिया तितनेही सावित्रीजी भी आई तो प्रारम्भको देखके क्रोधभरी ८लाल नेत्रकिये सारे सभासदोंको देखकर कहनेलगी सावित्रीजीबोली कि मेराअनादरकरके यहयज्ञ आरम्भ कियागयाहै सो सिद्ध न होगा ९ गृत्समद बोले कि ऐसे वो मुखसे झलनिकाल चराचर जगत्को जनेकेकामवाली वो सबदेवता मुनियोको शापतीभई कि तुम जडहोजाओ १० जो तुम सारे विन अधिकार अर्थात् मेरीयोग्यता मे गायत्रीही को बैठाकर यज्ञकरनेलगे हो तब तो सबदेवता प्रणामकरके डरतेहुभये ऊंचेसे अर्थात् पुकारकर प्रार्थना करतेभये ११ सबकीमातासावित्रीसेबोले कि हे शुभस्वरूपे हम ढलके सुगर्भपने से अर्थात् जल ये एकहीहैं इससे जलरूप होजावेंगे जो कि नदीनद स्वरूपी १२ वो तिस सावित्रीदेवीके तेसेही हो ऐसा कहतेहो देवता नदीरूप ताकोप्राप्तभये सो कि (वेणीजी) इसनामसे वो महादेवजीभये अरु श्रीकृष्णजी सो (कृष्णानदी) बने १३ सो सारेदेवता तिस२ ही नामसे नदियेंहोगये सो जहा२ विघ्नराजजी अज्ञानसे दुर्व्यवहारना करके नहीं पूजेजातेहै १४ तहा२ विघ्नहोतेही है जैसे पहिले शंकर जीको त्रिपुरासुर के वधमे तिन विनायकजी के न पूजनेसे विघ्नहो गयेथे १५तब तो ब्रह्माजी निजयज्ञमे विघ्न देखे परमचिन्ताको प्राप्तभये कि मेरे निमित्त सारेदेव नदीरूप होगये है १६ तब तेरा

सबलोकोमें अपमान किसकर्म्म से भयाहै अरु महाखोटा प्रतिज्ञा
भी बाध अर्थात् नाशभया है १७ जो कि विघ्न हर्त्ता जगत् के नाथ
गजाननजी न तो पूजे अरु न स्मरण कियेगये सारे भी देवतों को
मोहगासभयाहै १८ सो अब तिन्हींको प्रसन्नकरेंगे तभी यज्ञहोगा
ऐसे ब्रह्माजी जबतक विचारतेहीरहे तभीतक सारेसुरोंकीस्त्रियें १९
देवोंको ऐसे अर्थात् नदीभये जानकर ब्रह्माजीके समीपआई सोकि
पुलोमजा इन्द्राणी अरु गिरिजाजी अरु छायासूर्य्यभार्या अरु ल-
क्ष्मीजी २० अरु औरभी आकर सारीस्त्रियें कमलासन ब्रह्माजी
से कहनेलगीं कि यहकैसायज्ञ आरम्भकिया जो माननीयथे तिन्हें
क्यों नहींमाने २१ सो कि विघ्नहर्त्ता गजाननजीका पूजन पहिले
क्यों नहींकिया तुमको तिनका विस्मरण क्योंभया अरु तिनदेवोंने
भी क्योंनहीं याददिवाई २२ अरु सारे जलरूपभये देवतोंसे अब
हम क्याकहैं हेकमलजन्माजीतुमसे और हमकिसकीशरण जावें २३
तो ब्रह्माजी तिनका यह वचन सुनके भयमत मानो ऐसे कह तिन
से बोले कि मैं तैसाही यत्न करूंगा जिससे सब श्रेष्ठ होवेगा २४
सो गजाननजीके सुप्रसन्नभये भक्तोंकोक्या असाध्यहै सोतुमसारी
तिनकीभक्ति तो वे सब प्रिय कार्य्य करेंगे २५ अरु मैंभी जगदीश
विनायकजीको प्रसन्नकरोंगा जो देव आदि अन्तरहित अरु सबके
कारण के भी कर्त्ताहैं २६ ऐसे कहीगई वे दूर शुभकर्णाटकदेश को
गईं जो तिन्हीं से बताई मन्दार मूल अर्थात् आककीजड में स्थित
होकर विघ्नेशजीको ध्यानेकेलिये २७ जोपहिले रामजी करकेवक्र-
तुण्ड इसनामसे स्थापनकियेगये जिनके वरोंसे विजयवान रामच-
न्द्रजी राक्षस समूहों को २८ अरु विख्यात दशानन नाम(रावण)
को हतकरके पत्नीसीताजी के साथ निजपुर को आये तो वे सारी
सुरस्त्रियें तहांमहाघोर तपकरतीभईं २९ सो कोईतो नामजपकरने
लगीं अरु तैसेकोई मन्त्रकाजाप अरु कोईक पद्मासन बैठकर परमे-
श्वर गणेशजीको ध्यातीभईं ३० अरु कोई वीरआसनबैठीं तैसेऔर
कोई निराहाररहीं जो हारोंको अरु पौराहोंके घरों को बुहारती

अर्थात् कठिन कठिन कामकरतीभई ३१ जो प्रदक्षिणा नमस्कारों करके उत्तमभक्ति कररहीं कोई एक अँगूठेसे ठेरके विनायक जी को ध्याकर स्थितहोती भई ३२ अरुतव तहां कोई नेत्रमीचके स्तोत्रही पढ़तीभई ऐसे बहुतकाल बीतेभी विनायकजी प्रसन्न नहींभये ३३ तबतो परमचिन्ताको प्राप्तभई क्याकरें ऐसेकहती व्याकुलभईफिर तो कईपुष्पो के ढल्लो को अरु कई दूर्वांकुरो को ३४ समर्पण करके देवविनायकजीको पूजतीभई धूप दीप अन्न सुवर्णोंसे अरु आक के फूलोसे अरु कई शमीपत्रोंसे ३५ सोकि शमीपत्र विना गणेशजी प्रसन्न नहींहोते ऐसी आकाशवाणीको सुनके तव वेसारी शमीपत्रों सेही परम भक्ति करके देवगजाननजी को पूजतीभई तवतो परम दयालपनसेती शमीपत्रोसे पूजे विनायकजी तिनसवोपर प्रसन्नहोते भये ३६। ३७ सोकि वे तिनके आगे प्रकटभये जो सजे चारभुजा वाले अरु जोमुकुट कुण्डलधरे अरु हार कुण्डल सजे भये ३८ अरु जो लंबकर्णवाले सजे कपोलों वाले जो दोनो दांतो से शोभित अरु सिद्धिबुद्धियुक्त अरु मूषकवाहन पीलेवस्त्रवाले ३९तो वे सारी कोटि सूर्यसमान कांतिवाले देवविनायकजी को देखतीभई तो वे नेत्रमीच कर पृथ्वीतल में दण्डवत् प्रणाम करतीभई ४० अरु इनश्रेष्ठमहा नियमवाले विनायकजीको करोका संपुटकर अर्थात्हाथजोडकेस्तुतिकरतीभई जो अत्यन्त प्रसन्न मुखभई अरु परम आनन्दसे भरी गणेशजीकी स्तुति करतीभई ४१ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्डमें बालचरित्र श्रीगणेशजीका प्रसन्नहोना इसनामसे छत्तीसवां अध्याय समाप्त भया ॥ ३६ ॥

सैंतीसवा अध्याय ॥

देवतोंकी स्त्रियोंसे श्रीगणेशजीकी स्तुति करना अरु प्रसन्नभये तिनसे वरदानदेना वर्णितहै ॥

कीर्त्तिने पूछाकि हे महामुनिजी तिनसे फिरदेवने अस्तुतिकरी सो आप मुझसेकहो गृत्समदजी बोले कि वोहीस्तुति कहीजाती

सोहेकीर्त्ते तु तिसे सावधानभई अरणाकर प सुरस्त्रियेंबोलीं कि सर्व रूप आपको नमस्कार हैं अरु सबके अन्तर्यामी आपको नमस्कार है अरु सबके कर्त्ता आपको नमस्कार हे अरु सर्वदाता कृपालु आप को नमस्कार हे २ अरु सबके संहारक आपको नमस्कार हे अरु अनन्तशक्ति आपको नमस्कार हे अरु सबके प्रबोधक आप को न. मस्कार है अरु सर्वपात्र सबके आदि आपको नमस्कार है ३ अरु परब्रह्म स्वरूप आपको नमस्कार है अरु निर्गुण आपकोनमस्का- रहै हे वेदोंकेभी अगोचर आपको नमस्कार है सच्चिदानन्द स्वरूप आपको नमस्कार हे ४ अरु मायाके आश्रय आपको नमस्कार हैं अरु गुणोसेपरे आपको नमस्कार हे सत्य अरु असत्यरूप आपको नमस्कार हे अरु गुणोंके विशेष क्षोभकारी अर्थात् गुणोंको निजर कार्य में चलाने अर्थात् प्रवर्त्तक आपको नमस्कार है ५ अरु शर णागत पालक आपको नमस्कार हे अरु दैत्यदानव नाशकआपको नमस्कार है अरु हेससार रक्षामे परायण नानाप्रकार के अवतार धारनेवाले आपको नमस्कार हे ६ अरु हेसर्वशत्रु नाशकजो अनेक शस्त्र धारक आपको नमस्कार हे अरु हे हितकारक अनेकवरदाता आपको नमस्कार हे ७ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे स्तुतिकर अरुफिर नमस्कार करके वे सुरस्त्रिये वरमागतीभई कि भो गणेशजीजलरूप भये देवताओं को निज निज रूपदान देवो ८ अरु सदा आपकी विस्मृति अर्थात् भूलना न होवे तैसाही अनुग्रह करने योग्य हो श्रीगणेशजी बोले कि हमअनुष्ठान से वशकिये गये तुमको वरदान देते हे ९ सो कि तुम्हारी इसस्तुतिसे प्रसन्न भये हे तो तुम्हारावचन तैसेहीहोवे जो कि सावित्री के वचनसे मारे शुभदेवता जलरूपहो रहे हे १० सो तिस वाक्य को उलटा करने को पितामह जी भी समर्थ नहीं हैं सोही वे इस तुम्हारीस्तुतिसे प्रसन्नभये हमारी कृपा से अपने स्वरूप को प्राप्तहो जावेंगे ११ तो वे निजनिज अधिका- रों को प्राप्तहोंगे मेराकथन वृथानहीं है सो हेदेवोतुम मुझे शमी- पत्रों से पूजो १२ जिसने शमीपत्र मेरे समर्पण करदिया तो मानों

तिसने त्रिभुवन चढ़ादिया अरु सुवर्णके सोभारों का फलमिलताहै निस्संदेहही १३ ब्रह्माजीबोले कि विघ्न शजी के ऐसे कहते स्वरूप धारी देवता होगये अरु अंश कलाओं से नदीरूप स्थितभये तो तिन्होंनेभी विनायकजी का दर्शनकिया १४ तो वेभी विनायकजी की स्तुति प्रणति करके प्रार्थना करतेभये कि हे देवजी हमारा अपराध क्षमाकरो जोकि बुद्धिमोह वशसेथी १५ जेठी अर्थात् सावित्री को अरु आपको भी भूलके हम यज्ञ आरम्भ करनेलगे थे तो तिसका फल भी हमने शीघ्रही देखा सो फिर आपकेही प्रसाद से नवीन भयेहैं १६ अरु आपकी कृपासे परम आनन्द को प्राप्त भये हैं तो तिन विनायकजी को ऐसे कहके वे शमीपत्रों से पूजतेभये १७ तोवे विघ्ननाशक जीभी तिन्हे सराहेकर अन्तर्द्धान भये फिरवो पाषाणसे सुन्दर मूर्त्ति बनाकर १८ जो चारभुज हाथीके शुंडमुखवाली जो(हेरम्बनामसेप्रसिद्ध) सुन्दर मन्दिर बनाय तिस में स्थापन करतेभये अरु वे सुरसारेलोकके उपकारके लिये यहभी कहतेभये कि इन विद्याअधीश गणेशजीको इसपुरमे भक्तिसेपूजेंगे १९।२० तिनको प्रसन्नभये भगवान् गजाननजी सबकामना देवेंगे वन्दनसे अरुस्मरण से या नमस्कार से निस्संदेहही २१ अरु जो वहां आक सेवनी विनायक जी की महामूर्त्ति थी तिसे इन्द्रलेकर अपने समृद्धिमान् पुरको जाताभया २२ सो भक्त पत्नी सहित तिसे अवतक भी पूजजाता है अरु फिर सबदेवता भी निजनिज स्थान में आकके वृक्षकी मूर्त्ति बनाय गणेशजीको अरु शमीपत्रों सेतिसे पूजतेभये तोहीवे सारे निजनिज स्त्रियोंके साथ मोद अरु उत्तमसारेकामोंकोप्राप्तभये २३।२४ ब्रह्माजीबारहवर्षमहाभारीतप करके विघ्न शजीको प्रसन्नकर करफिरयज्ञ करातेभये २५ तिन्होंनेभी आककी मूर्त्ति का परम आदर से पूजनकिया जो विघ्नराजजी की वरदायक मूर्त्ति तिसे अनेक प्रकार परमभक्तिसेपूजनेभये २६ अरु सुवर्ण पत्रोंसे दूर्वोसे आक अरु केवड़ेसेभी अरु श्वेतदूर्वाके अंकुरों से सबकाम फलदाता मूर्त्ति को पूजी २७ गृत्समदजी बोले कि हे

सोहेकीर्त्ते तू तिसे सावधानभई श्रवणकर १ सुरस्त्रियेंबोलीं कि सर्व रूप आपको नमस्कार हैं अरु सबके अन्तर्यामी आपको नमस्कार है अरु सबके कर्त्ता आपको नमस्कार हे अरु सर्वदाता कृपालु आपको नमस्कार हे २ अरु सबके संहारक आपको नमस्कार हे अरु अनन्तशक्ति आपको नमस्कार हे अरु सबके प्रबोधक आप को नमस्कार है अरु सर्वपात्र सबके आदि आपको नमस्कार है ३ अरु परब्रह्म स्वरूप आपको नमस्कार हे अरु निर्गुण आपकोनमस्कार हे हे वेदोंकेभी अगोचर आपको नमस्कार हे सच्चिदानन्द स्वरूप आपको नमस्कार हे ४ अरु मायाके आश्रय आपको नमस्कार हे अरु गुणोंसेपरे आपको नमस्कार हे सत्य अरु असत्यरूप आपको नमस्कार हे अरु गुणोंके विशेष क्षोभकारी अर्थात् गुणोंको निजर कार्य में चलाने अर्थात् प्रवर्त्तक आपको नमस्कार हे ५ अरु शरणागत पालक आपको नमस्कार हे अरु दैत्यदानव नाशकआपको नमस्कार हे अरु हेसंसार रक्षामें परायण नानाप्रकार के अवतार धारनेवाले आपको नमस्कार हे ६ अरु हेसर्वशस्त्र नायकजी अनेक शस्त्र धारक आपको नमस्कार हे अरु हे हितकारक अनेकवरदाता आपको नमस्कार हे ७ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐसे स्तुतिकर चरफिर नमस्कार करके वे सुरस्त्रियें वरमांगतीभई कि भो गणेशजीजलरूप भये देवताओं को निज निज रूपदान देवो ८ अरु सदा आपकी विस्मृति अर्थात् भूलना न होवे तैसाही अनुग्रह करने योग्य हो श्रीगणेशजी बोले कि हमअनुष्ठान से वशकिये गये तुमको वरदान देते हैं ९ सो कि तुम्हारी इसस्तुतिसे प्रसन्न भये हैं तो तुम्हारावचन तैसेहीहोवे जो कि सावित्री के वचनसे सारे शुभदेवता जलरूपहो रहे हैं १० सो तिस वाक्य को उलटा करने को पितामह जी भी समर्थ नहीं हैं सोही वे इस तुम्हारीस्तुतिसे प्रसन्नभये हमारी कृपा से अपने स्वरूप को प्राप्तहो जावेंगे ११ तो वे निजनिज अधिकारों को प्राप्तहोंगे मेराकथन वृथानहीं है सो हेदेवोतुम मुझे शमीपत्रों से पूजो १२ जिसने शमीपत्र मेरे समर्पण करदिया तो मानों

तिसने त्रिभुवन चढ़ादिया अरु सुवर्णके सोभारों का फलमिलवाहै निस्संदेहही १३ ब्रह्माजीबोले कि विघ्न शजी के ऐसे कहते स्वरूप धारी देवता होगये अरु अंश कलाओं से नदीरूप स्थितभये तो तिन्होंनेभी विनायकजी का दर्शनकिया १४ तो वेभी विनायकजी की स्तुति प्रणति करके प्रार्थना करतेभये कि हे देवजी हमारा अपराध क्षमाकरो जोकि बुद्धिमोह वशसेती १५ जेठी अर्थात् सावित्री को अरु आपको भी भूलके हम यज्ञ आरम्भ करनेलगे थे तो तिसका फल भी हमने शीघ्रही देखा सो फिर आपकेही प्रसाद से नवीन भयेहैं १६ अरु आपकी कृपासे परम आनन्द को प्राप्त भये हैं तो तिन विनायकजी को ऐसे कहके वे शमीपत्रों से पूजतेभये १७ तोवे विघ्ननाशक जीभी तिन्हें सराहकर अन्तर्द्धान भये फिरतो पाषाणसे सुन्दर मूर्त्ति बनाकर १८ जो चारभुज हाथीके शुंडमुखवाली जो (हेरम्बनामसेप्रसिद्ध) सुन्दर मन्दिर बनाय तिस में स्थापन करतेभये अरु वे सुरसारेलोकके उपकारके लिये यहभी कहतेभये कि इन विद्याअधीश गणेशजीको इसपुरमें भक्तिसेपूजेंगे १९।२० तिनको प्रसन्नभये भगवान् गजाननजी सर्वकामना देवेंगे वन्दनसे अरु स्मरण से या नमस्कार से निस्संदेहही २१ अरु जो वहां आक सेवनी विनायक जी की महामूर्त्ति थी तिसे इन्द्रलेकर अपने समृद्धिमान् पुरको जाताभया २२ सो भक्त पत्नी सहित तिसे अबतक भी पूजजाता है अरु फिर सबदेवता भी निजनिज स्थान में आकके वृक्षकी मूर्त्ति बनाय गणेशजीको अरु शमीपत्रों सेतिसे पूजतेभये तोहीवे सारे निजनिज स्त्रियोंके साथ मोद अरु उत्तमसारेकामोंकोप्राप्तभये२३।२४ब्रह्माजीबारहवर्षमहाभारीतप करके विघ्नेशजीको प्रसन्नकर करफिरयज्ञ करातेभये२५तिन्होंनेभी आककी मूर्त्ति का परम आदर से पूजनकिया जो विघ्नराजजी की वरदायक मूर्त्ति तिसे अनेक प्रकार परमभक्तिसेपूजनेभये २६ यह सुवर्ण पलाश दूर्वासे आक अरु केवडेसेभी अरु श्वेतदूर्वाके अंकुरों से सबकाम फलदाता मूर्त्ति को पूजो २७ गृत्समदजी बोले कि

शुभे मातःकीर्त्ति ऐसे मैंनेतेरेको निःशेषसे मन्दार अरु शमीकामाहात्म्यवर्णनकिया जो श्रवणसे पापनाशकरता२८ तभीसे गणेश जी को शमीवृक्ष अत्यन्तही प्याराहै तिसका विनजाने भी पूजन करदिया तिससे यहपुत्र उठखडा भया है२९ अरु आककी महिमा हमने सम्यक् निरूपण करी है अवहमें आज्ञादे हमनिज आश्रम को जावेंगे ३० ब्रह्माजीबोले किवो कीर्त्ति शमीमन्दार की महिमा को सुनके पुत्रजीवक मुनिजीको प्रणामकरके विदा करतीभई ३१ इनगणेशजीके प्रीति बढ़ानेवाले श्रेष्ठआख्यानको नरसुनकरसंकट से छूट सबकामों को प्राप्तहोवें ३२ जोनर प्रातःकाल उठकर शमी अरु आकका स्मरणकरें अरु सदाभक्ति से गणेशजी को ध्याता रहे तोवह सुखसम्पत्ति भोगनेवालाहोवेगा३३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड बालचरित्र में शमीमन्दार माहात्म्य वर्णन इसनामसे सैंतीसवां अध्याय समाप्तभया ३७॥

अरतीसवां अध्याय ॥

गृत्समदजीकरके कीर्तिको उपदेश करना वर्णन है ॥

कीर्त्ति बोलीकि हेब्रह्मन् आपने शमीकामाहात्म्य आदरसे श्रेष्ठ कहा अरु मन्दार काभी कहाहै तिससे मेरामन प्रसन्नभयाहै१ अरु यहपुत्रभीजिवाया अरु इसे षड़क्षर मन्त्रभी बताया पर हे मुनीश्वर इसकरके वो बालपनेसे उच्चारण नहींकियाजाता २ सो हेमुनिजी इसे अब आप सुगम मन्त्रबताइये जो सुप्रसन्नताका कारक अरु इसके राज्यको प्राप्त करनेवाला हो अरुइसकरके जो जपाजावेसो कहिये ३ मुनिजीबोले कि हेकीर्त्ति तुम्हारीमतिगजाननजीकेचरण कमल में सम्यक् प्रकारसे लगीहै इससे मैं इसको सुखप्रदातानिजमन्त्र बताऊंगा ४ जो सर्व जगत्कारण गणेशजीका चारअक्षरका अर्थात् ढुंढिराज ऐसानाम है जो गणेशजी शुभ अशुभ के देखने वाले अरु दैत्यनाशक हैं अरु सर्वधर्मकेरक्षकअरुजो दिवोदासनाम काशिराज के उपकारक हैं जोद्विजरूपधरे काशीजी में विराजमान

हैं ६ जो विश्वके ईश्वर अरु अविमुक्तके आप्ति अर्थात् अविमुक्तिको शिवजीके मिलानेकेलिये प्रयत्न करनेवाले अरु सबके अन्तर्यामी, अरु विश्वके ईश्वर अर्थात् शिवजीसे स्तुतिकिये गयेहैं ७ अरु तिन्हीं शिवजीसे सबसृष्टि-सहारके हेतु पूजन कियेगये अरु पुलोमजाकेपति इन्द्रसेभी भक्तिसे पूजनकिये गये हैं ८ दैत्यों के मृत्यु के अर्थ अरु देवोंको राज्य सुखप्राप्ति केलिये अरु सूर्यजो अरु वरुणसेभी अरु चन्द्रमा यमसेभी ६ अरु अग्नि वायुसेभी निजनिजगुण की उत्कर्षताकेलिये पूजेगये अरु वृहस्पति शुक्रजी करके भी निज निज ऊचापन केलिये पूजेगये हैं १० अरु यही ढुंढिराजजी शेषजी करके धरती धारण करनेकेलिये आराधन कियेगये हैं अरु और २१ भी जो गन्धर्व किन्नर यक्ष हैं अरु सिद्धि चारण राक्षस हैं १२ अरु ऋषियें पशु वेतार जितने शुभचर स्थिर प्राणी हैं सो निज निज कार्यार्थ सिद्धिके लिये गणेशजी का आराधन करते हैं सो मेसबके स्वामी ढुंढिराजजी नहीं कियाजावे गुणोंका पार जिनका अर्थात् असंख्य गुणवाले हैं सोकि ब्रह्मा विष्णु शिव आदिक भी जिनकेगुणों के पारको न प्राप्तहोवें सो तिनके भक्तिभाव सेवी शमीपत्रसेपूजित भये १३।१४ तेरेराज्यभोगी अरु शत्रुनाशक पुत्रहोवेगा कीर्त्तिबोली कि हेब्रह्मन् मैंने ढुंढिराज जीकी महिमा सब श्रवणकिया अब कहो कि वेकिस कर्मवाले कैसे उत्पन्नभये किसके अंशवाले अरु किस पराक्रमवान् भये १५ अरु किसने इनका यहनाम कियाहै अरुकि समे येपहिले पूजेगये हैं हेब्रह्मन् इससंशयको आप निःशेषसेछेदने योग्यहो मुनिजीबोले किहेशुभे कल्याणरूप कीर्त्तितने अधिकज्ञानपनेसे यहअच्छा पूछा १७है जो यह भक्तिमसंशय निवेदनकिया सो तेरेतिस सब संशय को अबहरताहूं जैसे दुरासद नामराक्षस उन विनायकजी से हता गया १८ जो मायारूप पचगार घारो मोहनेके लिये दिवोदास राजाके पासगये अरु जैसे विश्वेश्वरशिवजी फिरभी अविमुक्त के पास मायासे ज्योतिरूपने गणराजजी करके लायेगये सो वृत्तांत सुन अरु हेवरांगने जिससे इनका (ढुंढिराज)

येनामभया है सो मैं सन कहदूंगा जैसे मैंने स्कंदजीसे सुनाहै २०
जो स्कन्दजी अगस्त्यजीसे कहतेभये सो हेशुभे तुएकचित्त भईसुन
स्कन्दजी बोले कि हेब्रह्मन् अगस्त्यजी तुम सावधान भये मुझसे
श्रेष्ठ मुक्तकी कथा सुनो २१ जिसके श्रवणसे ही नर सब पापों से
छुटैं सो कश्यपजीको भगवान्ने ये बोले कि नाना प्रकार की प्रजा
रचो २२ तो तिसने बडे तपसे प्रजारचीसो कि इकइस लाखजेरसे
जन्म वाली अरु इतनीही अडज तितनीही स्वेदसे जन्मी २३ अरु
तितनीही उद्भिज वृक्षादिक उत्पन्नकरी तिनमें मनुष्य पना दुर्लभहै
सो वो पुन्यसे प्राप्त होवाहै वहां भी ब्राह्मण पन बहुतही पुन्यसे
मिलता है २४ सो जो वो कि सोसे धर्मा धर्मकी व्यवस्था करके
सम्यक् रक्षा कियागया तो वो परमस्थान जहां जाकर फिर
न आवृत्तिहोवे २५ नहीं तो चोरासी ल तित रहै
सो कि खोटे आचार जनधर्मके मेंही २६
फिर वे बहुत काल कर तो
काने कुबडे दरिद्री होते
शिव आदि देवता पर
बनातिभये२८ अरु बडे
सदास्थितभये देवर्षि पाप
योंके पापोंका प्रलय अ
बचानेकेलिये सदातहां देव।
श्वेश्वरजीने निज (वाराणसी

से काशी-वास फलदेने वाली ३५ तो तहांके वे लता वीरुध अरु वृक्षभी धन्यहैं जो तिस कैलास भूमिकोविना तिस स्थानकोछोड़के मच्छ कच्छ वे भी और ठौर नहीं जाते अर्थात् वे भी शिवभक्त हैं ३६ अरु जहां नाना रूपधारी रूपवाले शिवजी जहां नित्य विराजमान रहतेहैं अरु वे ही सूर्य अरु ब्रह्मा विष्णु वे ही गिरिजा पति जीही हैं ३७ अरु विनायकजी वेहीहैं अरु सब जगतके भी शक्ति रूप कारणहैं जिन करके प्रलयमें भी काशी त्रिशूलसे धारणकी अर्थात् रक्षाकरीजातीहै ३८सो येएकहीलोकके अनुग्रहकीकामना करके पांच प्रकारके होरहेहैं सो जो २ भक्त जैसी २ मूर्तिको ध्यातेहैं तैसीही मूर्ति तिसीक्षणसे वे धार लेतेहैं ३९ इनमें जोनरभेद माने सो नर्क भोगताहै सो कि जो कोई एककी स्तुति अरु दूसरे की निन्दा करै तो ४० बहुबहुतवर्ष इकईश नरकोंमें पड़ताहै इसी कारणसे अर्थात् औरोंका निन्दक अरु शिवजीकाभक्तहोनेसेराक्षस भये भस्मा सुरकापुत्र (दुरासद) नामसे विख्यात भया ४१ सो शुक्रजीके पासजाकर पांच अक्षरको विद्या (ओंनम शिवाय) सेपढ़ा फिर वो हजार दिव्य वर्षतक एक अंगूठे सेस्थित रहा ४२ जो निराहार काठमाभया देहमें बमईजाले सहित अस्तिहीशेपरहे जिसके अरु नेत्रमात्रही बाकी जिसके ऐसाजोतिस परममंत्रको जपताभया ४३ तो तिस केकठिनतपसे प्रसन्न भये शिवजी तिसे वरदेनेको आये जो पंचमुख दशभुज अरु रुंड मालोंसे विभूषित ४४ अरु जो वृषांकित ध्वजा वाले अरु वृषपरही सवार चद्ररेखा विभूषित गौरीजीकेगोदमें जिनके कृपा निधान दयाभरे दैत्य दुरासदसे बोले ४५ शिवजी कहनेलगे कि हे दैत्यउठ२ तेरा कल्याण हो तेरेतपसेमैं अत्यंत क्लेशको प्राप्तभयाहूं तेरे मन वांछितको देऊंगा तेरे मनमेंहैसोमांग ४७ ब्रह्माजीबोले कि तबतो असुर नेत्रखोल अंजलि पुटबांधे प्रणामकरके तिन वरदायक महेश्वरजीका स्तुति करता भया४८ कि हेदेवजी आप जगत्के कारणहो जो आप परम आनन्द शरीरी अरु क्षरनास मान अरु अक्षर अर्थात् नित्य पदार्थ तिन दो-

त इंद्रकीपाली अमरावती नगरीको आसभयाथो देवराज इन्द्र भी तिस दुष्टके वरको सामर्थ कोजानकर ११ तो भागके गुफामेंचला गया जो देवता अरु निज परिवारसहित अरु तिसी क्षणमें भगवान् निजस्थानसे क्षीर समुद्रमें गये अरु लक्ष्मीजीके गोदमें शिररख कर मधुसूदनजी शयन करते भये अरुत्रिशूलधारी शिवजीभीकाशी छोड़ कैलाश शिखरपर चलेगये १३ तो चतुर मुखजीभी तिन्हींके साथ चलेगये सो जोजो निजस्थानतमके जाताथो बोअसुर तिस तिसी स्थानमें वली निज प्यारे सुतको रख देतारहा ऐसे वो महा वली अहंकारसेही देवतोंको जीतकर १४।१५ कैबरतोके देशमें (भस्मकण्टमेंरहताभया) सो वो सारे लोकोंमें मुकुंदपुर ऐसे वि- ख्यात होताभया १६ जहावलवाला भस्मासुर राजाभयाथा जि सको शंकरजीने आश्चर्य रूप वरदानदियाथा १७ सो कि जिसके शिरपर तू हाथ रखदेगा सोही मर जावेगा ऐसे वर दियागया वो दैत्य दुष्टभावही से प्रेरागया १८ वो वरकी परिक्षाके लियेवर देने वाले अर्थात् महादेवजीकेही मस्तक परहाथधरने को चला तो गि रिजापतिजी भगवत् १९ तोवेषभाववाले विष्णुजी करके देखेगये तो वेसुंदर मोहिनीका रूप बनाके तिनके निकटगये २० अरु बोलेकि हे नर श्रेष्ठ जो तू मेरे वचनपर स्थिर रहेगातो मैंतेरीस्त्रीहोऊंगीतो वो हर्षसेहाऐसेकहताभया २१ तो जबवोनाचनेलगीतो तिसकेवचन् से वोभीनाचताभया सो वो जैसा जैसा भाव बताती रही वैसा २ ही येभी दिखाताभया २२ तिसने जब निज शिरपर हाथरक्खा तो तिसने भी तिसी क्षणसे रक्खा वो योंही वो दैत्य दुरासद भस्म होता भया जो दुष्टसे किया गया सो नाश कारी भया अर्थात् नि सको तिसकेतिसकियेका फलमिलगया २३ अरु मुकुंदभगवानभी यहांहीं स्थिर भये तो वो तिसी नामसे अर्थात् मुकुंदपुर विख्यात भया जो अनुष्ठान करनेवाले मनुष्यों को शीघ्रही परम सिद्धि का दाता हैं २४ तोवो मोहिनी मूर्ति मनुष्यों को स्मरणहीसे तथाभक्ति करनेसे सर्वकामना देतीहै वहां स्थितहोकर मैं दुरासद गर्भमेंत्रि-

भुवन को शिक्षादेता अर्थात् राज्यकरता भया २५ अरु गर्व करके मन्त्रियोंकोबोलाकि कैसेमैंने असुर बैरी अर्थात् देवतों का जीतेतेनिज प्रताप से त्रिभुवनको नहींजीता है अर्थात् तीनोंभवन तो मेरे वशहीहैं २६ तबतो वेमन्त्रीबोलेकि तुमसे अविमुक्त नहींजीतागया है तिसके समान दृशवांखण्ड कोईकहीं भी नहींहै २७ सोकि जहां शङ्करजी विराजमान हैं अरु सारेसुरों से सेवाकिये जाते हैं सो जितने तुमसे वोपुर न जीताजावे तितने तुमारा तुरुषार्थ वृथाहैं तो तिनका येवचन सुन संग्रामका प्यारा दुरासद मोदको प्राप्तहोता भया अरुतिन्हें शीघ्रही बोलाकि मैं अभी सेनासहित तिसपास जाता हूं २८ वो तिसीक्षण वो श्रेष्ठ विमान में बैठकर काशीपुरी को जाता भया तो तिस दुरासद दैत्यको पुरीमें प्रवेशहोतेही हाहाकार मचगया ३० तोवहां जोदेवता थे सो सब अन्तर्द्धानभये तो शिवजी निजभक्तपने अर्थात् येतो हमाराही भक्त है इससे तिसे कुछभी कोपनभये ३१ अरु ये विचाराकि इसे कुछकाल राज्यदिया है सोही वे निजपरि वार सहित केदारक्षेत्र पर चलेगये अरु मुनीश्वर भी भगगये ३२ सोहेशुभे कीर्ति वेसारे जैगीषव्य अर्थात् जीतने की इच्छा के बिना तिस सन्यास क्षेत्रपै चलेगये तो मोहसे अज्ञान भया येदुरासद मूर्ति फोड़ताभया ३३ तोवो अज्ञानसे भरा भारी२मंदिरफोडके हर्षताभया सोकोईभी देवताका स्मरणकरता तोही वो तिसे ताड़ना करकेबाहर निकाल देतारहा ३४ तोकहीं स्वाहा स्वधा वषट् करना ये अर्थात् देवपितृ का कार्य्य कुछभी न होतेभये नकहीं वेदका अध्ययन अरु न कहीं शास्त्रपठन होनेपाया ३५ अरु न पुराणन देवोंकीपूजा अरु नमन न परिक्रमा दुरासद दुष्ट मतिके राज्य करते कहींभी होसका ३६ तो कर्मका मार्ग लोप भये धर्म भी प्रलय को प्राप्त भया तो धर्मकेनाशभये सारे देवता हेकीर्ते भूखेअर्थात् स्थानभ्रष्टभये ३७॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें बाल चरित्र दुरासदका विजय इस नामसे उन्तीसवां अध्याय समाप्त हुआ॥ २९॥

त इन्द्रकीपाली अमरावती नगरीको प्राप्तभयातो देवराज इन्द्र भी तिस दुष्टके वरको सामर्थ कोजानकर ११ तो भागके गुफामेंचला गया जो देवता अरु निज परिवारसहित अरु तिसी क्षणमें भगवान् निजस्थानसे क्षीर समुद्रमें गये अरु लक्ष्मीजीके गोदमें शिररख कर मधुशूदनजी शयन करते भये अरुत्रिशूलधारी शिवजीभीकाशी छोड़ कैलाश शिखरपर चलेगये १३ तो चतुर मुखजीभी तिन्हींके साथ चलेगये सो जोजो निज२स्थानतकके जातातो वोअसुर तिस तिसी स्थानमें वली निज प्यारे दूतको रख देतारहा ऐसे वो महा बली अहंकारसेही देवतोको जीतकर १४।१५ कैवरतीके देशमे (भरुमकपूरमेंरहताभया) सो वो सारे लोकोमे मुकुंदपुर ऐसे बि-ख्यात होताभया १६ जहांवछचाला भस्मासुर राजाभयाथा जि सको शंकरजीने आश्चर्य रूप वरदानदियाथा १७ सो कि जिसके शिरपर तू हाथ रखदेगा सोही मरजावेगा ऐसे बर दियागया वो दैत्य दुष्टभावही से प्रेरागया १८ तो वरकी परिक्षाके लियेवर देने वाले अर्थात् महादेवजीकेही मस्तक परहाथधरने को चला तो गि रिजापतिजी भगचले १९ तोवेप्रभाववाले विष्णुजी करके देखेगये वो वेसुंदरमोहिनीका रूप बनाके तिनके निकटगये २० अरु बोलेकि हे नर श्रेष्ठ जो तू मेरे बचनमें स्थिर रहैगातो मैंतेरीस्त्रीहोऊंगीतो वो हर्षसेहाऐसेकहताभया२१ तो जबवोनाचनेलगीतो तिसकेवचन से वोभीनाचताभया सो वो जैसा जैसा भाव बताती रही वैसा २ ही येभी दिखाताभया२२ तिसने जब निज शिरपर हाथरक्खा तो तिसने भी तिसी क्षणसे रक्खा तो शीघ्रही वो दैत्य दुरासद भस्म होता भया जो दुष्टसे किया गया सो नाश कारी भया अर्थात् ति सको तिसकेतिस किपेका फलमिलगया२३ अरु मुकुंदभगवान्‌भी वहांहीं स्थिर भये तो वो तिसी नामसे अर्थात् मुकुंदपुर बिख्यात भया जो अनुष्ठान करनेवाले मनुष्यों को शीघ्रही परम सिद्धि का दाता है २४ तोवो मोहिनी मूर्ति मनुष्यों को स्मरणहीसे तथाभक्ति करनेसे सर्वकामना देतीहै वहां स्थितहोकर ये दुरासद गर्भसेत्रि-

भुवन को शिक्षादेता अर्थात् राज्यकरता भया २५ अरु गर्व करके मन्त्रियोंकोबोलाकि कैसेमैंने असुर वैरी अर्थात् देवतोंका जीवतेनिज प्रताप से त्रिभुवनकोनहींजीता है अर्थात् तीनोंभवन तो मेरे वशहीहैं २६ तबतो वेमन्त्रीबोलेकि तुमसे अविमुक्त नहींजीतागया है तिसके समान दशवांखण्ड कोईकहीं भी नहींहै २७ सोकि जहां शङ्करजी विराजमान हैं अरु सारेसुरों से सेवाकिये जाते हैं सो जितने तुमसे वो पुर न जीताजावै तितने तुमारा पुरुषार्थ वृथाहै तोतिनका येवचन सुन संग्रामका प्यारा दुरासद मदको प्राप्तहोता भया अरुतिन्हें शीघ्रही बोलाकि मैं अभी सेनासहित तिसपास जाता हूं २८ वो तिसीक्षण वो श्रेष्ठ विमान में बैठकर काशीपुरी को जाता भया तो तिस दुरासद दैत्यको पुरीमें प्रवेशहोतेही हाहाकार मचगया ३० तोवहां जोदेवता थे सो सब अन्तर्द्धानभये तो शिवजी निजभक्तपने अर्थात् येतो हमाराही भक्त है इससे तिसे कुछभी कापनभये ३१ अरु ये विचाराकि इसे कुछकाल राज्यदिया है सोही वे निजपरिवार सहित केदारक्षेत्र पर चलेगये अरु मुनीश्वर भी भगगये ३२ सोहेशुभे कीर्त्ति वेसारे जैगीषव्य अर्थात् जीतने की इच्छा के विना तिस सन्यास क्षेत्रमें चलेगये तो मोहसे यज्ञान भया येदुरासद मूर्ति फोड़ताभया ३३ तोवो अज्ञानमें भरा भारी २ मंदिरफोडके हर्षताभया सोकोईभी देवताका स्मरणकरता तोही वो तिसे ताडना करकेबाहर निकाल देतारहा ३४ तोकहीं स्वाहा स्वधा वषट् करना ये अर्थात् देवपितृ का कार्य्य कुछभी न होतेभये नकहीं वेदका अध्ययन अरु न कहीं शास्त्रपठन होनेपाया ३५ अरु न पुराणन देवोंकीपूजा अरु नंमत न परिक्रमा दुरासद दुष्ट मतिके राज्य करते कहीभी होथका ३६ तो कर्मका मार्ग लोप भये धर्म भी प्रलय को प्राप्त भया तो धर्मकेनाशभये सारे देवता हेकीर्ते भूखेअर्थात् स्थानभ्रष्टभये ३७॥

इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें बाल चरित्र दुरासदका विजय इस नामसे उन्तीसवां अध्याय समाप्त हुआ॥ २६ ॥

त इन्द्रकीपाली अमरावती नगरीको आसभयाथो देवराज इन्द्र भी तिस दुष्टके वरको सामर्थ कोजानकर ११ तो भागके गुफामें चला गया जो देवता अरु निज परिवारसहित अरु तिसी क्षणमें भगवान् निजस्थानसे क्षीर समुद्रमें गये अरु लक्ष्मीजीके गोदमें शिररख कर मधुशूदनजी शयन करते भये अरुत्रिशूलधारी शिवजीभीकाशी छोड़ कैलाश शिखरपर चलेगये १३ तो चतुर मुखजीभी तिन्होंके साथ चलेगये सो जोजो निजस्थानतकके जाताथो वोअसुर तिस तिसी स्थानमें वली निज प्यारे दूतको रख देतारहा ऐसे वो महा बली अहंकारसेही देवतोंको जीतकर १४।१५ कैवरतोंके देशमें (स्मरुमकपुरमेंरहताभया) सो वो सारे लोकोंमें मुकुंदपुर ऐसे विख्यात होताभया १६ जहांवलवाला भस्मासुर राजाभयाथा जिसको शंकरजीने आश्चर्यरूप वरदानदियाथा १७ सो कि जिसके शिरपर तू हाथ रखदेगा सोही मरजावेगा ऐसे वर दियागया तो दैत्य दुष्टभावही से प्रेरागया १८ तो वरकी परिक्षाके लियेवर देने वाले अर्थात् महादेवजीकेही मस्तक परहाथधरने को चला तो गिरिजापतिजी भगचले १९ तोविप्रभाववाले विष्णुजी करके देखेगये तो वेसुंदर मोहिनीका रूप वनाके तिनके निकटगये २० अरु बोलेकि हे मर अप्र जो तू मेरे वचनपर स्थिर रहैगातो मैंतेरीस्त्रीहोऊंगीतो वो हर्षसेहाऐसेकहताभया २१ तो जबवोनाचनेलगीतो तिसकेवचन से वोभीनाचताभया सो वो जैसा जैसा भाव बताती रही वैसा २ ही येभी दिखाताभया २२ जिसने जब निज शिर पर हाथरक्खा तो तिसने भी तिसी क्षणसे रक्खा तो शीघ्रही वो दैत्य दुरासद भस्म होता भया जो दुष्टसे किया गया सो नाश कारी भया अर्थात् तिसको तिसकेविस कियेका फलमिलगया २३ अरु मुकुंदभगवान्भी वहांहीं स्थिर भये तो वो तिसी नामसे अर्थात् मुकुंदपुर विख्यात भया जो अनुष्ठान करनेवाले मनुष्यों को शीघ्रही परम सिद्धि का दाता है २४ तोवो मोहिनी मूर्ति मनुष्यों को स्मरणहीसे तथाभक्ति करनेसे सर्वकामना देतीहै तहां स्थितहोकर ये दुरासद गर्मसेत्रि-

भुवन को शिक्षादेता अर्थात् राज्यकरता भया २५ अरु गर्व करके मन्त्रियोंकोबोलाकि कैसेमैंने असुर बैरी अर्थात देवतों का जीवतेनिज प्रताप से त्रिभुवनकोनहींजीता है अर्थात् तीनोंभवन तो मेरे वशहीहैं २६ तबतो वेमन्त्रीबोलेकि तुमसे अविमुक नहींजीतागया है तिसके समान दशवांखण्ड कोईकहीं भी नहींहै २७ सोकि जहां शङ्करजी विराजमान हैं अरु सारेसुरों से सेवाकिये जाते हैं सो जितने तुमसे वोपुर न जीताजावे तितने तुमारा पुरुषार्थ वृथाहै तो तिनका येवचन सुन संग्रामका प्यारा दुरासद मोदको प्राप्तहोता भया अरुतिन्हें शीघ्रही बोलाकि मैं अभी सेनासहित तिसपास जाता हूं २८ वो तिसीक्षण वो श्रेष्ठ विमान में बैठकर काशीपुरी को जाता भया तो तिस दुरासद दैत्यको पुरीमें प्रवेशहोतेही हाहाकार मचगया ३० तोवहां जोदेवता थे सो सब अन्तर्धानभये तो शिवजी निजभक्तपने अर्थात् येतो हमाराही भक्त है इससे तिसे कुछभी कोपनभये ३१ अरु ये विचाराकि इसे कुछकाल राज्यदिया है सोही वे निजपरिवार सहित केदारक्षेत्र पर चलेगये अरु मुनीश्वर भी भगगये ३२ सोहेशुभे कीर्त्ति वेसारे जैगीषव्य अर्थात् जीतने की इच्छा के विना तिस सन्यास क्षेत्रपें चलेगये तो मोहसे अज्ञान भया येदुरासदमूर्त्ति फोड़ताभया ३३तोवो अज्ञानसे भरा भागी२मंदिरफोडके हर्षेताभया सोकोईभी देवताका स्मरणकरता तोही वो तिसे ताड़ना करकेबाहर निकाल देतारहा ३४ तोकहीं स्वाहा स्वधा वषट् करना ये अर्थात् देवपितृ का कार्य्य कुछभी न होतेभये नकहीं वेदका अध्ययन अरु न कहीं शास्त्रपठन होनेपाया ३५ अरु न पुरातन देवोंकीपूजा अरु नवत न परिक्रमा दुरासद दुष्ट मतिके राज्य करते कहींभी होशका ३६ तो कर्मका मार्ग लोप भये धर्म भी प्रलय को प्राप्त भया तो धर्मकेनाशभये सारे देवता ह्वेकीर्ते भूखेअर्थात् स्थानभ्रष्टभये ३७॥

इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें बाल चरित्र दुरासदका विजय इस नामसे उन्तीसवां अध्याय समाप्त हुआ॥ ३६॥

चालीसवां अध्याय॥

दुरासदके मारनेका उपाय वर्णन कियागयाहै॥

गृत्ससदजीबोले कि तबतो सारे देवर्षिये भी केदार क्षेत्र पर चले गये अरु शिव सहित ब्रह्माजीको वृत्तांत जनाते भये १ सो कि सारे वृहस्पति इन्द्रसे आदिले कर ये कहतेभये-देव ऋषि बोले कि हम देवता स्थानछुटे अरु निज २ आचार भ्रष्ट होरहेहैं तैसेही मुनीश्वर भी, २ सो हे देवजी तिस दुरासद दैत्यके भयसे, हम स्नान करनेकोभी समर्थ नहीं हैं फिर कर्मतो कहांसे होसके सो किसने इसे वरदिया है जो वो त्रिभुवनका ईश्वर भया है ३ येदुष्ट सो अब इसका बध चितवन करो सो जिसमे सब लोगों को सुखहोयसोही आप दयालुभो करके कर्त्तव्यहै, ४ ब्रह्माजी बोलेकि ऐसावचनसुन चारमुख वालेहमबोले कि सुर ऋषियोमें, तिसके बधकेलिये उपाय कहताहूं ५ कि जब तिसने बहुत दिनतक घोरतप कियाथा तब तिसको गिरिजापति जीने असरून वरदान दियेहै, ६ जो देवतिसे हते ऐसा तीनभुवन मे कोइनहीं है जो कभी ये देवदेव जो तीनगुणोके विभागकारी ७ अरुमैं शिवजी, अरु भगवान जिनकी आज्ञा से तीन प्रकारभये हैं सो तीनगुणो के विभागसे वे गणेश ऐसेविरूपावभये-८ अरु जो संसार के व्यापक मायावान विश्व के कर्त्ता अरु संहारक हैं जो गुणोसे परे अरु गुणेश अरु परेसे भी अत्यन्त परे जो, शिवस्वरूप हैं ९ सोजो गिरिजा जी के उदर में अवतार धारे तो कार्य्यहोवे सोतुम पहिले तो शिवजीको प्यारी पार्वती जी को प्रसन्नकरो, १० तिसीके तेजपै उत्पन्न बालक दुरासद के बध में कारण होगा अर्थात् तिसे मारेगा ऐसाही वर शंकरजी ने भी दियाहै अर्थात शक्तिसे उत्पन्न करके तेरीमृत्यु होवेगी ११ गृत्समदबोले ऐसा वचन ब्रह्माजी के मुखसे सुनतेही तबदेव हर्ष अरु तिस शिवजी की कांताभक्त वत्सल भवानीजीकी स्तुति करनेलगे, १२ देवऋषि बोलेकि तिनदेवी जीको हम नम्रभये अर्थात् तिन्हें

हमनम्रभये प्रणाम करते हैं जो जगत्की कारणहै अरु परेसेपर ससार की अनेकधा शक्ति अरु निःशेष देवतोंसे अचितनीय रूप वाली है अरु सर्वथा वन्दनीय पूजनीय अरुगुणरहित गुणोंकी ई-श्वरी है १३ अरु जोतुम धराकी धारण करनेवाली धरणी स्वरूप हो जो चराचर जीवोंकी आधारभईहो अरु त्रिलोकी में सारवस्तु भई अरु तीनोंगुणों के आदिमे भई अरु वेदत्रयी शरीरिणी जोतुम हो तिन्हें हम प्रणतभये हैं १४ अरु हेदेवि वरदाता तुम्हें हमप्र-णतभये हैं जो विष्णुजी को भी विशेष मोहनेवाली अरु देवतो को निजनिज स्थान देनेवाली हो अरु भक्तोंकी पीड़ा हरने वाली अरु सर्व अर्थदाता त्रिलोककी कर्त्ता सम्पूर्ण प्रयोजनों की रक्षक अर्थात् स्वामिनी १५ तबतो ऐसेस्तुति कीगईदेवी देवोंसे बोली कि हेदेव ताओ तुम मन वाञ्छितमागा इस स्तुतिसे सन्तुष्टभई मैं १६ तुम्हे तुम्हारे सारे मन के कामोंको देऊगी तबतो वे देवसारे ब्रह्माजी से कहे बचन को कहतेभये १७ फिर तो तिन्हे देवीजी बोली कि तुम गणनायकजी की स्तुतिकरो जो गणेशजी शुभ अशुभ के कर्ता अरु सर्व सिद्धिकारी प्रभु हैं १८ जो प्राप्त सम्पूर्णकाम अर्थवाले अर्थात् जिनको सदा सब प्रयोजन प्राप्त हैं अरु जो जगके रक्षक हैं देव ऋषिबोले कि हम विघ्नहर्त्ता दयालु गणेशजी को नम्र भये हैं जो सबके पालक हैं अरु सबजगत्के हेतु सर्वव्यापी अरु ईश्वर हैं २० जो अनेक शक्तियोंसे संयुक्त अरु सबकाम पूर्ण करनेवाले अरु जो देव दीनदयाल हैं अरुसर्वज्ञ करुणानिधान हैं २१ अरुनिजइच्छा से ग्रहणकिया स्वरूप नानाप्रकार के अवतार धारने में जो सदा परायण हैं अरु गुणोंसे परे अरु गुणों के चलाने वाले अरु चराचर के गुरुस्वामी २२ जो एकदंत वाले अरु द्विदंत तीन नेत्रवाले अरु दशभुज अरु शुण्डादंड मुखवाले विघ्ननाशक अरु पापहारक २३ अरु नित्यही भक्तों के वरदाता अरु जो रचना पालना संहारकारी अरु जो आदि मध्यअन्तसे रहित अरु प्राणियोंके आदि जीवदेक अर्थात् सम्रद्धिदाता २४ अरु त्रिलोक के ईश्वर सुरोंके अधीश अरु

दुष्टदैत्यों के नाशक लम्बकर्ण अरु भारीहैं किरण अर्थात् प्रकाश जिनका अरु सुन्दर सर्प आभूषण धारी हैं २५ ऐसे वे तिन सर्व सिद्धिदाता गणेशजी को स्तुति करके वे आकाशवाणी को सुनते भये कि तुमको मनका ढचर अर्थात् चिन्ता न होवेगी २६ कि मैं महाबली भयङ्कर दुरामद दैत्यको हतोगा तो ऐसी आकाश वाणी सुन फिर शङ्कर जीपै आये २७ तो तिन्हैं ध्यान में निष्ठ देख के पार्वतीजी को प्रणाम करकेबोले देवता कहनेलगे कि हे शुभेपार्वती हम आकाश वाणी को नहीं जानते कि किसने कही है हे अखिल स्वामिनी अब शंकरजी ध्यान में लगे हैं इस से अब हमको क्या कर्त्तव्य है २८ देवीजीबोली कि फिर देवतोको किवो अभी मरेगा तो तिस क्रोध से वपी बारबार श्वास लेती इसके नाशिका पुट अरु नेत्रसे उत्तम तेज निकला जो ज्वाला की मालाओं से आकुल अर्थात् देदीप्यमान मानो ब्रह्माण्ड को जलानेके लिये उद्यत २९ ३० प्रतिहती अर्थात् मुँदीदृष्टिवाले वेसारे तिसे ज्ञाननेत्रसे अर्थात् हृदय में ध्याकर देखते भये जोकि विनायकजीकी दशहाथकी महा मूर्त्तिथी जो तमनाशक ३१ अरु रत्नजटित क्रोड सूर्य्यसमान मुकुट धारती भई बिजलीकीसी कान्तिवाले रत्न कुंडल अरु सुन्दर दन्त धारण करती ३२ सुन्दर वस्त्र अरु सिन्दूर अरु दशों आयुधधारण किये मस्तकमें कस्तूरीका तिलक लगाये अरु हृदयमें मुक्ताफलयुत मालाडाले ३३ जिसका प्रलयाग्निकेसमानतेज विश्वकोप्रकाशमान करता भया अरु सर्प यज्ञोपवीत तिन्हे जानके सारेदेव प्रणामकरते भये ३४ अरु वे आनन्दघनईश्वरगणेशजीको प्रार्थनाकरतेभये आप योगसे प्राप्त होनेयोग्य भी हमसे देखेगयेहो अर्थात् कृपा करीहै जो आप नहीं प्रकर्षसे तर्कनीयअर्थात् आपमें कोईकिंचित बिचारने कर सकें अरुअविनाशी आपराजितहो३५अरुआरोग्यरूपआभासरहित भेदवर्जित अरुअजर अमरहो अरुसर्व स्वरूपअरु सबकेस्वामी अरु स्वयम्प्रकाशमान् अरु जगन्मय ३६ जो अप्रकट अरु जगत् के आधार ब्रह्मस्वरूप अरुसम्पूर्ण अर्थ केद्रष्टा पुराणपुरुष ज्ञानस्वरूप

अरु वाणी से अकथनीय ३७ हम धन्यधन्य ऐसे कह देवता नृत्य करतेभये गृत्समदजी बोलेकि जैसे तेजस्वरूपी विनायक देवों से वर्णन कियेगये तैसेही जगन्माता देवीजी गजाननजी की प्रसंशा करती भई कि जो निर्गुण अरु निराकार अरु अव्यक्त सर्व गामी परम ३८।३९ अरु ध्यानसे गम्य चैतन्य आभासवाले अरु सच्चिदानन्द स्वरूप जो सर्वव्यापी जगत् के हेतु जो अब तक मुझसे चिंतवन कियेथे ४० अब वे विनायकजीके स्वरूपसे साकारतासेवो देखेगये हो जो मेरेघर अनेकसे दैत्योंकोहतने के लिये ४१ अलोकों के उपकार के लिये अरु चराचर जगत्को रक्षाकरने के लिये सो पार्वतीजी भक्तिसे पूजा करतीभई अरु निज वाहन सिंहदिया ४२ अरु मनुष्यो का सवअर्थ दाता इनका सिंहवाहन ऐसानाम धरती भई अरु तव तिनसे दुरासद दैत्यकावध मांगतीभई ४३ अरुदेवतों की सपत्न रहित अर्थात् नि शत्रु स्थान प्राप्ति मांगती भई ४४॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड बालचरित्र मे दुरासद के वध की प्रार्थना इसनामसे चालीसवा अध्याय समाप्तभया॥ ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

दुरासद के युद्ध का वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोलेकि ऐसेदेवी अरु देवों से प्रार्थनाकिये विनायक जी हर्षयुक्त भये पार्वतीजी को प्रीतिसे प्रणाम करके यह कहतेभये १ श्रीगणेशजीबोले कि मै देवोंका अरु सब लोकोंका उपकार पूर्वक पालन करने को अरु दुरासद को हवने के लिये अरु भूमि भार हरने को २ अरु हेमात तुम्हें सेवने को अरु वेदविहित धर्म्म कर्म करने को हे सर्वज्ञे अवतार भयाहूं जो जो मैं कहूं सोसोही करूंगा अर्थात् दुरासद आदि दैत्य मारि भूभार उतारूंगा ३ विघ्नेश्वरजी के ऐसा कहते २ वे सारे देवता फिर स्तुति नमस्कार करके ये बोले जगत् के कारण के कर्त्ता को कि ४ जो कोई भूमिके छिनकों को अरु आकाश के तारों को अरु जो समुद्र के जलको तोललेय

दुष्टदैत्यों के नाशक लम्बकरण अरु भारीहैं किरण अर्थात् प्रकाश जिनका अरु सुन्दर सर्प आभरण धारी हैं २५ ऐसे वे तिन सर्व सिद्धिदाता गणेशजी की स्तुति करके वे आकाशवाणी को सुनते भये कि तुमको मनका ढचर अर्थात् चिन्ता न होवेगी २६ कि मैं महाबली भयङ्कर दुरामद दैत्यको हतौंगा तो ऐसी आकाश वाणी सुन फिर शङ्कर जीपै आये २७ तो तिन्हें ध्यान में निष्ठ देख के पार्वतीजी को प्रणाम करकेबोले देवता कहनेलगे कि हे शुभेपार्वती हम आकाश वाणी को नहीं जानते कि किसने कही है हे अखिल स्वामिनी अब शङ्करजी ध्यान में लगे हैं इस से अब हमको क्या कर्त्तव्य है २८ देवीजीबोली कि फिर देवतोंको किवो अभी मरेगा तो तिस क्रोध से तपी बारबार श्वास लेती इसके नाशिका पुट अरु नेत्रसे उत्तम तेज निकला जो ज्वाला की मालाओं से आकुल अर्थात् देदीप्यमान मानो ब्रह्मांड को जलानेके लिये उद्यत २९ ३० प्रतिहती अर्थात् मुँदीदृष्टिवाले वेसारे तिसै ज्ञाननेत्रसे अर्थात् हृदय में ध्याकर देखते भये जोकि विनायकजीकी दशहाथकी महा मूर्त्तिथी जो तमनाशक ३१ अरु रत्नजटित क्रोड सूर्य्यसमान मुकुट धारती भई बिजलीकीसी कान्तिवाले रत्न कुण्डल अरु सुन्दर दन्त धारण करती ३२ सुन्दर वस्त्र अरु सिन्दूर अरु दशो आयुधधारण किये मस्तकमें कस्तूरीका तिलक लगाये अरु हृदयमें मुक्ताफलयुत मालाडाले ३३ जिसका प्रलयाग्निकेसमानतेज विश्वकोप्रकाशमान करता भया अरु सर्प यज्ञोपवीत तिन्हें जानके सारेदेव प्रणामकरते भये ३४ अरु वे आनन्दघनईश्वरगणेशजीकी प्रार्थनाकरतेभये आप योगसे प्राप्त होनेयोग्य भी हमसे देखेगयेहो अर्थात् कृपा करीहै जो आप नहीं प्रकर्षसे तर्कनीयअर्थात् आपमें कोईकिंचित बिचारन कर सके अरुअविनाशी आपराजितहो३५अरुआरोग्यरूपआभासरहित भेदवर्जित अरुअजर अमरहो अरुसर्व स्वरूपअरु सबकेस्वामी अरु स्वयम्प्रकाशमान अरु जगन्मय ३६ जो अप्रकट अरु जगत् के आधार ब्रह्मस्वरूप अरुसम्पूर्ण अर्थ केद्रष्टा पुराणपुरुष ज्ञानस्वरूप

अरु वाणी से अकथनीय ३७ हम धन्यधन्य ऐसे कह देवता नृत्य करतेभये गृत्समदजी बोलेकि जैसे तेजस्वरूपी विनायक देवों से वर्णन कियेगये तैसेही जगत्माता देवीजी गजाननजी की प्रसंशा करती भई कि जो निर्गुण अरु निराकार अरु अव्यक्त सर्व गामी परम ३८।३९ अरु ध्यानसे गम्य चैतन्य आभासवाले अरु सच्चि- दानन्द स्वरूप जो सर्वव्यापी जगत् के हेतु जो अब तक मुझसे चितवन कियेथे ४० अब वे विनायकजीके स्वरूपसे साकारतासेती देखेगये हो जो मेरेघर अनेकसे दैत्योकोहतने के लिये ४१ अलोकों के उपकार के लिये अरु चराचर जगत्को रक्षाकरने के लिये सो पार्वतीजी भक्तिसे पूजा करतीभई अरु निज वाहन सिंहदिया ४२ अरु मनुष्यों का सबअर्थ दाता इनका सिंहवाहन ऐसानाम धरती भई अरु तब तिनसे दुरासद दैत्यकावध मांगतीभई ४३ अरुदेवतो की सपत्न रहित अर्थात् नि शत्रु स्थान प्राप्ति मागती भई ४४॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड बालचरित्र में दुरासद के वध की प्रार्थना इसनामसे चालीसवा अध्याय समाप्तभया ॥ ४० ॥

इकतालीसवा अध्याय॥

दुरासद के युद्ध का वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोलेकि ऐसेदेवी अरु देवों से प्रार्थनाकिये विनायक जी हर्षयुक्त भये पार्वतीजी को प्रीतिसे प्रणाम करके यह कहतेभये १ श्रीगणेशजीबोले कि मे देवोंका अरु सब लोकोंका उपकार पूर्वक पालन करने को अरु दुरासद को हतने के लिये अरु भूमि भार हरने को २ अरु हेमात. तुम्हें सेवने को अरु वेदविहित धर्म्म कर्म्म करने को हे सर्वज्ञे अवतार भयाहू जो जो मैं कहू सोसोही करूंगा अर्थात् दुरासद आदि दैत्य मारि भूभार उतारूंगा ३ विघ्नेश्वरजी के ऐसा कहते २ वे सारे देवता फिर स्तुति नमस्कार करके ये बोले जगत् के कारण के कर्त्ता को कि ४ जो कोई भूमिके छिनकों को अरु आकाश के तारों को अरु जो समुद्र के जलको वे

दुष्टदैत्यो के नाशक लम्बकरण अरु भारीहैं किरण अर्थात् प्रकाश जिनका अरु सुन्दर सर्प आभूषण धारी हैं २५ ऐसे वे तिन सर्व सिद्धिदाता गणेशजी की स्तुति करके वे आकाशवाणी को सुनते भये कि तुमको मनका ढचर अर्थात् चिन्ता न होवेगी २६ कि मैं महाबली भयङ्कर दुरामद दैत्यको हतोगा तो ऐसी आकाश वाणी सुन फिर शङ्कर जीपै आये २७ तो तिन्हे ध्यान में निष्ठ देख के पार्वतीजी को प्रणाम करकेवोले देवता कहनेलगे कि हे शुभेपार्वती हम आकाश वाणी को नहीं जानते कि किसने कही हैं हे अखिल स्वामिनी अब शङ्करजी ध्यान में लगे हैं इस से अब हमको क्या कर्त्तव्य है २८ देवीजीवोली कि फिर देवतोको किवो अभी मरेगा तो तिस क्रोध से तपी वारंवार श्वास लेती इसके नाशिका पुट अरु नेत्रसे उत्तम तेज निकला जो ज्वाला की मालाओं से आकुल अर्थात् देदीप्यमान मानो ब्रह्माण्ड को जलानेके लिये उद्यत २६ ३० प्रतिहती अर्थात् मुँदीदृष्टिवाले वेसारे तिसे ज्ञाननेत्रसे अर्थात् हृदय में ध्याकर देखते भये जोकि विनायकजीकी दशहाथकी महा मूर्तिथी जो तमनाशक ३१ अरु रत्नजटित क्रोड सूर्य्यसमान मुकुट धारती भई बिजलीकीसी कान्तिवाले रत्न कुंडल अरु सुन्दर दन्त धारण करती ३२ सुन्दर वस्त्र अरु सिन्दूर अरु दशो आयुधधारण किये मस्तकमें कस्तूरीका तिलक लगाये अरु हृदयमें मुक्ताफलयुत मालाडाले ३३ जिसका प्रलयाग्निकेसमानतेज विश्वकोप्रकाशमान करता भया अरु सर्प यज्ञोपवीत तिन्हें जानके सारेदेव प्रणामकरते भये ३४ अरु वे आनन्दघनईश्वरगणेशजीकी प्रार्थनाकरतेभये आप योगसे प्राप्त होनेयोग्य भी हमसे देखेगयेहो अर्थात् कृपा करीहैं जो आप नहीं प्रकर्षसे तर्कनीयअर्थात् आपमें कोईकिंचित विचारन कर सके अरुअविनाशी आपराजितहो३५अरुआरोग्यरूपआभासरहित भेदवर्जित अरुअजर अमरहो अरुसर्व स्वरूपअरु सबकेस्वामी अरु स्वयंप्रकाशमान अरु जगन्मय ३६ जो अप्रकट अरु जगत् के आधार ब्रह्मस्वरूप अरुसम्पूर्ण अर्थ केद्रष्टा पुराणपुरुष ज्ञानस्वरूप

अरु वाणी से अकथनीय ३७ हम धन्यधन्य ऐसे कह देवता नृत्य करतेभये गृत्समदजी बोलेकि जैसे तेजस्वरूपी विनायक देवों से वर्णन कियेगये तैसेही जगत्माता देवीजी गजाननजी की प्रसंशा करती भई कि जो निर्गुण अरु निराकार अरु अव्यक्त सर्व गामी परम ३८।३९ अरु ध्यानसे गम्य चैतन्य आभासवाले अरु सच्चिदानन्द स्वरूप जो सर्वव्यापी जगत् के हेतु जो अब तक मुझसे चितवन कियेथे ४० अब वे विनायकजीके स्वरूपसे साकारतासेतौ देखेगये हो जो मेरेघर अनेकसे दैत्योंकोहतने के लिये ४१ अलोकों के उपकार के लिये अरु चराचर जगत्को रक्षाकरने के लिये सो पार्वतीजी भक्तिसे पूजा करतीभई अरु निज वाहन सिंहदिया ४२ अरु मनुष्यो का सबअर्थ दाता इनका सिंहवाहन ऐसानाम धरती भई अरु तब तिनसे दुरासद दैत्यकावध मांगतीभई ४३ अरुदेवतों की सपत्न रहित अर्थात् निःशत्रु स्थान प्राप्ति मांगती भई ४४॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड बालचरित्र मे दुरासद के वध की प्रार्थना इसनामसे चालीसवा अध्याय समाप्तभया॥ ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

दुरासद के युद्ध का वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोलेकि ऐसेदेवी अरु देवों से प्रार्थनाकिये विनायक जी हर्षयुक्त भये पार्वतीजी को प्रीतिसे प्रणाम करके यह कहतेभये १ श्रीगणेशजीबोले कि मै देवोंका अरु सब लोकोंका उपकार पूर्वक पालन करने को अरु दुरासद को हतने के लिये अरु भूमि भार हरने को २ अरु हेमात तुम्हें सेवने को अरु वेदविहित धर्म्म कर्म्म करने को हे सर्वज्ञे अवतार भयाहूं जो जो मैं कहूं सोसोही करूंगा अर्थात् दुरासद आदि दैत्य मारि भूभार उतारूंगा ३ विघ्नेश्वरजी के ऐसा कहते २ वे सारे देवता फिर स्तुति नमस्कार करके ये बोले जगत् के कारण के कर्त्ता को कि ४ जो कोई भूमिके छिनकों को अरु आकाश के तारों को अरु जो समुद्र के जलको तौललेव

सोही आपके गुणोंकोजानेगा ५ ये देवो की दृष्टि धन्यहैं जो हेप्रभो आपको देखे हैं अब हमारादुःख दूरभया अरु निजनिज पदप्राप्त मानोंभया है ६ सो हेसबके ईश्वर इस दुरासद को मारो अरुभूमि भार उतारो ब्रह्माजी बोले कि ऐसे देवोका वचनसुन विनायक जी हँसतेभये ७ अरु दशआयुधधारी प्रभु बोले कि मैं सबकरूंगा ऐसे हर्षसे गद्गद वाणीकरके विनायकजी देवोको ऐसे कहकर ८ सिंह पै सवार भये तब शीघ्रही बनारस पुरीको गये तो तिनके पीछे २ देवसमूह अरु गिरिजा शंकरजो भी गये ९ तो दुरासद दैत्य भी विनायकजी को देवसेनासहित आगये जानकर आपभी नगर से बाहर आता भया १० तो दैत्यकी सेनाको देखके विनायकजी गर्जना करतेभये जो सेना सेनानी अरु दृढ़शस्त्रोसहितथी अरु और२ भीनानाविधिके आयुधोवाली अरुजोमेघके समान वारबार गर्जती जो विनायक जी सारी गुफाओ को विदारण करते गर्जे औ तिस महादैत्य से बोलेकि रेतू अबभी क्यों भ्राति सेभ्रमा भया है ११ १२ जो तुझ करके चलसेती देव गण औ राजा जीतेगये औ सारे मुनिभी तुझसे धिकारे गये तब हे खल दैत्य मैं न भया १३ पहिले निर्भयभये तैने बहुतदोष इकट्ठे किये हे तिनसबो का फल तू अब मुझ गणेशसे पावेगा १४ जोकि तुझ करके त्रिलोकी के बासीजन सारे उपद्रवको प्राप्तकियेगये हे तिसीलिये मैं तुझे मारने अरुभूमि भार उतारने को अबतो भयाहूं १५ अरे अब तू मान औ दुस्त्यज लाजको तज के शरणहोजा जो तू सग्राम मे आवेगा तो अभीमारा जावेगा १६ जोशिवजी से पाये वरकरके तैनेसब त्रिलोकी पीडित कीहे तिस दुष्टको ऐसेकहकर रणचावंवाले १७ निज ज्वालामाला समान प्रकाशमान फरशुको तौलतभये औ तिसके चलाने से सूर्य्य जी को ढकके प्रळय अग्नि के समान १८ तो वेगसे तिसके हृदयमें यमकी नाई शस्त्रछोडकर तो तिस कुल्हाडे से हतेभये तिसका रोम भी चलितनभया १९ वो क्रोधसे रक्तनेत्रवाला त्रिलोकीकी ग्रसता भयासोउठा औ तिन विनायक जी से यह कहताभया दुरासद २०

कि मेरे आगे नतो देवता न देवराज इन्द्र औ न दिग्पाल आश के तू बालकपन से कैसे चलाआया है सो अभी भगजा २१ अरे मूढ़ मैंतो यमसेती भी नहींडरता हूं तूकिसलिये मरनचाहता है ऐसेकह फिर मियानसे महाउज्वलखड्ग निकालके २२ छूरेकोसीधारवाला जिसके घातसे,पहाडभी चूर्णहोगये तिस करके वो दैत्य देवजी के मारताभया तो तिन्होने तिसेअंकुश से हटादिया २३ तबवो तल-वार फिर फरशु के घात से सौ प्रकार से टूट के गिरी तो तलवार टूटे वो महादैत्य मल्लयुद्ध को आया २४ तो देवजीभी शस्त्र त्यागके निजबलसे तैसेही वधगये तबतो तिनका महाघोर रोमहर्षानेवाला क्लिष्टयुद्ध भया २५ सोकि वे निज निज बाहुओं से औ कोहनियों से औ घूंसोंसे अत्यन्त प्रहार करते भये पैरोंसे औ गोडेजघोंसे औ पीठोंसेभी आपस मे प्रहारतेभये २६ जो महास्वन वाले एककेदेह मे एक२ आवृत्ति अर्थात् औसरे सिरसे कूद फुदक के पड़ते भये जो एडियों के औ कोहनियों के घात करते भये २७ औ तैसेही साथल औ गोड़ों के घाव कररहे औ वे परस्पर कन्धों के घातकर रहे औ वेपृथ्वी में लोटते भये जो अत्यन्तही धूलसे अत्यन्त धुंधले होरहे औ आपस मे जीतते औ अच्छा २ कह रहे ऐसे बहुत दिन होते युद्धको देख देवता विस्मित होते भये २८ औ चित्तसे बहुत लज्जितहोते इनके सामर्थ को देखकर फिरतो विनायकजी तिसके ल्लिलाट में दृढ़मुट्ठी अर्थात् घूंसा मारतेभये ३० तो धरतीमें गिरते तिसका मुँहफट गया तो वो वज्रसे हते पहाड की नाई चार घडी पृथ्वीपर पडारहा ३१ सो फिरभी किसी प्रकार से सचेतभया तो भारीमूर्च्छाको त्यागकर फिरतो अत्यन्त आतुरभया वो अपने आपे को असमर्थ मानताभया ३२ तो दिनकेअन्त अर्थात् शामको निज सेना में दैत्य औ वे विनायकजी भी आतेभये ३३ ॥ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तर खण्ड बालचरित्र मे दुरासद का युद्ध वर्णन इसनाम से इकतालीसवां अध्याय समाप्त भया॥ ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीसे दुरासद दैत्य का पराजय वर्णन कियाहै॥

गृत्समदजी बोले कि तब तो वो दैत्यराज बिनायकजी के पराक्रम को जानकर धीर्यधारके गजाननजी पै अस्त्रविद्या से युद्ध को आताभया १ फिर तो शिवजी अरु तिस अग्नि देवतावाले मन्त्र का आदरसे स्मरण करके तब तो सर्व वेत्ता विनायकजी मेघ अस्त्र कोछोड़तेभये २ तो हाथीके शुंडसरीखी धार तिसीक्षण से उत्पन्न भई अर्थात् पडनेलगी तो तिसीक्षण से वो वह्नि ठंढा भया तो वो दैत्य क्रोधयुक्तभया ३ पवनास्त्र जो शीघ्रगामी अरु वर्षाहटानेवाला तिसे छोडता भया तो धरती काँपी अरु वृक्ष पर्वत भी भूपै पडते भये ४ तो तिस अस्त्रसे तिसी आधे क्षणमें वे महामेघ क्षयभये तब तो देवजीने मन्त्रके बलसे पर्वतास्त्र को प्रकटकिया ५ तो सारे पर्वत होगये अरु वो पवनास्त्र रुकगया तब वायु अस्त्र बिलीनभये दैत्य ने रुद्रजीके अस्त्रको छोडा ६ तिसके छुटतेही वक्रतुंडजीने भी तिसे हटानेको ब्रह्मास्त्र छोडा तो वो सारीसेना भस्म करनेको चला ७ तो वे अस्त्र बहुत दिन आपसमेंही लडतेरहे तो तिनके सङ्घट्टन से झडा अग्नि धरतीतल मे गिरा ८ तिससें जलते जनों का जानके वे अस्त्र हे शुभेकीर्त्ति ब्रह्मा शिवजीकरके वारणकियेगये तो वो दैत्य विनायकजीको अपनेसे भारीजानके मंत्रियोंसेबोला ९ कि तुम सारे तिससे युद्धकरो में भोजन करके फिर रण में आताहू तब तो मंत्री सब सेनाओंको विनायकजीसे लडानेलगे अर्थात् सारीसेना अकेले बिनायकजीसे लडनेलगी तबतो तिसक्षणमें विनायकजी अकेलेपन से चिन्तापन्नसे चिन्ताको प्राप्तभये तो तिन्होने निजतेजसे छै अरु पचास अर्थात् छप्पन मूर्त्तियें बनाईं ११ जो सारे नानाप्रकार के अलंकार वाले औ नाना माला गलमें डाले वे सारे सुन्दर भुज बाजूबाधे अरु चन्द्रभूषण १२ कोई चारभुज अरु कई छै भुजवाले कई दशहस्त कई सिंहपर सवार अरु मोरचढ़े कई मूषक वाहन

वाले १३ तो तहां सारे सेनावालोंको विदारकरते युद्धकरते भये सो कइयों के पाव तोड़ेगये अरु कइयों के मस्तक भी कटे १४ कइयों के हस्त कटगिरे अरु गोडे जांघ उदरफटगये अरु कई गर्जते हुकार करकेही शरणआये १५ अरु कई जीनेके कारण पलायनमें परायण भये अर्थात् भगगये अरु कई प्रहारहीकरते सन्मुखहो मरतेभये १६ तो वे स्वर्गमेंगये अरु अप्सरा भोग भोगतेभये अरु तहा घोडे रथ हाथी घोड़े घोडी उष्ट्र अनेकसे १७ सो वे नाना शस्त्रोंसेहते खडित देहभये वे प्राणगिरे तो तहा लोहू की नदियें वहनेलगी जो बाल शिवालकी शोभावाली १८ छुरी तलवार मच्छी वाली हाथी मच्छो वाली कछुवे ढालोंवाली रुण्ड मुड चन्द्रमावाली मेंगी झाग वाली मेदा है कीचमहू जिसमें १९ चाप हैं शस्त्र जिसमें हाड हैं बगले जिसमें चर्मगाठ हैं मेंडक जिसमें सो शूरवीरों के चित्त प्यारीनदियें रीछआदिकोंसे शोभायमानहोतीभई अर्थात् महाभारी युद्धहुआ २० वो भोजनकरके आयके तिससंग्राम मडलको देखताभया तो सारी सेनानाशभये तव वो दैत्य अति दुःखित भया २१ अरु मनसे तिस वचनको स्मरणकरताभया जो शकरजीने कहाथा कि वरदेनेकेसमय में कि शक्तिके अशमेंउत्पन्नसे तेरा पराजयहोगा २२ सो ये बालक ही शक्ति से उत्पन्नहै क्या जो इसमें त्रिलोकी का सार भूत महा-भारी वल देखनेमें आयाहै २३ सो इसमें तो काल भी नहीं जीत सके वहा औरकी तो क्याकथाहै ऐसे वो मन में ठानकर अकेले पने करके पलायन भया २४ तो वक्रतुडजी चिता करने लगे कि भा-गते शत्रुको न मारना अरु देवोंसे इसकी मृत्यु नहीं ये ऐसे शकर जीने कहाहै २५ तिससे योगवलसे मैं उत्तम विराट्रूपहोके स्थित होऊंगा तब विराट्रूप से तिसे हाथ करके धारणकरते भये २६ तो वे एकपैर से तो बलसेती काशीपे रख तिसकी रक्षा करने को स्थितभये अरु दूसरापैर तिसदैत्य के शिरपर रखते भये २७ अरु दैत्यसेबोले कि रे दुरासद शिवजीके वरसे तेरी मृत्यु नहींहै इससे इसनगरमें गिरिराज की नाईं निश्चलरह २८ इसप्रकार द्वारभया

रहु क्योंकि पहिले तेरादर्शन सबकोहोवेगा सो दुष्टों को नित्यपीडा करता तू नित्य मेरेपासरहु २९ तो दैत्य भी परम भक्ति से तिसी वरको मांगताभया दैत्यबोला ऐसेही मेरे शिरपर पैररखकर सदा रहिये ३० मुनि बोले विनायकजी तिसे तैसेही कहकर काशी में स्थितभये ऐसे वे दुरासदको जीतकर पृथ्वीको कल्याणवतीकरते भये ३१ अरु देव मुनि ये तिन विनायकजी को पूज प्रणामकर अरु तिनपै पुष्पवर्षाकरके निजर आश्रमोंको जातेभये ३२ और २ भी जो तिन बिनायकजी को पूजतेथे सो सब कामो को प्राप्तभये ऐसे विनायकजी की काशी मे छप्पनमूर्ति येहैं ३३ अरु(तुंडननाम) पुरमे भी एकपाद बिनायकजी हैं सो वे विराट् रूप-सहार करके सबकामप्रदाता स्थितहै ३४ जो भक्तिवाला नर इसश्रेष्ठ आख्यान को सुनै सो सारेकामोको अरु गणेशजीके पदकोप्राप्तहोताहै ३५ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंडमेंबालचरित्रमें दुरासदपराजय इस नामसे बयालीसवां अध्याय समाप्तभयाहै॥४२॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

सब देवोंकरके श्रीगणेशजीकी,स्तुतिकरना,वर्णन कियाहै॥

गृत्समदबोले कि तिनविनायकजीकरके तिस दुरासददैत्यकेहते दिक्पाल अरु मुनीश्वर अरु सूर्य चन्द्रमा बृहस्पति शुक्र १ दुरासद रिपु प्रभु देवोके देव विनायकजीकी प्रशंसाकरनेलगे कि आपने श्रुतिस्मृति से कथित मार्गको यथावत्स्थापनकिया जो इसअसुरको माराहै २ अरु दुरासदमे असक्तभये हमकोभी आपने स्थापितकिये हैं आपही विश्वरचतेहो अरु आपही फलदाताहो ३ अरु सब प्राणियों मे स-मान आपकर्मोकरके लिप्त नहींहोतेहो तुम्हारेही आश्रय चारोंवर्ण हैं अरु प्राणीभी आपहीके आश्रयहै ४ अरु जो नानाप्रकारके अर्थो को ढूंढते अरु तिसर कर्ममेजोडते अर्थात् कर्मानुसार फलदेते अरु विद्वानोंने ढूंढनेमेंही यह (ढुंढिधातु) कहाहै ५ सोही जो यह ढुंढी हैं अरु राज यह उत्तर सज्ञा है जो तुम्हारा दर्शन पूजा ध्यान

स्मणाहै६ सो धर्म अर्थ काम मोक्षोका साधक अरु पुत्रपोत्र दाता है ऐसे कह वे सारे इन्हें आक अरु शमीपत्रो से पूजतेभये ७ अरु श्वेत हरित दूर्वांकुरोंसे अरु पुष्पोंसे भी अरु नानापकवान नैवेद्योंसे अरु और २ भी नानाफलोंसे ८ रत्नोंकेसमूह अरु ब्राह्मण भोजनों से तिन्हे संतुष्ट करते भये ऐसे वे पूजित भये सात आवरण रूपी सारे विनायक छप्पनवो काशीजीकी रक्षाकरनेको स्थितहैं एकतो पंचमुखो तहा विश्वेश्वरजो के द्वारेपर विराजमान है अरु और भिन्न २ नामवाले बनारस पुरीको व्याप्तहोकर विराजमान हैं ६। १०।११ सो विश्वेश्वरजीके स्थितभये ऽते वे सारे भी वहांही वि-राजमानहैं अरु चन्द्रतक अर्थात् प्रलयावधि निज २ अधिकारोंमें ब्रह्मादिक सारे मुनीश्वर अरु सारेलोक सब कर्मोंको पहिलेकीनाईं करतेभये १२ हे कीर्ते ऐसे मैंने तुझको जो तैंने पूछायासो कहा है जोकिढुंढिराजजीकाधर्मकाम सुखप्रदाता अवतार हमनेवर्णनकिया है १३ अब मैं तेरे से दिवोदास नाम काशिराजका प्रकट होना अर्थात् सांगोपांग उपाख्यान वर्णन करताहूंगा तू चित्तसे तिसे सुन १४ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में बालचरित्र ढुंढिराज आख्यानइसनामसे तैंतालीसवांअध्याय समाप्तभयाहै ॥ ४३॥

चवालीसवां अध्याय ॥

दिवोदासको काशीजीका राज्य मिलना वर्णन कियाहै ॥

कीर्तिबोली कि हे मुनि गृत्समद जी आपने शक्तिजी से उत्पन्न ढुंढिराजजीका अवतार वर्णन किया है जो दुरासदके वधके लिये अरु त्रिलोकी को पालनेके गर्भभया १ सो वे एक पादसे तो ढुंढन नगर में स्थित अरु एकपैर मे दैत्यको दबाकर काशीजी में स्थित हैं ऐसा सुनाहै २ सो दोनों पैरोंसे दोनोंही स्थानों में स्थित कैसे हो इसमेरे संशयको आपदूरकरो क्योंकिआप सर्वज्ञाताहो ३ गृत्स-मदबोलेकितिन विश्वस्वरूप विनायकजीके राज्यकरते वयाअसाध्य है जो विश्वकेकर्ता विश्वरूपकहैं अरु विराट्पापी विश्वेश ढुंढिराज

जीहैं ४ जो परमविश्वके अंतर्यामी अरु समारके संहार कारक सो व पातालचरण जिनकेसर्वत्र हैं कान नेत्र जिनके अरु जो मनके अरु वेदों के अरु ब्रह्मादिकोंके अरु योगीजनोंके ५ अगम्य अर्थात् जिनसे ग्रहण नहीं किये जावें जो तत्त्वरूपसे पवन पृथ्वी जलरूप हैं जिनके रोमोंके छेदोमेंकोटोब्रह्माड ६ पवनसेफटकारे आकाशमें पत्तोंके समान भ्रमरहेहैं अरु हेमात जहासशय वा तर्कनाकुछभीनहीहै ८ जो विभु अनेकरूपी अरु चर अचरको करने के लिये समर्थ हे रानी कीर्ति जिनकी इच्छासे अमृत वल्ली भी विषरूप होजाती है ९ अरु विषरूपजोहो सो अमृत होजावे तहां क्या २ नहीं सम्भव होता अर्थात् वे समर्थ हैं देवजी के अवतारकी विचित्र गतिहै १० सा कि कितने २ अवतार कहा २ कब २ होते हैं यह निश्चय शेषजी सहित सारे देवतासे भी सदा चिन्तनेसे निश्चय नहीहोते ११ इससे तू सदेह त्यागकर मुझसे कहीजातीहै इस कथाको सुन हे सर्व धर्म जाननेवाली जिसे सुनके जन पाप समूहसे छुटजावे १२ सो कि पहिले सूर्य्य वशमे उत्पन्न (दिवोदास) राजाभया वो दानी महामानी अरु सब भू मडलमें माननीय १३ जो बृहस्पतिजीके समान वाक् चतुर अरु सर्वज्ञाता सदाकल्याण स्वरूप जो वेद शास्त्र पुराण ज्ञानी अरु विद्वान् जनोंकाप्यारा १४ अरु स्त्रियों का मोह नेवाली देह जिसकी जो आप जितेन्द्रियपने से सदा स्थित जो नित्यही उपकार मे परायण अरु पराये द्रोह से पराङ्मुख अर्थात् उलटा १५ अरु जो पराये धनमें इच्छा रहित अरु भारीहै लक्ष्य अर्थात् निशानमानी जिसका अरु पराक्रमवान् सोतिसकेतपसेप्रसन्न भये ब्रह्माजीने वर्षासे रहित काशी में लोकके उपकारी जोने तिसे उत्तम राज्य दियाथा तो तहा वर्षा न होनेके कारण सबके बाहर निकल जानेसे तिस बुद्धिमान्ने राज्य ग्रहण किया १६। १७ वो तहा वो आपही सूर्य्य इन्द्र अग्निहोताभया अरु पवन चन्द्रमाभी तो धर्म्मसे तिस पुरीको पालताभया १८ तो तिसके तपसे वर्षाभी भई तो लोग इधर उधरमे अविमुक्तके पास आये अरु तिसराजा

को मगहर्ते भये १९ अरु तिसकी (सुशीलानाम) से स्त्रीभई जो नामी पतिव्रता अरु धर्म्म स्वभाव वाली दानमें परायण अरु पति के वाक्यमेंतत्पर२० अरु यह राजा आचारव्यवहार अरु पण्डितों करके प्रायश्चित्त कराताभया अरु राजदण्ड न लेताभया २१ अरु शिवजीसे सहित सबदेवता मन्दराचलको चलेगयेतो तिसके राज करते न तो अपमृत्यु न शोक अरु न किसीको भी कभी दुःखथा२२ अरु तीन प्रकारके अर्थात् पृथ्वी पाताल आकाशका कोई उत्पात न होताथा अरु तिसके राज्य करते हाहाकार मिटगया जो न वर्षा से होरहाथा भारी २३ पशुपक्षि मनुष्योंका सो मिट गया अरु बहुत खेत उत्पन्न भये अरु न वर्षाके योगसे वे सब प्राणी प्रसन्न होतेभये अरु स्वाहा स्वधा वषट्कार सब पूर्ववत् होतेभये अरु वे देव सुखको प्राप्तभये जो पहिले राजाकी प्रार्थना करतेथे२४।२५ अरुब्रह्माजीके वचनसे प्रेरेसारेदेवता जिसराजाकी स्तुतिकरतेभये अरु वह भी देवोंके दर्शनसे अत्यन्त प्रसन्नभया तिनकीनानास्तुति करता भया २६ ॥ इतिश्री गणेशपुराणे उत्तरखण्ड में दिवोदास उपाख्यान इस नामसे चवालीसवां अध्याय समाप्त भयाहै४४॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

देवतों करके दिवोदासका अपराव देखना वर्णन कियागया है ॥

कीर्त्तिबोली कि हे मुनि कैसे सारे देवता मन्दराचलपर्वतको चले गये अरु या रत्नरूप वाराणसीपुरी शिवजीने कैसे त्यागदई १ हे देवर्षे महामुने यह आप मुझसे कहो मुनिजी बोले कि बारहवर्ष न वर्षाभये अरु चराचर जगत्केनाशभये२ अरु भूतलके हवन तर्पण जाप आदिसे रहितभये ब्रह्माजीके वाक्यसेप्रेरे देवतोंकरकेशिवजी प्रार्थना कियेगये३कि हे महादेव हेजगत्केनाथ हे करुणाकेस्थान शंकर जी (मरीचिजी) मन्दराचल में बैठके तप कररहे हैं ४दश सहस्र वर्षसे सो आप तिसे वरदेने के योग्यहो सो वहां चलिये मुनिजी बोले ऐसे प्रार्थना किये करुणा के आकर शंकर जी ५

अग्नि सूर्य चंद्र आदि देवता समूहोंके साथ महामुनि मरीचि जी कोवर देनेकेलिये तहांपहुंचे६ तोअस्थिमात्र शेष तिनमुनिजीकोसदा-शिवजी देखते भये जब वे न जाते तो तभीवेमुनिजी प्राण तजदेते ७ तोविनमुनिजीके तिमतीव्रतपसे प्रसन्नभयेगिरिजापतिजीअपना स्वरूपदेकर विमानसे निजपदको८ निजगण औ बाजेगाजेके साथ पहुंचातेभये अरु सबदेव गणोंकेसाथ शम्भुजी तिससुन्दर गिरिराज में विराजमानरहे ९ तो सदाशिवजीदिवोदासका कुछभी छिद्र अर्थात् पतनकारक कुकर्मादिक न देखते भये तिसके छिद्र जाननेको शिव जी देवतोंको आदरसे भेजते भये १० सोकि जो २ देवता काशीजी जातेसो २ तिसका कुछभीभेद न पातेभये अरु वे तहां निज२नामसे लिंगस्थापना करकेके तहांहीं रहते भये ११ अरुदिवोदासकेराज्य में तो चारो वर्ण निज२ धर्ममें परायण भये औ सारेब्राह्मणनिज२ आश्रममें स्थितभये ये दो दितआचारसहितथे १२ शिष्यगुरुशुश्रूषा कारी थे औ स्त्रियें पतिव्रता थीं औ धर्मशील दान में परायण व्रत उपवास तत्परथीं १३ औ पतियें तोत्तकाल नियम वाले औ होम कर्ता मौनीथे औ स्नान संध्या जप होम पठन देवता पूजन १४ औ अतिथि भाव वलवैश्वदेवकर्म स्वाधीन भये करते भये औ गृहस्थीभी निष्पापभये भक्तिसे निज २ कर्म करतेथे १५ इसीसे धर्मवृधा औ वर्षाभी उत्तमभई औ स्वर्ग में पितर देव मोद प्राप्त भये१६ औ कोई न तो वाझ औ न कोई पुष्प रहित न विधवा न मरी संतानवाली अर्थात् जिसकेबालक होकर मरजाते ऐसी थीं औ न जहां अवर्षा न अति बरषा औ न अपनी पराई चढ़ाई हो-ती भई १७ औ अत्यंत तोते औ टीडियें भी भई औ न कभीवहुत मूषकभये ऐसे सब खेतियों की सुखसे निपजन सिद्धि होती भई जिसके राज्यमें जो विश्वेश्वर माधव ढुंढिराज औ भैरव दंडपाणि स्वामकार्त्तिक औ गंगाजी को दर्शन न करके वा न स्नान करके भोजन करै तो वो दंडनीयहै ऐसे वो नृप श्रेष्ठ नित्य २ डौंडीवज-वाताथा १८।१९।२० औ ऐसे नृपश्रेष्ठके स्थितभयेतहांपापकालेप

भी नहीं होताथा औ बिनाछिद्रके तिसकेराज्यलेनेको शिवजी नहीं चाहते थे २१ फिरतो वे काशीजीके वियोग से दुःखीभये फिर तो तहा विघ्न करनेके लिये आठो भैरवों को भी भेजते भये २२ औ तिनसे कहाकि तुम तिसके राज्यमें कुछविघ्न करदेवो तोहेकल्याण कीर्त्ते वे शिवजी से आज्ञा पाय तुर्तसे जाते भये तो वे काशीजी को देखकर स्नान कर्म करके विश्रामको प्राप्तभये २३।२४ तिसके कुछभीपापको न देखके काशी वास करतेभये औ शिवजी तिनके न आये चिंतामें परायण भये २५ फिर तब तिस राजाका छिद्र देखने को बारह आदित्यो को भेजतेभये तो वेभी तिसके पुण्य-हीकोदेखके हर्ष युक्त भये काशी बास करतेभये २६ औ यह विचा-रतेभये कि शिवजी का कार्य्यनहीं हो तो यह पुरीभी न छोडनी है तबतो तिन्होने चौंसठ योगिनियें भेजी २७ तो वेभी दिवोदास के थोडे भी अपराधको न देखकर अविनाशी विश्वेश्वरजीको पूजती तिसी वाराणसी में रहीं २८ फिरतो तिन्होने दुःखविनाशिनीदुर्गा जी कोभेजी तो वे भी तिसकापाप न देखकर गांवसेबाहरहीस्थित भई २९ तो वे ध्यानसे तो महादेव जीको औ सबकामोसे मनुष्यो को प्रसन्न करती भई औ फिरशम्भुजीने तुरंतही दश दिक्पालो को भेजे ३० तोवे काशीजीकोगये औ तिसकाकुछ पाप न देखतेभयेतो वे भी निज २ नामसे लिंगस्थापन करकेहर्षसेतहांहीबसतेभये ३१ फिर तो उनमने शिवजीने ऋषीश्वर भेजे तो वेभी शिवजी से प्रेर-णा किये हर्षित भये गये ३२ तो तहा जाय तीर्थ विधान बनाय वाराणसीमें स्थितभयेसो आशीर्वादकेलिये जातेअरु तिसकाचेष्टित किया अर्थात् छिद्र देखतेभये ३३ अरु वो दिवोदास तिनसबों को धन वस्त्रोंसे भक्ति करके पूजताभया तो वे भी निज २ नामसे लिं-ग स्थापना करके परम तप करते भये फिरतो तिन शिवजीने सा-रे देवता कार्य्यसिद्धिके लिये भेजेतो वे भी धर्मचारी तिसका अ-पराध न देखतेभये तो शिवजी चिंता में परायण भये अरु तिसके निश्चयको न पहुचे कि जिस २ को हम भेजतेहैं सो २ ही काशीसे

नहीं आताहै तो शिवजी मनमें यह बिचारते भये कि मैं तिस पुरी को कब देखोंगा ३४।३५।३६।३७ जब दिवोदास के राज्यमें पाप होगा तभी हमको काशी प्राप्त होगी और कई प्रकारसे नहीं मिलनेकीहै ३८ अब बिना ढुंढिराज अरु भगवान्‌के सारे देवता निरर्थक होगये औ उलटके भी नहीं आये सो ध्यानमें परायण भये काशीजी मेंही विराजमान होरहे हैं ३९ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंड में बाल चरित्रमें दिवोदासउपाख्यान वर्णनं इस नामसे पैंतालीसवां अध्याय समाप्त भयाहै ॥ ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजीकरके ज्योतिषीवन के जाना अरु दिवोदास को मोहित करना वर्णन कियाहै ॥

मुनिजी बोले कि तबतो अविमुक्त के बियोग से परितप्त भये शिवजी सब अर्थ वशकारी ढुंढिराजजी को नमस्कार करके आतुर भये प्रार्थनाकरनेलगे १ शिवजी बोले कि हे गणेश तुम पंचभूतों के कारणोंकेभी कारणहो अरु चित्त आनन्दघन अरु विश्वसे ध्याने योग्य अरु वेदांतकके ग्राह्यहो २ अरु प्रधान पुरुषभी आपहीहो जो तीनगुणोंके विभागकरी औ निर्व्वापक विश्वनिधान अरु बिश्वकेपालनेमें परायणहो ३ अरु भूमिभार हरनेको तयार नानावतार धारीहो अरु देवोंके पालनेमें तथा दैत्योंके मारने में समर्थ हो ४ अरु द्विजोंके अरु धर्म्मों के औ दुखी शरणाभिलाषियों के रक्षक ब्रह्मस्वरूप आप अप्रत्यताको प्राप्तहोते अर्थात् तिनके घर में अवतार धारते हो ५ सो अब काशीके विरहमें दुखित हम और किसपै शरणजावें ढुंढिराजजी बोले कि सब विद्या में कुशल और औरोंकोही आप भजतेहो ६ हे सदाशिवजी सबके देखनेवाले भी आप क्यों मोहको प्राप्तहोतेहो शिवजी बोले कि हे गजानन तुम अभी अविमुक्तपासजावो ७ दिवोदासविघ्नार्थ औ मेरेकार्य्यके प्रयोजनकी सिद्धिके लिये औ मायासे सब जनको मोहित करो जिससे

तिसका पुण्यक्षयहो ८ढुंढिजीबोले कि हेमहादे जीमैंशीघ्रही जाता हूं आपचिन्ता न करो आपका वांछित सिद्ध करूंगा सो कि आप को आपकी पुरी फिर भी देखादेऊंगा ६ जनाके पाप भोगने वाले दिवोदास काशिराज को बाहर करकेअर्थात् फिर आपकोकाशीजी में बुलाऊंगा १० मुनि बोले किऐसे कह शिवजी को प्रणाम करके औ पार्वती षडाननजीको भी प्रणामकरके तथा नारद गुरुजी की प्रदक्षिणा करके सम्पूर्ण विद्या अरु कलाओंके निधान विभु विनायकजी प्रस्थान करते अर्थात् जातेभये ११ तो पवित्र व राणसी को प्राप्तभये अरु तिसका पुण्यही देखने भये औ तिसके पाप को न देखकर सो विनायकजी शीघ्रही ज्योतिषी बनगये १२ जो सुवर्ण सरीखी कान्तिवाले सुन्दर शरीर मोतियों की माला से विभूषित औ मोतीजडे सुवर्ण के सुन्दर कुंडल कानों में झलकाये १३ जो बत्तीसों लक्षणोंसे संयुक्त औ भूत भविष्य वर्त्तमान जानने वाले औ नाभिमें भारी रत्नोंसेविभूषित कटिबन्धन अर्थात् तगडी बांधे १४औ पीलेवस्त्र पहिरे औ सुन्दर सुगन्धलेपे अरु कामदेवसे भी अत्यन्त सुन्दर शरीरवाले जो कामिनियों को मोहने वाले १५ तो जो पतिव्रता नारियेंथीं सोभी क्षिप्तभये तिन विनायक जी को चाहती भई औ वो ज्योतिषीजी मनमेंचितेभये सब प्रश्नों को बताते भये १६ इसीसे पतिव्रता स्त्रियें भी तिनपे प्रश्न करने को आई सोकि निज निज बालक भर्त्तार भाई अरु और और सबजनोंको छोड़कर अरु वे अपनीही माया से दिखाये सबलोगों के प्रश्न बताते भये १७ अरु सेवते सारेलोगों को बहुतसे वर देतेभये अरु तिसवरके प्रभावसे दुष्ट कुष्ट अर्थात् घृतदिना कोढ़भी नाशहोताथा १८ अरु तिन्हों के वरदान से सारी बाझस्त्रिये पुत्रवती अर्थात् सगर्भ भई अरु ये हाथ देखके महाभाग्य फल कहतेरहे १९ अरु जो जो जिसने भोजन किया अरु करेगा सो सो तिसीक्षण सेही बताते भये २० तो नगर में सबलोग विस्मित रु पंचक भये ऐसा सर्वज्ञानी गुणकी खान अरु न्य कोईभी देखनेमें नहीं आया २१

ऐसा न भया अरु न होगा लोग इन्हें ऐसे कहते भये अरु इनके विश्वास अर्थात् सचावट को जानकर इन्हे धन रत्नोसे पूजते भये २२ औयेहाथम लईवस्तु क्षणमें बतादेते अरु येपूछनेको आयेधनाभिलापी अरु अन प्रयत्न अर्थात् उद्योग चाहनेवालेके अभिप्राय को जान जाते थे अरु पढभये को भी जानके कहते कि तीन दिन के भीतर तू धनाढ्यहोगा अरु इसको उद्योग अर्थात् अजीविका मिलेगी २३।२४ अरु वे खोयेगये धनादिक को बताते भये अरु जो जो जैसेजैसे प्रयत्न करताभयासो सब तिनकेकहेसे तैसे२ही होताभया सोकि विन ब्राह्मण स्वरूपी ढुंढिराज जी को ऐसा ही हो ऐसे कहते हो २५ तो दो तीन महीनो मे जनो से कही वार्ता राजा के कान में प्राप्तभई जनबोले कि राजपत्नियें अरु और भी जो पतिव्रतापन मे परायण थी २६ इतने कालतक और देवतो को नहीं भजतीथी सो वे सारी विन पतियोके अरु विन तिनकी आज्ञा के तिस ज्योतिषीको देखनेचलीगईं २७ सोकि हमारे पुत्रयाकन्याहो ऐसे विचारकेलिये तो सखियोकरके देवर्ती गई कि ढुंढिज्योतिषीही यहां आजावेगा २८ सोही वे तिन्हे एकांत मे बुलाकर तहा ढुंढिजी को बुलालाई तो राजस्त्रियो ने सुन्दर आसनपे बैठाय तिनका पूजाकरी २९ अरु तिनके दर्शनसे आनन्द मग्नभई तिनके चरण युगधोय के कस्तूरी चन्दन तिनके शरीर में मसलतीभई ३० सो कोई तो विनके समीपहोके आप तिन्हें बीडी देतीभई अरु तिनसे बहुत प्रश्न पूछेतो सारे ढुंढजीने तिनकोकहे ३१ तबतो विश्वास भये वे सब आश्चर्य होतीभई ऐसेही वे नित्यतिनका दर्शन पूजन आप ३२ घरकेकाज तजके तिन्हीं में परायणहुई करतीभई औ न कोई ऐसा भूतभविष्य वर्त्तमान वेत्ता कभीदेखा ३३ ऐसे तिन्हे कहती स्तुतिकरती सोकि इन उत्तम ज्योतिषीजीकी सेवाकरती भई औ राजा के उठखडेभये वेक्षणमे तिन्हेंछोडआतीथीं ३४ सो वे पतिभाव अर्थात् प्रतिनियम त्यागके सदा तिन्हेही विचारती रहतीं तो दिवोदासभी तिन्हेंजान के बुलाकर नमस्कारकरताभया ३५ औ तिन्हें निजासनपे बैठाकर

विटर आदिकोंसे इनकी पूजा करी औ मिष्ठवचन अर्घ्य धन वस्त्र यह आदर सेसमर्पण करताभया ३६ औ जो२ तिनसे पूछा सो २ही तिन्होंने हर्षसे, इसे बताया तो वो राजा भी निज इष्टदेवको भूलकर तिन्हीं का चिन्तवन करताभया ३७ औ एकान्तमें इनसे नानाविधि के प्रश्न पूछता भया औ विश्वासभये आदरसे इनकी प्रार्थना करताभया ३८ कि गांव अन्न,धन,देवोगा यहां मेरे निकट रहिये क्योंकि मैंने तुममें बहुत प्रकारके चमत्कार देखे हैं ३९ तब तो प्रपचसे रहित ढुंढिराज जो राजापै आय बोलेकि स्त्रीपुत्र,कन्या,गृहादिकमें तजकेकाशीजी आयाहूं ४० मुझ इच्छारहित को गांव धन,धान्य,नहीं रुचते हैं मैं तुझे ऐसे एकवचन कहताहूं तिसे तू मनमें धरने योग्यहै ४१ कि हे राजन् आजसेसत्रहवें दिन एकमहापुरुष आवेगा सो वो आपकेजो२ तुझे कहैसो२ही तू बिनाविचारे करलेना ४२ तो हे राजन् तेरा परम हित होवेगा इसमें संशय नहीं इतनेहीसे मैंने ग्रामधन धान्य सब भरपाया ४३ ॥ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंबालचरित्रमेंमाया मोह वर्णन इस नाम से छियालीसवां अध्यायसमाप्त हुआ॥४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

दिवोदासका मोहित होनेका वर्णन है ॥

दिवोदास बोला कि हे ज्योतिषीजी मैं आपका वचन अवश्य मानोंगा जो इस वचनको न करूं तो मुझको शिवजीकी सौगंदहै१ गृत्समदजी बोले कि ऐसे तिन्होंने काशीके वासी सब जन वशी० किये तो वे सबकाम तजकर तिन्हीं सेवते भये २ जो ज्योतिषी भूत भविष्य वर्तमान दूर वार्त्ता को शीघ्रही कहते तब तो विष्णुजी बौद्धरूप होकर काशी से बाहर पांच कोश पर ठहरे ३ औ आप सब देह धारियोंको मायासे मोह उत्पन्न करते औ वे श्रुतिस्मृति से विरुद्धही पठन करते चपरूपी अर्थात् चतुष्पाद धर्मकी निन्दा करते भये ४ तो वे भी अपने वचनसे सब महाजनोंको वशमें करते भये जो आकार सहित सेवन था तिसे सर्वथा दूषित करते भये

तब तो परमचिन्ता को प्राप्त भया औ ध्यानकर औ तिसके कारण को विचार करके वो दिवोदास सब वृत्तान्त जानता भया ३२ सो कि ज्योतिषी तो गणेशजीको औ बौद्धरूप मायावान भगवान्को जानगया तो राजा तिन्हें शिरनाय भक्तिसे प्रणामकरके बोला कि आप कौनहैं ३३ तौवे विष्णुजीभी जानकर निजरूप में स्थितभये जो प्रभु शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी ३४ औ पीतपट संयुक्त सम्पूर्ण लोकके परम आश्रय तो तिन्हें पूजके राजा बोला कि मैं मेरे बड़े धन्यहैं ३५ जो कि पुण्यकेप्रभाव से मोक्षदाता आपको चरणयुगल देखा सो मुझे परम मुक्तिदेवो औये राजमोहर लेलेवो ३६ ब्रह्माजी करके बलसेदिये मेरेको दिये निजराज को शिवजीभोगो तबतिससे विष्णु बोले कि शिवजी तुम्हें मुक्ति देवेंगे ३७ ब्रह्माबोले कि महा योगियो के ईश्वर विष्णु दिवोदास को ऐसे कहकर अन्तर्द्धान भये औ बौद्धही रूपबने निज आश्रम को आतेभये ३८ औवे शिवजीके आगमन के हेतु दूतभेजते भये कि मैंने दिवोदास के राज्यमेंबहुत ही अधर्मकी वृद्धिकरी औ ज्योतिषीवने गणेशजीनेभी तो तुम्हारा राज्य राजाने तजदिया है सो हेविश्वेश्वरजी आपशीघ्र निज काशी जीको आजाइये ३९।४० फिर तो राजा राजचिह्न तजके परमतप करताभया सो कि सुन्दर मन्दिर में सुप्रसिद्ध अर्थात् विख्यात फलदाता लिंग की स्थापना करके ४१ निज नाम से तिन्हें प्रसिद्ध करके जो आनन्द दाता औ कामना सहित पुरुषो को काम दाता फिर तिन अर्थदायी शंकरजी के दर्शन को देखतारहा ४२ ॥ इति श्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड बालचरित्र में काशी वर्णन इस नाम से सैतालीसवां अध्याय समाप्त भया ॥ ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

शिवजी करके काशीजीमें आना औ गृत्समद कीर्त्तिका सम्वाद सम्पूर्ण होना वर्णित है ॥

मुनि गृत्समदजी बोले कि हे कीर्त्ते तबतो सबलोकके अर्थदाता

ढुंढिराज जी दिवोदास को राज्य से छुटाजान निजरूप में स्थित तहांहीं वसतेभये १ औ वे महाबुद्धिमान् ढुंढिजी शंकरजी के अर्थ दूतभेजते भये कि शीघ्रआइये तवतो वे हर्षसेभरे देवशिवजी बैल पर चढके वाराणसीपुरी को जातेभये जो दिव्य बाजे गाजे औनिज गणोंसे संयुक्त २।३ औ जीतनेकी इच्छा युक्त आहार रहित औ बँबई के समान निश्चल स्थित तिस अविमुक्त तथा दिवोदास पर अनुग्रह करके फिर ढुंढिजी के पासगये तो तिन्हें प्रणाम करके कहते भये ४ शिवजी बोले कि हे विश्वरूप ढुंढिराज जी विश्वके ईश्वर आपही इस संसार को रचते हो औ आपही पालते संहार करतेहो अरु हे देव गुणेश्वर आपही संसार के शुभ अशुभ कर्म को देखकर अनेक प्रकार के भोगदेते हो ५ औ ब्रह्माभी आपही के चेष्टा किये अर्थात् वताये से सृष्टि रचते हैं औ तैसेही हरि रक्षा करते हैं औ तैसेही मैं इमस्थिरचर संसार का संहारकारी हूं पर इनतीन गुणोंके विभाग कर्मको आपही करतेहो ६ सो कि आपही के प्रसाद से हरि ब्रह्मा औ मैंभी ये निजनिज कार्य्यकेलिये सामर्थ्यवान हैं आपके विना वेदविधि सब वृथाही हैं अर्थात् वेदप्रवृत्ति तो आपही करके है औ आपही की शक्तिसे सुरशत्रु अर्थात् राक्षसों का नाशहोता है ७ औ पहिले आपहीका पूजनकरके अनन्त शक्ति प्रकृति भगवतीजी महिषासुर को हनती भई सोकि जिसके श्वास से कँपाये अर्थात् फटकारे पहाडोंके पडनेसेडरे इस सारे संसारकी रक्षा करती भई ८ सो आप अप्रमेय औ सब लोक के साक्षी औ आपही कारण औ कारण के भी कर्त्ता हो औ आपमें वेदभी सारे कहते कहते चुपहोरहे औ आपही में भक्ति करने से शेषजी धरती धारण करते हैं ९ औ सतजनभी आपही को नमस्कार करकेपूजनसे औ मनसे स्मरण करते यज्ञादिक करते हैं सो वे आपमेंही भक्ति भावना करते मुक्तिपाते हैं जो परिवर्त्तन अर्थात् संसार से रहित भये १० औ आप अनेकरूप चरण नेत्रवाले हो औ अनेक शिर कान हाथ जीभवानहो औ अनन्त विज्ञानघन औ अनेक ब्रह्मांडो

के कारणहो औ अत्यंत प्रकाशमान हो ११ आपहीके प्रसादसेती
बहुत कालतक प्रयत्न करते हमने हेसर्वेश इसअविमुक्त को देखाहै
गृत्समद बोले कि शंकरजी ऐसे तिन्हें स्तुतिकर फिरपूज के प्रार्थना
करतेभये १२ कि हमारा बिरहदुःख इस वाराणसीपुरीके पाकर
सबदूरभया सो अबआप सदामेरे भक्तोंकी औ इस काशी की रक्षा
करो १३ आपके प्रसाद विनाहमको काशीवासकभीभीनहींहोता सो
दण्डहस्त भैरवजीको औ आपकी जिसपर कृपाहोवे १४ तिसेही
हम अन्तमे तारक ब्रह्मबताते अर्थात् मोक्षदेते हैं और प्रकार से
किसीको नहींदेते जो माघमहीने की चौथको मंगलकेदिन चन्द्रमा
के उदय मे १५ आपको पुये ओमोदकोसे औ ओर औरभी उपचारों
करके पूजनकरै औ जो स्तोत्रपठकरके आपको स्तुतिकरे तो तिस
काकष्ट हरके १६ तिसको सबकाम औ अनेक प्रकार लक्ष्मी देवो
जो कोई इस स्तोत्रको प्रातःकाल उठकेपढे व भक्तिसे त्रिकालपठन
करै १७ वा एकवेरभी इसेपढे तो तिसकी भुक्ति औ मुक्ति देवो औजो
आप ढूढढूढ के अर्थात् श्रेष्ठ श्रेष्ठ देख देख मनुष्यों को वाञ्छित अर्थ
देतेहो १८ इससे आप त्रिलोकीमे (ढुंढजी) ऐसे विख्यात होवो गे
यह आपका ढुंढि ऐसानाम मुक्तिदाता औ पाप नाशक है १९ सो
स्मरणसेही सबकामों का सिद्धि दायक होवेगा गृत्समद जी बोले
कि तबतो ऐसेकहके शिवजी सुन्दर घनेमन्दिर में गंडकीजीकेपाषा-
णसेबनी ढुंढिराजजीकी मूर्तिकी स्थापना करतेभये फिरनिजमन्दिर
में प्रवेशभये औ सारेदेवभी निज निज मदिरों मे पधारते भये २०।
२१ औ सो शंकरजी तिसभक्त दिवोदास को मुक्ति देतेभये मुनि
गृत्समदजी बोले कि हेकीर्त्तिरानी ऐसे तिनविनायकजी करकेनिज
माया से दिवोदास काशिराज मोहागया २२ औ बौद्धरूपी हरि
करके तिस काशिराजका औ तिन विनायकजीका हित कियागया
सोहीसब ढुंढिराजजी करके कियागया सामर्थ्य हेकीर्ते हमने वेगसे
वर्णनकिया है २३ ऐसे प्रभाववाले येदेवगणराजजी है जिन्हीकेवर
से तेरापुत्र जीउठाहै ब्रह्माजीबोलेकि गृत्समदजी ऐसे तिसकीर्त्ति

को ढुंढिराजजीका विशेषसे चेष्टाकिया अर्थात् लीलाकर्म कहकरके २४ श्रो तिससे शीघमांग शीघ्रही निज आश्रम मंडल को गये श्रो तभी कीर्त्तिभी निज पुत्रको लेकर तहा से चलतीभई २५ फिर तो ढुण्ढिराज जी के मन्दिरमे गई जो महाउत्सव करके नारी नरों करके युक्त तो तिनको देखते ही कीर्त्ति तिन्हें प्रणाम करती भई २६ सो कि पवित्र वाराणसीपुरीमें आई जो पुरी तहा मरणभये मोक्षदेनेवाली तहांतो माघशुक्लचौथ भौमवारको हर्षयुक्तभईसुवर्ण के पात्रों में अनेक पायसादिक पकवानों करके पूजितविनायकजी को प्रणाम करतीभई जो विनायक जी नृत्यगान में चतुर भक्तोंके समूहोंसे पूजित २७। २८ श्रो जो नानाप्रकारके अलंकारों से सयुक्त श्रो सुन्दर माला वस्त्र विभूषित श्रो नाना मणिगणों से संयुक्त श्रो नानामोतियोंसे अलंकृत २९ श्रो जो दक्षिणा के लिये निवेदनकिये सुवर्णद्रव्य अर्थात् मोहर श्रो रत्नोंसेढके तो देवढुंढिजी का तो मुखही नहींदिखता वो ऐसीचिन्ता में परायण होतीभई श्रो हे अनघ व्यासजी वो यहभी विचारती भई कि मैं अकिंचन इनविनायकजीके क्या चढ़ाऊं तोफिर वो राहमेंसेलिये दूर्वा शमी मदार के पत्रपुष्पोंसे परमभक्ति करके तिन्हें पूजतीभई श्रो पुत्रकाभाग्योदयमागा तो शमी मन्दार दूर्वाओं करके वाजेसे तिन मा वेटा पर प्रसन्नभये तैसे वे ढुण्ढिराजजी तिन द्रव्यसमूहोंमे प्रसन्न नहीं भये तब तो पूजाकरके सारेभक्त निजरघर पधारे ३०। ३१। ३२। ३३ श्रो वे दोनो माबेटे तहां तिनकेनिकटही विराजे श्रो तिनकी निराहारता अर्थात् कुछभी न खानेकरके तथा तिनके भक्तिभावसे प्रसन्न भये ३४ महाउत्कट ढुण्ढिराजजो तिसमूर्तिमेंसे प्रकटभये तिन्हें देख वो बोले कि इन महेश्वरजी का जो स्वरूप मुनिजी ने कहाथा ३५ सोही यहपुण्यके समूहोंसे अब साक्षात् देखाहै जो सूत्रकाप्रमान श्रो जो सारेअलंकारोंसे संयुक्त श्रो मुकुटसे विशेष शोभित ३६ श्रो दशभुजा धारी सुन्दर नेत्र कमल शोभित श्रो जो अमोदगन्ध जड़ी मोतियों की महाभारी लड़ लटकाये ३७ तो ये ऐसे इन्हेंदेख दोनों

नमस्कार पूजन करना भी भूलगये तो विनायक भगवान्‌बोले कि हेसुन्दर नियमवाली कीर्त्तिरानी तू वरमांगले ३८ मैं सुप्रसन्नभया जो तेरे मनमें वर्त्तमानहै सोही देऊंगा सो मैं मोतियोंसे औ रत्नोंसे औ नानाप्रकारके द्रव्योंसे भी नहींप्रसन्नहूं ३६।४० जैसे मैंशमीपत्रों से औ आककेफूलोंसे हेशोभिने प्रसन्नहोताहूं ब्रह्माजीबोले कि ऐसा तिनकाबचनसुन कीर्त्ति परमहर्ष को प्राप्तहोतीभई ४१ औ देहभाव को प्राप्तहो अर्थात् सुरतिसँभालकरके गजाननजीसे यह बोली कि सर्वज्ञाता औ सर्वस्वरूप आपमें मैं स्त्रीहोकेक्या वाक्यकरौं अर्थात् आपसे क्या मांगो ४२ पर तबभी आपके समीपपने से प्राप्त भया ज्ञान मैं जिससे ऐसीआपकीआज्ञासे कुछ कहतीहूं तो कीर्त्ति बोली कि हे ढुंढिराजजी आप कलारहित अर्थात् निश्चेष्ट हो औ अहंकार करके वर्जितहो औ निर्गुण औ जगत्‌के स्वामीहो ४३ औ पूर्ण आनन्द औ परम आनन्दवान् हो औ पुराणरूप औ परेसेपरे आपहो औ दिग्पालरूपी औ सूर्य्य,चन्द्रमा,नदी,समुद्र स्वरूपवालेहो ४४ औ आपही पृथ्वी, जल,तेज,वायु,आकाश स्वरूपहो औ तैसे ऊपर केलोक भी आपहीहो औ गन्धर्व,सर्प्प,राक्षस भीहो ४५ औ दीन· दयाल कृपानिधान आप चराचर स्वरूपी हो औ विनायक आदि रूपकरके आप भलीभांति प्रकटताको प्राप्तहो ४६ आजमेरे नयन धन्यहैं औ जन्मभर्त्ता औ यहपुत्रभी धन्यहैं औ मेरेमा बाप औ कुल शील औ रूपज्ञान तप येभी धन्यहैं ४७ जो जन्मान्तरके पुण्य प्रभावसे शीघ्र प्रसन्नतावान् पुत्रदेखाहै सो हे देवजी आपहीकी आज्ञासे इसका नाम भी आपही कासा अर्थात् (क्षिप्रप्रसादन) ऐसा रक्खा है ४८ सौकन इसको विष दियागयाथा फिर वो हे विश्वराज आपही की भक्ति करके मुनिगृत्समदजी ने तिसे जिलाया औ तिन्होंनेही आपकीप्राप्ति के लिये शमीपत्रोंसे पूजावताई थी सोही तिन मुनिगृत्समदजी के प्रभावसे हो तीनताप निवारक आप मेरे से देखेगयेहो ४६।५० औ हेनाथ जो प्रसन्नभयेहो तो मेरेइससुत कोआप अपनीभक्तिदेवो औ त्रिलोकीमें सुन्दरयश औ राज्यमेंनि-

स्सगवृत्तिपन अर्थात् वैराग्य निष्ठादेवो ५१ औ दीर्घआयुर्बल श्रेष्ठ गुणसमूह वलकीर्त्ति सुखक्षमादेवो औ सारेसंग्रामोंमें विजयदेवो औ द्विजदेवतोंमें परमप्रीतिदेवो ५२ढुंढिजीबोले कि हेअनघे कीर्तिरानी जो२वर तेंनेमांगे सो२ सब मैंने तुझकोदिये कि ये सहस्र यज्ञकर्त्ता औ सहस्रही वर्ष तक जीतारहेगा ५३ औ तेरा सुत शान्त शील जितेन्द्री औ मेराभक्तभया राज्यकरैगा औ वो साम दाम दण्ड भेद इनचारो उपायोंसे सबको वशमे करलेवेगा ५४ औ मेरा ध्यान औ नाम जाप इसकेसदा बनारहेगा औ यहअन्तमे मेराहीस्मरणकरके मेरेस्वरूपको प्राप्तहोगा ५५ ब्रह्माजीबोले कि वे प्रसन्नभये विनायकजी तिसेऐसे२ वरदान देकरके तिसकेपुत्रको निजपरशु देतेभये तो तिसका (परशुबाहु) ऐसाही प्रकटनाम भी रखनेभये आपहीदेव विनायकजी फिरअन्तर्द्धान होतेभये ५६।५७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड बालचरित्रमे कीर्तिको श्रीगणेशजीसे वरहोना इसनाम से अड़तालीसवां अध्यायहुआ॥ ४८॥

उन्चासवां अध्याय॥

कीर्तिकेपुत्र परशुहस्तको राज्यहोनेका वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि ढुंढिराजजी करके ऐसे वरपाई कीर्ति शेष रात्रि तहांबिताकर औ प्रात:काल नहाय शीघ्र तिसमूर्तिको पूजके पुत्रयुक्त निजगृहको आतीभई १ सो कि पुत्रस्नेहर्षित औ ढुंढिराज जीके विरह से दुःखित भई निजनगर मे आई जो पुर नाना ध्वजा पताकाओंसे औ छिड़काव औ सुगन्धित धूपोंमेशोभित२ तोवे दोनो कीर्ति कँवर परशुहस्त ढुंढिजी के नामको जपते तिन्हें राजा आये जानकर पालकीमें बैठाकर सेनासे औ बाजेगाजो से३ अपनेकर्णपुरनाम नगरमें लाताभया औ शीघ्रही पुत्रकामस्तक चूमकर परम आदरसे तिसे आलिंगन करताभया ४ औ परम प्रसन्न भया हर्षसे गद्गदभई वाणीसे बोला हे प्रिय प्रसादन तू बहुतदिनसे थकगयाहै मैं तुझे देख परमआनन्दको प्राप्तभयाहूं जैसे कोईअमृतपाय प्रसन्न

हो ५ फिर राजा तिन सब लोगोंको वस्त्र औ दक्षिणा देकरके विदा करताभया ६ फिर कीर्ति औ राजाआपसमेंबोले अर्थात्बतलातेभये तौ तिसने राजाको वो सारा वृत्तान्त सुनाया ७ फिर तो वे परस्पर लपटना चूमना औ हास्यविनोद करतेभये औ हर्ष ताम्बूल का विशेष छेदन अर्थात् मुखसे मुखमें देनालेना सो कि निर्लज्जभये काम युद्ध करने लगे ८ तवतो कितनेही दिन बीते पुत्रको गुणकी खानि भया जानके जो विनयवाला औ सर्व धर्म ज्ञाता औ नीति शास्त्र मे कुशलथा ६ तो अभिषेककी तय्यारियें तय्यारकर श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बुलाके औ सबसखाराजोंको बुलाकर पुत्रको राज्यासन दिया १० सो कि शुभ मुहूर्त औ श्रेष्ठ लग्नमे जो लग्न सातों ग्रहोंके बलसे सहित तिससमयमें स्वस्तिवाचन पूर्वक नांदीश्राद्ध करके ११ नाना औषधियों से युक्तजलों करके तिसका अभिषेचन कराताभया ऋक् यजुर सामवेद के मन्त्रोंसे औ सब बाजे गाजोंसे १२ औ और सब ब्राह्मणों को दक्षिणा गौ रत्नदानसे प्रसन्न करके औ आप वनवासियोंके उपदेशको पूछग्रह करके अर्थात् सन्यास लेकर १३ निज साधनमें युक्तभया राजा सबलोगोको भी बिदाकरता भया फिरतो वो परशुबाहु इस पृथ्वीका राज्यकरता भया १४ सो धर्मशास्त्रकी नीतिसे औ दानसेयश इकट्ठा करताभया तो वो निज बलके प्रभाव से तीनोंलोकोमें विख्यात भया १५ औ तिसने अर्कमयी ढुंढिराज की मूर्ति बना कर कंठमें धारण करी-औ शमी दूर्वा विना कभी भी तिसकी पूजा न करता१६ तो तिसने धर्मसे नानाभोग औ अनेक स्त्रियें भोगीं औ दान देकरके सहस्त्रवर्षतक १७ राज्य करताभया फिर पुत्रको राज्य देकर स्वर्गको पधारता भया तो वो ढुंढिजी केसे स्वरूपवाला परशुहस्त अनेककल्पतक स्वर्गमेंस्थित होताभया१८ मुनिजी बोले ऐसे हमनेतुमसे संक्षेपकरके शमीका माहात्म्य वर्णन कियाहै औ तिसकेपूजनका प्रभावभी मन्दार माहात्म्यके प्रसंगसे कहाहै १६ तिसमे हे मुने तुमकरके भी हमशमी मन्दारसेही पूजनेयोग्यहैं भक्तिसेसमर्पणकिया पत्रपुष्प भी मेरे अमृतसरीखा प्रिय

होताहै २० औ निषिद्ध पत्रपुष्पादिक चढ़ावै तो नरकमें जाताहै ऐसे पञ्चदेवतों को भी पूजै तौ तत्परायणता अर्थात् तिसी भावको प्राप्त होताहै अर्थात् जैसे २ ध्यावै सो२ही फलपावै २१ सो कि सात्विक अर्थात् सत्वगुणीभक्त तो देवजी में लीनहोताहै औ रजोगुणी भक्त तिनकी स्वरूपताको प्राप्तहोवे औ तामसभक्त भी इनकी सलोकता सनिधि भावको प्राप्तहो अर्थात् इनके पासरहै २२ सो इन्हें तीन प्रकारसे भी भजता भक्त फलको प्राप्त होताहै इनको यह त्रेधा भी भक्ति वृथा नहींहै व्यासजीनेपूछा कि हेब्रह्मन् विनायकजीका लोक कहांपरविराजमानहै २३ इससमेरेसंशयको आपभलीभांतिछेदनेयोग्य हो मैं आपकोछोड और किसपेपूछूं २४ ब्रह्माजीबोले कि यहवृत्तांत मैंने तो नारद से कहाथा औ तिसने मुद्गलको कहाथा औ तिसने काशिराजको विनायकजीका शुभलोक वर्णनकिया २५ सोवोलोक तिनकरकेही पहिले सकामदायिनी शक्तिसे बनायागयाहै औ विनायकजी तिसका (निजलोक) ऐसा आपही नाम रखने भये २६ तिसे चर्मचक्षुसेही विमानमें विराजमान भया काशिराज देखता भया जिसे प्राप्तहोकर स्त्री या पुरुष दुःखद्वन्द्व को नहीं प्राप्तहोता २७ औ ज्योतिरूप को पा करके ब्रह्माजी के कल्पतक अर्थात् देवतोंकी दोहजार चौयुगीतक तहां रहताहै औ वो तहांस्थितभया क्षीरसमुद्र के भोगभोगे २८ जो महाप्रलय समयमें भी अविनाशमान् रहै वहांदेव तिन विनायकजी का सदैवका शयनस्थानहै २९ औ सिद्धिबुद्धी तिन्हें सेवाकरतीहैं औ सामवेद तिन्हें गायरहाहै औ जो२ मनुष्य विचारताहै सो२ ही कल्पवृक्ष तहां तिसे देनारहता है ३० तहां तिन विनायकजी के प्रभावसे वे विचारी अनगनित सम्पदा मिलती है मैंने सारे अनेकसे देवलोक वर्णनकियेथे ३१ पर गणेशलोक वर्णन करनेमें मेरी सामर्थ्यनहीहै अर्थात् कहां तक कहूं तिससे तिसे मैंने संक्षेपसेही वर्णन किया अब तुम और क्या सुना चाहतेहो सोहीमैं तुमसेयथामतिवर्णनकरूं ३२॥ इतिश्रीगणेशपुराणे उत्तरखण्डमेंशमीमन्दारफलकेवर्णनसेउन्चासवांअध्यायहुआ४९॥

हो ५ फिर राजा तिन सब लोगोंको वस्त्र औ दक्षिणा देकरके बिदा करताभया ६ फिर कीर्ति औ राजाआपसमेंबोले अर्थात्बतलातेभये तौ तिसनें राजाको वो सारा वृत्तान्त सुनाया ७ फिर तो वे परस्पर लपटना चूमना औ हास्यविनोद करतेभये औ हर्ष ताम्बूल का बि॰ शेष छेदन अर्थात् मुखसे मुखमें देनालेना सो कि निर्लज्जभये काम युद्ध करने लगे ८ तबतो कितनेही दिन बीते पुत्रको गुणकी खानि भया जानके जो विनयवाला औ सर्व धर्म ज्ञाता औ नीति शास्त्र में कुशलथा ६ तो अभिषेककी तय्यारियें तय्यारकर श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बुलाके औ सबसखाराजोंको बुलाकर पुत्रको राज्यासन दिया १० सो कि शुभ मुहूर्त औ श्रेष्ठ लग्नमें जो लग्न सातो ग्रहोंके बलसे सहित तिससमयमें स्वस्तिवाचन पूर्वक नांदीश्राद्ध करके ११ नाना औषधियों से युक्तजलों करके तिसका अभिषेचन कराताभया ऋक् यजुर सामवेद के मन्त्रोंसे औ सब बाजे गाजोंसे १२ औ और सब ब्राह्मणों को दक्षिणा औ रत्नदानसे प्रसन्न करके औ आप वनवा- सियोंके उपदेशको पुत्रगृह करके अर्थात् सन्यास लेकर १३ निज साधनमें युक्तभया राजा सबलोगोंको भी बिदाकरता भया फिरतो वो परशुबाहु इस पृथ्वीका राज्यकरता भया १४ सो धर्म्मशास्त्रकी नीतिसे औ दानसेयश इकट्ठा करताभया तो वो निज बलके प्रभाव से तीनोंलोकोंमें विख्यात भया १५ औ तिसने अर्कमयी ढुंढिराज की मूर्त्ति बना कर कठमें धारण करी औ शमी दूर्वा बिना कभी भी तिसकी पूजा न करता १६ तो तिसने धर्म्मसे नानाभोग औ अनेक स्त्रियें भोगीं औ दान देकरके सहस्रवर्षतक १७ राज्य करताभया फिर पुत्रको राज्य देकर स्वर्गको पधारता भया तो वो ढुंढिजी के से स्वरूपवाला परशुहस्त अनेककल्पतक स्वर्गमेंस्थित होताभया १८ मुनिजी बोले ऐसे हमनेतुमसे सक्षेपकरके शमीका माहात्म्य वर्णन कियाहै औ तिसके पूजनका प्रभावभी मन्दार माहात्म्यके प्रसंगसे कहाहै १६ तिसमें हे मुने तुमकरके भी हमशमी मन्दारसेही पूज- नेयोग्यहैं भक्तिसेसमर्पणकिया पत्रपुष्प भी मेरे अमृतसरीखा प्रिय

होताहै २० औ निषिद्ध पत्रपुष्पादिक चढ़ावै तो नरकमें जाताहै ऐसे पचदेवतों को भी पूजे ता तत्परायणता अर्थात् तिसी भावको प्राप्त होताहै अर्थात् जैसे २ ध्यावै सो२ही फलपावै २१ सो कि सात्विक अर्थात् सत्वगुणीभक्त तो देवजी में लीनहोताहै औ रजोगुणी भक्त तिनकी स्वरूपताको प्राप्तहोवे औ तामसभक्त भी इनकी सलोकता सन्निधि भावको प्राप्तहो अर्थात् इनके पासरहै २२ सो इन्हें तीन प्रकारसे भी भजता भक्त फलको प्राप्त होताहै इनको यह त्रेधा भी भक्ति वृथा नहींहै व्यासजीनेपूछा कि हेब्रह्मन् विनायकजीका लोक कहांपरविराजमानहै२३इसमेरेसंशयको आपभलीभांतिछेदनेयोग्य हो मैं आपकोछोड़ औरकिसपेपूछों२४ ब्रह्माजीबोले कि यहवृत्तांत मैंने तो नारद से कहाथा औ तिसने मुद्गलको कहाथा औ तिसने काशिराजको विनायकजीका शुभलोक वर्णनकिया २५ सोवोलोक तिनकरकेही पहिले सकामदायिनी शक्तिमे बनायागयाहै औ विनायकजी तिसका (निजलोक) ऐसा आपही नाम रखते भये २६ तिसे धर्मचक्षुसेही विमानमें विराजमान भया काशिराज देखता भया जिसे प्राप्तहोकर स्त्री या पुरुष दुःखद्वन्द्व को नहीं प्राप्तहोता २७ औ ज्योति रूप को पाकरके ब्रह्माजी के कल्पतक अर्थात् देवतोंकी दोहजार चौयुगीतक तहां रहताहै औ वो तहांस्थितभया क्षीरसमुद्र के भोगभोगे २८ जो महाप्रलय समयमें भी अविनाशमानरहै वहांदेव तिनविनायकजी का सदैवका शयनस्थानहै २९ औ सिद्धिबुद्धी जिन्हें सेवाकरतीहैं औ सामवेद जिन्हें गायरहाहै औ जो२ मनुष्य विचारताहै सो२ ही कल्पवृक्ष वहां तिसे देतारहता है ३० तहां तिन विनायकजी के प्रभावसे वे विचारी अनगनित सम्पदा मिलती हैं मैंने सारे अनेकसे देवलोक वर्णनकियेथे ३१ पर गणेशलोक वर्णन करनेमें मेरी सामर्थ्यनहीं है अर्थात् कहां तक कहूं तिससे तिसे मैंने संक्षेपसेही वर्णन किया अब तुम और क्या सुना चाहतेहोसोहोमैं तुमसेयथामतिवर्णनकरूं३२॥ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंशमीमन्दारकरकेवर्णनसेउन्चासवांअध्यायहुआ४९॥

आप मुझसे सत्य कहिये औ वो किस पुण्यसे मुझसे प्राप्त कियाजावै मैने और तो सारेलोक सुनेहैं २८ मुद्गलजी बोले कि हे राजन् तुम सुनो मैने इसका माहात्म्य कपिल मुनिजी से सुना है जो सामान्यता करके लोकथे सो तो सब तुमने सुने हैं २९ पर हे राजन् इस लोककी गहन गतिहै अर्थात् इस लोककी महिमा मैं कहांतक कहू इस लोक का नाम (दिव्यलोक) औ (निजलोक) यह दो नाम हैं ३० सो कि सकामदायिनीशक्तिसेवनाये पीठ आसनपर विनायक जी बिराजमान हैं सो वो आसन पाच सहस्र योजन विस्तार सहितहै हे महा बुद्धे काशिराज ३१ तहा रत्न जडी सुवर्ण भूमि में दिशाओ को प्रकाशमान करते वे विराजमान हैं औ यह स्वानन्द नाम दिव्यलोक ईषके समुद्र बीच है ३२ सो यह लोक न तो वेदों करके औ न पुण्योसे औ न व्रत, यज्ञ,जपोसे कभीभी प्राप्त होताहै ३३ यह तो नित्य भक्ति करके विनायकजीकी कृपासेही प्राप्तहोता है सो यहा स्थूल सूक्ष्म स्वरूपवान् विघ्नराज जी सदा बिराजमान रहते हैं ३४ सो वे विराट्स्वरूपी पैरों करके तो सात पातालो को औ शेषजी के फणोको औ कूर्म्मावतार कच्छपजी को औ कानों से सारी दिशोंको व्याप्त करके रहते हैं ३५ औ वे वालोकरके आकाशको भी व्याप्त करके हृदय स्थित जो आधार कमल तिसमें विराजमान हैं सो तिन्हे पुण्यकारी जन भवोंके मध्यमें औ दो पत्रके अग्नि चक्रमें ध्याते हैं ३६ जो आकाश चारी मुद्रासे संयुक्त तिन्है और जन ध्यानेको समर्थ नहीं हैं औ सहस्र पत्रका ब्रह्माण्ड कमल है जो विलासमान् कान्तिवाला ३७ तहा तेज रूपहै औ हृदय में द्वादश पत्रका कमल है औ दश पत्रका नाभि चक्र है औ लिंग में शुभ छ पत्रका चक्रहै ३८ औ षोड़श पत्र का कठमें है तहा सारे विघ्नराज जी विराजमान है जो तेजस्वरूपी औ प्रकाशमान जैसे सत्यलोक मे ब्रह्माजी स्थित है तैसे तहा तिनचक्रोंमें विनायकजी भी विराजमान हैं ३९ औ बारह पैखडियो वालाहै वैकुंठ चक्रहै तहा सदा भगवान् विराजमान हैं औ कठ कमल मे शिवजीहैं

जैसे गणों सहित कैलासमें विराजितहे ४० औ यह गणेशजी चद्र सूर्य नेत्र वाले भूमि मण्डल महा उदर वाले औ औषधि रोम वाले जो इक्कईसो स्वर्गोंको व्याप्तकरके विराजमान ४१ औ नदियें औ समुद्र जिनके पसीनेकी बूंदसरीखेहो होरहे जिनके निज ब्रह्माण्डमें अनेक ब्रह्माण्ड छिनके सरीखे दीखरहे हैं ४२ जो तेंतीस करोड़ देवता औ जो हजारोंजीवहैं तिन गूलर सरीखे अनेक ब्रह्माण्डोंमें अनगिनत जीवों की नाईं भासते हे ४३ सो हे नृप मैं तिस लोककी अत्र सक्षेपसे रचना वर्णन करताहू ऊंचाजैसे सुमेरु का मस्तक सो कैलास शिखर से भी अधिक ऊचेपर विराजमान हैं ४४ जो सहस्र योजन विस्तारवाला औ जो शून्यसरीखा अर्थात् अति दूरपनसे जो देख न पडे औ जो मुनिश्रेष्ठोंसे भी अगम्य हे वहा एक नामसे (भ्रामिका) नाम ऊंचेपनसे भ्रमानेवाली शक्ति हे ४५ जहापर स्थित २ सुन्दर भ्रमरो मे जैसा शब्द होरहा औ कमलासनमें विराजमान आधार शक्ति तिसके मस्तकमें विराजमान हे ४६ जो चमर सरीखी तिसके मस्तक में कामदायिनी शक्ति है जो करोड सूर्य्य समान तिसके मस्तक में एक महाभारी पीठासन हे जो शक्ति भयकर जटा समूह धारण करती औ विकरालहीमुखवाली ४७ औ जो सहस्र सूर्य्यकेसे प्रकाशवाली जो दशोदिशोंको प्रकाशमान करती औ जो आसन दशसहस्र योजन चौडा औ तितनाहीलम्बा जो असंख्य सूर्य्यसाप्रकाशमान तिसके वीच में आनन्द भुवन भासमान हैं जहा रत्न जडे सुवर्ण के घर भासमानहैं जो गज के मस्तक के मोतियोंसे सयुक्त थे ५० सो वो दुःख मोह से रहित लोक तिन्हीं की कृपा करके प्राप्त होता हे तिसके परे परम इक्षुसागरही हे ५१ तिस में एक सहस्रपत्रवाली शुभ कमलनीहे जिसके मध्यमें वो सहस्रपत्र कमल हे ऐसा भासताहै जैसे आकाशमें चन्द्रमा ५२ तिसकी पेखडीमें एक रत्नजड़ी सुवर्णकी सेजवनीहै जो दिव्यवस्त्र सहित तहां हे राजन् विनायक जी शयन करते हैं ५३ औ सिद्धिबुद्धि सदाभक्तिसे पैरदावनीहैं औ

विमान लेकरके काशिराजके पास आये १३ तो तिनके तेजसे डरेभये लोग प्रलयकी अग्नि मानते भये औ कई बिन मेघही बिजली के उत्पातको आगया मानते थे १४ औरो ने सूर्य्य मण्डल को पड़ता विचारा औ घंटोके और बाजोके औ गन्धर्व अप्सरओ के शब्द को १५ सुनकर गणेशजीकी कृपासे आया विमानही जाना तौही वो शोभासे सजा विमान काशिराजके अगणमें उतरा १६ औ (प्रमोद आमोद) राजाकेपास आये जो गणेशगण दिव्यवस्त्र धारणकिये औ सुन्दर आभूषणोंसे भूषित १७ औ दिव्यमाला सुन्दर सुगन्ध लेपनेसे औ दिव्य दीप्तिकरके कामदेव के जैसे तौ काशिराज तिन विनायकजी केसे स्वरूप तिन दोनोंको नमस्कारकर निज आसन पर बैठायकर १८ औ इन्हें पूजकर जितने राजा तिन्हें कुशल आदि पूछतारहा तितनेही सबलोगोंके सुनते सुनते वे दोनो दूतबोले १९ हेराजन् तूसुन हम विनायकजीका शुभ वचन कहते हैं हे नृपतुमसे अधिक प्रीतिकारी भक्त तिनका तीनलोक में और कोई नहींहै २० तुम्हें वे दिनरात ध्याते हैं औ रात्रिदिन तुम्हारेही गुण गा रहे हैं तु धन्यहै पुण्यवान् तैंने निजजन्म सफल किया है तुम्हारे दर्शन से अत्यन्त शीघ्र हमाराभारी पाप अधकार नाशभया है २१ न जाने तैंने पूर्व जन्मोंमें क्यातप कियाहै जोये परब्रह्म स्वरूप बालरूप विनायकजी तुम्हारे घर आकर नानालीला दिखाते भये सो देवता की औ भक्तिकी महिमा ग्राह्यनही अर्थात् जानने में नहीं आती है २२।२३ क्योकि देव विनायक जी तुम्हारा सदा चिंतवन करते हैं औ तुम्हारेही लिये यह दिव्य ऐश्वर्य्यसे सयुक्त विमान तिन्होंने भेजा है २४ सो तिनकी आज्ञावश भये हमतुम्हें दिव्य लोक मे ले जावेंगे हमें प्रभु विनायकजीने यहकहा कि काशिराज को शीघ्र ले आवो २५ यह ऐसातिनका वचन काशिराज सबलोगोंकेभी सुनते सुनते सुनता भया तो तभी बेरबेर आनन्द आशु छोडता अमृत के समुद्र में मग्नहोता भया २६ फिर देहकी संज्ञाको प्राप्तहोके तिन्हें प्रणाम करके राजाबोला मेराजन्म धन्यहै औ मा बाप निष्ठा भक्ति

औ सम्पदा येभीधन्यहैं २७ जो आपके शुभदायक औ दुर्लभचरण देखे हैं सो हम तुम्हें परमस्थानमें लेजानेको विनायकजी के स्वरूप से यहां आये हैं २८ जो लोकके मध्यमें स्थित औ जो चर्मनेत्रवालोंसे न देखेजावें जो निर्गुण औ चित् आनन्द औ सनातन परम ब्रह्मस्वरूप २६ जो विश्व के उत्पत्ति पालना प्रलयकेकारण औ न ग्रहणकिये जानेवाले अर्थात् मन वाणीआदि इन्द्रियें जिन्हें विषय न करसकें औ जो सर्वगामी अर्थात् सर्वत्र वर्त्तमान औ संग रहित जो अकार सहित औ गुणों के भोगनेवाले औ जो सूक्ष्मसे भी अत्यंत सूक्ष्म औ स्थूलसेभी अत्यंतस्थूलहैं औ जो मायासे नानारूप वाले औ वस्तुसे वे अरूप हैं औ जो गणेशजी भूमिके भार हरनेमें उद्यत हैं ३०।३१ तिन विनायकजीने तुच्छभये मुझपर बडीहीकृपा करीहै ऐसे कहके काशिराज तिनसबों को स्पर्श दर्श करके अर्थात् सबोंसेमिल झुलकर ३२ तिनदूतों से प्रणामपूर्वक बोला कि तुम इसपर चढो फिरमैंभी इसमृत्युलोक वासियोंके दुर्लभ विमानमें चढूंगा फिर वो मन्त्रियोंकोभी प्रणामकर औ निजपुत्रको तिनकेहाथ में पकडाकरके यहबोला कि तुम धर्म्म औबलसे इसप्रजा कोपालन करना ३३।३४ जो मुद्गलजीने मुझमेंकहाथासोसबतैंसाहीअनुभव करनेमें आया ऐसेकहके काशिराज इसीचर्मके देहसे उत्तम विमान में बैठताभया ३५ जो अनेकप्रकारसे पूजे दोनो दूतों करके अधिष्ठावन कियागया अर्थात् वे दोदूतबैठे जिनमें वो तिसमेंबैठेकाशिराजका शरीर सूर्य्यजीके समान कान्तिमान होगया ३६ जो राजा तिनदूतोंसेभी दिव्य सुगंध औ अलंकारोंसे औ वस्त्रोंसे पूजागया तबतो वे राजाको येलोक दिखाते वायुवेगसे चलतेभये ३७ सोकि कुकर्म्म करता भूतप्रेत पिशाचोंका लोकदिखाते जहां ये विकराल आकार ऊर्द्धपैर औ नीचेमुखभये लटकते हैं कईपीछे को मुखवाले औ कई माथेमेंही आंखवाले औ हृदय में नेत्रजिनके कईछिद्रमें नेत्र वालेऔकई अत्यन्त छोटेकण्ठ औ भारीउदरवाले ३८।३६ जैसे जालो झरोखों में सूर्य्यकी किरणगये छोटेछोटे तंतुसे परमाणु भ्रमते हैं

यज्ञकरनेसे २७ और भी बहुत पुण्यसेमहात्मा इसलोक को पातेहैं फिर तो तिन्होने तिसराजाको गोलोकदिखाया २८ जिन्होंने यथा विधि ब्राह्मणों को सहस्र गोदई हैं तो वे तिनके रोमों की संख्या सहित कल्पकालतक निरन्तर वसतेहैं २६ फिर तिसकेआगे तिसे तिन्होंने सदातन सत्यलोक दिखाया जो सत्यव्रतवाले औ वेदवेत्ता औ वेदपठनमें परायण ३० श्रेष्ठआचारवाले औ शास्त्रवेता औ जो पुराण पाठकहैं औ अन्नदानमें तत्पर यज्ञकरनेवाले औतीर्थवासीहैं ३१औ जोद्विजनप्रतिग्रह लेनेवाले औ परायेउपकारकारीहैं तपस्वी औ दानमें परायणहैं वे सत्यलोकमें जातेहैं ३२ जोलोक आठसहस्र गव्यूतिअर्थात् सोलहसहस्र कोश विस्तारभया औ तितनाही चौडा है ३३ जहा मुनीश्वर गणों सहित ब्रह्माजी जो परम राजर्षिसमूहों सहित औ देवऋषियोंके औ दानोंके तैसेही गन्धर्व औ अप्सराओंके समूहोंसे ३४ जो दिनरात स्तुति कियेजाते जो सारे भक्ति में परायण होरहेथे जहा इंद्र महलकीसी कांतिवाले घर जो चारो ओर से सजीले तो तिस लोक को देखके काशिराज तब तो तिन दूतोंसे यह कहताभया ३५ राजा बोला कि मैं धन्यहूं औ आपने अनुग्रह किया गयाहूं अर्थात् कृपावान् गणेश जीने मुझपे यह पूर्णही अनुग्रहकिया जो तुमकरके मुझको अत्यन्ही दुर्लभ स्वर्ग लोक दिखाये गयेहैं ३६ ब्रह्माजी बोले कि फिर तो तिस वे दूत त्रिलोक में विख्यात वैकुंठलोक दिखाते भये तिन लोकों में भक्ति परायण वैष्णव जाते हैं ३७ जो सब लोकों में श्रेष्ठ जिसकी उपमा न दी जावे सो कि जिसकी महिमा को वर्णन करने में शेषजी समर्थ नहीं हैं जो अनेक मुखवाले औ ब्रह्माजी भी नहीं हैं ३८ औ कार्तिक स्नान करने वाले औ मीनके सूर्य्यमें नहानेवाले औ मेष के सूर्य्यमें अर्थात् वैशाख नहानेवाले औ तिल अन्न देनेवाले औ गोदान करने वाले औ गीता पढ़नेवाले औ जो प्राणियों के उपकारकारी ३६ तो वे जन विष्णुलोक को जाते हैं जो पाच सहस्र योजन विस्तृतहै जहा विश्वकर्म्मा के बनाये घर,रत्न,सुवर्ण, चांदी

करके प्रकर्ष से भासमान होरहे जिनमे रत्न किरणों के प्रकाश करके अन्धकार किसी प्रकार भी प्रवेश नहीं होता ४०।४१ जहां परिवार सहित दैत्यहन्ता विष्णु जी विराजमान हैं तो वो काशिराज पुण्य समूहसे तिसलोकको देखकर हर्षितभया४२तवतोतिसे तिन्होंने शिवजीका स्थान कैलास दिखलाया जो दशसहस्र योजन विस्तारवाले सुमेरु पर्वतके शिखरपर विराजमान४३जहासूर्य्य चन्द्र सरीखे प्रकाशमान घरभासमान जहा ॐनमः शिवाय इस मन्त्रको जपते औ जो रुद्रअध्याय जापीजातेहें४४औ अनेक तपोमेंपरायण पुण्यवान् जनजाते हैं तो तिसे देख राजा बोला कि विनायकजीके हीप्रसादसे ४५ यह सब देवलोक मैंने देखे हैं जो जनों को दर्शन सेही पुण्यदायकहैं तिससे आगेदेखा तो सहस्र योजन तक न तो तहा सूर्य्य औ न चन्द्रमाथा ४६ तहां प्रकाशमान विमानों सेही जातेहैं और कुछभी न देखपडताहै तहां राजाने जो सुनानहींजावे अर्थात् महाभारी मेघके जैसा शब्दसुना ४७ सबओरसे पर्वतों के समान भ्रमतेभये भ्रमरोंका तो राजाने फिरतिनसेपूछा कि यह क्या शब्द होरहाहै ४८ औमैंअवकव विनायकजीके पादपद्मको देखूंगा तोराजाने अगाडीही वो दृढ भ्रामरीशक्तिदेखी।४९ जोअनेकसूर्य्यों केसे प्रकाशवाली औ जो ब्रह्मांडको ग्रसने के वलवाली पसारा है मुख जिसने औ भयानक ऐसीशक्तिकोदेख राजामूर्च्छाको प्राप्तभया ५० तो वे दूत समझाकर अगाडी लेगये तवतो तिसने तिससे भी भयंकर आधारशक्तिकोदेखी५१।५२तोभ्रामरीकेभीमस्तकपरस्थित भई तिसेदेख राजा कम्पायमानभया जो बिकरालवालोंवाली औ लम्बे ओठोंवाली लम्बी जीभवाली औ कांतिसे संयुक्त ५३ जिसके श्वास पवनहीके छोड़नेसे पर्वत भ्रमरहे औ वज्रसेभी अत्यंतकठोर शरीरोंकरके वो शक्ति वहां स्थितहोरही ५४ तो तिनदूतोंने राजा से कहा कि स्वानन्दपुर को देखो जिसके ध्यानेही से तुमधन्यहो रहेहो औ जो कोई सूर्य्यसमानश्रेष्ठकाविमान है५५ जहांरत्न सुवर्ण जड़ाऊ परमश्रेष्ठ घरभास रहे हैं औ मोती औ चांदी औ सूर्य्य

अर्थात् तिसने तिनको प्यारकिया कि पुत्रबहुत कालसे कहांचला गयाथा १८ तो देवजीभी अश्रुकंठ होगये तो दोनोंके रोम खड़े होगये तो दोनों आनन्द समुद्रमें मग्नभये जैसे देहभूले मुनीश्वर हों१९फिर बाल विनायक जी यह वचन बोले कि हे पिता तुम्हारे घर खेलते २ हमने जो २ कियाथा २० सो सब भलाबुरा आपहीने सहाहै औ बहुतसे दैत्य भी हतेगये औ भूमिभार भी उतार दियागयाहै २१ साधुजन पालना कियेगये औ धर्मके सेतु स्थापित कियेगये फिर तुम्हारीही आज्ञामें सृष्टिकर्ता कश्यपजी पै हम गये २२ फिर तिन्हें प्रणामकर सबविभववाले इस अपने लोकको आगये हैं सो तुम्हींको चिन्तवन करते हम विश्राम को नहीं प्राप्त होते हैं २३ सो तुम्हारे भी भक्तिभावको जान हमने मुनिश्रेष्ठमुद्गल जीको हमने तुम्हारे घरभेजथे तिन्हींके अनुग्रहसेतुमकरके २४ औ भक्त मुद्गलजीकरकेभी यह सुन्दर स्थानप्राप्तकिया गयाहै जोसदा ब्रह्मादि देव औ मुनीश्वरोंसे भी न प्राप्तहोने योग्यहै २५ ब्रह्माजी बोले कि तिस वचन अमृतको पीकर काशिराज तिन्हें बार २ प्रणामकरके धीरज धारके यथामति इन विनायकजीकी स्तुतिकरता भया २६ काशिराज बोला कि हे नाथ गणेशजी मैं आपके पाद पद्मको प्रणामकरताहूं जिसे कल्याणके लिये ब्रह्मादि देवता अति भक्तिसे ध्याते औ जो कमलपाशखड्गपरशु आदि चिह्नोंसेसुन्दर अंकितहै औ भक्तोंका विघ्नहारीहै २७ औ जो विष्णु शिवआदिसुरोंसे औअनेकार्थ प्रयोजन सिद्धकर्ता जनोंसे जो पर्याचर्चित कियाजाता है औ जो अनेकसे विघ्नोंकेविनाशमें कुशलहै औ जो संसारसेतप्तभये जनोंको अमृत वर्षा करनेवालाहै २८ औ हेनाथ मैं आपकेमुखारविन्दको प्रणामकरताहूंजो तीननेत्रसहित औ अग्नि,सूर्य,चंद्र,तारागण जिसमें औ कृपाकटाक्षरूप अमृतसींचनेसेतीनतापकेदूरकरने में देखी गईहै शक्ति जिसकी २९ औ हेनाथमैं आपकेकरारविन्दको नमस्कार करताहूं नानाआयुधोंसे क्षय कियागया दैत्यसमूह जिस करके अरु हे सुरेश्वर जो भक्तोंको अनेकअभय दान देनेवाला अरु-

जो संसारसागर से पार उतारनेका आश्रयरूपहै३० औ आपही सत्यगुणात्मा पनसे स्वरूप धारण करके इस संसारको रचते हो रजोगुणपनेको प्राप्तहोकरके इसेपालन करतेहो औ आपतमोगुण के आश्रयपनसे संहार करतेहो सो हे गणेशजी यह चराचरसंसार आपहीकेवशमें है३१जे शुद्ध चित्तहो आपकोनिरंतरभजतेहैं तौआप तिसके विघ्नोंको हटाकर के दौड़तेहो अर्थात् झटही आकर तिसके विघ्न हरतेहो औ वो आपको वशमें करके सुखसेसोताहै औ आप तिसके पास बछड़ेपै गऊकी नाईं दौडकर आते हो ३२ और जो जन नहीं भजते हैं सो तापोंको प्राप्तहोकर औ संसार चक्रमेंबहुत प्रकार भ्रमतेभये तौतिनमें कभी आपका अनुग्रहभीहोवे जबकभी वे मनुष्य जन्मको प्राप्तहोवें अर्थात् आपहीके अनुग्रहसे मनुष्य जन्म पाय नर मोक्षको प्राप्त होतेहैं ३३ औ जो कोई धरतीकेछिनको कोगिने तथा स्वर्गमें तारागणोंकी गणना करै औ मेघकी धार भी गिनै पर आपके गुणोंकी गणना करनेको कईवर्ष समूहोंसे शेषजी भी नहीं समर्थहै फिर औरोंकीतो क्याहीगिनतीहै ३४ औ जोआ- कार रहित आपका आकार अर्थात् भूमिभार उतारनेको आपका अवतार न होवे तो उपासना कर्मका विधान भी वृथाही होवे औ गुणोंका प्रपंच औ मायाका सोरव औ जनोंका भोग तैसे अर्थात् आपके अवतार न भये कैसे होवे ३५ जो श्रेष्ठोंकी संगति हो औ सज्जनों का अनुग्रह होवे औ सत्कर्ममें स्वभाव औ श्रेष्ठही नाव स्मरण होवे औ चित्तकी शुद्धि औ भारी आपकी कृपा होवे तौतत्व ज्ञान औ मोक्ष कुछ भी दुर्लभनहींहै ३६ श्रीब्रह्माजी बोले कि ऐ- सी स्तुति सुनप्रसन्नभये विनायकजी काशिराजसे बोले कि जोमन में स्थितहै सोही वरमांगो ३७ राजा बोला यहवरकाही कामहुआ जो कि यहां मैं आगयाहूं इनसे और ठौर कहीं मेरा जन्म मरण नहीं होवे तैसा आप कीजिये ३८ब्रह्माजी बोले कि तिस स्तोत्रसे प्रसन्नविनायकजी तिसे (ऐसाहीहो)ऐसे कहतेभये औ छिपतेहुभये तिस काशिराजको करोड़सूर्यप्रकाशवाल्ज्ञकतिसेनिजनिजकी रचते

जान विनायकजी १६ एकभी अनेकपन को प्राप्तभये तिसीक्षण से
घटाकाशकी नाईं अर्थात् एकही आकाश जैसे घटमठ आदिमें भिन्न
भिन्न प्रतीत होताहै औ जैसे जलके घड़े मे सूर्य्य अनेकसरीखा देख
पड़ता है१७सो घरघर में गये विभुविनायकजी नानाप्रकारकीक्री-
ड़ाओं में आसक्तहोतेभये सोकि कहीं २ तोसिढ़ियोंके मार्गमेंचढ़रहे
औ कहीं२झूलोमेंही झूलरहे अर्थात् हिंडोल लीला खेलरहेथे १८
औ कहींसेज में सोये औ वेही कहींझरोखोमेंदेखरहे औ कहींहँसते
औ खेलते औ कहींबालकोंके साथ जीमते १९ औ कहीं शास्त्रपढ़
रहे औ कहीं पढ़ायभीरहे औ कहीं काशिराजकेसाथ तिनविनायक
जीको निजघरमेंआवतेदेखवो घरकास्वामी हर्षताभया औमैंधन्यहूं
ऐसेबोला ऐसे वे काशिराज सहित विनायकजीसबकेघर२मेंगये२०।
२१ वो कहीं तो सुगन्धतैलों मे उबटना कियेजाते औ कहीं सुंदर
जलोंसे स्नानकररहे औ कहींजिनका परम आदर मे पैरधूपरहाहै
२२ औ वेही कहीं परमभक्ति से षोडश उपचारोंकरकेपूजतेहैं औवे
कहींपरमअन्नसे भोजनकरायेजाते बालकपनसे सादेजनकेजैसे२३
औकहीं नानासुगन्धों से औ कस्तूरीआदि चन्दनो से औ पुष्पों से
चर्चेजाते औ नानाविधि के नैवेद्योंसे भोगलगायेजाते औ कहींघर
वाली स्त्रियों से सेवा कियेजाते औ कहीं बालक औ सेवकों करके
सेयेजातेहैं २४ औ कहींयथेच्छ भोजनकरके पैरदबाने आदिसेसेये
गये सोतेभये औ कहींवेदपाठमें परायण औ कहींगानेमें रतहोरहे
वे विनायकजी २५ औ वेही कहींश्रेष्ठकथा औ कहीं हरिकथा सुन
रहे औ कहींवेकाशिराजकेसाथ वेश्याकानृत्य देखरहे २६ औकहीं
वे ही प्रभु नानाविधि आरती उतारेजाते औ कहीं वे फाशहाथलिये
लघुबालकों में खेलरहे २७ औ कहीं वेही पुराण बचाते औ कहीं
धर्मशास्त्र औ स्मृतियें भी सुनते ऐसेसबके कामपूर्णकर्त्ता विनायक
जीसबकेघर भोजनकरके प्रसन्नभये २८ सोजो२ जैसी२ जिसकी२
बाञ्छा थी सोरसब तैसी२ही पूरीकरतेभये जैसे सुप्रसन्नभये महादेव
जीऔ कल्पवृक्ष मनवाञ्छित पूरेकरैतसे२९। ३० औजैसेचिन्तामणि

औ कामधेनु सम्पूर्णही फलोंकोदेतीहै जो तिनका (दीनानाथ) ऐसा नामथासो तैसाही तिन विनायकजी करके सफलकियागया ३१ औ देवनगारे वजनेलगे औघर२मे पुष्पवर्षाभई तबतो भ्रान्तिकोप्राप्त भया काशिराज निजजनों से बोला कि ३२ ये बाल विनायकजी तो मेरे निकटही विराजरहेहैं सो ये सबकेघरगये सम्पूर्णजनोंसेकैसे पूजेजातेहैं ३३ सो अकेलेही घर२में औ यहां भी भलीभांति कैसे रहतेहैं औ जौन२ मुझेबुलानेको बेर२कहताहै ३४ तो तिन्हेंमैं भी कहतारहा कि बिना विनायकजीके मैं तुम्हारेघर कैसे भोजनकरने चलों औ फिर मैंहीं कश्यपसुतजी के साथ घरमेंगया अन्नजीमरहा हूं ३५ फिर मैं तिन्हें भोजन करते छोड बाहर भी तिन्हेंही देखता भया औलोग दृढ़विस्मितभये जिधर तिधर कहरहेहैं कि३६ नाना घरोंमेंगये विनायकजी काशिराजके साथ भोजन करतेहैं फिर तिन का वचनसुन काशिराज तिन्हें काशिराज ही बोला ३७ कि वे मेरे बिना नानाघरों में कैसे भोजन करने चलेगये तब तो दो तीन घर जाकरराजाही आपतिन्हें देखताभया ३८ तो अपनेको औ कश्यप सुतजीकोभी भोजनकरतेघर२मे देखताभया इतनेहीमें स्नानकरके वे दोनो मुनीश्वरभी आगये ३९ तो वे दोनोमुनि सनकसनन्दनजी भोजन करनेके लिये भ्रमतेभये तो महा उत्सववाली सारीपुरीको विनायकमयीही देखतेभये ४० सो कि जिस२घरमें वे प्रवेशभये तो तहां२ विनायकजी को ही देखते रहे तो फिर वे तिनको न भूलते बाहरआये ४१ तो तिन्होने तिन विनायकजी को जीमे औ नाचते जिमाते सोते औ खेलते जपते औ पढतेभी अरूपद्रावेभयेभी देखते भये४२ऐसेसर्वत्र तिन्हेंहीदेखके आपसमेंबोले कि यहांतो भोजनके लिये शुद्धस्थान कहींभीनहीं देखपडताहै ४३ सो अब शुक्रकेघरपै चलें वो हमारा आतिथ्यभाव आदरसे करेगा ऐसेकह तिसशुक्र के घरगये तो तहांभीतिन्होंने तिन विनायकजीकोही जीमतेदेखे ४४ तो वे नीचामुख किये भूखे मरतेही नगरसे बाहर आये तो यहांभी प्रकटही तिनविनायकजीकी सुंदरमूर्त्ति देखतेभये ४५फिर तो पश्च

मेंभीतर औ निजनेत्रखोलमीचकरभी औ नीचेऊपर मध्यमेंभीसर्वत्र तिन्हेंही देखअरुतिन्हेंहीदिशा विदिशाओंमेंभी ४६ तबतो फिर वे ध्यानसेनेत्र मींचकरहो ठहरगये फिर क्षणमें नेत्रखोलदेखा तोवेही विनायक स्वरूपीहैं ४७ तो वे आपसमें एकको एकदेखनेलगे औ बोले कि जिनदेवजी को हमध्याय रहेथे सो तिन विनायकजी को देखो ४८ तब वो सर्वत्र व्यापक सर्वस्वरूप गणेशजी तिनकेआगे प्रकट भये जो दशभुज औ सिंहपर सवार औ सिद्धि बुद्धिसे शोभित ४६ औ सुप्रकाशमान मुकुट औ कुंडल बाजूबंद धारणकिये औ सुंदर सुगंध औ फूलमाला नाग औ अर्द्ध चन्द्रमा भी ५० औ कस्तूरीका तिलक औ दिव्यदांतो कीसी कांतिवाले अर्थात् सुंदर श्वेतवस्त्रधरे औ जो सुचित्तवाले भक्तोंको सौम्य तेजवान् औ दुष्टों को दुष्ट दर्शन देनेवाले ५१ तो वे तत्त्वज्ञानी भये भ्रम त्यागकर विनायकजीको प्रणाम करतेभये औ हस्तपुटबांधके महामतिवाले सनक सनन्दनमुनि तिन विनायकजीकी स्तुतिकरते भये ५२ सनक सनन्दन मुनि बोले कि जो देव गणेश जी नित्य अद्वैत अपर औ पर ऐसे जो आप सनातन परब्रह्म हो तिन्हीं पञ्चभूतो के आत्मा विभु विनायकजीको हम भजते हैं ५३ चराचरमें गत अर्थात् सर्वत्र वर्त्तमान औ स्वरूपी औ परम ईश्वरहै जिनकेरोमोंमें अनेककरोड़ ब्रह्माण्ड भ्रमते हैं ५४ सो हमसे कैसे स्तुति कियेजावें जो वेदांतों करकेभी अग्राह्यहैं अर्थात् वेद वेदांत भी आपको न जानसकें औ हमारा तो मनोरथ हे देव आपनेही जानके पूर्ण करदिया है ५५ औ बालरूपधारी आपकी महिमाको हमनहीं जानते कि जो भूमि भार हरनेकेलिये आप उत्तम कश्यप सुतताको अर्थात्तिनकीपुत्रताको प्राप्तभयेहो ५६ ब्रह्माजी बोले कि तब तो तिनदोनोंमुनियों के स्तुति करते २ वो रूपतिनके आगेसे अंतर्द्धान भया जब वे रूप को न देखनेभये तब तो खेदरहित भये वे ५७ परमश्रेष्ठ मंदिर बनाकर तिसमें शुभ विनायकजी की मूर्तिवेद औ बाजे गानों से शास्त्रके देखे अनुसार शुभदिन में ५८ स्थापना करतेभये औ वे

(वरद विनायकजीहैं) ऐसे कहतेभये औ जो जहां उत्तम शरहैसो तहा (गणेशतीर्थ) ऐसे प्रसिद्धहै ५६ तो वहां स्नान औ दानदेने से औ गणेशजीके पूजनसे नरप्राचीन पापछोडकर सारे कामोंको प्राप्तहोवे तो वहा सारेमुनि आये औ दिग्पालों सहित सब देवभी आये ६० पूजेभये तिन विनायकजीको देख स्तुतिकरके जातेभये ब्रह्मा जी बोले कि ऐसे वे बाल विनायकजी के प्रभाव को देखने आयेथे ६१ फिर देखा प्रभाव जिन्होने ऐसे प्रसन्न भये वे निज परम स्थानको प्राप्तभये जो भक्तिसे इसबाल विनायकजीकेचरित्र को श्रवणकरै६२सो सब कामोकोप्राप्तहोताहैऔपरलोकमेजाकर ब्रह्ममें लीनहोकेऔतिसको बालग्रह अर्थात् पूतनादिकोकोभीपीड़ा कभीनहींहोवेगी औ वहसर्वत्रविजयवानहोगाअर्थात्तिसको सर्वत्र सदाजीत होगी ६३ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड मे बाल चरित्र में सनक सनदन उपाख्यान इस नामसे चौवनवां अध्याय समाप्त भया ॥ ५४ ॥

पचपनवां अध्याय॥

प्रसन्नभयेश्रीगणेशजीकरकेकाशिराजसेमिलनाश्रम गुरुद्विज जीको सर्व सम्पत् देना वर्णन कियाहै ॥

मुनि भृगुजीने कहा कि हे राजन् सोमकान्त तब वो तिन दोनों मुनियोके चलेगये महामोहभरा काशिराज घोड़ेपरसवार घर२ में भ्रमताभया १ तो विनायकजी को न देखके कहनेलगा कि वे मुझे छोडके अनेकसेमिष्ठान्न भोजन करनेको कहां चलेगये २ सो ही वो घर२में पूछता भया कि वे विनायकजी कहागये तो पुरवासी बोले कि वो तो अभी भोजनकरके खेलनेको चावकरता बाहर आयाहै ३ औ काशिराज भी तिनके साथथा अब तू हे राजन् वृथा क्यों पूछता है ऐसेही वो राजा सारे पुरवासि जनोंकरके निरादर कियागया ४ तो वो परमखेदको प्राप्तभया जैसे निर्द्धनकुटम्बी धनबिन मनताप करै तो कईबोले कि वे विनायकजी तो शुक्रके घर खेलरहेहैं ५ तब

तो हर्षितभया राजा शुक्रकेघरआया औ तिसके आगन में बालवि-
नायकजीको बालककी पीठपर सवार अर्थात् चढ मचढी खेलतेहुये
देखताभया ६ तो तिन्हें बैलपरचढे शिवजीके जैसदेखकर तिन्हेपरम
भक्तिसे प्रणामकरके काशिराज कहने लगा ७ राजाबोला कि बा-
लकमेंभलाई औ ज्ञानस्नेह कुछभी नहीं जानादेखा जोहोताताे मुझे
छोडके आपनेही नानामिष्टान्न कैसेभोजन करलियाहै ८ ब्रह्माबोले
कि ऐसे तिसकावचनसुन बिनायकजी बोले कि जहां२ मैंने भोजन
किया वहां२हीं आपनेभी भोजनकियाहै ६ हेमन्दजी तुम झूठबोलते
हो बुद्धिसेतुम बालकही हो सारेजनोको हमसाक्षि सहित पूछेंगे तो
ये जनभी ऐसाही कहेंगे १० तब तो जन बिनायकजी का बचनसुन
राजासेबोले कि अभीतो तैंने बिनायकजीकेसाथ भोजनकियाहै ११
हे नृपश्रेष्ठ वृद्धभया तु मिथ्या कैसे भाषण करैहैगा तब तो बुद्धिको
प्राप्तभया ज्ञानवान् काशिराजबोला १२ आपकी महामाया जानी
नहींजाती जो योगीजनोको भी मोहनेवालीहै आपधन्यहो जो सर्व
स्वरूपकरके सबसे सन्मान कियेगये हो १३ ब्रह्माजी बोले कि तब
रोमांचभया शरीरजिसका ऐसा काशिराज ध्यानही करनेलगा तब
तो बिनायकजीको रूपआपही विनायकजी में प्राप्तहोता भया १४
जैसेजलमे डालाजल जलरूपही होजाताहै सो हो फिरमायाकेवल
से येउत्तम काशिराजभी अर्थात् दोनोंएक एकहीस्वरूप होगये१५
फिर तो तिन विनायकजीको वो पालकीमें बैठाय निजमहल मे ले-
आयानानाबाजे गाजोसेऔ अनेकसेनृत्यगीतोसे१६ तोवेबालबिना
यकजी अत्यन्तहीशोभितभयेदेवोमेजैसेकामदेवसजे औपीछे२ घोरे२
पत्नीसहित शुक्रजीजातेथे१७सो बालविनायकजी ने मुख फेर तिसे
बहुतहीदेखा औ विचारते भये कि हमसे सुवर्ण आदि प्रसन्नकारक
द्रव्यनदेकरकैसचलेआया१८ऐसेकह मनसे तिसकोविभु विनायकजी
उत्तमसम्पत्ति देतेभये जोकुबेरजीकीभी सम्पदाओसे श्रेष्ठ औसपूर्ण
आश्चर्य करनेवाली १६ तो तिरस्कारकिये शुक्रजी जोदीनसपत्नीक
महामनस्वी येविचारते कि देव बिनायकजी खाटाअन्न खानेसे रूप

गयेहोंगे २० ऐसेकहआथा औ तिस निजपत्तों की कुटेयाको न देखो तो परमचिन्ताको प्राप्तभये औ तभी तिनकेसेवक शुक्लजीको सुगंध तेल ममलके २१ औ तिन्हें नहवाकर औ वस्त्रकंचन आभूषणों से सजाते भये तैसेही तिनकी पत्नी भी ठाटमें सजाई गई २२ अत्यन्त आश्चर्य्य को प्राप्त भये वे दोनों तव तो तिन निज सम्पदाओं को देखनेलगे सो कि रत्नजडी सुवर्णकीभीत औ नानाप्रकार के मचे औ आसन २३ औ मोती मणिगणों करके चितराम ठौर २ में देखते भये औ सुवर्ण के वर्त्तन औ सुन्दर वस्त्र बिछौने २४ औ अनेक प्रकार के खाने योग्य भक्ष्यभोजन देखते भये ऐसे सकल सम्पदाओं को देखकर दोनो आपसमें कहनेलगे कि २५ देखो क्या पे तुच्छ घर इन्द्रभवन सरीखा होगया है फिर शुक्लजी निज पत्नी को कहनेलगे कि हे शुभगे ये सव गणेशजीके ही प्रसाद से भया जान वे महाप्रभु प्रत्यक्षहो नहीं देतेहैं प्रत्यक्षमें तो थोड़े सेही प्रसन्न करते २६।२७ सो आपसे अर्थात् अभिमान करके वहुतसे भी दियेको थोड़ाही मानतेहैं औ भक्तिसे दियेथोडेसे कोभी त्रिभुविनायकजी वहुत मानलेतेहैं २८ तिसकारणसेवो भयसे औ कामकरके औ स्नेहमें शत्रुभावमेंतोभी निजहित केलिये गणेशजीहो स्मरण नमनेयोग्य स्तवनीय औ पूजनीय है २९ मुनिजी वोलेकि फिरतो दोदूत नरान्तक सूरांतकके भेजे वहुतकालसे नगरके भीतर (शूर)औ (चपल) ये छिपरहेथे ३० जिनके प्रचण्ड शब्दसे त्रिलोकभी पीपल के पत्रके समान कांपताथा जिनके शिरके कंपानेसे इन्द्रादि सव देवभी कम्पायमानहोतेथे ३१ जिनके पराक्रम में औ वलमें शब्द मेंसमान कोईत्रिभुवनमेंभी नहींहै सो ये विचारतेभये कि येमुनिसुत पालकी में वैठामारनाचाहिये ३२ क्योंकि इसने पहिले पापे वडी वडी कईदैत्य मारेहैं सो तिनका अव वदलालेना चाहिये ऐसे वे आपसमें विचार करतेभये ३३ तोवे महाशब्दवाले विजली रूपहो फर गर्जना करतेभये तोसवजने येंकपा है२ऐसेकह अत्यंत भयभीत भये ३४ इतनेहीमें वेपालकीके निकट पहुंचे तो त्रिनायकजीके पौ

काशिराजकोभी त्यागके पालकी लेजानेवाले सब भगगये ३५ तौ बिनायकजीने तिन दोनो वलवालोको वलसे हाथमे पकडलिये औ तिनदोनो को वेधरती में पटकनेकेलिये भ्रमातेभये ३६ फिरकरुणा सेकोमल मनभये तिन्हे धरती में धीरे से धरते भये औ बोले कि कोई औरही इन्हेवलवान् मनुष्यमारो ३७ मच्छरके मारनेसेपुरुष का कौन पुरुषार्थहै तवफिर तिनसे पूछा कि तुम किसके दूतहो सो कहो ३८ अपने सामर्थ्यसे प्रयत्नकियेपर पुरुपका कुछदोप नहींहै ऐसा तिनका वचनसुन वेअगाड़ी स्थित भये कहनेलगे ३६ आप कृपाके समुद्र औ दीनोकेनाथ विख्यातहो औ हमारेरक्षक पिताहो सोकि सींचने वाला अर्थात् गर्भाधान कारण औ उपनयन कर्त्ता अर्थात् यज्ञोपवीत दिलानेवाला औ विद्याकादाता औ परम अभय दानदाता ४० औ अन्नदाता येपांचप्रकार के पिता तीन भुवन में विख्यात है सोहेदेवजी हमगुप्तरूप नरातकके भेजेदूतहै ४१ आप को विघ्न करनेकेलियेआयेथे पर अवतो आपहीनेहमको वचाया है सोसर्वज्ञाता आप भूत भविष्य वर्त्तमानको जानते हैं ४२ जोजोवैर से आपकेपासआये तिन्हे आपने क्षणभर में मारेहै इतनेमेंही पुर वासीजन तिन विनायकको कहनेलगे ४३ हेदेवजी इनलोक भय-कारी दुष्टदैत्योंको आपने क्यो रक्षित कियेहै इनकातो उपकार भी किया अपकार अर्थात् नाशके लियेही होताहै ४४ सर्पको दुग्धपि-लाया बिपहीहोजाता है मुनिजीबोलेकि तवतिनसे देवजी बोलेकि पहिलेही इनको हमने अभय दान दियाहै अव अन्यथा कैसे होवे ऐसेकह विनायकजीने तिन दोनो को छोडदिये तौकाशिराज फिर बोला ४५।४६ कि अनगिनत अपराध सहके येशत्रु आपने छोड दिये सोप्राणीके जन्म मरण में आपकी इच्छाही कारण है अर्थात् आपचाहो मारदेवो तथा छोडदेवो४७ ऐसे कहके काशिराजविना-यकजी महलोमें आये औ सारेजन तिन्हें नमस्कार करकरके निज निज भुवनको पधारतेभये ४८ सोकि तिसराजा की औ नानारूप वाले तिन विनायकजी की प्रशंसा करते भये चलेगये ४६ ॥ इति

श्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड बाल चरित्र में दूतोंको छोडना इस नामसे पचपनवां अध्याय समाप्तभया ॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

चकेगये दूतोंकरके नरांतक सुरांतककी सभामें सबके सुनते २ श्रीगणेशजी के गुणवर्णन करना वर्णनकियाहै ॥

मुनिजी बोले कितवतो वे दूत रमणीयनरांतक सुरांतककीसभा मेंगये जो हजारोंथभोंसे रोचक औ मणि मोतियोंसे विशेष शोभित सभाथी १ औजो अनेक वीरोंकेसंम्वाद नामसेकडाई अर्थात् भीड से युक्त औजोनानाआश्चर्य वालीशुभर औ तहांवोनरांतक मणिजटित आसन,पर बैठाथा तिसी समय तिसके दूत तहा जा पहुचे ३ जो दोनों आकाशको चाटनेवाले अर्थात् ऊंचेमाथोंवालेऔ वलवालोंमें भी छोटेवल वाले वो शूर औचपल दोनो तिसेनमस्कार करकेतिन विनायकजी के वहुतसे गुण वर्णन करते भये ४ जो भला औ बुरा,हो सो तैसाही श्रेष्ठ दूतोंकोकहदेना चाहिये नहींतो तिसदूतका दोषहै औ स्वामीकाभी भारी कोपहोवे ५सो सब स्वामी को श्रवणकरके सम्यक् प्रकार करणा चाहिये सो कि हमदोनों विनायकजीको विघ्नकरनेकेलिये तिमपुरीमें गयेथे ६ सो हम अत्यतही गुप्तभये बालकको देखते तहा रहतेरहे तो पहले तो (विघट)औ (दतुर)ये दोनों बालकरूप बन गये ७ तिनसे आलिंगन किये वे विनायक शीघ्रही तिन्हें भस्म करतेभये फिर (पतग) औ(विधूल) दोनों वायुरूप धरे ८ तिन बाल विनायक जीको उडाने गयेथे तो वे शिर पकडकर नाशकियेगये औ जो प्रवलदैत्य पर्वतरूपहोकर गयाथा सो तिन करके सोखण्ड कियागया चूर्णभया ९ औ (काम क्रोध)येदोदैत्य गधेकारूप धरकर तिनको मारनेकेलिये गयेथेतो मार्गमेंही तिनकरके चूर्णकिये गये येदोनों धरती में गिरगये १० फिर कुंडिनीकापुत्र (तुवुर) हस्तीरूपहोके राहरोककर बैठगया तो तिनसे वो मस्तक फाडकर मारा गया ११ सो कि तिन बलवान

काशिराजकोभी त्यागके पालकी लेजानेवाले सब भगगये ३५ तो विनायकजीने तिन दोनो बलवालोको बलसे हाथमे पकडलिये औ तिनदोनो को वेधरती में पटकनेकेलिये भ्रमातेभये ३६ फिरकरुणा सेकोमल मनभये तिन्हें घरती में धीरे से धरते भये औ बोले कि कोई औरही इन्हेंबलवान् मनुष्यमारो ३७ मच्छरके मारनेसेपुरुष का कौन पुरुषार्थहै तबफिर तिनसे पूछा कि तुम किसके दूतहो सो कहो ३८ अपने सामर्थ्यसे प्रयत्नकियेपर पुरुपका कुछदोप नहींहै ऐसा तिनका बचनसुन वेअगाड़ी स्थित भये कहनेलगे ३९ आप कृपाके समुद्र औ दीनोकेनाथ विख्यातहो औ हमारेरक्षक पिताहो सोकि सींचने वाला अर्थात् गर्भाधान कारण औ उपनयन कर्त्ता अर्थात् यज्ञोपवीत दिलानेवाला औ विद्याकादाता औ परम अभय दानदाता ४० औ अन्नदाता येपाचप्रकार के पिता तीन भुवन मे विख्यात हे सोहेदेवजी हमगुप्तरूप नरातकके भेजेदूतहैं ४१ आप को विघ्न करनेकेलियेआयेथे पर अबतो आपहीनेहमको बचाया है सोसर्बज्ञाता आप भूत भविष्य वर्त्तमानको जानते हे ४२ जोजोवैर से आपकेपासआये तिन्हे आपने क्षणभर में मारेहैं इतनेमेंही पुर वासीजन तिन विनायकको कहनेलगे ४३ हेदेवजी इनलोक भय-कारी दुष्टदैत्योको आपने क्यो रक्षित कियेहै इनकातो उपकार भी किया अपकार अर्थात् नाशके लियेही होताहै ४४ सर्पको दुग्धपि-लाया विषहीहोजाता है मुनिजीबोलेकि तबतिनसे देवजी बोलेकि पहिलेही इनको हमने अभय दान दियाहै अब अन्यथा कैसे होवे ऐसेकह विनायकजीने तिन दोनो को छोडदिये तौकाशिराज फिर बोला ४५।४६ कि अनगिनत अपराध सहके येशत्रु आपने छोड दिये सोप्राणीके जन्म मरण में आपकी इच्छाही कारण है अर्थात् आपचाहो मारदेवो तथा छोडदेवो४७ ऐसे कहके काशिराजविना-यकजी महलोमें आये औ सारेजन तिन्हें नमस्कार करकरके निज निज भुवनको पधारतेभये ४८ सोकि तिसराजा की औ नानारूप वाले तिन विनायकजी की प्रशंसा करते भये चलेगये ४९ ॥ इति

श्री गणेश पुराण उत्तर खण्ड बाल चरित्र में दूतोंको छोडना इस नामसे पचपनवां अध्याय समाप्तभया ॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय॥

धचकेगये दूतोंकरके नरांतक सुरांतककी सभामें सबके सुनते २ श्रीगणेशजी के गुणवर्णन करना वर्णनकियाहै ॥

मुनिजी बोलेकितबतो वे दूत रमणीयनरांतक सुरांतककीसभा मेंगये जो हजारोंथंभोंसे रोचक औ मणि मोतियोंसे विशेष शोभित सभाथी१ औजो अनेक वीरोंकेमम्वाद नामसेकडाई अर्थात् भीड से युक्त औजोनानाआश्चर्य वालीशुभ२औ तहांवोनरांतक मणिजटित आसन पर बैठाथा तिसी समय तिसके दूत तहां जा पहुचे ३ जो दोनों आकाशको चाटनेवाले अर्थात् ऊंचेमाथोंवालेऔ बलवालोंमें भी कँटेवल वाले वो शुर औचपल दोनों तिसेनमस्कार करकेविन विनायकजी के बहुतसे गुण वर्णन करते भये ४ जो भला औ बुरा हो सो तैसाही श्रेष्ठ दूतोंकोकहदेना चाहिये नहींतो तिसदूतका दोषहै औ स्वामीकाभी भारी कोपहोवै ५सो सब स्वामी को श्रवणकरके सम्यक् प्रकार करणा चाहिये सो कि हमदोनों विनायकजीको विघ्नकरनेकेलिये तिमपुरीमें गयेथे ६ सो हम अत्यतही गुप्तभये वालकको देखते तहां रहतेरहे तो पहले तो (विघट)औ (दतुर)ये दोनों वालकरूप बन गये ७तिनसे आलिंगन किये वे विनायक शीघ्रही तिन्हें भस्म करतेभये फिर (पतंग) औ(निधूल) दोनों वायुरूप धरे ८ तिन वाल विनायक जीको उडाने गयेथे वो वे शिर पकडकर नाशकियेगये औ जो प्रबलदैत्य पर्वतरूपहोकर गयाथा सो तिन करके सौखण्ड कियागया चूर्णभया ६ औ (काम क्रोध)येदोदैत्य गधेकारूप धरकर तिनको मारनेकेलिये गयेथेतो मार्गमेंही तिनकरके चूर्णकिये गये वेदोनों धरती में गिरगये १० फिर कुंडिनीकापुत्र (तुंबुरु) हस्तीरूपहोके राहरोककर बैठगया तो तिनसे वो मस्तक फाडकर मारा गया ११ सो कि तिन बलवान

तिनमन्त्रियोको औ सारेशूरवीरों को वस्त्र धन देताभया औ तिनसे बोला कि येतुम्हारा सग्रामसमयहै निज२वलकोअवदिखलाओ९ विनायकजीके अनुग्रहसे हमैभयकहीं नहींहै तव भी चलवान् दैत्य ने इसपृथ्वीको वहुधा जीत रक्खीहै १० सो जीतनेको कुछनियम नहींहै ये पुरुप दैवके आधीनहीं है कुछ सेनाही से जीतनहींहोती चाहे लाखविभागसे बँटीसेनाहो इससेअव मैं ये कहताहू कि ११ कहांतो समुद्र औ कहांघड़ेकाजल औ कहांपटविजना औ कहांसूर्य सो तिसीसे रक्षाकिये हमसामउपाय से अर्थात् मेलसे राज्यश्रीभोगरहेहैं औ तिसीकेपाससे हमारेपर वहुतसे अपराधभये सो हमने शिरपरधरे सोकि कितनेही दैत्यआयेथे सो विनायकजीके पराक्रम से वे हतेगयेहैं १२।१३ औ अव यहमिल्लतको त्यागकरचलाआया है इससे अव तुम हित विचारकरो मुनिजीवोले कि तहां भयभीत भयेराजाको तिसकामहामंत्री यहवोला १४ कि तुमचारबुद्धिवालों को साथलेकर नरान्तक दैत्य के पासजाओ क्योंकि निज कार्य के लिये नीचकेभी शरणहोजाना शुभदायकहै १५ हे राजन् मैं बृहस्पतिजीकामत तुमसेकहताहू तिसेसुनो औ हेराजेन्द्र तिसेतैसाही सुनकेकरो तो तिससेकुशलहो १६ (बृहस्पतिजीका वचनहै) कि कन्यादान औ साथभोजन औ वस्त्रदान औ मेलकीचर्चा नम्रहोना प्यारकरना प्रमाणदेना इनकरके औ तिसकीकीर्त्तिका कीर्त्तन अर्थात् अत्यन्त तिसीका यशगाना औ तिसके मानेजनोसे वतलाना इतने२ इन मस्यउपायो से ॱ ॱको ॱ ॱ मारै १७ औ जो

जलातेभये तो वो भारीअग्नि चारोंदिशा औ विदिशाओं में जलने लगी २१ औ तिसके धुयेंसेसूर्य भी ढकगया तो कुछभीनहीं जान पड़ा तोतहां तब सबलोगोंको वोमहाभारी भयानक प्रलयसरीखा होगया२२औ जो२जन अग्निकेभयसे बाहर निकलतेथे तोतिन्हेंवे शत्रुपकडलेतेथे औ वे बालकोंसहित स्त्रियों को आलिंगनकरतेथेऔ चूमलेतेथे२३तो वहांपतिव्रता स्त्रियेंलज्जामें अत्यन्तडूबी प्राणत्याग देती भई अरु कई नगरके द्वारोंपर चढकर शरीर त्यागकरती भई २४ औ कई शस्त्र फांशे विष इत्यादिको करकेभी प्राणत्यागती भई औ कई जो अत्यन्त रमणीयथींतिनकोदूत पकडके स्वामिनरान्तक के पास लेगये २५ तिसकरके भोगीगई वे आपही से नगर को भेजीगईं ऐसे तिस महाप्रलय को देखकर राजा निजदूतों से फिर बोला २६ कि जोहमारे सन्मुखही जो दुष्ट खोटेआत्मावाले स्त्रियों को पकडलेजाते हैं तो हमारा महाभारी अपयशभया तिससे हम राक्षसों से युद्धही करेंगे २७ ऐसे कह युद्ध के अत्यन्त मदवाला काशिराज निजअश्वको हाकता२ धनुषकोज्या सहित करके अर्थात् चिल्लाचढाय शीघ्रही बाणोंकीवर्षा करताभया २८ तो तिससे सूर्य जो आच्छादित भये औ दैत्यमोहको प्राप्त होतेभये जैसे मेघधारें वर्षतेहैं तैसेही वो राजाका धनुषवाण वर्षाकरताथा २९ तोतिससे हतेगये दैत्योंकेसमूह तिनमेंकई तो मरगये औ कई कटगये औकई पैरोंहींसे रहितहोगये ३० कइयोंका पेटफटगया औ कइयोंकेहाथ कटगिरे कइयोंके नेत्रफूटगये औ कइयोंकीछाती फटजातीभई ३१ तब तो वेभ्रौजोंसेनासहित काशिराजके पास आये औवेभी निज२ खड्गोंसे औ परशुओंसे तिनपराये अर्थात् शत्रुशूरवीरोंको हतेतभये ३२ तो तिनकेघातसे कईमरे औ कईभूतलमें गिरतेभये औ वेदैत्य भी इन्हेंरणागणमें हनतेभये३३तो तिससेनाकेरजसे महाभयानक भारी अन्धकारभये वेवीर वेपहिचानसेअपने औ परायोंकोमोहतने भये३४ फिरतो वेजीतनेकी इच्छाकरके आपसमें महालडाईकरने लगे सो कि घोडेसवार औ रथचढे औ पैदलोंकरकेभी पर्यंतभारी

युद्धहोनेलगा ३५ औ पैदलभी रथचढ़ोंसे शस्त्रवाणोंकरके लडनेलगे ऐसे तिनका शत्रुओंसे बडेवेगसेप्रहारोंवाला घोरयुद्धहोताभया ३६ तवतो कटीटूटीवो दैत्यसेनापीठ दिखातीभईतोहीजयसंयुक्त काशिराज ऊंचेसेसिंहके जैसाभारीशब्दकरताभया ३७औहर्षसेतिससेनामेगया तिसयुद्धमें श्रेष्ठ२ शूरवीरों को देख२कर मारता तिसमहाघोरसेनाकोभेदनकरताभयायुद्धकेलियेक्रोधसेभएगजकीनाई अर्थात् जैसे मतवालाहाथी चीरताफाडता चलाजाताहै ३८तो तिसनेसेनामे सैकडौंहजारों शूरवीरोंको मारडाले तोतिस अकेलेकोही प्रहार करता देख वे शत्रुसेनावाले शूरवीर इसे रोकतेभये ३९ औ यह राजाहीहै ऐसेजानकर वेसारेतहांही आगये औ तिसकी वाणवर्षा को सहकर बलकरके तिसे पकडलेतेभये ४० औ फिर वे सेनावाले राक्षस मन्त्रियोंके औ पुत्रोंकरके सहित राजापकडागया ऐसाभारी शब्द करतेभये ४१ फिर इसराजा के सेनावालेभी पकडेगये कई भागगये औ कई मरकटगये औकईतिन्हीके पास शरण आते भये ४२ तो महावनमे वे बेलकी नाई वलवालेभेडियेसरीखे वेदूतमन्त्री औपुत्रसहित इसराजाको नरान्तककेपासलेजातेभये ४३ औ फिर नरुकनेवाले तिसके सेनावालोंने तिसकीसारीपुरीको जलादई तव तो नरान्तक निजवीर जनोंसे बोला ४४ कि जिसलिये शूरवीरआये थे सोही हमाराकार्य सिद्धभया औतिसमुनि पुत्रकी तो हमारे कुछ भी गिनतीनहींहै ४५ क्योंकि राजाके जीतेगये सेनाभी जीतीगई औ किलाजीतलिये पुरभी जीताहीगया सोकाशिराज के जीतलिने वो वालकतो जीतहीलियागया इसमेंसंशयनहींहै ४६ औ यहपकडनेके भयसेराजाही तिसवालक को तो अभी लेआवेगा ऐसेकह कर वाजेगाजोंसे नरान्तक तिस निजपुरी को आताभया ४७ सो कि काशिराजको आगेकरके वन्दीजनों से स्तुति कियाजाता औ वन्दीजनोंको वस्तुदेताभया ब्राह्मणोंको भीबहुत दान देताभया वो नरान्तक ४८ इतिश्री गणेशपुराणे उत्तरखण्डमें वालचरित्र काशिराजका पकड़ाजाना सत्तावनवां अध्यायहुआ॥५७॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी के गणोंसे नरान्तक का हारना ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे मुनेव्यासजी जितने ये नरान्तक हर्ष से आधे मार्ग में पहुंचा तितनेही काशिराजकी पत्नीनेसुना कि राजा पकडागया १ तो वो अरुजो पुरवासी शेषबचेथे सो अत्यन्त शोच करने लगे तो वो महारुदन शब्दभया जैसे निर्जलस्थान में मछलियोका तडफडाहट होवे २ सो वोअम्वारानी बेरियोसे निजभर्ता केपकड़ेगये मूर्छाको प्राप्तभई भूमिपर गिरपडी औवेरगहोगई जैसे पवनसेहती केलेकीपाती ३ फिर वो सखियो के साथ रोतीभई औ रोती२ही यहकहनेलगी अम्बावोली कि जोसिंहसमान खेलनेवाला अर्थात् अत्यन्त पराक्रमसे क्रीडा करनेवाला औ जो गजोंकी सेना काहन्ता औ जो शत्रुओं को परास्त करनेवालाथा ४ सो तिस गीदडके से बलवाले दैत्यकरके कैसेबल से पकडलिया गयाहै मेरे स्वामीका वो हजारमदवाले हाथियोके जैसाबल कहां चलागया ५ जोभर्ता करोडोंदैत्योंको मारनेवालाथा मेरेपरमहेश्वरजी कैसेकोप होगयेहैं अबमें अपनेपतिको कैसेदेखोंगी ६ औमें किसदेवपै शरण जाऊ जो तिसे शीघ्र ही छुडालावे सो इसकश्यपजी के बालक के कहने से श्रेष्ठयुद्धकिया सो सब वृथाही होगया राजामें यह महा मूढपन आगया जो इसबालकके कहनेसे इसनेश्रेष्ठोंसे वृथाविरोध किया ७। ८ अब तिसभर्ताके पकडनेवाले महा दैत्य नरान्तक को कौन जीते ये सबके विन मुझ खोटी आशवाली को ही प्रलय कैसे प्राप्तभयाहै ९ अब में अरुपहवरती विधवापने को कैसे प्राप्तभईहूं ऐसा अर्थात् पतिको छुडानेवाला शरणदायक करुणा समुद्र कोई भी कहींनहीं जन्माहै १० मुनिबोले ऐसेतिसके शोकको सुन बल वाले कश्यपसुतनी ब्रह्माण्डक फोडदेनेवाले ऐसेभारी शब्द से गर्जतेभये ११ तिनकेशब्द के प्रतिशब्द अर्थात् गोंजसे आकाश औ दिशाभी गर्जतीभई औ पर्वतवन खान सहित सारीधरती कांपती

युद्धहोनेलगा३५औ पैदलभी रथचढ़ोंसे शस्त्रबाणोंकरके लडनेलगे ऐसे तिनका शत्रुओंसे बडेवेगसेप्रहारोंवाला घोरयुद्धहोताभया३६ तबतो कटीटूटीवो दैत्यसेनापीठ दिखातीभईतोहीजयसंयुक्त काशिराज ऊंचेसेसिंहके जैसाभारीशब्दकरताभया ३७औहर्षसेतिससेना मेगया तिसयुद्धमें श्रेष्ठ२ शूरवीरों को देख२कर मारता तिसमहा घोरसेनाकोभेदनकरताभयायुद्धकेलियेक्रोधसेभएगजकीनाईं अर्थात् जैसे मतवालाहाथी चीरताफाडता चलाजाताहै३८तो तिसनेसेना में सैकडोंहजारों शूरवीरोंको मारडाले तोतिस अकेलेकोही प्रहार करता देख वे शत्रुसेनावाले शूरवीर इसे रोकतेभये ३६ औ यह राजाहीहै ऐसेजानकर वेसारेतहांही आगये औ तिसकी बाणवर्षा को सहकर बलकरके तिसे पकडलेतेभये ४०औ फिर वे सेनावाले राक्षस मन्त्रियोंके औ पुत्रोंकरके सहित राजापकडागया ऐसाभारी शब्द करतेभये ४१ फिर इसराजा के सेनावालेभी पकडेगये कई भागगये औ कई मरकटगये औकईतिन्हीके पास शरण आते भये ४२ तो महावनमे वे बैलकी नाईं बलवालेभेडियेसरीखे वेदूतमन्त्री औपुत्रसहित इसराजाको नरान्तकके पासलेजातेभये ४३ औ फिर नरुकनेवाले तिसके सेनावालोंने तिसकीसारीपुरीको जलादई तब तो नरान्तक निजवीर जनोंसे बोला४४कि जिसलिये शूरवीरआये थे सोही हमाराकार्य सिद्धभया औतिसमुनि पुत्रको तो हमारे कुछ भी गिनतीनहींहै ४५ क्योंकि राजाके जीतेगये सेनाभी जीतीगई औ किलाजीतलिये पुरभी जीताहीगया सोकाशिराज है जीतलिये तो बालकतो जीतहीलियागया इसमेंसंशयनहींहै ४६ औ यहपकड़नेके भयसेराजाही तिसबालक को तो अभी लेआवेगा ऐसेकहकर बाजेगाजोंसे नरान्तक तिस निजपुरी को आताभया ४७ सो कि काशिराजको आगेकरके वन्दीजनों से स्तुति कियाजाता औ वन्दीजनोंको वस्तुदेताभया ब्राह्मणोंको भीवहुत दान देताभया वो नरान्तक ४८ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें बालचरित्र काशिराजका पकडाजाना इसनामसे सत्तावनवां अध्यायहुआ ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

श्रीगणेशजी के गणोंसे नरान्तक का हारना॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि हे मुनेव्यासजी जितने ये नरान्तक हर्ष से आधे मार्ग में पहुंचा तितनेही काशिराजकी पत्नीनेसुना कि राजा पकडागया १ तो वो अरुजो पुरवासी शेषबचेथे सो अत्यन्त शोच करने लगे तो वो महारुदन शब्दभया जैसे निर्जलस्थान में मछलियोंका तडफडाहट होवे २ सो वोअम्बारानी बैरियोंसे निजभर्त्ता केपकडेगये मूर्च्छाको प्राप्तभई भूमिपर गिरपडी श्रौवेरगहोगई जैसे पवनसेहती केलेकीपाती ३ फिर वो सखियों के साथ रोतीभई श्रो रोतीरही यहकहनेलगी अम्बाबोली कि जोसिंहसमान खेलोंवाला अर्थात् अत्यन्त पराक्रमसे क्रीडा करनेवाला श्रो जो गजोंकी सेना श्रोकाहन्ता श्रो जो शत्रुओं को परास्त करनेवालाथा ४ सो तिस गीदडके से बलवाले दैत्यकरके कैसेबल से पकडलिया गयाहै मेरे स्वामीका वो हजारमदवाले हाथियोंके जैसाबल कहां चलागया५ जोभर्त्ता करोडोंदैत्योंको मारनेवालाथा मेरेपरमहेश्वरजी कैसेकोप होगयेहैं अबमैं अपनेपतिको कैसेदेखोंगी ६ श्रोमैं किसदेवपै शरण जाऊं जो तिसे शीघ्र ही छुडालावे सो इसकश्यपजी के बालक के कहने से श्रेष्ठयुद्धकिया सो सब वृथाही होगया राजामें यह महा मूढपन आगया जो इसबालकके कहनेसे इसनेश्रेष्ठोंसे वृथाविरोध किया ७। ८ अब तिसभर्त्ताके पकडनेवाले महा दैत्य नरान्तक को कौन जीते ये सबके विन मुझ खोटी आशवाली को ही प्रलय कैसे प्राप्तभयाहै ६ अब मैं अरुयहधरती विधवापने को कैसे प्राप्तभईहै ऐसा अर्थात् पतिको छुडानेवाला शरणदायक करुणा समुद्र कोई भी कहींनहीं जन्माहै १० मुनिबोले ऐसेतिसके शोकसेमुन बल वाले कश्यपसुतजी ब्रह्माण्डक फोडदेनेवाले ऐसेभारी शब्द से गर्जतेभये ११ तिनकेशब्द के प्रतिशब्द अर्थात् गोंजसे आकाश श्रो दिशाभी गर्जतीभई श्रो पर्वतवन खान सहित सारीधरती कांपती

भई१२ औ तिसीशब्दसे पक्षीगिरमरे औतबभ्रान्तभये कईजनभीगिर पड़तेभये औ फिर गणेशजी सिद्धिकी ओरदृष्टिकरके क्रोध से व्याकुल नयनकिये कहतेभये किकहांचलीगईहै इसमहायुद्धहोनेमेंहोतीतभी वो सिद्धि तिनविनायकजीकेअभिप्रायको जानकेनानाप्रकारकीसेना तैयारकरतीभई १३। १४ सो कि महाभयानकवाले सहस्रोंहीं शूर वीर उत्पन्नभये जो हलसरीखे दांतोवालेसर्पकीसीजीभनिकालते औ जो नरपर्वतकेसमान मस्तकोंवाले १५ औ फाडा मुख जिन्होने औ अकारणसेही सारे भूतलकोग्रसनेवालेजो मुखसे अग्निनिकालते सौ नेत्रजिनके औ महाबलवालेगण१६ जिनकेनाकोके छेदोमेंघुसे महा हाथीभी नहींदेखपड़ते औ सूर्यचन्द्रमा जिनकेस्वासही जे पृथ्वीपर गिरपड़े १७ औ जिनकी जटाओसे सारीपृथ्वी भलीभांति बुहारीजावे जो सहस्त्रयोजन अर्थात् चारहजारकोशलम्बे हाथोवाले औ तिससे दूने अर्थात् आठसहस्रकोश लम्बेपैरजिनके १८ फिर तिनका जो क्रूरनायकथा सो विनायकजीके समीपआया औ पूछताभया कि हे प्रभो मुझको क्याकरनाहै सो कहिये १९पर हेस्वामिन् पहिले भूखे भयेमुझको तृप्तिकारक भोजनदीजिये ऐसेकहने तिसपुरषको तिन विनायकजीनेकहा कि २० इसनरान्तककी पालीभई भारीसेना को भक्षणकरलेवो अरु वेगसहिततिसेमारकर तिसका शिरमेरेलियेले आवो२१ तिसकीसेनासेजोतेरीतृप्ति नहोगीतो हमतुझको औरभीभो जनदेवेंगे ऐसेतिनकी आज्ञापाय औ तिन विनायकजीकोनमस्कार करके २२ औ फिर महाभारी शब्दकरके नरान्तक के निकटआया तिसके सिंहनाद सरीखे शब्द से औ तैसेही रूप से सेनावाले २३ औ नरान्तक भी भयभीतभये सो दशोंदिशाओंको भागगये औ वो क्रूर पुरुष तिन भागतेर सबोको हाथपर धरकर मुखमें डालताा भया २४ औ भूमिसेरज ऐसाउठा कि कुछभी न जानपड़ा वोतिस महाघोर अन्धकार में कुछ भी न जानपड़ा २५ तो तिस भयानक पुरुषकोदेखकर कइयोंनेप्राणखोदिये तो तिनमृतोंको भी औजीवतों को वो शीघ्रही भक्षणकरताभया २६ तो नरान्तक सारीनिजसेना

केविनाशको देखकरके मनमेविचारताभया कि कृतान्तकाभीनाशक अर्थात् यमराजका भी हन्ता यहकहांसे आगयाहै २७ अबमें क्या करूं यह तो बलवाला देखपडताहैऐसे कहतेर देखातो तिसनेआधी सेना तो भक्षणकरलई२८मोकि प्रलयाग्निके समान यहसेना को खारहाहै बलसेतो सोयहअब सबसेनाको नि शेष करदेवेगा अर्थात् सबको खालेगा जैसे मुनि अगस्त्यजी समुद्र को आचमन करगये थे २९ तो वे सारे दैत्यकी सेनावाले भारी शब्द करनेलगे बहुवसे तिसकरके भक्षणकियेगये औ कईक पैरफटकारने से मारेगये ३० औ कईश्वासके पवनसेहते औ कईभयसेही मरगये औ तब कईशूर वीर एककेऊपरएकर ऐसेगिरपडतेभये ३१ औ हमारी रक्षाकरोर ऐसे वे नरान्तकको पुकारे तो ही येक्रूर हाथोंकेघातसे हतेभये तिन्हें तिसीक्षणसे खालेताथा ३२ तो तिन अनगिनतों के भक्षणकरने से भी तिसका जठराग्नि शान्त नहीं भया तब तो घोड़ोंके सवार औ हस्तीचढे रथवैठे अरु औरभीपिपादे ३३ भक्षणकिने औहेमुनेव्यास जो अनेक हाथी घोड़े वाहन तिसनेहते फिर तो वो दैत्य विसमहा शब्द को सुनकर औ बलसेतो निज धनुष को ज्या सहित करके ३४ औ गोड़ो को धरती मे रोपकर औ दोनोओर शरधरकर औ वाणलेउठाय धनुषकोखैचकर तब तिसपुरुषपर वाणवर्षाताभया ३५ तब तो विसवाणवर्षासेकिया फिर अन्धकार होगया तो पक्षीगिरे औ तिसकाशिराजके भी अनेकसे जन भूमिपर गिरतेभये ३६ तो तिसदैत्यके चलाये वाणोंको वोपुरुष निगललेता भया सो अनगणितवाण तिसकेरोमोंमे घुसडगये ३७ औ सब रुधिरझरारहे पर तिसने कुछभीपीडा न जानी तब तो तिसनरान्तक ने निजपुरुषार्थ से मन्त्र प्रकटकिये ३८ तो तिन सबअस्त्रोंको भी वो पुरुष निगल गया जैसे सापिन अण्डाको निगले तबतो रुकगये अस्त्रोंवाला औ क्षयभये शस्त्रजिसके औ नष्टभया वाणोंका समूह जिसका ३९ औ क्षीणभई सामर्थ्य जिसकी ऐसा वो नरान्तकदैत्यराज पलायमान होताभया औ वो कालपुरुषगण तब भी तिसकेपीछेदौड़ोलगा ४०

तवतो वोदैत्य तिसेपाछेलगा देखता भूतलभरमेंभ्रमताभया औ फिर तिसीकेभयसे नरान्तक स्वर्गमेचढगया४१ फिरभी तिसेही पीछेदेख धरतीहीमें गिरपड़ा फिरभी तहांतिसे पीछेही देखा तोपातालमेंप्रवेश करताभया४२ तवतो तिसकाल पुरुषगणने तिस नरान्तकको वाल पकड़केवशकिया जैसे विलमेंवढ़ते सर्प्पकोगरुड़पकड़लेवे ४३ फिरतो वो वलवान्पुरुष तिसनरान्तकसेबोला कि रे नरान्तक दीखगया तू अव मेरेआगेसे कहां जायगा ४४ ईश्वरके वरसे मुझको देव ऋषियों की हिंसाकरनावृथाहै अर्थात् तिन्होंकोतो मैं नहींमारताहूं हे महा खल मैं तो अनगिनतदैत्यमनुष्योंकाहीसंहारकरताहूं ४५ औ हेदुष्ट तुझको संहारनेको बिनायकजी औतारभयेहैं सो तू अहंकारतजके तिन के शरणको प्राप्तहोजा ४६ तिनकेचरणकमल देखकर तेरेपाप विना होजावेंगे ऐसेकहके तिसनरांतकदैत्यकोवोकालपुरुष बलसे लेआता भया ४७ तिनविनायकजीके निकट तिसपरम दैत्यराजको फिर ये निजस्वामी विनायकजीकोप्रणामकरकेबोलाकि ४८ आपकी आज्ञापाय के मैंने सारीसेनाखाईहै औ इसकरके मैं अत्यन्तही क्लेशकोप्राप्तभया सो इसेपकड़केआपपै लेआयाहूं ४९ अव हेप्रभो मेरेखेददूरहोनेके लिये अवमुझेसोनेकोस्थानवताइये औ सवोंकेसुखकेलियेहे विनायक जी इसेआपमुक्तिदीजिये ५० ऐसे तिसकावचनसुनकर विभु विनायक जी वोले कि मेरेमुखकेभीतरतू यथेच्छनिद्राकोप्राप्तहो अर्थात्सोजा ५१ ऐसेविनायकजीकेमुखसेनिकले वाक्यको सुनकर तिनकेमुखमें प्रवेशहोताभया औ तिन्हींकेरूपको प्राप्तभया ५२ जैसे पृथ्वीपड़ा गन्धतिसीमें लीनहोजाताहै तैसेहीवोभी विनायकजीसे उत्पन्नभया तिनविनायकजीमेंहीप्रलयकोप्राप्तभयाअर्थात तिन्हींमेंमिलगया ५३ जो नर इसमहाउपाख्यानको भक्तिसे श्रवणकरे सो सवकामों को

है नि ई लहै ५४ इतिश्रीमदादि गणेश पुराण उत्तरखण्डके वालचरित्रमें श्री कालपुरुषकरके नरांतक का पकड़ लेआना से अट्ठावन ५८ ॥

प्रफटहोकिद्वक्तिनायक

उनसठवां अध्याय॥

गणपुरुषका श्रीगणेशजीमें लीनहोना वर्णन॥

व्यासजीने पूछा कि हे ब्रह्मन् बालविनायकजी ने तिसपुरुषको कहासे उत्पन्नकिया जिसने वो सेना भक्षणकरी अरु तिस नरान्तक को पकड लेआया १ सो मुझको प्रकटहोकहिये इसमें मेरेको महा सन्देह होरहाहै श्रीब्रह्माजीबोले कि हेव्यास जो निर्गुण परब्रह्महै सो ही जगत्कार्यकेलिये गुणोंसहित भासमानहै २ सो ब्रह्माविष्णु शिवमय अरु विनायकजी के स्वरूप करके प्रकट होरहेहैं सो भूमि भारहरने अरु दुष्टोंके नाशके लिये ३ अरु अपनेधर्म्मको पालनेको वे अनेक रूपपनेको धारण करण करतेहै अरु वेही ससारको रचते अरु वेही निज तेजमे रक्षा अरु सहार करते है ४ अरु वे इन लोगो के निमित्त परमस्थिति की अपेक्षा करते है अर्थात् इस निज ससार को निज२कर्मके अनुसार अत्यन्त फलदेनेकी इच्छाकरते है सो इन अनेक मायावाले विभु विनायकजी मे सन्देह नहीकरना ५ तिन्हीं कीइच्छासे ये जगत् प्रवर्तमान होरहा है अभीहमतिन विनायकजी की मायाविस्तारसे तुम्हे फिरकहतेहैं ६ निजमन्त्री अरु पुत्रसहित नरान्तक से पकड़ा गया वो काशिराज सो ये जितने तिसके पुरको न पहुचा तितनेही वो क्रूरपुरुषगण ७ तिस नरान्तकदैत्यमे पालन करी सेनाको भक्षण करताभया फिर तिसपुरुषको विनायकजीनेही निजमुखमें धारण करलिया ८ फिर तो राजा अरु मन्त्री कुतूहलसे तिन विनायकजीके उदरमे ही सब ससार को देखतेभये ६ सो कि सतवाली पृथ्वी देखी पर्वत,वृक्ष,सहित अरुनदी,समुद्र,वापी अरु सरोवर,मनुष्यसहित १० अरुदेवता,गन्धर्व,मुनीश्वर अरु सिद्ध यक्ष राक्षस अरु सर्व अप्सरा इनमे शोभायमान भये स्वर्ग को देखते भये ११ अरु तबवे भ्रमतेभये सातो पातालोंको भी देखतेभये ऐसे हीवे तिनकेउदर अरु कोटे२में न्यारी२ रचना देखतेभये १२ भ्रमन करतेभये बहुत से ब्रह्माण्ड समूहो जो तो देखके प्राप्त भये हैं फिर

विनायकजीहीकी शरण जातेभये १३ अरु तब देवविनायकजी को मनसे प्रार्थना करतेभये कि हे कृपानिधान श्रान्त अरु खेद प्राप्त मनवाले हमपर आप कृपाकरो १४ तबतो विनायकजी बालकरूप करके तिन्हेंमार्ग बतातेभये तब तो तिनके रोममार्गसे व पहिले की नाईं बाहर निकल आतेभये १५ तो काशिराज निजहित अरु नगर को भी देखताभया अरु कश्यपसुत तिन बालबिनायकजीको खेलते देखे १६ तो तिनकेप्रसाद से पाईबुद्धि जिसने सो काशिराज परम मोदसे स्तुति करताभया कि आपकी कोषमें प्राप्त भये मैंने परम मायाजानीहै १७ सोदेवोंके अरु मनुष्योंके अरु वैश्यआदिकोंकेकर्त्ता आपहीहो अरु सर्गअनात्म स्वभावके अरु सागरोंके अरु नदियोंके पातालोंके भी १८ क्योंकि आपके कूपसरीखे रोमोंमेंकरोडोंब्रह्माण्ड भ्रमतेहैं सो भ्रान्तभये मैंने हेप्रभोनाथ आपहीके प्रसादसेदेखे १९ अरु हे विश्ववेत्ताजी और भी आपका बहुतप्रकार आश्चर्य देखाहै सो कि मैं युद्धकरनेको गयाथा सेनामेरे पीछेसे आईथी अर्थात् तहां युद्धके बीचमें २० तो वो तिस नरान्तककी सेनाकरके तिसीक्षणमें जीतीगई फिर मैं मंत्री अरु पुत्रसहित तिसनरान्तक के पास चला गया २१ तो तिसने तिसीक्षण में मेरी सेनाको जीतके मुझे पकड़ लियाथा अरु सारीनगरी जलाई फिर वो कालपुरुष देखपड़ा २२ तिसने नरान्तककी नानाविधिकीसेना तिसीक्षणसे भक्षणकरी सो ही वो काल पुरुष तिस दैत्यको पकडकर तुम्हारे पास आया २३ फिर वोपुरुष अरु हम सारे आपके उदरमें चलेगये तहा हेप्रभोमुझ को आपविस्तारसे दीखेहो सो तहा हमने विस्तारसहित साराजंबू-द्वीपदेखा २४ ऐसेही औरश्कोष्ठोमें विस्तारसहित सबभूतलदेखा फिर खेदको प्राप्तभये हम हे जगदीश्वर आपके शरण आयेहैं २५ फिर आपकीही आज्ञासे रोमोंके द्वारे करके हमबाहर आयेहैं फिर बालविनायक आपअरुभारी निजभुवनभी देखाहै २६सो हेप्रभोये मायाके जालसरीखा क्याआश्चर्यहै अरु हे देवजी वो पुरुष कौनहै जिसने वो भारीसेना भक्षण करीहै २७ अरु किसने इस दैत्यको

पकडा अरु किसने रक्षाकिया अरु फिर हमसबको निकलनेको २७
सोममार्ग किसनेबताया २८ हेदेवजी इसमेंमे भक्तके संशयको आप
प्रयत्नसे दूरकरो ब्रह्माजीबोले कि ऐसेकाशिराज से पूछेगये विना-
यकजी तिसबुद्धिमान्के मस्तकपर कृपा करकेनिजहस्तकमलधारण
करतेभये तो तिसीक्षणसे काशिराज दिव्यज्ञानवान् होताभया ३०
तो देवोंकेदेव तिन विनायकजीको परमभक्ति से स्तुति करताभया
काशिराज बोला कि हे गणेशजी आपही ब्रह्मा विष्णु महेश अरु
सूर्य्यहो ३० अरु आपही पृथ्वी पवन आकाश दिशा वृक्ष हो अरु
पर्वतसहित सिद्धगन्धर्व यक्षराक्षस भी आपहीहो ३१ अरु मुनियें
मनुष्य भी अरु स्थावर जंगमभीहो हे देवेश आपही सब जडचेतन
रूपहो ३२। ३३ हे कश्यपसुत आप किसी जन्मान्तर के पुण्य से
हमको दीखे हो ब्रह्माजी बोले राजाके ऐसेकहने तिसीक्षणसे तिसे
विनायकजी ने मोहलिया ३४ तब तो राजा आरोग्यरूप इन वि-
नायकजी को पूजताभया फिर हर्षयुक्त भये पुरवाले इस राजाको
देखनेकेलिये आये ३५ सो तिसराजा को स्तुति नमस्कार करके
वस्त्र आभूषण भेंट करतेभये तो राजाभी परम भक्तिसे तिनको अ-
नेकसे वस्त्र देताभया ३६ फिर तिन सबजनों को विदाकरकेमाता
के पास आ बोला हे माता मैंने तुम्हारे प्रसादसेही तुम्हारे चरण
युगल देखाहे ३७ मुझको दैत्यराजने पकड़ाथा फिर विनायकजीने
बचाया है तबतो हर्षयुक्त भईमाता बहुतकालमें आने तिसको आ-
लिंगन करती भई ३८ फिर दोनोंमन्त्री तिस राजपत्नी को नम-
स्कार कर बोले कि तुम्हारेही पुण्यप्रभाव से तुम्हारा चरण कमल
दीखा हे ३९ हम विनायकजी की मायासे मोहेगये अरु तिन्हींसे
छुडाये गये हैं तबतो काशिराज सभागारके पास आकर बोला
सब लोगों के चलेगये हर्षसे गद्गद भई वाणी करके ४० कि मैंतिसी
क्षणमें दैत्य करके पकडा गया अरु गन्धर्व दर्शनागम्य भयाहूं ४१
फिर इन विनायक जी ने कही माया करके छुडाया गया हूं
अरु निज नगर में पहुंचाया गयाहूं ब्रह्माजीबोले कि तब तो वोनगर

भी वाजे गाजों करके शोभायमान भया ४२ सोकि अनेक पताकों करके अरु नाना प्रकार के महाउत्सवों से अरु बिनायकजीके वल करके उलटे लाये सब लोगो से ४३ कुवँर अरु कन्या स्त्रिये अरु तिनके पतियेंभी अरु तिनके पिता माता अरु बेटे भाईभी ४४ आपसमें मिलते अरु हर्षतेभये अरु अनेक से दान देते भये फिर जीमे अरुजिमातेभये अरुआलोकनकरतेगातेभये निजनिजघरआये४५॥ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डबालचरित्र राजाकाशिराजकाछुडाना इसनाम से उनसठिका अध्याय समाप्तभयाहै॥

साठवां अध्याय॥

नरान्तकके युद्धका वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तब तो नरान्तक विनायकजी का कर्त्तव देखकर बुद्धिमे ऐसे विचारताभया कि इसका वडाआश्चय देखने में आयाहै सोकि १ काशिराजके पकडतेही तिसने एककाल पुरुष बनाया तिसीने मेरी सारीसेना भक्षणकरी २ अरु मंत्री पुत्रसहित ये काशिराज इसके उदरमे चलागया सो नहीं व्यग अर्थात् जैसा था तैसा बाहरआया अरु इसराजाको तिसीनेसबसंसारदिखाया३ सो इसीसे मेरी भुक्ति अरु मुक्तिहोवेगी इसमें संशय नहींहै तिससे मैं इसेमारोंगा अथवा ये मुझेमारैगा४ ऐसे ये निश्चयकरके विनायकजीसे बोला कि ये इन्द्रजाल की विद्या तुमने बहुत प्रकार से दिखाईहै ५ सो मै मायावी नरांतक तिससे तो नहीं डरताहू अर्थात् मैंभी माया जानताहू जिसमेरे निरन्तर श्वासलेने से भारी पहाड पडतेहैं ६ अरु मेरे भृकुटी चलानेमात्रसे ब्रह्माण्ड अत्यत कांपता है जिसमेरे करतल के घातसेवो भूगोलदुइराहोजावे अर्थात् फट जावे ७ तिस ऐसे मुझसे बालकरूप तू कैसे युद्ध करैगा क्योंकि जो बघेरे के सामनेजावे सो कैसे सुख पावैगा ८ ब्रह्माजी बोले कि परमात्मा गणेशजी नरान्तक की कही ऐसी वाणी सुनके ये कहने लगे विनायकजी बोले कि ९ हे मूर्ख तू किसलिये उछलता है जब

तेरी सारीसेना भक्षणकरी अर्थात् मेरे गणकरके खाई गई थी तब तेरीशक्ति कहा चलीगई थी जिस लिये तू बार २ बक रहा है १० शूरवीर तो शूरताही दिखातेहैं अरु पराये बलको बाधाकरनेवाली बातेंही नहींकहतेहैं देख छोटेशरीरवालेही बिच्छूकरके क्षणमें सिंह माराजाताहै ११ अरुछोटेहीदीपकसेमहाभारी अंधकार दूरहोजाता है जिसका मृत्यु सम्यक् प्राप्तभया अर्थात् निकट आ जाताहै सो क्षणमें सन्निपात आतेही लयहोता अर्थात् मरजाताहै तैसेही तूभी होरहाहै अरु छोटेही अंकुशसे मत्तहाथी वश कियाजाताहै ब्रह्माजी बोले कि वो दैत्य गजदेवजीकेकहे ऐसे२वाक्यसुनकर १२।१३ परम भयसे कम्पितभया अरु मेघकेसमान दृढ गर्जताभया सोकि भयानक चिहाड़ोसे भूमिमंडल को डराता अरु रुवाता भया सो परम क्रोधसे भरा मारनेको विचार के विनायकजी पर दौड़ा १४।१५ जैसे पतंग वेगयुक्तभया दीवेकीलौयको हतनेकोजाताहै तैसेही वो नरान्तक टेढ़ी भौं बांधकर अर्थात् तिरछी भवें चढाकर मुखसे अग्नि निकालता भया इनपर आया १६ तो तैंमे तिस आते को देखके काशिराज निजधनुष को ज्यासहित करता भया सो कि शीघ्रही चिल्लेचढाय कानसहित खेंच बाणको धारणकरके १७ तिस वधी से छूटे निर्लज्ज दैत्य नरान्तक को समझाता बोला कि हे दैत्यराज तू जीवको मतत्यागै क्योंकि तू जीताही काजदेखरहाहै १८ सो तू उलटके चलाजा नहीं तो मृत्युको प्राप्तहोगा ब्रह्मा बोले ऐसा तिनका वचनसुन क्रोधसेजलता दैत्य बोला १९ मेरा (नरान्तक) ऐसा नाम तुम सिरखों के खानेमेही भयाहै सो तू जीना चाहता है तो अभी शरणआजाय २० तो काशिराज तिस मरने की इच्छा वाले नरान्तक से फिर भी बोला कि हेमूढ विनाश के समय मनुष्य की मति उलटीहोजातीहै २१ सो उलटेपनमें तिन अपराधही से मित्र भी शत्रु होजातेहैं सो तैंने भी वरकेगर्वसे अनेकप्रकार करके पाप कियाहै २२ सो वरहीके प्रभावसे तैंने वज्रकोभी न गिना अर्थात् कुछ न समझा अब इनविनायकजीने तुम सिरखोंको मारनेकेलिये

ही अवतारधाराहै २३ सोये भूमिगत भारीभार उतारने को कश्यप
जीके सुत भयेहैं अरु अब पापोंके सचयहोनेसे तेरे वरका पुण्यभी
पुराना अर्थात् निष्पराक्रम होगया है २४ तवतो दैत्यराज ऐसी
वाणीसुन हृदयमे कांपा अरु फिर इसने दौडकर काशिराजके हाथ
से धनुष बाण खोंशलिया २५ तिसे वलसेतो भूमिपरफेंका तो वो
सौ प्रकार से टूटा अर्थात् तिसके सौटूकहोगिरे अरु फिर तिसने
मुष्टिकेघात अर्थात् घूंसे से काशिराज को मारा २६ तो ये वज्रसे
हते पहाडकीनाईं धरतीपरगिरा वो तिसे देखतेही परशुहस्तमहा
वलवाले विनायकजी दौडे २७ सो शब्दसे सारे आकाशको अरु
दिशा विदिशो को भी गर्जातेभये तो सारी पृथ्वी कांपती भई अरु
दिशाजलगईसी होगई २८ सो तिनके परशुकेतेजसे जो तेजसबके
दृष्टितेजको हरनेवाला सो तिससे तिसदैत्यके शिरमेंमारतेभये जैसे
इन्द्र भारीपर्वतकोहते २६ तो तैसेही तिससे हता दैत्यराजभूतल
में गिरपडा सो भारी मूर्च्छाको प्राप्तभया जैसे पत्थरसे मर्मस्थान
में हतागयाहो ३० तौभी वो दैत्य उठा अरु हाथोंसे दोपहाडपकड
के विनायकजीको मारनेकी इच्छाकरके फेंकताभया दैत्यराजनाश
कर्त्ता ३१ तो तिन्होंने तिन्हें हर्षकरकेही निजपरशु के घातसे सौ
प्रकारसे चूर्णकर्णकरदिये तब दैत्यराज मायासे अनेकरूपभया३२
सो इसने जो२ रूपकिया सो विनायकजी भी तिस २ रूप करके
ही तिसे निरहकार करतेभये ३३ सो शस्त्रोंसे तिसके अस्त्रहटाकर
तैसेही निजअस्त्रोंसे तिसकेअस्त्र मूठआदिकोंके समूह को तवतो वे
आपसमे मल्लयुद्धसे लडनेलगे ३४ सो पैरसेपैर अरु हाथसे हस्त
प्रहार करतेभये अरु गोडोसे गोडे जैसेफूलेकेशूवृक्ष आपसमें मिल
जावें अरु तैसेही छातीसे निज२ हृदा मिलातेभये फिर दोनों पृथ्वी
तलपर गिरपडे फिर वलवाले दोनोउठे अरु कोहनियो से प्रहार
करनेलगे ३५।३६ फिर वो दैत्य महादेवजीकोध्याकर इनपर वृक्ष
छोडताभया अरु दोनों पीछे २ दौडते माथेसे माथेका प्रहार करते
अर्थात् टक्करेंलड़ते ३७ अरु रुधिरझररहा जिनके ऐसे वेदोनों घट

नियोसे घटनी मारते ३८ अरु वो नरान्तक इनपै पर्वत अरु वृक्ष मारनेकी इच्छाकरके छोडताभया तो तिन विनायकजीनें न प्राप्त भये तिन्हें अर्थात् राहमेंही काट गिराये ३६ कमल फांशा अंकुश इनकेघातसे अरु भारी मारवाले परशुकरके वो तिसवर्षाके निवार भये अर्थात् हटेदैत्य ४० और वर्षाकरताभया अरु तिसे भी काटी देख और करताभया तो काशिराज तिनविनायकजीको मरेसमझ कर दूरचलागया ४१ अरु विनायकजीभी क्लेशसेती हृदयमें चिन्ता करनेलगे कि ये दैत्य तो अतुल बलवालाहै इसके जीतनेका उपाय कोई प्रकट नहींदीखताहै ४२ देवता हतशत्रुभये कब निज२स्थान पावेंगे ये नरान्तक देवताओंकाभी अंतक होगया ऐसे विनायकजी के वारम्वार चिन्तवनकरते २ तरकसों में कालके दंडसिरखे बाण आगये ४३।४४ अरु सुवर्णकाधनुष तिनके आगे आकरगिरा जो निजतेजसे दिशा अरु विदिशोको प्रकाशितकरता ४५ तो कुररही प्रकाशमानहोरही कांतिवाले तिस सांगोपांग धनुषकोदेख करके सो विनायकजी हर्षितभये अरु तभी तिसदैत्य को जीतागया अरु देवतोंका वांछित कार्य सिद्ध भया मानतेभये ४६ अरु तिस धनुष को चढाके अरु ऊंचेसे चिंहाडमारकर वाणलेतेभये अरु तिसधनुष को अटकलतेभये अरु तभी ज्यासहित अर्थात् चिल्लेचढातेभये ४७ सोकि वो पृथ्वीपर टूटने रोपकर अरु दोनो ओर तरकस लगाकर तो तिस धनुषशब्दका सुनकर त्रिभुवन भी कम्पताभया ४८ सोवे वामे अरु दाहने इनदोनों हाथोंसे दोवाण खेंचकर अरु तिसदैत्य को सबओरसेलखके अर्थात् तिसकी तरफबांधके बहुतसेअग्निकणों को छोडतेभये ४६ तो वे दोनोंवाण अचानकही तिस नरान्तक के भुजोंपर गिरे जो गर्जते अरु आकाशको प्रकाशितकरते अरु जीव समूह अर्थात् प्राणिमात्र को मारते ५० तो वे दोनोंवाण वज्र की नाई तिसके दोनों बाहुओंकोकाट गिरातेभये जैसे इन्द्र निजवज्रके प्रहारसे पर्वतकीगुफा फोडडाले ५१ सो तिसकाएकहाथ तो नरान्तक के द्वारेपर जागिरा दूसरा तिसके पिता के द्वारपर प्राणियों

का चूराकरताभया गिरा ५२ तो तिसके औरही हाथ होगये सो विनायकजीने देखे तो फिर वो दैत्य मुख फाडे काल की नाईं इन विनायकजीपे दौडा ५३ तो तिसने तहां हाथ अरु पावोंसे बहुत से वृक्ष इनपर फेंके सोकि तिसने विनायकजीपर भारी वृक्षोंकी वर्षा करी ५४ तो तब महाभारी अँधेराहोगया तो कुछ भी न जान पडा तबतो तिसदैत्यो के राजा नरान्तक का बल देखकर विनायकजी तिसको ये कहनेलगे ५५ इसप्रकारसे श्रीगणेशपुराण उत्तरखंडमें युद्धकावर्णन इसनामसे साठकाअध्याय भयाहै ६० ॥

इकसठवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीका के नरांतकको मोक्षकरना अरु निजविराट्रूप दिखानावर्णन ॥

श्रीगणेशजी नरांतकको बोले कि हमने ऐसा पराक्रमी अरुअति वीर्यवान् पहिले कोई नहीं देखा पर अभी बालरूप जो हमहैं तिनके भी कियेपुरुषार्थको तू देख १ ऐसे कहके फिर इन्होंने तरकस मेसे बाणनिकाला अरु कानतक धनुष चढाके तिसनरांतकपै फेंका २तो वो बाण आकाशकोप्रकाशमान करता अरु वृक्षोंको गिराता अरुपुष्पके जैसे सबकोकँपाताभया तिसनरांतकपैपहुंचा३तो तिसने नरांतकके चरणकाटदिये त्योंहीं वो गिरगयातबतो तिसअ धेशरीर वाले दैत्य के पडतेही विनायक जी गर्जतेभये ४ अरु तिसके चरण आकाशमार्गसे भ्रमते २ तिसी घरमेंजाके गिरे सो कि सुरांतक के भारी महलमें बहुत जनोंको चूर्णकरते पड़तेभये ५ तो वो आधेही अंगवाला दैत्यभयानक मुखकरके त्रिभुवनको खाताभया सा बल करकेदोड़ा ६ अरु मायासे तैसेही तिसके और चरणहोगये त्योंहीं वो दैत्यराज विनायकजीके निकट आकर बोला ७ कि तैने जो यह शरीरकाटनेसे पौरुषदिखाया सो मैंभी तेरेअंगकाटोंगा तूतैसाही मेरे भी पुरुषार्थ अब देखना ८ तो तिसका वचन सुनके विनायकजी फिर भी गर्जे अरु तिस दैत्यराज पै और भी भयानक बाण वर्षा करी ९ तो वो भी महाबली तिस असंख्य बाणवर्षा का आचमन

करगया तवतो विनायकजीने एक भारी बाणको अभिमंत्रित करके अर्थात् पढकर १० जो महाबाण अग्निमुख अरु सुवर्णके फोखे जिसके ऐसा अरु गर्जमान भयानक तिसे चढ़ाय कानतक चिल्ला खैंचकर दैत्यके मस्तकपे छोडतेभये ११ तो वो पवनवेग से पर्वत फाडताभया सो अरु पक्षियोंको मारता अरु वृक्षोंको गिराता १२ वो तिसका शब्द सुनके सेनादशोदिशामें भागगई अरु वो बाणदैत्य के मस्तकपर गिरा जैसे पर्वतकी गुफामें वज्रपडै १३ तो तिसकेप्रहारसे दैत्यकाशिर पक्षीकीनाई आकाशमें उडगयासो अत्यंतभयानक शब्दकरता वो तिसीके पिताके घर में गिरताभया१४ त्योंहीं तिसके फिरभी नहीं कटेकेसमान और ही शिरहोगया फिर तोदैत्य भी कोप करके ऊंचेसेदहाडा १५ तो तिससे देवता अरु पक्षीसारे जनभी भयभीतभये अरु फिर तिसने तिनविनायकजी पर भयानक पर्वतोंकी वर्षाकरी १६ तो विनायकजीने भी तिस सबको बाणवर्षा से बीचमेंही काटगिराई तो एक दिन रात वो पर्वत बाणोंका अद्भुत युद्धभया १७ तिससे देवजी अरु वो महाबली दैत्यभी थकगये अरु गणेशजी ने महाचिन्ताकरी अरु तेज से अत्यंत प्रकाशमान भये १८तव तो निजपरशुको ग्रहणकिया जो अग्निके जैसा अतिप्रकाशमानतिसे लेके वलवाले विनायकजी ने तोला अर्थात् सहाश तो धरतीकांपने लगी १९ अरु सबदेवता विमानपै बैठे तिस युद्ध को देखनेआये अरु तव शेषजीभी पातालमें डरते कांपतेभये २० सो तिन्होंने दैत्यराजपर छोडा त्योंहीं तिसपरशुने तिसका शिरजागिराया तो फिर भी और ही मुकुट कुंडलवाला शिरहोगया २१ फिर भी तिसेक्रोधभये विनायकजीने गिराया तो फिर भी तिसकेकटेऔर ही शिरहोगया २२ ऐसेही वेर २ विभुविनायकजी ने तिसके सौ सहस्र शिरकाटे फिर तो तिस असुरकी मृत्युमें कारण विचारनेलगे कि यह क्योंनहींमरताहै २३ तो शेषही नरांतकको निजमाया से मोहित करतेभये जो शिवजीके बलसे गर्वोरा अति बलवाला हो रहाथा २४ तब तो तिस दैत्यने अपने अरु परायेको न पहि-

सो कि क्षणमें तो तिसको रात्रिभासमानहोती अरु क्षणमेंहीं दिन देखपड़ताथा २५ अरु क्षणमें स्वर्गभासता अरु क्षणही में पृथ्वीपाताल दीखताथा अरु तैसेही जागना, सोना, स्वप्न, अरु तुरीय अवस्था अर्थात् तीनोंअवस्थाओंसे रहितहोना यहतिसे क्षण२मेंप्रतीत होताथा२६अरु तिसेविनायकजीभी देवता वा नारी वा पुरुषगुह्यक वासिद्ध अरु यक्षराक्षसवा २७ अरु अपना वा पराया पिता वा माताअरुजीवरहितसहित अर्थात् जीवतामराऐसेसवतिसकोभ्रमसेही प्रतीतहोताभया२८ऐसेवो नरातक परमचिंताको प्राप्तभयाअरु मन में विचार करनेलगा कि त्रिशूलधारी शिवजी ने मुझको ऐसेही वर दियेहैं २९ अब वोहीकाल आगयाहै सो अवश्यही मृत्युहोगी ब्रह्माजीबोले कि वोजवतकऐसेविचारतारहा।तिवनेही तिसनेअगाडी विराट्रूपभये विनायकजी को देखे जो आकाशसे भी ऊंचे मस्तक वाले अरु पातालमें व्यापरहे चरणजिनके दिशाकान जिनके अरु वृक्षहै रोमजिनके ३०।३१ अरु भ्रमरहे रोम २ में ब्रह्मांड जिनके समुद्रहैं परिश्रम पसीना जिनके अरु जिनके नखोंके अगाडीतेंतीस करोड़ देवता भासमानहोरहे ३२ अरु उदरके एक कोनेमें चौदह भुवन भासरहे तब तो तिसी क्षणमें विनायकजीने पैरकेअंगूठेकेअग्रभागहीसे दैत्यको मसलडाला जैसे बालक मच्छरको मसले तब तो देवमुनियें वेर २ जय २ शब्दोंसे ३३।३४ स्तुतिकरते भक्ति से पुष्पवर्षा करतेभये फिर विराट्रूपके अंतर्धानभये धरती विनायक जीके पासगई३५अरु नमस्कार करके बोली कि हेदेवेशजी आपने मेरा आधाभार तो हरलिया अरु पूराहरे पर मेरी परम प्रसन्नता होवेगी सोही आपकरो ३६ अरु तिसके चलेगये काशिराज ने तिनविनायकजीको पूजे अरु विनयसेनम्र अरु प्रसन्नमनभयाराजा बोला ३७ हेविभो यह अत्यंतही आश्चर्यदेखाहै जो मनवाणीका अगोचर अर्थात् जो कहने समझनेमें न आवै सो कि आपभूमिभार उतारनेको अवतार भये हो सोही आपने उतारा ३८ जो कि ये तेंतीसकोड देवतोंसे अवध्यथा तिसको आपनेमारा अरु हेसुरेशजी

अत्यंतही पुण्यसे हमको आपका विराट्रूप दीखाहै ३९ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे काशिराजके कहते सब पुरवाले बोले आपधन्यहोजो हम सबको बालपनेकरके धमारहेहो ४० हे प्रभो आपने निज यश विख्यातकरनेको यह कियाहै ऐसे प्रार्थना करते तिनविनायक जी को परम भक्तिकरके पूजतेभये ४१ अरु बोले हे देवजी अपनी भक्ति देवो अरु निज वियोग हमसे कभी भी मतकरो तब तो राजा अरु सारेलोग अनेकसे दानदेतेभये ४२ अरु ब्राह्मणोंसे प्रार्थनाकरीकि हमारी ऐसे २ ही सदा जय होवे अरु तब आपस में राजा को सारे भेटदेतेभये ४३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें दैत्यका दमन अरु विराट्रूप दिखाना इसनाम से इकसठवां अध्याय समाप्त हुआहै ६१ ॥

बासठवां अध्याय॥

नरान्तककी माताका विलाप करना वर्णितहै ॥

श्रीब्रह्माजी बोले हेव्यास रौद्रकेतुविप्रकी जो(शारदा) नामसेस्त्री थी सोविदर्भनगरीमें सखियोंसे सहित हर्षभई बैठीथी १ तो तिसने अचानकही पुत्रनरांतकका शिर सखियों सहित आँगनमें पडा देखा जो कुंडलोंसे शोभितथा २ वोगिरनासबकोगोजाताभया जैसेपर्वतका शिखरगिरताहो तथा श्याम कमल जो वरफसे सनाकुशोभित गिरेहो तिसेदेख रौद्रकेतु अरुशारदा तिसकेपडनेसे व्याकुलभयभीतभये ३ फिरसावधानहो तिन्होने वोपहिंचानातो अत्यन्तहीरोनेलगे ४ अरु धरतीमें गिरपडे अरु छातीपीटतेभये अरुवे मूर्च्छाको प्राप्तभये फिर क्षणमें तिनको चेतभया ५ अरु तिसकीमाता तिसकेशिरको गोदमें रखकर शोककरतीभई सो कि वो बहुत पुकारी जैसे मरेबच्चे वाली गऊ अत्यंत रोभतीहो ६ शारदाबोली हे पुत्र वीर श्रीमे छाई गई देहतेरी ऐसा तू शीघ्र रथकोही चावसहित चलागया ७ अरु मुझ को तैंनेकुछभी नहींकहाया सो अब बातकहु ८ तेरा नीचेका शरीर कहारहा जो तू इस शिरसेही चला आयाहै अरु अकेला फेले

तेरी महाभारीसेना कहागई ६ अरु तेपानी पियानेवाले अरु छत्र चवँरधारी कहा चलेगयेहैं अरु जिसतुझको देखकर सुन्दर स्त्रियें विरह अग्निसे पीडितभई मदताको प्राप्तहोतीथीं सोतूही अब कैसे निस्तेजताको प्राप्त हो रहाहै जैसे सूर्य्य अस्त होताहो मैंने तेरा क्या अपराधकिया या तेरे दयालु इसपिताने क्याकियाहै १०।११ तू क्यो नहीं बोलताहे हमारे रोनेके आँशु धोवा क्यों नहींहै अरु जोतू अमोल्य बिछोना किये मंचेपर सोताथा१२ अवऐसे अर्थात् धरती में ही क्यो पडाहै इससे मेरा मन अत्यंत खेद पाताहै हे सुत हम तेरेसे रहित भये मुख दिखानेको समर्थनहीं हैं १३ ब्रह्माजी बोले शारदाके शोक को सुनके रौद्रकेतु भी शोक करनेलगा कि हे प्रिय पुत्र तू बिनबात कहेही कहा चलागयाहै १४ नित्यहुवा होनेवाला सबवृत्तांत स्वस्थतासे मुझे सुनाताथा अब क्योनहीं बोलताहै जो तू सन्मुख लड़ता रण धारासे पवित्रभया स्वर्गको चलागयाहै तो तू मुझको न पूछ अरुछोडकरही कैसेगया१५।१६ कैसेतैंने मावापों की पुत्रताको शत्रुता करडाली अर्थात् पुत्रही तू वैरी होगया जब तू सेवकके हाथसे निजहाथ में खड्गलेताथा १७ तभी पर्वत वन स्वर्गों सहित पृथ्वी कापती थी ऐसे तुझको अब धरतीपर किसने गिरादिया इसकालकी विपरीत गतिको हमनहीं जानतेहैं १८इस संसारमें प्रारब्धही प्रवलहै उद्योगतो वृथाहीहै मेरे वंशका अरु लोकका आभूषण रूप ये पुत्र कहा चलागयाहै १६ जो संसारका भी कालरूप अरु शत्रुरूप गजोमें सिंह सो भी तू दुहरा कैसे होगया जैसेवायुसेहतावृक्षपड़ाहो२०प्रतापमेंतोतूसुर्य्यराजथाअरुशत्रु रूप रुईके जलानेमें तू अग्निथा ब्रह्माजीबोले ऐसे रौद्रकेतु अरु शारदा नानाप्रकारका शोक करके २१ अरु मस्तकको लेकर देवातकके पासआये तो वो तिन्हे तैसे देख के तुरतही राज्यासन से उठके २२ अरु भाईको कंठसे लगाकर रोताभया अरुतिसकेपरिवार भये जो कालयम के समानदैत्य थे सोभी सब रोतेभये २३ सो कि नरांतक के शिर को देख २ पुकार २ केसव रोनेलगे सो

तिसने माताके हाथसे शिरले निज हृदय से लगाके २४ देवांतक गीदडके जैसेभाईके शोकसे दु:खितभया पुकारा देवांतकबोलासाथ खाया अरु साथपिया अरु साथही खेले अरु सोयेजगे २५ अरु साथही तपजप किया सो अब तू मुझे छोड कहागया जिसतेरेदेखने सेही देवमनुष्य दशों दिशोंको भगजातेथे सो तू किस अतिवल वाले दुष्टसे हतागयाहै अरु पृथ्वी पाताल मैंने तुझकोही सौंपदियेथे २६ । २७ अब हे दयालुभाई तू मुझे छोडस्वर्गको कैसे चला गयाहै जिसके धनुषकी टंकार सुनके चर अचर सबकांपताथा २८ अरु अनगिनत राजाजिसके मिलाप करनेको द्वारेपर खडे सजतेथे सो तू अब मा बापोंको अरु इस सुन्दर स्त्रीको छोडके कैसे चला गयाहै २९ ऐसेतिसका विलाप सुनके शूरवीर लोगआये अरु इस सुरांतकको कारणो करके वारण करतेभये अर्थात् समझातेभये ३० जनबोले किहेराजन् शूरवीर निजवीरके हतेभये शोकनहीं करते हैं किंतु जिसने उसको मारा तिसीको जाके वलसे मारतेहैं ३१ अरु मृत्युतो सबदेहोंके साथही जन्मले लेताहै सो तभी या सौ वर्षतक होताहीहै इसमें सशयनहीं ३२ क्या अपनी अरु क्या पराई सोहे राजन् तिसमें क्याशोचकरना तब लोगोंका वचनसुनके देवांतकासुर ३३ सावधान चित्त होकर धर्मवेत्ता निज मा बापोंसे कहने लगा कि तुम शोक मतकरो मैं तिस शत्रु को हतने जाताहूं ३४ कहो तिसका कहा निवासहै जिसने मेरे भाईको माराहै मैं तिसे मारकेही सुखपाऊंगा या आपमराभाईपे पहुंचोगा ३५ मेरे भृकुटि ताननेहीसे त्रिभुवन कांपताहै हे बापो मेरेक्रोध भये लोकोंकी रक्षा करनेवाला कौनहै ३६ ब्रह्माजी बोले तबतो तिस सुरांतकके वचन को सुनके वे दोनों आश्वासते शांतभये मानो तिसने वचन से शोक समुद्र सेही तिनके निकाल लिये हों ३७ अब तिस जो सुतसे पूछेगये वे परम वचन बोलेकि (काशिराज ऐसे) कि परम धर्मवान् राजाहै ३८ तिसकेघरपुत्रकेविवाहका भयाथा तेरे सबजन बुलायेगयेतो [illegible]का सुतभी

सो वो बालकही बलवाला (विनायक) ऐसे विख्यात है तिसीने मेरेपुत्र तेराभाई (धूम्राक्ष) माराथा ४० तिसीका बदल लेने को श्रेष्ठ शूरवीर भेजेथे सो वे धावाकरते पाँचसौ राक्षस सब तहागये ४१तो तिसमुनि सुतने सातवर्ष मे तिन सबकोमारे तहां से एकभी उलटा नहींआया तिन्हींकाबदलालेने आपनरांतक गयाथा अनेक शस्त्रबांधे चारो अगसेना सहित सोही भयानक तिसका यह शिरही मुझकोदेखपड़ाहै ४२।४३सोशोक करके यहशिरतेरेआगे लेआये हैं ब्रह्माजीबोले ऐसा तिनका वचन सुनके रक्तनेत्र किये कपायमान भया ४४ देवातक त्रिभुवनको ग्रसताभया साउठा अरु बरके गर्व करके वेगवान् निज पितासे यह कहनेलगा सुरावक कि४५ सबके हताकाल को भी हतोंगा पृथ्वीको लोट करके क्रोधदृष्टिसे इस सब ब्रह्माण्डको क्षणभरमें भस्म करदेवोंगा ४६ ऐसे कह दहाड करके पृथ्वीको कँपाताभया सा देवतोके अधिकारविषे जो२ दैत्यथे तिन सबोको बुलाया४७अरुदेवांतकने माबापोको प्रणामकरके यहवचन कहा कि अभी मैं तिसमुनिसुतको शीघ्रलेआता हू ४८ सो तिसके साथहीइसशिरकेअग्निलगाऊगा ऐसेकहकेवे तारेबलसेदौड़कर४६ देवांतक भी चला तो वे अनगिनत पक्षियो के समान शीघ्रगामी काशिराजकी पुरीको पहुंचकरके सब ओरसे घिरावदेतेभये ५० वो तहा महारोलामचा अरु रजसे दिशायें ढकगई तहा सूर्य्यजीका भी प्रकाश न होसका तो पुरबासी अत्यंत पुकारनेलगे ५१ कि न- रान्तक मरे दो तीनदिनभी नहीं भये हैं अरु फिरभी यह जनोंका हता घोर प्रलय कहासे आया ५२ यह प्रचण्डदेहसे कौन दुस्सह शत्रु चला आया है सो कि यह काल कलना करने को तथा जनों को खानेकहाँसे चलाआयाहै क्या ५३ जो दैत्यभेजेथे सोसब इनसे हतेगये अरु इन दैत्योंकी सब ओरसे आड़होगई अब जानेकी राह नहीं मिलतीहै५४ ऐसे पुरवालोंकेकहते २ दूतकाशिराजकेपाससब वृत्तान्त सुनाने को गये सोकि देवातकका चढआना तिसे बतानेको गये ५५ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में नरान्तक करके

काशिराजकी नगरीका निरोधकरना इस नामसे वासठवां अध्याय समाप्त हुआ ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

सुरातकके युद्धका वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले दूतोंने कहा कि हे राजन् महाभयानक देवांतक जो भयानक दैत्यसहित जो दैत्य अनगिनत अरु कालको भी डरानेवाले अरु आकाशमे मस्तक जिनके अपरवहुतऊंचेऊंचे १ हम तिनके देखनेसेही डरेभगके तुमपै आये हैं अरु सारीपुरीको तिन्होने घेरलई अब जो कियाजावे सो करो २ ब्रह्माजी बोले कि काशिराज दूतोंकेमुखसे यह वचन सुनके कंपितभया अरु तिसउदासपनेसे तिन विनायकजीके पासआया ३ जो बालको में खेलते थे तिन्हे सव वृत्तांतआके सुनाताभया राजा बोला हे परब्रह्म हे मायासे मनुष्य शरीरधारी गणेशजी ४ हे चराचर जगके गुरू नाना लीला कारिन् आपको नमस्कारहोवे बालरूपभये आपने हमारी अनेक प्रकारसे रक्षाकरी हे ५ तो हेप्रभो अवभी हमें इस सुरातक असुरसे वचावो ब्रह्माजी बोले कि काशिराजकरके ऐसे प्रार्थनाकिये बाल विनायकजी ६ विशालदेहधार धनुषहाथलेके सिंहपैचढे अरु सिद्धि बुद्धिसहित देवजी दिशाविदिशाओंको गोजाते गर्जना करतेभये ७ सो तेजसे सूर्यकालोप करते अरु बेर २मुखसे अग्निके कनकेनिकालते अरु धनुष,बाण,खड्ग,परशु इन्हें हाथमें धारणकरते८विनायकजी आकाश मार्गहोकरके नगर से बाहर आये जो दहाडने से दैत्योंके मनको कंपातेभये ९ तो तिन्होने असहनीय तिस सुरातककी सेनादेखी तो तब अनगिनत दैत्य टीडियों की नाई भ्रमते भये १० तो विघ्नराजजी तिस अनेकप्रकारकी सेनाको देखकर सिद्धिसे बोले कि यह सेना मुझएकेलेसे नहींहर्ताजावेगी इससे नाना विध कीसेना तुमभीवनावो ११ सो कि इसदैत्यको,मारनेके लिये अपनी सेनाशीघ्ररचो तव तो सिद्धि इनविनायकजीके चरणारविंदोंमें नम-

स्कारकरके१२देवांतकसे लडनेचली अरु गर्जतीभई जो निजनादों
से सब दैत्योंको भयदेनेवाली १३ तो तब शेषजी अरु आकाशभी
अरु पर्वत वृक्षसमूह यह सब--चलायमान होतेभये सो कि तिसके
गर्जनेके महारोले अरु तिनकी गौंजोंसे यह सब अनेकसे चलितभये
१४ अरु तिसने आठोंसिद्धियोंका स्मरणकिया तो तुर्तवेहर्षसहित
आईं सो अणिमा तो पहिलेआई अरु तिसपीछे गरिमागई १५
फिर महिमा लघिमाभी आपहुंची फिर प्राप्ति प्राकाम्य अरुईशि-
त्व वशित्व ये सभी आईं १६ तो तिनकी सेना तिसकेपीछे तय्यार
भई जो गजअश्वरथ पैदलोंवाली अरु नानाशस्त्रोंसे शोभितभई १७
सो जैसे वर्षाकालमें नदियें सबओरसे समुद्रमें जातीहो तैसेही वो
युद्धइच्छावाली सेनादशोदिशोमें छागई १८ अनगिनत बाजेगाजे
जिसमें जो जय२शब्दोंसेविशेष नादित तो यमकेसमान शूरवीरजो
भूतलका सचावसे फंकालगानावैं१९ऐसे२ तिन्होंको देखकरनिज
मनमें विचारनेलगा कि मैं बालकको क्षणमें जीतलेऊंगा ऐसाजान
के लड़नेको आयाहूं २० अचानकही यह ऐसीसेना कहांसे निकस
आईहै यह इसबालकको निजमायासेरची अद्भनही समर्थपनदेख-
नेमेंआया २१ पर मरोगा या मारोगा जोवल्यागदेना पर यशनहीं
त्यागना दैत्यराजके ऐसे कहते २ सेनावाले यह बोले २२ कि इन
शूरवीरोंसे हमलडेंगे तो तिनका अमृत वचनपीके प्रसन्नभया देवां-
तक बोला २३ हे महावीरो तुमनेअच्छाकहा सो लडनेको जावोमैं
भी चलताहो मरेवचनसे तुमपुण्यकारियोंकोजयहो२४तोआगेपले
सुरांतकको नमस्कार करके (कर्दमनाम) दैत्यवहां रथके आकार
व्यूहथा २५ अरु (दीर्घदंत) परम दुर्जयचक्र व्यूहपर गया जो
गरिमा सिद्धिने निजश्रेष्ठ२ शूरवीरोंकरके रचाथाकैसा कि जो शूर-
वीरोंको मोहनेवाला२६अरु अणिमा करके रक्षितव्यूह पर दर्पयुक्त
(तालजंघ) गया अरु महिमासे रचेव्यूह पे (यक्ष्मनाम) गया२७
अरु प्राप्तिसे विरचित व्यूहपे (घटासुर) भारीअसुरगया अरुप्रा-
काम्य करके रचेव्यूहपे बलयुक्त (रक्तकेश) गया२८अरु (कालांतक

वसिताके रचे व्यूहपर गया अरु इशिता से रचे व्यूह पै वलवाला (दुर्जय) गया २६ इनका सामर्थ्य वचन से सहजहीं कहने में नहीं आवे सो कि तिन आठोंव्यूहों से आठही महाबली दैत्यों ने युद्धकिया ३० सो कि परम दुर्जय शत्रुवोंका अरु आपसमें भी प्रहारकरते वे वाणधारा छोडतेभये जैसे मेघ जलधारा वर्षावें ३१ सो कि योद्धा नानाविधिके शस्त्रोंसे शिरकाटनेभये तो तब हते वीर हाथीघोडोंसे पृथ्वी ३२ अरु नितवगोडोंसे ढकीभई अतिदुर्गमहोगई अरु कई वीर हाथोंसे अगाडी कर २ पैर काट गिरातेभये ३३ अरु कईपहाडके जैसे उडरकेदूर्णकरनेकोशूरोंमेंपडे अरु रजसे अंधकारभयेअपनेनेअपना अरु परायेनेपराया नहींजाना ३४ तबतोदेवतोंकरके हते वे दैत्य शीघ्रभूमिपै गिरतेभये अरु देवोंसे प्रहारकिये गये दैत्यमहाभयानक शब्दकरतेभये ३५ अरु तहां कयाडभोलडतेरहे तिन्हेंदेख अप्सराहँसीं अरुशस्त्रोंके घातोंसे ऐसे सजे जैसे केशू फूलेहों ३६ अरु शुक्रजी तहां सजीविनी विद्यासेमरे दैत्योंको जिवातेभये तब तो मरेसेबचीं सेनासे सहित वे आठोंव्यूह चिताको प्राप्तभये ३७तो तिनसबोंने इशितासिद्धिको जाके शुक्रजीकाकिया कार्य्य सब कहा तब तो तिसके मुखसे क्रोधवशसे तो एक कृत्या अर्थात् मूठनिकली ३८ सो तिसकरके कटाक्षसेही सनआई अर्थात् सैनसेबताईगई वो भृगुजीकेपुत्र तिनशुक्रजीको निजभगामेंछगाकर फिर वो अन्तर्द्धान न भई अरु फिर तिन्हें बर्बरदेशमें लेजाकरछोडे ३६ तिससे तिनका बुद्धिमान्‌मनुष्य(बर्बरदेशवाले भी कहते हैं) तब तो देवता हर्षितभये अरु वलयुक्तभये युद्धकरनेलगे ४० तो निरंतर हतेजावे ऐसे वे राक्षस हारनेमेंपरायण भगतभये अरु कई शरणप्राप्तभये कि हमारी रक्षाकरो ४१ तब तो गरिमासिद्धिने आदिकृत अर्थात् मुख्याधिकारी देवता गन्धर्वों से कहा कि छाड़ देवो ऐसेही कभी तो देवताजीततेथे अरु कभी राक्षस ४२ आपसमें जयकीइच्छावाले युद्धमेंपरायण होतेभये तो तिसयुद्ध के शान्तभये फिर तिनका घोरद्वन्द्वयुद्धभया अर्थात् एक २ मिलकर एक २ हो

लड़ने लगे ६३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड में शुक्रजी को लेउड़ना इसनामसे तिरसठवां अध्याय समाप्त भयाहै ६३॥

चौंसठवां अध्याय॥

मुगन्तक के युद्ध का विस्तार से वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तब तो तिनकामहाघोर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा जो देखतोंको भी भयदायी अरु रोम हर्षानेवाला १ सोकि कालान्तकदैत्य करके तो प्राकाम्य सिद्धि से परस्पर युद्धभया सो जितने कालोंतक प्राकाम्यको जीतता २ तितनेही वेगवान् वशित्वतिसकी सहाय करदेतीभई सो कि कालान्तक के मस्तकपर हस्तकुशलता से अर्थात् तकके एक पर्वतका शिखरलाके डालतीभई ३ तिससे वो शीघ्रही भूमिमें गिरपडा तब तो रुधिरसने दुहराभये कालान्तकको देखकर ४ राक्षस सेनावालों में महाही हाहाकार हुआ तो(मुशल नाम)दैत्यअरु(भल्लासुर)अरु महिमा येजाकर प्राकाम्यसे युद्धकरते भये जो अनेक शस्त्रों से प्रहार करनेवाले ५ तब तो अनगिनत हते देवता टूटेवृक्षके जैसेगिरे तो रुधिररूपजल बहानेवालीहजारों नदियें होगईं६ तो (इशिता) अरु(वशित्व)अरु(विभूति)ये गईं अरुतब युद्धमें प्राकाम्यकी सहाय करतीभई ७ तो चारपर्वत तिन चारोंपर तिन्होंनेछोडे तो वे तिनसे चूर्णभये वेचारोंमरके श्रेष्ठस्वर्गकोगये ८ अरु अणिमाने रणमेंवल से कर्दमकी शिखा पकडकर शीघ्रभूमि पै फटकारतीभई तो वो सौप्रकारसे फटगया ९ अरु मुखसेलोहू निकालताल़ोटता वो प्राणत्यागताभयाअरुमहिमा,लघिमा,गरिमा,ये यक्षोंको(यक्ष्मासुर)(तालजंघ)अरुदीर्घदन्त ये छोडतीभईतबतो(रक्तकेशवाला)(घटासुर)दुर्जयदैत्य१०।११ य महावलवाले सबसेनाओं को फुंकारमारतेआये तो तिनसे हतसेना को देखके वशिता सिद्धि बुद्धि ये१२ तिनकेमस्तकमें भारी मुष्टिप्रहार करतीभई तो येभी सौ प्रकारसे चूर्णभये भूमिमेंगिरे १३ फिर वे निजसामर्थसे जयपायके गर्जना करतीभई विनायकजीकी जयजय ऐसे वे सबसिद्धि कहती

भई १४ और भी जो तुच्छदैत्यथे सो भी तिन्होंने नाशकिये फिरभी वे दैत्यआके सिद्धिकीसेनाको मारतेभये १५ तो दोनो सेनाओं में महा रोला मचा कि मारो बाधो हतो सावधानहोवो १६ फिर तो शस्त्रोंके भिडनेसे उत्पन्नअग्नि प्रकटभया अरु क्रोधयुक्त शूरवीरशस्त्र टूटेपर मल्लयुद्ध करतेभये १७ फिर तिनको वे पहिचाने परस्पर विप कारी घोरयुद्धभया तो जिससेसूर्यजी भी अस्तको प्राप्तभये १८ अरु महाअन्धकार से दशोंदिशा सबओरसे व्याप्तहोगई तबतो वे दिव्य प्रकाश औषधियों को लेकर आपस में प्रहार करतेभये १९ तो तीन दिनरात तिनका निरन्तर युद्धभया अरु वीरोंको बहानेवाली रुधिरकी नदियें दशोंदिशोंमें वहीं २० ढालेंहैं कछुवे जिननदियोंमें अरु खड्ग मच्छ जिनमें अरु शिररूप कमलोंसे शोभित २१ अरु गजहैं मगरजिनमें अरु मुरदेहैं काष्ठजिनमें अरु वालरूप शिवालसे शोभित २२ अरु जो डरोंको भयदेनेवाली अरु जो शूरवीरोंकोमहा हर्ष बढ़ानेवाली तब भी जीतने में चतुर देवताओं की ही जयहुये सन्ते २३ देवान्तक चिन्ताको प्राप्तभया अरु मनमें विचारने लगा कि जिसमेरे प्रभावसे सारे देवता जीतेगये २४ तो नहानेवालककी माया क्याहै जो सामान्यजनों को मोहनेवाली सो अभी मैं आठों सिद्धिसहित सेनाको मारताहूं २५ अरु इस वालविनायककोपकड़ के अपनेघर चलाजाऊंगा ऐसेकहके खड्गहाथमें लेकरशब्दसेदिशो को पूर्ण करताभया २६ तो सुरान्तक देवसेनाको खड्ग से हनता रणमेंआया तो भयसेमूर्छित देवता भूमिमें गिरतेभये २६ अरु क- इयोंने देवविनायकजी का स्मरणकरके प्राणकोछोड़े कईरुधिर नदीमें वहगये अरु कई स्वर्गको चलगये २७ अरु कई दैत्य का देखके ही भयनाजीव त्यागतेभये तब तो ऐसीकष्टीभई देवोंकीसेना दशोंदिशों मेंभगगई२८ अरु वोदैत्यसुरान्तक खड्गहाथमें लिये पीछेसेतिनको मारताथा तो गिरमाने सिद्धदेवके एकमारा पर्वत शृङ्ग सहित २९ दैत्यकेअगपर्छोड़ा तो वोखड्गसे तिसे शीघ्रतासेकाटताभया फिर शोभभई अर्थानिद्धियें बहुतसे पर्वत छोड़ती भई ३० तिसने तिन्हें

लडने लगे ६३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तर खण्ड में शुक्रजी को लेउडना इसनामसे तिरसठवा अध्याय समाप्त भयाहै ६३॥

चौसठवा अध्याय॥

सुरान्तक के युद्ध का विस्तार से वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तब तो तिनकामहाघोर द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा जो देखतोंको भी भयदायी अरु रोम हर्षानेवाला १ सोकि कालान्तकदैत्य करके तो प्राकाम्य सिद्धि से परस्पर युद्धभया सो जितने कालातक प्राकाम्यको जीतता २ तितनेही वेगवान् वशित्वतिसकी सहाय करदेतीभई सो कि कालान्तक के मस्तकपर हस्तकुशलता से अर्थात् तकके एक पर्वतका शिखर लाके डालतीभई ३ तिससे वो शीघ्रही भूमिमें गिरपडा तब तो रुधिरसने दुहराभये कालान्तकको देखकर ४ राक्षस सेनावालो में महाही हाहाकार हुआ तो(मुशल नाम)दैत्यअरु(भल्लासुर)अरु महिमा ये जाकर प्राकाम्यसे युद्धकरते भये जो अनेक शस्त्रों से प्रहार करनेवाले ५ तब तो अनगिनत हते देवता टूटेवृक्षके जैसेगिरे तो रुधिररूपजल बहानेवालीहजारों नदियें होगईं ६ तो (इशिता) अरु(वशित्व)अरु(विभूति)ये गई अरुतब युद्धमें प्राकाम्यकी सहाय करतीभई ७ तो चारपर्वत तिन पारोंपर तिन्होनेछोडे तो वे तिनमें चूर्णभये वेचारोंमरके श्रेष्ठस्वर्गकोगये ८ अरु अणिमाने स्वामेबल से कर्दमकी शिखा पकडकर शीघ्रभूमि पै फटकारतीभई तो वो सौप्रकारसे फटगया ९ अरु मुखसेलोहू निकालतालोटता वो प्राणत्यागतभया अरुमहिमा,लघिमा,गरिमा,ये यक्षोंको(यक्ष्मासुर)(तालजंघ)अरुदीर्घदन्त ये छोडतीभईतबतो(रक्तकेशवाला)(घटासुर)दुर्जयदैत्य१०।११ ये महाबलवाले सबसेनाओं को फुंकारमारतेआये तो तिनसे हतासेना को देखके वशिता सिद्धि बुद्धि ये१२ तिनकेमस्तकमे भारी मुष्टिप्रहार करतीभई तो येभी सो प्रकारसे चूर्णभये भूमिमेंगिरे १३ फिर वे निजसामर्थसे जयपायके गर्जना करतीभई विनायकजीकी जयजय ऐसे वे सबसिद्धि कहती

भई १४ और भी जो तुच्छदैत्यथे सो भी तिन्होंने नाशकिये फिरभी वे दैत्यआके सिद्धिकीसेनाको मारतेभये १५ तो दोनो सेनाओं में महा रौला मचा कि मारो बाधो हतो सावधानहोवो १६ फिर तो शस्त्रोंके भिड़नेसे उत्पन्नअग्नि प्रकटभया अरु क्रोधयुक्त शूरवीरशस्त्र टूटेपर मल्लयुद्ध करतेभये १७ फिर तिनका वे पहिचाने परस्पर विप कारी घोरयुद्धभया तो तिसमेसूर्यजी भी अस्तको प्राप्तभये १८ अरु महाअन्धकार से दशोदिशा सबओरसे व्याप्तहोगई तबतो वे दिव्य प्रकाश औषधियों को लेकर आपस में प्रहार करतेभये १६ तो तीन दिनरात तिनका निरन्तर युद्धभया अरु वीरोंको बहानेवाली रुधिरकी नदिये दशोदिशोमें वहीं २० ढालहैं कछुये जिननदियोमें अरु खड्ग मच्छ जिनमें अरु शिररूप कमलोंसे शोभित २१ अरु गजहैं मगरजिनमें अरु मुरदेहैं काष्ठजिनमे अरु बालरूप शिवालसे शोभित २२ अरु जो डरोंको भयदेनेवाली अरु जो शूरवीरोंकोमहा हर्ष बढानेवाली तब भी जीतने में चतुर देवताओं की ही जयहुने लगी २३ देवान्तक चिन्ताको प्राप्तभया अरु मनमें विचारने लगा कि जिसमरे प्रभावसे सारेदेवता जीतेगये २४ तो तहांनेबालककी माया क्याहै जो सामान्यजनों को मोहनेवाली सो अभी में आठो सिद्धिसहित सेनाको मारताहूं २५ अरु इस बारविनायककोपकड़ के अपनेघर चलाजाऊंगा ऐसेकहके खड्गहाथमें लेकरयन्दसेदिशों को पूर्ण करताभया २६ तो सुरान्तक देवसेनाको खड्ग से हनता रणमेंआया तो भयसेमूर्छित देवता भूमिमें गिरतेभये २६ अरु कि तयोने देवविनायकजी का स्मरणकरके प्राणछोड़े कईरुधिर नदीमें बहगये अरु कई स्वर्गको चलगये २७ अरु कई दैत्य का देखके ही अपनाजीव त्यागनेभये तब तो ऐसीदशाभई देवों कीसेना दशोदिशों में भागगई २८ अरु वोदैत्यसुरान्तक खड्गहाथमेंलिये पीछेसेतिनको मारताथा तो वामिाने तिसदैत्यके शूरभाग पर्वत छल मारि २६ दैत्यके अगपे छोडा तो वोखड्गमें तिसे भीप्रकारसेकाटताभया फिर क्रोधभई अष्टसिद्धियें बहुतसे पर्वत छोड़ती भई ३० तिसो तिन्हें

हलकेपनसे खड्गप्रहारसे शीघ्र काटगिराये तब तो मंहिमा उड़के
तिसके कन्धेपैबैठ तिसेपकड़ा ३१ तो तभीदैत्यके हाथसे खड्गजाता
रहा फिर बलसे तिसी खड्गको नरान्तकके मस्तकपर छोड़ा ३२
तो वो खड्गही मौंटूकहोगिरा अरु तिसकामस्तक कहींनहींकटा यै
बड़ा आश्चर्य्य भया तब तो कटी पीठवाले सुरान्तक ने बाण वर्षा
करी ३३ सो एक२पर दश२ पाच२ सात२बाण छोड़ताभया तो वे
व्याकुलभई भूमिमें गिरपड़ीं ३४ तब तो आठसिद्धियोंके पड़ेसन्ते
देवतोंने युद्ध किया तो वे भी गिरे फिर टोयड़ी में सावधान होकर
देवविनायकजीपैगये ३५ तिसवृत्तान्तको समझकर बुद्धिनेविना-
यकजीसेकहा कि जहां बुद्धिनहीं चलतीहो तहां क्याविचार किया
जावे ३६ अब तुम्हारीसिद्धियें तो हारगईहैं मुझेआज्ञादेवो मैं जा-
तीहूं तिसदैत्यसे लड़नेको तिसका सब सामर्थ्य मैं देखलेऊंगी ३७
इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डके बालचरित्रमें युद्धकावि०से वर्णन
इसनामसे चौसठवां अध्याय हुआ ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

बुद्धिजीका सुरान्तक से जीतना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि देवविनायकजी बुद्धिका वचन सुनके हर्षको
प्राप्तहोकर तिसेबोले कि तुमजाओतिससलड़ो तिसेहतोयशपावो १
ऐसेकहके सुन्दरवस्त्र विनायकजी ने तिसेदिये अरु वो तभी देवजी
को नमस्कारकरके रणमें दैत्यके पास आई २ तो तिसकी दहाड़के
शब्दसेत्रिभुवनकम्पताभयाअरुतिसकेमुखसेएकभारीशक्तिनिकली ३
जो जटावाली अरु विकराल मुख जगत्के भक्षणकीइच्छा जिसको
अरु जो विशालनेत्रों से झलोंको निकालती ४ तो दैत्यसेना को
जलाती आई तो जो सेना भगगई कईदैत्य तो तिसकेदर्शनसेही वे
प्राणहोगिरे ५ अरु कईविचारनेलगे कि अब कहांजाना कहां सुख
होवे अरु कईदौड़ के जाकरबोले कि हे सुरान्तक हममरे ६ ऐसा
बोला सुनके सुरान्तक गगाडीमढ़ा अरु धनुषको शीघ्र चिल्ले चढ़ाके

सर्पकेसमान जहरीबाणोंको ७ निजहस्त हलकाई दिखाता तिसके अगोमेंछोड़ताभया सो तिसकेमस्तकको अरु सूर्यमण्डलकोनिज बाणों से व्याप्तकरताभया ८ तो वो भारीमुखफैलाके विषकेसमान निज बाणोंको निगलनेलगी वो तब तिसदैत्यके सब तरकस रितगये ९ पर तिसकी तृप्ति न भई जैसे राक्षस मनुष्यखाता२ न धापता हो तब वो देवान्तक को क्षीण वल देखकर सेनामें आई १० तो तिन दैत्यों कोखानेलगी अरु कइयोंको हाथसेगिराये अरु कइयोंको गल मेंडालकर चूर्ण करडालती भई ११ तो अनगिनत दैत्य पकोखाई चूर्णकरी हतीगई अरु वो कइयोंको पैरोंकी फटकारसे मारती सुरा॰ न्तकके पासआई १२ अरु तब तिसेजाकरबोली कि तू मेरेइसभगा रूप वनमेंवड़ जा जहांनेरे औरराक्षस माताकेगर्भके जसेसोरहेहैं१३ जो खाये सो मेरे उदरमें जीर्णता को प्राप्तभये अर्थात् पकगये तो तिसके भयसे मूत्र विष्टाकी दुर्गन्धि से व्याकुल भया वो सुरान्तक भगा १४ सोसुरान्तक जहां२जाकेलुकावहां२ही वोभी पहुंची तोवो सप्त पाताळ अरु दशोंदिशों में अरुस्वर्गनमेंऐसेहीभ्रमताभया १५ फिरतिसकीशिखा पकड़उठाके तिसको शक्तिने निज भगामें लगा लिया अरु तिसशक्तिसहितवुद्धिजी विनायकजीपे आई१६ अरु तिस मदकम्पित नेत्रवाली शक्तिको आगेकरके तिन्हें नमस्कार करतीभई जो शक्तिस्तनोंके घातसे दोनों ओरके वृक्षोंको गिराती चलतीथी१७ अरु जो मेघकेसमान बाणवर्षा करती मन्द गमनवाली ऐसी तिस बिकराल शक्ति को देखके विनायकजी ने देखके परे करी १८ तो तिसके हटाये तिसकी भगामें लगा सुरान्तक भूमिमें निकलपड़ा तिसे भी दुर्गन्धिवान देखके दूतोंने दूरफेंका १९ तो वो सन्नापाय चुपसे स्नानकरके घरकोगया जो लज्जित नीचामुख चिन्ताकोप्राप्त दुखितहो २० फिर बुद्धि करके निवेदन कीगई वो विनायकजी को नमस्कार करतीभई तिसदैत्यके कर्मको हँसे अरु हर्ष कइयों ने पूजा मानी २१ फिर वो तिनविनायकजी से ओघुबोली कि मैंनेही दैत्य कोंमेंना भक्षण करीहै अरु तिस सुरान्तक को भी मैंने भगामें लगा

रक्खाहै २२ अब हे दयानिधि देवजी आप मुझको निवासस्थान बताओ गणेशजीबोले कि हे दैत्यनाशिनि वो दैत्य तो तुमसेघोखादेके निजघरकोगया २३ अरु तेरेभी वलको हमजाने जो इन्द्रादिको से अधिकहै सो अब तू मेरे मुखमेंही प्रवेशहो वहां विश्रामको प्राप्त होजा २४ अरु मैंतिमेंसाधोगा अर्थात् नरान्तकसे लड़ेगा तू चिंता मतकरै ब्रह्माजीबोले कि ऐसातिनका वचनसुनके वो तिनके मुखमें वडजातीभई २५ अरु तहां परम प्रसन्नभई सोई माके गर्भ में जैसे बालकसोवे तैसे वो सबलोकवासी देवोंकेदेव विनायकजी के उदर में शयन करतीभई २६ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंड में वुद्धिका विजय इसनामसे पैंसठवां अध्यायहुआ॥

छाछठवां अध्याय॥

नरान्तक करके पिता सहित अनुष्ठान करना वर्णन॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि शारदा अरु रौद्रकेतु रात्रिसमय देवान्तक सुतको अकेला देखके उसे आलिंगन करके ये कहतेभये १ जो मुख छिपारहा अरु लज्जित अत्यन्त दुःखी जो नहींबोलता कांपता जैसे वायुसे कम्पितवृक्षहो २ रौद्रकेतुबोला हे सुत तू गूंगा जैसा भया निज अवस्थाको क्यों नहीं कहताहै मैं जो त्रिलोकी में भी दुर्लभ वाञ्छित होगा सो मैं यत्नसे सिद्धकरूंगा ३ ब्रह्माजी बोले कि तिसके अमृत वचनकोपीके सावधान मनभया नरान्तक माताकेसमीप निःशंकहो पितासेबोला ४ कि आपकीआज्ञा पाकेही मैं विनायकजीसे लड़ने गया फिर विषआस्यमें जिनके ऐसे सर्पसमान वाणों से अनगिनत सेवता हतेगये ५ सो कश्यपजीकी अर्थात् विनायक पक्षवालीसेना कटगिरी तो रुधिर की नदियेंबहीं फिर एक भारी स्त्रीसी जो गुफा सरीखे मुखवाली अरु आकाश को भोंटनेवाली ६ विकराल वाल जिसके पातालपर्य्यन्तवाली पर्वतजैसे स्तनजिसके ऐसी वो देवसेनाकी रक्षाकरनेको मेरे निकटआई ७ तो मेरे करके खड्गसे हनीभई तो कुछभी व्यथाको न प्राप्तभई अरु फिर हे पिताजी गिराने सबसेना

निजगुफासी भगामें लगालई ८ गरु बाणसब शस्त्रोंकोभक्षण करती
सोही वो मुझेभी भगामेंलगाकर विनायकके पासगई ६ फिर तिसके
भगाकेसचिक्कनपनेसेमैछूटकेभूमिमेंगिरा तो महाअँधेरेमें मुझेकिसीने
नहींजानाफिरभगकेघरचलाआयाहूं १० हेपिताजीनदीमेंस्नानकरके
आया अरुतिमीसे मैं लज्जाकोप्राप्त अरु नीचामुखकिनेहूं ११ ब्रह्मा
जीवोलेकि ऐसासुतकावचनसुनके रौद्रकेतु तिमसेवोला कि तूचिंता
मतकर मैं तुझेएकउपायबताताहूं फिरतो मुहूर्त्तदेखकेतिसेमंत्र बताया
१२ सो कि तिसपितानेतिसे अघोरबीजबताया अरुकहा कि शिवजी
का ध्यानपूजन करके तू इसउत्तम अनुष्ठानकोकर १३ अरु तिसके
दशांशसे तर्पण मार्जन होम फिर ब्राह्मणजिवाय फिर शिवजीप्रस-
न्नभये विसकुंडसे एक अश्वनिकसेगा १४ विसपैचढ़के रणमेंजातो
अवश्य जयपावेगा ब्रह्माजी वोले ऐसा पिताका वचन सुनके वो
सुत वोला कि आपने श्रेष्ठउपदेशकिया १५ अब इसकी विधि भी
बताइये ऐसे लोगोंको ठहराकर दोनों घरमेंगये १६ अरु दोनों
लालवस्त्र पहिरे अरु रक्तही चंदन लगाये अरु रक्तही पुष्पलाकर
शिवजीको पूजतेभये १७ तो तिन्होंने परम आदरसे वहुतदिन अ-
नुष्ठानकिया फिर अनुष्ठान समाप्त भये तिन्होंने विधिवत् कुण्ड
वनाया १८ जो छेकोंनवाला लक्षणयुक्त अरु मेखलायोनि सहित
तहां विधिसे अग्निस्थापनकरके अरु यथाविधि पात्रोंकोरख अर्थात्
कुशकंडिका करके १६ तहां वैठे (पचप्रेतास) कर्मसे होमकरते भये
सो कि निजजानुभाग मासकाट २ भक्तिसे होमतेभये २० तोतिस
रुधिररूप घृत अरु मांससे अग्निप्रसन्नभया फिर दशांश हवनभये
अग्निदेवताकी पूजाकरी २१ सो कि शीघ्रही पुत्रका शिरकाट के
वलिदानदिया तिससे पूर्णाहुतिकरी फिर अग्निका विसर्जन किया
२२ ईश्वरके प्रसादसे तिसका पुत्र तैसाहीहोगया फिर तर्पणकेअंत
में तिसनेयथाविधि ब्राह्मणोंको जिमाये २३ फिररात्रीवीते अरुसूर्य
उदयभयेएककालाअश्वदेखा जो चिकने शरीरवालाथा२४ अरुमन
सेगयान् जो हिनसनेसे त्रिभुवनको कंपाता वो इसेपरम भक्तिसे पूज

अरु यथा विधि इसकी आरती उतारके २५ अरु मणि मोतियों के भूषणोंसे इसेसजाकर अरु ब्राह्मणोंको दंडवत् प्रणामकरके पितासे आज्ञापाय २६ अरु अशीश लेकर सुरान्तक तिसअश्वपै चढ़नाभया शेषरहीही सेना साथलेके शेषजीको कँपाताभयाचला २७ तिसकी सेना अस्त्रशस्त्रोंसे अरु कवचशूलोंसे अरु धनुषबाणों से शोभितभई तो तिससेनासेसहित सुरान्तक रणयम्भपै असवारभया २८ सारी सेनाके पुकारते वो देवसेना भयभीतभई अरु फिर आकाश में रज छायेकुछभी न जानपड़ा २९ तो सिद्धिकी सेनावाले ये शीघ्र सेना बिनाशक सुरान्तक फिरभीआया ऐसे अति दुःखितभये भगनेलगे फिर तिसे रणागणमें आयादेखकेसिद्धिकी सेनाउठी३०जोसिंहनाद से हिनहिनाने से दिशोंको गोंजाती ३१ तब तो एकको एकर खड्ग प्रहारसे मारतेभये सो कि सम्भाल मारताहूँ ऐसेकहर के शीघ्र२ प्रहार करतेभये ३२ सो वे भूमिमें गोड़ा रोप करके सर्पके समान शरोंको छोड़तेकानतक धनुषखेंचके ऐसे युद्धकरतेभये ३३ अरुकई ढालें बीचमें करके लड़नेलगे अरु कई पहिलेकी मारका याद करके प्रहार करतेभये ३४ सो पूर्व वैरका स्मरणकरके शत्रुओंको वे रूप करतेभये किसीश्रेष्ठवीरने शत्रुकेकेश पकड़लिये ३५ अरुतिसीसे लातघूसोंसे भूमिमें गिरादिया कईमत्तभये एककोएक टकरहीमारते भये ३६ तब तो वो सुरान्तक निजसेनाकोकटोदेखके सिद्धिकीसेना में तिसघोड़ेको भेजताभया ३७ तो अश्वकी हिनहिनको सुनके कई भूमि में मूर्छा खागिरे अरुतिसीके पैरोंमें गिरपड़े कई देवता चूर्ण होगये ३८ अरु कईत्रिशूलसे हतेभये अरुकईखड्गसेमरे अरु कई देवता तिसने अनेकबाणों से गिराये ३९ तबतो निजसब सेनाहती जाने के समय आठो सिद्धियें हारमानके विनायकजी पै आईं ४० इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें सिद्धियोंका हारजाना इसनामसे छाछठवां अध्यायहुआ ॥

न्यारहवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजीका सुरांतकसे युद्धहोना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि विनायकजीने तिसे सुनके निजमनमें बड़ा आश्चर्यमाना अरु रणचावकिनेक्रोधसे सिंहपै सवारभये १ तोतब निज गर्जनेसे आकाशदिशोंको गोंजाते अरु पर्वतोंको भी और सब लोकोंके मनकंपितकरतेभये २ तो तिन्हें सुरांतक कहनेलगा कि तू मद्दवन बिनसुखेमुख असमर्थ अर्थात् निर्बलभया कैसे चलाआयाहै हेबालक तूयुद्धकेलिये न ठहरजामाताकादूधपीव ३ तू अदितीमें कश्यपजीसे जन्माकेसीमूर्खताको प्राप्तभयाहैजोहेबालकअबतूदेवावक सेलडनेचाहताहै ४ श्रीब्रह्माजी बोलेकि ऐसासुरांतकका वचनसुनके क्रोधसेलालनेत्रकिये विनायकजी मुखसे क्रोधाग्नि निकासते हँसके तिसेकहतेभये ५ मुझेदेखके कालभी डरताहै तू वृथा मरनेचाहताहै तेरा पति कोमरूअगहै जिससे तूमेरा एकही ग्रासहोवेगा६ श्रीगणेश जी बोले कि तू मद्यपीनेसे पागलहोरहाहै बाहुल्यकरके वासनासे खोटा अर्थात् दुष्टहै जो तू ये सबधर्महित युक्तिहीन मूढपनसे वचन कहरहाहै ७ छोटासाही अग्निपवनसे प्रेरि सबको भस्म करडालताहै तैसेही तेरे वचन से प्रेरा मैं तुझे मारताहूं हे अधमदैत्य तू ये नहींजानताहै८अब तू तिसबुद्धिको छोड़दे क्योंकि मेरानाशक कोई नहींहै मै ब्रह्मस्वरूप सदातन तेरे हवनेकेलियेही अवतारभयाहूं ९ शिवजीसे वरपानेके गर्वसे तैंने सबको पीडितकिये पर अब हेबुद्धि हीन तिसकी अवधि आईभईको नहींजानता १० जो हे दुर्मतिवाले त्रिलोकके पीडाकरनेसे जो तुझको पापभया सो न कहनेमें वयकर किन्तु निजसामर्थदिखा ११ अर शक्तिके भगानेसे निकलके तूहीमुख दिखाताहै सो संभालजाचला जो लड़ने चाहता है तो १२ सो हे मृदुरूप दहानेवाले मृत्युकोतुम कभी चाहतेहो ब्रह्माजी बोले किप्रभु विनायकजी तिसे ऐसे कह निज धनुष चिल्ला चढ़ाकर १३ तिसको नरावरूकी गतिदेनकी इच्छाकरतेभये तो तिनके धनुषकी टंकारसे

त्रिभुवन कंपताभया १४ सो कानतक धनुष खेंचके तिसदैत्य पर शरछोड़तेभये तिसदैत्यकरके सौ प्रकारसे काटाभया वो बाणभूमि में गिरपड़ा १५ फिर तो सुरांतक निजधनुषको चिल्लेसहितकरके बाणछोड़तेभये तो तिसके धनुषका शब्दसुनके पर्वतदिशा गौजती भई १६ तो विघ्नराजजी भी तिनबाणोंको हुंकारसेही गिरातेभये फिर विनायकजी तिसदैत्यराज पै बहुतसे बाणछोड़तेभये १७ सो देवजी एकसे तो तिसका मुकुट अरु एकसे कर्णकुंडल अरु दोओं से तिसके भुजछेदतेभये १८ अरु एक बाणमस्तक में मारा तब तो क्रोधयुतदैत्य दतचबाता नेत्रफाड़के बहुतसे बाणोंसे आकाशदिशा को ढकता छोड़ता भया विनायकजी पै तो विनायकजी एकबाण सेही तिसके सब बाणों को आकाश में अर्थात् बीचमें ही काटगिरा कर १९।२० आपविनायकजी निजबाणोंका मंदपवनादेते भये तब तो वे घोरअंधेरेमें आपसमें लड़तेभये २१ सो क्रोधयुक्तभये दोनों निजबाण वर्षासे दूसरेके बाणोंको काटते आपसमें प्रहारकरतेभये सोवे दोनों सकड़ों बाण वर्षाओं को हटाकर २२ तबतो वो दैत्य एकसौ आठदेर तिस महाअघोर मन्त्रको पढके तिस बाणास्त्र से निजबाण को मन्त्रित करके २३ छोड़ता भया तो तिससे करोड़ों बाण उत्पन्न भये जो चारहाथी दन्तवाले पर्वत सरीखे अरु सुमेरु मन्दराचल कोभी चूर्ण करनेवाले २४ जिनके मदसे बहनेवाली नदियें सबओर से प्रकटभई जिनके चिह्नाड़शब्दसे त्रिभुवन गांज रहे २५ हेव्यासजी जैसे वर्षामें मेघोंके गर्जनेसे भयभीतहों तैसेही वे गजदैत्य सेनाका विनाश करनेलगे २६ अरु वेही गजभागतोंके भी पीछेलगे दशोंदिशोंतक चलेजाते थे। जो पैरों की फटकार से अरु शूंडोंसे अरु दांतोंसे शूरबीर हतनेवाले २७ तो निज सेनाका घमसान देखके विभुविनायकजी सिंहअस्त्रको छोड़तेभये वो तिससे सैंकरों हजारों सिंहउत्पन्नभये २८ तो तिनके दहाड़शब्द से गज भूमिमें गिरपड़े अरु वे सिंहतिनके कपोलोंको विदारतेभये २९ वो तहां दहाड़ोंसेचिंहाड़ोंसे अरु अनेकसे दैत्यशब्दोंसे त्रिलोकी कंपित

भई सब देवोंने आश्चर्य्यमाना ३० सो वे सिंहउड़ २ के गजोंके मस्तकोंपै झपटतेभये ऐसे वे सब गज तिनसिंहोंमे हतेभये ३१ ऐसे सजे जैसे इन्द्रकरके वज्रसेहते पर्वतहोवें फिर तो वे सिंहदैत्यों को भक्षणकरते दशोदिशोमें झपटे ३२ तो सब सेनाके हतभये सुरान्तक चिंताकोप्राप्तभया कि ये कश्यपजीकासुत बालरूभी बलवाला दीखताहै ३३ सो अभी मैं अवश्यइसको यमकास्थान दिखलाऊंगा ऐसे कहदैत्यराजने निजबाणको मन्त्रसे पढ़ा ३४ अरु तब धनुष में व्याघ्रप्रसव बाणको रखताभया अरु कानतक धनुषखैंच के तिसे देवसेनापै छोड़ा ३५ तो वो बाणशीघ्रही आकाश दिशाको गोजाता वहागया जिसके अग्रभागके पवनसेटूटे वहुतसे वृक्षगिरतेभये ३६ फिर तिससे अनेकवघेरे प्रकटभये तो वे तिनसिंहोंको खानेलगे तो सिंहअन्तर्धानभये ३७ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमेंअस्त्र युद्धहोना इसनामसे सरसठवा अध्याय समाप्तहुआहै ६७ ॥

अरसठवां अध्याय ॥

श्रीगणेश सुरांतकका अस्त्रोंहीसे युद्धहोना ॥

श्रीब्रह्माजी बोले तब तो फिर दैत्यने आदर से दोबाण मंत्रित किये सो एक तो निद्राअस्त्रसे अरु दूसरे गन्धर्वअस्त्रसे १सो बाणा गोडा आगेरोपके चिल्लाखैंचकर दोनोंको चलाताभया तो तिनके शब्दसे शीघ्रही तीनोभुवन कांपनेलगजातेभये २ सो तिन अस्त्रों में से एकतो सेनापैगिरा अरु दूसरा विनायकजी के समीप पहुंचा तो विनायकजी अपनेआगे ताल मृदंग गन्धर्व अप्सरा ३ गान अरु विचित्रनृत्य देखतेभये तब तो तिनकेहाथसे शस्त्र छूटगिरे अरु तिन्होंनेनहींजाने ४ सो वेकोमल२ शब्दोंसे मोहितभये करनाकुछभी नहींजाने अरु सारे सेनावाले तिस निद्रास्त्रसे मोहितहो सोगये ५ जैसे रातको बालक वेसुधसोतेहैं अरु वे मार्गेभी अर्थात् सिविर निद्रा से निर्लज्जभई सोहोगई ६ तो देवान्तकने ऐसा देखा तो वो हर्षा अरु गर्जा फिर तो सबओर बहुतसी सेना जमाताभया ७ सो

सुरांतकके अद्भुत पराक्रमको देखके ३९ एक हढबाणको निकालके तिसे वज्रअस्त्रसे मन्त्रितकरके भारीपुकारकरके तिसे दैत्यसेना में छोडते भये ४० तो तिसकेशब्दहीसे वृक्षपर्वतभूमिमेंगिरे अरु तिसीअस्त्रके योगसेभईअग्निसे दशोदिशाओंमें दाहहोताभया ४१ जोतेजमेंअत्यंत प्रकाशमान अरु निजतेजसे सूर्य्यमण्डलको ढकता तो तिसके कई पक्षिजलकेभरगये ४२ तोतिससे शीघ्रही वो खड्गास्त्रखंडितभया तो वो अस्त्रवज्रोंसे सुरांतककी भारीसेनाको गंजलाताभया ४३ तोतिस एकही वज्रधारासे सैकडोंहतेजातेथे सो जहां२ दैत्यजाते वो वहां२ हीं वो भी पहुंचतीथी ४४ तो तिसने तिनके मस्तक हाथपैर, कंधे नितंब ये सबचूर्णकरदिये तो दैत्यवर्ती कोचीरकेनीचेपसे तो वहांभी वो तिन्हेंहतताहीभया ४५ ऐसे तिनअनेकसे तीक्ष्णवज्रोंसे सबदैत्य हतेगये तब वो वे वज्र सबओरसे देवांतक पै गिरतेभये ४६ तोतिस नेभी बाणलेकर मन्त्रसेमन्त्रितकिया सो तिसेरुद्रअस्त्रसे नियोजित करके अरु धनुपलेंचकर ४७ शिवनामोंसे अंकित तिसबाणको शत्रु सेनामेंछोडा तो वो आकाश अरु दिशाविदिशाओंको गोनाताभया ४८ अरु सबदिशोंमें अग्निकेकनके छोडता प्रलय अग्निकेसमानतो तिसकेभयसे भूमिलोक अरु देवलोकवशोंमें भगगये ४९ तोविना-यकजीकी सेनामें महारोलामचा तो तिसबाणके पड़तेही एक घोर दर्शनवाला पुरुष निकला जो भयानक मुखवाला त्रिकोलीकोग्रास करताभया ५० जटावान् दीर्घबाहु अरु दीर्घपैर जिसके भारी पेट-वाला ५१ धरती अरु आकाशतक होठजिसका पर्वतसी जीभवाला भयकारी सो वो भारीपुरुष शीघ्रही तिस वज्रास्त्रको भक्षण करता भया ५२ अरु विनायकजी को हतनेकी कामना करके झट तिनके पासगया तबतो विनायकजीने शीघ्रहीब्रह्मास्त्रका प्रयोगकिया ५३ सो कि सौमंत्रगिन पढ़के तिसेवेगवान् बाणसहितकिया अरु कान तक खेचके देवजी शीघ्र तिसे छोडतेभये ५४ तो तिसके वारलगे भारीशब्दसे त्रिभुवन कांपताभया अरु तिससेनिकसे अग्निकणोंको करके दिशादग्धभई तो कुछभी नहींजानपडा ५५ तो तिससे भी तै

साही अत्यंत भयानक पुरुष निकला तो वे दोनोंजय इच्छाकरते आकाशमें युद्धकरतेभये ५६ तिनमहाबलवतोने नानाप्रकारसे मल्ल युद्धकिया फिर वे क्षणहीं में छिपगये तो कहीं भी नहींदेखपडे ५७ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमें अस्त्रोंसे लड़ना इस नामसेवो यहां ये अरसठवांअध्याय भयाहै ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

सुरांतक की मायासे सबका मोहित होजाना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले तब तो अत्यन्त विस्मितभये देवांतकने विचार किया कि जैसे २ मुझसे इसकोनिवृत्ति अर्थात् इसके हटानेकेलिये जो २ माया रचीजातीहै तैसा २ ही पुरुषार्थभी ये बालकदिखाता है कब ये मृत्युकोप्राप्तहोवे अरु कबमें श्रमरहित हो शयनकरूं २ ऐसी २ चिन्ताभरे इसने फिर धनुष को चिल्ले सहित किया अरु घोरबाणको पढ़ लगाके विनायकजी पै छोडा ३ तो तिसबाण ने अनगिनतही बाण वर्षाकरी अरु एक भयकर शक्तिरची जो त्रिभुवन को शीघ्र भक्षणकरनेवाली ४ तो विनायकजीने तिसशक्ति को अरु तिसकी गोदमेंबैठे सुरान्तकको देखा जो बहुतसे तीक्ष्ण२ बाण वर्षारहा ५ तबतो आठोसिद्धियें अतिवेगसे उडकरके तिसशक्तिको शीघ्र पकड़तीभई अरु विनायकजीके पासले आई ६ तो लाते भये वो हाथसेछूटके भगगई तो वे क्रोधसे सुरांतकको केशपकड़के तहां लातीभई ७ तो तिससुरांतक ने अणिमासिद्धि को घूंसेसेमारी तो वो घूंसेकेप्रहारसे मूर्च्छितभई गिरपडी ८ तो तिस महाअसुर को लघिमा, गरिमा, नशिमा, ये जितने लातोंसेमारतीभई तितनेहीं६ दैत्यनेवगसे तिनके पृथक् २ पैरपकड़े अरु तिन्हें पृथ्वीमें फटकारी तौही तिनमेंसे और कईकदेवता निकलआये १० फिर तो प्राकाम्य अरु विभूति ये तिसे बलसे हवतीभई फिर वो दैत्य मुख से अग्नि उगलताभूमिमें गिरा ११ फिर क्षणमेंही सचेतहोकर के निजअश्व पै चढताभया सो शस्त्र हाथलिये पवन वेगवान् विनायकजी पै

प्रहारकर्त्ताभया १२ भारी तलवार के घावसे तब विनायकजी भी कुछ २ मूर्च्छाको प्राप्तभये अरु तिसीसमय सावधानहोके दैत्यराज पै दौड़े १३ जैसे हिरण्यकशिपु पै विष्णु नृसिंहजी अरु वृत्रासुरपै इन्द्र अरु शर कमल फांसा अरु अंकुश ये निज एक२ हाथमेंधारण किये श्रेष्ठवीर लक्ष्मीसे प्रकाशितभये सजे अरु मेघकेसमान गर्जके देवविनायकजी दैत्यराजपै प्रहारकरतेभये १४।१५ सो वेगसे चार शस्त्रोंकरके हता पर तबभी वो चलानहीं तब निजशस्त्र को निष्प्रयोजनभया देखके विनायकजी परम आश्चर्यको प्राप्तभये १६ सो तिसदैत्यके देहको वज्रसेभी अतिकठोर विनायकजीने माना तबतो तिन्होंने दैत्यधूम्राक्षका उत्तमखड्ग जो चूर्णकरता सूर्यमंडलसे प्राप्त भयाथा सो लेके तिससे दैत्य को हनतेभये तो विसके सौटूक हो गिरे १८ पर सुरान्तक का रामभी न टेढ़ाभया तब भी विनायकजी ने महाही आश्चर्यकिया फिर तो नानाप्रकार शस्त्रों के प्रहारोंसे वे आपसमें युद्धकरतेभये १९ सोकि मस्तकमें अरु पीठमें हृदयमें अरु भुजोंमेंमारतेथे तो तिनके शस्त्रोंके घातसे उत्पन्न भया अग्नि पृथ्वी को जलावाभया२० पर वे न डरे युद्धहीक तेरहे सोकि अधेरात्रिहै आधीरातभये भी तिन्होंने विश्राम न लिया २१ फिर तो निज २ कृत्रिम दीप्ति अर्थात् किरेभये उजेलेकर २ के युद्धकरने लगे फिर तो रौद्रकेतु देवतोंको मोहनेवाला मायारचताभया २२ सोअदिती जीको कामिनी बनाके तिसे सुरान्तक को पकड़वा भया जो कमल नेत्रवाली भारीस्तनोंवाली अरु केसरमें रंगीमालापहिरे २३ अरु मोतियोंके हारपहिरे सुन्दर बाजूबांधे अरु दिव्यरत्नोंसे सजी रत्नराई की लहंगेवाली सुवर्ण से सजरही सुन्दर कुच वस्त्र अर्थात् अँगियाजिसकी २४ ऐसीअदिती विनायकजीकोदेखतेही रोनेलगी जो दैत्यके हाथसे पकड़ीगई तो तिन्हें पुकारतीभई दौड़ २ मैं त्रास को प्राप्त होरहीहूं क्या देखताहै २५ तिसके ऐसे कहत २ दैत्य बल में तिसकी अँगिया फाड़ताभया अरु कामभरे मन से तिसजावन देखताभया २६ वो वो देखके देव विनायकजीको ऊंचे से पुकारी

कि तेरीपुरुषार्थता कहांगई है स्नेहरहित तू लोकलाजके भ्रमसेही इससेमुझे शीघ्रछुड़ाव २७ तो विनायकजी तिसेदेखके आंशुकंठभरे क्रोधयुक्त भये तिस विचारको भूलगये तिनके हाथसे शस्त्र छूटपड़े २८ अरु वे शोचतेभये कि मेरीमाता ये इस दुष्टकेहाथ में कैसेगई है जिसकी माताकुअवस्था को प्राप्तभई तिसका जन्म वृथा है २९ अरु ये देवताओं की भी माता दुष्ट संगति को कैसे प्राप्त भई है ऐसेशोचते विनायकजी को देखके काशिराम भी बहुत प्रकार शोच करता भया अरु नगरमें स्थित लोग भी सब शोच करनेलगे फिर देवान्तक विनायकजीको बहुत प्रकार निन्दताभया ३०। ३१ कि अबतेराजन्म अरु पुरुषार्थवृथाहै तूप्राणक्योंनहीं त्यागताहै तूबड़ा निर्लज्जहै जो अबभीलोकमें मुख दिखाताहोहै अर्थात् अब तो तेरा जीनावृथाहीहै३२सो अब मैं तेरेनिकटही इसकाशिरकाटताहूं ब्रह्मा बोले ऐसा निष्ठुर वचन सुनके देवविनायकजी ३३ मनमें विचारते भये कि ये सत्यही कहता है सो मैं मरनेको कौन उपायकरूं विष खाऊं या फांशा बांधमरूं ३४ या मरनेको उदरमें शस्त्र प्रहार करूं अर्थात् छुरीसेचिरमरूं ऐसेदुःखशोकसहित येविनायकजी जितने शोचकरतेरहे ३५ तभी तिन विनायकजीने आकाशवाणी सुनी कि आकाशवाणीबोली हे देव ये दुष्टबुद्धिसुरान्तकने मायारचीहै ३६ सो अब तुम सावधान होके रणमेंलड़ो अरु निजशत्रुकोहतो तब तो वे तिसमायामय प्रपंचको जानके सावधानभये ३७ अरुबुद्धिमान् हर्षितभये तिसदैत्यको मारनेका उपाय करनेलगे सो शम्भुजीकरके तिसदुष्ट दैत्यकोदिये वरका स्मरण करके ३८ सो कि ऊषाकालके विन तुझमें सबशस्त्र चलाये वृथाहोवें ये वर यादकरके प्रातःकाल तिससे लड़ने को निकले ३९ फिर दैत्यने भी युद्धके अन्त में तिन विनायकजीको अपने अगाड़ी देखे जो लालनेत्रवाले सजरहा मुकुट जिनका अरु कुण्डलों से प्रकाशवान् ४० जो दन्तकान्ति से सुन्दर अरु मोतियोंकी लड़ोंसे विशेष भूषित अरु दिव्य वस्त्र पहिरे तेजसों आकाश स्पर्शकरता शुंडजिनका ऐसे विभुविनायकजीका ४१ रूप

देखके देवान्तकडरता अरु आश्चर्य स्मरणकरताभया कि ये आधा नर शरीरहै अरु आधा गजशरीर सो ये क्याहै ४२ इतिश्री गणेश पुराणउत्तरखंडकेबालचरित्रमें सुरान्तकको निजदर्शनदेना इसनाम से उनहत्तरवां अध्यायहुआ ६६ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी करके सुरान्तक की मोक्ष करना अरु सबजनोंसहित पुरीमें आना वर्णन कियागया है ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि जितने वो भयभीत भया सुरान्तक ऐसे कहतारहा तितनेही विनायकजीने तिसको छोटेबालककीनाईं गोद मे लेलिया १ अरु निज प्रभावसे गणेशजी कमलआसन बनाकर इस दैत्यराजको बोले कि तू अपने सुन्दर वर का स्मरणकर २ अरु तिसदैत्यने दोनोंहाथोंसे इनकादंत पकडके अपनेको ऊपर झुलाया सोकि वो तिनका दंतपकडके बेर २ झोंटे लेताभया ३ अरु जो वो सुरान्तक तिनके दंतकोतोडके भूमिपर गिरा सोही तिन विनायक जीने निजदंतको धीरे से उठालिया अरु तिसी दंत से सुरान्तक के मस्तकमें प्रहारकरतेभये अरु महाशोरसे दिशा विदिशाओंको गो- जाते गर्जनाकरतेभये ४।५ अरु सारीपृथ्वी अरु सात पातालों को चलायमानकरते तो दंतके प्रहार से तिसका शरीर सौ प्रकार से कियागया अर्थात् दंतकीमारसे तिसके सौटुकहोगये ६ तो तिसके शरीरसे मेघकीनाईं रुधिरकी धारपडनेलगी तो सबभूमितलवासी जन तिसे उत्पात समझतेभये ७ अरु दैत्यके देहमें जो तेजथा सो तिन विनायकजीमें प्रवेशभया सब देवतों के देखतेभये जो युद्धमें देखागया ८ तो तिसकादेह तीन योजनतक भूमिमें पडा सो वृक्षों को अरु वृक्षसहित पर्वतोंकोचूर्णकरताभया ६ ऐसी गतिको देखके सब सेनावाले दशोदिशों में भगगये अरु कई नाशकोहो प्राप्तभये तिसके शरीर के पडनेसे १० तो तिन २ स्थानों में आये देवताओं ने पुष्पवर्षाकरी अरु देवदुन्दुभियें बजनेलगीं अरु राजदुन्दुभि शब्दों

करके सहित ११ अरु दिशानिर्मलभईं सुख पूर्वक पवन चलनेलगा अरु तब वहनि के तेज अरु लोगोंके मन प्रसन्न होतेभये १२ अरु तैसेही सुलटीवहनेवालीनदियें सन्मार्गगामिनीभईं फिर वो इन्द्रादिक देवता अरु मुनीश्वर तिन्हें पूजते भये १३ अरु वे परम भक्ति से तिनकी स्तुति करते भये कि हे विभु विनायक जी हमको आपने देवान्तक के बधनसे छुडाये हे १४ हे देवराजजी वामनजीकी नाईं आपने हमारा कार्यकियाहै इससे (उपेन्द्र) ऐसे आप विख्यात होवोगे१५अरु हम निज २ अधिकारोंमें निर्भय बसतेहैं अरुअवघर२ में स्वाहा स्वधा वषट्कार होवेंगे १६ ऐसेकहके वे विनायकजी को नमस्कारकर अरु तिनकी प्रदक्षिणाकरके अरु तिनसे आज्ञालेकर हर्षयुक्तभये निज२ स्थान पधारतेभये १७ तिसके अनन्तर काशिराज ने विनायकजीको देखे जो सिंहपैसवार बालरूपी अरु बालकोंहीं में खेलरहे १८ तो बाल विनायकजी भी काशिराजको देख परम आदरसे मिलते भये तो वे दोनों आनन्दभरे नेत्रों से आंशू छोडते १९ फिर राजा तिनविनायकजीको कहनेलगा कि मेरावड़ा भाग्यभयाहै कि जो ब्रह्मादिकों को अगम्य सनातन परब्रह्म २० ऐसे आप नित्यही पूर्वजन्म के सुफलोदय से दृष्टि समीप रहेहो जो आप सम्पूर्ण के कारणकेभी कर्ता अरु आप कर्ता शून्यअर्थात् आप का कोई करनेवालानहीं २१ जो आप वेदान्तज्ञेय सत्स्वरूप ज्योति जो ज्योतियोंमेंभी निर्मल अर्थात् सर्वोपरि प्रकाशमान अरु नाना रूप अरु वस्तुसे रूपरहित ऐसे आप बालक स्वरूप करके मेरेघर में २२ निजइच्छासे हेभूमिभार हरनेवाले सुन्दर विनायकजी आप क्रीडाकरतेहो श्रीब्रह्माजीबोले कि विघ्नराजजी तिसका ऐसा कहना सुनके अरु तिसके आंशुपोंछकर २३ बोले कि हम तुमसे क्षणभर भी कभी दूरनहींहोतेहैं फिर तो काशिराजने विनायकजीकी अनेक से उपचारों से पूजाकरी २४ फिर सारे राजा इन्हें पुन नमस्कार करके देव विनायकजी से बोले कि आपने इस भूमि का उद्धार कियाहै २५ जो धरती दैत्यों के भारी भार से लदी भई थी तिनसे

देखके देवान्तकडरता अरु आश्चर्य स्मरणकरताभया कि ये आधा नर शरीरहै अरु आधा गजशरीर सो ये क्याहै ४२ इतिश्री गणेश पुराणउत्तरखंडकेबालचरित्रमें सुरान्तकको निजदर्शनदेना इसनाम से उनहत्तरवां अध्यायहुआ ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी करके सुरान्तक की मोक्ष करना अरु सबजनोंसहित पुरीमें आना वर्णन कियागया है ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि जितने वो भयभीत भया सुरान्तक ऐसे कहतारहा तितनेही विनायकजीने तिसको छोटेबालककीनाईं गोद मे लेलिया १ अरु निज प्रभावसे गणेशजी कमलआसन बनाकर इस दैत्यराजको बोले कि तू अपने सुन्दर वर का स्मरणकर २ अरु तिसदैत्यने दोनोंहाथोंसे इनकादंत पकडके अपनेको ऊपर झुलाया सोकि वो तिनका दंतपकडके बेर २ झोटे लेताभया ३ अरु जो वो सुरान्तक तिनके दंतकोतोडके भूमिपर गिरा सोही तिन विनायक जीने निजदंतको धीरे से उठालिया अरु तिसी दंत से सुरान्तक के मस्तकमें प्रहारकरतेभये अरु महारौलेसे दिशा विदिशाओंको गो- जाते गर्जनाकरतेभये ४।५ अरु सारीपृथ्वी अरु सात पातालो को चलायमानकरते तो दंतके प्रहार से तिसका शरीर सौ प्रकार से कियागया अर्थात् दंतकीमारसे तिसके सौटुकहोगये ६ तो तिसके शरीरसे मेघकीनाईं रुधिरकी धारपडनेलगी तो सबभूमितलवासी जन तिसे उत्पात समझतेभये ७ अरु दैत्यके देहमें जो तेजथा सो तिन विनायकजीमें प्रवेशभया सब देवतो के देखतेभये जो युद्धमें देखागया ८ तो तिसकादेह तीन योजनतक भूमिमें पडा सो वृक्षों को अरु वृक्षसहित पर्वतोंकोचूर्णकरताभया ९ ऐसी गतिको देखके सब सेनावाले दशोदिशो मे भगगये अरु कई नाशकोही प्राप्तभये तिसके शरीर के पडनेसे १० तो निज २ स्थानो में आये देवताओं ने पुष्पवर्षाकरी अरु देवदुन्दुभियें बजनेलगीं अरु राजदुन्दुभि शब्दों

करके सहित ११ अरु दिशानिर्मलभई सुख पूर्वक पवन चलनेलगा अरु तब वहनि के तेज अरु लोगोंके मन प्रसन्न होतेभये १२ अरु तैसेही सुलटीवहनेवालीनदियें सन्मार्गगामिनीभई फिर वो इन्द्रादिक देवता अरु मुनीश्वर तिन्हें पूजते भये १३ अरु वे परम भक्ति से तिनकी स्तुति करते भये कि हे विभु विनायक जी हमको आपने देवान्तक के बधनसे छुडाने हैं १४ हे देवराजजी वामनजीकी नाई आपने हमारा कार्यकियाहे इससे (उपेन्द्र) ऐसे आप विख्यात होवोगे१५अरु हम निज २ अधिकारोंमें निर्भय वसतेहैं अरुअवघर२ में स्वाहा स्वधा वषट्कार होवेंगे १६ ऐसेकहके वे विनायकजी को नमस्कारकर अरु तिनकी प्रदक्षिणाकरके अरु तिनसे आज्ञालेकर हर्षयुक्तभये निज२ स्थान पधारतेभये १७ तिसके अनन्तर काशिराज ने विनायकजीको देखे जो सिंहपैसवार वालरूपी अरु बालकोंहीं में खेलरहे १८ तो वाल विनायकजी भी काशिराजको देख परम आदरसे मिलते भये तो वे दोनों आनन्दभरे नेत्रों से आँशू छोडते १९ फिर राजा तिनविनायकजीको कहनेलगा कि मेरावड़ा भाग्यभयाहै कि जो ब्रह्मादिकों को अगम्य सनातन परब्रह्म २० ऐसे आप नित्यही पूर्वजन्म के सुफलोदय से दृष्टि समीप रहेहो जो आप सम्पूर्ण के कारणकेभी कर्त्ता अरु आप कर्त्ता शून्यअर्थात् आप का कोई करनेवालानहीं २१ जो आप वेदान्तज्ञेय सत्स्वरूप ज्योति जो ज्योतियोंमेंभी निर्मल अर्थात् सर्वोपरि प्रकाशमान अरु नाना रूप अरु वस्तुसे रूपरहित ऐसे आप वालक स्वरूप करके मेरेघर में २२ निजइच्छासे हेभूमिभार हरनेवाले सुन्दर विनायकजी आप क्रीडाकरतेहो श्रीब्रह्माजीबोले कि विघ्नराजजी तिसका ऐसा कहना सुनके अरु तिसके आँशुपोंछकर २३ बोले कि हम तुमसे क्षणभर भी कभी दूरनहींहोतेहैं फिर तो काशिराजने विनायकजीकी अनेक से उपचारों से पूजाकरी २४ फिर सारे राजा इन्हें पूज नमस्कार करके देव विनायकजी से बोले कि आपने इस भूमि का उद्धार कियाहै २५ जो धरती दैत्यों के भारी भार से लदी भई थी तिससे

(धरणीधरजी) हो ऐसे कह तिनसे आज्ञालेके वे सवराजा निज २ नगरोंको पधारतेभये २८ तब काशिराज भी बंदीजनों के शब्दोंसे मिश्रितबाजेगा जैसे अरु सुरातकके वधसे हर्षयुक्त अरु बालविनायकजीकी स्तुतिकररहे ऐसे सेनावालों के साथ निजनगरको आया अरु सब लोगों को पृथक् २ वस्त्रादिकदेके विदाकर २८।२९ औकइयोंको ताम्बूल देकर अरु विनायकजी को आगे करके हर्षभरे मत वाला काशिराज निज सुंदर मनोहर महल में पधारता भया ३० इसप्रकारकरके श्रीगणेशपुराण उत्तरखंड बालचरित्रमें श्रीगणेशजी करके सुरांतककी मोक्षकरना अरु काशिराज सब निज जन सहित हर्षसे काशिकापुरी में आना सवको विदाकरना इस नाम से यहां सत्तरवा अध्याय भयाहै ७० ॥

इकहत्तरवा अध्याय॥

श्रीगणेशजी करके निजपुरको आना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले फिर दूसरेदिन काशिराज राज्यासन पै गया वो मंत्री वीरमुखिया बड़े अरु सखाजनोंको बुलाय तिन्हें नमस्कार करके निजमनोरथ अर्थात् विवाह कार्य सुनाताभया १ काशिराज बोला कि विनायकजीको मैंने पुत्रके विवाह के लिये बुलायेहैं जो बहुतसे उत्पातभये सोभी इन्होंने नाशकिये हैं अरु अदितिजी को मैंनेकहाथा कि तुम्हारे पुत्रकोशीघ्रही २।३ लेआऊंगा तोयहांझटही बहुतदिन होगये सो अब त्रिभुवन स्वस्थहै इससे विवाहका विचार करो ४ मंत्रीबोले हे राजन् आपने श्रेष्ठकहा ये विघ्नहोने से इस विवाहके काममें विलम्बभया सो अब कीजिये ५ विनायकजी के प्रसादसे सबजगत् कुशलसेहै सो दूरवर्ती प्यारोंको लग्न पत्रिका भेजदीजिये ६ अरु दूतोंको सबतयारीकरने लानेको नगरोंमेंपठावो ब्रह्माजीबोले कि मंत्रियों का ऐसा वचनसुन सभावाले लोग श्रेष्ठ कहा ऐसेबोले तब राजाहर्षको प्राप्तभया अरु तब तिसने ज्योतिष वेताओंसे लग्नकादिन निश्चय करवाया ७।८ अरु प्यारोंको बुलाने

केलिये श्रेष्ठदूतभेजे अरु यथार्थवादीदूतोंसे यथाविधित पारीकरवाता भया ९ फिर मगधदेश का राजा भी पुत्रीकोले काशीपुरीको आया अरु सव मरवाजन भी अनेक दिशाओंसे आये १० सोवे यथायोग्य वहुतसीभेंट देतेभये अरु परम उत्साहपूर्वक वहां देवतोंका स्थापन भया ११ अरु वे विधिसे सांगोपाग विवाह करके ब्राह्मणोंको अरु सवलोगोंको धनादिकोंसे प्रसन्न करतेभये १२ फिर सवप्यारोंको बिदाकरके काशिराज तिनविनायकजीको सुन्दर स्नानकराके नाना प्रकारके श्रेष्ठवस्त्र आभूषणोंसे विभूषित करताभया १३ अरु भाइयों सहित हर्षित भया तिन्हें आ सवाद २ अन्न भोजन कराता भया फिर रथमें सवार होकर तिन सहित काशिराज १४ बाजों गाजों सहित कश्यप जी के आश्रम को आता भया तव वो सारे नगर वाले काज छोड़ २ के आये १५ सो कि तिन्होंने भोजन पढ़ना निद्रा मैथुन ये सवतजदिये अरु निजरवेष न वनाकर अर्थात् जो२ शृंगार करतेथे सो छोड वाहर निकले १६ तव वो हजारों वालक तिन विनायकजी को रोकतेभये कि तुम हमें त्यागके क्यों जातेहो कैसी निठुराई को प्राप्तभये हो १७ हम जायगे ऐसेपहिले से हमें क्योंनहींकहा हमारेघरजीमके तुम कैसे आश्रमको जातेहो १८ अरु कोईवालक बेर२रोता इनकेपैर पकड़ताभया अरु कोई तिनसे मिल तिनका हस्तकमलही पकडता भया १९ अरु पुरवाली स्त्रियें जो वालयौवना कोमल सो निजशृंगारको उलटाकरके तिन विनायकजी के देखनेकेलियेआई २० जैसे वर्षामें सारीनदियें समुद्रमें जातीहैं अरु जैसे हस मोतियोंपै अरु देवता भगवान प्रति जातेहैं २१ सो वे जाके अति प्रीति युक्तभई वोली कि हे बिनायकजी तुमक्यों जातेहो तुम अचानकही स्नेहछोड़के कैसेनिठुर होगयेहो २२ ब्रह्माजी बोले तव वे विनायकजी तिन्हेंदेखके काशिराज समेत रथसेउतरे जोभगते भगतेथकगये अरु गिरते पडते चलेआतेथे २३ वो तिनसवोंको वोले कि हे जनों हममुहूर्त समयकी शीघ्रता करके नगरसे वाहर आगये हैं २४ सबमें तुमसबोंसे प्रार्थनाकरताहू कि हममें कृपा न त्यागनी

विनायकजीको निज आश्रमपै लेआई १२ तो कश्यपजी बाहर आये अरु राजासहित पुत्र देखा तो ये दोनों अञ्जलिबाधे भक्तिसे तिन्हें प्रणामकरतेभये १३ तो मुनिजी भी तिनदोनोंसे मिलतेभये अरुतिनका मस्तकसूंघके अरु विनायकजीको गोदमे बैठाकर अरु प्रेम से रुकेकंठभये बोले कि १४ हे काशिराज ये तुमको उचित न था कि बालकको लेजाके बिलम्बकरना हमशीघ्र लेआवैंगे ऐसा कहके क्यो लेगयेथे सो कहो १५ हेराजन् बियोगसे तपेभये मेरे अंगों में अब इसके देखनेसे भलीभांति शीतलता भई है १६ ब्रह्मावोले तब तो काशिराज मुनिजीके अमृत वचनको पीके अरु सुन्दर आसन पै बैठ के तिनकी आज्ञालेके १७ बोला कि हेमुनिजी इसीको मायासेमेरा सन्ताप तभयाहै मेराघर इनदेवोंके देवजीने अपनाहीहै ऐसा समझा १८ हेमुनिजी प्राप्तकामतावाले ये निजकामवशहैं अर्थात् पराधीन नहीं हैं सो ये पुत्रकाविवाह करवाकेआये हैं १९ ब्रह्माजी बोले तब तो तिनके दैत्यबधआदि सब कर्म इनको सुनाये तब तो दोनोमुनि अदितीजी हर्षकोप्राप्तभये २० सो कि तिसनिजपुत्रके पराक्रम अरु बहुतसे गुणोंको जानकर फिर तो वे इन्हें षटरस अन्नभोजन करवाते भये २१ अरु आशीर्वाद देके मुनिजीने काशिराजको बिदाकिया सो भी तिन्हें प्रणामकरताभया अरु प्रदक्षिणाकरकेचला २२ सो कि तिनसे आज्ञापाकर दोनोनेत्रों से वियोगसे दुःखीभया आंशु छोड़ताभया अरु तिनके गुणोंकोस्मरणकरता अरु स्नेहसे भरामन जिसका ऐसा काशिराज बाजेगाजे से शीघ्रनिज नगरको आया २३।२४ तब तो सारेनगरके बालक बिनायकजीको देखनेकी इच्छा करकेआये अरुतहांतिनकोनदेखे तो दुःखितमनभये २५ तिसकाशिराजकोही देखकेनिज २ घरगये दूसरेदिन सब पुरवासी काशिराज सेपूछनेलगे २६ हेराजन् देवजीने आवैंगे ऐसे कहाथा फिर वे क्यों नहीं आये अरु तुमभी निठुरपनसे तिन्हें छोड़के कैसे आगयेहो अर्थात् बिनायकजीको क्योंनहींलाये सो कहो २७ मुझसे अत्यंत प्रार्थना किये मुनिप्रिये बिनायकजीने कहाहै कि तुम सबहीमेरेमूर्त्तिस्थापन

करके सेवाकरो २८ अरु सबके अंतर्यामिजी से तुम्हारा वियोग कभी नहीं है तब तो तिन्होंने धातुमयी सुन्दरमूर्त्तियें बनाई २९ जो चारभुजोंवाली तीननेत्र जिसके अरु सब आभूषणों से सजीभई शूपकेसे कानोंवाली गजमुखवाली अरु सब अंगोंसेसुन्दर ३०तो वे तिसको (ढुंढिराज) इसनामसे स्थापनकरतेभये ऋत्विज अरु वेद शास्त्रकुशल ब्राह्मणोंकरके ३१सुन्दरमन्दिर बनाकरवे दिन२ पूजते भये सो जिस २ कामसे जो२ विनायकजीको पूजतारहा ३२ तिस२ ही कामको भक्तिसेपूजे विनायकजी देतेभये ऐसे अनेक मूर्तिधारी गणेशजी प्रकाशमानभये ३३ अरु सब गणोंसहित शिवजीकेनिज नगर काशीजीको प्राप्तभये अरु दिवोदास अविमुक्त अरु काशि राजइनके सुखसे विराजमानभये ३४ विनायकजी ने मुनिकश्यप जी अरु तिसमातासे कहा कि पहिले तुम्हारेतपसे आराधनाकिये हम तुम्हारेपुत्रभये ३५ अरु भूमिभारभी सम्यक्प्रकार उतारा जो येमहाबलीदैत्यमारे जो त्रिलोकीकेपीडकदुष्ट देवांतकनरांतकथे३६ अरु जो देवअरुसाधुथे तिनकीस्थितिरक्षापालनाकरी अबहमअपने सनातनलोकको जावेंगे ३७ ब्रह्माबोले तिनका वचनसुनदोनोंखेद भये आशुरुकेकंठभये बोले कि हेदेव तुम्हारादर्शनहमको कबहोगा ३८ फिर वे मातासे बोले हेमातुमेरादर्शन तुमकोभवानीजोहेमंदिर मेंहोगा ये मेरा प्रियवचनकहा सत्यहैगा ३९ ऐसा देवजीकावचन सुनके वे फिर कहनेलगे सोहोदेवजी अन्तर्द्धानभये फिर वे खेदयुक्त मनभये ४० तिनकी मूर्त्ति अरु अतिसुन्दर मन्दिर बनवातेभयेअरु भक्तिमेंपरायणभये तिनका विनायकजी ये नामरखतेभये४१ तिस मूर्त्तिमेंध्यानकरतेही विनायकजीसदादर्शनदेते हैं सो कि वेविनायक जी सर्वव्यापी नानारूपी निजस्वरूप को दिखाते हैं ४२ मुनिकृत्स मदजी बोले हे कीर्त्तिरानी ऐसे हमने तुमको देवविनायकजी का शुभचरित्र वर्णनकिया है जो अवणहीसे सब सिद्धिदायक ४३ जो धन,पशु,आयु,दारा अरोग करता अरु सब उपद्रवोंकानाश करै अरु सबे कामप्रदाता अरु सब पापोंका नाशक ४४ अरु अब हम तुमसे

ये कहते हैं जैसे सिन्धुदैत्यकेबधके लिये विनायकजी शिवजीके घर अवतारभये हैं (मयूरेश्वर) इसनामवाले सो सब वृत्तान्त श्रवण करो जो कि बालपने से विनायकजी ने जो २ कर्म्मकिये हैं ४५। ४६॥ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमे विनायकचरित्र कथनइस नामसे बहत्तरवां अध्याय समाप्तहुआहै ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

सिधुदैत्यकी उत्पत्तिका वर्णन॥

व्यासजीने पूछा हे ब्रह्मन् शिवजीके घर (मयूरेश्वरजी) कैसे अवतारभये अरु क्याप्रयोजन अरु हे पिताजी तिनका क्याचरित्र है १ अरु तिनविनायकजीका (मयूरेश्वरयेनाम कैसेभया) येसब मुझसे कहिये मै श्रवण करताभया तृप्तनहींहोताहूं २ श्रीब्रह्माजी ने कहा कि हेव्यासजी पहिले त्रेतायुगमें (सिधुनाम) महादैत्य भया सो त्रिनबलवाले शिवजीकेघर अवतारभये विनायकजीकरके हतागया ३ यहा पै ये प्राचीनइतिहास कहते हैं कि शौनकजी का चक्रपाणिराजा से संवादभया है ४ मैथिलदेश मे गंडकीके तटपर राजा (चक्रपाणि) ऐसे विख्यातभया जो साक्षात् दूसरा विष्णु जीही ५ जिसके गुणशेषजी भी कभी न वर्णन करसके सो वो तेज से तो सूर्य्यजीको कमकरताभया सुन्दरतासेकामदेवको अरु मतिसे वृहस्पतिजीको अरु पराक्रमसे स्कन्दजीको जीतताभया६।७जिसने ये सारीपृथ्वी क्षणमेंवशकरी अरु सारेराजा जिसकी सेवामेलगे ८ जिसके घोड़े हाथियोंकी अरु जीतनेवाले पैदलोंकी तैसे रथोंकी भूमितलमें गिनती न होतीथी ९ जिसके घरसाक्षात् लक्ष्मीजी दृष्टि गोचरहोरही जो रत्नसुवर्ण मोतियों से निरन्तर दिशों को प्रकाशित कररही १० जिसका राजलोकों का कल्याणकारी अरु अलकापुरी के समान नगर अरु जिसके महाबुद्धिवाले दोमन्त्री (साव) अरु (सुबोधन) ये ११ जो निजजीवनको तृणजानके स्वामीकेकार्य्यके लिये सेवाकरते जिसकी स्त्री रमणीय(उग्रानाम)सेयी जो सुन्दर

हसनेवाली १२ जिसके मुखचन्द्रमासे दिनमें कमल खिलजातेथे जो अनेक आभूषणों की कांतिसे सब अंधकारको नाशवान करके सदाप्रकाशवतीथी १३ जिस केपतिव्रतापनकेगुणोंको देखनेसारीशुभ स्त्रियें आतीथीं ऐसाही वो बुद्धिवान् माननीयराजा जो सदाविष्णु जी मे परायण १४ अरु पुराणोंके श्रवण मे आसक्त अरु धर्म्मशास्त्रमें परायण पर वो संतानसे रहितथा इससे रातदिन दुःखपाताथा १५ सो तिसके जो २ संतानहोतीथी सो२ तिसीक्षणमें नाशहोजातीथी तिसने अनेक व्रतदान अरु बहुतसे यज्ञकिये १६ फिर किसीसमय निज स्त्रीसहितराज्यसंपदामें वैराग्यको प्राप्तभया तो मंत्रीपुरवालों को बुलाकर १७ सबकोबोला कि मै अब दंडकोश राज्यइनसबको छोड़ताहूं पुत्रहीननर्कवासी मेराराज्यसे क्याहेतुहै १८ जो २ कर्म मैंने पुत्रके लियेकरे हैं जो वे ईश्वरार्पण बुद्धिकरके कियेजाते तो हमारी दोनोंकी मोक्ष अरु पूर्वजन्मके पापोंका नाशभीहोजाता १९ हे लोगो हमारी अवस्था वृथाबीती पर अब हम वनको जावेंगे२० सब राज्यमंत्रियोंको सौंपके तुमतिनके कहनेमें रहना हे लोगोहम निजहितके लिये तपकरनेजाते हैं २१ कभी कार्य्यसिद्धिहोगी तो फिर निजपुरीकोआवेंगे अब हेजनो तुममुझको निश्चय आज्ञादेवो २२ ऐसा राजाकावचन सुन सारेदुःखितमनभये आंसुओंकी धार छोडते उत्तमराजासेकहनेलगे २३ पुरवाले बोले कि हमारे माबाप आपहोके कैसेनिठुरभयेहो हेप्रभोविनअपराध हमकोआपकैसेछोडते हो२४विनआपके हमाराजन्मवृथाही है जैसे माविनबालककाजीना वृथाहै इससे हमभी तहांहीं जावेंगे हेप्रभो जहां आपजातेहो २५ ब्रह्माजीबोले ऐसे लोगोंको राजासे कहते२मुनिशार्दूल (शौनकजी) आगये जो मानो दूसरे अग्निहीहों २६ जो वेदवेदांग शास्त्रों के त्रिलोकीमें मुख्यवक्ता अरु जो इन्द्रादिदेवोंसे वंदनीय अरु भूतभविष्य भाविवेत्ता २७ ऐसे तिनको अगाडी आनेदेखके आसनसेउठके प्रणामकरताभया अरु निजआसन पै तिन्हेंबैठाके परम मोदसेपूजे २८ अरु भोजनकरा पैरदाबते राजाचक्रपाणिने कहा कि मेराबंधा

पुण्यफलहै २६ जो आज सब पापहारकशुभ आपकादर्शनमुझको भया जो मनुष्योंको सर्वकामप्रदाता अरु पापियोंको दुर्लभहै ३० फिर मुनिजी उत्तमराजा चक्रपाणिसे बोले कि जो तिसकी नम्रता दातिसें प्रसन्नभये मुनिजी बोले हेराजेन्द्र तू चिन्तामतकर अरुराज्य को न छोड मेरेवचनसे तेरे श्रेष्ठपुत्रहोगा इसमें संशयनहींहै ३१। ३२ मेरीवाणी हासीमेंभीकही मिथ्यानहींहोती है ब्रह्माजी बोले ऐसा तिनका वचनसुनके राजाहर्षा ३३ अरु तिनको रत्नसुवर्ण के अलंकारदिये अरु बडेयोग्य वस्त्रदिये पर मुनिजीने न लिये ३४ राजासेबोले कि हमवक्कल धारणकरतेहैं सबभोगोंमें इच्छारहितहै अरु सम्पूर्ण प्राणियोंके कल्याणमे परायणहैं ३५ अरु सृष्टिसंहार करनेमें समर्थ अरु करुणाके समुद्रहै अरु साधुवोंके दर्शनमेंरत अरु समानलोह पत्थर सुवर्णजानते हैं ३६ अरु विद्वानो के घर लक्ष्मी कभीभी नहींरहती तिससेहम इसवायनवस्त्रकोनहीं ग्रहणकरेंगे ३७ तीर्थयात्राके प्रसंगसे तुमपैहम आगये हैं तुम्हारेदेखेबिन हमको बहुतदिन बीतगयेथे ३८ ब्रह्माबोले तब फिर वे राजारानी तिनशौनक मुनिजीको नमस्कारकरके संतानोत्पत्ति कारकउपाय पूछतेभये ३६ सब व्रत,तप,यज्ञ दानोंको वृथामानकर तब तो मुनिजीनेइन को सूर्य्यजीका व्रतबताया जो मनुष्यो को सर्व प्रयोजन दाता ४० अरु अनेक जन्मकेपापोंको शांतकरनेवाला अरु पुत्रपौत्रदाताहैसो भानुसप्तमीसेलेके महीनेतक ये व्रतकरना ४१ सो कि मातृका पूजन पूर्वक नांदीश्राद्धकरके अरु गणेशजीकी पूजाकर अरु ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवाकर ४१ अरु सुवर्णके कलशपर सुवर्णहीका सूर्य्यमण्डल विराजमान करके षोडशउपचारोंसे भक्तिभाव सहित ४२ रक्तचन्दनमिलित अक्षत पुष्पोंसे और भी नानाप्रकारके रक्त रत्नोंकरके अरु अनेक प्रकारके फलोंसे ४३ बारह अर्घोंकरके अरु तितनेहीं नमस्कार परिक्रमाओंसे अरु स्तुति प्रार्थनाओंकरके परम ईश्वरसूर्य्यजीको प्रसन्नकरे ४४ फिर लक्षनमस्कारकरे या किसीसे करावै अरु प्रतिदिन परमभक्तिसे लक्ष २ ब्राह्मणों को भोजनकर-

चातारहै ४५ अरु वेदज्ञकुटुम्बी ब्राह्मणको नित्य२एक गोदानदेता रहै अरु हे राजन् व्रतीस्त्री सहित ब्रह्मचर्य्यसेरहै४७ अरु दयायुक्त भया दीनअरु कृपणोंको अन्नदेतारहै अरु महीनाबीते सब वस्तुब्राह्मणकोदेदेवै ४८ ऐसा व्रतकरनेसे हे राजन् हमारी प्रसन्नता से तुम्हारेपुत्रहोगा जो महान्विख्यात अरु सूर्य्यभक्तियुक्तपवित्र ४६ ब्रह्मा बोले ऐसे व्रतबताकर शौनकजी तब अन्तर्द्धानभये अरुराजा ने तिसव्रतको तैसेही किया जैसे उन्होने बतायाथा ५० सो रानी सहित वो महीनेतक उपवासयुक्तरहा गोदानदेतारहा अरु नमस्कार करताकरातारहा५१ अरु नित्यसूर्य्य मन्त्रजप अरु तिनका नामस्मरण करतारहा तो कभी तिसकी रानीरातको सपनेमें सूर्य्य जीको देखतीभई ५२ जो निजभर्त्ता द्विजरूप सुन्दरसूर्य्यजीकोदेखे तो कामअग्निसे पीडितभई वो तिन्हेंइच्छा करतीभई ५३ अरु परितप्त शरीरवाली वो बोली कि मुझ को कामदेव अत्यन्त बाधा करताहै५४ सो हेभर्त्ताजीमुझको ऋतुदानदेवोनहीं मेरीमृत्युहोजावेगी अरु विनययुक्तमन राजापत्नीसहित सूर्य्यभक्तियुक्त लक्ष ब्राह्मणोंको भोजनकराताभया ५५ तो सूर्य्यजीतिसे नि सन्तानजानके अरु तिसकी पत्नीको कामवतीजानकर सपनेमेहीं भर्त्तारूपसूर्य्यजी तिसको रतिदानदेतेभये ५६ फिर उसने जागकर निजपतिको भी जगाकर बोली कि हेब्रह्मचारिन् नियमस्थितभये तुमनेमुझको कैसे ऋतुदानदियाहै ५७ तब तो राजाने तिससेकहा कि हेशुभेव्रत मन वाली मैंने तो ऋतुनहींदिया किन्तु उपवासपरायण हम पै प्रसन्न होके सूर्य्यजीने रमणकिया है ५८ तब तो पतिव्रता बोली कि मैं और किसीको नहींजानती तुम्हारेहीरूपसे व्रत में स्थितभई सविताजीको ध्यातीहूं ५६ अरु मैं अब ऋतुजन्य भीतरके अग्निसेजलीजातीहूं फिर तिसप्रियबोलनेवालीको चक्रपाणिने कहा कि ६० हे कान्ते नमस्कार भोजन ब्राह्मणोंका गोदान उपवास जपइनसेप्रसन्न भये सविताजीने ६१ हमको श्रेष्ठसिद्धिदईहै सो तेरेपुत्रहोगाब्रह्मा बोले तब तो प्रतिदिन गर्भवंधे तिसको दुःखभी बढ़तारहा ६२ वो

रहा २८ सदा दहिनेगोडेपर बावाँपैररखके अंजलि हृदयमेंलगाके सूर्यजीको ध्यातारहा २९ अरु जो गौन वायु घाम जलवर्षा इनका दृढ़ सहनेवाला अरु पवनहीभोक्ता वँमईजालोंसे ढकाशरीरजिसका ऐसा वो स्थिररहा ३० अरु अस्थिहीं शेषजिसके ऐसा भी वो तिस महामन्त्रको जपताहीरहा ऐसेतिसकोतपतेर दोसहस्रवर्ष बीतजाते भये ३१ तब तो तिससिन्धुके शरीरसे उठीकान्ति सूर्यजीकोतपाने लगी ऐसातीव्रतपदेख दिवाकरजी प्रत्यक्षभये ३२ अरु परमप्रसन्न भये बोलेकि हमतेरे अनुष्ठानसे प्रसन्नहैं सो तू मनवाञ्छित वरमाग हम जीवनपर्यन्त अर्थात् नहींमरना इत्यादि सबवर देंगे ३३ तब आप भानुजीसे कहे वचनको सुनके देहभाव को प्राप्तभया सिन्धु निजअगाडी ही प्रभु भास्करजीको देखताभया ३४ तो तिनकेचरणारविन्दोमें गिर नमस्कार करके अञ्जलिपुटबाधे बोला दिननाथ आपको नमस्कारहै अरु सबकेसाक्षि आपको नमस्कारहै ३५ देवों के ईश आपको नमस्कार है अरु ब्रह्मा विष्णु शिवात्मक आपको नमस्कारहै अरु विश्ववन्दनीय आपको नमस्कारहै अरुसम्पूर्ण के कारण आपको नमस्कारहै ३६ अरु वर्षाकेनिमित्त कारण आपको नमस्कारहै अरु खेतीउत्पत्तिकारक आपकानमस्कारहै अरु परब्रह्म स्वरूप आपको नमस्कारहै अरु सृष्टिस्थित प्रलय कारण आपको नमस्कारहै ३७ गुणोंसेंअतीत गुरु आपको नमस्कार है अरु गुणों कोचलानेवाले आपको नमस्कारहै अरु सर्वज्ञ अरु ज्ञानदाता आपको नमस्कार है सबके पति आपको नमस्कारहै ३८ हे देवेशजी मेरा जन्म धन्यहै अरु कुल पिता अरु माता तप ये भी धन्यहैं जो आपका दर्शनभया ३९ हे दिनेशजी जो आपमुझे वरदेनेचाहतेहो तो मुझको सबसे अमृत्युदेवो अर्थात् मैं कभीकिसीसे कहीं भी नहीं मरूं अरु आपके प्रसाद से संग्राममें सब देवतोंको भी जीतौं ४० सो कि जितने ये देवताहैं तिनसे मेरीमृत्यु न होवे ऐसेर तिसकेवर सुनके प्रसन्नभये सूर्यजी तिसअनुष्ठानसे अत्यन्त कृशभये निजभक्त कोबोले ४१ कि तुझकोदेवयोनि अरु मनुष्योंसे भयनहींहोगा अरु

न तिर्यक्योनियोंसे न सर्पोंसे अरु न दिन वा रात्रिको कहीं भी भय होगा ४२ अरु न ऊषाकालमें न सन्ध्या में मेरे वचनसे भय होगा अरु न इन्होंसे इनसमय हे नृपसुत तेरामरणहोगा यहअमृत पात्र तू मुझसेले ४३ सो जिननें यह तेरेकंठमें रहेगा तितनें तेरीमृत्यु न होगी अरु जो इसेनिकासैगा तिससेंही तेरीमृत्यु होवेगी ४४ अरु जो देव कोईकेश से स्वर्गको कँपाता अवतार लेवे जिसके अँगूठे के अगाडी करोडो ब्रह्माण्डहैं ४५ सोहीप्रभु तुझे मारेगा और सर्वसे तुझको भयनहींहै मेरेवरके प्रसाद से सबजगत्को तू तृण समान जानेगा ४६ त्रिलोकीका राज्य तुझकोदिया इसमें विचार न करना ब्रह्माजीबोले ऐसे२ अनेक वरदेकर सूर्य्यजीअन्तर्द्धानभये ४७ अरु वोभी आनन्दसहित निजघरकोआयातो तिसकीमाता पितातिसका मस्तकसूंघके हर्षको प्राप्तभये ४८ अरु पुत्रसे बोले कि तेरेविरह से अन्नरहित हमचिन्ता करके दुबलेहोरहे हैं हेपुत्र तू हमारी यहदशा देख ४९ तिनकेपैरपकडके हर्षभरापुत्रबोला कि मुझको प्रसन्नभये सूर्यजीने त्रिलोकीका स्वामिपन दियाहै ५० अब मैं तिनकेवरों का साधनकरोंगा तुमचिन्तामतकरो५१॥ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्ड में सिन्धुदैत्य वर होना इसनाम से चौहत्तरवां अध्याय हुआ ७४॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

सिन्धुदैत्यसे देवतोंकी पराजयहोना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि राजा चक्रपाणि इसेबुद्धिमान् अरु सूर्यजीके वरसे गर्वितजानके देश कोष सेना सहित सबराज देताभया १ तो सिन्धुकापिता तो आत्माके साधनमें इच्छावान् अर्थात् विरक्तभया वनको गया अरु वो पितामें बैठाया राज्यकरने को चाहताभया २ सो अधिकारी अरु जो पंक्ति मुखियार मन्त्रीथे तिन्हेंबुलाकर वस्त्रा-दिकोंसे तिनका सन्मानकरके अधिकारमें रखताभया ३ अरु ढोंढ कीकेशब्द से निजआज्ञाभंग के दोषको सुनाताभया अर्थात् आज्ञा भंगकरे तो यहदण्डहै ऐसाकहाया ४ अरु दुरवडी दिग्गजोंतने सौ

वीरोंको आज्ञादेताभया तेजसेसूर्यको कमकरता जो अति भयानक शरीरवाला ५ तो तिसकेवीर अगाडीचले जो विकराल लाललाल मुखोंवाले जो नगे नानाप्रकार के वस्त्रधरे जिनके चलनेकी रजसे सूर्य ढकगया ६ फिर तो हाथी चार दांतोंवाले नानावर्णों से सजे भारी२ सकलोंवाले पृथ्वीको कम्पातेचले ७ जो पिलीवानो सहित चचल पर्वतसरीखे विचित्र ध्वजायुक्त जो दिग्गजोंको हतनेवाले ८ अरु जो भारीघटाशब्दसे दिशोंको गोजाते फिर घोड़ेसवारचले जो नाना अलकारो से युक्त ९ अनगिनत तरकस धनुष अरु शस्त्रोंके समूहोंसे युक्त तो सेनामें घोडेपरचढा सिन्धुदैत्य शोभित भया १० जो मोतियों को मालोंसे सजे कण्ठवाला धनुष बाण से सजाकर जिसका अरु ढाल तलवार लिये वृक्ष पर्वतों को चूर्ण करता भया चला ११ जिस२नगरमेंचढ़के यह महावलीदैत्य जाताथा तिसीके स्वामीकोपकडके शूरवीर सिन्धुकेपास लेआतेथे१२अरु तहांअपना अलट अरु निज चिह्नमुद्रा स्थापनकरदेतेथे फिर और दासपनेको प्राप्तभये शरणआगये१३ तिनकोवलसे निजकर देनेवाले वनाकर तिन्हीं के स्थानो में रखताथा ऐसे सब वशकिये तो दैत्योंकी पंक्ति तिसकेपीछे चली १४ सो (शुम्भ) (निशुम्भ) (वृत्र) (प्रचण्ड) अरु काल अरु (देवासुर) (शम्बर) अरु (कमलासुर) ये १५ तो वहां कोलासुरबोला कि जैसे त्रिपुरदैत्यराज ने तीनोंलोक जीतके हमको अधिकार दियेथे १६ तैसेहीवलसे त्रिलोकीको जीतकर हमें अधिकारदेवो तिसकेशिवजीसे हतेपीछे आजतुम बलीराक्षस देखेहो १७ तुम्हारे पराक्रमकी तुलताको यमराज भी नहींपाता सो हेमहावल वाले हमतुम्हारीही सेवाअरु आज्ञाकियाचाहतेहैं १८ ऐसातिनका वचन सुनके प्रसन्नभया सिन्धुदैत्य राज तिन्हें अश्व गज अरु अनेक आभूषण देताभया १९ सिन्धुबोला कि प्रबलतो मैं तभीहोगा जब अमरावतीको जीतोगा अरु शिव विष्णु इनके लोक अरु सत्यलोक अरु सातोंपाताल २० ब्रह्माबोले कि अच्छा२ ऐसेसबकेकहतेदैत्यपति हर्षे गर्जे ब्रह्माण्ड को कँपातेभये अरु बोले कि राजयुद्ध से

हमारीखाज नहींमिटी अब देवयुद्धसे मिटैगी ऐसेशीघ्रही वेस्वर्ग को चलेगये २१ अरु तिन्होंने इन्द्रकीपुरी नारोकी जैसे धनदाता को द्विजवैर कईपुरी मे बडगये रत्नसमूह लूटतेभये २२ तो तहा गर्जते देवतोंमें भारी रोलामचा फिर सभामेंवैठे इन्द्रने दूतके मुखसे २३ दैत्यका चढआना अरु पुरीरोकी येसुना तोशीघ्रऐरावत हस्तीपेचढा वज्रहाथलिये देवतोंसहित २४ सुरपति इन्द्र तिस दैत्य से लड़ने को आताभया तहां कई देव बोले कि यह युद्ध में जीतने योग्य नहीं है २५ विना लक्ष्मीपतिजी के कोई इसके समान नहीं दीखताहै जितने वे ऐसे कहतेरहे तितनैंही वो महाबली दैत्य २६ सुरोंसहित इन्द्रको बाणसमूहोंसे वेधताभया तभी कईदेवता हारकर भगगये २७ तब तो क्रोधयुक्त महेन्द्र दौडताभया दैत्योंकोप्रमथा वज्रहाथलिये सुर शत्रुहन्ता २८ निजवज्रसे तिस सिन्धुदैत्यके मस्तकमें प्रहार करताभया तो वो भारीमूर्च्छाकोप्राप्तहोके दोघडीही में फिर उठखड़ाभया २९ अरु इन्द्रकोबोला कि हे हरे निजस्थान कोचलाजा तू नाशको प्राप्त मतहोवे मेरीमुट्ठी के प्रहारसे काल भी मरजावेगा ३० तहांतेरी क्या गिनती तो इन्द्रने यहवचननहींसुना फिरक्रोधभरा महादैत्य मुष्टिके प्रहारसे ३१ ऐरावतके करकोवेधता भया तिससे बहुत रुधिरगिरा फिर दैत्यने उछलकर तिसके चारों दन्त पकडलिये ३२ अरु तिस हस्तीपति को गिरादिया तो इन्द्र आश्चर्यको प्राप्तभया अरु इन्द्रको पैरपकड वो जितने फटकारता तितनेही सूक्ष्मरूप करके तिसकेहाथ से इन्द्र निकलगया अरु वो दूरचलागया अरु मनमें तिसे सराहने लगा ३३। ३४ ऐसा बल किसीमें नहींदेखा जो मैं ठहरता तो मरहीजाता तबतो देवताओंके साथइन्द्र विष्णुजीकी शरण ३५ औरही शरीरसेगये तिसऐरावत हस्तीकोतजकर अरु सिन्धुदैत्य इन्द्रसहित देवतोंकेभगजानेपर ३६ दैत्योंसे युक्त तिस इन्द्रासन पर बैठगया अरु देवतोंके सब स्थान राक्षसोंकोदेदिये ३७ तबतो शुम्भआदिक राक्षसनिडरहोकरके तिन स्थानों में रहनेलगे इस असुरपति सिन्धु को नमस्कार करते अरु

अधिक बलवाले इसकीप्रशंसाकरतेभयेअरु अनेकबाजे गाजोसेस्वर्ग को गोजातेभये ३८।३९ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंडमें सिन्धु से देवतोंका हारजाना इसनामसे पचहत्तरवां अध्यायहुआ ७५ ॥

छियत्तरवां अध्याय॥

सिन्धुदैत्य से विष्णु आदि देवतोंका युद्ध होना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि वैकुंठमें सुखसे विराजमान हरि भगवान्‌के पास देवोंसहित हरि जो इन्द्रहैं सो गया तो तिन्हें नमस्कार करके निजप्रयोजन कहताभया १ इन्द्रबोला हे गोविन्द क्या आप इस सिन्धुदैत्य की करी आपत्तिको नहींजानतेहैं जो कि हमारी अमरावती में दुष्टोंने आक्रमण किया अर्थात् तिसे दबालई है २ सो मैंने शक्तिके अनुसार देवता साथलेकर तिससेयुद्धभीकिया पर वोमुझसे जीतानगया इससे आपपै शरण आयाहूं ३ आपबिन हमारी गति नहींहै आपहीसदा हमारीगतिहो सो हे जगदीश्वर इसे आपदलो अर्थात्मारो अरुहमें निजर्स्थानदेवो४ ब्रह्माबोले इन्द्रकावचनसुन चिन्ता आश्चर्य युक्तभये भगवान् बोले कि डरोमत मैं असुरकोक्षण में जीतोंगा ५ ऐसे कहकर हृषीकेश जी निजवाहन गरुडपै चढ़े तो तिनके उडने से त्रिभुवन कम्पितभया ६ अरु पक्षियां समेत वृक्ष भूमिमेंपडे जो मुकुट कुण्डल सहित वनमाला विभूषित७ कौस्तुभमणिकी कान्तिसेसजा हृदयजिनका अरु कस्तूरीकेतिलकसेउज्ज्वल शंख चक्र गदा पद्म हाथलिये ऐसे भगवान् अमरावतीकोचले ८ तो गरुडासन भगवान् सहित देवताको आगयेजानके नानाशस्त्रधारी असुर लडनेको आये ९ अरु धनु चक्रधारी तरकसलिये घाड़ेपेचढ़ा लडनेको महाबलीदैत्य सिन्धु भी आया १० फिर कुबेर इन्द्र वरुण वायु अग्नि रुद्र सोम सूर्य भौम अश्विनीसुत अरु कामदेव ११ फिर तो सिन्धुदैत्य के अगाड़ी स्थितभये इनका द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा तो प्रचंडासुर तो वरुणजीसे अरु कुबेरजीसे कमलासुर१२ अरु वृत्रासुर से इंद्र निशुम्भ पवन से अरु शुम्भ ने महाविष्णुजी से युद्ध

किया १३ अग्निने चंडसे सोमने मुंडसे अतियुद्धकिया अरु कदम्ब
सेभौमजीने अरु कामदेवसे शम्बरने १४ अश्विनीसुतोंने कालासुर
से तो वे सारेसेनावाले अस्त्र शस्त्रोंसे निरन्तरही मर्मस्थानोंमें मारते
भये १५ अरु कई युद्धमदवाले मल्लठोलासेलडे अरु कई आपसमें
शस्त्रोंके घातोंसे फिर वे भी मल्लयुद्ध करतेभये १६ अरु मरेमरनेवाले
अरु कई वेअगही उछलतेभये सोव कहींजीत अरु कहींहारकोप्राप्त
होतेभये १७ फिर तो वृत्रासुर ने मुष्टिकेघातसे इन्द्रपै प्रहार किया
अरु वे माथेसेमाथेको वलसेमारते अर्थात् टकरलडतेभये१८ ऐसेही
हाथसेहाथ पैरसेपैर प्रहार करतेभये अरु हृदयसेहृदा तब तो इन्द्र
वज्रसे प्रहार करताभया १६ फिर वृत्रनेइन्द्रपै प्रहारकिया तो वो
मूर्च्छितहो भूमिमेंपडा अरु जितनेमुखसे बहुतरुधिर उगलताभगा-
डीभगा २० तो फिर अत्यन्त मूर्च्छितभया भूमिमें गिरा फिर सन्ना
पायके वज्रमुष्टि से प्रहारकरता २१ तितनेही में और कई राक्षस
लडनेवाले सबदिशोंमें चढआये तो तिनके पराक्रमकोदेख इन्द्रतभी
अन्तर्द्धानभया २२ ऐसेही जो२देवता द्वन्द्वयुद्ध करतेथे वे सब छुटे
गर्वभये भगगये २३ ऐसेदेवों के हटजानेपर हरिनेगरुड़को छोडा
चक्रकान्ति अरु निजकान्ति से दिशा विदिशाओं को प्रकाशित कर
रहा २४ तो वेविष्णुजी निजचक्रकी धारोंसे अनेकदैत्योंकी पंक्तियों
को हततेभये तो कइदैत्य तो भग्नमुख भये अरु कई कटेगिर २५
अरु कई सोटूकहोगिरे कई टूटेगोडे नितम्बहाथ जिनके ऐसे२ अरु
कई शरण आगये तो भगवान्ने तिन्हें नहींमारे२६ ऐसेसारे महा-
बलीदैत्य भगवानजीसेहते मुक्तिको प्राप्तभये तो मेदा मास बहाने
वालीनदियें शीघ्रहाचलीं २७ फिर शंखकेशब्दसे भगवान् सबको
मोजातेभये ऐसे गोविन्दजीकेजीते मारे शुम्भादिराक्षस २८ तिस
द्वन्द्वयुद्धको छोड तिन्होंसे लडनेकोआये तो भगवान् ने विराट्रूप
करके तिन चार राक्षसोंको पकड़कर २६ जैसे मनुष्य गोफिय से
पत्थरकोफेंकताहै तैसेही चपट मुण्ड शुम्भ निशुम्भइनको० घुमा-
कर अरुदोनदियें बीचमंदेके दूरफेंके तो वे मूर्च्छोखा ।

सेनामेंआये ३१ अरु हृदयमें प्रचंडको अरु वृत्रासुरको पीठमेंमुष्टि प्रहारसे अव्याकुलभये भगवान् हततेभये ३२ अरु काल कमलको भी अरु भोमासुर को शिरमे अरु कदम्बको चक्रकेघातसे अरु कोलासुरको हृदयमें भगवान्ने गदासेताडा ३३ फिरतो शीघ्रहीसिंधु महारोला मचाताआया अरु दिग्गजोंको गाँजाताबोला कि हे हरे तुम्हारावलदेखा ३४ अवहमारा भी वलदेखो जानोमतो मेरीदृष्टि में आयाशत्रु जीवताकभी भी नहींजाताहै ३५ हे भूत भाविभविष्य ज्ञाता तेने पहिले क्यों नहींविचारा कि जिसके शब्दसेही त्रिभुवन अत्यन्त कम्पायमान होता है ३६ फिर तू आगे कैसे चला आया जैसेपटविजना सूर्पजोपेजावे तवतो देवतावली सिंधुदैत्यकोबोले३७ कि शूरवीर वकतनहीं पुरुषार्थही दिखाते हैं हमको भगवान् की आज्ञानहींहै जो होती तो तेरेसोटूकहोजाते ३८ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में विष्णुजीके युद्धकावर्णन इसनामसे छियत्तरवां अध्याय समाप्त हुआ ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

सिंधुके युद्धका विस्तार से वर्णन ॥

श्री ब्रह्माजी बोले कि ऐसा तिनका वचन सुनके सिंधुक्रोध से अग्निकनछोड़ता जैसे सिंहहाथियूथपे झपटै तैसे देवतापरयहझपटा १ अरु क्रोधमें मुष्टिप्रहारकरके तिसने इन्द्रकोहता तो वो वायु सेहते वृक्षकीनाईं भूमिपरगिरा २ अरु मस्तक में कुवेरजीके अरु ठोढीमें वरुणके अरु यमकेपीठमें इसने चक्रकेघातसे प्रहार किया ३ अरु तालुवेमें अग्निको अरु लातसे कामदेवको फटकारा अरु वायुकोपैरके घातसे अरु शनैश्चरजीको दवोचदिये ४ अरु चन्द्रमा मंगलको भ्रमाकर वलसे भूमिमेंमारे अरु सनक सनन्दनके पीठमें मारा ५ अरु अश्विनीसुत नारदकहींहीभगगये अरु फिर सारे देव इसकावलदेखके भगगये ६ कईपड़े मूर्छितभये फिर दैत्यनेचक्रसे भगवान्पे प्रहारकिया मुष्टिस्थानमें तो चक्रभूमिमें गिरा ७ फिर

भगवान्ने गदासे दैत्यके मस्तक में प्रहारकिया तो वो गदाको सौ प्रकारसे चूर्णकरके निजगदाको चलाताभया ८ फिरतो तिसके पराक्रमकोजान भगवान् तिससेबोले हेदैत्य तेरे मनमे जो है सोही तूवरमांगले ६ ऐसा बल मैंने किसीअसुरमें नहींदेखा तब तो परम आनन्दयुक्तभया दैत्यराजबोला १० हेदेवेशजो तुम प्रसन्नहो अरु जो मुझको वरदेनाहै तो हेहरे तुम परिवार समेत मेरे गडकी के तीरवर्ती नगरमेरहो ११ वहां सदावसो मैं और कुछ नहीं मागता हूं तब महाविष्णुजीबोले अच्छातेरे नगरमेंरहेंगे १२ मैने निश्चय वरदेदिया इससे तेरेवशमेंहूं तब तो तिसने वैकुंठलोक में कैलास अरु सत्यलोकमें१३ दैत्योंकोरखदिये अरु आपइन्द्रके स्थानमेंरहा फिर वहांभी औरहकोरखकर भगवान्सहित आप १४ बाजेभेरी शब्दोंसे निजगंडकीपुरीकोआया अरु वन्दीजनतिसे सराहतेथे कि ऐसा ऐश्वर्य्यवान् कोई कहींभीनहींभया१५ जो बहुत देवतोंसहित विष्णुजी को जीतके निजघर मे लेआया तो नगरवालो ने तिसके पासही वरुण विष्णु १६ कुवेर अरु देवमुखियों को देखे फिर वे निज२ घरआये फिर दैत्यने विष्णुजीसे कहा कि तू गंडकीनगरमें सुखसे१७ देवतोसहित विहारकर तो तिन्होंने तैसाही किया अरु तिनके चारोंओरदूरतक दैत्यने चोर२ दैत्यरखदिये१८ तबतोदेवता विष्णुजीसे बोले कि हेगरुडध्वज आपने यह क्या किया तुम अपने बलकोत्यागके क्यों आनन्दभरेबैठेहो १६ हमकैसेबंदिगृहमेंपड़े अरु कैसेमृत्युमेंआपडे अबहेजगदीश्वर इसभोगकाकब कैसेअन्तहोवे २० फिरतो भगवान्जीने सबसेकहा कि कालकिसीसे नहीं उलंघाजाता कालसे सब उत्पन्नहोता अरु घटता बढ़ना भी है २१ तिससे तुम कालकोदेखो कालहीइसे ग्रसलेगा ऐसे वो महाबल पराक्रमी सिंधु त्रिलोकी को जीतकर २२ फिर ये सब वृत्तान्त निज मा बापोको सुनाताभया तो वे इसका पुरुषार्थ जानके इसे आशीर्वाददेतेभये २३ फिर वो विरुद्धबुद्धि सिन्धुने पृथ्वीपै ढोंड़ीपिटाई कि देव ब्राह्मण गऊओंकीपूजा जो कोई भी करे २४ सो कुजन मारदिया जावे या

यहांमेरेपास लायाजाय अरु जहां२ प्रतिमाहों सो तहांतहांहीं जल में फेंकदीजावें २५ मेरी प्रतिमावनाके घर२मे पूजीजावे ऐसेसिंधुके वचनको दूत ठोर२ जनातेभये २६ अरु मन्दिर मूर्तियोंकोतोड़२के अथाहजल मे फेंकतेभये अरु सिन्धुकी प्रतिमावनाके तहां२भक्तिसे स्थापन करतेभये २७ अरु पुजाकेलिये राक्षसोंकोही रक्खे फिर वे निजस्वामी सिन्धुकेपासआये अरु बोले कि गणेश शिव विष्णु सूर्य लक्ष्मीआदि मूर्तिय सबशीघ्रफोड़के जलमेफेकदई अरु तहां२तुम्हारीहीप्रतिमा अरु राक्षसपूजा को स्थापन करदिनेहें २८।२६ फिर हे स्वामिन् हम आपकेपास आनेहे ऐसेसबधर्मको नाशहोगया३० अरु न किसीने भी यज्ञ दान श्राद्ध होम मत्रादिककिये अरु देवद्विज गुरुओं का पूजन भी कहीं नहीं भया ३१ तो ऋषियें सुमेरुगिरिपै चलेगये अरुकईनष्टहोगये ऐसेत्रिलोकीमेंप्रबल राक्षसहीहोजातेभये ३२ अरु साधुजन देवता विलीनभये नष्टहोगये अरु जैसे देवोंने सिन्धुमे मोक्षपाई सो श्रवणकरो ३३॥इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखडमें सिन्धुनामराक्षसकाजीतना इसनामसे सतहत्तरवां अध्यायहुआ७७॥

अठहत्तरवा अध्याय॥

श्रीब्रह्माजी बोले तिस प्रभाववाले अर्थात् प्रतापी दैत्य करके रोकेगये सबदेवता तिसीके वधका उपाय चाववाले वे विचारनेलगे १ इन्द्र बोलाकि सबका मत जानकरके कार्य्य का निश्चय करना तिस से तुम जिस जिस का जैसा जैसा मतहै सोसो सब कहो २ ब्रह्मावोले ऐसा इन्द्रका वचनसुनके सबदेवोंने कहाकि ईश्वरसबके कर्त्ता हैं वेही कल्याण करेंगे ३ सो जिसमे वे प्रसन्नहों सोहीउपायकरो। वेही इसका तिरस्कार करकेहमको निजनिज स्थानदिवावेंगे ४ तबतो वक्ताओं में प्रधान बृहस्पति जी बोलेकि एकव्यापक देवता थोडीही पूजासे प्रसन्न होताहै सोही सुरातककाहतादेवशीघ्र तुमसे उपासना कियाजावे। देव बोले कौनसा देव तुम्हारे मत में प्रार्थना योग्यहै सो हेबृहस्पते कहो तिसीको प्रसन्नवा हम सारे

निजनिज स्थान प्राप्ति के लिये करेंगे गुरुजी बोलेकि जो सब को रचते पालते सहारते ऐसेजो त्रिगुणमय रूपहैं ७ जोआप बीजनाम कारण रहित अर्थात् जिनका कोईकर्त्ता नहीं अरु आप सबके कारणभये अरु जो सब वाणी करके कहे न जावें जो नित्य,ब्रह्ममय, ज्योतिस्स्वरूप, अरु शास्त्र गोचर अर्थात् शास्त्रही से ग्रहण किये जावें ८ अरु जो आदि मध्य अन्त रहित जो निर्गुण अरु आरोग्य जो बहुरूप अरु एक रूपवान् अरु जिनका नाम सबजन ९ लेके सबकामों में वाञ्छित सिद्धि को प्राप्त होते हैं। ऐसे वे विनायक जी भक्तिसे पूजेगये शीघ्रही सकट को हरते है १० सो तुमसारे तिन्हीं का आराधन करो वे तुम्हारी सिद्धि करेंगे अरु हे देवतो अब ये माघका महीना लगा है ११ अरु भौमवार सहित चतुर्थी विनविघ्नहारी जीको प्यारी है। सोही वेप्रकट होके तुम्हें स्थान देंगे १२ सिन्धु को मारके इसमें कुछ वितर्क न करना जो जैसी जैसी कामना करता है तोवे वैसी तैसीही सबकी कामना सिद्धि करते हैं १३ देवबोले हेगुरुमुनिजी आपने श्रेष्ठवचन कहा जिससे हम तृप्तभयेहैं इससे तुमभारी नदी में बहे जो हम तिनके भली भांति पारकरनेवाले हो १४ ब्रह्माबोले तबतो वे इन्द्र,वरुण,कुबेर,विष्णु अरु गुरु, भौम,शनि, सूर्य्य, यम, अग्नि, पवनादिक १५ ये सब पञ्चामृत अरु सुगन्धमाला अरु शमीदूर्वा पत्र, अरु अनेकप्रकार के वनफल अरु मृत्तिका १६ जोछिनकी रहित सोलेकर तिसगडकी नदीपैगये। अरु अनेक वृक्षकाटके भारीमडप बनाकर। जो लता केलेके खम्भों सहित सुन्दर छायावान् मनोहारी अरु न्हायनित्य नियम करके वे सुन्दर मूर्त्तियें बनातेभये १७।१८ जोसिहपे चढ़ी दशभुज अरु दशोशस्त्रों से शोभित हाथीके शुण्डवाली नानाप्रकार के आभूषणों से सजी ऐसी विनायकजीकी मूर्त्तियें १९ तिसमंडप में तिन्हें स्थापनकरके विधिपूर्वक षोडश उपचारों करकेतिनकी पूजा करनेभये २० सोकि पञ्चामृत, अरु शुद्धोदक, वस्त्र, सुगन्ध, धूप,दीपक,अरु अनेक नैवेद्यों से अरु श्रेष्ठफल अरु पारवियासे२१

इस प्रकार वे पूजाकर के फिर सूर्य्यजी की प्रसन्नता के लिये
तिनका मन्त्र जपतेभये। फिर सूर्य्य अस्तभये सन्ध्या करके विभु
विनायक जीकी स्तुति करनेलगे २२ सबबोले हेदीनोंकेनाथ, दया
केसिन्धु, हेयोगी हृदय कमल में विराजमान, हे आदि मध्यरहित
स्वरूप आपके अर्थ नमस्कार है २३ हे जगत्के आभासक, अरु
चिदाभास, ज्ञानप्राप्य, आपको नमस्कार है मुनियों के मन प्रविष्ट
आपको नमस्कार है २४ दैत्यहन्ता आपको नमस्कार है हेत्रिभु-
वनेश, गुणोंसे अतीत, गुणोंके चालक आपको नमस्कार है हेत्रिलो-
की के पालक, विभु - विश्वव्यापक आपको नमस्कार है २५ अरु
माया से रहित, अरु भक्तों के कामपूरक आपको नमस्कार है।
सोम, सूर्य्य, अग्निनेत्र वाले आपको नमस्कार है हेविश्वम्भर
आपको नमस्कार है २६ अनन्त शक्ति आपको नमस्कार है अरु
चन्द्रशेखर आपको नमस्कार है अरु चन्द्रमा समान गौर, शुद्धरूप
अरु शुद्धज्ञान के कर्ता आपको नमस्कार है २७ ब्रह्मावोले देवोंके
ऐसेऐसेस्तुतिकरते तेजसमूह आगे आया तबतो सारेदेव हतदृष्टिभये
विस्मित होगये २८ फिर कृपाकरके देवजी सौम्य तेजस्वी होगये
तब तिन्होंने तिनविनायकजीको सिंहसवारदेखे २९ अरु दशशस्त्र
धारी दशभुज सुन्दर मुकुटवान् अनेक आभूषणों से सजे अरु मो-
तियोंकीमालासेविभूषित३० सुन्दर सुगंधलेपनयुक्त सर्पसेंबँधा उदर
जिनका ऐसे विभु विनायकजीको अरु घुंघरोंसे शब्दसहित चरण
जिनके कस्तूरीके तिलकसे उज्ज्वल ३१ ऐसे देवजीको देखके सारे
देव नमस्कारकरकेबोले कि जिनका बृहस्पतिजीके वाक्यमें स्मरण
कियाथा सोही ये विनायकजी हैं ३२ सोही मनवाणी से अग्राह्य
प्रभु हमको दीखेहैं इससे हे देवो अब हमारा जन्म धन्य अरु दृष्टि
धन्यहै अरु तप दान भी धन्यहै ३३ तबतो देवजीने सुरों से कहा
हम तुम्हारेयज्ञ से प्रसन्न हैं पूजा अरु भक्तिसे अरु चतुर्थीके व्रतसे
भी ३४ अरु ये स्तोत्र (संकष्टहर) ऐसे विख्यातहोगा हे देवजी जो
इसे सावधान भया पढ़े सोही हमारा माननीय होगा ३५ तिसके

दर्शनसेही यक्ष राक्षस नाशहोंगे अरु वो अनेकभोगभोगें अरु अ
ंत मे मोक्षपावें ३६ अरु फिर मेरावचनसुनो जोकि तुम सिंधु दैत्य से
पीड़ित यज्ञ वेदरहित भये मेरी शरणआयेहो ३७ जो तुम गंडकी
नगरमेंरुके स्वाहा स्वधा रहित होरहेहो तिसोसे इसेमारनेको मेरा
अवतारहोगा ३८ सोकि हेदेवो हम गिरिजाजीके वर भलीभांति
जन्मलेंगे अरु (मयूरेश्वर) ऐसे विख्यातहोंगे अरु तभी तुम्हारे ३६
स्थान आश्रमो की प्राप्ति मुझसे सिन्धुहते होगी इसमें सदेह नहीं
क्योंकि हे सुरो सतयुगमें तो ४० हम सिंहचढ़े दशभुज तेजस्वरूप
विनायक भये अरु छः भुज श्वेतवर्ण मयूर वाहन हमीं त्रेतायुग में
भये ४१ अरु (मयूरेश्वर) नाम द्वापरमें रक्तवर्णचारभुज अरु मूषेपै
सवार हम गजाननजीहोकर ४२ फिर कलियुगमें श्यामवर्ण पत्थर
के हे सुरो (धूम्रकेतु) ऐसे विख्यात हमीं होंगे ४३ सो हे सुरो हम
शीघ्रही तुम्हारा वांछित पूराकरेंगे ब्रह्माबोले कि विभुविनायकजी
वो देवोंको ऐसेकहके अंतर्द्धानभये ४४ अरु निजकार्य का निश्चय
किये देवता प्रसन्नभये जो इसपरम आख्यानकोसुने या सुनावे ४५
अरु जो देव विनायकजीको ध्याकर परमभक्तिसे पढ़ै सो सबकामों
को प्राप्तहोवे अरु अंत में ब्रह्मलीन होता है ४६ ॥ इतिश्री गणेश
पुराण उत्तरखंड में गजाननजीसे वरहोना इसनामसे अठहत्तरका
अध्याय भया है ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

गौरीजीको गणेश मंत्रकी प्राप्तिहोना वर्णन है ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो शंभुजीभी देवोंके सिंधु से हारे जान
कर निजस्थानसे उठ सातकरोड गणोंसहित त्रिसंध्याक्षेत्र पै आते
भये १ अरु गौतम आदि महाऋषियें भी सिंधु के भयसेही हवन
श्राद्ध जप पठनरहित भयेरहतेथे २ वो वे महादेवजीको देखके सब
ओरसे घेरतेभये जैसे तीर्थको द्विजवर अरु माताको बालकआवेरै ३
अरु तिन्हें पुन प्रणामकरके बोले कि हमधन्यहैं अरु हमारा अनु-

स्थान,दृष्टि,जन्म,ज्ञान येभी धन्यहैं ४ जो गणाध्यक्षभी शिवजीहमारे दृष्टिगोचर भये सोकि दंडकारण्य में आये इससे हमारा पाप तो नाशभया अरु भारीपुण्य फलाहै ५ अब हमको देवजीका दर्शनभये दुःखनहोगा जैसे दिननाथउदयभये अँधेराकहीं नहींदेखपड़ताहै ६ तबतो तिन सबश्रेष्ठ२ मुनियोंसे महादेवजीबोले कि त्रिपुरनेत्रिलोकी दबालई अरु देवोंको रोकलिये ७ अरु कई मुनीश्वरोंकोभी तिससे हमारामनखेदितभयाहै हमने निजस्थानमें ध्यावसनहींभया इससे हम भी यहांआगये हैं ८ सो तुम्हारे दर्शन से हम प्रसन्न हर्षयुक्त भयेहैं सो अब गणोंसहित रहनेको हमें अवकाशबताओ ९ अत्यंत पुण्यसे तुम्हारा पापनाशक दर्शन प्राप्तभयाहै जहां सुख से बैठके जगदीश्वर का ध्यानकरेंगे १० ब्रह्मावोले ऐसा शिवजी का वचन सुनके सारे ऋषिबोले कि हे महादेवजी सबकेईश्वर आपकास्थान दाता कौनहोवे ११ कल्पवृक्ष के कामको कौन पूर्णकरे क्या क्षीर समुद्र की तृषा तलाई से जावेगी १२ आपहीकारूप पृथिवी अरु आपहीके वशमें सब हैं आप सबलोक के ईश्वरहो सो जैसा चाहो तैसाहीकरो १३ हेसुरस्वामिन् आपको सुंदरआश्रम दिखातेहैं जो नानावृक्ष वेलयुक्त अरु सुंदरसरोवर वापीजलसहित १४ अरु जो जलजीव अरु पक्षियों से संयुक्त गहरीछाया जिसमें विस्तारवाला सवाद २ कंद फलसहित कोमल२ दूबयुक्त १५ सो हे त्रिनेत्रजी आप यथेच्छ यहांरहो अरु हमारी सबोंकी पालनाकरो ब्रह्मावोले तबतो गंगा,गौरी,गणसहित महादेवजी वहांरहनेलगे१६ तो मुनि आश्रममंडलको उन्होंने कैलाससेभी अधिकमाना तो तिनकेआसरे से सारे गौतमआदि महर्षियें १७ अनेक तपकरतेभये अरु वे खेद रहितभये अरु गंगा गौरीमहायजिनकी ऐसे शिवजीने भी तप का आरम्भकिया १८ तो गणोंने महादेवजी के तपकी तय्यारीकरी तो किसीसमय गौरीजीने महादेवजीसे यहपूछा १९ हे शंकरजी विश्व के कर्त्ता,रक्षक,संहारकहो अरु अष्टमूर्त्ति अमूर्त्ति सबकेईश सब से भावनीयभी आपहीहो २० अरु आपही सबोंमें अतिश्रेष्ठ अरु सबों

के सबकामदाताहो अरु हे देव आठोकर्मों के फलदाता अरु सर्वार्थ वेत्ता आपहीहो २१ आपसे अतिश्रेष्ठकौनहै जिसे आपध्यातेहो सो कहोदेव अरु मुनि,नाग,अरु यक्ष,राक्षस,मनुष्य२२ जिनकीसामर्थ्य सेये सबविश्वहै तो तुमसेश्रेष्ठ और कौनहै अरु आपहीतेंतीसकरोड़ देवता अरु सिद्धसाध्योंसे पूजेजातेहो २३ ऐसा तिसकावचनसुनके शिवजीवोले हेदेवि तुने अच्छापूछा मैं तेरे वचनसे प्रसन्नभयाहूं२४ हेदेवि अब तू सावधानभई सुन मैं विस्तार से कहताहू हे सुरेश्वरि जिन्हें हम ध्यातेहैं तिनकोतुमने अबतक कैसे नहीं जानेहे २५ सो हम तेरी प्रीति की इच्छा से तिनका स्वरूप कहते हैं अरु लोकों के उपकार अरु संसार से निस्तार होने के लिये २६ सोकि जो देव सब प्राणियों में गुप्त विचरते हैं अरु जो अनगिनत शिरवाले अनन्त शोभायमान अनन्त चरणवान् अरु स्वराज २७ अरु जो अनतकर्ण नेत्रवान् जो अनतनामवान् गुणोंसेपरे अरु जो अनंतरूप देव,जो वेदकारी सब अर्थदाताहै २८ जो अनत शक्ति,विश्वव्यापी उपमारहित, पुराणपुरुष,जहा शेष, समुद्र, चन्द्रमा, आकाश, अरु नारायणइनकीउपमानहींदीजावे२९ अरुभारतकीअरुवेदकीव्यास मुनिजीकीभी जिनसे अनेक जीवजन्मतेहैं जैसे मेघ से ३० जल की धारहोवेतथाअग्निसेकनकेजैसेहोतेहैंजोब्रह्माविष्णु शिवआदिकों के तीनगुणदाता समर्थ है अरु तिनहीं तीनो अर्थात् सत्त्व,रज,तम, इनगुणोंसे तिन ब्रह्मादिकोंको रचना पालना संहार इनकीआज्ञा देतेहैं तिसीसे गुणोंके विभागकरनेसे वे (गणेश) ऐसे विख्यातभये हैं ३१।३२ तिन इनपरे से परे परमात्मा विभुपरब्रह्मरूप गणेशजी को निरंतरध्याताहूं गौरीजी बोली मैं आपकेवचनसे प्रसन्नहूपरमेरे कोनिश्वासकैसेहोवेमैंतिनगणेशजीका कैसे प्रत्यक्षदर्शनकरूंअरु कैसे तिनकीसेवाकरूं३३।३४हेविभुशंकरजीजोआपप्रसन्नहोतोतिसउपा-यको बताओब्रह्माजी बोले कि ऐसा तिसका बचनसुनके महेश्वरजी फिरबोले३५ कि हेदेवि जबतक एकांत निष्ठतपकरके वे प्रभु आरा-धन नहींकियेजावें तबतक कैसे प्रत्यक्षहोवे ३६ देवीबोलीं हे विभो

में कैसे किस उपायसे तपकरों हेदेवेश आपप्रसन्नहो तो ये मुझसे और कहो ३७ ब्रह्माजी बोले कि ऐसा तिसका आदरदेखके शिव जी गिरिजाजीसे बोले सो कि जिससे गुणवल्लभ गणेशजी तिनपे प्रसन्नहोवें सोही एकाक्षरमन्त्र तिसको शिवजीने सम्यक् प्रकार बताया अरु कहा कि बारहवर्ष तक तपकर जिससे विभुगणेशजी प्रसन्नहोवें ३८।३९ सो कि वे तुझको साक्षात् दर्शनदेंगे इसमें संशयनहीं तो वो प्रसन्न मनभई तभी गिरीश पर्वत पै तपकरने के लिये गौरीजीगई अरु मन्त्रके ध्यानमें परायणभई सो कि जीर्णापुरसे उत्तरमें सुन्दर लेखनाद्रि पर्वतपै ४०।४१ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्डमें गौरीजीको मन्त्रप्राप्ति इसनामसे उन्नासीका अध्याय समाप्तहुआहै ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

गौरीजी करके गणेशजी से वरपाना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तब तो वो एक रमणीय सुन्दरवन देखके वहां गौरीजी कमलासनहोके बैठी जो नासिकाके अग्रभागमें नेत्र किये २ अरु जो गणेशजीके ध्यानमें परायण पूर्वमुखभई जपने में तत्पर सो सूखे वृक्षकीनाईं एकाक्षर अर्थात् डाम् (ग) इसमन्त्रका जपकरतीभई अरु वो न तो फल न जल न मूल न कन्द न पवनभी खाती रहा परम तपमें निश्चयस्थितभई वो पार्वती ३ ऐसे तिसने बारह वर्ष बिताये तब तो विभुगुणों के प्यारे गणेश जी कृपाकरके तिसके आगेप्रकटभये ४ जो मुकुट कुंडलधरे दशभुज त्रिशूलधारी चन्द्रमा मस्तकमें जिनके अरु शंखचक्र मोतियोंकीमालों से विभूषित ५ अरु रुद्राक्षमाला कमल अरु कस्तूरीका तिलकलगाये सो मध्य में तो विष्णुमुखवाले अरु दाहिनीओर शिवमुखवान् बायेंओरब्रह्मा मुख अरु शेषजीपै कमलासनलगाये गणेशजी तिनके फणोंकेमंडल की छायाजिनपै अरु कुंदमोयरे कपूरके समानश्वेत ६।७ सोजगदम्बाजीसे बोले कि जिन्हें तुम रात्रिदिन (गणेश २) ऐसे ध्याती

हो सो हमने तुम्हें दर्शन दिया हैं ८ तेरी भक्तिनिष्ठा अरु तीव्रतपदे-
खके अब हे शुभानने तुमपै प्रसन्नभये हम निज स्वरूप बताते हैं ९
कि तैंतीसकरोड देवतोंमें मुझसे परे अधिक कोई नहीं है अरु तीन
गुणोंके विभागसे मुझको (गणेश) ऐसा कहते हैं १० सो मैं गुणोंसे
त्रिदेहभया तेरे तपसे संतुष्ट प्रत्यक्ष आयाहू अब तू मुझसे वरमांग
जो कि तेरे मनमे है ११ हेमदाईश्वरि जो त्रिलोकीमे असाध्यहोगा
सोभी देऊंगा ऐसा तिनका वचन सुनके हर्षसे गद्गदशब्दभई १२
गौरीजी नेत्रखोलके निज आगे विभुगणेशजी को देखतीभई जो
तीनोंगुणोंके ईश, अरु त्रिशरीर ऐसे इन्हें देखके गौरी जी प्रणाम
करतीभई १३ अरु बोली कि जन्मनिष्ठा अरु तप, जप, अरु शिवजी
भी आजही आपके चरणारविन्द का दर्शनकरके धन्य भये हैं १४
आजमुझको परम सिद्धिप्राप्तभई जो आप प्रत्यक्षदीखेहो मैं आप
से और कुछभी वर नहींमांगती अरु तुम्हारे वचनको उल्लंघती
भीनहीं अर्थात्मांगतीहूं १५ इससे तुममेरे पुत्रपनको प्राप्तहोवोमेरी
प्रसन्नताकरो जो तुम्हारा मुझसे निरंतरही दर्शन पूजन सेवनहोवे
१६ ऐसा तिसका वचनसुनके हर्षभरे गणेशजी गिरिजाजीसे बोले
कि हां हम तुम्हारे पुत्रहोंगे १७ अरु लोकोंका अरु तुम्हारा भी
वांछित पूर्णकरेंगे ऐसे तिसेकहके गणेशजी तो अन्तर्द्धानभये १८
जब तिसीक्षण देवीने गणेशजीको न देखे तो विचारनेलगी किक्या
मैंने अभी ये कोई स्वप्न देखाया १९ या ईश शिवजीके उपदेशसे
सब अर्थदाता देवजीदेखे पर अब मैं तिनका विरह सहनेनहीं स-
कोहूं २० गौरी जी ऐसा चित्त धरतीभई तो तिसने गणेशजी की
मूर्ति बनाके आदरसे स्थापितकरी अरु चारद्वारवाला सुन्दरमंदिर
बनवाया २१ अरु (गिरिजात्मज) ऐसा तिनका सुन्दरनाम रखती भई
अरु कहा कि ये मनुष्योंका (सिद्धिक्षेत्र) ऐसे विख्यातहोगा २२ सो
अनुष्ठान वालोंको यहां निस्संदेह सिद्धिहोगी ऐसे वहां वर देकर
अरु यथाविधि तिनकी पूजाकरके २३ अरु प्रदक्षिणा नमस्कारकर
अरु ब्राह्मण जिमाय तिनकी पूजाकरके अरु तिनको दानदेके

तिनसे अर्थपिलेकर२४ अरु त्रिसंध्याक्षेत्रपे आई तो तहां शिवजीको योगमेस्थितदेखे तो शिवाजीने शिवजीके चरणारविन्दमें निजशिर कमल रखदिया २५ अरु निजवृत्तांत कहाकि हे प्रभो मैंने आपकी आज्ञापाके अरु मन्त्रका उपदेश लेकर बारहवर्षतप किया वायु भक्षणकरके तब गणेश्वरजी प्रसन्नभये मेरे परम भावको जानकर बोले२७ कि हे गिरिजे हमतुम्हारे उदरमेंआके अवतारधारेंगे २८ अरु देवतोंका व तेरावांछित सिद्धकरेंगे२८ ऐसेकहके वे तो क्षणमें अन्तर्द्धान भये फिर मैं परम प्रसन्न भई तिनका मंदिर अरु मूर्त्ति बनाय स्थापितकरके आपकेनिकटआईहूं२६ ब्रह्माजीबोलेकि ऐसा प्यारीका वचन सुनके प्रसन्नमनभये शिवजी फूलेनयनोंवाले बोले कि हेगिरिजे तू धन्यहै३० जो तैने प्रत्यक्षही गणेशजीकोदेखे अरु वे तेरे घर अवतारलेंगे३१ सो महादैत्य सिंधुको मारेंगे अरु भूमि भार उतारेंगे अरु इन्द्रआदि लोकपालोंको निजर स्थानदेवेंगे३२ इसमेरे वचनको हेदेवि तू कभीमतभूलना ऐसेकहदेव ब्रह्माजीबोले शिवजी शिवाकोस्पर्श करते भये ३३ अरु तब दोनों आनंद आंसू छोडते रोमांचशरीरभये परम आह्लादसहितगौरीशंकरजी विराजमानहोतेभये ३४ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखंड में श्रीगणेशजी से वरहोना इसनामसे अस्सीका अध्याय समाप्तहुआ है ८० ॥

इक्कासीवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजीका जन्महोना वर्णित है ॥

श्रीब्रह्माजी बोले तबतो प्रसन्नभई वो पार्वती निज सखियों के पासआई अरु सब वृत्तांत कहा तो वोभी प्रसन्न होतीभई १ तभी से वो गिरिजादेवी गणेशमनवाली भई सो वो और भी बालक को देखती तो ये गणेशहीहो ऐसे कहतिसे २ पकड़ने दौडती तो तिसकी माता तिसेहटादेती थी ऐसे वो गणेशजीके ध्यानमें परायण तिन बिन कहीं भी नहीं सुखपाती भई ३ सो नित्य तिन का नाम जपती अरु जगत्को तन्मयहीको देखतीभई अरु सब सखियों से

च्छती कि गणेशजी कब आवेंगे ४ मुझको पिताने शिवजीकीप्राप्ति के लिये सुन्दरव्रत बताया था सोकि यथाविधि पार्थिव गणेश जी पूजने ५ तिसीके प्रभावसे मैं शिवशंकरजी को प्राप्त भई हूं फिर तिसीको मैं अब गणेशजी की प्राप्ति के लिये करूंगी ६ तबतो वो भादोंशुदी चौथ को हर्षयुक्त भई पार्थिव मूर्ति बनाकर अरु तिस गजाननजीकीमूर्तिको षोडशउपचारोंसे पूजतीभई ७ सोकि ध्याना-दिक छै उपचारों से अरु पंचामृत अनेक से वस्त्रों से अरु सुगंधित यज्ञोपवीतसे अरु यथाविधि धूपदीपोंसे ८ अरु नानापुष्प नैवेद्यों से अरु अनेक विधिके फलोंसेभी तांबूल अरु गीली अर्थात् चिकनी सुपारियोंसे जो लौंग कपूरादियुक्त ९ दूर्वा अरु शमीपत्रों से अरु अनेकसी दक्षिणाओं से अरु विचित्र आरतियों से मंत्र पुष्पांजलि अरु स्तोत्रोंसे १० अरु परिक्रमा प्रार्थनाओं से अरु ब्राह्मणों के पूजनोंसे तबतोप्रसन्नभई वो मूर्तिचैतन्यताकोप्राप्त होतीभई ११ तो तभी तिसकी कांतिकरके किरोडसूर्योकी कांति जीतीगई अरु प्रज्व-लितअग्नि की दीप्तिजीतीगई अनंत चन्द्रमाप्रभाहततीगई १२ तो हरी गई नेत्रकांति जिसकी ऐसी गौरी मूर्च्छितहो भूमिमें गिरी अरु दो घडीमें सावधानभई वो जगदीश्वरजीसेबोली १३ कि हेदेव मुझसे पूजनमें क्या बिगाडभया यह विचारती हूं या किसीने यह हिंसा कर्मकिया अर्थात् मूठ चलाई है सो मैं नहींजानतीहूं १४ हे कृपा-निधे देवजी मेराप्रयत्ननिष्फल क्योंभया सो कृपाकरके कहो ब्रह्मा जीबोले तिसका ऐसावचनसुनकेसोम्य तेजस्वीभये १५ फिर तो वो तिन बालविनायकजीके निज आगे आगे देख प्रसन्न होतीभई जो अनगिनत मुखनेत्रवाले अरु अनगिनतही पैर शिरजिनके १६ अरु अनगिनतहीं मुकुट जिनके अरु सूर्य चन्द्र अग्नि ये ३ नेत्र जिनके ऐसेप्रभु अरु मोतियोंकीमालापहिरे अत्यंत दीप्तिमान् १७ अरु अनेकशस्त्रहाथलिये अरु सब अंगसुन्दर तो गौरीजी इनपरम आ-श्चर्यरूप को देखके १८ वो नेत्रमींचके तर्कनाकरतीभई अरु सब शरीर कपरहा ऐसी वो कुछकरना नहींजानती भई अर्थात् व्याकुल

होगई १६ अरु बोली कि मैने ये विचारभया देखा या कोई और आश्चर्यदेखाहै अरु जब वो गिरिजानेत्रखोलके देखतीभई तो तभी तिसने शिवजीके उपदेशका स्मरणकिया अरु कहतीभई २० इमी की मायासे भ्रान्तभई मैं विभुविनायकजीको न जानतीहूं एसे कह फिर तिनसे पूछा कि तू कौनहै तेराकहांसे आगमनभया है किस-लिये आयाहै जो गणेशजीहो तो मुझसेकहो २१।२२ श्रीब्रह्माजी ने कहा कि हेव्यासमुनि जो ऐसा तिनकावचनसुनके वो महापुरुष बोले कि जो निजशब्दसे सबदिशा विदिशोंके गोजातेथे २३ देवजी बोले कि हेशुभे तू अनुष्ठानवाली जिन्हे रात्रिदिन ध्याती है सोही हम तेरे घरमें परमपुरुष गणेशजी अवतारभयेहैं २४ जो परेसेपरे ऐसे हमने वरमागनेवाली तुझेकहाथा कि हेदेवि हम तुम्हारीपुत्रता को प्राप्तहोंगे सो भयेहैं अरु अब हमें जो करना है सो सुनो २५ सोकि तुम्हारा शिवजी का सेवनकरना अरु सिधुदैत्य का मारना अरु देवोंकोनिज२ स्थानदिवाके फिर हम निजस्थानकोजायेंगे२६ ब्रह्माजीबोलेतिनके अमृतवचनकोपीकरप्रसन्नभई गिरिजाजीबोली कि मेरा महाभाग्यहै अरु मेरे तपकाभी परमफल भयाहै २७ जो अनेक किरोडब्रह्मांडों के नेता अर्थात् स्वामी आप मुझको दीखहो जो सच्चिदानन्दघन जिनसे सब रचागया है २८ सोकि पांचोंभूत अर्थात् पृथ्वी जलतेज वायु आकाश अरु ब्रह्मा विष्णु महेश चन्द्रमा इन्द्र सूर्य नक्षत्र अरु गंधर्व यक्ष अरु मुनियें वृक्ष२६ पर्वत अरु सारे पक्षी अरु चौदहभुवन अरु जिनसे स्थावर जंगम जड चेतन ३० ऐसे आप मेरे पुत्रपन को प्राप्तभये ये बडी विडम्बना है अब मैं प्रार्थनाकरतीहूं कि हे देवजी आप सादेबालक होजावो ३१ जिस से तुम्हारालाड अरु परमआदर से सेवनकरूं ब्रह्माजीबोले जितने तिसनेऐसेकहा तभी तिनको फिरदेखे३२ कैसे कि जो षड्भुज चंद्रमा से सुभग अरु तीननेत्र विभूषित सुन्दर नासिकावाले सुन्दर भौं मुखजिनको अरु भारीहृदयवाले ईश्वर ३३ अरु ध्वजाअंकुश ऊर्ध्व-रेखा इनसे अंकित हैं चरणकमल जिनके अरु किरीड स्फटिकमणि

समप्रांतिवाले अरु किरीट चन्द्रप्रभा ऐसे विभु गणेशजी ३४ अरु सुवर्णकीतारसरीखे केशोंवाले बालरूप प्रथमशब्दकरते अरु पृथ्वी को कँपाते ३५ तो तिनका शब्दसुनके जनोंने मर्यादं स्थान छोड दिये अरु जो वृक्ष वेरसये वे सब हरेभरेहोगये ३६ अरु गौवेंबहुत दूध देतीभई अरु त्रिलोकीहर्षतीभई अरु देव दुन्दुभियें बजनेलगीं अरु पुष्पोंकी वर्षाभई ३७ तो गिरिजाजीने तिन्हेंदेख हर्षसे हाथों में उठालिये अरु स्नेहभावसे तिन्हें उष्ण जलसे न्हवाती भई ३८ अरु परमहर्षितभई तिन्हें दुग्धसेझरत स्तन पिलातीभई अरु शिव जीभी तिनपरमबालक गणेशजीसे प्रसन्न होतेभये ॥ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तरखंडमें श्रीगणेशजीकाजन्महोना इसनामसेतो इक्यासी का अध्याय भयाहै ८१ ॥

बयासीवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीके जन्मका उत्सव ॥

ब्रह्माजीबोले कि तबतो शिवजीके गणोंने शिवजीसे सबवृत्तांत कहा कि हेमहादेवगौरीजीपुत्रसंयुक्तभई सो बडाआश्चर्यवान् पुत्र भयाहै१ सो आप पुत्रकोदेखनेके लिये निजस्थानको चलिये ऐसा तिनका वचन सुनके गिरिजापति शिवजी प्रसन्नभये २ सो आप तिस शशिसमानकांति बालकको देखके जो अद्भुत स्फटिक गिरिके जैसा श्वेतमोघरे जैसा श्वेतकांति अरु कमल से नेत्रोंवाला ३ तब तो शिवजीने परम आश्चर्यमाना अरु ये वचनबोले कि येबा-लकनहींहै किन्तु अनादि सिद्ध अरु जराजन्म रहित४ ये लीलासे शरीरधारी स्वयंप्रकाशक गुणातीतहै शुद्ध सत्वमय अरु सर्वजीवों -कास्वामी अरु त्रिभुवनका ईश्वर ५ मुनिध्यानयोग्य सम्पूर्ण का आश्रय ब्रह्मरूप सबनदाता ब्रह्माजी बोले कि ऐसे कहकर शंकर जी बालकको हाथोंमें उठाकरदुलाडकरके हृदयमेंलगाके जो सबोंके हृदयमेंस्थित वेभी शिवजी फिर गिरिजाजीसे यहकहनेभये ७किजो परमात्मा अरु गुणोंसेभी अतीत सो तेरीपुत्रताकोप्राप्तभयेहैं सो हे

होगई १६ अरु बोली कि मैंने ये विचारभया देखा या कोई और आश्चर्यदेखाहै अरु जब वो गिरिजानेत्रखोलके देखतीभई तो तभी तिसने शिवजीके उपदेशका स्मरणकिया अरु कहतीभई २० इसी की मायासे भ्रान्तभई मै विभुविनायकजीको न जानतीहू ऐसे कह फिर तिनसे पूछा कि तू कौनहै तेराकहांसे आगमनभया है किस-लिये आयाहै जो गणेशजीहो तो मुझसेकहो २१।२२ श्रीब्रह्माजी ने कहा कि हेव्यासमुनि जी ऐसा तिनकावचनसुनके वो महारूप बोले कि जो निजशब्दसे सबदिशा विदिशोंके गोजातेथे २३ देवजी बोले कि हेशुभे तू अनुष्ठानवाली जिन्हें रात्रिदिन ध्याती है सोही हम तेरे घरमें परमपुरुष गणेशजी अवतारभयेहैं २४ जो पूर्वसमें ऐसे हमने वरमागनेवाली तुझेकहाथा कि हेदेवि हम तुम्हारीपुत्रता को प्राप्तहोंगे सो भयेहैं अरु अब हमें जो करना है सो सुनो २५ सोकि तुम्हारा शिवजी का सेवनकरना अरु सिधुदैत्य का मारना अरु देवोंकोनिज२ स्थानदिवाके फिर हम निजस्थानकोजायँगे२६ ब्रह्माजीबोलेतिनके अमृतवचनकोपीकरप्रसन्नभई गिरिजाजीबोली कि मेरा महाभाग्यहै अरु मेरे तपकाभी परमफल भयाहै २७ जो अनेक किरोडब्रह्माडों के नेता अर्थात् स्वामी आप मुझको दीखेहो जो सच्चिदानन्दघन जिनसे सब रचागया है २८ सोकि पाचोंभूत अर्थात्पृथ्वी जलतेज वायु आकाश अरु ब्रह्मा विष्णु महेश चंद्रमा इन्द्र सूर्य नक्षत्र अरु गंधर्व यक्ष अरु मुनिये वृक्ष२६ पर्यंत अरु सारे पक्षी अरु चौदहभुवन अरु जिनसे स्थावर जंगम जड़ चेतन ३० ऐसे आप मेरे पुत्रपन को प्राप्तभये ये बड़ी विडम्बना है अरु मैं प्रार्थनाकरतीहू कि हे देवजी आप सादेबालक होजावो ३१ जिस से तुम्हारालाड अरु परमआदर से सेवनकरू ब्रह्माजीबोले जिनने तिसनेऐसेकहा तभी तिनकोफिरदेखे३२ कैसे कि जो षट्भुज चंद्रमा से सुभग अरु तीननेत्र विभूषित सुन्दर नासिकावाले सुन्दर भौ मुखजिनकी अरु भाग्यहृदयवाले ईश्वर ३३ अरु ध्वजाअंकुश ऊर्ध्व-रेखा इनसे अंकित है चरणकमल जिनके अरु किरीट स्फटिकमणि

माचल भी चलआया १ बहुमोल्यके रत्न आभूपणले करके तो आं-
गनमें तिसे देखनेही गौरिजा दौड़के आई २ तो गौरीबहुत कालमें
आये पितासे मिलतीभई अरु आनंद आंशु छोड़तीभई अरुवोभी
अश्रुकंठ भया फिर वो तिससे बोली ३ कि हे निर्दयी पिताजी
आप कैसे निठुर होगये हो जो कभी न मेरा वृत्तांत मँगाते अरु न
अपना भेजते हो हिमाचल बोला हे गौरि तू सत्य कहतीहै मेरे भी
कंठमें प्राण आरहेहैं इसी से हे हर प्यारी मै तेरे दर्शनकी चाहना
करके आयाहूं४।५ अरु जैसेमच्छेमें गजकामन हो तैसे तुझमें मेरा
मनहै ब्रह्माजीबोले कि ऐसा तिसका वचन सुनके गिरजाने शुभ
आसनदिया ६ तो बैठाभया गिरिराज फिरि गिरिजा जी से बोला
कि मैने नारदजीके वचनसे तुम्हारे अद्भुत सुतभया सुनाहै ७ तिसी
से सबविघ्नहारी शुभकारी दोहतेको देखने आयाहूं ब्रह्माजीबोले
गिरिजाने बालकको लाके पिताके गोदमें बिठाया ८ अरु वो तिसे
आभूपणोंसे सजाकर इसकी महिमा कहनेलगा हिमाचल वो ये
महाशरीरी बालक इसपृथ्वीको निष्कंटक करेगा जैसे चंद्रमा निज
किरणोंसे शीतलताई करताहै तैसे ये सुशोभित करेगा ६ अरु ये-
हीसब देवताको निजरस्थानोंमें बैठावेगा १० अरइसतेरे सुतकी
मुनिजन सेवा करेंगे अरु ये स्थिर चरजीव सबइनकाही स्वरूपहै
११ अरु येहीसदा ब्रह्मादिकोंको ध्याने योग्यहै जो सहस्रनेत्रवान्
अरु सहस्रपाद अरु सब जगत्के कारणों के भी कर्ता १२ सहस्र
मुखवाले अनंत मूर्तिमान अरु स्थूल सूक्ष्म स्वरूपवाले ऐसा श्रेष्ठ
सुखी बालक और कोई त्रिलोकीमें नहींदेखा १३ मैं तिनके चरण
कमल देखके तन्मयत्वको प्राप्तभयाहूं जैसे जलमें ढूंपछोड़ा लवण
से तिसमें मिलजाताहै १४ सो हे शुभेगौरि इसकी यत्नसे रक्षाकर
ये प्राचीन निधि अर्थात् अटूटभंडारीहैब्रह्माबोलेतब हिमाचल ति
नके मस्तकपे मुकुट अरु भुजोंमें सुंदरबाजू१५ अरु हृदयमें कमल
अरु कानोंमें रत्नशोभित कुंडल अरु कमरमें तगड़ी अरु पैरो में
महामोल्यवाले घुंघरू १६ ऐसे २ आभूपणदेके गिरिराज तिनका

उखाडन समर्थवलथा वे हमें झटमेंआकर मारदेते तो वृत्तान्त भी आपसे कौनकहता ४२ ब्रह्माजीबोले कि ऐसेदूतोंके कहतेर तभी आकाशवाणीसुनी कि हे सिंधो तेराहननेवाला कहींभी उत्पन्नभया है तू सावधानहोजा ४३ सिन्धुबोलामारोर ये दुष्टवचन यहांकौन कहरहा है ब्रह्माजीबोले कि तब तो कई तो उछलके गिरपडे अरु कईदौड़के चलेगये४४ तभी दैत्यसिन्धु भी महामूर्छापायके भूमिमें गिरा तो चिन्तामेंमग्न अरु मैलेमुख उत्साहरहित हतोप्रभाजिस-की ४५ ऐसा फिर दोघडी में चेतपायके रूखे वचन से बोला कि त्रिलोकीका कंटक तो मैं अरु मेराभीकंटक कौनउत्पन्नभयाहै ४६ हाथी सिंहकोकैसे मारसकाहै तथा हाथीकोमच्छर कैसे मारसकै जिसमैंने तेतीसकिरोड देवता जीतलिये ४७ तैसे मरानरना किससे होये आकाशवाणी मिथ्याहै अथवा सत्यहै तो तिस शत्रुको भक्षण करनेजाताहूंगा४८ ऐसेकहकर आधेक्षणमेंही वो राज्यासनपैगया अरु तैसी वाणीसुनर्के सारेशूरवीरभी आतंभये ४६ अरु बोलेकि आपही मृत्युकेभी मृत्युहो फिर आपकामृत्यु कौनहो अरु जोहोवे भी तो हमीतिसे मारडालेंगे ५० स्वर्ग में भूमिमें वा जलमें चाहे आकाशमेंवसो हमैंआज्ञादेवो हमजातेहैं तो सिन्धुतिनसेबोला५१ कि मैं सखासेवकोंका वचनामृतपीके तृप्तभयाहू सो तुम मेराजहां शत्रुहो तहांहींजाओ५२ सो अनेकमायासे हनके मेरेशत्रुकोलेआवो ब्रह्माजी बोले कि तब तो वे ऐसी आज्ञा पाके अनगिनत चले अरु त्रिसन्ध्याक्षेत्रपैआकरके गुप्तरूपहोकररहनेलगे अरु विचारतेरहेकि गौरीसुतको कहींभी किसी मायासेहतें५३।५४॥इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंराक्षसोंकागमनइसनामसेबयासीवांअध्यायहुआ८२॥

तिरासीवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीसे शत्रुकी मोक्षपावनीहै॥

श्रीब्रह्माजीबोले हेव्यास तवतो गणेशजी शुक्लपक्ष के चंद्रमाकी नाई दिन दिन बढनेलगे अरु गौरीजी के शुभ पुत्रभया सुनके हिं-

माचल भी चलआया १ बहुमोलयके रत्न आभूषणले करके तो आंगनमें तिसे देखनेही गोरिजा दोड़क आई २ ता गोरीबहुत कालमें आये पितासे मिलतीभई अरु आनंद आंशु छोडतीभइ अरुवोभी अश्रुकंठ भया फिर वो तिससे वोली ३ कि हे निर्दयी पिताजी आप कैसे निठुर होगये हो जो कभी न मेरा वृत्तांत मंगाते अरु न अपना भेजते हो हिमाचल वोला हे गोरि तू सत्य कहतीहै मेरे भी कंठमें प्राण आरहेहैं इसी से हे हर प्यारी मैं तेरे दर्शनकी चाहना करके आयाहूं ४।५ अरु जैसे वत्सछेमें गऊकामन हो तैसे तुझमें मेरा मनहै ब्रह्माजीवोले कि ऐसा तिसका वचन सुनके गिरजाने शुभ आसनदिया ६ ता वैठाभया गिरिराज फिरि गिरिजा जी से बोला कि मैने नारदजीके वचनसे तुम्हारे अद्भुत सुतभया सुनाहै ७ तिसी से सवविघ्नहारी शुभकारी दोहतेको देखने आयाहूं ब्रह्माजीवोले गिरिजाने वालकको लाके पिताके गोदमें विठाया ८ अरु वो तिसे आभूषणोंसे सजाकर इनकी महिमा कहनेलगा हिमाचल वो ये महाशरीरी वालक इसपृथ्वीको निष्कंटक करेगा जैसे चंद्रमा निज किरणोंसे शीतलताई करताहै तैसे ये सुशोभित करैगा ९ अरु येहीसव देवतोंको निज२स्थानोंमें वैठावेगा १० अरइसतेरे सुतको मुनिजन सेवा करैंगे अरु ये स्थिर चरजीव सवइनकाही स्वरूपहैं ११ अरु येहीसदा ब्रह्मादिकोंको ध्याने योग्यहै जो सहस्त्रनेत्रवान् अरु सहस्रपाद अरु सव जगत् के कारणों के भी कर्ता १२ सहस्त्र मुखवाले अनंत मूर्तिमान अरु स्थूल सूक्ष्म स्वरूपवाले ऐसा श्रेष्ठ सुखी वालक और कोई त्रिलोकीमें नहींदखा १३ मैं तिनके चरण कमल देखके तन्मयत्वको प्राप्तभयाहूं जैसे जलमें दूधछोड़ा क्षण से तिसमें मिलजाताहै १४ सो हे शुभेगोरि इसकी यत्नसे रक्षाकर ये प्राचीन निधि अर्थात् अदृष्टभंडारहै ब्रह्मावोलेयह हिमाचल तिनके मस्तकपे मुकुट अरु भुजामें सुंदरबाजू १५ अरु हृदयमें कमल अरु कानोंमें रत्नशोभित कुंडल अरु कमरमें तगड़ी अरु पैरोंमें महामोल्यवाली घूंघरू १६ ऐसे २ आभूषणदेके गिरिराज तिनका

सर्वविघ्नहारी भक्तअभयदायी (हेरंब) ऐसा नाम रखनाभया १७ फिरि गिरिराज भोजनकर तिनसों आज्ञालेकर निज स्थान को आया अरु बालक एकदिन निजघरमें खेलताथा १८ तो गीधरूप किये (गृध्रासुर) जो महाबल पराक्रमी जिसके पखों को फटकारसे पहाड़ चूर्णहोगये १९ अरु गंडशैलनाम भारीपत्थर अरु वृक्ष तिसकेपैर फटकारसे गिरे ऐसा वो निजपखोंकी छाया में बाल गणेश जीको ढकके आकाशमें भ्रमता भया २० अरु पंखोंको फटकार से उठेरजकनकोंकरके सबोंके नेत्रढकताभया अरु भारी२शब्दोंमें सब के कानबहिरे होगये २१ तबतो वो गृध्रासुर विनबाल गणेशजी को चोंचमे पकड़के आकाश मार्गसेदूर चलागया जैसेगरुड़जी सर्पको लेजावे २२ सो वो दुष्टइनके पराक्रमको न जानता आकाशमेंभ्रमताभया तबतो गिरिजाजीने देखा अरु बोली कि अभी बालक यहां से कहांचलागया २३ फिर तिसे आंगनमें भी नहींदेखा फिर तो शोक से व्याकुलभई पुकारी कि किसदुष्ट बुद्धिने मेरेसुतकोचुराया है २४ फिरतो बैठगई वो आकाशविषे वो गीधके मुखमें तिनगणेश जीको देखतीभई तो मूर्च्छित भई भूमि में गिरी अरु दोड २ ऐसे पुकारी२५ हेसुरेश्वर पुत्रविन मेरेप्राणजातेरहेंगे यहमुझपर आकाश केसेपड़ा मेरेहीमें जगत् के ईश्वर शंकरजी कैसे निठुरहोगयेहैं २६ मैने बारहवर्ष निराहार होकरके तपकिया था तिससे करुणारूप स्वयमप्रकाशक गणेशजी मेरेघर अवतार भये सो निधानरूप अब मुझअभागिनीके पापों से चलागया २७।२८ अब बालक के गये मेरा सब सुख जातारहाहै ब्रह्माबोले ऐसे २ तिसके शोच करते सब सखियोंने भी शोचकिया २९ फिर तो वे ज्ञान युक्तियों से इनको समझानेलगे कि जन्म मृत्युरहित गणेशजीमें तुम शोचनकरो३० जो स्वयंप्रकाशक बहुत अनुष्ठान से तुम्हारे घर अवतार भये वो निठोकोमृत्ति कहां से चैतन्य होगई थी सो कहु ३१ सो हे शुभे तू देर क्षणमेंही तिन विनायकजीको देखेगी सोकि अरूका भी अव-कारी तो बालकनिष्ठासे फिर आजावेगा ३२ ऐसे २ सब जनों के

कहते २ तितनेही बलवाले बालकजीने मुष्टिसे तिसकी चोंचपकड़ लई तो तिसका श्वास भी न निकलसका ३३ तो श्वास रुकने से बेप्राणभया बालकसहित वो गीधवज्रसेहते पहाड़की नाई भूमिपर गिरा ३४ पडतेही तिस गीध का शरीर दश योजनतक फैलगया अरु कईघरोंको चूर्णकरताभया तो वो अत्यन्तही आश्चर्यहोगया ३५ उपवनों के वृक्ष टूटनेसे पक्षिये दिशों मे उडगये तबतो बालक को देखतेही सबजनोंनेकहा ३६ कि ये अक्षत देहभया गौरीजीकासुत भूमिमेंगिराब्रह्माबोले ऐसातिनकावचनसुनतेहीगौरीजीनेशीघ्रतिसे उठालिया ३७ अरु हृदय में लगाकर परमहर्ष को प्राप्तभई अरु परम आश्चर्यमानके अनेक से दानदिये ३८ तो ब्राह्मण बोले कि इसका महाअरिष्टगया अब अगाडी न हो फिर शिवाजी द्विजोंको नमस्कारकरके घर भीतरगई ३९ अरु विचारनेलगी कि कहांतो ये दशयोजन विस्तारवाला बली असुर अरु कहां कोमल देह लघु रूप ये बालक पर इसने तिसे मारा है ४० जो अभी इसमें ऐसा बलहै तो अगाडी यह क्याकरेगा ऐसी सखीसे कहती हर्षसे गौरी स्तनपान कराती भई ४१ अरु यह छोट न मानना जैसे अग्निकन का बहुत काठको जलादेताहै तैसेही इसछोटेसेने भारी राक्षस को माराहै ४२ तबतो तिसकेदेहके खंड २ करके गणों ने दूरफेंके जो इस आख्यानकोसुने तिसको असुर बाधा नहीं करते हैं ४३ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखंड में गृध्रासुर की मोक्ष होना इसनाम से बिरासीका अध्याय भयाहै॥

चौरासीवां अध्याय॥

श्रीगणेशजीसे भूपकासुर वह का असुर की मोक्षहोना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि दूसरे महीने गौरी जी बाल गणेशजी के उबटनलगा न्हवाके हिंडोले झुलातीभई अरु हर्षसे बहुतरागगाने लगी १ तितनेहीमेंमायारूपधारी दो भूपक तिनके पासआयेसोकि वे (क्षेम) अरु (कुशल) नामवालेथे सो तिनको मारना चाहतेथे २ नहं

अरु दाढ शस्त्र जिनके ऐसे भयानक वे घरकेभीतरगये सो वे पलने
के निकट लडते २ फूलेरोम जिनके ६ ऐसे खोटे दोनो ३ जिनके
घोर२ शब्दसे कानवहिरेहोगये अरु पजोंकेघातसे पृथ्वी हलखेंची
सी होगई ४ तवतो गौरी लट्टीलेके तिनदोनोको डरानेलगी तब वे
दोनो भगते २ ऊपरको चलेगये ५ फिर वे लड़ते२ महाजोर दोनो
वालकके ऊपरगिरे तो हृदयमें घातहोनेसे वो उत्तम वालकजागा६
अरु भारीशब्दसेपुकारा तव गिरिजाजीडरी अरु गणेशजीने वाल
पनेमे सहजही हाथ चलाये ७ तो तिनके प्रहारसे जीवनाश भये
वे दोनो नीचेगिरे मुँहसे रुधिरउगलते तो गिरिजाजी तिन्हें देखके
भ्रान्तियुक्तभई ८ कुछेकजीव शेषरहा जिनका ऐसे तिनको गणोंने
वाहरफेंके वे दोनोगणेशजीके हस्तघातसे मोक्षकोप्राप्त होतेभये६
तो तिनके भयानक दशयोजन विस्तार भये शरीर गिरे तो इनको
ऐसे देखके लोगोंमें महाही रौला मचताभया १० सो कि गणोंमें
सखियोमें अरु गौरीजीके वडीधूममची अरु आश्रमकेवृक्ष उखड़गिरे
पर्वत अरु घरभी चूर्णभये ११ सोकि मरेभये तिनशरीरोंके गिरने
से जो भारी थे वे भी गिरपडे फिरतो तिनके देहोको गणोंनेकाट२
कर वाहरडाले १२ अरु गिरिजाजी भयभीतभई वालकको लेकर
शीघ्र वोलाकर स्नेहसे दूध पिलातीभई १३ फिर श्रेष्ठ २ ऋषि-
पत्नियेंआई अरु गिरिजाजीसे वोलीं कि हे गौरीजी तुम्हारा वड़ा
पुण्य है जो विघ्न विनाश होताहै १४ दो महीने के वालक ने यें दो
महादुष्ट दैत्यमारे हैं अगाडी इनसे और कोई त्रिभुवन में ऐसा न
होगा १५ हेमाव. यहाराक्षसभूमिहै इससे इसवालकको यत्नसे
रखना नहीं तो परममायासे गुप्तरूपभये राक्षस इसे लेजावेंगे१६
महाजीवोले ऐसेकहके देवियें तो चलीगईं अरु गणगौरी से वोले
हेथिचागी यह तुम्हारा वालक नित्य२ही राक्षस मारेगा १७ हम
कहांतक मरेअसुरोंको खेंच२केवाहरफेंकें फिर तो मुनिजनआये अरु
वालजोंपै रक्षाकरतेभये १८ फिर गिरिजाजी तिनकोदानदे प्रणाम
करके विदाकरती भईं फिर तीसरेमहीने सवजनोंके निज २ काज

में लगे मध्याह्नमें गिरिजाजी बालकको लिये मचेपरसोती थी १९ अरु तिनकी सखियेंभी कोई सोती अरु कोई और काममें लगरही थी २० अरु कोई द्वारेपर बात बनारही थीं इतनेही में एकराक्षस (कूरनाम) से विलाव रूपकरके गिरिजा के स्थानमें बडा २१ सब लोगोंकी दृष्टिबचायके कुत्तेकीनाईं वो महाबली शिवाजी को सोती देखके मनमेंहर्षा अरु बिचारनेलगा कि जितने गिरिजा जी सोती है तितनेही बालकको में लिये जाताहूंगा २२ सो वो हलकेपनसे मंचपेचढा अरु गणेशजीका मस्तकपकडके मचे से नीचेगिरा तबतो बालकजी पुकारे २३ तबतो गिरिजाजी भी जागी अरु बिलाव के मुखमें तिनबालजीको देखकर भयभीतभईं दौड २ ऐसेपुकारी २४ अरु दुःख भयसे नेत्र मींचके मूर्च्छा को प्राप्त भई अरु जो तिसने कंठमें डथा सोही बालजी ने तिसे पकडा २५ सोकि निजभुजो से तिसके दोनो कानपकडके सहजही शिरमें पैरमारने से तिस महा असुरको मचेसे नीचे गिराया २६ तो वो पेटफटाहो भगता बाहर जाकर पडा जैसे भारी पवन से वृक्षसेती छोटाफल गिरे २७ अरु दुर्गंधिसहित तिसकारुधिर भूमिमेंगिरा गिरिजाजी शोकसेव्याकुल नाबढक्ती २८ बालजीकोलेके दूधपिलातीभई तो बालजीकेशब्द से सारी सखियें भी जागई २९ अरु आश्चर्ययुक्त तिनके शरीरको पृथक्२ स्पर्शकरतीभई अरु वे मनसे तिनकी अजर अमरता निश्चय करके चुपभई३० अरु वो बिलाव बारहयोजनमेंफेला अरु कितनी-ही सखियें कितनीही टहलवियें तिसने चूर्णकरी ३१ फिर तो तैसे तिसबिलाव को देखके गण भी आये अरु इनबालकजीके पराक्रम में आश्चर्य करतेभये ३२ कि कहा तो मायावी ये दुष्ट अरु कहां बालक के पैरकाघात जो इन्द्रादिकोंसे न मारेजावें तिन्हें ये बाल लीलासे मारडालताहै३३ ऐसेकह आज्ञालेके वे गण निज२स्थान गये तो कई बलवालोंने तिस दैत्यको खैंचके बाहरगेरा ३४ सोकि कमरपकड़ के इसेदूरफेंका अरु गौरीजी निजमंदिरमेंगई फिर चौथे महीने मुनिस्त्रियंआईं ३५ सो उत्तरगामी सूर्यअर्थात् समयमें नाना

सुहाग वस्तु ले २ करके बाला अरु तरुणी ऐसी २ गिरिजाजी के श्रेष्ठमंदिर में जातीभई ३६ तब वो दक्षकन्या ने तिन को आसन सत्कारदिया अरु बालजीको गोदमेंलेकर वो तिन्हें नमस्कारकरती भई ३७ वो वे हलदी केशरआदिकोंसे आपसमें अर्चनकरतीं चलने अरु न चलनेवाले सब बालकोंको भूमिमेंबैठाकर ३८ तबतो तिन के खेलतेसते विनायकजी भी खेलनेलगे तो तिनसे वे सब शोभित भये जैसे चन्द्रमा से तारागण सजे ३९ तो मुनिपत्नियोंने तिनको देखके गिरिजाजीसे कहा कि हेगौरीजी तुमशिवजीसेदिये प्रकाश-वान् पुत्रकरके धन्यहो ४० तुम्हारे बालक के निकटपन से हमारे भी बालक सजरहे हैं क्योंकि पारस के प्रसंग से लोह भी समान अर्थात् सुवर्णही होजाताहै ४१ ऐसे कहती वे आनन्दयुक्त आपस में अर्चन करतीभई हरिद्रा अरु कुंकुम ईप खंड चन्दन गान प्रन करके ४२ अरु तिल गुड़ ताडपत्रोंसे अरु नाना सुगंधोंसे भी कई अंग अरु मुखमें हरिद्रा लेपनकरतीभई ४३ इतनेहीमें (बालासुर) नामसे महादैत्य बालरूपभया समान अर्थात् दाईदारतिनके बीच में खेलनेआया ४४ सो विनोदसे गिरिजासुत के साथ लड़ताभया सो खेलनेलगा जैसे सिंहकेसाथ गीदड़ या हाथीकेसाथ भैंसाखेला चाहै ४५ तो वे अत्यन्त कठोर दोनों गले से गलालगाकर पृथ्वीपर गिरे अरु वो दुष्ट तिनविनायकजीके मस्तकमें पैरोंसे प्रहार करता भया ४६ अरु बालपकड़के इन्हें बलसे खींचताभया अरु आप वो दुष्ट गर्जताभया जैसे रातको बुढ़ागीदड़भौंके ४७ तो तिनदोनोंको लड़तेदेखके गिरिजाजी तिनस्त्रियोंसेबोली कि ये किसमुनिका दुष्ट बालकहै जो मेरे बालक को ताड़कर ४८ आपही पत्थरमें गधेकी नाईं भौंकताहै फिर तिसने कि बालकोंका येहीस्वभावहै ऐसेउपेक्षा करी अर्थात् उसने इस व्यवस्था को चित्तसे हटायदई ४९ अरु वे बालकभूमि में पड़े लाड़ोंकीनाईं भूमिमें लोटते अरु आपसमेंकेश पकड़ २ के खेंचतेभये ५० और बालकों वो अरु मुनि पत्नियों को रोते देखतीभये सोकि जाननेभयेभी बालविनायकजी तिसकेसाथ

खेलतेही भये ५१ तवतो वालासुरदैत्यने हाथोसे अत्यत वताकरके जीवग्रहणहो अर्थात् जैसे जीव निकलजावे तेसे तिन विनायकजी का कठपकडलिया ५२ वो तैसेही तिसको तिन विनायकजीने भी पकडा तो असुर भी रुके श्वास होगया अरु तिसदैत्य के पुत्रको व्याकुलदेखके स्त्रिये कुचित्तपन अर्थात् चिन्ता को प्राप्तभई अरु पुकारीं कि इसने निश्चय वालककोहता ऐसेकह कितनेहीं स्त्रीपुरुप दोड़२ के आये तो वे सारे तिसे न छुटासके फिर गिरिजाजीसेबोलीं कि तुम इसे छुडावोनहीं ये मुनि का पुत्र मरेजावेगा ५५ तव वो गिरिजाजी वालकजीसे कहनेलगी कि इसे छोड २ क्योंकि इसके मरगये हमको तपस्वीऋपियें शापदेंगे५६ इसब्रह्माण्डगोलमें जीव दानसेपरे और कोई पुण्यनहींहे अरु तिनके शापसे तेरी भी भारी शक्ति घटजावेगी ५७ श्रीब्रह्मा वोले कि गिरिजाजी जितने ऐसी२ प्रार्थनाकरतीरही तितनेहीं तिसके प्राण नेत्रोंकीराहसे जलके वुल-वुलेकीनाई निकलगये ५८ तवतो सवोंने तिसे दश योजनमें फैला देखा जो वडा भी भयानक मुखवाला जिसने पडते अनेकवृक्ष चूर्ण किये ५९ तवतो भयभीतभईं स्त्रियें शीघ्रही वालकोंको लेकर भगीं जैसे भेडियोंकोदेखतेहीभयसेगऊवकरियें भगें६० अरु गिरिजाजीभी निजसुतकोलेकर तिसकेऊपर से मिट्टीभ्रमा के स्तनदेकेब्राह्मणोंको वुलायस्वस्तिवाचनकरवातीभईं६१ तिनको अनेकदान दियेअरुतिन से वहुत आशिपलई अरु तिसअसुरमायाको न जानी कि कितनेही नाशकरनेको आते हैं ६२ फिर वे मेरेही वालकसे नाशकियेजाते हैं सो ईश्वर अनुकूलभये मनुष्यको कौनपीडाकरसकाहै ६४ ॥ इति श्रीगणेशपुराण उत्तरखण्ड वालगणेश चरित्र में वालासुरकावध इसनागरसे इसरयल में चौरासीवा अध्याय समाप्तहुआ है ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजी के कारयका वर्णन है ॥

श्रीब्रह्माजी वोले कि पाचवां महीनालगे (मरीचिजी) मुनियों के मुखसे महावलीगिरिजाजीके पुत्रगणेशजीको सुनकर आतेभये१

जो भूत भावि भविष्यवेत्ता अरु समान है लोह पत्थर सुवर्ण जिनके अरु जो वेदशास्त्रार्थ तत्त्ववेत्ता अरु छोड़ा अपना पराया भ्रम जिन्होंने ऐसे २ अरु जो मनसेही अर्थात् विचारकरतेही रचनापालना संहारकरने में समर्थ ऐसे तिन्हें देख सखियों सहित गौरी जी तिनके चरणोंमें गिरी ३ अरु आसनपै बैठाके भक्तिसे तिनके पैर धोये अरु तिसपवित्र पादोदककी पीया अरु घरभीतर छिड़का ४ अरु ईश्वर भावनाकिये षोडशउपचारोंसे तिनकी पूजाकरती भई अरु पार्वतीजी बोली कि मैं प्रसन्नभई जो कि अलभ्य आपकेचरणका दर्शनभयाहै ५ मुनिमरीचिजी बोले हे देवि आत्मज्ञान में मन लगाये मैं कहींनहींजाता हूं पर अचानकही तेरापुत्र मेरेध्यान में आया ६ तो तिसके तुम्हारे अरु शिवजीके दर्शनका आकांक्षी मैं आयाहूं ब्रह्माजी बोले ऐसा तिनका वचन सुनके अति प्रसन्न भई गौरीजी निजपुत्रको तिनमहामुनिजीके गोदमें बैठातीभई अरु वो तिन्हेंबोली कि आपकेदर्शनसे मेराभाग्य फलाहै७।८ अरुपरम सुखप्राप्तभयाहै अरु अगाड़ीभी शुभहोगा अर्थात् आपका दर्शन तीनकालमें शुभदाताहै मुनिजी बोले हेगौरि तेरा यहपुत्र मुझको ब्रह्मस्वरूप दीखता है ६ जो तीनगुणोंकेभेद से तीनकार्य्य अर्थात् रचना पालना संहारकारी है अरु जिनही की सामर्थ्य से शेषजी पृथ्वीको उठाये हैं ११ अरु जो मुनिजी पवनभोजी ध्यानपरों के चिन्तनमें परायण अरु योगनिष्ठ सो वे जिसकी उपासना करते हैं सोही यह तुम्हारा पुत्रहै १० अरु येही सूक्ष्म रूप अरु स्थूलरूपहै अरु येही सत्ताईशों तत्वोंकाकर्ता है अरु जड़चेतन संसार रूप सब कर्मरूप कर्त्तायेही है १२ अरु येही विनायकजी पहिले अर्थात् सतयुगमें तो सिंह पै सवार दशभुजभये अरु येही त्रेतायुग में छेभुजमयूर वाहन चन्द्रमा के समान अर्थात् श्वेतभये १३ जो (मयूरेश्वर) ऐसे विख्यात अरु अनेकदैत्य नाशक अरु येहीदेवजी द्वापरयुगमें रक्तवर्ण अरु चारभुज१४अरु(गजानन)ऐसेविख्यात अरु कलियुगमें धूम्रवर्ण (धूम्रकेतु) ऐसे विख्यात द्विभुज भयेअरु

दैत्यहता येहीहोवेगे१५ सो हेदेवि तू इसकी दैत्योसे सदारक्षाकर गौरीबोली कि यह अत्यंत चपलबालक बहुतसे दैत्योंको मारताहै १६ अबअगाडी बडार कर्म्मकरेगा सो हे मुनिश्रेष्ठजी मैं यहनहीं जानती सोनानाप्रकारके दुष्टदैत्य जोसाधु देवद्रोही खोटेइससेआप इसके कंठमें कुछरक्षाके लिये अर्थात् गंडाबांधदेवो१७ मुनिमरीचि जी बोले कि इनविनायकजीको सतयुगमें तो सिंहचढ़े दशभुजऐसे ध्यावे अरु त्रेतामेंइन्हींको मयूरवाहन छेभुज सिद्धिदायक ऐसेध्यावै अरु द्वापरयुग मे गजानन चारभुज अरु रक्तवर्ण ऐसे विभुगणेश जीकोध्यावे अरु कलियुगमेंद्विभुज अरु श्वेतअंगसेसुन्दर अरुसदा सब अर्थदाता ऐसे ध्यावे १८ सो परेसे परे परमात्मा जो विनायक जीहैं सो तो शिखाकीरक्षाकरो अरु अत्यंतसुन्दर शरीरी महोत्कट जी मस्तककीरक्षाकरो १९ अरु कश्यपसुतजी ललाटकीरक्षाकरो अरु महोदरजी दोनोभौंवोकी रक्षाकरो अरु भालचन्द्रजी नेत्रोंकी रक्षाकरो अरु गजमुखजी होठोकीरक्षाकरो २० अरु (गणक्रीडा जी) जीभकीरक्षाकरो अरु गिरिजाजीके पुत्रजीठोढ़ीकी रक्षाकरो अरु विनायकजी वाणीकीरक्षाकरो अरु दुर्मुखजी दांतोंकीरक्षाकरो २१ अरु पाशहस्तीजीकानोंकी रक्षाकरो अरु चिन्तितअर्थकेदाताजी नासिकाकीरक्षाकरो अरु गणेशजीमुखकीरक्षाकरो अरु देवगणनाथ जीकंठकीरक्षाकरो २२ गजस्कंधजी कंधोंकीरक्षाकरो अरु विघ्न विनाशनजी स्तनोंकीरक्षाकरो अरु गणनाथजी हृदयकीरक्षाकरो अरु हेरम्बजीउदरकी रक्षाकरो २३ भूधरजी पशवाडेकीरक्षाकरो अरु शुभविघ्नहारीजी पीठकीरक्षाकरो लिंग अरु गुह्यस्थान की सदा महाबली वक्रतुण्डजी रक्षाकरो २४ जानुजंघोंकी गणक्रीडा जी रक्षाकरो अरु मंडलमूर्तिवाले नितम्बोंकी रक्षाकरो अरु एक दंतमहामतिजी पैरघुटनोंकी सदा रक्षाकरो २५ क्षिप्रप्रसादजी बाहुवोंकी रक्षाकरो आशापूरकजी हाथोंकीरक्षाकरो पद्महस्त अरु शत्रुनाशकजी अंगुलि अरु नहोंकी रक्षाकरो २६ मयूरेशजी सब अंगोंकीरक्षाकरो जो विश्वकेव्यापकहैं अरु जो न कहाभीस्थान है

तिसकी धूम्रकेतुजी रक्षाकरो२७ आमोदकजी तो अगाडी रक्षाकरो
प्रमोदजी पिछाडी रक्षाकरो बुद्धीशजी पूर्वदिशा में रक्षाकरो अग्नि
कोणमें सिद्धिदायकजीरक्षाकरो २८ पुत्रजीदक्षिणमें रक्षाकरो अरु
नैऋत्यमें गणेशजीरक्षाकरो विघ्नहर्त्ताजी पश्चिममेंरक्षाकरो वाय-
व्यमें गजकर्णजीरक्षाकरो २९ उत्तरमेंनिधिपतिजी रक्षा करो ईश
नन्दनजी ईशान्यमें रक्षाकरो एकदतजी दिनमेंरक्षाकरो रात्रि अरु
सन्धियोंमें विघ्नहारीजीरक्षाकरो ३० अरु राक्षस,असुर,वेताल,ग्रह
भूत,पिशाच इनसे पाश अंकुशधारीजीरक्षाकरो अरु रज सत्व तम
अरु स्मरण ३१ अरु ज्ञान,धर्म, लक्ष्मी,लज्जा, कीर्ति,दया, कुल
शरीर धन अरु धान्य,घर,स्त्री,सुत अरु सखाजनोंकी३२ सबशस्त्र
धारीजी रक्षाकरो अरु मयूरेश्वरजी पुत्रपौत्रोंकी रक्षाकरो कपिल
जी बकरीभेड़ोंकी अरु विकटजी गऊ बैल घोड़ोंकी रक्षाकरो ३३
मरीचिजीबोले कि जो बुद्धिमान् इसे भोजपत्रमें लिखके कंठमेंधार
ण करे तो तिसको यक्ष,राक्षस, पिशाचोंसे भयनहीं होताहै ३४
जो इसेतीनों सन्धियोंमें जपे तो लोहसार सरीखे शरीरवाला होय
अरुजो यात्रासमयपढ़े सो निर्विघ्नतासे फलकोप्राप्तहोवै ३५ अरु
जो युद्धकालमेंपढ़े सो निश्चयजयको प्राप्तहोवै अरु मारण उच्चाटन
आकर्षण स्तम्भन मोहनकर्ममें ३६ जो सातवेरपढ़े इकईसदिनतक
तो वो भक्त तिन२ के फलको निस्सन्देह प्राप्त होवे ३७ अरु जो
इकईसवेर इकईसही दिनतकपढ़े तो वन्दिघरमेंपड़े राजासेमारणीय
मनुष्यको भी शीघ्रछुड़ाताहै ३८ अरु जो राजाके दर्शनसमय इसे
तीनवेरपढ़े सो राजाको वशकरके और मंत्रियोंको अरु सभाओंको भी
जीते ३९ ये गणेशजीका कवच कश्यपजी धारके मुद्गलजी के अर्थ
कहागयाथा अरु मुद्गलजी महाऋषि मांडव्यजी से इसे कहा ४०
अरु तिन्होंने हमको कृपा करके ये सिद्धिदायक कवच कहा है सो
भक्तिहीन को न देना शुभभक्तजनों को देना चाहिये४१ मरीचिजी
कहतेहैं कि इसकवचसे इसकी हमने रक्षाकरीहै सो इसको राक्षस
असुर,भूत,वेताल, दैत्य, दानव इनसे उपजी पीड़ा कभी भी नहीं

नईहोगी ४२ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें गणेशक० इस नाम से पचासीवांअध्यायहुआ ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

श्रीगणेशजीको भूमिमें बैठाना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले तब तो गौरीजीने नमस्कार करके मरीचिजीके गोदमेंसे बालककोलिया अरु तिनकी आज्ञालेके अत्यन्तहर्षितभई निज घरमें आई १ वे भी आज्ञाले शिवजी को नमस्कारकर निज आश्रमकोगये फिर तो गौरीजी ने सुन्दरमुहूर्त अरु शुभदिन में इन गणेशजीका भूम्युपवेश किया अर्थात इन्हें भूमिमेंबैठाने २ सो कि गौतमादि मुनियोंको बुलाकर तिन्हेंबैठाय तिन सबोंको आपगौरी जी दण्डवत् प्रणाम करतीभई३ अरु सारेदेवता वहां नानाभेंटहाथ लिये अरु गण अप्सरा गन्धर्वयेभी सबआये ४ तो गौरीजी तिन्हें बैठाय नमस्कार करकेबोलीं कि हे द्विजश्रेष्ठो तुम सबमुनियांसहित विचारके ये सस्कारकरो ५ तो सारे मुनिबोले कि आज त्रयोदशी गुरुवारहै अरु रेवतीनक्षत्रहै तिसमेंआजही ये महाउत्साहकरना६ तब तो गृत्समदजीने शीघ्रही भूमिमें अनेक रत्नरु भूमिमें बिछायके रत्नोंसेयुक्तभी शालामंडपबनाय ७ अरु गणेशपूजनपूर्वक हवनकरके सुन्दर वस्त्रबिछे तिसपे गणेशजीको बैठारे ८ अरु सुहागिन स्त्रियां सहित आदरसे तिनकी आरती उतारी जो स्वशान्ति सूहम देखे अरु अनेक आभूषणोंम दीतिभई ९ तो वे सबगन गौरीजीअरु जी को अरु गणेशजीको सुन्दर वानोसहित भक्ति पगयणभये भटदेते भये १० फिर गौरीजीभी स्वजन्य सुवर्णादिदानसे ब्राह्मणोंकोपूजती भई अरु तिनसबोंकेलिये आशीर्वादके रक्षनोंको गणेशजीपेछोड़े११ अरु कन्यासहित मुनिस्त्रियोंका पूजा तो वे प्रसन्नभईबोलीं कि तेरे समानधन्य कोईनहीं नहीं है १२ अरु ऐसा तेरा बालक महिना प्रभी धन्यहै ब्रह्माजी बोले ऐसे सब लोगोंके देखते महासुर १३ आकाशतरके कान जिसके ऐसा (व्योमासुर) जो अनेकमायावान्

जिसके बलसमान त्रिलोकीमें कोईभी न भया १४ ऐसाबोलाहारेपर के आमकेवृक्षमें जो वृक्ष सैकड़ों हाथियोंसे न भेदाजावे अर्थात् नहीं टूटे अरु प्रलयके पवनसेनगिरे १५ ऐसे वृक्षकेभीतर वो (व्योमासुर) मायाकरके चढ़गया जैसे दुष्टचेष्टावाले जनमें देखने के वशमें पि- शाच चढ़जावे १६ सोतिसवृक्षको हिलाताभया जैसे प्रलयमेंपवन फटकारता हो तो वृक्ष गिरनेके भयसे सब मुनीश्वर भी आवे अरु बोले कि विनवायु ये भारीवृक्ष क्योंकंपताहै ऐसेकहते २ ही तिन्होंने वृक्षटूटनेसेभया चटर२शब्दसुना१७।१८तौवे गणस्त्रियें सब भगगये अरु आतभई बालकजीको भूलकर गिरिजाजीभी भगगई १९ अरु वो वृक्षबालकजीपै गिरा तो तिनकरके हाथसेहता सोटूकहो भूमि मेंगिरा २० जैसे घनकीचोटसे छिलपैधरी सुपारी चूर्णहोजावे तब फिर पत्तोंसहित तिसकी डालियें आकाशमें भ्रमतीभई २१ वोतिन डालियोंके पड़नेसे कईमुनियोंके आश्रमगिरे जन सब भगगयेपत्तों सहित डालीपटी २२ फिर दुष्टव्योमासुरभी विनप्राणभया गिरा मुखफाड़के लोहूउगिलता वो भी सौटूकहोगया२३ फिर वो वे सब जनस्त्रियें बालकजीके पासआये सो तिनगणेशजीको पहिलेकीनाई चेटदेखे २४ जो सुमेरुकीनाई निश्चल स्वस्थ तब वो सबोंने आ- श्चर्य्यकिया कि पांचवर्षके बालकने महाबल पराक्रमवाला२५देख वृक्षसहितलीलासेहीसौटूककियागया अरु गौरीजीतबहाय२पुका रती निजसुतके पासदौड़ी २६ तो मुनिजनतिसे बोले कि तेरेपुत्रने ही दैत्यकोहताहै फिर तिसने बालकजीको हिमाचल पर्वतकी नाई निश्चलदेखे २७ वो तिन्हें उठायगोदमें बिठायके हर्षसेदूधपिलाय अरु मरीचिजीके वचनका स्मरणकरती महेश्वरजीकी प्रशंसाकरती भई२८बोली कि जिसेसदाईश्वररक्षाकरैं तिसेनेमारताहै सोआप ही दीपक में पतंगकीनाई मरजाताहै २९ फिर तो मुनि अरु सब स्त्रियेंनिज २ स्थानकोगये फिर कईगणआये अरु तिसके सुतकी कुशलपूछनेलगे३० बोले कि हेमाता तू धन्यहै जो यहतेरासुत ऐसे संकटमेंरखा दुष्ट आपही विलीन होजाते हैं साधु जन कहीं नहीं

दुःखीहोते ३१ फिर शिवाजीने सबको नैवेद्यबाटके सबको आज्ञादई
तो वे प्रसन्नभई निज २ घरकोआई ३२ जो भक्तिमान मनुष्यइस
पवित्र आख्यानकोसुने सोकहींनहीं पीडितहोवे अरु सब ठौर नि-
र्भयहोवे ३३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड भूमिमेंउपवेशनइस
नामसे छियासीवां अध्याय समाप्तहुआहै ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय॥

कमठासुर के वधका वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि व्योमासुरकीबहिन जो छिनछिपेअमावसके
दिन जन्मी क्षुधासे आतुरभई १ तो महाभारी सोमहिषोंको खागई
थी विकरालबालोंवाली लम्बेहोठ जिसके तालसी नासिकावाली
कन्दरा के जैसामुख जिसका २ह ऊर्के २ जैसे दांतोंवाली कुवेसे नेत्र
जिसके कानोंकेघिरावसे सयुक्त भारीस्तनोंवाली महाभयानकभूमि
में लटकेकेशोंवाली ३ लम्बीभुजा जिसकी गम्भीरनाभिवाली गोहके
समान कठोरखाल जिसकी तो वव लोग सो भैंसे खानेमें ४ यथार्थ
करके इसदुष्टभाववालीका नामभी प्रकट (शतमहिषा) ऐसारखते
भये ऐसी वो तिसभाईके दुःखसे दुःखितभई तिसकेहन्ता गणेश
जीकेपासआई जो भाईका प्यारकरनवाली ५ सो अत्यन्तसुन्दर सारे
शरीरसे दिव्यहोकर जो नानाआभूषणों सहित गौरवर्णवाली अरु
षोडशवर्षकी ६ सो सोलह शृङ्गारकरके कटाक्षसे सबोंको मोहती
वो दुष्टभावकरके गिरिजाजीके उत्तमभुवनको आतीभई ७ तोपहिले
प्रणामकरके गौरीजीको आदरसे बोली कि मैं धन्य २ हूं सब वा-
ञ्छितको प्राप्तभईहूं ८ जो तुमसबजगमाता शुभसर्वैश्वर्य ९ जगत्
के मोहनेमें चतुरतुममें किसी पुण्यसेदीखीहो ब्रह्माजीबोले तिसकी
वाणीसुनके गिरिजाजी तिससे यह कहतीभई बाले कि सुंदरी २
तेरेदेखनेसे मैं प्रसन्नभई १० तू किसकीस्त्रीहै कहांसे आई अरु हेश्रेष्ठ
कामिनी तू किसलियेआईहै मैं तेराकाम पूर्ण करूंगी तू मेरे आगे
सत्य २ कह ११ तो वो बोली कि मैं बहुतकाल वियोगसे दुःखित

जिसके बलसमान त्रिलोकीमें कोईभी न भया १४ ऐसाबोद्धारेपर के आमकेवृक्षमें जो वृक्ष सैकडो हाथियोंसे न भेदाजावे अर्थात् नहीं टूटे अरु प्रलयके पवनसेनगिरे १५ ऐसे वृक्षकेभीतर वो (व्योमासुर) मायाकरके वडगया जैसे दुष्टचेष्टावाले जनमें देखने के वश्ते पिशाच वडजावे १६ सोतिसवृक्षको हिलाताभया जैसे प्रलयमेंपवन फटकारता हो तो वृक्ष गिरनेके भयसे सब मुनीश्वर भी आये अरु बोले कि बिनवायु ये भारीवृक्ष क्योंकंपताहै ऐसेकहते२ही तिन्होंने वृक्षटूटनेसेभया चटर२शब्दसुना१७।१८तोवे गणस्त्रियें सब भगगये अरु मातभई बालकजीको भूलकर गिरिजाजीभी भगगई १९ अरु वो वृक्षबालकजीपै गिरा तो तिनकरके हाथसेहता सोटूकहो भूमिमेंगिरा २० जैसे घनकीचोटसे शिलपेधरी सुपारी चूर्णहोजावे तब फिर पत्तोसहित तिसकी डालियें आकाशमें भ्रमतीभई २१ तोतिन डालियोंके पड़नेसे कईमुनियोंके आश्रमगिरे जन सब भगगयेपत्तोसहित डालीपडी २२ फिर दुष्टव्योमासुरभी विनप्राणभया गिरा मुखफाडके लोहूउगिलता वो भी सोटूकहोगया२३ फिर तो वे सब जनस्त्रियें बालकजीके पासआये सो तिनगणेशजीको पहिलेकीनाई बैठेदेखे २४ जो सुमेरुकीनाई निश्चल स्वस्थ तब तो सबोंने आश्चर्यकिया कि पांचवर्षके बालकने महाबल पराक्रमवाला२५दैत्य वृक्षसहितलीलासेहीसोटूककियागया अरु गौरीजीतवहाय२पुकारती निजसुतके पासदौडीं २६ तो मुनिजनतिसे बोले कि तेरेपुत्रने ही दैत्यकोहताहै फिर तिसने बालकजीको हिमाचल पर्वतकी नाई निश्चलदेखे २७ तो तिन्हें उठायगोदमें बिठायके हर्षसेदूधपिलाया अरु मरीचिजीके वचनका स्मरणकरती महेश्वरजीकी प्रशंसाकरती भई२८बोलीं कि जिसेसदाईश्वररक्षाकरैतिसेजो मारा चाहे सोआप ही दीपक में पतंगकीनाई मरजाताहै २९ फिर तो मुनि अरु सब स्त्रियें निज २ स्थानकोगये फिर कईगणआये अरु तिसके सुतको कुशलपूछकेदेखके३०बोले कि हेमाता तू धन्यहै जो यहतेरासुत ऐसे असुरसंघपा दुष्ट आपही बिलीन होजाते हैं साधु जन कहीं नहीं

दु खीहोते३१ फिर शिवाजीने सबको नैवेद्यबांटके सबको आज्ञादई तो वे प्रसन्नभई निज २ घरकोआईं ३२ जो भक्तिमान मनुष्यइस पवित्र आख्यानकोसुने सोकहींनहीं पीडितहोवे अरु सब ठौर नि-र्भयहोवे ३३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड भूमिमंडपवेशनइस नामसे छियासीवां अध्याय समाप्तहुआहै ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय॥

कमठासुर के वधका वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि व्योमासुरकीबहिन जो दिनछिपेअमावसके दिन जन्मी क्षुधासे आतुरभई १ तो महाभारी सोमहिषोंको खागई थी विकरालवालोंवाली लम्बेहोठ जिसके तालसी नासिकावाली कन्दरा के जैसामुख जिसका२हल्केर जैसे दांतोंवाली कुवेसे नेत्र जिसके कानोंकेविरावसे सयुक्त भारीस्तनोंवाली महाभयानकभूमि में लटकेकेशोंवाली३लम्बीभुजा जिसकी गम्भीरनाभिवाली लोहके समानकठोरखाल जिसकी तो तब लोग सो भैंसे खानेसे४ यथार्थ करके इसदुष्टभाववालीका नामभी प्रकट (शतमहिषा) ऐसारखते भये ऐसी वो तिसभाईके दु खसे दुःखितभई तिसकेहन्ता गणेश जीकेपासआई जो भाईका प्यारकरनवाली५सो अत्यन्तसुन्दर सारे शरीरसे दिव्यहोकर जो नानाआभूषणों सहित गौरवर्णवाली अरु षोडशवर्षकी ६ सो सोलह शृङ्गारकरके कटाक्षसे सबको मोहती वो दुष्टभावकरके गिरिजाजीके उत्तमभवनको आतीभई ७तोपहिले प्रणामकरके गौरीजीको आदरसे बोली कि मैं धन्य २ हूं सब वां-छितको प्राप्तभईहू ८ जो तुमसबकीमाता शुभसर्वदेवमय ९जगत् के मोहनेमें चतुरतुमसर किसी पुण्यसेदीखीहो ब्रह्माजीबोले तिसकी वाणीसुनके गिरिजाजी तिससे यह कहतीभई बोलीं कि खडी हो२ तेरेदेखनसे मैं प्रसन्नभई१०तू किसकीस्त्रीहै कहासे आई अरु हेश्रेष्ठ कामिनी तू किसलिये आईहै मैं तेराकाम पूर्ण करोगी तू मेरे आगे सत्य २ कह ११ तो वो बोली कि मैं बहुतकाल वियोगसे दुःखित

शरीरसे अतुलितरुधिरझरा फिर वो कच्छप उडनेको चाहा पर न समर्थभया ४६तब तो तहा सारे गण आये जो तहांसुखमें सोयेथे अरु बोले कि येक्या अरिष्टभया जो बेरबेरभूमिकम्पतीहै अरु सारी बालसखियेंगौरीजीकेपासगई अरुबोलीं कि हेमातउठ तेरेबालकको कोईलेगयाहोगा अरु वोमराहोगा४७।४८तोगौरीजीतहाशीघ्रआई अरु बालकजीको बाहरनिश्चलदेखे तोतिन्हेंउठानेकोतयारभई४६ तो तिन्हेंभूमि गोलसरीखेभारी समझकर तहाहीं ठहरी वेमन अर्थात् उदासभई तब तो बालकजी ने शीघ्रतिसे दबाया तो वो मरगया ५० तबतो तिसने दशयोजनफैले तिसमुखफैलाये(कमठासुर) दैत्यको देखा जो बहुतसा रुधिर उगलता ५१ तो तिसने शीघ्रही आश्रम अरु अनेक वृक्षोंको चूर्णकिये फिर गौरीजीने बालकजी को उठाके हर्षसे स्तन पिलाया ५२ अरु शोचा कि नाना माया करते असुरोंकाभेद जानानहींजाता शिवजीके प्रसादसे अब मुझको फिर पुत्र प्राप्तभया ५३ जो कि ये यमराजसेभी बलवान् थे कमठासुर हतागयाहै फिर तिसकीसखी अरु गण तहापहुंचे अरु बालकजीमें कुशल पूछनेलगे ५४ तो क्षेमहीहै ऐसे गौरीजीने तिनसबोंकोकहा फिर गणोंने विसेटूकर करके दूरफेंका ५५ अरु देवतोंने नित्येपुष्प बर्षाये जो इस परम आख्यानको सुने या सुनावे सो सबअरिष्टोंसे छूटकर सबकामोंको प्राप्तहोवे ५६।५७ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डमें कमठासुर बध इसनामसे सतासीवां अध्याय हुआ ८७॥

अट्टासीवां अध्याय॥

सिन्धासुरकी मोक्षहोना वर्णन॥

व्यासजीनेपूछा कि हेब्रह्मन् हमने तुम्हारेमुखमे आश्चर्यचरित्र श्रवणकिये सो कि जो पापहारक अरु गणेशजी करके कियेगये १ अब भी हम सुनने की इच्छाकरतेहैं हेब्रह्मवेत्ताजी हमारामन सुनने से नहींहटता इससेआप बालगणेशजी का और भी चरित्र आदर पूर्वक मुझसे रहिये २ श्रीब्रह्माजी बोले कि हे व्यासजी तुम फिर

और गणेशजीकी कथासुनो जो वेदविहित सुन्दर पापोंकी हरने-
वाली अरु धर्म मोक्षदाता ३ सो कि आठवें महीने मध्याह्न समय
गौरीजीघरमें उष्णपनसे पीडितभई पुष्पवाटिका में आई ४ जहां
ये असोंगया चन्दनवृक्ष, कटहर, अरु वहेंडे, अरु चम्पा, चमेली,
जूही,इमली, अरु नीमवृक्ष, ५ अरु जहां देववृक्ष गहरी छयायुक्त
जहां रमणीय ठण्ढा शीतलजलवाला सरोवर जो कनलशोभित ६
तहां स वींसिलाये श्रेष्ठबिछाये मचेपर बालकजी सहित गिरिजाजी
निःशङ्कमनसेसोई ७ जोसखियों करके पापाणमुष्टि अर्थात् नगजड़ी
डंडीवाले वालव्यजनसे वीजित अर्थात् पवन करीगई सोवो जितने
निद्राको प्राप्तभई तितनेही महाबलीदैत्य ८ जो (तल्पासुर) ऐसे
विख्यात सो पवनरूप तहांप्रवेशभया सो मचेकेभीतर व्याप्तहोकर
तिससमेत आकाशमें उडा ९ सो तिसके शब्दसेडरी दोनो सखियें
भूमिमेंगिरीं तब तो मचपेंस्थित गौरीजी अत्यन्त पुकारनेलगी १०
सो कि वो आकाशहीमे बिलापकरतीभई कि हे शङ्करजी दौडोदौडो
हे देवजी मैं क्या अपराधकिया आपका मुझेक्यों छोड़तेहो ११ ये
अत्यन्त वलवालादैत्य आकाशमेंलिये दौडाजाताहै तुम समर्थभये
पराये हाथगई कान्ताको कैसेछोडतेहो १२ इसपुत्रके होनेसेमुझको
नाना दुःखभया अब पुत्रसहित मेरी इस दैत्यमे मृत्युही रचीगईहै
क्या १३ जो येही न जन्मता तो मैं कैसेपीडाको प्राप्त होती ब्रह्मा
बोले महामनस्वी उमासुतजी तिसका ऐसा पुकारनासुनके तब वा-
रम्वारगर्जे सो कि मेघकेसमान दिशोंको भी गोंजाते गर्जना करते
भये तो तिससे पर्व्वत,वन,खान सहित भूमिकंपितभई १४। १५
तो तिसेदेखके सब प्रमथ आदि गणोंके शोचकरते बालकजीने पैरके
प्रहारसे तिसमचको तोडा१६ तो शीघ्रही प्राणोडरे अरु चाकाग
सोंटक सरीखा होगया अरु वो मचा टूकरहोके भूमिमें गिरा १७
फिर तल्पासुरका दर्शनभया तो बालगणेशजीने तिसे पकड़ा अरु
एकहाथमें ठौलाकरके माताकीर्यभाई १८ जैसे मेघमेंछूटी जलकी
बूंदको पपीहा चोंचमें क्षणमेंलपकलेवै वो तिमे पञ्चेपै पछाकर अरु

वायँहाथमें तिसकी शिखापकड़करके १६ फिर तिसे गणेशजी बल
से भूमिपर छोड़तेभये फिर तिसके शरीरपर कमलआसन लगाकर
योगीकीनाई स्थितहोतेभये २० अरु वो भूमि में पड़ा अरु अत्यत
बलसे मसलागया वो दैत्य मुखमें बेर२ रुधिर उगलता प्राणछो-
ड़ताभया २१ फिर वो दैत्य जनोंको इक्कईशयोजन फैला देखपड़ा
जो वृक्ष पाषाण अरु आश्रम वर्गको चूर्णकरता २२ फिर वो गण
अरु सवसखा जनोंने तिनबालकजीको भी देखे तो वे सबबोले कि
हे गौरि तुम्हाराबालक कुशलबलवाला खेलरहाहै २३ पर तिसने
भ्रांति से धरती आकाश इनको न जाना तो वे बोले कि हे सखी
तुम सावधान मन होवो २४ तिसबालकनेही भारी रूपधार
के इसदैत्य को हताहै फिर तो गौरीजी नेत्रखोलके फिर तिनगणेश
जीको श्रेष्ठबालक स्वरूप भये देखती भई २५ ब्रह्माजी बोले कि
तिनके वचनसे प्रतिबोधितभई गौरी तबतो तिसदैत्यको अरु बाल
गणेशजीको देखतीभई २६ तो बोली कि मैंने ये उलटीबातदेखी ये
गढ़इकईशयोजनका महादैत्य इसबालकनेकैसेहतागया मुझ माता
के भ्रमसे ऐसा यह मेराजीवप्रद बालक अवतार भयाहै २७ ऐसे
कह बालकको लेके शांतिकर्म करवातीभई अरु दानदेके बालकजी
को स्तनपान दिया २८ तो वे सब तिसका कौतुक देखके हर्षयुक
प्रशंसा करतेभये इतनेहीं में महा असुर ने घोर शब्द किया २९
दुन्दुभीके जैसा वो आपभी (दुंदुभी) नामसे प्रसिद्धथा जिसकेहाथ
के घातसे धरती फटजाती थी ३० अरु तिसके आकाशसरीखे ऊंचे
देहसे सूर्यआढकगये फिर वो गणबालकस्वरूप करके गौरीसुतजी
को बुलावाभया ३१ कि यहांसेचलो खेलेंगे तो वेभी तभीचले वो
तिन्हें निजगोदमें बिठाकर असुर ने विषफलदिया ३२ अरु बोला
कि हे बालक तू इसफलको शीघ्र खाले मैं बड़ीदूर से लायाहूं यह
जरामृत्युहारी फलहै ३३ वो वेभी तिसके दुष्टभावकोजानते तिस
से फललेतभये तो खालिया अरु निर्भयभये औरभी मांगनेलगे ३४
ब्रह्माबोले महेश्वरजी की इच्छासे अमृत तो विषहोजावे अरु विष

अमृतहोवे फिरगणेशजी तिसोंछिनसे उठे अरु तिसको छातीपकड़
कर ३५ अरुतिसके गोडोपर पैररखकर हाथों से तिसकी शिखा
पकडलई। अरु इतर हाथोंसे मूछ दाढ़ी पकडके लीलासे तिसेझु-
लानेलगे ३६ अरु पृथ्वीमण्डल भरके भारसहित तिसके गोडों पै
नृत्य करतेभये तोवो पीडितभया बोलाकि गोडोपरसे उतरजा ३७
तेरेभार अरु नृत्यसे मेराशरीर अत्यन्त खेदितभया अवछोडछोड़हे
गिरिजासुत अपनेमैंस्थानको जाऊगा ३८ ब्रह्माजीबोलेऐसेप्रार्थनाकिये
गणेशजीने तिसेनछोडा तोदैत्यबलसे उठातो पहिलेसे अर्थात् उठते
हीभग्नदेहभया ३९ तो बालकजीने भी बलसे तभी तिसकेमस्तक
कोखींचा तोतिसका शिरभी गलेसे अलगहोके बालकजीकेहाथमें
शोभितभया ४० अरु तिसी क्षणमें सब पृथ्वी रुधिरसे गीली होती
भई अरु शिरकमलहाथलिये गिरिजा सुतजी खेलतेभये ४१ रुधिरसे
लिपाअंग जिनका तबतो गणोंने गौरीजीसे कहा तो तिसने आके
पुत्रको शिरहस्तलिये रुधिर सनेदेखे ४२ तो तिस शिरको दूरफेंक
के वस्त्रसे तिसका देहपोंछा अरु तिन्हे न्हुवा आपस्नान करके ह-
र्षसे तिने स्तनपिलाया ४३ तबतो गणा अरु सखियोंने बालकजीकी
कुशलपूंछी तो वो बोली कि शिवजीकी भक्तिसे परम कुशल बालक
परहै ४४ अरु मरीचि जीकी रक्षासे भी मेरे बालकमें कुशल है तब
तो तिनोने तिस दुष्ट दानवको दूरफेंका ४५ फिर हर्षयुक्त भयेसखी
गणनिज २ घरगये अरुबालकजी सहित हर्षभई गौरीजीभी निज
घरमें गई ४६ इतिश्री गणेशपुराण उपासना खण्ड में मचकादि
वध इसनामसे अट्ठासीवा अध्याय हुआहै ॥

नवासीवा अध्याय॥

कथा हेरम्बका कथहोना।

श्री ब्रह्माजी बोले तबतो दशवें महीने सूर्य्यजी के तीन मुहूर्त
प्राप्तये अर्थात छै घडी दिनचढे हुए २ चिमलते चलते गिरिजासुत
जी १ पैरोंसे कुछ हटाते चलते अरु कुछ मुत्त २ अर्थात् क्याया

बोलते लोटने अरु नाचते अरु रोते अरु कभी शिवाजीको देखके तिनके पीछेलगे चलेजाते तब ऐसे इन बालगणेशजी को देख के शिवाजी हर्षको प्राप्त होतीथीं इतनेही में अजगर नाम दैत्य देख पड़ा जो दृष्टिसे अग्निकण छोड़ता लोहमारसरीखा शरीर जिसका कठोर ४ अरु जीभ निकालता महापर्वत को निगलता सा अरु जो छलतले बैठावैर २ दो जीभें निकालता ५ तो बालक जीने बालपनेमें तिसेजापकडा तो वो तिन्हें शीघ्रही मुखकेभीतर लेगया६ फिर भीत होगये इसवायु भ.जी सर्पने मुख मूदलिया तो गौरी जीने आँगनमें तिने न देख तो व्याकुल मनभई ७ कि बालक यहां खेल रहाया न जाने किसने लियाहुवा ऐसे कहपरमदु खीभई शो- चती निजमस्तक पीटनेलगीं तो तिसे गणोंने रोकी कि हे मातुम दु खीमतहोवो अत्यंत बलवान् बालकके प्रभावको सैकड़ों वेर कथा नहीं जानाहै ६ फिर बालगणेशजी भी तिसके उदरमें बधें तो तिस दैत्यको श्वासरोकके पुच्छ पर्यंत चलाया १० तबतो तिसके प्राण भी नेत्रोंसे रुधिर सहित निकले फिर गणेशजी तिसका उदरफाड़ कर बाहरआये ११ अरु रुधिर भीगेखेलरहे जैसे फूलाकेशुही क्यों न हो तबतो निज अगुली चाटने तिनेगण देखके १२ ऊंचेसे गिरि- जाजीको पुकारे कि ये बालक निकल आया इसके मुखसे इस दुष्ट अजगर को मारकर १३ ब्रह्माजी बोले तिसके मरने के अनतर गौरीजी शीघ्र गणेशजी को लेकर शीघ्र न्हवाये अरु लाड़करके स्तनपिलाया १४ अरुबोलीं किबच्चे तू कहा चलागया तुहु बिन छिन भी वर्ष होगया फिरतो सो योजन फैले तिस अजगरासुरको देखा १५ जो दुष्ट भयानक मुखवाला अरु वेर २ रुधिर उगल रहा अरु जो वृक्षसमूह अरु घरों का गिरा कर गिरा १६ तौ गौरीजीबोलीं कि इस स्थानमें कितनेक राक्षस होंगे कितनेही इस बालकके बलसेमरचुकेहैं१७फिरतोतिसमहाअसुरकोगणोंनेदूरफेंका फिर ग्यारहवें महीने शिवाजी द्वारेपै आईं १८ जो सखियों सहित बालगणेशजीके बहुतसे कौतुक देखतीथीं सो किये किसीके मुखको

चूमतेथे अरु चुमातेथे १६ अरु किसीके पीछेहोके आय तिसकी आंखें मींचतेथे अरु माताकी अरु ओर किसीकी भी वलमें चूची जा पीतेथे २० अरु कइयों को वस्त्रसे मुखढकके डगतेथे अरु मुंह वाल नाक अरु आभूषणोंको खींचतेथे २१ अरु अपने परायोंको देखके वेप्रकट अर्थात् कवाई वानीसे बोलते थे इतनेहीमें दुष्ट दैत्य [शलभासुर] २२ जो ब्रह्मादिको करके अवश्य पर्वत सोरखे कंधोंवाला आकाश को फोडता अर्थात् अतिऊंचा मस्तक जिसका जैसे नीलबादल २३ गुडहलके फूल जैसे लाल २ नेत्रोंवाला आकाश स्पर्शी सींग जिसके ऐसा त्रिभुवन को भ्रमता भया सो वालकजीके निकट आया २४ तो तिसे पकडने वालक जी जातेथे जहांजहां वो जाताथा ऐसे महा वेगवाले दोनों वहुत कालतक दौडते रहे २५ तब तो वालक जी थकितभये तो क्रोधकरके तिसकेपास दौडे अरु तिस अति वलवान् शलभ दैत्य को पकडलिया २६ तो तिसने पखें हिलाई जैसे हाथमेंशिकरा फडकताहो अरु वो शलभासुर तिनवालगणेशजी को पैरोंके प्रहार करकेवाधा करताभया २७ तब तो तिसने निज कुटिल नयन पसार कर वालक जीको देखे तो तिनोंने तिसे छोडा औ फिर पकडा २८ तिसे माताको दिखायाफिर धरतीपर फटकारा तो शिवाजी दयामें भरीतिने क्रूर मनवालेजानके बोली २६ हे वालक जीवकाघात नहींकरना इससे इसप्राणीको छोड तब तो वालकजीने तिसेफिर वलमें शिलपर फटकारा ३० तो तिसके सौ टूकभये औ वो भूमि पे गिरा आकाशको गर्जता औ वृक्षपरतोरणों का गिराता भया३१ अरुमुखसे वहुतरुधिर उगलता दशयोजनमें फैला आश्रम वृक्षोंको चूर्ण करताभया तबतो गिरिजाजी तिन वालकजी को उठा लाईं अरु वैठाया दूध पिलाया कुछचटाया तोसखियें तिनको अरु तिसमरे असुर को देखकर ३३ गिरिजाजीसे अच्छा २ कुशल भई ऐसेवोलीं। फिरतो गिरिजा औ वेसखियें हर्षयुक्त घर में आती भईं ३४ औतिनकी आज्ञासे वहां गणोंने तिस दैत्यको दूरफेंका औ तबदेव गणोंने वाल गणेशजीपे पुष्पोंकी वर्षाकरी ३५ ॥ इतिश्री

गणेशपुराणउपासनाखण्डमें शलभासुरवध इसनाम से नवासीवां अध्याय समाप्त भया है ॥

नव्वैवां अध्याय ॥

मेपानुर का मोक्षलीला वर्णित है ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि तबतो बारहमहीने गिरिजा सखियोंसहित बैठी तिन अद्भुतसजे बालगणेशजीको गोदमें बिठाकर १ जोकरोड़ सूर्य्यके समान कांतिमान औ करोड़ों गहनोंसे अलंकृत फिर तिनके नृत्यदेखने में गौरीजीको भारीचाव भया २ तोबालकों की औशिव जीकोभी इच्छाको जानकर बाल गणेशजी थेईथेई पुकारके नाचने लगे ३ तोतिसका शब्दसुनके शिवजीभी नाचनेको आये,तोशिवजी को नाचनेदेख विष्णुजीभी नाचे फिरतो इन्द्रआदि देवताभी तहां नाचने आये फिर जैसे जैसे वे बालकजी नाचते थे तैसे तैसे वेभी नाचतेभये ५ औ जोजो भाव गणेशजी दिखाते तैसाहरही वेभी दिखातेथे तब तो मनुष्य पशु पक्षियं वृक्ष गौ यक्ष राक्षस सर्प ६ मुनीश्वर मनु अरु राजा अरु चौदो भुवन अरु ब्रह्मांड स्वर्गोंमें स्थित जो थे सो जड़चेतन सब ७ सो कि गणेशजी के प्रभावसे बालक मिससे सबभूतल नाचताभया अरु मुनि देवताओंकी स्त्रियें गिरिजा जीके साथ नाचतीभई ८ पैंजनके झनकारोंसे अरु घूघरोंके शब्दसे तो तिनकेपैर फटकारनेकेशब्द दिशा विदिशा ९ आकाशपरु पर्वतहैं मुनिव्यासजी तिनसमान शब्दसहितभये धरतो शेषजी कंपित भये १० अरु सूर्यचन्द्रमा तारागणने भी गोजे तो नृत्यका अत्यंत होना अर्थात् बहुत बधान देखकर ११ गौरीजीने बर्जे तो जैसे गौरी नेकहा सो विनायक जीने नहींकिया इतनेमें [नूपुर] ए सान्निध राक्षस जो कठोर महाकाला देहवाला १२ पातालमें रहगयाजिसके अनागतक ऊंचा महामस्तक जिनका सो यें दुष्ट सूक्ष्मरूप करके बालक जीके पैरके भीतर प्रवेशभया १३ तो बालकजीने मायासे तन अविचलवाले दैत्यकोजाना जैसे मदवालेहाथीको तो गिरिजा

जीने बालक जीको गोदमेलिये १४ तो वो तिनके सारी पृथ्वीके
समान बोझसे पीडित भई गौरीबोली कि तू अत्यत भारी कैसे हो-
गयाहै १५अभीतो जन्माहीहै सोमेरे गोदसेउतर हेबालकतेरेभारसे
मेरेप्राण निकल जावेंगे १६ ब्रह्माबोले तबतो माताका वचन सुन
बाल गणेशजी बलसे तिसकी गोदसे उतरे अरु दोनों पैर फटकार
ते भये तबतो वो इन्हेंदेख अति दुःखित भई १७ फिर तो वो दैत्य
तिनके पैरोंसे निकलकर आकाशमें पक्षिवत् भ्रमता भया तो तिस
करके सूर्य ढकेगये सारीभूमि अंधेरेसे आच्छादितभई १८ फिर वो
दुष्ट अचानकही पृथ्वी पै गिरा अरु सोटूक होगया तबतो वे देवता
मुनिये परम आनद में भरे १९ तो बालरूप अविनाशी परमात्मा
ऐसे इन विनायकजीकी स्तुति करते भये देवऋषिये बोले हे देव
जी हम आपके स्वरूपोंको नहीं जानते न आपके तेज २० औ
दैत्यदानवनाशक अनेकप्रकारकी मायोंको जानोजो चरणसेफटका-
रा दैत्य सूर्य मडल लोपकारी २१ सो आकाश में अत्यत भ्रमके
पड़ा अरु सो टूक होगया प्राणछोड़के अरु आश्रम वृक्ष पर्वत इन
कोफोडकं२२औ आपकेनृत्यकोदेखकेसबनाचनेलगगयेब्रह्माजीबोले
तबतो वे सारे इन विश्वरूपी बाल गणेशजीकी पूजा करते भये २३
फिर नृत्य उत्सव होचुके गौरी गौतम आदि मुनियोंको बिदा करके
अरु बालक जीको लेलाडकरके स्तन पिलातीभई २४ सबनियों को
भी भेजकर निजघरमें आई तिसपीछे फिर कभी मुनिबालकों सहित
वे गणेशजी खेलनेको घरसे बाहर निकले अरु वहां क्रीडाकरके
खेलनेलगे अरु वे जोडेसे अरु अनेक प्रकार से भी मल्लयुद्ध करते
भये २५।२६ अरु वे आपस में शिखा पकड २ के एकको एक गि-
रतेथे अरु शिरोंसे शिरमारते अरु गोडोंसे गोडे फटकारते २७ कों-
परसे कोपर अरु पैरसे पैर प्रहार करतेभये अरु वे आपसमें एक २
केपीठ अरु व घोपर सवारहोते २८औ लातोंकेप्रहारसे उदर मस्तक
में मारते लडते थे अरु कईबालकनीको गधपुष्प अक्षतादिकोंसेपूजतेथे
२९ औ कई तिन्हें निज आश्रममेंलेजाकर सुन्दरअन्नसेभोजनकरातेथे

अरु कई नमस्कार करते अरु शुभमाला पहिरातेथे ३० इतनेमें मेढ़ेका स्वरूपकरके सिन्धुकाभेजा दैत्य जिसेदेखके भयानक यमराजभी भय भीतहोवे ऐसा वो असुर जो पैनेतीखे धारवाले नखोवाला तिज खुरसे शत्रुओंको मारताथा ३१ तिसीने गिरुदको जीतके सबको बांधलियेथे तिसनेसबकोबांधलिये जोभयानक नेत्रवान भारीसींगोवाला भारी पर्वतोंको चीरता ३२ जो दुष्ट पुच्छप्रहारसे जीवोंको मारदेताथा अरु शृंगोंके घातसे वृक्षपर्वतों को उखाड गिराताथा ३३ जोबली मनुष्यों के पीछेलगा बलसेतिन्हें मारदेताथा ऐसावो असुर गौरी सुतकोमारो ऐसी कामना करके तिनके पासआया ३४ अरुपीछेसे दौड़के जोतिन्है मारता सोही वे बालगणेशजी तभीतिसके सींग हाथोंमें पकडतेभये ३५ अरु तिसकीपीठ पैसवारभये जैसे बालक अश्वपेचढे । तबतो कई मुनि बालक तिसकी पूछपकड़के खांचतेभये ३६ अरु कईतिसे डडे लकडियोंसे मारतेभये वोवोभी झुंझला करके तिन्हें पूंछफटकार के शीघ्र मारताभया ३७ तोवे पूछके प्रहार से पीडितभये शीघ्र भूमिमेंगिरे तोबालकगणेने तिसका बलदेखकेउठकर तिसे पकडा ३८ अरु बहुत देरतक भ्रमाकर धरतीपर फटकारा तो सहस्र प्रकारसे टूटेदेहभया वोअसुर शीघ्रही मरगया ३९ तौ तिसके परिणाम शब्दसे त्रिभुवन भयभीत भया सोमुख से बहुत रुधिर उगलता वोविकराल मुखफैलाकर ४० गिरा तबतौतिनमुनि बालकोंने गिरिजाजीसे कहाकि येमहा असुर जोहमें मारनेको आ याथा तिसेखेलते इस बलवाले तेरे सुतने माराहै । ब्रह्माबोलेतबतो देवी निजसुतको अरु तिसमरे असुर को देखके ४१।४२ परमआ श्चर्य्यमान के बालकजी को घरमेंला अरु इनपर जलसहित दही ओदन वारकर ४३ घरसे बाहर दूरफेंकतीभई फिरतिसे दूधपिला याअरु गणोंने तिसदैत्यके देहखण्डों को दूरफेंके ४४ फिर मुनियें मुनिस्त्रियें मुनिबालक । येसब गौरीसुतजीकी प्रशंसा करतेभये अरु देवतोंने पुष्पवर्षाकरी ४५ ब्राह्मण आशीष देतेभये अरु अप्सरा नृत्य करतीभईं ४६ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में आर्यजनर

वध होना इस नाम से नब्बेवां अध्याय समाप्त भया है॥ ९०॥

इक्यानवेवां अध्याय॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो दूसरेवर्ष अनेकबालकोंसहित बाल गणेशजी नानावृक्ष वेलयुक्त वाटिकामें खेलतेभये१ औ खजूरकट-हर के फलखातेभये औ अतिबल से तोड़तोडके तिनकोभी देतेभये २ तौ [कूट] नाम महाअसुर जो कूट मायाकारीदुष्ट तिनकीप्यास समय जानके वापी में विष ३ वोकुबुद्धी सबोंके हतनेकी इच्छाकर्के घोल देताभया। जिस विषके स्पर्शहोसे प्राणी क्षिन में मरजावे ४ जिसके उठे पवनसे भिंटेपक्षी गिरपड़ते तोतहां वोकूटासुर तिनका नाश देखना चाहके स्थितभया ५ फिरतो वेबालक अज्ञानसेजल पीनेको तहांगये तोसबोंने चुल्लुओं औ अञ्जलियोंसे तिसविषोदक को पानकिया ६ औ तहांसे मरे मच्छों को लेकर बाहर आये तो वेभी मरगये। रक्षकने गावमें तिनकी मृत्यु सुनादई७तब तो महा रौला करके सब नगरवाले हाथोंसे छातीपीटते औ कईपाषाणोंसे शिर फोडतेगये ८ तोतहां पुरुष स्त्री सबजनों में महाही हाहाकार भया। तिनका पुकारना सुनके गिरिजासुत जीभी ९ तिनसब पुर वाले बालकोंको सुदृष्टिसे जिवाते भये। औ क्रूरदृष्टिसे कूटदैत्यको मारकर भूमिमेंगिरातेभये १० तो तिससे टूटीपांच योजन विस्तृत वाटिकाको नगरवालोंने देखी औ कई भग गये औ तिन्होंने जल जीवोंको भी जिवाये औ वापीको विष रहित निर्मल जलवाली कर दई ११ तब तो वे सब अपने२ बालकोंको ले २ करके निज २घर आये १२ तबगिरिजाजी बालकको प्रशंसाकरनेलगी औ दुष्टना-स्तिक तिनकी निन्दा करतेभये १३ औ कई बोले कि इसके सगसे अरिष्ट नष्टहोतेहैं तब तो तीसरेवर्ष प्रातःकाल गिरिजासुतजी १४ दृष्टिनचाके बाहर गये तो मुनिबालक तिनके पीछेचले १५ तो वे आपसमें रात्रिके वियोगसे दुःखीभये मिलने लगे औ वे बोले कि हेदेवजी तुम्हें हमसदा सपने में देखते हैं औ तुम्हें न देखते हम को

रात्रियुगके समान होजाती है अब हम सारे आपके दर्शनसेही प्रसन्न
भयेहंगे १६ हे महाबलीजी अब हम जोड़े२ कर सुखसेखेलेंगे
तब तो आधेएकओर होकर औ आधेदूसरीओर१७ औ आकाश
भूमिको गाजाते आपसमें कीचकेगोलेमारतेभये औ हर्षसेयुद्धकरत
औ एकसे एक खेंचते १८ तो वे खेलते२ दूर किसी मुनिकेआश्रम
पर चलेगये तो तहां योजनभरचौडे सरोवरमें क्रीडा करतेभये१६
औ पहिलेकीनाईं जोडेमिले अंजलियोंसेजल उछालतेभये अरु बल
सेदूसरेके कन्धेपरचढ़के तिसेडुबोतेभये२०तबतोमच्छरूपकिये एक
दैत्य तिनमें खेलनेलगा सो हाथोंकी फटकारसे औ पूछसे तिनपर
जल छोडताभया २१ तो तिससे मले जलहानसे वे तीरपरआये तो
तीरपर गिरिजासुतजो तिसे देखके वो मत्स्यासुर तिनके निकटगया२२
सोमुख फैलाकर तिन्हें पकड तिनका पैरखींचनेलगा औ दोड२ऐसे
पुकारते तिनको अथाह जलमें लेगया २३ फिर वो महासुर
तिनके साथ बहुतकाल डूबारहा तो गिरिजा सुतको दुर्धदेख मुनि
बालक रोनेलगे २४ औ हाय २ करते कई हाय पीटहोठ [illegible]
जलमें जाके देखतेभये पर तिनको नहींदेखे २५ औ कई [illegible]
गिरिजाजीकी ताडनाके भयसे डरे भगगये औ कई बालक [illegible]
तिन्हें डूबे बतातेभये २६किहमसबकोसब तो छोडकेगणेशजीको [illegible]
लेगया ब्रह्माबोले तिनका वचन सुनके गौरीमूर्छित हो भूमिमें [illegible]
री २७ औ दोघडीमें सचेतहोकर रोतीबाहर आई नेत्रों से जलछ[illegible]
तो मस्तकसे छूटा अंचल जिसका २८ ऊंचे सासलेती अखटती [illegible]
मि पे गिरती तोकई सखियें निज१ राजनके शोच तिनके साथ[illegible]
२६ सखियों समेत गौरी शोचही तटके तीरपर आई औ मुनिजन
तिसवृत्तान्तको सुनके सरोवरपर आये ३० तो वे कई अगाध जलमें
उतरे पर वे तिन्हें नहींपाये फिरकई तिसमेंबोले कि हमारे भी बा
लक जलमें डूबेथे ३१ फिर मच्छमे पकड़े तिन तुम्हारे
तिन्होंने नहींदेखा तो तिनका ऐसा वचन सुनके गौरी फिर रोवे
लगी ३२ उमाजी बोली कि तिससबे सुन्दर सुतके बिन मेरे

जावेगे मैंने अति पुरुषार्थवान् ईश्वर अत्यंत क्लेशसे पायाथा ३३ जो चर अचरका स्वामी मायासे अतीत औ परम मायावी अरु अनंत करोड ब्रह्माण्डनेता संसार जनक ३४ ऐसे कहे२ के वेर२ हाथसे मस्तक पीटतीभई औ तिसेतैसी रोतीदेखके मुनिजन भी रोनेलगे ३५ तबतो दयावान् देवजो तिसका करुणा वचन सुनके आपभी मच्छ स्वरूपभये तो वे आपसमें लडनेलगे ३६ तो तिसे युद्धके घातसे जलजीव मर २ के तीरपर गिरे अरु वे आपसमें दाढोंसे डसते पुच्छ प्रहार करतेभये ३७ औ उदरसे उदरमें पीठसे पीठमें प्रहार करतेभये ऐसेबहुत कालसे वे पराक्रमसे घोरयुद्ध करके ३८ फिर मच्छरूप गणेशजीने तिसके मुखमें निजमुख प्रहारकिया तो वो टूटेमुख टूटेगर्व अरु फूटे नेत्रवान् भया ३९ तो जलमें भगा तिसके पीछेपीछे उमासुतजीभी चले सो वो जहांजहां गया तहां तहांहीं एभी पहुचे ४० कहीं तिसे छिपा देखके पुच्छप्रहारसे ताडा अरु तिसकी पूंछ मुखमें पकड़के गणेशजी बाहर ले आये ४१ अरु निजबोझ से तिसे चूर्णकिया फिर वेप्राणभये तिसेछोंडा जो मुखसे रुधिर त्यागता औ भारीशब्द करता ४२ तोतिसके भारीशब्द से त्रिभुवन कम्पित भया वे जलमेंसे निकले औ गिरिजाजीको भेंटते भये ४३ तो आनन्द भरी गौरीतिन्हें हर्षसे स्तन पिलावतीभई औ बोली कि तू मुझसे वे पूंछ के बालकों के साथ कहां चला गयाथा ४४ जोजो तेरेपर अरिष्टआताहै सो आपही नष्टहोजाताहै मरीचिजीकी रक्षा से औ जगदीश्वरजी की कृपासे ४५ तू क्याक्या चपलताकरता है मैंतेरी कैसे रक्षाकरूं हेप्रियपुत्र तेरेवियोग से मेरे प्राण जावेंगे ४६ ब्रह्मा बोलेकि तबतो मुनियोंने कहाकि हे प्रभो तुमबिन हमदुःखी। अब तुम्हारे दर्शनसे सुखीभये हैं ४७ तो मुनि सखियें इन्हें अनेक उपचारों से पूजतेभये औ नमस्कार करके सारे तिन गणेशजीसे प्रार्थना करनेलगे कि हे देवेशजी हम आपकेही हैं ४८ इससे आप हमें त्यागने योग्य नहींहो। तबतो उमाजी बालकको लेके निज उत्तमस्थान को गई ४९ फिर गण औ सखियें हर्षभरे

रात्रियुगके समान होजाती है अब हम सारे आपके दर्शनसेही प्रसन्न भयेहैं गे १६ हे महाबलीजी अब हम जोडेहो २ कर सुखसेखेलेंगे तब तो आधेएकओर होकर औ आधेदूसरीओर १७ औ आकाश भूमिको गोजाते आपसमें कीचकेगोलेमारतेभये औ हर्षसेयुद्धकरते औ एकको एक खैंचते १८ तो वे खेलते २ दूर किसी मुनिके आश्रम पर चलेगये तो तहां योजनभरचौडे सरोवरमें क्रीड़ा करतेभये १९ औ पहिलेकीनाई जोड़ेमिले अजलियोसेजल उछालतेभये अरु बल सेदूसरेके कन्धेपरचढ़के तिसेडुबोतेभये २० तबतोमच्छरूपकिये एक दैत्य तिनमें खेलनेलगा सो हाथोंकी फटकारसे औ पूंछसे तिनपर जल छोड़ताभया २१ तो तिससे मैले जलहोनेसे वे तीरपरआये तो तीरपर गिरिजासुतजीकोदेखके वो मत्स्यासुरतिनके निकटगया २२ तोमुख फैलाकर तिन्हें पकड तिनका पैरखींचनेलगा औ दोड २ ऐसे पुकारते तिनको अथाह जलमें लेगया २३ फिर वो महाअसुर तिनके साथ बहुतकाल डूबारहा तो गिरिजा सुतको डूबेदेख मुनि बालक रोनेलगे २४ औ हाय २ करते कई हाथ पीठहोठ तिनको जलमें जाके देखतेभये पर तिनको नहीदेखे २५ औ कई बालक गिरिजाजीकी ताडनाके भयसे डरे भगगये औ कई बालक तिन्हें डूबे बतातेभये २६ किहमसबकोखेलते छोडकेगणेशजीको मच्छ लेगया ब्रह्माबोले तिनका वचन सुनके गौरीमूर्छित हो भूमिमें गिरी २७ औ दोघडीमें सचेतहोकर रोतीबाहर आई नेत्रोंसे जलछोड़ती मस्तकसे हटा अचल जिसका २८ ऊंचे सासलेती अखटती भूमि पै गिरती तोकई सखियें निज१काजतजके शीघ्र तिनके सायगईं २९ सखियों समेत गौरी शीघ्रही तटके तीरपर आई औ मुनिजन तिसवृत्तातको सुनके सरोवरपर आये ३० तो वे कई अगाध जलमें उतरे पर वे तिन्हें नहींपाये फिरकई तिससेबोले कि हमारे भी बालक जलमें डूबेथे ३१ फिर मच्छसे पकडे तिस तुम्हारे बालकको तिन्होंने नहींदेखा तो तिनका ऐसा वचन सुनके गौरी फिर रोनेलगी ३२ उमाजी बोली कि तिससर्व सुन्दर सुतके बिन मेरे प्राण

जावेंगे मैंने अति पुरुषार्थवान् ईश्वर अत्यंत क्लेशसे पायाथा ३३ जो चर अचरका स्वामी मायासे अतीत औ परम मायावी अरु अनंत करोड ब्रह्माण्डनेता संसार जनक ३४ ऐसे कह२ के वेर२ हाथसे मस्तक पीटतीभई औ तिसेतैसी रोतीदेखके मुनिजन भी रोनेलगे ३५ तबतो दयावान् देवजी तिसका करुणा वचन सुनके आपभी मच्छ स्वरूपभये तौ वे आपसमें लडनेलगे ३६ तो तिस युद्धके घातसे जलजीव मर २ के तीरपर गिरे अरु वे आपसमें दांतोंसे डसते पुच्छ प्रहार करतेभये ३७ औ उदरसे उदरमें पीठसे पीठमें प्रहार करतेभये ऐसेबहुत कालसे वे पराक्रमसे घोरयुद्ध करके ३८ फिर मच्छरूप गणेशजीने तिसके मुखमें निजमुख प्रहारकिया तो वो टूटेमुख टूटेगर्व अरु फूटे नेत्रवान् भया ३९ तो जलमें भगा तिसके पीछेपीछे उमासुतजीभी चले सो वो जहांजहां गया तहां तहांहीं एभी पहुंचे ४० कहीं तिसे छिपा देखके पुच्छप्रहारसे ताडा अरु तिसकी पूंछ मुखमें पकड़के गणेशजी बाहर ले आये ४१ अरु निजबोझ से तिसे चूर्णकिया फिर वेप्राणभये तिसेछोडा जो मुखसे रुधिर त्यागता औ भारीशब्द करता ४२ तोतिसके भारीशब्द से त्रिभुवन कम्पित भया वे जलमेंसे निकले औ गिरिजाजीको भेंटने भये ४३ तो आनन्द भरी गौरीतिन्हें हर्षसे स्तन पिलातीभई औ बोली कि तू मुझसे वे पूंछ के बालको के साथ कहां चला गयाथा ४४ जोजो तेरेपर अरिष्टआताहै सो आपही नष्टहोजाताहै मरीचि जीकी रक्षा मे औ जगदीश्वरजी की कृपासे ४५ तू क्यावया चपलता करता है मैंतेरी कैसे रक्षाकरूं हेप्रियपुत्र तेरेवियोग से मेरे प्राण जावेंगे ४६ ब्रह्मा बोलेकि तबतो मुनियोंने कहाकि हे प्रभो तुमबिन हमदुःखी । अब तुम्हारे दर्शनसे सुखीभये हैं ४७ तो मुनि स्त्रियें इन्हें अनेक उपचारों से पूजतेभये औ नमस्कार करके सारे तिन गणेशजीसे प्रार्थना करनेलगे कि हे देवेशजी हम आपकेही हैं ४८ इससे आप हमें त्यागने योग्य नहींहो । तबतो उमाजी बालकको लेके निज उत्तमस्थान को गई ४९ फिर गण औ सखियें हर्षभरे

मुनिजनचले तो मार्गके मध्य (शैल) नाम और राक्षस ५० सबशत्रु
हारी मकरके जैसा दृढअंग जिसका औ जो वज्रकामी नाशक जि-
सके शब्दसे छिनमें पहाड फूटगिरें ५१ सो शीघ्रही राहरोकके भूमि
आकाशको छूता तहां स्थितभया जो दोयोजन ऊंचे मस्तक वाला
औ नीचे बारह योजनचौडा ५२ जहां सरोवर वृक्ष वेल सजीलेहैं
रहे औ सिंह बघेरे हाथी यक्ष राक्षस जहां क्रीडाकररहे ५३ तो तिसे
देखके वेसारेव्याकुलहोबोलेकि येक्या गौरी तिसके निकट जाठहरी
औ वेभीसारेस्थितभये ५४ फिर मुनिजन बोलेकि-कबहमनिजस्त्रियें
को औ बालकोंको देखें गणेशजीका पराक्रम कबचलेगा ५५ हमा-
रायह हवनकाल औ स्वधाकर्म समय वृथाही चलाजाता है तो
तिनसबको गौरीजी बोली कि खेदमतकरो ५६ मुझको भी शंकरजी
की चिन्ताप्राप्त होरहीहै ब्रह्माबोले तबतो अति बुद्धिमान् गणेशजी
तिनका वचनसुन ५७ विराट्रूप करके पलमेंही तिसे हटातेभये वे
सबमायासे मोहितभये मुनिभी तिनकेरूपको नदेखसके ५८ तोति-
सकेश्वास छोडनेसे वोपर्वत आकाश में भ्रमताभया तो वे सब परम
आश्चर्य्यको प्राप्तभये तिनकी प्रशंसा करनेलगे ५६ जैसे भभूलेमें
लगा पत्ताभ्रमै तैसे चक्कर खाकर फिरवो पर्वतासुर भूमिमें गिरातो
सहस्र टूकहो गया औ तिससे कितनेही वृक्षचूर्ण होतेभये ६०
तबतो वेमुनियेंबोले अच्छा अच्छा जो हेगणेश्वर हमारा अरिष्ट दूर
किया औ हम सुख से आश्रममें स्थित भये ६१ आपके प्रसाद से
निजनिज काजरतभये हम सुखसे रहेंगे ऐसेकह नमस्कार कर औ
पूजा करके तिनसेपूछके जातेभये ६२ गिरिजाजी तिन्हें लेकर निज
घरआई फिर सखियें औ मुनिपत्नियें तिससे पूछके निज निज घर
गईं ६३ जो मनुष्य इसेसुनै सो सर्वत्र सुखप्राप्तहो औ आयु आरो-
ग्यता विभव औ सर्वत्र विजयभी पावै ६४॥ इतिश्री गणेशपुराण
उत्तर खण्डमें मत्स्य शैलासुरवध इसनामसे इक्यानवे का अध्याय
समाप्त भया ॥ ६१ ॥

बानवेका अध्याय ॥

श्रीगणेशजी के मुखमें विराट्रूप दर्शनहोना वर्णित है ॥

श्री ब्रह्माजी बोले कि फिर एक दिन गिरिजा शीघ्रता से सवेरे न्हाई औ शिवलिंग की पूजा करतीभई चार वर्षके बाल गणेशजी सोये थे १ सो वो बायें हाथ में उत्तम मृत्तिका की मूर्त्ति रखके पूजती थी सोही वे उठके हठ करते दूध मांगते भये २ औ गिरिजा तिन्हें छिनभर ठहर २ ऐसे कहकह क बरजती थी तो तिन्होंने निज हाथ के घातसे तिसके हाथसे वोमूर्त्ति गिरादई ३ तो वो तिन्हें भारीक्रोध से हस्तघातसे ताडती भई तो तिन्होंने भी आकर इसकी अंगुली को कठोर डसलई ४ तो वो बोली कि छोड छोड मेरेप्राण जाते हैं फिर तो अँगुलीडस के बाल गणेशजी तहांसे दूरभाग जाते भये ५ ता तिसकी अँगुलीसे निकलके बहुतसा रुधिरगिरा जैसे दृढघातसे ताडित आकके वृक्षसे दूधझरताहै ६ तबतो वो लट्ठीलेके सुतको मारने आई जो दौडके इन्हेंपकडे तो शिवस्वरूप देखतीभई ७ जो पंचमुख दशभुज त्रिनेत्र शेषभूषित औ त्रिशूलडमरू रुण्डमालाभस्म धारण किये ८ औ हस्ती व्याघ्रका चर्म बिछाये चन्द्रशेखर ऐसे इन्हें देखके गौरी लज्जित भई लट्ठी छोडके अधोमुख होगई ९ औ तब वो न अगाडी घरमें जानेसकी तो तिसकी चिन्ता जानके गणेशजी फिरबालरूप होतेभये १० सो मुनि बालकरूपभये तिनके बालकों में खेलनेलगे तो गिरिजा तहांगई औ तिनमें तिननिज सुतजी को नहीदेखे ११ तो तिसने तिनमुनि बालकोंसे पूछा कि मेरा पुत्र कहां गया वो चपल मेरी अंगुली डसके चलागयाहै १२ तो वे मुनिपुत्र बोले कि तुम्हारा पुत्र इधरसे गयाहै तब तो गिरिजा अगाडी चली गई १३ खुले बाल भई स्वेद पसीनेसे व्याकुल इधर उधर दौडती उघडा अंचलवस्त्र जिसका १४ तबतो वे तिसका अनजाके फिर पहिलेके जैसे बालरूपहो तिसके पासआये तो गिरिजाजी तिन्हों को हाथोंसे दृढ़ पकडतीभई १५ औ निज अंचल में तिन्हें बांध

भई निजघरकोआई औकोधसे बोलीकि तूभलामेरे हाथआयाहै१६
हे मृगी वाले से अत्यंत चपल अब मैं तुझको वहुत ताडोगी अथवा
तुझे शिवजी को सौंपोगी वे तुझे ताडैंगे तो ऐसा माता का वचन
सुनकेवेधरतीमें लोटतेभये १७ औ बधन खुला जानके तुरतही फिर
भागगये तो वोदु:खित औ अत्यन्त व्याकुलभई फिर दौडतीभई १८
इतनेही में दुष्टदैत्य (कर्दमासुर) जो द्विजरूपधारी दाहिने हाथ में
मालालिये१९ औ जलभरा कमंडलुहाथमेंलिये औभस्मसेसनाशरीर
जिसका जोवाल सूर्य्य सरीखे वस्त्रओढे अत्यन्त मायावी २० ऐसा
वो वालकजी से बोलाकि तू किसलिये भागताहै मैं तेरेभयको शीघ्र
हटाऊंगा इसमें संशयनहीं २१ तुझे ऐसे ठौर लेचलूंगा जहांतेरी
माता तुझे किसीप्रकारभी नहीं जानेगी औ तहां कालभय नहींहै औ
न तहा और कुछभी भयहोगा २२ ब्रह्मावोलेकि तो डरतेसे वालक
जी तिससे बोलेकि तू तैसाहीकर जैसे मुझको मा वाप नहींदेखें मैं
तेरे शरण आगयाहू २३ ऐसे कहते कहते तिसके साथ वालपने से
चले त्योंहीं तिनको दुष्ट कर्दमासुर निगलगया २४ जैसे पकेकेले के
फलको खाजावे तो तिनके चरणारविन्द चिह्नोंको देखती देखती
शिवाजीभी तहाआगई २५ वोअगाडीब्राह्मणकोदेखातो तिससेपूछा
किहे स्वामिन् तुमने मेरासुत इधरसे जातादेखा २६ ये चिह्नयुक्त
तिनके चरणारविन्द देखो हे द्विजजी वो अभी दौडता कहां छिप
गयाहै २७ तवतो तिन्हीं के दु:खसे पीडितभई तिससे बोलाकि हे
माई हमको तुम्हारे पुत्रसे क्याप्रयोजन है २८ हेमाता हमतोईश्वर
में चित्त लगाये उदासपनेसे स्थित हैं हमने तो हे गिरिजे तुम्हारेपुत्र
को कहीं नहींदेखा २९ हे देवि क्या तैने पुत्र मुझको सौंपाथा कहु
ब्रह्माजीबोले ऐसे तिसकेकहते२ गणेशजी गिरिजाको दु:खितदेखके
तिसद्विजके मुखमेंसे प्रकटभये तो वो पुत्रको देखके तिससेवोली कि
रे तू कैसे झूठ बोलताहै सन्तजन प्राय नाश होते भी कभी मिथ्या
कहीं नहीं बोलते हैं ३०।३१।३२ ब्रह्माजीबोले ऐसा तिसकावचन
सुनके वो दैत्यदीर्घ देहवाला जो मस्तकसे आकाशको छूता सो वा-

लकफोटेके तहांसे चला ३३ तब तो तिसके पीछे२ लगी पुकारती शिवाजी भी चली तब तो गणेशजी तिससे भी भारीशरीर धारते भये ३४ औ वारम्बार शोचतीभई माताकेदुःखको देखके तिसकेदेह को सोंटककरके पेरोंकीमारसे चूर्ण करडालतेभये ३५ पडतेभये भी तिसकेदेहने वृक्षोंकोतोड़े ऐसे तिसदैत्यको संहारके वे निजमाताके अगाडीआय स्थितभये ३६ तो मुनियें तिनकीस्त्रियें औ देवता तहां आये औ पार्वतीसेबोले कि इसके कितने अरिष्टहोतेहैं ३७ सो सब हे सुरेश्वरि तेरे पुण्यसे नष्ट होतेहैं सबोंसे पूजे तिन बालकजी को शिवाजी गोदमेंलेके ३८ तिन सबोंकेसाथ आनन्दभरी घरको आई फिर शिवाजीने आंगनमेंजा गणेशजीको गोदसे उतारे ३९ तो प- हिले अमरगणोंको जीतकेगरुडजी जैसेअमृतपीकेलेटे तैसे वे मूर्च्छा को प्राप्त धरतीपर लोटतेभये ४० औ मुखफैलाके वेर२ जंभाईलेने लगे मुखारविन्द पसार के तो अभी इसके क्याभया ऐसे कहती शिवाजादौडके तहांगई ४१ तो वो विश्वरूप तिनके मुखमें सम्पूर्ण रचनादेखतीभई सो कि सातोद्वीपो सहित पृथ्वी को औ पुर,ग्राम वन,खानोंको ४२ औ गन्धर्व,यक्ष,राक्षसोंको मुनि पक्षियों को भी नदी,वापी,तडागोंको औ१४मनु चारों समुद्रोंको भी ४३ औ अग्नि सूर्य्य,चन्द्र,तारोंको औ जडचेतन जीव समूह को औ सातोपाता- लोंको औ इकईसो स्वर्गोंको भी गौरीदेखती भई ४४ तब तो तिनके मुखमें त्रिभुवनको देखके गौरीमूर्च्छित भई सो नेत्रमींचके दोमुहूर्त्त तक भ्रांतभई ठहरी ४५ औ मनमें शिवजीका स्मरण किया तो सावधान भई तो पहिलेकी नाईं अगाडी स्थित बालकजीको देख- तीभई ४६ फिर तो तिनकी प्रसन्नतासे प्रसन्नमनभई स्तुति करने लगी पार्वती बोली कि परमात्मा तुम्हीहो औ चर अचर के गुरु आपही हो ४७ औ चिदानन्द घनरूप नित्य औ नित्य अनित्य स्वरूपवाले जो तुम्हारी कोषमें मैंने चौदहभुवन देखे हैं ४८ औ देव,यक्ष,राक्षस नदियें वृक्षोंको औ सब चर अचर संसारको देखा है जिसे मैं कहने न सकूं ४९ तिसीसे मैं भ्रांतभई भूमिमेंगिरी फिर

शिवजीके स्मरणसे सावधान भईहू औ फिर आपको सादे बालक के समानही देखे हे ५० ब्रह्माजी बोले कि ऐसे तिसके स्तुतिकरते२ गणेशजीने निजमाया प्रकटकरी तो शिवाजीने गोदमें ले लाडकरके तिन्हें स्तनपानदिया ५१ औ घरमें आई घरकाज करती भई मुनि औ मुनिस्त्रियें निज २ घरगई ५२ इस उपाख्यानको सुनजन सब पापोसे छूटते हैं ५३ इतिश्री उपासनाखण्डमें विश्वरूपदर्शन इस नामसे बानवेका अध्याय समाप्त भया है॥

तिरानवेका अध्याय॥

[illegible] गणेशजी से चपला मुनिका बचझोना वर्णित है॥

श्रीब्रह्माजी बोले तब तो पांचवां वर्षलगे मुनिबालक गणेशजी को घरमें आकर प्रात काल में ये बोले १ हेसखे उठो२ प्रात कालमें क्यो सोतेहो औ वे शिवाजीको भी बोले कि अपने बालकको उठा देवो २ तो शिवाजी तिनको बोली कि खेलमें लगे चपल बाले को तुमको नींदनहीं आई है निर्लज्जो बिन सूर्य्य उदित भयेही तुम मूर्खपनसे चल २ ऐसा कैसे कहरहे हो तो वे बोले कि हे माई तुम्हारे कहनेसे हमको कुछक्रोप नहीं होता ३ ।४ हमक्या तुम्हारे बालक नहीं औ तुम हमारी माता नहींहो हमारा सबका मन इस तुम्हारे गणेशजी में लगरहा है ५ इनको निरन्तर रात्रिदिन हम अगाड़ीही देखते हे इनके बिना हमारे मनका समाधान नहीं होता है ६ तब तो तिनके ऐसे २ वचन सुनके विनायकजी उठे औ बाहर आकर तिन सबोंसे लपटके मिलते भये ७ औ वे आपस में हाथ पकड़के बाहर खेलनेगये औ दो विभाग होकर नानायुद्ध चेष्टाओं करके क्रीड़ा करने लगे ८ सो वे मस्तकसे तो मस्तक औ हाथो से हाथ हृदयसे हृदय आपसमें मार२ के खेलमें लडतेभये ९ औ जल से धूळ से औ गेंडो से घूंसा औ कई गोवर कीचों से औ हिलाना घसीटना इनसे भी १० रौला मचाते औ सींग बांसोंको बनाते भी सो वे एकओरके जो देवभयेथे सो जीते औ दैत्य भये हारे ११ ऐसे

तिनके युद्धकरते २ (खड्गनाम) महा असुर ऊंचेभारी महाभया-
नक उष्ट्ररूपसे आया १२ तिसकी पुच्छ वायु से भारी२ वृक्षगिरे
फूलेसेदांतजिसके जो जोभनिकालता औ पैरों से दिशाओंको मसळ
तासा अर्थात् चारोओर पैरफटकारता वो आपहुंचा १३ सो वो
महा शब्द करके गणेशजी पै दौडा जो प्रति शब्दसे दशों दिशों को
गंजाताथा १४ तो तिसे देखतेही मुनिपुत्र तो डर भगे औ कईबा-
ळकजीको पुकारतेथे कि दौड२।१५ तिनका पुकारना सुनके शीघ्र
गणेशजी भारीरूप बनाय शीघ्र उडके तिसे पकडते भये १६ औ
मुष्टि प्रहार तिसके मस्तकमें किया जैसे भारी पर्व्वतपै बिजुली पडे
तैसे वो फटेहृदय भयादैत्य मुखसे बहुत रुधिर उगिलता १७ भारी
भयानक शब्दकरके धरती पर गिरा औ गळापैर पसार औ बेर २
पुकारके निजदेह में स्थितहोके क्षणमें जीव त्यागताभया जो दश
योजनफैला सो पड़ता और २ भी वृक्षोंको गिराता भया १८।१९
तो भूमिसे रजउडी सो छिनमें आकाश जा छाई औ तिसके देहके
पड़नेसे प्राणी औ पक्षियें भी गिरते भये २० तो तिसे तैसे पडा
देखके सारेबालक बोले कि हे शिवासुत इसदैत्यको पटकाये अच्छा
किया २१ हम तो तिस महा दैत्यकोही देखके डडकर भगगये थे
तुमछोटेसे पुरुषार्थीने इस महाअसुरको कैसे मारा २२ हम सारे
विस्मित भये तिसके पासआये ऐसे कहके वे सारे पहिलेकी नाई
फिर क्रीडाकरते भये२३सो कोई तो आपसमें चरणारविन्दपकड२
के खेंचते थे तितने तिस असुरका सखा तिसका बदलालेने को
आया २४ सो छायारूपहोके वो महाबली जिसके पैरके फटकार
नेसे शेषजी कंपतेथे २५ आकाश स्पर्शी अर्थात् ऊंचे मस्तकवाला
वो दुष्ट गणेशजी के पीछेसे चला औ तिनकी छाया में प्रवेशकर
तिनको गिराताभया २६ औ ये अति मायावान बाला औरों को
नहींदीखताथा सो जैसे २ वे गणेशजी नाचतेथे तो वो भी तैसे २
ही नाचताथा २७ तो वे मुनिबालक विनगणेशजी को पड़तेदेखके
कई दुःखित हो दौड़े औ अत्यन्त दुःखित भये तिनसे बोले २८ हे

स्वामिन् आपकैसे गिरेजाते हो आपकी सामर्थ्य कहांगई तुमबेर २ बया अखटतेहो प्यारे सखाहम देखरहे हैं २६ तब तो गणेश जी ने सब ओरसे दशो दिशोमें देखा औ बलसे वे अगाड़ी जानेकोचाहे पर न जा सके ३० फिर ध्यान करके सब ओरदेखा तो छाया मे प्रवेशभये तिस दुष्टदैत्य को गणेश्वरजीनें जाना ३१ तो एक भारी पत्थर लेकर तिसके पेटपरफेका औ आप ऊपर चढ़के नाचे तो वो मरके चूर्णहोगया ३२ फिर अन्तसमय वो दुष्ट निजरूप में स्थित होके वृक्षोंको प्राणियो को गिराता आपभीगिरा ३३ तोतिसकेमेद औ रुधिरसे धरती औ गणेशजी लालहोगये जैसे वसंतमें फूला केसूहो ३४ ऐसे तिसेहत्ते के गणेशजी फिर लीला करके खेलतेभये फिरतो एकबैलकेसे कन्धोंवाला शूकर मुख गजउदर जिसके श्वास लेनेसे भारीपत्थर रजकी नाईं उछलते ऐसा [चंचलनाम] वोमहा दैत्य बालरूपधरके तिनमें प्रवेशभया ३५।३६ सोतिनमें वो लड़केपनसे नानाप्रकार के खेल दिखाता भया जो महाबलवाला महा मायावी कइयोंको दबोचता भया ३७ औ किसी मुनि बालक का वो पैर खेंचताथा औ किसीके दोनोहाथ पकड़के माथेमेंप्रहार करताथा ३८ जिसके नाचनेमें पर्वतो सहित सारीपृथ्वी कम्पतीथी सो वे सारे घाम में अपने शरीर में मृत्तिका लेपते थे ३९ तो गणेशजी ने भी लगाईजैसे भाग्यवान् शरीर में चन्दन लगावे फिर तो गेंदबनाकर तिससे खेलने लगे ४० सो कि सब बालक मिलके गेंद ऊपर को फेंके जिसके हाथ से वो गेंद छूटिगिरे तो वो फिर तिसे फेंकने लगे बालक के हाथ से फेंकागेंद जिसके हाथ में आजावे अर्थात् जो बालक तिसे लपकले वोही गेंद लपक लपकलेनेवाला तिस बालक पर घोड़े के जैसे चढ़जावे ४१ फिर चढ़नेवाला गेंदको बल से भूमिमें मारे औ ऊपर को उछलते तिसको दूसरा लपके फिर तिसे जो लपकलेवे सो तिसी बालक पे चढके फिर फेंके फिर जब वो भूमिमें जा गिरे अर्थात् किसी के हाथ भी न आवे तो झट तिसे उठाकर चढ़ानेवाला तिन भागतेभये सबोंकेमारे फिर जिसके

वो गेंद जा लगे तो तिसी पर वो मारनेवाला सवार होजावे ओ वो सवार भया फेंकता रहे फिर तिसके हाथसे छूकर जिसके हाथ में आजावे तिसेभी वो ऊपर चढालेवे सोकि जिसने हाथमें लपका सोही तिस पर चढा पहिलेकी नाई फेंकता लपकता रहे ४५ सो तबकभी गणेशजीने गेंद आकाश में फेंका तो चञ्चलासुरने हाथमें लपकलिया तवतो वो तिनपै सवारभया ४६ ओ तिन देवजी को भारसे दवाकर वोलाकि हेदुष्ट तूमेरा वोझसह इन वालकोंमें क्यों उछलता हे ४७ फिर वो गेंद फेंकफेंकके अपने हाथमेंही लपकता रहा ऐसेही वो दुष्टदैत्य चार घडीतक खेलतारहा ४८ तवतो तिन गणेशजी को तैसे अर्थात् सवारी भये देख मुनिवालक हँसनेलगे तवतो गणेशजीभी तिसदैत्यपै सवारभये जोदृढ पराक्रमी ४९ तो हर्षयुक्त वो चञ्चलासुर तिन्हें दूरलेजानेको तय्यारभया सोकि वो आकाशमार्ग से चला ओ वालक शीघ्र आघिरे ५० ओ वो शीघ्रता युक्त विमान ओपक्षीके समान वेगसेचला तो वो वालक लौटे ओ शोचते निजनिज घरआये ५१ ओ कई गणेशजीको देखते देखते तहांही ठेरे तवतो गणेशजीने मनमेंतिस दुष्टदैत्यकोपहिचानके ५२ शीघ्रही हिमाचल पर्वतके जैसा वोझकिया तो वोझसे पडा वो दैत्य तिन गणेश्वरजीसे वोला ५३ हे भारीभारवाले तूउतर मेरेशरण जानेहैं तूमुझदीन तेरेशरण आयेपर कृपाकर ५४ ऐसे कहता वो मूर्छित भया तो गणेशजीने तिसे पकडा ओ अनेक प्रकार तिसे भ्रमाया जैसे गरुडजी सर्पको भ्रमावे ५५ फिर दुष्टतिसदैत्य चञ्चलासुर को दूरदेश लेजाकेछोडा वो मरगया ५६ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड चञ्चलासुर का वधहोना इसनाममे तिरानवेवां अध्याय समाप्त भया ॥ ९३ ॥

चौरानवेवां अध्याय॥

[illegible]

श्रीब्रह्माजी वोलेकि तवतो मुनिवालकभी आये जो तिन्हें देख

औ अगाडी विथरे तिसी अन्नकोदेखा तबतो वेविस्मित मनभने ३१ तो मनमें विचारनेलगे कि हमने वडीकुवुद्धीकरी जोयहसव उमाजी सेकहा औ अन्नकापात्र दिखाया ३२ तोतिस करके वेअव्यक्त जगत्कारण परेसेपर देव गणेशजी ताडेगये जिनके तृप्त भयेसे महाफल मिलताहै ३४ सोही मुनि वालकोंके साथ आकर ...धरणीम जिन्हींकी मायासे मोहित भये मैने पहिले तिनको नहीं जाना ३५ ब्रह्मावोले फिरतो आश्चर्य मनभई अहल्या भी और पाकवनाने लगी औ गौतमजी ध्यान में स्थितहोके देवपूजा समाप्त करते भये ३६ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड आश्चर्य दिखाना इस नामसे चौरानवेवां अध्याय समाप्त भया ॥ ९४ ॥

पचानवेवां अध्याय॥

विश्वकर्मा का आगमन वर्णन कियाहै ॥

श्रीब्रह्माजीवोले कि छठा वर्षलगे उमासुतजी वालकों के साथ कहीं दूर चलेगये तहां अनेक क्रीडा कररहेथे १ तो तिनके दर्शन की इच्छावाला(विश्वकर्मा)घर भीतर आया तो गौरी वाहर आके तिसका वहुत सन्मानकरतीभई २ सो कि विचित्र आसनपर वैठाय तिनकी आदरसे पूजाकरी तिनके चरणधोय तिन्हें सुगन्ध ताम्बूल दिया ३ तो तिसका आदर देखके विश्वकर्म्मा प्रसन्न भया तब ... कि से प्रणाम कर हर्ष करके तिसकी स्तुति ...ो वोला कि हे विश्वेश्वरि विश्वरूपे गौरी जी मैं ... करताहू जो तुम्हीं ब्रह्मा इन्द्र रुद्र सूर्य्य विष्णु इनके ... तुमने ... औ ... सा है

तुझको परेसेपरेदेव ब्रह्मस्वरूप जानतेये औ हेगणेश्वर तू बालपन करताहै १६।१७ ब्रह्माबोले तबतो गौतमजी तिनका हाथ पकडके गौरीजीके घरलेआये अन्नसहित तिसपात्रकोभी घरसे हाथमेंलेकर १८ तो आकर गौरीजीसे कहनेलगे किहे गौरि तेरा येबालकनित्य अन्याय करताहे अबमै तुझसेकहने आयाहूं अबइससेपरे औरक्या करू १६ क्या यहासे कहींदूर चलेजावें जोयही चाहतीहो तो कहो ब्रह्माबोले तबतो तिसका वचन सुनके क्रोधसे भरी गौरी २० नेत्रसे अग्नि निकालती छडीसे तिन गणेशजीको ताडने लगी औ क्रोधयुक्तभीथी परइन मुनिजोको प्रणाम करकेबोली २१ हे मुनिजी मुझकोभी इससे जन्मसेही भयहोरहा है देखनाही चाहिये कितने राक्षस कृत विघ्नभये हें २२ कहीतो स्त्रियें औकहीं मुनियें येक्या उलाहना देने नहींआते है येतो सबकादोषी मुनिबालकों का भिन्न करता अर्थात् बिगाडने वालाहै २३ यह मेरा पुत्रहै ऐसाजान के जनइसे शाप नहींदेते ऐसेकह गौरी गणेशजीके हाथपैर बांधके तिनको गौतमजीके सामनेही २४ घरमें बैठाकर तिसघर को दृढ बंध किया तो ऐसामतकरो २ ऐसे कहते गौतमजी निज आश्रमको गये २५ तबतो गणेशजीका शोचकरते वेसारे बालक विचारनेलगे कि अबकब इनका दर्शन हमकेसे होगा २६ जिनको शिवाजीने भीतर रखके दृढद्वारबन्ध कियाहे तोतिनके ऐसे कहते कहतेही वे गणेशजी क्षणमें तिनसे जामिले २७ औमाता की गोदमेंभी दीखते रहे औ तिनके घरमेंभी तोवे बोले हेगौरीजी यह तुम्हारापुत्र घरमेंसे निकला २८ तो तिसने घरमें गणेशजीको बँधेही देखे फिर बाहर आई तोतिसने तिन मुनिसुतों कोभी तिन्हींके स्वरूपभये देखे २६ तो व्याकुलभई शिवाने जिस किसी को दूध पीनेके लिये बुलाया तो तिसने तिसका तिरस्कार किया किहे शिवाजी वोतो तुम्हारे घरमें होहै ३० फिरतो तिसने द्वारखोल गणेशजी को निकालके हर्षसे दूध पिलाया औ गौतमजी निजआश्रममें जाकर देवपूजामें परायण भये ३१ तो तिन्होंने भी सबदेवोंको तिन्हींके रूप औ तत्समये देखे

औ अगाडी थियरे तिसी अन्नको देखा तवतो वेविस्मित मनभये ३२ तो मनमें विचारनेलगे कि हमने बडीकुबुद्धीकरी जोयहसव उमाजी सेकहा औ अन्नकापात्र दिखाया ३३ तौतिस करके वेअव्यक्त जगत्कारण परेसेपर देव गणेशजी ताडेगये जिनके तृप्त भयेसे महा फल मिलताहै ३४ सोही मुनि बालकोंके साथ आकर मेरेघरजीमें जिन्होंकी मायासे मोहित भये मैने पहिले तिनको नहीं जाना ३५ ब्रह्मावोले फिरतो आश्चर्य मनभई अहल्या भी और पाकवनाने लगी औ गौतमजी ध्यान में स्थितहोके देवपूजा समाप्त करते भये ३६ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड आश्चर्य दिखाना इस नामसे चौरानवेवा अध्याय समाप्त भया ॥ ६४ ॥

पचानवेवां अध्याय॥

विश्वकर्मा का आगमन वर्णन किया है ॥

श्रीब्रह्माजीवोले कि छठा वर्षलगे उमासुतजी बालकों के साथ कहीं दूर चलेगये तहा अनेक क्रीडा कररहेथे १ तो तिनके दर्शन की इच्छावाला(विश्वकर्मा)घर भीतर आया तो गौरी बाहर आकर तिसका बहुत सन्मानकरतीभई २ सो कि विचित्र आसनपर वैठाय तिनकी आदरसे पूजाकरी तिनके चरणधोय तिन्हें सुगन्ध ताम्बूल दिया ३ तो तिसका आदर देखके विश्वकर्म्मा प्रसन्न भया तब तो शिवाको परमभक्ति से प्रणाम कर हर्ष करके तिसकी स्तुति करता भया४विश्वकर्म्मा वोला कि हे विश्वेश्वरि विश्वरूपे गौरी जी मैं तुम्हें नमस्कार करताहूं जो तुम्ही ब्रह्मा इन्द्र रुद्र सूर्य्य विष्णु इनके स्वरूपही हे अनन्तरूपवाली तुमने सबविस्तार कियाहै जो आप ब्रह्मा आदि देवों करके स्तुतियोग्य रूपवालीहो ५ सो हे मात तुम्हीं रजोगुण से संसार रचतीहो औ तुम्हीं सत्वगुण से तिसे पालतीहो औ तुम्हीं तमोगुण से सबको संहारती हो इससे तुम्हारा ये नित्य रूप त्रिगुणहै ६ हे देवि तुमसे हने दैत्य मोक्षको प्राप्तभये औ ब्रह्मर्षिजन ज्ञानबल से मुक्तिभयेहैं तुम्हीं विद्याओंकी अतलशक्ति हो

सत्रकीकारण औ महामायाहो७ जो आप सत् असत्की परमशक्ति अर्थात् भावाभाव की हेतु हो औ इस चर अचर संसार को आप विशेषसे धारणकरती अर्थात् पालतीहो सो कि सारे सुर ईशजनों को पल कला घडियोंसे मोहित करके भोग भुगातीहो ८ जो आपके शरण भयेहैं तिनको मृत्यु औ राक्षस इनसेकिया कभी भी भयनहीं होताहै सो तुम पुण्यवानों को लक्ष्मी औ दुष्टों को तुम्हीं अलक्ष्मी होजातीहो ९ तुम्हीं स्त्री स्वरूप इसजगत्में विद्यारूपहो औ सूर्य्य चन्द्रमाकी तुम त्रिभुवनमें कान्तिरूपहो हे मात जो तुम्हारेआश्रय भये सो ही जगत्के आश्रय अर्थात् सुखीहैं तिनको विपत्तिका लेश भी नहींहै १०।११ हे विश्वेश्वरि तुम्हीं इसविश्वको हरती औ जल रूपभई तुम्हीं लसकरतीहो औ तुम्हीं आदि मध्यरहित औ अगम्य हो जो विष्णु शिव ब्रह्मादिको करके भी अगम्यहो १२ औ तुम्हारेही अनुग्रह से भक्त तुमको भजने औ आनन्द स्वरूपभये स्वर्गमें वसतेहैं हे मात तुम्हीं अभक्तिवाले दुष्टोंको नष्ट करतीहो मैं आपही के शरणमें आयाहूं १३ सो मेरे ये नेत्रधन्यहैं औ विद्या जन्म माता पिता वंश ये भी धन्यहैं कुल धन्यहै जो हेजगदीश्वरि जो मैंने आपके चरणारविन्दोंका दर्शन कियाहै १४ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे स्तुतिकी गई जगत् की माता गौरीजी इसको वरदान देतीभई तो तिसने अचलभक्ति मागी तिसने तैसाहीहो ऐसे कहा औ कहा कि जो इस स्तोत्रको पढेगा सो सब कामोंको प्राप्तहोगा १५ औ सर्व्वत्र जय औ पुष्टि विद्या आयुर्व्बल सुख कल्याण ये भी प्राप्तहो तो शिवाजी बोलीं हे महाबुद्धि विश्वकर्म्मन् तू बड़ा ज्ञानवान्है १६ जो२ हमने शिवजीके मुखसेसुना सो२ सब तुम्हारेमेंहै इससमय सिन्धुसे पीडितभये सबदेवता बन्धमें रुकेभयेहैं १७ औ निज कैलास हरेगये शिवजी भी चलेआयेहैं इस दण्डकारण्य देशमें कोई सुखीनहींरहताहै १८ तू अब बहुत कालसे सम्यक् प्रकारसे देखने में आयाहै विश्वकर्म्मा बोला हे मात ये कुछ आश्चर्य्यनहीं बालक माताकेपास आताहीहै १९ औ महाभक्त निजइष्ट देवको देखने आताहै औ हे

शिवाजी विद्यार्थी गुरुजीके पास आताही है हे मात मैंने तुम्हारे पुत्रकी भारी महिमा सुनीहै २० सो तिन्हें देखनेको तुम्हारे दर्शन का उत्सुक अर्थात चाववाला मैं आयाहूं ब्रह्माजीबोले तिनके ऐसे कहते२ वे गणेश्वरजी भी आगये २१ जो अनगणित चन्द्रमाकी जैसी कान्तिवाले औ सिन्दूरसे रक्तशरीर जिनका प्रसन्ननयनवाले औ जो बालको सहित २२ तो तिन बालकोंमें वे ऐसे सजतेथे जैसे देवों में विष्णुजी तिन्हेंदेखके प्रणाम करके अंजलि पुट बांधे खड़ा भया तिन परमात्मा गिरिजासुतजीको जानके तिनकी स्तुति करता भया विश्वकर्म्मा बोला कि परमात्मा औ सच्चिदानन्द स्वरूप आपको मैं नमस्कार करताहूं २३। २४ जो आप चर अचर के गुरु औ सब कारणोंके कर्त्ताहो गणोंकेईश औगुणोंसे परे औ रचना पालना संहार करनेवाले २५ सर्वव्यापी ईश्वर व्यक्त अव्यक्त स्वरूप वाले सब देवोंके अगोचर औ मुनि हृदयारविन्द वासी २६ सिद्धि बुद्धिके पति भक्तों के अनेक सिद्धिदाता प्रभु अभक्तोंके काम नाशक सहस्र सूर्य्य समान कान्तिमान् २७ अनेक शक्ति संयुक्त दैत्य दानव मर्दक अनादि अव्यय शान्ति औ जरा मृत्यु रहितहो २८ औ तीनदेहधारी देवत्रयीके निमित्त औ ब्रह्मा विष्णु शिवजी भी आपही हो ब्रह्माजीबोले कि ऐसी स्तुतिसुनके प्रसन्नमय वे गजाननजी२९ निज आसनपर बैठाय आदरसे विश्वकर्म्माका पूजन करते भये सो कि इनके चरण धोकर गन्ध अक्षत औ पुष्प ३० धूप दीप नैवेद्य तिनको समर्पण करके बोले कि हे विश्वकर्म्मन् तुम हमारे दर्शनकी इच्छाकरके आयेहो ३१ तो हमारे हर्षके लिये आप क्या उत्तमभेंट लायेहो तो विश्वकर्म्मा बोला कि जो आप निज आनन्दसे परिपूर्ण औ पराईइच्छा पूर्ण कर्त्ताहो ३२ इच्छारहित औ सर्व्वकारीहो औ सब शक्तिवाले भी हो औ समानहैं लोह पत्थर सुवर्ण आपको कल्प-वृक्ष को भी तुच्छ करनेवाले हो करने न करने अन्यथा करने को समर्थहो ३३ निज आधीन औ प्रसन्न हो निज सामर्थ्यसे रहतेहो ऐसे आपको हमपराधीन असमर्थ दरिद्री क्या देवे ३४ पर अपनी

सामर्थ्यसे कुछ लायाहूं ब्रह्माजी बोले ऐसे कहके विश्वकर्म्माने अं-
कुशआगे धरी ३५ औ कमल परशु पाश येभी धरे जो सहस्रसूर्य्य
समान कान्तिमान् थे औ सर्व्व शत्रुहारी तीक्ष्ण तो गणेश्वरजी ने
धारणकिये ३६ औ विश्वकर्म्मा से बोले कि हे विश्वकारी ये तुमने
कहांसे पायेथे जो मेरी प्रीतिके लिये लाये सो हे निष्पाप तुम सब
शीघ्रकहो ३७ विश्वकर्म्मा बोला कि मेरी [संज्ञानाम] से सुन्दररूप
वती कन्याथी जिसका मुख देखके चन्द्रमा शीघ्र लज्जित भया औ
लक्ष्मी शची सावित्री शारदा अरुन्धती रति ३८। ३६ ये औ न
कोई भी हे गणेशजी त्रिभुवनमें जिसके समानथी सो मैंने तीन रूप
वाले अर्थात् ब्रह्मा विष्णु शिव स्वरूपी सविताजी को दई ४० सब
लोकोंके सांगोपांग आनेसे आठदिनतक दिनरात महाभारी उत्सव
भया ४१ जिसे देखके देवता स्खलितभये लज्जासे अधोमुखहोगये
औ सूर्य्यजी तिसेलेके निज उत्तम स्थानकोगये ४२ तो तिनकेतेजसे
तप्तभई मेरीकन्या दुर्बलहोगई तब तो तिसने अपने प्रभावसे छाया
को उत्पन्नकरी ४३ औ तिसको सर्वस्व सौंप के शीघ्र मेरे घर चली
आई औ तिससे डरी वो मुझे कहनेलगी कि हे पिताजी ४४ मुझे
फिर सूर्यजीको न देना मैं तिनकातेज न सहसकतीहूं तबतो पितासे
घमकाईगई वो बाहरही निकलगई ४५ सो घोडीकेरूपमें स्थितहोके
रूपछिपाये वनमें रहतीभई फिर तो विश्वकर्म्मा तिसे घरमें कहीं न
देखके सूर्य्यजीको जा कहताभया कि वो तुम्हारा तेज न सहसकी
अब वो कहा गई मैं नहीं जानता पर तुमको उपाय बताताहूं ४६
४७। ४८ कि जो तुम्हारे तेजकाभाग कुछन्यूनहोजावे तो वो प्रकट
होवेगी फिर तिसकेसाथ विहार करना ४६ सूर्य्यजीबोले कि जैसा
तुम्हारा मनहो तैसा करो ब्रह्माजी बोले कि तब तो विश्वकर्म्मा ने
सूर्य्यजीको यंत्रमें रखकेखींचे ५० तो तिनका तेज घटाया तिससे वे
कुछ२ सहजतेज भये फिर जहां संज्ञा छिपीभईथी तहांहीं सूर्य्यजी
भी गये ५१ औ आपभी अश्वरूपहोके तिसके साथ रमते भये तो
तिसने अश्विनीकुमार जोने तिन्हें लेकेसूर्य्यजी हर्षितभये निजलोक

को गये ५२ विश्वकर्म्मा ने कहा कि हे गणेशजी तिनके प्रवलतेज से आपकेलिये ये शस्त्र बनायेहैं ५३ जो अत्यन्त तीखे औ कालको भी जीतनेवालेहैं सोचार मैंने तुमकोदियेहैं औ चक्र गदा दोविष्णुजी कोदिये५४औ त्रिशूल शम्भुजोकोदिया जो सर्वशत्रुनाशकगणेशजी वोले हे विश्वकर्म्मन् तुमने अच्छाकिया जो हमको सुन्दरशस्त्रदिये दैत्य नाशकेलिये औ सज्जनोंके परम उपकारकेअर्थ ब्रह्माजी वोले ऐसेकहके तिन्होंने शीघ्र वे शस्त्रधारणकिये औकँपाये५५।५६ तबतो पृथ्वी वन पर्व्वत कम्पते भये औ करोड सूर्य्यसमान कांतिमानतिन शस्त्रोंसे विभु गणेशजी सजे५७औ विश्वकर्मा तिनसे आज्ञाले निज उत्तम स्थानकोगया उमासुतजीभी बालकोंके साथ खेलतेभये ५८ तोतहां महादुष्ट एक(वृकनाम) महाअसुर आया भयकर मुखवाला औ मत्त महावली सवको असतासा ५९ औ पुच्छके प्रहारसे भूमि को कँपाता हलसिरखे दांतोवाला तोतिस भयानक दैत्यकोदेख के मुनिपुत्र भागगये ६० तोगणेशजीने शस्त्र उठाके तिस वृकासुरको ताडा तोअंकुशही के प्रहारसे वो असुर भूमिपरगिरा ६१ लोहूउ- गलता निजरूपमें स्थितभया वृक्षोंकोचूर्ण करताअरु जीवोंकोमारता दशयोजनफैला६२फिर गणेशजी सूर्य्य अस्तभये बालकोंसहित घर आये बालकोंनेजा उमाजीसे कहाकि आजइन्होंने औरराक्षस मारा है६३जोवृकनाम दशयोजनफैला तिसे अंकुशसे मारातो तिन्हें गौरी जी वोलींकि तुमनिजनिजघरजाओ ६४ तबतो तिसका वचनसुनके बालकनिज२घरगये ६५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्ड में वृकासुर वध इसनामसे पंचानवेवां अध्याय समाप्तभया ॥ ९५ ॥

छानवेवां अध्याय॥

गौरीजी का अदितिजीका विवाद होना वर्णित है।

ब्रह्माजी वोलेकि तबतो कभी गिरिजाजी प्रसन्नभये शंकरजी से वोलीकि हेदेवेशजी गणेशजीको अब सप्तमवर्ष प्रवेशभयाहै१।२ सो अब इसका शुभमुहूर्त में महाउत्साह से यज्ञोपवीत करिये शिवजी

बोले हे गिरिजे तुमने मेरेमनकीसोही जानके बहुतअच्छी वार्त्ताकही ३ इसका यथाविधि अच्छा उपवीतकरेंगे ब्रह्माजीबोले देवशिवजी गिरिजाजीसे ऐसेकह गौतमजीको बुलाकर ४ औ शुभदिनमें लग्न विचार के सामग्री इकट्ठी करतेभये औ विस्तार सहित मंडपबनाय तहां सारे मुनीश्वरों को बुलाके तिनकी पूजाकरके आज्ञावशगामी शिवजी हर्षसे यथाविधिसे गणेशजीका यज्ञोपवीत करतेभये ५ तो वेसब गौरीशंकरजीको औ बालकजीकोभी तोतिन अट्ठासी सहस्रों को नमस्कार करके शिवजी ६ तिनकी विधिसे पूजाकरके तिनको अनेक भेंटदई औ तैसेही तेतीसकरोड़ देवतोंको औ यक्षोंकोभीदई ७ औ नाग कि पुरुषोंको भी देतेभये बाजेगाजे से किन्नरोंके गाते औ अप्सराओं के नाचते ८ औ सबलोगों के महाउत्सव देखते सदा शिवजीने हर्षसे भेंटदई औ दानदिये ६ अरु देवतोंको बैठाके सबको भोजन कराते भये सो कि प्रथम प्रात काल बाल गणेशजी को स्नान कराके अरु तिनकी क्षौर करवाकर पहिले चार ब्राह्मणों के साथ तिन्हें भोजन कराफिर अन्हवाके १० अरु वेदीपर सुन्दर वस्त्र बिछाकर मंत्रवेत्ता मुनियोंसे मुहूर्त्त साधन कराते भये ११ इत नेहींमें (कृतांत) अरु (कालनाम) असुर जो मतहाथी रूपभये महामद झराते हुए १२ तीखे दंतोंवाले दीर्घ शुंडवाले जो आकाश स्पर्श कररहे अर्थात् बहुत ऊंचे चिंघाड़से जनोंको डराते सिंदूर से लाल मस्तकवाले १३ जिनके पैर फटकारसे भूमि शीघ्र कंपती सो ऐसे वे दांतोंके प्रहारसे लड़ते २ रजसे आकाशको ढकके १४ स- भाके द्वारपर इंद्रकेहाथीके पासआये औ दंतप्रहारोंसे तिसका मस्त क छेदनेलगे १५ तो वो ऐरावत रुधिर झरता मूर्छित भया झटही भूमिमें गिरा फिर दो घडीमें चेतपायके भगा १६ तो वे दोहाथी पीछे २ लगे तिसको दंत प्रहारोंसे हतने भये फिर तो वे मतहाथी सभामें आये १७ औ वे शुंडोंसे तिस मंडपको ताड़ने लगे तो ति- नका रोला सुनके सबलोग उठखड़े भये १८ फिर तो देवता भगे २ जहां तहां चलेगये औ मुनियें भी तिनके भयसे दशोंदिशों में भग

गये १९ तब तो तहां गणोंने शिवजीसे कहा कि इन्द्र सहित मुनियों की सभा हाथियोंके भयसे नष्टभई ये महाविघ्न भयाहै २० तिनसे डरी गौरीजीभी भगके घरमेंगाई तब तो बालकजीने तिनबलवाले हाथियोंकोदेखकर२१शीघ्र मेघकी ऐसी गर्जनाकरी औ दोनोंहाथों से तिनकेशूंड पकड़लिये तब तो वे चिघाडनेलगे २२ औ गणेशजी तिन्हेंभ्रमाकेएककेऊपर एकको फटकारतेभये तो वे दोनों सौटूकभये भूमिमें गिरते भये २३ तो पृथ्वी कपी औ वृक्षचूर्ण हो २ कर भूमि में गिरे तब तो गणोंने तिनके खंडोंको दूरफेंके २४ औ गौरीजीने बालकजीको शीघ्र निज गोदमें लिये औ विचारने लगी कि सब देवता भगगये औ इसीने इन दैत्योंको शीघ्रहते फिर शिवाजी सब सखियोंसे कहतीभई तब तो वे इन्द्रादि देवता औ मुनियें भी२५। २६सब गणेशजीसे बोले कि हे सब गुणोंकीखान स्वामिन् आपने सब प्राणहारी दैत्य जो कपटनासे गजरूप हो रहेथे २७ ऐसे बल वाले मायावियों को हे देवजी आपने सहजही मारेहैं ऐसे कह २ के देव मुनिये फिर सभामें आये २८ तहां सबोंके विराजमान भये अप्सरा नाचनेलगीं फिरब्रह्मा शिवजीके आगे बाजे बजनेलगे२९ औ परस्पर श्लेष वचन अर्थात् किसका ब्रह्मचारी कि आपका ऐसे कहाकर देके बालकके मेखला बांधी फिर यज्ञोपवीत मृगछाला पहिराये औ समि होमक्रिया ३० फिर शिवजीने विधिसे तिनको गायत्री कहलाई फिर तो माता भिक्षा औ वस्त्र आभूषण दिये ३१ सो कि दुपट्टा औ रत्न मोती औ लड्डू औ भक्ष्य भोज्य दिये औ शिवजीने त्रिशूल चन्द्रमा दिया ३२ औ [भालचन्द्र] ऐसा इनका प्रकट नामधरा औ (शूलपाणि) ये दूसरा रक्खा फिर विष्णुजीने चक्रदिया ३३ औ इन महात्मा जीका [शोचिकेश] ऐसानामधरा फिर इन्द्रने पूजन करके कंठमें पहरने को चितामणि दई ३४ औ इनका सर्व अर्थ दायक (चिंतामणि)ऐसानाम धरा औ तभी ब्रह्मा जीने अर्चन करके कमलदिया ३५ औ सभामें इनका [विधाता] ऐसानाम धराफिर सारे देवता गणेशजीको पूजके ३६ निजइन्द्रा

से तिनके अनेक नाम रखते भये औ अदिति कश्यपजीने आदर से तिनकी पूजाकरी३७ तो आपगणेशजीनेभी पूर्वरूपदिखाया अर्थात् कश्यप सुतहोके दर्शनदिया ३८ सो कि भालचन्द्र दशभुज मुकुट से सजे दिव्यवस्त्रधरे सुन्दर सुगन्ध लगाये दिव्य आभूषण भूषित सिंहपै सवार कांतिवाले उदरमें सर्पलपेटे ३९ तो इनका ऐसारूप देखके अदितिजी प्रसन्नभई स्नेहभरी इनका आलिंगन करतीभई रोमांच खडे औ प्रेमसे गदगदवाणी जिसकी ४० औ परम विस्मय को प्राप्तभई झररहा आंशू जल जिसके परम आनंदमें मगनभई स्नेहसे झररहे स्तनजिसके ४१ तैसेही कश्यपजीने भी तिसी छिनमें देहभाव छोडा अर्थात् बेचेतहुये स्नेहसे गणेशजी से बोले कि हे वत्स हमतेरे बियोगसे ४२ दुर्बल हो रहे अबतेरे दर्शनसे पुष्टभये हैं हेसुत अबतू चरण ध्यानमें परायण हम दोनोंको न छोड़४३गणेशजी बोले कि हे पिता मैं तुमको एकबेर दर्शन देऊंगा सो मैंने अब दर्शन दियाहै तुमशोक क्यों करतेहो ४४ हम सबके अन्तर्यामी हैं इससे हमारा कभी भी वियोग नहींहोता ४५ ब्रह्माजीबोले ऐसे तिनके कहते २ गिरिजाजी भी आगई औ गणेशजीमें तिनकास्नेह देखके परम प्रसन्नभई बोली कि हे अदिति तू मेरे पुत्रको है तैने बहुत कालसे लियाहै४६हे सुभ्रू ये तुम्हारा सुतनहीं है हेसुन्दरहर्षवाली तू अच्छी प्रकारदेख ४७तो फिरि अदितिने तिनका निजपुत्र ही देखे तो बोली कि तूहीदेख येमेरापुत्र आगेखडा है फिर तिसने इनको निजपुत्र गणेशजी देखे ४८ फिर तो अदिती तिनको मेरे कों गिरिजा तिनको मेरे ऐसे कहतीथी ऐसे २ तिनके विवाद करते हर्ष भरे देवता बोले ४९ कि येदेव आदि अंतरहित औ रचना पालना संहार कर्त्ता अनंत रूपवाले अनंत शोभावान् औ अनेक शक्ति सहितहैं ५० ये किसके पुत्रहैं ये दोनों इन्हींकी मायामें भ्रम रहीहैं ये बोलीं कि जिसका ये पुत्र हो तिसीके हाथमें देदेवो ५१ ब्रह्माजी बोले तब तो देवता अनेक रूपवाले ईश्वर इनको देखके तिन्होंने तो कहा कि ये विधाता हैं औ किसीने इनको चतुर्भुज विष्णुजी

गये १६ तब तो तहां गणोंने शिवजीसे कहा कि इन्द्र सहित मुनियों की सभा हाथियोंके भयसे नष्टभई ये महाविघ्न भयाहै २० तिनसे डरी गौरीजीभी भगके घरमेंआई तब तो बालकजीने तिनबलवाले हाथियोंकोदेखकर२१शीघ्र मेघकी ऐसी गर्जनाकरी औ दोनोहाथो से तिनकेशूंड पकडलिये तब तो वे चिघाडनेलगे २२ औ गणेशजी तिन्हैंभ्रमाकेएकके ऊपर एकको फटकारतेभये तो वे दोनों सौटूकभये भूमिमें गिरते भये २३ तो पृथ्वी कपी औ वृक्षचूर्ण हो २ कर भूमि में गिरे तब तो गणोंने तिनके खंडोंको दूरफेंके २४ औ गौरीजीने बालकजीको शीघ्र निज गोदमें लिये औ विचारने लगी कि सब देवता भगगये औ इसीने इन दैत्योंको शीघ्रहते फिर शिवाजी सब सखियोंसे कहतीभई तब तो वे इन्द्रादि देवता औ मुनियें भी२५। २६सब गणेशजीसे बोले कि हे सब गुणोंकीखान स्वामिन् आपने सब प्राणहारी दैत्य जो कपटतासे गजरूप हो रहेथे२७ ऐसे बल वाले मायावियों को हे देवजी आपने सहजही मारेहैं ऐसे कह २ के देव मुनिये फिर सभामें आने २८ तहां सबोंके विराजमान भये अप्सरा नाचनेलगीं फिरब्रह्मा शिवजीके आगे बाजे बजनेलगे२९ औ परस्पर ऐसे वचन अर्थात् किसका ब्रह्मचारी कि आपका ऐसे कहाकर देके बालकके मेखला बांधी फिर यज्ञोपवीत मृगछाला पहिराये औ समि होमकिया ३० फिर शिवजीने विधिसे तिनको गायत्री कहलाई फिर तो माता भिक्षा औ वस्त्र आभूषण दिये ३१ सो कि दुपट्टा औ रत्न मोती औ लड्डू औ भक्ष्य भोज्य दिये औ शिवजीने त्रिशूल चन्द्रमा दिया ३२ औ [भालचन्द्र] ऐसा इनका प्रकट नामधरा औ (शूलपाणि) ये दूसरा रक्खा फिर विष्णुजीने चक्रदिया ३३ औ इन महात्मा जीका [शोचिकेश] ऐसानामधरा फिर इन्द्रने पूजन करके कंठमें पहरने को चिंतामणि दई ३४ औ इनका सर्व अर्थ दायक (चिंतामणि)ऐसानाम धरा औ तभी ब्रह्मा जीने अर्चन करके कमलदिया ३५ औ सभामें इनका [विधाता] ऐसानाम धराफिर सारे देवता गणेशजीको पूजके ३६ निजस्था

से तिनके अनेक नाम रखते भये औ अदिति कश्यपजीने आदर से तिनकी पूजा करी३७ तो आपगणेशजीनेभी पूर्वरूपदिखाया अर्थात् कश्यप सुतहोके दर्शनदिया ३८ सो कि भालचन्द्र दशभुज मुकुट से सजे दिव्यवस्त्रधरे सुन्दर सुगन्ध लगाये दिव्य आभूषण भूषित सिंहपै सवार कांतिवाले उदरमें सर्पलपेटे ३६ तो इनका ऐसारूप देखके अदितिजी प्रसन्नभई स्नेहभरी इनका आलिंगन करतीभई रोमांच खडे औ प्रेमसे गदगदवाणी जिसकी ४० औ परम विस्मय को प्राप्तभई झररहा आंशू जल जिसके परम आनंदमें मग्नभई स्नेहसे झररहे स्तनजिसके ४१ तैसेही कश्यपजीने भी तिसी छिनमें देहभाव छोडा अर्थात् बेचेतहुये स्नेहसे गणेशजी से बोले कि हे वत्स हमतेरे वियोगसे ४२ दुर्बल हो रहे अबतेरे दर्शनसे पुष्टभये हैं हेसुत अबतू चरणध्यानमें परायण हम दोनोंको न छोड४३गणेशजी बोले कि हे पिता मैं तुमको एकबेर दर्शन देऊंगा सो मैंने अब दर्शन दियाहै तुमशोक क्यों करतेहो ४४ हम सबके अंतर्यामी हैं इससे हमारा कभी भी वियोग नहींहोता ४५ ब्रह्माजीबोले ऐसे तिनके कहते २ गिरिजाजी भी आगई औ गणेशजीमें तिनकास्नेह देखके परम प्रसन्नभई बोली कि हे अदिति तू मेरे पुत्र गोदमें तैंने बहुत कालसे लियाहै४६हे सुभ्रू ये तुम्हारा सुतनहीं है हेसुन्दरहर्षवाली तू अच्छी प्रकारदेख ४७तो फिरि अदितिने तिनको निजपुत्र ही देखे तो बोली कि तूहीदेख येमेरापुत्र आगेखडा है फिर तिस्मैंने इनको निजपुत्र गणेशजी देखे ४८ फिर तो अदिती तिनको मेरे औ गिरिजा तिनको मेरे ऐसे कहतीथी ऐसे २ तिनके विवाद करते हर्ष भरे देवता बोले ४६ कि येदेव आदि अंतरहित औ रचना पालना संहार कर्त्ता अनंत रूपवाले अनंत शोभावान् औ अनेक शक्ति सहितहैं ५० ये किसके पुत्रहैं ये दोनों इन्हींकी मायामें भ्रम रहीहैं वे बोलीं कि जिसका ये पुत्र हो तिसीके हाथमें देदेवो ५१ ब्रह्माजी बोले तब तो देवता अनेक रूपवाले ईश्वर इनको देखके किसीने तो कहा कि ये विधाता हैं औ किसीने इनको चतुर्भुज विष्णुजी

बताये ५२ औ किसीने इनको त्रिनेत्र शिवजीबताये औ कई विस्मित भये देवोंने इनको वरुण बताये औ बोले कि ये हमसे निश्चय नहीं होसक्ता ५३ तुम्ही दोनो निज विवेकसे इसपरम पुरुषको ले लेवो तब तो गौरीजीने तिन विभुगणेशजीको लेलिये ५४ औ स्नेह से तिनको दूधपिलाया तब अदिती निराश होगई बोली कि जो ये मेरा बालक होता तो और केपास क्योंजाता ५५ मैं पराये पुत्रमें भ्रांतिसे वृथा आसक्त भई फिर मुनियें औ कश्यपजी इन गणेशजी की पूजा करते भये ५६ औ सबवाले नमस्कार कर २ के निज २ स्थानगये औ गौरीजी पुत्रको लेके हर्षित भई घरमें आई ५७ फिर सारे सभावाले भी निज २ घरगये ५८ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें गौर्य्यादितिसंवाद इसनामसे छानवेवांअध्याय समाप्तहुआ ५६ ॥

सत्तानवे अध्याय ॥

श्रीगणेशजीका(मयूरेश्वर) ऐसा नामहोनाव है व्यासजीने पूछा कि हेब्रह्मन् आपने मयूरेश्वरनाम गणेशजीकहे फिर तिनकीमहिमा गणेश इस नामसे मुझको कहो१तो तिन्होंने [मयूरेश्वर] नाम कैसे पाया तिन्होंने ऐसा क्या महा कर्म कियाथा हे विश्व रचनेवाले ब्रह्माजी ये वृत्तांत भले प्रकार मुझसे कहो २ श्रीब्रह्माजी बोले कि जैसे तिन्होंने भारीकर्म किया औ [मयूरेश्वर] नामपाया सो हम सब कहते हैं ३ पाताल लोकमें शेषजी निज सभामें विराजमान थे जो वासुकि आदिसर्पोंसे सब ओरसे घिरेभये ४ फिर तहां [कद्रू]- इनकी माता आई जो तेजस्विनी सुरूपा जो मणिमोती युक्त सुन्दर अंगिया पहिरे ५ जो चमकतेहोठोंवाली चंद्रमुखी औ दिव्य आभूषण धारे तिसनिज माताको देखके शेषजी औ वासुकि आदि सारे सर्प ६ प्रणाम करतेभये औ बोले कि हेमात बहुत दिनोंमें तुम्हारा दर्शनभया सबतुम्हारे दर्शन चाहरहे थे तुमनिठुर होगईहो ७ वे शिसकाहाथ पकडके ऐसे कहते निज पिताके आसन पै बैठते भये ८

औ परमभक्तिसे पूजाकरी फिर शेषजी तिससेबोले कि हेमाता तुम
वडी पतिव्रता कश्यपजीकी पत्नीहो ९ जो वे सर्व्वविद्यानिधान औ
रचना पालना सहार कारीहैं औ ब्रह्मादिक देवता जिनके तत्व को
नहींजानते औ तुमभी शीघ्रही शाप औ अनुग्रहमें परायणहो १० औ
हेमात त्रिलोकी को ग्रसनेवाले ऐसे ऐसे हम तुम्हारे पुत्रहे सो तुम
यहा क्या प्रयोजनकि विचारकेआईहोसोकहो ११ कद्रू बोली हेपुत्र
बिनप्रयोजन तो कोईकहीभी नहीजाताहै सो सब मे तुझकोकहतीहूं
हेपुत्रतू आदरसेश्रवणकर १२ हेपुत्र पक्षियोंकीमाताविनता जो मेरी
सपत्नी हे तिसकेदर्शनकीआकांक्षा मुझकोकभीभईथी १३ तो मै शीघ्र
तिसकेघरपेगई तब तिसने मेराअनादर किया सो कि तिससे न तो
आसनदिया औ न स्वागत सत्कारकिया १४ जो पहिलेवैरकास्मर्ण
करतीनिजपुत्र [जटायु]को आज्ञादेतीभई तिसनेमेरी लटीखैंची मु-
झको छिनमें बिनवस्त्र करो १५ औ मुझे बोला कि हे दुष्टे तेरामुख
न देखना चाहिये हमारी माताको पहिलेतूने दासी बना रखीथी
तब तो तेरे मनमें कभी दयाका लेश भी न आया अब हे दुष्टेयहा
से चलीजानहीं तो मै तेरेप्राण निकाल डालोगा १६ सो फणीन्द्र
जी तिसके वाक्य सुनसुनके मे दुःखीहू जो तुम्हारी मुझमे भक्ति है
मेरी सहायता करो १७ जो मे सपूतवाली तुमसे माननीयहूं तो
तुम तिसमेरी सपत्नीकाविनाशकरो तब मेरे हृदयमें सुखहोगा १८
ब्रह्माजी बोले ऐसा तिसका वचन सुनके रिससहितजो शीघ्र घृत से
दिपाई आगके समान जलतेभये १९ बोले कि जो विनता सुतो ने
मेरीमाताकोपीडितकरी तो मैं तिसकानिस्सन्देह उपायकरूंगा २०
ऐसे कहके वासुकी आदि सर्प्पोंसहित शेषजी जहां विनतायी वहा
हीं चलनेको चाहे २१ सो वासुकि बोला कि मैं हीं अनेक नागस-
हित जाऊंगा औ विनताको पकडलाऊंगा हे अनघ भुजंगाधि-
पतिजी आपबैठे २२ ब्रह्माजी बोले वासुकि ऐसे कहके शीघ्रही
विनता के आश्रम पे गया तो अनगिनत नाग देखके तब विनता
डरी २३ सो तभी तेजम्भारवाले सर्प्पोंने तिसेपकडी औ शेषजी

केपास ले चले तो वो तिनसे बोली२४ कि तुम मुझकोबांधके क्यों लेचलते हो विन अपराध सो हे पापियो मुझमेंकरो मेरेपुत्र के प्रभावको तो सारेसर्प्प जानते हैं २५ इससे मुझे छोड़ो नहीं वो तुम्हें सहारेंगा ब्रह्माजी बोले तब तो तिनकी तैसी धृष्टतादेख विनताने गरुडजीका स्मरणकिया २६ तो वे भी तिसका स्मरण जानके पक्षि सहित तहां आये सो क्श्येन सम्पाति औ जटायु पक्षी २६ जिनके पक्ष पवनसे त्रिभुवनकम्पा औ वे सारे सर्प्पभी मुखोसे विषकणछोड़तेहुये ३० तब तो सर्प्प औ पक्षिका घोरयुद्ध भया तो वे जटायुश्येन सपाति इनको बांधके माताकेपास ले-गये ३१ इतने में मातासे स्मरण करे गरुडजी भी तहां आपहुंचे जो पख पवनसे सारीपृथ्वी औ पर्वत वृक्षों को गिराते ३२ तो सर्प तिनकी सुगन्धही से भगगये कई सर्प तिनके पंख पवनसे आकाशमे भ्रमतेभये ३३ तो बन्धनमेंछुटी विनता तो निजस्थानको चली तो तिसे देखके शेषजी क्रोधभरे विष उगलने आकाशको ज-लानेभये ३४ तो तिनको गरुडजीने पक्ष प्रहारसे भूमि पर गिराये औ विनता निज उत्तम स्थानकोपहुचो ३५ फिरतो गरुडजी वासुकि के प्रतापको देखके सूक्ष्म स्वरूप करके विनताकी रक्षाकरनेचले तो तिनके जातेही ३६ वासुकिजी कोपभये जो अत्यन्त विषछोड़ते पृथ्वीको जलातेभये औ शीघ्र तिसके सुत श्येनादिकों को बांधलाय के पाताल बिलमें डाले ३७ औ शिल से तिस बिलको ढकके फिर माताकेपास आवे औ माता औ शेषजीको सबवृत्तान्त सुनाया ३८ तब तो तिन निजसुतोंको बंधेसुनके विनता शोचनेलगी तो शीघ्र क-श्यपजी पे गई औ तिन्हे नमस्कार करके बोली ३६ कि ये पश्चिम में सूर्य्य उदय होनेके समान बड़ी उलटी बातभई जो घरमेंबैठी मुझ को वासुकि सर्प शत्रु पकडलेगया ४० औ पीछेसे जो जटायु श्येन सम्पाति मुझे छुड़ानकोचले तो तिनको सर्पोने पराक्रमसे मारे ४१ फिर सर्पोंसे तिनके हारनेपर मैंने गरुडजीका स्मरण किया तो ति-न्हो ने बहुतसे सर्प्पोंको जीतकर ४२ मुझे छुटाई औ सूक्ष्म रूपसे

आप भी मेरे साथ चले तो तिनबली वासुकिने श्येन सम्पाति जटायु
को बलसे बाधके ४३ पाताल बिलमें ढकछोडे अब हे मुनिजी तिनके
बिन मेरे प्राणजातेहैं ४४ आप सरीखे स्वामीहोते मैं ऐसादुःखपाईहूं
ब्रह्माजीबोले कि ये प्रियाका वचनसुनमुनिकश्यपजी तिससेबोले४५
कि हे भद्रे तू चिन्ता मतकर तेरे मनका ताप दूरहोगा मैं तुझको
ऋतु देताहूं तिससे तेरे पुत्रहोगा ४६ सो कि वो तेरा अण्ड वज्रसे
भी न फूटेगा जब गौरीसुतजी खेलतेर पैरोसे तिसे फोडैंगे तब तेरे
पुत्रहोगा ४७ सो नीलकण्ठ बलवाला मानो दूसरे शिवजीही हों
तो तिसका शब्दसुनतेही वे भुजग भगजावैंगे ४८ औ वे गणेशजी
भी तिसपर सवार होकर भूमिभार उतारेंगे ४९ तभी तेरेपुत्र नाग
फांशसे छूटेंगे ऐसेकह मुनिजीने तिसको एकान्तमेंलेजाकेऋतुदिया
तब हर्ष भई विनता एकान्त वनमें आई ५० फिर समय पर
तिसने अण्डाजना जो वज्र पर्व्वतोसे न फूटे तिसे वो मिट्टीके घडेमें
वक्कलोसे लपेट रखके आप तिसपर बैठगई ५१ जे पृथ्वीमेंधरे घन
पर बलवाला सर्पबैठे इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें नागगरुड
युद्धहोना इसनामसे सतानवेवां अध्याय हुआ ९७ ॥

अट्ठानबे अध्याय ॥

श्रीगणेशजी करके शिष्यजीको वर देना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि सातवा वर्षबीते आठयें वर्ष वे गणेशजी स-
वेरे स्नान करके स्थित चारवेद जपतेभये १ कस्तूरी तिलकलगाये
औ अनेक आभूषणोंसेसजे दिव्यवस्त्रधारी औ सुन्दर सुगन्धमाला
डाले २ फिर वे तपस्वियों के सुत तिनके पास आये जो सारे तिन
गणेशजीकी कान्तिसेसजे अरुणोदयसे मेघ सजरहेहों ३ तो तिन्हें
देखके तिनकी बुद्धि बालकोंके साथ पढ़नेभई तो वे गणेशजीने सब
के शिरपर हाथधरा ४ तो तिन तीनर चारर्वर्षके बालकोंके शीघ्र
वेदस्फुरणभई जैसे चेतरहे बिन आकाशवाणीसेही शब्द सुनाजाता
है ५ तो वेचारों वेदोंकी पारायण करतेभये तो तब पशुओं ने तृण

केपास ले चले तो वो तिनसे बोली२४ कि तुम मुझकोबांधके क्यो लेचलते हो बिन अपराध सो हे पापियो मुझसेकहो मेरेपुत्र के प्रभावको तो सारेसर्प्प जानते हैं २५ इससे मुझे छोडो नहीं वो तुम्हें सहारेगा ब्रह्माजी बोले तब तो तिनकी तैसी धृष्टतादेख बिनताने गरुडजीका स्मरणकिया २६ तो वे भी तिसका स्मरण जानके पक्षि सहित तहां आये सो श्येन सम्पाति औ जटायु पक्षी २६ जिनके पक्ष पवनसे त्रिभुवनकम्पा औ वे सारे सर्प्पभी मुखोसे विषकणछोडतेहुये ३० तब तो सर्प्प औ पक्षिका घोरयुद्ध भया तो वे जटायुश्येन सपाति इनको बांधके माताकेपास ले गये ३१ इतने में मातासे स्मरण करे गरुडजी भी तहां आपहुंचे जो पंख पवनसे सारीपृथ्वी औ पर्वत वृक्षों को गिराते ३२ तो सर्प तिनकी सुगन्धही से भगगये कई सर्प तिनके पख पवनसे आकाशमे भ्रमतेभये ३३ तो बन्धनसेछुटी बिनता तो निजस्थानको चली तो तिसे देखके शेषजी क्रोधभरे विष उगलने आकाशको जलातेभये ३४ तो तिनको गरुडजीने पक्ष प्रहारसे भूमि पर गिराये औ बिनता निज उत्तम स्थानकोपहुची ३५ फिरतो गरुडजी वासुकि के प्रतापको देखके सूक्ष्म स्वरूप करके बिनताकी रक्षाकरनेचले तो तिनके जातेही ३६ वासुकिजी कोपभये जो अत्यन्त विषछोड़ते पृथ्वीको जलातेभये औ शीघ्र तिसके सुत श्येनादिको को बांधलाय के पाताल बिलमें डाले ३७ औ शिल से तिस बिलको ढकके फिर माताकेपास आये औ माता औ शेषजीको सबवृत्तान्त सुनाया ३८ तब तो तिन निजसुतोंको बंधेसुनके बिनता शोचनेलगी तो शीघ्र कश्यपजी पै गई औ तिन्हें नमस्कार करके बोली ३९ कि ये पश्चिम में सूर्य्य उदय होनेके समान बडी उलटी बातभई जो घरमेंबैठी मुझको वासुकि सर्प शत्रु पकडलेगया ४० औ पीछेसे जो जटायु श्येन सम्पाति मुझे छुडानेकोचले तो तिनको सर्पोंने पराक्रमसे मारे ४१ फिर सर्पोंसे तिनके हारनेपर मैंने गरुडजीका स्मरण किया तो तिन्होने बहुतसे सर्प्पोको जीतकर ४२ मुझे छुटाई औ सूक्ष्म रूपसे

आप भी मेरे साथ चले तो तिसबली वासुकिने श्येन सम्पाति जटायु को बलसे बांधके ४३ पाताल बिलमें ढकछोडे अब हे मुनिजी तिनके बिन मेरे प्राणजातेहैं ४४ आप सरीखे स्वामीहोते मै ऐसादुःखपाईहूं ब्रह्माजीबोले कि ये प्रियाका वचनसुनमुनिकश्यपजी तिससेबोले ४५ कि हे भद्रे तू चिन्ता मतकर तेरे मनका ताप दूरहोगा मैं तुझको ऋतु देताहूं तिससे तेरे पुत्रहोगा ४६ सो कि वो तेरा अण्ड वज्रसे भी न फूटेगा जब गौरीसुतजी खेलनेर पैरोसे तिसे फोडेंगे तब तेरे पुत्रहोगा ४७ सो नीलकण्ठ बलवाला मानों दूसरे शिवजीही हो तो तिसका शब्दसुनतेही वे भुजग भगजावेंगे ४८ औ वे गणेशजी भी तिसपर सवार होकर भूमिभार उतारेंगे ४६ सभी तेरे पुत्र नाग फांशसे छूटेंगे ऐसेकह मुनिजीने तिसको एकान्तमेंलेजाकेऋतुदिया तब हर्ष भई विनता एकान्त वनमें आई ५० फिर समय पर तिसने अण्डाजना जो वज्र पर्व्वतोसे न फूटे तिसे वो मिट्टीके घडेमें वक्कलोसे लपेट रखके आप तिसपर बैठगई ५१ जै पृथ्वीमेंघरे घन पर बलवाला सर्पबैठे इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें नागगरुड युद्धहोना इसनामसे सत्तानवेवा अध्याय हुआ ६७॥

अट्टानवे अध्याय॥

श्रीगणेशजी करके विप्रपुत्रोंको वर देना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि सातवा वर्षबीते आठयें वर्ष वे गणेशजी न· बेरे स्नान करके स्थित चारवेद जपतेभये १ कस्तूरी तिलकलगाये औ अनेक आभूषणोंसेसजे दिव्यवस्त्रधारी औ सुन्दर सुगन्धमाला डाले २ फिर वे तपस्वियों के सुत तिनके पास आये जो मारे निज गणेशजीकी कान्तिसेसजे अरुणोदयमें मेघ सजरहेहो ३ तो तिन्हें देखके तिनकी बुद्धि बालकोंके साथ पढ़नेभई तो वे गणेशजीने सब के शिरपर हाथधरा ४ तो तिन तीनर चारर्वर्षके बालकोंके वेदस्फुरणभई जैसे चेतरहे बिन आकाशवाणीमेंही शब्द हे ५ तो बेचारो वेदोंको पारायण करतेभये तो तब

रजोगुणसे तो रचना करनेवाले ब्रह्माजी हो ३६ श्रो सत्त्वगुण से पालन करता विष्णुजी भी आपहीहो श्रो तमोगुणसे संहार करने वाले शिवजी भी आपहीहो ४० श्रो न देव न ऋषि तुम्हारे सगुण रूपके भी तत्त्वको जानते फिर निर्गुण श्रो चर अचरके स्वामी आपके तत्त्वको कौनजाने ४१ श्रो मैं मुनिकश्यपजीकी स्त्री विनता हू तिसका पुत्र (शिखण्डी) सो आपका भक्तहोगा ४२ मुनि कश्यप जीने मुझसे पहिले कहदियाथा कि जो इस अण्डेको फोडेगा सोही इसका स्वामी तुम्हारे पुत्रोंको छुड़ावेगा ४३ सो मैंने बहुतकालमें आपके चरणारविन्ददेखे हैं सो कि जटायु श्येन सम्पाति येमेरे तीनपुत्र कद्रूकेसुतोंने बधकर रक्खेहै ४४ हेजगतकेनाथ तिन्हे तुम छुटाय शीघ्र मुझदिखाओ गणेशजी बोले हेमात तुम चिन्तामतकरो हमतेरे सुत दिखावेंगे ४५ ब्रह्माजी बोले विनतासे ऐसे कहके फिर बहुत हर्षित गणेशजी शिखण्डीसे बोले कि तू मुझ से वरमांग ४६ मयूर बोला जो आप मुझ पे प्रसन्नहो श्रो जो मुझ को वरदेना है तो मेरानाम पहिले जिसमें ऐसा आपका नामहोवे ४७ श्रो आपकी दृढ भक्तिहोवे हे देवेश मुझको ये वरदेवो गणेशजी बोले कि जो तैने निरलोभ मनसे विचारकहा सो बहुत अच्छा ४८ तुझनाम पूर्वक हमारा (मयूरेश्वर) ऐसा नाम होगा जो त्रिभुवनमें विख्यात श्रो हममें तेरी दृढ भक्ति होगी ४९ ब्रह्माजी बोले कि ऐसा सुनके विनता निज आश्रम को गई श्रो शिखण्डी पे चढे मयूरेशजी ५० मयूरेश्वर ऐसेकहते मुनिबालको सहित दिशोंको शोभादेन निजघर आये ५१ श्रो माताको प्रणाम करके सब वृत्तान्त सुनातेभये श्रो मुनिपुत्र मयूरेश्वरजी के गुणवर्णन करते निज २ घरगये५२॥ इति श्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड शिखण्डी को वरदेना इसनाम से

निन्नानवेवां अध्याय॥

मयूरेश्वरजीकी लीलाओंकावर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि ये गणेश्वरजी नवें वर्ष में बड़ा २ आश्चर्य करते भये सो कि शिखण्डी पै चढे चारोंशस्त्रों से सजे १ नाना भूषणोंसे भूषित कस्तूरी से शोभित दिव्यवस्त्र पहिरे ऐसे बाल मयूरेश जीखेलनेको चले २ जो पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभावानजयर शब्दोंसे स्तुत सो कई बालक तिन्हें नमस्कार करते कई छत्र चमर करते ३ तिनके दर्शन से महाउत्साहवाले तो वे सब खेलते २ एक पांच योजनकी तलाई पै गये ४ अथाहजल जिसमें औ जो मकर मच्छ कछुवे मेंढक इनसे युक्त वृक्षवेलोंसे घिरी औ अनेक पक्षियों सहित ५ सो कई तिसमें दौडके औ कई धीरेसे जा २ के पड़े फिर तिसके तीर पर फटल सहित भारी आमको देखके ६ मयूरेश जी तिस पर चढे तो सब बालकभी फलखानेकी इच्छाकरकेचढे औ आपसमें आमों से लड़तेनहीं है भिन्नअंग जिनके नहींभये ऐसे एकके एक मारते भगे २ ऐसी लीलाकररहे तहां बालक डालोंको विदारणाकरते अर्थात् तोडतेकईजलमें गिरतभये ऐसेबालकोके खेलते२ अश्वरूपवाला एक दैत्य आया ७।८ जिसके पैरके प्रहारसे पर्वत चूर्णहोते थे औ जिसके हिनसनके शब्दसे त्रिभुवन कंपताथा ९ औ वो पूंछके चपलपने से जीवोंको मारता तिसआमसे कंधाघिस नें लगा तो तिसपरसे बालक गिरपडा १० तो कई बालक मरे औ कई भगगये औ कई जलमें गिरपड़े औ गणेशजी जलमें पड़के डूबगये जब चारघडी भई तब तो वे दुःखित मुनिबालक रोनेलगे कि अब हम क्या जायके कहैं औ अपना मुख गौरीशंकरजी को कैसे दिखावेंगे ११।१२ शिवजी भी रिसभरे हम सबोंको भस्म करेंगे औ अथाह जलमें डूबे तिनके पास हमनहींजासके १३ हमारे मा बाप पालक सखावेही हैं ब्रह्माजी बोले कि ऐसे बालकों के कहते२ मयूरेशजी ने तिसके कानपकड़े औ तिसे जलमें खैंचा औ

वलसे तिसदैत्य पै चढे औ निजभारसे वेर २ डुवोतेभये १४। १५
तो वो दैत्यनेत्र औ मुखसे वहुतजल छोडताभया औ जलभरे कर्ण
श्वासभया वो भारीशब्द करता प्राणत्यागताभया १६ फिर तिसे
एकहाथसे पकड़ हिलाके मयूरेशजी ने जलसे बाहर फेंका तबतो
वालक अत्यतहर्ष औ नाचनेलगे १७ औ तिन्होने भूमि में सौटूक
भये तिसदैत्यकोदेखा तो महापराक्रमी गणेशजीकोसराहतेभये १८
औ वे तिनसे कहनेलगे कि हम तो तुम्हे मरे समझकेरोतेथे तित-
नेहीमें तुमको दैत्यमारे बाहरआये हमने देखे हैं १९ तब तो फिर
वे जलमें पड़के आपसमें अजलि छिड़कनेलगे तो वे सब एकमति
करके गणेशजी को भिगोतेभये २० जैसे वर्षाकालमें मेघके जैसे
घरती पर्वतोको भी छिडकतेभये जब निज छे भुजोसे छिडकते २
गणेशजी परिपूर्ण न भये अर्थात् सब न छिडकसके २१ तब तो वे
असंख्यभुजाकरके तिनपर जल छिडकनेलगे तब तो वे आश्चर्य्य
देखकेआपसमें बोले२२ कि ये छे भुजवान् थे औ अबइनके अनगि-
नत भुजाकैसेहोगई तब तो मन्दभये वेमुनिसुत बोले कि हे प्रभो हम
दोहाथवाले कहां२३ औ हेत्रिभुवनकेईश्वरअनगिनतवलवाले आप
कहां ऐसे कह फिर वे रिसभरे मयूरेशजी पर जलछिडकनेलगे २४
तो अनेक रूपभये गणेशजी तिन सबोको छिड़कते भये सो कि वे
निजतेज एक २ के आगे एक २ ही हो २ कर २५ औ तितनेहीमें
गणेशजी मोरपर चढ़े औ चार शस्त्रधारे तो वे ऐसेदेव गणेशजीको
देखके अजलिपुट बांधके प्रणाम करतेभये २६ औ वे तिनके मुखमें
सारे स्वर्ग औ गन्धर्व यक्ष राक्षस नदी समुद्र वृक्ष इनको औ देव
मनुष्य सहित चर अचर संसारको भिन्न २ देखते भये २७ तो ऐसे
इन्हें देखके भयभीत भये वे इनको प्रार्थना करने लगे वालक बोले
कि हम अपने औ पराये को नहीं पहिचानते हैं २८ सो हे सपूर्ण
के स्वामी प्रभो आपहम सबोंपर कृपाकरके एक रूप होओ २९
ब्रह्मानीबोले तब तो तिनकीस्तुतिसुनके वे गणेशजी पहिलेकी नाईं
भये इतनेहीमें तहां नाग कन्या खेलतीथीं ३० जिन्हें देखके आर्य

नायकोंके अत्यंतलज्जाभई औ हिरनियें नेत्रमीचके तिन्हें देखतेही भगगई३१ अत्यत सुंदरशरीरवाली औ सबअलकारोंसे सजी ऐसी वे इनमयूरेशजीकोदेखके कामअग्निसे व्याकुलभई३२ वे आपस में बोलीं कि जो ये हमारेभर्ताहोवे तो हमाराजन्म जीवनअवस्यासफल होवे३३ फिर वेधीरजसे तिनकोबोली कि तुम्हाराआनाकहासे भया तुम्हारा मुख देखके हमारा चित्त व्याकुल होता है ३४ हे नरोत्तम तुमातिज अगके संगसे हमारे चित्त को विश्राम देवो गणेशजी बोले कि मे (मयूरेश्वर) नामी शिवजीका पुत्रहूं ३५ सो बलवान् मुनि पुत्रोंसे सहित था सो इस जलसे नीचेचला आयाहू प्रसगसे तुम्हारे चरण आदेखेहैं ३६ वे बोलीं कि हमारे घर क्षणभर ठहरके आप विश्राम लीजिये गणेशजी बोले कि पार्वती मेरे वियोग से अत्यत पीडित होगी इस से में तुम्हारे स्थान पे नहीं आता हे नागकन्यो तुमचली जावो ३७ ब्रह्माजीबोले ऐसे कहतेही वे गणेशजीको पकडलेगई तो तिनको न देखके मुनिबालक फिर शोच करने लगे ३८ बालक बोले कि दयालु भी गणेशजी हमपे कैसे कठोर भये अमृतझरातीं किरणोंवाला चंद्रमा कभी उष्ण नहीं होता ३९ औ पिता अनत अपराध सहितभी बालकको नहीं त्यागता है सो तुम अब कहागये तुमबिन हमारे प्राणजाते हेंगे ४० ब्रह्माजीबोले ऐसे कह२के कई तो भूमिमेंगिरे औ कई शिरपीटतेभये४१ औ कई निज घरको आये तो राहमें तिनके चरणारविन्द तिन्हदेखे तो रोते २ प्रणाम करतेभये फिर तिन्होने (भगासुरको देखा) ४२ जिसके माथेकेकेश भिडनेसे तारे टूट २ गिरते थे औ सौ योजन के पैरों वाला वो भूमि में मुख फैलाकर ४३ तिनके मार्ग में सोया तो वे बालक आये जो गणेशजी को ध्याते मार्ग में अत्यत व्याकुल होते ४४ तो वे तिसके उदरमें चलेगये जैसे नदियें समुद्रमें तबतो धातभये आपसमें अनेक प्रकारकी वार्ता करनेलगे ४५ कि मयूरेशजी तो कहींगये औ हमकहीं जातेहैं हमसब दिशोको नहींजानते औ न तारे दीखते हैं ४६ इन्द्रियोंका स्वामी जो मन सो तो तिनमें

जालगा है औ तिसमन विन हे वालको हमको ज्ञानकैसे होवे ४७ कहाँ हमारे मा वापभाई औ गणेशजी कहाँहैं ऐसे २ तिन्होंके कहते सर्व ग्रर्थ कर्त्ता गणेशजी ४८ वा शस्त्रोंसे सजे तिनके आगे प्रकटे औ वोले कि शोच मतकरो मैं तुम्हारा दुःख जानकेही शीघ्र आयाहूं ४६ हे वालको तुम भगासुरके मुखमें हो इससे अपने परको नहीं जानते ब्रह्माजीवोले तव तो तिनको गणेशजीने निद्रासे मोहित किये ५० औ आप दैत्यके देहमें वामनजीकी नाई वंधे तो गणेशजी ने तिसका देह फाडके दो टूककिये ५१ औ तहां सूर्य्य छिपे औ वालकोंके न आये तिनके मातापिता सारे भारी चिन्ता करनेलगे ५२ औ वे आपसमें महाबली गौरीपुत्र हमारे वालकोंको लेके कहांगया कहीं वालकों समेत मराता नहीं है ५३ जोजीवता होगा तो सांझतक भूखा आवेगा औ कई स्त्रियें निजवालकों विन प्राणछोडतीभई ५४ औ कई वोलीं कि पिछलात उमाजीसे जायकहो औ वे कई वनमेंगये वृक्षपर्वतोंमें भ्रमतभये ५५ पर न तो गणेशजी औ न निज२ वालक मिले तो खेदित भये घरही चलेआये औ तिनके मा वाप भाई भारी रौल मचाते भये ५६ तो तिनका पुकारना सुनके दयालु वे गणेशजी अपनेको तिन २ही के रूप औ तिन२ ही आभूषणोंसे भूषित ५७ तिसतिस वस्त्रकोहीपहिरे वैसेतैसेही शील गुणयुक्त औ तिसतिसही अंगवाला अपनेको शीघ्र वनातेभये फिर वे घरआये ५८ सो तिनतिनकी अवस्था औ भेष वनायके तो वे माता उठउठके औ तुर्त निजनिज वालको को लेलेकर ५६ परम आनन्दभरी प्रीतिसे स्तनपिलातीभई फिर मा वाप तिन वैसेतैसेही वालकोंकोदेख क्रोधसेलडनेलगे कि तुमकहारहे सवेरेसे कहांगयेथे न न्हाया न खाया न कुछ औरही जलपानकिया ६० अव तुम मयूरेश्वरकेसंग मतजानो ब्रह्माजीवोले कि ऐसे वे निजनिज वालकोंको शिक्षादेदेकर औ तिनका आलिंगन करकरके सुख भोगतेभये ६१ फिर शिवाजीने मयूरेशजीको आगेआये देखे तो तिसका स्पर्शकरके वोलीं कि तुमने वनमें क्याखाया ६२ तुम्हारे वियोगके दुःखसे मैंने

वु छ नहीं खायाहै ये दूधभरे मेरेस्तन पी औ भोजन भी कर ६३।६४ तब तो गणेशजीने गौरीजीका वचन माना ६५ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में भगासुरको मोक्ष होना इस नामसे निन्नानवेवां अध्याय समाप्त हुआ ९९ ॥

सौवां अध्याय॥

नागलोक वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि अनेक रूपवाले सबके स्वामी मयूरेशजी अतिसुन्दर शरीर जिनका सो नागकन्याओंकरके घेरेगये १ सो कि इनको क्रीडाकेलिये घरलेगई औ बहुत विस्तारसेपूजे सो कि सुगंध तैलउबटनमिश्रित उष्णजलसे न्हवाके २ औ सुन्दरवस्त्रभूषण औ चन्दनक्षनसे पूजित कियेधूपऔदीप नैवेद्यफलताम्बूलसुवर्ण चढाके ३ हाथबांधकर बोलीकि हेप्रभो हम अतिधन्य हैं हे देवजी जोकि ब्रह्मादिकों से इच्छा किये आपके चरणका दर्शनकिया ४ यहनागलोक धन्यहै औ हमारा जीवन सफल भया है औ हमारागन दुःख रहित हो आनन्द में मग्नभया ५ औ हे देवजी जोजो आपको इष्ट हो सोसोही यहालीजिये यहा कुछदिन रहके फिर चलेजाना ६ मयूरेशजी बोलेकि मैं तुम्हारा वांछित पूर्ण करूंगा पर गिरिजाजी मेरी राह देख रही है मेरे वियोग से वे कुछ नहीं खातीहै ७ तुम किसकी पुत्रीहो तिसका जो हमे दर्शनहो ब्रह्माजी बोले कि तब वे नागकन्या बोलीं कि हम वासुकिजीकी पुत्रीहैं ८ जिनके घर सदा ब्रह्मादिक देव आतेहैं जिनके विषसे भया अग्नि त्रिभुवनको जलावे ९ ब्रह्माबोलेकि ऐसेकह तिन्हें आगे करके वे पिताके पास आई जो रत्न जटित सिंहासनपै विराजमान अनेक नागयुक्त १० औ करोड़ सूर्य समान रत्नमालोंसे शोभित औ मस्तक की मणि किरणों से जो दशोदिशों को प्रकाशित करता ११ तो तिस बलवाले गर्वीले वासुकिको देखके मयूरेशजीने तिसी क्षण झपटके तिसकेमस्तक से मणि निकाललई १२ जिससे पाताल छिद्रमें कहीं अंधेरानहीं होता

ताया औ साती पर्वतो को कम्पाते तिसकाशिर हिलाते भये १३ समुद्र औ सात पाताल लिये स्थानकोभी चञ्चलित करतेभये १४ फिर मयूरेशजी सहजसे तिसको एकहाथसे पकड़कर निज कण्ठमें बांधतेभय तो सर्पभूषण कहाये १५ फिरवे आनन्दसे गर्जनाकरतेभये तिनका गर्जना सुनके त्रिभुवन चलितभया १६ तब तो सर्पाने वासुकिजीको पकड़े शेषजोको जाबताये तौवे क्रोधभरा सारेफैलाकर १७ विष अग्नि छोडता त्रिलोकीको जलाने लगा औ बोला कि मेरेबधु वासुकिको कौन जीतसकाहै १८ ऐसेकह अहंकार करके क्रोधसे बनाग्नि जैसे जलता शीघ्र मयूरेशजी के पासआया औ ठहरठहर ऐसेबोला १९ तोकइयोको तिसनेखाये औ कईचूर्ण किये कईमारे फिरतो शेपजीकेपोछे अनेक नागकुल चले तो तिनको देख मयूरेशजो ठहरे २० औ सर्पासे लडनेको मयूरपै हाथरक्खा तो वो इनको नमस्कार करके त्रिभुवनको ग्रसतासा चला २१ निज पंखों को हिलाता तिसके पवनसे सर्पांको भ्रमाता तो कइयोको तिसने खाये अरु कई चूर्ण किये कई मारे तो कई सर्प तो तिसे देखतेही भयभीत हो मरगये २२ तो तिसके पराक्रम को देखके शेपजीने फुकार छोडी तो मयूर तिससे मूर्च्छितहोभूमिमें गिरा २३ फिर तो क्रोधसे दग्धकरते शेपजी मयूरेशजीपै झपटे तो विप रूप अग्निमें स्थित त्रिलोकी को देखके गणेशजी २४ विराटरूप होके तिसके फणोपे चढ़े सो कि उछलके बालपनेसे मेघके समान गर्जते सवारभये २५ औ हाथ पैर फटकार२ कर तिसपर नाचे जो अनगनितकरोडब्रह्माण्डोके बोझसे सहितभये २६ तिनके भारको एक ब्रह्माण्ड उठानेवाला वो शेप कैसे समर्थहो फिर तिन्होने शेपजीको कटिमेंबांधे जैसे खेलता बालक रस्सोलपेटे २७ फिर तो वे सांगसर्प लड़नेको तिनकेपीछे चले तो विघ्नराजजीने तिनसर्योंको हुंकारसेही गिराये २८ औ कइयोंको मस्तकमेंबांधे औ कई कानोंमें लटकाये फिर हाराभया शेप तिनकीस्तुति करनेलगा २९ कि आपकेस्वरूप को ब्रह्मादिक देवता औ मुनियें भी नहीं जानते आपही संसार को

रचते पालते संहारकरतेहो३०औ आपही अनेकअवतार धारते हो
नानादैत्यहततेहोऔ आपहीअन्तर्यामीभये सबकेसाक्षीस्वरूपहो३१
औ सर्व आपही कारणहो औ कारणोंकेभीकारण हो अब अज्ञान
सेलड़े हमारेपर क्षमाकरो ३२ ब्रह्मावोले कि तबतो शेषजी सम्पा
ति, जटायु औ श्येन इनतीनोंकोलाय तिनकोसौंप नमस्कारकरके
चुपभये ३३ सोवेभी तिन्हें प्रणाम करके बोलेकि हेदीनो के नाथ
आपके प्रसादसे हम सर्वबन्धनसे छुटे हैं हेपरमेश्वर आप को नम-
स्कारहै ३४ ब्रह्मावोले किवे मयूरेशजी से ऐसे कहके भाई तिसे
शिखण्डीको आलिंगन करके हर्षसे गद्गद वोलने ३५ माताकी कु-
शल पूछनेलगे तो वे कुशल हैं ऐसेवोले फिर गणनायकजी तिस
शिखण्डीपै सवारभये ३६ औ स्वतन्त्रभये तिनस्त्रियों सहितपाता-
लसे भूमिमेंआये तो आधेमार्ग में फँडे बालकहारी तिस भगासुर
को देखतेभये ३७ तबतो तिन्होंने सूर्य्य चन्द्रमा समान निजपरशु
उठाकर तिसे तिसके कण्ठमें मार तिस पशुमारक को मारतेभये
३८ तोतिसका शिर वज्रसेहते पर्वत खण्डके जैसे भ्रमताभया तब
तो वे बालक उठखड़ेभये जो निद्रितभये सोतेथे ३९ तोवेमयूरेशजी
कहाँहै कहाँहै ऐसे सारे पुकारतेभये वे बैठने, खेलने, सोनेमें,जा-
गनेमें औ भोजनमेंभी ४० तिन्हींको ध्याते ऐसे वे भगासुर के मुख
मेंसे बाहरआये जैसे गर्भद्वारसे निकलेहों फिर तिन्होंने गणेशजी
कोदेखा ४१ तो देखके वे रोनेलगे औ स्नेहसे मिलने भये वे बोले
कि हमको तुम मरेदैत्य के उदर में छोड़के कहां चलेगये ४२ तु-
म्हारेही स्मरण से इनके उदरमेंसे हमजीवते निकले हैं मयूरेशजी
बोलेकि हम सर्वव्यापी सर्वत्र व्याप्त सर्वज्ञाता औ सबके ईश्वर हैं
४३ हमतुम्हें कभीभी नहींछोड़ते तुमचिन्ता मतकरो ब्रह्मावोलेकि
फिर तो बालकों सहित मयूरेशजी वहां से चले ४४ सो कई तो
इनकेआगेआगे अनेक शब्द करते चलते थे औ कई छत्रलिये औ
कई लघिका चँवर लियेथे ४५ चँवर उड़ती देखके मुनिजन बाहर
आये तो तिन्हें मयूरचढ़े बालकोंसे घिरे गणेशजीको देखे तो वे

आपस में विस्मितभये बोलेकि हमारे बालक तोघर हैं औ येइनके निवट और बालक कहांसे आये ४७ फिर वे नेत्रमींचके तिनसबों को गणेश स्वरूप देखते भये सोकि विचार करके तिनको परब्रह्म स्वरूपी देखे ४८ तबतो आनन्द में मग्नहुये वे अपने परायेकोनहीं जानतेभये फिर वे तिनको न देखते भ्रांतभये से देखतेभये ४९ सो कि मायासे मोहित भये वे फिर निजनिज बालकोंकोही देखतेभये सोकि कोईतो निजपिता के पासआके पहलेके जैसे पढ़तेभये ५० औ कोई निजमाताके पासआके हर्षसे अस्तन पीनेलगा कोईमाता औ पिताको भेंटतेभये ५१ औ कोई निज भाईको मारके आपही पिटाभयासा रोनेलगा तो उमाजीनेभी निजपुत्रको देखस्पर्श करके हर्षसे स्तनपिलाया ५२ औ क्रोधसे ऐसे बोली कि बहुत देर क्यों चलागयाथा फिर गिरिजा मयूरेशजीका हाथ पकडके घरमें आई ५३ औ वे सारेमुनि भी निज २ बालकोंको ले २ के घरआये ५४ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड नागदमन इस नाम से सौका अध्याय समाप्तहुआ ॥ १०० ॥

एकसौएकका अध्याय॥

कमलासुरके युद्धका वर्णन ॥

ब्रह्माजीबोले कि तबतो गणेशजीको दशवांवर्षलगेसुखसेविराजमानमहेश्वरजी जो वामेअंग गिरिजासे सनेऔसातकरोडगणसहित १ औ जो निज आंगन सुन्दरबाल मयूरेशजीको नाचते देखरहे ऐसे तिनकेपास गौतम आदि महर्षियें आये औ तिन्हें प्रणामकरके २ ज्ञानवृद्धिवाले मुनि महाबली शिवजीसे बोले कि हे शिवजी जितने समय मयूरेश सहित आप यहां रहे हो तितने अनगिनतही राक्षस आयेहैं तिससे हमें पीडा होतीहै इससे आपऔर ठारजाइये ४ या हमहीं अन्यत्र चलेजायें जो आपकी आज्ञाहो तो शिवजी बोले कि तुम्हारे संगसे हमने नव वर्ष सुखसे विताये औ जो विघ्न भये सो गणेशजीने हटाये अब तुम जातेहो तो हमको ठहरनेसे क्या प्रयो॰

जनहै ५।६ तो गब्रह्मभी एकांतस्थानमें जातेहैं ब्रह्माजीबोले ऐसा शम्भुजीका वचन सुनके वे मुनि तिन्हें प्रणामकरके ७ हे मयूरेश्वर देव तुम्हारी जयहो ऐसे कह २ के निजनिज घरआये औ चलनेको तैयारभये तो शिवजी भी गिरिजासहित बैलपेचढे गणोंसहित ८ मयूरपे सवारभये गणेशजीको आगे करके हर्षयुक्त अनेक बाजोंसे त्रिभुवनको गाजाते ६ फिरतो सारे मुनिजन भी गौरीशंकरयुत मयूरेशजीके पीछेचले औ बालकों सहित तिनकी स्त्रियें भी १० तबतो आकाशमें रजछाये कुछभी न जानपड़ा तबतो शिवजी तिनसबको पीछे २ करके दक्षिणकी ओर मुखहोचले ११ फिर तो तिन्होंने मार्गमें बारह अक्षौहिणी सेनासहित आतेभये कमलासुरकोदेखा रजसे धुंधलेरहा जिसके १२ जिसके आगे हाथी औ रथ घोडे सवार पैदल चलतेथे जहां सूर्य्यतेजभी न जानपडता कुछकुछ शस्त्रोंकी चमकमेंही देखपडता था १३ तबतो तहां हाथी घोडे रथ पैदलोंसे भया भारीरोलामचा जो नानाप्रकारके शस्त्र भिड़नेके शब्दसेसंयुक्त १४ तबतो अगाडी गणेश तिस महादैत्यको देखतेभये जो (शखासुर) का भाई नाना आभूषणोंसे सजाभया था १५ औ जो नाना शस्त्रधारी तो शिवजीको आके तिन्होंने बताया जिसके पैरकेवात से कच्छप आदि कपतेहैं १६ औ अगाडी चलनेवाले मुनिजनभयभीतभये भूमिमें गिरे तो गणेशजीसे बोले कि हे मयूरेश महाभाग हमारी सबोंकीरक्षा कैसे नहींकरते १७ ब्रह्माबोले कि ऐसातिनका वचन सुनके वे गणेशजी बोले कि हेमुनिश्रेष्ठो शिवजी के होते तुम चिन्ता मतकरो १८ फिर गणेशजीने नमस्कार करके शिवजी से कहा कि यह महासेनायुक्त कमलासुर दैत्यहै१६ जो मुझपे आपका अनुग्रहहो तो मैं युद्धकेलिये जाऊं शिवजीबोले कि हे पुत्र यह तुमने हृदयानन्दक बहुत अच्छा वचन कहा २० पर यह दैत्य तो बारह अक्षौहिणी सहित है तातू अकेला कैसेजाताहै सो तू सातकरोडगण सहितजा २१ जीत अरु शीघ्र तिस महाबली शत्रुको हत गणेशजी बोले कि मैं आपके प्रसादसे त्रिलोकीको जलदेऊं२२ देवो तिनने

दैत्यहते क्या तुमने नहींजाने तो हेस्वामिन् तिसको क्या गिनती है जीतकेही आऊंगा २३ ब्रह्माबोलेकि ऐसा तिनका वचनसुन शिवजी तिसे आलिंगनके निज त्रिशूलदेके तिनके मस्तकपर हाथरखतेभये २४ औ गणसहित तिनको शंकरजी आज्ञा देतेभये तौवे गर्जनाऔ जयजय शब्दोंसे दिशोंको गँजाते भये २५ सोकि प्रमथ आदि गणोंसहित युद्धकी चाहवाले गणेशजीगये तो शिवजीभी बैलपे चढे गौरीसहित गये २६ फिर दैत्यकी अपार सेनादेख मयूरेशजी ने निजदेहसे बहुतसी सेनाबनाई तो युद्ध होनेलगा २७ जो ब्रह्माण्ड को भक्षणकरें ऐसेऐसे कालके समान वेवीर जो बहुत वडेवडे शब्दसे सुमेरु शिखरको गिरानेवाले २८ ऐसे वे तिसघोर युद्ध में परस्पर प्रहार करतेभये तो भारी अँधेराहुआ दिशों में रज छागई २९ तो दैत्योंने विस्मय कियाकि अभी तो यह अकेलाही था अब अनेक कैसेभया है सो यह परम पुरुष भूमिभार उतारने को शिवजीकेघर अवतार भयेहैं फिर तिस दैत्यनेभी भारी रूपधरा ३० तिस दीर्घ रूपवाले दैत्यको देखते योगमाया युक्त गणेशजी जो दशशस्त्रधारी दश हस्तोंवाले महाबली ३१ तबतो मयूरेशजी औ कमलासुरयुद्ध करते शोभित भये औ गणसेनावाले अनेक अनेक शस्त्र प्रहारोंसे नानाप्रकारके युद्ध कुशल उलटेसीधे लड़नेलगे ३२३३ सोकि घूंसे दांतोंसे औ शस्त्र आदिकोंसेभी एकके एक मारते भये तो कइयों के मस्तक टूटे औ कइयो के मुख ३४ औ कई जांघगोडों से रहित भये रणमें गिरे ३५ जो शस्त्र अस्त्रों के घातसे भये शब्दों से दशों दिशों को गर्जाते औ रजसे अन्धकार भये सब निजनिज स्वामी औ अपना अपना नाम लेलेकर प्रहार करतेभये ३६ औ तहां कबन्ध अर्थात् शिरकटे जन सन्मुख खड़े होहोकर अपने औ पराओं कोभी मारते थे फिरतो कटेभये दैत्य सेनावाले तिसीके पासगये ३७ औ अनगिनतों को मरे जा बताते भये औ रुधिर की नदियां बहीं तो दैत्यबोला कि इन्द्र आदि लोकपाल औ ब्रह्मादिक देवता ३८ जिस मैंनेजीते ऐसे मुझसे कौनयुद्ध करसका है भूमिगोलको

ओंघाकरनेको मुझसेपरे कौनसमर्थ्यहै ३६ ब्रह्माजीबोले कि ऐसे वो दैत्य निजशस्त्रो के उठानेसे सब जगत् को हिलाताभया क्रोध से लालनेत्र किये दैत्यराज ४० मयूरेशजीके गणोंको मारनेलगा जो अनेक वाहन शस्त्रयुक्त थे तिनके शिर पैर हाथ काटकाट के रणमें गिराता भया ४१ तवतो तिसका उँचाव देखके मयूरेशजी आगे चले निज दशशस्त्रोंसे आकाश दिशोंको गोजाते तिसके सेनाचरो को हततेभये ४२ तवतो अनगिनत हतेदैत्य दुर्लभ मोक्ष पातेभये ४३ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड दैत्यसेनावध इसनाम से एकसौएक का अध्याय समाप्त भया ॥ १०१ ॥

एकसौदो का अध्याय॥

कमलापुर के संग्रामकाही वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि निज बहुतसी सेनाहतभये वो दैत्य अश्वपै चढा औ खड्ग हाथलिये क्रोधयुक्तभया मयूरेशजीसे लडनेचला १ तो तिसे देख गणेशजीभी निजमयूरपर सवारभये तिन्हें आतेदेख शीघ्रही दैत्यराज सर्पअस्त्र को आदर से सौमत्रो से पढके जो अस्त्र भार्गवजी का बतायाथा तिस सर्पास्त्र को छोंडताभया तो तेजसे दिशा जलनेलगी २।३ तो देवसेना वाले सर्पोंसे लपेटेगये तोकई मरे औ कई भूमिमें गिरे ४ तो तिसदैत्य को मयूरेशजी सराहतेभये कि हेदैत्य अच्छा लडता है ऐसाकोई नहींदेखा ५ ऐसेकहके मयूरेश जीने शत्रुपै निजगरुड़-अस्त्र को छोड़ा तो सर्पभगगये औ सेनावाले खडे होतेभये ६ फिर मयूरेशजीने दैत्यसेना विनाश करनेवाले निज चक्रअस्त्र को छोडा तिससे कईदैत्य मरे औ कई छिन्नपैर मस्तक भये ७ औ कइयों की जानुजंघा कटी कइयों के घुटने कटगिरे औ हेपित. मात सुत दौडोदौडो ऐसेकहते ८ मोक्ष को प्राप्तभये जिन्होंने गणेशजीको देखके प्राणछोडे थे ऐसे तिसकी सब सेना नाशभई तवतो क्रोधसे जलतादैत्य खड्ग हाथलिये वेग से गजाननजीपै झपटा वोतिसे आतादेख गणेशजीने परशु लेलिया ६।१० महावेग से

दैत्यहते क्या तुमने नहीजाने तो हेस्वामिन् तिसकी क्या गिनती है
जीतकेही आऊंगा २३ ब्रह्माबोलेकि ऐसा तिनका बचनसुन शिवजी
तिसे आलिंगनके निज,त्रिशूलदेके तिनके मस्तकपर,हाथरखतेभये
२४ औ गणसहित तिनको शंकरजी आज्ञा देतेभये तोवे गर्जनाऔ
जयजय शब्दोंसे दिशोंको गोजाते भये,२५ सोकि प्रमथ आदि ग-
णोंसहित युद्धकी चाहवाले गणेशजीगये तो शिवजीभी वैलपे चढे
गौरीसहित गये २६ फिर दैत्यकी अपार सेनादेख मयूरेशजी ने
निजदेहसे वहुतसी सेनाबनाई तो युद्ध होनेलगा २७ जो ब्रह्माण्ड
को भक्षणकरें ऐसेऐसे,कालके समान वेवीर जो वहुत वडेवडेशब्दसे
सुमेरु शिखरको गिरानेवाले २८ ऐसेवे तिसघोर युद्ध में परस्पर
प्रहार करतेभये तो भारी अँधेराहुआ दिशो में रज छागई २९ तो
दैत्योंने विस्मय कियाकि अभी तो यह अकेलाही था अब अनेक
कैसेभया है सो यह परम पुरुष भूमिभार उतारने को शिवजीकेघर
अवतार भयेहै फिर तिस दैत्यनेभी भारी रूपधरा ३० तिस दीर्घ
रूपवाले दैत्यको देखते योगमाया युक्त गणेशजी जो दशशस्त्रधारी
दश हस्तोंवाले महावली ३१ तवतो मयूरेशजी औ कमलासुरयुद्ध
करते शोभित भये औ गणसेनावाले अनेक अनेक शस्त्र प्रहारोंसे
नानाप्रकारके युद्ध कुशल उलटेसीधे लडनेलगे ३२३३ सोकि घूसे
दांतोंसे औ शस्त्र आदिकोंसेभी एकके एक मारते भये तो कइयों के
मस्तक टूटे औ कइयों के मुख ३४ औ कई जाघगोड़ों से रहित
भये रणमें गिरे ३५ जो शस्त्र मर्मों के घातसे भये शब्दों से दशो
दिशों को गर्जाते औ रजसे अन्धकार भये सब निजनिज स्वामी
औ अपना अपना नाम लेलेकर प्रहार करतेभये ३६ औ तहा क-
वाड अर्थात् शिरकटे जन सन्मुख खडे होहोकर अपने औ परायों
कोभी मारते थे फिरतो कटभये दैत्य सेनावाले तिसीके पासगये
३७ औ अनगिनतों को मरे जा वताते भये,औ रुधिर की नदियां
वही तो दैत्यवोला कि इन्द्र आदि लोकपाल औ ब्रह्मादिक देवता
३८ जिस मैंनेजीते ऐसे मुझसे कौनयुद्ध करसक्ता है भूमि गोलको

आंघाकरनेको मुझसेपरे कौनसमर्थहै ३६ ब्रह्माजीबोले कि ऐसे वो दैत्य निजशस्त्रों के उठानेसे सब जगत् को हिलाताभया क्रोध से लालनेत्र किये दैत्यराज ४० मयूरेशजीके गणोंको मारनेलगा जो अनेक वाहन शस्त्रयुक्त थे तिनके शिर,पैर हाथ काटकाट के रणमें गिराता भया ४१ तबतो तिसका उंचाव देखके मयूरेशजी आगे चले निज दशशस्त्रोंसे आकाश दिशोंको गोजाते तिसके सेनाचरो को हततेभये ४२ तबतो अनगिनत हतेदैत्य दुर्लभ मोक्ष पातेभये ४३ ॥ इतिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड दैत्यसेनावध इसनाम से एकसौएक का अध्याय समाप्त भया ॥ १०१ ॥

एकसौदो का अध्याय ॥

कमलासुर के मरणमकाही वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि निज बहुतसी सेनाहतभये वो दैत्य अश्वपै चढा औ खड्ग हाथलिये क्रोधयुक्तभया मयूरेशजीसे लडनेचला १ २ तो तिसे देख गणेशजीभी निजमयूरपर सवारभये तिन्हे आतेदेख शीघ्रही दैत्यराज सर्पत्रस्त्र को आदर से सोमन्त्रों से पढ़के जो अस्त्र भार्गवजी का बतायाथा तिस सर्पास्त्र को छोडताभया तो तेजसे दिशा जलनेलगीं २।३ तो देवसेना वाले सर्पोंसे लपेटेगये तोकईमरे औ कई भूमिमें गिरे ४ तो तिसदैत्य को मयूरेशजी सराहतेभये कि हेदैत्य अच्छा लडता है ऐसा कोई नहींदेखा ५ ऐसेकहके मयूरेश जीने शत्रुपे निजगरुड-अस्त्र को छोडा तो सर्पभगगये औ सेनावाले खड़े होतेभये ६ फिर मयूरेशजीने दैत्यसेना विनाश करनेवाले निज चक्रअस्त्र को छोडा तिससे कईदैत्य मरे औ कई छिदे पैर मस्तक भये ७ औ कइयों की जानुजंघा कटी कइयो के घुटने कटगिरे औ हेपित. मात सुत दौडोदौडो ऐसेकहते ८ मोक्ष को प्राप्तभये जिन्होंने गणेशजीको देखके प्राणछोडे थे ऐसे तिसकी सब सेना नाशभई तबतो क्रोधसे जलतादैत्य खड्ग हाथलिये वेग से गजाननजीपै झपटा वोतिसे आतादेख गणेशजीने परशु लेलिया ९।१० महावेग से

गये औ तिसपे परशुछोडा तो वो तेजसे आकाश दिशोंको औ पक्षि योंको जलाता ११ दैत्यके हस्तयुक्त खड्गके सौटूक करताभयातो वो शीघ्र धनुपले चिल्लाखैंच तिससे अनगिनत बाणछोडता सेना वालोंको वेधता बाणोंसे ढकताभया तोवो मेघसमान शब्द आका शदिशोंको गर्जाताभया १२।१३ तो बलवान् गणेशजीभी निज बाणोंसे तिसके शरोंको हटाकर काटगिरातेभये फिरतो वो दैत्य आकाश में चढा गणेशजीसे बोला १४ औ तहां बाणोंके अंधकार में कोईभी किसीको नहींजानताथा तो मयूरेशजीने शीघ्रही तिसके अश्वको भूमिमें गिराया १५ तोवो फिरबोला कि मेंगजो अश्वगि- राया तिसका भारी कौतुक देख हे गणेश तेरे शिखंडी को देखते देखतेहो मारताहूं १६ ऐसेकह दोनों ओरके तरकसों मेंसे बाण निकाल निकाल के भूमिपैरक्खे औ कानतक धनुप खैंचके वहुतसे बाण छोडताभया वो दैत्य कमलासुर १७ मयूरेशजी के सबसेना वालोंको हतताभया वो बाण वर्षानेलगा जैसे वर्षाकाल में मेघ जलवर्षावे १८ तो कइयो के तो सबअंगकटे औ कइयोंने प्राणत्यागे ऐसे वीरोंके मरते क्रोधयुक्त मयूरेशजी १९ कमलासुर के बाणोंसे छिदे मयूरको छोड़के हाथमें परशकोलिया औतिसे आदरसे तोला २० औ आकाशको गाजाते गर्जे औ तिसे शीघ्र छोडा सो शत्रुकी सेनाको शीघ्रगिराता जलाताभया २१ तिसदैत्य सेनाधिपति कम- लासुर के कण्ठमें फँसा औ तिसके श्वासको रोका तो वोदैत्य और रूपधरता २२ तिसीक्षण में मस्तक से सूर्य्यमण्डल को ढकाभया तो महाघोर अन्धकार भये कुछभी न जानपडा २३ फिरवो मयूरेश जीके सन्मुखहोके बोलाकि हेबालक मुझसे क्या लडताहै जामाता का स्तन पीव २४ या बालकोंके संगखेल नहींतो मेरेआगे मरताहै मेरे पुकारनेसेही त्रिभुवन कँपताहै २५ औ भूमि में पैर रखतेही शेषभी नीचा होजाता है मेरे मुष्टिप्रहार से बडेबडेबली चूर्णभये हैं २६ निज नखोंसेही मैं तेरा शिरकाट के पाताल में पहुचाऊंगा ब्रह्मा बोले कि ऐसा तिस दुर्मतिवाले का वचन सुनके गजाननजी

बोलेकि तूपिशाच औ मतवालेके समान मेरेआगे क्या उछलता है २७ देव ब्राह्मणों का निन्दककभी भी जय नहीं पाता जो मुझको क्रोधभया तो त्रिभुवन को जलादेवेगा २८ मैं यश विख्यात करने कोतेरेसेयुद्धकरताहूं नहींतो हुंकारसेही तुझकोयमकेपास पहुंचादेता २९ ब्रह्मावोले ऐसा तिसका वचन सुनके क्रोधसे भरा दैत्यगोज से दिशा विदिशाओं को शब्दित कर दहाड़ता भया ३० तव तो तिसके शब्दसे तिसीछिन में गर्भ गिरतेभये औ प्रथम आदि कई गण मूर्च्छितहो भूमि में गिरे ३१ औ तिस दैत्यने कानतक धनुष चढ़ाके वाणछोड़ा सोकि फिर वली मयूरेशजी पे भारीवाण वर्षाकरी ३२ इतिश्री गणेशपुराण कमलासुर संग्रामहोना इसनामसे एकसौदो का अध्याय समाप्त भया॥ १०२॥

एकसौतीन का अध्याय॥

कमलासुर के वधका वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तिस दैत्य की उत्कृष्टता देख के शीघ्रही गणेशजी तिसके आगे आये औ तिसपर शस्त्रवर्षानेलगे १ तो दैत्य नेनिज अत्यन्त वेगवान् वाणोंसे तिसेहटाई तबतो अग्रगुणवाले मयूरेशजी तिसपर प्रसन्नभये २ तोतिसको अनन्त निज विराट् रूपदिखाया तबतो कमलासुरने दशो दिशोंमें गणेशजीकोहीदेखे ३ फिर विस्मित भयेते नेत्र मींजे तो हृदय में तिनको देखे फिर तो वो दैत्यराज जो भगके चला ४ सोही गणेशजी इसकी शिखापकड़ के वोले कि हे दैत्य ठहर लड़ तिनकहे वाक्योंका स्मरणकर ५ फिर दैत्यने तिनको अकेलेही आगे खड़े देखे तो शीघ्रलड़ने को दौड़ा औ भारीवलवाला वो गर्जनेलगा ६ तवतो दशशस्त्रधारी देवजीने तिससे युद्धकिया सोकि निज शस्त्रप्रहार से विघ्नहारीजीने कमलासुर के शरीर को काटा ७ सो जहांजहां तिसके रुधिर की विन्दुपड़ी तहांहीं राक्षस उत्पन्नभया जो तिसीके रूप औ तिसीके वलकेसमान ८ फिर वे अनेक अस्त्र शस्त्रोंसे गणेशजीसे लड़नेलगे तवतो उलटके

गणेशजी क्रोधसे जलते ६ भये फिर तो ढाईकरोड सेनासहित सिद्धिबुद्धि अत्यंत क्रोधभईं आईं तो फिर युद्धहोनेलगा १० तो वे गणराजजी से बोलीकि हमें क्षुधाहारक भोजनदेवो तो तिनसे देव जी बोलेकि दैत्यके रुधिर से भये बहुतसे राक्षसो को खावो ११ तब तो मयूरेशजीसे ऐसेऐसे कही वेतुरतही भूतगणों सहितदोनो तिन सबोंको खातीभईं औ गणेशजी खड्गसे कमलासुर को हतते भये तोफिरभी तिसके रुधिरसे सैकड़ोंदैत्यभये तो तिन्हेंभी वेसब ओर से रुधिर पीवती भक्षण करतीभईं औ खेदभये वेगवान् मयूरेश जी त्रिशूललेके १२।१३।१४ शीघ्रतिसे छोड़तेभये तो वो दिशो को जलाताचला औ पर्वतोंको चूर्णकरता आकाशको गोंजातातारों को गिराता भया १५ वेगसेगिरा औ कमलासुर के देहको फाड़के दोटूककिये औ तिसका शिर (भीमानदी) के दाहिने तटपरपड़ा १६ औ कृष्णाके उत्तर तीरपै गणेशजी ठहरे तबतो सारे जयजय शब्द करके तिनसे बोलेकि १७ हेमयूरेश देवजी आपकी सदा जयहो औ दुष्टोंका क्षयहो फिरतो वहां गणों सहित गिरिजापतिजी आते १८ भये जोगौतम आदि मुनि औगौरीजी सहित सबबाजे बजते आकाशसे पुष्प वर्षाभई १६ तब गौरीजीने तिन को आलिंगन करके हर्ष से स्तन पिलाया औ मुनिजन इन देवदेव गणेश्वर जीको स्तुति करनेलगे २० सोकि हेकमलाकांत हृदय अर्थात् लक्ष्मीपतिके प्रियहेहृदयमें आनन्द बढ़ानेवाले हे (कमला) लक्ष्मीके कांतकरके पूजित हेकमलासुर के नाशक २१ हे (कमला) शक्तिसे सेवित पद हे (कमला) लक्ष्मीप्रद आपकी जय हो हे(कमलासन) अर्थात् ब्रह्माजी करके वन्दनीयईश हे कमलाकर अर्थात् चंद्रमा के समान शीतल २२ हे कमल चिह्नयुक्त चरणारविंद वाले हे कमल अंकित हस्तवाले हेकमलाके वधु तिलक अर्थात् चन्द्रशेखर हेभक्तोंके कमलाप्रद अर्थात् लक्ष्मी देनेवाले २३ हे कमलासुत शत्रुज अर्थात् लक्ष्मीसुत जो प्रद्युम्न तिनके रिपु शिवजी के पुत्र हे कमलासुत कामदेव के समान सुन्दर हे कमलाका पिता समुद्र

तिसके रत्नोंकीमाला से शोभित आपकीजयहो २४ हे कमलासुरके बाणोंको कमलशस्त्रसे हटानेवाले हे कमलाशक्ति आक्रमित अर्थात् सेवाकिये हे कमला के काश को जीतनेवाले अर्थात् सुन्दर हस्त कमलवाले २५ हे कमलापति विष्णुजीके हाथमें स्थित कमल के कुण्डल के समान नेत्रोंवाले हे सबके हृदयकमल में आनन्दरूप विराजित हे सर्वपापनाशक आपकीजयहो २६ हे कमलअंकुश अंकित करारविन्दवाले हे विघ्नहारी अव्यय आपकीजयहो जो आप ने इस इन्द्रादिकोंको भी भयदायी शत्रुकोहताहै २७ अरु जो वज्र चक्रादिकोंसे न कटे अरु मुनिजनोंको भयदायी सो आपनेहता ऐसे वे गोतमआदि महामुनि स्तुतिकरके गणेशजीकी पूजाकरतेभये २८ अरु शिवजीनें भी दशोंभुजोंसे आलिंगनकरके तिन्हें पूजे फिर तौ वे मुनिजन मयूरेश अरु शंकरसे बोले २९ आप सबदेव गणोंसहित भक्तोंके कामपूर्णकरते अरु विघ्नोंको हटाते यहांहींरहो ३० ब्रह्मा जी बोले कि ऐसे तिनकरके स्तुतिकिये सबदेवगणों सहित मयूरेश महेशजी भक्तों के काम पूर्णकरते औ विघ्नोंको हटाते ३१ तहां रहते भये जो लोकोंके कल्याणकारी मयूरेश शंकरजी तौ विश्वकर्मा ने तहां सुन्दर मन्दिर बनाया ३२ जो अनगिनत द्वार शिखरोंवाला औ अनेक आश्चर्यकारक तहां सबलोगोंसहित सुन्दरनगरभया ३३ तौ महर्षियों ने तिसका (मयूरेशपुर) ऐसानाम रक्खा औ तहां अनेक आभरणसहित विराजमान मुनिजन तपकरतेभये ३४ औ गिरिजा गणोंसहित शिवजीभी तहां तपकरनेलगे औ वे ब्राह्मण तहां तिनका ध्यान स्मरणकरनेलगे ३५ औ मयूरेशजी फिर बालकों के साथ पहिलेकी नाईं खेलतेभये ३६ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमें कमलासुरका वध इसनामसे एकसौतीनका अध्यायभयाहै १०३ ॥

एकसौचार का अध्याय ॥

मातायोंको मैं नहीं देखूं कहके गौ[illegible] दिखाना वर्णितहै ।

श्रीब्रह्माजी बोले कि हे द्विजों में उत्तम व्यासजी हम भी रूप

छिपाये तिनगणेशजीको देखनेगये तो तहा उमाजी सहित प्रभु देव गणेशजीको देखतेभये १ जो स्नानकरके वेठे सनातन परब्रह्म को जपरहे तो हम तिन मयूरेश्वरजीकी स्तुतिकरतेभये २ सो कि जो देव पुराण पुरुष ओ हर्षसे नाना क्रीडाकारी हे ओ मायावी दुर्विज्ञेय हैं तिनमयूरेश्वर जी को से प्रणामकर्त्ता हू ३ परेसेपरे चिदानन्द निर्विकार हृदय में स्थित गणोसे परे ओ सगुण ऐसे गणेश जीको नमस्कारकर्त्ता हूं ४ जो रचने,पालते,ओ निजइच्छासे सहार करते ओ सर्व विघ्नहारी देव ऐसे मयूरेशजीको नमस्कार हे ५ जो इन्द्रादि देवताओंकरके रात्रिदिनस्तुतिकिये ओ सत् असत् ओ गुप्त प्रकट ऐसे गणेशजीको नमस्कार करताहू ६ ओ जो नानादैत्यों के हता ओ नानारूप धारणकरते ओ नाना शस्त्रधारी ऐसे मयूरेश्वर जी को भक्तीसे नमस्कारकरताहू ७ ओ जो देव सर्व शक्तिमय ओ सर्वरूपधारी प्रभु हे ओ सर्व विद्याओ के वक्ता ऐसे गणेशजी को नमस्कारकरताहूं ८ ओ जो गिरिजानन्दन ओ शम्भुजीके आनद वर्द्धन हैं ओ भक्तानन्दकारी नित्यऐसे गणेशजीको नमस्कारकरता हू ९ ओ जो मुनियोसे ध्यानेयोग्य मुनियों से नमस्कारकिये, ओ मुनियोंके कामपूरक हे ओ जो स्थूल सूक्ष्मस्वरूप ऐसे गणेशजीको नमस्कारकरताहू १० ओ जो सबअज्ञानके हंता ओ सर्वज्ञानकारी पवित्रहे ओ सत्यज्ञानमय सत्यरूप ऐसेगणेशजीको नमस्कारकरता हू ११ ओ जो अनेक करोड ब्रह्माण्डो के स्वामी जगत्के ईश्वर हैं ओ अनन्त ऐश्वर्यवाले विष्णुरूप ऐसे गणेशजीको नमस्कार करता हू १२ ओ मे आपके दर्शन से पवित्र परमानन्दसे भरा तिस दैत्य कमलासुर के मारनेसे परम आश्चर्य को प्राप्तभयाहूं १३ जिसने इन्द्र,यम,देवता,लोकपाल,इनको वलसेजीते ओ जो सेकड़ों सहस्रों से लड़नेयोग्य तिसको आपनेरणमेंहता १४ सो कि वो कमलासुर तीनप्रकार भया तीनस्थल अर्थात् आकाश पृथ्वी पाताल में गिरा ओ फिर हमने तिनकोपूजे सो कि सर्व तीर्थ जलोंसे जो पापनाशक सुंदर जल थे तिनसे तिनको सींचे ओ सुंदर वस्त्र सुगंधोंसे पूजे ओ

सुंदर पुष्पोकी वनमालातिनके कण्ठमें पहिनाकर (वनमाली) ऐसा लोकमें विख्यात सबको मंगलदायक नामरखतेभये १६।१७ फिर पूजा विधिको समाप्तकरके तिनकी प्रदक्षिणाकरी तो पैरके घातसे तिन्होंने मेराकमण्डलु जो नाना तीर्थ जलोंसे भरारक्खा था तिसे क्षणमें मोघाकरदिया १८ फिर मैं तिसजलको भरनेचाहा तव तो मुझसे विभु मयूरेश्वर जोयह कहतेभये १९ श्रीमयूरेशजीवोले कि यह ब्रह्माकृत स्तोत्र सबपापनाशक जो मनुष्योंको सर्व कामदाता औ सब उपद्रव नाशकहै २० औ बन्दीघरमेंपड़ोंको सातदिनमें छुडाने वाला औ आधिव्याधिहारी औ भुक्ति मुक्तिदाता २१ हे ब्रह्मन् तुम यहांस्थिररहो औ अरुयह नदी सबको पवित्र करनेवाली(कमण्डलु भवा) इसनामसे लोक में विख्यात होगी २२ सो ये दर्शनसे तो वाणीके पाप स्पर्श से मनके अरु नहानेसे सब शरीर के पापनाश करेगी २३ अरु निरंतर सेवनेसे यहमोक्षदेवेगी ब्रह्माबोलेकि ऐसे तिन्होंके वरदिये तिसमें मुनियोने स्नानकिया २४ निज स्त्री कुटुम्ब सहित सात करोड गणोंने औ मैंने फिर वे मुनीश्वर मेरेसाथ तहां तपकरतेभये २५ फिर तो तिन्होंकी मायासे मोहितभये हमने वहुत से अभिमान वचन कहे कि मैं जगत्का कर्त्ता औ जगत्से वन्दनीय औ इन्द्र आदि देवताओंसे पूजा २६ ग्यारहवर्ष के वालकको मैंने कैसे प्रणामकरी जो वालकोंकेसाथ खेलता शुद्धिरहित औ वालक २७ मेराज्ञान औ वडापन औ मेरा पितामहपद भी वृथा है जो इससृष्टिको रचके म गुप्तरहूंगा २८ जोयह परमेश्वरहै तो फिर और ही रचलेगा ऐसा मनमेंठान के मैंने सृष्टि औ अपनेकोछिपाके जितने छिपारहा तितनेही देवगजाननजीने सखावालकोंको न देखे २९ तो तिनके घरगये तहां सब घरोंकोभी सूने देख खेदितभये वृक्षों को देखनेलगे ३० तो वृक्ष प्राणी पशु पक्षी इन्हेंभी जब न देखे तो स्वर्ग में गये सो तहा भी तिनदेवतोंको ३१ औ गंधर्व यक्ष पितृ सूर्य चन्द्रमाको न देखे औ महा अन्धकारमें तहां कुछभी न जानपड़ा ३२ तब तेने ध्यानसे देखा कि ये ब्रह्मा ने छिपाद तो तिन विश्वात्मा

छिपाये तिनगणेशजीको देखनेगये तो तहां उमाजी सहित प्रभु देव गणेशजीको देखतभये १ जो स्नानकरके बैठे सनातन परब्रह्म को जपरहे तो हम तिन मयूरेश्वरजीकी स्तुतिकरतेभये २ सो कि जो देव पुराण पुरुष औ हर्षसे नाना क्रीडाकारी हैं औ मायावी दुर्विज्ञेय हैं तिनमयूरेश्वर जी को मैं प्रणामकर्त्ता हूं ३ परेसेपरे चिदानन्द निर्विकार हृदय में स्थित गणोसे परे औ सगुण ऐसे गणेश जीको नमस्कारकर्त्ता हूं ४ जो रचते,पालते,औ निजइच्छासे संहार करते औ सर्व विघ्नहारी देव ऐसे मयूरेशजीको नमस्कार है ५ जो इन्द्रादि देवताओंकरके रात्रिदिनस्तुतिकिये औ सत् असत् औ गुप्त प्रकट ऐसे गणेशजीको नमस्कार करताहू ६ औ जो नानादैत्यों के हंता औ नानारूप धारणकरते औ नाना शस्त्रधारी ऐसे मयूरेश्वर जी को भक्तीसे नमस्कारकरताहू ७ औ जो देव सर्व शक्तिमय औ सर्वरूपधारी प्रभु हैं औ सर्व विद्याओं के वक्ता ऐसे गणेशजी को नमस्कारकरताहू ८ औ जो गिरिजानन्दन औ शम्भुजीके आनंद वर्द्धन हैं औ भक्तानन्दकारी नित्यऐसे गणेशजीको नमस्कारकरता हू ९ औ जो मुनियोंसे ध्यानेयोग्य मुनियों से नमस्कारकिये औ मुनियोंके कामपूरक हैं औ जो स्थूल सूक्ष्मस्वरूप ऐसे गणेशजीको नमस्कारकरताहू १० औ जो सबअज्ञानके हंता औ सर्वज्ञानकारी पवित्रहैं औ सत्यज्ञानमय सत्यरूप ऐसेगणेशजीको नमस्कारकरता हूं ११ औ जो अनेक करोड ब्रह्माण्डो के स्वामी जगत्के ईश्वर हैं औ अनन्त ऐश्वर्यवाले विष्णुरूप ऐसे गणेशजीको नमस्कार करता हू १२ औ मैं आपके दर्शन से पवित्र परमानन्दसे भरा तिस दैत्य कमलासुर के मारनेसे परम आश्चर्य को प्राप्तभयाहूं १३ जिसने इंद्र,यम,देवता,लोकपाल,इनको बलसेजीते औ जो सेकडो सहस्रों से लडनेयोग्य तिसको आपनेरणमेंहता १४ सो कि वो कमलासुर तीनप्रकार भया तीनस्थल अर्थात आकाश पृथ्वी पाताल में गिरा औ फिर हमने तिनकोपूजे सो कि सर्व तीर्थ जलोंसे जो पापनाशक सुंदर जल थे तिनसे तिनको सींचे औ सुंदर वस्त्र सुगंधोंसे पूजे औ

सुंदर पुष्पोंकी वनमालातिनके कण्ठमें पहिनाकर (वनमाली) ऐसा लोकमें विख्यात सबको मंगलदायक नामरखतेभये १६।१७ फिर पूजा विधिको समाप्तकरके तिनकी प्रदक्षिणाकरी तो पैरके घातसे तिन्होंने मेराकमण्डलु जो नाना तीर्थ जलोंसे भराग्क्खा था तिसे क्षणमें मोघाकरदिया १८ फिर मैं तिसजलको भरनेचाहा तव तो मुझे विभु मयूरेश्वर जोयह कहतेभये१६श्रीमयूरेशजीबोले कि यह ब्रह्माकृत स्तोत्र सबपापनाशक जो मनुष्योंको सर्व कामदाता औ सब उपद्रव नाशकहै २० औ वन्दीघरमेंपडोंको सातदिनमें छुड़ाने वाला औ आधिव्याधिहारी औ भुक्ति मुक्तिदाता २१ हे ब्रह्मन् तुम यहांस्थिररहो औ अरुयह नदी सबको पवित्र करनेवाली(कमण्डलु भवा) इसनामसे लोक में विख्यात होगी २२ सो ये दर्शनसे तो वाणीके पाप स्पर्श से मनके अरु नहानेसे सब शरीर के पापनाश करेगी २३ अरु निरतर सेवनेसे यहमोक्षदेवेगी ब्रह्मावोले कि ऐसे तिन्होंके वरदिये तिसमें मुनियोंने स्नानकिया २४ निज स्त्री कुटुम्ब सहित सात करोड गणोंने औ मैंने फिर वे मुनीश्वर मेरेसाथ तहां तपकरतेभये २५ फिर तो तिन्होंकी मायासे मोहितभये हमने वहुत से अभिमान वचन कहे कि मैं जगत्का कर्ता औ जगत्से वन्दनीय जो इन्द्र आदि देवताओंसे पूजा २६ ग्यारहवर्ष के वालकको मैंने कैसे प्रणामकरी जो वालकोंकेसाथ खेलता शुद्धिरहित औ वालक २७ मेराज्ञान औ वडापन औ मेरा पितामहपद भी वृथा है जो इससृष्टिको रचके मैं गुप्तरहूगा २८ जोयह परमेश्वरहै तो फिर और ही रचलेगा ऐसा मनमेंठान के मैंने सृष्टि औ अपनेको छिपाके जि-तने छिपारहा तितनेही देवगजाननजीने सखाबालकोंको न देखे२९ तो तिनके घरगये तहां सव घरोंकोभी सूने देख खेदितभये वृक्षों को देखनेलगे ३० तो वृक्ष प्राणी पशु पक्षी इन्हेंभी जब न देखे तो स्वर्ग में गये सो तहां भी तिनदेवतोंको ३१ औ गंधर्व यक्ष पितृ सूर्य चन्द्रमाको न देखे औ महाअन्धकारमें तहां कुछभी न जानपडा३२ तब तिन्हें ध्यानसे देखा कि ये ब्रह्मा ने कियाहै तो तिन विश्वमा

जोने निजसामर्थ्य माया प्रकटकरी ३३ सो कि देव मयूरेशजी ने निजमायासे ब्रह्माण्डरचा सो चर अचर संसार औ मयूरेशपुरीको भी रची ३४ फिर तो तिन्होंने सबत्रिभुवनको पहिलेके जैसादेखा सो अपने को बालकोसहित औ तैसेही भये हमको ३५ औ गौरी शंकरजीको औ अनुष्ठानकरते तिन मुनिजनोंको औ सूर्य चन्द्र तारो को स्वर्ग देवतोंको भी ३६ पृथ्वी औ सबवृक्षोंको औ समुद्र नदियो को औ पातालोंको प्रभु मयूरेशजी ने पहिले के जैसे रचे देखे ३७ ब्रह्माजीबोले तब तो मैं स्मृतिको प्राप्तभया मैं चिदात्मा गणेशजी को कलाकाष्ठा मुहूर्त्तादिक दिन पक्ष अर्थात् तिन्हें समय स्वरूपी देखताभया ३८ जो अनेक ब्रह्माण्डयुक्त रोमहर्षक औ मास ऋतु वर्ष कल्प आदि चराचररूपवाले एसे तिन्हे देख उदार बुद्धिवाला मैं तिनसे अपराध क्षमा कराताभया औ जो देव ऋषि यक्ष गन्धर्व्व नदी समुद्ररूपी ३९। ४० औ मनुष्य किन्नर बेल वृक्ष सर्प स्वरूपी औ फिर२ मैं तिनको मुकुटवाले मयूरेश रूपही देखताभया जो कुण्डल पेशूरे बाजू इनसे शोभित ४१। ४२ शेष नाभि औ सर्प कंठमें जिनके औ सुन्दर माला वस्त्र पहिने औ जो सुन्दर सिंहासनपै बैठे औ सब देवतोंसे स्तुति कियेगये ४३ औ जो सिद्धि बुद्धि युक्त औ विभूतियोंसे सेवित चराचर प्रधान सबसे नमस्कार योग्य औ सर्व्व स्वरूपी ४४ फिर मैंने अलग२ अपनेको औ तिस रूपकोदेखा तब तो मैं तिन्हें नमस्कार करके प्रार्थना स्तुति करनेलगा ४५ कि हे देव मेरा अपराध क्षमाकरो जो मैं आपकी मायासे गर्वाया आपके प्रभावको देखने चाहता दीन औ शरणार्थी हूं ४६ क्षणमें अनेकब्रह्माण्ड रचनेवाले आपको नमस्कारहै ऐसेकहते २ मुझको वो श्वासवायुमे निजउदरमेंलेगये ४७ तो तहा भी मैंने सब लोकको पहिले के जैसा देखा औ तैसेही अनेक ब्रह्मांड नायक बिनायकजी को भी देखे जिनके रोमरमें करोड़ों ब्रह्मांड ४८ औ सब चराचर संसार जैसे तैसेही स्वर्गमें भी सब देखा फिर मैं एकसे दूसरे ब्रह्मांडमें प्रवेशभया ४९ तो तैसेही सबको देखे ऐसे मैं अनेक ब्रह्माण्डोंमें गया

तौ तहां सम्पूर्ण को देखताभया औ अपनेको औ विनायकजी को भी ५० तव तो मैं खेदितभया देवजीसे बोला कि तुम्हारा अन्त कहींनहीं देखताहूं सो हेप्रभु मुझपैकृपाकरो इसमायाको हटावो ५१ तब तो कृपाभरे तिन्होने छिनमें सब छिपालिया तो फिर मैंने मयूरेशजीको बालकों के साथही देखे ५२ जो पहिलेकी नाईं खेलते तिन्हें में नमस्कार करकेबोला कि मै आपकी मायाको नहींजानताया मेरे सहस्त्रअपराध आप माता जैसे पुत्रके तैसे क्षमाकरो ५३ तव तो मयूरेशजी मेरेमस्तकपै हाथधरके बोले कि हमारे तो न क्रोध न भिन्न बुद्धिहै औ न अपने परायेका भ्रमहै ५४ न हमको किसी से भयहै औ न किसीको हमसेहै ऐसा तिनका वचन सुनके हमने फिर मयूरेशजीको औ गौरीशंकरजीको ५५ औ मुनि बालकोंसहित खेलते तिनकेसुत गणेशजीको देखे तो आज्ञालेके हर्षभरे हमउत्तम निज स्थानको आये ५६ औ गौरी तिनको ले निजघरमें गई औ सबबालक भी निज२ घरगये ५७ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमें विनायकजीकोरूपदर्शनइसनामसेएकसौचारकाअध्यायहुआ १०४॥

एकसौपांच का अध्याय॥

विश्वदेवकी भेद बुद्धि हटाना वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि फिर तो भाद्रपदकी चौथको वे मुनिबालक सुन्दर मृत्तिकालाये १ फिर तिससे निज२ बुद्धि करके अनेक मूर्त्ति बनाते भये जो सिंह चढी मयूरपै स्थित औ कई मूसे सवार २ औ नाना शस्त्र धरे अनेक दिव्य आभूषणोंसे भूषित चतुर्भुज दिव्य वस्त्र सुगन्धितवाली ऐसी२ गणेशजीकी मूर्त्तियेंबनाईं ३ फिरपरमभक्ति करके षोडश उपचारों से पृथक्२ तिनकी पूजा करी सो कि अति सुन्दर प्रभावाले फूलोंकायोग जिसमें ऐसे भारी मंडप में तिनका स्थापन करके ४ तिनको कमलके सुन्दर२ कमलोंकी माला पहिराईं औ बाजेबजने वा नगरी हर्षकोप्राप्तभई ५ औ गौरीजीने तिस जन्म तिथिमें बारहवर्षकेबाल गणेशजीकोअन्हवाये औ बायनेदिये

सुन्दर वस्त्रोंवाली स्त्रियोंको विधिसे हरिद्राकेशर आदिसे पूजके ८
इतनेहीमें (दैत्यविश्वदेव) ऐसे विख्यात शंखचक्रधारी वैष्णव होकर
आया जो तुलसीमालाडाले दिव्यगंधवस्त्र सहित औ हाथोंमें जलसे
भराकमंडलु औ बांसकी लट्ठीलिये ६ तौ गौरीजी तिसद्वारपै स्थित
अतिथिको भक्तिसेबोली हे ब्रह्मन् कहांसे आतेहो मै तुम्हारे प्रताप
से प्रसन्न भईहूं १० ऐसे कहतै वो विप्र बोला कि जो मैंने पहिले
सुनाया सोही आपका शील नेत्रोंसे देखकै प्रसन्न मनभयाहै ११
क्षुधासे पीडित मै तुम्हारे घरआयाहू गौरी बोली कि आवो औ सुख
से जीमो तौ वो तहां आसनपैबैठा १२ तौ मयूरेशजीने आसनपै बैठे
तिसके पैर धोये औ तिसजलको सर्वत्र छिड़का फिर तिनको पूजके
खीरपकवानसे जिमाये १३ फिरतौ वो द्विज चुल्लूमें जललै चिन्तासे
आतुरभया चुप ठहरारहा तौ उमाजी तिससेबोली कि जीमो २ जो
मनकेयोग्य अर्थात् सवाद अन्ननहीं है तौ चाहो जैसादेऊ १४ सो
कहो शंकरजीके प्रसादसे जो कहो सो लायाजावे तवतौ वो द्विज
रूपधारी राक्षस कहनेलगा कि हे गौरीजी १५ मै क्षीरसमुद्रस्थित
विष्णुजीका नित्यदर्शनकरके भोजनकरताहू औ जलभीतभी पीताहूं
सो मैं अन्नमोहसे भूलगया १६ गौरीजीबोली हे उत्तमविप्र पहिले
तुमने क्यों नियमनवताया अव पत्तलपरसे हमारा मतहरते कैसे
उठके जातेहो १७ शंकरजी कोपभये तो न जाने क्याकरेंगे १८ तौ
मयूरेशजीबोले कि जो तेरेमनमें दृढभावहोगा तो यहांही तुझे शीघ्र
भगवान्‌का दर्शनहोगा १६ हेविप्र वडे भागसे मिले श्रेष्ठ नाना ऐसा
पकान्नपायस छोड़के तू मूर्खपनसे कहांजाताहै २० औ बहुतजन्म
तपोंकरके जिसका देखना भूमिमें प्राप्तहो तिससे परोसे अन्नको तूने
भी वनाकैसे छोड़ताहै २१ जो ब्रह्मादिकोंको भी अप्राप्य सो शिवा
तैंने प्रत्यक्षदेखी जो सब लोककी माता औ सबको वरदायकहै २२
औ येहीसव देवताओंकी परम अद्भुतशक्ति है तिसकेही दर्शनसे तुझको
विष्णुका दर्शनहोगया २३ तुमको जैसे अग्नि भोजी चकोर पक्षी
को मीठा भी अन्ननहीं रुचता तैसे ये अमृतरूप अन्ननहीं भाता है

अथवा सर्वरूप मेरे दर्शनसे तिनका दर्शनही होगा २४ द्विजासुर बोलाकि मैं लक्ष्मीपति दासहू इससे और किसीको न नवोगा जो तुम सर्वरूपहो तुम्हारी ऐसीहीसामर्थ्यहै तो मुझको विश्वकेईश आरोग्यरूप नारायणका दर्शनकरवावो तो मयूरेशजीने तिसका ऐसा दृढ़ निश्चय जानके २५।२६ अन्तर्धान होके फिर नारायण रूपही होकर प्रकटभये जो पीतवस्त्र पहिने शंखचक्र गदापद्मधारी प्रभु २७ अनेक आभूषणोंसे सुन्दर कौस्तुभ मणिसे सजा हृदयजिनका वनमालासे विभूषित २८ शेषशायी औ महालक्ष्मीसे पैर दवाते तो विश्वदेव तिन्हे देखतेहीपूजके नमस्कारकर्ताभया २९ औ शरीरको भूलके तन्मयताको प्राप्तभया औ आनंदसे भराद्विज बोला कि ३० आजमेरा जन्मधन्यहै औ जीवन सफलभया है आजये नगरीधन्यहै औ मेरेमा बापधन्य हैं ३१ मयूरेशजीके उपदेशसे औ भवानीजोके दर्शनसे परेसेपर चराचरके गुरु विष्णु रूपसर्वके अन्तर्य्यामी ३२ आपका हे विभो दर्शन भया है फिरतौ नारायणजोभी तिस भक्तका आलिंगन करतेभये ३३ औ प्रसन्नमनभये बोले प्रेमभरी वाणीसे कि तैने मेरेलिये भोजनछोडा इससे मै क्षीरसमुद्र से आयाहूं ३४ सो भक्तिकीतृपा मिटानेको मैं जलरूप होरहाहू ऐसेही मैं भक्तोकी पीड़ा नाश करने को अनेक रूपधारी होरहा हू ३५ सो मैं तेरी व्यभिचारिणी अर्थात् अनन्य भक्तिदेखके आयाहू मैं मेघ रूपहोके भक्तके मार्गको सींचता औ पवनहोके कांटे बुहारता हूं ३६ औ जैसे मुझको भक्त नित्य प्याराहै सो तुझको दिखाता हू कि भाद्रपदकी चौथको मयूरेशजी का भारी उत्सवभया ३७ सोकि मृत्तिका की मूर्त्ति मोर मूषक सिंह इनपै सवार पृथक पृथक् बनाकर जो नाना आभूषणो से सजी औ नानारंगोंसे शोभित ३८ जिनेअनेक बालक औ मुनिजन पूजरहे सो कई तो तिसके आगे गाय रहे औ कई भक्तिसे नृत्यकरतेथे ३९ औ कई पुराण वांचते औ कई परिक्रमा करते इवनेहीमें महात्मा वशिष्ठजीका पौत्र ४० (पराशर) ऐसे विख्यात मुनिदेव इच्छासे तहांआया चारवर्ष की अवस्था

वाले भक्ति में परायण भये तिसने मूर्त्तिबनाई ४१ औ सूखेपत्तों की माला बनाके तिसे पहिराई औ सुगन्धकी भावनासे तिसमूर्त्ति को कीचसेलेपी ४२ मृत्तिका के मोदकों का भोगलगाया औ मृत्तिकाही दक्षिणा फलचढ़ाया औ फिर अनेकसेपत्ते औ कीच चढ़ाई ४३ औ प्रार्थनानृत्यकिया धीरेधीरे जावबजावजाके फिर दोघड़ी नृत्यकरके गेनेलगा औ बोला कि इसेभक्षण कीजिये ४४ ऐसे बहुत प्रकार मूर्त्ति की प्रार्थनाकरी तौ वो चैतन्यभई तब जोजो जिसने बतावबाके रक्खाया ४५ सोसोसब तैसातैसाही भया औ मूर्त्ति ने भक्षणकिया सोकि लड्डू औ अनेक पक्वान्नपायस सब खाया ४६ तौ विश्वदेवने तिसे यथार्थही देखा सोकि मृत्तिकाके मोदक और सब फल पुष्पादिक देखताभया ४७ औ तिस छ भुजवाली मूर्त्ति का चैतन्य देखी फिर तिसीको चतुर्भुज विष्णुरूपदेखी ४८ तौवोदेवजीसेबोलाकि ये मृत्तिका भक्षण करना कैसा करतेहो मूर्त्ति बोली कि जो भक्तिसेमुझ को अर्पण कियाजावे सो अमृतके समान होताहै ४९ औ अभक्त का दिया मुझको अमृतभी विषही होताहै ब्रह्माबोले कि ऐसा तिनका वचनसुनके विश्वदेव फिरबोला ५० कि हेसुरेश्वर वो आपकाकौन भक्तहै तिसे मुझको दिखावो फिर मयूरेशजी तिसकाहाथ पकड़ के बाहरलेआये ५१ औ तिसे घरघर में पूजते गणेशजी को दिखाये तौ तिसने मोरपर सवारभये मयूरेशजी को देखे ५२ औ तहांभी अपनेका तिनके पास देखताभया तौ बोलाकि ये मेरे स्वामीनहीं हैं ऐसीबुद्धिकर तिसे छोड़के ५३ फिरतौ घरघर में विश्वदेवने नारायणजीको देखे तौ सबठौर तिसने गणेशजीकोही पूजतेदेखे ५४ औ कहींकहीं मयूरेश विष्णुरूप देखे औ फिर देखनेलगा तौ मयूरेशजीही देखे ५५ जो तिसकी भुजा पकड़के लीलासे बाहर आते तौ फिर वो हाथछूटा के तिनसे बोलाकि यहमेरा स्वामी नहीं ५६ फिरतौ घरघर में भटकता वो तिन्हीं को पूजते देखताभया जोमयूरेशजी अनेक प्रकार बाजे गाजों से पूजरहे ५७ औ कहीं कहीं य तिन्हीं को विष्णुरूप देखके नमस्कार करनेको चला तो फिरतिसने

मयूरपर सवार गणेशजीही देखे ५८ फिर और कहीं गरुड़चढ़े विष्णु औ कहीं शेषचढे देखे तौ जब वे। विश्वदेव तिन्हें विष्णुरूप देख नमस्कार करनेदौड़ा ५९ तौ तभीतिनको मयूरेशजीदेखे औ कहीं जेवँने कहीं खेलते औ कहीं सोते देखताभया ६० फ़िर तौ खेदितभया विश्वदेव वशिष्ठजीके घरआया तौ फिर मयूरेशजीने कहा देख मेरे उत्तमभक्त को ६१ फिरतो तिसने अगाडी स्थित पराशरजीको देखे जो मिट्टीकी सामग्री से गणेशजी को पूज रहाथा ६२ औ तहा गणेशजीकोभी मिट्टीकेलड्डू खातेदेखे फिर आकाश में औ जल भूमि में भी तिन्होंको देखताभया ६३ सोतिन्हें क्षणमें तौ नारायण देव औ क्षणमें गणेशजी फिरतौ तिसने निज भेद बुद्धि औ भ्रांतिको त्यागी ६४ फिरतो सत्रभाव से अभेद बुद्धिकरके तिनकी स्तुतिकरके फिर आज्ञाले विश्वदेव निज आश्रमकोगये ६५ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड विश्वदेव बुद्धिभेद वर्णन इसनामसे एकसौ पांचका अध्याय समाप्त भया १०५ ॥

एकसौछः का अध्याय॥

मयूरेशजी की प्रभुता का वर्णन ।

श्रीब्रह्माजी वोलेकि फिर तौ तेरहवेंवर्ष मयूरेशजीने महेश्वरजी को नमस्कार करके जो महेशजी भस्म अंग सुन्दर पञ्चमुख दशभुज सुन्दर १ औ रुण्डमालाधारी सोते इनकोदेख तिन्हेंनेइनकेशिर के चन्द्रमा को उतारलिया २ औ खेलने खेलने बालकों के साथ बाहर चलेआये प्यारो के नाचते औ आपस में बतलाते ३ इतने हीमें तहा (अमगलनामदैत्य) विकराल मुख भुजोंवाला परम अद्भुत योद्धा ४ जो बलवान् शूकर रूपधरे दन्तोंसे वृक्ष उखाड़ता औ वज्र सार सरिखी ऊचीऊची बाललटोंसे आकाशको औ पैरोंसे पृथ्वीको फाडतासा ५ औ जो अञ्जन के पर्वत समानकाला औ अग्निकुण्ड से नेत्रोंवाला तौ बालकतिसे देखके भगे औ बोलेकि वर्षाके मेघके जैसे शब्दवाला ऐसाशूकर हमने कभी नहींदेखा कि जो ये बालकों

को मारने चाहा सोही मयूरेशजीने तिस दुष्टके दन्तपकड़े औ दूसरे हाथसे तिसका प्रोत्रनाम मुखका अग्रभाग अर्थात्थूथवड़ा पकड़ा ८ ७।८ औ शीघ्र तिसशूकरकोफाड़डाला जैसे बालकबासको चीरै तौ वो दशयोजन फैले पर्वदेह में स्थितहोके ९ वृक्षोंको चूर्णकरता औ भूमिको फाड़तागिरा तबतौ वे बालक बोलेकि पार्वतीका पुत्र धन्य है १० जिसने इस महाबली दैत्यको क्षण में लीलामेंमारा इसके देखनेहीसे डरे हम दशोदिशा में भगगयेथे ११ जिसने पहटे भयेभी घरफोड़े ब्रह्मावोले कि फिरतौ शिवजीने जो निजमस्तक में चन्द्रमा न देखा १२ तौ क्रोधसे लालनेत्र किये त्रिभुवन को जलातेसे क्रोधभरे गणोंसे बोलेकि तुम कैसी रखवाली करते हो १३ मेरे ललाटमें स्थित निर्मल चन्द्रमाकोकौनदेख लेगया ब्रह्माजीबोलेकि तब तौ सारेगण भयभीत कँपते विलीनभये १४ कई धैर्य्य पकड़ करके शिवजीसे बोलेकि हेउमापतिजी आपका पुत्र मयूरेश १५ बाहर खेलनेगया तिसकेहाथ में हमने देखाथा हेविभो यहहम नहीं जानते कि तिसने तुम्हारा चन्द्रमा कब लिया १६ ऐसा तिनका वचन सुनके कोप भये शिवजी बोले कि तुम भोजनभट्ट भये हमारी क्या रखवाली करते हो १७ अब चन्द्रमा या तिसका लानेवाला आवेतौ भलाहै नहींतो मैं तुम सबोंको भस्मकरूंगा इसमें संशय नहींहै १८ तबतौ वे भयभीत भये शीघ्र दौड़ते मयूरेशजीपै जाकेकुछ चिन्तभरे बोलेकि १९ हेदुष्ट तस्कर शिवजीके पासचल या चन्द्रमा देदे तौ गणका वचन सुनके गणनायकजी क्रोधभरे २० बोले कि हेगणो मेरे तुम्हारी व शिवजीकी कुछ गिनती नहींहै मैं त्रिभुवन जननीका प्रभाववान् पुत्रहूं २१ ब्रह्माजी बोलेकि फिरतौ तिनकेसांस छोड़तेसेही भगलेसेउठे तिनकेके समान उछलके सारेगण दीनभये जाय शिवजीके आगेगिरे २२ फिर तौ अत्यन्त क्रोधसे महादेवजी ने प्रथम आदिगणोंसे कहाकि तिसदुष्ट तुच्छ गौरीसुत को बांध के लेआओ २३ तौ वे शीघ्र तहां आये जहां बाल गणेशजी खेलतेथे तौ तहां वे तिनको निर्भय खेलते देखतेभये २४ तौ बांधने आये गिरजा

को मोहके गजाननजी अन्तर्धान भये तो गण तिन्हें दशो दिशो में देखनेलगे २५ घरघर अरु वन वन में देखे पर तिनको वे कहीं नहीं मिले कहीं कि देखेतो बोलेकि हमारे आगे तू कैसे जायगा २६ ब्रह्मलोक में गयेभी तुझको हम शंकरजीके पास लेजायँगे तो वे फिर लुके ऐसे वे वेर वेरही छिपते दीखतेभये २७ फिरतो खेदितभये गणों कोदेख कृपायुक्त गणेशजी तिनके अगाडी आयस्थित भये तो वे तिन्हेदेखके आनन्दसेभरे २८ गिरिजाजी के पुत्रको बांधके शंकरजीके पास लानेलगे तो भूमिभार समानवैठे तिनको गण उठानेकोसमर्थ न भये २९ तवतो विस्मित मनभये वे हतउद्योगभये शिवजीकेपास आके बोलेकि हे शंकरजी हम सारे तिस अकेले को लाने के लिये समर्थ नहींहैं तवतो शिवजीने आगेखडेनन्दीगणको आज्ञाकरी ३० ३१ कि तू चोर मयूरेशको झटलेआ नन्दीवोला कि मैं आपकी आज्ञा से शेष औ सूर्य्य चन्द्रमा कोभी हतो हे महेश्वरजी किसी छोटेकी तो मेरे गिनतीही नहीं ३२ ब्रह्माजीवोले कि ऐसेकहकहके पवनवेग नन्दी वृक्ष पर्वत तोडता ३३ क्रोधसे रक्तनेत्रकिये तीखेसींगोंवाला आकाशको ग्रसता तिन मयूरेशजीसे जाके बोला कि अरे तू शिवजी के पासचल ३४ नहींतो अभी पहुचाऊंगा मैं गणोंकेसा नहींहूं ऐसे तिसके कहतेही क्रोधयुक्त मयूरेशजी ३५ तिसे आनेजाने के श्वास चकपे चढ़ातेभये फिर तिसेखेद भयेको भारीसांस मारके शिवजीके निकटछोंडा ३६ जो मुखसे रुधिर उगलता पृथ्वी में पड़ा फिरचार घड़ी मूर्च्छितभया जो निज अनेकपुरुषार्थ कहरहा ३७ तोतभीशिवजीने निजगोडे पैबैठे गणेशजीको देखे जो शरीरसे कांतिमान् औ सुन्दर आभूषण पहिरे ३८ औ गण पहिलेकी ताईं शिवजीकेमस्तक पै चन्द्रमा को देखके वोलेकि हेमहादेवजी चन्द्रमा तो आपके मस्तक मेंही है हमको वृथाहीआज्ञाकरी ३९ तवतो शिवजी निजमस्तक मेंही चन्द्रमा को देखके वोले कि तुम औ गणनन्दी येसव मेरी आज्ञासे खेदितभये ४० मेरे मस्तकमेंही चंद्रमाथा तुम्हारा तोवृथाही युद्धभया गण बोले कि हे देवजी आजसे हमारे स्वामी मयूरेशजी

होवें ५१ ब्रह्माजीबोले कि तबतौ शिवजीने तिनसेतैसेहीकहा तौ वे गणेशजी (नयराज)भये औ गणहर्षसे गर्जतेभये गणेश शिवगौरी जीको नमस्कार करके औ देवमयूरेशजीकी प्रसंशाकरके निजनिज घरगये ५२। ५३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें मयूरेशजी की प्रसंशाकावर्णन इसनाम से एकसौछ का अध्यायसमाप्तभया॥

एकसौसात का अध्याय॥

मयूरेशजी करके इन्द्रका गर्वखण्डित होना।

श्रीब्रह्माजी बोलेकि फिर तौ चौदहवेंवर्ष गौतम आदि मुनिजन गिरिजाजी के घरआये औ अनेक गणोंसहित शिवजी को १ नमस्कार करके बैठे तौ शिवाजी भी तिनको विधि से पूजके आसनपे विराजीं तिन्हींके मनका वचन कहतीभईं २ कि विघ्नोंही के भयसे तौ उत्तम त्रिसन्ध्याक्षेत्रभी छोंड़ा परमेरे इसबालकको यहांभी विघ्न होतेहीहैं ३ सो आप मुझको विघ्नरहित कर्म्म या स्थान बताइये मुनिबोले कि हेदेवि इन्द्रयज्ञभये सबोविघ्न मिटेगा ४ ब्रह्माजीबोले कि तबतौ गौरीने बहुतभारी मंडप बनवाया औ इन्द्रकी प्रसन्नताके लिये तयारी करवातीभईं ५ शम्भुजीकी आज्ञासे हर्षभरीगिरिजा महर्षियोंसे यथाविधि इन्द्रयज्ञ करवातीभईं ६।७ तौ तिनमहर्षियों ने इन्द्रका ध्यान आवाहन किया औ गिरिजाजीकी आज्ञा में इन्द्र औ गणोंको सांगोपान पूजतेभये ७ औ ब्राह्मणोंने मर्य्यादासे कुंडमें अग्नि जलाय स्थापन करके जपोंके दशांशसे तिल पायस हवन करतेभये ८ सोंप्रभृति नमः औ स्वाहा अंतमें जिनके ऐसे अर्थात (ओं इन्द्राय नमः स्वाहा) इत्यादि मन्त्रोंसे औ चतुर्वेद पाठी ब्राह्मण शांति पाठकरतेभये ९ इतनेही में बाल गणेशजी बालकों के साथ खेलके यज्ञशाला के सामने आते थे तौ (क्लू) (त्रिकूटदैत्य) १० समुखआये जो भैंसेभये मारोंफुकारते पैने सींगोंवाले औ त्रिभुवनको डराने ११ बालोंसे आकाश फोड़ते औ पुच्छ पर्वतकारते औ नासिकाके रुके पवन अर्थात फोंकार से दुष्टोंको पूर्णकरते १२

औ गौरीसुत को मारना चाहते वे तिनके निकट आय औ वेदो-
नों आपही मल्लहाथियों की नाईं लडतेभये १३ तो तिनके शब्द से
आकाश मेघके समान गर्जा औ वे दोनों रुधिरसे सने आपसमेंही
हारते जीततेथे १४ तो तिन भेड़िये सीरखोसे डरे मुनिपुत्र भगगये
तो तिनको दूरसेही गिरिजासुतने देखे १५ कि ये कैसे महादुष्ट हैं
इनको मारूंगा ऐसे विचारते बालकों के देखने देखते तिनको आ-
काश में फेंकनेभये १६ सो अतिबलवालों को पूछपकड़ वेरवेरघुमा-
के फेंके तौवे दोखंडी में वृक्षों कोभी तोड़तेपड़े १७ तो तिनके देहके
सोखंडो को भेड़िये आदि खातेभये फिरतो मुनिबालक गणेशजी के
पास आये औ भक्तिसे तिनकी स्तुति करतेभये १८ कि ब्रह्मादि
देवता मुनिये जिन के तत्त्व को नहीं जानते तो सब के अन्तर्य्यामी
आपके तत्त्वको हम कैसे जानें १९ बालपनेसे आपने करोड़ो दैत्य
मारेहे औ ये जो भेसेरूपसे आपको मारने आयेथे २० तिनको
आपने पूछपकड़के चूहोकी नाईं फेंके जिनके श्वासोसे चलितभये
पर्वत वृक्षपृथ्वी २१ ब्रह्माजीबोले कि फिरतो खेलतेखेलने मयूरेश
जी यज्ञस्थानमें आये तहां इंद्रयज्ञदेखा तो तिसे क्रोधकरके छिनमें
बिगाड़तेभये २२ सोकि तिसइन्द्रकीमूर्त्तिको दूरफेंकी औ सबमुनि
जनोसे कहाकि हेसाधुवो यह किसलिये क्या कररहेहो २३ औवो-
लेकि इन्द्र प्रसन्न भया क्या देवेगा क्या बकरीकी प्रार्थनासे काम-
धेनुका फलमिलता है २४ ऐसेकह वे अग्निको बुझाके सब नैवेद्य
भक्षण करतेभये तो मुनिजन इनकी चपलतादेख विस्मित मनभये
२५ औ उमाजभी दुखित मनभई तिन गणेशजीको लड़ने शिक्षा
देनेको न समर्थभई सोकि वो कोपसे कुछभी न कहसकी २६ वेसब
उमाजसे कहकहके निजनिज घरगये औ कहगये कि इंद्रके क्रोध
भये जो होना सो देखना २७ तबतो निज अपमान सुनके इंद्र अ-
त्यंत क्रोधभया क्रोधमे लालनेत्र कियेत्रिभुवन को जलाता २८
देवतो को बुलाके बोला कि मुनिजनों ने परम आदर से मेरा यज्ञ
रचाया २९ सोगणेशने विध्वंसकिया सोमें इसकाफल दिखाताहूं

होवे ४१ ब्रह्माजीबोले कि तबतौ शिवजीने तिनसेतैसेहीकहा तौ वे गणेशजी (गणराज)भये औ गणहर्षसे गर्जतेभये गणेश शिवगौरी जीको नमस्कार करके औ देवमयूरेशजीकी प्रसशाकरके निजनिज घरगये ४२।-४३ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें मयूरेशजी की प्रसंशाकावर्णन इसनाम से एकसौछः का अध्यायसमाप्तभया ॥

एकसौसात का अध्याय ॥

मयूरेशजी करके इन्द्रका गर्व्वखण्डित होना॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि फिर तौ चौदहवेंवर्ष गोतम आदि मुनिजन गिरिजाजी के घरआये औ अनेक गणोसहित शिवजी को १ नमस्कार करके बैठे तो शिवाजी भी तिनको विधि से पूजके आसनपे विराजीं तिन्हींके मनका वचन कहतीभई २ कि विघ्नोंही के भयसे तौ उत्तम त्रिसन्ध्याक्षेत्रभी छोंडा परमेरे इसबालकको यहांभी विघ्न होतेहीहैं ३ सो आप मुझको विघ्नरहित कर्म्म या स्थान बताइये मुनिबोले कि हेदेविइन्द्रयज्ञभये सबोविघ्न मिटेगा ४ ब्रह्माजीबोले कि तबतो गौरीने बहुतभारी मडप बनवाया औ इन्द्रको प्रसन्नताके लिये तयारी करवातीभई ५ शम्भुजीकी आज्ञालेके हर्षभरीगिरिजा महर्षियोंसे यथाविधि इन्द्रयज्ञ करवातीभई ६ तब तो तिनमहर्षियों ने इन्द्रका ध्यान आवाहन किया औ गिरिजाजीकी आज्ञा से इन्द्र औ गणोंको सांगोपान पूजतेभये ७ औ ब्राह्मणोने मंत्रोंहीसे कुंडमें अग्नि जलाय स्थापन करके जपोंके दशांशसे तिल पायस हवन करतेभये ८ सोओंआदि नमः औ स्वाहा अंतमें जिनके ऐसे अर्थात् (ओं इन्द्राय नमः स्वाहा) इत्यादि मन्त्रोंसे औ चतुर्वेद पाठी ब्राह्मण शांति पाठकरते भये ९ इतनेही में बाल गणेशजी बालकों के साथ खेलके यज्ञशाला के सामने आते थे तो (कल) (विकटदैत्य) १० समुखआये जो भैंसेभये भारोणकारते पैने सींगोवाले औ त्रिभुवनको डराते ११ बाटोंसे आकाश फोडते औ पूंछ पर्वतफाड़ते औ नासिकाके रुके पवन अर्थात फूंकार से दृक्षोंको चूर्णकरते १२

श्री गौरीसुत को मारना चाहते थे तिनके निकट आये औ वेदो-
नों आपही मत्तहाथियों की नाईं लडतेभये १३ तो तिनके शब्द से
आकाश मेघके समान गर्जा औ वे दोनों रुधिरसे सने आपसमेंही
हारते जीततेथे १४ तो तिन भेडिये सीरखोसे डरे मुनिपुत्र भगगये
तो तिनको दूरसेही गिरिजासुतने देखे १५ कि ये कैसे महादुष्ट हैं
इनको मारूंगा ऐसे विचारते बालकों के देखते देखते तिनको आ-
काश में फेंकतेभये १६ सो अतिबलवालों की पूछपकड़ घेरघेरभ्रमा-
के फेके तौवे दोघडी में वृक्षोंकोभी तोडतेपडे १७ तो तिनके देहके
सौखंडो को भेडिये आदि खातेभये फिरतो मुनिबालक गणेशजी के
पास आये औ भक्तिसे तिनकी स्तुति करतेभये १८ कि ब्रह्मादि
देवता मुनिये जिन के तत्त्व को नहीं जानते तो सब के अन्तर्यामी
आपके तत्त्वको हम कैसे जानें १९ बालपनेमें आपने करोडों दैत्य
मारेहैं औ ये जो भेमेरूपसे आपको मारने आयेथे २० तिनको
आपने पूछपकड़के चूहोंकी नाईं फेंके जिनके श्वासोंसे चलितभये
पर्वत वृक्षपृथ्वी २१ ब्रह्माजीबोले कि फिरतो खेलतेखलते मयूरेश
जी यज्ञस्थानमें आये तहां इंद्रयज्ञदेखा तो तिसे क्रोधकरके छिनमें
बिगाडतेभये २२ सोकि तिसइन्द्रकीमूर्त्तिको दूरफेंको औ सबमुनि
जनों से कहाकि हेसाधुवो यह किसलिये क्या कररहेहो २३ औबो-
लेकि इन्द्र प्रसन्न भया क्या देवेगा क्या बकरीकी प्रार्थनासे काम-
धेनुका फलमिलता है २४ ऐसेकह वे अग्निको बुझाके सब नैवेद्य
भक्षण करतेभये तो मुनिजन इनकी चपलतादेख विस्मित मनभये
२५ औ उमाजे भी दुःखित मनभई तिन गणेशजीको लडने,शिक्षा
देनेको न समर्थभई सोऊ वो क्रोधसे कुछभी न कहसकी २६ वैसब
उमाजीने कहकहके निजनिज घरगये औ कहगये कि इंद्रके क्रोध
भये जो होना सो देखना २७ तबतो निज अपमान सुनके इन्द्र अ-
त्यंत क्रोधभया क्रोधसे लालनेत्र किये त्रिभुवन को जलाता २८
देवतों को बुलाके बोला कि मुनिजनों ने परम आदर से मेरा यज्ञ
रचाया २९ सोगणेशने विध्वंसकिया सोमैं इसकाफल दिखाताहूं

हाथोंसे तिसका मुख पकडा और हाथोंसे तिसको वाहरलाकरपरशु से काटते भये १२ सो तिसके नाक कान पैर पूछ औ आगेका थां-वडा काटके फिर मुख न दिखाना ऐसे कहके तिसे छोड़ा १३ फिर वो निजरूपधारी भी तैसाही बिकराल अर्थात् कटे नाक कानवाला भया औ बोला कि मैं तेरे भी शरीरको ऐसाही किये देताहूं १४ ऐसे कहके दैत्य निजस्थान गया औ गणेशजी निजधाम आये फिर तो मुनि सुत पुकारते२ भ्रमते भये कि मयूरराजजी कहां२ फिर वे अत्यन्त थके सुन्दर छायावाले वृक्षकेनीचे सोये फिर बोले कि इस मार्गसेचलेंगे तिनकेखोज देखेंगे १५।१६ तौ दक्षिणदिशामें तिनके खोजदेखके यमराज कोपभया और क्रोधसे अत्यन्त लालनेत्रकिये ब्रह्माण्डको ग्रसतासा १७ तिन्हें बांधके निजस्थानमें लेगया फिर मयूरेशजी नदीपे आये औ तटपे वालक न देखे तो महा आश्चर्य्य किया १८ तिनके विना मयूरेशजी परम चिन्ताको प्राप्तभये वहीं भी सुख नहींपाये तव तो मुनिजन भी आये १९ औ बोले कि हे दे-वजी हमारे बालक कहाहैं जिन्हें तुम सवेरेसे लेआयेहो अब तिनके विन हमारेप्राण निकले जातेहैं २० तुम भी आगये औ वे न आये सो कहो ब्रह्माजीबोले तब तो गणेशजीने तिनसे कुछ भी नहींकहा औ वेर२नेत्रसे आंशू छोडते २१ बिचार करकेदेख यमराजकी पुरी को चले तो दूतोंने ढंढोरादिया दूतवोले कि एकमहापुरुष जो तीनों लोक नाशकरेहै ऐसालडनेको आयाहै २२ भारी शब्दकरता छवो भुजोंवाला औ वलसे बर्जितकिया भी नहीं रुकता ऐसा है यमराज तब तो यमराज बोला कि जिस मेरे लोहदण्डके घात से ब्रह्माण्ड चूर्णहोवे ऐसे मुझआगे वो वालक क्या युद्ध करेगा २३ तो गणेश-जीबोले कि तू अपना वर्णन कररहा औ मुझको तू हे यम तुच्छसा भासताहै मेरी वांकी भौंहे होनेसे ही ब्रह्माण्ड नष्ट होजावेगा २४ ऐसेकहके मयूरेशजी यमराजके कन्धेपर चढ़गये औ क्षणमें तिसको भैंसेपरसे गिराया औ आप ऊपरगिरे २५ तो तिनका पराक्रमजान के यमराज हाथबांधके परमभक्तिसे सुरोंकेईश मयूरेशजीकी स्तुति

करताभया २६ यमबोला आपके रूप को ब्रह्मादि देवता औ सनकादिकमुनियें नहीं जानते औ (नेतिनेति) ऐसे कहते आपकोही परमेश्वर कहते हैं २७ जो आप सृष्टि रचनेवाले औ पालक औ निज इच्छासे संहार करनेवालेहो औ सब दुष्ट दैत्योंके नाशक औ सर्व्व स्वरूपी हो २८ जो हमने अचानक अर्थात् बे पहिचाने, अपराध किया सो क्षमाकीजिये ब्रह्माजीबोले ऐसे कह यमराज वस्त्र, रत्न, फल इनसे गणेशजी को पूजता भया २६ औ बालकों को लाय तिनके हाथमें सौंपके आगे स्थित भया तो वे सारे आपस में मिले भेंटे औ बोले कि ३० हम तुमको देखते२ थकगये तो यमराज हमें बांधले आया अब आपके दर्शनसेछूटे निज२घर चलेंगे ३१ ब्रह्माजीबोले तब तौ वे गणेशजी करके आगेकिये निज२ आश्रम पै आये सो कि अनेक बाजेगाजे सहित मयूरेशजी के नगर में पहुचे ३२ जो अनेक ध्वजा पताका युक्त औ पुष्प मालों से सजा औ यम भी तिस महा आश्चर्य्यको देखने पीछेपीछे चलाआताथा ३३ फिर मुनिजन भी तिनके सन्मुखआये तो गणेशजीको पूजते नमस्कार करतेभये औ निज २ बालकों से मिले ३४ तो पहिले कोप भये तिन सब मुनियों से गणेशजीबोले कि ये यमके लोकसे क्षणहीमें तुम्हारे बालक ला दियेहैं ३५ तो मुनिबोले सर्व्वशक्तिवाले आपही हमारी सदा सर्व्वत्र रक्षा करते हो ब्रह्माजी बोले ऐसे कह तिनसे आज्ञा लेलेके मुनियें निज२ आश्रमोंकोगये ३६ औ यमराज भी तिनको नमस्कार करके हर्षितभया निजलोक को पधारा औ गणेशजी भी निजघर जाकर गौरीजीको हर्षितभये ३७ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्ड में यम गर्व्वखण्डन इसनामसे एकसौआठका अध्याय हुआ १०८॥

एकसौ नौ का अध्याय॥

शिवदेवको करके हेमाङ्गद राक्षसादिक भीमहोनेका वर्णन॥

श्रीब्रह्माजी बोले एक समय सुखसे विराजमान महेश्वरजी से गौरी बोलीं कि हे देवजी अब पन्द्रह वर्षका होगया १ इससे अब

हमने राक्षसहते ३२ हे गणेशजी अब हमको औरआज्ञाकरो सोही हमकरेंगे औ जो२मुनिजन तिनकेसाथ आनेथेतिन्होंने परमआश्चर्य माना ३३ औ गिरिजाजी भी वेलसेउतरकर गणेशजीका आलिगन करतीभई औ शिवजी भी तिनसे बोलेकि तुम्हारा पराक्रम आजदेखा है ३४ जो तुम्हारे अस्त्रकिये कुशोसे राक्षसहते हे गिरिजासुत तेरा प्रभाव ब्रह्मादिकोंकरके भी अगम्यहै औ अब नहीं जानाजाताहै कि अगाडी तू क्या२औरकरेगा ३५।३६ इतिश्रीगणेशपुराणेउत्तरखंड मेंकुशोसेराक्षसोकावधइसनामसे एकसौनोकाअध्यायहुआ १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय॥

नदीगणकासिन्धुदैत्यमेपासजाना॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि जयवाले विनायकजी हर्षभरे आगे२चलते थे औ पीछे२ बालक औ तिनके पीछे वेलपैचढे शिवजीचले १ फिर गौतमआदि मुनिजन लग्नशुद्धके लियेआये गर्जते औ दिशाविदिशाओंको गोंजाते२ फिर गण्डकीसे चारकोसपै गणेशजी मयूरपरसे उतरकरके उत्तमसिंहासनपै विराजमानभये ३ फिर तो वे शिवगण औ मुनिजनोंको बैठाकर बाजेगाजे सहित मयूरेशजी तिनसेबोले ४ कि इन्द्रादि देवता सिन्धुसेताडे बन्दीघरमेंपडेहैं विना तिनके छुटाये लग्न सिद्धिही नहींहोगी ५ इससेतिनको छुटानेके लिये सिन्धुके पासकिसी महाबुद्धिवानको भेजो तिनको छुटालावे ६ तो समझाने सेही सबका भला होजावेगा नहीं तो महाबली सिन्धुको सग्राम में जीतेंगे ७ औ तिन देवतोंको छुटावेंगे तभी लग्नशुद्धहोगा ब्रह्माजी बोले ऐसा तिनका वचन सुनके सारे बोले हे गणेशजी ८ ये आपने श्रेष्ठ अमृतके समान वचनकहा बालपनमें भी आपकी बृहस्पतिजीके समान श्रेष्ठबुद्धि है ९ सो महाबलवाले नीति शास्त्र कुशल पुष्पदन्त को सिन्धुकेपास देवोंके छुटानेको भेजो१०जो वक्ता बली श्रेष्ठस्तुति से स्वामीको प्रसन्न करताहै ब्रह्माजी बोले तबतो मयूरेशजीसे पुष्पदन्त बोला कि हे गणेशजी आपकी महिमा कहीं समझी नहीं जाती

मोहितभये जन आपकीमायाको नहींजानते११।१२ आपभूमिभार उतारनेको शिवजीके घरमें अवतारभयेहो सो तहामुझे न भेजो कि-सी औरहीं को भलीभांति भेजिये१३ मैं तो अपार सेनावाले महा-वलीमदवालेसिंधुदैत्यको किसीप्रकार नहींदेखसका१४में तो तिसके साथ तेजवाली भुजोंसे युद्धहोकरेगा औ समझाने कहो कामदेवे तो यद्धवृथाहै १५ औ दान दंड भेद ये भी वृथाहैं ये सदाकीनीतिहैं ऐसा तिसका वचनसुनके गिरिजापतिजी वोले १६ हे पुष्पदन्त तैंने प्रा-चीननीतिका वचन अच्छाकहा क्रोधवाला भलेसमझाने नहींनका वो तो केवल वलवालाहीहै १७ जो परशु धभेजाजावे तो तिस महा दुष्टको पकड़हीलेगा औ जो वीरभद्रकोभेजें तो क्रो यही करेगा १८ जो नन्दीको तहां भेजें तो संहारही करेगा प्रथमको भेजें तो ये मत-वाला न जानेक्याकरेगा १९ जो भूतराजको भेजें तो ये सभाको ड-रावेगा जो रक्तलोचन भेजाजावे तो स्त्रियोंसे भोग करेगा २० तव तो तिन सवोंके निषिद्धभये मयूरेशजीवले कि नन्दीगण तो समुद्र सरीखा गम्भीर औ धैर्यमें पर्वतसमानहै २१वुद्धिमें वृहस्पतिसमान है वलमें इन्द्रकेसमानहै औ धूर्त पराये अभिप्रायका ज्ञाताहै सो ये नन्दी समझानेको भेजाजावे २२ शिवजीवोले हे मयूरेश अच्छाकहा तू गुणदोषोंको जानताहै सो नन्दीहीको वस्त्र औ अनेकसे रत्नदे औ २३ तव तो मयूरेशजीने शिवजीकी आज्ञासे तिसीकोदिये औ तिसे आज्ञादी कि महावली सिन्धुदैत्यके पास चलाजा २४ जैसे देवता छूटें तैसाही नीतिविचारकरना तो वो गणेशकर मयूरेशजीकोनम-स्कारकरके२५ औ सवगण तथा शिवजीकी स्तुतिकरके मतिसम्पन्न नन्दीवोला कि ये वहुतश्रेष्ठ वचनकहा २६ जिसपै आपकाअनुग्रह होवे सोहो धन्यहोजाताहै इसने मैं श्रेष्ठवनको प्राप्तक्रिया आपका प्रयोजन सिद्धकरोंगा २७ आपकी प्रसन्नतामें सारेभूतलको शीघ्रही शोधा करसकाहूं औ शेष वा सूर्यजीको निस्सन्देहही आपकेपासले आऊं २८ ब्रह्माजी वोले ऐसे कहके वलवाला नन्दी सिन्धुदैत्यके पासगया सो धैर्यवाला वो मनके जैसेवेगसे नगरकेद्वारपै पहुंचा २९

गौरीशंकर-सर्वार्थ साधक गणेशजीको मनाताभया ओ तिसप्रतिज्ञा को सत्य करनेके लिये चित्तमें विचारनेलगा कि किसी भी प्रकारसे स्वामीकाकार्य सिद्धहोवे ३० इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंनन्दी गमन इस नामसे एकसौदशका अध्यायहुआ ११०॥

एकसौग्यारहका अध्याय॥

सिन्धुदैत्यके युद्धकाविचारहोनावर्णितहै॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो द्वारपालसे बताये नंदीजी तिसको महारमणीय सभामेंगये तौ सभामेंबैठे सिन्धुको देखके ये तिसे सरा-हनेलगे १ जो शस्त्रलिये बडे २ शूरवीरोंसे घिरा वेश्याओंका नृत्य देखरहा मनुष्य हर्षसेपखा खींचरहे २ ओ अनेक बाजेबाजरहे जो दशो दिशोंको गाजाते तो तहा नदीजीको देखके कइयोंने तो सूर्यजी आयेजाने ३ ओ कई इसभारी शरीरवाले वड़ेवीरको देखके कंपित भये ओ कई तहां बलसे इन्हींको डराने गर्जनाकरतेभये ४ पर नि-जबल गंभीर नदीजी निज धैर्य्यपनसे न डरे ओ हाथसे बताये उत्त-म आसनपे नंदीजी बैठे ५ तो वे सारेतिनकेनिकटआये जैसे चित्रि-तभये पुतलेहीहों अर्थात् चुपचाप भये फिर अवकाश पायके परम वक्ता नंदीजीबोले कि हमने अनेक सभादेखी पर ऐसे मूर्ख तहा कहींनहीं देखेथे ६ तुमसारे अतिबलवाले ओ श्रीसेसज ७ कामदेव जैसे सुन्दर पर बुद्धिसे हीन मानो भेडियेहीहो अरे सभामें आया भलाबुरा सबल निर्बल ८ पूछना सन्मान करना ये सदाकी नीति है सो मैंने इससभामें न देखी इससे मेरामन विस्मितहै ९ तुम वृथा सब सभावाले ओ वृथाही मंत्री ओ नगरवासी हो ये राजाकाही धर्म नहींहै किन्तु आयेको पूछना ये सभासदोंका धर्महै १० ब्रह्मा जीबोले ऐसा तिसका वचन सुनके सिन्धुआप नदीजीसेबोला कि हे गुणाकर तेरी तो ब्रह्माजीकीसी बुद्धिदेखपडी ११ हे बलराज तू कौन कहांसे आया तेजसे तौ अग्नि सरीखा ओ बलमें शिवजीके समान १२ नदीबोले कि मुझको सुरभि कामधेनुका पुत्र (नदीगण)

जान में गिरजापति जो कावाहन ब्रह्माण्ड भेदकहूं १३ औ (मयूरे-
शजी) जो भूमिभार उतारनेको शिवजीके घर अवतारभयेहें जो दु-
ष्टोंको नष्टकरते बालपनेसे दैत्योंको माररहे १४ जिनकेगुण वर्णन
करनेमें शेषजी मूकभये औ ब्रह्माजीभीथके जैसे समुद्र मथनेसे रत्न
बाहर निकले तैसेही तू भी आज नीतिको मथकरके कार्यसिद्धि वि-
चारो सो कि मयूरेशजीकी कहीभारी अर्थात् कर्त्तव्य आज्ञाको सुन
१५।१६ जिनकी आज्ञाभगकिये सबकाविनाशहोताहै फिर वही चर
अचर संसारको रचते पालते औ सहारतेहैं १७ सो कि तेरे बलसेती
ताडित जो देवता पड़ेहैं तिनके स्थान तेने छीनलिये इससेपरे अब
क्या भोगेगा १८ अब तू विचारसे वैर त्यागनकरदे हमारे स्वामीकी
आज्ञासे सब सुरोंको शीघ्र छोड़दे १६ देख (त्रिपुरासुर) ने शिवजी
के साथ वै किया था तो तिसी क्षण में नष्टभया औ (हिरण्यकश्यप)
को भगवानने थंभमें अवतार धारके संहारा २० औ तारकने भी
देवोंको जीतलिये औ तिनके स्थानोंमें आपही बैठाथा तो तिसयुद्ध
में झटही स्कंदजीनेमारा २१ इससे देवतोंको मुझे देकर तू निज
स्थानमें विराजमानहो ब्रह्माजीबोले ऐसे नन्दीजीके वचनसुन सिन्धु
दैत्यराज क्रोधभया औ लालनेत्र किये अग्नि उगलतासा बोला हे
बैलपुत्र तेरी चतुरता हमने बहुतदेखी २२। २३ तू बृहस्पतिजी के
प्रसंग को जानताही नहींहै कि अज्ञानसे बकने वालेका वचन झूठा
होजाताहै २४ सो कि तुझबालकके औ तेरे स्वामीके कहनेसेही मैं
देवतोंको कैसेछोड़देऊं जबतकतिसको न जीता अर्थात्फिरमेरीइच्छा
रही २५ तुझ तिनकेचरते वनमें फिरनेवाले बैलकाकहा कैसे प्रमाण
कियाजावे कहा तेरा पर्वतवासी शिव औ को मयूरेश क्यों वृथाभय
दिखाता है २६ तेरी पूंछपकड़के फटकारता जो दूत वनके न आता
तो हे बैल जो क्रोधसेमेरी भौंह भी टेढ़ीहोजाय तो त्रिभुवननष्टहोजावे
तहां तिनकी तो गिनतीही क्याहै २७ कसाभयोगीदड़ सिंह वा हाथी
का क्या करसकेगा २८ ब्रह्माजी बोले तब तो ऐसे२ वचन बाणोंसे
बिंधे नन्दीजीबोले हे खलराजन्‌ तेरीविपरीतमतिदेखपड़तीहै जो कि

तू मरण निकटभया सन्निपात वाले के समान विकल कूदरहा है पहिले सामभेदसे काम करना इसलिये तिन्होंने मुझको भेजाथा २६ सोतेरेमें नीतिभी ममझाई अनीतिभई अर्थात् वृथाहीगई जैसेखोटे को उपदेशदेना जो यह तेरीनिन्दा मुझसे मयूरेश महेशजीसेकही जावेगी तौ तिसतेतू ३० आयुभोग होजावेगा औ युद्धमें नहींजो- तेगा औ हेदुर्बुद्धे तुझको अनाभागे पर स्वामीकी आज्ञानहींहै ३१ दूतको स्वामीका मारना औ स्वामीको दूत इससे डरताहूं ऐसेकह सासछ ङ के करके राक्षसों में गिगतभये ३२ नन्दीजी कोधसेतिससे विन पूछेही चलदिये औ तिसी क्षणमें महेश मयूरेशजी के निकट पहुचे ३३ तौ दूरहीसे शिवजीनेभी देखेकि नंदीआया तिसनेदेवजी को प्रणाम करके आदिसे सब वृत्तांतकहा ३४ सोकि नन्दीजी बोले बहुत प्रकार भी समझाये दैत्यने हमारा वचन नहीं माना मैं ने तिसको बहुत धमकाया औ तिसने मुझको भी ३५ औ तिसमें उप- देश कियाभी औधे घड़ेपर जलडालने की नाई सब वृथाही होगया ब्रह्माबोलेकि ऐसे तिनका वचन सुनके मयूरेशजी हर्षसे जो दैत्यों को ममल वाले अर्थात् नाशक ३६ ऐसे तिन्होंने प्रथम आदि गणोंको लडाई के लिये शीघ्र आज्ञाकरी औ अभी सिंधुके नगर में युद्धकेलिये जानेको चावभये थीर शब्दों से गर्जनाकरी ३७।३८।३९ देवतोंको छुटानेको औ सेनासहित सिंधु दैत्य को मारने के लिये औ शरण आये मुनि जनोंके निजनिज आश्रम वे सुखसे पहुंचनेके लिये ४० ॥ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तरखण्डमें विचार होना इसनाम से एकसौ ग्यारहका अध्याय समाप्त भया ॥ १११ ॥

एकसौबारह का अध्याय ॥

सिंधुमे युद्धको चढना वर्णित है ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि फिर दूसरे दिनही मयूरेशजी मोरपे सवार होकर औ हस्त कमलों में चारोशस्त्र लेकरके १ मेघके समान घोर गर्जे औ युद्धकी इच्छा करके चलतेभये तब शिवजीभी गर्जते बैलपे

सवार होकरचले २ पीछेपीछे खिंचेभये पराक्रमी सातकरोड गण भीचले तबतो नन्दीगणजी तिनसे बोलेकि तहां आप न जानेयोग्य हो ३ गणोंके स्वामी वीरभद्र तथा मेरेहोते आप कैसे जावोगे तथा राक्षसोंके हता प्रमथजीकेहोते ४ सो पहिले सेवकों का प्रतापदेखो फिर युद्धमेंजाना ब्रह्माजी बोलेकि तबतो मयूरेशजी नदीजीकी कही वाणीको सुनके ५ अत्यंत प्रसन्नभये बोलेकि तुमने अच्छाकहापर पराक्रमवाले सिंधुका पराक्रमभी देखनाही है इससे मैं आगे आगे चलताहूं तुम हमारे साथहोचलो ६ तबतो भूतराज औ बली पुष्पदन्त ऐसेऐसे कई करोड़ गण तिनके साथचले ७ सारेवीर लक्ष्मी से सजेशूरवीर प्रकाशमान होरहे औ वे दिशा विदिशोंको उलंघते औ मेघके समान अत्यंत गर्जते औ निजबोझ से शेषजीके फण औ पृथ्वीकोनवातेचले ८।९ औ वे क्रोधाग्नि छोडते गण्डकीपुरीपै पहुंचे तो वे दशकरोड राक्षसोंके झुण्डपर ठहरे तो तहां महाघोर युद्धभया शस्त्र अस्त्रोंसे बाणोंसे औ शक्तियेपरशुओंसे १०।११ तोकइयोंके तो मस्तक कटे और कइयों के हाथपैर नितम्बटूटे और कइयोंके जांघ घुटने टकनेकटे औ कइयोंके शाखा निकलगये १२ औ कई पडपड़ के फिर उठ अपने परायोंसे लड़नेलगे ऐसे अनगिनत राक्षस बिन प्राणहो गिरे १३ औ कई हारके निकलगये औ सिंधुसे सब वृत्तांत जाके सुनातेभये कई सभामें बैठे सिंधुसे युद्धका वृत्तांत सुनाते भये शस्त्रों के प्रहार से रुधिर झरते फूलेटेसुओं के समान भये कई वहां जानेही मरगये और कई वीर्यसेगाले १४।१५कि नगरकेद्वारकेझुंड में जो दशकरोड़ राक्षस थे सो शस्त्र प्रहारों से लड़करके हारगये १६ जो शैलभृत्य का युद्धहो तोजीत होगा हेसिंधुदैत्य तुमचुपचाप बैठेहो अपना हितविचारो वनोंको शत्रुओंने जलाये घर औ बाजार भस्मकिये धूलसेभये अन्धकार से और अग्नि के तेजसे कईजन भगगये कई भोजनकरते और सोतेनगर से बाहरनिकले और कई भोजनस्थानकेबालकोंकोलेलेके भगगये १७।१८।१९ कइयोंकेवस्त्र फटगये और जो स्थान लगायेथे सो अग्निने जले और कुछहो-

था सो२ सबदेखा २० तब तो नन्दी मयूरेशजीको नमस्कार करके घेर२ गर्जताचला आकाशमार्ग होकर सेनामें तिसके वीरोंकेमस्तक काटनेलगा २१ औ सांगोके प्रहारसे सिंधुके घोडेपर दृढचोट करताभया औ फिर आप विनकटा शीघ्र मयूरेशजीके पासआया २२ तो तिसेदेख सबगणोंने आश्चर्य्यमाना औ अच्छा२ कहतेभये फिर सांगोके प्रहारसेही तिसकाछत्र गिरादिया २३ तो श्वेतछत्र गिरपडे सिन्धु और घोडेपरचढा औ औरही महामोलवाला छत्रधारण किया २४ औ तिसअसुरने नन्दीजीके इसकर्मसे अत्यंत आश्चर्य माना औ वो वीरोंको क्रोधसे पुकारनेलगा कि तुम्हारा पराक्रम कहांगया २५ ऐसा तिसका वचन सुनके (मित्र) औ (कौस्तुभ)मंत्री चतुरंगिणी सेना सहित तिसे नमस्कार करके बोलेकि २६ हे सिन्धुजी आप चिन्तामतकरो हमशत्रुका नाश करेंगे नहींतोहेनाथ मुखनहीं दिखावेंगे २७ ऐसेकहके पराईसेनाके नाशकू चले तिनकेसाथ पैदल जो मस्तकोंसे ब्रह्माण्डकोफोडते २८ जो युद्धमत्तवाले त्रिभुवनमें धावा करने चाहतेथे फिर कौस्तुभमित्र मयूरेशजीको गिरानेचले २९ सो वाणवर्षासे ढकके जब वे इनकेपासगये तो वीरभद्र औ षण्मुख तिनसे लडनेको आये ३० जो अनगिनत सेना सहित दशों दिशांको गाजाते तो ये दोनों क्रोधसे अनेक२ प्रहारकरके सिन्धुपैचोट चलातेभये ३१ फिर कौस्तुभ औ मित्र इनसेयुद्ध करतेभये अरु संभाल संभाल मार२ ऐसे आपसमें कहतेभये ३२ औ अनेक अस्त्र शस्त्रोंसे दोनोंने दोनोंसे युद्धकिया सो वाणोंसे गोफियोंसे लट्ठों मुगलोंसे भी ३३ औ सबसेनावाले भी आपसमें जयचाहते प्रहारकरतेभये फिर सब शस्त्रटूटे औ वाणोंकेकटे आपसमें ३४ मल्लयुद्ध करनेलगे जैसे जीवनिकले तैसे अर्थात् कण्ठ मसोस२के मारतेभये तो कई बेप्राण भयेपडे औ कई मुखकीराहसे बहुतसा रुधिर उगलतेभये ३५ औ पैरसेपैर मारते औ कई हाथसेहाथ फटकारते औ कन्धोंसेकन्धे औ कई पीठसेपीठ मारतेभये ३६ औ मस्तकसेमस्तक कोहनीसेकोहनी कोईपड़े औ पडतमरे कटे औ चूर्णभये ३७ छिदेकंठ कटे हाथ भने

ओ कटेदात ऊरु हाथ जिनके ऐसे सेनावालोंके नष्टभये सिन्धुकीसेना जीता ३८ तो जयजयशब्द ओ वन्दीजनोंसे स्तुतिकिये बाजेगाजेसे मित्रकौस्तुभ दैत्यराज सिन्धुकेपासआये ओ वीरभद्र षण्मुख मयूरेशजीके पासआये ३९ ओ सूर्य अस्तहोगया इससेयुद्ध बन्दहुआ कइराक्षस रातको भी देवसेनाकेसाथ लड़तेरहे ४० भगतीभई देव सेनाको बाणोंसे हतनेलगे तो फिर क्रोधकोप्राप्तभये वीरभद्र षडानन गर्जते ओ आकाश दिशाको गांजाते ४१ तिससेनाको हतते ओ मेघके समान जलातेभये तो महाघोर अन्धेराभये कुछभी न जान पड़ा ४२ तब तो वे बली अपने ओ परायेको भी मारनेलगे सिन्धु सेना कटीदेखके देवसेनामें जयजयशब्द होनेलगा ४४ तो वे सिंधु केमंत्री मित्र कौस्तुभ निजमरण निश्चयकरके फिर आये ओ निज घोड़ोंको देवसेनाकी ओर हाकते भये ४५ जो बाणों को छोड़ते ओ कृपाण शस्त्रसेप्रहार करतेभये फिर तो षण्मुखजो तिनका अति पराक्रम देखके घूसोंसे तिन्हेंहतके वेगसे निजसेनामेंआये ४६ ओ मित्रमुखसे बहुतसा रुधिर उगलता भूमिमेंगिरा तो तिसेपड़ादेखके कौस्तुभ लड़नेकोआया ४७ तो फिर षडाननने कृपाणशस्त्रसे तिसे भी हता फिर तिसको मूर्च्छाआई वीरभद्रजी युद्ध करतेभये ४८ फिर तो कौस्तुभ भी अनेकबाणोंके प्रहारसे इनको हतताभया तो इन्हों ने भी तिससेकहा कि सँभाल फिर तिसे घूंसोंसे हत भूमिमें गिराया ४९ ओ तिसके हते महाबली वीरभद्रजी हर्ष ओ मित्र कौस्तुभहते वो दैत्यकी सेना भगी ५० तिसवृत्तान्तको शस्त्रोंसेहते बहुतसारुधिर झराते वीर देवोंकेशत्रु सिन्धुराजको जनातेभये ५१ दुःखसे न निकलतीवाणीकरके कहतेभये ओ सिधुनित्यही मित्रकौस्तुभ मंत्रियों की अत्यंतजयचाहरहाथा ५२ ॥ इतिश्रीगणेशपुराणे उत्तरखण्डेमित्र कौस्तुभवधइसनामसेएकसौचौदहकाअध्यायसमाप्तहुआ ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय॥

सिंधुके युद्धका विस्तारसे वर्णन॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो सिन्धु दैत्यसे आकेकहा कि नाना शस्त्रप्रहार करनेवाले मित्रकौस्तुभ मरगये तिन्होंने रातदिन तिन की अनंत सेनाहती १ फिर शत्रुसेना मेंसे दोवीर आकेखडेहुये तिन बलवालोने हमारी सेनासारी मसलमारी २ जिन्होंके प्रहारोंसे वे यमलोक पहुचेहैं हमने अनेक विधिकी सेनादेखी परतैसे शूरवीर कहींनहीं देखपरे ३ सिंधुबोला कि जिनको देखे प्राणहृता यमराज भी डरता था तो वे हाथके प्रहारसेहो हे सेनावालो कहोकैसे मर गये ४ औ अब तुमसारे मेरे भी पराक्रमकोदेखो संग्रामभूमिमें नि स्संदेहहो शत्रुके शिरको नचादेता हू ५ मैं (चक्रपाणि) का पुत्रहू इससे चक्रसेहो लडोगा ऐसेकह घोड़ पै चढ़के मयूरेशजी पै वो दुष्ट चला ६ जिसके आगे अनगिनत बलवाले दैत्योंकी पंक्तियेंचलीं जो सुरराज शिवजी के पुत्र मयूरेशजीसे लडने चाहती ७ तबतो (पुष्प दतनंदीगण) ये तिससे लडनेको आये औ भूतराज विकट) येभी दशलक्ष योधासंगले के आये ८ औ चपलभी अर्द्धलक्ष बलढेके ल डनेको सन्मुखभया औ (षण्मुखवीरभद्र) ये अनगिनत सेनासहित९ औ बलवाले नानाशस्त्रधरे आये तो इनसात व्यूहोंको देखके दैत्य सेनावालों नेभीव्यूह रचतेभये १० सो (गयासुर) औ (मदनकांत) औ (ध्वज) (महाकाय) औ (शार्दूल) औ (धूर्त) सातवा११ ऐसे ये भी सात व्यूहों को आगे करके तिन आयों से लड़नेलगे सो कि बाणवर्षासे ढकके भालोंसे हततेभये १२ कई गोफियोंके प्रहारसे हते भूमिपगिरे औ षडाननजीसे बली गयासुर युद्ध करता भया १३ औ वीरभद्रसेबली मदनकान्त लडनेलगा औ नंदीजी वीर राज ये आपसमें जुड़े १४ औ ध्वजासुर पुष्पदन्त ये शस्त्र बाणोंसे भूतराज महाकाय ये आपसमें भिड़े १५ औ विकट धूर्त इन्होंने आपसमें घोरद्वंद्व युद्धकिया तो चपल गणकरके क्रोधसेहता शार्दूल

भूमि में गिरा १६ फिर वोभी सन्नापायके खङ्गप्रहार कर्ताभया फिर तो द्वंद्वयुद्धहो दोनोंसेनाओंमें होनेलगा १७ वाणो औ शस्त्रोंसे एकके एकप्रहार कर्ताभया १८ औ बोला कि लेसँभाल यामार डरे मत मरास्वर्गमें जायगा फिरसबवाण शस्त्रोंकेछूटे सेनावाले लात औ घूंसोंसे लडतेभये १६ आपसमें एकके एक २ प्रहार करतेभये सो कोई तो वैरीको पैर पकडके फटकारता भया २० औ किसीने शत्रु पे झपटके तिसका चूर्णही करदिया औ किसीने शत्रुका शिर काटा किसीनेकिसीकायुद्धमेंहाथहीउड़ादिया२१किसीनेपैरकाटे औ गोडे घुटने काटगिराये औ कइयो ने आपसमें वाणवर्षा छोडी २२ औ कोई शस्त्रहता रुधिर झराता मरणतक युद्धकरता भया औ तहां गलफटेभी लडतेभये वे अपने औ परायोंकोभी मारनेलगे २३ औ कईनर फटे हृदयभये गिरे औ कोई आपस के प्रहारो से हते मरते भये २४ फिरवे एक अप्सराकी प्राप्ति के लिये स्वर्ग में लडने लगे अर्थात् एक अप्सरा दोविभोगी इससे वे लडे तो तहां तिनके रुधिर की नदीवही जो बालरूप शिवारवाली २५ खड्ग मच्छ जिसमें ढा-लहीहैं भारी कच्छप जिसमें ऐसे भारी मुर्देरूप काष्ठवहते जिस में भयानक चमरही हैं तिनके जिसमें २६ वखतर हैं ग्राह जिसमें क-ड़े हीगें डर जिसमें शूरवीरों को हर्षदेनेवाली अरु कायर को महा भयदायी २७ मेदजलवाली अत्यंत दुःखसे जोतिरी जावे मांसरूप कीचवाली फिरतो लड़ते लडते सूर्य्य अस्तभये कुछभी न जानपड़ा २८ तोतहां हेसुरो हमदेव सेना के हैं हमें मतमारो अरु हेअसुरो हम राक्षसोंकी सेनाके हैं हमें मत हतो २६ ऐसेऐसे पुकारते आप-समें युद्धकरते भये अरु तहां व्याघ्रादिक अरु भूत राक्षस आशीष देतेभये अर्थात् मांस खाखा के सन्तुष्टभये ३० अरु गीदड़ पक्षियें धिकरे शिवजीको सराहतेभये ऐसेहो ऐसे तीन दिन रात महाघोर संग्राम भया ३१ जहां आपस में वाजों के शब्द से जीत बोल रहे ऐसेही गन्धासुर ने षण्मुखजी के साथ बहुतभारी युद्धकिया ३२ तो वे मदपीनेसे मत्तभया शस्त्रत्यागके वेगही षडाननजी को घूंसेसे

हतनाभया ३३ तोवे वज्रसेहते पहाड की नाईं भूमिमें गिरे फिर वे भी चेतपाकर पखवाले पर्वत के जैसे तिसपे झपटे ३४ फिर बारहों हाथों से तिस महाअसुर को बाण चलाचला के वेधतेभये छओहाथोंमें धनुष लेलेकर ३५ तिसके बाण काट गिराकर तिसे बाणों से टँकनेभये फिर गणासुरने महावेग से तिनके बाण काटके खडानन जीको बाणोंसे ढकदिये ३६ फिर तिनकोभी काट के षडाननजीने अचानकही तिसके पैरपकड भ्रमा के भूमि में मारा ३७ तो तिस भारीचोट से बिन प्राणभये तिसका शरीर सो प्रकार से फटा तो तिसके मरे तिसकी सेना व्याकुलहो दशोदिशों को भगगई ३८ तो खडाननजी पीछे२ लगे तिससेना को धिक्कारतेभये तवतो [मेन] (क्रोधन) (शतघ्न) येइनसे लडने को आये ३९ मेघके समान गर्जते जिनका महाशब्द होताभया ऐसे वे इनसे बोलेकि हेदुष्ट तैनेहमारी भारीसेना हतीहै ४० अब तूभी हताभया यमलोक को चल तब तो वे एक वेरही खडाननजीको घेरतेभये ४१ जैसे बहुतसे शूरसिंह को रोकाचाहैं तो खडाननजीभी छ धनुषों से छूटे शरोंकरके तिन्हें हततेभये ४२ तवतो वे मूर्छा खाखाके गिरतेभये दोघड़ीमें उठ के तीनों वे स्कंदजीके गलमें फांसा गलके पशुकीनाईं खींचलेचले ४३ तो तिनको लायेदेखकेवेगस्तीन (हिरण्यगर्भ) (श्यामल) (रक्तलोचन) येआये ४४ तो इनतीनों के घूंसोंसे हते वेतीनो भूमितल में गिरे फिरतो मदनकांतभी महाबली वीरभद्र को ४५ शस्त्रप्रहार से हनता भया तिससे वे भारीमूर्च्छाखागिरे फिर मूर्च्छा तजके वीरभद्रजीदंड प्रहार छोडनेलगे ४६ फिरतो मरे मदनकांत को जानके महाबली वीरराज तिन बलवाले तीनगणों को हतनेकेलिये चला ४७ तो नंदीजीने सींगोंसे तिसको हता तोवो मुखसे रुधिर झरता मौटुक होके भूमिमें गिरा ४८ फिर तिसे मरा देखके चार बलीबली राक्षस [शार्दूल] (ध्वजामुख) ४९ (महाकाय अमृत) ये जोरगामें सबवेषवों को जीते सो वे अनेकअस्त्रोंसे बलवाले नंदीजीकोहततेभये ५० तो नंदीजी के पट्टे चार युद्धमद वाले (पुष्पदंत)(भूतराज)(विकल) भरु

(चपल)भी ५१ तो वे पर्व्वतोंको लेलेके सहार संहार कर तिन पर फेंकतेभये तो बहुतो के मस्तक फूटगये अरु कई चूर्णहोगये ५२ अरु बहुत से पृथ्वी के हिलनेसे पृथ्वी परही गिरपड़े अरु कईशस्त्र प्रहारोंसे कटेभये सिंधुके पासगये ५३ अरुनिजसेना की हार देव सेनाकी जीतना कहतेभये तो जीतीभई देवसेनामें बहुतसे बाजे बजे ५४ अरु हे मयूरेशजी २ आपसदाजीतो ऐसे २ हर्ष युक्तभये कहते अरु आनदसे नृत्यकरतेभये ५५ ॥ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डमेंयुद्धकावर्णनइसनामसेएकसोचौदहका अध्यायभया ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय॥

सिंधुकेबाणनकाहीसिंधेयपैहर्णहै ॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो निजसेनाकी हारसुनके सिन्धुने अति चिन्ताकरी अत्यंत मलीन मुखभया शोकसागरमें डूबा १ अरु दुःखित मनसे दैत्यराज विचारनेलगा कि ये उलटापन कैसेभया सो नहीं जानाजाता २ यथालोक पूरित ब्रह्माण्डको एकचींटी खाजावे जिसमुझआगे इन्द्रादिक देवता तुच्छमच्छरसे होगये ३ फिरमेरी सेना शिवकेबालकसे कैसे जीती गई ऐसे कह घोड़ेपे चढ़ वो धनुष बाण खड्गहाथमें लेकर ४ बोला कि तिस मयूरेशको बिनहते मैं मुख न देखाऊगा ऐसेकह वो सिन्धुपतंगके जैसे शीघ्र रणक्षेत्रमें समुखगया५ अरु आकाश दिशोंको गॅजाता निज धनुषको चढाता भया अरु तिसने तीखे २ अग्निमुखबाण वर्षाये ६ तबतो सारीपृथ्वी कपी अरुगनप्राणी मूर्च्छितभये अरु तिसने देवसेनामें अनगिनवही बाणवर्षाये ७ तो तिसके शस्त्र प्रहारोंसे छिन्नभिन्न हो २ के देवता गिरनेलगे अरु जो भगने थे वेभीपीछेसे बाणोंकरके छिदेपड़तेभये ८ तबतो मयूरेशजीकी सारीसेना व्याकुल होगई बहुतोंके पैर जां-घांकटे अरु कइयोंके मस्तकभी ९ सिन्धुके हाथसे रणमें छोड़ीबाण वर्षा से तो तबनहटे ऐसाभारी महाघोरयुद्धभया १० सिन्धु अरु गणेशजीका अरु दोनोंसेनोंका भी महायुद्धभया महारोलामचे अरु

रजसे अंधकार भये ११ अरु वसारे अपने पराये अरु चाकर दूत इनसबोंकोभी मारनेलगे तो देवसेनासे सिंधुकीसेनाहतीजानेलगी १२ तबतो सिन्धुवेगसे घोडेपरसे उतरकर अरु वेग से वीरभद्र का पैर पकडके पटकताभया १३ अरु नदीजीके मस्तक में भारी चोटमारी अरु भूतराजकी कमरमें शीघ्रतरवारमारी १४ अरु पुष्प-दन्त का अति बलसे पेटफोडा अरु हिरण्यगर्भकी शिखापकडके बल से घसीटा १५ अरु श्यामलका बाणों से मस्तकफोडा अरु चपल की ठोढ़ी तोड़ी विकट को रण में क्रोधसे हता १६ अरु लंबकर्ण के कंठको बाणोसे वेधा अरु रक्तनेत्रको भी पैर पकड़के भूमिमें गि-राया १७ अरु सुमुख शीघ्र हाथसे निकलके भगगया अरु सोमके लातलगाकर भूमिमें गिराया १८ अरु भृङ्गीका खडगसे उदरचीरा अरु दावानलके भी शिरको बाणोंमेवेधा १९ अरु पंचाननके पीठ में तिस चपलने रणमें प्रहारकिया ऐसेसारे शूरवीर रणमें हतेगये अरु शेषथे सो हारकेभगे तो सिंधु तिनकेपीछे२ चला अरु त्रिभु-वनको गाजातामेघके समानगर्जा२०।२१ अरु वो अनेक२प्रकार बाणोंसे मयूरेशजीको वेधनेलगा अरु तिसके विकराल भयंकर मुख को देखके विरूपाक्ष आदि सारेगण भगगये तो मुनिजन सहित गणेशजी संग्राममें तिससे लडनेलगे २२।२३ तो वो इनके दर्शन सेहीकंपा जैसे शशा सिंहको देखकेडरे फिर वो वो क्रोधसे गणेश जीको ये कहताभया सिंधुबोला कि हे शिवके बालक हमने दूरसे तेरा बहुत पुरुषार्थ सुनतेरहे पर रे प्रत्यक्षमें तो तू हमको गीदड़सा देखपडताहै२४हेमहामूढ़ तूमेरेपर्वतफोडनेवाले चपेटत्रोंकैसेसहैगा तुझको तो माताकोस्तनपीके तिसीकेआंगनमेंखेलनाचाहिये२५।२६ जिसमैंने इन्द्रादिक जीते तो तहांतेरी क्यागिनतीहै हेमूढ़ तेरेमारने को तय्यारभये मुझको कृपाहीहटाती है अर्थात् तुझकोमारते दया आवैहै २७ कि मैं तेरेकोमल२ अंगोंको तीखे२बाणोंसे कैसे वेधोंगा मयूरेशजीबोले हे अधम मुखमरे किसलिये मूर्खपनसे उछलरहाहै २८ जो मैं निज देहको अल्पही मानना तो कैसे अवतार धारता

अर्थात् मेराशरीर वहुतभारीहै तेरेइस तुच्छशरीरको अभी क्षणमें हतताहूं २९ हे दुष्ट तू सूर्यजीके वरदानसे गर्वोया खोटे कर्मकर रहाहै अव वो समयवीता अरु मृत्युसमय आपहुंचाहै ३० तू कूदने में कुशल अर्थात् हिजडाहीहै तो तू युद्धक्या करेगा मैंने तुझे मारने अरु देवतोंके छुडानेकेलिये अवतार धाराहै ३१ अंतसमय आपहुचे उद्योगकरना वृथाहै मेरेसे हता तू अव उत्तम स्थानको पहुंचेगा ३२ सिन्धुवोलाकि हेमूढ जवतक मैं तेरेकोमल देहकाछेदन न करूं तित-नेही कूदरहा है जो जिसका सेवकहोगा सोहीमरके तिसके लोक को जावेगा ३३ वृथाही तू अपनी प्रशंसा मतकरे ब्रह्माजीवोले ऐसे कहके महादैत्य अत्यंत भेदनकारी वाण ३४ जो कभी भी प्रकट न कियाथा अरु जो अत्यंततीखा भयदाथी तिसेलेके अरु सूर्यजीका स्मरण करके धनुष उठा चिल्ले चढ़ाय तिसमें तिस वाणको धरा ३५ तो तिसधनुषके टंकारसे त्रिभुवन शब्दितभया तो तिसवाणको वो दुष्टवल से देवमयूरेशजीपे छोडताभया ३६ तो तिसने सारी दिशा अरु विदिशा जलाई तो तिसेदेखके मयूरेशजीने निजफरसको छोड़ा ३७ जो वज्र से कठोर सववैरियों के अहंकार का हर्ता तो प्रलय अग्निके समानकेभी तीनोंलोकोंको जलाताभया ३८ तो तिस वाणको इसपरशुने आकाशमेंही छेदा अरु तिसेधरती में गिराकर दैत्यकेहाथ छेदताभया ३९ जो हाथमें धनुष महाभारीथा सो हाथ से आकाशहीमें उड़गया तवतो दैत्यने क्रोधसे इनपर चक्रछोड़ा ४० तो योभी दिशोंको गुंजाता विजली साशब्द करताभया तो तिसेदेख मयूरेशजीने निजतीक्ष्ण त्रिशूलछोडा ४१ तो तिसने भी त्रिभुवनको जलाया अरु दैत्यके मस्तकपै गिरा तो तिसके मुकुट कुंडल अरु कान काटके फिर आगया ४२ जैसे छोडाहीनहीं था फिरतो वो कनकटा सिन्धुक्रोधसे इनकोवोला ४३ कि तैंने रूपापने दिखाया अवमैंभी तुझे देखाऊंगा मैंभी शरकेप्रहारसे अपनेनाक काटे डालताहूं ४४ ऐसे कह खड्गहाथलिये वो गणेशजी चला तवतो मयूरेशजीने सव ओरसे अनेक रूपधरे ४५ जो आकाशमें

चार २ शस्त्रलिये तबतो वो विस्मितहो दशोंदिशोंमें देखताभया ४६ अरु तहां २ सारे तिसी चारशस्त्रोंसे सन्नेरूपको देखताभया तब तो वो लज्जितहो घरजानेचाहा ४७ तब भी तिसने आगे२ तिन मयूरेशजीको ही देखे फिर वो नेत्रमींचके चला तो तिन्हींको हृदयमें देखे४८फिर नेत्रखोले तो तिन्हींको मयूरपे सवारदेखे तब तो दैत्य ने सूर्य्यजीके प्रसादसे तिनको मनमेंही पहिचाने ४६ फिर तो मुख ढकके संग्रामभूमिसे पुरीको चलाआया शेषरहे वीरोंसे सहित ५० चिन्ता से व्याकुल मनभया निज सेजपे जापड़ा अरु वे शूरवीर भी व्याकुलमनभये निज२घर आवतेभये ५१॥इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डमें सिन्धुको कुरूपकरना इसनामसे एकसौ पन्द्रहका अध्याय हुआ ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय॥

श्रीमहेशजी करके रण सम्भाषणा वर्णित है॥

श्रीब्रह्माजीबोले तब तो श्रीगणेशजीकी जीतभये तहां मुनिजन आये अरु गिरिजा सहित शिवजी भी तिनको देखनेकेलियेगाये १ तब तो गिरिजाजी चावसे इन्हें आलिंगन करके बोलीं कि हे पुत्र तू अति कठोर दैत्यकेरणमें थकाहोगा २ तेरे कोमलअंगोंने शस्त्र कैसे सहेहोंगे जो दैत्य यमके समान मायावी अरु अतिबलवाला ३ सो कोमल देहवालेतुझसे कैसे जीतागया ऐसेकह गौरी जो गणेशजीको गोदमेंलेके करुणासे रोनेलगी ४ तब तो सारेमुनि अरु शिवजी शि-वाजीको बर्जतेभये शिवजीबोले कि तू इनमयूरेशजीकोनहींजानती जो सबकारणोंके भी कारण ५ अरु आदिअन्त रहित वेदान्त गोचर व्यापकहैं अरु तेंतीसकिरोड़देवोंसे नमस्कारकिये दैत्यनाशकहैं ६ रचना पालनादिकर्ता ज्ञानकेहेतु प्रलयके कारण आरोग्यरूप अरु जो भूमिभार उतारनेकेलिये नानारूपधारीहैं ७ ब्रह्माण्डोंसेभरे रोम जिनके अर्थात् एकएक रोममें अनेक ब्रह्माण्ड जिनके ऐसे एक अरु अनेकरूपी अरु तप बल सहित योग शास्त्र सम्पन्न मायाविपर्केना-

शक देव जो मायावियोंकेभो मायावी अर्थात अगम्य मायावान् जो
बालपन से दैत्यों को मारते ऐसे इनको क्यातु नहींजानतीहै ८।९
ब्रह्माजी बोले ऐसी गणेशजीकी स्तुतिसुनके प्रसन्नभई गिरिजाजी
निश्चिन्त हुई फिर तो प्रसन्नभये मयूरेशजी मुनि महेश्वर गौरी
जी से बोले १० कि मुझको वज्र हस्तवाले से भी भयनहींहै औरसे
तो कैसे हो है मात सबों के आगे नम्रहोने से अरु इनमुनियों की
आशीशमे ११ शिवजीके वरदानसे मैने सिन्धुदैत्यको जीता जिसने
स्कन्दआदि गणोंको भीजीते तिसकेसाथ कोई नहीं लडता था १२
औ अनगनित देवता दैत्यकी सेनावालोंने हते तो रुधिरकी नदियें
वहीं जो वीरोंको हर्षानेवाली १३ फिर मुनिजन रणमेंपडे देवतोंको
ढूंढनेकीइच्छा करतेभये तो मयूरेशजीका वचनसुन वशिष्ठमुनिबोले
कि १४ चलतेहैं सबचलो तब तो तिनमुनियोंकेसाथ मयूरेशजी रण
सम्भालनेकोगये १५ जहा रुधिरमेंगी चर्बीका दुर्गन्ध सूंघानहीं
जाता अरुतहाअत्यन्त भयानक शरीरवाले अरु छिन्नभिन्नभये अनेक
वीरोंकोदेखके १६ जो भयानकभये रुधिरभरे जैसे टेसूफूलेहों ऐसे
तिनको देखतेही सबोंकेमन दुःखितभये १७ जो वीरोंपरपडे शूरवी-
रोंके ढेरोंकोदेखते जिनमेंकई तो जीते अरु कई शस्त्रोंकीचोटोंसे मू-
र्च्छित १८ अरु कई अगभंगभये देवता तिन्होंनेदेखे पर सहजही
देवतोंने देव वा राक्षसोंको नहींजाने किन्तु देरमें सम्भालभई १९
तिनमें कईबोले कि हम तुम्हारेलियेही मरेहैं अरु अब अन्त में भी
तुम्हारा दर्शनभया ऐसेकहरके प्राणछोडतेभये २० ब्रह्माजी बोले
ऐसा तिनकावचनसुनके आंसुकण्ठभरे मयूरेशजी भ्रमतेभ्रमते आगे
जाय षडाननजीको देखतेभये २१ तो स्नेहसे आंसू छोडते मयूरेश
जी तिससेबोले कि उठ२ तेराभलाहो बालकके जैसेक्यासोताहै२२
दैत्य हतनेसे तूथकाहै आवमिल ऐसेकह तिसपे हाथफेरा तो वो खडा
भया २३ तो तिसने निकटही गणेशजीके चरणारविन्ददेखे तो तिन
से बोला कि आपके दर्शनसे मेरा २४ सबदुःख अरु थकापन गया
अब मैं भलीभांति विश्रामको प्राप्तभयाहूं ऐसेकहके बारह भुजा से

तिनसे मिलताभया २५ फिर दोनों आपसमें मिलके रणदेखनेकोगये तो अगाडीही बाणोंसेविधेपड़े वीरभद्रको देखा२६ अरु शरोंसेपीडित पड़े नन्दीको भी देखा अरु मस्तकफूटे भृतराजको देखा २७ अरु विकटको पुकारता अरु अत्यत पीडित पुष्पदंत को देखा अरु ललाट विधे हिरण्यगर्भ को देखा २८ चपलको मरनेसे अरु श्यामलको मरादेखा अरुलम्बकर्णभ्रांतिसे किसीसेभीन जानागया २६ अरु कंठमें प्राणसहित सुमुखकोदेखा सोम अरु रक्तनेत्र परम खेदकोप्राप्त देखे ३० अरु भृङ्गी मूर्च्छासे सोताभया अरु पञ्चास्य मरणेच्छासेपड़ा अरु शंख प्रेतभया सबको भयदिखाता ३१ ऐसे२ वे मरे अरु मरते मरनेवालोंको देखके परमचिंतामेंभरे षडाननसेपूछतेभये ३२ मयूरेशजीबोले कि राक्षस देवता अरु अपनेपरायेभारी भारी शूरवीर युद्धमें हते हमारेलोकमें गये पर जीवतोंकी कौनगति होगी अर्थात् जो जिये न मरे किंतु परेसिसकते हैं ३३ तो स्कन्द बोला कि हे गणेश असंख्य करोड ब्रह्माण्डों के नायक अरु चौदह विद्यानिधान आपहीहो हम तो आपकी कलाहैं हमसे क्या पूछतेहो मैं कोईमंत्र नहींजानता न कोई देवताजानते आपहीजानतेहो ३४। ३५ आप अनेकदैत्य नाशकरनेसे कीर्त्तिबढ़ातेहो पर आपकीआज्ञा से अरु कुछ बुद्धिबलसे मैं कहताहूं ३६ कि पहिले त्रिपुरासुरकेवध में शिवजीने बड़ायुद्ध कियाथा तो तहां मरेदेवताको द्रोणपर्वत पर की बेलकारस ३७ देवोंके घावोंमें लगाके तिसी क्षणमें जिवायेथे ब्रह्माजीबोले ऐसा तिसका वचनसुन गणेशजीबोले ३८ हे षडानन अभीदैत्यसेनाकरोडों यहांलड़नेको आवेंगी सो तिनसेयुद्ध कौनकरेगा ३६ अरुअबकौन पर्वतपरजावे अरु तिस उत्तमबेलकारसलेआवे एसेकह गणेशजीने निजमाया उत्पन्नकरी ४० तो निजशरीरवायुकेसंयोग अर्थात् फूंकदेदेकर जिवालिये तब तो वे हर्षयुक्तहुये गणेशजीको प्रणाम करतेभये ४१ तिनसेमिले सो फिर युद्धकरना जनातेभये बोले कि आपकी दृष्टिपड़नेसे हमारा दूनातेज होगया ४२ गणेशजीबोले कि तुम्हारे पराक्रमको ब्रह्मादिक देवता सराहतेहैं नि-

न्होने तारकासुर आदि मुख्य२ दैत्यहते ४३ ब्रह्माजीबोले कि फिर तिनसबोंको साथलेके गणेशजी शिवजीके पासआये अरु शिव गौरी जीको नमस्कारकरके युद्धको तय्यारभये ४४ तौ शिवजी औ गौरी जीने तिनको आलिंगनकिया फिर षडाननआदि गण शिवजीसे मिले ४५ अरु बोले कि हे शिवजी हमरणमेंपड़े थे फिर मयूरेशजीने निज शरीरके पवनसे हमें जिवायेहैं ४६ अब फिरहम इनकेसाथ युद्धकरने जायँगे अरु आपके प्रसाद से सब असुरों को युद्धमें जीतेंगे ४७॥ इतिश्री गणेशपुराणे उत्तरखण्डे में रणशोधना इसनामसे एकसौ सोरहको अध्यायहुआ११६॥

एकसौसत्रह का अध्याय॥

। सिन्धु दैत्यकोस्त्रीकरके सिन्धु को समझाना वर्णनहै ।

श्रीब्रह्माजीबोले कि तब तौ सेजपैपडे सिन्धुने महाभारी चिन्ता करी अत्यंत दुःखितमनहो कुछ भी न विचारसका १ अरु हर्षरहित कुम्हिलाये मुख मिस्तेज अरु चेष्टारहितभया वो सिंधु शोकसागर मेंडूबा तबतौ(उग्र)कीबेटी(दुर्गा)जोचतुरतायुक्तश्रेष्ठ २ तिसकोचिंता रूपबाणोंसे बिंधासुनके मंचपैपड़े इसकेपासआई अनगनित आभूषणोंसे जिसके मस्तकपै लटी सजरही ३ अरु ललाटमें जिसके कस्तूरीका तिलक झलकरहा जो कण्ठमेंहार कटिमें रत्नजड़ीतगड़ी पहिरे ४ ऐसे२ सारे अलंकारोंसेसजी अरु सब अंगोसे सुंदर ऐसी तिसको सेजकेपास आईदेखके ५ तिसकेसेवक बाहर हटआये अरु वो पतिसे ये वचन कहतीभई दुर्गाबोली कि हे स्वामिन् चिंता क्यों करतेहो जो होनाहै सो होगा ६ जगत् स्वतंत्रनहींहै किन्तु ईश्वर के आधीनहै तुम सबके अरु मेरेभीमनको क्यों विचलातेहो ७ वो कौन हेतुहै सो कहो जिसमें मैं युक्तिबताऊं ब्रह्माजीबोले प्रियाका वचन सुनके गण्डकीपुरीकाराजासिन्धु सावधान मनहोके तिसे वृत्तान्त कहताभया बोला कि हेमराहनयोग्य प्यारी मैं क्याकहूं मनको अति खेदकारी वचनहै ८ सो कि युद्धकरते मेरे कान मयूरेशने काटलिये अरु मैंने तिसकी सातकिरोड़सेना निज पुरुषार्थसेहती १०

स्कन्दआदि महावीर भी मेरी बाणवर्षासेगिरगये पर तिसनेत्रिशूल फेंकके अचानक मेरेकानकाटे ११ मैं वस्त्रसे मुखढकके घरकोआयाहूं अब जिसउपायसे मेरेशत्रुकानाशहो सोही कहु १२ दुर्गाबोली कि जोतुमने सारेसेनावालेमारे सोअच्छा वीरधर्मकिया परहेस्वामिन् गऊब्राह्मण देवताओंके शत्रु कभी यश नहींपाते हैं १३ तिनके द्वेषमे किसीका भी भला नहींहोता इन्हींके सेवन वंदन ध्यानस्मरण अरु पूजनसेही १४ इन्द्रादिदेवताने निश्चलस्थानपायेहैं जोसबप्राणियोंमेंसमानहै सो सब भलाबुरा फलदेसक्ताहै तिसकी सेवासेवांछित सिद्धि कामधेनुकेसमानहै तोहै अरु जैसाबीजबोवोतैसाही अंकुर उगताहै १५।१६ सोही अशुभकर्मसे तो दुःख अरु शुभकर्मसेसुख होताहै इससे सबजन सदा आदरसे शुभकर्महीकरतेहैं १७ अरु मन कर्मवाणी इनमें सदा सब प्राणियोंका हितही करतेहैं तुम्हारे पुरुषार्थसे ये देवऋषिही पीड़ितभयेहैं १८ पुरुषार्थ सोही जानना जो धर्मार्थ काम मोक्षोंका साधकहो जो कि मन द्रव्यादिकोंमें अरु परस्त्रियोंमें लुभायमान न होवे १९ पुरुषार्थ वोही होताहै जो निन्दनीयकोभी निंदा न करैं अरु शरणआनेकी रक्षामें दृढ्धर्ममें परायणरहै २० अरु सर्वत्र समानरहै सोही पुरुषार्थ कहाताहै हे स्वामिन् तुम मेरे परम हितकारक वचनको सुनो २१ कि जो अदोष भाषी सत्यस्वभाव अरु निजगुणोंको न कहै पराये उपकारमें आसक्तरहै पर निन्दासेरहित २२ सो है बड़भागी जो तुममेरी प्रीति चाहतेहो तो ऐसाकरो सो कि इन्द्रसहित सब देवतों को बंधीमेंछोड़ो २३ तिन्हें लेके सर्वलोक पालक मयूरेशजी चलेजायँगे फिर हे स्वामिन् सब सुखसे रहैंगे और किसीप्रकारसे सुख न होगा २४ यसाजानोंगे कि ऐसा तिसका अमृत समान भी वचन तिन मरनेच्छावाले सिंधु के विषही होगया जैसे पूतना आदि बालग्रहोंसेभगे रोगवाले को दई औषध उलटी विकार करतीहै २५ तबतो लालनेत्रकिये सिन्धु तिसदुर्गासे बोला सो कि वो तिसके कल्याणकारकभी उपदेशको हृदय में नहीं धरता भया २६ सिन्धु बोला कि हे भद्रे तेने अच्छा

लोक निन्दनीय वचन कहा। कार्य अकार्यके ज्ञाता मैंने तेरी चतु-
रता जानलई २७ जोशत्रुमानवाला है सो रिपुकी सेवानहीं करता
अरुवो कुकर्म करेनहीं अरु जो छेडलिया तौ तिसेत्यागै नहीं २८
तिस्से सुखदुःख अरु यश व अपयश होवे। लाभ या हानि जीवन
चाहे मृत्युभीहो २९ हे भद्रे पहिले मैंने तिरके समझानेसें मिलाप
नहीं किया। अवजो होने वालाहै सोही होगा ३० जोप्राणीकेपूर्व
जन्ममें भला बुरा लिखागया। तिसे मिटानेको हेपतिव्रते कोई नहीं
समर्थहै ३१ जोमैं रणमें हारभी गया तौ स्वर्ग अरु त्रिभुवनमें मेरी
विख्याति होगी। अरु जो शत्रुको शरणजाऊं तौ अपकीर्ति अरु
अपयशभी होगा ३२ सोये पूर्वकर्मों से होताहै इस्में संशयनहीं।
अरुमैं तिनदेवोंकेईश मयूरेशजीको जानताहूं ३३ जोजगत्के गुरु
मेरे मारनेको अवतार भयेहैं जैसे रावण के मारनेको रामचंद्रजी
भयेथे परमैंइस्का शिरकाट गिराऊंगा यहमेरो निश्चयमतिहै ३४
शूरवीरजीव त्यागदेते अरु अभिमाननहीं छोडतेहैं। हेसुभ्रु मेरेयम-
राजकोभी कुछगिनती नहींहै ३५ तौ इनको तो क्याही समझू पर
मेरेकान कटनेसे हसीहोगई ब्रह्माबोले। कि ऐसे कहके तिसने
वस्त्रआभूषणधारणकिये ३६ सोबाजूमुकुटकानकुंडलतरकसतलवार
ढाल अरुचिल्लेचढा धनुष अरुछुरी ३७ अरु मदीलपगड़ीसे कान
ढकके आय निज उत्तम राज्य आसनपैबैठा ३८ इतिश्रीगणेशपुराण
उत्तरखण्डमें दुर्गावचन इसनामसे एकसौ सत्रहवांअध्याय समाप्त
भया ११७ ॥

एकसौअठारह का अध्याय॥

सिंधुदैत्यकाफिरयुद्धमेंनिर्गमनराणिविसर्ग ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि फिरतौ युद्धावेशी दुस्सह अरु महा आ-
सनपै विराजमान सिंधुपास बैठे वीर सुखियोंको कहता भया १
सिंधुबोला कि जोतिलोकोंको वशमें करने वाले प्रधानमंत्रीये सो
मरगये अरु अब ऐसायहां कोई वीरनहीं है जो वडेसे शत्रुकोजीते २

न कोई भी ऐसे बुद्धिवान् चलो जीतने वालेहैं तवतौ शूरवीर सिंधुसे बोले कि आपसर्वथा चिंता न करिये ३ जबतक हम जीतेहैं तबतक ऐसे तुच्छकाममें किसलिये चिंताकरतेहो हे महाभाग पुष्प विछाई सेजपै शयन कीजिये ४ हमने यमको भी ताड़ा तौ फिर हमें किस्से भयहो ५ ऐसे सिंधुको समझाके बलवाले (कल) (विकल) येदो तिस्के साले सोयुद्ध मदवाले चलेद्द जो नाना युद्धोंमें कुशल अरु नानाशस्त्र धारी दोनों नानाभूपण वस्त्र धारणकियेअरु नाना सेना सहित ७ ऐसे वे नानागर्जनेसे आकाशको शब्दितकरते अर्थात् गाजाते जो देवसेनाको हताच हते अनगिनत सेनासहित ८ तिनके आगे २ शूरवीर चले जो सिंदूरसे लाल २ मस्तकों वाले अग्निशस्त्रधारी वंधेवालोंवाले चदनलपेटे ९ सब शोभित शस्त्रधारी जैसे यमको खालेवें फिर हाथियोंकी घटाभी आई जो नानाघातोंसे विचित्र भई १० भारी पीलवान जिनपे सवार अनेक आभूषणों से सजी तीखेदातोंवाली सिंदूरलगा जिनके घंटाशब्द सहित ११ फिर तौ घोड़े सवार चले जोअनेक वखतरोंसे सजे सब धनुषवाण लिये प्रकाशित छत्रोंसे सजे १२ फिर अनेक युद्ध तयारी सहित रथ आये जिनमें अनेक शूरवीर सवार अनेक प्रकार के सारथियों सहित१३ऐसे वे सिंधुकेसालेचले क्रोधयुक्तभये रणमेंमदोनों मयूर पेसवार गणेशजी को देखते भये १४ जो षडानन आदि भारी २ वीरों सहित तौ तिन्होंने तिनकी घोरसेना चारोंअगों सहितअर्थात् हाथी घोड़े रथ पैदलों वाली देखी १५ सोकि सिंधुकी अनगिनत विचित्र सेना आई तौ देवतोंका भेजा नीतिशास्त्रमें कुशल १६ दूत तिनका सब वृत्तांत जानके आय देवतों को कहता भया दूत बोला कि (कल)अरु (विकल) येदोनों अनेकसी सेना सहित १७ देवनों को जीतने के लिये आयेहैं जो अनेक युद्धोंमें कुशल। तौ तिनमें लड़नेको पुष्पदंत नंदी गण येदोनोंचले १८ सो धनुष चिल्ला खैंचके साठवाण वर्षानेभये तौवेदैत्य निजवाण वर्षाके तिनके नाराचों रोकते भये १९ अरुवाणवर्षासेआच्छादन करके देवसेना

वालोंको मारते भये तो नंदीजीने तिसकलके खड्गको निजखड्ग कोकाटा२० अरु तिसी खड्गको लेके तिसकी सेनाको काटने लगे अरु पुष्पदतने विकलके धनुषको निजवाणोंसे काटा २१ फिरतौ वे दोनो सेनावाले आपसमें मल्ल युद्धसे लड़ने लगे तो नाना शस्त्र अस्त्र वाणोंसे युद्धहोने लगा २२ अनेक प्रकार की माया निज २ जीतने के लिये होने लगीं फिरतो शस्त्रोंसे अत्यत पीडित होके दैत्यसेना भागती भई २३ तबतौ कईक देवता पीछे २ लगे राक्षसो को मारतेथे तो पैरके घातसेहते दैत्य सेना वाले २४ भगते जातेथे तौ तहां रुधिरकी भयानकनदी वही जो महाघोर अरु भूत पक्षियोंको प्रमोद करने वाली २५ तबतौ कल अरु विकल वेगसे झपटके भारी शस्त्रोंकी वर्षा करते भये तिस्से कटी देवसेना रुधिर झरती गिरने लगीतबतौ नंदीजी सींगोसे तिनकी सेनाको फाडने लगे२६।२७अरुलातोसेमारतेफूंक से गिराते भये अरुकई राक्षसवीरों को पूंछकी फटकारसे गिराते भये२८ऐसे तिन्होंने अनेकसी दैत्योंकी सेनानाशकरी तबतौ नाश होते देवतो में महाही हाहाकार होनेलगा २९ तबतौअतिबलवाले कल विकल दोनों दशो दिशोंको गोजाते गर्जे ३० अरुनंदीजीकी निंदाकरतेभये कि तूहमारे आगेक्यायुद्ध करताहै तूतौतिनके चरने में समर्थहै सो तिनके सरीखाहीहै ३१ ऐसेवो महाबली तिनके सींग पकडके घसीटकर निजसेना में लेगया तो तिन्हेंछुडानेको पुष्पदतजी वेगसे चले तो तिनको विकलने लात मारकर भूमिमें गिराये ३२।३३ अरुआप वाजे गाजेसे दर्पता भया तो वेमूर्छित होके दोघडी में उठे ३४ फिरतो वीरभद्र षडानन लडनेको चले तबतौ कल पर्वत के प्रहारसे मोर्छक होकर भूमिमें गिरा ३५ अरु वीरभद्रजीने तलके घातसे विकलको गिराया तबतौ स्कंदजीकरके पर्वतसे हतेकल दैत्यको देखके ३६ वे जयपाये गणगणनिज निज स्थानको आये अरुवे शस्त्रोंसेकटेकुछ रहे सो तिसक्षणे २ गडके पुरको गये ३७अरु दैत्यराजसे जायबोलेकि भागोभाग-

हित कल अरु विकल वीरभद्र आदिगणोंसे मारेगये ३८ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें कलविकलवधनाम एकसौअठारह का अध्यायभया ११८॥

एकसौउन्नीसका अध्याय॥

सिन्धु के पुत्रों का मरना वर्णित है

श्री ब्रह्माजी बोले कि तब तो देवसेना नाश करने वाले निज साले कल विकल इनको हते सुन सो कि कलको तो वीरभद्रसे अरु विकलको षडाननजीसे हता सुनके भद्रासन पे विराजमान अनेक शूरोंसहित सिंधुपरम चिंताको प्राप्तभया अरु शिवसुतजी को याद करता था कि ये मयूरेश ऐसे ही सब राक्षसोंका नाश करेगा क्या१।२।३ सोचिंता से भरा भारी मूर्छाखाय गिरा तब तो इसके पास दोनों महाबली पुत्र आतेभये ४ (धर्म) (अधर्म) ये आय निज पितासे बोले कि हे पिताजी इस गौरीके लघु बालकसे आप क्यों डरतेहो ५ हे दैत्यराजजी हमको आज्ञादेवो हम क्षणमेंही तिसको जीतलेंगे सामनेही हते ये महावीर हमारे मामे मरगये सो निज स्वामीके कार्यकेलिये अवतार भयेथे सो भारीकीर्ति नहा-कर नाना वीरोंसे पाली अनेक विधिकी सेना हतकर स्वर्ग में पधारे ६।७ अब हम भी जाय युद्धकरेंगे अरु बलसे शत्रुकोजीतके आवेंगे जो वो हमें रणमें हतेगा तो मोक्ष पावेंगे ८ जबतक हम जीतेहैं तबतक चिंता मतकरो अभी तो इन्द्रादि देवता तुम्हारे बंदी खानेमें पड़ेहैं ९ जो तुमही पहिले तिसे जीतने जाओगे तो पिता कैसे भये अर्थात् आप बैठो हम आपके शत्रुका शिर अभी निस्संदेह काट लेआते हैं १० नहीं तो हम किसी प्रकार से लोकमें मुख न दिखावेंगे ब्रह्माबोले ऐसा तिनका वचनसुनके सिंधु हर्षितभया ११ तिन्हें बोला कि श्रेष्ठ युद्धकरो अरु उत्तम यशपाओ शत्रुको शीघ्रहत के मेरेपास आवो १२ ऐसा तिसका वचन सुनके दोनों हर्षितहो चले सो कि माता पिताको नमस्कारकर तिनसे अशीषलेके लड़ने गये १३ अरु दश २ करोड़ सेना अलग २ लेके दूनोंही चले

ओ हाथी घोड़े रथ अरु नाना शस्त्रधारी पैदलोंसहित १४जो पैदल प्रसन्नभये चले सिंदूरसे लाल मस्तक जिनके अरु गज जो मेघके समान अरु नानाधातोंसे विचित्र १५ अश्व जो अनेक शस्त्र हाथ लिये सवार चढ़े जिनपर अरु जो मेघके समान दशों दिशो को गोंजातेभये गर्जते थे १६ तब तो सेनाके बीचमें गये वे दोनो भाई सजे जो अनेक आभूषण पहिरे अरु दोनो अनेक आयुध धरे १७ अरु जो रत्नजड़े सुवर्णके कुंडलोंसे शोभायमान अरु जो अ यत तेजवाले मुकुटोंसे प्रकाशमान महाबली १८ अरु जो मणि मोति-योंके हार पहिरे युद्ध मतवाले ऐसे वे गाजे बाजे से रणभूमि में पहुचे १९ तो वीरभद्रादिकोने तिनको अरु तिनकी सेनाको देखो तो ति हे निकट आये देखके मयूरेशजी से भेजे २० तिनकीआज्ञा से वीरभद्र षड़ाननजी आये अरु क्रोधभया हिरण्यगर्भ अरु विक-राल दृष्टि जिसकी ऐसा भूतराज २१येभी अनगिनत सेना सहित पहुचेतबतो फिर युद्धहोनेलगा आपसमेंसबसेना वाले प्रहारकरने लगे २२ हाथपैर अरु कन्धे उदरकाटतेभयेकईमरेअरुकईमरतेजाते थेअधेरेसेसूर्यजीढकगये २३ कइयोनेचक्रछोड़े अरुकइयोने गोफिये चलायेकइयोंनेबाणवर्षाकरी अरुकइयोंने अनेकशस्त्रछोड़े २४ फिर तिनसेनावालोंका मल्लयुद्धभयाऐसेमयूरेशजीके सेनासेपीडिततिनकी वोभी सेना नष्टभई २५ जो शेषरहीथी सोदशोदिशोंमें भगती भई तबतो क्रोधभये षड़ाननजी जो बारह शस्त्रोंसेसजे २६ वोतिन शस्त्रोंसे सिधुकी पालीभई सेनाको हतनेलगे वो कइयोंके मस्तक कटे कई बीचसे दुहराहोगये २७ कइयोंके हाथकटे अरु किसी के रणमें चरणकटे ऐसेवो हाथीघोड़े रथोंवालीसेना हतीगई २८ तो कईतो स्वर्गमेंगये अरुकई षडाननजीको देखकेतिनके प्रहारसेविधे भये मयूरेशजीका दर्शन करके प्राण छोड़तेभये २९ वोवे महाबली तिनमयूरेशजीके प्रसादसे तिनकेलोक अर्थात्गणेशधामको पधारे सोकि तिनकोदृष्टिपड़नेसे तिनका जन्म२ कापापनष्टभया३०तबतो विशाखनाम स्वामिकार्तिक के शिखावाले बाणोंसेहतीनिजसेना को

हित कल अरु विकल वीरभद्र आदिगणोंसे मारेगये ३८ इतिश्री गणेशपुराण उत्तरखण्डमें कलविकलवधनाम एकसौअठारह का अध्यायभया ११८॥

एकसौउन्नइसका अध्याय॥

सिन्धु व दुर्गों का लड़ना वर्णित है

श्री ब्रह्माजी बोले कि तब तो देवसेना नाश करने वाले निज साले कल विकल इनको हते सुन सो कि कलको तो वीरभद्रसे अरु विकलको षडाननजीसे हता सुनके भद्रासन पे बिराजमान अनेक शूरोंसहित सिंधुपरम चिंताको प्राप्तभया अरु शिवसुतजी को याद करता था कि ये मयूरेश ऐसे ही सब राक्षसोंका नाश करेगा क्या १।२।३ ऐसीचिंता से भरा भारी मूर्च्छाखाय गिरा तब तो इसके पास दोनों महाबली पुत्र आतेभये ४ (धर्म) (अधर्म) ये आय निज पितासे बोले कि हे पिताजी इस गौरीके लघु बालकसे आप क्यों डरतेहो ५ हे दैत्यराजजी हमको आज्ञादेवो हम क्षणमेंही तिसको जीतलेंगे सामनेही हते वे महावीर हमारे मामे मरगये सो निज स्वामीके कार्यकेलिये अवतार भयेथे सो भारीकीर्ति नहा-कर नाना वीरोंसे पाली अनेक विधिकी सेना हतकर स्वर्ग में पधारे ६।७ अब हम भी जाय युद्धकरेंगे अरु बलसे शत्रुकोजीतके आवेंगे जो वो हमें रणमें हतेगा तो मोक्ष पावेंगे ८ जबतक हम जीतेहैं तबतक चिंता मतकरो अभी तो इन्द्रादि देवता तुम्हारे बन्दी-खानेमें पड़ेहैं ९ जो तुमही पहिले तिसे जीतने जाओगे तो पिता कैसे भये अर्थात् आप बैठें हम आपके शत्रुका शिर अभी निस्संदेह काट लेआते हैं १० नहीं तो हम किसी प्रकार से लोकमें मुख न दिखावेंगे ब्रह्माबोले ऐसा तिनका वचनसुनके सिंधु हर्षितभया ११ तिन्हें बोला कि श्रेष्ठ युद्धकरो अरु उनसे बचापावो शत्रुको शीघ्रहत के मेरेपास आवो १२ ऐसा तिनका वचन सुनके दोनों हर्षितहो चले सो कि माता पिताको नमस्कारकर तिनसे आशीशलेके लड़नेको गये १३ अरु दश २ करोड़ सेना अलग २ लेके तुरंतही चले

जो हाथी घोड़े रथ अरु नाना शस्त्रधारी पैदलोंसहित २४जो पैदल प्रसन्नभये चले सिंदूरसे लाल मस्तक जिनके अरु गज जो मेघके समान अरु नानाधातोंसे विचित्र २५ अश्व जो अनेक शस्त्र हाथ लिये सवार चढ़े जिनपर अरु जो मेघके समान दशों दिशों को गोंजातेभये गर्जते थे २६ तब तो सेनाके बीचमें गये वे दोनो भाई सजे जो अनेक आभूषण पहिरे अरु दोनो अनेक आयुध धरे १७ अरु जो रत्नजड़े सुवर्णके कुंडलोंसे शोभायमान अरु जो अत्यंत तेजवाले मुकुटोंसे प्रकाशमान महाबली १८ अरु जो मणि मोतियोंके हार पहिरे युद्ध मतवाले ऐसे वे गाजे बाजे से रणभूमि में पहुंचे १९ तो वीरभद्रादिकोंने तिनको अरु तिनकी सेनाको देखो तो तिन्हें निकट आये देखके मयूरेशजी से भेजे २० तिनकीआज्ञा से वीरभद्र षडाननजी आये अरु क्रोधभया हिरण्यगर्भ अरु विकराल दृष्टि जिसकी ऐसा भूतराज २१येभी अनगिनत सेना सहित पहुंचेतबतो फिर युद्धहोनेलगा आपसमेंसबसेना वाले प्रहारकरने लगे २२ हाथपैर अरु कन्धे उदरकाटतेभयेकईमरेअरुकईमरतेजाते थेअधेरेसेसूर्यजोढकगये २३ कइयोनेचक्रछोडे अरुकइयोंने गोफिये चलायेकइयोंनेबाणवर्षाकरी अरुकइयोंने अनेकशस्त्रछोड़े २४ फिर तिनसेनावालोंका मल्लयुद्धभयाऐसेमयूरेशजीके सेनासेपीडितविनकी वोभी सेना नष्टभई २५ जो शेषरहीथी सोदशोंदिशोंमें भगती भई तबतो क्रोधभये षडाननजी जो बारह शस्त्रोंसेसजे २६ तोतिन शस्त्रोंसे सिंधुकी पालीभई सेनाको हतनेलगे तो कइयोंके मस्तक कटे कई बीचसे दुहराहोगये २७ कइयोंके हाथकटे अरु किसी के रणमें चरणकटे ऐसेवो हाथीघोड़े रथोंवालीसेना हतीगई २८ तो कईतो स्वर्गमेंगये अरुकई षडाननजीको देखकेविनके प्रहारसेबिंधे भये मयूरेशजीका दर्शन करके प्राण छोड़तेभये २९ तोवे महाबली विनमयूरेशजीके प्रसादसे तिनके लोक अर्थात्गणेशधामको पधारे सोकि तिनकेदृष्टिपड़नेसे तिनका जन्म२ कापापनष्टभया ३० ।

१विशाखनाम स्वामिकार्तिक के शिखावाले चायोंसेहतीनिजसेना।

देखके सिंधुकेपुत्र धर्म अधर्म ३१ बहुविधिके अस्त्रशस्त्र अरुबाणों सेयुद्धकरतेभये फिर तिस महाभारी सेनासे मल्लयुद्ध करते भये ३२ तिनका बल देखतेही महाबलवाले षडाननजी छओंहाथोंसे तिनकी शिखापकडतेभये ३३ अरु तिनको बहुत भ्रमायेफिर भूमिमेंपटका- रतेभये तोपडतेही तिसके सौटूकभये ३४तबतो शिवसुतस्कन्दजीकी जैतभये सबओरसेबाजेबजे अरुसबसेनावालेबोले किमयूरेशजी की सदाजैतहो ३५ फिरतौ वे चारोंनिज स्वामी मयूरेशजीपैगये अरु हर्षसे आपसमेंमिले अरु ये बोले ३६ हमनेफेरजन्मपाया ऐसेकहये आपसमें हर्षतेभये अरु गौरीशंकरजीसेभी सब वृत्तांतकहा ३७ कि सिंधुकी सेना अरुबलवाले पुत्रहतेगये ३८ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डमेंसिंधुकेपुत्रोंकानरणनामएकसौउन्नीसवां अध्यायभया११९।

एकसौवीसका अध्याय॥

सिंधुदैत्यकरके चार युद्धमें पहुचा॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकिकुछेकवीरयोपरहे सो रुधिरझरे अतिदुखभरे भयभीतभये सभामें बैठे सिंधुकोऐसे जायकहतेभये वीरबोले कि हे घर पधारी हमारोये अति दुखकारी भारीवियासुनो कितुम्हारे पुत्र धर्म अधर्म महाभारी युद्धकरके१।२देवसेना को मार२ के यमलोक को पहुचातेथे फिरतहांसे छमुखवाला शूरवीरआया तो तिसको भी तिसनेगिराय।फिरतिसने उठकेइनदोनोंकी शिखा पकड़ लई ३।४ अरु बहुत ही भ्रमाकर धरती पर गिराये तोवे सौटूक होकर मरगये ५ ऐसा तिनका वचन सुनके दैत्याधिराज वज्रसे हते पहाड के जैसे गिरा अरु शोकसमुद्र में मग्नभया ६ तो प्यारे जनोंने शीघ्र आय तिसे उठाया फिर दोघड़ी में सचेतभया तो बहुत दुःखितहो शोक करता भया ७ सिंधुबोला कि जिन्होंने इन्द्रादि लोकपाल पहिले संग्राममें जीते ऐसे महाबली वे षडाननसे कैसेमारेगये जोदेवनके विनाशक अरु यमके भी हंता दोनों ८ जय जो में जगत फिर कार्त्तिकेय तो मुझ [illegible] गाड़ो मेरी सेना ने जो यहां समय

वचन कहा था सो मिथ्या कैसे किया६।१० फिरतौंवो वृत्तांत भीतर
रनिवासमेंजाकेसखियोंने दुर्गासेकहा जो आपभी रोरही ऐसी ११
सखियें बोलीं कि हे सुभ्रु तुम्हारा भर्ता रोताहै धर्म अधर्म मरगये
इस्से तौ वो सेंजपरसे पृथ्वीमें गिरी १२ जैसे कोमल २पत्तोंवाली
केलेकी कली पवनसे फटकारी गिरे तैसेही सखियों केवचन बाणों
से विंधी वो भूमि में पडी १३ खुले केश आभूषण जिसके ऐसी
वो भी अत्यंत विलाप करती भई उघडे वस्त्र अरु सुचरहे वेल
सरीखे स्तन जिसके अश्रुओं से कुछ २ काले कपोलों वाली शोक
अग्निसे हतोकीर्ति जिसकी १४ ऐसी वो हाथों से मुखपीटती दांतों
के रुधिर से भीगीभूमि जहाछोडादेह भावजिसने विकल अरु निर्ल-
ज्ज भई १५ सभाके अंगन में जाकेलोटगई जैसे हठीला बालक
लोटताहो तबतौ सारे सभासद दुःखित होरोनेलगे १६ आंसूटपक-
ते तिमरानी के ऐसी दुर्गा तिनसभा वालोंसे ये कहती भई दुर्गा
बोली कि सबवीरों के जीते वेमरे १७ दोनोपुत्र मेरेसे विनपूछे रण
में भेजेगये जो मेरे आशीश लेकेभेजे जाते तौ कभीभी तिनका मरण
नहीं होता १८मेरेवचनको ब्रह्माजी भी मिथ्यानहींकरसक्तेजिन्होंने
देवता जीतेथे तौ वेकमे मृत्युकोप्राप्तभये तिनमहिमा वालोंको कब
देखोगी जिन्होंने कांतिसे कामदेवको जीताथा अरु जोबुद्धिके समुद्
थे सोकहां चलेगये१९।२० तिनके शोकाग्निसेजलीमैं अभी मरती
हूंगी ऐसे कह २ केबेर २ निजमस्तक पीटतीफिर पृथ्वी परगिर
पडी२१तौसबी नगरवाले शोघहीनिसे फिर समझानेलगे किहेमात
ऐसाकोई नहींभया जो शोककरनेसे मरकरके उलटा आयाहो२२
मृत्यु लोकमें कोई सदा रहता देखा न सुनाहै। केवल हनुमान्
अरुअश्वत्थानके पुत्र कृपाचार्य्य अरुराजा बलि के २३ व्यास परशु
राम अरुविभीषण अरु अश्वत्थामा इतने इनके विना और कोई
चिरजीवी कोईभी नहींहै २४ ब्रह्मादिकों का भी मरण होताहै तौ
आपतो फिर क्या गिनतीहै तिस्से रोना न चाहियेक्या इनका कभी
मरण नहीं होना २५ अपना ऋणानुबंधक्षीण भये अर्थात् जब वे

अपना पूर्व जन्मका लिया चुका देतेहैं तबस्त्रीपुत्र पशु इत्यादिक फिर छिनभर भी नहीं रहतेहैं इस्से वहां शोक करना वृथाहै २६ जैसे जलवहावकेतट में लगी लकडी कभी और काठ सहित होती अरुकभी नहीं होतीहै तैसेहीयेप्राणी सयोगवियोग को प्राप्त होता है २७ अरु अनेकपक्षी जैसे रातको एकवृक्षमें रहतेहैं प्रात काल भये इधर उधर चले जाते हैं तैसेही प्राणी तिस्से विलापन करना २८ ब्रह्माजी बोले कि तबतो ऐसेजनो करके समझाया गया राजा अरुरानी दुर्गा दृढतासे शोक को थांभके आसनपे आयबैठी सोकि हमरोतों को देखके शत्रुसब जन और हंसी करेंगे ऐसा समझके २६ फिरभी इसेलेग बलसे भीतर लेगये तोये ऊंचे सांसलेती दुखसे भरी सेजपे पड़ी ३० अरुसिंधु क्रोध सहितहो निजशस्त्रोंको उठाता भया पुत्रोका बदला लेने को घोड़ेपर सवार होकर रणमें गया ३१ तिस्के जातेही भारी चारों अंगोवाली दृढकाचाव करती चली लौ दौड़ते झपटते पैदल पहिले चले ३२ जो अनेक २ रंग रूप वाले अस्त्रशस्त्रलिये फिर हाथीचले जो अनेक घातोंसे विचित्र ३३ घंटाआभूषणोंसे सजे मदजल वर्षाते चिग्घाड़से शत्रुओं को डराते जो भारीशब्दों सेभयकारी ३४ फिरतो घोड़े चले जो सवार चढ़ायेपवन वेगवाले जिनके खुरोंके घातसे पतगे उछलतेथे तिनने सवार जो ढाल तलवार बरछी लिये चन्दन अगरलेपे कनकमाला पहिरे३५।३६अरु स रें रखवर चढ़ाये नखतरोंसे प्रकाशमानआका-श को ग्रसतेस अरु दशोंदिशों को गंजातेसजे ३७ फिरतो रथचले जो नानाप्रोलदान चढ़ाये जिनके सवार अनेक शस्त्रअस्त्रों से युक्त धनुष तरकस लिये ३८ तिनके बीचमें सिंधुलजा जो भारी मुकुट कुंडलझलकाये अनेक शस्त्र धनुष धारण किये तरकसका आभूषण जिस्के पर्यान योद्धापनही है सजावट जिसकी ३६ शूरवीर रूपी कंगनोंकी शोभा सहित पैरलहैं तगड़े शत्रुजिस्के मस्तकोपर्यंत नेत्रकिये त्रिभुवन के मथनेकी चाहता ० ... बाजे बाजते अरुबंदी जनस्तुति करतेहैंऐसा वे सिंधु ... भारी

कहा कि ४१ हे दैत्यराज तुम्हारे पिता चलेआतेहैं तिनको देखो जितने इसने उलट के देखातो अग्वपैचढे निजपिता जो देखे ४२ इसने तिनकोनमस्कारकरीतो पिताने इसे सेनावालो के ओटमें कर उपदेश किया ४३ सोकि इसके यहां सुखसे रहनेका उपाय बताता भया (चक्रपाणि)बोला हेपुत्र तू गर्वसे भरा लक्ष्मी मदसे मत्तभया कुछभी नहीं समझताहै ४४ प्रयोजन जानने को ऐश्वर्य चाहने वाले राजाको बड़े बूढ़े पूछनेचाहिये तिनको विनाइच्छा भलाबुरा कर्मकोई भी न करे४५ थोडाभीकुकर्मकरने से पुण्यनष्ट होजाताहै जैसे थोड़ाही अग्नि सब जलाता तैसेही दोष पुण्यका नाश करदेताहै ४६ हेपुत्र तिनके वचोमें डाले पीछेतेरे लाभ होतानहीं देख पड़ताहै अरु पुत्र वही जो मावाप का सदा वचन माने ४७ तिनको नाज्ञाकेउल्लं घने में पुण्यनाश होताहै गुरुदोष मोह समूह उत्पन्न होता जो अनेक नरक देनेवालाहै ४८ इससे तू मेराहित वचन सुन कि हेपुत्र तू दे-वतोको छोडदे तिनके छोडतेही सब अर्थदाता मयूरेशजी तेरेमित्र होंगे ४९ इसभूमिपै शत्रुता करके किसीने सुखनहीं पाया देवतों ने हिरण्याक्ष आदिदैत्य मारेहैं ५० ब्रह्माजीबोले ऐसा पिताका वचन सुनके सिंधु अत्यंतही कुपितभया अरुधिक्कार करके पिताको बोला किहा मुझको पहिले भ्रांतिहोगईथी ५१ तुम पिताजी चतुरहो जोमुझ मूढको यहज्ञान बतायाहै परहेपिता तूही मूर्खके जैसा बोल रहाहै काला मुंहकरके चलाजा ५२ जिसके मने अनगिनत सेना नाशकरी अब मैं तिससे कमे मिलाप करूं जिससे अपयशहोवे ५३ कुशा अरु रुद्राक्ष माला धारण करना अर्थात् त्रुपुंड्रलेप भस्मादात्र धर्ममें नहीं कहाहै इससे राजाको शत्रुओं पै कभी दया न करनी चाहिये ५४ नीतिशास्त्रमें शत्रुपै निर्दयी होना कहाहै जैसे रोगमें दयाछोड़ चिकित्सा कीजातीहै ऐसेकह पिताको नमस्कार करके दैत्यराजसिंधु ५५ तिसे हटमें उलटा भेजके चाव न हत भयागृहमें चला ५६ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डेभैषिनानिनगाउँ नाइसनाम सेएकसौतीनकाअध्यायभयाहै ॥

एकसौइक्कीसवां अध्याय॥

मिधुवधशसहीदनुत्तेणेद्रुत्मा

श्रीब्रह्माजी बोले कि तबतो वीरभद्रादि गणोंके साथ सुखसे विराजमान मयूरेशजी के पास भयभीतभये देवता वेगसे १ आये अरु वृत्तांत कहते भये कि आपसिंधु आया तौवे सब फिर भागे काल के समान तिसको समझाते भये २ तबतो गणेशजी हर्षसे मयूरपर सवार भये अरु चारों शस्त्रलेके गर्जे ३ अरु शिवजीको नमस्कार करके वेगसे दिशा प्रकाश करते चले तिनकी आशीश कवच जिनके वीरोंकी सेना सहित ४ सो जो येसिंधुके मारनेको अगाडी चले सो हो षडाननजीने आकेकहा किहेविघ्न राजजी मैं युद्धको जाताहूं ५ हमारे बहुतसे शूरवीरों के बैठे आप लडनेको कैसे जातेहो हमारा सबका पुरुषार्थ देखिये फिर रणमें लड़ना ६ ऐसे कहि नमस्कार करके षण्मुखजी लडने को चले सोकि हाथी घोड़े पैदल लेके सिंधु दैत्यपैचले ७ अरु प्रहार किया तौ तिसने भी अनेकशस्त्र बाणों से तिनकी सेनाहती अरु महना मार मारताहुं सामनेआ ८ ऐसारौला लड़तेभये वीरोंको तहांभया तौ शस्त्र संघरुलागोंमें हतेवीर पड़ने लगे ९ छिन्न अंग छिन्न पैर छिन्न भुज निर्तन मस्तक जिनके ऐसे २ तलवार गोकिये भाले मुशल इनसे कट२गिरे १० तहांकईवीर शत्रुकी सेनामें जाय मिल २ के घेसेसे शत्रुओं को मारते भये तौ दहाड अरु हिनम्ननों से महारौला भया अरुगाजेकी शब्दोंसे अरु चिंघाड रथके पहियोंमें ऐसेही तिनदोनों सेनाओंका महाभारी युद्ध भया ११। १२ प्रतिज्ञा कर २ के वीर मस्तक मुखकाटतेभये अरु नेत्रबाहु उदरनाभि घुटने गोड़े १३ कोईहाथ पैरसे अरुकोई खड्गसे काटता भया अरु कई सूर्य किरणछिपे भारी अंधेरा भये पूंछ २ के प्रहारकरते भये १४ अरुदैत्योंको राक्षस गणोंको देव जानके लडतेही प्रहारकरतेभये तबजो घोरयुद्धमेंरुधिरकादहाबहआ २५ जो मुर्दोंकोबहाता अरुगदाजोबहोनेमुर्दोंकोलिसकेहुंकारसेजो

वते जान वलसे बाहरनिकाल के तिनको शल्य रहित किये अर्थात् तिनके देहमें लगे बाणोंको निकालते भये १६ अरु कहने लगे कि नहम अरु नतुमं इससेनाके युद्धसे विश्राम चाहतेहैं अर्थात् लड़ ही जाना ऐसेहो सिधुके करोड़ो पैदल देवतोंनेहते १७ सोकि वीरभद्रादिक लिसगर्जतो सेनाको हतते भये तो कइयेंके मस्तक कटे कइयो के दांत १८ अरु अग्निशस्त्रधारी वीरोंने अनेकवीर गिराये अरुवीरभद्रजीने अतिवल करके हाथीसे हाथीको मारा तो १६ तव वे दोनोंहाथी कटगिरे तवतो षडाननजी गजोको सेना हतते भये सजे २० वीरो सहित हाथियोंको भाले अरु अनेक वाणोंसे हतते भये हिरण्यगर्भ भी सवारो सहित तिनको गिराते भये अरु भूतराज अनेकशस्त्रोंसे हाथी हतते भये२१।२२।२३जो सवारो सहितवाणो से क्षयभया जीव जिनका अरु पुष्पदतजी सिहहोके तिनको फाड़ते भये २४ अरुनदीजी गजरूप करके वहुतसे गजोको फाडते भये। अरु गणों के प्रहारोंसे भी तोवेसारे गिरपड़े २५ अरु कइयोने हाथियोंको पूंछपकड भ्रमाके फेंकते भये तोवे आपसमें मिल दृढ़घात से चूर्णभये मरे २६ फिरतो घोड़े सवार लडने लगे तो अनेक प्रकारके युद्धोंसे अनगिनतो को मारतेभये तवतो देवता मूर्च्छित हो फिर सज्ञा सहित भये २७ फिरतो देवता घोडे सवारोंको क्रोधसे हतने लगे तोघोडे सवारवीर क्रोधसे देवतो को हतते भये २८ तोवे अस्त्र शस्त्रोंसे देवसेनाको नाशकरते भये तो देवो को हते सुनके छवीर तहांसे गये तोफिर व घोड़ेसवारो को मारते भये २९ तो वे चार चारों दिशोंमें चारोंओर लडते भये अरुदो निजदेवसेनाकी रक्षा करते भये ३० सोवे घोडोंको अरु सवारों को हतते भये पैदल चलते वहुतसे वीरोंको मारते भये ३१ तोवे वाणोंसेविधे एक २ वेग करोड़ २ वीर गिरतेभये फिर नदीमें गो मरे घोडे सवारोंको देखके ३२ नन्दीजीभी लातें मार २ कई गिराते भये अरुवीर भद्रजीनेभी अनगिनत अश्वयोद्धा गिराये ३३ तवतो मुखिया शूरवीरों के हने सवदिशोंमें युद्धकरने वालों के प्रलय सरीखा होगया ३४ तवतो

करके देवनोंपै शरणागत पहुंचे तबतौ दैत्यकी सेना सबारोंमें महाही
हाहाकार मचा ३५ ऐसेमनाको हतके छत्रीवीर हर्षे अरु बादल
जैसे गर्जतेविभुगणेशजीकोस्तुति करतेभये ३६ बोलेकि हेमयूरेशजी
आपके प्रभाव अरु स्मरणसे हमजीतपावेहैं तबतौ रिपुदैत्य दूतके
मुखसे हतसेनाका वृत्तांतसुनके हाथीघाड़े रथोंसहितमंत्री अरु सब
योगोंसे युद्धचाहता नोरा ३७।३८।३९ किजो रथोंवाजावेहैं तिनकोंमें
मरेहीसुनताहूं क्योंकि आपही मयूरेशको मारनेचलताहूं ४० महाबली
ऐसेकह यो निजअहंकारसेआकाशदिशोंकोगोंजाता त्रिभुवनकोकंपाता
भया ४१ अरुधनुषमें बाणलगा कानतक खैंचके चलाताभया तिस
वीर भद्रादिको से पालीसेनामें ४२ सबवीरो को देखके फिर तिस
ने धनुषमें बाणलगाकर अरु शीघ्रसेंमनसे तिसे पढ़अस्त्रकरके ४३
दैत्यराज छोड़ता भया तौतिससे घोर अग्नि उत्पन्नभया गणोंसेना
को जलाने लगा अरु वृक्षोंवन पर्वतों कोभी भस्म करताभया ४४
फिरतौ तिसके अस्त्रमें सबसेना वालोंकोदेखके सौकितिसमें एकपुरुष
देखा जो अग्नि समान जटावान दीपरहा ४५ बिजली सीजीभनि
कालता विकराल मुखसे सेनाको निगलता तौ षडानन आदिवीर
तिनको डरके गणओर भागगये ४६ अरु तिस २ के तिसने भक्षण
किया सोही मयूरेश जीका ध्यान धरता परमधाम को पधारता
भया ४७ ऐसेंमागी सेना भक्षण कोगई अरु नहा २ थोमेनाभागके
गई वहा २ सोईपुरुष के मुखसे भया अग्नि प्रलयाग्नि के जैसा
जलताथा ४८ ऐसे निनदग्नि करके जो मयूरेशजीकी सेना जलाई
गई जो धुवेंसे भागे सबेरामके कुछभी नजानपड़ा ४९ फिरतौ गणों
मयूरेश जीके पीछेआबैठे अरु अग्निसे जलेसो रक्षाकरो २ ऐसेपुकारा
रते भये ५० तब तिसने हठसे अस्त्रको देखके मयूरेशजी चिंता ५१
तेजभये लोकनाशकाई मै डरतेहुए विचारकरनेभयेदिशों गिरागीरी
प्रसन्नता होवेगी अवश्य जीतहोगी ऐसेकहा पश्चात्के मन पढ़के
अस्त्रसे छोड़ते भये ५२ तौ तेजसे सूर्यजीके जीतने दिशोंको गाजते
गये पन्द वैरीने सेना जलाते चले तैसे प्रलयाग्नि जगतको जला

वे ५३ तो तिससे भीएक भारी पुरुष निकला जिसके मुखमें आकाश सहित सब भूगोल समाजावे५ ३तबतोवेदोनो पुरुष अस्त्रसेअ.पसमें लटतेभये तबतो ऋषि मुनिजन तिन्हें देखने को आये ५४ फिरतो गणेशजी के अस्त्रने दैत्यके अस्त्रको काटदिया फिरवो दैत्य सेनाको हतने चला मानो अग्निजलता ५५ फिरतो तिसे देखके दैत्यराजने भी बाणवर्षाकरी तो तिस एक बाणसेही अनगिनत बाण उत्पन्न भये ५६ तो वेगसे देवसेना वाले नष्टहोनेलगेफिर मयूरेश जीनेभी क्रोधवशसे भारी २ शस्त्र छोडे ५७ तोतिन शस्त्रोंसे दैत्यके बाणोंको काटके फिरवेही कालपुरुष दैत्य सेनाका भक्षण करने लगा ५८ फिरतो जहा २ राक्षस भगने तहां २ हीवो भी जाता था तबतो चिंता में भरासिंधु दैत्य कुछनकर सका ६० सोकि क्या करना कहांजाना अरु कहां ठहरजाना ऐसीचिंता करता भया ६१ अरु चलता अखटना भूमि में गिरता टूटे हैं कुंडल आभूपण जिसके ऐसावो सूर्यछिपे निजघर पहुचा ६२ तो वेनगरमें वडातोरूप छिपाये कमोंछियों में तथा और आजीविका वालोंमें रहा अरुदेव गणेश जीतिसके वृत्तांत को जानके शीघ्रगर्जना करते भये ६३ तो तिस शब्दसे त्रिभुवन गोजा फिरवे निजकाल अस्त्रको समेटतेभये जैसे गारुडी सर्पको लौटालेवे ६४ अरु मयूरेशजी गणोंके साथनिजस्थान पैगये ६५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंड मेंगणेशजीका विजयहोना इसनामसेएकसौ इकीसवा अध्याय भयाहै ॥

एकसैबाईसका अध्याय

सिंधु गारुडेशजोका युद्धहोना वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि देवेश मयूरेशजीकेगणोंसहितविराजमानभये गौतमआदिमुनिजन देवगणेश जीकी प्रशंसाकरतेभये १ ऋषीश्वर बोलेकि जिसनेयुद्धमेंइंद्रको जीता अरुपातालमेंनागोंसहितशेषजीभी जीते तो निसके औरोंकी क्याही गिन्ती ऐसे भी सिंधुकोआपनेयुद्धमें

कई देवतोंपे शरयाजा पहुवे तबतो दैत्यकी सेना सवारोंमें महाही हाहाकार मचा ३५ ऐसेसनाको हतके छत्रोंवीर हर्ष अरु बांजेगा जेसे गर्जतेविभुगणेशजोकीस्तुति करतेभये ३६ बोलेकि हे मयूरेशजी आपके प्रभाव अरु स्मरणसे हमजीतपाये हैं तबतो सिंधुदैत्य दूतके मुखमे हतीसेनाका वृत्तांतसुनके हाथीघाडे रथोसहितमंत्री अरु सब वीरोंसे युद्धचाहता बोला ३७।३८।३९ किजो २ योद्धाजातेहैं तिनकोंमें मरेहीसुनताहू अबमैंआपही मयूरेशको मारनेचलताहू ४० ब्रह्माबोले ऐसेकह वो निजदहाडसे आकाशदिशोंकोंगोजाता त्रिभुवनकोंकंपाता भया ४१ अरुधनुपमें बाणलगा कानतक खैंचके चलाताभया तिस वीर भद्रादिकों से पालीसेनामें ४२ सबवीरो को देखके फिर तिस ने धनुपमें बाणलगाकर अरु शीघ्रसोमंत्रसे तिवे पढअस्त्रकरके ४३ दैत्यराज छोडता भया तोतिससे शीघ्रअग्नि उत्पन्नभया सारीसेना को जलाने लगा अरु पृथ्वीवन पर्वतो कोभी भस्म करताभया ४४ फिरतो तिससेजलते सबसेना वालोंकोदेखके सोकितिसमें एकपुरुष देखा जो अग्नि समान जटावान् दीपरहा ४५ बिजली सीजीभनि कालता विकराल मुखदेव सेनाको निगलता तो षडानन आदिवीर तिससे डरके सबओर भागभये ४६ अरु जिस २ कोतिसने भक्षया किया सोही मयूरेश जीका ध्यान धरता परमधाम को पधारता भया ४७ ऐसेसारी सेना भक्षया कोगई अरु जहा २ वोसेनाभागके गई तहा २ होवोपुरुष के मुखसे भया अग्नि प्रलयाग्नि के जैसा जलाताया ४८ ऐसे तिसत्रहूनि करके वो मयूरेशजीकी सेना जलाई गई तो धुवेंसे भारी अंधेराभये कुछभीनजानपडा ४९ फिरतो सारे मयूरेश जीके पीछेआवेंटे अरुअग्निसे जलेवो रक्षाकरो २ ऐसेपुका रते भये ५० तब तिसने हठने अस्त्रको देखके मयूरेशजी विना ५१ तेजभये लोकहलकाई से डरतेवह विचारकरतेभनेकिजो शिवजीकी प्रसन्नता होवेतो अवश्य जीतहोगी ऐसेकह परशुलेके मंत्र पढके बलसे छोडते भये ५२ तो तेजसे सूर्यजीके जीतते दिशोंको गाजाते गर्जे अरु वैरोकी सेना जलाते चले जैसे प्रलयाग्नि जगत्को जला

वे ५३ तो तिससे भीएक भारी पुरुष निकला जिसके मुखमें आकाश सहित सब भूगोल समाजावे५४तबतोवेदोनों पुरुष अस्त्रसेआपसमें लड़तेभये तबतो ऋषि मुनिजन तिन्हे देखने को आये ५४ फिरतो गणेशजी के अस्त्रने दैत्यके अस्त्रको काटदिया फिरवो दैत्य सेनाको हतने चला मानों अग्निजलता ५५ फिरतो तिसे देखके दैत्यराजने भी वाणवर्षाकरी तो तिस एक वाणसेही अनगिनत वाण उत्पन्न भये ५६ तो वेगसे देवसेना वाले नष्टहोनेलगेफिर मयूरेश जीनेभी क्रोधवशसे भारी २ शस्त्र छोडे ५७ तोतिन शस्त्रोंसे दैत्यके वाणोंको काटके फिरवोही कालपुरुष दैत्य सेनाका भक्षण करने लगा ५८ फिरतो जहां २ राक्षस भगते तहां २ हीवो भी जाता था तबतो चिंता में भरासिंधु दैत्य कुछनकर सका ६० सोकि क्या करना कहाजाना अरु कहा ठहरजाना ऐसीचिंता करता भया ६१ अरु चलता अखटता भूमि में गिरता टूटे हैं कुंडल आभूषण जिसके ऐसावो सूर्यछिपे निजघर पहुचा ६२ तो वोनगरमें बड़ातोरूप छिपाये कभीस्त्रियों में तथा और आजीविका वालोंमें रहा अरुदेव गणेश जोतिसके वृतान्त को जानके शीघ्रगर्जना करते भये ६३ तो तिस शब्दसे त्रिभुवन गोंजा फिरवे निजकाल अस्त्रको समेटतेभये जैसे गारुडी सर्पको लौटालेवे ६४ अरु मयूरेशजी गणोंके साथनि जस्थान पेंगये ६५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंड मेंगणेशजीका विजयहोना इसनामसेएकसौ इकीसवां अध्याय भयाहै ॥

एकसौबाईसवां अध्याय

सिंधु मयूरेशसंग्राम युद्धहोन वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि देवेश मयूरेशजीकेगणोंसहितविराजमानभये गौतमआदिमुनिजन देवगणेश जीकी प्रशंसाकरतेभये १ ऋषीश्वर बोलेकिजिननेयुद्धमेंइन्द्रकोजीता अरुपातालमेंनागोंसहितशेषजीभी जीते तो त्रिलोकी औरों की क्याही गिन्ती ऐसे भी सिंधुकोआपनेयुद्धमें

जीताअरुतिसदुष्टसेवहुतोंकी रक्षाकरी नहीं तो गणोंकाअरु सबलो
कों का भीजीवन कैसे होता ३ ब्रह्मा जी बोलेकि तिन के ऐसे कीर्ति
वखाने करते २ गिरिजा जीतहा आई अरु पुत्रको आलिंगके बोली
कि युद्धमें थकेहोगे ४ फिरतो शिवजीभी शीघ्रआये अरु गणेशजी
से अंगमिलाय मिलते भये बोलेकि इन्द्र आदिको सेभी असाध्य
काम किया ५ आपकी महिमा कहीनहीं जाती जोआप परब्रह्मस्व
रूप अरु चराचर के स्वामीहो सर्वज्ञ अरु भूमिभार उतारने में
परायणहो ६ ऐसे आपकी महिमा को गौतम आदिमुनि जनभी
नहीं जानते फिरहमारी तो क्याही सामर्थ्यहो ७ ब्रह्माजीबोले कि
शिवजीके ऐसे कहते ७ नारदजीने गौरीजीसे कहा कि हेमाई मेरा
वचन सुनो ८ यहावहुत दिनवीतगये अवकवदेवता छूटेंगे अरु कव
सिंधु दुष्ट का नाशहोगा ९ अरु कव मयूरेश जीका विवाहहोगा
जिसने इन्द्रादिक जीते ऐसा वहसिंधु कवमरेगा १० हमें आज्ञा
देवो घरजावें फिर शीघ्र आजावेंगे सिंधुदैत्य से देवतोंकी वंदीकव
छूटेंगी हेमाता तिस दैत्यका मरनामुझको असाध्य दीखताहै ब्रह्माजी
बोले नारदजी का वचन सुनके सारे षडानन आदिवीर बोले कि
हेनारद मुनिजी क्या आपसरीखे सर्वज्ञोंकोभी आश्चर्य्य होताहै ये
प्रभुगणेश जीइसीलिये निजधामसे आये हैं ११।१२।१३।१४
प्राप्त हैं सवअर्थ जिनको अरु सब अर्थकारी ऐसे मयूरेशजी जोआप
निर्गुण अरु गुणोंकोईश अरु गुणोंको चलानेवाले १५ ऐसे इनके
स्वरूप को क्या आपनहीं जानते जो ब्रह्मादिकों से निरूपणनकि
या जावे अरु भूमिभार उतारने वाले जयचाहते इनके पराक्रम को
भी क्या आपनहीं जानतेहो १६ जो इन्द्रादिकों से अवाध्य राक्षसों
को माररहे अनेककरोड ब्रह्मांडों केनेता अरु सबकेआत्मा १७ अरु
रचना पालना संहार कारीहैं ब्रह्माजी बोले तिनका ऐसावचन
सुन नारदजी फिरबोले १८ किजब हमतिस दैत्यको मरामुक्ति को
प्राप्तभया देखेंगे तभी वचन सत्यमानेंगे और प्रकार सेनहीं १९
तिनका वचन सुनके क्रोध भये वे मयूरराजजी क्रोधमें जलने लिभु

वनको गोंजाते गर्जनाकरते भये २० त्रिलोकीको जलाते अरुपृथ्वी को फोड़ते से मेघकेजैसी गंभीर वाणीसेनारद मुनिजीसे कहतेभये २१ मयूरेशजी बोले कि हेमुनीश्वर तुमब्रह्मा जीके पुत्रअरु सर्वज्ञ हो इससे मानने योग्यहो इससे हममर्याद पालते अर्थात् आपका वड़प्पन रखतेभये आपसे कहतेहैं कि २२ आपके अनुग्रहसे ब्रह्माण्डको भक्षणकरूं कालको खालेऊं भूमिगोलको आधामारदेऊं २३ अरु हे मुनि जी श्वासछोडने से सुमेरुको चलादेऊं हे नारदजी हमारी अवसत्यप्रतिज्ञा है सोसुनो कि २४ हम सिंधुदैत्य को मारेंगे इसमें संशयनहींहै ब्रह्मावोले ऐसेकहके मयूरपैसवार होके विनायक जी तिससे लड़ने चले २५ तवतो तिनविनायक जीको नदीभृंगी दोनो गणबोले कि हमहीं युद्धकरेंगे आपहमारी कुशलता देखिये २६ ऐसे कह पवन वेगसे वेदोनो गंडकी पुरीको चले तो वीरभद्र अरु भूतराज येभी तिनका जाना सुनके चलदिये २७ तवतो धरती कँपी अरु शेपजी व्याकुलभये तो वेचारो जाकेकिले २ में देखतेभये फिरतो देवतो के साथ सुखसे विराजमान भये तिनको दूतजाय वोलेकि चारवीर जो पहाड़ सरीखे आकाशदिशो को गोंजाते २८ तुम्हारी पुरीमें आपहुंचेहैं हेमहा असुरतुम क्या वैठेहो ऐसातिनका वचन सुनके सिंधुक्षणमेंही शोकसमुद्र में डूवा अरु दुर्गारानी भी चिता में भरी अरु सिंधुतभी कालापड़गया २६।३० अरु दोनों नीचा मुखकिये दुःखित हुये तोदुर्गावोली हे महाराज मेरा कहना तुमने मानानहीं ३१ तिसीका यह फलहुआ है अवचिंता करनेसे क्या होताहै जितने वो ऐसे कहती रही तितनेही वेचारो वीरतिसके सुवर्णसेवने आश्चर्य युक्तरत्न जड़ित अनेक शिखरवाले सभामंडप पै आपहुंचे ३२।३३ तोमहावल वाले भृंगी गणने वलसे तिनमंडप को फोड़ा तो तिसके टूक २ होके आंगन में चारोंओर गिरे फिरतो वेदोनों वीर भी भृंगीजीके पास आये ३४।३५ युद्धके भरावसे लाल २ मुखकियेत्रिलोकी ग्रसतेसेतोतिनकायेकर्म देखके सिंधुकी सेना सामनेआई ३६ जो ढाल तलवार धनुष बाण वरछी मूसल

लिये अरु इनचारों वीरोंको वेगसे मारो २ ऐसे ३७ कह २ के सेनावाले आये तो वे अनगिनतभी इनचारों से युद्धकरके आश्चर्य मानते भये ३८ अरु मैं मारोगा यामुझेमार ऐसे २ लामचा तबतो तिसदैत्य सेनाके साथ तिनका घोरयुद्ध भया ३६ तो रजसे अंधेरा भये शस्त्रोके प्रकाशसे देखते भये तबतो तिनचारोने चार करोड दैत्य मारे ४० अनेक वीरोको वलसे तिन्होने फटकारे सो कि तिन के पैर पकड २ अमाकर वे महाशूरवीर आकाशमें फेंकते भये ४१ तोवे सोंटूकहो २ कर गिरे अरुशर मन्त्र शस्त्र अरुपैर घातोंसे ४२ रणमें वो सारी दैत्यसेना नाशकी गई फिरतोवे सिंधुके घरमें जाकर सेजपे विराजमान तिसदैत्य के केशपकडके रणमें ले आये-तबतो सिंधु भी भारी २ अस्त्रोसे तिनके साथ युद्ध कर्ता भया ४३।४४ सोकि तिसनेसर्प अस्त्र छोड़ा तो तिनमें से तीनवीर सांपोंसे लपट गये तोशीघ्रही भृंगीगणने गारुड अस्त्र छोडा४५ फिर तिसकेअग्नि अस्त्रछोडेइन्होनेमेघअस्त्रछोडा फिरतिसनेवायुअस्त्रछोडतो भृंगीपर्वता स्त्रछोड़तेभये४६ फिरतोवे मल्लयुद्धसेलडतभयेतोनंदीजीनेतिसकेमस्त कपेसेमुकुट गिराया ४७ अरु भृंगीजी तिसके पीठमें क्रोधसेतिसको पीठमें चोटकरी और-वीरभद्रजीने सिंधुकेदेखते२तिसकोस्त्रीका चुट-ला पकड़ लिया ४८ अरु भूतराजने वैरभाव से तिसके लातमारी तो दुर्गारानीने नेत्रमोचके तिसे तैसा अर्थात् पिटतान देखा ४८ तो तिसके कर्मोको धिक्कारतीनिजघर भीतर भगगई तबतो अहंकारसे सिंधु दैत्यनेभी वीरभद्र का पैर पकडा ५० अरुघूमेसे नंदीजी को हतके अरुभृंगीजीकी शिखा पकड़के भूमिमें गिराता भया तो भूत राज आपही मूर्च्छित भया ५१ फिरतो सिन्धुने मस्तकपे मुकुट रख गलेमें मोतियो की मालाडालके अरुश्रेष्ठ घोड़े पर सवारहो शेषरहे सेनावालोंको वुलाकर ५२ आजमपरेश जीको मारोगा ऐसेकहिके फिर लड़नेलगा अरुवोसिंधुशीघ्र दशोंदिशोंको गाजाता गर्जताभया ५३ तिनचारोंवीरोने गणेशजीसे जाके कहा कि दैत्यसेनामें हमने सबका नाश किया ५४अरुहेगणेशजी सिन्धु दैत्यकोभी रणभूमिमेंले

घायेहैं सो आपशेषसेना सहित तिसे ससार समुद्रसे छुटावें ५५ अरुहे विघ्नराजजी हमहीं तिसे मारदेते पर आपकी आज्ञानथी ५६ इति श्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंयुद्धकावर्णनइसनामसेएकसौबाईस का अध्यायभया॥

एकसौतेईसका अध्याय॥

मयूरेशजीकासिंधुदैत्यसेयुद्धकोराघवसिंधुकोजलकोनाचर्णनकियाहै।

श्री० ब्रह्माजीबोले कि तब तो सिंधु दैत्य को आया देख के मयूरेशजी हर्ष अरुमयूरपर सवारहोके तुरत लडनेको चले १ चारों शस्त्रोंसे सारोदिशा विदिशाओं को प्रकाशित करते भये मेघकेस-मान शब्दसे आकाश गौंजातेभये २ तो तिन्होंने आगे युद्ध करनेको निश्चय भये सिंधुको देखाअरुसिंधुभी इनको युद्धमें बेर २ देखता भया जैसे सिंहको हस्ती अरुगरुडजीको सर्प देखे अथवा जैसे मधु कैटभ दैत्य विष्णुजीको देखे वा त्रिपरासुर शिवजीको देखे ३।४ अथवा जैसे शुंभ निशुंभ भवानीजीको देखें फिर तो वे दोनों युद्ध करनेलगे सोकि नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे आपसमें प्रहारकरते भये ५ तो तब तिनदोनों के देह गुडहल के फूल समान लालभये अरुशस्त्र भिडनेसे निकली अग्नि सारी पृथ्वीको जलाता भया ६ तबतो पर्वत द्वीप समुद्र सहित सारो पृथ्वीकोंपी फिर सिंधुने बाणले अग्नि अस्त्रसे तिसे मंत्रित करके ७ रणमें तिन मयूरेशजीको जलाने के लिये छोडा तोवो देवसेनाको जलाता दशों दिशोंमें फैला ८ तबतो मयूरेशजीने फांसेको जैच अस्त्रसे पढके राक्षससेनामें फेंका ९ तो तिससे वो अग्नि शांत भया अरु जलको धारोंसे भरे [illegible] से दिशा विदिशाढक गई १० अरु तिन्होंमें पर्वत डूबे अरु [illegible] तो दैत्यराज सोचने लगा कि ये प्रलयको आगया क्या [illegible] तो सिंधुने पवन अस्त्रसे तिनमेघोंको हटाये तोवो पव[illegible] अरु दशों दिशाको कंपाने लगा १२ तबतो मयूरेश[illegible] को हाथमें लेकेपढा सोकि पर्वत मांन्त बनाकर ति[illegible]

लिये अरु इनचारों वीरोंको वेगसे मारो २ ऐसें ३७ कह २ के सेनावाले आये तो वे अनगिनतभी इनचारों से युद्धकरके आश्चर्य मानते भये ३८ अरु मैं मारोंगा यामुझेमार ऐसें २ लामचा तवतो तिसदैत्य सेनाके साथ तिनका घोरयुद्ध भया ३६ तो रजसे अँधेरा भये शस्त्रोंके प्रकाशसे देखते भये तबतो तिनचारोंने चार करोड दैत्य मारे ४० अनेक वीरोंको बलसे तिन्होंने फटकारे सो कि तिन के पैर पकड २ भ्रमाकर वे महाशूरवीर आकाशमें फेंकते भये ४१ तोवे सोटूकहो २ कर गिरे अरुपर शस्त्र शस्त्र अरुपैर घातोंसे ४२ रणमें वो सारी दैत्यसेना नाशको गई फिरतोवे सिंधुके घरमें जाकर सेजपै विराजमान तिसदैत्य के केशपकड़के रणमें ले आये तबतो सिंधु भी भारी २ अस्त्रोसे तिनके साथ युद्ध कर्ता भया ४३।४४ सोकि तिसनेसर्प अस्त्र छोड़ा तो तिनमें से तीनवीर सापोंसे लपट गये तोशीघ्रही भृंगीगणने गारुड अस्त्र छोड़ा४५ फिर तिसकेअग्नि अस्त्रछोड़ेइन्होंनेमेघअस्त्रछोडा।फिरतिसनेवायुअस्त्रछोडतो भृंगीपर्वता स्त्रछोड़तेभये४६ फिरतोवे मल्लयुद्धसेलडतभयेतोनंदीजीनेतिसकेमस्त कपेसेमुकुट गिराया ४७ अरु भृंगीजी तिसके पीठमें क्रोधसेतिसको पीठमें चोटकरी और वीरभद्रजीने सिंधुकेदेखते२तिसकोस्त्रीका चुट- ला पकड लिया ४८ अरु भूतराजने वैरभाव से तिसके लातमारी तो दुर्गारानीने नेत्रमीचके तिसे तैसा अर्थात् पिटतात देखा ४८ तो तिसके कर्मोको धिक्कारतीनिजघर भीतर भगगई तबतो अहंकारसे सिंधु दैत्यनेभी वीरभद्र का पैर पकडा ५० अरुघूसेमें नंदीजी को हतके अरुभृंगीजीकी शिखा पकडके भूमिमें गिराता भया तो भूत राज आपही मूर्च्छित भया ५१ फिरतो सिन्धुने मस्तकपे मुकुट रख गलेमें मोतियों की मालाडालके अरुश्रेष्ट घोडे पर सवारहो शेषरहे सेनावालोंको बुलाकर ५२ आजमयरेश जीको मारोंगा ऐसेकहिके फिर लड़नेलगा अरुवोसिंधुशीघ्र दशोदिशोको गोंजाता गर्जताभया ५३ तिनचारोंवीरोंने गणेशजीसे जाके कहा कि दैत्यसेनामें हमने सबका नाश किया ५४ अरुहेगणेशजो सिन्धु दैत्यकोभी रणभूमिमेंते

आयेहैं सो आपशेषसेना सहित तिसे ससार समुद्रसे छुटावें ५५ अरुहे विघ्नराजजी हमहीं तिसे मारदेते पर आपकी आज्ञानथी ५६ इति श्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंयुद्धकावर्णनइसनामसेएकसै बाईसे का अध्यायभया ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

मयूरेशजीकासिंधुदैत्यसेयुद्धहोनाअरुतिसकोमारडालनावर्णनकियाहै ॥

श्री ब्रह्माजीबोले कि तब तो सिंधु दैत्य को आया देख के मयूरेशजी हर्ष अरुमयूरपर सवारहोके तुरत लड़नेको चले १ चारों शस्त्रोंसे सारोदिशा विदिशाओं को प्रकाशित करते भये मेघके स-मान शब्दसे आकाश गोजातेभये २ तौ तिन्होंने आगे युद्ध करनेको निश्चय भये सिंधुको देखाअरुसिंधुभी इनको युद्धमें बेर २ देखता भया जसे सिंहको हस्ती अरुगरुड़जीको सर्प देखे अथवा जैसे (मधु कैटभ) दैत्य विष्णुजीको देख वा त्रिपरासुर शिवजीको देखे ३।४ अथवा जैसे (शुंभ निशुंभ भवानीजीको देखे फिर तौ वे दोनो युद्ध करनेलगे सोकि नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे आपसमें प्रहारकरते भये ५ तौ तब तिनदोनों के देह गुडहल के फूल समान लालभये अरुशस्त्र भिड़नेमें निकला अग्नि सारी पृथ्वीको जलाता भया ६ तबतो पर्वत द्वीप समुद्र सहित सारी पृथ्वीकंपी फिर सिंधुने बाणले अग्नि अस्त्रसे तिसे मंत्रित करके ७ रणमें तिन मयूरेशजीको जलाने के लिये छोडा तौवो देवसेनाको जलाता दशो दिशामें फैला ८ तबतो मयूरेशजीने फांसको मेघ अस्त्रसे पढ़के राक्षससेनामें फेंका ९ तौ तिससे वो अग्नि शांत भया अरु जलकी धारोसे भये अंधकार से दिशा विदिशाढकगई १० अरु तिहोंसे पर्वत फूटे अरु वृक्षगिरे तौ दैत्यराज सोचने लगा कि ये प्रलयकी आगया क्या ११ फिर तौ सिंधुने पवन अस्त्रसे तिनमेघोंको हटाये तौवो पवन तब आकाश अरु दशो दिशाको कंपाने लगा १२ तबतो मयूरेशजीने निजकमल को हाथमें लेकेपढ़ा सोकि पर्वत शस्त्र बनाकर तिसे दैत्यपछोड़ा १३

तोंवो वृक्षोंको उखाड़ता अरु आकाशदिशोंको चमकाता भया दैत्य
सेनामें पहुंचा अरु बहुतसे पर्वत वर्षाये १४ तवतो अनगिनत पर्वतों
से भूमितल ढकगया तो तब न तो किसी को कहीं जानेको अरु न
रहने को सावकाश मिला १५ तवतो सिन्धु पवनास्त्रको रुका अरु
सवठौर पर्वत देखके वज्र अस्त्र छोड़ता भया तो तिससे वज्र निकले
१६ तवतो अनगिनत वज्रोंसे पर्वत चूर्णभये तवतो गणेशजीनेभी
निजअंकुशको वज्र अस्त्रबनाया १७ अरु तिनवज्रोंमें छोड़ा तबतो
वज्रोंकाही युद्धहोता भया तो तिनके शब्दसे भूमि आकाश दिशा
पातालये कंपे १८ अरु वज्रोंके घातसे अग्नि गिरालोकोंको जलाने
लगा फिर तो आपस में भिड़कटे वज्र अन्तर्धान भये १९ तब तो
महादैत्यने क्रोधसे निजमंत्रियोंको कहा कि इस अस्त्रों के प्रयोगसे
क्या होताहै मैं इस शिवसेनासें दूधपीने वाले गौरीसुतको छिनमें
मारताहूं २०।२१ ऐसेंवो महादैत्य गणेशजीको हवनेचला तो म-
यूरेशजीने भी शीघ्र विराट्रूपधार तिसेडराया २२ तो तिसरूपसे
आकाशफटाजो। गणेशजीपातालतककेनीचेचरणोंवालेदिशाभईकान
जिनके २३ अरु सहस्र पैर जिनके सहस्र नेत्र अरु सहस्र मस्तक
जिनके ऐसे आकाश भूमिको ढकके स्थितभये इनको देखके मूर्च्छित
हुवा भूमिमें गिरता भया २४जो गणेशजी एकहाथसे सारे आकाश
को ढके भये तबतो तिसने कुछसावधान चित्तहोके सूर्यजी के वरको
यादकिया कि २५ वरदेनेके समय मुझको महा पराक्रमी सूर्यजीने
कहा थाकि हेसिंधुदैत्य जो एकहाथ से आकाश कोढकै २६ सोतेरे
को शीघ्रमुक्ति पदमें पहुचावेगा इससे इसकेसाथ लड़ने से रहाजाना
जो होतव्य है सोहीहोगा २७ फिरजो तिसने देखातो येलघुशरीर
वाले होगये जो छेभुज ऐसे इन मयूरेशजी को देखके सिंधु परम
आश्चर्य को प्राप्त भया २८ फिरतो देव मयूरेश जो मयूर परसेउत
र के अरु शुद्धजल से आचमन करके परम मंत्र जपतेभये २९ अठ
तिससे निजपरशुको पढ़ा तो तेजसे दिशाढकगई अरु अमृत सहित
नाभिको ताक लगाकर अर्थात् तिस सिंधु की नाभिमें अमृत था

तिसे निकाल डालना विचारके ब्रह्माड को फोड़ते क्रोध से लाल नेत्र किये गिरिजा सुतजी तिस जलते भये से परशु को छोड़तेभये ३० । ३१ तौ वो छोड़तेही आकाश अरु दिशाविदिशाओं को गौं जाता अरु तेजसे वनखान पर्वत इनसहित भूमिकोप्रकाशित करता ३२ तबतौ सिन्धुदैत्य तिसकालके समान परशु को आता देखके जबतक ये घोरधनुष उठाय तिसमें बाण लगाताथा तिवनेहीं विस ने इसको अमृत सहित नाभि को हलके पन अर्थात् सहजसे फाड़ डालीतबतौअमृतनिकलगयेवेदैत्यपवनसेताड़ेवृक्षकेसमान३३।३४ शीघ्रभूमिमें गिरा जैसेवज्रसे हवापहाड़ पड़े तौ वो मुखफैला कर रुधिर उगलता ३५ प्राणों को छोड़ करके मयूरेशजी के प्रताप से अत्यंत दुर्लभ मोक्ष को प्राप्तभया सबलोगों के देखते २ वो महा-आश्चर्य भया ३६ तबतौ देवतो के विमानजो युद्ध देखने को ठहर रहे थे सो उतरे अरु इन विनायक जीपै पुष्प वर्षाभई अरु धीरे २ मेघगर्जे ३७ अरु कुछ २ वर्षे तौ वो भूमि का रज दबगया फिर सुखदायक पवन चला अरु सबदिशा प्रसन्न भई अरु गंधर्व कोमल गानकरते भये ३८ अप्सरानाचनेलगीं अरु देव मुनिजन अरु षडानन आदिवीर इन मयूरेश जीको स्तुतिकरतेभये ३९ सारेबोले किहम आदिमयूरेश जी कोप्रणात अर्थात् नम्रभये हैं जो मयूरेशजी परब्रह्म रूप अरु सच्चिदानंद रूपहैं अरु परम ईश गुणों के ईश गुणोंके समुद्रगुणोंसे परे ईश्वर ऐसे आदिमयूरेशजीको हमनमितहैं २।४० अरुजो जगत्से वन्दनीय अरु तपरमओंकारकेवलअरु गुणोंसे परेकारण विकल्प रहित अरु जगत्के पालक हारकतारक ऐसे आदि मयूरेशजीको नमितहैं २।४१ अरुजो महादेवजीके सुत अरु महादेव नायक महापुरुष अरुसदा विघ्न नाशकहैं अरुसदाभक्तोंके पोषक परम ज्ञानके भंडार ऐसे आदि मयूरेशजीकोनमिराहैं २।४२ अरु अनादि सुरादि गुणादि ऐसे अरु शिवाजीको संतोष देनेवाले अरुसदा सबोंसे वदनीयअरुराक्षसोंकेहता भुक्तिमुक्तिदाताऐसेआदि मयूरेशजीकोनमितहैं२।४३ अरुजोपरमभायावाले अरुमायाविषोंसे

श्रीनिर्जनोंपाये मुनियोंसे ध्याने योग्य आकाशकेकल्प अर्थात् रचने वाले जलोंके ईश अरु अगणित अवतार धारी अज्ञान के नाशक ऐसे आदि मयूरेशजीकोनमितहैं ४४ अनेक कार्योंके कारण अरु वेदों से अगम्य अर्थात् वेदभी जिनको नहीं कह सकें अरु वेदत्रयी करके बताये जो अनेक कर्म तिनके आदिकारण अरुकार्यसिद्धिके हेतु सुरेन्द्र आदिकोंसे सवनीय ऐसे आदि मयूरेशजीकोनमितहैं ४५ अरु त्रैलोक्य आदिमहा कालरूप कलातंत्ररूप अरुसदा अगम्यरूप मनुष्योंके ज्ञानके कारण अरु जनोंको सिद्धिदेते ऐसे आदिमयूरेशजी को हमनमित अर्थात् नम्रभये हैं ४६ अरु महेश्वर आदि देवों से सदा सेवा किया चरण जिनका अरु जो सदारक्षा कारक अरु जो योगी जनोंके ध्यानयरूप ध्येय अरुसदा कामनापूर्वक अर्थात् यथेच्छारूपीहो अरुकृपाके समुद्र ऐसेआदि मयूरेशजीको हमनमितहैं ४७ अरु हेविभो आपसदा भक्तों को निजेच्छासे परम आनदसुख दाताहो क्योंकि आपलोकोंपर शीघ्र परम कृपा करतेहो इनसे हे सुरश्रेष्ठ कामक्रोध आदि छैतरगोंकेवेग आपसदा नष्टकरो तिससे आपके भजनसेरलाघा योग्य अनत सुख देनेवाली हमारी मुक्तिहो ४८ अरुहे गजाननजी किस स्तोत्रसे हम आपकी स्तुतिकरें सकें आपतो लोकोंके प्रेमरूप गुणनिधानहो हमारी आपके गुण वर्णन करनेकी शक्ति नहींहै आपहीकाये समुद्रके समान जगत् रचने का विधानहै ४९ ब्रह्माबोले ऐसेस्तुति करके वे सारे फिर तिनकी आज्ञासे प्रार्थना करते भये हेमयूरेशजी जो आपने वचन कहा सोही किया ५० जोकि सारे देवोंसे न हननीय इसासिंधु दैत्यको माराहै फिरतो तहां गिरिजाजी आई अरुतिन्हें हाथफेरके हर्षी ५१ फिरतो शिवजीभी तहां आये अरु तिनके पीठपे हाथ फेरके बोले कि हेपुत्र येतुमने बहुत अच्छाकिया त्रानत्रिभुवन हर्षमेंभरा है ५२ अरु जो सिंधुका असाध्य वध आपने किया तिससे आपको श्रम नहीं है क्योंकि आप पराक्रमवाले अरु सर्व लोककीरक्षामें परायणहो ५३ अरु चार वेदोंसे न निरूपणीय अरु सर्व विद्या निधान हो ऐसे

कह २ के वे सारे तौ निज २ आश्रमको गये, ५४ फिर मयूरेशजीको नमस्कार करके देवता बोले कि इसे जो पढ़ेगे सो सब कामों को प्राप्तहोगे ५५ अरु सहस्रवेर पढ़ने से शीघ्रही बंदीमें पड़े को छुटावे अरु दश सहस्र पढनेसे मनुष्य असाध्यकामको भी सिद्धकरे ५६ सर्वत्र जयपावे अरु तिसको परमदुर्लभ लक्ष्मी मिले पुत्रवान् अरु धनवान् होवे अरु सबको बशमें करे ५७ ब्रह्माबोले कि ऐसे कह २ आज्ञा ले २ के सारे देवता निज २ धामकोपधारे अरु मयूरेशजीगणोंसहित अपनेघर आतेभये ५८ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमेंसिंधुदैत्यकामोक्षहोनाइसनामसे एकसौतेईसकाअध्यायभया है॥

एकसौचौबीसका अध्याय॥

सिंधुकेकुटुम्बवालोंकाविलापवर्णितहै।

श्री ब्रह्माजी बोले कि तब तो सिंधुदैत्य के गिरतेही जो शेषरहे थे सो गंडकीपुरीको चले तहां वे उग्रा दुर्गा चक्र पाणि आदि सब चिंतासे अत्यंत दुःखित होरहेथे तो तभी तिनको अनेक अपशकुन होनेलगे १।२ सो कोई तो तहां उत्तर की ओर शिरकरके सोया जिससे अशुभहो कोईगोडोंपे मूंड धरके उपस्थितभया ३ अरु कोई ठोढ़ीपे हाथरखके बेहपभये बैठे इतनेमें ही यमदूत सरीखे निजदूत तहां आये ४ जो अति कुम्हलाये मुखदीनभये कुछ भी न कहसके जब पूछेगये तो तिनके साथके और ही रणभूमिका वृत्तांत सुनाते भये ५ बोले कि अनगिनत भारी २ शूरवीरों को हतके सिंधु स्वर्ग को गया हम अज्ञानी रहगये इससे रोतेआते हैं ६ सो कि तहां देवतोंको हतेसुनके गिरिजा सुत आया अरु निज अस्त्रोंसे सिंधुके अस्त्र हटाकर निज पैना परशु छोड़ता भया ७ तिससे सिंधु धरतीमें गिरकर मरगया तो ऐसी वाणी सुनतेही दुर्गा चक्र पाणि अरु सारे नगरवाले मूर्च्छित हो गिरे अरु रोनेलगे अरु वो दुर्गारानी अत्यंतही मस्तक पीटती विलाप करनेलगी ८।९ खुलेबाल मूंडधुनती धर

तीनजोंनेजावें मुनियोंसे ध्यानके योग्य आकाशकेकल्प अर्थात् रचने वालेजनोके ईश अरु अगणित गुणवारे धारी अज्ञान के नाशक ऐसे आदि मयूरेशजीकोनमितहें ४२ अनेक कार्यांके कारण अरु वेदों से अगम्य अर्थात् वेदभी जिनको नहीं कह सके अरु वेदवयी करके वताये जो अनेक कर्म तिनके आदिकारण अरुकार्यसिद्धिके हेतु सुरेन्द्र आदिकोंसे सेवनीय ऐसे आदि मयूरेशजीकोनमितहें ४४ अरु ऐंठक आदिमहा कालरूप कलातंत्ररूप अरुसदा अगम्यरूप मनुष्योंके ज्ञानके कारण अरु जनोंको सिद्धिदेते ऐसे आदिमयूरेशजी को हमनमित अर्थात् नम्रभये हें ४६ अरु महेश्वर आदि देवो से सदा सेवा किया चरण जिनका अरु जो सदारक्षा कारक अरु जो योगी जनोंके चैतन्यरूप ध्येय अरुसदा कामनापूर्वक अर्थात् यथेच्छारूपीहो अरुकृपाके समुद्र ऐसेआदि मयूरेशजीको हमनमितहें ४७ अरु हेविभो आपसदा भक्तों को निजेच्छासे परम आनंदसुख दाताहो क्योंकि आपलोकोंपर शीघ्र परम कृपा करतेहो इससे हे सुरश्रेष्ठ कामक्रोध आदि अंतरगोंकेवेग आपसदा नष्टकरो तिससे आपके भजनसेश्लाघा योग्य अनंत सुख देनेवाली हमारी मुक्तिहोवे ४८ अरुहे गजाननजी किस स्तोत्रसे हम आपकी स्तुतिकर सकें आपतो लोकोंके प्रेमरूप गुणनिधानहो हमारी आपके गुण वर्णन करनेकी शक्ति नहींहै आपहीआपे समुद्रके समान जगत् रचने का विधा रहे ४९ ब्रह्मावोले ऐसेस्तुति करके वे सारे फिर तिनकी आज्ञासे प्रार्थना करते भये हेमयूरेशजी जो आपने वचन कहा सोही किया ५० जोकि सारे देवोंसे न हननीय इससिंधु दैत्यको माराहै फिरतो तहां गिरिजाजी आदि अरुतिन्हें हाथफेरके हर्षा ५१ फिरतो शिवजीभी तहां आये अरु तिनके पीठपै हाथ फेरके बोले कि हेपुत्र येतुमने बहुत अच्छाकिया अबत्रिभुवन हर्षमेंभरा है ५२ अरु जो सिंधुका असाध्य वध आपने किया तिससे आपको श्रम नहीं है क्योंकि आप पराक्रमवाले अरु सर्व लोककीरक्षामें परायणहो ५३ अरु चार वेदोंसे न निरूपणीय अरु सर्व विद्या निधान हो ऐसे

कह २ के वे सारे तौ निज २ आश्रमकोगये ५४ फिर मयूरेशजीको नमस्कार करके देवता बोले कि इसे जो पढ़ेगे सो सब कामों की प्राप्तहोगे ५५ अरु सहस्त्रवेर पढ़ने से शीघ्रही वंदीमें पड़े को छुटावे फिर दश सहस्त्र पढनेसे मनुष्य असाध्यकामको भी सिद्धकरे ५६ सर्वत्र जयपावै अरु तिसको परमदुर्लभ लक्ष्मी मिलै पुत्रवान् अरु धनवान् होवे अरु सबको वशमें करे ५७ ब्रह्माबोले कि ऐसे कह २ आज्ञा ले २ के सारे देवता निज २ धामकोपधारे अरु मयूरेशजीगणोसहित अपनेघर आतेभये ५८ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमेंसिंधुदैत्यकामोक्षहोनाइसनामसे एकसौतेईसकाअध्यायभया है॥

एकसौचौबीसका अध्याय॥

सिंधुकेकुटुम्बवालोंकाविलापवर्णितहै।

श्री ब्रह्माजी बोले कि तब तौ सिंधुदैत्य के गिरतेही जो शेषरहे थे सो गंडकीपुरीको चले तहां वे उग्रा दुर्गा चक्र पाणि आदि सब चिंतासे अत्यंत दुःखित होरहेथे तौ तभी तिनको अनेक अपशकुन होनेलगे १। २ सो कोई तौ तहां उत्तर की ओर शिरकरके सोया जिससे अशुभहो कोईगोड़ोंपे मूंड धरके चुपस्थितभया ३ अरु कोई ठोढ़ीपे हाथरखके बेहर्षभये बैठे इतनेमें ही यमदूत सरीखे निजदूत तहां आये ४ जो अति कुम्हलाये मुखदीनभये कुछ भी न कहसके जब पूछेगये तो तिनके साथके और ही रणभूमिका वृत्तांत सुनाते भये ५ बोले कि अनगिनत भारी २ शूरवीरों को हतके सिंधु स्वर्ग को गया हम अज्ञानी रहगये इससे रोतेआते हैं ६ सो कि तहां देवताको हतेसुनके गिरिजा सुत आया अरु निज अस्त्रोंसे सिंधुके शस्त्र हटाकर निज पैना परशु छोड़ता भया ७ तिससे सिंधु धरणी में गिरकर मरगया तौ ऐसी बाणी सुनतेही दुर्गा चक्र पाणि अरु सारे नगरवाले मूर्च्छितहो गिरे अरु रोनेलगे अरु वो दुर्गारानी अत्यंतही मस्तक पीटती विलाप करनेलगी ८ ९ मूर्च्छानको धर-

तीपर शिर मार २ के भारी शब्द करती लोटती भई १० फिरसिंधु
की माता उग्रा अरु चक्रपाणि पिता तैसेही बहुतसे पुरवाले हाथों
से मस्तक पीटते विलाप करतेभये ११ कई दुःखीभये मुख शिरमें
धूरडालतेभये अरु कई हाथ के वटकाभरते अरु हाथों को भूमि
में मारते थे १२ त ं उग्रा विलाप करती है कि-हे पुत्र सिंधु
अनेक प्रकारके प्रयत्नोंसे सो कितप सूर्यजीकी प्रसन्नता नमस्कार
स्तुतिदानव्रत इतनेउपायोंसे प्राप्तभया तूशूरवीरसवेरेसे कहांचला
गया १३ त्रिलोकी के स्वामी करके में त्रिलोकी भरमें सराही जा
तीथी अरु अवलोग मुझे धिक्कारेंगे कि तूभागफूटीहै १४ पहिले तैं
ने यमराज को जीताथा फिरतिससे कैसे समागमभया तनेंइसे भी
क्यों न ीं जीता १५ हेपुत्रतेरे स्वर्गको गये गिरिजासुतसबकाहित
कारीभया तूमुझे विनपूछे सुखदायक स्वर्गमें कैसे चलागया है १६
हे पुत्रमेरे दुःखपाये तुझको कैसे संतोष होगा हेपुत्रतेरे गर्जते
मेघभीनहीं गर्जते ये १७ ऐसाभी तू अवरण अंगण में विनशब्द कैसे
पड़ाहै फिरदुर्गा रानीबोलीकिविधातानेस्त्री पुत्रकादेहतौधर्मशास्त्रसे
एककरदिया परमूढ मति ... जिससेमैं
भी साथही मरजाती सुहाग ... मैने ... सावित्र को
गिनीथी तो अ ... क्याथी ... कैसेहई
जब आप नि...
अंगणतल
बुलाते हो मेर।
ऐसा स्वर्गसुख...
अपराध साधु...
कैसे छोडतेहो २
प्यार कियाथा जो
२१ अम्बावोले तबत
कि
स...

हितहो सो करै २६ अरु हितका विचार किये भी कृपावाले ईश
जो मोक्षदेते हैं जो निर्गुण चिदानंद दान ब्रह्मस्वरूपी २७ जो
पराई दयासे जन्मलेते लोक का भला करनेवाले ऐसे मयूरेश जी
जिन्होंने संग्राम में तिसे सन्मुख माराहै २८ अरुजीवका तो जन्म
मरण कहीं भी नहीं होता है अनादि निर्गुण नित्य निरंजन वि होने
से ऐसावेद निश्चय है २६ येप्राणी स्वार्थकोही रोताहै अरु
तिस प्रेतका भला नहीं चाहताहै कि अतुलबोझ सम्हारनेवाले
भी भूमिभरे का भार सम्हार नहीं सक्ती ३० अरु नशेष कच्छप
बराहजी प्रेतभार सम्हार सक्ते हैं तबतो ऐसे २ वृद्ध वाक्यों करके
समझाये वे शोक त्यागते भये ३१ अरु फिर दुर्गा चक्रपाणि उग्र
ये सखियो सहित अरु सब नगरवाले भी रणभूमि में गये ३२ अरु
सेवकों सहित मरे पड़े सिंधुको देखा जो चंचलनेत्र वाले मुखको
फाड़े पड़ाथा ३३ रुधिर झराता दुर्गंधि सहित व्याघ्रादिकोंसे घिरा
तहांवे शोककरते तिसके चारों ओर बैठगये ३४ फिर तिसका शिर
गोदमें लेके दुर्गाने भारी शब्दसे रुदन किया कि हानाथ में पहिले
हाथोंसे आपकेपैर दाबतीथी ३५ अबमें इनलोगोंमें नहीं दाबसक्ती
हे प्राणनाथ उठो शत्रुकेजीते आपनिद्रा कैसे लेतेहो ३६ ऐसेवो
तिसके मुखपर मुखधर कर महाही हाहाकार करती भई तो बड़े
बूढ़े ज्ञानियोंने तिसे बरजी फिरतिसका पिताचक्रपाणिअरुमाताउग्रा
बोली कि हेपुत्रउठोशत्रुसे संग्रामशेषरहै क्यासोताहै सोकि३७।३८
इन्द्रके वज्रसे हतास इसबालकोंके युद्धमें कैसेभूमिपे पड़ाहै ३६
जिसतेंने भृकुटी छोड़नेसेही कालकोजीता ऐसा तू इसके वशमेंकैसे
आगयाहै ४० हेसमर्थकुटुमनआनंददायक वचनकटुजिसवेरवचनसे
पहिले त्रिभुवन कंपताथा ऐसा तू अब मंदबलभया बोलता नहीं है
४१।४२ हमने क्या अपराधकिया जिससे नहीं बोलता है या क्रोध
वशसे चुपहोरहाहै तूअशेष सेनासहित पहिले युद्धकरता था
अब कैसे विह्वल होगयाहै फिर तो ज्ञानी वृद्धजन तिनको अनेक२
दृष्टान्तों से समझाते भये कि मरेके पीछे रोया नहीं जाताक्या वश

रथ सुत रामजी परलोक को नहीं गये थे ४३। ४४ जो पराक्रम से रणमें शत्रुओंको जीतके निज धामको रघुवर भी सधारते भये और भी अनेक राजा मरगये सो अनेक प्रकार की कीर्ति विख्यात करके स्वर्गमें स्थितभये सुखभोगरहेहैं ४५ ब्रह्मावोले तब तिन्होंने बेग चंदन काष्ठ से तिसका दाह संस्कार किया अरु गुणवाली पतिव्रता दुर्गारानी तिसके साथही सती होगई ४६ फिर तौ नगर निवासियों सहित चक्रपाणि मयूरेशजी के पास गया अरु हाथबांध के नमस्कार करके शब्द से स्तुति करताभया ४७ राजा बोला कि हे प्रभो आप निर्गुण परमात्मा अरु चराचर संसार की गतिहो अरु श्रुति गोचर गणेश वसरहित विश्वके नेता अर्थात् स्वामीहो ४८ आपकी मायासे मोहित हुये देवता भी आपको नहीं जानते अब मैं अरु ये नगरवाले आपके दर्शनसे धन्यभये हैं ४९ ब्रह्माबोले ऐसे चक्रपाणि से स्तुतिकिये करुणासागर मयूरेशजी प्रसन्नभये ये कहते भये सर्व शास्त्रार्थ तत्त्ववेत्ता देवजी बोले कि हे हतपुत्रवाले राजा चक्रपाणि तू मुझसे वरमांग ५० तौ राजा बोला कि हे देवेश जो आप प्रसन्नभये अरु जो मुझको वरदेना है तौ हमारे घर चलो इस सब नगरीको पवित्र करो ५१ ब्रह्माबोले चक्रपाणि का ऐसा वचन सुनके गणेशजी मयूरपै सवार भये सो कि गौरी सुत देव जी नगरको चले ५२ तौ अगाड़ी २ गया अरु सारे मुनिजन हर्ष भरे चले सब बाजे गाजों सहित गंडकीपुरीको चले ५३ जो नगरी अनेक ध्वजा पताकोंसहित अरु छिड़के राह जिसमें ऐसी गंडकी पुरीको जातभये ५४ इसप्रकार श्रीगणेश पुराण उत्तरखंडमें श्रीगणेशजी कोगंडकीपुरीमेंजानाइसनामसेएकसचौवीसका अध्यायभया॥

एकसौपचीसका अध्याय

श्रीगणेश ... सिद्धि बुद्धि ... ॥

श्रीब्रह्माजी बोलेकि तबतौ अगाड़ी गये चक्रपाणिने निजसेना को सजवाई वहुं २ बिछौने वस्त्रोंसे अरु धजा पताका चंवरोंसे

जहांथंभोंमें जडे अनेक रत्न दिपरहे जहांगया मनुष्यनिजतेजछोजें सर्पसरीखा काला देखपड़े ऐसी २ ध्वजापताकों से सजीपुरी-को मयूरेशजी देखते भये अरु तिनको घरोकेऊपर चढीराक्षसोंकीस्त्रियें देखतीभई ३ फिरतो चक्रपाणि करके वंधीसेछोड़े वेदेवताभी तिनके सन्मुख आये सोकि विष्णु इंद्र अग्नि कुबेरभी ४ पवनसूर्य, चद्रआदि सारे बाजे गाजेसे आयनिज २ वाहनोंसे उत्तर २ के सारे तिनमयूरेशजीको प्रणामकरते भये ५ अरु देवता अरुसब पुरवासी इनको आलिंगन करते भये अरु विष्णुजी भी मयूरेशजी को देखतेही हर्ष भये लपटके तिनसे मिले ६ अरु फिर विष्णु आदि सब-देव सिंधु वध करनेसेतिनकीसराहनाकरतेभये सारेबोलेकिजिसनेछिनमेंस्वर्ग को दवाया ऐसे सिंधुकोजिन्होंने मारा ७ अरुहमकोनिज २ स्थानदिये ऐसाकोई नदेखा नसुना ऐसेइनको जो यहां वैष्णव अरु शैव, अरु शाक्त तथा सूर्य भक्तहैं सोभीसब इन्हींको तिस २ रूपसे पूजो ऐसे कहहे मयूरेश आपकी जयहोऐसे परमहर्षसहित पुकारे ऐसीवाणी सुनके ८। ९ बालक अरु स्त्रियेंभी विस्मित मनहुये सबवृद्ध,बालक भक्तिचित करके तिनको पूजने भये १० फिरदेव मयूरेशजी चक्रपाणि के घरमें सुंदर सिंहासनपे विराजे ११ अरु तिनके चारों ओर देवता बैठे अरु मुनिजन अरु सातक्रोड़ गणभी विराजमान भये १२ अरु सबवंदी जन देवता राजा स्तुति करते भये अप्सरा नाचने लगीं अरु नारद आदिसब गानेबजानेलगे १३ फिरतिनस भोंको सभामें विधिसे पूजके चक्रपाणि बोलाकि मेरा जन्म अरु कर्मधन्यहै १४ जिसमेरी सभामें इंद्रआदि लोकपाल विराजमान होरहेहैं अरु तिनके बीचमें आप सजेहो मुझको सैकड़ों जन्मों के संचित शुभकर्म से मयूरेशजीका दर्शन भयाहै १५ ब्रह्माजी बोलेकि तबतो मयूरेशजी को पहिले पूजदेख के जगदीश्वरकी मायासेमोहित भ्रांतभया इन्द्रबोलाकि १६ ब्रह्मा अरु विष्णु जो जगकी उत्पत्ति करने वाले तिन्हेंछोड़ के है मूर्ख चक्रपाणि तूने इनको पूजा है १७ हम सबको विचार के तथा जगत्केसंहारक शिवजीकोभी अरु

रचना पालना संहार करती भगवती को अरु त्रिभुवन के स्वामी वेद कर्म प्रवर्तक सूर्यजीको १८।१६ ऐसे ७ इन सबोंको त्यागके तैनेइस बालक को पूजाकरी सोये अच्छानहीं किया २० ब्रह्मा बोले ऐसे इन्द्रके कहतेही चक्रपाणि बोलाकि मैने रुद्र सूर्य कुबेर इनसे अरु तुझसे पवन अग्नि सेभी २१ सिंधुदैत्य के नाश करने से अरु सबदेवतों को बंधो से छुडानेसे भी गणेशजी हो भारी बलवाले देखने में आये हैं २२ जो भूमिभार उतार ने को शिवजी के घर अवतार भयेहैं जो परमेश्वर अनंत शक्तिमान् अन गिनत दैत्यहता २३ ब्रह्मा बोले कि इन्द्र के ऐसे कहते २ ही तबतो सबदेवतों ने भारी शब्दसुनातो कईमूर्छित होगिरेब्रह्माण्ड फूटने के भयसे भीतभये २४ अरु सारी पृथ्वी कंपोतब कुछभी न ज्ञानरहाक्रोड सूर्य्यों के तेजसे आकाशशोघ्र ढकगया २५ फिरतो तिन देवतों को वे देवगणेश जी देखेजो अनेक अलंकार सजे दश भुज गजाननजी २६ ऐसे स्वरूप को देखतेही विस्मितभये देवता फिरतिनको पचदेवता रूपदेखते भये २७ सोकि पहिले बीच में तो कमल आसन ब्रह्मा रूप फिरशिव स्वरूप अग्निमें अरुनैऋत्य में सूर्यरूप वायव्य में भवानीरूपा २८ तैसे ईशान्यमें नारायण रूप ऐसे तिनको देखकेतब देवता थकितभये तबतो वे अमनिवारिणी आकाश वाणी का श्रवण करते भये २९ कियेही पांचप्रकार भये गणेशजी तुमसब को आराधन करने चाहिये जो आदिअंत रहित सर्वव्यापक देव गजानन जोहैं ३० येहीसब विघ्न विनाशी जो सदापूजनीयहैं देवमनुष्य यक्षअरु नागइन सबोंसे ३१ इनहीं के पूजन से पांचोंका पूजनहोजायगा इनमें कभी भेद बुद्धिनकरे जो करे सोनर्कमें पडै ३२ श्रीब्रह्माजी बोलेकि तबतो येइन्द्रादि देवता ऐसी आकाशवाणी सुनके तिनमपरेश्वरजीको शुंडादंडसेविराजमान् भये ओंकार रूपदेखते भयेतबतो सचेतभये देवता तिसप्रीति अरु गर्वको तजके जय २ शब्दोंसे सबके अंतर्यामी तिनविनायक जीको पूजने भये ३३।३४ फिरतो हर्षसे चक्रपाणिने गणेशजी को पूजा

करी सोकि पंचामृत अरु शुद्ध जलसे दिव्य वस्त्र अलंकारों से ३५
पुष्पधूप दीप अरु अनेक नैवेद्यों से फलतांबूलोंसे अरु अनेक सी
दक्षिणाओंसे ३६ आरती अरु मंत्र पुष्पांजलियोंसे अरु नमस्कार
स्तुतियों से अरु तैसेही भक्ति करके सब देवताओं को भी पूजे
अरु राजा चक्रपाणि तिनसे बोला कि मैं आपके पूजने से धन्यहु
क्योंकि ऐसा आपसबोंका येकत्रसमागमकभी नहीं भयाया ३७।३८
तबतो तहां नारद जी प्रसन्नभये ब्रह्माजी से बोले हेकमल ज-
न्माजी मैंनेआपकी आज्ञा से सिद्धि वृद्धिके विवाह के लिये गौरी-
शंकरजी को वृतान्त जनायके पहले ही निश्चय करलियाहै सो
ये सबलक्षणवती कन्या सुंदर प्रकार से मयूरेशजी को विवाहनी
चाहिये ३९।४० फिरतोतिन्हे देखकामदेवसे आतुरभये सबदेवताभी
ब्रह्माजी से पृथक् २ आदर सहित याचना करते भयेकि मुझेदेवो २
४१ तबतो ब्रह्माजीने कन्याओंके हाथमेंमाला देके कहाकि तेतीस
करोड़ देवताओंमेंसे जोनसा तुम्हारेमनमें जचे ४२ हेदेवियो तिसी
को मेरे आगे इनमालासे वरलेवो फिरतोवे सिद्धिवृद्धि सारेदेवता-
ओं को तजके ४३ हर्षसे मयूरेश जीकेही गलेमें माला डालतीभई
तबतो वेमन हुये देवताओंने लंबे २ श्वासछोड़ अरु घुटनों परबैठी
तिन दोनों करके मयूरेशजी शोभितभये तो ब्रह्माजीने यथाविधि से
तिनका विवाहकिया४४।४५ अरु सभामें बोलेकिमैंने मनकामनो-
रथ पाया ऐसे कह मयूरेशजी को कन्या सौंपदई अरु कहाकि अब
तक तौमैंने इनको बहुत यत्नोंसे पालीथी अरुअब आपको सौंपदई
है सो इनकोरक्षाकरो४६।४७ तबतो इन्द्रादिक देवता मयूरेशजीसे
बोलेकि आपके प्रसाद सेही हमबंधी से छूटेहैं ४८ अरु सिंधुकी
मोक्षभई अबहम आपकी कृपासे गौतम आदि मुनियों सहित आप-
की आज्ञासे निज २ आश्रमों को जावेंगे४९।५० ब्रह्माजीबोले कि
तबतो मयूरेशजीने हर्षसे तिन जाने वालोंको आज्ञादीनतो गौरीजी
दोनोंबहुओंको आदरसे गोदमेंलेके अरुमयूरेश्वर जीकोभी छातीमें
लगाकर शिवजीसहित परमहर्षकोप्राप्तभई अरुवस्त्र आभरण बहुत

रचना पालना संहार करती भगवती को अरु त्रिभुवन के स्वामी वेद कर्म प्रवर्तक सूर्यजी को १८।१६ ऐसे २ इन सबों को त्यागके तैंनेइस वालक की पूजाकरी सोये अच्छानहीं किया २० ब्रह्मा बोले ऐसे इन्द्रके कहतेही चक्रपाणि बोलाकि मैंने रुद्र सूर्य कुबेर इनसे अरु तुझसे पवन अग्नि सेभी २१ सिंधुदैत्य के नाश करने से अरु सबदेवतो को बंधी से छुडानेसे भी गणेशजी ही भारी बलवाले देखने में आये हैं २२ जो भूमिभार उतारने को शिवजी के घर अवतार भयेहैं जो परमेश्वर अनंत शक्तिमान् अन गिनत दैत्यहर्ता २३ ब्रह्मा बोले कि इन्द्र को ऐसे कहते २ ही तबतो सबदेवता ने भारी शब्दसुनातो कईमूर्च्छित होगिरेब्रह्माण्ड फूटने के भयसे भीतभये २४ अरु सारीपृथ्वी कंपीतब कुछभी न ज्ञानरहाक्रोड सूर्य्य के तेजसे आकाशशीघ्र ढकगया २५ फिरतो तिन देवतो को वे देवगणेश जी देखेजो अनेक अलंकार सजे दश भुज गजाननजी २६ ऐसे स्वरूप को देखतेही विस्मितभये देवता फिरतिनकी पंचदेवता रूपदेखते भये २७ सोकि पहिले बीच में तो कमल आसन ब्रह्मा रूप फिरशिव स्वरूप अग्निमें अरुनैर्ऋ त्य में सूर्यरूप वायव्य में भवानीरूपी २८ तैसे ईशान्यमें नारायण रूप ऐसे तिनको देखकेतब देवता भ्रमितभये तबतो वे भ्रमनिवारि णी आकाश वाणी का श्रवण करते भये २९ कियेही पांचप्रकार भये गणेशजी तुमसब को आराधन करने चाहिये जो आदिअंत रहित सर्वव्यापक देव गजानन जोहैं ३० येहीसब विघ्न विनाशी भी सदापूजनीयहैं देवमनुष्य यक्षअरुनागइन सबोंसे ३१ इनहीं के पूजन से पांचोंका पूजनहोजायगा इनमें कभी भेद बुद्धिनकरे जो करे तौनर्कमें पड़े ३२ श्रीब्रह्माजी बोलेकि तबतो वेइन्द्रादि देवता ऐसी आकाशवाणी सुनके तिनमयूरेश्वरजीको सूंडदंडसेंविराजमान अर्धओंकार रूपदेखते भयेतबतो सचेतभये देवता तिसभ्रांति अरु गर्वको तजके जय २ शब्दोसें सबके अंतर्यामी तिनविनायक जीको पूजते भये ३३ । ३४ फिरतो हर्षसे चक्रपाणीने गणेशजी की पूजा

करी सोकिपचामृत अरु शुद्ध जलसे दिव्य वस्त्र अलंकारों से ३५
पुष्पधूप दीप अरु अनेक नैवेद्यों से फलताम्बूलोसे अरु अनेक सी
दक्षिणाओसे ३६ आरती अरु मंत्र पुष्पांजलियोसे अरु नमस्कार
स्तुतियां से अरु तसेही भक्ति करके सब देवताओ की भी पूजे
अरु राजा चक्रपाणि तिनसे बोला कि मैं आपके पूजने से धन्यहूं
क्योंकि ऐसा आपसबोंका येकत्रसमागमकभी नहीं भयाया ३७।३८
सबतो तहां नारद जी प्रसन्नभये ब्रह्माजी से बोले हेकमल ज-
न्माजी मैंनेआपकी आज्ञा से सिद्धि बुद्धिके विवाह के लिये गौरी-
शंकरजी को वृतान्त जनायके पहले ही निश्चय करलियाहै सो
ये सबलक्षणवती कन्या सुंदर प्रकार से मयूरेशजी को विवाहनी
चाहिये ३९।४० फिरतोतिन्हे देखकामदेवसे आतुरभये सबदेवताभी
ब्रह्माजी से पृथक् २ आदर सहित याचना करते भयेकि मुझेदेवो २
४१ तबतो ब्रह्माजीने कन्याओके हाथमेंमाला देके कहाकि तेतीस
करोड़ देवताओमेंसे जोनसा तुम्हारेमनमें जचे ४२ हेदेवियो तिसी
को मेरे आगे इनमालोसे वरले यो फिरतो वे सिद्धिबुद्धि सारेदेवता-
ओ को तजके ४३ हर्षसे मयूरेश जीकेही गलेमें माला डालतीभई
तबतो वेमन हुये देवताओने लवे २ श्वासछोड अरु घुटनो परबैठी
तिन दोनों करके मयूरेशजी शोभितभये तो ब्रह्माजीने यथाविधि से
तिनका विवाहकिया ४४।४५ अरु सभामें बोलेकिमैंने मनकामनो-
रथ पाया ऐसे कह मयूरेशजी को कन्या सौंपदई अरु कहाकि अब
तक तोमैंने इनको बहुत यत्नोंसे पालीथी अरुअब आपको सौंपदई
है सो इनकीरक्षाकरो ४६।४७ तबतो इन्द्रादिक देवता मयूरेशजीसे
बोलेकि आपके प्रसाद सेही हमवधी से छूटेहैं ४८ अरु सिंधुकी
मोक्षभई अबहम आपकी कृपासे गौतम आदि मुनियों सहित आप-
की आज्ञासे निज २ आश्रमों को जावेंगे ४९। ५० ब्रह्माजीबोले कि
तबतो मयूरेशजीने हर्षसे तिन जाने वालोंको आज्ञादी अरु गौरीजी
दोनों बहुओंको आदरसे गोदमेंलेके अरुमयूरेश्वर जीकोभी छातीसे
लगाकर शिवजीसहित परमहर्षकोप्राप्तभई ५१।५२

से दान किये ५१ जो मनुष्य इससिंधुके वध अरुमयूरेशजीके विवाह के कथाको सुनै तो सबकामोको प्राप्तहोवे ५२ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंसिंधुकावध अरुगणेशजीकाविवाहहोनाइसनामसेएकसो १२५ का अध्यायभयाहै ॥

एकसौछब्बीसका अध्याय ॥

श्रीगणेशजीकरकेग्रामक्षात्रिकमयूरध्वजपैदानामवर्णनहै ।

श्रीब्रह्माजी बोले फिरतो विवाहभये मयूरेशजी मयूरपर सवार होकर शीघ्र मयूरेश पुरको जानकी इच्छा करते भये१तो तिसछिन में देवता भी निज २ वाहनोपै चढ २ के चले अरु मुनिजन चले २ तबतो सारे नगरवाले स्त्रीवृद्धवालकों समेतचक्रपाणिराजानगरसे बाहिर आया ३ अरुसब बाजेबजे अरु अप्सरा नाचने लगीं जबतक सबसमेत मयूरेशजी रणभूमिमे पहुंचे तितनेही षडानन आदिवीरो ने मयूरेशजीसे प्रार्थनाकरी वीरबोले कि हमारी सेनावाले वहतसे हतेगयेथे सो आपकी दृष्टि पड़नेसे सब उठखड़े भयेहैं तिन्हें जिये देखके सारेराजा नगर वालोंने परम आश्चर्यमाना अरु अच्छाभया २ बोले फिर तो योजनभर चलके मार्गमें ठरे ४।५।६।७फिरतो मयूरेशजी राजाचक्रपाणि के शिरपर हाथधरके सोकिशत्रुओं को भय कारी दशों भुजोंसे स्पर्श करके बोले कि मेरेवचनसे तू नगर वालों को लेकेनिज गंडकी पुरीको चलाजा ब्रह्मा बोले ऐसातिनका वचन सुनके राजाशीघ्र आशीछोड़ता भया अरु शोक सहित सब नगर वाले प्रणाम करके बोले कि जहां आप जातेहो तहांहीहमें भी ले- चलो अब यहांनछोड़ो ८।९।१०जो पहले हीनहीं आते तो हमको दुःखनहीं होता ऐसेकह नमस्कार करके तिन की आज्ञा लेलेकर आये ११ फिर चक्रपाणि भी नमस्कार करके चला आया तोयेसारे वहुतसे तिनके अद्भुतगुण वर्णन करते २ शीघ्रनगरमें पहुंचकेचक्र- पाणिसे हर्षितकिये नगरवाले निज २ घरगये अरुचक्रपाणि निज महलोमें पधारा१२।१३अरुपांचों देवतोंके मंदिरबनवाये अरुतिनमें

पाचोंयत्न मूर्तियोंका स्थापनकरवाया १४ अरुभक्ति भावसहितप्रति दिन तिनका पूजन कर्त्ता भया अरुमयूरेशजी शीघ्रनिजपुरीकोपहुंचे १५ तो सारेगण में तिन्हें देखकरके परमआश्चर्यको प्राप्तभयेजिस सभामें रत्नजड़े थंभे अरुसुवर्णकी भीतेंथी १६ जिनमें येकमनुष्यभी अनगिनत जनो सहित देख पड़ताथा ऐसीतिसरेमणीय सभामें प्रवेशही अरु ब्रह्मादि देवतोंको वहां विराजमान करके १७ अरु बीचमें सब ओरसे लोकोंको प्रकाशित करते आपविराजमान भये पूर्वमें तो तिन्होंने रतिसहित काम देवको देखा १८ अरु (मार्जारी) देवी जो लोकमें विख्यात सुख दायक तिनको देखी दक्षिणदिशामें गौरी शंकरजी को देखे १९ अरुतिसेआगे (विरजादेवी) देखी जो भक्तोंके सबकास पूरनेवाली फिर पश्चिम दिशामें धरती धरे वराह जीको देखे २० अरु (आश्रया) देवी देखी जोसबविघ्न हरनेवाली श्रेष्ठ फिर उत्तरदिशामें लक्ष्मी नारायणजी देखे अरुसबकी मुक्तिदाता विख्यात (मुक्ता) देवीदेखीजिसके दर्शनकी चाहसे तेंतीसकोटदेवता खड़े २१।२२ जनको उचितहै कि भादूपदकीचौथकोगजाननजीको पूज करके फिर पूर्व दिशामें जाकरके मार्जारी देवीकी पूजाकरे २३ ब्राह्मणोंको दानदके अरुगजाननजी का ध्यान स्मरण करके मौन नेम धारण करके अरु शूद्रको वाणी नहीं सुने २४ अरु सावधान पवित्र भया कीड़ पतंग आदि जीवोंको न मारे अर्थात् देख२के पैर धरे फिर न्हायके देवोंके देव गजाननजीको पूजाकरे २५ फिर पहलेही क्रमकरके दूसरेदिन फिर तैसेही तीसरे दिन क्रमसे करे सो कि तैसेही दूसरे दिन विरजादेवीको पूजाकरे २६ फिर तीसरे दिन पश्चिम द्वारपे आश्रया देवीको नमस्कार करके पूजे फिर चौथके दिन तैसेही उत्तर दिशामें २७ मुक्ता देवीको पूजके फिर तिसही दिन अर्थात् चौथको मयूरेशजी की पूजा अरु भारी उत्सव तथा रात्रिको जागरण करे २८ असभक्ति से श्रेवपूर्वक जोढार पूजाकरे सो मयूरेशजी को प्रसन्नतासे सबकामों को प्राप्तहोवे २९ अरु जो समर्थहो तो चौपही को चारोंद्वारोंमें पहिलेकी नाईं पूजाकरे अरु

आदिअंतमें स्नानकरके मयूरेशजीके दर्शनकरे तो प्रसन्नभये गजा-
ननजी तिसको शीघ्रही फलदेवें तिसे शुक्लपक्षकी परिवासे लेके
ब्रह्मचर्यधर्ममेंरहे ३०।३१ फिरचौथको प्रातकाल स्नान करके वि-
धिसे नित्यकर्म समाप्तकर मयूरेशजी की पूजाकरे अरु नमस्कार
पूर्वक इकीस प्रदक्षिणा करे सोकि पूर्वद्वारमें शीघ्रमार्जारी देवी की
पूजाकरे ३२।३३ फिर ऐसेही भवानी अरु अभया देवीकोतथामुक्ता
देवीको पूजाकरे फिर चौथको कुक्कुदिनरहे गजाननजीको पूजाकरे
३४ सोकि षोडश उपचारो से तिन विनायकजी को पूजके रातको
जागरणकरे गान बाजे आदिशब्दोसे ३५ फिर निर्मल प्रभातभये
फिर गणेशजीको पूजाकरे फिर यथाशक्ति ब्राह्मणोके साथ पारणकरे
अर्थात् व्रतखोले ३६ अरुतिनको सुवर्ण अन्नधन वस्त्र गोदान देवे
ऐसे जो मनुष्यकरे सो असाध्यभी कार्यकोसिद्धकरे ३७ अरु पुत्रपौत्र
सहित यहांके भोग भोगके अंतमें स्वर्गको पधारे अरु वहां तिसम-
नुष्यको इन्द्र आदिदेवताभी पूजे अरु तिसकी आठोसिद्धि चरणसे
वाकरे अरु अंधजन दृष्टिपावे गूंगामनुष्य निश्चयवाणीको प्राप्तहोय
३८। ३९ अरुवहरेको सुनाई देवेअरु पंगुलेको पैरप्राप्तहो स्त्रीका
अभिलाषी उत्तमभार्या पावेअरु विद्यार्थीको श्रेष्ठज्ञानहोवे ४० अरु
येहीफल चारोद्वारो में व्रतकरत्तेकाभी है फिरतो देव मयूरेशजी सारे
सुरोसे ४१ मधुरवाणी करके ब्रह्मादि देवताओसे कहतेभये मयूरेश
जी बोले कि जिसलिये हे देवतो हमारा अवतार भयाथा सो कार्य
सिद्धकिया सोकि बहुतसे राक्षसमारे अरुभूमिभार उतारा अरुसब दे
वताओंको सिंधुकेबंधी घरसेछुड़ाये ४२।४३ अरुजपहोम श्राद्धपहले
के जैसे होतेहैं अब हे देवो तुम्हारे आज्ञासे हमनिजधामको पधा-
रेंगे ४४ ऐसा तिनका वचन सुनके शोक सहित सारे देवता आंसू
छोडते आपसमें एक२के एक२मुंहकोओर देखतेभये ४५ बोलेकि हे
मयूरेशजीहमें छोडकेकहांजायाचाहतेहो अबआपस्नेहछोडकेअत्यंत
कठोर कैसे होगयेहो ४६ फिर गौरीजी सुनके शोकसे दुःखितभई
भूमिमें गिरीं फिर दोघडीमें चेतकरके बोलीं ४७ कि हे दीननाथ

हे दयाके सागर हे सिंधु दैत्यके नाशक आप कहां जाते हो मुझ निज मातको छोड़के ४८ अब हे सुरोंके ईश्वर तुम्हारे गये मेरे प्राण नहीं रहेंगे तब तो देवजी बोले कि हे गौरीजी द्वापर युग में फिर हम तुम्हारे पुत्र होवेंगे मेरा वचन मिथ्या नहीं है तुम चिंता मत करो हमको भी तुम्हारे वियोग से भारी दुःख होता है ४९।५० हे मात प्यारोंका एकठौर रहना नहीं होता है सो कि तब एक सिंदुर नाम भयानक दैत्य होगा ५१ सो सब देवताओं से नहीं मरेगा तब हम तुम्हारे पुत्र होंगे सो स्मरण करते हो हम तुम्हारे आगे आय स्थित होवेंगे ५२ तब तो षडाननजी बोले कि जहां आप जाते हो तहांहीं हमें भी ले चलो मुझ उदासीन दीन बालकपर कृपणता करनी ठीक नहीं है अर्थात् आप मुझे जीवदान दीजिये ५३ गणेशजी बोले कि भाई तू चिंता मत करै हम फिर तुम्हारे पास आवेंगे हम सबके अंतर्यामी हैं इससे हमारा तुमसे वियोग कभी नहीं है ५४ फिर तो मयूरेशजी ने निज वाहन मयूर स्वामकार्तिकजी को दिया तब तिन्होंने स्वामिकार्तिक का मयूरध्वज ऐसा नाम धरा ५५ तब तो स्कंदजी निज भाई की आज्ञा से तिस मयूरपै सवार भये तब मयूरेशजी छिनमें हीं अंतर्द्धान भये ५६ फिर तिनके अंतर्द्धानभये ब्रह्मा विष्णु महेशजी तिन्हें सदा हृदयमें देखते भये फिर ब्रह्माजी वालूसे गजाननजी की मूर्त्ति बनाके ५७ सुन्दर मंदिरमें स्थापन करतेभये तब तो सब लोक अनेक उपचारोंसे तिनकी पूजा करतेभये ५८ अरु वशिष्ठ आदि मुनिजन भी तिस ब्रह्म कमंडलु नदीमें स्नान कर २ अरु निज २ नित्यनियम समाप्त करके तिस सुन्दर मूर्त्ति के समीप आये ५९ तो कइयोंने तो व्रतकरके न्हाय गणेशजी को नमस्कार करके निज द्वार अर्थात् गणेशलोक प्राप्तिकेलिये इन्द्रियें रोकी अरु वर्ड दौड़ते आपसमें ६० बोले कि ऐसा पवित्र क्षेत्र कोई नहीं है जहां देव गणेशजी आप विराज रहे ६१ जो विघ्नहारी भक्तों के काम पूर्णकरता ऐसे कह २ तिनकी पूजानमस्कार विधिसेकर२ के निज आश्रमोंको आये ६२ अरु ब्रह्मादि देवता भी तब निज २

स्थानों में आये अरु परिवार गणों सहित शङ्करजी निज कैलासपे आये ६३ अरु इन्द्र आदि देवता हवन जप मंत्रो से हर्षको प्राप्त भये ब्रह्मावोले कि हे मुनि व्यासजी हमने ऐसे तुमको त्रेतायुग में मयूरेशजी का किया चरित्र सुनाया है जो श्रवणकियेसे शीघ्र सब काम सिद्धिकारक अरु धन यश आयुदाता अरु मनुष्यो के सब पापोंका हारक है ६४। ६५ अरु पुत्र विद्या लक्ष्मी सौख्यदायक अरु दुःखमें सहायक है अरु चितारोग हर्ता अरु दुष्ट कुष्ट विनाशकारी है ६६ अरु पढ़ते सुनते जनोंको शुभभोग देनेवाला है अरु ब्राह्मणजनोंको अरु क्षत्री वैश्य जनोंको भी विजय लक्ष्मी का दाता है ६७ अरु सब शूद्रजनोंका भी पुष्टि बधानेवाला है ऐसे हे व्यास जो २ तुमने पूछा सो २ सब हमने वर्णन किया ६८ अरु और गजाननजी का कौनसा चरित्र हमारे मुखसे सुनोगे सो कहो ६९ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंगणेशजीका निजधाम पधारना इस नामसे१२६ अध्यायभयाहै॥

एकसौसत्ताईसका अध्याय॥

सिंदूरदैत्यकीवरप्राप्तिकावर्णनकियागयाहै॥

व्यासजीने पूछाकिहे देव चतुर्मुख ब्रह्माजी आपनेशुभगणेशजी का चरित्र विस्तारसे कहा पर मैं तिसके सुन्नेसे तृप्त नहीं भयाहूं १ नर अमृतपान करनेसे तो तृप्तहोवे पर कथाके श्रवणकरनेसे विरक्त नहीं होता सो त्रेतायुगकी तो गणेशजीकी मैंने सबकथासुनी २ पर द्वापरमें इनका (गजानन) ऐसा नाम कैसे भया अरु हे विभो मूष इनका वाहन कैसे भया ३ सो हे कमलासन आप मेरे इस संशय को छेदो ब्रह्माजी बोले कि हे व्यासजी तुमने मेरे चित्तकी बहुत अच्छी बात पूछी जिससे श्रोता वक्ता अरु पूछनेवाला सिद्धि को प्राप्तहो सो हे मुने तिन विनायकजी से भइकथाको हम कहते हैं ४। ५ सो द्वापरमें जो उन्होंने चरित्रकिया सो तुम भली भांति सुनो जैसे गजानन देव रक्तवर्ण अरु चतुर्भुज ६ गजमुख अरु

मूषक वाहनभये सो सब हम कहते हैं कि कभी शंभूजी दैवइच्छा से ब्रह्माजी के भवन पधारे ७ अरु तब सोतेभये ब्रह्माजीकोउठाये तो उन्होंने उठतेही क्रोधसे भारी जभाई लई ८ तौ तिससे एक महाघोर पुरुष उत्पन्न हुआ तो तिसने सब का भयकारी महा भारी शब्द किया ६ तो तिससे समुद्र द्वीप अरु पर्वतों सहित पृथ्वी कपी अरु सारे दिग्पाल चकितभये अरु चलितभये शेषजी ने विषछोड़ा १० अरु सारेपर्वतफूटे अरु प्राणी व्याकुल होगये तौ तहां त्रिभुवनवासी जनोंमें प्रलय सरीखा होगया और ये मस्तक से ब्रह्मांडको फोड़तासा स्थितभया जिसके देहसे निकला सुगंध त्रिभुवनमें फैलगया ११।१२अरु गुडहलके फूल सरीखे तिसकेलाल देहकी कांतिकरके दिशा भी लालभई तौ शिवजी ने विचारा कि ये ब्रह्माजी के शरीर से क्या दूसरा कामदेव उत्पन्नभया १३ अरु कामदेव तिसके रूप देखनेसे शीघ्र लज्जितभया फिर तिसे देख ब्रह्माजी विस्मितभये बोले कि १४ तू किसका पुत्र कहांसे उत्पन्न हुआ क्या करने चाहताहै सो कहु पुरुष बोला कि हे ब्रह्माजी आप अनेक ब्रह्मांडोंको रचते भी हो पर अब सर्वज्ञ आप भ्रांतभये से मुझसे कैसेपूछतेहोजो जंभाईसे उत्पन्नमुझको नहीं जानतेहो १५।१६ सो अब मुझ पुत्रपै अनुग्रह करो अरु यथामति मेरानाम धरो अरु हे नाथ मुझे स्थान देवो अरु भोजनकार्य बताओ १७ ऐसातिनका वचन सुनके ब्रह्माजी बोले कि तेरा रक्त शरीर है इससे तू (सिंदूर) ऐसे विख्यात होगा १८ अरु तू त्रिलोकी को खैंचने वाला सामर्थ्यहोगा अरु क्रोधसे जिसे तू छूलेगा सोई सौटूक होजायगा अरु पांचो भी भूतोंसे तुझको कभी भी भय न होगा अरु न देवदानव यक्षोंसे अरु मनुष्योंसे भी भय न होगा १६।२० अरु इन्द्रादिलोक पालोंसे अरु कालसे भी भय नहीं होगा अरु न नागोंसे न राक्षसों से न दिनमें न रात्रिमें तुझको भय होगा २१ अरु हे सिंदूर तुझ को न सजीवसे न निर्जीवसे भयहोगा अरु तीनों भुवनोंमें भी जहां ठहरनेकोमनहो वहांही बस २२ तब तो ब्रह्माजीकेवरसे प्रसन्नभया

अरु शब्दसे चरअचर लोकको कपाता भया पुकारा २३ तौ सातों समुद्र चलित भये अरु लोकपालभगे अरु तबवो पिता महादेवजी को नमस्कार करके कहनेलगा २४ सिंदूर बोला कि हेब्रह्माण्डके नायक आपके दर्शन अरु अमृत वचनसे मैं प्रसन्न भयाहूं आपही तीनों गुणोंसे संसार को रचते पालते अरु संहारते हो २५ आपके सोते जगत् सोता अरुजागते जागता है हेविभोमेरा महा भाग्य है जो तप दान व्रतइनके विनाभी २६ पुत्रके स्नेहसे मुझपै प्रसन्नभये हो चौर प्रकार करोड कल्प तपकरने सेभी प्रसन्ननहींहोतेहो२७ ब्रह्मा बोले ऐसेकह वो तिन्हें प्रणाम कर अरु तिनकी प्रदक्षिणा करके मनसे विचारता भूमिमें प्राप्तभया २८ तौ मनमें विचारा कि नतौमेरे ऐसा तप न ध्यानहै अरुन पठन धर्म है तौतिन्होंने कैसे ये वरदिये सच्चे हैं या झूठे २९ मैंजाके देखौं ऐसेकहके ब्रह्मा जी पै फिर गया अरु भुजों को फटकारता भयानक गर्जता भया ३० अरु तिनकोही भींटने चाहा तो पितामहजी बोले मैंने तुझकोपुत्र के स्नेहसे औरोंको दुर्लभ ऐसे वरदिये हैं३१ अरुअब तू दुष्टपनसु-झकोही माराचाहता है हे खोटेमैंतेरेइसदुष्टभावकोनहींजानताथा ३२ सर्पको दूध पिलाया विषही होजाताहै तू दुष्टपने को प्राप्त भया इससे राक्षसहोगा ३३ फिर परमात्मा गजाननजी अवतार लेकेतुझे मारेंगे फिरतेरे अंगको कोमल जानके निज अंगमें मलेंगे ३४ अरुतिन विनायकजीकेभी (सिंदूरारुणदेह) अरु सिंदूरप्रिय अरुसिंदूरवध येनामहोंगे ३५ ऐसेकहके ब्रह्माजी भयसेभगे मन पवन जैसे वेगवाले अरु ऊंचेसांसोसेव्याकुल३६ तो दैत्यवोशापको सुनके कोपभया पीछेसे चला पसीनेसे भीगा शरीर ऐसादुष्ट तिसे मैं देख २ के अगाडी चला ३७ तो दैत्यबोला कि और स्थानमें पकडूंगा तो दौड़ा अरु ब्रह्मा कांपता तुरत वैकुंठको गया ३८ इति श्रीगणेशपुराण उत्तरखण्डमेंसिंदूर की उत्पत्तिकावर्णनइसनामर्मे १२७ वांअध्यायभयाहै ॥

एकसौअट्ठाइस का अध्याय ॥

सिंदूर दैत्यसे ब्रह्मादिकोंके भागके होनाबरणेहे ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि तबतो हमने सुखसे विराजमान नारायण जीको देखे जोरत्न सुवर्णसे सजेहुये कमलासन पे विराजमान १ तो वेहमको मलेमुख भये अगाड़ी देखके अरुतिसकेपीछे आकाश तक ऊंचे महादैत्यको देखके दयालु लक्ष्मीकेपतिविष्णुजी वेगसे उठे अरुहाथ पकड़ आलिंगन करके हमकोनिज आसनपे बैठाये ३ अरुहमें पूजके पूछा कितुमको क्याकाम लगा अरु मलीनमुख स्वास लेने हती कांति वाले कैसेहो रहेहो४ हेपितामहजीतुमको देखनेहा मुझको खेदभया ऐसातिन का वचन सुनकेमैंबोला ५ किनिजस्थान में सोतेभये मुझको शिवजीने जगाया तब तो जंभाईलेते मेरेमुखसे भारी पुरुषनिकला ६ जिसके मस्तकके घातसे भूमिमें तारे गिरतेथे अरु तिसके सुगंधसे सब देवता विस्मितभये ७ जिसकी सुन्दरताको देखतेही कामदेव लज्जितभया जिसके चिल्लानेके शब्दसे त्रिभुवन कंपित भया ८ फिर वो मुझे नमस्कारकरके नम्रभया अगाड़ी बैठा फिर हे देव माधवजी मैंने पुत्रके स्नेहसे तिसे वरदान दिया ६ कि जिस २ को तू छूलेगा सो सोही मरजावेगा अरु तेरे लड़ने को काल भी रणमें न ठहर सकेगा १० फिर हे देव मैंने तिसको वध-स्थल स्थान बताया तो वो नमस्कार करके दूर चलागया था फिर फुंकारकरके आया ११ अरु मुझहीको छूने के लिये दौड़ा तो उस भयसे मैं भगाहूं सो हंसपे चढ़के वेगसे आपके पास आयाहूं १२ अरु तिसको पीछे २ आता देखके मेरे स्वास अरु कपाईचढ़ी अरु बिना आपके हेसबके ईश्वर त्रिभुवनी में किसकी शरणजाऊं १३ तबजो शरण आये मुझको महा विष्णुजी बोले कि हे देवपहलेवर देके फिर संकटको प्राप्तभये अबचितासे क्या होहोनाहै सोहोगा वोतो सबपीड़ा चिंताकरनेको तैयार त्रिभुवनको भयहै ब्रह्माजी बोले कहम अरु विष्णुचिंता करनेलगे तिसनेयोभी आयके देखी

बैठा १४।१५।१६ अरु त्रिलोकीको गंजाता गजंताभया ब्रह्मांड को कंपाता भया अरु तबवोदुष्ट हमकोभी कपाने लगा १७ तोमैं बोला कि हे त्रिलोकी के रक्षक विष्णुजी मेरी रक्षाकरो रक्षाकरो तबतो विष्णुजी मधुरवाणीसे तिसदैत्यको कहनेलगे १८ हरिबोले किमै वरदानसे मत्तभये तुझसे लडने नहीं चाहता मैं सत्वगुण में लगा सदा सृष्टिपालनेमेंरतहूं १९ अरु ये ब्रह्मा ब्राह्मणहै सो इससे भी मतलड तेरेसेलड़ने वाले विख्यात देवशिवजी है २० तिनसेलड़ तो तेरीकीर्ति त्रिभुवन में विख्यात होगी ब्रह्मा बोले कि ऐसा हरिका वचन सुनके वो दैत्यहर्षा २१ अरु शीघ्र दौड़के त्रिभुवन को कपाता अरुवृक्षो पर्वतोको तुर्त ही फोड तोड़ता चला २२ तो दिकपाल सबदिशा विदिशाओमें चलेगये अरुवो कैलासपर्वतकी निकट भूमिमें आया २३ अरुपर्वतके ऊपरकी भूमिमें ध्यानलगाये शिवजीको देखे जोनदीभ्रंगी आदिगणो से सेवाकिये गिरिजा स हित २४ वघेरेको चर्मओढ़े अर्धचंद्र आभूषण जिनके भस्मरमाये शरीर को शोभासे युक्त अरु गजचर्म हे डुपट्टा जिनके २५ ऐसे तिन महादेवजीको देख के सिंदूर बोला कि इसतपस्वीसेमैं क्या युद्धकरू २६ परइसकी सुंदरस्त्रीको लेकेनिजइच्छासे चलाजाऊंगा ऐसामनमें निश्चयकरके गौरीजीके निकट आया २७ तो गिरिजा जी प्रलय कालमें पृथ्वी को नाईं कंपती भई अरु नेत्रमीचके भय भीतहो मूर्छाको प्राप्तभई तो तिस दुष्टमन वाले दैत्यने तिसका घुटला पकड़ लिया अरु वेगसे उडके चला तब गिरिजाजी शोक करनेलगी २८।२९ जसे रावणसे लेजाय भूमिसुता सीताजी पुका- रतीहो फिर गिरिजा बोली कि संपूर्ण वेत्ता शिवजी, मुझमें कैसे उदास पनको प्राप्तभये हैं ३० अरु अब हे शिवजी आपके आधे अंग जाते २ आप ध्यानमें क्यावैठेहो मैने कुछ आपका दासीपन थोडा नहीं किया जिससे कठिन होगयेहो ३१ मुझको अब कौन सखा छुटाव अरु शंकरजी से मिलाव तथा मेरा प्राण दाता होव ३२ ब्रह्माजी बोले फिर तो तिन गिरिजा जी की

शोकसे व्याकुल देखके गणोंने कहा कि इस त्रिलोकी के नाशकसे लड़नेको हमारी सामर्थ्यनहीं है ३३ शिवजी ध्यानमें परायण भये दैव योगसे इसका सीधापन भया अर्थात् शिवजी देखते तो इसे मारदेते अरु ये हमारी माता जो संसारको रचने पालने संहार करनेवाली ३४ अरु सर्व देव मोहिनी सर्व दुःख विनाशिनी लावण्यलहरी और सब स्त्रियोंमें श्रेष्ठ पूज्य ३५ येरवरूप इससेले जाई गई फिर कैसे आवेगी अरु नेत्र वह्निसे सबके नाश करनेवाले शंकरजी ध्यानमेंबैठे हैं अब हम क्या करें जो शिवजी जसे माता प्रेमसे निज पुत्रोंको रक्खे तसेही ये हमारी सबकी रक्षा करनेवाले सो ध्यानमें हैं गे३६।३७ऐसे तिनगणोंके शोककरते और हाहाकार मचाते अरु रोते महेश्वरजीने ध्यान छोड़ा जो क्रोधसेभये नेत्राग्नि करके त्रिभुवनको भस्मकरते तिन गणोंसे पूछतेभये कि क्या संकट पड़ा तिसका सर्वथानाशकरूंगा जिसने तुमको दुखीकियेहैं ३८।३९ ऐसा तिनका वचन सुनके वे गणबोले कि हे देवजी आपकेध्यानमें बैठे २ मंदराचल के समान कालके जैसे रूपवाला दैत्यआया जिस के श्वाससे हतेपर्वत चलायमान होतेथे४०।४१ हे शंकरजी जिसके देखने सेही हम सब माहित भये फिर वो महादुष्ट गिरिजाजी का चुटला पकडके ४२ तिन हमारी माता गिरिजाजी को तुरत वो आकाश मार्ग से लेचला तो लेजातीभई शिवाजी ने कहा कि शीघ्र दौड़ो २।४३ अरु वो मूर्छितभई अरु हम भी सब मूर्छितभये भूमि में गिरे अरु वो दुष्ट तिसे लेके चलागया ४४ तिनका वचनसुनते ही शंभुजी क्रोधसे जलतेभये अरु लोकोंको भस्मकरते निज बैलपै सवारभये ४५ जो दशों भुजोंमें त्रिशूल आदि शस्त्रलिये दिशा विदिशाओं को गाजाते आकाश मार्ग से चले ४६ सो जिस देशमें सिंदुर दैत्यथा वहाहीं छिनमें जाय पहुंचे अरु तिसके पीठमें मारते भये तब वो सन्मुखहुवा तो बोले ४७ कि हे दुष्ट स्त्रीको छोडदे देखलिया अब कहा जावेगा ऐसे कह वो क्रोधसे भरा त्रिलोकीको भस्म करतासा ४८ भुजोंसे मारताहुवा शिवजी के निकट आया

अरु गर्वसे मोहित भया दैत्य सिंदूर बोला ४६ मैं त्रिभुवनकोस्वा-
मी तुझ मच्छर के समानके वचन से नहीं डरता जिरा मेरे श्वास
पवनसे सुमेरुपर्वत कपताहै ५० ऐसे मेरे किसी की गिनती नहीं
है तू मुझे मुख मतदिखा जो मेरे साथ युद्ध करनेको सामर्थ्यहैतो
लड़ ५१ नहीं तो तू और विवाह करले तिससे सुख पावेगा हे
तुच्छमच्छरके समान तू मुझसे वृथा युद्ध करेगा५२ऐसे कहके वो
वाहु युद्ध करने को शंकरजीपै आया अरु गिरिजाजी निज चित्तमें
मयूरेशजी का स्मरणकरतीभई ५३ तव तो देव मयूरेश्वरजी तिनके
बीचमें विप्र रूप धरके क्षणमें प्रकटभये जो करोड़ सूर्य्यों के समान
कांतिमान ५४ जो सब अंगोंसे सुन्दर अरु अनेक आभरणोंसेसजे
सो निज परशुको वीचमेंकरके दैत्यराज को हटातेभये ५५ अरु कों-
मलवाणीमें तिम सिंदूरको द्विजभये मयूरेशजीबोले कि इस त्रिलोक
की माताको मेरे निकट ठहरादे फिरतू शिवजी से युद्धकर जवतक
जीतहार होवे सो जोजीतेसो गौरीजी को ले औरप्रकार से नहीं
मिलैगी५६।५७ब्रह्माबोले तिनकावचनसुनके प्रसन्नमनभया सिंदूर
गिरिजा जीको तहाही ठहराय लड़ने को चला५८तो तिनेगौरीमयू-
रेशजी के देखते २ सिंदूर महेश्वरजी युद्ध करने लगे तो अनेक
प्रकारकेयुद्धोंमें कुशल ५६ अरु क्रोधसे लालनेत्र किये अरु समान
तेजबल वाले सोजितने वो असुर भुजोंसे शिवजीको पकड़नेचाहा
तितनेही विनदेख पड़ते मयूरेश जीके फरसुने बलसे तिसके उदर
में प्रहार किया ६०।६१ फिर क्षीण सामर्थ्यभये तिसको शंकरजीने
हता फिरतो ब्राह्मणने असमर्थ भये तिस्से हितवचन कहाकि त्रि
लोकी के नाथशिवजी से युद्धमतकर गौरीजीकी आशछोड़ के निज
घरकोचलाजा नहींतो ये शिवजी तुझको अभी भस्मकरतेहैं ६२।६३
ऐसे तिनसे कहा वोअभिलाष छोड़के भूमिपै आया फिर गिरिजाजी
ब्राह्मण से बोली ६४ कि हेमुनि सिहतु कौन है जिसतूने मुझको
इस दुष्टसे छुड़ाया सो अपना निज रूपमुझ को दिखाइये अरु ये
रूपछिपाइये ६५ तुमेरा प्राणोंमेंभी अधिक प्यारोंकी दाता मेरा

है हे द्विजोत्तम आगेभी तेराउपकार नहीं होसक्ता ६६ ऐसे तिस वचन को सुनके मुनिमये मयूरेश्वरजी बोलेकिहेमाता मैनेयह कुछभीनहीं किया किंतु शिवजीने सिंदूर दैत्यको जीता अरु तिन्हीं नेही तुमको छुटायाहै ऐसे कहके तिनविनायकजीने निजरूप प्रकट किया अर्थात् सांगोपांग दर्शन दिया जो दशभुजो से सुंदरकाम कुण्डल मंडित कस्तूरी तिलक लगाये रत्न मोतियो की माला से विभूषित६७६८६९अरु अनेकआभूषणसेसुन्दर कंठमेंमणिसहित शेषधारण किये ऐसे इन परमात्मा मयूरेश्वर जीको देखके हर्षि ७० अरु तिनके चरणों में उठके नमस्कार करती भई तबवे विनायक जी बोलेकि त्रेतायुगमें हमने कहाथा फिर दर्शनदेंगे ७१ सो कि द्वापर युगमें तुम्हारे घर गजानन नाम से होवेंगे अरु बल से सिंदूर दैत्यको मारेंगे ७२ ब्रह्मा बोले मुनिरूप धारी विनायकजी ऐसे कहके अंतर्द्धानभये फिर गिरिजा परम शोककरती मूर्छा को प्राप्तभई ७३ फिरतो विश्वनाथ जी बोले हे प्रिये मनको स्थिर करो अरु तिनविनायकजीको हृदयमें देखो ७४ तिनका कहामिथ्या नहींहै जोकहा सोई करेंगे ऐसाकहके महादेवजी तिसके साथबैलपै चढ़े ७५ परमप्रसन्नभयेकैलासपर्वतपैआये७६ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तरखंडमें सिंदूरका वर्णनइसनामसेएकसौअट्ठाइसअध्यायभया॥

एकसौउन्तीस का अध्याय॥

सिंदूर दैत्यका वर्णन॥

श्री ब्रह्माजीबोले कितबतो वोसिंदूरदैत्य मृत्युलोकमें आया गर्भसे गर्जा तो सारेपर्वत कंपे अरु वृक्ष भूमिमेंगिरे १ अरु [illegible] व्याघ्र आदिक जीववनमें भ्रमते भये तबतो मारेगर्वोर कोजीते जिसने ब्रह्मादिकों को जीते तो तिसमें तिससे दुहरा किये अर्थात् मारेगये अरु भ्रमतेभये ३ अरु कईराजा तिसके सन्मुख आके कई शस्त्र धारे कई नेवक होगये ४

वनको चलेगये ऐसे सारे रा ोको जीतके वो सिंदूर मुनिजनों के दवानेमें मति करताभया अरु तिनको बाधे तब कई मुनिजन देह त्यागके स्वर्गको पधारे अर्थात् मरगये ५।६ अरु कई सुमेरुकी कंदरामें रहने लगे अरु कई तिससे हते कई ताड़ गये ७ तो तिसने सारे मंदिर देवता फोड़डाले ऐसे प्रलय भये सब वेद के कर्मलुप्त भये अरु स्वाहा स्वधा जप आदि छुटके हाहाकार होनेलगा अरु वे गुफावासी देव मुनि अरु यक्ष ग धर्व किन्नर ८।९ निजकार्य्यकेलिये सब सलाह करते भये तो वहां बृहस्पतिजी बोले कि विषमान देवोसे अरु राक्षसो से अरु सबसे १० तिनको भय नहीं तिसे देव विनायकजी की प्रार्थना करो जब वे शिवजी के घरमें ११ (गजानन) इस नाम से भली भातिसे उत्पन्न होंगे तब सिंदूर को निस्सदेहही हैंगे १२ हे देवो तभी सारा जगत् सकटरहितहोगा ऐसे बृहस्पतिजी करके कहे वे सारे देवतादिक परम भक्ति से युक्त भये तिन विनायकजी की स्तुति करते भये १३ देवता बोले जो जगत् के कारण अरु सूर्य्य नक्षत्र इत्यादिको के उत्पादक अरु सिद्ध साध्यगण सारे जिनसे अरु स ुद १४ अरु यक्ष राक्षस गंधर्व किन्नर सर्प ये अरु जनोसे चराचर ससार उत्प न भया तिन विनायकजी को हम नमस्कार करते हैं १५ जिनसे ब्रह्मादि देव मुनि महाऋषि ये भये अरु जिनसे तीनो गुण उत्पन्न भये तिन विनायकजी को हम नमस्कार करते हैं १६ जिनसे नाना अवतार भये जो सबोके हृदय में स्थित हैं जिनकी स्तुति करने को शेषजी भी थकित हैं तिन गणपतिजी को भजते हैं १७ सो कि सिंदूर जो संसार का संहारक सो किसने बनाया है तिससे ससार पीड़ा को प्राप्त है हे स्वामी तुम्हारे जागते १८ और हम किसपे शरण जावें हमारी सब को कौन रक्षाकरै सो आप शिवजी के घर अवतारधार के इस दुष्ट को हतो १९ ऐसे कहके अनेक अनुष्ठानों में परायणहोके वे तप करते भये जो निराहार तथा समान भोजी अरु प्राणायाम में परायण २० कई एक पैर से खड़े कई जल में

पड़रहे कई धुनी तप रहे अरु कई मौनहो बैठे २१ कई ऊपर को हाथ उठाके खड़े अरु कई योगमें स्थित भये कई निज देहों को अरु मस्तकों को भी काटते थे २२ तब तो गणराजजी तिन का ऐसा तप देखके करोड सूर्य्य अरु प्रलय अग्नि के समान कांति मान तिनके आगे प्रकट भये २३ तो तिस तेजस्वी रूपको देखके देवता हर्षे अरु बोले कि जो चिंतन किये गये सोई ये सबकेस्वामी गणेशजी उत्पन्नहुयेहैं २४ सोहमारा दुःख दूरकरेंगे इसमें विचार न करना तबतो चितायुत तिन देवतों को भगवान् गणेशजी बोले कि २५ हे देवो चिंता मतकरो सिंदूर को हतोंगा अरु ये तुम्हारा स्तोत्र (दुःखनाशक) ऐसे विख्यातहोगा २६ इसीसे हमारे अनुग्रहसे तुम्हारा दुःख दूर भयाहै सो इसे एक काल वा दो काल तथा तीन कालभी जो पढ़े २७ तोतिसे कायक वाचक मानस येदुःख कुछभी न होगाअरु हेदेवोहमतोभली भांतिकि शिवजीके घरअवतारधारके २८ सो (गजानन) ऐसे विख्यात जो वे अर्थ साधक होंगे अरु सिंदूरादिक महा असुरों को हतेंगे २९ अरु कौतुक दिखाते गौरीजी का दासपन करेंगे ब्रह्मा बोले तबतो ऐसे कह गणेशजी तहांही अंतर्द्धानभये ३० फिरतो अचानकही गौरीजीने शिवजी के अनुग्रह से गर्भ धारण किया सो प्रतिदिन चंद्रमा के समान अत्यंत बधा तबतो तिसके तेजसे तप्तभई अनेक औजने चाहती गौरीजी शंकर जीसे बोलीं कि मैं गर्भके तेजसे परितप्त हूं ३१।३२ सो हे शंकरजी जहां अत्यंत शीतल स्थलहोय तहांलेचलिये तबतो शिवजी बैलपै चढ़े अरु तिसे बैठाइ ३३ जो महातेजके पुंजसे दिशा विदिशा औं को प्रकाशते तो बाजेगाजे से येभूतलपै आये ३४ अरु अनेकगणों सहित वनोंमें विचरे फिरतो भ्रमते २ इन्हों ने भारी (पर्यलोक) वन देखा ३५ तहां गौरी जीके मनमाने वनमें शिवजीने विश्राम किया जो वन अनेक पुष्पों से युक्त अरु अनेक वृक्षफल सहित ३६ सरोवरवापी सहित गहरीछायावाले वृक्षों से मनोहर जहां सूर्य्य किरणों का प्रवेश नहीं जो कैलास शिखर के समान ३७ [illegible]

जो भी आये अरुबालक को लेके तिसे बोले कि हे प्यारीसुनो २५
ये आदि अंतरहित शुंडादंड से विराजमान हैं जहां चारवेद अरु
छैशास्त्र कुंठित अर्थात् कहते २ थकगये अरु सुर मुनि २६ जिन
अनेक कार्यवालो की मायामें फंसे अरु ये सबके अंतर्यामी अरु
अनेक ब्रह्मांडो के कारक हैं २७ अरु चार युगोमें इनके चारही
रूप हैं सोसतयुगमें तो (दशभुज)(विनायक)नामसे प्रसिद्ध हैं २८
अरु त्रेतामेंश्वेतवर्ण छैभुज(मयूरराजजी)येहीहै जिन्होंने हमारेघर
अवतार धरके सिंधुको मारकरके पालनाकरीथी २६ सोई ये रक्त
वर्ण चतुर्भुज हमारे घर अवतार भयेहैं सो सिंदूरदैत्यको हनेंगे
३० अरु फिर येही देवजी मूषकपै सवार होकर गजानन ऐसे
त्रिलोकी में विख्यात होंगे ३१ अरु हे देवि येही कलियुगमें चतु-
र्भुज सुंदर नेत्र वाले भूमिमें(धूम्रकेतु)ऐसो विख्याति को प्राप्तहोंगे
३२ तो शिवजीका वचनसुन प्रकटही वे बाल गजानन जी बोले
कि हेशिवजी तुमने मेरेस्वरूपको अच्छासमझा अरुकहा ३३ सोई
मैं आपकी सेवा करने अरु सब देवराजोंके हंता सिंदूर दैत्यको
हनने के लिये आपके घर अवतार भयाहू जो दैत्यपर्वतों को मसलने
वाला अरु त्रिलोकी को जीतने वाला तिसे मैं हनके हे शंकरजी
संसारका संतोष करूंगा ३४।३५ अरु मैं भक्तोंका काम पूरक अरु
वेदकर्म प्रवर्तक अरुराजा वरेण्यको वरदाता ज्ञान दायकहोंगा
३६ अरुतिसको मेरेमें भक्तिहोगी वो मेरेध्यानमें परायण होगा
अरु देवता द्विज अतिथियोंका पूजक अरुपंचयज्ञ कर्मकरता ३७अरु
पुराण श्रवणमें आसक्त निज आचारसहित सत्यवादी पवित्रहोगा
अरु तिसकी (पुष्पिका) नामपत्नी जो धर्ममें परायण ३८ पतिव्रता
पतिहोमें प्राण जिसके अरुपतिके वचनमें परायण तिन्होंने बारह
वर्ष महा घोर तपकिया ३९ तो तिनको मैंने वरदिया किमें पुष्पिका
रानीके जन्मलेके तुम्हारा पुत्र होऊंगा अभी मुझ बालक कोराक्षस
लेज य मारडालेंगे तिससेमुझे एकांतमें लेचलो ऐसाशिव जी वचन
सुनके हर्षयुक्त भये शिवजी ४०।४१ नानावचन रूपपुष्पोंसे भक्ति

८ कहो तिनकी पूजाकरतेभये इस प्रकारसे श्रीगणेशपुराण उत्तर खंडमेंश्रीगजाननजीकाजन्महोनाइसनामसेअध्याय१३०काभया॥

एकसौएकतीसका अध्याय॥

गंधर्वोंकापराजयवर्णनहै।

श्रीब्रह्माजी बोले कि फिरतो शिवजीने वालकको पहुंचाने के लिये चिंताकरी सो जानके नंदीजी बोले कि हेस्वामिन् आपके प्रसादसे में समुद्रशोषलेओं आपनिज मनकाकार्य मुझसे कहिये१।२ ब्रह्माबोले तिनका कथन सुनके प्रसन्न भये शंकरजी बोले कि तेंने बहुत अच्छाकहा तुमेरे अभिप्रायको जानताहूं अरुहे नदीश्वरहमने तुम्हारा सेकड़ोंवेर पराक्रम देखाहै अबजो कार्य्यहै सोमैं कहताहूं सो करो ३।४ कि महापवित्र (माहिष्मती) नगरीमें महाबली (राजावरेण्य) ऐसेविख्यातहै जो नाना धर्म करनेवाला ५ तिसकी रानी बडभागिनी (पुष्पिका) इसनामसे भई तिसके शीघ् सोते २ प्रसूतभये कोई राक्षसी तिसके बालक को आगे से उठालेगई है सो तहां इसबालक को पहुचाओ जितने वोसुन्दरी सोवती है तितनेहीइसको तहां तिसके आगेरखके चले आओ ६।७ ब्रह्माबोले ऐसेशंकरजी करके कहेवचनको सुनके शीघ्रही बालक को लेकर तुरंत आकाश मार्गसे नंदीजीचले ८ अरुतिस पुष्पिकाके आगेबाल गजाननजी को विराजे परतिससोवती भईनेतिनको नहीं जाने अरु नंदीजी शीघ् झपटके महेश्वरजीपे आये ६ अरुनिज वृत्तांत मार्गमें भया सो तिनसे कहा कि हेमहादेवजी अचानक एकराक्षसी आकाशसे उतरी जो भयानक १०अरुबालकों का मांसखाती सो मेरे पास आई थी आपके प्रसादसे मैने तिसको पूंछसें लिपटाइ ११ अरु भ्रमाकर भारीपर्वतके शिखरपरफेंकावो आपका नामलेनेसेही सो टूकभई १२ फिर मैंने गंधर्वोंका भारी समूह देखा तो विचारा कि मैंकैसे इनसेलडूं अरुकैसे बालककी रक्षाकरूं १३ ऐसोचिंतासे व्याकुल भये मैंने ह शंकरजी हृदयमें आपका स्मरणकिया फिर तो

कोपभये हमने श्वासर्सेगि पूंछ अरु लातइनसे १४ अरु हूं कारसे तिनसत्रवलवानों को हटाकर तो कईमरे अरुकई कटे अरु कइयोंके शिरपैर कटे १५ तो वे सौटूक भये भूमिमें गिरे तो पुष्प वर्षाभई तवतोमे हे देवजो आपका कार्य्य करके चला १६ आपकी इच्छा वालाकोन त्रिलोकी को नजीते इससे हे देव मैंने आपके नामसेही वालक सहित जय पाई है १७ तवतो हर्षयुक्त भये शिवजीने नंदीजीपे मैंनेहाथफेरा अरु प्रसन्न मनभये वोले कि तेरादृढ़ पराक्रम हमने जाना १८ सोकि त्रिभुवनमें तुम सरीखा वलवाला कोईनहीं है ब्रह्मावोले तवतो शंकरजीको प्रणाम करके गौरीजीके पासआये १९ अरुतिन्हे हाथजोड़ नमस्कार करके मधुरवचनवोले किहेमाता शिवजीकी आज्ञासे वालकको माहिष्मती पुरीमें पहुचाय आयाहूं २० सो वरेण्यकी रानी पुष्पिका के आगे विराजमान किया जो तिन्होने पहिले तिसको वरदियाथा कि २१ हम तुम्हारे ब्रह्मज्ञान प्रकाशकारी पुत्रहोगे तव तो सर्वज्ञ गौरीजी तिनकाऐसावचन सुन के २२ हर्षी कि मेरे पुत्रका अनगिनतवलहै अरु हे नंदीसुत तेराभी भारी पराक्रम देखा २३ जो तुमनेनारी भयानक महाघोर शब्दकरने वाली राक्षसीहती अरु दुष्टगंधर्व मारे वालक को रक्षाकरी २४ अरु विनगाने तहां विराजा येमहा उत्तमकाजकिया ऐसेकहके तिननंदी जीको विदाकिये अरु आपविश्रामलेतीभई इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डगंधर्वोंकापराजयहोनाइसनामसे १३१ का अध्यायभया है ॥

एकसौवत्तीसका अध्याय ॥

गियजीकरके नियकेनामसेआनायवनहे ॥

श्रीब्रह्माजी वोले फिरतो कभी कि मदसे गर्वा सिंदूरदैत्यराज सभामें वैठानिज जनोंसे वोला कि मेरापुरुषार्थ किया वृथाही गया जिसमुझको ब्रह्मादिकोंने अरुहरिने युद्धनदिया अर्थात् लड़ न सके अरु मृत्युलोकवाले राजाओंकी तो गिनतीही क्याहै १। २ सोजैसे कुलवती स्त्रीका पतिके विना यौवन वृथा कीजे तैसे मेरा पुरुषार्थभी

थोडावांके विना निरर्थकहै ३ फिर सो तिसनें परमअद्भुत आकाश वाणी सुनी कि हेमूढ किसलिये उछलताहै तेरायुद्ध देनेवाला ४ पार्वतीजीके उदरसे जन्मा अरु अबराजा वरेण्यके घरजा पहुचाहै अरु अनेकलीलावान् वो शुक्लपक्षके चंद्रमाके समान बढ़ताहै ५ ब्रह्मा बोले ऐसी आकाश वाणी सुनतेही सिंदूर दैत्य मूर्च्छित भया अरु वे हर्षभया विचारने लगा कि ने किमने क्याकहा ६ जो मुझद्वेषी जाय तो मैं तिसे मस्तक समेतखालेऊं सबके कालरूपमेरा मृत्युकैसे होगा जैसे पश्चिममें सूर्य उगनहीं सकता ७ ऐसेकह दशोंदिशोंको गर्जाता उठा अरु झपटके शिवजीके स्थान कैलासपै गया ८ सोपर्वत वृक्षोंको निजशरीर के पवन से चूर्णकर २ गिराताभयो तो कच्छपशेषजी चलित भये अरु पृथ्वीकंपने लगी ९ फिर तहां शिवजीको न देखे पृथ्वीपरही आया अरु वेगसे शिवजी को ढूंढता २ सारी पृथ्वीमें भ्रमता भया १० फिरतो (पर्यलीक) नामवनमें क्रोध युक्तहो आया तब दूरसेही गौरीशंकरजी को देखे अरुमंडपगण सरोवर कमल येभी देखे फिरतो येशीघ्रही) गौरीसे बनाये सूतिका घरमें गया तहां बालकन देखके क्रोधहो विचारता भया कि आकाश वाणी मिथ्या नहीं होती ११।१२।१३ इसका सुतमुझे मारै सो नहीं हुआ होगा तिससेमें इसीको मारताहूं जिससे वधसेछेदहोजायगा ब्रह्मा बोले ऐसा मनमें निश्चय करके शस्त्रलेता भया जितनेउमाजीको हतताथा तो तितनेही बाल गणेश जी भी अगाही देखपडे जो चतुर्भुज अति सुन्दर मुकुट बाजुओंसे सजेफरसु कमल मालाधारणकिये १४।१५।१६ अरु कटिमें शेषगलेमें हार दोनो पावोंमें नूपुरे तो ऐसे तिसको मारनेसेरुदा सो कि तिसे सोतो जानो १७ अरु बालक को हाथमें पकड़ा अरु फेंकने को चाहा ऐसे निश्चय प्रतिज्ञा करिके पीछे फिर चकित भया सो कि फिर ये बाल गजाननजी दूसरे हिमाचल के जैसे वधे तब तो सिंदूर भी भारी भार से लदा छिनमें व्याकुल भया १८। १९ अथ श्वास चढ़ने से व्याकुल भया सामर्थ्यसे अगाड़ी जाने न सका तब

तो व्याकुल भये दैत्यने बालक जीको छोड़े २० तब तो महाशब्द करते तिनके भूमिमें गिरतेही पर्वत-चलित भये अरु तिनके शब्दों से पृथ्वी कँपी २१ अरु पक्षी आकाश में अनेक शब्द करते भ्रमते भये अरु समुद्र सातों चलितभये अरु ब्रह्मांड भी फूटने लगा २२ अरु वे बालक जो रेवानदी के तटपै एक मुनि के निकट पड़ा तो तहां (गणेश कुंड) ऐसा पवित्र तीर्थ भया तिसकेस्मरण करनेसे ही जन्म से किया पाप नाश होताहै अरु दर्शन से दश जन्मकास्नान से सौ जन्म का अनुष्ठानवालो को जिसका सेवन मोक्षदाता भया अब तिनके रुधिर से तहाके पत्थर लालभये २३।२४।२५ तो वेही पाप नाशक (नर्मदा गणेश) कहाते हैं जो भक्तिकरने वालोंको सब सिद्धिदाता हैं नर्मदाजी की सब महिमा कही नहीं जाती फिर वो दैत्य हर्षने लगा कि मेराशत्रु नष्टभया २६।२७ तितने मेही कुंडसे एक महाभारी पुरुष निकला जो जटा भारसे ढका जैसे गहरी बेलोसे छाया पर्वतहो २८ डाढ़ोसे विकराल मुखवाला सर्पकीसी जीभ निकालता लंबे हाथ पैर जिसके श्वाससे व्याकुल नेत्रों वाला २९ वैसे पुरुष को देखके क्रोधसे व्याकुल भया वो दैत्य बोला कि इसको भी मेरे गिनती नहीं ऐसे कह खड्ग हाथलिये क्रोधकरके तिसे मारने चला सो जितने तिन्हें मारता तितनेहीं वो आकाश में देख पड़ा ३०।३१ अरु बोला कि रे दैत्य तैने मुझको वृथाही भूमिमें पटका तेरा हतनेवाला तो और ही कहीं बढ़ा है ३२ सो वो साधुओंकी रक्षामें परायण भया तुझकोहतेगा ऐसे कह वो महा भयंकर पुरुष अंतर्द्धानहुआ ३३ फिरतो दैत्यने भारी क्रोध से सेवकों को कहा कि पकड़ो २ जिसने ये खोटावचन कहाहै ३४ जबतिसे कहीभनि देखा तबतोनिजस्थानको आया अरुजबदेखेंगा तभी शत्रुको जीतेंगा ऐसामानता भया ३५ येइतनावृत्तांत गौरीजी करके नहींजाना गया वे उन्होंकी माया से मोहको प्राप्त होरहीं ३६ तबतो नम्रभई गौरीशिवजी से बोली कि हेजगदीश्वर यहांतो दैत्यनकी करी पीड़ाहोने लगी ३७ सो कैलास जानेको

आपको इच्छाहै तो मुझेलेचलो ऐसा तिसका वचनसुनके शंकरजी भी हर्ष ३८ अरु शीघ नंदीजीपे चढके सात करोड गणों सहित गौरीशंकर जी शीघ्रकैलास पै पहुचे अरु गौरीजी निजघरमें जाय हर्ष को प्राप्तभई ३९ इतिश्रीगणेशपुराण उत्तर खंड में कैलास पहुचना अध्याय १३२ भया ॥

एकसौ तेंतीस का अध्याय ॥

प्र...गटयोकोदर्शनहोना ॥

व्यासजीने पूछा कि हेकमल जन्मा ब्रह्माजी फिर राजावरेण्य के घरमें पुष्पिका के पास पहुचाये गये गजाननजी क्याक्या करते भये सो विस्तारसे मुझसे कहिये १ श्रीब्रह्माजीबोले कि हेव्यासजी तुमने चित्त हर्षाने वाली अच्छीपूछी सो अब हम विधिसे सब पाप नाशक चरित्र कहतेहैं २ कि तिसरात्रिके बीते पुष्पिका रानीनेपुत्र देखा जो रक्तवर्ण चतुर्भुज अरु गजमस्तकसेसजे ३ कस्तूरी तिलक लगाये मोतियोंकी मालासे सजे पीताबर पहिरे सुंदर चदनसेचर्च भये ४ अरु शरीरसे प्रकाशमान अनेक आभूषणोंसे सजे तबतो वो पुष्पिका तैसेतिन विनायकजी को देखके ५ दुःखित विस्मित अरु भयभीत भी भई अरु शोकसे दुःखित हाथोंसे छातीपीटतो बाहर आई ६ तिसका पुकारना सुनके टहलवो जागी वो तिन्होने भीतिसे अद्भुत बालक को देखा ७ तबतो राजाभी वृत्तांत जानके जनों सहित घरमें आया तबतो तिस अद्भुत बालकको देखके वेभी,भये भयभीत हुये वेधीरभये भगे अरु कई मूर्च्छितभये अरु कई राजा से बोले कि ऐसानहुवा अरु न होवेगा अरु न ऐसा देखा अरु ,न कहींसुना मनुष्यों के ऐसाबालक होना असंभवहै इससे इसको घरमें रखना नचाहिये क्योंकि येवंशछेदकारी बालकहै ८।१० ऐसा सबका वचन सुनके राजाने माना अरु दूतोंसे कहा इसेगहनवनमें छोड़आवो ११ तबतोदूत बालकको लेकेगये अरुभारीवन देखके जो वायुकी फटकारोंसे रहित १२ तो सरोवर के तीरपै रख पत्तोंसे

ढकके शीघ्र आये राजा वरेण्यसे बोले सोकि सभाके मध्यमें विराजित वरेण्यको देखिबोले कि हेराजेन्द्र आपकी आज्ञासे सिंहव्याघ्रादिकों से निरंतर सेये वनमें १४ बालकको छोड़आयेहैं सोतिसे वनचरोंने खालिया होगा ब्रह्मबोले जितने तिसे बालक को गीदड़ खाने के लिये आये तितनेही इसको १५ करुणा निधान मुनि पराशरजी देखतेभये जो बालक चतुर्भुज गजमुख करोड़ सूर्यांक समान कांति मान बालकजो १६ नाना अलंकारोंसे भूषित दिव्यवस्त्र पहिरेसर्प से लिपटी श्रेष्ठनाभि जिनकी चिंतामणिसे विभूषित १७ तो सर्व ज्ञानके निधान मुनिजी शोचने लगे कि येमेरे नाश करने के लिये क्या विघ्न आपड़ा १८ सोकि इन्द्रने मेरे तपका नाश चाहते ने ये स्वार्थ साधन कियाहै अरुमुझ डरतेने तो कुछभी पापनहीं कियाहे १६ हे दीनोंके नाथ चद्रशेखरजी मेरी इसभारी भय से रक्षाकरो। ऐसे शोचते भये तिसको करुणा सहित गजाननजी देखके २० तिनके मोहजालको दूरकरते भये फिरतो तिन्होंने इनको परब्रह्म स्वरूपी परमात्मा देखे २१ जो भक्तोंकी रक्षा करने के लिये ऐसे वेषमें स्थितहो रहे तो बोले कि आजमेरा जन्म अरु मावाप अरु भारी तपभीये धन्य हैं २२ अरु मेरे जन्म मृत्यु दूरहुये अरु उत्तम वाञ्छितपाया कि सहते भाग्य वालेने इसबालकको व- नमें छोड़ा है २३ ब्रह्मा बोले ऐसे कहके मुनिजी तिन्हें निज आश्रमपे लेगये अरु दयावती तिनकी पत्नीने तिसे बालक को देखके २४ जो पति से लायागया तो आनंद भरी स्नेह से हृदय लगाय पराशरजी से बोली २५ हे स्वामिन् आपने जो बहुतकाल भारी तप किया सो फैला है जिनके स्वरूप को ब्रह्मा हर लक्ष्मी पति येभी न जानते हैं २६ मुनीश्वर भी नहीं जानें तिनका आज हमें प्रत्यक्ष दर्शन भया है जो संसार के कर्त्ता रक्षक हर्ता हैं प्रभु सोही २७ अनेक अवतारी ह्वै भूमि भार उतारने को भये हैं अरु हे स्वामिन हमारा बड़ा भाग्य है जो विन परिश्रमही विश्व भर्त्ता प्रत्यक्ष भये जिन्हें मन वाणी नहीं जानसके ब्रह्मा बोले कि तब तो

बालक जी के स्पर्श से तिसके स्तन दुग्धधारी भये तो बालकजी पीके आनंद को प्राप्त भये फिर तो राजा वरेण्य भी दिव्य दृष्टि से तिन बालकजी को पराशर मुनिजी करके पाले भये देखे तो भारी बाजे गाजेसे घर २ में शर्करा हर्षसे मिलवाई अरु ब्राह्मण प्यारों को भी वस्त्रादि सुवर्ण रत्न से प्रसन्न किये तो गायें इच्छानुसार दुहानेवाली अरु सूखी बावली जल भरी भई अरु तिन मुनिजी के आश्रम में सूखे वृक्ष फलोंवाले भये जो मनुष्य इसे सुनै सो धन पुत्रोंवाला होवै२८।२६।३०।३१।३२।३३। ३४इतिश्री गणेश पुराणमें पराशरजी को दर्शन होना इसनामसे अध्याय१३३भया॥

एकसौचौंतीसका अध्याय॥

या म ग न र ज कद्रूमूषककोणि म ग ा ह नध ग ग ाश ना दिया १

श्री ब्रह्माजी बोले कि तब तो बाल गजाननजी प्रतिदिन चद्रमा के समान बढ़े अरु निज चरित्रों से मा बापोंको आनंद उत्पन्नकर तेहुये १ व्यासजी ने पूछा कि हे ब्रह्माजी आप गणेशजी का द्वापर में भया चरित्र कहिये हे प्रभो पहिले के चरित्र सुनके हमारी तृप्ति नहीं भई है २।३ ब्रह्माजी बोले कि यहां पै प्राचीन इतिहास वर्णन करते हैं जिसमें प्रहलादजी अरु कवि भृगुजी का संवाद है ४ सो कि ऐसेही प्रहलादजीसे महामुनि भृगुजी पूछेगये तो तिसको जो भगवान भृगुजी ने कहा सोही तुम भली भांति सुनो ५ भृगुजी बोले कि हे प्रहलाद जैसे इनका मूषक वाहन भया सो सुनो जो श्रवणसेही सब काम दायक है सो हम कहते हैं ६ कि पहिलेश्रेष्ठ क्रौंच गंधर्व वामदेव मुनिजी को पैरसे ताड़ना भया तो तिस गंधर्व ने शाप दिया कि तू मूषक होगा फिर तुझको गणेशजी दयाके वाहन बनालेंगे ७।८ अरु वेही कृपायुक्त विश्वके कर्त्ता तुझको मोक्ष देंगे सोई वो मूषक के आकार क्रौंच गंधर्व पराशर जी के आश्रममें गिरा ६ जो पर्वत के माफिक बड़ा भारी बड़े रोम नख जिसके महा भले बड़े २ दांतोंवाला अरु भारी शब्द से युक्त १० तो मुनि

पराशर जीके आश्रम में तिसने भारी उपद्रव किया सोकि मिट्ठीके पात्रोंको कतर के नाश खागया ११ अरु पुस्तक अरु वस्त्र अरु भारी २ वक्कल इनको अरु जो जो तहां श्रेष्ठ वस्तुथी सो मो सब तहां तिस मूपकासुरने काट विगाटी १२ अरु पूछ की फटकार से वृक्षोंको भूमिमें गिराये अरु (चोंचों) ऐसे शब्द से त्रिभुवन को गर्जाया १३ तोतिसेतैसा देख पराशरजी चिंता से आतुर भये बोले कि दुर्जन का संगहोने से अवश्य स्थानछोडदेना इसमें संशयनहीं १४ अब कहाजावें अरु सुखपावेंअरुप्राणत्यागने में शास्त्रवेत्ता दोषवतातेहैं १५ कैसे येसुखोंप्राश्रम कुकर्मसे दुःखको प्राप्त भयाहै अरु अबकिसका स्मरणकरें और कौनदुःखसे छुटावेगा सो इसेकोन समर्थहो नष्टकरें किसकी हम शरण जांय अरु कौन हमारा रक्षक होगा ऐसा पिताका वचन सुनके अनगिनतपराक्रमी वाला गजाननजी मधुरवचन बोले कि सर्वथा चिंता मतकरो १६ १७। १८ मेरेदुष्टोंके संहार करने वालेके वैठेचिंता क्या वस्तु है इससे मैं आपका पुत्र भयाहूं सो अब आपका हितकरूंगा १६ हे पिता मेराकौतुक देखो अभी इसे वाहन बनालेताहूं ऐसेकह गजाननजीने करोड़ सूर्य समान प्रकाशवाले फांसेकोछोडा२०।२१तोवो आकाशमें विजलियोंके जैसाचमकातो तिसके भयसे देवतोंने निज२ घर छोड़े २२ अरु वो अग्नि मुखफांसादशोंदिशोंमें भ्रमता पाताल में आमूपकका कंठबांधके बाहरनिकाल २३ लायातोवोमूपकफांसे के बलसे पीड़ित भया अ यत मूर्च्छाको प्राप्तहुआ अरु श्वास पवन रुके शोचने लगा कि दैवमें मुझकालरूपका मरणकहांसेआगया जोहोतासो होताहीहै पुरुषार्थ तोवृथाहीहै २४।२५ जिसमैंनेदाढ़के अग्रभागसे बहुतसे पर्वत विदारे अरु देवसुर नर नहीं गिने २६ ऐसेमेरे कंठमें फांसा किसने उलझा दिया क्या मेरी आयु बीतगई है ब्रह्मा जीबोले जितने मूपकाणे से कहता तितनेही गजाननजीने २७ तिसफांसेको मनसे खैंचा तो वो मूपक सहित तिनके पास आया जैसे गारुड़ शास्त्रजाननेवाला क्षणमें मंत्रसे सर्पको खैंचताहै २८

सो वो मूषक उलंघ्ने कठभया तिसी क्षणमें ज्ञानपाय प्रभु देवगजाननजी को नमस्कार करके २६ परम भक्तिसे सच्चिदानंद घन प्रभु गजाननजीकी स्तुति करता भया मूषक बोला कि आपही लोकोंके नाथ अरु कर्ता हर्ता पालक हो आपतीनोगुणों से हीन अरु माया से तीनो गुणोके सहायकहो तैसेही मायासेपरअरु मायावालेभी हो ३०।३१ अरुब्रह्मादिकोंकरके अगम्यअरु मुनिजनोंके हृदय कमलमें विराजमानहो कारण करण कर्ता अरु कारणोंकेभी कारणहो ३२ ऐसा तिसका वचन सुनके प्रसन्न भये येगजाननजी तिसमूषककी दृढभक्ति जानके बोले ३३ तेरेहीं पुरुषार्थसे हमनिर्गुणभी दुष्टोंके नाशके लिये गुणवाले भयेहैं ३४ अरु साधुवोकी रक्षाके लियेअरु जिससे तूशरण आगया तिससे तेरेको अभयदिया वर मागजो चाहताहै सोदेंगे ३५ मूषक बोला हे गजाननजी मैं कुछनहीं मागता तुमहीं मुझसे वाछित मांगलो ब्रह्माजी बोले कि जब गजानन जी तिस गर्वित मूषकसे ऐसेकहेगये ३६ तो बोलेकि मेरी सवारी होजा जोतेरासत्य वचनहै तो फिर तिसके अच्छा कहतेही पिंगलनेत्र अर्थात् तीक्ष्ण नयन गजाननजी झपटके तिसपे सवार भये ३७ अरु तिसे बोझसे चूर्ण करतेहुये तो तिसने गजाननजी से याचनाकी कि मैं तुम्हारा वाहन हुआ अबहे प्रभो आपलघु रूपहो ओ ३८ तो याचना करतेभये तिसके वचनमें विभु गजाननजी लघु बोझ वाले हुये तो येमहा आश्चर्य देखमुनिनों प्रणाम करके बोले ३६ किमैने तीनलोक विषे बालक ऐसा पराक्रम कहींनहीं देखा जिसके शब्दसे पर्वतफूटे अरु लोकपाल स्थान छोड़भगे ४० तिसको तुमने बलसे क्षणमें वाहन बनालिया तबतो माता आयइनबालक जो कोलेके ४१ हर्षयुक्त भई दूध झरते स्तन पिलातीभई अरु बोली कि मैंतेरे स्वरूप बलको नहीं जाननी ४२ किसी जन्म जन्मांतर के पुण्यसेहमारे घरजन्मा है फिरतोवेमूषक को लेके सादे बालक के समान खेलनेभये ४३ हे व्यासजी ऐसे हमने तुमको गणेशजी के मूषक वाहन होनेकी कथा

कही है ४४ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें श्री गणेशजी का मूषक वाहन होना इसनाम से १३४ अध्याय भया॥

एकसौपैंतीसका अध्याय॥

मूषककेपूर्व जन्मकी कथा वर्णित है

व्यास जीने पूछा कि हे कमल जन्माजी इसने पहिले क्या पुण्य या पापकियाथा जिस्सेये मूषके जन्मको अरु गणेश जीके वाहन पनेको प्राप्तभया १ ब्रह्माजी बोलेकि हे व्यासजी से तुमने हमारे भी मनकाप्यारा अच्छा वृत्तांत पूछासोसबहमकहतेहैं एकचितभये सुनो २ किसुमेरु शिखरपर भारी (सौभरि) मुनिजीका आश्रम हुवाया जो वृक्षोंसे घिरा अरु अनेक पक्षियोंसहित ३ तहांवशिष्ठ आदि मुनि जन अरु इन्द्रआदिदेवता प्रतिदिन तिन्हीं सौभरिजीके आश्रम में दर्शन के लिये आतेथे ४ जो आश्रम भारीतपकी वृद्धिसे प्रकाशित अरु जो सौभरिजी प्रचंड अग्नि अरु सूर्यके समान कांति मान सबलोकोंमें विख्यात अरु ईश्वर ध्यानमें निष्ठा जिन की ५ तिनकी सुंदर पत्नी जो (मनोमयी) ऐसेविख्यात जो सबपति व्रता ओं में प्रसिद्ध भर्ताकी प्यारी ६ जिसकी रमणीय पने करके रतिकी भी सब रमणीयता जीतीगई अरु शची आदिसब इन्द्राणी जिसकी बराबरी के भागको भीन प्राप्त भई ७ कभीसौभरि जी सबेरे उठे अरु होमशाला में होमकरके वनमें समिध लेनेको गये अरु शील वती मनोमयी घरमें कामकरती रही तिसीसमयदुष्ट (क्रौंच) गंधर्व आगया तो तिसके उत्तम आश्रम को देखके क्रौंचगंधर्व नेविश्राम लिया जो आश्रम अनेक शाला युक्त गहरी छायावाला ठंढा १० तो वो बोला जिसका ऐसा रमणीय आश्रमहै सो प्रभु धन्य है अरु तिसका जपतपभी धन्यहै जोये क्षणसेही सुखदायकहैतो ११ बहुत रहनेसे मुक्तिदायक हो ऐसाकह तिनके घरमें गयातोमनो मयीका सुंदर मुखदेखा १२ जिसके दर्शन से शिवजीभी कामातुर होंय तो तो तिसके कटाक्ष पड़नेसे कामाग्निकरकेव्याकुल १३ तिससेआगि

हुवा शीघ्र तिसका हाथ पकड़ता भया तौतिसकेहाथकास्पर्श होतेही वामचित्तभई कम्पनेलगी १४ अरुभर्ताकेस्मरणमें परायणतिसमनो मयीने शाप भी न दिया कुमिलाई सूखेकठपसीनेसहितआंखोंमेंजल जारहा जिसके ऐसी वो परम उद्विग्नहो मोहित भई शोच करने लगी कि अब मैं किसकी शरणजाऊं कौन इस दुष्ट से छुटावे अरु में जानतीहू कि इस जन्म में मैंने कोई पाप भी नहीं किया पूर्व जन्म के पाप से ये दुःख आपडा है १५ ।-१६ । १७ ऐसे कह तिसके दुष्टभाव को जान तिसे समझाती ये बोली मैं तेरी बेटीस-रीखीहूं अरु तू मेरे पिताके समान है १८ हे निर्लज्ज जो तू ज्ञान वान् है तो पापमें मत पड पापीजन बहुतकरोड वर्ष नरकोंमें गिरते हैं तिससे हे महाभाग मुझ पुत्रीके समान दीनको तू छोडदेनहीं मैं प्राण त्यागदूंगी इसमें संशय नहीं अरु स्त्री हत्या के दोष से भया भारी पाप तुझको लगेगा अरु मेरे बडभागी भर्त्ताजी वनसे अभी आतेहोंगे २१ तिनका क्रोध रूप अग्नि तुझको क्षणमें भस्मकरेगा तिनकी आज्ञाके बिनामें कुछ भी नहीं करतीहूं अर्थात् नहीं मैंही तुझको शाप देती २२ अरु मैं सृष्टि सहित ब्रह्मा को भस्म करदेऊं तू तो क्याहै ऐसे तिसके कहते सौभरिजी भी आगये २३ तौमध्या-ह्नसूर्य के समान प्रकाशमान तिनको आंगनमें आये देख तिनके तेजसे ढकेभये तिसने शीघ्र हाथ छोडा २४ नीचेको देखने लगा अरु कँपा कुम्हिलाया अरु डरा तो प्रलयाग्नि सरीखेजलते सौभरि जी २५ तिस गंधर्व के प्रति भारी शाप छोडते भये बोले कि जो तैने बिन प्रत्यक्ष अर्थात् छिपके मेरी स्त्री पै प्रगल्भताकरी अर्थात् ढाढसे इसेभोगने चाहा इससे तू छिपारहने वालाही मूषक होगा सो चोरके जैसे पृथ्वी खोद २ के रहेगा तैसे होउकाय देख २ केही खाता पीता रहेगा २६।२७ क्रौंचबोला कि मैंने इस मनोमयीपै केवल इच्छाकर ढाढनहीं करी किंतु प्रसंगसे सब होगया जो कि इस सुन्दर हंसनेवाली को देखके मैंने इसका हाथही पकडाथा तितनेहीमें आप आगयेहो आपके तेजसेडरकरमैंने इसेतुरन्तछोड

कही है ४४ इतिश्री गणेश पुराण उत्तर खंडमें श्री गणेशजी का मूषक वाहन होना इसनाम से १३४ अध्याय भया॥

एकसौपैंतीसका अध्याय॥

मूषककेपूर्व जन्मकी कथा वर्णन है

व्यासजीने पूछा कि हे कमल जन्माजी इससे पहिले क्या पुण्य या पापक्रियाथा जिस्सेये मूषके जन्मको अरु गणेशजीके वाहन पनेको प्राप्तभया १ ब्रह्माजी बोलेकि हे व्यासजी ये तुमने हमारे भी मनकाप्यारा अच्छा वृत्तांत पूछासोसबहमकहतेहै एकचित्तभये सुनो २ किसुमेरु शिखरपर भारो (सोभरि) मुनिजीका आश्रम हुवाथा जो वृक्षोंसे घिरा अरु अनेक पक्षियोंसहित ३ तहांवशिष्ठ आदि मुनि जन अरु इन्द्रआदिदेवता प्रतिदिन तिन्हीं सोभरिजीके आश्रम मे दर्शन के लिये आतेथे ४ जो आश्रम भारीतपकी वृद्धिसे प्रकाशित अरु जो सोभरिजो प्रचंडअग्नि अरु सूर्यके समान कांति मान सबलोकोंमें विख्यात अरु ईश्वर ध्यानमें निष्ठा जिन की ५ तिनकी सुंदर पत्नी जो (मनोमयी) ऐसेविख्यात जो सबपति व्रता ओं में प्रसिद्ध भर्ताकी प्यारी ६ जिसकी रमणीय पने करके रतिकी भी सब रमणीयता जीतीगई अरु शची आदिसब इन्द्राणी जिसकी बराबरी के भागको भीन प्राप्त भई ७ कभीसोभरिजी सवेरे उठे अरु होमशाला में होमकरके वनमें समिध लेनेको गये अरु शील वती मनोमयी घरमें कामकरती रही तिसीसमयदुष्ट (क्रौंच) गंधर्व आगया तो तिनके उत्तम आश्रम को देखके क्रौंचगंधर्व नेविश्राम लिया जो आश्रम अनेक शाला युक्त गहरी छायावाला ठंढा १० तो वो बोला जिसका ऐसा रमणीय आश्रमहै सो प्रभुधन्य है अरु तिसका जपतपभी धन्यहै जोये क्षणसेही सुखदायकहैतो २१ बहुत रहनेसे मुक्तिदायक हो ऐसाकह तिनके घरमें गयातोमनो मयीका सुंदर मुखदेखा १२ जिसके दर्शन मे शिवजीभी कामातुर होय तो वो तिसके कटाक्ष पडनेमे कामाग्निकरकेव्याकुल १३ तिसमेंआसक्त

हुवा शीघ्रतिसका हाथ पकडता भया तोतिसकेहाथकास्पर्श होतेही वामूर्च्छितभईकम्पनेलगी १४ अरुभर्ताकेस्मरणमें परायणतिसमनो मयीने शाप भी न दिया कुम्हिलाई सूखेकठपसीनेसहितआंखोंमेंजल जारहा जिसके ऐसी वे परम उद्विग्नहो मोहित भई शोच करने लगी कि अब मैं किसकी शरणजाऊं कौन इस दुष्ट से छुटावे अरु मैं जानतीहूं कि इस जन्ममें मैंने कोई पाप भी नहीं किया पूर्व जन्म के पाप से ये दुःख-आपडा है-१५।१६।१७ ऐसे कह तिसके दुष्टभाव को जान तिसें समझाती ये बोली-मैं तेरी बेटीस-रीखीहूं अरु तू मेरे पिताके समान है १८ हे निर्लज्ज जो तू ज्ञान वान है तो पापमें मत पड पापीजन बहुतकरोड वर्ष नरकोंमें गिरते हैं तिससे हे महाभाग मुझ-पुत्रीके समान दीनको तू छोडदेनहीं मैं प्राण त्यागदूंगी इसमें संशय नहीं अरु स्त्री हत्या के दोष से भया भारी पाप तुझको लगेगा अरु मेरे बडभागी भर्त्ताजी वनसे अभी आतेहोंगे-२१ तिनका क्रोध रूप अग्नि तुझको क्षणमें भस्मकरेगा तिनकी आज्ञाके विनामैं कुछ-भी नहीं करतीहूं अर्थात् नहीं मैंही तुझको शाप देती २२ अरु मैं सृष्टि सहित ब्रह्मा को भस्म करदेऊं तू तो क्याहै ऐसे तिसके कहते सौभरिजी भी आगये २३ तोमध्या-ह्नसूर्य के समान प्रकाशमान तिनको आगतमें आये देख तिनके तेजसे ढकेभये तिसने शीघ्र हाथ छोडा २४ नीचेको देखने लगा अरु कंपा कुम्हिलाया अरु डरा तो प्रलयाग्नि सरीखेजलते सौभरि जी २५ तिस गंधर्व के प्रति भारी शाप छोडते भये बोले कि जो तैंने विन प्रत्यक्ष अर्थात् छिपके मेरी स्त्री पै प्रगल्भताकरी अर्थात् ढाढसे इसेभोगने चाहा इससे तू छिपारहने वालाही मूषक होगा सो चोरके जैसे पृथ्वी खोद २ के रहेगा तैसे हीउकाग देख २ केही खाता पीता रहेगा २६।२७ क्रौंचबोला कि मैंने इस मनोमयीपे केवल इच्छाकर ढाढ़नहीं करी किन्तु प्रसंगसे लग रोगया सोकि इस सुन्दर हसनेवाली-को देखके मैंने इसका हाथही पकड़ाथा तितनेहीमें आप आगयेहो आपके तेजसेडरकरमैंने इसेतुरन्तछोड़

दईहै २८।२६-इससे हे कृपानिधान मेरा अपराध क्षमाकरो अरु शरण आये पैदयालु मुझपर आप अनुग्रहकीजिये सोकि मैं आपके शरणहूं मुझपै कृपाकरो अर्थात् इस शापकी अवधि भी कहो त्रिभुवनमें मैंने कोई ऐसी पतिव्रता गुणवालीनहीं देखी ३०। ३१ मुनि सोभरिजी बोले कि जो सुमेरुको समुद्र डुबोलेवे अरु सूर्यजी पश्चिममें उदयहोय तबभी मेरावचन मिथ्यानहीं होता चाहे अग्नि शीतलहोजावे ३२ फिरभी हेदुष्ट अबमैं कहताहूं सो आदरसे सुन कि पराशरजीके घरमें द्वापर युगके विषे देवगजाननजी अवतार धरेंगे ३३ तिनकी तू सवारीहोगा तबब्रह्मादिक देवताभी आदरसे तुझको मानेंगे ३४ अरु तू तिनके हाथमें जाकर फिरस्वर्गको जावेगा ऐसा तिनका वचन सुनके सुखदुःखसहितक्रौंचगंधर्व ३५ मूषकरूप द्वापर युगमें पराशरजीके आश्रमपर भूमिमें गिरा ३६ जो महाबल पराक्रमी भारी पर्वतके समान मुनिजी के आशिष बलसे वो गजाननजी के समीपगया अरु वो महाबली मूषक तिनकी सवारी भया हेव्यासजी ऐसे जो तुमने हमसे पूछा सो हमने सबकहा ३७ ३८ जैसे गजाननजी का मूषक वाहनभया व्यासजीने पूछा कि हे ब्रह्मन् विभुगजाननजीने सिंदूर दैत्यको कैसे मारा ३६ सो हे चतुराननजी सो मुझको विस्तारसे कहिये आपके वचन सुनके अमृत पानके समान मेरीतृप्ति नहींहोतीहै ४० हे देवेश मैं भक्ति से सुनताहूं आप सर्वज्ञ कृपाकरके कहो ४१ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखण्डमेंक्रौंचकोशापदेनाइसनामसे १२५ अध्यायभया ॥

एकसौछब्बीसका अध्याय ॥

श्रीगजाननजीकरकेसिंदूरदैत्यबध्यदूतकामेजनेषटनाम वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजीबोलेकि एकदिनदेवगजाननजीबड़भागी मुनिपराशरजी कोबोले जोसबोंके दुःखसे दुःखी १ गजाननजीबोले कि सिंदूरदैत्यने तो सबजगतजीत लिया जो हवन श्राद्ध जपादिकोंसे अरु वेदध्वनि से रहित किया २ अरुदेवता मुनिजनोंके ऋषियों के स्थान छुटाये

इससे इसगजाननरूप से हमतिस दुष्टका नाशकरेंगे साधुवो का पालन,कर भूमिभार उतारेंगे देवतो को स्थान दिवावेंगे अरु लोकों में आनद विस्तार करेंगे हे पिता जी आप अपना अभय दायक हस्तमेरे मस्तकपर धरो आपकी प्रसन्नतासे मैंदुष्ट दैत्यको मारेंगा मुनिजी बोले हे वालकजी निजवालपन से तुम वडा आश्चर्य कररहेहो जैसे खेल में भरावालक चन्द्रमाका मडल मांगताहै ३।४।५।६ तैसेही सव देवतों करके असाध्य कर्मको तुमकिया चाहतेहो जिसके सांसलेने से सैकडों पहाड पडते हैं ७ अरु जिसके पैरकी फटकार से त्रिभुवन कपता है तिसके साथ तुम कमल की नाली सरीषे शरीर वाले कैसे युद्ध करोगे ८ सोतू नौ वर्षपूरे तप करके फिरमेरे अनुग्रह मात्रसे जातूसमर्थ होता ९ तैसेही सामर्थ वाला ये अभयदायक हस्ततेरे मस्तकपे धरा ब्रह्माजी बोले तवतो हर्षयुक्त देव गजाननजी मुनिजी को माता को भी अरु लक्ष्मीनारायण शिवजी को भी नमस्कारकर तिस मूषकपर सवार हो करके युद्ध करने को गये १०।११ अरु अंकुश परशु फांसा कमल ये चारों हाथोंमें धारण करते भये अरु निजगर्जना से त्रिभुवन को कंपाते १२ अरु निजतेजसे प्रलय अग्निके समान प्रकाशमान गजाननजी शीघ्रही तिस सिंदूर दैत्यके नगर पहुचे जोघृष्णेश्वर जीके निकट पनसे प्रसिद्ध (सिंदूरखडक) नगरथा तहां स्थितभया वेसिन्दूर त्रिभुवनको शिक्षा देताथा १४ तो तिसके उत्तरमें स्थितभये देव गजाननजी दिशोंको गोजाते गर्जतेभये तो सातों समुद्र चलितभये अरुभारी २ भी पर्वतफूटे १५ अरु तिसका शब्द सुनके सारे दैत्य कंपित भये बहुतसे डरते मूर्छित भये कई मरगयेगय १६ अरु सिंदूरजी मूर्छितभया फिर छिनमें सचेतहो दूतों से बोला किये कौन गर्जताह उसे देखो १७ जिसकेशब्दसे मुजको अचानक मूर्छा कैसे आगई तो ऐसेके सामने ठेरनेकी किसकी सामर्थ्य होगी १८ तब तो वेदूत वालकजीके समीप गये तो सिंहके जैसा तिसका रूप देखिके हाथीके समान वेडरे अरु कंपे अरुकई धीरजसे ये बोले कि

तू कौन कहांसे किसलिये आयाहै तेरानाम क्याहै १९। २० संसार के सहार करने वाला सिदूररसिक तेराशब्द सुनके कोप भया है सोकि तेराहुंकारना सुन सबकपे अरु सिंदूरभी कपा २१ तूवालक भी वलवान सो कितू चारपांचवर्षकाभी छिनमें सारे संसारको संहार करने वाला देख पड़ता है २२ ऐसातिनका वचन सुनके विभुगजाननजी बोले किमैं शिवजीका पुत्र गजानन ऐसे विख्यात अव पराशरजीके घरमें रहताहूं २३ सामें दुष्टोंका सहार करनेवाला अरु भक्तोके पालनेमें परायण अनेक अवतारधारीहूं अरु ब्रह्मादिक भी मुझको नहीं जानसके (गजानन] ऐसामेरा नामहै युद्ध करने को आयाहू सोतुम अपनेस्वामीके पासजावो गरुसबवृत्तांत सुनावो २४।२५ तिसदुष्टके हतेही मेरामन प्रसन्नहोगा ब्रह्माजीबोले तवतो वे तहां से चल सिंदूरपे जाके वचन वोले कि आपकी आज्ञासे छिन में तिस पुरुष के पासगये तो कालके समान तिसे देखके हम सारे कंपितभये २६ । २७ फिर आपके प्रतापसे तिसके आगेहम बोल सके फिर तिसने सवनिज वृत्तान्त विस्तारसे सुनाया सोकि (गजानन) इसनामसे विख्यात येशिवजीका पुत्रहै सो दुष्टदैत्योंके नाश अरु साधवो को पालना के लिये २९ भलीभांति तुम्हारेसाथ युद्धकरने को आयाहै वो चारवर्षकाहो वालक वातभारी कूदरहाहै ३०सो अवतुम निजप्रभावसे तिसतुच्छशत्रु वालककोजीतो तुम्हारे श्वासहीसे वो भगजायगा ३१ हेस्वामिन् आपके दरशनसे शिव ब्रह्मादिक कंपित भये तो तिसतुच्छ बुद्धोवाले वालक को कौन गिनतीहै ३२ ब्रह्माजी बोले ऐसादूत का वचन सुनके चिंतासे आतुर सिंदूरमैले मुखभया फिर क्रोधसे लालनेत्र करके ३३ मुख से प्रलयके समान अग्नि निकालता क्रोधहर्ष सहितभया दूतों से बोला ३४ कि हे दूतो तुम्हारे वचनमें मुझको वहुत आश्चर्य प्रतीत होताहै सोकि सिंहके साथ लड़नेको मच्छर कैसे समर्थ होगा ३५ चारवर्ष के वालक के साथ में कैसे युद्धकरू तुमतिससे कैसे भयभीत भये में यह नहीं जानताहूं ३६ मेरे कोप भये संसार नष्ट

होवे तो तिसकी क्या गिनतीहै ऐसे वो आकाश दिशा विदिशाओं को गाजाता गर्जता भया ३७ अरुअस्त्रशस्त्रलेके युद्धको चाहता निकला तबतो तिसके मंत्री नमस्कार करके बोले ३८ कि आपमंत्री सहित सेनाके होते २ कैसे लड़नेको जातेहो आपके प्रतापसे हमहीं पहिले तिसेमार लेवेंगे ४८ सशयके लियेही भारीसेना पाली जाती है सोई ये आपहुवाहै हे प्रभोहम आपके लिये प्राणत्याग देंगे४० आज्ञादेओ हम आपके शत्रु बालकसे लड़ने जातेहैं सिंदूरबोला कि हेसेनाबालो मैंहींजाताहूं तुमसब मेरा पुरुषार्थ देखो ४१ ऐसेंकह शीघ्रही तिनबालकजी को हतने के लिये गया तोवो क्षणमेंहीं वहां पहुंचा जहां बालकजो विराजमानथे ४२ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तर खण्डमेंसिंदूरकाचढनाइसनामसेअध्याय १३६ भयाहै॥

एकसौसैंतीस का अध्याय॥

गजाननजीसेसिन्दूरकोमोक्षमहाराजावरेण्यकोउपदेशहोनापर्यंतदियागया॥

श्रीब्रह्माजीबोले कि तबतो तिन बालगजाननजीको देखके मद से गर्वाया सिंदूरबोला कि हेमन्दबालकसेलड़ते मुझको लाजआती है १ सोहेबालक तूशीघ्र जाके माताका स्तनपी मेरे बाणपात से तूवृथा माराजायगा २मुझको देखके ब्रह्मादिक देवताभी भगजातेहैं अरु तेरे मरतेहीस्नेह से तेरे माबापभी मरजावेंगे३ इस्से हेबालक चलाजा मुझे निजमुख नदिखा जिसमेरे तलप्रहारसे ब्रह्माण्डके सौ टूकहोवें४गजाननजी बोलेकि हेदुष्टसत्यकहा परतैंने चित्तमें विचार नहीं किया अरु न मेरा अनेकप्रकार का रूपवा सामर्थ जानाहै १५ जिसमेरे क्रोधसे सब भ्रष्टहोवें अरु निज इच्छामें हम इसजगत्को रचते अरु दुष्टोंको मार २ भूमिभार उतारते हैं ७ जो पराक्रम सहित छोटाहै सो छोटानहीं रहता जैसे अत्यंत सूक्ष्मभी अग्नि भारी नगर जलादेताहै राजातेरीजीनेकी इच्छा है तोमुझे नमस्कार करके निजघर को चलदेना मानोजन शरणआयेकोनहीं मारतेहैं ६ नहींतो मेरे शस्त्रपातसे तू स्वर्गमें जावेगा तेरेमारे तुझसेपीड़ितभया

जगत् सुखी होगा २० हे दैत्यराज तू ब्रह्माके वरदेनेसे गर्वमतकरै सब अवधि आये उलटा पड़जाता है २१ जैसे पहिले थभेमें प्रकट होके विष्णु जीने हिरण्य कशिप को माराथा अरु सुग्रीवने राम-चंद्रजीका आश्रय लेके समयपै वालिभाई को मारा २२ तसेही काल्के योगसे तेरीभी उलटी मतिहोगई है तू अत्यंत भारीभी मुझ को छोटासा दीखता है १३ जो सामर्थ हे तौलाज छोडधीर धरके मेरे साथयुद्ध कर ब्रह्मावोले तवतौ ऐसे कहके गजाननजीने बिराट स्वरूप धारण किया १४ तौ तिनका मस्तक ब्रह्मांड से भी ऊंचा गया अरु तिनके पैर सातौ पाताल फोड चले अरु कान दिशोमें फैले १५ जब सिंदूरने तिन बालगजानन जीको बिश्वरूप देखेजो सहस्र शिरोवाले सहस्र नेत्र स्वर्ग भूमिमें व्याप्त १६ सहस्र पैरों सेव्याप्त होकेस्थितभये दशोदिशोमें फैलरहे दिव्यवस्त्र पहिरे सुंदर सुगधि लगाये दिव्य आभूषणो से सजे १७ अनगिनत सूर्यसमान प्रकाशमान अनेक रूपोवाले ऐसाइनका बिराटरूप देखके सिंदूर दैत्य मनमें कंपा १८ फिरधीर धरके गजानन जीके निकट आया अरु आकाश दिशा विदिशाओ को गोजाता गर्जना करताभया१९ अरु शीघ्रही खड्ग उठाके देवजीको मारनेचाहा सो कि ये क्रोधसे तिनपे झपटा जैसे आगपै पतग पडै २० तौगजानन जी बोलेकि ये मूर्ख मेरे स्वरूप को नहीं जानताहे, कि येही मुझे खालेवेगा ऐसेकह तिसका कठपकड लिया २१ अरु तिसको हाथोंसे अत्यंत मसला अरु तिसके रुधिर-भरे लालअगोको देहमें लगातेभये २२ तवतौ (सिंदूर वदन) अरु सिंदूरप्रियऐसे विख्यात भक्तकामपूरक गणेश जी होतेभये २३ अरु सिंदूरके मरतेही देवतोंने हर्ष से पुष्प वर्षाये अरु जीतके वाजेवजे अप्सरा नाचने लगीं २४ अरु तहांवशिष्ठ आदिमुनि जन अरु ब्रह्मा इन्द्र आदि स[illegible] के आतेभये २५ अरु नमोनम जय[illegible] २ गर्[illegible] करके सव दिशोको गोजाते भये फि[illegible] हे स[illegible] २६ सो षोडश उपचारो से परमाद

जो चतुर्भुज सब आभूषणों से सजे २७ दिव्य वस्त्र पहिरे सुगंध लगाये मूषकपै सवार ऐसे गणेशजी की प्रार्थना करते भये कि हम आपकी कैसे स्तुति कर सकें २८ जहां चारो वेद थकित भये अरु ब्रह्मादि देवता मुनि जन आपजगत्के कर्ता कारण कार्यरक्षक पोषकहो २९ अरु मोहने संहारने वाले अरु इस जगत्के ज्ञान दाता आपही हो अरुनदी समुद्र वृक्ष आपही हो अरु ब्रह्मा विष्णु महेश इन्द्रवायु मुनिजन ३१ गंधर्व चारण सिद्धयक्ष राक्षस सर्प अप्सरा किन्नर हे देवजी आपहीहो ३२ हम धन्य हैं जोमोक्ष के साधक अर्थात् ज्ञान स्वरूपभी आप हमको प्रत्यक्ष दीखेहो अरु हे देवजी अब सिंदूर हतेपर हमसुख को प्राप्तभयेहैं ३३ अरुसब मुनि जन राजीनिज २ कामपरायण भयेहैं अरु होमश्राद्ध जपतप सब कर्म होंगे ३४ अरु विशेषसे आप अनेक अवतार धारके इस संसार की पालना करतेहो दुष्टोका शीघ्रनाश करके भक्तोके कार्य सिद्ध करतेहो ३५ ब्रह्मावोले तवतौ सारेऐसे कहके तिनका सुंदर मंदिर बनवाते भये अरु तिसमें गजाननजीको विराजमानकिये ३६ जिनके दर्शन करतेही मनुष्य सबपापोसे छूटे अरु जिनका अपराध नकिये से सातकुल तरजावें ३७ ऐसे इनको पूज प्रणामकरके सब देवता प्रसन्नभये फिरतौसारे मुनियोने परम आदरसे तिनका पूजन किया ३८ अरुसिंदूर कोमारने से इनका [सिंदूरहेति] ऐसानामधरा फिर अतिप्रसन्नभये नमस्कारकरके निज२ आश्रमोको पधारे ३९ फिर सारेजनतिनको नमस्कारकर अरु भक्तिसे दंडवत प्रणामकरके अनेक से उपचारोसे पूजा करते भये अरु बोले किये आपका (राजसदन) ऐसा क्षेत्र विख्यातहोगा अरु राजा वरेण्य तिन्हें देखके पहिचाना कि येमेरे पुत्रहीहैं ४१ तो बोलाकि जो आपने इस दारुण दैत्यको हतके मत्रराजो को निज ४ राज्यदिवाया ४२ तिससे आप कानामभी दैत्यविनर्दन ऐसेविख्यातहोगा ऐसे कहतिनका पराक्रम देख तिनकी पूजा करता भया ४३ स्नेहके आंशुछोड़ता कुछकह न सका अतिकंठ रुकनेसे अतिदुखित भया रोनेलगा अरु बोला ४४

के तहां एक नर के आकार दिव्य आश्चर्य रूप मनुष्य बनाया ८
तब तो वो मनुष्य उठकरके अंजलि बांधे बोला कि हे देवि मैं क्या
करूं अरु कहां जाऊं मुझे तुम आज्ञादेवो १० तब तो देवी उमाजी
तिसका वचन सुन हर्षकरके हे भरतश्रेष्ठ राजन् ये कहतीभई ११
श्रीउमाजी बोलीं कि हे पुत्र तू मेरा वचन सुन फिर ऐसे ही कर
सो कि हे महाभुज तू द्वारेपर चलाजा जब तक मैं स्नानकरूं १२
तब तक हे पुत्र मेरे घरमें कोई भी पुरुष न आसके देवीजी का
वचन सुन तिसने तभी देवीजी को नमस्कार करी १३ सोकि दंड
वत् प्रणाम करके घरके द्वारपर आकर ठैरा तो तभी वहां शिवजी
आये जो कालरूप आप अर्थात् साक्षात् हर १४ सो भुजग अरु
रुंडोंकी माला धारणकिये अरु गणोंसे सेवित तो तिस बाल बुद्धि
वाले मानुषने निज पिता शंकरजी को न जाने १५ फिर वो मानु
षरूप तिन शम्भुजी को तिरस्कार करके अर्थात् हटाकर कहने
लगा कि मेरी माताकी आज्ञा नहीं है १६ तिसका वचनसुन शिव
जीअत्यंत क्रुद्धभये तो त्रिशूल से तिसका शिर काटते भये वो
शिवलोक को चलागया १७ तो तिसका कबाड़ हाथ पैर ये भूमि
में रहे फिर शिवजी घरमें गये तो उमाजी ये वचन बोलीं कि १८
हे देवजी क्या मेरा पुत्र आपने द्वारके अगाड़ी नहीं देखा था तब
तो ये वचन सुनके शंकरजी कहने लगे १६ शिवजी बोले कि हे
देवि तुम्हारे पुत्र कैसे भया अरु क्यों द्वारपर ठैरा ये बड़ा आश्च-
र्य्य है तैंने आपही कैसे पुत्र उत्पन्न करलिया सो सब वृत्तांत हम
को कहो २० देवी बोलीं कि मैंने उबटना लगाके देहमें मस गाथा
तो शरीर से जो मैलउतरा तिससे मैंने पुत्र बनाया था २१
श्री शिवजी बोलेकि तुम्हारे पुत्रको हमनहीं जानते हैं ये कालकिसी
से उलँघानहीं जाता कालसेही सबनाश होतेहैं सोकि सब प्राणी
कालहीके वशहोरहेहैं २२ कालहीसो तीनों जागताहै कालहीकरके
नावालोंमें अर्थात् चेष्टा करनेवालों में प्रभुहै सो कालहीमें येलोक
अरु यक्ष राक्षस सर्प सब नाशको प्राप्त होतेहैं २३ सो तिसीकाल

से तेरापुत्र हतागया हे देवि हम तुम्हारे पुत्रको नही जानतेथे अरु वो शिर गणलोकको चलागया सो तुम शोच न करो २४ तबतोदेवी पुत्रके दुःखसे दुःखितभई हाय२ करती भई अरु महाशोचकियाकि हायपुत्र हायमेरे आत्मज २५ तबतो उदासीनमनभये शिवजी घरके द्वारपर आये फिर देखकर एकहाथीका मस्तक लातेभये २६ तिस शिरको शंभुजी तिस शरीरकी सधिमें अर्थात् तिसकी ग्रीवाकेस्थान में लगाते भये तबतो वो गणपति होकर शिवशंकरजीकापुत्रकहाया २७ फिर शिवजी जाकर देवीसे बोले कि तुम्हारा ये पुत्रभया है तबतो तिससुतको देखके देवी हँसकरके कहनेलगी कि २८ हे देव ये मेरापुत्र कैसे येतो नर कुंजर अर्थात् गजमस्तकधारी नरहै मेरे पुत्रकातो महा सुंदर स्वरूप अरु अद्भुत दर्शन था २९ शिवजी बोले कि हे पार्वतिदेवि तुमसुनो तुम्हारे पुत्रको हमने वरदियाहै सो ये निज पूजनसे सर्व सिद्धि दायक होवेगा ३० अरु हेदेविहमने इस्के बारह नाम निकालेहै सो सुनों जो इन्हे प्रातःकालउठकरपढ़े सो सब पापोंसे छूटताहै ३१ सोकि पहिला तो (सुमुख) यहनाम है अरु दूसरा (एकदंत) है अरु तीसरा (कपिल) है अरु चौथा (गजकर्णक) ऐसायह है ३२ अरु पांचवां (लंबोदर) अरु छठा (विकट) है सातवा (विघ्ननाशक) है आठवा (विनायक) है ३३ नवां (धूम्रकेतु) दशवां (गणाधिप) है ग्यारहवां (भालचंद्र) बारहवां (गजानन) है ३४ इन बारह नामोंको जोनर पढ़ेसुने तो तिसके सब सिद्धिहोवे अरु सम्यक् कष्ट अर्थात् आपत्ति कभीभी नहीं होवे ३५ युधिष्ठिर ने पूछाकि हेजनार्दन जी अब आपमुझसे गणेशजी को कथा अरु तिसको विधिकहो कि किस्महीने अरु कौन तिथिमें मैं व्रत पूजा करूं ३६ श्रीभगवान बोलेकि महीने २ में सनदुःख निवारक इनविनायकजीके व्रतको करे तो तिसके सर्व सिद्धिहोवे अरु आपत्ति कभीभी नहींहोती है ३७ सोमहीनों में मकर अर्थात् माघका मास विशेष शुभदायकहै अरु तिसकेकृष्णपक्षकी चौथसब सिद्धिदेने वालीहै ३८ सो तिसदिन सुवर्णके गणेशजी पूजनीयहै सो

कि धूपदीप अरु नैवेद्य देवजोका भोग ३६ लड्डूब्राह्मणोंको देने अरु वस्त्र अरु श्रेष्ठ दक्षिणा देनी अरु अन्नजल रहित व्रतकरै अरु रात को चंद्रमा के उदयमें अर्घदेवे ४० चंद्रमा को अर्घ देकर फलमूल भोजनकरै दूसरा दिनभये शुभब्राह्मण जिमावे ४१ ब्राह्मणजिमा-कर फिर आप भोजन करै हेराजन् जो इसविधिसे करै सो सिद्धि को प्राप्तहोवे ४२ सो सहस्त्रवो एकादशो के वृत अरु दोसेकरोड़ कन्यादान अरु हजार करोड़ गोदान इनका फल गणेश व्रतसेमिल ता है ४३ अरु हरिद्वार अरु प्रयागमें अरु नैमिषारण्यमें जोफलहै अरु जो श्रेष्ठ तीर्थोंमें स्नानसे फल मिलताहैसो व्रतकरनेसेहो४४ श्रीकृष्णजी बोले किहेराजन्युधिष्ठिरभाद्रपदमहीने अरु शुक्लपक्षमें चौथतिथि उत्तमहैसोही गणनाथजीके जन्मका दिनहै ४५ तिस्से हे पारथतुमकरके येव्रत पूजन पूर्वक कर्तव्यहै इसके प्रभावसे तुम निश्चय कामफल पावोगे ४६ इतिश्रीस्कंद पुराणश्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवाद में गणेश जन्मकथा भई सो सदा सबको शुभदेवे॥

द्वादशमासगणेशजीकीकथाओंकावर्णन॥

पहलीकथा।

ऋषियोंने पूछा कि हेस्कन्दजी जो मनुष्य दरिद्र शोक अरुकुष्ट आदिको कर्कैसंयुक्त अरु वैरियों से पीड़ितहैं अरु जो राजा निज२ राज्यसे भ्रष्टभयेहैं अरु जो सब जनभी क्लेश भोगरहेहैं तिनकोंक्या कर्तव्यहै १ अरु जो धनसे हीन जनहैं अरु जो सारे उपद्रवोंसे पीड़ित होरहेहैं अरुविद्या पुत्र अरु निज२ स्थानसे छूटेभयेहैं अरु जो रोगग्रस्तहैं कल्याण चाहतेहैं २ ऐसे २ जोजनहैं तिनको फिर कुशल प्राप्तिकेलिये क्या कर्तव्यहै सो कहिये स्कंदजी बोले कि हेमुनीश्वरो जो वृत सुन्दर तुम सबोंने पूछाहै तिसे सुनो ३ जिस वृतसेती मनुष्य आपत्ति समुद्रसे तिरजावै सोकि भूमिमें एकमहा पवित्र वृतराजहै जोमनुष्योंको सिद्धिदायक ४ अरुस्त्रियों को विशेष करके पुत्र अरु सुहागपन बढ़ाने वाला अरु जो वृत पांडुके पुत्र

बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिरने कियाहै ५ जोराजा निजराज्य से छूटा अरु भाई अरु उत्तम २ निज जनों सहित बनमें रहतेथे तिन को तिन्हींके दुःखनाश के लिये श्रीकृष्णजीने जो कहाहै सोही हे द्विजश्रेष्ठो तुमसुनो ६ युधिष्ठिरजीने पूछा किहेदेवोके ईश कृष्णजी इस दुःख से कैसे मेरा उद्धार होवे जोमैं इससे छूटों सो हे सर्वज्ञाता गदाधारी जी आप सब कहिये ७ स्कदजी बोलेकि ऐसे प्रश्न किये श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिर को एकहते भये जो सावधान अंजलि बांधे धीरता युक्त अरु वारंवार प्रार्थना कररहा अर्थात् पूछ रहाथा ८ श्रीकृष्णजी बोले कि हेराजन् एक अत्यंत गुप्त सर्व अर्थ दाता व्रतहै अरु हेनरश्रेष्ठ जो हमने किसीको भी नहीं कहाहै ९ हेराजन् पहिले सत्ययुगमें हिमाचल की कन्या पार्वतीने वनमेंबहुत तप किया परतिसने निजपति शंकरजी को नहीं देखे १० तवतो तिस पार्वतीने हेरव गणेशजी का स्मरण किया तो तिसीक्षण में आये गणेशजीको देखके एपूछने लगी ११ मैंने महाघोर जो रोम हर्षक दुर्लभ तपथा सोभी किया पर मेरेप्यारे गिरिशायी शिवजी मुझको प्राप्तनहीं भयेहैं १२ सोतुम्हारा एक (संकष्टनाशन) अर्थात् आपत्ति नाशक व्रत नारदजीने बतायाथा सो तिस पुरातन निज व्रतको मुझसे कहो १३ तवतो पार्वती के तिस वचनको सुनकेशीघ्र सिद्धिदाता देव गणेशजी आपत्ति तारक शुभ व्रत तिसको कहतेभये १४ श्रीगणेशजी बोले कि हेदेवि मेरेपवित्र संकष्ट नामक व्रतराज को तुमकरो तिससेतुमारी अरु और लोककी वांछितकी सिद्धिहोवेगी १५ सोकि श्रावण वदी चौथको चन्द्रमाके उदयमें हेसुरेश्वरिदेवि ए संकष्ट व्रत कर्त्तव्यहै १६ सो प्रात काल सम्यक् प्रकारसे शुद्धहो कर दतधावन पूर्वक पवित्रहो तिसदिन जवतक चंद्रमाका उदय होवे तवतक आहार रहित रहे अर्थात् भोजन नहीं करे १७ अरुमैं शंकरजीके प्रिय गणेशजी को जिमाकरही भोजन करोगा ऐसेप्रथम संकल्पकर अरु जल अरु श्वेत तिलोंसे स्नान करके १८ अरुनित्य का कर्म करके हे सुंदर व्रतवाली हमारी पूजाकर यथाश्रद्धा से

सुवर्णकी हमारी मूर्ति बनाई जातीहै १९ अरु सुवर्णके या चांदीके वा तांबेके अथवा मिट्टीके कलशमें जल भरके वहां हमारा स्थापन करें २० जो कलश वस्त्र सहित ढकने के पात्र सहित हो अरु तहांही अष्टदल कमलो बनाकर पाद्य अर्घ इत्यादि सहित भक्ति भाव संयुक्त षोडश उपचारों से हमेंपूजे २१ अरु (लंबोदर) अरु (चतुर्भुज) (त्रिनयन) अरु लालवर्णवाले २२ (नीलवर्ण) अरु (शोभायुक्त) अरु [प्रसन्न मुख] जिनका ऐसे हमको चिंतवन करे—सो कि आवाहन तो गजमुखजी के अर्थ अरु आसन विघ्नराजजी के लिये २३ अरु लंबोदरजी को पाद्यदेवहू अरु शंकर सुतजी को ये अर्घ है अरु उमा पुत्रजी को स्नान अरु वक्रतुंडजी को ये अर्चन २४ अरु शूर्पकर्णजी के अर्थ वस्त्र अरु कुब्जजीकेअर्थ यज्ञोपवीत अरु गणेश्वरजी के अर्थ गंध अरु विघ्न नाशकजी के अर्थ पुष्प २५ अरु विकटजी के अर्थ धूप अरु वामनजी के अर्थ दीपक अरु सर्व देवजी के अर्थ नैवेद्य अरु सर्व पीडा नाशकजी के अर्थ फल २६ अरु विघ्नहर्ताजी के अर्थ तांबूल अरु धूम्रजीकेअर्थ प्रदक्षिणा अरु देवेशजी के अर्थ नमस्कार अरु नमस्कार करके अपराध क्षमा करावै २७ इस प्रकार षोडशउपचारोंकरके हमारी पूजा करनी फिर नानाभोज्य आदिकों करके हमारा वायन बनावै २८ सोकि हे देवि घृतमिश्रित दश या पांच मोदक बनावै सो पांच तो प्रतिमाके आगे धरै अरु पांच ब्राह्मण को देदेवै २९ सो तिस को यथा शक्तिसे दक्षिणा अरु पांच मोदक देकर फिर रातभये चंद्रमा को भक्तिसे अर्घ देकर आप भी भोजनकरे ३० अब तिथि को अर्घ देनेका मंत्र। हे तिथियों में उत्तम देवि हे गणेशजी प्यारी दुलारी चतुर्थी तुम मेरे से दिये अर्घको ग्रहणकरो तुमको नमस्कार हो ३१ चंद्रमा के अर्घका मंत्र। हे क्षीर समुद्र से उत्पन्न हे लक्ष्मी के बंधु हे निशाकर शशि चंद्रमाजी तुम रोहिणी ग्रहणी सहित मुझसे दिये इस अर्घको ग्रहण करो ३२ हे लंबोदरजी आपको नमस्कार है जो आप सर्वकाम फलप्रदाता अरु सर्व विघ्नोंकेनाश

कारीहो सो आप मेरे वांछित को देवो ३३ ब्राह्मण की प्रार्थनाकरे कि हे ब्राह्मण श्रेष्ठ आपके अर्थ नमस्कारहोवे जोकि आप साक्षात् देव स्वरूपहो, सो मैं गणेशजी की प्रीति के लिये आपको ये मोदक देवूंहू ३४ सोकि दक्षिणा सहित इन पाचों मोदको को हम तुम्हारे हमारे निस्तार के लिये देवेहैं सो आप इनको ग्रहणकरो आपको नमस्कार होवे ३५ फिर ब्राह्मणों को भोजन करावै अरु गणेशजी की प्रार्थना करै अरु तिनमें ही आसक्त मनभया भाइयों सहित दधियुक्त अन्नखावै ३६ अरु तिस प्रतिमा को गुरूजी को देदेवै ऐसे विसर्जनकरै तिसका यह मन्त्र है ३७ हे सुरोंके ईश्वर गणेशजी आप अपने स्थानको पधारिये २ मेरे इस व्रतसे आप नित्यही फलदायक होवो ३८ हे शुभानने गौरि ऐसे महीने २ प्रति यह व्रत करना चाहिये जीवन तलक वा इकईश वर्ष ३९ न सामर्थ्यहो तो एक वर्ष अथवा वर्ष २ में एक २ फिर श्रावण शुदी चौथके दिन उद्यापनकरै ४० अरु जो गणेशजी का भक्त अरु सब शास्त्रोंमें कुशल हो ऐसे आचार्य का पहिले वरण करके उक्त विधि से तिसका पूजनकरै ४१ फिर एक हजार आठ या एक सौ आठ अट्ठाईश या आठ मोदकों का होम करै ४२ अरु ऊंचा मंडप तानै अरु गीत बाजेगाजोंसे तथा भक्ति भाव करके हमारा अरु गुरूजी का पूजन करै ४३ जो पत्नी सहित तिनका सुवर्णादिक अरु गऊ वस्त्र आभूषणादि को करके पूजन कर तिन्हे छत्र उपानहदेवे अरु कमंडलु घर इत्यादिक करके ४४ हे देवि, गणेशजी की प्रसन्नता के अर्थ आचार्य का पूजन करै इस विधान से पूजन करने से मैं प्रसन्न होताहू इसमें संशय नहीं है ४५ सोकि जिन्हो ने भक्ति से हमारा व्रतकिया है तिनको हम सब वांछित देवे हैं श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् यह व्रत ऐसे आप गणेशजीने वर्णन कियाहै ४६ अरु वे इस व्रतकरके पार्वतीजी ने निश्चय आराधन कियेगये हैं वो वो पतिव्रता पार्वती इस व्रतसे महादेवजी को प्राप्त होतीभई सो गणेशजी के प्रसादसे अबतक क्रीड़ा करती हैं ४७ सो हे महा

सुवर्णकी हमारी मूर्ति बनाई जातीहै १९ अरु सुवर्णके वा मांटीके वा तांबेके अथवा मिट्टीके कलशमें जल भरके तहां हमारा स्थापन करै २० जो कलश वस्त्र सहित ढकने के पात्र सहित है अरु तहांही अष्टदल कमल बनाकर पाद्य अर्घ इत्यादि सहित भक्ति भाव संयुक्त षोडश उपचारों से हमेंपूजै २१ अरु (लंबोदर) अरु (चतुर्भुज) (त्रिनयन) अरु लालवर्णवाले २२ (नीलवर्ण) अरु (शोभायुक्त) अरु [प्रसन्न मुख] जिनका ऐसे हमको चिंतवन करै—सो कि आवाहन तो गजमुखजी के अर्थ अरु आसन विघ्नराजजी के लिये २३ अरु लंबोदरजी को पाद्यदेवूं अरु शंकर सुतजी को ये अर्घ है अरु उमा पुत्रजी को स्नान अरु वक्रतुंडजी को ये अर्चन २४ अरु शूर्पकर्णजी के अर्थ वस्त्र अरु कुब्जजीके अर्थ यज्ञोपवीत अरु गणेश्वरजी के अर्थ गंध अरु विघ्न नाशकजी के अर्थ पुष्प २५ अरु विकटजी के अर्थ धूप अरु वामनजी के अर्थ दीपक अरु सर्व देवजी के अर्थ नैवेद्य अरु सर्व पीडा नाशकजी के अर्थ फल २६ अरु विघ्नहर्ताजी के अर्थ तांबूल अरु धूम्रजीकेअर्थ प्रदक्षिणा अरु देवेशजी के अर्थ नमस्कार अरु नमस्कार करके अपराध क्षमा करावै २७ इस प्रकार षोडश उपचारोंकरके हमारी पूजा करनी फिर नानाभोज्य आदिकों करके हमारा वायन बनावै २८ सोकि हे देवि घृतमिश्रित दश या पांच मोदक बनावै सो पांच तो प्रतिमाके आगे धरै अरु पांच ब्राह्मण को देदेवै २९ सो तिस को यथा शक्तिसे दक्षिणा अरु पांच मोदक देकर फिर रातभये चंद्रमा को भक्तिसे अर्घ देकर आप भी भोजनकरै ३० अथ तिथि को अर्घ देनेका मंत्र। हे तिथियों में उत्तम देवि हे गणेशजी प्यारी दुलारी चतुर्थी तुम मेरे से दिये अर्घको ग्रहणकरो तुमको नमस्कार हो ३१ चंद्रमा के अर्घका मंत्र। हे क्षीर समुद्र से उत्पन्न हे लक्ष्मी के बंधु हे निशाकर शशि चंद्रमाजी तुम रोहिणी अरु गणों सहित मुझसे दिये इस अर्घको ग्रहण करो ३२ हे लंबोदरजी आपको नमस्कार है जो आप सर्वकाम फलप्रदाता अरु सर्व विघ्नोंकेनाश

कारीहो सो आप मेरे वाञ्छित को देवो ३३ ब्राह्मण को प्रार्थनाकरे कि हे ब्राह्मणश्रेष्ठ आपके अर्थ नमस्कारहोवे जोकि आप साक्षात् देव स्वरूपहो सो मैं गणेशजी की प्रीति के लिये आपको ये मोदक देवूंहू ३४ सोकि दक्षिणा सहित इन पांचो मोदको को हम तुम्हारे हमारे निस्तार के लिये देवेहें सो आप इनको ग्रहणकरो आपको नमस्कार होवे ३५ फिर ब्राह्मणो को भोजन करावे अरु गणेशजी की प्रार्थना करे अरु तिनमें ही आसक्त मनभया भाइयो सहित दधियुक्त अन्नखावे ३६ अरु तिस प्रतिमा को गुरूजी को देदेवे ऐसे विसर्जनकरे तिसका यह मन्त्र है ३७ हे सुरोके ईश्वर गणेशजी आप अपने स्थानको पधारिये २ मेरे इस व्रतसे आप नित्यही फलदायक होवो ३८ हे शुभानने गौरि ऐसे महीने २ प्रति यह व्रत करना चाहिये जीवन तलक वा इकईश वर्ष ३९ न सामर्थ्यहो तो एक वर्ष अथवा वर्ष २ में एक २ फिर श्रावण शुदी चौथके दिन उद्यापनकरे ४० अरु जो गणेशजी का भक्त अरु सब शास्त्रोंमें कुशल हो ऐसे आचार्य का पहिले वरण करके उक्त विधि से तिसका पूजनकरे ४१ फिर एक हजार आठ या एक सौ आठ अट्ठाईश या आठ मोदको का होम करे ४२ अरु ऊंचा मंडप ताने अरु गीत बाजेगाजोंसे तथा भक्ति भाव करके हमारा अरु गुरूजी का पूजन करे ४३ जो पत्नी सहित तिनका सुवर्णादिक अरु गऊ वस्त्र आभूषणादि को करके पूजन कर तिन्हे छत्र उपानहदेवे अरु कमंडलु घर इत्यादिक करके ४४ हे देवि गणेशजी की प्रसन्नता के अर्थ आचार्य का पूजन करे इस विधान से पूजन करने से मैं प्रसन्न होताहूं इसमें संशय नहीं है ४५ सोकि जिन्हों ने भक्ति से हमारा व्रतकिया है तिनको हम सब वाञ्छित देवे हैं ब्रह्माजी बोले कि हे राजन् यह व्रत ऐसे आप गणेशजीने वर्णन किया ४६ अरु वे इस व्रतकरके पार्वतीजी से निश्चय आराधन किये हैं तो वो पतिव्रता पार्वती इस व्रतसे महादेवजी को ... सो गणेशजी के प्रसादसे अबतक क्रीडा करती है ...

नगर कैसे प्राप्तहो २० ऐसा भाग्यहमारा काहे सेभयासो हे मुनि निश्चय कहिये गणेशजी बोले कि ऐसा तिसका वचन सुनशरभंगजी बोले कि हे दमयती तू वचन सुन मैं तेरा हितकारक महा संकट निवारक अरु सब कामदाता व्रत कहताहूं २१।२२ जो भादवँ महीने के कृष्णपक्ष की चौथहै सो संकट चतुर्थीहै तिसमें स्त्रियो करके गणेशजी पुजनीयहै जो (एकदंतवाले) अरु (गजानन जी) है २३ सो पूर्वोक्त विधिसे भक्ति प्रीति अरु श्रद्धासे सोहे देवि इस व्रतसे तू प्राप्त कामना वाली होवेगी २४ हे महारानी तीन महीने में सिद्धिहोगी ये हमारी निश्चय मतिहै (श्रीगणेशजी बोले कि तब तो दमयतीने उत्तम संकट व्रतकिया २५ सो भादवँ महीने में आरंभ किया गणेशजी की पूजामें २ भई सो तीन महीने में राजा की प्राप्तभई अरु तैसेही राज्य पुत्र तिसको मिले २६ अरु तैसीही संपदा तिसको हे राजन् इस उत्तम व्रतके करनेसे प्राप्तभई श्रीकृष्णजी बोले कि तैसेही हे राजन् इस व्रतसे तुम भी निश्चय राज्यको प्राप्तहोवोगे २७ अरु तुम्हारे वैरीजन विशेष से तिरस्कृत होंगे अर्थात् हार जावेंगे हे राजन् ऐसे तुमसे यहव्रतोंमें उत्तम व्रत कहा है २८ सो इसे तुम करोगे तो सुख पावोगे सोकि महाभाग्य अरु सब दुःख निवारक है इतिस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादमें भाद्रपदकृष्णचतुर्थीकेव्रतकीदूसरीकथाभई ॥ २ ॥

तीसरीकथा॥

आश्विनकृष्णचतुर्थीकीकथाप्रारंभ

राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे कृष्ण हे महाभाग विख्यात जो उत्तम व्रत है जोकि आश्विन मासमें कृष्ण पक्षको संकटाचतुर्थी कही है १ तिसके दिन किसप्रकार करके गणाधिपसमी पूजनीय है हे जगत् के नाथ आप परम कृपाकरके सो मुझको विस्तार से कहिये २ श्रीकृष्णजी बोले कि पार्वती ऐसा वचन सुन प्रसन्नमुख विनायकजीसेबोली कि हे देव आश्विन में कैसा व्रतहोताहै सो मैं

सुनने चाहतीहूं ३ श्री गणेशजी बोले कि हे गिरिजे आश्विन के महीनेमें (कृष्णनाम) गणाधिपति है सो पूर्वोक्त विधिसे कार्य्य सिद्धिकेलिये पूजनीय है ४ सो कि मनुष्य आहार रहित अरु जीता क्रोध जिसने अरु पाखंड लोभ से वर्जित मनसे स्मरण करके देव गणनाथजी का पूजनकरे ५ सो जो आश्विन कृष्ण चतुर्थी है सो उत्तम संकटा व्रतहै तिसमें हरित दूर्वासे होमकरने से सातों द्वीप वाली पृथ्वीका राज्य मिले ६ एक समय वाणासुर की पुत्री जो (ऊषा) नामसे विख्यात थी सो पुष्प सेजपर सोती (अनिरुद्ध) जी को देखती भई ७ तो तिनके वियोग से दुःखीभई तिसने कहीं भी सुख नहीं पाया तो (चित्रलेखा) सखी तिसे तीन भुवन लिखकर दिखातीभई ८ तिसने कहा कि जो पति (अनिरुद्ध) ऐसे विख्यात मुझको रात्रिमें दीखा है अरु मैंने स्वप्न में तिससे विवाह किया है ९ सो हे सुश्रोणि तिसे किसी स्थानसे अर्थात् जहां हो तहांहीं से लाव नहीं तो मेरा मरण होगा इसमें संशय नहींहै १० तो चित्रलेखा ये वचन सुन द्वारकापुरी जाकर अनिरुद्धजी को उठालाई जो दैत्य मायामें चतुर थी ११ तो तिनको सांझ समय गऊ आने के समय पर वाणासुरके पुरमें लेआई तो (प्रद्युम्न) जी भी पुत्रके शोकसे महा व्याधि सयुक्त पीडित भये १२ अरु तिनको तैसे देख कर कृष्णजी भी सुख नहींपाये अरु रुक्मिणीजी भी पौत्रकेवियोगसे विलाप करने लगीं १३ सो पतिव्रता रुक्मिणीजी कृष्णजीके निकटजाके नीचामुखकिये बोलीं कि प्राणोंसे प्रिय मेरा पुत्र किसने लिया वा कहा चलागया है १४ सो अब शोक से पीड़ित भई मैं आपके देखते २ प्राणोंका त्याग करूंगी अर्थात् मरजावेंगी ऐसा तिसका वचन सुन कृष्णजी सभामें आये १५ तो तहां तीव्रतेजस्वी ऋषिश्रेष्ठ लोमशजी को देखे तो विष्णुजी तिन्हें प्रणाम करके वृत्तांत सुनाते भये १६ कृष्णजी बोले कि हे लोमश मुने हमारा पौत्र किसने लिया अरु कहा गया है मैं नहीं जानता मेरा सुबुद्धिमान् पौत्र कहां गया अरु किसने तिसे हरलिया है १७ तिसको

माता अत्यंत दुःख पीड़ित भई चार २ पुत्रका स्मरणकरके पुकार-
ती है तो ऐसा कृष्णानी का वचन सुन लोमशजी बोले कि बाणा-
सुर की कन्या जो (ऊषानाम) से प्रसिद्ध है तिसकी जो (चित्रलेखा)
सखी है तिसने अनिरुद्धजी को चुराये हैं १८।१९ सो बाणासुर
के नगरमें छिपायागया है नारदजी ने कहा है सो आश्विनमहीने
कृष्णपक्ष की संकट चौथ होतीहै २० तिसके अनुष्ठान करने से ही
तुम्हारा पोत्र आजावेगा ऐसेकहके मुनिश्रेष्ठ लोमश जी तो अशोश
देके वनको चले गये २१ महा विष्णुजी वो लैठा के उत्तम सकट
व्रत लोमशजीने बताया २२ हे देवि तिस व्रत से वो हमारे पिता
शिवजीसे युद्धमें सहाय किया भी बाणासुर कृष्ण जी करके जीता
गया २३ सो कि कोपभये भगवानने तिसकेसहस्र भुजोंका छेदन
किया सोइसीव्रतके प्रभावकरके इसमेंसंशय न करना २४ सो श्रीग-
णेशजीकी प्रसन्नता अरुकरे विघ्न की शांति के लिये इसके समान
परम सिद्धि कारक और कुछभी नहीं है २५ श्रीकृष्ण बोले कि हे
राजन् तिससे तुमकोयह आपत्तिहरणतारक व्रतकर्तव्यहै इससे तुम
हे राजन् शत्रुओं को जीतोगे अरु सब राज्यको प्राप्त होगे; २६
इस व्रतके माहात्म्य को पंडित भी नहीं जान सकते अरु हे पार्थये
हमसे अनुभवकिया गयाहै हम सत्य २ कहते हैं २७ इतिश्रीस्कन्द
पुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरजीकेसंगमेंक्ा०कृ०च०व्र०क०तीसरीभईहै३

चौथी कथा॥

१ पार्वतीने पूछाकि हेलम्बोदर हेमहाप्राज्ञ हेकहनेवालों में श्रेष्ठ
कार्तिक मासके कृष्णपक्ष में गणाधिपतिजी कैसे पूजने १ श्रीकृ-
ष्णजी बोले कि माताका वचन सुनके गणनायकजीने कहा कि
कार्तिक के कृष्णपक्षमें जो संकट चतुर्थी होतीहै २ तिसमें(पिंगना-
म) से प्रसिद्ध गणाधिपजो पूजनीयहैं सो पूजाकीविधि करकेपूजन
अरु एकबेर भोजन करे ३ सोकि ब्राह्मणोंको जिमावै फिर मौनभया

आपभी भोजन करे अब इसव्रतका माहात्म्यकहतेहैं आदरसे श्रवणकरो ४ सोकि कार्तिक कृष्णचतुर्थी को उत्तम सकष्ट व्रत होताहै तिसमें उड़द तिलोंसे होमकरनेसे मनुष्योंको सर्व सिद्धि प्राप्त होती है ५ अब गणेशजी कहतेहैं कि पहिले महा असुर (वृत्रदैत्य) सब ओरसे बढ़ाथा तिसने सारी त्रिलोकीको जीतिके सब देवता हरायेथे ६ तौवे स्थान भ्रष्ट भयभीत भये सबदिशायें चले गये तौवे इन्द्र सहित देवता विष्णुजीके पास शरण गये ७ तो तिनका कहना सुनके विष्णुजी देवताओं बोलेकिवे समुद्रके अभयको पाकर अत्यंत दुर्मद वाले राक्षस वृद्धिको प्राप्तभयेहैं सोवे देवता करके अवध्यहैं अर्थात् तिन्हें देवता नहीं मार सके ये उन्होंने ब्रह्माजीसे वरपायाहै सो प्रसन्नभये (मुनिअगस्त्य) जी तिस समुद्र को पीजावेंगे ८। ९ फिर वे स्वर्गमें चले जावेंगे सो सुखपूर्वक निजपिताके पासमेंहीतिन मुनि अगस्त्य जी के सहाय से तुम्हारा कार्य होवेगा १० वे सुन अगस्त्य जी के आश्रम पे जाकर तिनकी स्तुति करते भये तब प्रसन्न भये मुनि जो तिनसे बोले कि मत डरो ऐसेनिश्चय कहा ११ तबतो देवता स्वर्गमें गये अरु चिंतामें आतुर भये अगस्त्यजी कि येलक्षयोजन विस्तार वाला समुद्र कैसे पीयाजावे १२ तबतो वे महामुनि गणेशजीका स्मरण करके तिनके सकष्टव्रत को विधिसे करतेभये १३ तौतीन महीने मे गणेशजी प्रसन्न भये अरु तिसके प्रभाव करकेअगस्त्यजी सुखसे समुद्रको पीगये १४ अरु इसी के प्रभाव से निवृत्त अर्थात् दूरभये हैं बाबतरे जिनके ऐसे शत्रु अर्जुन करके जीते गये थे १५ तब तो गणेश जी के ऐसे कहे पार्वती जी प्रसन्न भई अरु बोली कि मेरापुत्र जगत्करके वंदनीय अरु सब सिद्धि दायकहै १६ श्रीकृष्णजीने कहा कि हे राजा युधिष्ठिर तुमभी इसव्रतको करो तो शत्रुओं को जीतोगे अरु शीघ्र राज्यको प्राप्त होवोगे १७ अरु हजार अश्वमेध यज्ञ अरु सौ वाजपेय यज्ञोंका फल अरु पुत्र पौत्र पुष्टि देनेवाले कथाकेही श्रवणसे होतेहैं १८ इतिश्री स्कन्दपुराणे उ० खं० गणेशकार्तिककृष्णचतुर्थीव्रत कथा वर्णनं ॥

पांचवीं कथा ॥

मार्गशीर्षकृष्णचतुर्थीकीवार्त्ताहै ।

पार्वतीजीने पूछा मार्गशीर्ष कृष्णपक्षमेजोसकष्ट चतुर्थी होती है तिसमें किस प्रकार करके गणाधिपति जी पूजनीयहैं १ श्रीगणेश जी बोले हे हिमाचल कन्ये इस महीनेमें गणेशजी [गजानन] ऐसे कहे हैं तिन्हें पूर्वोक्त विधिसे अर्घ्य दे करके २ आहार रहितभया पूजन करे फिर ब्राह्मण जिमावे अरु सुन्दर चरुसेहवनकरै तौ बैरी वशमें होजावे ३यहां भी एक प्राचीन इतिहास कहते हैं कि त्रेता युगमें राजा [दशरथ] भया ४ सो शिकार के रसिकथा सोतिससे तहां एक ब्राह्मण पीड़ित भया अर्थात् धोखेसे इसने ब्राह्मणकोमारा तो तिसके पिताने इसको शापदिया कि तुभी पुत्रके शोकसे मरेगा ५ तौउद्विग्न मनभये राजाने पुत्रके लिये भारीयज्ञ किया तौ चतुर्व्यूह अर्थात् राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न इन चार अंशों से अवतार हो करके जगत् के प्रभु रामचंद्रजीने तिसके घरजन्मलिया ६ अरु तिनकी पत्नी [जानकी जी] भई जो पतिव्रता लक्ष्मी का अवतार थी फिर पिताके कहने से रामचंद्रजी सीता अरु लक्ष्मण सहित ७ विश्वके व्यापक रामजी राक्षसों के कुलको जलाते वनमें विचरते भये तहां लोकों के रुवाने वाला [रावण] सीताजीको हरलेगया ८ तौ सीताके वियोगसे रामजीने जनोंका स्थानछोड़दियातो [ऋष्यमूक] पर्वत में (सुग्रीव)से मित्रता भई ९ तो [हनुमान्] आदि सब वानर आतुरभये सीताजीको ढूंढ़नेगये फिर तिन वानरोंको [संपातिगीध] ने देखा १०तो तिनसबों को संपातिने यह कहा कि तुम कौनहो अरु क्यों वनमें आयेहो किसने तुमकोभेजा अरु यहांक्या कामहै११ ऐसा तिसका वचन सुनके वानर फिर बोलेकि दशरथके पुत्र[रामजी] जो जगत्केपति साक्षात् विष्णुजीहैं १२अरुजो सीता जी अरु लक्ष्मण भाई सहित सो दंडक वनमें आयेथे वहां किसीने सीताभी हरलई है ग्यारे निमें हम नहींजानतेहैं १३ ऐसे तिसका

वचन सुनके बुद्धिमान् सपाति बोला तुम सब रामजी के प्यारे हो अरु हम तिनके नौकर हैं १४ हम जानते हैं जो जानकीजी पतिव्रता जिसकरके जहांलेजाईगई है अरु मेरेछोटेभाई [जटायु]नेसीताजीके अर्थप्राणत्यागकिया सोकिरावणसे लड़करअरुरामजीके चरणारविन्दका स्मरण करकेवो मरगया१५।१६ अरु यहांसे कुछ दूर समुद्रहै तिसकेपारराक्षसोंकी पुरीहै १६ तहां शीशमकेवृक्षतले सीताजी बैठीहैं जादेखो रावण सीता हरलेगया मैंने अभी देखाहै १७ तुमसारे वानरोंमें हनुमान्जीतीव्र बलवालेहैं सोहीतहां पहुचेंगे मैं ये सत्य २ कहताहूं १८ सोवो समुद्रबलवालेसेही उल्लघाजावेगा औरसेनहीं ऐसा तिसका वचन सुनके बुद्धिमान् हनुमान् बोले १९ कि हेसपाते इसदुस्तर समुद्रको किसमार्गसेउल्लंघना चाहिये सो वानरतौ हमसब असमर्थहैं मैं अकेला आपसे पूछनेको आयाहूं २० ऐसे तिसका वचन सुनके सपाति तिससे फिर बोला किहे सखेतुम कोउत्तमसंकष्ट व्रतकरना चाहिये २१ इसव्रतके प्रभावसेतुमक्षणमें समुद्र उल्लघजावोगे तोहेदेवि सपातिके उपदेशसेयहउत्तम व्रतहनुमान्जीकरके कियागया तौवे क्षणमें समुद्र उल्लंघगये इससे और भूतलोकमें कोईभी सुखप्रदाता नहींहै २२।२३ श्रीकृष्णजी बोले हेराजन् तिससे तुमभी येव्रतकरो तो क्षणमें सबशत्रुओं को हतके संपत्ति पावोगे इति श्रीस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरमार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी पाचवीं कथा हुई ५॥

छठी कथा॥

पौषकेमहीनेकीचौथ ॥

पार्वतीने पूछा कि हेपुत्र पौषमासे कैसे गणाधिपति पूजनीयहै तिसका क्या नाम अरु तिसके भोजन में क्या होताहै सो विस्तारसे कहो १ श्रीगणेशजी बोले हेदेवि पौषमासमें (विघ्नहंत्री) चौथहै तिसमें (लंबोदरजी) पूजनीय अरु केवल गोमूत्र पानकरना २ व्रतकरनेवाला भक्तिसे ब्राह्मण जिमावे पूर्वोक्त विधिसे पूजाकरे सो

पांचवीं कथा॥

मार्गशीर्षकृष्णचतुर्थीकोवर्णनहै ॥

पार्वतीजीने पूछा मार्गशीर्ष कृष्णपक्षमेजोसंकष्ट चतुर्थी होती है तिसमें किस प्रकार करके गणाधिपति जी पूजनीयहैं १ श्रीगणेश जी बोले हे हिमाचल कन्ये इस महीनेमें गणेशजी [गजानन] ऐसे कहे हैं तिन्हें पूर्वोक्त विधिसे अर्घ्य दे करके २ आहार रहितभया पूजन करै फिर ब्राह्मण जिमावै अरु सुन्दर चरुसेहवनकरै तौ वैरी बशमें होजावे ३यहां भी एक प्राचीन इतिहास कहते है कि त्रेता युगमें राजा [दशरथ] भया ४ सो शिकार के रसिकथा सोतिससे तहां एक ब्राह्मण पीड़ित भया अर्थात् धोखेसे इसने ब्राह्मणकोमारा तौ तिसके पिताने इसको शापदिया कि तूभी पुत्रके शोकसे मरैगा ५ तौउद्विग्न मनभये राजाने पुत्रके लिये भारीयज्ञ किया तौ चतुर्व्यूह अर्थात् राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न इन चार अंशों से अवतार हो करके जगत् के प्रभु रामचंद्रजीने तिसके घरजन्मलिया ६ अरु तिनकी पत्नी [जानकी जी] भई जो पतिव्रता लक्ष्मी का अवतार थीं फिर पिताके कहने से रामचंद्रजी सीता अरु लक्ष्मण सहित ७ विश्वके व्यापक रामजी राक्षसो के कुलको जलाते बनमें बिचरते भये तहां लोकों के रुवाने वाला [रावण] सीताजीको हरलेगया ८ तौ सीताके वियोगसे रामजीने जनोंका स्थानछोड़दियातौ [ऋष्यमूक] पर्वत मैं (सुग्रीव)से मित्रता भई ९ तौ [हनुमान्] आदि सब बानर आतुरभये सीताजीको ढूंढनेगये फिर तिन बानरोको [संपातिगीध] ने देखा १०तो तिनसबो को संपातिने यह कहा कि तुम कौनहो अरु क्यों बनमें आयेहो किसने तुमकोभेजा अरु यहांक्या कामहै११ ऐसा तिसका बचन सुनके बानर फिर बोलेकि दशरथके पुत्र[रामजी] जो जगत्केपति साक्षात् विष्णुजीहैं १२अरुजो सीता जी अरु लक्ष्मण भाई सहित सो दंडक बनमें आयेथे तहां किसीने सीताभी हरलई है प्यारे तिसे हम नहींजानतेहैं १३ ऐसे तिसका

वचन सुनके बुद्धिमान् सपाति बोला तुम सब रामजी के प्यारे हो अरु हम तिनके नौकर हैं १४ हम जानते हैं जो जानकीजी पतिव्रता जिसकरके जहांलेजाईगई है अरु मेरेछोटेभाई [जटायु]नेसीताजीके अर्थप्राणत्यागकिया सोकिरावणसे लड़करअरुरामजीके चरणारविन्दका स्मरण करकेवो मरगया १५।१६ अरु यहासे कुछ दूर समुद्रहै तिसकेपारराक्षसोकी पुरीहै १६ तहां शीशमकेवृक्षतले सीताजी बैठीहैं जादेखो रावण सीता हरलेगया मैंने अभी देखाहै १७ तुमसारे वानरोमें हनुमान्जीतीव्र बलवालेहैं सोहीतहां पहुंचैंगे मैं ये सत्य २ कहताहूं १८ सोवो समुद्रबलवालेसेही उल्लंघाजावेगा औरसेनहीं ऐसा तिसका वचन सुनके बुद्धिमान् हनुमान् बोले १६ कि हेसपाते इसदुस्तर समुद्रको किसमार्गसेउल्लंघना चाहिये सो वानरतो हमसब असमर्थहैं मैं अकेला आपसे पूछनेको आयाहूं २० ऐसे तिसका वचन सुनके सपाति तिससे फिर बोला किहे सखेतुम कोउत्तमसंकष्ट व्रतकरना चाहिये २१ इसव्रतके प्रभावसेतुमक्षणमें समुद्र उल्लंघजावेगे तोहेदेवि सपातिके उपदेशसेयहउत्तम व्रतहनुमान्जीकरके कियागया तोवे क्षणमें समुद्र उल्लंघगये इससे और व्रतलोकमें कोईभी सुखप्रदाता नहींहै २२।२३ श्रीकृष्णजी बोले हेराजन् तिससे तुमभी येव्रतकरो तो क्षणमें सवशत्रुओं को हतके सपत्ति पावोगे इति श्रीस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरमार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी पांचवीं कथा हुई ५ ॥

छठी कथा ॥

पौषकेमहीनेकीचौथकी ॥

पार्वतीने पूछा कि हेपुत्र पौषमासे कैसे गणाधिपति पूजनीयहै तिसका क्या नाम अरु तिसके भोजन में क्या होवाहै सो विस्तारसे कहो १ श्रीगणेशजी बोले हेदेवि पौषमासमें (विघ्नहंत्री) चौथहै तिसमें (लंबोदरजी) पूजनीय अरु केवल गोमूत्र पानकरना २ व्रतकरनेवाला भक्तिसे ब्राह्मण जिमावे पूर्वोक्त विधिसे पूजाकरै सो

कि आहार रहित क्रोधजीते निद्रारहित अरु न लंपटअर्थात् छयावाद रहित ३ सोराजाके वशकरने में हविष्य अन्नघृत इनसेहोम कर यहां एक प्राचीन इतिहास कहतेहैं ४ कि एकसमय (रावण) गर्वसे स्वर्गवासी देवोंको जीतकर सन्ध्या करने के समय बालिको पीठपीछे से पकड़ लियाथा ५ तो वो वली इसे काखोंमें दवाकर हँसता भया आकाश मार्ग होकरके निज किष्किंधापुरीको चला आया ६ फिर तिसेपुत्रअंगदको खिलौना बनाकर रस्सी गलमें लगाकर रावणको घसीटताभया ७ तो तिसलंकापति को देखके सारे वानर हँसे कि जिसने बाहुके बलसे इन्द्रसहितदेवताजीते सोयेरावण राजकुमार करकेगलरस्सी बंधा भ्रमाया जाताहै ऐसेपुर वालो का वचनसुन क्रोध युक्त अरु श्वास भरता भया ८ तो नष्टभया गर्व जिसका सो पुलस्त्यजीको रावण यादकरता भया तौवे निजपौत्र तिस्को दुःखित देखकर बोले कि तेरी ऐसी ऐसी दशा कैसे भई १० अत्यंत गर्वकरनेसे दैत्य देवता मनुष्य गिरजातेहैं मेरेस्मरणसे क्या होता है ऐसे पुलस्त्यजीने रावणसे कहा ११ रावण बोला कि देवोंके जीतने के गर्व करनेके समयमें ऐसाभया कि सन्ध्याकरनेके कालमें मैंने इसबंदरको बांधलियाथा १२ सो किये पश्चिम दिशामें समुद्र तटपैथा सो मैंने इसे पीछेसे पकड़ लिया तो तिसने फिर अन्यथा किया अर्थात् मुझेही बांधलिया १३ तोगलमें रस्सी डालके मुझे यहांले आया अरु पुत्रका खिलौना बनालिया है तो अवग्राम में पुर वासी लोग मुझे धिक्कार करके हँसरहे हैं १४ हेदेव मैं इसचितासे व्याकुल भया अवक्या करूं तिससे हे नाथ मुझसरीखा कुलदोषी जनतुमहीसे रक्षित कियाजावे अर्थात् अत्र आपहीमेरी रक्षाकरिये १५ पुलस्त्यजी बोले हेरावण सुनडरै मत हम तुझेवचनसे छुटावेंगे येइन्द्रके वीर्यसे उत्पन्न तेरेसमान पराक्रमीहैं १६ सो दशरथ सुत जो (रामजी) हैं येतिनसे मारा जावेगा हेराक्षसेश रावण जो तू इसबंधनसे छुटा चाहता है तो १७ तुमेरी आज्ञासे संकट नाथनव्रत कर इसी व्रतको वृत्रासुरकी हत्यासेभयदुःखमें इन्द्रनेकियाथा १८

जिस से तूभी इस संकटनाशन व्रत को शीघ्रहीकर इससे तेरेक्लेश का नाशहोगा १९ तो अगस्त्यजी केउपदेश से रावणने वो व्रत किया तो हेदेवि तिसके प्रभावसे वो तिसीक्षणमें बंधनसेछुटा २० रावण अपने अनिंदित राज्यको सुखसे प्राप्तहोताभया सोहे महा बाहो पार्थ राजन् तुमभी इस विख्यात व्रतको करो तोतुम श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हेयुधिष्ठिर सर्वशत्रुओं को युद्धमें हतकर उत्तम निज राज्यको प्राप्तहोवोगे २१। २२ इतिश्रीस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादमेंपौषकृष्णचतुर्थीव्रतछठीकथासमाप्त है ६॥

सातवींकथा॥

माघ-माघ-चतुर्थी की कथा …

पार्वतीने पूछा हेपुत्र माघमें कैसे गणेश्वरजी पूजने अरु क्या भोजनहै क्यानाम अरुक्या नैवेद्य है सो विशेषकरकेकहो १श्रीगणेश जी बोले हेपार्वति माघमासमें (भालचंद्र) नाम गणेशजी पूजनीय है सोकि देवविनायकजीको श्रद्धासे षोडश उपचारों करके पूजे २ हेमात तिलके दशलड्डू बनावे सोपांच देवजीके आगे धरे अरुपांच ब्राह्मणको देदेवे ४ अरु हेदेवि आप भक्ति परायण भया दशतिल भोजन करे अवहम (हरिश्चन्द्रराजा) का इतिहास कहतेहैं ५ सतयुगमें प्रतापीराजा हरिश्चन्द्रभया जो क्षत्रियधर्म परायण साधु अरु सत्यसंध द्विजपूजक है हे देवि तिसके राज्य करते अधर्म का दर्शन नहीं होताथा अरुन कोई हीन देह अरुन कोई दुःखी दरिद्री था ७ अरुन कुछ रोग भयथा न कोई नर अल्प आयुवालाथा तिसके राज में तपस्वी (ऋष्यशर्मा) होता भया ८ तिस के कुछ कालमें प्रिय पुत्र भया वो ऋष्यशर्मा तो स्वर्ग में पधारे अर्थात् मर गये तिनकी पत्नी ने पुत्र की पालना करी ९ सो भिक्षा मांगती खाती दीन पुत्रके लाड़में परायण तो तिसदरिद्रिणीनेउत्त संकष्ट व्रतकिया १० सो वो गोबर के गणेश बनाकर सदा पूजा करती तो हे पार्वति तिसने भिक्षाके तिलोंमें दशमोदकबना

यथोक्त विधि से पूजाको तैयार भई तितनेही दैवेच्छा से तिस
का पुत्र तिन गोवर गणेशजी को गलमें बांधके बाहर खेलने चला
गया १२ तौ कुबुद्धि कुम्हारने तिसके पांच बर्षके पुत्रको लेकरपात्र
पकानेकी अग्नि अर्थात् अवाहमें लगादिया १३ तौ वो तिसपुत्रको
ढूंढ़ती २ कहींभी सुख नहींपाई तौ वो गणेशजीको पुजती व्याकुल
अत्यंत दुःखित भई विलाप करने लगी १४ हे गणेश महाकाय
सूर्यसी रक्त कांतिमान् जटा समूहसे सुहानेवाले बिनायकजी पुत्र
दुःखित मुझको रक्षित करो १५ हे गजानन चतुर्भुज हे भालचन्द्र
विनायकजी हे अनाथोंके नाथ हेवरदाता मुझपुत्र दुःखितको रक्षित
करो १६ ऐसेवो सती द्विज पत्नी आधी रातसे बिलाप करती भई
फिर प्रातःकाल कुलाल ने पकेपात्र देखनेकी इच्छा से अवाह को
उकेलातौ तहां तिस अद्भुत बालक को गोड़ तकके जलमें खेलता
देखा १८ तौ देखके कपता वो तुरतराज मन्दिरगयावहांजा राजाके
आगे सबकहा जैसा कियाथा १६ सोकि कुलाल बोलाकि हे हरि-
श्चन्द्र हे महाबाहो हे जलती अग्निके समान कांतिमान् राजन् मैं
आप करके मारणीय हू जोकि मैंने ये ऐसा कुकर्म किया है २० मैं
कन्याके विवाहके लिये पात्रवेर २ पकाता था पर वे किसी प्रकार
करके भी पकते नहींथे २१ तवतौ भयभीत भये मैंनेएक चेटकज्ञा-
ता मत्र शास्त्रीसे पूछा तो तिसने मुझसे एकांतमें कहा कि तूबालक
की वलिदे २२ तबमैंने चिंताकरी किमैं किसके बालक को पकड़ले
ऊ जिसका बालक अग्निमें देऊं वोहीमुझे मारैगा २३ ऐसे चिंता
करके हे महाराज मैंने इस रांड़के पुत्रकी बलिदेके मेरेपात्रों को
अग्निमें तिसके साथ लगाये २४ अरु तिस मंत्रशास्त्रीनेभीमुझसे
कहाकि ऋण्यशर्मा द्विजतौ मरगया तिसकी रांडभई पत्नीजो नित्य
भिक्षा मांगके खातीहै २५ सोक्या करेगी तौ मैंने विचाराकि तिस
के पुत्रकी मैं बलिदेऊं तोमेरेसारे पात्र पकैंगे मेरा कार्य्यहोगा २६
ऐसे विचार रातको सुखसे सोया फिर सवेरे पात्र देखनेकी इच्छा
करके तहां गया अरु जो तिसे उघाड़ के देखूं २७ तौ बालक जैसे

में लाधाथा तैसेही तहां निर्भय खेलरहा है देखतेही मैं कंपता अरु भयभीतभया यहां आया हूं २८ ऐसा तिसका वचन सुनकेविस्मित मन भया राजा जहां वह बालक खेलता था तहांही शीघ्र आता भया २९ तहांतिस प्रसन्नबालकको देखके राजानिजमन्त्रीसे बोला कियह किसका बालक है तू ये निश्चय कर ३० अरु इसको कमल शोभित गोड़ तक काजल कैसे प्राप्तभयाहै जैसे दरिद्रीकेदूर्वावेदूर्य सरीखीहै अर्थात् दरिद्रीकेपास मणिहोना असम्भवहै ३१ अरुइस के नतोदाह अरु न इसको भूखप्यासलगतीहै घरकीनाई यहबालक निर्भय खेलरहाहै ३२ ऐसाराजा के कहते २ वह ब्राह्मणी चली आई सो पुकारती तिस बालक को देखके उठाकर जैसे गऊ निज बच्छेको तैसे आलिंगन करके तिसे चूमती भई रोतीअरु कपतीभई वहराजाके आगे बैठगई ३३।३४ हरिश्चंद्र बोलाकि हेब्राह्मणी यह बालकअग्निसे भस्म क्योंनहींभया तूक्या चेटकजानती थाऐसा तैने कौनसा धर्मकिया है ३५ ब्राह्मणी बोली कि मैं चेटक न जानती अरु न मैंने कोई तप धर्म किया है अरु न योग न दान न बलि बिधान कुछ किया है ३६ केवल मैं उत्तम संकटनाशन व्रत करती हूं हे राजन् तिसी के प्रभाव से मेरा पुत्र रक्षितभया है ३७ ऐसा तिसका वचन सुनके राजा फिर कहनेलगा कि इसी व्रतको मेरी सारी प्रजा भी करे ३८ राजाने तिसकी परिक्रमा करी अरु कहा कि तुम धन्य हो अरु हे पार्थ, तभी आज्ञा करी कि सब पुरवासियों को गणाधिपतिजी पूजनीय है ३९ तब वो सारे पुरवासी विस्मय युक्त भये महीने २ में व्रत करने लगे अरु वह ब्राह्मणी इस व्रतराज के प्रभाव से निज पुत्र को प्राप्त भई ४० श्रीकृष्ण बोले हे पार्थ तिससे तुम भी इस व्रतों में उत्तम व्रत को करो इस व्रत के प्रभाव से तुम प्राप्त कामनावाले होवोगे ४१ सोकि राज्य पाकर तैसेही मित्र को प्राप्त होकर तुम सिद्धि पावोगे जो कोई भी इस व्रत को करता है सो कहे फल को प्राप्त होता है इससे ये सदा सब को अवश्यही कर्त्तव्य है ४२ इति स्कंदपुराण श्रीकृष्ण

युधिष्ठिरजी के संवाद में माघ कृष्ण चतुर्थीकी सातवीं कथा भई ॥

आठवीं कथा ॥

फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी की कथा ॥

पार्वतीजीने पूछा कि फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्थीको गणेश्वर जी कैसे पूजनीयहै तिनका नाम क्या अरु क्या भोजन है हे गजानन जी सो कहो १ गणपतिजी बोले कि हे माता फाल्गुनमास में (हेरंबनाम) गणेशजी हैं सो पूर्वोक्तविधि से यथाक्रम करके पूजा करें अरु क्षीरअरुकनेरके पुष्पइन वशीकरणयोग्य द्रव्यों से होमकरें अरु घृत शर्करा का भोजन बतायाहै ३ अबइतिहास कहते हैं जैसापूर्व कथितहै जैसे युधिष्ठिरनेपूछा अरु श्रीकृष्णजीने कहाहै४ श्रीकृष्ण जी बोले कि सतयुगमें राजा (यौवनाश्व) ऐसो विख्यातभया जो धर्मवान् अरु बहुदानी अरु देवता ब्राह्मणों का पूजक ५ तिसके राज्य में महातपस्वी (विश्वशर्मा) ब्राह्मण भया जो वेदशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञानी अरु धर्मशास्त्रके अर्थमें कुशलथा ६ तिसके सातपुत्र थे सो धन धान्य समृद्धथे तो वे आपस में क्रोध सेती सातो न्यारे २ होगये ७ तो वो तिनका पिता प्रतिदिन तिनके घर २ में जेंवताथा ऐसेही बहुतसे कालमें वो वृद्ध अतिनिर्बलभया ८ फिर तो तिसकी पुत्र बहुवोंने तिसका आदर नहींकिया तबतो वो वृद्ध दुःखसे पीडितभया रोनेलगा ९ तो एकदिन तिस विश्वशर्मा ने संकष्टनाशन व्रतकिया तो वो बड़ी पुत्र बहू के घरगया १० अरु वह बोला कि हे पुत्रवहू तू इसव्रतकी सामग्री तय्यारकर जिससे संतुष्ट भये विनायकजी तुमको बहुत धनदेवें ११ ऐसे द्विजेन्द्र के कहते तिसकी पुत्रवहूने निष्ठुर वचनकहा कि हे श्वशुरजी मुझको घरके धंधे के कारण से अवकाश नहीं है १२ तुम येही नाटक चेटक किया करतेहो मैं व्रतको नहीं जानती वे गणेशजी कौन हैं यहा से जावो १३ ऐसा निरादर किया विष्णुशर्मा व्वो पुत्रों के घर गया तो तिन सबों से तिरस्कारही किया गया तो निर्बल अरु क्लेश से

पीड़ित १४ छोटे बेटे की बहूके घरजाकर बैठगया अरु तिस को अत्यन्त दीनदरिद्रिणी देखकर यह बोला कि १५ वृद्ध बोला कि हे पुत्रवधू मैं वृद्ध अरु बेटे बहुओं से निरादर किया अबमैं कहां जाऊं तुम्हारे घर में कुछ धन दीखता नहीं है कल्याणवती जिससे मेरे व्रतमें सिद्धिहोवे १६ मैं बार २ यही चिंता कर रहा हूं ऐसा तिसका वचन सुनके छोटीबहू शीघ्र बोली कि हेश्वशुरजी तुमकिस लिये खेदकर्तेहो तुम यथेच्छा से व्रत करो अरुमैंभी इस संकष्ट नाशन व्रतको सदाकरोंगी १८ अरु हेरवजीके प्रसादसे शीघ्रही सिद्धि भी होगी ऐसेकहकर वहपुत्रवहू घर २ से भीख मांगले आई १९ सो अपने अरु श्वशुरके लिये लड्डू बनातीभई अरु चंदन फूल दूर्वा शुभ अक्षत अरु फल २० अरुधूप दीप नैवेद्यतांबूल सहितन्यारे२ घर के अरु श्वशुर के साथ तिससतीने गणेशजी पूज करके २१ अरु तिस सुशोभनाने सम्यक् प्रीति करके श्वशुरेजीको जिमायेअरु भोजनकेनहोनेसे आप भूखीही रही २२ तौ आधीरात को तिसके श्वशुरने बेर २ अधो वात अरु विष्टाकरी अर्थात् उसने बहुत पादा अरु हगा तौ वह न मैले मनभई पुत्रवहू जलले तिससे तिसके पैर धोकरयह शोचतीभई किमेरेमंदभाग्यमें तुम्हारीऐसीदशाभईहै अब मैं क्याकरूं अरु कहांजाहूं श्वशुरजी सो शीघ्रकहो देर नतकरो। २३। २४। २५ जितनेवह बहू ऐसे विलापती रही तितनेहो सूर्यजी उदयभयेतो तिस सतीने तहांतीव्र तेजस्वी रत्नोंकी ढेरी देखी हीरा अरु मोतियों की ढेरी जो विष्टादिक से रहित २६ तो वह अत्यंत आश्चर्ययुक्तभई चायसे श्वशुरसेबोली हेश्वशुरजीयहधन किसकाहै जो साक्षात् मेरे घरमें हीरेमोती थे क्या अरु किसकी संपदाहैयहां कौन आयाहै याकोनछोड़केचलागयाहै २७ ऐसातिसकावचन सुन के वृद्ध द्विज बोलाकि हेकल्याणवती यह तेरीश्रद्धाकाफलहै तुमपर श्रीगणाधिपति जी प्रसन्न भयेहैं २८। २९ सो इस व्रतकेप्रभाव से तेरे घरमेंयहप्रकटसंपत्ति भईहै ये गणेश्वरजी धन्यहैं अरुसुरेशजीकी प्रसन्नता सेतो तूभी धन्यहै ३० अरुमैंभी तुम्हारे प्रसादसे धन्यहूं

जोदरिद्रका नाशभया अरु मेरेघर सवसंपदा भईऐसे तिसके श्वशुर ने कहा ३१ तो और जो छःपुत्र अरु तिनकी स्त्रियेंथी सो तिसे वेख के कोपभये तो भयभीत भया विष्णुशर्मा तिन सवों से बोला ३२ यहमेरा दोष कुछभी नहींहै मेनेकुछ बिषम पननहींकिया यहतौइस के व्रत करने के प्रभाव से गणेशजी प्रसन्न भये हैं ३३ तिससेही इसके संपत्ति भईजैसे पहिले कुवेरजीके भई फिरभी वह पुत्रबहुवों करके निरादर किया तिसीके घरगया ३४ श्री गणेशजी बोलेकि तवतो दरिद्र व्याधियो से पीडित तिसके छै पुत्र हुये अरु सातवां इन्द्रके समान होगया ३५ तो फिर आपसमें ईर्षा करके तिनसवों नेभी व्रतकिया तो तिसव्रतके प्रभावसे वे सारे संपत्तिवाले भये ३६ और भी जो २ मनुष्य बिधिसे इसको करतेहैं तिनके घरमें गणेश जीके प्रसाद से धन धान्य समृद्धि होतीहै ३७ श्री कृष्ण जी बोले कि हेनरश्रेष्ठ युधिष्ठिर इसी विधानसे जो मनुष्य करतो वो श्रीगणेशजीके व्रत से राजापन को प्राप्त होवे ३८ तिससे हे राजेन्द्र तुमभी इसव्रत को शीघ्रकरो दुःख समूहको छोड़कर सुखसंपत्तिको प्राप्त होवोगे ३९ इतिश्री स्कंद पुराण श्रीकृष्ण युधिष्ठिर संवाद में फाल्गुण कृष्णचतुर्थीकी आठवीं कथा भई ८॥

नवीं कथा॥

चैत्रकृष्ण चतुर्थी की-कथा॥

पार्वतीने पूछा कि चैत्रमें कैसे गणेशजी पूजने अरु भोजन क्या कहाहै क्यानाम अरु तिसकी विधि क्याहै हेगजाननजी सो मुझसे कहो १ गजाननजी वोले हेमहादेवि चैत्रमास में (बिकटनाम) गणनायकजीहैं सो विधि करके पूजने अरु व्रतवान् पंचगव्यपीवे २ चैत्र कृष्णकी जो चतुर्थीहै सो संकट नाशन व्रतहै तिसमें बिजौरे घृत इनसे होम करने से वंध्यास्त्रीको भी पुत्रकी प्राप्तिहोवे ३ अबहे गिरिजे हमपरम अद्भुत इतिहास कहतेहैं जिसके स्मरणसेही मनुष्य कार्य्य सिद्धिको प्राप्तहोवे ४ पहिले सतयुगमें राजा (मकरध्वज)

भया जिसके प्रजा पालते कोई भी दरिद्री नहीं होताथा ५ जहां चारों वर्ण निज २ धर्ममें परायण निर्भय निश्चिंतये शोकि दमन वाले कमनीय अरुदानी अरुधर्मके मार्गमें परायण ६ तौ तिसराज्य कर्ते राजाके एकभीपुत्र न भया फिर याज्ञवल्क्यजीके प्रसादसेपुत्र भया ७ फिरवह राजा (धर्मपाल) मन्त्रीको निजराज्य सौंपकर तिस पुत्रको नानाप्रकारके खिलौनोसे क्रीड़ा कराता भया ८ तौ धर्मपाल मन्त्री धनधान्य समृद्धि वाला होगया अरु तिसमन्त्री के सुंदर रूप वान् पुत्रभये ९ सो नानाविधिसे भये विवाह जिनका अरुधन भोगने में परायण वे भये तौ तिसके छोटे बेटेकी वहू जो आई सो सती पति व्रताथी १० सो चैत्रमास आये कृष्णपक्ष में चतुर्थी को भक्ति भाव सहित गणाध्यक्षजी की पूजाकर्ती भई ११ तौ तिसके इस वृतको धर्मपाल देखकर बोला कि एक्या तुचेटक वशीकर्म करने को तयार भईहै १२ दुष्टबुद्धिवाली तू बहुत वर्जितकरी भी नहीं मानती है सोमें तुझदुष्टाको पीटोंगा मैंचेटकको कुछनहीं जानताहू १३ तौ वहबोली कि हे श्वशुरजी मैं फलदायक सकष्ट वृतकरतीहू इसका ऐसावचन सुनके वह अपनेपुत्रसे कहनेलगा १४ हेपुत्र तेरी स्त्री चेटक करतीहै सो बहुतवेर वर्जीभी ए दुर्बुद्धिनहीं रहतीहै १५ सो इसमहादुष्टा को तू ताडनादे मैनहीं जानता एक्या वृतहै अरु कौनगणेशहै अरुकौन वोक्र शहै जिसका एवृत अवश्य नाशकरता है १६ तौ पितासे ऐसेकहे तिसपुत्रने तिसको बहुत पीटी तौ वो क्लेशपीडाको प्राप्तभई अरु वृतकरके गणेशजीको १७ ध्यातीयह प्रार्थना करतीभई हे गणेशजी हेहेरंब जगत्के पति आप मेरेसासु अरु श्वशुरको क्लेशदिखावो १८ जिस्से गणाधिपतिजी आपके व्रत मेंइन्होंकी भक्तिहोवे तौतिसकी भक्तिसे हंसतेभये लम्बोदरजी तैसेही कर्ते भये १९ तौ सबलोगों के देखत विघ्नविनायकजी राजाके पुत्रको धर्मपाल मन्त्रीके मंदिरमें पहुचाते भये २० अरु तिसीके वस्त्र लेकर राजाके घरमें फेंकके आप तहांही अंतर्धान भये २१ फिरतौ राजा निजपुत्र को आपपुकारता धर्मपालमन्त्रीके घरआकरबोलाकिमेरापुत्र

अभीकहां चलागया२२सो आभूषण अरुसबवस्त्रतौ मिले अरु पुत्रन पायायहकिसका भयानक कर्महै मेरापुत्र कहांगया।२३ ऐसाराजा का वचन सुनके मंत्रीने प्रत्युत्तर दिया कि हेराजन् मैंनहीं जानता तुम्हारा प्रबलपुत्र कहां चलागया।२४सोमैं सारे नगर बाटिकापुर इनसबकोदेखांगा तबतौराजा क्रोधभया सबकिंकर चाकरोंसेबोला २५ हेशूरवीर मंत्रियो तुममेरे पुत्रको देखो तौ दूत तहां२ नगर अरु गावोंमें गये २६ तबतौ वहपुत्र कहीं नहीं मिला तौ दूतराजा के समीप आकर भयभीत भये बोले कि हेराजन् हमको चोरनहीं मिला।२७सोकि तुम्हारापुत्र नतौ नगरमें है अरुनवन उपवनोंमेंहै सोवहहम सबोंको मंत्रीके घरमें प्रवेशहुवा तौ दीखा फिर निकला नहीं दीखा।२८ ऐसेतिनका वचन सुनके राजाने फिर धर्मपालमंत्री को बुलाया अरुमहाराजा तिससे पूछता भया कि मेरापुत्र कहां गया २९ हेधर्मपाल मेरापुत्र कहांहै तू मेरे आगे सत्य कह तिसके वस्त्र भूषणतौ देखपडतेहैं अरुमेरा पुत्र नहीं दीखता ३० सोहे दुष्ट मैं तुझको अरुतेरे परिवारको मारोंगा इसमें संशय नहींहै ऐसेराजा के कहते वो मंत्री विस्मितमन अर्थात् भयभीतभया ३१ राजाको प्रणाम करके बोला कि हेभूमते मैं देखोंगा हेराजन् इसपुरमें नतौ कोई योगीहै अरुनदूत तस्करहैं ३२ नजाने ऐसाकर्म हेप्रभो कि-सने किया अरुवो कहांगया फिर धर्मपालने घरमें जाकरस्त्री अरु पुत्रोंसे पूछा ३३ अरुसारी पुत्रबहुवोंसे भी पूछा कि यहआश्चर्य्य कर्मकिसने कियाहै अबमुझ निर्भाग्यको कुटंबसहित राजामारेगा३४ तिसका वचन सुन पुत्रबहूबोली हेश्वशुरजी किसलिये दुःखीहोतेहो अरुक्यो कोपिकके राजा दुःखपाताहै ३५ यहाप्रयत्न करके गणाधि पतिजीकी पूजाकरो राजा आदिसारे सपत्नीक पुरवासी जिन ३६ विधिसे संकट नाशन चतुर्थी का व्रतकरें तौ राजाके पुत्रकी प्राप्ति होवे हे प्रभो मेरावचन वृथानहींहै ३७ ऐसा तिसका वचन सुनके अंजलिबांधे तिसका श्वशुर बोला कि हेपुत्रबहू तू धन्य है कुलस-हित मेरा उद्धार करेगी अर्थात् राजासे सबको बचालेवेगी ३८

सो जैसे वे गणेश्वरजी पूजनीय हैं,सो हे कृपाके पात्रि तुम मुझसे कहो इस व्रतके प्रभावको मन्द बुद्धिवाला मैं नहीं जानताहूं सो सब हे कल्याणि तुमक्षमाकरो अरु राज पुत्रको दिखाओ ऐसे कह फिर सर्वोने सकट चतुर्थी का व्रतकिया ३६।४० सोकि राजाआदि सब प्रजा गणेशजी की प्रसन्नता के लिये करती भई तबतौ-व्रत कर्नेसे,ऐश्वर्य्यवान् श्रीगणेशजी प्रसन्नहोते भये ४१ तो राजाने सब लोगोंके देखते २ निजपुत्रको देखा तबतौ सब पुरवासियोंने राज पुत्रको देख आश्चर्य माना४२,तो सबलोग प्रसन्नभये,अरुराजाभी हर्षको प्राप्तभया अरु बोला,कि धन्यहै गणेशजी अरु वह मंत्री के पुत्रकी,श्रेष्ठबहूभी धन्यहै ४३ जिसकी कृपा कर्के,यमराजसे पुत्रप्राप्त भया तिससे वे सब प्रयत्नसे तिस सुतदाता व्रतको कर्ते भये ४४ इससे पर और कोई तीनलोकोंमें अनेक क्लेश शांतिके लिये व्रत नहींहै तिससे तुम इसव्रतको करो ४५ इति श्रीस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरकेसंवादमेंचैत्रकृष्णाचतुर्थीकीनवीं कथा भई ६ ॥

दशवीं कथा॥

वैशाख कृष्ण चतुर्थीकी कथाहै।

पार्वतीने पूछा कि वैशाख महीनेमें कृष्णपक्षकी जो संकटचतुर्थी होतीहै तहां गणाध्यक्षजी कैसे पूजने अरुक्यानाम क्या भोजनहै १ श्रीगणेशजी बोले वैशाख कृष्ण चतुर्थी के दिन व्रतहोताहै तिसमें (वक्रतुंड)गणेशजी पूजनीय अरु कमलभोजनकरना २ यहशुभदायक चतुर्थी जैसे जिसनेकरीहै सोइतिहासमें कहताहूं हेपार्वतीतिसे तुम श्रद्धासेसुनोपहिले प्रतापवाला राजा (रतिदेव भया) जो तृणरूप शत्रुवों में अग्नि के समान अरु लोकपालोंमें जिसकी मित्रता २ तिस केराज्यमें एक (धर्मकेतु)ब्राह्मण होताभया तिसके(सुशीला)अरु (चंचला) ये दो भार्याभई ३ सोसुशीला तो व्रतकरनेसेदुर्बलेशरीर वाली रही अरु वो धर्मव्रता से उलटीभई चंचला नित्य २ भोजन करती रही ४ तो सुशीला ने कन्या जनी जो सुभगासुखदेनेवाली

अरु तिस चचलाके पुत्र भया तो वो बेर २ ऊंचेसें हँसी ७ अरु वोली कि हे दुर्बलेअंगवालीसुशीले बृतके प्रभावसेतो तेरेयहकन्या भई अरुवृतवर्जितभी जो हमतिनके ऐसा फलभया ८ ऐसा तिसका वचन सुनके सुशीला दु खितचित्तभई गणाध्यक्षजी का यथोक्त विधिसे प्रार्थनाकरतीभई ६ अरुसावधानभई इस सकष्टनाशन बृतको करतीभई तो रातको इसने बृतदाता गणेशजीका दर्शनकिया १० श्रीगणेशजी बोले कि हे सुशीले तेरी कन्या के मुख से मोती मूंगे प्रतिदिन गिरतेरहेंगे जो तुमको वे हँसती हे ११ अरु हे सुशीले तुम्हारे वेदशास्त्रार्थ तत्त्ववेत्ता पुत्रहोवेगा ऐसे तिसको वरदेकर आप तहांही अंतर्ध्यानभये १२ तो तिसके पुत्रभया अरु वो कन्या मोती बर्षातीथी तो धर्मकेत अतकालमें मृत्युको प्राप्तभया १३ अरुचंचला धनलेकर क्रोधसे और घर चलीगई अरु सुशीला घरमें रहके तिन कन्या पुत्रोंकी रक्षाकरतीभई १४ तो कन्या के मुखसेभये मोतियों करके तिसके अद्भुतसाधन अरु नित्य संपदावढीतोवो चंचला नित्य देख के दुःख को प्राप्त होती भई १५ तव तो वो चचला तिसेदेख कर नित्य जलती रही तो तिसदुर्बुद्धि नेंसुशीलाकी पुत्री को कुवेंमें पटकदिया १६ तवतो दयावालेगणेशजीनेकुवेंमें तिसकीरक्षा करीतो वो तैसेही हर्षयुक्तभई माताके घरआई १७ तो वो दुष्टचंचलातिसे देखके आश्चर्यचित्त भई वोली कि जिसकीईश्वरने रक्षा करी तिस का और कोई क्या करेगा १८ अरु सुशीला निजपुत्रीको देखप्रसन्नमनभई तिसका आलिंगनकरतीभई जो पुत्री श्रीगणेशजीसेरक्षा की गई १६ अरु वहबोली कि हमारे अनाथोंके नाथ श्रीगणेशजी हीहैं अरु तव चचला चकितभई तिसके पैरोंमें प्रणाम करके बोली २० मुझ दुष्टा पापके आचरण करनेवाली पर क्षमा करो तु दयावाली शुभस्वभाववती दोनोकुल [illegible] ने [illegible] २१ जिसकोदेवता रक्षा करतेहैं तिसका [illegible] वे [illegible] प्राप्त होंगे जो अच्छोंके दोषमें परा [illegible] २२ तो तिसने भी संकष्टनाशन

वे दोनोंआपसमें प्रीतियुक्त भई २३ सो जिसपर गणेशजी प्रसन्न होतेहैं तिसके शत्रुभी मित्रता करने लगजातेहैं ऐसे तिस सावधान भईने सकटन व्रतकिया २४ हेदेवि पार्वतिऐसे तुझको जैसे पहिले वृत्तान्तबीता सो सवकहाहै इससेपरे और कोई भी विघ्ननाशकारी व्रतनहींहै २५ श्रीकृष्ण बोले हेराजेन्द्र तिससे तुमभी इस व्रत को यथाविधिसे करो इससे शत्रुवशमें होते अरुसिद्धियें समीपहीआस्थित होतीहैं २६ सो इससे हे धर्मज्ञराजन् तुम श्रेष्ठ आचारयुक्त भाइयोंसहितथोडेहीकालकरकेनिजराज्यकोप्राप्तहोवोगे २७इतिश्री स्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरसम्वादमेंवैशाखकृष्णचतुर्थीकीकथा१०

ग्यारहवीं कथा॥

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी की॥

पार्वतीने पूछा हे पुत्र ज्येष्ठ मासमें गणेशजी कैसे पूजने सोकहो क्या नाम अरु क्या भोजनहै अरु तिसकी क्याविधिहै सो विस्तार से कहो १ श्रीगणेशजी बोले हेमात ज्येष्ठ मास कृष्णपक्षमें गणेश जो चतुर्थीहै सो सौभाग्यदाता अरु पति देनेवाली कहीहै २ तिस में (आखुरथ) नामगणेशजी विधिसे भक्तिचित्तकरके पूजनीयहैं अरु सुन्दर घृत भोजन करैं अरु ब्राह्मणोंको जिमावै ३ अब हे पार्वति हमपहिले भया इतिहास कहतेहैं सो तुमसुनो जो पुराण जन्यअरु गणेश पूजनमें विधान रूपहै ४ पहिले सतयुग में घतयज्ञ करता राजा (पृथु) भया तिसके राज्यमें (दयादेव) ऐसाश्रेष्ठ ब्राह्मणथा ५ तिसके वेदपारगामी चार पुत्रभये तो पिताने तिन ग्रह्य सूत्रकी विधिसे विवाह किया ६ तिनमें से बडे बेटेकी बहूने ससुरेसे कहा कि हे ससुरजी मैंने जन्म से सकट नाशन व्रतकियाहै ७ सो शुभ मैंने पिताके घरकिया सो हे प्रभो मुझे करनेकी आज्ञादेवो। तबपुत्र बहूका वचन सुनके दयादेव बोला ८ कि सुन तू और बहूवोंमें बडी अरु श्रेष्ठ अधिक गुणवाली है अरु नकष्ट वाली न दरिद्रिणी है तो किसलिये व्रतकरतीहै ९ हेबडभागिनि भोगोंकोभोग किसलियेदुःख

पातीहै कौन गणेशहै तबतो हेराजन् कोई काल करकेवो बहूगर्भ-
वती भई १० तौ तिसकी सासुने श्रेष्ठपुत्रभया सुनके तिसेबेर२वर्जि-
त करती भई कितू मेरी आज्ञासे व्रतनकर ११ ऐसे बहुत कालबीते
तबक्रोधभये गणाधिपतिजी तिसके पुत्रके विवाहसमय लड़केलडकी
के मंगलमें १२ तिसके पुत्रको हरलेते भये तबतो हाहाकार होता
भया सोकि कहांगया अरु किसने लिया यह क्याहुआ ऐसेव्याकुल
भये जन १३ ऐसे जनोके कहते अत्यंत व्याकुल भई तिसकी माता
निज श्वशुर दयादेवको रोती भई ये वचनबोली १४ हेप्रभो आपने
देव गणेशजी के व्रतका निषेध कियाथा तिस कर्मके विपाकसे मेरे
पुत्रकहीं हरागयाहै १५ दयादेवभी ये सुनकर पोत्रके दुःखसे दुः
खितभया तौ तिसके पुत्रकी बहू अरु वो नष्ट भर्त्तार जिसका ऐसी
कन्या १६ जोपतिके दुःखसे पीडित नित्यही गणेशजीको पूजतीभई
अरु तिसने महीने २ में संकट नाशन व्रत किया १७ तौ एक कोई
दुर्बल तिसकेघरमें आयाजोभिक्षार्थी अरु वेदतत्त्वज्ञाता सो कोमल
भाषण करने वाली तिस कन्याको बोला १८ हेकन्ये मुझकोक्षुधा
निवारक अन्न भिक्षादेवो तौ तिसधर्मसंपन्न कन्यानेतिस विप्रका
पूजन १९ बिधिसे भक्ति करके भोजन वस्त्रसहित किया तौ प्रसन्न
मनभये,तिसनेभी ये वचनकहा २० हे कल्याणवती तूवरमांग जो
तेरे मनमेंहै ब्राह्मरूप गणेशजीही तेरी प्रीतिसे आपआयेहैं २१
ऐसे सुनके तभी कन्या हाथजोड ये बोली कि हे विघ्नेशजी आप
प्रसन्नभयेहो तौ मेरे भर्त्ता को मुझे देखावो २२ तिसका ऐसा
वचन सुनके गणेश जी शीघ्रही बोले हे शोभने तैसाही हो सो
तेरा पति शीघ्रही आवेगा २३ ऐसे तिसको वर देकर गणेश जी
अंतर्द्धानभये अरु तिस पुर में एक सोमशर्मा द्विज वसमें २४ तीर्थ
यात्राके प्रसंगसे भ्रमता तिसके पुत्रको देखता भया तौ तिसको
तिस ब्राह्मणका पुत्र जानकर तिसको नगरमेंलेआया २५ तौदया-
देवने निजपौत्रको लाते तिसकोदेखा तौ वो अरु वे नगरवालेअरु
तिसकी माता येसब हर्षको प्राप्तहोते भये २६ अरुमाता बोली कि

श्रीगणेशजीके प्रसादसे मुझको अबमेरा पुत्र प्राप्तभयाहै तौ तिसे वस्त्र आभूषण पहिराय गोदमें लेकर आलिंगन करतीभई २७ अरु सोमशर्मा को दयादेव ने वार २ नमस्कार करी अरु बोला कि हे द्विजेन्द्र आप के प्रसादसेही मेरा पौत्र घर में आया है २८ अरु तिसने वस्त्र भोजन अरु गऊ येब्राह्मणो को दिये अरु फिर मंडप तानकर वेदोक्त विधिसे तिसका विवाह करता भया सारे जन हर्षितभये अरु भाग्यवाली वो कन्या अपने भर्ताके साथ नित्य मोद को प्राप्त होतीभई २९ तौज्येष्ठ कृष्णापक्षकी जो चतुर्थी होती है सो मनुष्योंको काम देनेवालीहै तिसदिन पुरुष स्त्रियों से (एकदंत) गजाननजी पूजनीयहै ३० सोकि पूर्वोक्त विधि से भक्ति प्रीति अरु श्रद्धासे पूजने हेदेवि इसव्रतसे तुमप्राप्तकामनावाली होवोगी ३१ श्रीकृष्णजीबोले कि हेराजन् ऐसाये महात्मा गणेशजीका व्रतहै सो हेराजन् इसशत्रुनाशक व्रतको तुमभी अवश्यकरो ३२॥

इतिश्री स्कन्दपुराणेश्रीकृष्ण युधिष्ठिरसंवादमें ज्येष्ठकृष्णचतुर्थीकथा ग्यारहवीं भई ११॥

बारहवीं कथा॥

आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी की॥

पार्वतीने पूछा हेपुत्र आषाढकृष्णाजो शुभचतुर्थीहोतीहै तिसदिन किस प्रकार करके गणपतिजी पूजनीय है १ श्री कृष्णजी ने कहा हे राजन् हम विघ्न विनाश करनेवाली पुराण कथा कहते हैं जो इतिहास सहितहै सोसुनो २ हेपार्थ आषाढ महीनेमें (लम्बोदर) ऐसेकहेहैं इसमें पूर्वोक्त विधिसेगणाध्यक्षजी पूजनीयहै ३ हेराजन् पहिले माहिष्मतीपुरीमेंराजा (महाजित) नामसे होताभया सोपरम प्रतापवालाथा ४ सो नित्य प्रजाको पालता वो पुत्रहीन भया तो पुत्रहीन होनेसे तिसके राज्यमें अरु घरमें कुछ सुख नभया ५ पुत्र हीन जनोंका जन्म वृथा है ऐसेवेद में लिखाहै जिनसे दिये जल को तिसके पितर नहीं पीतेहैं अर्थात तिन निष्पुत्र का दिया

पातीहै कौन गणेशहै तबतो हेराजन् कोई काल करकेवो बहूगर्भ-
वती भई १० तो तिसकी सासुने श्रेष्ठपुत्रभया सुनके तिसेवेर२वर्जि-
त करती भई किंतु मेरी आज्ञासे व्रतनकर ११ ऐसे बहुत कालबीते
तबक्रोधभये गणाधिपतिजी तिसके पुत्रके बिवाहसमय लड़केलड़की
के मंगलमें १२ तिसके पुत्रको हरलेते भये तबतो हाहाकार होता
भया सोकि कहांगया अरु किसने लिया यह क्याहुआ ऐसेव्याकुल
भये जन १३ ऐसे जनोंके कहते अत्यंत व्याकुल भई तिसकी माता
निज श्वशुर दयादेवको रोती भई ये वचनबोली १४ हेप्रभो आपने
देव गणेशजी के व्रतका निषेध कियाथा तिस कर्मके विपाकसे मेरा
पुत्रकहीं हरागयाहै १५ दयादेवभी ये सुनकर पौत्रके दुःखसे दुः-
खितभया तो तिसके पुत्रकी बहू अरु वो नष्ट भर्त्तार जिसका ऐसी
कन्या १६ जोपतिके दुःखसे पीड़ित नित्यही गणेशजीको पूजती भई
अरु तिसने महीने २में संकट नाशन व्रत किया १७ तो एक कोई
दुर्बल तिसकेघरमें आयाजोभिक्षार्थी अरु वेदतत्त्वज्ञाता सो कोमल
भाषण करने वाली तिस कन्याको बोला १८ हेकन्ये मुझको क्षुधा
निवारक अन्न भिक्षादेवो तो तिसधर्म संपन्न कन्यानेतिस विप्रका
पूजन १९ बिधिसे भक्ति करके भोजन वस्त्रसहित किया तो प्रसन्न
मनभये तिसनेभी ये वचनकहा २० हे कल्याणवती तूवरमांग जो
तेरे मनमें ब्राह्मरूप गणेशजीही तेरी प्रीतिसे आपआयेहैं २१
ऐसे सुनके तभी कन्या हाथजोड़ ये बोली कि हे विघ्नेशजी आप
प्रसन्नभयेहो तो मेरे भर्त्ता को मुझे देखावो २२ तिसका ऐसा
बचन सुनके गणेश जी शीघ्रही बोले हे शोभने तैसाही हो सो
तेरा प्रिय शीघ्रही आवेगा २३ ऐसे तिसको वर देकर गणेश जी
अंतर्द्धान भये अरु तिस पुर में एक सोमशर्मा द्विज बनमें २४ तीर्थ
यात्राके प्रसंगसे भ्रमता तिसके पुत्रको देखता भया तो तिसको
तिस ब्राह्मणका पुत्र जानकर तिसको नगरमेंलेआया २५ तो दया-
देवने निजपौत्र को लाते तिसकोदेखा तो वो अरु वे नगरवालेअरु
तिसकी माता येसब हर्षको प्राप्तहोते भये २६ अरुमाता बोली कि

श्रीगणेशजीके प्रसादसे मुझको अबमेरा पुत्र प्राप्तभयाहै तो तिसे वस्त्र आभूषण पहिराय गोदमें लेकर आलिंगन करतीभई २७ अरु सोमशर्मा को दयादेव ने बार २ नमस्कार करी अरु बोला कि हे द्विजेन्द्र आप के प्रसादसेही मेरा पौत्र घर में आया है २८ अरु तिसते वस्त्र भोजन अरु गऊ येब्राह्मणों को दिये अरु फिर मंडप तानकर वेदोक्त विधिसे तिसका विवाह करता भया सारे जन हर्षितभये अरु भाग्यवाली वो कन्या अपने भर्ताके साथ नित्य मोद को प्राप्त होतीभई २९ तोज्येष्ठ कृष्णपक्षकी जो चतुर्थीहोती है सो मनुष्योंको काम देनेवालीहै तिसदिन पुरुष स्त्रियों से (एकदंत) गजाननजी पूजनीयहै ३० सोकि पूर्वोक्त विधि से भक्ति प्रीति अरु श्रद्धासे पूजने हेदेवि इसव्रतसे तुमप्राप्तकामनावाली होवोगी ३१ श्रीकृष्णजीबोले कि हेराजन् ऐसाये महात्मा गणेशजीका व्रतहै सो हेराजन् इसशत्रुनाशक व्रतको तुमभी अवश्यकरो ३२॥

इतिश्री स्कन्दपुराणेश्रीकृष्ण युधिष्ठिरसंवादमें ज्येष्ठकृष्णचतुर्थीकथा ग्यारहवीं भई ११॥

बारहवीं कथा॥

आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी की॥

पार्वतीने पूछा हेपुत्र आषाढ़कृष्णको शुभचतुर्थीहोवीहै तिसदिन किस प्रकार करके गणपतिजी पूजनीय है १ श्री कृष्णजी ने कहा हे राजन् हम विघ्न विनाश करनेवाली पुराण कथा कहते हैं जो इतिहास सहितहै सोसुनो २ हेपार्थ आषाढ़ महीनेमें (लम्बोदर) ऐसेकहेहैं इसमें पूर्वोक्त विधिसेगणाध्यक्षजी पूजनीयहै३ हेराजन् पहिले माहिष्मतीपुरीमेंराजा (महीजित) नामसे होताभया जोपुण्य प्रतापवालाथा ४ सो नित्य प्रजाको पालता वो पुत्रहीन भया तो पुत्रहीन होनेसे तिसके राज्यमें अरु घरमें कुछ सुख नभया ५ पुत्र हीन जनोंका जन्म वृथा है ऐसेवेद में लिखाहै तिसीसे दिये जल को जिसके पितर चलापीतेहैं अर्थात तिस निपुत्र का दिया तिन

पातीहै कौन गणेशहै तवतो हेराजन् कोई काल करकेवो बहूगर्भ-
वती भई १० तौ तिसकी सासुने श्रेष्ठपुत्रभया सुनके तिसेवेर२वर्जि-
त करती भई किंतु मेरी आज्ञासे व्रतनकरै ११ ऐसे वहुत कालवीते
तवक्रोधभये गणाधिपतिजी तिसके पुत्रके विवाहसमय लड़केलड़को
के मंगलमें १२ तिसके पुत्रको हरलेते भये तवतो हाहाकार होता
भया सोकि कहांगया अरु किसने लिया यह क्याहुआ ऐसेंव्याकुल
भये जन १३ ऐसे जनोंके कहते अत्यंत व्याकुल भई तिसकी माता
निज श्वशुर दयादेवको रोती भई ये वचनवोली १४ हेप्रभो आपने
देव गणेशजी के व्रतका निषेध कियाथा तिस कर्मके विपाकसे मेरा
पुत्रकहां हरागयाहै १५ दयादेवभी ये सुनकर पौत्रके दुःखसे दु-
खितभया तौ तिसके पुत्रकी वहू अरु वो नष्ट भर्त्तार जिसका ऐसी
कन्या१६ जोपतिके दुःखसे पीड़ित नित्यही गणेशजीको पूजतीभई
अरु तिसने महीने २ में संकट नाशन व्रत किया १७ तौ एक कोई
दुर्वल तिसकेघरमें आयाजोभिक्षार्थी अरु वेदतत्त्वज्ञाता सो कोमल
भाषण करने वाली तिस कन्याको वोला १८ हेकन्ये मुझकोक्षुधा
निवारक अन्न भिक्षादेवो तौ तिसधर्म संपन्न कन्यानेतिस विप्रका
पूजन १९ विधिसे भक्तिकरके भोजन वस्त्रसहित किया तौ प्रसन्न
मनभये तिसनेभी ये वचनकहा २० हे कल्याणवती तूवरमांग जो
तेरे मनमें है ब्राह्मरूप गणेशजीही तेरी प्रीतिसे आपआयेहैं २१
ऐसे सुनके तभी कन्या हाथजोड़ ये वोली कि हे विघ्नेशजी आप
प्रसन्नभयेहो तौ मेरे भर्त्ता को मुझे देखावो २२ तिसका ऐसा
वचन सुनके गणेश जी शीघ्रही वोले हे शोभने तैसाही हो सो
तेरा पति शीघ्रही आवेगा २३ ऐसे तिसको वर देकर गणेश जी
अंतर्द्धान भये अरु तिस पुर में एक सोमशर्मा द्विज वनमें २४ तीर्थ
यात्राके प्रसंगसे भ्रमता तिसके पुत्रको देखता भया तौ तिसको
तिस ब्राह्मणका पुत्र जानकर तिसको नगरमेंलेआया २५ तौदया-
देवने निजपौत्र को लाते तिसकोदेखा तौ वो अरु वे नगरवालेअरु
तिसकी माता येसव हर्षको प्राप्तहोते भये २६ अरुमाता वोली कि

भीम अर्जुन नकुल सहदेव येसारे नमस्कार करके अगाड़ी बैठगये अरु द्रौपदीजी पाद्य अर्घ आसन देकर प्रणाम अंजलि किये बैठ गई ७ राजाबोला कि हे पितामहजी हम दुर्बल वनवासी जैसेयथा योग्य राज्य भोग भोगें सो बतावो कि अबमें क्याकष्ट नाशक उपाय करूं ८ जिससे पराजय भये सारेशत्रु नाशको प्राप्तहों ऐसे कहते सर्वज्ञाता तिसराजा युधिष्ठिरको व्यासजीने कृपाकरके दुष्ट नाशक उपाय बताया अरु बोले कि तुम सरखा धर्म परायण राजा भूमंडल भरमेंभी कोईनहींहै १० तिससे हम तुमको दुःख संकट नाशक व्रतकहते हैं जोदिव्य शुभफल दायक अरु भूमिमें सर्व प्रयोजन साधकहै ११ इससे विद्यार्थी विद्यापावै धनार्थी को धनमिले अबहेराजन् हम इतिहास कहतेहैं सो सुनो १२ पहिले सतयुगमें राजा (चंद्रसेन) महामतिमान् भया जोभार्य्या सहित दीक्षाको प्राप्त अर्थात् मंत्रोपदेश किया बुद्धिमान् सखाजन सहित १३ अरु निजजन भाई अरु तिनके पुत्रोंसे संयुक्त अरु तिसकोप्रिया सौभाग्यमती गुणवालाथी सो १४ (रत्नावली) नामसेभईहेराजन् जो पतिव्रत धर्ममें परायणथी तिनकी परस्पर प्रीति मुनिसम्मत अर्थात् श्रेष्ठ प्रीतिहोतीभई १५ कभी दैवयोगसे तिसका राज्य शत्रुवों ने खोशलिया अरु भंडार सेना हरी गई वो राजा भाइयों सहित विशेष भ्रष्टभया १६ तो वोराजा रानी रत्नावली सहित हेयुधिष्ठिर निकलता भया तो एकवस्त्र पहिरे क्षुधा तृषादिकों से पीड़ित वो राजा १७ तिसरानी सहित जिधर तिधर विचरता, २ तिस्कोसाथ लिये अकेला वनमें जाकर था केवल दुःखहीहै जिसको सो एकाकी राजा १८ क्षुधासे पीड़ित भया अरु सूर्य अस्तभये रानी व्याघ्र चकवा बगला कोयल सारस इनसे संयुक्त १९ अरु कांटोंसे कंपित भई रानी तिसभयकारी वनको देखकर दुःखीभई तो तिसे देखकर राजादुःखसेपीड़ितहोताभया २० तबतो वहांहीविचरते २ राजानेमहामुनि (मार्कंडेयजी) को देखे २१ तो रानी सहित राजा धीरे २ प्रणामकरता धीरे २ तिनके पास जाकर दंडकेनाईं गिरपड़ा २२

स्त्रीके गर्भ रहताभया अरु श्रीगणेशजीके प्रसादसे सुलक्षणवान् पुत्रभया ४० तो सारी प्रजा संतोष को प्राप्तभई अरुघर २ शुभ मंगल भया अरु महीजित राजाने ब्राह्मणोंको अन्न अरु रत्नादिक दानकिये ४१ हे राजन् इस व्रतका ऐसा प्रभावहै जोनर इसेभक्ति करके करै सो सब सुखको प्राप्तहोताहै ४२ श्रीकृष्णजी बोले हे राजन् तिससे तुमभी इसव्रतको यथाविधिसे करो तो गणेशजी के प्रसादसे तुमभी सबकामो को प्राप्तहोगे ४३ हेयुधिष्ठिर राजन् जो इस उत्तमव्रतको करतेहैं तिनको पूर्ण राज्यमिलता अरुतिनके सबशत्रु नष्टहोतेहैं ४४ जो एकाग्रमन ऋषीश्वर अरु उत्तम भक्ति है तिनके इसव्रतसे पुत्र पौत्र निर्विघ्नतासे वंशविस्तार होताहै ४५ अरु इसके पठन अरु श्रवण करनेसेभी कार्यसिद्धि होजातीहै तिस से तुमभी इसे अवश्य करो ४६॥

इतिश्रीस्कंदपुराणेश्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादमें बारहवींकथाभई १२॥

तेरहवींकथा॥

अधिकमास चतुर्थी का माहात्म्य है॥

श्रीस्कंदजीने कहा कि हे संपूर्ण ऋषीश्वरो तुम इस पुराणकथा को श्रवण करो जैसे श्रीगणेशजीके व्रतका प्रभाव वर्णन किया गया है १ सोकि हे द्विज श्रेष्ठो वनमें वर्तमान वे पांडव जो सारे धर्म सुशील अरु सब कृष्णजीमेंही परायण थे २ एकवेर तिनके घर मुनिश्रेष्ठ (श्रीव्यासजी) निजेच्छासे विचरते आगये तौ तिनमुनि जीको देखकर ३ वेसारे शीघ्रही उठकर अंजलि किये खड़े भये अरु बोले कि हमधन्य अरुस्थानभी आपके दर्शन से धन्य भयाहै ४ आजमेरा जन्मभी आपके आने करके धन्यभया आजमेरा सर्वस्व धन्य अरु आपके दर्शनसे सब शोका नाशभी भयाहै ५ बड़ोंकी कृपासेही वनवासियों के घरमें सुन्दर आगमन होताहै इसोसे मैं राज्यसे भ्रष्ट पराङ्मुख भयेभी अपने को धन्य मानताहूं ६ ऐसेही

व्रतग्रहण कियाथा फिरतू गणेशजीको ध्याकर तिस सरके तीर से निकला ३८ तो तिसके प्रभावसे सिद्धिदातागणेशजी तुझपैप्रसन्न भये तोतेरे धनधान्य अरुस्त्रीपुत्रबहुतभये ३६ सोकिरत्नहारसुवर्ण इनसे अरु गऊ हाथियोसे तेरा घरबाहर भरगया किसी समय तू धनसे अंधा तिसव्रतको भूलगयाथा ४० फिर तैनेतिसजन्ममें मृत्यु पाई तो तिसीके प्रभावसे तेरा राज्यकुलमें नवीनजन्मभया है ४१ सखा मित्र प्यारीसहित अरु सुन्दर शरीरपायाहै फिर व्रत के भंग होनेके प्रभावसे तू फिर ऐसाहोगयाहै ४२ राजाबोला हेब्रह्मन् अब मुझको क्या दुःखनाशक उपायकरनाचाहिये जिससेअब सारे विघ्न शांतिको प्राप्तहोवें ४३ मार्कंडेयजी बोले हेनृपपूर्वोक्तविधिसेही तू गणेश जी का पूजन कर अरु तैसेही संकट नाशन व्रत कर ४४ तो गजाननजी के प्रसन्नभये तू फिरभी राज्यपदवी को प्राप्तहोगा तिससे तू निज क्लेश शांतिके लिये गणेशजीकी पूजाकर ४५ व्यास जी बोले हे युधिष्ठिर वो राजा मारकंडेयजीका ऐसावचन सुनतिन्हें प्रणाम करके घरआया अरु भार्यासहित भक्तियुक्त तिसव्रत को यथा विधि करता भया ४६ तिसके शत्रुवोंका नाश भया अरु छूटा राज्य तिसे प्राप्तभया अरु गणेशजी के प्रसाद से तो तिसके सारे कार्य सिद्धभये ४७ श्रीस्कन्द जी बोले हेपार्वति ऐसाव्यास जीका वचन सुनके पांडुका पुत्र युधिष्ठिर अंजलि किये उत्तम राजा श्री व्यासजीको ये कहता भया ४८ युधिष्ठिर बोलाकि आप इससंकट नाशन व्रतकीविधिभी कहिये इसकाक्यानाम अरु भोजनक्याहै अरु इसमें गणेशजी कैसे पूजनीयहै सोकहिये ४६ व्यासजी बोले हेरा- जन् कृष्ण पक्षकी चतुर्थी को गणेशजीका पूजन करना सोपंचामृत से स्नान करावे अरु षोडश उपचारों करके पूजे ५० सो रक्तकनेरके फूलोंसे अरु नैवेद्य मोदकादिक से अरु लाडूफल अक्षत दूर्वा चंदन इन नामों करके पृथक् २ पूजाकरे ५१ सोकि विश्वप्रिया जीको तो आचमन अरु ब्रह्मचारी जीको स्नान (गणेश्वर) जीकोवस्त्र अरु पु- ष्टिदाता जीको चंदन ५२ अरु विनायक जीको पुष्प उमासुत जी

अरु अंजलि सम्पुट बांधकर राजा वनमें विराजमान दमनशीलमुनि मार्कंडेयजीको यह वचनबोला २३ कि हे पूजनीयमुनिजी मैंनपूर्व जन्ममें क्या पाप कियाथा जिस कर्मके भोग से मेरी राज्य लक्ष्मी शत्रुवोने हरलईहै २४ मार्कंडेयजी बोले हेराजन् जो तैंने पूर्वजन्म में किया सो कहतेहैं तूसुन तूपूर्वजन्ममें मृगयाखेलनेका रसिक था सो तू एक गहनवनमें चलागयाथा २५ तहां वनमें तू मृग सिंह शशोंकोमारता हेराजन् तिसरातको तहांहीं भ्रमताभया अरुअधिक मासको चतुर्थीव्रत २६ को देखताभया सो कि तिस वनमें तैंनेएक महारमणीय सरोवरदेखा अरुतिसकेतीर रक्तवस्त्रवालीनागकन्या-ओके समूहको भी देखा २७ जो वे गणेशजीको पूजरहीथीं तौतू आश्चर्यभया तहांहीं शनै से जाकर तिनसे यहपूछताभया कि २८ हे स्वर्गदेवियो आप श्रीगणाधिपतिजीको कहो मैं भी इनकी पूजा करूंगा सो हे सुन्दरियो इनका प्रभाव मुझे सुनावो २९ नाग कन्या बोलीं हेराजन् तू गणेशजीको पूज जो सर्वसिद्धिदायक अरु शांतिदाता पुष्टिप्रद अरु नित्यहीसंतान सुखसंपत्ति बढ़ानेवालेहैं ३० राजा बोला कौन मास अरु किस महीनेमें गणाधिपतिजी पूजनीय हैं अरुक्या दान कैसे पूजनीयहैं सो तुममुझसेकहो ३१ नागकन्या बोलींअधिकमासके कृष्णपक्षकी चौथको चंद्रमाके उदयमें हेराजन् विघ्नहर्ता गणेशजी विधिसे पूजनीय हैं ३२ सो जैसी शक्ति होवै तैसी भक्तिभाव से पूजनकरै सोकि पंचामृत से स्नान करावै अरु रक्त फूलों से पूजन करै ३३ अरु गंध पुष्प धूप नैवेद्य से अरु द्विदलवाली दूर्वाओंसे पूजै अरु घृत शर्करा मिश्रित पांच या दश मोदकवनावै ३४ सो पांच तो गणेशजीके चढ़ावै अरु पांचब्राह्मण कोदेदे अरु कन्याको जिमाकर फिर आपभी भोजन करै ३५ सारे उपचारसहित येइससेश्रीगणेशजीप्रसन्नहोवैं फरइसपुराणसंबंधि-नी इतिहास कथाको सुनकर ३६ सब कामोंकी सिद्धिकोप्राप्तहोवै हे राजन् ऐसे गणेश जी पूजनीयहैं तो राजा तिनका वचन सुनके वेर २तिन्हेंनमस्कारकरकर ३७ हेराजन् तैंनेतहा वो संकटनाशन

श्रीगणेशायनमः

अथ गणेशगीता प्रारम्भ ॥



हेरम्बोम्बायवेधोहरिपशुपतयोभास्कराद्याग्रहाये पचाख्यालोकपालाअथदशगदितादिक्पूपायेमहान्त मेघाधाराशय्श्चाश्विमुखवरसुखायाश्चनक्षत्रतारा योगाविष्कुम्भकाद्यास्सकलसुरवगापान्तुमामत्रनूनम् ॥ १ ॥ गीतामुगीताकर्तव्याकिमन्यै शास्त्रविस्तरैयास्वयगणनाथस्यमुखपद्माद्विनिसृता २ क्रियतेथानुवादोत्रमयाज्ञेनयथामति । शुक्रदेवीसहायेननारनौलनिवासिना ॥ ३ ॥

अथ प्रयतार्थ भाषयैवक्रतिस्तत्र दोहाछन्दः ॥

दो० आननमान पुराणमें प्रेरयो जिन मनमोर ।
सो जगमें युगयुग जियो यगतनु नवल किशोर १ ॥

व्यासजीने पूछा कि हेदेवोंके ईश चतुर्मुख ब्रह्माजी आपपरम कृपा करके श्रीगणेशजीकी गीताको कहिये जोगीता सारे अज्ञानों की विशेष करके नाशकरने वालीहै १ श्रीब्रह्माजी बोले ऐसेही महात्मा शौनक करके पहिले पूछेगये सूतजो व्यासजी के मुखसे श्रवणकरी इसगीता को कहते भये २ सोही सूतजी ने पूछा कि हेव्यासजी आपने अठारह पुराणोक्त अमृत तो हमको पान करवाया पर अबहम तिससे भी अत्यत आस्वाद वाले उत्तम अमृत को पीनेकी इच्छा करतेहैं ३ जिसकरके येमनुष्य अमृतमय होकर सुखीहोवें हेषड्भागी व्यासजी जो ब्रह्मरूप अमृतहै अरुजोयोगामृतहै सो आपकृपा करके मुझसे कहिये ४ श्रीव्यासजी बोले कि अबहम गीताको कहतेहैंगे जो योगमार्ग में प्रकाश करने वाली अर्थात जिसकरके योग सम्यक जाना जावे यह हेसूतजी फिर जो

धो धूप अरु रुद्रप्रियजी को दीपक अरु विघ्नविनाशक जीकोनैवेध
क३ अरु फलदाता जीको तांबूल अरु सकटनाशकजी को फलफिर
विघ्न विनाशन देव गणेशजीको ऐसे प्रार्थना करे ५४ हे सुमुखजी
संसारकी पीडाओंसे अत्यतदु खित अरु क्लेशयुक्त जोमैंहू मुझपरआप
प्रसन्नहोवो अरु हे दु ख दारिद्र नाशकजी मेरीरक्षाकरो विघ्नविना-
शनजी आपके अर्थ नमस्कार २ होवे ५५ अरु पुष्पजल करके इस
मत्र से चद्रमा को अर्घदेवे कि हेक्षीरोदसागर से उत्पन्न हे द्विज-
राज कुलाधिपते चद्रमाजी रोहिणी अहिणी सहित आपइसअर्घको
ग्रहणकीजिये ५६ आपके अर्थ नमस्कारहै अरु ब्राह्मण को भोजन
दक्षिणा सहित मोदकदेकर ५७ फिर तिसीब्राह्मण वशिष्ठ अन्न वो
आपभी भोजन करलेवे अरु भूमिमें सोवे क्रोधजीतै लोभपाखड से
रहित होवे ५८ प्रतिमास ऐसेही हेरब जी की प्रसन्नता के अर्थये
व्रतकरे तो विद्यार्थी विद्यापावै धनार्थीको धनमिलै ५९ कन्याकरै
तो शुभ वर पाय तिसके साथ भोगभोगे अरु जो विधवा करे तो
अगले जन्ममें तिसे सुहाग प्राप्तहो ६० पुत्रार्थी पुत्रपाता है रोगी
रोगसे छुटजावे भीतभय रहित होवे वधा भयाजन बधन से छूट-
जाताहे ६१ व्यासजीने कहा हे युधिष्ठिर तिससे तुमभी इससकट
नाशन व्रतको करो तो तुमइस करके गणेशजी के प्रसाद से निज
राज्यको प्राप्तहोगे ६२ अरु जो भक्तिसे इसपुराणकी कथाकापाठ
करतेहै तो वेभीपरमसिद्धि अरु भारीसम्पतिकोप्राप्तहोतेहै ६३इस
प्रकार से हे राजन् जो २ तुमने पूछासो २ सबहमनेकहाहै जोसब
अर्थोंका साधक सकट नाशन नामसे व्रतथा सो सब विस्तार कर
के तुमको सुनादियाहै ६४ इतिश्री स्कन्द पुराण व्यास युधिष्ठिर
जीके सवादमें अधिक मास चतुर्थी की १३ कथाहुई ॥

दो० तीनवेद पुनिनंदशशि१९४३सवत्कार्त्तिक मास॥ शुक्लकाम
तिथि सोमदिन शुक्लरचित आभास॥ सरलदेश भाषा विषे पूर्णभयो
अनुवाद ॥ वाद त्याग सहिलीजिये जो कछुलिखितप्रमाद ॥ सवत्
१९४३ का० शु० १३ सोमेशम् ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ गणेशगीता प्रारम्भ ॥

हेरम्बोम्बाथवेयोहरिपशुपतयोभास्करायाग्रहाये पचाख्यालो
कपालाअथदशगदितादिक्पूपायेमहान्त मेषाद्याराशयश्चाश्विमु
खवरसुखायाश्चनक्षत्रतारा योगाविष्कुम्भकाद्यास्सकलसुरवरापा
न्तुमामत्रनूनम् ॥ १ ॥ गीतासुगीताकर्तव्याकिमन्यैः शास्त्रविस्तरै
यास्वयगणनाथस्यमुखपद्माद्विनिसृता २ क्रियतेथानुवादोत्रमया
ज्ञेनयथामति । शुक्लदेवीसहायेननारनौलनिवासिना ॥ ३ ॥

अथ ग्रन्थतात्पर्य भाष्येवकृतिस्तत्र दोहाछन्द ॥

दो० प्रानगमान पुराणमें प्रेरयो जिन मनमोर ।
सो जगमें युगयुग जियो यगतनु नवल किशोर ४ ॥

व्यासजीने पूछा कि हेदेवोके ईश चतुर्मुख ब्रह्माजी आपपरम
कृपा करके श्रीगणेशजीकी गीताको कहिये जोगीता सारे अज्ञानो
की विशेष करके नाशकरने वालीहै १ श्रीब्रह्माजी बोले ऐसेही म-
हात्मा शौनक करके पहिले पूछेगये सूतजी व्यासजी के मुखसे
श्रवणकरी इसगीता को कहते भये २ सोही सूतजी ने पूछा कि
हेव्यासजी आपने अठारह पुराणोक्त अमृत तो हमको पान कर-
वाया पर अवहम तिनमे भी अत्यंत आस्वाद वाले उत्तम अमृत
को पीनेकी इच्छा करतेहैं ३ जिसकरके मनुष्य अमृतमय होकर
सुखीहोवे हेवड भागी व्यासजी जो ब्रह्मरूप अमृतहै अरुजोयोगा-
मृतहै सो आपकृपा करके हमसे कहिये ४ श्रीव्यास जी बोले कि
अवहम गीताको कहतेहैंगे जो योगमार्ग में प्रकाश करने वाली
अर्थात जिसकरके योग सम्यक जाना जावे यह हेसूतजी फिर जो

गीतापूछरहे राजा वरेण्यके अर्थ श्रीगणेशजी करके नियोग करी अर्थात् वताई गईहे ५ सो राजावरेण्यने पूछा कि हे विघ्नेश्वर हे महावाहो हे सर्व विद्याओंमें विशारद अरु हेसर्व शास्त्रार्थ तत्त्वके ज्ञाता गणेशजी मेरेसे योग आप कहने को योग्यहो अर्थात् आप कृपाकरके मुझको योगमार्ग वताइये जिससे मेरा ससारसे निस्तार होवे ६ हे राजन् वरेण्य हमारे अनुग्रह से तेरीमति सम्यक् प्रकार से निश्चित भईहै सो हेनृप हमगीता तुमको कहतेहैं जो योग रूपामृत पानकराने वाली है ७ सोकि कुछ योग अर्थात् जुड़ने को योग नहीं कहते अरु लक्ष्मी का योगहोना अर्थात् जुड़ना सो भी योग नहीं है अरु जो विषय अर्थात् देखना सुनना इत्यादि योगहे अरु न तिनकी मात्रा अर्थात् रूपरस गध स्पर्श आदिको का सेवन है सोभी योगनहीं है८अरु हे राजन् जो मातापिता आदिको का योग अर्थात् मिलाप है सोभी योगनहीं है अरु जोभाई वंधु पुत्र आदिको का योगहे सोभीयोग नहींहै अरु जो मणिआदिअष्ट-सिद्धि सेवन है सोभी योगनहींहै ९अरु जो स्त्रीसे सयोगहै सोयोग नहींहै जो जगत्में आश्चर्य रूप वालीस्त्री है अरु राज्यकरना येभी योगनहींहै अरु हाथी घोड़ो पर चढना येभी योगनहींहै १० अरु योगके प्रयोजन वाले अर्थात् योग जिज्ञासु को इन्द्र पदकी प्राप्ति होना येभी प्रिय योग नहींहै अरु जो सत्यलोक का भोग है सोभी मेरेमत में योगनहीं है ११ अरु न पवनपन अर्थात् वायुलोकयोग है अरु न अग्निलोक योगहे अरु न देवता पनयोगहे न काल को योगपन है अरु न वरुण लोकको योगत्व है न निर्ऋति सवधी को योगपन है अरु न सव भूमिपति होना ये योगहे १२ अरु जो-शैवको स्वीकार करना अर्थात् कैलासादि प्राप्ति सो योगनहीं अरु जो विष्णु पदका स्वीकार अर्थात् सम्पदाय से वर्तनेसे वैकुण्ठलोकप्राप्ति सोभी योगनहींहै अरु हे राजन् सूर्यपन अर्थात् सूर्यलोक में जाना ये योगनहीं है अरु न चद्र लोकता न कुवेर पनयोगहै १३ सो हे राजन् ऐसे २ नानाप्रकार के योगको साधन करते हैं जो योगज्ञान

करके निरतरही विस्तारित हैं सो वे ज्ञानीजन लोक में तृष्णारहित अरु जीताहै आहार जिन्होंने ऐसे अरु वे वीर्य्य अर्थात् जितेन्द्रिय होतेहैं १४ सोही वशकिया है त्रिभुवन जिन्होनेऐसे वे ज्ञानीजन अखिल लोक अर्थात् सारे संसारियो को पवित्र करते हैं कैसेहैं वे कि करुणानाम कृपा करके पूर्णनाम भराहै हृदा जिनका अरु कइ-योको वे ज्ञानभी वताते हैं १५ अरु जो जीवतेही मुक्त भये अर्थात् कैवल्य को प्राप्त अरु परम आनद रूप हृदय सागरमें मग्नहोरहे सो कि वे आंखें मीचकरनिजहृदयमें परब्रह्मको देखते अर्थात्ध्यान से सम्यक विचारकरतेहैं १६ अरु योग करके वशकिये परब्रह्मको निजचित्तमें चितवनकरतेहैं अरु वे सव प्राणियोको अपने आत्माके समान अपने वरावर गिनतेहैं अर्थात् समदर्शी हैं सोकि जिसकि-सीसे आछिन्न भये अर्थात् किसीने तिनको छेदे ताड़े अरु किसीने हते अर्थात् पीटे १७ अरु जिसकिसीसे आकर्षितकिये अर्थात्घसीटे गये अरुजिसकिसीने तिनकोआश्रयदिया तौतिनके वेसवसमानही हैं वे ज्ञानीजन करुणासे पूर्ण मनवाले दयाकरके भूतलपर विचरते हैं १८ सो प्राणियो के अनुग्रहके लिये वे विचरते हैं फिर कैसे हैं कि जीताहै क्रोध जिन्होने अरु जितेंद्रिय अरु हे राजन् जोदेहमात्र धारी अर्थात् भोजनाच्छादन मात्र अभिलाषावाले अरु समान है लोह पत्थर सुवर्ण जिनके १९ ऐसे महाभाग्यवाले महानुभाव नेत्र गोचरहों अर्थात् ऐसे महात्माओंका दर्शन भी दुर्लभहै सो हेप्यारे राजन् अव तिसी उत्तमयोग को हमकहतेहैं तू श्रवणकर २० प्राणी जिसे सुनकर ससारसागर तथा पापो से छूटजाताहै सो कि शिव जी में अरु भगवान्में दुर्गामें सूर्यजीमें अरु हेनृपते हमारेमें अर्थात् पांचोदेवताओंमें २१ जो न भेद वुद्धिहै अर्थात् इनमें जो भेदभावन मानना सोही योग्य हमारे सम्यक् मत है अर्थात् तिसीयोगकोहम उत्तमयोग कहते हैं अरु जिसकारण से हमहीं इस जगत् को रचने अरु पालन करतेहैं अरु हमीं नानाप्रकार अवतार धारकर सहारते हैं अपनीलीलासे सब व्यापार करतेहैं २२ अरुहमहीं (महाविष्णु)

स्थित देखता अरु सूर्य चद्रमा में अरु जल अग्निमें अरु शिवजी में शक्तिमें तैसे वायुमें ४४ अरु द्विजमें जलाशयमें भारीनदीमें तीर्थमें अरु पाप नाशक क्षेत्र में अरु विष्णुजीमें अरु सब देवताओ में तसे ही यक्ष अरु सर्प्पों में४५ अरु गधर्वोंमें मनुष्योमें अरु तैसेही तिर्यक्योनि अर्थात् कीट पतगादिको में जो इनमें हमें निरतर देखता रहै सोही योगवेत्ता कहाता है ४६ सो इन्द्रियों को विषयोंसे विवेकसेती भिन्नकरके अर्थात् तिनमें अनाशक्तकरके अरु सर्वत्र जोसमान बुद्धिहै सोही हे राजन् हमारे योग सम्मतहै ४७ अरु जोबुद्धि अपने अरु आत्मा से भिन्न अर्थात् देहादिक के भेदके ज्ञानकरके दैवयोग से निज धर्ममें आसक्त मनवाले मनुष्य के होती है तिस बुद्धिका जो सबध आत्मासोही योग कहाताहै४८ अरु जो वो तिस बुद्धिसे हीनहोगा तौ धर्मअधर्म इनदोनोको नहीं पहिचानेगा इससे योगकेलिये मनको लगावे क्योकि विधि प्रतिपादक उपायोंमें योग ही कुशल अर्थात् श्रेष्ठ आचरण करने योग्यहै४९ इससे बुद्धिमान् मनुष्य जितेद्रिय भया धर्म अधर्म के शुभाशुभ फल को छोडकर जन्मरूप फांसिसे छूटाभया आरोग्य अर्थात् परमआनद स्थान को प्राप्त होताहै ५० जब जतु अर्थात् इस प्राणीकी बुद्धि अज्ञान के मैलपनको उलघैगी अर्थात् तिससे दूर होगी अरु परमात्मा में अचल अर्थात् स्थिर होतीहै तभी ये योगको प्राप्तहोताहै ५१ अरु हे प्रिय वरेण्य जब बुद्धिमान् मनुष्य मनके सपूर्ण काम अर्थात् संकल्प विकल्पोंको छोडता है अरु अपने आपेमेंही सतोषको प्राप्त है तौ वो निश्चलबुद्धि कहाताहै५२५३ अरु जो सारेसुखोमें तृष्णा रहित है अरु दुःख सगभये उद्विग्न मननहींहोताहै अरु निवृत्त है भय क्रोध स्नेह जिसके तौ ऐसा वो ज्ञानीजन स्थिर बुद्धि कहाताहै ५४ जैसे कछुवा सब ओर से निज अगोको इकट्ठे करताहै तसेही योगमें परायण मनुष्य इद्रियों को खैचलेवे ५५ सो लघु भोजन अर्थात् लघु आहार करनेवाले इस शरीरो के सब विषय छूटजाते है केवल स्नेहके विना सो योगी ब्रह्म को पहिचाने मे

नाश होजाता है ५६ हे भूपते वरेण्य जो ये ज्ञानवान् मनुष्य योगीकी धारणा में स्थितहोकर तो इसी के इन्द्रिय बलसेती इसके मनको मथके हरते अर्थात् विक्षिप्त करते हैं ५७ सो योगको प्राप्त मनुष्य तिन इन्द्रियों को वश करके सबकाल हमारे में परायण होवे जिसकी इन्द्रियें सम्यक् यतनाम शांत अर्थात् वशमें हैं सो कृतबुद्धि कहाताहै ५८ विषयो को चिंतन करते इस मनुष्य के तिनमें संग उत्पन्न होताहै अर्थात् तिस संगसे तिन विषयों में ये आसक्त होजाताहै अरु फिर तिस संगसे काम उत्पन्न होता है अरु काम से क्रोधहोता है ५६ अरु क्रोधसे अज्ञान का संभव है अरु तिस अज्ञानसे स्मरण का विभ्रंश भ्रम अर्थात् नाश होताहै अरुस्मृतिके नाशभये बुद्धिका नाश होताहै अरुबुद्धि नाशभये से वह आपनष्ट होजाताहै ६० अरु जो मनुष्य राग अरु द्वेषके विनावशकिये इन्द्रियों करके विषयोंकोभोगै तौवो संतोष अर्थात् परम प्रसन्नता को प्राप्त होताहै ६१ सो तीनो प्रकार के भी अर्थात् शरीरमन वाणी दुःख का संतोषमें निरंतर क्षेपण अर्थात् नाश होताहै अरुबुद्धि करकेसम्यक् स्थितहोके यहज्ञानी प्रसन्न चित्तहोजाताहै६२सोकिंचिन प्रसन्नता के बुद्धिनहीं होती अरुविन बुद्धिके भावना भी नहीं अरु हे भूपति वरेण्य विन तिसभावना के शांतिनहीं है अरु विन शांति सुख कहां सेहो ६३ अरु जो मन इन्द्रिय रूप घोड़ों के विचरते विषयो से पिछाड़ीवर्त्तता अर्थात् दौड़ताहै तो वह इसजनकी बुद्धिको हरलेताहै जैसे जलमें चलती नावको पवन लौट देताहै ६४ अरु जो रात्रि सब प्राणियोंकी है तिसमें वह निद्रा नहीं लेताहै अरु जहां प्राणी नहीं सोते तहां तिसज्ञानी की रात्रिहै ६५ जैसे जल सब ओरसे इकठे होकर समुद्र में आगिरतेहैं तैसेही काम तिसजन के पास आतेहैं सो यहविनकामोंसे चलायमान नहोवेतो अशांतिकोकहीं भी प्राप्तनहीं होता ६६ इससे मनुष्य सबओरसे तिनइंद्रियों को रोककर जोनित्य २ विषयोंपर दौड़रहीहैं तिन्हेंवश करे तो तभी [illegible] स्थिर बुद्धि हो जाताहै ६७ जोममत्व अहंकार तजकर

को न्याग देवे अरु नित्यही ज्ञानमें परायण होवे तो तिस ज्ञानसे मोक्षको प्राप्तहोताहै ६७ सो हेराजन् वरेण्य। जो मनुष्य दैवयोगसे उत्तम बुद्धिको विशेषसे अर्थात् सत्यके जानताहै सोतुरीय अवस्थाको अर्थात् आनन्दमयी अवस्थाको प्राप्तहोकर यथावत् मोक्षको प्राप्तहोताहै ६८ ओंतत्सदिति श्रीगणेशगीतासूपनिषदार्थगर्भासुयोगामृतार्थशास्त्रे श्रीमन्महागणेशपुराणउत्तरखंडश्रीमदादिगणेशपुराणउत्तरखंडमें श्रीगणेशगीतासूपनिषदर्थगर्भयोगामृतशास्त्रविषयमें श्रीगणेशजी वरेण्यकेसंवादमें सांख्यसारार्थयोगइसनामसेये अध्यायभयाहै १॥

दूसरा अध्याय॥

कर्मयोग का वर्णन॥

॥ राजा वरेण्यने पूछा कि हेविभु गणेशजी आपने ज्ञाननिष्ठा अरु कर्मनिष्ठा एदोनो कही परअब निश्चय करके एकको मुझसे कहिये कि कौन निष्ठादिक कल्याण कारणहै १ श्रीगजाननजी बोले कि हेप्यारे वरेण्य इसचराचर जीवलोकमें हमने दो निष्ठा पहिले वर्णन करीहैं सोकि बुद्धियोगसे तो सांख्य वालोंको अर्थात् ज्ञाननिष्ठा अरु विधिके योगसे कर्मवालों को कर्मनिष्ठा कहीहैं २ सो विधि कथित कर्मोके न आरम्भ करके अर्थात् न करने करके यह पुरुष कर्म रहित होताहै नो हेराजन् केवल कर्महीके त्याग देनेसे सिद्धिको प्राप्तनहीं होताहै अर्थात् चित्तशुद्धि पर्य्यंत तो कर्म कर्तव्यहीहै ३ अरु क्रिया रहित तो कदाचित् कोई क्षणभर भी नहीं रहताहै अर्थात् करने को नाम कर्महै सोतो अवश्य करनाही पडताहै सोकि यहजन्य परतंत्र अर्थात् प्रकृतिके आधीनभया तिसीमायाके गुणोंकरके एकर्म करि कराया जाताहै अर्थात् प्रकृति के वशभया एनिरंतर कर्म करताहै ४ जो कर्म करने वाला इंद्रियो के समूहको नियमकर अर्थात् ... अरु मदमन वाला अर्थात् सूक्ष्म जो तिन इन्द्रियो के विषयो को स्मरण करता रहै तोवो विकृत अर्थात् निंदित आचारवाला कहाताहै सो पहिले तिन इन्द्रियोके समूहही

को मनसे नियम करके फिर कर्मका आरम्भ करै सोकि तृष्णा रहित भया कर्म योगको करै तौहेराजन वह परम अर्थात् श्रेष्ठजनहै ६ अरु तिसकारणमे जन हमारे में कर्म नहीं समर्पण करकेही बंधन को प्राप्तहोते हैं इससे जन निस्संग अरु आशासे रहितभया हमारे अर्पणकर्म करै ७ जोनचेष्टासे अर्थात् विनजाने कर्मकिया है ना कर्म अर्थात् न करनेसे अति श्रेष्ठहै क्यो इसनकर्म वाले पुरुषकी तौ शरीरकीभी स्थिति नाभिचरणासिद्धनहीं होती८अर्थात् विनकर्म तौ इसका शरीर भी नहीं ठहरसक्ता जोहमारे अर्थ अर्थात् समर्पण किये जोकर्महै सो किसीको बांधते नहीं हैं एतौ वासना सहितही जो कर्म है सोही बलसे इसजनको बांधलेता है ९ हे प्रियवरेण्य हमने पहिले ब्राह्मणादिकों को यज्ञसहित रच करके एकहा कि ए लोक यज्ञसेसमृद्धिको प्राप्तहोवें क्योंकि एयज्ञ कल्प वृक्षकीनाईकाम फल देनेवाला है १० सो तुमलोग इसयज्ञकर्के देवताको तृप्त करो अरु वे देवता प्रसन्नभये वांछित भोग देवैंगे अरु तिनों से दियेही भोगोको यह मनुष्यभोग रहाहै अरु जोतिन्हें न देकर अर्थात् तिनकोस मर्पण नहींकरकेभोजनकरलेताहै सोचोरअर्थात्दुष्टकहाताहै ११।१२ सोजो होमकियेसे अवशेपरहा गर्यात् वचाहुआ भोजनकरनेवाले हैं सो सवपापोंसे छूटेभयेहै अरु जोमहापापी अपनेहेतही पकाते अर्थात् विन हमारे समर्पण के केवल अपने लियेही पाक चन ते हैं तो वे पापही भोगतेहै १३ पराक्रम अर्थात् अन्नसे तो प्राणी उत्पन्नहोते हैं अरु देव अर्थात् मेघसे अन्न उत्पन्न होताहै अरु यज्ञसे मेघका संभवहै अरु तिस यज्ञकी उत्पत्ति विधि शास्त्रसे है १४ अरु ब्रह्मसे विधिशास्त्र भयाहै अरु हमसे ब्रह्मका संभवहै अरु हे राजन् इसीसे संपूर्ण यज्ञमें हमहीं विराज मान जान १५ सो विद्वानजनों करके यह संसार चक्रउल्लंघना चाहिये अरुहे राजन् जोजन इन्द्रियों को लडाता सो गधम हर्षसे प्रकट प्रसन्न होता है १६ जो अंत करण में प्रसन्नहै अरु आत्माहीमें रमण करनेवाला अरु नवकाम्यासह अरु जो मनुष्य आत्मामें ही तृप्त अर्थात् प्रसन्नहै तो तिसको कुछ

प्रयोजन अर्थात् करतव्यही नहींहै १७ अरु वो कार्य अरु अकार्य अरुकृति अर्थात् तिनके व्यापार इनके भले बुरेको प्राप्तनहीं होता है अरु सारे प्राणियो में सदातिसको कुछभी असाध्य नहींहै अर्थात् वह सबसिद्धिकर सकताहै १८ इससे हे राजन् सब प्राणियो को असक्तता अर्थात् आसक्त न होकरके कर्मकरना चाहिये सो आसक्त हो करनेवाला तो केवल गतिही को प्राप्तहोताहै अरु तैसा अर्थात् जोभक्त अनासक्तहैसोहमैं प्राप्तहोताहै १६ ऐसेकर्मसेहीपहिलेब्राह्मण अरुराजर्षि परम सिद्धिको प्राप्तभयेहैं सो लोकोंके संग्रह अर्थात् जिससे और भीलोगकर्मकरैं तिसप्रयोजनकेलियेज्ञानी तैसा अर्थात् लौकिक कर्मकरै २० अरु जो श्रेष्ठ कर्म करता है सोही तैसाकर्म सारे जनभी करते हैं अरु वोही श्रेष्ठजन जो २ प्रमाण मानता है तिसीके अनुसार यह संसार रहता है अर्थात् सबजनभी सो २ ही प्रमाण मानतेहैं २१ अरुहे राजन् हमको स्वर्गमें कुछभी अर्थसाध ने योग्य अर्थात् कार्य्य नहीं है अरु न प्राप्तिहोना अर्थात् हानि लाभ से भी हम को कुछ प्रयोजन नहीं है परतवभी हम कर्म करतेही हैं २२ अरु जो हमहीं निजवश अर्थात् अपनेही आधीन भये आलस्य भावसेतौ कर्म नहीं करें तो हे महामतिमन् वरेण्य सारे वर्णभी हमाराही ध्यान अर्थात् हमारे कियेको स्मरण करके कर्मादिक नहीं करैंगे २३ फिरतो वे बिचारे सारेलोग उच्छेद भये अर्थात् विक्षिप्तिको प्राप्त अरु संप्रदायवाले होजावेंगे तो हमहीं इस जगत्के हतने वाले अरुवर्ण सकरताके कारक होजावेंगे २४ अरु सदा कामहीं करके अज्ञानसे कर्म करते कामी जनको अर्थात् कामीजन तौसदा अज्ञानसे कामना करकेही कर्मकर्ता है सो विद्वान् लोक संग्रहके लिये अर्थात् जिससे सबलोक भी कर्मकरे इस लिये अनासक्त बुद्धिभया इस कर्मको करे २५ अरु अज्ञानी कर्म करने वालोंकी बिशेष भिन्न पनकी मति अर्थात् भेद बुद्धिको छोड देवे सो कि कर्म कारी मनुष्य योगमें युक्तभया सबकर्मोंको हमारेमें समर्पणकर देवै २६ अरु अविद्या अर्थात् प्रकृति के गुणोंके मन्त्री

पनेसे अर्थात् तिसके गुणोंकी प्रेरणासे यहजन अनालस्यभया कर्मों को करता है सोजो अहंकार से भेदको प्राप्तभई बुद्धिवाला है सो मैं कर्ता अर्थात् करने वालाहूं ऐसे कहताहै २७ अरु जो गुण अरु कर्मके विभागसे आत्माके तत्त्वको जानताहै अरु इन्द्रियोके करण निज २ विषयमें प्रवर्तमान होरहेहैं ऐसे मानकर सगको प्राप्तनहीं होताहै २८ अरुजो तीनों गुणोसे मोहित हैं सो फल सहितअर्थात् फलकी इच्छाकर्के कर्म करतेहैं सो विश्वास रहित अरु आत्मद्रोही अर्थात् आत्मघातकहैं सो सपूर्ण वेत्ताअर्थात् ज्ञानीजनइन्है नउलघै तिससे ज्ञानीमनुष्य नित्य नैमित्तिक कर्म को करके हमारेमें समर्पण करदेवें मैं अरु ये मेरा इस बुद्धिको छोड़कर तौ वो परमसिद्धि को प्राप्तहोवें२९।३०जो जनन ईर्षाकरते अर्थात् चाहते अरु भक्तिमान् मेर से करे इस शुभ योगका अनुठान करते हैं अर्थात् जो इसे यथायोग साधन करते है तो वे सब कर्मोंसे छूटे अर्थात् मोक्ष को प्राप्तही है ३१ अरु जो कुकर्म से हतेचित्त वाले इस योगका अनुष्ठान नही करते है तो हे राजन् तू तिन्हे नष्ट महामूर्ख ईर्षा करते हमारे रिपुजान ३२ जो ज्ञानवान् हैं सोभी प्रकृति के समान कर्म करताही है अरु तिसी के अनुसार तिसी स्वभावको प्राप्त होताहै तो तहा कर्म में अग्रहण अर्थात् तिस कर्मको न करना ऐसा आग्रह वृथाही है ३३ अरु काम अरु क्रोध ये दोनों इद्रियोकेअर्थ अर्थात् विषयोमें उत्पन्न होतेहैं सो बुद्धिमान् मनुष्य इनके वश न होवे क्योकि ये इसके नाश करनेवाले हैं ३४ सो निज अर्थात् अपना धर्म तौ गुण रहित भी श्रेष्ठ है चाहे पराया सागोपाग भी धर्म होवे सो तिस निज धर्म में तौ मृत्यु भी भली है अरु पराया धर्म तो परमभय देनेवाला है ३५ राजा वरेण्य ने पूछा कि हे हेरम्बजी जो यह मनुष्य पाप करता है सो किससे नियोग किया जाता अर्थात् प्रेराजाताहै नहीं इच्छा करता भया भी मानों दूसरे बलवाले से प्रेरणा कियागयाहो सो आप कहिये ३६ तो श्रीगजाननजी बोले कि काम अरु क्रोध ये महापापी दोनों गुणों से

प्रयोजन अर्थात् करतव्यही नहींहै १७ अरु वो कार्य अरु अकार्य अरुकृति अर्थात् तिनके व्यापार इनके भले बुरेको प्राप्तनहीं होता है अरु सारे प्राणियो में सदातिसको कुछभी असाध्य नहींहै अर्थात् वह सबसिद्धिकर सकताहै १८ इससे हे राजन् सब प्राणियो को असक्तता अर्थात् आसक्त न होकरके कर्मकरना चाहिये सो आसक्त हो करनेवाला तो केवल गतिही को प्राप्तहोताहै अरु तैसा अर्थात् जोभक्त अनासक्तहैसोहमै प्राप्तहोताहै १९ ऐसेकर्मसेहीपहिलेब्राह्मण अरुराजर्षि परम सिद्धिको प्राप्तभयेहैं सो लोकोके संग्रह अर्थात् जिससे और भीलोगकर्मकरैं तिसप्रयोजनकेलियेज्ञानी तैसा अर्थात् लौकिक कर्मकरे २० अरु जो श्रेष्ठ कर्म करता है सोही तैसाकर्म सारे जनभी करते हैं अरु वोही श्रेष्ठजन जो २ प्रमाण मानता है तिसीके अनुसार यह संसार रहता है अर्थात् सबजनभी सो २ ही प्रमाण मानतेहैं २१ अरुहे राजन् हमको स्वर्गमें कुछभी अर्थसाध ने योग्य अर्थात् कार्य्य नहीं है अरु न प्राप्तिहोना अर्थात् हानि लाभ से भी हम को कुछ प्रयोजन नहीं है परतबभी हम कर्म करतेही हैं २२ अरु जो हमहीं निजवश अर्थात् अपनेही आधीन भये आलस्य भावसेतो कर्म नहीं करें तो हे महामतिमन् बरेणय सारे वर्णभी हमाराही ध्यान अर्थात् हमारे कियेको स्मरण करके कर्मादिक नहीं करेंगे २३ फिरतो वे बिचारे सारेलोग उच्छेद भये अर्थात् बिक्षिप्तिको प्राप्त अरु संप्रदायवाले होजावेंगे तो हमहीं इस जगत्के हतने वाले अरुवर्ण सकरताके कारक होजावेंगे २४ अरु सदा कामहीं करें अज्ञानसे कर्म करते कामी जनको अर्थात् कामीजन तौसदा अज्ञानसे कामना करकेही कर्मकर्ता हैं सो वि-द्वान् लोक संग्रहके लिये अर्थात् जिससे सबलोक भी कर्मकरें इस लिये अनासक्त बुद्धिभया इस कर्मको करे २५ अरु अज्ञानी कर्म करने वालोकी विशेष भिन्न पनकी मति अर्थात् भेद बुद्धिको छोड देवे सो कि कर्म हारी मनुष्य योगमें युक्तभया सबकर्मोको हमारेमें समर्पणकर देवै २६ अरु अविद्या अर्थात् प्रकृति के गुणोंके मत्री

पनेसे अर्थात् तिसके गुणोंकी प्रेरणासे यहजन अनालस्यभया कर्मों को करता है सोजो अहंकार से भेदको प्राप्तभई बुद्धिवाला है सो मैं कर्ता अर्थात् करने वालाहू ऐसे कहताहै २७ अरु जो गुण अरु कर्मके विभागसे आत्माके तत्त्वको जानताहै अरु इन्द्रियो के करण निज २ विषयमें प्रवर्तमान होरहेहैं ऐसे मानकर संगको प्राप्तनहीं होताहै २८ अरुजो तीनो गुणोंसे मोहित हैं सो फल सहितअर्थात् फलकी इच्छाकर्के कर्म करतेहैं सो विश्वास रहित अरु आत्मद्रोही अर्थात् आत्मघातकहैं सो संपूर्ण वेत्ताअर्थात् ज्ञानीजनइन्हें नउलघें तिससे ज्ञानीमनुष्य नित्य नैमित्तिक कर्म को करके हमारेमें समर्पण करदेवै मै अरु ये मेरा इस बुद्धिको छोड़कर तौ वो परमसिद्धि को प्राप्तहोवैं२९।३०जो जनन ईर्षाकरते अर्थात् चाहते अरु भक्तिमान् मेरे से करे इस शुभ योगका अनुष्ठान करते है अर्थात् जो इसे यथायोग साधन करते हैं तौ वे सब कर्मोंसे छूटे अर्थात् मोक्ष को प्राप्तही हैं ३१ अरु जो कुकर्म से हतेचित्त वाले इस योगका अनुष्ठान नहीं करते हैं तौ हे राजन् तू तिन्हें नष्ट महामूर्ख ईर्षा करते हमारे रिपुजान ३२ जो ज्ञानवान् है सोभी प्रकृति के समान कर्म करताही है अरु तिसी के अनुसार तिसी स्वभावको प्राप्त होताहै तो तहा कर्म में अग्रहण अर्थात् तिस कर्मको न करना ऐसा आग्रह वृथाही है ३३ अरु काम अरु क्रोध ये दोनो इंद्रियोंकेअर्थ अर्थात् विषयोंमें उत्पन्न होतेहैं सो बुद्धिमान् मनुष्य इनके वश न होवे क्योंकि ये इसके नाश करनेवाले हैं ३४ सो निज अर्थात् अपना धर्म तौ गुण रहित भी श्रेष्ठ है चाहे पराया सांगोपांग भी धर्म होवै सो तिस निज धर्म में तौ मृत्यु भी भली है अरु पराया धर्म तौ परमभय देनेवाला है ३५ राजा वरेण्य ने पूछा कि हे हेरंबजी जो यह मनुष्य पाप करता है सो किससे नियोग किया जाता अर्थात् प्रेराजाताहै नहीं इच्छा करता भया भी मानो दूसरे बलवाले से प्रेरणा कियागयाहो सो आप कहिये ३६ तौ श्रीगजाननजी बोले कि काम अरु क्रोध ये ... दोनों गुणों से

पराक्रम अरुहमारे स्वरूपको जो विस्तार सहित जानै सो फिर जन्म लेनेवाला नहीं होताहै अर्थात्मोक्षको प्राप्तहो १३ अरु ऐसे२ अनेक भक्तहमें प्राप्त होतेहैं जो चेष्टारहित अर्थात् किसी बस्तुकी इच्छानहीं करते अरुभय रहित अरुक्रोध रहित अरु हममेंपरायण अरुहमाराहीहै आश्रय अर्थात् अवलंब जिनके अरु विज्ञान तपसे जो शुद्धभये ऐसे २ अनेक हमको प्राप्तहोते अर्थात् हममें आकर लीनहोतेहैं १४ अरु उत्तमनर जिस२ भावसे हमें सेवते हैं सोहम अविनाशी अकटही तिनको तैसा २ फल देतेहैं १५ अरु और भी जने हेराजन् हमारेही मार्गके अनुगामी अर्थात् हमारे मार्ग के अनुसार चलने वालेहैं तैसाही वे अपने अरु परायो मे व्यवहार करतेहैं १६ सोकि कर्मोंके फलकी इच्छा करें देवताओं की प्रीति करतेहैं सोवे लोकमें शीघ्रही कर्म जन्य सिद्धिको प्राप्तहोतेहैं १७ अरुहे निष्पाप राजन् वरेण्य हमने रज सत्व अरुतम इनके विभाग से अरु कर्मके अर्थसे चारोवर्णोंको रचेहै १८ मृ युलोकमें सोज्ञानी जन हमको तिनके कर्ता अरु अकर्ता अर्थात् न करने वालेभी कहते हैं जोहम अनादि ईश्वर नित्यहै अरुकर्म जन्य गुणोंकेलिये अर्थात् सयुक्त नहींहैं १९ सो जोहमें निश्चेष्ट जानताहै तिसेकर्म नहीं बाधता अर्थात् आसक्तनहीं करसक्ताहै सो ऐसेही जानके मुमुक्षुजन पहिलेसे कर्मकरतेरहेहैं २० अरुएप्राणी जिनहमको जानके एजन आद्य ससारके दृढकारण अर्थात् संसारके प्रथम मुख्य कारण अरु वासना सहित ऐसेसपूर्ण अज्ञानरूप बंधनसे छूटजाताहै २१ सो अबहम तुमसे सोकर्म अरु अकर्म भी कहते हैं जहां बुद्धिमान् ऋषीश्वर भी अज्ञान से मौन भयेहैं २२ सो मुमुक्षु जन कर्के कर्म अकर्म विकर्म इनकातत्त्व जानना चाहिये सोयही एतीनहीं प्रकार के कर्महैं सोहे प्रियवरेण्य इनकी [illegible] गम्भीरहै २३ अरुजिस जनको कर्ममें अकर्म [illegible] अरु [illegible] कर्मकी बुद्धिहै सोही मनुष्य इसमृत्यु ले[illegible] अर्थक[illegible] प्राप्तहै २४ जोनर कर्मा के अकु[illegible]

वासना रहित कर्म करताहै तौ तिसजनको बुद्धिमानजन तत्त्वदर्शन से निर्दग्ध क्रियावाला अर्थात् तिसकर्ते भयेको भी निष्क्रिय अर्थात् न करनेवाला कहते हैं २५ सोवो फलकी तृष्णाको छोड़ करकेसदा प्रसन्न अरु साधनरहितहोताहै तौवोकर्मकर्नेको उद्युक्तभया अर्थात् कर्मकरता भया भी कुछभीनहीं करताहै २६ जो निश्चेष्ट अरु निरंतर ग्रहणकिया अर्थात् पहिचाना आत्मा जिसनेसो अरु परित्यागकिया है कुटुंब जिसने ऐसाजन केवलशरीर संबंधी कर्मकर्ता पापभागीनहीं होताहै २७ अरुजो द्वन्द्वपनसे रहित अरु अहंकार रहितहोकर अरु जो सिद्धि अरुअसिद्धि इनमें समानहै अरुजो दैवेच्छासेभई प्राप्तिसे संतोषको प्राप्त अर्थात् प्रसन्नहै सोकर्म करताभयाभी बंधनको नहीं प्राप्त होता है २८ अरु सो सर्व विषयों से छूटा अरुज्ञान विशेष ज्ञानसे युक्त अर्थात् तत्त्वज्ञाता है तौ यज्ञके लिये किया तिसका सबकर्म विलयको प्राप्त अर्थात् तिसकी सर्व कर्म वासना छूटकर चित्तशुद्धि होजातीहै तिसीसे वो मोक्षका अधिकारी होताहै २९।३० अरु कईक योगीजन दैव अर्थात् प्रारब्धही को यज्ञ कहते हैं अरु कोईक ऐसा मानतेहैं कि ब्रह्मरूप अग्निजोहै सोहीयज्ञहै हेराजन् हमही हव्य अर्थात् होमचरु भोक्ता अग्नि स्वरूप हैं अरु जो हमारे अर्पण कर्म कियाहै सोही होमा अर्थात् आहुतिहै अरु तिस कर्के ब्रह्मप्राप्तव्य अर्थात् प्राप्तहोताहै क्योंकि वो ब्रह्ममेंही परायण है ३१ अरु हेराजन् कोईक संयमरूप अग्निमें इन्द्रियोंको होमते हैं अरुकई आकाश रूप अग्निमें तिसके विषय शब्द आदिकों को होमतेहैं ३२ अरुकई निज आत्मामें प्रीतिरूप अग्निके विषे प्राण इन्द्रियों के सारे कामोंको होमतेहैं जो वो आत्मरूप अग्नि ज्ञान से दीप्त अर्थात् प्रज्वलितहै ३३ अरुकई द्रव्यसे अरुकई तप कर्के अरु कई पठनसेभी अरुकई यतिज्ञानी हमें दृढ़ नियम ... यजते अर्थात् हमारा यज्ञकरतेहैं ३४ अरुकई प्राणमें अ... को अरु तैसेही प्राणको अपान में छोड़ते अर्थात् ... तिनदोनों अर्थात् प्राण अपान इनदोनों को ...

याममें परायणहोतेहैं ३५ सोवै तिससे प्राणोको जीतकर अरुप्राण की गति अर्थात् श्वास आनाजाना तिनप्राणोमें होमतेहैं ऐसे ये नाना प्रकार के यज्ञोमें परायण अनेक ज्ञानीजन जिनके यज्ञसेनाश भये पातक ऐसेवे ३६ यज्ञसे शेष अमृतान्न भोजन करने वाले नित्य ब्रह्मको प्राप्तहोतेहैं, अरु न यज्ञ करने वाले कोतौ एभीलोक नहीं और तौ कहासेहो ३७ ऐसेही कायिक आदि त्रिधाभूतअर्थात् कायिक मानस वाचक एतीन प्रकार के यज्ञजो वेदमें प्रतिष्ठित हैं सो हेराजन् तू इनसब यज्ञोंको जान करके सम्पूर्ण बंधनसे छूटजा- वेगा ३८ पर हेराजन् इन सारे यज्ञोमें ज्ञान रूप यज्ञही परम अर्थात् समीचीन मानाहै क्योंकि मोक्षका कारक जो ये ज्ञान है इसीमें सम्पूर्ण कर्म लीनहोता अर्थात् समाप्त होता है ३९ सो हे राजन् सबजन ऐसे कहते हैं कि वो ज्ञान सज्जनो के पूजन सन्मानसे अरु तिनकी शुश्रूषा अर्थात् टहल करने से जानाजाता है ४० अरु यहजन नानाप्रकार के जनोसे तौ संगकरता अरु साधु जनोका संग एक बेर भी नहीं करता है तिससे ही वो संसार में बंधनको प्राप्त होताहै ४१ अरु सत्संग से गुणोंकी उत्पत्ति अरु आपत्तियो का नाश होताहै अरु तिसीसे सबजन इसलोकमें अरु परलोकमें अपने कल्याणको प्राप्त होतेहैं ४२ हे राजन् और तौ सब सहजही है पर सत्संग अत्यंतही दुर्लभ है जिसे जानकर फिर बंधनको प्राप्त नहीं होता, तिससे ये सत्संग जैसे तैसे अर्थात्सर्वथा जानने अरु करनेही योग्य है ४३ फिर तौ वो सब प्राणियो को अपने आपमेंही देखताहै अत्यंत पापमें परायण भी जन तिससेती मोक्षपाता है ४४ सो तिन दोनो विहित निषिद्ध भी कर्मो को वो ज्ञानरूप अग्नि क्षणभरमें भस्म करताहै जैसे ये प्रकट अग्नि सब को क्षणमें जलालेता है ४५ इससे हे राजन् और कुछ पवित्रज्ञान की समता को नहीं प्राप्त होता अर्थात् ज्ञानके समान कोई भी नहीं है सो ये तिससे परम मोक्षको प्राप्तहोकर थोड़ेही कालसे ये ब्रह्मको प्राप्त होताहै ४६ अरु जो भक्तिसेहीन अरु श्रद्धा रहित अरु

जो सर्वत्र सदेहवानहोहै तिसको न तौ सुख अरु न कल्याण है अरु न ये लोक न तिसको और लोक है ४७ अरु योगीजन तौ कोई काल करके योगसेती आत्मामें हीं ज्ञानको प्राप्त होतेहैं सो कि जो भक्तिमान् अरु इन्द्रियोंको जीतने वाला अरु ज्ञानमें तथा ब्रह्ममें परायण है सो मोक्षको प्राप्त होताहै ४८ जो आत्म ज्ञानमें परायण अरु ज्ञानसे नष्टभये सब संशय जिसके योग तेजसे अस्त भये कर्म जिसके ऐसे जनको हे राजन् वे कर्मादिक आसक्त नहीं करसकेहैं ४६ तिससे ये नर अज्ञानताके बलसे उत्पन्नभये भीतरके संदेहको ज्ञानरूप तरवार के प्रहार से काटकर सदा योग में परायण होवे ५० इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमेंश्रीगणेशगीतासूपनिपदार्थग०मेंज्ञानकाप्रतिपादनइसनामसेतीसराअध्यायभयाहै ३॥

चौथाअध्याय॥

मेघम न्यासयोगकावर्णन।

राजा वरेण्यने पूछा कि हेप्रभो गणेशजी आप कर्मोंकासन्यास अरु योग अर्थात् कर्म न करना अरु करना वर्णन करतेहो परदोनों मेंसे निश्चय किया एक आप मुझसे वर्णन करिये १ श्रीगणेशजी बोले कि कर्म का योग अरु वियोग अर्थात् न करना ये दोनों मोक्षके कारण हैं तिनके मध्य तिस कर्मके त्यागसे क्रिया का योग अर्थात् कर्म करना ये विशेष होताहै २ जो द्वन्द्वभाव के दुःखोंको सहनेवाला अरु द्वेष रहित अरु जो कुछ भी इच्छा नहीं करता है ऐसा नित्य सन्यासवान् मनुष्य शीघ्रही बंधन से छूटता है अरु सुखपाता है ३ अरु कर्मके त्याग अरु योगको भिन्न २ फलवाले मूढ अरु अल्पज्ञाता बतातेहैं अरु बुद्धिमान् मनुष्य तिनको एकही संयोगकरै अर्थात् एकही पहिचान के अनुष्ठान करै ४ सो कि जो कुछ संन्यास से प्राप्त होताहै सोही फल योगसे भी प्राप्त होताहै जो कर्म करनेको सम्यक् ग्रह अर्थात् नर के कल्याणार्थ समझना सोही समझता अर्थात् ज्ञानवान होताहै ५ ज्ञानीजन केवल कर्मों

केही त्यागको सन्यास नहीं कहते किंतु कर्मके फल त्यागकोकहते हैं सोही अनिच्छा करके कर्म करता भया योगी ब्रह्म स्वरूप ही होताहै ६ जो ज्ञानीजन निर्मल अर्थात् शुद्धचित्त अरु शांत है मन जिसका अरु जीतेहैं इन्द्रिय जिसने अरु जो योग में परायण है अरु जो अपने को सब प्राणियो में स्थित देखता सो लिप्त नहीं होताहै अर्थात् कर्मासक्त नहीं होता ७ सो तत्त्वज्ञानी योगसे मुक्त है आत्मा जिसका अर्थात् योगवान् मैं कर्ताहू ऐसा नहीं मानता सो कि ये ग्यारहो अर्थात् मनसहित दशो इन्द्रियें सख्या करके अर्थात् निज २ कर्म कर रहेहैं ८ सो कि जो वो कर्म करता है सो सब ब्रह्म में अर्पण करदेता है तो पुण्य पापोसे लिप्त नहीं होताहै जैसे सूर्यजी का किरण यथार्थगामी अर्थात् तिन्हीं के अनुसार रह-ताहै ६ सोही योगके ज्ञाता जन चित्त शुद्धि के लिये फल की आश त्यागकर शरीर से वाणी से बुद्धिसे इन्द्रिय से मनसे कर्तव्य कर्म को करते अर्थात् वे सबकर्म फलेच्छा रहित होकर करते है १० अरु जो मनुष्य योगसे हीनहै सो सब कर्म फलकी इच्छा करके करताहै तोवो कर्मांकुरो करके बधन को प्राप्तहोता है तिसीसेफिर वो दुःख भोगताहै ११ सो योगी मनसे सबकर्मोका त्यागकर के अर्थात् अनिच्छ होकर सुखी हो रहता है तो वो न कुछ करता अरु न कराताहै अरु शून्य स्थानमें अरु तैसेही सुंदर पुरमें आनदमान-ता सुखीहोताहै १२ अरु हे वरेण्य हमतो न कर्म अरु न कर्तापन किसी का नहीं रचतेहैं अरु न कर्मके अंकुर का सबध कुछहम से है केवल शक्तिही से सपूर्ण कियाजाता है १३ हेराजन् हम समर्थ भी पर किसीके पुण्य पापोका स्पर्श नहीं करतेहै परवेज्ञान मूर्ख अर्थात् वृथाज्ञानी मोहसे आवर्ण करी अर्थात् ढकीगई बुद्धिजिनकी ऐसे २ अज्ञानी आपही मोहको प्राप्तहोजातेहै अर्थात् जो हमसे सुख वा दुःखहोना समझते है १४ अपने अज्ञान को विवेक करके जिन्होने नाशकियाहै तोतिनके ज्ञान उत्पन्न भयासो सूर्यके समान प्रकाश मान होताहै १५ जो ऐसेहै कि मन्निष्ठावान् अर्थात् हममें

हीहै निष्ठाजिनकी अरु हममें हीं बुद्धिजिनकी अरुअत्यंत हममेंमन जिनका अरु जो हममेंही परायण है तो वेनहीं फिर जन्महोजिससे ऐसी मोक्षको प्राप्त होतेहैं फिरकैसे हैं कि विज्ञानसे नाशकिये हैं पाप जिन्होंने १६ अरु जो ज्ञानोज्ञान विशेषज्ञानसे सहित अर्थात् जानने वालेमें अरु द्विज गऊ घोडे आदिमें जो समदर्शी महात्मा हैं अरु जो वधक अरु श्वानमें समान दर्शी अर्थात् सबके एकही समान आत्मा जानने वालेहैं सो पंडित हैं तो तिनके स्वर्गवश में है अरु संसारभी वशहीहै क्योंकि वे समदृष्ट अरुजीवतेही मोक्षको प्राप्तहैं १७ क्योंकि जो दोष रहित समान ब्रह्महै सोतिनोंनेविषय किया अर्थात् सिद्ध कियाहै अरु जो प्रिय अरु अप्रिय को प्राप्तहोके हर्ष द्वेष अर्थात् प्रिय वस्तु पाने से हर्ष अरु अनिष्ट होने से दुःख इनदोनोंकोनहीं प्राप्तहोतेहैं १८ अरुवेब्रह्मकेआश्रयभये अरुनमोहित अरु ब्रह्म ज्ञानी समानहै बुद्धि जिनकी वरेण्यने पूछाकि हे विद्या कुशल भगवन् गणेशजी तीनोलोकोंमें अरुदेवता गंधर्वोंकी योनि योंमें क्या सुखहै सो कृपा करके मुझसे आप कहिये श्रीगणेशजी बोले कि जो आत्माराम अपने आत्मामें संतोषको प्राप्तहैअरुविषय आदिकोंमें असक्तहै सो आनंद भोगताहै १९।२० सो वो सुख न विनाशी अर्थात् जिसकाकभीभी नाशनहीं होता ऐसा अक्षय्य सुखहै सो सुखतिन विषयादिको में नहीं है क्योंकि जो विषयों से उत्थित अर्थात् भयेजो सुखहैं सो सब वेदुःखोंके कारणहैं २१ अरु वे उत्पत्ति अरु नाशवाले अर्थात् अनित्यहैं सो तत्त्वज्ञानी तहाआसक्त नहीं हैं सो जो कारण होत संते कामको अरु क्रोध को सहताहै २२ तो वो तिनकामक्रोधोंको जीतने को शरीरके अभावमें अर्थात् नाशभये बहुत काल सुख भोगताहै सोवो अंतःकरण मेंहीं निष्ठा-वान् अरु अंतही प्रकाश वाला अरु भीतरही है सुखजिस के अरु अंत ही अर्थात् आत्मा में ही है प्रीति जिसकी ऐसा वो ज्ञानी न संदेह को प्राप्तभया अव्यय ब्रह्मको प्राप्त होताहै जोसब प्राणियों काहितार्थकारी अर्थात् सबके सब वांछित प्रयोजन सिद्ध करता

तथा सब का सन्मानी ऐसा ज्ञानी मोक्ष को प्राप्त होता है अरु जो काम क्रोध आदिक छः शत्रुवो के जीतने वाले हैं अरु शांति अरु दमनवालेहैं २३।२४ तौ तिन निजात्म ज्ञानियोको समानब्रह्म का विशेष भान अर्थात् ज्ञानहोताहै सोकि निज आसन पै समान विराजमान इनविषयोंको दूरकरके अर्थात् छोड़के २५ अरु भृकुटि योंको सम्यक् प्रकारसे रोकके अर्थात् दृष्टिसमान करके प्राणायामों में परायण होरहे हैं सोजो प्राण अरु अपान वायु के रोकने से उत्पन्न भयासो प्राणायाम है २६ अरु बुद्धिमान् मुनीश्वर सोतीन प्रकार का कहते हैं सो प्रमाण अरु भेदसे तिसे लघु मध्यम अरु उत्तम जानो २७ सो दोसे अधिक दश अर्थात् बारह अक्षरो करके जो प्राणायाम है सो लघुकहाहै अरु जो चोवीस अक्षर कहाहै सो मध्यम बताया गयाहै २८ अरु जो पेंतीस लघु अक्षरोका सोउत्तम कहा जाताहै सो वे प्राणायाम परायण ज्ञानी सिंह अरु शार्दूलअरु मत्तहाथी को कोमल करते अर्थात् वशमें करलेते हैं २९ तिस से यथावत् येजन प्राणायाम साधनकरें अरुतिसी प्राणायामसे वेमृगों कोभी अरु वशीभये लोंको कोभी पीड़ित करते अर्थात् निजवशकर सुखी दुःखी करते हैं ३० अरु तैसेही बेरुका भया प्राणपवन तिस के पापकोही जलाताहै अरु तिसके शरीर को कुछभी बाधानहीं करताहै अरु जैसे २ कोईजन सिड्ढ़ियोंकी पंक्तिका आक्रमण करे अर्थात् पेंडियों पर चढ़जावे ३१ तैसे २ हीयोग वेत्ता इन प्राणअपा- नोको वशमें करलेवे सोकि धीरे२ फिर २ (पूरक) वायुखेंचना अरु (कुंभक)रोकनाअरु(रेचक)छोड़नायेतीनप्रकारका प्राणायामअभ्यास करे अर्थात् साधे३२ फिर तौ वो भूमितलमें भूतभविष्यत कालज्ञाता होवे अरुबारह उत्तम अर्थात् ३६ वरणोके प्राणायामो करकेधारणा मानी गईहै ३३ अरु दोधारणाओंकी योगसञ्ज्ञा होतीहै सोयोगीश तिनदोनों धारणाओंका सदा अभ्यास करै हेराजन् वरेण्यजो कोई ऐसे साधन करताहै सो तीनकाल ज्ञाता होताहै ३४ अरुहेराजन् विन परिश्रम सेही ति[illegible] वशमें होजावे जोकि वो सपूर्ण

जगतको निज आत्मा में ब्रह्मस्वरूप देखताहै ३५ ऐसेयोग अरु सन्यास ये दोनों समान फलदेने वालेहैं अरु यहंजन हमैंप्राणियोंके करता अरु करमोंके फलदाता ऐसेत्रिलोकके ईश्वर प्रभुहमको जान कर मोक्षको प्राप्तहोता है अर्थात् हेराजन् हम ईश्वर हैं अरु हम सेही सवको मोक्षहोतीहै ३६।३७ इस प्रकारसे श्रीगणेश पुराण उत्तर खंड गणेशगीतामें वैध अर्थात्विधि सवधी संन्यास अरुयोग का वर्णन इसनामसे चौथाअध्यायभयाहै ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

योगावृत्ति प्रशंसन योगका वर्णन ॥

श्रीगजाननजीबोले कि जोजन फलकी इच्छान करताभया श्रुति स्मृति विहित करमों को करताहैतो हेराजोंके इन्दु वरेण्यवो योगी योगके आश्रयभये नकर्मवाले अर्थात् सन्यासीसे श्रेष्ठहै इससेसदा फलेच्छा रहित कर्म करना होकर१ सो हेमहावाहु वरेण्य योगकी प्राप्तिके लिये तौ केवल कर्महीं हेतुहै अरु शमदम तौ सिद्धभये की सिद्धियोगके कारण मानेगयेहैं २ सो ये सकल्प करके अर्थात् मैं यह करूंगा ऐसी प्रतिज्ञा करके जो इन्द्रियों के अर्थ अर्थात् विषया दिकोंको करता है सोये आपहीसे अपना शत्रुहोताहै अरुइनकर्मों को अनिच्छा से अर्थात् इच्छारहित होकर करता है सो सिद्धिको प्राप्तहोताहै सो सुहृतपन अर्थात् प्यारपने अरु शत्रुतामें छूटनेअरु वधनेने अपनेसे अपना आपही कारण होताहै कोई पराया और बांधने छुटानेवाला नहींहै ३।४ अरु जो मान अपमानमें अरु दुःख सुखमें अरु प्रियसाधु जनोंमें मित्रशत्रु अरु उदासीन में अरु ईर्षा वालेमें अरु लोहे सुवर्णमें ५जो समान है जीताहै मन जिसने ऐसा विशेष ज्ञानवाला ज्ञानी जो इंद्रियों को जीतने वालाहै सो वो जब निरंतरही योगका अभ्यास करता है तो वो अत्यंत योगको प्राप्त होताहै६ सोकि वो तापकोप्राप्त अर्थात् दुःखीअरुथका अरुव्याकुल अरु भूखा वाउद्विग्न मनवालाहो तब अरु अत्यंतशीतकाल अर्थात्

शरदीकेसमयमें अथवा ग्रीष्ममें अथवा वायुअग्निजलसेसंयुक्तस्थान
में ७ अरु ध्वनिसहित अर्थात् शब्दवाले स्थानमें अरु अत्यतपुराने
थलमें अरु गोस्थान में अग्नि सहित निकट जल वाले स्थान में
अरु कुवें ढीवे वा श्मशानमें नदी अरु भीतवा स्थानमें ८ अरु बवी
केस्थान अरु यज्ञस्थानमें अरु जो स्थान पिशाच भूतसहित होतिस
में इतने स्थानोंमें योगध्यानमें परायण जो योगी है सो योगका
अभ्यासनकरै ९ क्योंकि स्मरणका लोपअर्थात् भूलनाअरुगूंगापन
अरु बहिरापन मदपना अरु ज्वररोग अरु जडता अर्थात् मूर्खपन
ये शीघ्रही दोषोंकोजनानेसे योगीजनके होजातेहै सोइतनेस्थानोंमें
योगनकरै सो योगभ्यास वालेजनको ये इतने दोषत्यागनेचाहियें
अरु इनका अनादर होनेसे अर्थात् दोषस्थानों में योग अभ्यासकरै
तौ बुद्धिनाश आदिक दोष अवश्यही होतेहैं ११ सो योगीसदा न
तौ अत्यत भोजन करै न भूखारहै अरु न अत्यंत नींदवान होवे
अर्थात् बहुत सोवैनहीं अरु न बहुत जागै अर्थात् सर्वदासमानही
रहै तौहे भूमिप वरेण्य योगाभ्यासी जन ऐसे अभ्यास करताभया
सिद्धिको प्राप्त होताहै इससे इननियमो से योगसाधना १२ अरु
नियमितहै आहार विहार जिसके ऐसा वो योगी सकल्प जन्यका-
मो को त्यागै अर्थात् ये योन कहैकि मैं अमुक काम करूगा १३
सो जिसयोगीकामन जहां २ जाय तहां २ सेहीवो उसे वहांसे खैंचे
अर्थात्हटावेसोकि आदरसहितवोयोगीधारणासे इसचंचलचित्तको
बशमें करलेवे १४ ऐसे वोयोगी सदा अभ्यास करतारहै तौ परम
आनदको प्राप्तहोताहै सोकि सब ससार में तोवो अपने को अरु
सब ससार को अपने में देखताहै १५ अरु जो योग करके हमपै
आताहै तौ तिसे हमभी आदर समान से प्राप्तहोते अर्थात् आदर
से तिसे मिलतेहै सो मैतिसेन छोड़ता अरु न अपने को तिसेछुड़ा
ता अरु न वो हमको छोडताहै १६ अरु जो सुखमें दु खमें अरु
भीतरकी लडाई में क्षुधामें तृप्तिमें समानहै अरु सोअपनेसे समान
सब प्राणियो को अरु सर्वगामी अर्थात् व्यापक स्वरूप हमको

सर्वत्र देखता है सो सुखी होता है १७ सो वो जीवन्मुक्त योगी जो केवल हममें ही लीन अरु ब्रह्मादिक देवादिको का तथा तीनो लोकों का वंदनीय अर्थात् स्तुति करनयोग्य होता है १८ राजा वरेण्य ने पूछा कि हे विभो गजाननजी ये दो प्रकारयोग मुझको असभावि प्रतीतहोताहै क्योंकि ये अतप्करण अर्थात् मन तो दुष्ट अरु चपल अरु अवश्य है १९ श्रीगणेशजी बोले कि हे राजन् जो इस दुर्वश्यमनका निरंतर ग्रहकरे अर्थात् इसको वशमें करे तो घडीके यन्त्रके समान इससंसारसे तिसको मोक्षहोजाताहै २० सो विषयरूप पतरोंकरके सम्यक् दृढवनायागया जो येससार चक्रहै इसे मनुष्य काटनेको समर्थनहींहोता जोचक्रकर्मरूप कीलों करके सुंदर ढका अर्थात् ठोकागयाहै २१ सो अत्यंत वैराग्यअरु भोगोंसे अतृप्यापन अर्थात् अनिच्छा अरु गुरुप्रसन्नता अरु सज्जनसंग तिसमनके जीतनेमें इतनेउपायहैं २२ अथवा योगसिद्धि के लिये इसमनको अभ्याससे वशमेंकरै हेराजन् वरेण्यविन मन जीतनेके योग्य मार्ग वडादुर्लभ है २३ वरेण्यबोला कि हे विभो गणेशजी योगसे भ्रष्ट अर्थात् मृत्यु आदि वश योगसे च्युतभयेका कौन लोकहै अरु क्या तिसकी गतिहोतीहै अरु तिसे क्याफल होताहै सो बुद्धिरूप चक्रधारी आप मेरे इससंशयको छेदन करो २४ श्रीगणेशजी बोले कि योगसे छूटायोगी दिव्यदेह धरे उत्तमस्वर्ग के भोगभोगके अरु शुद्धिवान योगियोंहीके कुलमेंजन्म लेताहै २५ सो ये तिस पूर्वजन्मके संस्कारसे ये फिर भी योगाभ्यासी होताहै सो पुण्यकारियोंमें कोई नरक में नहींजाताहै २६ सो हेराजन् ज्ञान निष्ठा अरु तपस्या अरु कर्मकरना इनमें श्रेष्ठ योगाभ्यासीहै क्योंकि वह हम में भक्तिवाला है २७ इति गणेशपुराण उत्तरखंड श्रीगणेशगीता में योगा वृत्ति प्रशंसनयोगका वर्णन इस नाम मे पांचवांअध्याय भया ५ ॥

सातवां अध्याय॥

शुक्ल कृष्णगति अरु उपासना योगका वर्णन॥

राजा वरेरायने पूछाकिहे गजाननजी शुक्लगतितो कौनसीबताई है अरु कृष्णगति कौनसीहै अरु ब्रह्म क्या अरु संसार क्याहै सो आपअनुग्रह से मुझसेकहने योग्यहो १श्री गजाननजी बोले कि अग्नि की तो ज्योति अरु दिनका समय अरु कर्मके योग्य उत्तरायण ये शुक्लगति है अरु चन्द्रमा की ज्योति अरु तैसेही धुवें के समान रात्रि समय अरु दक्षिणायन २ येकृष्ण गतिहै सो येही दोनोगतो मोक्ष अरु संसार प्राप्तिकी कारणहै अरु ये प्रत्यक्ष अरु न देखने वाला सब ब्रह्मस्वरूपही है ऐसे जान ३ सो पंचात्मक अर्थात् जो पृथिव्यादि पांचभूतों से उत्पन्न दृश्यमान है तिसको तो तूक्षरनाम नाशमानजान अरु तिसके पश्चात् जो है सो अक्षर कहाहै अरु जो दोनों से उलंघा अर्थात् परे है सो तिसे तू सनातन ब्रह्म जान ४ जो अनेक योनियों में जन्म लेताहै सो संसार कहागया है सो जो हमें गिनते नहीं हैं सोही इस संसार में जन्मलेते मरते हैं ५ अरु जो सम्यक प्रकारसे हमारी उपासना करतेहैं सो परब्रह्मको प्राप्त होतेहैं अरु तैसेही जो हमको ध्यानआदिक उपचारों करके अरु पंचामृतआदि स्नानादिक करके ६ स्नान वस्त्रादिक अरुआभूषण सुगंध धूप दीपकों करके नैवेद्य अरु ताम्बूल फूल दक्षिणाओं करके जो हमारा अर्चनकरे ७ एक चित्त वाली भक्तिकरके तो मैं तिसके वांछितको पूर्णकरताहूं ऐसे जो भक्त भक्ति करके दिन २ प्रति हमें पूजता है ८ अथवा निश्चित करके हमारी मानसी अर्थात् मनसेही पूजा करतेहैं अथवा फल पुष्पादिकों करके अरु पुष्पमूल जलइत्यादिको करके ९ हमारा प्रयत्न से पूजनकरे तो तिस २ ही वांछित फलको पावै पर तीन प्रकार की पूजाओंमें भी मानसीही श्रेष्ठपूजा मानीगई है १० अरु वोभी हमारी पूजा उत्तम मानीगईहै जो फलेच्छारहितकरीगई है सो कोई ब्रह्मचारी वा गृहस्थी तथा वानप्रस्थ

सर्वत्र देखता है सो सुखी होता है १७ सो वो जीवन्मुक्त योगी जो केवल हममें ही लीन अरु ब्रह्मादिक देवादिकों का तथा तीनो लोकों का वंदनीय अर्थात् स्तुति करनयोग्य होता है १८ राजा वरेण्य ने पूछा कि हे विभो गजाननजी ये दो प्रकारयोग मुझको असभावि प्रतीतहोताहै क्योंकि ये अंतष्करण अर्थात् मन तो दुष्ट अरु चपल अरु अवश्य है १६ श्रीगणेशजी बोले कि हे राजन् जो इस दुर्वश्यमनका निरंतर ग्रहकरे अर्थात् इसको वशमें करे तो घड़ीके यन्त्रके समान इससंसारसे तिसकी मोक्षहोजातीहै २० सो विषयरूप पतरोकरके सम्यक् दृढबनायागया जो येसंसार चक्रहै इसे मनुष्य काटनेको समर्थनहींहोता जोचक्रकर्मरूप कीलों करके सुन्दर ढका अर्थात् ठोकागयाहै २१ सो अत्यंत वैराग्यअरु भोगोंसे अतृष्णापन अर्थात् अनिच्छा अरु गुरुप्रसन्नता अरु सज्जनसंग तिसमनके जीतनेमें इतनेउपायहैं २२ अथवा योगसिद्धि के लिये इसमनको अभ्याससे वशमेंकरै हेराजन् वरेण्यविन मन जीतनेके योग्य मार्ग बड़ादुर्लभ है २३ वरेण्यबोला कि हे विभो गणेशजी योगसे भ्रष्ट अर्थात् मृत्यु आदि वश योगसे च्युतभयेका कौन लोकहै अरु क्या तिसकी गतिहोतीहै अरु तिसे क्याफल होताहै सो बुद्धिरूप चक्रधारी आप मेरे इससंशयको छेदन करो २४ श्रीगणेशजी बोले कि योगसे छूटायोगी दिव्यदेह धरे उत्तमस्वर्ग के भोगभोगके अरु शुद्धिवान् योगियोंहीके कुलमेंजन्म लेताहै २५ सो ये तिस पूर्वजन्मके संस्कारसे ये फिर भी योगाभ्यासी होताहै सो पुण्यकारियोंमें कोई नरक में नहींजाताहै २६ सो हेराजन् ज्ञान निष्ठा अरु तपस्या अरु कर्मकरना इनमें श्रेष्ठ योगाभ्यासीहै क्यों कि वह हम में भक्तिवाला है २७ इति गणेशपुराण उत्तरखंड श्री गणेशगीता में योगा वृत्ति प्रशंसनयोगका वर्णन इस नाम से पांचवांअध्याय भया ५ ॥

सातवां अध्याय॥

शुक्ल कृष्णगति अरु उपासना योगका वर्णन॥

राजा वरेण्यने पूछाकि हे गजाननजी शुक्लगतितो कौनसी बताई है अरु कृष्णगति कौनसी है अरु ब्रह्म क्या, अरु संसार क्याहै सो आप अनुग्रह से मुझसे कहने योग्य हो १ श्री गजानन जी बोले कि अग्नि की तो ज्योति अरु दिनका समय अरु कर्मके योग्य उत्तरायण ये शुक्लगति हो अरु चन्द्रमा की ज्योति अरु तैसेही धुवें के समान रात्रि समय अरु दक्षिणायन २ ये कृष्णगति है सो ऐही दोनोंगती मोक्ष अरु संसार प्राप्तिकी कारणहै अरु ये प्रत्यक्ष अरु न देखने वाला सब ब्रह्मस्वरूपही है ऐसे जान ३ सो पंचात्मक अर्थात् जो पृथिव्यादि पांचभूतो से उत्पन्न दृश्यमात्र है तिसको तौ तू क्षर नाम नाशमान जान अरु तिसके पश्चात् जो है सो अक्षर कहाहै अरु जो दोनो से उलघा अर्थात् परे है सो तिसे तू सनातन ब्रह्म जान ४ जो अनेक योनियो में जन्म लेताहै सो संसार कहागया है सो जो हमे गिनते नहीं है सोही इस संसार में जन्मलेते मरते है ५ अरु जो सम्यक प्रकारसे हमारी उपासना करतेहैं सो परब्रह्मको प्राप्त होतेहैं अरु तैसेही जो हमको ध्यान आदिक उपचारों करके अरु पंचामृत आदि स्नानादिक करके ६ स्नान वस्त्रादिक अरु आभूषण सुगंध धूप दीपको करके नैवेद्य अरु ताम्बूल फल दक्षिणाओं करके जो हमारा अर्चनकरै ७ एक चित्तवाली भक्तिकरके तो मैं तिसके वांछितको पूर्णकरताहूं ऐसे जो भक्त भक्ति करके दिन २ प्रति हमै पूजता है ८ अथवा निश्चित करके हमारी मानसी अर्थात् मनसेही पूजा करतेहैं अथवा फल पुष्पादिको करके अरु पुष्पमूल जलइत्यादिको करके ९ हमारा प्रयत्न से पूजनकरै तो तिसे २ ही वांछित फलको पावै पर तीन पकार की पूजाओंमें भी मानसीही श्रेष्ठपूजा मानीगई है १० अरु वोभी हमारी पूजा उत्तम मानीगईहै जो फलेच्छारहितकरीगई है सो कोई ब्रह्मचारी वा गृहस्थी तथा वानप्रस्थ

या यतिहो ११ केवल हमारी पूजा करना सिद्धि को प्राप्तहोता है चाहे कोई और भी समान मनुष्यहोवे अरु हमसे इतर और देवता की भक्ति अरु हमसे द्वेष न करै १२ तो वोभी हमैंही पूजताहै पर हे राजन् अविधि से अर्थात् विधिसे तो हमाराही पूजन होता है अरु जो हमसे द्वेषकरता और देवताकी पूजाकरता है १३ तो वो सहस्रकल्प पर्यंत नरकों में पड़ता अरु सदु:खभागी होताहै इससे हमारीही पूजाकरै सो प्रथम भूत शुद्धि करके अरु फिर प्राणो का स्थापन अर्थात् प्राणप्रतिष्ठा करके १४ अरु चित्तकी वृत्तिको खैच करके फिर न्यासकरै सोकि अंतर्मातृ का न्यास करके अरु वाहर षडंग न्यास करके १५ अरु मूलमंत्र करके न्यासकरै फिर ध्यान करके मन्त्रका जापकरै सो स्थिर मनभया जैसा गुरुमुखसे सीखाहै तैसाही मन्त्र जपै १६ अरु फिर देवता के अर्थ जप निवेदन करके अरु अनेक प्रकार की स्तुतियोसे ध्यायकरके ऐसे जो हमारी उपासना करै सो अविनाशी मोक्षको प्राप्तहोताहै १७ अरु जो मनुष्य उपासना से हीनहै तिसे धिक्कारहै वो वृथा जन्मभागी है अरु यज्ञ भी हमहैं अरु औषधअरु वनस्पत्यादि अरुमन्त्र अग्निघृत अरुहुत: चरु १८ अरु ध्यान ध्यानयोग्य स्तुतिस्तोत्र प्रणामभक्ति उपासना वेदत्रयी अरु पवित्रज्ञातव्य पितामहकेभीपितामह अर्थात् बाबा १९ अरु ऊंकार अरु पवित्रकर्ता अरु साक्षी स्वरूपअरु समर्थमित्रगति प्रलय उत्पत्ति पोषकनिमित्त कारणग्रह अरु वासना २० असत् मृत्यु सत्नामश्रेष्ठ अमृत अर्थात् मोक्षअरु व्यापकब्रह्म हमहींहैं अरुदान होमतप अरुभक्ति जपअरु ऐसेही पठन २१ सोजोजो ये कर्मकरै सो २ सबहममें समर्पण करदेवे अरु जो २ खोटे आचारवती स्त्रियें तीनवर्णकी पापिनीहैं सोभीहमारे आश्रयमई विशेष करकेमोक्षको प्राप्तहोतीहैं हमारी भक्तिकिये ब्राह्मणादिक क्याहैं अर्थात् हमारी भक्तिमुख्यहै २२ सोहमारी इनविभूतियोंकोजानिकेहमाराभक्तविनाश को प्राप्तनहीं होताहै अरु हमारे अवतार अरु विभूतियों को देवता अरु ऋषि येभीनहीं जानतेहैं २३ सोकि नाना प्रकार की विभूतियो से

देखाथा हे अनंत आपकी लीलाओंको कौन जानताहै जो २ निज इच्छा करके आप कररहेहो २१ सो आपहीके अनुग्रह से मैंने ये आपका ऐसा रूप देखाहै जो आपने प्रसन्नहो मुझे ज्ञाननेत्रदिया था तिस करके श्री गजाननजी बोले कि हे महाबाहो अर्थात् भारी भुजो वाले राजन् वरेण्य इस हमारे रूपको योगि जनभी नहीं देख सकते हैं अरु न सनकादि न नारदादि कभी अरु जो देखाचा है तौ हमारेही अनुग्रहसे देखसकते हैं २२ श्रीगणेशजी जो चारों वेदो के अर्थ के तत्त्ववेत्ता अरु चार मुख्य शास्त्र अर्थात् शास्त्रो में कुशल अरु तप दान यज्ञोंमें निष्ठा जिनकी वे भी हमारे रूप को नहीं जानते हैं २३ सो हम तौ भक्ति भावसेही दर्शन को अरु प्रवेश करने को अर्थात् मोक्ष के लिये शक्य हैं अर्थात् हमारे भक्ति भावसेही दर्शन अरु मुक्ति होसक्ती है सो तू अब भय अरु मोह को त्याग अरु सौम्य स्वरूपी हमको देख २४ सो हमारा भक्त अरु हममेंही परायण अरु सब संगोंसे हीन अर्थात् निसंग अरु हमारे ही अर्थ सब कर्म करने वाला अरु सब प्राणियों में क्रोध रहित समान भया जन हमको हे भूमि भोगी वरेण्य राजन् प्राप्त होताहै २५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडगणेशगीतासूपनिषद ग० मेंवरेण्यकोविश्वरूपदिखानाइसनामका आठवांअध्यायभयाहै ८

नवां अध्याय ॥

इसमें क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ आदि निरूपण वर्णन किया गया है ।

राजा वरेण्य ने पूछा कि जो अनन्य भक्तभया सम्यक् प्रकारसे मतिमान् मानके उपासना करताहै अरु जोपरम अविनाशीअर्थात् सच्चिदानंद जानके आपका ध्याताहै तिनमेंसे आपके कौनसाप्रकट हो अधिकमतहै अर्थात् कौनसभक्तकीकरीभक्तिको आपविशेषकरके मानतेहो सोही मुझसे कहिये १ कि आप सबके साक्षी अरु भूत नाम प्राणियों के पालक अरु ईश्वर इससे आपसे मैं पूछताहूं हे करुणानिधान आप मुझसे कहिये २ श्री गजाननजी बोले कि जो

हमारा भक्त मूर्तिमान् हमको भक्ति से सेवता है सोही हमको माननीय है अरु जो हममें मन लगाकर ३ अपने इंद्रिय समूह को निज वशकरके सब प्राणियों का हितार्थ कारी जो ध्याने योग्य अविनाशी अव्यक्त सर्वत्रगामी कूटस्थ अरु स्थिर ऐसे हमें ध्याता है ४ सो भी निर्देश रहित अर्थात् बताये न जावे ऐसे अप्रमेय हमको प्राप्त होता है जो हममें परायण भया उपासना करता है सो कि, इस संसार सागर से तिसका भी हम उद्धार करते हैं ५ सो तिसे अव्यक्त की उपासना का दुःख अधिक प्राप्त होताहै अरु जो मूर्तिमान् की उपासना से साधनीय अर्थात् सिद्ध होता है सोही अव्यक्त ब्रह्म की भक्ति से सिद्ध होताहै ६ सो इस हमारी उपासना में भक्ति अरु आदर ये दो मुख्य कारण हैं जो किंचित् ज्ञाता भी नहीं अर्थात् कुछ भी नहीं जानता है परजोभक्ति सहित है सो सब विद्वानों में श्रेष्ठ है ७ अरु जो भक्तिहीन हुवा हमको भजता सो चांडाल कहावता है अरु भक्ति से भजता चांडाल ही ब्राह्मणों से अधिक माना है ८ अरु शुकदेव अरु सनकादिक ये भी सब हमारीही भक्ति से मोक्ष को प्राप्तभये हैं अरु चिरायुवं-लवाले नारदादिक भी भक्ति सेही हमको प्राप्त भयेहैं ९ इससेभक्ति करके हममें मन अरु बुद्धि लगाव सो कि हे राजन् तू भक्ति करके हमें पूज तिसने तू हमहीं को प्राप्त होगा १० अरु हे राजन् जो इस चंचल मनको हममें लगाने में समर्थ नहीं है तो तू अभ्यास योगसे हमको प्राप्तहोने के लिये प्रयत्नकर ११ अरु जो इसकोभी नहीं साधन करसका तो तू हमारे अर्पण कर्म कर तो हमारे ही अनुग्रह से तू परम आनन्द को प्राप्त होवेगा १२ जो इसेभी नहीं करनसका तो तीनोंप्रकार के अर्थात् कायक वाचक मानस ये जो तीन कर्म हैं इनके फलका त्यागकर १३ आवृत्ति अर्थात् नामजपने आदि से बुद्धि जो ज्ञान अर्थात् चिंतन करना है सो श्रेष्ठ है अरु तिससे श्रेष्ठ ध्यान मानागया है अरु तिससे सब का त्याग श्रेष्ठ है अरु तिससे भी श्रेष्ठ शांति है १४ अरु अहं ममता अर्थात् मैं अरु

देखाथा हे अनंत आपकी लीलाओंको कौन जानताहै जो २ निज इच्छा करके आप कररहेहो २१ सो आपहीके अनुग्रह से मैंने ये आपका ऐसा रूप देखाहै जो आपने प्रसन्नहो मुझे ज्ञाननेत्रदिया था तिस करके श्री गजाननजी बोले कि हे महाबाहो अर्थात् भारी भुजो वाले राजन् वरेण्य इस हमारे रूपको योगि जनभी नहीं देख सकते हैं अरु न सनकादि न नारदादि कभी अरु जो देखाचा है तो हमारेही अनुग्रहसे देखसकते हैं २२ श्रीगणेशजी जो चारों वेदो के अर्थ के तत्त्ववेत्ता अरु चार मुख्य शास्त्र अर्थात् शास्त्रों में कुशल अरु तप दान यज्ञोंमें निष्ठा जिनकी वे भी हमारे रूप को नहीं जानते हैं २३ सो हम तो भक्ति भावसेही दर्शन को अरु प्रवेश करने को अर्थात् मोक्ष के लिये शक्य हैं अर्थात् हमारे भक्ति भावसेही दर्शन अरु मुक्ति होसकी है सो तू अब भय अरु मोह को त्यागि अरु सौम्य स्वरूपी हमको देख २४ सो हमारा भक्त अरु हममेंही परायण अरु सब संगोंसे हीन अर्थात् निःसंग अरु हमारे ही अर्थ सब कर्म करने वाला अरु सब प्राणियों में क्रोध रहित समान भया जन हमको हे भूमि भोगी वरेण्य राजन् प्राप्त होताहै २५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडगणेशगीतासूपनिषद ग० मेंवरेण्यको विश्वरूपदिखानाइसनामसे आठवांअध्यायभयाहै ८

नवां अध्याय॥

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ आदि निरूपण वर्णन किया गया है॥

राजा वरेण्य ने पूछा कि जो अनन्य भक्तभया सम्यक् प्रकारसे मूर्तिमान् मानके उपासना करताहै अरु जोपरम अविनाशी अर्थात सच्चिदानंद जानके आपका ध्याताहै तिनमेंसे आपके कौनसाप्रकट हो अधिकमतहै अर्थात कौनसेभक्तकीकरीभक्तिको आपविशेषकरके मानतेहो सोही मुझसे कहिये १ कि आप सबके साक्षी अरु भूत नाम प्राणियों के पालक अरु ईश्वर इसमे आपसे मैं पूछताहूं हे करुणानिधान आप मुझसे कहिये २ श्री गजाननजी बोले कि जो

हमारा भक्त मूर्तिमान् हमको भक्ति से सेवता है सोही हमको माननीय है अरु जो हममें मन लगाकर ३ अपने इंद्रिय समूह को निज वशकरके सब प्राणियों का हितार्थ कारी जो ध्याने योग्य अविनाशी अव्यक्त सर्वत्रगामी कूटस्थ अरु स्थिर ऐसे हमें ध्याता है ४ सो भी निर्देश रहित अर्थात् बताये न जावें ऐसे अप्रमेय हमको प्राप्त होता है जो हममें परायण भथा उपासना करता है सो कि, इस संसार सागर से तिसको भी हम उद्धार करते हैं ५ सो तिसे अव्यक्त की उपासना का दुःख अधिक प्राप्त होताहै अरु जो मूर्तिमान् की उपासना से साधनीय अर्थात् सिद्ध होता है सोही अव्यक्त ब्रह्म की भक्ति से सिद्ध होताहै ६ सो इस हमारी उपासना में भक्ति अरु आदर ये दो मुख्य कारण है जो किंचित् ज्ञाता भी नहीं अर्थात् कुछ भी नहीं जानता है परजोभक्ति सहित है सो सब विद्वानों में श्रेष्ठ है ७ अरु जो भक्तिहीन हुवा हमको भजता सो चांडाल कहावता है अरु भक्ति से भजता चांडाल ही ब्राह्मणो से अधिक माना है ८ अरु शुकदेव अरु सनकादिक ये भी सब हमारीही भक्ति से मोक्ष को प्राप्तभये हैं अरु चिरायुर्बलवाले नारदादिक भी भक्ति सेही हमको प्राप्त भये हैं ९ इससेभक्ति करके हममें मन अरु बुद्धि लगाव सो कि हे राजन तू भक्ति करके हमें पूज तिसने तू हमहीं को प्राप्त होगा १० अरु हे राजन जो इस चंचल मनको हममें लगाने में समर्थ नहीं है तो तू अभ्यास योगसे हमको प्राप्तहोने के लिये प्रयत्नकर ११ अरु जो इसकोभी नहीं साधन करसका तो तू हमारे अर्पण कर्म कर तो हमारे ही अनुग्रह से तू परम आनन्द को प्राप्त होवेगा १२ जो इसेभी नहीं करनसका तो तीनोंप्रकार के अर्थात् कायक वाचक मानस ये जो तीन कर्म हैं इनके फलका त्यागकर १३ आवृत्ति अर्थात् नामजपने आदि से बुद्धि जो ज्ञान अर्थात् चिंतन करना है सो श्रेष्ठ है अरु तिससे श्रेष्ठ ध्यान मानागया है अरु तिससे सब का त्याग श्रेष्ठ है अरु तिससे भी श्रेष्ठ शांति है १४ अरु अहं ममता अर्थात् मैं अरु

ये मेरा इस इच्छा से रहित है बुद्धि जिसकी ऐसा अरु द्वेष रहित अरु दयासे समान अर्थात् सर्वत्र दयावान् अरु जो लाभ अलाभ अरु सुख दुःख में समान है सो हमारा प्यारा है १५ जिसे देखके जन भय नहीं मानते अरु न आप तिन जनोंसे डरताहै अरु उद्विग्नता अर्थात् विक्षिप्ति अरु भय कोप मोद इनसे जो रहित है सो हमारा प्यारा है १६ अरु जो शत्रु मित्रमें अरु निन्दामें स्तुति में अरु शोकमें जो समान आनन्द सहित है अरु मौन वाला अरु निश्चल चित्त भक्तिमान् अरु निस्सग है सोभी हमारा प्याराही है १७ जो हमसे किये उपदेशको सम्यक् शीलन कर्ता अर्थात् तदनुसार रहताहै सो सबलोकोंके बंदनीय अरु सदाही हमाराप्याराहै १८ अरु जो अनिष्टकी प्राप्ति में द्वेषनहीं अर्थात्दुःखभयेदुःखीनहीं होता अरु वांछितकी प्राप्तिभये जो प्रसन्ननहीं होताहै अरु जो क्षेत्र अरु तिसके ज्ञाता अर्थात् क्षेत्रज्ञ को जानताहै वो अत्यंत हीहमारा प्याराहोताहै१८वरेण्यबोला कि वोक्षेत्रक्या है अरु कौन तिसेजानताहै अरु हे गजाननजी वोज्ञान क्याहै हे करुणा निधे ये सब पूछ रहे मुझको आप कृपाकरके कहिये १६ गणेशजी बोलेकि पचभूत अर्थात् पृथ्वी जल तेजवायु आकाशये ५ अरु पांचही तिनकी मात्रा अर्थात् रूपरस गधस्पर्श शब्द५अरु पांचोकर्म इन्द्रिये अर्थात् वाणी हाथपैर लिग गुदाये ५ अरु अहंकार मनबुद्धि अरु पांच ज्ञानइन्द्रिय अर्थात् जिव्हा चक्षुश्रवण नाशिका त्वचा ये ५ ।२० अरु इच्छा प्रकृति धारणा द्वेष अरु तैसेही सुख दुःख अरु चेतना अर्थात् जानलेना ऐसीमति ये समूह (क्षेत्र) कहाताहै २१ सो तिसके ज्ञाताहु हे राजन् सबके अतर्यामीप्रभुऐसे हमको जान् अरुहेराजन् येक्षेत्र अरु हमजिसज्ञानके विषयहै अर्थात् जिसज्ञानसे जानेजातेहैं२२ सोयेहै कि सीधापन अरु गुरुवोंकी टहल अरु इन्द्रियोंके विषयोंसे वैराग्य अरु शुद्धिमहना हठ न करना जन्मादिकों के दोषोंका देखना अर्थात् शरीरजन्मको अनित्य जानके नित्य धर्मादिका संग्रह करना २३ अरुसमान दृष्टिअरु दृढभक्ति अरुएकांतपना शांति अरु दमनअर्थात्

इन्द्रियोंको रोकना हेबाहुजन्यराजन् जोइनसे सहितहै सोहीतूज्ञान जाने २४ अरु हेराजन् अवहम तुमसे तिसज्ञानका विषय कहतेहैं उसेसुनौ जिसेजानके इससंसारसागरसे तिरकरमोक्षको प्राप्तहोता है २८ सोकि जो अनादि अरु इन्द्रियोंसे रहित अर्थात् तिनसेनहीं ग्रहण कियाजावे सो अरु गुणभोक्ता अरु आपनिर्गुण २६ अरु अव्यक्त अरु सत् असत्से न्यारा अर्थात् शुद्ध ब्रह्म अरु इन्द्रियों के अर्थात् विषयोंके अवभाशक अरु जो विश्वभर्ता अरु संपूर्ण व्यापक अरुजो एकही अनेक प्रकारसें अवभाशमान् अर्थात् दीखरहा २७ अरु जो बाहर भीतरसें संपूर्ण असंग अरु अज्ञानसे परे अरुजो अत्यंत सूक्ष्मपन से जानने में न आवे अरु जो दीप्तिको प्राप्त अर्थात् प्रकाशकाभी प्रकाशक है २८ ऐसाजो जानने योग्य ब्रह्महै तिसेतू जानजोज्ञानप्राप्य अरु पुरातनजो ईश्वरहै सोही परब्रह्म अरुआत्मा परम अव्ययहै २६ सो प्रकृतिसे परे अर्थात् भिन्न जो वो पुरुषहै सो प्रकृतिके गुणोंको भोगताहै सोहीये प्रकृति अपने तीनोंगुणोंकर के पुरुषको दृढ बांधलेतीहै ३० जब प्रकाश अरु सहना ये वृद्धहों तो सत्व गुणअधिक जानना अरु जो लोभ अरु अशांति अरुइच्छा का आरम्भ अर्थात् कर्मइच्छावृद्धिहो तो रजोगुण ३१ अरुमोह न वर्तना अरु अज्ञान अरु प्रमादयेतमके गुणहै सो सत्व गुणकीअधिकता तोज्ञानअरुसुखहै अरुकर्मोंमेंआसक्तहोनाये रजोगुणकीअधिकताहै ३२ अरु तमोगुणकी अधिकतामें निद्राआलस्यनारु दुःखहोता है अरुइनहीं तीनों के बधेसतें मुक्तिजन्म अरुदुर्गति होताहै ३३ सोकि मनुष्य सत्वगुणसे तो मुक्ति अरु रजोगुणसे जन्म मरण अरु तमोगुणसे दुर्गति पाताहै तिससे तू सत्वगुणयुक्तहोउ फिरहेनरपते तू संपूर्ण भावसे हमकोभज ३४ सोकिन व्यभिचारवाली भक्तिकरके सर्वत्रही विराजमान हमको देख सोकि जो अग्नि में सूर्य में तैसे ही चन्द्रमामें अरु जो तारागणोंमें स्थितहै ३५ अरु जो विद्यमान ब्राह्मणमें तेजहै सो हेनृपते तू हमाराही जान अरु हमहीं हम सारे संसार को रचते अरु पालतेहैं ३६ सोनिज तेजकरके सारीऔषधि

यो को अरु सारेसंसारको हमहीं तृप्तकरते अर्थात् तपातेहैं तैसेही सारी इन्द्रियोमें विराजमानहो हमीजठराग्नि को श्वासरूप होके धमतेहैं ३७ अरुपुण्यपाप रहितहोहमी भवभोग भोगतेहैं अरुहमहीं ब्रह्मा विष्णु अरु महादेव पार्वती गणेशजी हैं ३८ अरु इन्द्रादि दिक्पति अरु पंच लोकपाल येसब हमारेही अंशन अर्थात् तेजसे उत्पन्न भयेहैं से ये जन जिस २ रूपसे हमारी उपासनाकरताहै ३९ सो हम तिसको भक्ति से तैसा २ ही रूपदिखाते हैं हेभूपते वरेण्य ऐसे हमने तुमसे क्षेत्र अरु तिसका ज्ञाता अर्थात् क्षेत्रज्ञ अरु ज्ञानज्ञेय ये सबकहा है ४० सोकिउपनाम समीप प्राप्तभया अरुपूछ रहा जोतू तिस तुझको हमने येसबप्रसंगकह सुनायाहै ४१ इ०तश्री गणेश पुराणे उत्तरखंड गणेशगीता सूपनिषद०में क्षेत्र ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान योगइसनाममे ९ अध्याय भयाहै ॥

दशवां अध्याय ॥

सात्त्विक आदिभेदका वर्णनहै ॥

श्रीगजाननजी बोलेकि देवतोकीदई अरु असुरोकी अरुराक्षसोकी ऐसेनेमनुष्यो को तीन प्रकारसे प्रकृतिहोतीहै सो अब इनतीनो के फल अरु इनका लक्षणभी हम संक्षेपसे कहते हैं सोसुनो १ हेराजन् पहिलीअर्थात् देवप्रकृतिसे तौमुक्तिहोतीहै अरु पिछली अर्थात् आसुरीराक्षसी इनदोनो प्रकृतियोंसे बंधन होताहै अरु हमपहिली प्रकृतिके चिहन कहतेहैं सो हमसेसुनो २ निन्दारहितपन अरुदया अक्रोध अरुचपलता धारणा सरलता तेजअभयता अरुअहिंसाक्षमा शुद्ध मान न करना ३ इत्यादि लक्षण पहिलीही प्रकृतिकेहैं अब भलीभांति तुम आसुरी प्रकृति के लक्षणसुनो कि अत्यंतवाद करना अरु अभिमानपन गर्व अज्ञान सकोपपन ४ हेराजन्ऐसे २ आसुरी प्रकृतिके चिन्हजानो अरु निठुराई मदमोह अहंकार अरु गर्व ५ द्वेष हिंसा नदया अरु क्रोध अरु उद्धत अर्थात् अनम्रपना अरु खोजना अरु पापकर्म करना ऐसेही खोटेकर्म में प्रीति ६ अरु सज्जनों के

वचनमें अविश्वास अर्थात् श्रद्धा न करना अरु अशुद्धिपन अरुकर्म न करना अरु वेदो की निंदा करनी अरु भक्तों के तथा असुरों के शत्रु अर्थात् देवताओं की भी निंदाकरनी ७ अरु मुनिजन वेदपाठी ब्राह्मणोंकी निंदा अरुतैसेही स्मृतिमनुआदिकअरु पुराण भारतादिक इनकी निंदा करनी अरुपाखंडी जनोंमें विश्वास करना अरुमन्द बुद्धिवालोंसे संगति करनी ८ अरु हठपूर्वक कर्मकरना अरु पराई वस्तुओं में न इच्छा अरु अनेक कामना वस्तु अर्थात् इसे मारा कल इसे खाऊंगा इत्यादि अनेक कुकर्मों में आसक्तहोना अरु सदामिथ्या बोलना ९ अरु परायेउत्कर्ष कोनसहना अरुपरायेकार्य काध्वंस करना इत्यादिक और भीबहुतसे राक्षसी प्रकृतिके गुणहैं १० अरु वेराक्षसी प्रकृतिवालेजन अर्थात् राजसपृथ्वी में अर्थात् जन्म लेना अरु स्वर्गमें सुखभोगना ऐसे परिवरतन करके अर्थात् भ्रमते रहतेहैं अरु जो राक्षसी प्रकृतिके आश्रयहैं सो हमारी भक्तिसेहीनहैं ११ अरुहेराजन् जोजन तामसी प्रकृतिके आश्रितहैं सो निश्चल नर्क कोजातेहैं अरुवेवहांपड़े अनिर्वचनीयजो कहानजावे ऐसा दुःख भोगतेहैं १२ अरु प्रारब्ध सेनर्क से निकलकर फिर भूमिमें कुबड़े होतेहैं अरु जन्मसे अंधे अरु पगुले दरिद्री हीन अर्थात् नीचजातिमें जन्मलेतेहैं १३ अरु हेराजन् फिरभी वेपाप आचरण करनेसे हममें अनेक भयपतित होतेहैं अरु जो हमारे भक्तहैं सो जिसकिसी यो-नियोंमेंभी जन्मेंहो पर उच्च गति को प्राप्तहोतेहैं अर्थात् भक्तिमुक्ति पातेहैं १४सोकहे राजन् वेब्रह्मसेअरुऔर२धर्मकरकेस्वर्ग गतिको प्राप्त होतेहैं सो सकाम वाले जनोंको वे स्वर्गादिक तो सुलभही हैं अरु हममें भक्ति होनी बड़ी दुर्लभ है १५ सोकि सकामीजन मोह जालसे विशेषमूढ अर्थात् फसे अरु निजकर्म बंधनसे बंधेमैंकर्ता अरु मैंही हनने वाला अरु मैंभोगीहूं ऐसे वाद करते हैं १६ अरु मैंही सिद्धक ईश्वरहूं अरु मैंहीज्ञानीहूं अरुसुखीहूं ऐसीजो मनुष्योंकी मतिहोवी है सो तिनको नीचे अर्थात् नरकों में गिराती है १७ सो हे राजन् इससे तू इस अज्ञानको छोड़कर दैवी प्रकृतिके आश्रयहोवे

यो को अरु सारेससारको हमहीं तृप्तकरते अर्थात् तपातेहैं तैसेही सारो इन्द्रियोंमें विराजमानहो हमीजठराग्नि को श्वासरूप होके धमतेहैं ३७ अरुपुण्यपाप रहितहोहमी भवभोग भोगतेहैं अरुहमहीं ब्रह्मा विष्णु अरु महादेव पार्वती गणेशजी हैं ३८ अरु इन्द्रादि दिक्पति अरु पंच लोकपाल येसब हमारेही अंशन अर्थात् तेजसे उत्पन्न भयेहैं से ये जन जिस २ रूपसे हमारी उपासनाकरताहै ३९ सो हम तिसको भक्ति से तैसा २ ही रूपदिखाते हैं हेभूपते वरेण्य ऐसे हमने तुमसे क्षेत्र अरु तिसका ज्ञाता अर्थात् क्षेत्रज्ञ अरु ज्ञानज्ञेय येसबकहा है ४० सोकिउपनाम समीप प्राप्तभया अरुपूछ रहा जोटू तिस तुमको हमने येसबप्रसंगकह सुनायाहै ४१इ तिश्री गणेश पुराण उत्तरखण्ड गणेशगीता सूपनिषद ग० में क्षेत्र ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान योगइसनामसे ९ अध्याय भयाहै ॥

दशवां अध्याय॥

सात्विक आदिभेदका वर्णनहै ॥

श्रीगजाननजी बोलेकि देवतोकीदई अरु असुरोकी अरुराक्षसोकी ऐसेनेमनुष्यो को तीन प्रकारसे प्रकृतिहोतीहै सो अब इनतीनो के फल अरु इनका लक्षणभी हम संक्षेपसे कहते हैं सोसुनो १ हेराजन् पहिलीअर्थात् दैवप्रकृतिसे तौमुक्तिहोतीहै अरु पिछलीअर्थात् आसुरीराक्षसी इनदोनो प्रकृतियोंसे बंधन होताहै अरु हमपहिली प्रकृतिके चिह्न कहतेहैं सो हमसेसुनो २ निन्दारहितपन अरुदया अक्रोध अरुचपलता धारणा सरलता तेजअभयता अरुअहिंसाक्षमा शुद्ध मान न करना ३ इत्यादि लक्षण पहिलीही प्रकृतिकेहैं अब भलीभांति तुम आसुरी प्रकृति के लक्षणसुनो कि अत्यंतवाद करना अरु अभिमानपन गर्व अज्ञान संकोपपन ४ हेराजन्ऐसे २ आसुरी प्रकृतिके चिन्हजानो अरु निठुराई मदमोह अहंकार अरु गर्व ५इ ष हिंसा नदया अरु क्रोध अरु उद्धत अर्थात् अनम्रपना अरु खोजना अरु पापकर्म करना ऐसेही खोटेकर्म में प्रीति ६ अरु सज्जनों के

वचनमें अविश्वास अर्थात् श्रद्धा न करना अरु अशुद्धिपन अरुकर्म न करना अरु वेदो की निंदा करनी अरु भक्तों के तथा असुरों के शत्रुअर्थात् देवताओ की भी निंदाकरनी ७ अरु मुनिजन वेदपाठी ब्राह्मणोंकी निंदा अरुतैसेही स्मृतिमनुआदिकअरु पुराण भारतादिक इनकी निंदा करनी अरुपाखंडी जनोंमे विश्वास करना अरुमन्द बुद्धिवालोंसे सगति करनी ८ अरु हठपूर्वक कर्मकरना अरु पराई वस्तुओ में न इच्छा अरु अनेक कामना वस्तु अर्थात् इसे मारा कलु.इसे बांधोगा इत्यादि अनेक कुकर्मों में आसक्तहोना अरु सदामिथ्या बोलना ६ अरु परायेउत्कर्ष कोनसहना अरुपरायेकार्य काध्वंस करना इत्यादिक और भीबहुतसे राक्षसी प्रकृतिके गुणहैं १० अरु वेराक्षसी प्रकृतिवालेजन अर्थात् राजसपृथ्वी में अर्थात् जन्म लेना अरु स्वर्गमें सुखभोगना ऐसे परिवरतन करके अर्थात् भ्रमते रहतेहैं अरु जो राक्षसी प्रकृतिके आश्रयहै सो हमारी भक्तिसेहीनहैं ११ अरुहेराजन् जोजन तामसी प्रकृतिके आश्रितहैं सो निश्चल नर्क कोजातेहैं अरुवेवहांपड़े अनिर्वचनीयजो कहानजावे ऐसा दुःख भोगतेहैं १२ अरु प्रारब्ध सेनर्क से निकलकर फिर भूमिमें कुबडे होतेहैं अरु जन्मसे अंधे अरु पगुले दरिद्री हीन अर्थात् नीचजातिमें जन्मलेतेहैं १३ अरु हेराजन् फिरभी वेपाप आचरण करनेसे हममें अनेक भयेपतित होतेहैं अरु जो हमारे भक्तहैं सो जिसकिसी योनियोंमेंभी जन्मेंहो पर उर्द्ध गति को प्राप्तहोतेहैं अर्थात् भक्तिमुक्ति पातेहैं ॥ १४सोकहे राजन् वेदोक्त सेअरुऔर२ धर्माकरकेस्वर्ग गतिको प्राप्त होतेहैं सो सकाम वाले जनोंको वे स्वर्गादिक तो सुलभही हैं अरु हममें भक्ति होनी बडीदुर्लभ है १५ सोकि सकामीजन मोह जालसे विशेषमूढ अर्थात् फसे अरु निजकर्म बंधनसे बंधेमेंरक्ता अरु मैंही हनने वाला अरु मैंभोगी हूं ऐसे वाद करते हैं १६ अरु मैंही शिक्षक ईश्वरहूं अरु मैंहीज्ञानीहूं अरुसुखीहूं ऐसी२ जो मनुष्योंकी मतिहोती है सो तिनको नीचे अर्थात् नरकों में गिराती है १७ सो हे राजन् इससे तू इस अज्ञानको छोड़कर देवी प्रकृतिके आश्रयहोवे

सोकितू निरंतरनिश्चलचित्त करकेहमारीभक्तिकरै १८ अरुहेराजन् भक्तिभी सात्विकी राजसी अरु तामसी ऐसे तीन प्रकार कीहीहोती है जोये मनुष्य भक्तिसे देवोंको भजताहै सो भक्तिशुभ सात्विकी मानीगई है १९ अरु जो जन्म मरण देनेवाली भक्तिहै सोराजसी जाननी अरु जो सब भावनासे यक्षराक्षसोको पूजनाहै २० अरुजो वेद बिरुद्ध खोटा कर्महै अरु जो कर्म हठ अरुअहंकार सहित है सो करतेहैं अरु जो भूतप्रेत आदिकोंका पूजन करतेहैं अरु इच्छा फलके लिये कर्म करतेहैं २१ अरु वे शोकादिकसे निज देहको अरु अंत करण में जो विराज मानहमहैं तिनको शोषते अर्थादिदुःखितकरते हैं दृढ़हैं याग्रहजिनके ऐसेजो भक्तिकरते हैं तौये ऐसी तामसीभक्ति है सो मनुष्यो को नर्कमे लेजाने वालीहै २२ अरु कामलोभ अरु क्रोध अरुहठ येचारनर्कके मुख्यद्वारेहैं तिससेइन्हे वर्जितकरै अर्थात् कामादिकोसे रहितहोवै २३ इतिश्रीगणेश पुराण उत्तरखण्डे गणेश गीतासू० नि० ग० मेंनामोपदेशइसनामसे १० अध्यायभयाहै ॥

ग्यारहवां अध्याय॥

त्रिविध वस्तु निरूपण ॥

वस्तुओका सत्व रजतमअर्थात् इनतीन गुणोके भेदसे तीनप्रकार करके कथा प्रसग वर्णन किया गया है श्रीगणेशजी ने बरेण्य से कहा कि हे राजन् तप भी कायिक वाचक अरु मानस इससे तीनहीं प्रकार का होता है सोकि सरलता अर्थात् सीधापन अरु शुद्धि ब्रह्मचर्य अरु अहिसा १ अरु गुरु प्राज्ञ द्विजो की पूजा अरु असुर द्वेष्टा अर्थात् देवतो की पूजा अरु नित्य निज धर्म पालन ये काया का तप है २ अरु जो मर्मको न स्पर्श करै अर्थात् कठोर नहीं है ऐसा प्रिय वचन अरु जो न उद्वेगकारी अर्थात् जिसे सुनके चित्तको [illegible] न हो ऐसा अरु हित अरु सत्यहो अरु वेद [illegible] ये [illegible] वाणी का तपहै ३ अरु पापरत करै [illegible] मौन अरु इंद्रि-

योंका रोकना अरु नित्यही शुद्ध चित्तता ये मानसी तप है ४ अरु जो निष्काम से अरु श्रद्धासे तप कियाजावै सो सात्विक है अरु ऋद्धि अरु पूजा सतकार के अर्थ जो हठ सहित सो राजसी तप है ५ सो न स्थिर अर्थात् चलायमान है अरुनिरसदेह जन्म मरण देता है अरु पराये आत्मा का पीड़ा कारक जो तप सो तामसी कहाता है ६ अरु जो विधिवाक्य प्रमाण के अर्थ देश कालकेयोग से सत्पात्रमें श्रद्धा करके जो दान दियाजावे सो सात्विकहै ७ अरु जो उपकार तथा फल की इच्छा कररहे जनो करके जो दान दिया जावे अथवा क्लेश सेती भक्ति करके दियाजावे तो वो राजसकहाता है ८ अरु जो देशकाल रहित अर्थात् अशुभ समय अरु अपवित्र देशमें अरु कुपात्रमें जो अवमानसे दानदियाजावे अरु जो अमत्का रसे दानदिया है सो तामस मत है ९ अरु हे राजन् तू निश्चल चित्तकरके तीन प्रकार के ज्ञानको भी सुन अरु तीन प्रकारका कर्म अरु कर्ता हम तुमको प्रसंग से वर्णन करतेहैं १० सोकि जो नाना प्रकार के प्राणियो में जो केवल हमहींको देखताहै जो वेनाशमान् हैं तिनमें नित्यही हमे देखे तो तिस ज्ञानको हे राजन् तूसात्विक जान ११ अरु जो भक्त भावना के अनुकूल भया तिनमें अविनाशी हमको भिन्न २ भये जाने तो वो ज्ञान राजसी कहा है १२ अरु जो कारण रहित अरु मिथ्या अरु जो शरीरही को आत्मासमझके कियाजावे अरु जो खोटे अरु तुच्छ प्रयोजन का विषयहो अर्थात् क्षुद्र देवादि भक्तिसे तुच्छ ज्ञानभया हो सो तामस कहाता है १२ अब हे राजन् हमसे कहा भेदसेती तीन प्रकार काही कर्म जान सो कि जो कर्म कामना द्वेष अरु हठ इनसे रहित हो ऐसा जो निज नित्य कर्म है १३ अरु जो कर्म फल की इच्छा के बिन कियागया है सो सात्विक कर्म कहावा है अरु जो बहुत क्लेशसेती अरु फल की इच्छा करके जो कर्म किया गया है १५ अरु जो मनुष्यों से हठसेती कियाजावे सो राजस कर्म कहाताहै अरु अपनी शक्ति को नहीं अपेक्षा से अर्थात् श्रद्धा से बाहर अरु जो द्रव्य

व्ययकारी कर्म है १६ अरु जो अज्ञान से क्रियाजावे सो तामस कर्म कहाता है हे राजन् हमसे तीन प्रकार का कर्ता कहाज ता सो सुनो १७ जो धैर्य उत्साह वाला अरु जो सिद्धि असिद्धि में समान अरु-ज बिकार को प्राप्त न होवे अरु जो अहंकार रहित है हे राजन् सो सात्विक कर्ता है १८ अरु जो हर्षशोकको करता अरु हिंसा फलेच्छा इन सहित हो अरु जो अपवित्र अरु लोभी हो सो राजस कर्ता कहाता है १९ अरु जो प्रमाद अज्ञानसहित अरु पर ये उच्छेदन अर्थात् बिगाड़में परायण अरु मूर्खहै अरु जो आलसी अरु वृथा तर्क करता सो कर्ता तामसी मत है २० अरु हे राजन् तुम तीन प्रकार केही सुख दुःखो को क्रमसे सुनो सो सात्विक राजस अरु तामस हमसे कहाजाता है २१ जो पहिले तो विष के समान भाशमान हो अर्थात् कठिन जानाजावे अरु जो दुःख का अंत कर्ता अरु जो आवृत्ति करके अर्थात् वेर २ इच्छा किया जावे अरु जो परिणाम में अमृत के समान होजावे २२ अरु जो अपनी बुद्धि की प्रसन्नता से हो सो सात्विक सुख कहाता है अरु जो विषयो का भोग पहिले अमृत समान भाशताहै २३ अरु अंत में हलाहल विषके समान अर्थात् महा दुःखदायी होजावे सो राजस सुख कहाताहै अरु जो आलस्यप्रमाद निद्रासेउ पन्न २४अरु जो सदा अपने को मोह कारी है सो सुख तामसी कहाता है अरु जो इनसे अरु तीन गुणो से रहितहो २५ अरु हे राजन् ओंतत्सत् इस भेद से ब्रह्म भी तीन प्रकार काही है हे भूप तीनो लोको में जो ये सम्पूर्ण प्रपंच है सो सब तीन २ प्रकार काही है २६ अरु ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये स्वभाव से भिन्न२कर्मवाले हैं सो तिन-को अरु तिनके कर्मो को हम संक्षेप से तुमको वर्णन करते हैं २७ सो कि भीतर बाहर की इंद्रिय वश करना अरु ऋजुता क्षमा अरु नानाप्रकार के तप अरु शुद्धि अरु आत्मा का दोनो प्रकारकाज्ञान २८ अरु वेद शास्त्र पुराणो का अरु स्मृतियोंका ज्ञान अरु तिनके अर्थ का अनुष्ठान अर्थात् बिचार करना ये ब्राह्मणो का कर्म बता-

चाहे २६ अरु दक्षता शूरता चतुरता अरु युद्ध में पीठ न दिखानी अरु शरणागत को पालन अरु दान धैर्य अरु स्वाभाविक तेज ३० अरु प्रभुत्व अरु मनोन्नति सुनीति अरु लोक पालन अरु वेदोक्त पंचकर्मों का अधिकारी होना यह क्षत्रियों का कर्म कहाहै ३१ अरु नानाप्रकार की वस्तु मोल लेना अरु धरती वाहना अरु गौवोंकी रक्षा अरु तीन कर्मों का अधिकार अर्थात् खेती वणिजी गोरक्षा ये वैश्य कर्म कहा है ३२ अरु दान देना अरु ब्राह्मणो की टहल अरु सदा शिवजी की सेवा करनी हे राजन् ये ऐसा शूद्रों का कर्म कहा है ३३ सो ये चारो निज २ कर्म में परायण अरु हमारे समर्पणार्थ सव कर्म करने वाले तो हे राजन् वे हमारे प्रसाद से निश्चल स्थान को प्राप्त होतेहैं ३४ इस प्रकार से हे राजन् हमने तुमसे प्रसन्नतासेती ये योग शास्त्र कहा है जो सांगोपांग अरु अनादि सिद्धभया अरु विस्तार सहित है ३५ सो हमसे कहे इस योगका तुम अभ्यास करो हे राजन् जो ये योग हमने किसीसे नहीं कहा है इसे तू गुप्त कर फिर इसीसे तू परम सिद्धि को प्राप्तहोवेगा ३६ श्री ब्रह्माजी बोले कि वो राजा वरेण्य प्रसन्न भये महात्मा तिन विनायकजी का ये वचन सुनकर अरु यथावत् करता भया ३७ सो कि राज्य कुटुम्बको तजिकर वेगसे वनकोचलागया अरु उपदेश किये योगका अनुष्ठान करके मोक्षको प्राप्तभया ३८ जो इस अत्यंत गुप्त योगशास्त्रको श्रद्धाकरके श्रवणकरै सोभी मोक्षको प्राप्त होता जैसे योगीजनहैं तैसावोहै ३९ जो बुद्धिमान अर्थ करके इस योग शास्त्रको सुनावै तो जैसे योगीजन तैसेही वोभी मोक्षको प्राप्त होताहै ४० जो गुरुमुखसे अर्थ सहित सुनकर इसगीताका सम्यक् प्रकार अभ्यासकरै अरु जो गणेशजीकी पूजा करके नित्यही इसका पाठकरै ४१ सो कि एक काल वा दो काल अथवा तीनोकाल इसको पढ़ै तो ब्रह्मभये तिसके दर्शन सेही जनमुक्तिको प्राप्तहोते है ४२ अरु नतो यज्ञों से अरु न दानों से अरु न व्रत अग्निहोत्र अरु महाधनलगाने में अरु न सम्यक् अभ्यास किये वेदोंमें जो भली

भांविजाने अरु अगी सहित ४३ अरु न (राया अवर्थों से अरु न श्रेष्ठ विचारे भये शास्त्रों से श्रेष्ठ ब्रह्म प्राप्तहोताहै जो इससे प्राप्त होताहै ४४ अरु जो पापी ब्रह्महंता अरु मद्य पीनेवाला अरु चोर अरु गुरुसेजगामीभी अरु जोइनचारों महापापियोंका संपर्कीहो ४५ अरु जोपापी स्त्रियोंकी हिंसा अरु गोहिंसा इनके करने वालेभी हैं सोवे सारे तिन २ पापोंसे छूट जातेहैं जो इसगीताका पठन करते हैं ४६ अरुजोसावधानभया नित्य इसका पढ़ताहै सो गणेशजीहो है इसमें संशय नहींहै अरु जो गणेश चौथके दिन इसेपढ़े सोभी मोक्षको प्राप्तहोताहै ४७ अरु और भी तिस २ तीर्थादिकपे जाके अरुन्हाय गजाननजीकाअर्चन करके जो भक्तिकरके एकवेरभीइस गणेश गीताका पाठकरे तो ब्रह्मभूय अर्थात्ब्रह्मको प्राप्तहोताहै४८ अरु जो भक्तिमान् मनुष्य भाद्रपदमास शुक्लपक्ष को चौथ के दिन पार्थिव अर्थात् मृत्तमयी गणेशजीकी चतुर्भुज मूर्ति बनाकर ४९ जो वाहन अरुआयुधोंसहित तिसे विधिवत् पूज करकेजो इसगीताको सातवेर प्रयत्नसेपढ़े ५० तो प्रसन्नभये गणेशजी तिसकोउत्तमभुक्ति देतेहैं अरु पुत्र पौत्र धन धान्य पशु रत्न संपदादेतेहैं ५१ अरु विद्यार्थी को विद्या आवे अरु सुखार्थी सुखको प्राप्तहोवे अरु काम वाला सब कामोंको प्राप्तहोवे अरु वेसब अतमें मोक्षको प्राप्तहोते हैं ५२ इस प्रकार श्री महादिगणेशपुराण उत्तर खंड द्वादशसहस्र संहिता श्री मत्गणेशगीता सूतनिपदार्थगर्भ में तथा गणेशजी अरु राजावरेण्यकेसंवादमेंत्रिविधवस्तुनिरूपणाइसनामसेअध्यायएकादशअर्थात्११भयाहै ॥

दो० तीन वेद अरु नंद शशि संवत आश्विन मास।
शुक्ल पष्ठ रविवार को शुक्ल रचित आभास ॥ १ ॥
सरल देश भाषा विषे पूर्ण भयो अनुवाद।
वाद त्याग सहिहैं सुजन जो कछु लिखित प्रमाद ॥ २ ॥

अर्थात् संवत् १९४३ आश्विन शुक्ल ६ रविवारके दिन शुक्लो-

पनासक पंडित देवीसहाय नारनवलीय करके बनाया ये प्रतिबिंब रूप श्रीगणेश गीताका सरल देश भाषा अनुवाद समाप्त भया सो विद्वान् कृपा पूर्वक अवलोकनकर इसके गुणों का ग्रहण करें श्री गणेशजीसहाय करो ॥

दो० सर्व गुणेश गणेश की कीरति कीरति जाहि।
तो गणेश गीता तिलक तिलक करैं लखि ताहि ॥ १ ॥

अर्थात्

संपूर्ण गुणोंके ईश गणेशजीकी कीर्ति की प्रीति जिनको है सो ये इस गणेशगीताकी टीकाको देखके मस्तक पर चढालेवेंगे १ ॥

एकसौ उंचास का अध्याय ॥

मौद्गलाधी व० व्यासजी का सम्वाद पूर्व होना वर्णन है।

श्रीब्रह्माजी बोले कि विभु विनायकजी ऐसे निज पूजाको स्वीकार करके भक्तोंके काम पूर्ण करते तहांही राजपूजित स्थानमें बसतेभये २ व्यासजीबोले कि विनायकजीके माहात्म्यमें कथा भिन्न२ निरूपण करी हैंसोकि वरेण्य के घर अवतार होकर तौसिंदूरासुर मारागया ३ अरु गजासुरके मुखकी भी शांतिभई जिससे हे चतुराननजी वे गजानंनजी भये अरु यहांही आयेते तिनका पार्वतीजी के गर्भसे उत्पन्न होना कहाहै ४ सोकि गौरीजीके मैलसे जन्मे फिर गजाननजीभये ऐसेकहाहै इससे हे देवजी मेरेमहा संदेह होरहाहै तुम्हारेसे और संशय छेदन कर्ता तीन भुवनमें कोई नहीं है ॥ ब्रह्माजी बोले कि हेव्यास नानाशक्ति युक्त इनविभु विनायकजीमें तुमको संशय नहीं करना येतो निज इच्छा वशसेतौ अनेकरूप भेदसे अनेकरूप धारलेते हैं ॥ सोकि येगजाननजी कहीं तौ शिवजीके मुखसेतौक्रोधसे उत्पन्न अरु कहीं गौरीजी के तेजसे तथा तिनके उदरसे जन्मे हैं ६ कहीं गौरीजी के मैलसे भी भयेहैं अरु कहीं दोनूंके नालदोयवाले भी भयेहैं अरुकहीं पंचमुखकहीं दशमुखकहीं दशभुजा जिनके ऐसे

अरु कहीं द्वादश हाथवाले अरु कहीं हजार भुजो से शोभित हैं सोसपूर्ण शास्त्रोंमें इनके नानाप्रकारके ध्यानहैं ८ सोहे मुनिव्यास समर्थ इनविनायकजीमें संशयतथा आश्चर्यसर्वथा न कर्तव्यहैलिंग पुराणमें ब्रह्मा अरु विष्णु ये शिवजीसे उत्पन्न भये कहेहैं ९ अरु स्कन्द पुराण में ब्रह्माजीके नेत्रसे शिवजी की उत्पत्ति कहीहैं अरु विष्णु शिवजीको ध्याते अरु शिवजी विष्णुजीका ध्यान करते हैं १० सोकि तिनके तारक पचाक्षर महामंत्र का पठन करतेहैं अरु जो सौकरोडरामचरित्र तीनप्रकारकिया अर्थात् स्वर्गमर्त्यपातालमें विभागकियागयाहै ११ सो मृत्युलोकमेंशिवजीने तारक मंत्रताको स्थापन कियाहै अरु कहीं शिवजीसे सृष्टि रचना कहीहै कहीं ब्रह्माजीसे अरु कहीं हरिसे सृष्टिकहीहै १२ अरु कहीं भगवतीजीसे रचना कहीहै अरु कहीं सूर्य्यजीसे तथा गजाननजीसे कहीहै अरु कहीं ब्राह्मण अर्थात् कश्यपजीसेही कहीहै सो सब शास्त्रोंमें माना गयाहै १३ जोइस विषयमें संशयकरै सो निश्चयही नरकको जाता है ब्रह्माजीबोले कि हेमुनिव्यास ऐसेहमने तुमकोत्रेता युगकी सारी कथा कही है १४ अबहम तुमको कलियुग की कथा कहेंगे हे सुने कलियुग निकट आये येमनुष्य आचार भ्रष्ट अरुझूठे होजावेंगे १५ सोकि ब्राह्मण वेद वर्जित अरु स्नान सन्ध्यासे रहितहोंगे अरुवे पूजना पुजाना अरुदान कभी भी नहीं करेंगे १६ अरु दुष्टोंसे दान लेवेंगे जो अत्यंत दुःप्राप्य अर्थात् न ग्राह्यहै सो, अरु पराया अपवाद परनिन्दा अरुपराईस्त्री ढाढसे भोगना १७ ये ये कर्मसारे जन करेंगे अरु विधिका लोप अर्थात् शास्त्र मर्य्यादा का सर्वथा त्याग करेंगे अरु सर्वत्रही जन अवश्य विश्वासघात करने लग जावेंगे १८ अरु विधि का लोपभये वे पृथ्वीपर मिथ्यासा खावेंगे अरु हेमुनि व्यास मेघकहीं भी वर्षा नहीं करेंगे १९ तो भारी नदियों के तीरके देशोंमें जनखेती करेंगे अरु जो बलवाला है सोही निज बलसे निर्बल मनुष्य के धनको छीन लेवेगा २० तिससे भी फिर दो जन हरलेवेंगे तिनसे फिर तीन बली जन बलसेती लेलेवेंगे अरु शूद्र

वेद पढ़नेलग जावेंगे अरु ब्राह्मण शूद्रों के कर्म करेंगे २१ अरु क्षत्रिय वैश्यों का अर्थात् निकृष्ट कर्म करने लगेंगे अरु वैश्य शूद्रों का कर्म करेंगे अरु ब्राह्मण चांडालों से दान लेने लगेंगे २२ अरु वे दरिद्री अरु हाय २ करते बेचेत अर्थात् दुःखी होजावेंगे अरु कहेंगे कि हमने कुछ भी धन नहीं ग्रहण किया अर्थात् मांगतेजावेंगे अरु लटतेजावेंगे सो कि लेकरके फिरभीकार्यके लिये पर से धन मांगेंगे अर्थात् संतोष रहितहोंगे अरु उत्कोचनाम संकुचित अर्थात् थोड़ सेको लेकरकेही वृथा साक्षीदेवेंगे २३।२४ अरु सज्जनों की निन्दा तथा खोटों से मित्रता करेंगे अरु ब्राह्मण वृथा मांस भक्षण करेंगे २५ अरु सज्जनों का तौ वंश छेद अरु खोटे जनों का बढाव होगा अरु सारे जन इन्द्र आदिक सब देवोंको छोड़कर २६ भूत प्रेत पिशाचों के भजन में आसक्त मन होजावेंगे अरु नाना विधि के भेष बनाकर ब्राह्मण लोग उदर पूर्ण करेंगे २७ अरु कई क्षत्रिय भिक्षामागेंगे जो निज कुलमें अनुचित अर्थात् निन्दित है अरु व्रत अरु निज २ नियमों को किसी प्रकार से भी नहीं करेंगे २८ अरु ये जन भूमि में वो कर्म करेंगे जिनसे वर्ण संकरहोवे सो किकलियुग में स्त्रिये जो पतिव्रता हैं सो भी भ्रष्टव्रता अर्थात् छूटे नियम वाली होजावेंगी २९ अरु सबलोग म्लेच्छ सरीखे अरु परायाधन चुरानेवाले होंगे अरु निर्दयी अरु कुमार्ग में आसक्त अरु सत्य से रहित अर्थात् मिथ्यावादी होंगे ३० अरु धरती तौ खेती हीन अरु वृक्ष रस से रहित होंगे अरु पांचवें तथा छठेही वर्षमें स्त्रियों के संतान उत्पन्न होने लगेंगी ३१ अरु तब कलियुग में सोलह ही वर्ष की पूर्ण आयु होजावेगी तब तीर्थ अरु देव स्थान येसब गुप्तरूप होजावेंगे ३२ ऐसे पापके प्रवर्द्धमानभये सम्पूर्ण धर्म प्रयोजनमात्र ही रह जायगा अरु तब उपवास परायण होंगे अर्थात् भूखेही मरेंगे ३३ सो कि स्वाहा स्वधा वषट्कार इनसे रहित अरु सब भीत होंगे फिर वे आरोग्य रूप देव गजाननजी की शरण जावेंगे ३४ सो तिनकी नाना प्रकार से स्तुति नमस्कार करेंगे सो कि सब

अरु कहीं द्वादश हाथवाले अरु कहीं हजार भुजों से शोभित है सोसपूर्ण शास्त्रोंमें इनके नानाप्रकारके ध्यानहैं ८ सोहे मुनिव्यास समर्थ इनविनायकजीमें संशयतथा आश्चर्यसर्वथा न कर्तव्यहैलिंग पुराणमें ब्रह्मा अरु विष्णु ये शिवजीसे उत्पन्न भये कहेहैं ९ अरु स्कन्द पुराण में ब्रह्माजीके नेत्रसे शिवजी की उत्पत्ति कहीहैं अरु विष्णु शिवजीको ध्याते अरु शिवजी विष्णुजीका ध्यान करते हैं १० सोकि तिनके तारक पचाक्षर महामत्र का पठन करतेहैं अरु जो सौकरोड़रामचरित्र तीनप्रकारकिया अर्थात् स्वर्गमर्त्यपातालमें विभागकियागयाहै ११ सो मृत्युलोकमेंशिवजीने तारक मत्रताको स्थापन कियाहै अरु कहीं शिवजीसे सृष्टिरचना कहीहै कहीं ब्रह्माजीसे अरु कहीं हरिसे सृष्टिकहीहै १२ अरु कहीं भगवतीजीसे रचना कहीहै अरु कहीं सूर्य्यजीसे तथा गजाननजीसे कहीहै अरु कहीं ब्राह्मण अर्थात् कश्यपजीसेही कहीहै सो सब शास्त्रोंमें माना गयाहै १३ जोइस विषयमें संशयकरै सो निश्चयही नरकको जाता है ब्रह्माजीबोले कि हेमुनिव्यास ऐसेहमने तुमकोत्रेता युगकी सारी कथा कही है १४ अवहम तुमको कलियुग की कथा कहेगे हे मुने कलियुग निकट आये येमनुष्य आचार भ्रष्ट अरुझूठे होजावेंगे १५ सोकि ब्राह्मण वेद वर्जित अरु स्नान सन्ध्यासे रहितहोंगे अरुवे पूजना पुजाना अरुदान कभी भी नहीं करेंगे १६ अरु दुष्टोंसे दान लेवेंगे जो अत्यत दुःप्राप्य अर्थात् न ग्राह्यहै सो अरु पराया अपवाद परनिन्दा अरुपराईस्त्री ढाढसे भोगना १७ ये ये कर्मसारे जन करेंगे अरु विधिका लोप अर्थात् शास्त्र मर्य्यादा का सर्वथा त्याग करेंगे अरु सर्वत्रही जन अवश्य विश्वासघात करने लग जावेंगे १८ अरु विधि का लोपभये वे पृथ्वीपर मिथ्यासैं खावेंगे अरु हे मुनि व्यास मेघकहीं भी वर्षा नहीं करेंगे १९ तो भारी नदियों के तीरके देशोंमें जनखेती करेंगे अरु जो बलवाला है सोही निज बलसे निर्बल मनुष्य के धनको छीन लेवेगा २० तिससे भी फिर दो जन हरलेवेंगे तिनसे फिर तीन बली जन बलसेती लेलेवेंगे अरु शूद्र

वेद पढ़नेलग जावेंगे अरु ब्राह्मण शूद्रों के कर्म करेंगे २१ अरु क्षत्रिय वैश्यों का अर्थात् निकृष्ट कर्म करने लगेंगे अरु वैश्य शूद्रों का कर्म करेंगे अरु ब्राह्मण चांडालों से दान लेने लगेंगे २२ अरु वे दरिद्री अरु हाय २ करते वेदेत अर्थात् दुःखी होजावेंगे अरु कहेंगे कि हमने कुछ भी धन नहीं ग्रहण किया अर्थात् मांगतेजावेंगे अरु लटतेजावेंगे सो कि लेकरके फिरभीकार्य्यके लिये पर से धन मांगेंगे अर्थात् संतोष रहितहोंगे अरु उत्कोचनाम संकुचित अर्थात् थोड़ सेको लेकरकेही वृथा साक्षीदेवेंगे २३।२४ अरु सज्जनों की निन्दा तथा खोटों से मित्रता करेंगे अरु ब्राह्मण वृथा मांस भक्षण करेंगे २५ अरु सज्जनों का तौ वंश छेद अरु खोटे जनों का वढाव होगा अरु सारे जन इन्द्र आदिक सब देवोंको छोड़कर २६ भूत प्रेत पिशाचों के भजन में आसक्त मन होजावेंगे अरु नाना विधि के भेष बनाकर ब्राह्मण लोग उदर पूर्ण करेंगे २७ अरु कई क्षत्रिय भिक्षामांगेंगे जो निज कुलमें अनुचित अर्थात् निन्दित है अरु व्रत अरु निज २ नियमों को किसी प्रकार से भी नहीं करेंगे २८ अरु वे जन भूमि में वो कर्म करेंगे जिनसे वर्ण संकरहोवे सो किकलियुग में स्त्रियें जो पतिव्रता हैं सो भी भ्रष्टव्रता अर्थात् छूटे नियम वाली होजावेंगी २९ अरु सबलोग म्लेच्छ सरीखे अरु पराया धन चुरानेवाले होंगे अरु निर्दयी अरु कुमार्ग में आसक्त अरु सत्य से रहित अर्थात् मिथ्यावादी होंगे ३० अरु धरती तौ खेती हीन अरु वृक्ष रस से रहित होंगे अरु पांचवें तथा छठेही वर्षमें स्त्रियों के संतान उत्पन्न होने लगेंगी ३१ अरु तब कलियुग में सोलह ही वर्ष की पूर्ण आयु होवेगी तब तीर्थ अरु देव स्थान येसब गुप्तरूप होजावेंगे ३२ ऐसे पापके प्रवर्द्धमानभये सम्पूर्ण धर्म प्रयोजनमात्र ही रह जायगा अरु तब उपवास परायण होंगे अर्थात् भूखेही मरेंगे ३३ सो कि स्वाहा स्वधा वषट्कार इनसे रहित अरु भय भीत होंगे फिर वे आरोग्य रूप देव गजाननजी की शरण जावेंगे ३४ सो तिनको नाना प्रकार से स्तुति नमस्कार करेंगे सो कि सब

विघ्न विनाशक देवेश विनायकजी से प्रार्थना करेंगे ३५ फिरवेसत्र विचार करके प्रकट होवेंगे गजाननजी जो सूप सरीखे कानोंवाले अरु नाम से (धूम्रवर्ण) अर्थात् धूवेंके जैसा वर्ण जिनका ऐसा ३६ सो वे नील अश्वपर चढ़कर खड्ग हाथलिये अरु क्रोध से जलरहे सो वे निज इच्छाही से अपनी नानाप्रकारकी सेना बनालेवेंगे३७ अरु विनही परिश्रम से वे महा अस्त्र शस्त्र रचलेवेंगे अरु फिर तिस सेना से अरु निज तेजसेती तिन म्लेच्छमयेलोगोंका वधकरेंगे३८ सो कि सब महाम्लेच्छों को मारडालेंगे अरु जो ब्राह्मण वनेवासी गुफाओं में विलीन अर्थात् फल भक्षण कर्ता लुके भयेहैं ३९ तिन्हें वहां से निकाल अरु पूज करके देवों के राजा विघ्नराजजी तिन को भूमि देवेंगे अर्थात् फिर भी तिन्हें राजा बनावेंगे ४० तव तो सतयुग भये सब ससार धर्म मय ही होजावेगा ऐसा करके फिर (धूम्रवर्णजी) अंतर्द्धान होजावेंगे ४१ श्री ब्रह्माजी बोले कि हेव्या-सजी ऐसे हमने युग २ में महात्मा गणेशजी के नाम अरु रूप तुम से कहे हैं ४२ अरु जो तिनके आश्चर्य रूप कर्म थे सो सब कहे सब प्राणि जिनके श्रवणही से मोक्ष को प्राप्त होते हैं ४३ अरु इनके और भी जो रूप हैं तिनको कहनेको ऐसोसामर्थ्य नहीं है जहां चारो वेद कुंठित भये अर्थात् कहते २ चुपहोरहे तोफिरो अरु शेषजी को भी तिनकी महिमा के कहने में कोनही कहाहै सो तुम अब तिनका अनुठान करने को चलेजावो हम तुम्हारा विश्वास करते हैं ४४।४५ मुनि भृगुजी ने कहा कि हे राजन् सोमकांत व्यासजी ब्रह्माजी के मुखमें सब पाप नाशक तिनविना-यकजी की कथाको सुनकर प्रसन्न मनभये ये कहतेभये ४६ व्यास जी बोले कि हे ब्रह्माजी इस महा आश्चर्य्य रूप आख्यानको सुन के भी मैं तृप्त नहीं भयाहू अर्थात् ये बड़ा उत्तम आख्यान है मैं धन्यहूं अरु आप करके अनुग्रह किया गयाहूं जो कि आपने मेरे सारे संशय ४७ गणेशजी का चरित्र है आश्रय जिसमें ऐसे कथाके प्रसंगसेदूरकिये हैं सो अमृत पीतेकोसो नाई सनते २मेरी

तृप्ति नहीं होतीहै ४८ इसके श्रवण मात्र से जन्म जन्मातर का भी इकट्ठा किया पाप नाश को प्राप्त होताहै अरु सब काम सिद्ध होतेहैं ४९ पूर्व जन्म के पुण्य के प्रभाव से मनुष्यों को इसका श्रवण प्राप्त होताहै सो येसा सिद्धिदाता पुराण खोटे जन को सुनाना भी नहीं ५० तब तो व्यासजी स्वयंभू ब्रह्माजी से ऐसेकह अरु तिन्हें नमस्कार कर कर अरु तिनकी आज्ञा लेकर तप करने को उत्तम वनमें चलेगये ५१ तहां एकांत चित्त बैठे एकाक्षर मन्त्र को जपते भये तो तिन मुनि व्यासजी को तपस्या करते २ बारह वर्ष व्यतीत होतेभये ५२ जिस वनमें उत्तम २ कंद फल अरुशीतल निर्मल जल था अरु जहां प्रचण्ड पवन नहीं चलता अरु न वहां घाम जलनदेये अर्थात् शीतलतासे शोभितवनथा ५३ तब तो तिन व्यासजी के आगे गजाननजी प्रकट भये अर्थात् व्यासजी को निज दर्शन दिया ५४ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडेमुनिव्यासजीकाविसर्जनहोनाइसनामसेएकसौउनचास अध्यायभया १४९ ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

श्रीगजाननजीकाव्यासजीपरप्रसन्नहोनावर्णन ॥

राजा सोमकांत ने पूछा कि हे भृगुजी देव गणेशजी महात्मा व्यासजी के आगे कैसे प्रकट भये सो सब कहिये क्योंकि जिसे सुनकर पापका क्षय होताहै १ भृगुजी बोले कि हेभूमिपते सोमकांत जैसे देव विनायकजी तिन मुनि व्यासजीके आगे प्रत्यक्षभये सो सब वृत्तांत हम कहते हैं तुम आदर सहित तिसे सुनो २ जो कि लाल माला वस्त्र धारण किये लाल चंदन अरु [illegible] २ ही तिलक लगाये सब देहमें भी तिसही लपेटे अरु कम[illegible]ले अरु सिंदूर से रक्त मस्तक जिनका ऐसे गजानन[illegible] अनेक सूर्य सरीखे प्रकाशवाले अरु सुंदर कुंडलों [illegible] से शोभित मुकुट धारण करते अरुनाग लपटाये [illegible] जी गणविनायकजीको ऐसे देख व्यासमुनिचकित

लगे अरु मंत्रका स्मरण करके अर्थात् मंत्र पढते २ ही मूर्च्छा को प्राप्तहोते भये ५ तबतो ति हैं गजाननजी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ व्यास तुममतडरो जि है तुम दिनरात ध्यातेहो सोही हम तुम्हारे पास आगयेहै ६ जोहम ब्रह्मादिकों करके भी दुष्प्राप्य सोहमतुम्हें वरदेनेको आयेहै भृगुजीबोले कि ऐसो तिनकी मधुरवाणीको सुन के मुनिश्रेष्ठ व्यासजी हर्षते भये७ अरु तिनके चरणों में मस्तक धर करबोले कि मै धन्यहूं मेरे माबाप धन्यहै अरु फिरभीमें अरु ये पृथ्वी वृक्ष धन्यहै ऐसे वारस्वारही कहतेभये ८ जिसहेतु मैने गुणोंसे परे अरुसर्व स्वरूप संपूर्णके आधाररूप आपको देखेहैं जो आप सच्चिदानद घन अरु सर्व कारणके भी कर्त्ताहो ९ ऐसेतिन विनायक जीकी स्तुति करके व्यासजी येप्रार्थना करते भये व्यासजी बोले कि हेगणेशजी आपमेरी सारी भ्रांतिदूरकरके अरु अपनेमें मुझको दृढभक्ति देवो १० जिससे मै अठारहपुराणोंके करने में समर्थ होऊं अरु हे विभो आपके स्तुति करनेमेंभी मेरी सामर्थ्यहो तैसाकरो ११ अरु हेदेवोंके ईश गणेशजी जो आप प्रसन्नहो तो मेरेमनमें वसो श्रीगजाननजीबोले कि हेवत्स व्यास जो२ तुमने प्रार्थना किया सो २ सब तैसा २ ही अबही होगा १२ सोकि तुम (व्यास) नामवाले सबकेमाननीय सबकेपवित्र करनेवालेमेंभीपावन अर्थात् पवित्रकर्त्ता होवोगे अरुतुम अप्रत्यक्ष ज्ञानवान् अरु गुरुकेभी गुरु अर्थात् सर्व ज्ञाता होवोगे १३ अरु विख्याततासे अरु गुणो करके परम नारायण रूपहोगे कीर्त्ति लक्ष्मीसेभी सुशोभित अरु अठारह पुराणोंके तुमहीं कर्त्ता होवोगे १४ अरु हेमुनीश्वर अठारहही उपपुराणोंके कर्त्ता भी तुम्हीं होवोगे तुमने पाखंड वशसे हमारा पूजन नहीं किया अरु न हमारा स्मरण किया इससे तुम्हारी वाणीका स्तंभन होगया अर्थात् तुम्हारी वाक्शक्ति रुकगई अब ब्रह्माजीके मुखसे जो तुमने हमारा महात्म सुना १५।१६ तिससे तुम्हारा सबपाप विलय भया अबहे निष्पाप व्यासजी हम तुम्हारे उदरमें प्रवेशकरतेहै भृगुजीबोले कि ऐसे कहकर वे विनायकजी व्यासजीके उदरमें प्रवेश करतेभये १७

तौवे मुनिव्यासजी अतुलित प्रकाशजोकोटि सूर्य्योंके समानसो ऐसे तिस प्रकाशको प्राप्तहोते भये तौतिससे सबदिशोंकोभी प्रकाशित करते भये फिर गजाननजी की महाभारी मूर्ति बनाकर मंदिर में स्थापन करते भये अरु यथाविधि नानाप्रकार के भिन्न २ उपचारों करकेतिनका पूजन करतेभये १६ अरु सो स्थान (सिद्धिक्षेत्र) ऐसे विदित भया जो निजदर्शन से सबलोको का पवित्र कर्ता अरु जो अनुष्ठानी जनों को नानाप्रकारकी शुभमंत्र सिद्धिदेने वाला२० ऐसे वे (व्यासनारायणजी) गजाननजी को ऐसे कह अरु तिनसे आज्ञालेकर जो गणेशजी का पुराण ब्रह्माजी के मुखसे सुनाथा२१ सो सब मुनि वैशंपायनजी को सुनाते भये फिर सोही यह भूमि में विख्यात होताभया सोई सब अब हे राजन् सोमकांत हमने भी तुमसे कहा है २२ सो इसके समान तीनो लोकों मेंभी कुछ पवित्र नहीं है जो हे राजन्परम आनन्द दायक यह पुराण है २३ सो हे राजन् सोमकांत इस पुराण को तुम खोटेजन को कभी भी मत सुनाना अरु जो विशेष नम्रता युतभक्तहै तिन्हें तुम प्रयत्न से इसे सुनावना २४ अरु हमकरके भी यही सदा जपा अरु ध्याया जाताहै सो दयाके योगसे हमने तुमको भी यह सुनादिया है २५ सो अब तुम गजाननजी में तत्परभये तिनके जपमें परायणहोवो अर्थात् तिनकेही मन्त्रको जपो २६ इतिश्री गणेशपुराणे उत्तरखंडे व्यासानुग्रह तथा सिद्धिक्षेत्र वर्णन इसनामसे१५०काअध्यायभया

एकसौ इक्यावन का अध्याय॥

सोमकांत के लिये स्वर्गसे विमान आना वर्णन किया है।

श्रीसूतजी शौनकआदिकों को कथा का प्रसंग सुनाते हैं कि ऐसे वो सोमकांत नित्यही मुनि भृगुजीसे तिस कथा को सुनके तिसके फलको जलहाथ में लेकर तिस सूखे आमकेदरख्तके अर्थात्
१ तिसको जड़में छोड़ता भया १ तो बरस दिन बीते वो आम पत्ते अरु फूल फलों से संयुक्त सुंदर अत्यंतही शोभित भया जो पुराण

श्रवण के फलसे समृद्ध २ अरु सुन्दर प्रकाशवान् राजा सोमकांत तिसकुष्ट जन्मरोग को त्यागके न क्षत अर्थात् घाव रहित होगया अरु देह दुर्गंधिको त्यागके सुगंधवान् भया ३ सो दशो दिशों में फैलनेवाले तिस सुगन्धिसे बिखेद भया सोमकांत दिव्य देह पाता भया तौदिव्यदेह धारीसूर्य सरिखे प्रकाशवाले अरु कोटि चन्द्रमा के समान सुन्दरतावान् इस राजा सोमकांत को ४ सब लोग देख कर आश्चर्य करने लगे कि ये तैसा कुरूपथा अरु अब ऐसासुन्दर कैसे होगयाहै दोषहारी गणेश पुराणके श्रवण के महात्मसे ५ भृगुजीने कहा कि हेराज केशरिन् तेरेको पुराण के श्रवण से सिद्धि प्राप्तभईहै सो अवतुम निज पुत्र मंत्री सहितजनों प्रतिचले जावोहु जोपुत्र चिरकालसे चाववाला तिसे बरसदिन के अनन्तर देखकर तू हर्षको प्राप्तहोगा श्रीसूतजीबोले कि राजा ऐसावचन सुन तिनमुनि जीके चरणोंमें जापड़ा ७ अरु आनंद समुद्रमें मग्नभया सोमकांत कहने लगा सोमकांत बोला कि हेमुने मन आपके तपका महाही महिमा देखाहै ८ अरु पुराण श्रवणका भी जिससेमै पतित कोढ़से गलित भी दिव्य देहधारी होगया सो मेरेमाता पिता अरु इस शरीर के निर्माता अर्थात् वनाने वाले हेमुनिश्रेष्ठ आपहीहो अरुये रससे रहित आमका वृक्षभी फल फूल सहितही होगयाहै १० सो इससे मैं आपको त्यागने नहीं चाहताहू मुझको पुत्रमंत्री जनोंसे क्याहोगा ऐसा तिसका वचन सुन मुनिजी फिर बोले कि किसी जन्मांतर के पुण्यसे तुमको इस पुराण का श्रवण भया हमारे मुख सेती तिससे तुमारा हननीय पाप नाशभयाहै ११।१२ गणेश जीके पुराण श्रवणकी महिमा किससेकहीजावे सो हेनरेश राजन् तुम हमें भूलोमत अर्थात् हमारा स्मरण रखना अरुनिज नगरको जावो १३ ऐसेतिन दोनोंके संवाद करते अर्थात् वतलाते २ प्रकाशमान बि-मान जो आश्चर्य्य कोटि सूर्य समान प्रकाशमान् महाभारी सो तिनों को देखपड़ा १४ तौभृगुजीने कहा कि हेराजन् तुम्हारे लेनेको ये महाभारी विमान आयाहै सोतुम इसपर सवार होकर गणेशजीके

कि नष्ट जावों १५ मुनिजन जिसविमानको अनुष्ठानसेभी न प्राप्तहों सोहीगणेश पुराण के श्रवणसे हेराजन् तुमको प्राप्तभयाहै १६ ऐसे तिनके कहते २ वो विमान छिनमेंही भूमितल पर आगया जो चार भुजोंसे विराजमान विनायकजी के गणोंसे सयुक्त १७ अरुजो मुकुट बाजूबंध हारआदिक आभूषणों से सजेभये अरु सुन्दरचन्दन अरु वस्त्रादिक पद्मफरशु इनसे शोभितथे १८ अरु जो नाचतीभई किन्नरों की कन्याओंसे अरु मृदंग ताल हस्तो करके अरु किन्नरों के राग गाने करके युक्त तो राजा इसे देखके फिर बोला कि १६ हे मुनि भृगुजी मैंने बहुतसे विमानों की बात सुनीथी सोही अबआप के तपके बल प्रतापसे मैंने अपने आगेही देख लिया २० मैंअपने कानोंसे बहुतोंके मुखसेती इनकी महिमा सुनताथा सोहीमैंने आप करके पुराण श्रवण करानेसे अनुभव किया अर्थात् प्रत्यक्ष जानाहै २१ ऐसे राजाके कहते २ वेदूत तिस विमानसे नीचे उतर करके सारे प्रमाण करके बोले सोकि सोमकांतको ये कहते भये २२ परे से परे जो देव विनायकजी तिन्होने तुम्हारे पुण्यसे तुमारा स्मरण किया सोकि गजाननजीने निजपुराणके श्रवण आदिक पुण्यकरके तुमको याद किया है २३ सोतिनों की आज्ञा से हम दूत विमान लेकरके आयेहैं पवित्र कीर्तिवाले आपको लेनेके लिये सो अबआप तिनके उत्तम लोकको पधारिये २४ सो तिनके निकट गये दर्शन करनेमे जन्म मरणसे छूटे भये तुम तहां तिन विनायकजीको प्रसन्नतामें निरंतर अर्थात् सर्वकालही सुखको प्राप्त होवोगे २५ सो येराजा तिनदूतों का ऐसावचन सुनकर देहके स्मरणसे रहितहो गया अर्थात् मुक्तके जैसा होगया अरुरोमांचितसे अकेठाभया सारा शरीर जिसका ऐसो सोमकांत गद गदाई बानीसे तिनें कहने लगा २६ कि परेसे परे देव अरुचर अचरके कर्ता ऐसे इनविनायकजी करके जोमें स्मरण किया गयाहूं जोदेव निर्गुण अरुगणोंके क्षोभकारी अर्थात् प्रेरक अरुसंसारके कारणहैं २७ सोहेदूतों दीननाथ तिन विनायकजीने मुझेयाद कियाहै जिन विनायकजी को ध्याकरके

ब्रह्मादिक अरु सनकादिक भी नहीं जानते २८ ऐसे अनंत गुणोंसे संपूर्ण विनायकजीने विमान भेजाहै जोनाना प्रकारके अवतारों वाले अरुनानारूपवान् अरु उत्कृष्टमाया वालेहैं २९ तिन्होंने मेरा स्मरण कैसे किया येबडा आश्चर्य है ऐसे कहकर राजा तिनमुनि भृगुजीसे बोला ३० कि आपकी आज्ञासे मैं विमान में बैठकर दूतों के साथ चलोंगा तुम्हारे अरु तिनविनायकजीके प्रसादसे सो आप मुझे भूलिने योग्यनहींहो ३१ सूतजी बोले कि तिसआश्चर्यसे व्याकुल भये अरु आनंद आंशू सहित अरु रोमहर्ष युक्तभये भृगुजी राजा को ३२ गलेमें बांह डालकर तिससे बोले कि हे राजन् तू महाफल वाला भाग्यवान्है सोतू गणेशलोक में जाकरकभी भी हमको न भूलना ३३ ऐसेकहके आपसमें हाथ मिलाकर वेदोनों बाहर आये तौराजा तिनमुनिजीको नमस्कार करके तिस विमानमें ३४ बैठके परम प्रसन्नभया तिनदूतोंके वचनसे शीघ्रही तौ तिसके दोनोंमंत्री अरुरानी सुधर्मा जोये इसकी सेवामें रहेथे सोभी उत्तम विमानपै चढते भये ३५ फिर दूतभीचढे तौ बाजेगाजोंसे भूम्याकाशशब्दित होगयातौ विमानकीशोभादेख सोमकांतप्रकटहोअर्थात् अत्यंतहर्षित भया ३६ सोकि येमुझको जन्मांतर के पुण्यसे सुंदर विमान मिला है ऐसा मानता भया तब तौ इन मुनि भृगुजीके देखते २ वोविमा न आकाश में ३७ गमन करताभया सो मृत्यु देहधारी इस राजा को सब से उत्तम पदकी प्राप्ति देखकर परम आश्चर्य को प्राप्त भये अरु तिन दूतों को नमस्कार करके निज स्थान को आते भये सोमकांत का आगे गमन भया ३८ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमें सोमकांतकोविमानकीप्राप्तिहोनाइसनामसेअध्याय१५१भयाहै॥

एकसौबावनकाअध्याय॥

श्री सूतजी बोले कि तब तौ तिस सोमकांत ने देव विनायकजी के लोक को देखा तौ हर्षित भया १ तबतौ सुधर्मा रानी तिससुंदर सभाको देखके निज पुत्र हेमकंठ का स्मरण करतीभई तौ स्नेहके

वशसे गद्गदाई भई बानीसे ये कहतीभई २ हे मेरा पुत्र (हेमकंठ) राज्यासन पर विराजमान अर्थात् बैठा होगा सो मा बापों की राह निहारता अर्थात् वो हम तुमको यादकर रहा होगा अब वर्ष दिन बीते ३ सो हे कृपा निधान स्वामिन् आप तिसे मुझको दिखा ने योग्य हो तब तौ तिस स्त्री के वचन को सुनके राजा शोचने लगा ४ राजाबोला मेरापुत्र (हेमकंठ) जीताहै वा मरगया होगा अरु मैंने तिसको कहा था वर्ष दिनमें तुम्हें हमारा दर्शन होगा ५ सो इस झूठ बोलने से मै किस नरक में जाऊंगा जो मैंने आजतक कभी भी न बोला था सो अब मै न तौ वहां अर्थात् पुत्रके पास जानेकों अरु न तिन विनायकजी के परम पद अर्थात् उत्तम लोक को छोड़नेको समर्थहूं अर्थात् अब में क्या करों ६ ये अब विरुद्ध वार्ता कैसे घटना कीजावे ऐसे राजा अत्यंत पुकार कर रोताभया तौ दूत तिनका शोक सुनके इस श्रेष्ठ सोमकांत को ७ बोले कि तुम्हारा रोना सुनके हमको दयाआई है सो हम क्षणमात्रको तुम्हें उतार देंगे तौ तिसे देख तुम शीघ्र चले चलना ८ तुम्हारा समाधान भये हमारी परम प्रसन्नता होवेगी तब तौ तिन दूतोंने देव जीके पुरसे उत्तर में तिस विमान को उतारा ९ जो श्रीगणेशजीके पुराण श्रवण से आया था तौ तिसकी कांतिकरके अरु बाजेगाजों से नादित नगर व्याप्त होगया १० अरु वे (सुबल) अरु (ज्ञानगम्य) मंत्री राजा को अरु दूतों को प्रणाम करके हेमकंठ के प्रति सब वृत्तांत कहने को आये ११ तौ क्षणमेंही राज्यासनपै विराजित तिस हेमकंठको देखा जो खिचेंभये तयार महाबली शूरवीरमुख्यों करके संयुक्त था १२ अरु जो मंत्री नगरवालों सहित उत्तम नृत्य देखरहा था तो तिन सबोंने सोमकांतके मंत्रीइन (सुबलज्ञानगम्य) दोनों को देखे १३ तो ही वे सारे शूरवीर अरु मंत्रियोंसहितहेमकंठ उठते भये तिन दोनोंके मिलने के लिये तो परमही आश्चर्य को प्राप्तभये १४ तिनका मिलाप भये फिर राजपुत्र गया सो महाहर्ष से संयुक्त अरु रोमांचसे अंचित शरीरवाला अर्थात् हर्ष से रोम २

खड़ाभया जिसका ऐसा ये हेमकंठ तिन्न दोनोको ये कहता भया कि १५ हे मन्त्रियो मेरे मा बाप कुशल सहित हैं या नहीं तुम तिन दोनोको त्यागके अकेले यहां कैसे चले आये हो १६ ऐसेकह ति हैं निज आसनपै बैठाय पूजकर सो कि वस्त्र चंदन आभूषणा-दिक फल तांबूल सुवर्ण इनसे सेवाकरके १७ बोला कि तिनदोनो के बिना मेरे प्राण कंठ में आरहे हैं रात दिन तिनहीं दोनो का ध्यान है और कुछ भी मेरे मन में रहता नहीं है १८ मेरे पिताने पहिले मुझसे कहा था कि एकवेर फिर दर्शन देंगे तो वे इसको मिथ्या कैसे करेंगे अर्थात् दर्शन होनाही चाहिये १९ मन्त्री बोले कि तुमवृथा चिंता मतकरो हे राजन् तुम्हारे माबाप क्षेम युक्त हैं तिनके पुण्यप्रभाव को तीनलोकमें भीकोई नहीं जानसकता है २० सोकि हमचारो तुमसे सीख मागके नगरसे बाहरनिकले तौतुम्हारे पिता सोमकांतके बहुतही सुकुमारता भई अर्थात् तिनको तिसपरि-श्रमसे महाही खेदभया २१ सो क्षुधाकरके अत्यंतही पीड़ाकोप्राप्त अरु रुधिर झररहा चरण कमल से जिनके सो कंदमूल फलोसे भी तिनको तृप्तिनहीं भई २२ अरुतव तुम्हारी माताकीभी ऐसीहीदशा होगईतौ तववेपैड भरभी नचल सके फिरबहुत भ्रमते २ एकभारीसरो वर हमने देखा २३ जो वृक्षवेलों करके शीतल जल वालाथा तौ तहां राजाको नींदआई अरु हारीथकी सुधर्मा रानीजे तिनकेपैरदाबे २४ अरु हमकंद मूलफल लेनेके लिये चलेगये तौफिर तहांमुनि-शार्दूल (च्यवनजी) जल लेनेकेलिये आगये तिन्होने इनकोदेखे २५ तौवे तिनका मनोरथ सब जानकर निज आश्रमको आये फिर हमभी बहुतसे कंदमूल फललेकर आगये २६ तौफिर हमसारे तिस आश्रमपै आये अरु मुनिजी करके हम अत्यतही संमान क्रियेगये सोकिषट रसभोजन तिन्होने करवायातोहमपरम विश्रामको प्राप्तभये अर्थात सब हारहमारी उतर गई २७ तबतौ मुनिजी अरु राजा इनका आपसमें कथाका प्रसंग अर्थात् बतला वनभई तौ राजाने तिनमुनि भृगुजीको सारानिज वृत्तांत सुनाया २८ तवतौतिन मुनिजीनेध्यान

के बलसे राजाजीकी पूर्वजन्मकी सारीकथाकही सोकिपूर्वजन्मका इनका पाप अरु तिसकी शांतिका उपायभी कृपायुक्त तिनमुनिजीने कहा २६ तौराजाकापाप सुनतेही हमको वडाभय उत्पन्नभयाअरु जितने मनमें संदेह करतारहा तितनेही तिसके शरीरसे पक्षीनिकले श्वेत वर्णवाले सो राजाको खानेलगे तौ तिनके चोंचोंके प्रहारोंसे राजा व्याकुलहो गिरपड़ा ३० तबतौ राजाकरके बचावो २ ऐसेकरुणा पनसे प्रार्थनाकरके कहेगयेमुनिभृगुजी तिनपक्षियोंकोओरदेखनेलगे तौ तिनके देखनेहीसे वे पक्षी छिनमें अंतर ध्यानभये ३२ अरु राजा हाथजोड़के मुनिजीके सन्मुख खड़ाभयातौवे इसराजाके महापापको जानके इसे भक्तिसे सुनातेभये ३३ सोकि गणेशजीका जो पुराणहै सो वर्षतक कृपानिधान मुनिजी सुनाते भये सोकि पहिले एकसौआठ गणेशजीके नामोंसे अभिषेक कर कर ३४ अरु निजतपके बलसे तिसके शरीरसे एक भयंकर पुरुष निकालकर जोपुरुष आकाशतक के केशवाला जीभ निकालता अरु क्षुधासे जो अत्यंत व्याकुलथा ३५ सो सोम कांतकेआगे स्थितभया भृगुजीसे भोजन मांगनेलगा तौ तिन्होंने कहाकि तू इससूखे आमके वृक्षका भक्षण करले ३६ तौ तिसके स्पर्श करतेही वो आमकावृक्ष छिनभरमें सबभस्म हो-गया फिरइस (धीवर) नाम पुरुष से मुनिजीने कहाकि इसे भक्षणकर ३७ अरु फिर मुनिजीने तिसराजासे ये कहाकि जो गणेशपुराणके श्रवणसे भया महापुण्यहै सो हेराजन् तू नित्यही इसवृक्षको भस्म में छोड़तारहु ३८ सो जबतकये आमका वृक्ष पहिले कीनाईं होवे तोही फिरतूनो हेराजन् दिव्यदेह होजावेगा ३९ तौ तिसराजाने सो रीकिया सोकिवोनहाके अरुबहुत कथासुन नित्यही तिसकाफल तिस वृक्षको भस्ममेंभक्तिसे छोड़तारहा ४० तौहे हेमकंठ वर्षकेअंत में वो वृक्ष पहिलेकी नाईं भया सोकि गणेशपुराण के समाप्त भये वो फलफूल वालाहोगया ४१ अरु सोमकांतभी दिव्यदेहसूर्यअग्नि समान कांति मानहोगया अरुराजा जबतक तिनमुनि जीकीस्तुति करतारहा तितनेमेंही वो विमान आगया ४२ जो नृत्यगानसहित

अरु जो बाजे गाजों से शब्दाय मान अरु जो गणेश दूतों से सहित ऐसा वो विमान मुनिजी के आश्रम के निकट आया ४३ हे नाथ जिसकी शोभा देखते हमारे नेत्र सफल होगये तुम्हारे पिताके अत्यंत पुरायसे वेदूत देवजीकी आज्ञा से राजाको तिस विमानमें बैठाते भये अरुराजा की दृष्टिसे प्रेरणा किये अर्थात् सैन से समझाये वेहमकोभी बैठाते भये अरुरानी सुधर्माभी मुनिजीसे आज्ञालेकर विमानमें बैठगई ४४।४५ फिर जितने तिनौने देवजी के पुरको देखा तितनेही तिनको तुमारी याद आगई इससे नगरसे उतरमें वो विमान उतारागयाहै ४६ सोहम तुम्हारे माता पिताकी तुम्हैं देखनेकी इच्छा करके तथा तिनको तुम्हैं निवेदन करने अर्थात् बतानेके लिये आयेहैं सोतुम तिनके दर्शनके लिये शीघ्रचलो नहीं तो वो विमान चला जायगा ४७ तो तिनका वचन सुन वेग युक्त भया हेमकंठ रोमहर्ष अरु आंशुपड़ने युक्त दौडता भया कैसाहै कि सुनाहै सपूर्ण वृत्तांत जिसने सो ४८ तिनके दर्शनके चावपनसेती तिनदोनों को आगे करके चला जो नगर निवासी अरु सेवकोंसे संयुक्त अरु बिखरेहैं आभूषण गण अर्थात् शीघ्रताके मारे खुलाये गहने जिसके सो ४९ आंशुवोंसे गलित अर्थात् भीगा क्षणमेंही गया सहित तिस विमान के निकट आया ५० इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमेंसोमकांतकापुत्रकोदर्शनहोनाइसनामसेअध्याय १५२ भयाहै॥

एकसौ तिरपन का अध्याय॥

सोमकांत को श्रीगणेशपद की प्राप्तिहोना वर्णन कियागयाहै॥

श्रीसूतजी बोले कि हेमकंठके चारमंत्री अगाड़ी निकट गये सोवे सबको प्रणाम करके बोले कि हे राजन् तुम्हारा पुत्र आगयाहै१जोनगरबासी अरुशूरवीर सहित जैसे देवतो सहित इन्द्रहोवे सोहर्ष सहित चला आताहै सोतिसने इसविमान को देखाथा ऐसे मंत्रियों करके बताया वोभी शीघ्रही पहुंच गया जो बालक वनिता वृद्ध इनसबसे अरु सेवको से संयुक्त आ तोते

ज्ञन विमान की शोभादेख आनदभरे भये तिसमें विराजमान भये सोमकांतको देखकर भूतलमें गिरे अर्थात् दडवत् प्रणाम करतेभये ४ जो विमान गणेशजीके गणोंसे अरु अत्यत कोमल तिस सुधर्मासे संयुक्त तवतो वो सोमकांत तिसविमानसे उतरकर पुत्र हेमकंठका हर्षसे आलिंगन करताभया ५ तो वे रोमहर्ष सहित दोनो आनन्दके आंशुओंको छोडतेभये वेदेहकीसो नाई होगये तो क्षणभर कुछ भी न बोले अर्थात प्रेम समुद्र मे मग्न भये ६ फिर तो राजासोमकांत ने सबको कहा कि जो भृगुजीने अनुग्रहसे मुझको गणेशपुराण का श्रवणकराया जो पापनाशक है ७ सो तिसी से मै दिव्य देह अरु निष्पापभया विमानमें बैठाभयाहूं अब तुम्हारा सबका दर्शन मुझ-को होगया अब मै विमानमें बैठकर फिर जाताहूंगा ८ कृपावान् गणेशजीने मेरे लेनेको यह विमान भूतलमें भेजा ह हेहेमकण्ठ मैने निज इच्छासे राज सम्पदा भोगी ९ अब भृगुजीके प्रसादसे परम-धामको पधारोगा जब सबोने ऐसी सोमकात की वाणी सुनी १० तो वे सारे स्वरसहित अर्थात् पुकार २ कररोनेलगे अरु कईभूमि में गिरगये फिरमुख्य२मंत्री कृपानिधिसोमकांतकोबोले ११ हेभूमि-पाल हमारेविन विनायक जीके लोकको कैसे चलेजावोगे अरु जो जावोतोहमभी लेजावो नहींहमसारे प्राण यागके तुम्हारेसाथचलें-गे १२ हेराजनहम सबोंकी हत्यातुम्हारे शिरपरचढ़ेगी अरु हमारा पुण्य ऐसानहीं है जिससे तिन विनायकजीका हम दर्शनकरें १३ तुम्हारे प्रसादसेतोतो हम उत्तमलोककोचले जावेगे इस संसार में कुछभी सुखनहींहै इसमेंतो वृथाही आयुका नाशहोता है १४ सो हमपेतो तिस लोकका कोईभी साधन अर्थात् लेजानेवाला ऐसा कारणनहीं है तवतो हेमकंठ आदरसे निर्लपिता तिस सोमकांतको कहता भया १५ कि हेपिताजी मुझबालकको छोड़के आप गजानन जीको देखनेके लिये जावोगे मुझको इसराज्यसे कुछ हेतुनहीं है आपकी आज्ञासेही वर्षतक १६ इसराज्य की पालना करीअवमेरी भीइच्छा नहींहै हेराजाजी मुझको आपकी सोगधहै इससे साथही

मुझकोभीलेचलनेयोग्यहो१७सोमकांतबोला तुम्हारी सबकी विना॰
यकजीके चरणकमल देखनेकी इच्छाहै परमैतौ परवश होरहाहू हे
जनोअबमै कैसाकरू१८मैतुम्हारे स्नेहसेअरुइससुत केस्नेहसेविशेष
सेतीशोक कररहाहू इसीसे ऊपरसे इसविमानको उतराकर देखने
को आयाहौ१९ सूतजीबोले कि तब तौ तिन सबलोगोंके शोचकरते
अरु सोमकांत को रोतेसते अरु पुत्रके भी रोते तौ तब तिन दूतोके
मनमें दया उत्पन्न होतीभई २०,तौ वे सोमकांतको कहनेलगे कि हे
राजन् तू धन्यहै क्योंकि ये जनसारे तुम्हारे में प्राणप्रतिज्ञ अर्थात्
मरनेको तैयार होरहे है जैसे जगदीश गणेशजी में तुम हो २१
इससे हम अब सब कोही लेकरके शीघ्र गजाननजीपे चलेंगे राजा
बोला कि जो सारी पुरीको लेचलौगे तौ इसमे हमारी भारीकीर्त्ति
ही २२ भूमिमें होगी कुछ अन्यथा अर्थात् अपकीर्त्ति नहीहै सूतजी
बोले कि ऐसे कहकर राजा गणेश पुराण के श्रवण का फल जल
लेके तिन दूतोकी आज्ञा से जनो के हाथ मे देताभया तौ हाथ में
जल लगतेही वे लोग निष्पाप अरु पवित्र कीर्त्ति वाले होगये अरु
बूढे बालक वनिता इन समेत उत्तम विमान में चढते भये फिर वे
गणेशजी के दूत आकाश मार्ग से चले २३। २४। २५ तिनमें
कई पापी जन थे जिन्होने निज हाथमें जल नहीं पाया वे फिर
भूमिमेंहीआये अरु शेषरहे जनोको सराहतेभये २६ फिर तिनसबों
ने बहुत से नगर को विमान में बैठके ऊपर को जाते देखा तौ वे
शेष रहे सारे द्रव्यके लाभसे अर्थात् तिनके रहे द्रव्य को पानेसे
प्रसन्नता वाले आपस में बोलते अर्थात् सुख से बातें करतेभये२७
सो कि वे प्रसन्न मनवाले नानाव्यापारोमें परायण होतेभये अरु
कई भागतों को भी वे दूत दंडके प्रहार से २८ डराकर बल से
तिन्हें पकडकर आश्चर्य वाले तिनको विमान में बैठाते भये अरु
जो अनेक छलसे जाते थे तिनको तैसेही पटकलिये२९अरु तिसके
मध्य भाग में बैठे राजा रानी सुत आदिक अरु मंत्री अरु चारों
ओर सवार होरहे नगरवाले सो सब सुख पाते भये ३० अरु हे

गणेशजी २ आपकी जयहो ऐसा शब्दकर रहे देव बाजोंके बजते भये अरु अप्सराओं के नाचते भये वे सारे जय मनाते पधारते भये ३१ तो तिस शब्दके प्रति शब्द अर्थात् तिसकी गाजसे दिशाओं के मंडल भी गर्जते थे तो अत्यंत वेगसे वे गणेशजीके सुस्थान को पहुंचे ३२ तो तिस परम शोभाको देखके आपस में ये बोले कि ओ हो इमका बड़ाभारी पुण्य है जिससे गजाननजी का दर्शन हमको भया है ३३ तो वे सारे तिनकी समीपता को प्राप्त भये अरु राजा भी सायुज्यभावको प्राप्तभया अर्थात् सदा तिन विनायकजी के साथही रहा सूतजी बोले कि हे ब्राह्मणो ऐसे हमने तुमको ये गणेश पुराण की कथा कही है जो श्रवण से सब जनों के पाप नाशिनी है अब तुम सुनो जो कि दूतोंसे तिस विमान में राजा ने पूछा है सो सब उपाख्यान हेविप्रो हम तुमसे कहते हैं सो भी तुम सुनो ३४।३५ इतिश्रीगणेशपुराणउत्तरखंडमें सोमकांतको श्रीगणेशजीकेस्थानकी प्राप्ति इसनामसे एकसौ तिरपनका अध्यायभयाहै १५३ ॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

ऋषियोंने पूछा कि हे निष्पाप सूतजी विमान में विराजमान सोमकांत ने क्या २ पूछा सो सब सुनने को हम चाहते हैं आप संपूर्ण कहिये १ श्रीसूतजी बोले कि आकाश मार्गगामी महात्मा सोमकांत ने पूछा कि वाराणसी में विराजमान जो गणेश महात्मा तिनके परिवार गणके जो नाम हैं तिन्हें तुम हे निष्पापो श्रवण करो राजा ने पूछा कि हे दूतो तुम मुझसे गणेशजी के परिवार वाले गणेशों को संपूर्णतासे कहो जो स्मरण से सब सिद्धि दायक विनायक हैं दूत बोले कि हम तुमको विश्वेश्वरजी के आवरण अर्थात् घिरावने जो २गणेशहैं सो २क्रमसे कहते हैं तिन्हें तुमसुनो जो सारे भयों के अपहन्ता अर्थात् नाशक हैं सोकि प्रथम तो (दुर्गविनायक) अरु (भीमविनायक)अरु (चंडीविनायक) (अर्कविनायक)

मुझकोभीलेचलने योग्यहो१७सोमकांतबोला तुम्हारी सबकी विनायकजीके चरणकमल देखनेकी इच्छाहै परमैंतो परवश होरहाहूं हे जनोअबमैं कैसाकरूं१८मैंतुम्हारे स्नेहसेअरुइससुत केस्नेहसेविशेष सेतीशोक कररहाहूं इसीसे ऊपरसे इसविमानको उतराकर देखने को आयाहो१६ सूतजीबोले कि तब तौ तिन सबलोगोंके शोचकरते अरु सोमकांत को रोतेसते अरु पुत्रके भी रोते तो तब तिन दूतोके मनमें दया उत्पन्न होतीभई २०तौ वे सोमकांतको कहनेलगे कि हे राजन् तू धन्यहै क्योंकि ये जनसारे तुम्हारे में प्राणप्रतिज्ञ अर्थात् मरनेको तैयार होरहे हैं जैसे जगदीश गणेशजी में तुम हो २१ इससे हम अब सब कोही लेकरके शीघ्र गजाननजीपै चलेंगे राजा बोला कि जो सारी पुरीको लेचलोगे तौ इसमे हमारी भारीकीर्त्ति ही २२ भूमिमें होगी कुछ अन्यथा अर्थात् अपकीर्त्ति नहीहै सूतजी बोले कि ऐसे कहकर राजा गणेश पुराण के श्रवण का फल जल लेके तिन दूतोकी आज्ञा से जनो के हाथ मे देताभया तो हाथ में जल लगतेही वे लोग निष्पाप अरु पवित्र कीर्त्ति वाले होगये अरु बूढे बालक वनिता इन समेत उत्तम विमान में चढते भये फिर वे गणेशजी के दूत आकाश मार्ग से चले २३। २४। २५ तिनमें कई पापी जन थे जिन्होने निज हाथमें जल नहीं पाया वे फिर भूमिमेंहीं आये अरु शेषरहे जनोको सराहतेभये २६ फिर तिनसबों ने बहुत से नगर को विमान में बैठके ऊपर को जाते देखा तौ वे शेष रहे सारे द्रव्यके लाभसे अर्थात् तिनके रहे द्रव्य को पानेसे प्रसन्नता वाले आपस में बोलते अर्थात् सुख से बातें करतेभये २७ सो कि वे प्रसन्न मनवाले नानाव्यापारोंमें परायण होतेभये अरु कई भागतों को भी वे दूत दंडके प्रहार से २८ डराकर बल से तिन्हें पकड़कर आश्चर्य वाले तिनको विमान में बैठाते भये अरु जो अनेक छलसे जाते थे तिनको तैसेही पटकलिये२६अरु तिसके मध्य भाग में बैठे राजा रानी सुत आदिक अरु मंत्री आरु चारों ओर सवार होरहे नगरवाले सो सब सुख पाते भये ३० अरु हे

नहीं २२सो जोकुछअसाध्यहै तिसकोभी तिनस्तोत्रोंके पाठसेप्राप्तहो-
वे अरु जो अनुष्ठानके विधानसे महीने तकजपे २३ अरु ब्राह्मणों को
भक्तिसे भोजन करवावे सोभी तन्मयत्व अर्थात् सायुज्य मुक्तिपाता
है ऋषियोंने पूछा कि हे अनघ सूतजी इसके श्रवण से कैसे किस
को पुण्य प्राप्तभया सो हे सूतजीहम पूछतेभये सो कहिये श्रीसूतजी
बोलेकि हेमुनियो तुमसारे सुनो कोई एक (मूकमुनि) अर्थात् गूंगा
ऋषिभया २४।२५ सोअकारणसे अर्थात् सहजही ब्रह्मलोकको प्राप्त
भयातैसेही(लोमश)जीभी दैवेच्छासे तहागया तो लोकेश ब्रह्माजीको
नमस्कारकरके तिनकीआज्ञासे बैठगया २६ तो परमभक्तिसे सन्मान
कियेगये येलोमशजी ऐसेकहनेलगे लोमशजी बोलेकिहेदेवब्रह्माजी
व्यासजीको जोपुण्य वर्द्धन गणेशजीका पुराण आपने सुनायाहै २७
सोही आप मुझसे कहने योग्यहो श्रीब्रह्माजी बोले कि हेलोमश तू
प्रयत्न से इस सब पापहारक शुभ २८ गणेश पुराण को सुन जो
मनुष्यो को मोक्ष अरु कामदाता है सूतजीबोले कि तबतो ब्रह्माजी
निजमुख निसृत वचन से २९ जो लोमश जीको काम मोक्षदायक
गणेशपुराण सुनाया था सोही तिसगूंगेने भी नादके वशसे भक्ति
करके तिस सपूर्णको सुना ३० तो वो मूकमुनि बृहस्पतिजीके समान
वाणी बोला अरु यासे करके तिसे पढकर फिर वोही औरो को भी
सुनाताभया ३१ तोवो कामना सहित सुभोग भोगके अरु पुत्रपौत्रो
कोपाकर अंतसमय सुन्दर गणेशजीके परमधामको पधारा ३२ अरु
हे मुनियो अब तुम एक पुरातन इतिहास और सुनो कि इक्ष्वाकु
के कुलमें उत्पन्न शुद्ध है आत्मा जिसका अर्थात् प्रसन्न मनवान्
अरु पवित्रऐसाराजा ३३ जो यज्ञकर्त्ताअरु नित्यदान देनेवालाअरु
अध्ययनमें परायण अरु शत्रुहता अरु सारेधर्मोका आख्यान करने
वाला अरु प्रजापालनमें परायण ३४ अरु लोगोसे छठा अंशलेने
वाला अरुलोगोंका माननीय अरु प्रियतमजोतीनोंलोकोंमें विख्यात
(सवर्ण) ऐसेनामवाला ३५ सोनिस्संतानभया पुत्रकेलिये पुत्रसंबंधी
यज्ञकरता भया जो सांगोपांग अरु दक्षिणा सहित अरु अन्नदान

सपूर्ण भारत पुराणके श्रवणसे फलहो सोभी कोटिगुणा फल इसके सुननेसे मिले ८ जिसकेघरमें गणेशजीका पुराण लिखा भयारक्खा होवे तौतहा राक्षस पूतना अरु भूत प्रेत आदिक बाधा नहीं करते ६ अरु ग्रह बालग्रह ये कभी भी पीडानहीं करते हैं वोगृह सदा श्री गणेशजी करके रक्षा किया जाता है इससे ये उत्तम है १० जो इस पुराणका श्रवणकरै वा सावधान भया इसका पूजन करै तौ तिस मनुष्यके दर्शनसे पतितजन पवित्र होवें ११ अरु वो मनुष्य ब्रह्मादि देवोकाभी माननीय होताहै सोवो क्रोधभया तौ तीन भवनोको भस्मकरदे अरु वोही प्रसन्न भया इन्द्र पदवी देदेवे १२ अरु इसके प्रतिदिन सुननेसे नर आठो सिद्धियो को पाताहै अरु वो नर न कहीं भी दरिद्रपन अरु न कष्टको प्राप्तहोता है १३ सो वाञ्छित पावै अरु पद्म आदि निधियोको भी पाताहै सो कि कल्पवृक्ष अरु कामधेनु तैसेही चिंतामणि निधि १४ सो तिसके वशहोवें अरु वो वन्दनीय भी होताहै अरु जारण मारण मोहन स्तंभन उच्चाटन येभी १५ इसके स्मरणसेही सब क्षणमें दूर होजावें जोनर गणेश मूर्त्ति के निकट बैठके इस पुराण का श्रवण करै १६ तौ वो महापापसे छूटजावे चाहे स्त्री ब्राह्मणघाती भी होवे अरु वो अंतसमय गणेशजीके निकटपनको प्राप्तहोवे इसमें संशय नहींहै १७ जोशूद्र भी बीचमें ब्राह्मणोको बैठाकर इसको सुनै तौ वो क्रमसे वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण इनवर्णों को प्राप्तहोवे अर्थात् सर्वोपरि होजावे इसको सुननेसे १८जोनित्य निमित्त के कर्मोसे छूटानर इसेसुनै तौ कर्मोंके श्रेष्ठगुणपने अर्थात् तिनके फलको प्राप्तहोताहै गणेशजी की प्रसन्नतासेती १६ अरु जो भाद्रपदमें शुक्लपक्षकी चौथको मृत्तिकाकी मूर्त्ति बनाकर अरु सुन्दर तोरणवाले मंडपमें विराजमान कर परम आदरसे पूजन करके २० शीघ्र अर्थात् तभी इसपुराण का श्रवणकरै तौ तिसपर विनायकजी प्रसन्न होकर सारेकामो को देते अरु विघ्नपतिजी अंतमें तिसेमोक्ष देतेहैं २१ अरु जितने इनके स्तोत्रइसमेंहै तिनसबोंकोप्रतिदिनजोनरभक्तिसेपढ़ताहैतो वो सिद्धहोवेइसमेंसंशय

नहीं२२सो जोकुछअसाध्यहै तिसकोभी तिनस्तोत्रोंके पाठसेप्राप्तहो-वे अरु जो अनुष्ठानके विधानसे महीने तकजपे२३ अरु ब्राह्मणों को भक्तिसे भोजन करवावे सोभी तन्मयत्व अर्थात् सायुज्य मुक्तिपाता है ऋषियोंने पूछा कि हे अनघ सूतजी इसके श्रवण से कैसे किस को पुण्य प्राप्तभया सो हे सूतजीहम पूछतेभये सो कहिये श्रीसूतजी बोलेकि हेमुनियो तुमसारे सुनो कोई एक (मूकमुनि) अर्थात् गूंगा ऋषिभया२४।२५सोअकारणसे अर्थात् सहजही ब्रह्मलोकको प्राप्त भयातैसेही(लोमश)जीभी दैवेच्छासे तहांगया तो लोकेश ब्रह्माजीको नमस्कारकरके तिनकीआज्ञासे बैठगया२६तो परमभक्तिसे सन्मान कियेगये येलोमशजी ऐसेकहनेलगे लोमशजी बोलेकिहेदेवब्रह्माजी व्यासजीको जोपुण्यवर्द्धन गणेशजीका पुराण आपने सुनायाहै२७ सोही आप मुझसे कहने योग्यहो श्रीब्रह्माजी बोले कि हेलोमश तू प्रयत्न से इस सब पापहारक शुभ २८ गणेश पुराण को सुन जो मनुष्यों को मोक्ष अरु कामदाता है सूतजीबोले कि तबतो ब्रह्माजी निजमुख निसृत वचन से २९ जो लोमश जीको काम मोक्षदायक गणेशपुराण सुनाया था सोही तिसगूंगेने भी नादके वशसे भक्ति करके तिस संपूर्णको सुना३०तो वो मूकमुनि बृहस्पतिजीके समान वाणी बोला अरु व्यास करके तिसे पढ़कर फिर वोही औरों को भी सुनाताभया ३१ तोवो कामना सहित सुभोग भोगके अरु पुत्रपौत्रों कोपाकर अंतसमय सुंदर गणेशजीके परमधामको पधारा३२ अरु हे मुनियो अब तुम एक पुरातन इतिहास और सुनो कि इक्ष्वाकु के कुलमें उत्पन्न शुद्ध है आत्मा जिसका अर्थात् प्रसन्न मनवान् अरु पवित्रऐसाराजा ३३ जो यज्ञकर्त्ताअरु नित्यदान देनेवालाअरु अध्ययनमें परायण अरु शत्रुहंता अरु सारेधर्मोंका आख्यान करने वाला अरु प्रजापालनमें परायण ३४ अरु लोगोंसे छठा अ॰ वाला अरुलोगोंका माननीय अरु प्रियतमजोतीनोंलोकोंमें [illegible] (मवरण) ऐसेनामवाला ३५सोनिस्संतानभया पुत्रकेलिये यज्ञकर्त्ता भया जो सांगोपांग अरु दक्षिणा सहित अरु

समेत ३६ तौभीवो राजा संतान को प्राप्तनभया तबतौ तिसनेहरि-
वंश पुराणका श्रवण किया तौ तिससेभी तिसके पुत्र नभया तबतौ
दैवयोगसेवेही (मूकमुनिजी) तिसकेघर परचले आयेजो प्रसिद्धगणे-
शपुराण वेत्ताथे तौ राजा सत्करणने इनको प्रार्थनाकरके बैठाये ३७
३८ फिरतिनके मुखसेहर्षकरके गणेशपुराणका श्रवणकरकेतिसकी
समाप्त भयेवो मुनिश्रेष्ठ मूकजीको रत्न अरु मोतियोंसे अरु वस्त्रों
से तथा सुवर्णसे बनेभये आभूषणोसेप्रसन्न करताभया फिरवोतिस
से पुत्रको प्राप्तभयातौ गणेशजीमें परायण भया ३९।४० सोअनेक
सुखभोगके अंतमें उत्तम गणेशजीके धामको पधारा अरु तिसीकी
बहनतीस वर्षकी ऋतुवती बंध्याथी४१ तौ इस पुराणकोसुनकेसमय
पर तिसके संतान भई सुनकर सो कि गणेश पुराण के श्रवण भई
संतान को सुनकर तिन मूकमुनिजीको ४२ बुलाकर तिनके मुखसे
तिस सुंदर पुराणका श्रवण करतीभई तौ महाशूरबीर पुत्रको प्राप्त
भई तौ वो भी गणेशजीके भजनमें परायण भई ४३तौ पुत्रपौत्रोंको-
प्राप्तहोकर अरु सुंदर भोग भोगकर अंतसमय वोभी गणेश्वरजीके
निज धामको पधारतीभई ४४ अरु सगर राजाके ६०००० पुत्रोंमें
एकपंगुलाथा तिसनेपहिलेइसपुराणकोलोमशजीसेसुनाथा४५सोकि
बारह वर्ष विनय वालेने भक्तिकरके इसेसुना फिर लोमशजीकोदूर्वों
सेप्रसन्न करके वोभीतिन विनायकजीके चरणारविंद को प्राप्तभया
४६ सो कि विजय पुष्टि अरु आरोग्यपाकर प्राणान्तमें तिनमें परा-
यणभया तिन्हींके धामको पधारा सो अठारह पुराणों के श्रवण से
जोफल मिलताहै सोइस अकेले गणेश पुराणके श्रवणसे प्राप्तहोता
है४७।४८सोइसकेश्रवणसे काकबंध्याभी बहुतसुतवालीहोतीहै अरु
द्विजश्रेष्ठ इससे वेदपाठ समृद्ध भया माननीयहोताहै ४९ अरुशूद्र
इसके श्रवणसे वैश्यपन को प्राप्तहोवे अरु वैश्यहोसो क्षत्रियता को
प्राप्तहोताहै अरु क्षत्रिय जोहै सो इसके सुननेसे ब्राह्मणत्वकोप्राप्त
होजाताहैगा ५० अरु कन्या इसके एकभी अध्याय के श्रवणसे गुण-
वान् कुलीन धनयुक्त श्रेष्ठ पतिको प्राप्तहोतीहै ५१ अरुइसपुराण

के श्रवणसे जन्मांध जननेत्र पाताहै अरु जो सबतीर्थों में स्नानकरै अरु सारेदान देवे ५२ तिसीके पुण्यको प्राप्तहोताहै जो भक्तिकर के इसेसुने अरु ग्रीष्ममें तो पंच अग्नियोका साधन अर्थात्तपना हेमतऋतु में जल निर्वास करना ५३ अरु जो वर्षामें आकाशमें वास अर्थात् आच्छादन रहित वर्षामें स्थितबहुत वर्षतकरहै तिसीके फल को मनुष्य इसके पांचअध्यायोका श्रवणभये प्राप्तहोताहै ५४ अरु जो भक्तिमान्मनुष्य अग्निहोत्र का सदासेवन करताहै सोही फल इस पुराणके श्रवणसे होताहै ५५ अरु जोनर दशसहस्र वर्षएक अंगूठेसे खडारहै सोहीफल इस पुराणके दशअध्यायकेसुननेसे होता है ५६ सोकि भक्तिसे मनुष्य अवश्य तैसेफलको पाताहै इसमेंसशय नहीं अरुजो मनुष्य जन्मसे मरण तक इसेसुने ५७ तो वो चक्रवर्ती राजाहोता है अरु जो जन्मसे मरणतक काशीजीमें निवासकरता है ५८ सो पुण्य मनुष्य गणेश पुराण सुननेसेतो पाता है अरु जो मनुष्य सहस्र माघमासतक प्रयागजीमें स्नानकरै ५९ तिसीफल को मनुष्य इस पुराणके श्रवणसे पाताहै अरु तैसेही जोनर सरस्वती जीमें भक्तिसे स्नानकरै ६० सोही करोडगुनाफल इसकेश्रवणसे प्राप्त होताहै जोभक्तिमान् मनुष्य इस गणेशपुराणका श्रवणकरताहै ६१ जो इसगणेश पुराणका सम्यक् प्रकारसे श्रवण करैतो तिसको न तो त्रिशूलसे अरु न वज्रसे अरुन परचक्र वालेशत्रुको चढ़ाईसेकभी भी भयहोवे श्रीसूतजी बोलेकि हेशौनक आदिमुनिजनो ये हमने विस्तार सहित श्रीगणेशपुराण सुनाया है ६२ अरु इनविनायकजी की सम्पूर्ण महिमा तो करोड वर्षतक भीनहींकही जावेचाहे ब्रह्माजी वा शेषवषण्मुखजीभी अपने२अनेक मुखोंसभीकहैं ६३ जोकितुमने अनेक लीलाधारी परमात्मा गजाननजीका चरित्रपूछा जो सबपाप नाशक अरु सबकामदायक भुक्तिमुक्तिप्रदाता पुण्यबढ़ानेवाला अरु जो बांचने सुनने वाले इनसबोंके पापोंका हरनेवाला सो हमनेतुम को सुनायाअबऔर क्यासुना चाहतेहोसो पूछोसोही प्रसंग सुनावैं ६४।६५ इतिश्री महादिगणेशपुराण उत्तर खंडमें फलश्रुतिवर्णन

अर्थात् श्रीगणेश पुराण श्रवण करने का फलकथन अरु ग्रन्थ का समाप्त होना इसनामसे एकसौपचपनअध्याय समाप्तहुआ ॥

समस्त गीर्वाणगणितशास्त्र भणित भारत भूमिमण्डलान्तर्गत प्रसिद्धइन्द्र प्रस्थनगर से पश्चिम कोणमें षोड़शयोजना वधिदूर आर्चीकशैलतलवर्ति नन्दग्रामनिवासी श्रीमद्ब्रह्मसमृद्ध सद्गुण गुणार्णवावतीर्ण शुक्लजी श्रीमत्पूजनीय महिष्ठ श्रीयुत (ईश्वरीसहाय) जी तिनकेसत्पुत्र वरिष्ठश्रीयुत(गङ्गासहाय)जीयाजकेशतिनके कनिष्ठभ्रात(देवीसहाय)करके प्रेमास्पदीभूत सत्पुत्रचिरजीवि (बदरीसहाय) युगुलकिशोर आदि बालक विनोदार्थ तथासमस्त विद्वज्जनचरणारविन्दार्हणार्थ श्रीयुतमुंशी नवलकिशोर जी की आज्ञानुसार बनायाये श्री मदादिगणेश पुराण का सरलदेशभाषा विभूषित अनुवाद समाप्तभयासोसबको सदासुख सम्पत्ति धनधान्य सन्तान समृद्धि दायक शत्रुसङ्कटादिसे सहायकहो २ ग्रन्थसमाप्ति समय विज्ञानाय छन्दोद्वयम् ॥ दोहा ॥

बहुनि वेद पुनि नन्दशशि वर्षपौष शुभ मास । शुक्ल छट्ठ भृगुवारवर शुक्लरचित आभास सरलदेश भाषाविषे पूर्ण भयो अनुवाद । वादत्यागि सहिलेसुजन जोनिजलिखित प्रमाद

टी० सम्वत् १६१४३ पौषशुक्लपक्षकीछठ शुक्रवार श्रेष्ठदिन पूर्वाह्न समयमें शुक्लोपनामक पंडित देवीसहाय शर्मा नारनवलीय करके रचित श्रीगणेशपुराण का सरलदेशीय भाषानुवाद सम्पूर्ण भया सो सब विद्वज्जन विवाद अर्थात् पक्षपातादि दोषरहित हो कृपापूर्वक इसे दृष्टिसे पवित्र करके जोकुछ मुझसे प्रमाद बचन लिखा गयाहै तिसे क्षमा पूर्वक सुधारलेवें येरसिक जनोंके चरणारविन्दो में प्रार्थनारूप पूजनसमर्पणहै २ ॥ दोहा ॥

सर्वगुणेशगणेशकीकीरतिरंजाहिसोगणेशगीतातिलकतिलककरैलखिताहि ॥

टी० गुणोकेईशऐसेगणेशावतारधारीगणेशजीकीकीर्तिकी प्रीतिजिसकोहैसोइसगणेशपुराणकेतिलकरूपपूजनको निजमस्तकपैचढालेवे

-इति॥-

से अरु गंधर्व अप्सराओं के मानसे उस विमान करके आकाश अरु दशों दिशा शब्दायमान करी गई ४१ अरु ऐसे राजा रुक्मांगद ने श्रेयनाम तीर्थ स्नान फल माता पिताओंको दिया अरुसारे भीलोंके श्रेयः विनायकजी से समर्पणकिये ४२ तो देनेहीमात्रसे जोकि कृशा की मूर्त्ति स्नान से उत्पन्न श्रेय था उससे निश्चयही विनायकजीकी आज्ञासे औरभी विमानआये तो वे एक गगनचारी विमान परएक बैठ करके ऐसाही राजा रुक्मांगद अरु तिसका पिता भी अरु उसकी माता चारुहासिनी ४४ अरु सारेलोक तहांगये जहांदेव विनायकजी थे। ऐसे उसका सारानगर बालकों से लेकर चंडालोंपर्य्यंत अर्थात् समेत ४५ गणेशतीर्थके स्नान से उत्पन्न श्रयसे स्वर्गगति को गया अर्थात् प्राप्तभया ब्रह्माजी बोले कि हे ।न व्यासजी ऐसे हमने जो२ तुझसे पूछागया सो२ सारा वर्णनकिया ४६ इस चिन्तामणि क्षेत्र के गणेशतीर्थ से उत्पन्न को जो १ भक्तिसे श्रवण करताहे सो भी उसीगति को अवश्य प्राप्त होहै ४७। इतिश्रीगणेशपुराणउपासनाखण्ड मेंकदम्बपुर कावर्णन हुनामसेपैंतीसवाअध्यायहुआ ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

व्यासजीनेपूछा कि हेकमलासन मैंने गणेशतीर्थका महात्म अरु राजारुक्मांगद का अरु कौंडिन्य नगर निवासियों का चरित्रभी श्रवणकिया १ तबभी हे ब्रह्मन् मुझे मुकुन्दा ऋषिपत्नीका चरित्र औरभी कहो ब्रह्मजी बोले कि रुक्मांगद चलागया तब वो वो कामाग्निसे ऐसी जली कि जैसे हेपुत्रमहागरमीसे वनकीभूमि जले। २ तैसे वो मुकुन्दा ठंडी पवन सहित वनमें भी कहीं नहीं सुखपाती भई ३ किलता फूलवाले स्थान में चन्द्र तथा चन्दन से भी नहीं सुख पाई क्योंकि तिसे हँसना नहींसुहाता अरु न गीत न, नाच अरु न कोईकथा कहानी सुहाई ४ अरुहे मुनीश्वर तिसीमें लगा चित्त जिसका ऐसी उस विह्वलनाम व्याकुल को अन्न, जल भी न

रुचा अर्थात् सर्वत्र अरुचिभई अरु क्षुधा तृषाके खेद के मारे उसे क्षणभी नींद नहीं आई ५ तो तिसको इन्द्रने वनमें सोतीभई अरु हे सुत रुक्मांगदकेलिये कामसे आतुर अरु व्याकुलहै ऐसे जानी ६ तो रुक्मांगद के रूपको धरकर उस कामवती को इन्द्र हर्ष से स्पर्श करताभया तौतो मुकुन्दा भी अत्यंत हर्षी ७ अरु रुक्मांगदसे उस कोवो हेमुत अतिही चूवतीभई अरु उसनेभी दृढमुष्ठिसे उसके कुचो को मर्दनकिये ८ अरुजो अंशुनाम वस्त्र तिससे रहित व्यंशु का अर्थात् नंगी तिसके साथ नंगाही होकर रमण करता भया फिर वो लज्जायमानभीभई अपने घरको आई ९ हे सुत फिर इंद्र भी रुक्मांगद हुआ वहीं अंतर्द्धान होगया अरु उसने सर्वथा यही जाना कि रुक्मांगदही भुगता अर्थात् मुझसे भोग करगया है अरु तभी से उसनेगर्भको भी धारण किया १० तौ न वेही महीनेशुभ समयमें उत्तमपुत्रको जनतीभई सुन्दर नहींकथनीयअर्थात् अत्यन्त सुन्दरहै सारेअंगजिसके रूपसेकामसभीजोपरें ११ उसकेपृथ्वीपर जन्मकर गिरने के भारी शब्दसे सो उठा नाद दशों दिशाओं के समूह अरु आकाशभूमिपाताल तकपहुचा १२ तौवहुतसेंपक्षियेंसब तर्फसे उड २ कर भ्रमने भये अरुवाचक्नविजी भी अपना नित्यकर्म छोडकर भागे १३ उसने इस मुकुन्दा का आचरण कभी भी नहीं जानाथा तो वो अत्यन्त हर्षितहुआ उसके जातकर्मादिक सवकरता भया अरु ब्राह्मणोंको यथाशक्ति अनुकूल यथायोग्य दान देताभया अरु दशदिन वीते उसमुनिने उसका नामकरणसंस्कार किया १५ कि (गृत्समद) ऐसा ज्योतिष शास्त्र में परायण ब्राह्मणों करके आज्ञा पाया हुआ फिर पांचवेंहीं वर्ष उसका यज्ञोपवीत करता भया १६ वालकके चारोंवेदोकेनियम उसनेकिये अरु वो भी ब्रह्म तेज से एक घर कथन करकेही सव ग्रहण करता भया १७ तो वेदशास्त्रार्थं का समुद्र अरु अपने भी कर्म में कुशल होगया कभी कवाचक्नविजीने शुभ मुहूर्त्त मे उस पुत्रको १८ गणानात्वाऐसा जो गणेशजीका ऋचारूप महा मंत्र तिससे उपदेश करते भये अरु वे

कहते भये कि ये सम्पूर्ण सिद्धि देनेवाला वैदिक मन्त्रहै १६ कि ये सारेशास्त्रके उक्त मन्त्रोमे श्रेष्ठ मन्त्रहै सो गणेशजीका ध्यानकरके अरु निश्चल चित्तसे इसमन्त्रको जप२०तूपरमसिद्धिकोप्राप्तहोकरलोकमें विख्यात होगा तब तौ गृत्समद विप्र पिताजीके मुखसे मन्त्रको पाय कर२१अनुष्ठान मे रतहोकर मन्त्रजाप अरु गणेश ध्यानमे परायण होताभया ऐसे मुनि श्रेष्ठ को वहुतसा समय व्यतीत हुये २२ तिस मगधदेश में (मगध) नामक जो राजा था जोकि सुन्दर स्वरूप महासन्मानी दानमे शूरवीर नाना आभूपण शोभा समन्वित वडे मोल्य आसनपर वैठा २३ जो राजा हस्त्यश्वरथ पैदलवाली सेना सहित ज्ञानी अरु पण्डितों करके माना अपनी देवसभामें सिंहासन स्थित जैसे दूसरा पुरुहुतनाम इन्द्रही होवे २४अरु उनके दोमंत्री जोकि ज्ञानसागर जो गुणोंसे वृहस्पति के समान अरु (अम्बिका) नाम इसकी भार्या जो कि सुन्दर सरूपा अधिक गुणोवाली २५ पतिव्रता वड भागिनी जो शाप अरु अनुग्रह करने मेंसमर्थ थी तौ उस (मगध) राजाके पिताके श्राद्धमें वडे २ ऋपिलोग आये २६ राजा करके वुलाये ये वसिष्ठ अत्रि वेद के पारगत अरु वुलाया (गृत्समद) तपस्वी शुद्ध चित्त भी आया २७ फिर शास्त्रके प्रसंग से (गृत्समद) प्रौठिनाम अति चतुराई अर्थात् अपनी वडाई को आप कहनेलगा तौ अत्रिजीने उसको मुनियोके साम्हनेही धिक्कार है धिक्कार है ऐसा कहा २८ तू कि तपस्वीहै ऐसा मान्यहै तू मुनि नहींहै क्योंकि तेरा जन्म तौ (रुक्मांगद) राजपुत्र से हुआहै तू विचार ले २६ सो हमारे सन्मुख तू पूजा के योग्य नहीं है इससे तू अव अपने आश्रम को चलाजा ऐसा अत्रिजीका वचन सुन वो क्रोधसे दिया मानो जलताही हो ३० अरु वो त्रिलोकीको जलाता हुआ सा उन मुनियो को मानो खाता हुआही वहुत से तौ भागहो गये जैसे सिंहको देख मृग भगजावें ३१ वो ऐसा उस सभामें व-शिष्ठादि मुनियो को ऐसा वोला गृत्समद कि हे मुनीश्वरो जो मैं रुक्मांगद का न भया तौ तुमको शापरूप अग्निसे भस्मशेष अर्थात्

जलादेवोगा तो भस्महो शेष रहेगी३२ब्रह्माबोलेकि उनसारे मुनि
योसे कहकर गृत्समद माताके पासगया अरु कोप से बोला कि हे
कामवती दुष्टेकहु ३३ मुकुन्दे मेरे निजपिताको बतानहींतो भस्महो
जावेगी वो उसका ऐसा वचन सुनकर अत्यत व्याकुल भईकापी ३४
मुकुन्दा कि जैसे पवन से मुकुल सहित केलेकी पेखड़ी आंजलि पुट
बाधती सो दीनवाणी से बोली ३५ मुकुन्दा कि नृप श्रेष्ठ राजा
रुक्मांगद साथसे भ्रष्ट त्रिलोकी मे सुन्दर सो मैंने देखा ३६ मेरा
प्रियभर्त्ता वाचक्नवि अनुष्ठान में स्थितथा मै कि स्त्रियें अनिवार्य्य हैं
अर्थात् रुकतीनहींहे ऐसे विधिशास्त्रकेकहे वाक्यको स्मरणकरके ३७
विस राजामें मेरामन आसक्तहुआ इससे तेरा पिता वोहै तिसका
ऐसा वचन सुनकर सो मुनि मान युक्तहो चलदिया३८अरु लज्जा
से अधोमुख हो अपनी माता के प्रति शाप देताभया पुत्र बोला कि
हेदुष्टेमूढ़े पापसेतकरनेवाली तू बनमेंकाटेवाली अर्थात्बेरीहोजा३६
असख्य जिसमें फलहों अरु सब प्राणियों से रहित होजा उसे भी
उस क्रोधभरीने शापदिया कि ४० तैंने माताका अनादर करके जो
शापदिया तो हे पुत्र में तुझे भी शापती हू कि तुससे कठोर पुत्र
उत्पन्न होगा४१जो कि त्रिलोकी का भयदायी दैत्य महाबलवाला
ऐसे वे मा वेटे दोनो आपसमें शपतेभये ४२ ब्रह्मा बोले वोतो तभी
शरीरको छोड़ बेरीहोगई कि जो जेरके अरु अडे से भये सभी पक्षियो
से रहित भई ४३ तभी फिर आकाश से वानीभई कि गृत्समद तो
इंद्र से हुआ अरु हे ब्रह्मन् वो गृत्समदजी अनुष्ठान करनेके लिये
चलेगये ४४ इसगृत्समदके आख्यानको जो उत्तमनरश्रवणकरताहै
सो सकटको नहीं प्राप्तहोता अरु अपने सारे वाछित फलको प्राप्त
होताहै ॥ इतिगणेशपुराण उपासनाखण्डमें गृत्समद काआख्यान
इसनाम से छतीसवा अध्याय हुआ ३६ ॥

सैंतीसवा अध्याय॥

श्रीब्रह्माजीबोले धमते२ मुनिरुक्मांगदनेएकपुष्पकसज्ञा जिसकी

ऐसा वनदेखा जो कि नाना प्रकार के वृक्ष वेलोंसे गुम्फित पुष्पोंके
गुल्मोंसे शोभित १ जो कि झरनों के झर जलसे शोभित अरु अमर
मुनि श्रेष्ठों करके संयुक्त था तो गृत्समदने वहां जाय उन्हें प्रणाम
किया अरु उन्हींकी आज्ञासे वहां रहनेलगा २वो वहां स्नान करके
पैरके अंगुष्ठके आश्रित होकर तप करताभया अपने निश्चल मनसे
विघ्नो के ईश्वर समर्थ देव गणेश जीको ध्याताभया ३ नासिका-
ग्रमें लगाईहै दृष्टि जिसने अरु जो दशों दिशाओं को नहीं देखता
भया जितेन्द्रिय जितश्वास अरु जितमन प्राण भोजन ऐसा वो ४
सहस्र दिव्य वर्षतक अत्यंत कठोर तप करता भया अरु जब उस
गृत्समद मुनिने नेत्र खोलकर देखा ५ तो तब उनके नेत्रसे उत्पन्न
अग्नि देवताओं को दुःखी करता भया तब देवता शंकितहुये कि ये
किसके किसके स्थानका भोगीहोगा ६ और भी कि ये एकही गले
पत्रको भोजन करता रहा कि परम प्रलय स्थितहुआ अत्यंत नि-
श्चलहुआ छिन्न शाखावाले वृक्ष तथा ध्रुव या वाकीलसा स्थित
भया ७ ऐसेही निश्चल चित्त उसने पंद्रह हजार वर्षतक तपकिया
तब तो विनायकजी उसका अति कठिन तप देखकर ८ अरु उसके
अनुग्रहकेलिये सुन्दर प्रकाशमान् गणेशजी प्रकट हुये ९ जैसे अपने
वच्छेका शब्दसुनगैयाशीघ्र दौड़तीहै तैसेहीदेवविनायकजी गृत्समद
के पास आये जो कि सहस्र सूर्य्य समान तेजसे संसार को प्रकाश
करते १० कैसेहैं गणेशजी कि चलायमान हैं कर्णताल नाम ताड़
वृक्षके पत्रसे जिनके भारी हस्तीकी सी लीला जिनकी अरु हर्ष से
सुन्दर खेलनेवाले शोभितहै मस्तक में चन्द्र जिनके भारीहै कमलों
की माला गलेमें जिनके अरु जो जगके कार्य्यके मूल अर्थात् आदि
कारण अरु हाथमें है कमल की नाली जिनके अरु नमते भये जो
सेवीनाम भक्त तिनके मिलनेवाले अर्थात् वरदाता ११ अरु जोसिंहपै
सवार दशहस्त सर्प यज्ञोपवीत वाला अरु जो केसर अगर कस्तूरी
अरु सुन्दर चन्दन से चर्चे १२ जो सिद्धि बुद्धि युक्त श्रीवाले अरु
किरोड़ सूर्य्योंसे भी अधिकहै कांति जिनकी अरु जो वस्तुसे अनि-

रूप, अर्थात् अगोचररूप भी थे पर तो भी अपनी लीला करके मुनिके आगे आये१३ उनमहात्माजीके तिसतेज करके इस मुनिका तेज हरागया जैसे सूर्य्यजीके तेजसे तारोंका अरु चन्द्रमा का तेज जातारहै १४ वो नेत्र मीचकर अत्यंत व्याकुल हुआ कांपा अरु विस्मरण भयाहै ध्यान मुगल जिसका ऐसा वो मूर्छित हुआ भूमि पर गिरपड़ा१५ फिर भी मनसे आरोग्यदायी विनायकजीको ध्याता हुआ चित्तसे विघ्नके कारण को विचारता हुआ मुनि व्याकुल भया १६ कि ये बड़ा क्षोभको उत्पन्न करनेवाली शीघ्रही से उत्पन्न भया आजतक जो तपतपा सो सब वृथाहीगया १७ हेसबके आत्म रूप देवेश इस भयानक विघ्न से मुझे बचावो विन जगतके ईश्वर आपके मैं किस ओर के शरण जाऊं १८ हे देव मुझको सदाही महादुःख किस कारण से होरहा है कि जो इस पंक्ति मे मैं पुजता नहींहूं जिससे ऐसे मेरा जीव जल रहा है १९ ब्रह्माजी बोले ऐसे उसका कहना सुनके बिनायकजी बोले कि तेरे अनुग्रह के लिये प्राप्त हुआ चिंतामणिजी मुझे जान२० जो बहुतकाल नियममें स्थित सनकादि तिनकरके भी न प्राप्त अर्थात् कठिनता से प्राप्त करने योग्य मैं हूं सो हे मुनि श्रेष्ठ तू भयको छोड़कर तेरा जो वांछित है सो मुझसे मांग २१ जो कि मैं तेरेसे एकाग्रष्ट तपकरके प्रसन्नकिया गयाहूं ब्रह्माजीबोले मुनि ऐसे उस देव देव के शोभन वचनको सुनकर २२ अपने परम आनन्दमे मग्नहुआ दंडवत् प्रणाम करताभया अरु अत्यंत प्रसन्नहुआ इन चन्देते बिनायकजीको ये कहता भया २३ गृत्समद बोला कि आज मेरा जन्म सफल भया अरु मेरे तप नियमका भी फलमिला जो कि ये नित्यानंद स्वरूप जो मूढष्ट ब्रह्म अरु जो आकृतिशून्य २४ जो सच्चिदानन्दघन वेदशास्त्रोंकेभी अगोचर अर्थात् कठिनता से प्राप्त करने योग्य २५ ऐसे साक्षात् आप शीघ्रहीदीखे इससे अब मैं क्या प्रार्थनाकरूं तब भी हे गजाननजी मै आपकी आज्ञा से एकप्रार्थना करता हूं २६ कि चौरासी लक्ष योनिओं मे श्रेष्ठता मनुष्योंकी है तिनमें भी अत्यन्त बड़े चार वर्ण

हैं २७ तिनमें भी ब्राह्मण श्रेष्ठ है तिनमें ज्ञानीजनपरमहैं ज्ञानियों मे भी जो अनुष्ठान मे परायणहैं अरु तिनमें ब्रह्मज्ञानी श्रेष्ठ है २८ सो हे जगदीश्वर तेसा जो ब्रह्म ज्ञानहै अरु आपमे सुन्दर दृढ़भक्ति अरु न विस्मरण अर्थात् न भूलना २९ अरु हे गजाननजी आपके सब भक्तोमे मेरी श्रेष्ठता औरभीमे एकवर मागताहू कि हे कल्याणकारिन् या हे शंकरसूनो यहा वृद्धि न भई क्योंकि गोत्राप त्यादि प्रत्ययोको स्वार्थमें णित्वविकल्प करके होताहे तो पक्षमें जहाणित्व नहीं तहा वृद्धि भी नहींहै ३० अरु आप मुझको अपनी भक्ति का मुख्यस्थान अर्थात् मेरेमें सर्वदा आपकी भक्ति वनीरहै अरु मुझको तीनों लोको में विख्यात करो अरु सुर नरों करके नमस्कार करने योग्यकरो ३१ हे विघ्नेशजी जो सम्पूर्ण प्रयोजनकारी आपप्रसन्न हुवे हो तो मुझे ऐसाकरो अरु हे सुरेश्वर ये वन पुष्पकनाम से विख्यातहो ३२ अरु आप इसवनमें स्थितहोकर भक्तोके कामोको नित्य पूर्ण करतेरहो अरु ये जो पुष्पक पुरहै सो चारों दिशाओं में विशेष से ३३ गणेशपुर ऐसे विख्यात हो हे गजाननजी ब्रह्माजी बोले कि श्रीगणेशजी महाराज ये कहतेभये गजाननजी बोले ३४ हेमहाबाहु अच्छा२मेरे प्रसन्नभयेभक्तोको तीनोलोकोमें भी कुछदुर्लभ नहीं है हे मुनिश्रेष्ठ ३५ जो तुझमे प्रार्थनाकियागया सो विप्र तेरा सब सिद्धिहोगा तेरेको प्रसन्नभये मेने ब्राह्मणपना अतिदुर्लभ सो सौपा अर्थात् दिया ३६ क्योंकि जिसे तेने (गणानान्त्वा) इस वेदके मन्त्रका हे मुनि जापकिया इससे तू इसमन्त्रका ऋषिहोगा ३७ ओर तू ब्रह्मादिक देवताओ में अरु वशिष्ठ आदि मुनियोंमें भी सारे परम श्रेष्ठताको प्राप्तभया विख्यातिको प्राप्तहोगा ३८ अरु सम्पूर्ण प्रारम्भकिये कामोंमें पहिले तेरा अरु पीछेमेरा जो जन स्मरणकरेगे तिनकी अवश्य सिद्धिहोगी ३९ विना देवऋषि ज्ञान के वेदोका सर्व कर्म निष्फलहै अरु तेरे पुत्रवलवाला सब देवतो को भयदायी होवेगा ४० अरु वो तेरापुत्र तीनोलोक में विख्यातको प्राप्तहोगा अरु विनामहादेवजीके सब देवताओंमे अजय अनाम जीतनेयोग्य

नहींहोगा ४१ अरु जोकि मेराभक्त अरु मेरेमें हीं है प्राण जिसके मेरेही में निष्ठ मुझमेंहीं परायण अरुये नगर सतयुगमे तो पुष्पक नामी होगा ४२ अरुत्रेतायुग में (मणिपूरक) अरु द्वापरमे (भानु) अरुकलियुग मे (भद्रक) इसनाम से संसारमें विख्यात होगा ४३ यहा मनुष्य स्नानदानसे सब कामनाओंको प्राप्तहोंगे ब्रह्माजीबोले कि विभु गणेश जी तो ऐसे वरो को देकर वहां ही अन्तर्द्धान होगये ४४ उनके अन्तर्द्धान हुवे उसमुनिने सुन्दर मन्दिर बनवाया अरु उसमें सुन्दर गणेशजी की मूर्त्ति करवाके स्थापन करता भया ४५ अरु बरद अर्थात् वरदायक ऐसाउसका सुशोभित नामरक्खा अरु वो गणेशजी के प्रसादसे सिद्धिका स्थान होगया ४६ सारोंके कामोको पापताहै इससे भी वो पुष्पक क्षेत्रहै वहा उसमूर्त्तिको मुनिने भक्ति भावसे सयुक्त होकर उसमूर्त्तिका पूजन करताभया ४७ हेमुनीन्द्र व्यासजी जो इस श्रीविघ्नराजजीका वर प्रकाश करनेवाली कथा को श्रवण करता है सो सब कामो को अरु ससार से छुडाने वाली सुदृढ़ गणेशजी की भक्तिको प्राप्त होगा ४८ इति श्री गणेश पुराणउपासना खडमें पुष्पकपुर का वर्णन इस नाम से सैंतीसवां अध्याय हुआ ३७ ॥

अडतीसवां अध्याय ॥

व्यासजी ने पूछा कि हे सुरेश्वर फिर गृत्समदकी किसप्रकारकी वृत्ति नाम वर्त्तना भया सो हे कमलजन्य ब्रह्माजी यत्न से श्रद्धाकर रहे मुझको आप वर्णनकरो १ ब्रह्माजी बोले कि तब तो सारे मुनिगणोने इसे आदरसे माना अरु प्रकटहो कि द्विजसारो ने मुनिगृत्समद को नमस्कार करी २ अरु गणेशजी के वरदान से उसको यज्ञ कर्ममें वर्णन किया अरु सारेआरम्भ में गणेशजीके पूजनकी आदिमे उसका स्मरण किया ३ ऐसे वो मुनि विख्याति को प्राप्त भया जो कि उनके परम मन्त्रको निश्चलहो जपता श्रीगणेशजी में परम भक्ति को करताभया था ४ किसीसमय उस मुनिने हे व्यास उत्तर

परे अर्थात् अत्यन्त बलसहित छोंका तो कि दिशा अरु आकाश पृ-
थिवी अरु पर्व्वत वनो को- शब्द कराता अर्थात् गोजाता भया ५
फिर जितने कि उसने अगाडीदेखा तितनेही में एक भयकरबालक
जो रक्तवर्ण बडाशब्दायमान जयाके फूलकेसमान रक्त६ तेजकेसमूह
को चुराता अरु नेत्रोंके दृष्टिमार्गको भी चुराता अर्थात् अति तेजस्वी
उस ऐसे बालकको वो भयभीत कांपताभया ७ अरु मन से तर्कना
भी करताभया कि ये कैसा विघ्न आगया न जाने गणेशजी ने हो
ने ये मुझे अद्भुत पुत्र दियाहै क्या ८ अरु फिर उसीको ये सुन्दर
मुखारविन्द शुभ लोचन देखता भया जो कि सुन्दर रौक्म अर्थात्
सुवर्णके भुजबन्धबांधे सुन्दर मुकुटधरे श्रेष्ठपैंजूरे अपने चरणोंमें धा-
रणकिये हुये ९ और सुन्दर कटिबन्धसूत्र अर्थात् तागड़ीसे शोभित
है कटि सूत्र जिसका ऐसे सुतको मुनिने पूछा कि तू किसका कौनहै
अरु क्या किया चाहताहै १० अरु हे तेजस्समुद्र बालक तेरे मावा-
प अरु तेरे स्थान कहा है सो कहु ब्रह्माजी बोले कि उसके ऐसेव-
चन सुनकर वो बालक इसमुनिसे कहताभया ११ बालकबोला कि
तू भूत भविष्यद्वर्त्तमानवाला मुझे क्या पूछै है तब भी मैं तेरे आज्ञा
वशसे कहताहू कि तेरीछींकसे मेरी उत्पत्ति भईहै १२ तू मेरा पिता
माताहै सो मुझपर दयाकर हे मुनि पिता तुम कुछदिन मुझे पालन
करो १३ मैं कि त्रिलोकी के दाबने मे समर्थ देवेन्द्रको वशवर्त्ती कर
लेऊंगा इसमें संशय नहीं है कि मेरा पौरुष आप देखतेही हो १४
ब्रह्मा जी बोले गृत्समद मुनि उसका ऐसा वचन सुनकर भय चाव
सहित हुआ कोमलवाणी से वचनबोला कि १५ जो ये उत्पन्न मात्र
ही त्रिलोकी के खेंचनेमें समर्थहै तो इस अपने पुत्रको निजमन्त्र अ-
वश्य ही बताऊंगा १६ जिससे कि इसको वांछित को प्रसन्न भये
जगन्नाथ गणेशजी इसे देवेंगे तो मेरी भी कीर्तिही होवेगी १७ ऐ-
से चित्त से चिन्तवन करके तिस पुत्रको उसने अपना मन्त्र बताया
(गणानान्त्वा) ये अरु उससे कहा कि तू आदरसे ये अनुष्ठानकर
१८ अर्थात् तू गजाननजीमें चित्तस्थापन करके इसवेदके मन्त्रको जप

हे पुत्र जब वे प्रसन्नहोंगे तुझको सारे कामही देवेंगे १९ ऐसेमहा मंत्र जाप वो तपकेलिये वनमें चलागया तो वो भी निराहार जितेन्द्रिय होकर एकही अँगूठेके वल स्थित होताभया २० अरु वो निश्चल चित्तसे देव गजाननजी को ध्याताभया तो जपतें भये उसको आधेसे सहित अयुत अर्थात् पंद्रहहजार गिनेवीते २१ गये तो इसे मुखसे दशो दिशाओको जलाता सा अग्नि उत्पन्नभया तो सवभूतला दिवासी देव दैत्योंको भयं होताभया २२ तव उसके तपसे प्रसन्नभये गजाननजी प्रसन्न होतेभये कि दिशाओंकोतिमिरसे रहित अर्थात् प्रकाश करतेहुये अरु सूर्य मण्डल का भी आच्छादन करते भये २३ अपने सुन्दरशूड अरु शुभ दन्तको भ्रमातभने तिसकेभारी शब्दको सुनकर वो वालक विह्वलसा होता २४ उसने आंखखोल के आगे स्थित गणेशजीको देखे जो कि चारभुज वडे शरीरी नाना आभूषणो से भूषित २५ अरुपरशु कनलमाला मोदक इनको हस्त मे धारण करतेभये उनके तेजकरके दवाहुआ ये धैर्यको धारण कर उन्हें प्रणामकरताभया २६ अरु वधे अंजलिपुटजिसके अर्थात्हाथ वांधकर उन समर्थ गणेशजी को प्रार्थना करता भया वालक वोला कि हे देव मुझ भक्त शरण आयेको आपक्यों धर्पतेहो अर्थात डराते हो २७ देव जी अव तो तुम अत्यन्त सौम्य होकर मेरे सम्पूर्ण मन वाञ्छितको देवो ब्रह्मावोले ऐसे उसके वचनको सुन गणेशजीने अपना तेज संहारा अर्थात् हटालिया २८ अरु परम प्रसन्न मन भये वोले कि हे वालक तू सावधानहो जिसको कि तू रात्रि दिन ध्याता है सो ही मैं तेरा अव वरदेनेवाला हूं २९ अरुइस मेरे परमस्वरूपको तो जो कि स्वीय प्रकाश सर्वकहै सर्व जगदव्यापीहै इसे ब्रह्मा रुद्र आदि कभी नहींजानते मनुष्य तो कहांसेजानेंगे अर्थात् दुष्प्राप्यहूं ३० और भी जितने देव अरुमुनि ये है सो जानते नहीं है न राजर्षिये जानते हे अरुन असुर सिद्ध गंधर्व अरुन नाग न दानव जानतेहैं ३१ सो ही मैं तेरे तप से वंधा तुझेवर देनेको आयाहूं कि जिन२को मनसे चाहताहै सो२ सव मुझसेमांग ३२ तव वो वालक

बोला कि मैं आपके दर्शन से धन्य हूं अब मेरा पिता भी धन्य है अरु मेरा जन्मकर्म भी सप्रयोजनहै ३३ अरु हे देव मैं बालकपने से स्तुति करना नहीं जानताहूं जिसलिये कि आप इस सारे संसारके कर्त्ता रक्षक संहारक हो ३४ अरु ये सूर्य अग्नि अरु चंद्रमा ये आपही के तेजसे प्रकाशित होरहे हैं अरु हे महाबुद्धे आप अपनीहीं महिमा सेती इस चर अचर लोक को चिताते अर्थात् चैतन्य कराते हो ३५ अरु आपके इसमहान् महिमाको ब्रह्मा ईश्वरभी नहीं जानते हैं अरु जो आप मेरे वरदायकहो तो हे गजानन जी आप मुझको यहदेवोकि ३६ त्रिलोकीको आकर्षण अर्थात् निजवशमें करनेवाली विशिष्टशक्ति मुझको देवो अरु देवता दानव गंधर्व अरु मनुष्य सर्प राक्षस ३७ मेरेसदा वशवर्त्ती होवें मुनियें अरु सिद्ध चारण भी अरु जो मेरेमनका चिंतनहै सो सदा सिद्ध होवे ३८ अरु इंद्रआदि लोकपाल मेरी सदा सेवाकरतेरहैं अरु यहां मुझको अनेकभोग अरु अंत में मुझे मुक्ति देवो ३९ और भी मैं आपसेवर मांगता हूं कि आपकी आज्ञासे येपुर प्रख्यातिको प्राप्तहो क्योंकि जिसलिये मैंने कठिनतप तपाहै ४० तिसलिये ये (गणेशपुर) ऐसे प्रसिद्ध जनो को वांछितदाता हो *श्रीगणेशजी बोले कि तू तीनो लोकों का आक्रमण अर्थात् निर्भय सैर करेगा* अरु सबों से तुझ को भय नहींहै अरु तेरे सदा सब वशीहुये ४१ अरुमैंने तुझको आय नाम लोहेका अरु कंचनका अरु चांदीका ऐसे तीन पुरदिये ४२ जो कि पुरत्रय सर्व देवताओं करके अभेद्य नाम तोड़ा न जावे केवल शिवजी के विना अरु त्रिपुर ऐसा तेरा लोकोंमें नाम विख्यात होगा ४३ जब कि एकबाण से शिवजी तेरे तीन पुरको भेदन करेंगे तभी तू मोक्षको प्राप्तहोगा इसमें कार्य की कुछ विचारना अर्थात् विचार नहींहै ४४ और तेरा सब वांछित है सो मेरी प्रसन्नता से सब सिद्ध होगा ब्रह्माजी बोले कि वे देव गणेश जी ऐसे वरदेकर वहांहीं अंतर्द्धान भये अरु इनके वियोग से त्रिपुरासुर बड़े विषादनाम संदेहको प्राप्तभया ४५ अरु यथेच्छ वरों को प्राप्त होकर बड़ेभारी हर्ष को मानताभया अरु अपने बल से

त्रिलोकीको विजय करनेकेलिये यत्न करताभया ४६ इतिश्रीगणेश पुराण उपासनाखंडमे त्रिपुरको वरप्रदान इसनाम से अड़तीसवां अध्यायहुआ ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय

व्यासजीने पूछा कि हे ब्रह्माजी फिर उस वर से गर्वित त्रिपुर ने क्याकिया वह सारा कौतुक निश्शेषसे आप मुझे कहनेयोग्य हो १ ब्रह्माजी बोले कि तबतो उसने गजाननजीकी कश्मीरीपत्थर की बनी मूर्त्ति मन्त्रज्ञ ब्राह्मणोके प्रसङ्गसे यथा शास्त्रविधि के अनुसार स्थापनकरी२ अरु उस गणेशपुरमे बडाभारी दिव्यसुवर्णकामदिर बनवाया जोकि मणि अरु मोतियो से विभूषित अरुशोभन३ उसमें उसने षोडश उपचारो से विभु गणेश जीको पूजन किये। अगणित नमस्कारोसे अरु प्रार्थना स्तुतियोसेभी ४ देवोके देवजीको क्षमापनकरके आज्ञालेकर पुरसेबाहरआया अरु ब्राह्मणोको यथा योग्यतासे अनेकदानदिये ५ तिससेफिर उसत्रिपुरका बंगालेदेशमें स्थान भया जोकि सबको सिद्धिदायक (गणेशपुर) ऐसे विख्यात६ फिर वो त्रिपुरदैत्य गजाननजीके वरसे मदको प्राप्तभया देवोकेवश करनेमें स्थितहुआ मनुष्यलोकको पालन करताभया ७ अरु उसकी सेवाकेलियपैदल अरु घोडे हाथी रथवाले अत्यंतबलवाले आप से उसके पास आतेभये ८ अरु राजा भी अनुकूलता करके उसके सेवक होगये जो विमुखथे सो युद्धकरनेको न समर्थ मृत्युको प्राप्त हुये ९ ऐसे ये भूतल को आक्रमण अर्थात् गाह करके अमरावती पुरीकोगया तबतो इन्द्र नानायोधा देवगणोसे सहित १०ऐरावत हस्तीपर सवार हो युद्धको दर्शित दशा अर्थात् तेज भया आया अरु इसमहाबली त्रिपुरनेभी अपनी अगौंवालीसेनाको तीनप्रकार से अर्थात् तिहरा करा११ अपने भागदेहवाले महादैत्य अरु वज्रदंष्ट्र दानवको जोकि जिसके दानव धनुर्युद्धमे शास्त्रयुद्धमें अरु गदा अग्रयुद्धके पारग १२ जोकि दैत्यश्रेष्ठ अस्त्रयुद्ध अरु मल्लयुद्ध नाम

कुरतीमें चतुर उस (भीमकाय) नाम दैत्यको वो त्रिपुरबोला कि तू मनुष्यलोकका पतिहो १३ अरु वली त्रिपुरने कालकूट वज्रदंष्ट्रको बोला कि तू इसत्रिभाग सेनाको साथलेकर पातालको चलाजा १४ अरु शेषजीसे आदि ले सबसर्पोंको मेरीआज्ञासे वशमेंकरो अरु मैं त्रिभाग सेनासे सारे सुर अरु इन्द्रको दवाऊंगा १५ तो भीमकाय अरु वज्रदंष्ट्र यथा आज्ञापाय प्रस्थानकरतेभये अरु आपचतुरंगिनी सेनासे संयुक्त इन्द्रके नन्दनवनको गया १६ उसकी सेनावाले न-नाकियेभी उस वनके दिव्यवृक्षों को तोडतेभये वहां स्थित होकर दैत्यराजने इन्द्रके पास अपने दूत भेजे १७ कि इन्द्रको मेरे दर्शन के लिये तुरतही लेआवो या इस मेरेवाक्यको उससे कहो कि अब तू मृत्युलोकको जा १८ वहां मैं तुझको पालनकरूंगा तू हमें साम नाम समझानसेही अमरावतीदेदेव अरु जो तेरीबुद्धि युद्धकरनेमेंहै तो शीघ्र मुझपासआव १९ वे जाकर त्रिपुरासुरके काम को इन्द्रसे कहतेभये इन्द्र उनका वचन सुन वज्रसे हत पर्वतकी नाईं २० वो पर्वतोंका रिपु इन्द्र वायुसे वृक्षकी तरह कांपताभया चिन्तासेव्या-कुलहुआ कि यह क्याहै ऐसेचिन्तवन करताभया २१ क्रोधअग्नि से जलता अतिलाल करालहैं सारेनेत्र जिसके लोकों को भस्मकरता भयासा अरु समुद्रोंको शोखताभयासा २२ दूतोंकोबोला कि तुम तुरतही युद्धकेलिये जावो वो आप ऐरावतपरचढा सुरोंकेशत्रुओंका हन्ता इन्द्र गर्जना करताभया२३ तिस महाभारीशब्दसे त्रिलोकी को चलितकरताहुआ उसके वचनको सुन दूत वो वे जहांसे आये वहां अर्थात् त्रिपुरासुरके पासगये २४ अरु देवताभी खिचेभयेयुद्ध को तय्यारभये सो कि नानाप्रकारके हथियार तलवार हाथमेंलिये अरु कोइक भालेलिये अर्थात् कोइक गोफिया लिये कोइक शक्ति खड्ग हाथमेंलिये २५ कइक मुशल सोंटा धारणकिये कइक धनुष बाण चढाने कइक गदा ढाललिये अरु कइक दगडेही हाथमें लिये २६ ऐसेर देवोंके गणोंसे संयुक्त इन्द्र वज्रधारी बाहर निकला जो कि गीत बाजोंके शब्दोंसे अरु ब्राह्मणों करके स्वस्तिवाचन किया

गया २७ त्रिपुरनेभी अपने दूतकेवाक्यसे उसयुद्धके उद्यमकोजान करके अपनीप्रसन्न चतुरंगिनीसेना तय्यारकरी २८ असंख्यसेनाको साथले घोडेपर सवारहुआ बाहरआया तौ वे वीर आभूषणवाली दोनोसेना आपसमें देखतीं अर्थात् मुकाविला करतीभई २६ तौउस सेनाके वृंहितनाम हाथियोकीगर्जना अरु हेषितनामघोडोकाहिन-सना इनकरके महाकोलाहल शब्दभया अरुक्ष्वेडितनाम सिंहनाद समान रथ शब्दोंसे अरु बाजेके शब्दोंसेभी महाही शब्दहुआ ३० तवतौ वे वीर त्रिपुरदैत्य करके हुंकारमात्रसेही प्रेरे देवताओकेसाथ लडतेभये तौ वो समर्दन अर्थात् महाभारी युद्धभया ३१ जहांतक कि अपनेपरायेकाभी ज्ञान न रहा कि आपसमेंभी प्रहार करतेभये ऐसे अतिस्कुल अर्थात् महाभारी युद्धभये वे दानव बहुत से मृत्यु को प्राप्तहोतेभये ३२ अरु दैत्योंके शस्त्रोकरके पीडित देवताभीगिर-पड़े वे सेनावालेवहांफूलेकेशूकोनाईं शोभितहुये अर्थात्क्षतोसेलाल लाल हुये ३३ कई बिनाही सेज सोये अर्थात् भूमिपर गिरतेभये तैसेही वाकी पादरहितभये जोकि ऊंटोपरथे अरु हस्तिगामी रथ अश्वपरचढे अरु पैदलथे ३४ फिर तो पलायनमे परायण होकरके दैत्य दशोंदिशाओ में भागगये जेसे सिंहकोदेख जीनेकी आकांक्षा वाले मृग भागजावे ३५ तवतो देवरिपुत्रिपुर आपही देवसेनाको हटायकर क्रोधकी अग्निसे अत्यन्तजलताओर मेघकेसमानगर्जता ३६ मानो धरती आकाशको खाता शक्रके सम्मुखगया अरु इसने अपने खड्गसे तीव्र वज्रधारी इन्द्रके हाथ को प्रहारसे हना अर्थात् घे हन्ताभया ३७ तौ इन्द्रके हाथ से वज्र गिरपड़ा तो वो वडाही आश्चर्यसा भया अरु तभी दैत्य त्रिपुरने ऐरावतहस्तीकोभीउसीसे हना ३८ वो ऐरावत इसके प्रहारसे पलायनमे परायणहोकर भागा फिर इन्द्रने इस महादैत्यको मुष्टिसे मारा ३६ वोभी क्षणभर भूमि पर गिरा फिर वेगवान उठकर मुष्टिसे शक्रको हन्ताभया अरु इस इन्द्रको धरतीमें गिराताभया ४० तव तौ क्रोधयुक्त इन्द्रने उठकर दैत्यसे कहा कि हे असुरेश्वर अवतो तू मद्धयुद्धको सहितव्याकरके

अर्थात् तय्यारहोजा ४१ तबतो वो विस्मयभरा बलसे गर्वितहुआ
बोला कि हे सुरेश्वर किसलिये तू अपने प्राणोंमे निर्दयहोरहाहै४२
क्योंकि कृमि कीट पतगइत्यादि क्षुद्रजीवोंको भी प्राण तो अत्यंत
ही प्यारे होते हैं सो हे देव तू धरतीपरजा मैंने तेरेको सुन्दरस्थान
बताया ४३ श्रीब्रह्माजीने व्यासजीसे कहा कि बली वृत्रासुरहन्ता
इंद्र इसका ऐसा वचन सुनकर बोला कि हे शत्रो जो मैं तुझे तेरे
जीवनसे न छुड़ादेऊं तो ४४ हे अधम मैं तेरी आज्ञावश हो भूमिपर
चलाजाऊं पर हे अधम तूही अब हने मस्तक अर्थात् शिर कटकर
धरतीपर गिरजाताहैगा ४५ ऐसे इंद्रके कहतेही दुष्ट दैत्येन्द्र उसे
मुष्टिसे हन्ताभया तबतो उनका फिरभी युद्धभया४६ जैसे कि पर-
स्पर जीतने की इच्छा करनेवाले चाणूर दैत्य अरु श्रीकृष्णका वो
वे हृदयसे हृदा अरु हाथसे हाथको हन्तेभये४७ जांघोसेजांघ अरु
गोडोसेगोडे अरु कोपरअर्थात् कोहनीसेकोहनी ४८ पीठसेपीठपैरों
सेपैर वे दोनों आपसमेंहन्तेभये अरु वो दैत्यांकेसा इंद्रको पैरपकड़
अरु बार२ घुमाकरके अर्थात् अपने बलके प्रभावसे उनसबकेदेख-
तेभयेही उसने ४६ इन्द्रको ऐसा दूरफेंका कि जिससेकहीं न जाना
जावे अर्थात् जिसका कहींपता न लगे अरु आप उस चतुर्दंतीहस्ती
पर चढगया ५० तबतो हारि विचारे सारे देवगण हिमाचल पर्वत
के वनमें दैत्य त्रिपुरसे डराये इंद्रको देखते२ आये ५१ वो देवइंद्र
न जाने कहां पडा उस प्रभुको हम अब कैसेदेखेंगे ऐसे चिन्ताकरते
अरु भ्रमते२ उन्होंने इंद्रको देखा ५२ अधोमुखकिये आवता देवेंद्र
तो देव सारे देवोंने उसको प्रणाम अरु स्पर्शकिया ५३ कइकउसे
पूजतेभये कईपवन करतेभये कइक भक्तिसेइसकेपैर दाबतेभये ५४
तब तहां गुप्तरूप होकर सारेसुर बसतेभये अरु वो त्रिपुर ऐरावत
पर सवार अमरावतीको आया ५५ आप इंद्रके आसनपरगया जो
देवताओंके स्थानथे उनको प्रत्येक मानपूर्वक यथायोग्य बांटकर
स्वतन्त्र दैत्योंको देताभया ५६ दिव्यबाजोंके शब्दोंसे गंधर्व गानो
को सुनता किन्नरोंकरके सेव्यमान अर्थात् किंपुरुषगन सेवाकररहे

जिसकी ऐसा वो त्रिपुरासुर अप्सराओं के समूहोंमें रमण करता भया ५७ ॥ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में इन्द्रकी पराजय नाम हारना इस नामसे उन्तालीसवां अध्याय हुआ ३६ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि त्रिपुरदैत्य देवस्थानोंको आक्रमण अर्थात् निज वशमें कर करके ब्रह्मलोक में गया अरु ब्रह्मा दैत्यके किये पराक्रम को पहिलेही सुनकर विष्णुकी नाभिके कमल में गया अरु विष्णुजी भी क्षीरसमुद्रको पधार गये तो इस दैत्यके जो पुत्र चण्ड प्रचण्ड थे १ तो वो प्रचण्ड को तो ब्रह्मलोक में नायक बनाकर स्थापन करता भया अरु चण्ड को वैकुंठ में स्वामी बनाकर आप स्थापताभया २ फिर तो वो कैलासमें भी गया अरु उसपर्वत को भुजोंसे चलाताभया तो पार्वतीजी भयसे भीत अर्थात् डरीभई शंकरजीको अत्यंत स्पर्शकरती भई अर्थात् उनके लिपटती भई ३ तबतो ये महाअसुर युद्धकी इच्छाकरके कैलासमेंगया तो तिसदैत्य के उसपुरुषार्थसे प्रसन्नभये शिवजी ४ तो अपनेभक्तको सुखदेनेवाले शिवजी उसे वरदानदेने को बाहरआये तो त्रिपुरदैत्यको देखा अरु वरमांग ऐसाकहते भये ५ उसने कहा कि जो प्रसन्नहुयेहोतो मुझे अभी ये कैलास देदेवो अरु आप मन्दराचलके शिखरपर चलेजावो जबतक मेरा मनोरथहो ६ शंकरजी भी उस थोडेकालवाले अर्थात् स्वल्पजीवी को कैलास देते भये अरु पर्वतशायी अर्थात् पहाड पर शयन करनेवाले शिवजी आप अपनेगणों के साथ मन्दराचलको चलेगये ७ तबतो कैलास शिखरपर सवारहुआ त्रिपुर हर्षताभया ऐसे वो देवताओं को वश में करके फिर पाताल को चला ८ जो भारी शरीर बलवाला भूमण्डलमें आया अरु सारे राजाओंको वश में करताभया अरु सब ऋषियोंको बध अर्थात् कैदकरताभया को सारे अग्निकुंडों को जोकि देवताओं की तृप्ति करनेवाले थे उनहूंप्र अरु आश्रमोंको शीघ्रही तोड़ता भया अरु तीर्थों को विशेष से नष्ट

किये १० अरु तपस्वियो को कारागृह के समाश्रयसे अर्थात् वंदि-गृहमें कैद कर कर अरु त्रास दिखाता भया अरु स्वाहा स्वधा इन देव पितृप्रिय शब्दो को अरु वेदों के अभ्यास को नाश करता भया ११ अरु शेषजीको अरु वासुकि अरु तक्षकइत्यादिसर्वसर्पोको वश करताभया जोकि विषरहित सहितथे तिन्हें सर्वथाही इति १२ वो सर्वगर्वसंयुक्त त्रिपुरश्रेष्ठआचारवालोंसे सदाद्वेष करतारहा अरु वज्रदंष्ट्र सातोंपातालों को वशमें करता भया १३ अरु वज्रदंष्ट्र ने वहा वहुत रत्नसमूह भोगा अरु त्रिपुरारि के पास भी भिजवाया अरु वो सदा मदसहित भया नागोकी पत्नियों के साथ अत्यंतहर्ष से कुतूहल अर्थात् ठट्ठे वाजीकरके रमण करता भया १४ कि वहुत से भोगभोगताभया अच्छे२ रत्नलेकर फिर त्रिपुरके पासआया १५ अरु उसे पाताल को वश्यता अर्थात् वशकरनेको कथनकरताहुआ उससे अधिक सन्मानको प्राप्तहोताभया १६ कि वडेमोलयके वस्त्र ग्राम अरु वहुतसे सेवकोंको प्राप्तभया ऐसे वो तीनोंलोकोंको निज वशकरके आनन्द करता भया १७ तो सारेविचारे देव गुहावासी नित्य २ चिन्ताकरते रहे कि इसका मरण किसकाल मे अरु किस प्रकारसे होवैगा१८ अरु किससे यह मरेगा यह नहींजानते इसने ऐसावर कहांसेपायाहै हेमुनिव्यास देवोंके ऐसे व्याकुलमनभये१९ तो वहां त्रिलोकीचारी नारदजी निजइच्छासे विचरते २ चले आये तो उन दीन देवताओं को देखतेभये आकाश से उतरते भये २० नारदजीको देखतेही वे सारे आदरसे उठ खड़ेभये। अरु यथाक्रम आलिंगन अरु नमस्कार पूजन करते भये २१ अरु विश्रामलिये इनसे त्रिपुर के वर आदिका वृत्तान्त पूछा। देववोले कि इसत्रिपुर करके सव चर अचर लोक आक्रमण कियाहै २२ कि हमारे स्थान खोसेगये हैं अरु उससे ब्रह्मा ईश्वर भी जीतेगये अव हम किसपै शरणजावें अरु तिसका मरण कैसेहोवे २३ औ हे नारद जी इस त्रिपुरको ये वर किसनेदियेहैं सो कहो तो नारदजी वोले इसदैत्य का महाकार्य्य में आपको विस्तार से वर्णन करूंगा २४ कि वो

सहस्रदिव्य वर्षतक परम तप करताभया तौ प्रभुदेव गणेशजी को
प्रसन्न करताभया २५ तिन्होंकरके इसे सबके भयकारी कठिनवर
दियेगयेहैं कि येदेवऋषि पितृ भूतोसे अरु यक्षरक्ष पिशाचोसे २६
अरु न नागोसे भी भय अर्थात् मृत्यु दिया है विना एक शिवजीके
इससे तुम आदरसे देवेश गजाननजीको प्रसन्नकरो२७ अवश्यही
तुम सारे सब सिद्धिदायक विघ्नेशजीको आराधनाकरो तौ देवता
बोले कि उस धीमान् देवदेव जी का आराधन २८ हे मुनिसिंह
जी कैसे कर्तव्य है सो कृपाकरके हमको वर्णनकरो नारदजी बोले
कि मैं तुम सारोंको एकाक्षरमन्त्र कहताहूं २९ कि भक्तिकरके मुझ
से दिये मन्त्रसे तुमसारे सबप्रकार से निश्चलचित्त होकरके अनु-
ष्ठान करो ३० जबतक कि ये देव गणनायक जी प्रसन्न होवें फिर
वेही प्रसन्नभये उसकेवधकाउपाय तुम सबोंसे कहेंगे ३१ मैं और
कोईउपाय नहींदेखताहूं तिससे इसमेरे वचन को करो ब्रह्माजी ने
कहा कि नारदजी ऐसेकहकर अरु उनसबोंको उसमन्त्रका उपदेश
करके ३२ वे तो वीणाकेगान मे ध्यानलगाये उसीक्षणसे चलेगये
अरु तब वे सारे सुरश्रेष्ठ गणेशजीके ध्यानमें परायणहुये ३३ कई
एकपैरसे खडेहुये अरु कई कमलासनहो स्थितभये कई वीरासनसे
संयुक्तहो बैठे कई कि मीचेंहै नेत्र जिन्होने ऐसेनिराहार जितश्वास
हुये मुनि नारदजीके कहे मन्त्रको जपतेभये ३४ तबतो बहुतकाल
बीते करुणा के समुद्र गजाननजी उनदेवों के बहुतकालकिये अनु-
ष्ठान को देखकरके ३५ वरदायक गणेशजी तिनके अगाडीप्रकटहुये
कि उल्लास के प्राप्तहोरहा जो सुवर्ण का सुन्दरमुकुट जिसका ३६
अरु जो सुन्दर कुंडलोंकरके शोभित दांतों में रक्खाहै शुंड जिनका
शोभितहै कटिकेबन्धन वस्त्रकरके युक्त अरु श्रेष्ठ भुजबंधसे सजे अरु
फाशा अरु सृणिनाम अरु परशु कमल इन्हें अपनी भुजोंसे धारण
करतेभये ३७ लाल चन्दन अरु कस्तूरी तथा चन्द्रमाका आभूषण
जिनके अरु जोकि बिजलीकेसमान तेजस्वीशोभितहै कांतिजिनकी
अरु करोड सूर्य समान आभा है जिनकी ३८ ऐसे विकार वर्जित

गणेशजी को देखते अरु उसके तेजसे सारे धर्षित अर्थात् निरस्त नाम दूर होगये जिनके अरु कड़क भय को प्राप्तहुये ३६ कोई देवता शीघ्रही उन गजानन जीको प्रणाम करते भये अरु कई पूजते भये जो कि हर्षसे गद्गद वाणीहो रहे ४० अरु कई उसप्रभुजी को अपने संकट के विनाश के लिये स्तुति करते भये जो देव प्रसन्न श्रेष्ठ मुख संकट के हनने वालेहैं ४१ देवता स्तुति करते भये बोले कि हे परमार्थस्वरूप अर्थात् उत्कृष्ट प्रयोजन का फलही है स्वरूप जिनका ऐसे आपको नमस्कार है २ अरु हे सम्पूर्ण के कारण आप को नमस्कारहै २ अखिल जगत्केकर्ता आपको नमस्कारहै २ अरु सब इन्द्रियो के अधिनिवासी गर्थात् अधिष्ठाता ऐसे आपको नमस्कारहै २।४२ अरु समस्त प्राणिमय मूर्त्ति अर्थात् विभूति शरीरी ऐसे आपको नमस्कार होवे २ अरु हे देवेश भूत नाम प्राणियों के करनेवाले आपको नमस्कारहै २ अरु हे सम्पूर्ण बुद्धियों के अत्यन्त बोधक अर्थात् समस्त बुद्धियोंके बोधननाम रचर कर्मानुसार कर्ममें प्रवृत्तिकरानेवाले आपको नमस्कारहै २ अरु विश्वके प्रलय उत्पत्ति अर्थात् जगत् स्थितिसंहारकर्त्ताआपकोनमस्कारहै२।४३ अरु विश्वके धारण पोषण करने वाले आपको नमस्कारहै २ हे समस्त के ईश कारण के कर्त्ता जो आप तिनको नमस्कारहै२अरु हेवेदके वेत्ताओंके भी अदृश्यनामी वेदज्ञ भी आपको नहीं जानसके ऐसे जो आप हो तिनके अर्थ नमस्कारहै २ अरु सर्ववरोंके अत्यन्त देनेवाले आपको नमस्कारहै२। ४४ अरु वाणी से जो अविचार भूत अर्थात् आपके स्वरूपके विचारके कहनेको वाणीकी समर्थ नहीं ऐसे आप वाणीसे अगोचर हुये तिनको नमस्कारहै २ अरु विघ्नों के निवारण करने वाले आपको नमस्कारहै २ अरुअभक्तोंके मनोरथ को हन्ता अर्थात् जिनके आपकी भक्ति नहीं तिनका कार्य्य न हो ऐसे जो कार्यकारी आप तिनको नमस्कारहै२ अरु हेभक्तों के मनोरथों के जाननेवाले अर्थात्भक्तहृदयवासी आपकोनमस्कारहै२।४६ अरु उत्तमकारुणिक अर्थात् अत्यन्त दयालु आपको नमस्कार है २ अरु ज्ञानमय अर्थात्

ज्ञानस्वरूप जो आपहो तिनको नमस्कारहै २ अरुअज्ञानके नाशकरने वाले आपको नमस्कारहै अरु भक्तोको ऐश्वर्य्यके दाता आपको नमस्कारहै४७अरुअभक्तके ऐश्वर्यनाशक आपकोनमस्कारहै अरु भक्तों के छुटाने वाले अर्थात् मोक्षदायी आपको नमस्कार है अरु अभक्तों को ससार फांसे मे डालनेवाले आपको नमस्कारहै २ अरुविभाग की गई भूति आपकी ऐसे अर्थात् विराट् स्वरूप आपको नमस्कार है ४८ अरुतत्त्व ज्ञानके विशेष से बोधक नाम बताने वाले आपको नमस्कारहै २ अरु उत्तम तत्वके वेत्ता आपको नमस्कार है २ अरु समस्त कर्मोके साक्षिभूत आपको नमस्कारहै २ अरु गुणोंमें नायक नाम श्रेष्ठ अर्थात गुणेश आपको नमस्कार है २। ४९ ब्रह्माजीबोले कि द्विरदानदेव गणेशजी देवताओ करके ऐसे स्तुति किये परमप्रसन्न भये श्रेष्ठ देवोको हर्षातेभये यहकहनेलगे ५० गणेशजीबोले है देवताओ मे इस स्तोत्र से अरु तुम्हारे तपसे प्रसन्नता को प्राप्त भयाहू सो मे तुमको समस्त वाञ्छित देवोंगा हे सुरेश्वरो तुम मांगो ५१ देवता बोले कि हेदेवेश जो आप प्रसन्नहो तो इसत्रिपुर दानव को जीतो जो कि हमारे सबके अधिकारो को ग्रहण अर्थात् खोसकर रहताहै५२अरु आपहीने इसे सब देवताओ से अभय दान वर दियाहै इसीसे हम सकटको प्राप्तहैं सो अब आप हमें उससे छुडावो ५३ हम आपही के शरण आये हैं हमारा यही वर हैगा श्रीगणेश जी बोले कि मैं उस अत्यन्त घोर से उत्पन्न भये तुम्हारे सारे भयको निवारण करूगा५४तुमसे किया यह मेरास्तोत्र पृथ्वी पर (सकष्टनाशन) ऐसे विख्यात होगा ५५ जोकि पढते या श्रवण करते मनुष्योको सब कामना देनेवाला जो मनुष्य इसे तीनसधियों मे अर्थात् प्रातर्मध्याह्न सायकाल में पढेगा सो कहीं भी संकटको नहीं प्राप्त होगा ५६ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्ड में देवो की स्तुतिकावर्णन इसनामसे यहां चालीसवा अध्यायहुआहै ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

व्यासजीनेपूछा कि हेचतुरानन ब्रह्माजी सर्वकारी वरदायकप्रभु गणेशजी करके फिर क्या २ कार्य किया गया सो पूछरहे मुझको आप वर्णन करो १ ब्रह्माजी बोले कि हे व्यास फिर तो गणेशजी ब्राह्मणके रूपसे त्रिपुरासुर के पास गये तो द्विज श्रेष्ठ भये गणेश जीने उसको वडे योग्य आसनपर बैठा देखा२उसनेउठ नमस्कार करके आसन पर बैठालिये अरु इन्हें सुपूज करके पूछा कि हे विप्र आपकहांसे आतेहो ३ तुम्हारी कौन विद्या जानीहै अथवा अर्थात् तुम्हारा कौन वेद अरु शाखाहै अरु आपका क्या नामहै सो विप्र पूछते मुझको वताओ अरु आपका कार्य्य क्याहै सो कहो जो मेरी शक्ति होगी अर्थात् जो मुझसे किया जायगा तो अवश्य करूंगा ४ द्विजहुये गणेशजी बोले हेदैत्य हम तो सायंगृह जहां सन्ध्या होजावे तहां हीं घर अर्थात् निराश्रम रहतेहैं अरु हम सर्वज्ञ हैं अरु वेद-वेत्ताहैं अरु यथेच्छाविहारी लोकोंके हितकी कामना करके भ्रमते फिरतेहैं ५ सोकि (कलाधर) इस नामसे तीनलोक में विख्यात तेरे ऐश्वर्य्यपनेके देखनेको कामनावाले तेरे भुवनको हम प्राप्त भयेहैं६ सो तेरी इन अखण्ड सम्पदाओं को देखकर भली प्रकार से तृप्त अर्थात् सर्वथा प्रसन्न भयेहैं क्योंकि ऐसी सम्पत्ति न तो कैलास में अरु न वैकुण्ठमें तथा ब्रह्मलोक में भी ऐसी नहीं है ७ अरु जो सम्पत् आपके यहां दीखतीहैं सो इन्द्रके स्थान में भी नहींहै तो त्रिपुर बोला कि हे द्विज तुम नाममात्र के कलाधारी हो क्या उसे जानते भीहो८ कि सब लोकों में कितनी सम्पदहैं जिनसे इस मेरीको अति प्रशंसा कररहे हो सो जो तुम जानतेहो तो उनमें भी जो महा उत्कट अर्थात् भारी सम्पदको दिखावो ९ उसे देखकर मैं तेरे वाञ्छित को देऊंगा चाहे प्याराप्राणभीहो अर्थात् जो जीवमांगेगा तोभी देऊंगा हे मुनि प्रियविप्र मैं आपकेहांसीमेंभीकहेको मिथ्यानहींसमुझताहूं१० तबतो विप्ररूपधरे कलाधर जी बोले कि हे सुरघ्नो त्रिपुर पराई सम्पदों

को देखकर तुझको क्या मिलेगा मैं तेरे विनय से प्रसन्न भया अपनी कलासे तुझको ये देताहूं ११ कि सुवर्णका अरु चांदीका लोहे का ऐसा पुरत्रय अर्थात् तीन पुरोंका समूह जो कि शरपर स्थित सो मैं तुझको देताहूं सो हे दैत्य उसमें तू स्थितहुआ सुखपूर्वक बहुत काल तक रमणकर १२ अरु जोकि देवता गन्धर्वो करके न तोडा जावे अरु न मनुष्य सर्पो करके भी अरुचाहे प्रयोजन का देनेवाला, अरु जो कान से जानेवाला अर्थात् जहां इच्छा हो तहांहीं पहुंचा देवे ऐसा मैं तुझको देताहूं १३ जब किसी काल के पर्य्यय अर्थात् वर्ताव में शङ्कर जो उसे एकबाणसे भेदन करेंगे तब हे दैत्य नाशको प्राप्तहोगा १४ ब्रह्माजीबोले कि ऐसाकहके धनुषकोउठाकर अरुउसके भीतर शर जमाकर इसने पुरत्रय बनाया जोकि तीन लोकके समान शोभा सहित १५ जो त्रिपुर नानाप्रकार के रमणीय चित्र विचित्र भवन जो कि दीपिका अर्थात् लालटेन अरु आराम नाम बगीचो करके शोभित तिनसे संयुक्त अरुजो नानाप्रकार के पक्षिगणोंसेसेवित सर्वकामदायक अरुआकाशगामी १६ मायासे मोहित हुआ वो दैत्यवहां स्थित हुआ अत्यंत हर्षको प्राप्तहुआ अरु मेघके समान गर्जता भया जोकि तीनोंलोकोंको अत्यंतही कपानेवाला १७ वो कि मेरेसे श्रेष्ठ कोई नहीं ऐसे गर्वके अभिमान से संयुक्त त्रिलोकी को संचलित करता भया॥ अरु उस ब्राह्मण से ये बोला कि १८ हेद्विजश्रेष्ठ तू मांग अत्यन्त दुर्लभ भी मैं तुझे देऊंगा ऐसे कहकर द्विजरूप गणेशजी निस्पृह होतेभी अर्थात् इच्छारहित भी ये पर देवोंके हतसे उस दैत्यको ऐसे कहते भये १९ द्विजसे गणेशजी बोले कि मैं कैलास में गयाथा तो वहां एक गणेशजी की उत्तम मूर्ति देखी शिव जीसे जो सर्व्वोपचारो से पूजित अरु चिन्तित अर्थ की दायक २० सो असुरेश्वर उसे तूलाकर मुझको देव जो तेरी सामर्थ्यहै तो क्योंकि त्रिलोकी में विचरतेभी मैंने ऐसी मूर्ति कहीं नहीं देखी २१ इससे हे दैत्य उस मूर्तिमें मेरा मन अटकाहै सो, हे असुरस्वामिन् मैं उसे पायकर धन्य२ होऊंगा २२ अरु

इकतालीसवां अध्याय॥

व्यासजीनेपूछा कि हेचतुरानन ब्रह्माजी सर्वकारी १२८
गणेशजी करके फिर क्या २ कार्य किया गया सो पूछरहे
आप वर्णन करो १ ब्रह्माजी वोले कि हे व्यास फिर तो
ब्राह्मणके रूपसे त्रिपुरासुर के पास गये तो द्विज श्रेष्ठ
जीने उसको वडे योग्य आसनपर बैठा देखा २७
करके आसन पर बैठालिये अरु इन्हे सुपूज करके
आपकहासे आतेहो ३ तुम्हारी कौन वि
तुम्हारा कौन वेद अरु शाखाहे अरु आ
पूछते मुझको वताओ अरु आपका का
शक्ति होगी अर्थात् जो मुझसे किया जा
द्विजहुये गणेशजी वोले हेदैत्य हम तो
तहां हीं घर अर्थात् निराश्रम रह
वेत्ताहै अरु यथेच्छाविहारी ७

वाली शुभ चिन्तामणि गणेशजीकी मूर्त्ति है सो हे गिरिजा के पति उसे तुम साम कहे समझाने से ही दैत्यराजको देवो ५ क्योंकि जो पातालमें या स्वर्गलोकमें अरु जो मृत्युलोक में आश्चर्य वस्तु है सो सब उस दैत्य त्रिपुर करके पराक्रम सेती अपने घरमें लाया गया है ६ सो हेदेव शिवजी शीघ्रलावो जिससे हम वलो त्रिपुर के पास जावें अरु जो सामसे न देवोगे तो पराक्रमी दैत्य७ उसको वलसेले लेवेगा तव दुःखपावोगे ऐसेदैत्यके वचनसुनके वे शिवजीकेपासगये अरु जो इन्हें उसदैत्यराजने सिखायाथा सो ये सब वृत्तांत महादेव जीको कहतेभये ८ ऐसेदूतोके वचनको सुनेकर त्रिनेत्र शिवजी क्रोधसे बिकल हुये ९ दूतो को बोले कि तुम दूत ही हो इसकारके मैं तुम्हारे बचनको सहताहू नहीं तो कामदेव की तरह तुम्हारी भी निस्सन्देह भस्म की जाती १० उस तृण समान दैत्यसे प्रभु मुझ का क्या किया जाताहै वो आवो अरु मरनेका काम है तो मेरेपास आ युद्धकरो ११ ये तो मूर्त्ति उससे शतजन्मो करके भी प्राप्त होने को शक्यनहींहै क्या प्रलयाग्नि पतङ्गसे शान्तिको प्राप्तहोताहै १२ या सुमेरु का पात मूषक करके कुछ करनेको शक्यहै क्या अर्थात् मेरु के वल को मूसा क्या पहुंचावेगा अरु या क्यामहान् उदधि वहुत से भी जल निकलजाने से सूखा होजाताहै क्या १३ ब्रह्मा जी बोले कि शङ्कर जी की वाणी सुन दूत तो जैसे आये थे तैसेही चलेगये अरु शंभुजीने जोकहा सो स्वामी पासजाय कहतेभये १४ तव वाक्यके अर्थमें चतुर त्रिपुर ये सुनतेही अत्यन्त जला कि क्रोध अग्नि से दिया मानो त्रिलोकी को जलाताही हो १५ तुरन्तही अपनी चतुरंगिनी सेनाको आज्ञादी तो ही वह शीघ्रसेना मन्दराचलके सन्मुखभई निकली १६ अरु भूतलको ढकती जैसे वे मर्याद समुद्र बढ़ाहो अरु नगे हथियारो के समूहोंसे सहस्र सूर्यके समान कान्तिवाली १७ घनसी घोरगर्जती जो मृत्युके भयको कँपानेवाली अरु वो दैत्य भी विमानके समान उस त्रिपुरपर सवार होकर १८ जो कि मन वेगवालाथा तिसपीछे मारनेकी इच्छाकिये शिवजी पे

चर अचर सारे संसारमे तेरोकीर्त्तिको विख्यात करूंगा कि त्रिपुरसे श्रेष्ठ कोईभी देनेवाला नहीं क्योंकि ये जो मांगो सोही देताहै २३ तब त्रिपुर बोला कि हो शङ्कर को तो मैं किङ्कर अर्थात् नौकर समझताहूं अरु देवताओंको गिनताही नहीं सो हे द्विज श्रेष्ठ वो मूर्त्ति मैं तुम्हे लाकर देताहूंगा २४ ब्रह्माजीने कहा कि हे मुनि व्यासजी त्रिपुर ऐसे कहकर उन कलाधरजी को आदर से पूजताभया अरु उनको दश गांव अरु वस्त्र आभूषण दिये २५ बहुत से मोती अरु औरर भी जो बडेर योग्यरत्न अरु मूंगे अरु राकवनाम पशुओ के वालोंसे बुनेहुये अर्थात् गलीचा आदि बिछौने दिये २६ अरु उस असुरने नानाप्रकार के आभूषणों से विभूषित सो दास दासीदिये अरु श्रेष्ठ अश्व निजर रक्षकसहित अरु स्वर्णके ऐसे२ चांदीकेरथों को देताभया २७ वे कलाधरजी इस दान दायजेको ग्रहण करके वलसे अर्थात् शीघ्रही सारे आश्रम निवासियोको अरु स्त्रीको हर्षा-तेभये अपने आश्रमको गये २८ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे सारेवृत्तांत को नारदजी ने देवतो से कहा वे भी उस कालको देखते भये दि-नोको वितातेभये २९ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमे नारद जीका आगमन इस ही नामसे इकतालीसवां अध्याय हुआ ४१ ॥

बयालीसवा अध्याय ॥

व्यासजीने पूछा कि उन कलाधरजी के गये उसने क्याक्या अरु कैसे चिन्तामणिजी की शुभ मूर्त्ति शिवजीसे लाकर इस त्रिपुर को दई १ सो हे चतुराननजी ये सब विचारके मुझको कहो क्योंकि मैं गणेशजीकी विस्तारसे लीला श्रवणरूप अमृतकोपीता तृप्तनहीं होताहूं २ ब्रह्माजीबोले कि हे मुनिश्रेष्ठ व्यासजी उनकेगये दैत्यने जो किया सो सारा वर्णन करताहूं सो हे मुने तू सावधान श्रवण कर ३ उस त्रिपुर ने मन्दराचल में स्थित शिवजी के पास दो दूत भेजे अरु उन्हें शिक्षाकी कि इस मेरे वाक्य को जाकर शिवजी को आदरसे अर्थात् समझाकर कहो कि ४ तुम्हारे घरमें सर्वार्थ देने-

वाली शुभ चिन्तामणि गणेशजीकी मूर्त्ति है सो हे गिरिजा के पति
उसे तुम साम कहे समझाने से ही दैत्यराजको देवो ५ क्योंकि जो
पातालमें या स्वर्गलोकमें अरु जो मृत्युलोक में आश्चर्य वस्तु है सो
सब उस दैत्य त्रिपुर करके पराक्रम सेती अपने घरमें लाया गया
है ६ सो हेदेव शिवजी शीघ्रलावो जिससे हम वलो त्रिपुर के पास
जावें अरु जो सामसे न देवोगे तो पराक्रमी दैत्य ७ उसको वलसेले
लेवेगा तव दुःखपावोगे ऐसेदैत्यके वचनसुनके वे शिवजीकेपासगये
अरु जो इन्हें उसदैत्यराजने सिखायाथा सो ये सब वृत्तात महादेव
जीको कहतेभये ८ ऐसेदूतोके वचनको सुनेकर त्रिनेत्र शिवजी क्रो-
धसे बिकल हुये ९ दूतो को बोले कि तुम दूत ही हो इसकारणके मैं
तुम्हारे बचनको सहतोहू नहीं तो कामदेव की तरह तुम्हारी भी
निस्सन्देह भस्म की जाती १० उस तृण समान दैत्यसे प्रभु मुझ
का क्या किया जाताहै वो आवो अरु मरनेका काम है तो मेरेपास
आ युद्धकरो ११ ये तो मूर्त्ति उससे शतजन्मो करके भी प्राप्त होने
को शक्यनहींहै क्या प्रलयाग्नि पतङ्गसे शान्तिको प्राप्तहोताहै १२
या सुमेरु का पात मूपक करके कुछ करनेको शक्यहै क्या अर्थात्
मेरु के बल को मूसा क्या पहुंचावेगा अरु या क्यामहान् उदधि
वहुत से भी जल निकलजाने से सूखा होजाताहै क्या १३ ब्रह्मा
जी बोले कि शङ्कर जी की वाणी सुन दूत तो जैसे आये थे तैसेही
चलेगये अरु शंभुजीने जोकहा सो स्वामी पासजाय कहतेभये १४
तव वाक्यके अर्थमें चतुर त्रिपुर ये सुनतेही अत्यन्त जला कि क्रो-
ध अग्नि से दिया मानो त्रिलोकी को जलाताही हो १५ तुरन्तही
अपनी चतुरंगिनी सेनाको आज्ञादी तो ही वह शीघ्रसेना मन्दरा-
चलके सन्मुखभई निकली १६ अरु भूतलको ढकती जैसे वे मर्याद
समुद्र बढाहो अरु नगे हथियारो के समूहोंसे सहस्र सूर्यके समान
कान्तिवाली १७ घनसी घोरगर्जती जो मृत्युके भयको कंपानेवाली
अरु वो दैत्य भी बिमानके समान उस त्रिपुरपर सवार होकर १८
जो कि मन वेगवालाथा तिसपीछे मारनेको इच्छाकिये शिवजी पै

चर अचर सारे संसारमे तेरीकीर्त्तिको विख्यात करूंगा कि त्रिपुरसे श्रेष्ठ कोईभी देनेवाला नहीं क्योकि ये जो मागो सोही देताहै २३ तब त्रिपुर बोला कि हो शंकर को तो मैं किंकर अर्थात् नौकर समझताहूअरु देवताओको गिनताही नही सो हे द्विज श्रेष्ठ वो मूर्ति मैं तुम्हे लाकर देताहूगा २४ ब्रह्माजीने कहा कि हे मुनि व्यासजी त्रिपुर ऐसे कहकर उन कलाधरजी को आदर से पूजताभया अरु उनको दश गांव अरु वस्त्र आभूषण दिये २५ बहुत से मोती अरु औरर भी जो बडे२ योग्यरत्न अरु मूंगे अरु रांकवनाम पशुओ के वालोंसे बुनेहुये अर्थात् गलीचा आदि विछौने दिये २६ अरु उस असुरने नानाप्रकार के आभूषणो से विभूषित सो दास दासीदिये अरु श्रेष्ठ अश्व निजर रक्षकसहित अरु स्वर्णके ऐसे २ चादीकेरथो को देताभया २७ वे कलाधरजी इस दान दायजेको ग्रहण करके वलसे अर्थात् शीघ्रही सारे आश्रम निवासियोको अरु स्त्रीको हर्षितेभये अपने आश्रमको गये २८ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे सारेवृत्तात को नारदजी ने देवतो से कहा वे भी उस कालको देखते भये दिनोको बितातेभये २९ इतिश्री गणेशपुराण उपासनाखण्डमे नारद जीका आगमन इस ही नामसे इकतालीसवां अध्याय हुआ ४१ ॥

बयालीसवा अध्याय॥

व्यासजीने पूछा कि उन कलाधरजी के गये उसने क्याकिया अरु कैसे चिन्तामणिजी की शुभ मूर्ति शिवजीसे लाकर इस त्रिपुर को दई १ सो हे चतुराननजी ये सब विचारके मुझको कहो क्योकि मैं गणेशजीकी विस्तारसे लीला श्रवणरूप अमृतकोपीता तृप्तनहीं होताहू २ ब्रह्माजीबोले कि हे मुनिश्रेष्ठ व्यासजी उनकेगये दैत्यने जो किया सो सारा वर्णन करताहू सो हे मुने तू सावधान श्रवण कर ३ उस त्रिपुर ने मन्दराचल मे स्थित शिवजी के पास दो दूत भेजे अरु उन्हें शिक्षाकी कि इस मेरे वाक्य को जाकर शिवजी को आदरसे अर्थात् समझाकर कहो कि ४ तुम्हारे घरमे सर्वार्थ देने-

वाली, शुभ चिन्तामणि गणेशजीकी मूर्त्ति है सो हे गिरिजा के पति उसे तुम साम कहे समझाने से ही दैत्यराजका देवो ५ क्योंकि जो पातालमें या स्वर्गलोकमें अरु जो मृत्युलोक में आश्चर्य वस्तु है सो सब उस दैत्य त्रिपुर करके पराक्रम सेती अपने घरमें लाया गया है ६ सो हेदेव शिवजी शीघ्रलावो जिससे हम वलो त्रिपुर के पास जावें अरु जो सामसे न देवोगे तो पराक्रमी दैत्य७ उसको वलसेले लेवेगा तब दुःखपावोगे ऐसेदैत्यके वचनसुनके वे शिवजीकेपासगये अरु जो इन्हें उसदैत्यराजने सिखायाथा सो ये सब वृत्तांत महादेव जीको कहतेभये ८ ऐसेदूतोंके वचनको सुनकर त्रिनेत्र शिवजी क्रोधसे बिह्वल हुये ९ दूतों को बोले कि तुम दूत ही हो इसकरके मैं तुम्हारे बचनको सहताहूं नहीं तो कामदेव की तरह तुम्हारी भी निस्सन्देह भस्म की जाती १० उस तृण समान दैत्यसे प्रभु मुझ का क्या किया जाताहै वो आवो अरु मरनेका काम है तो मेरेपास आ युद्धकरो ११ ये तो मूर्त्ति उससे शतजन्मों करके भी प्राप्त होने को शक्यनहींहै क्या प्रळयाग्नि पतङ्गसे शान्तिको प्राप्तहोताहै १२ या सुमेरु का पात मूषक करके कुछ करनेको शक्यहै क्या अर्थात् मेरु के बल को मूसा क्या पहुंचावेगा अरु या क्यामहान् उदधि वहुत से भी जल निकलजाने से सूखा होजाताहै क्या १३ ब्रह्मा जी बोले कि शङ्कर जी की वाणी सुन दूत तो जैसे आये थे तैसेही चलेगये अरु शंभुजीने जोकहा सो स्वामी पासजाय कहतेभये १४ तब वाक्यके अर्थमें चतुर त्रिपुर ये सुनतेही अत्यन्त जला कि क्रोध अग्नि से दिया मानो त्रिलोकी को जलाताही हो १५ तुरन्तही अपनी चतुरंगिनी सेनाको आज्ञादी तो ही वह शीघ्रसेना मन्दराचलके सन्मुखभई निकली १६ अरु भूतलको ढकती जैसे वे मर्याद समुद्र बढाहो अरु नगे हथियारों के समूहोंसे सहस्त्र सूर्यके समान कान्तिवाली १७ घनसी घोरगर्जती जो मृत्युके भयको कंपानेवाली अरु वो दैत्य भी विमानके समान उस त्रिपुरपर सवार होकर १८ जो कि मन वेगवालाथा तिसपीछे मारनेकी इच्छाकिये शिवजी पै